

२/५/५५५

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १



सम्पादक :

आचार्य श्री तुलसी

संग्रहकर्ता :

मुनि श्री चौथमलजी

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी. कॉम., बी. एल.



तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरपंथी महासभा

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता—१



प्रथमावृत्ति

जून, १९६०

अण्ड २०१७



प्रति संख्या

१५००



पृष्ठांक :

६६२



मूल्य :

दो रुपये



मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस,

कलकत्ता

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा रचित कृतियों को 'मिश्र-ग्रन्थ रत्नाकर' (प्रथम खंड) के रूप में प्रकाशित कर वस्तुतः गौरवानुभूति हो रही है। स्वामीजी की उच्च कोटि की दार्शनिक कृतियों में जैन आचार और विचार विषयक गूढ़ तार्किक चर्चाएँ बड़ी सरल भाषा में हैं। यद्यपि इन कृतियों की रचना स्वामीजी ने आज से प्रायः पौने दो सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में की थी, किन्तु, फिर भी ये रचनायें, आज भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अपनी रचना-काल में थीं।

महासभा ने स्वामी जी की समस्त कृतियों को जन-हितार्थ क्रम से प्रकाशित करने की परिकल्पना की है। प्रथम दो खण्डों में स्वामीजी की उपलब्ध पद्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। पाठकवृन्द इन परमोपयोगी ग्रन्थ रत्नों से अत्यन्त लाभान्वित होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,

कलकत्ता—१

२० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

व्यवस्थापक,

साहित्य-विभाग

भूमिका

तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य संत भीखण जी द्वारा रचित विभिन्न तात्त्विक कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' के प्रथम खंड में संकलित किया गया है। इस खंड में कुल ३४ खंड हैं। भिन्न-भिन्न रत्नों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

१—नव पदार्थ :

जैन-दर्शन में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, वंच, निर्जरा और मोक्ष—ये नव पदार्थ बताये गये हैं। इस कृति में इन्हीं पदार्थों का विशद विवेचन है। यह कृति सं० १८५५ में आरम्भ की गई और सं० १८५६ में समाप्त हुई। ऐसा प्रथम और वारहवीं ढाल की अन्तिम गाथाओं से मालूम होता है। 'पुण्य पदार्थ' की दूसरी ढाल, जो १८४३ में रचित है, तथा तेरहवीं ढाल, जो १८५७ में रचित है, बाद में इस कृति के साथ जोड़ी गई हैं। इस कृति में १३ ढालों में कुल ६४ दोहे और ६८० गाथाएँ हैं। नव पदार्थ का जैसा गभीर विवेचन इस कृति में है वैसा अन्यत्र कम देखा जाता है। पहली ढाल में द्रव्य जीव और भाव जीव का भेद तथा जीव के तेईस गुणनिष्पन्न नामों का बड़ा सुन्दर और सरल विवेचन है। दूसरी ढाल में घर्मास्तिकाय, अघर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का तुलनात्मक विवेचन तथा काल और पुद्गलास्तिकाय का अनेक पहलुओं से विवेचन है।

तीसरी और चौथी ढाल में पुण्य पदार्थ का विवेचन है। पुण्य की परिभाषा, पुण्य के उदय से उत्पन्न सुखों का स्वभाव, पुण्योत्पन्न सुखों के भोगने का फल, उनके त्याग का फल, पुण्य का वंच कैसे होता है ? पुण्य वचने के नौ प्रकार आदि अनेक विषयों का गहरा विवेचन है।

पाँचवीं ढाल में पाप पदार्थ का विवेचन है। छठीं और सातवीं ढाल में आश्रव और कर्म में भेद, आश्रव जीव है या अजीव, आश्रव के वीस भेद आदि का विवेचन है।

आठवीं ढाल में संवर किसे कहते हैं, संवर कैसे होता है, देश संवर और सर्व संवर आदि बातों पर मौलिक प्रकाश है। नवीं और दसवीं ढाल में निर्जरा कैसे होती है, निर्जरा की परिभाषा, शुभ योग और निर्जरा का सम्बन्ध, संवर और निर्जरा का सम्बन्ध, अकाम निर्जरा और सकाम निर्जरा, मोक्ष और निर्जरा में अन्तर आदि विषयों का विवेचन है। ग्यारहवीं ढाल में वच पदार्थ का स्वरूप, उसके चार भेद आदि का वर्णन है। वारहवीं ढाल में मोक्ष पदार्थ का विवेचन है। सांसारिक और मौक्तिक सुख, १५ प्रकार के सिद्ध, सिद्धों के स्वरूप आदि का मार्मिक विवेचन है। तेरहवीं ढाल में नौ पदार्थों में कितने जीव हैं और कितने अजीव इस विषय की चर्चा है।

२—श्रावक ना वारे व्रत :

यह कृति सं० १८३२ में गुदोच शहर में समाप्त हुई। इसमें श्रावक के वारह व्रतों का विस्तृत विवेचन है। वारह व्रतों पर इतना विशद और व्यापक विवेचन अन्यत्र कम देखा जाता है। इस कृति में १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५२ दोहे और ३६३ गाथाएँ हैं।

३—कालवादी री चौपई :

स्वामीजी के समय में कालवादी एक विशिष्ट मत था। इस कृति में स्वामी जी इस मत की मान्यताओं का खण्डन कर वास्तविक तथ्य क्या है इस पर बड़ा गहरा प्रकाश डालते हैं। यह उच्च कोटि की दार्शनिक कृति है जिसमें गूढ़ तात्त्विक चर्चा बड़ी सरल भाषा में मिलती है। इसमें ७ ढालें हैं। कुल ३६ दोहे और २४७ गाथाएँ हैं। इस कृति की पहली चार ढालों में रचना-संघत् नहीं मिलता।

५ वी ढाल खेरवा गहर मे १८३२ मे आपाइ सुदी १ सोमवार के दिन रची गई थी। ६ वी और ७ वी ढाले पुर मे सं० १८४८ की क्रमश बैंगाल सुदी ५ दुबवार और बैंगाल सुदी ८ रविवार के दिन पूरी हुई।

४—इन्द्रियवादी री चौपई :

इसमे १५ ढाले हैं। कुल ६२ दोहे और ६६७ गाथाएँ हैं। प्रथम सात और १४ वी ढाल की रचना का काल नहीं मिलता। अवशेष ढालों का रचना-स्थान और काल इस प्रकार है।—

ढाल	८ नैणवा गहर	सं०	१८४६ ज्येष्ठ सुदी दुबवार
"	९ "	सं०	१८४७ फाल्गुन वदि ८ अनिवार
"	१० माधोपुर	सं०	" फाल्गुन सुदी
"	११ नेणवा गहर	सं०	" बैंगाल वदि ६ दुबवार
"	१२ आतरदा गाँव	सं०	" बैंगाल सुदी १२ रविवार
"	१३ इन्द्रगढ़	सं०	" ज्येष्ठ वदि १४ सोमवार
"	१५ माधोपुर	सं०	" चैत्र वदि २ सोमवार

इन्द्रियों सावध हैं या निरवध—इस विषय पर इन ढालों मे मौलिक विवेचन है।

५—परजायवादी री चौपई :

इस कृति मे ३ ढाले हैं जिनमे १५ दोहे और १०१ गाथाएँ हैं। इसके रचना-काल का उल्लेख नहीं है।

स्वामी जी के समय मे परजायवादी एक मत था। उस मत की विग्रह समीक्षा इस कृति में है।

६—टीकम डोसी री चौपई :

टीकम डोसी की अनेक गकाएँ थी। उनका निवारण स्वामीजी ने किया। इस कृति में अनेक तात्त्विक विषयों की गहरी चर्चा है। इस कृति मे ५ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १२८ गाथाएँ हैं।

७—निपेपां री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल ३० दोहे और २६७ गाथाएँ हैं। किसी ढाल मे रचना-काल नहीं मिलता। इस कृति मे निक्षेपों के स्वरूप का विवेचन और उनपर मौलिक विचार हैं।

८—निम्ब री चौपई :

इसमें ६ ढाले हैं। कुल २८ दोहे और १७२ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल मे रचना-काल का उल्लेख नहीं है। निम्बों की मान्यताओं की गभीर आलोचना इस कृति में है।

९—मिथ्याती री करणी री चौपई :

इस कृति मे ४ ढालें हैं। कुल २५ दोहे और १५१ गाथाएँ हैं। दूसरी और चौथी ढाल का रचना समय नहीं मिलता। बाकी दो ढालों का रचना-समय इस प्रकार है —

पहली ढाल	माधोपुर	सं०	१८४३ चैत्र सुदी ६ बुक्रवार
तीसरी ढाल	नैणवा गहर	सं०	१८४७ बैंगाल वदि १२ अनिवार

१०—एकल री चौपई :

इसमें ८ ढालें हैं जिनमे कुल ३७ दोहे और २२७ गाथाएँ हैं। इसका रचना-समय नहीं मिलता। जो गण छोड़कर अकेले फिरते हैं उन्हें 'एकल' कहा जाता है। इस चौपई मे ऐसे स्वच्छंदों के दोषों पर प्रकाश डाला है और ऐसी स्वच्छंदता किस प्रकार जिन-आज्ञा के विपरीत है यह सिद्ध किया है। सूत्र मे एकल विहारी किसे कहा है ? एकल विहार करते हुए भी कैसा साधु शुद्ध होता-है ? आदि विषयों का

विवेचन दूसरी ढाल में है। जो अव्यक्त है और विना गुण की आज्ञा के अकेला स्वच्छन्द विहारी होता है उसका किस तरह पतन होता है इसका बड़ा मनोबैज्ञानिक चित्रण इस कृति में होता है। स्वामी जी ने उपसहार स्वरूप कहा है—‘भगवान् ने सूत्र में कहा है कि ऐसे कुशील, पार्श्वस्थ, अचन्द्र और ससक्त एकल विहारियों का सग नहीं करना चाहिये। साधु उनके साथ परिचय न करे।’

११—जिनाग्या री चौपई :

इस कृति में ५ ढाले हैं जिनमें कुल ३४ दोहे और २३५ गाथाएँ हैं। पहली ढाल में रचना-संबन्ध नहीं है। बाकी चार ढाले भिन्न २ वर्ष में रचित हैं :

ढाल २ खेरवा	स० १८४० आश्विन वदि ५ शनिवार
” ३	स० १८३१ ज्येष्ठ सुदी ३ शुक्रवार
; ४ नाथ दुवारा	स० १८४२ आषाढ वदि १ सोमवार
” ५ ”	स० १८५६ फाल्गुन वदि ६ शनिवार

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि ‘जिनाग्या री चौपई’ कोई सलग्न रचना नहीं है। यह इस विषय की अलग-अलग समय की ढालों का संग्रह मात्र है। इसका प्रतिपादक है—“जैन-धर्म जिन-आज्ञा में है, जिन-आज्ञा के बाहर जैन-धर्म नहीं।” पहली ढाल में इसका बड़ा सुन्दर विवेचन है कि किन-किन बातों में जिन-आज्ञा रहित कार्यों में भी धर्म बताते हैं उनकी तीव्र आलोचना की है। जो जिन-आज्ञा के बाहर के कार्यों में मिश्र-धर्म-पाप मिश्रित बतलाते हैं उनकी भी तीव्र आलोचना है। साधु, आहार आदि करते हैं, वस्त्रादि रखते हैं, रात में सोते हैं, ये कार्य जिन-आज्ञा के अन्तर्गत हैं। जो साधुओं के इन कार्यों में प्रमाद, अविरति आदि दोष कहते और उनके महात्रतो को सागर कहते हैं उनकी आलोचना तीसरी ढाल में है। आज्ञा-सहित कार्य करने में किस तरह साधु को पाप नहीं लगता इसका विशद विवेचन भी इस ढाल में है। चौथी ढाल में यह बताया गया है कि साधु और साध्वियों के जो अलग-अलग कल्प हैं उनमें किसी तरह का पाप नहीं। यह कल्प भगवान् द्वारा निर्धारित है और उनकी मुद्रा उस पर है फिर उसे पाप पूर्ण कैसे कहा जा सकता है ? इस तरह इस ढाल में साधु-साध्वियों के कल्प का बड़ा गभीर और सुन्दर विवेचन है।

साधु के उपकरण १४ ही हैं या उनसे अधिक भी हो सकते हैं इसका विवेचन ५ वीं ढाल का विषय है। स्वामीजी ने सिद्ध किया है कि साधु के उपकरण १४ ही नहीं अधिक भी हैं। अतः जो यह कहते हैं कि १४ उपकरण के उपरांत उपकरण रखने वाला साधु नहीं, इनके उपरांत जो एक कागज का पत्रा भी रखता है वह अससाधु है वे विपरीत प्ररूपणा करते हैं। इस ढाल में इस बात का भी विवेचन है कि साधु लिखने के उपकरण रख सकता है या नहीं तथा लिख सकता है या नहीं।

१२—पोतियाबन्ध री चौपई :

इस कृति में ४ ढाले हैं। इनमें कुल २८ दोहे और १६७ गाथाएँ हैं। रचना-संबन्ध किमी भी ढाल में नहीं देखा जाता।

स्वामीजी के समय में जैनों का एक सम्प्रदाय पोतियाबन्ध नाम से भी था। स्वामीजी गृहस्थावास में इस सम्प्रदाय के यहाँ भी आना-जाना रखते थे। गच्छवासी सम्प्रदाय को छोड़ कर वे इसके अनुयायी बने थे।

पोतियाबन्ध सम्प्रदाय की एक मान्यता यह थी कि सिद्धों के पहले अरिहन्तों की वदना करने से आशातना होती है। सर्व साधुओं को वदना नहीं करनी चाहिए। जो बड़े हैं उन साधुओं

के लिए छोटे कसे बदनीय हो सकते हैं? इस तरह नमस्कार मंत्र की रचना में वे त्रुटि बतलाते थे। स्वामीजी ने पहली ढाल में इसी मान्यता को लेकर उसकी निस्सारता सिद्ध की है। उनकी दूसरी मान्यता थी कि वर्तमान समय में जैन साधु नहीं हो सकते। स्वामीजी ने दूसरी ढाल में इस मिथ्या मान्यता का खण्डन किया है तथा इस सम्प्रदाय के अन्य अनेक अभिनिवेशों की भी आलोचना की है। वे 'मन' योग से प्रत्याख्यान नहीं करते थे। 'मन' योग से प्रत्याख्यान करने में वे पाप बतलाते थे। इसकी आलोचना तीसरी ढाल में है। चौथी ढाल में अन्य अनेक मान्यताओं का उल्लेख और उनका खण्डन है।

१३—निन्व रास :

इस कृति में केवल एक ही ढाल है। स० १८५३ की कार्तिक वदि ११ बुधवार के दिन यह ढाल रची गई। इसमें ६ दोहे और १७० गाथाएँ हैं। स्वामीजी को विपक्षी निह्लव कहते। स्वामीजी ने इस ढाल में यह बताया है कि वास्तव में निह्लव वह होता है जिसके धृदा, आचार और प्ररूपणा जिन-वाणी के विपरीत हो। उन्होंने उस समय के साधुओं की मान्यता, आचार, प्ररूपणा आदि पर विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि निह्लव सजा कहाँ घटती है। यह कृति उस समय के मिथ्या अभिनिवेश, क्रिया और प्ररूपणाओं पर बड़ा गभीर प्रकाश डालती है।

१४—चिनीत अविनीत री चौपई :

इस कृति में नौ ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ५२ और गाथाओं की संख्या ३४२ है। यह कृति खेरवा शहर में सवत् १८३२ भाद्र शुद्ध पयों, शुक्रवार के दिन समाप्त हुई। इस कृति का मुख्य आधार 'उत्तराख्यान' सूत्र है। पर अन्य सूत्रों में भी जहाँ भी इस विषय पर कुछ भी आया है उसको भी स्वामीजी ने इस कृति में ले लिया है। विनय किसका करना चाहिए, विनय किसे कहते हैं, अविनय किसे कहते हैं, कौन विनयी है, कौन अविनयी है, साधु के विनय का स्वरूप आदि-आदि अनेक विषयों पर इस कृति में बड़ा गम्भीर और मार्मिक विवेचन है। आगम आधार पर रचित इस कृति में बड़ा मौलिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है और इस दृष्टि से यह एक स्वतंत्र कृति भी कही जा सकती है। इसमें स्वामीजी ने विषय को समझाने के लिए अनेक मौलिक दृष्टान्त और मनोवैज्ञानिक विचार दिये हैं।

१५—चिनीत अविनीत री ढाल :

इस कृति में दो ढालों का संग्रह है। दोनों ढालों में रचना सवत् नहीं है। दोनों में कुल मिलाकर दो दोहे और पचास गाथाएँ हैं। पहली ढाल में अविनयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। दूसरी ढाल में अविनयी अपनी वृत्तियों को बदल कर किस तरह विनयी हो सकता है, इसका सुन्दर विवेचन है।

१६—उणारी ढाल :

इस कृति में एक ही ढाल है जिसमें एक दोहा और ७८ गाथाएँ हैं। रचना-संवत् नहीं मिलता। इस ढाल में स्वामीजी ने तीन सम्बन्धों को लिया है—(१) माता-पिता और सन्तान का सम्बन्ध, (२) मालिक और नौकर का सम्बन्ध और (३) गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और बतलाया है कि आध्यात्मिक दृष्टि से सन्तान, नौकर और शिष्य किस तरह उद्भूत होता है। आध्यात्मिक उद्भूतता का सुन्दर विवेचन इस ढाल में है। स्वामीजी ने एक मौलिक दृष्टान्त द्वारा इनका विवेचन किया है।

१७—मोहणी कर्म बंध री ढाल :

आठ कर्मों में मोहनीय कर्म प्रबलतम है। प्राणी की ज्ञान और दर्शन की शक्ति इसीसे अवरुद्ध होती है। इस कृति में महा मोहनीय कर्म-बन्ध के ३० बोलों का विवेचन है। इस ढाल के गंभीर मनन से मनुष्य महान् पापों से बच सकता है। यह ढाल स्वामीजी ने पादुगांव में संवत् १८३७ श्रावण वदि रविवार के दिन रची। इसमें ५ दोहे और ५० गाथाएँ हैं।

१८—दसवें प्राञ्जित्त री ढाल :

इस ढाल में दसवां प्रायश्चित्त किसको आता है, इसका विवेचन है। यह ढाल 'स्थानाङ्ग' सूत्र के तीसरे और पांचवें स्थानक के आधार पर रची गई है। इसमें रचना-संवत् का उल्लेख नहीं है। इसमें दो दोहे और ग्यारह गाथाएँ हैं।

१९—जिण लखणा चारित्त आवे न आवे तिणरी ढाल :

यह ढाल संवत् १८३५ माघ सुदी ४, बुधवार के दिन रचित है। इसमें ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। श्रामण्य को आगम में गुणों का महा भार कहा है। श्रामण्य आत्मिक विवेकताओं के बिना नहीं आता। इस ढाल में इस बात का विवेचन है कि किन गुणों से सर्व संयम—श्रामण्य का पाना सुलभ होता है और किन-किन कर्मों से मनुष्य उसका अधिकारी नहीं होता।

२०—सूस भंगावण रा फल री ढाल :

इस ढाल में ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। यह कृति १८५४ चैत्र सुदी ३ बुधवार के दिन पादुगांव में रची गई है। इस छोटी सी ढाल में स्वामीजी ने प्रत्याख्यान के महत्त्वपूर्ण विषयों को कई पहलुओं से स्पर्श किया है। प्रत्याख्यान किस भावना से ग्रहण करना चाहिए, किस तरह उसका पालन करना चाहिए, प्रत्याख्यान के भङ्ग में क्या दोष है, गिरते हुए को किस तरह से दृढ़ करना चाहिए, ब्रती के परिणामों को ढीला नहीं करना चाहिये आदि २ विषयों पर बड़ा मार्मिक विवेचन है।

२१—सामधर्मी सामद्रोही री ढाल :

इस ढाल में कुल ३१ गाथाएँ हैं। इसका रचना-संवत् नहीं मिलता। एक योगी ने चूहे को मंत्र के बल से क्रमशः विल्ली से सिंह बनाया। सिंह बनने पर वह चूहा अपने उपकारी योगी को ही खाने के लिए उद्यत हो गया। यह स्वामी द्रोह का दृष्टान्त है। इसीमें एक अन्य दृष्टान्त राजा के स्वामीभक्त नौकर का है जिसको राजा ने ठुकरा दिया। बाद में राजा पर विपद पड़ी। उस समय उस नौकर ने राजा के व्यवहार की ओर जरा भी दृष्टिपात न करते हुए उसकी रक्षा की। स्वामीजी ने इन दृष्टान्तों की उपमा देते हुए विनयी-अविनयी शिष्य के स्वभाव को प्रगट किया है।

२२—शील की नव वाढ़ :

इस कृति में ग्यारह ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ४६ और गाथाएँ १६७ हैं। इसकी रचना संवत् १८४१ की मिति फाल्गुन वदि १० बुधवार के दिन पादुगांव में समाप्त हुई। इस कृति में उत्तम ब्रह्मचारी के शील—उसके लक्षण, रहन-सहन और व्यवहार के नियमों का विवेचन है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 'उत्तराख्यान' सूत्र में दस समाधि स्थानों का उल्लेख है। उसीके आधार पर ब्रह्मचर्य की बाड़ों का विस्तृत, मार्मिक एवं मौलिक विवेचन इस कृति में है।

इस कृति का सटिप्पण हिन्दी अनुवाद अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

२३—समकित री ढालां :

यह तीन ढालों का संग्रह है। इसमें सम्यक्त्व का महत्त्व, नम्यक्त्व कौन है, किन्तु नम्यक्त्व नहीं है, इत्तका विवेचन है। इनमें नम्यक्त्व के स्वरूप पर बड़ा अच्छा प्रकाश है। इन संग्रह में कुल २ दोहे और ४६ गाथाएँ हैं।

२४—गणधर सिखावणी :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान केलवा है और यह संवत् १८४२ के पीप महीने में रची गई है। मनुष्य का आयुष्य किन तरह अस्थिर है यह पहली ढाल में बताया गया है। दूसरी ढाल में एक समय के लिए भी प्रमाद न करने का उपदेश देने हुए अनेक उच्च गुणों की शाराधना का बड़ा गम्भीर उपदेश है। दोनों ढालों में ३९ गाथाएँ हैं।

२५—दान री ढालां :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान मिरियारी गाँव है। यह ढाल संवत् १८४२ कार्तिक मास में रची गई है। दोनों ढालों में कुल दोहों की संख्या ६ है और गाथाएँ ९० हैं। प्रथम ढाल में निरवद्य मुपात्रदान की महिमा का वर्णन है और दूसरी ढाल में कृपण की प्रकृति का गम्भीर मनोवैज्ञानिक विवेचन है।

२६—चैराग री ढालां :

यह कुल ४ ढालों का संग्रह है। इसमें कुल दोहे ५ हैं और गाथाएँ १०५। दूसरी ढाल का रचना-स्थान मिरियारी गाँव है। यह संवत् १८३४ आषाढ वदि ११ शनिवार को रची गई है। पहले गणधर सिखावणी का जो संग्रह था उसकी पहली ढाल का ही विषय इस संग्रह की पहली ढाल का विषय है। वास्तव में ये दोनों ढालें एक ही संग्रह में होनी चाहिये थी। दूसरी ढाल को प्रायः 'दूढ़े की ढाल' कहते हैं। इसमें बृद्धावस्था में मनुष्य की कंठी हालत होती है उनका वर्णन है। तीसरी ढाल में ग्रहस्थावस्था की विडम्बना का वर्णन है। इसमें कई अच्छे सूक्त हैं। उदाहरण स्वरूप :

नर्चित होय वेद्य नर अंब, बांधे पर घर केरा बंब ।
परणीजे जाणें घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या ॥
तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग मांहे तिरसी ॥
केह श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यच दुखटाले ।
देवा थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी ॥
नरक दिलावण दीवी नार, मोष जावण ने आडी किवाड ।
सुयमडांग तंदुल वियालि साख, तिण में वीर गया छे भाख ॥
रुत्री दोप जिण कह्या अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यंही एक ।
बुरो मती मानें नर नारी, निश्चें देखो ग्यान विकारी ॥
छेदाणां जस हाथ नें पाय, कांप्या कान नें नांक कहाय ।
ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी ॥
विपें दिष्टि वरजी चित्रनारी, तो किम निरखें सोले सिणगारी ।
सूर्य साहो जोयां घटें तेज, ज्यू ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥

उंदर बेटो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस ।
तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ बचे वलवंत ॥
इम जांणी रहे साधु एकंत, आपने हित वांछे ते संत ।
शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनै जांणो मुगत नजीक ॥

२७—जुआ री ढाल :

इसमें दोहे ४ और गाथाएँ ६१ हैं। इसकी रचना पुर शहर में संवत् १८३७ श्रावण सुदी ५ शनिवार को हुई। जुये का भीषण दुष्परिणाम इस कृति में बड़े मौलिक ढंग से दिखाया गया है।

२८—व्याहुरो :

इसमें केवल एक ही ढाल है। इसकी गाथाएँ ६८ हैं। इसके रचना-काल व स्थान का उल्लेख नहीं है। विवाह में जो अनेक नेगवार होते हैं उनका आध्यात्मिक गूढार्थ इस कृति में प्रगट किया है। स्वामीजी का उद्देश्य है कि इसको पढ़कर “जोगी जोग सेंठो रहे, भोगी तजे विकार”—अर्थात् योगी योग में दृढ़ रहे और भोगी विकार को छोड़े। यह ढाल स्वामीजी की श्रौत्यांतिकी दृष्टि का बड़ा सुन्दर नमूना है। विवाह सम्बन्धी लौकिक क्रियाओं का परमार्थ उपस्थित करते हुए उक्त वैराग्य का उपदेश इस कृति में दिया गया है।

२९—तात्त्विक ढालां :

यह पाच ढालों का संग्रह है, जिनमें कुल ७ दोहे और १२४ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-संवत् व स्थान का उल्लेख नहीं है। प्रथम ढाल में जिन-शासन में किन किन महान् व्यक्तियों ने समय ग्रहण किया उनका वर्णन है। दूसरी ढाल में २४ दण्डक की अपेक्षा से २३ पदवियों का वर्णन है। तीसरी ढाल में मोक्षमार्ग में ज्ञान और क्रिया की सहचारिता पर अन्वेष और पगु का दृष्टान्त है। छोटी होने पर भी यह ढाल बड़ी अर्थ-गम्भीर है। चौथी ढाल में एकेन्द्रिय जीवों को कौसी वेदना होती है इसका दिग्दर्शन है। पांचवी ढाल में मोम, लाख, लकड़ी और मिट्टी के गोले का दृष्टान्त देकर चार प्रकार के मनुष्यों की मार्मिक व्याख्या की है।

३०—अनुकम्पा री चौपई :

यह रत्न १२ ढालों का संग्रह है जिनमें ५४ दोहे और ४८७ गाथाएँ हैं। प्रारम्भिक आठ ढालों में रचना-संवत् नहीं मिलता। अवशेष ढालों के अन्त में निम्न व्योरा मिलता है।

ढाल ९ बगड़ी १८४४ फाल्गुन सुदी ९ रविवार ।

ढाल १० मांढा गाँव १८५२ आपाढ वदि ११ मंगलवार ।

ढाल ११ खेरवा १८५४ आश्विन सुदी २ शुक्रवार ।

ढाल १२ पुर शहर १८५३ कार्तिक वदि १४ शुक्रवार ।

उपर्युक्त रचना-वर्णन से यह स्पष्ट है कि कुछ ढालें मूल कृति के साथ वाद में जोड़ी गई हैं। मूल कृति में ८ अथवा ९ ढालें रही इसका स्पष्ट पता नहीं चलता। इस कृति में, हिंसा, अहिंसा, दया, अनुकम्पा, उपकार आदि विषयों पर विविध गम्भीर विवेचन हैं जिसके पीछे गहरा आगम-अध्ययन और गम्भीर चिन्तन-मनन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अहिंसा के क्षेत्र में स्वामीजी एक बहुत बड़े विचारक और साधक रहे जिनके चिन्तन में बहुमूल्य स्याई तत्त्व हैं। इस कृति का सानुवाद सतिष्ण संस्करण अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

३१—विरत अविरत री चौपई :

इस सग्रह में २० ढालें हैं। कुल मिला कर ८६ दोहे और ६७५ गाथाएँ हैं। इनमें विरति और अविरति के विषय पर मौलिक चिन्तन और विश्लेषण है। दान के सावद्य-निरवद्य भेद पर आगम-सम्मत विचार हैं। एक ही क्रिया में धर्म-अधर्म दोनों होते हैं ऐसी मान्यता का खण्डन है। जैन-आगम में कहाँ किस परिस्थिति में मौन रहने का विधान है इसका जिक्र है। दस प्रकार के दान पर विवेचन कर सावद्य-निरवद्य दान का विवेक उपस्थित किया गया है। यह कृति अनेक मिथ्याभिनिवेशों को दूर कर अनेक विषयों में सम्यक्दृष्टि देती है। इस सग्रह की कुछ ढालों के रचना-स्थान और काल का विवरण इस प्रकार है—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
४	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि १० रविवार
८	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ८ शुक्रवार
९	कोठाख्या	१८४३ आसोज सुदी १४ शनिवार
१२	वेनावस	१८४४ माघ सुदी ७ वृहस्पतिवार
१३	पाली	१८५२ श्रावण वदि १३ मंगलवार
१४	पाली	१८५२ आसोज वदि ५ शुक्रवार
१५	पाली	१८५२ आसोज वदि १५ सोमवार
१६	सोजत	१८५३ श्रावण सुदी ६ सोमवार
१७	पाली	१८५५ आसोज सुदी १ बुधवार
१८	नाथ दुवारा	१८५६ पौष वदि २ शनिवार
१९	गोधुंदा	१८५७ चैत्र सुदी १४ बुधवार

३२—श्रद्धा री चौपई :

यह रत्न ३१ ढालों का सग्रह है। ये ढाले विभिन्न स्थल और काल में रची गई हैं। इनका पूरा विवरण इस प्रकार है -

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
१	बगड़ी	१८३६ कार्तिक सुदी १५ मंगलवार
२	माधोपुर	१८४८ आसोज सुदी ६ सोमवार
४	नाथदुवारा	१८४३ श्रावण वदि १५ मंगलवार
५	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ९ शनिवार
६	ईडवा	१८५४ चैत्र वदि ४ बुधवार
७	कोठाख्या	१८४३ कार्तिक सुदी १३ शनिवार
८	सिरयारी	१८५० आषाढ सुदी २ रविवार
९	गुदवच	१८५१ वैसाख सुदी ११ बुधवार
१०	खैरवा	१८५३ आसोज वदि १५ बुधवार
११	मेडता	१८५४ वैसाख वदि १५ सोमवार
१२	पाली	१८५५
१३	केलवा	१८५५ फाल्गुन वदि १ बुधवार

१४	गुरला	१८५८ कार्तिक वदि ५	मंगलवार
१५	पीपाड़	१८३३ ज्येष्ठ वदि १२	मंगलवार
१६	पाडू	१८५४ वैसाख वदि १०	मंगलवार
१८	सिरयारी	१८५१ कार्तिक वदि १४	बुधवार
१९	पुर	१८५७ आसोज वदि ९	शुक्रवार
२०	पुर	१८५७ आसोज वदि १३	मंगलवार
२१	गंगापुर	१८५७ पीष सुदी ८	मंगलवार
२२	पीपाड़	१८५७ चैत्र सुदी १३	सोमवार
२३	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १	बृहस्पतिवार
२४	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १५	बृहस्पतिवार
२५	पूहना	१८५७ माघ वदि २	शनिवार
२६	रावलयां	१८५७ चैत्र सुदी १४	रविवार
२७	मेवाड़	१८५७ आसोज वदि १५	बृहस्पतिवार
२९	नेंगवा	१८४८ माघ वदि १५	सोमवार

स्वामीजी के समय में जैन दर्शन के क्षेत्र में बड़ा वितण्डावाद फैला हुआ था। एक ही विषय के सम्बन्ध में नाना प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित थी। श्रद्धा विषयक इन मान्यताओं का स्वामीजी ने गहरा अध्ययन किया और हजारों विषयों पर सही दृष्टि दी। श्रद्धा आचार की चौपई में श्रद्धा विषयक निर्णयों का संग्रह और जिन धर्म विषयक विपरीत मान्यताओं की तीव्र आलोचना एवं खण्डन है। इस संग्रह में कुल मिला कर १६० दोहे और १४६४ गथाएँ हैं।

३३—आचार री चौपई :

इस चौपई में ३२ ढालों का संग्रह है। कुछ के रचना-काल और स्थान इस प्रकार मिलते हैं—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल	
९	मेडता	१८३३ वैसाख वदि ९	
११	रीयां	१८३३ आषाढ सुदी ३	सोमवार
१२	पीपाड़	१८३४ आसोज सुदी ७	बुधवार
१४	अणंदपुर	१८३३ वैसाख सुदी ११	रविवार
१६	खेरवा	१८३२ आसोज सुदी २	मंगलवार
१७	खेरवा	१८३२ कार्तिक वदि २	मंगलवार
१८	गुंदवच	१८३२ वैसाख सुदी ११	सोमवार
१९	रीयां	१८३३ ज्येष्ठ सुदी १५	शुक्रवार
२०	रीयां	१८३३ आषाढ वदि ९	रविवार
२५	पाली	१८५२ भाद्र वदि ७	शुक्रवार
२६	सोजत	१८५३ आसोज सुदी ७	शनिवार
२७	पाली	१८५२ आसोज सुदी २	बुधवार
२८	सोजत	१८५३ आसोज वदि ११	मंगलवार
२९	पाली	१८५५ भाद्र वदि १०	बुधवार
३०	नाथदुवारा	१८५६ कार्तिक सुदी ८	मंगलवार

श्रद्धा के बोलों की तरह आचार के सम्बन्ध में भी स्वामीजी के समय में बड़ा अन्धेर चला हुआ था। साधुओं के आचार में इतनी विभिन्नता थी कि किसे साधु कहा जाय और किसे नहीं यह निर्णय करना असंभव-सा हो गया था। स्वामीजी ने आचार विषयक शिथिलता की जो तीव्र आलोचना की वह इस संग्रह की प्रत्येक ढाल में देखी जाती है। उन्होंने आगम-सम्मत शुद्ध साध्व्याचार और श्रावकाचार को जनता के सामने रखा।

३४—अवनीत रास :

इसमें १ दोहा और ४४३ गाथाएँ हैं। अविनयी की प्रकृति का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रत्येक गाथा से प्रगट होता है। स्वामीजी से चन्द्रभानजी आदि अलग हुए उसके बाद की यह कृति है। इसमें विनय और अविनय के विषय पर अमूल्य विचार-रत्न छिपे पड़े हैं।

इस खण्ड में आर्डे हुई कृतियों के विषयो का परिचय सक्षेप में ऊपर दिया जा चुका है। इन कृतियों के पढ़ने से पाठको के हृदय पर सहज ही निम्न प्रभाव पड़ेगा

स्वामीजी का शास्त्रीय-ज्ञान बड़ा गभीर था। आगमों का उनका अध्ययन बेजोड़ था।

शास्त्रीय-ज्ञान के साथ-साथ उनमें तीव्र नीर-क्षीर विवेक था जिसके सहारे वे तत्त्व-अतत्त्व का सही-सही निर्णय दे सकते थे।

उनकी कृतियों में तत्त्वों का सूक्ष्म निरूपण है। उनमें गांभीर्य के साथ-साथ सरलता और सहज बोध है।

वे बड़े भारी मनोवैज्ञानिक थे। मनोभावों का उनका विश्लेषण जितना ही गहरा है, उतना ही भुगधकारी।

उन्होंने जो कुछ लिखा है वह विद्वानों के लिए जितना सरल है उतना ही एक साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए भी।

वे सहज कवि और तत्त्व-ज्ञानी थे। उनकी काव्य-प्रतिभा असाधारण और विविध पहलुओंवाली थी। वे सैद्धान्तिक थे और दिग्गजयो चर्चावादी। वे महान् टीकाकार थे। सूत्र की गाथाओं की उनकी टीकाएँ बेजोड़ हैं। वे पाण्डित्यपूर्ण ही नहीं बरन् बड़ी मूलस्पर्शी और मार्मिक भी हैं।

महान् बहुश्रुत होने के साथ-साथ वे महान् चिन्तक भी थे।

वे महान् उपदेशक और नैयायिक थे, साथ ही साथ तीव्र आलोचक और कठोर समीक्षक भी। उनकी कृतियों में गहरा ज्ञान और सहज वैराग्य है।

वे एक महान् आचार्य्य थे और एक दूरदर्शी आचार्य्य की तरह स्थायी अनुवासन के नियम दे सकते थे।

उनका जीवन-व्यापी प्रयास शुद्ध जैनत्व का प्रकाश करना रहा।

स्वामीजी अपने समय के एक महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी पुरुष थे। उस समय की जैन धर्म की स्थिति एवं साधुओं में छाई हुई शिथिलता के प्रति उनके मन में गहरा दर्द था। जो यह कहा करते थे कि यह पंचम काल है, सम्पूर्ण साधुत्व का पालन असंभव है, स्वामीजी उनके लिए एक चुनौती थे। उन्होंने केवल प्रचलित आचार-विषय में ही नहीं किन्तु विचारों और मान्यताओं के विषय में भी मौलिक प्रकाश दिया। उन्होंने जिनाज्ञा के विपरीत कार्यों में धर्म बताने वालों की गहरी आलोचना की। वे एक अत्यन्त स्पष्टवादी आचार्य्य थे। अपने विचारों को निर्भयतापूर्वक प्रगट करने में वे कभी नहीं सकुचाये।

इस खण्ड में स्वामीजी की तात्त्विक और सैद्धान्तिक कृतियों का संग्रह है। द्वितीय खण्ड में स्वामीजी रचित आख्यानों और कथानकों का संग्रह है। तृतीय खण्ड में स्वामीजी की गद्यमय रचनाओं का संग्रह रहेगा।

तीनों खण्डों की विस्तीर्ण विषय-सूचि, कठिन शब्दों का कोष आदि तृतीय खण्ड के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित किये जायेंगे।

तात्त्विक ढालों का यह संग्रह न केवल जैनियों के लिए ही अत्यन्त महत्त्व का सिद्ध होगा पर जो जैन धर्म के हृदय को समझना चाहते हैं उन सब के लिए भी वैसा ही सिद्ध होगा।

स्वामीजी की ढालों की प्राचीनतम प्रति उनके परम भक्त शिष्य और द्वितीय आचार्य श्रीमद् भारीमालजी के हस्ताक्षरों में उपलब्ध है। वही प्रस्तुत संग्रह का आधार रही है। श्रीमद् जयाचार्य ने स्वामीजी की कृतियों का विषयवार वर्गीकरण कर उन्हें व्यवस्थित कर उनपर 'सिद्धान्त-सार' नामक ग्रन्थ की रचना की। वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी ने "भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" के रूप में उन्हें संयोजित करने का विचार किया। मुनि श्री चौथमलजी ने आचार्य श्री की दृष्टि के अनुसार संयोजन करने में पूरा परिश्रम किया।

तेरापन्थ सम्प्रदाय के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर तेरापन्थ के प्रतिष्ठापक और आद्य आचार्य की वाणी का यह संग्रह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्रकाशन है। करीब १७५ वर्षों के बाद यह बहुमूल्य साहित्य अपने अमित आलोक के साथ जनता के सामने आ रहा है, यह एक बड़े ही सौभाग्य की बात है।

१५, नूरमल लोहिया लेन

कलकत्ता,

३० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

विषय-सूची

रत्न कृति-नाम	पृष्ठ
१ नव पदारथ	१
२ श्रावक ना वारे व्रत	५६
३ कालवादी री चौपई	६३
४ इन्द्रियवादी री चौपई	११७
५ परजायवादी री चौपई	१८१
६ टीकम डोसी री चौपई	१६३
७ निषेपां री चौपई	२०६
८ निन्द री चौपई	२३३
९ मिथ्याती री करणी री चौपई	२५३
१० एकल री चौपई	२६६
११ जिनाय्या री चौपई	२६३
१२ पोतिया बन्ध री चौपई	३१७
१३ निन्द रास	३३५
१४ विनीत अविनीत री चौपई	३४६
१५ विनीत अविनीत री ढाल	३८३
१६ उरण री ढाल	३९१
१७ मोहणी कर्म बंध री ढाल	३९६
१८ दशवे प्राछित्त री ढाल	४०५
१९ जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल	४०६
२० सूस भंगावण रा फल री ढाल	४१७
२१ सामघर्मीं सामद्रोही री ढाल	४२३
२२ शील की नव बाड	४२६
२३ समकित री ढाला	४५३
२४ गणधर सिखावणी	४६१
२५ दान री ढालां	४६७
२६ वैराग री ढालां	४७७
२७ जुआ री ढाल	४८६
२८ व्याहुलो	४९७
२९ तार्त्तिक ढालां	५०५
३० अणुकम्मा री चौपई	५१६
३१ विरत इविरत री चौपई	५६७
३२ श्रद्धा री चौपई	६५१
३३ आचार री चौपई	७७६
३४ अवनीत रास	६०६

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

१ : जीव पदारथ

दुहा

नमू वीर सासन धणी, गणघर गोतम साम ।
तारण तिरण पुरषा तणां, लीजे नित प्रत नाम ॥ १ ॥
त्या जीवादिक् नव पदारथ तणो, निरणो कीयो भांत भांत ।
त्याने हलूकमीं जीव ओलखे, पूरी मन री खांत ॥ २ ॥
जीव अजीव ओलख्यां विनां, मिटे नही मन रो भर्म ।
समकत आयां विण जीव ने, रूके नही आवतां कर्म ॥ ३ ॥
नव ही पदारथ जू जूआ, जथातथ सरदे जीव ।
ते निश्चे समदिष्टी जीवडा, त्यां दीघी मुगत री नीव ॥ ४ ॥
हिवे नव ही पदारथ ओलखायवा, जूआ जूआ कर्हू छूं भेद ।
पहिलां ओलखाऊं जीव ने, ते मुणजो आण उमेद ॥ ५ ॥

ढलल : १

[वलनल रल डलल सूख सुख गुंजे]

सलसतु जीव डुर्य सलख्यात, कडे घटे नही तललडलत ।
 तलणरल असख्यात डुरेडड, घटे ववे नही लवलेस ॥ १ ॥
 तलण सू वरवे कह्यु जीव एक, डलव जीव रल डेड अनेक ।
 तलणरु वहुत कह्यु वलसतलण, ते वृववंत जणे वलचलण ॥ २ ॥
 डुगुतु वीसडलं सतक डलंय, वीजे उडेजे कह्यु जलणरलड ।
 जीवरल तेवीस^३ नलंड, गुण नलडन कह्यु छै तलंड ॥ ३ ॥
 जीवेतलवल^१ जीवरु नलंड, आडखल ने वले जीवे तलड ।
 ओतु डलवे जीव ससरलरी, तलणने वृववंत लीजे वलचलरी ॥ ॡ ॥
 जीवथलकलड^२ जीवरु नलंड, देह वरे छै तेह डुगी आंड ।
 डुरेडसलं रल समुह ते कलड, डुडगल रल समुह डेले छै तलड ॥ ॡ ॥
 सलस उसलस लेवे छै तलंड, तलण सू डलणेतलवल^३ जीव नलंड ।
 डुडुतलवल^ॡ कह्यु इण नुडलड, सडल छै तलहुं कलल रे डलंय ॥ ॡ ॥
 सतेतलवल^ॡ कह्यु इण नुडलड, डुडलसुड डुने छै तलड ।
 वलनुतलवल^ॡ वलडे रल जलंण, सवडलदलक लीडल सवं डलचुंण ॥ ॡ ॥
 वेडलतलवल^१ जीव रल नलंड, सुख दुख वेडे छै ठलंड ठलंड ।
 ते तु चेतेन सरुड छै जीव, डुडगल रु सवलदी सवलव ॥ ॡ ॥
 चेडलतलवल^ॡ जीवरु नलंड, डुडगल नी रचणल करे तलंड ।
 वलवड डुरकलरे रचे रुड, ते तु डुंडल ने डलल अनूड ॥ ॡ ॥
 जेडलतलवल^१ नलंड शुरीकर कडुं रलडु नुं जीडणहलर ।
 तलणरु डुरलकड सकत अतंत, थुडल डें करे करडलं रु अलनुत ॥ १० ॥
 आडलतलवल^{१०} नलड इण नुडलड, सवं लेक डुरसुडु छै तलड ।
 जनुड डरण कलडल ठलंड ठलंड, कडे डलडुडु नही आरलंड ॥ ११ ॥
 रलंणुतेतलवल^{११} नलंड डडडलतु, रलग डेड रुड रलतु ।
 तलण सू रहे छै डुहु डतवलु, आलडल नें ललडलवे कलले ॥ १२ ॥
 हीडुतलवल^{१२} जीवरु नलंड, वलडुडु गतल डलंहे हींडुडु छै तलंड ।
 कडुं हललेले ठलंड ठलंड, कडे डलडुडु नही वलसरलड ॥ १३ ॥
 डुगलेतलवल^{१३} जीवरु नलंड, डुडगल ले ले डेलुडल ठलंड ठलंड ।
 डुडगल डलंहे रच रह्यु जीव, तलण सू ललगी संसरल गी नीव ॥ १ॡ ॥

माणवेतिवा^{१*} जीव रो नांम, नवो नही सासतो छै ताम ।
 तिणरी परजा तो पलटे जाय, द्रव्य तो ज्यू रो ज्यू रहे ताय ॥ १५ ॥
 कतातिवा^{१*} जीव रो नाम, करमां रो करता छै तांम ।
 तिण सू तिणने कह्यो छै आश्रव, तिण सू लागे छै पुदगल दरब ॥ १६ ॥
 विकतातिवा^{१*} नाम इण न्याय, कर्मा ने विधूणे छै ताय ।
 आ निरजर रा करणी अमांम, जीव उजलो जै निरजरा ताम ॥ १७ ॥
 जएतिवा^{१*} नाम तणो विचार, अति हि गमन तणो करणहार ।
 एक समे लोक अन्त लग जाय, एहवी सकत सभाविक पाय ॥ १८ ॥
 जतूतिवा^{१*} जीव रो नांम, जन्म पाम्यो छे ठाम ठाम ।
 चोरासी लख जोनि रे मांहि, उपज्यो ने निसर गयो ताहि ॥ १९ ॥
 जोणित्तिवा^{१*} जीव कहिवाय, पर नो उत्पादक इण न्याय ।
 घट पट आदि वस्त अनेक, उपजावे निज सुविवेक ॥ २० ॥
 सयंभूतिवा^{२*} जीव रो नाम, किण हि निपजायो नही ताम ।
 ते तो छे द्रव्य जीव सभावे, ते तो कदे नही विललावे ॥ २१ ॥
 सरीरेतिवा^{२*} नांम एह, सरीर रे अतर तेह ।
 सरीर पाछे नाम धरायो, काले गोराविक नांम कहायो ॥ २२ ॥
 नायएतिवा^{२*} ते कर्मा रो नायक, निज सुख दुख छै दायक ।
 तथा न्याय तणो करणहार, ते तो बोले छै वचन विचार ॥ २३ ॥
 अन्तरअपा^{२*} ते जीव रो नांम, सर्व सरीर व्यापे रह्यो तांम ।
 लोलीभूत छै पुदगल माहि, निज सरूप दवे रह्यो त्याही ॥ २४ ॥
 द्रव्य तो जीव सासतो एक, तिणरा भाव कह्या छै अनेक ।
 भाव ते लक्षण गुण परयाय, ते तो भावे जीव छै ताय ॥ २५ ॥
 भाव तो पाच श्री जिण भाख्या, त्यारा सभाव जू जूआ दाख्या ।
 उदे उपसम ने खायक पिछ्छाणो, खय उपसम परिणामीक जाणो ॥ २६ ॥
 उदे तो आठ कर्म अजीव, त्यांरा उदा सँ नीपना जीव ।
 ते उदे भाव जीव छै ताम, त्यारा अनेक जूआ जूआ नांम ॥ २७ ॥
 उपसम तो मोहणी कर्म एक, जब नीपजे गुण अनेक ।
 ते उपसम तो भाव जीव छै तांम, त्यांरा पिण छे जूआ जूआ नांम ॥ २८ ॥
 खय तो हुवे आठ कर्म, जब खायक गुण नीपजे परम ।
 ते खायक गुण छै भाव जीव, ते उजला रहे सदा सदीव ॥ २९ ॥
 वे आवरणी ने म हणी अतराय, ए च्यारू कर्म खय उपसम थाय ।
 जब नीपजे खय उपसमभाव चोखो, ते पिण छै भाव जीव निरदोषो ॥ ३० ॥

जीव परिणमे जिण जिण भाव माहि ते सगला छै न्याया न्यारा ताहि ।
 पिण परिणामिक सारा छे ताम, जेहव तेहवा परिणामिक नाम ॥ ३१ ॥
 कर्म उदे सू उदे भाव होय, ते तो भाव जीव छै सोय ।
 कर्म उपसमीया उपसम भाव, (ते) उपसम भाव जीव इण न्याय ॥ ३२ ॥
 कर्म खय सू खायक भाव होय, ते पिण भाव जीव छै सोय ।
 कर्मखे उपसम सू खे उपसम भाव, ते पिण छै भाव जीव इण न्याय ॥ ३३ ॥
 अे च्याहं इ भाव छै परिणामिक, ओ पिण भाव जीव छै ठीक ।
 और जीव अजीव अनेक, परिणामिक बिना नही एक ॥ ३४ ॥
 छे पांचूइ भाव नें भाव जीव जाणो, त्याने रूडी रीत पीछांणो ।
 उपजे नें विले हो जाय, ते भावे जीव तो छै इण न्याय ॥ ३५ ॥
 कर्म संजोग विजोग सू तेह, भावे जीव नीपनो छै एह ।
 च्यार भाव तो निश्चे फिर जाय, खायक भाव फिरे नही ताय ॥ ३६ ॥
 द्रव्य तो सासतो छै ताहि, ते तो तीनुंइ काल रे माहि ।
 ते तो विले कदे नहीं होय, द्रव्य तो ज्यूं रो ज्यूं रहसी सोय ॥ ३७ ॥
 ते तो छेदो कदे न छेदावै, भेदो पिण कदे नहीं भेदावै ।
 जाल्यो पिण जले नांही, वाल्यो पिण न बले अगन माहि ॥ ३८ ॥
 काट्यो पिण कटे नहीं कांई, गाले तो पिण गले नांही ।
 बाट्यो तो पिण नहीं वटाय, घसे तो पिण नहीं घसाय ॥ ३९ ॥
 द्रव्य असख्यात प्रदेसी जीव, नित रो नित रहसी सदीव ।
 ते मारयो पिण मरे नाही, बले घटे, बवे नहीं कांइ ॥ ४० ॥
 द्रव्य तो असख्यात प्रदेसी, ते तो सदा ज्यूं रा ज्यूं रहसी ।
 एक प्रदेस पिण घटे नांही, तीनुंइ काल रे माही ॥ ४१ ॥
 खंडायो पिण न खडे लिगार, नित सदा रहे एक धार ।
 एहवो छै द्रव्य जीव अखंड, अखी थको रहे इण मड ॥ ४२ ॥
 द्रव्य रा भाव अनेक छै ताय, ते तो लखन गुण परजाय ।
 भाव लखन गुण परजाय, ए च्याहं भाव जीव छै ताय ॥ ४३ ॥
 ए च्याह भला ने भूडा होय, एक धारा न रहे कोय ।
 केइ खायक भाव रहसी एक धार, नीपना पछे न घटे लिगार ॥ ४४ ॥
 दरवे जीव सासतो जांणो, तिणमे पिण सका मूल म आंणो ।
 भगोती सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४५ ॥
 भावे जीव असासतो जाणो, तिणमे पिण सका मूल म आणो ।
 ए पिण सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४६ ॥

जेती जीव तणी परजाय, असासती कही जिणराय ।
 तिणने निरुचे भावे जीव जांगो, तिणने रुडी रीत पिछागो ॥ ४७ ॥
 कर्मा रो करता जीव छै तायो, तिण सू आश्रव नाम धरायो ।
 ते आश्रव छै भाव जीव, कर्म लागे ते पुदगल अजीव ॥ ४८ ॥
 कर्म रोके छै जीव ताह्यो, तिण गुण सू संवर कहायो ।
 सवर गुण छै भाव जीव, रुकीया छै कर्म पुदगल अजीव ॥ ४९ ॥
 कर्म तूटा जीव उजल थाय, तिणने निरजरा कही जिणराय ।
 ते निरजरा छै भाव जीव, तूटे ते कर्म पुदगल अजीव ॥ ५० ॥
 समस्त कर्मा सू जीव मूकायो, तिण सू तो जीव मोख कहायो ।
 मोख ते पिण छै भाव जीव, मूकी गया कर्म अजीव ॥ ५१ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, तेहनो करे संजोग ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५२ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, त्याने त्यागे ने पाडे विजोग ।
 ते तो संवर छै भाव जीव, तिण सू रुकीया छै कर्म अजीव ॥ ५३ ॥
 निरजरा ने निरजरा री करणी, अे दोनूइ जीव नें आदरणी ।
 ए दोनू छै भाव जीव, तूटा ने तूटे कर्म अजीव ॥ ५४ ॥
 काम भोग सू पामे आरामो, ते संसार थकी जीव स्हामो ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५५ ॥
 काम भोग थकी नेह तूटो, ते संसार थकी छै अगूठो ।
 ते सवर निरजरा भाव जीव, जब रुके तूटे कर्म अजीव ॥ ५६ ॥
 सावद्य करणी सर्व अकार्य, अे तो सगला छै किरतव अनाय ।
 ते सगल्यइ छै भाव जीव, त्यासू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५७ ॥
 जिण आगन्या पाले छै रुडी रीत, ते पिण भाव जीव सुवनीत ।
 जिण आगन्या लेपे चाले कूरीत, ते तो छै भाव जीव अनौत ॥ ५८ ॥
 सूर वीरा ससार रे माही, किणरा डराया डरे नाही ।
 ते पिण छै भाव जीव ससारी, ते तो हुवा अनती वारी ॥ ५९ ॥
 साचा सूरवीर साख्यात, ते तो कर्म काटे दिन रात ।
 ते पिण छै भाव जीव चोखो, दिन दिन नेडी करे छै मेखो ॥ ६० ॥
 कहि कहि नें कितोएक केहू, द्रव्य ने भाव जीव छै बेहू ।
 त्यानें रुडी रीत पिछांगो, छै ज्यूं रा ज्यूं हीया माहे जाणो ॥ ६१ ॥
 द्रव्य भाव ओलखावणी ताम, जोड़ कीधी श्री दुवारे सु ठाम ।
 समत अठारे पचावने वरस, चेत विद तिय तेरस ॥ ६२ ॥

२ : अजीव पदारथ

दुहा

हिबे अजीव ने ओलखायना, त्यांरा कर्हू छू भाव भेद ।
थोदा सा परगट कर्हू, ते सुणजो आण उमेद ॥ १ ॥

ढाल : २

[मम करो काया माया कारभी]

धर्म अधर्म आकास छै, काल ने पुदगल जाण जी ।
अे पाचूइ द्रव्य अजीव छे, त्यारी बुद्धवत करो पिछाण जी ।
ए अजीव पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥

यामे च्यार दरब ने अरूपी कह्या, त्यामेंवर्ण गध रस फरस नाहिजी ।
एक पुदगल द्रव्य रूपी कह्यो, वर्णादिक सर्व तिण माहि जी ॥ २ ॥

अे पाचूइ द्रव्य भेला रहे, पिण भेल सभेल न होय जी ।
आप आप तणो गुण ले रह्या, त्याने भेला कर सके नही कोय जी ॥ ३ ॥

धर्म द्रव्य धर्मास्तीकाय छै, आसती ते छती वसत ताय जी ।
असख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्याय जी ॥ ४ ॥

अधर्म द्रव्य अधर्मास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत ताय जी ।
असख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्यायजी ॥ ५ ॥

आकास द्रव्य आकास्तीकाय छै, आ पिण छती वसत छै ताय जी ।
अनत प्रदेस छे तेहना, तिण सू काय कही जिणराय जी ॥ ६ ॥

धर्मास्ती अधर्मास्तीकाय तो, पेहली छै लोक प्रमाण जी ।
लोक अलोक प्रमाण आकास्ती, लग्बी ने पेहली जाण जी ॥ ७ ॥

धर्मास्ती ने अधर्मास्ती, बले तीजो आकास्तीकाय जी ।
अे तीनुँ कही जिण सासती, तीनुँइ काल रे माय जी ॥ ८ ॥

अे तीनुँइ द्रव्य छै जू जूआ, जूआ जूआ गुण परजाय जी ।
त्यारी गुण परजाय पलटे नही, सासता तीन काल रे माय जी ॥ ९ ॥

ए तीनुँइ द्रव्य फेली रह्या, ते तो हाले चाले नही ताय जी ।
हाले चाले ते पुदगल जीव छे, ते फिरे छै लोक रे माय जी ॥ १० ॥

जीव ने युदगल चाले तेहने, साज धर्मास्तीकाय जी ।
अनंता चाले त्याने साज छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ ११ ॥

ॐ यह आँकड़ी हे । प्रत्येक गाथा के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति समझनी चाहिए ।

जीव ने पुदगल थिर रहे, त्यानें साज अधर्मास्तीकाय जी ।
 अनता थिर रहे त्याने साम छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ १२ ॥
 जीव अजीव सर्व द्रव्य नों, भाजन आकास्तीकाय जी ।
 अनता रो भाजन तेह सू, अनती कही परजाय जी ॥ १३ ॥
 चालवाने साज धर्मास्ती, थिर रहेवाने अधर्मास्तीकाय जी ।
 आकास विकास भाजन गुण, सर्व द्रव्य रहै तिण मांय जी ॥ १४ ॥
 धर्मास्ती रा तीन भेद छे, खंघ ने देस परदेस जी ।
 आखी धर्मास्ती खद छे, ते उंगी नही लवलेस जी ॥ १५ ॥
 एक प्रदेस थी आदि दे, एक प्रदेस उणो खंघ न होय जी ।
 त्यां लग देस प्रदेस छे, तिणने खव म जाणजो कोय जी ॥ १६ ॥
 धर्मास्ती काय तो सेयाले पछी, तावडा छांही ज्यू एक धार जी ।
 तिणरे बेठो ने दीटो कोई नही, वले नही छेकी साव लिगार जी ॥ १७ ॥
 पुदगलास्ती सू प्रदेस न्यारो पखो, तिणने परमाणु कह्यो जिणदाय जी ।
 तिण सूखम परमाणु थकी । तिण सू मापी छै धर्मास्तीकाय जी ॥ १८ ॥
 एक परमाणुओ फरसे धर्मास्ती, तिणने प्रदेस कह्यो जिणराय जी ।
 इण मापा सू धर्मास्ती काय नां, असंख्याता प्रदेस हुवे ताय जी ॥ १९ ॥
 तिण सू असख्यात प्रदेसी धर्मास्ती, अधर्मास्ती पिण इमहीज जाण जी ।
 अनंता आकास्ती काय नां, प्रदेस इण रीत पिछाण जी ॥ २० ॥
 काल पदारथ तेहनां, द्रव्य कहया छै अनंत जी ।
 नीपना नीपजे ने नीपजसी बलि, तिणरो कदेय न आवसी अंत जी ॥ २१ ॥
 गये काल अनता समां हूआ, वरतमान समो एक जाण जी ।
 आगमीये काले अनंता हुसी, ए काल द्रव्य पिछाण जी ॥ २२ ॥
 काल द्रव्य नीपजवा आसरी, सासतो कह्यो जिणराय जी ।
 ऊमजे नें विणसे तिण आसरी, असासतो कह्यो इण न्याय जी ॥ २३ ॥
 तिण सू काल द्रव्य नही सासता, ए तो उपजे छै जेम प्रवाह जी ।
 जे उपजे ते समो विणसे सही, तिणरो कदेय न आवे छै थाह जी ॥ २४ ॥
 सूरज ने चन्द्रमादिक नी चाल थी, समो नीपजे दगचाल जी ।
 नीपजवा लेखे तो काल सासतो, समयादिक सर्व अघा काल जी ॥ २५ ॥
 एक समो नीपजे ने विणसे गयो, पछै बीजो समो हुवे ताय जी ।
 बीजो विणस्यो तीजो नीपजे, इन अणुक्रमे नीपजता जाय जी ॥ २६ ॥
 काल वरेत छै अढाइ धीप में, अढी दीप वारे काल नाहि जी ।
 अढी धीप वारला जोतषी, एक ठाम रहे त्यांरा त्याहि जी ॥ २७ ॥

पुदगल रा द्रव्य अनंता कहा, ते द्रव्य तो सासता जाण जी ।
 भावे तो पुदगल असासतो, तिणरी बुचवंत करजो पिछाण जी ॥ ४४ ॥
 पुदगल रा द्रव्य अनंता कहा, ते घटे वचे नही एक जी ।
 घटे वचे ते भाव पुदगल, तिणरा छै भेद अनेक जी ॥ ४५ ॥
 तिणरा च्यार भेद जिणवर कहा, खंघ नें देस प्रदेश जी ।
 चौथो भेद न्यारो परमाणुओ, तिणरो छै ओहीज विसेस जी ॥ ४६ ॥
 खंघ रे लागो त्यां लग परदेस छै, ते छूटने एकलो होय जी ।
 तिणनें कहीजे परमाणुओ, तिण मे फेर पड़यो नही कोय जी ॥ ४७ ॥
 परमाणु ने प्रदेश तुल छै, तिणरी संका मूल म आण जी ।
 आंगल रे असंख्यातमें भाग छै, तिणने ओलखो चतुर सुजाण जी ॥ ४८ ॥
 उतकष्टो खंघ पुदगल तणो, जब सम्पूर्ण लोक प्रमाण जी ।
 आंगुल रे भाग असंख्यातमें, जगन खंघ एतलो जाण जी ॥ ४९ ॥
 अनत प्रदेशीयो खंघ हुवे, एक प्रदेश क्षेत्र मे समय जी ।
 ते पुदगल फेल मोटो खंघ हुवे, ते सम्पूर्ण लोक रे मांय जी ॥ ५० ॥
 समचे पुदगल तीन लोक में, खाली ठोर जायगां नही काय जी ।
 ते आमां स्हामां फिर रह्या लोक में, एक ठाम रहे नही ताय जी ॥ ५१ ॥
 थित च्यारुई भेदां तणी, जगन तो एक समो छै तांम जी ।
 उतकष्टी असंख्याता काल नी, ए भावे पुदगल तणा परिणाम जी ॥ ५२ ॥
 पुदगल नो सभाव छै एहबो, अनंता गले ने मिल जाय जी ।
 तिण सूं पुदगल रा भाव री, अनंती कही परजाय जी ॥ ५३ ॥
 जे जे वस्तु नीपजे पुदगल तणी, ते ते सगली विललाय जी ।
 त्याने भावे पुदगल जिणवर कहा, द्रव्य तो ज्यूं रा ज्यूं रहै ताय जी ॥ ५४ ॥
 आठ कर्म नें शरीर असासता, ए नीपना हूआ छै ताय जी ।
 तिण सूं भाव पुदगल कहा तेह ने, द्रव्य तो नीपजायो नही जाय जी ॥ ५५ ॥
 छाया तावडो प्रभा कांति छै, ए सगला भाव पुदगल जाण जी ।
 वले अंवारो ने उद्योत छै, ए पुदगल भाव पिछाण जी ॥ ५६ ॥
 हलको भारी सुहालो खरदरो, गोल वटादिक पांच संठाण जी ।
 षड् पड्डा ने वलादिक, ए सगला भावे पुदगल जाण जी ॥ ५७ ॥
 घरत गुलादिक दसूं विणे, भोजनादि सर्व वखाण जी ।
 वले सख विवध प्रकार ना, ए सगला भावे पुदगल जाण जी ॥ ५८ ॥
 सइकडां मण पुदगल बल गया, पिणद्रव्ये तो बल्यो नही असं मात जी ।
 ए भावे पुदगल उपनां हुंता, ते भावे पुदगल विणस जात जी ॥ ५९ ॥

सद्कडां मण - पुद्गल उपनां, पिण द्रव्य तो नहीं उपनों लिंगार जी ।
 उपनां तेहीज विणससी, पिण द्रव्य तो नहीं विगाड़ जी ॥ ६० ॥
 द्रव्य तो कदेइ विणसे नहीं, तीनोंइ काल रे मांय जी ।
 उपजे ने विणसे ते भाव छै, ते पुद्गल री परजाय जी ॥ ६१ ॥
 पुद्गल नें कह्यो सासतो असासतो, द्रव ने भाव रे न्याय जी ।
 कह्यो छै उत्तरावेन छत्तीस में, तिण में संका म आंणजो कांय जी ॥ ६२ ॥
 अजीव द्रव्य ओल्लखायवा, जोड़ कीची श्री दुवारा मजार जी ।
 संवत अठारे पचावनें, वैसाख विद पांचम बुधवार जी ॥ ६३ ॥



३: पुन पदारथ

ढाल : ३

ढुहा

पुन पदार्थ छै तीसरो, तिणसूं सुख मानें संसार ।
काम भोग शबदादिक पामें तिण थकी, तिणने लोक जाणे श्रीकार ॥ १ ॥
पुन रा सुख छै पुदगल तणा, काम भोग शबदादिक जाण ।
ते मीठा लागे छै कर्म तणे वसे, ग्यांनी तो जाणे जेहर समान ॥ २ ॥
जेहर सरीर में त्यां लगे, मीठा लागे नीब पान ।
ज्युं कर्म उदय हुवे जीव रे जब, लागे भोग इमरत समान ॥ ३ ॥
पुन तणा सुख कारमा, तिण में कला म जाणो काय ।
मोह कर्म वस जीवड़ा, तिण सुख में रह्या लपटाय ॥ ४ ॥
पुन पदार्थ तो सुभ कर्म छै, तिणरी मूल न करणी चाय ।
तिण नें जयातथ परगट कळं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्पा न आशीये]

पुन तो पुदगल री परजाय छै, जीव रे आय लागे ताम रे लाल ।
ते जीव रे उदय आवे सुभ पणे, तिणसूं पुदगल रो पुन छै नाम रे लाल ॥
पुन पदारथ ओखवो ॥ १ ॥
च्यार कर्म ते एकंत पाप छै, च्यार कर्म छै पुन ने पाप हो लाल ।
पुन कर्म थी जीव ने, साता हुवे पिण न हुवे संताप हो लाल ॥ २ ॥
अनंता प्रदेस छे पुन तणा, ते जीव रे उदय हुवे आय हो लाल ।
अनंतो सुख करे जीव रे, तिणसुं पुन री अनती परजाय हो लाल ॥ ३ ॥
निरवद जोग वरते जब जीव रे, सुभ पणे लागे पुदगल ताम हो लाल ।
त्यां पुदगल तणा छै जू जूआ, गुण परिणामे त्यांरा नाम हो लाल ॥ ४ ॥

साता वेदनीय पणे परणम्यां,
 ते सुखसाता करे जीव ने,
 पुद्गल परणम्यां सुभ आउखा पणे,
 जाणे जीविये पिण न मरजीये,
 केइ देवता नें केइ मिनख रो,
 जुगलीया तियंच रो आउखो,
 सुभ नाम पणे आए परणम्या,
 अनेक वाना सुघ हुवे तेह सू,
 सुभ आउखा रा मिनख नें देवता,
 केइ जीव पचेन्द्रिय विसुघ छै,
 पांच वरीर छै सुघ निरमला,
 ते पामे शुभ नाम उदय हुआ,
 पेला संघयण ना रूडा हाड छै,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला वर्ण मिले जीव ने,
 ते पामे सुभ नाम उदे हुआ,
 भला भला मिले गंध जीव ने,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले रस जीव ने,
 ते पामे सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले फरस जीव ने,
 ते पामें सुभ नाम उदय थकी,
 तस रो दस को छै पुन उदे,
 त्याने जूआ जूआ कर वरणवू,
 १तस नाम शुभ कर्म उदय थकी,
 २बादर सुभ नाम कर्म उदय हुआं,
 ३प्रतेक सुभ नाम उदें हुआ,
 ४प्रज्यापता सुभ नाम थी,
 ५शुभ थिर नाम कर्म उदे थकी,
 ६सुभ नाम थी नाभमस्तक लगे,
 ७सोभाग नाम सुभ कर्म थी,
 ८सुस्वर सुभ नाम कर्म सुं,

साता पणे उदय आवे ताम हो लाल ।
 तिण सूं साता वेदनी दीयो नाम हो लाल ॥ ५ ॥
 घणो रहणो वाछै तिण ठाम हो लाल ।
 सुभ आउखो तिण रो नाम हो लाल ॥ ६ ॥
 सुभ आउखो पुन ताय हो लाल ।
 दीसे छै पुन रे मांय हो लाल ॥ ७ ॥
 ते उदय आवे जीव रे ताय हो लाल ।
 नाम कर्म कह्यो जिणराय हो लाल ॥ ८ ॥
 त्यारी गति ने आणपूर्वी सुघ हो लाल ।
 त्यारी जात पिण पुन विसुघ हो लाल ॥ ९ ॥
 त्यारा निरमला तीन उपंग हो लाल ।
 सरीर ने उपंग सुचंग हो लाल ॥ १० ॥
 पहलो संठण रुडे आकार हो लाल ।
 हाड ने आकार श्रीकार हो लाल ॥ ११ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १२ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १३ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १४ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १५ ॥
 सुभ नाम उदय सू जाण हो लाल ।
 निरणो कीजो चतुर सुजाण हो लाल ॥ १६ ॥
 तसपणो पामें जीव सोय हो लाल ।
 जीव चेतन बादर होय हो लाल ॥ १७ ॥
 प्रतेक सरीरी जीव थाय हो लाल ।
 प्रज्यापतो होय जाय हो लाल ॥ १८ ॥
 सरीर ना अवयव दिढ थाय हो लाल ।
 अवयव रूडां हूवै ताय हो लाल ॥ १९ ॥
 सर्व लोक नें बलभ होय हो लाल ।
 सुस्वर कंठ मीठी हुवे सोय हो लाल ॥ २० ॥

°आदेज वचन सुभ करम थी,	तिणरो वचन मानें सहु कोय हो लाल ।
°जस किती सुभ नाम उदे हूआं,	जश कीरत जग में होय हो लाल ॥ २१ ॥
अगुरलधू नाम कर्म सू,	सरीर हलको भारी नही लगात हो लाल ।
परघात सुभ नाम उदे थकी,	आप जीते पेलो पामें घात हो लाल ॥ २२ ॥
उसास सुभ नाम उदे थकी,	सास उसास सुखे लेवंत हो लाल ।
आताप सुभ नाम उदे थकी,	आप सीतल पेलो तपंत हो लाल ॥ २३ ॥
उद्योत सुभ नाम उदे थकी,	सरीर नो उजवालो जाण हो लाल ।
सुभ गइ सुभ नाम कर्म सू,	हंस ज्यूं चोखी चाल वखाण हो लाल ॥ २४ ॥
निरमाण सुभ नाम कर्म सू,	सरीर फोड़ा फूलंगणा रहीत हो लाल ।
तीर्थंकर नाम कर्म उदे हूआं,	तीर्थंकर हुवे तीन लोक वदीत हो लाल ॥ २५ ॥
केइ जगलीयादिक तिरयंच नी,	गति नें आणपूर्वी जाण हो लाल ।
ते तो प्रतक दीसे पुन तणी,	ग्यानी वदे ते परमाण हो लाल ॥ २६ ॥
पेहलो सघेण संठाण वरज ने,	च्यार सघेण संठाण हो लाल ।
त्यामें तो भेल दीसे छै पुन तणी,	ग्यानी वदे तो परमाण हो लाल ॥ २७ ॥
जे जे हाड छै पहिला सघेण में,	तिण माहिला च्यारां माय हो लाल ।
त्याने जाबक पाप में घालीया,	मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २८ ॥
जे जे आकार पहिला संठाण में,	तिण माहिला च्यारां मांय हो लाल ।
त्याने जाबक पाप में घालीया,	ओ पिण मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २९ ॥
उच गोत पणे आय परणभ्या,	ते उदे आवे जीव रे तांम हो लाल ।
उंच पदवी पामें तिण थकी,	उंच गोत छै तिण रो नांम हो लाल ॥ ३० ॥
सगली न्यात थकी उंची न्यात छै,	तिणमें कठे न लागे छोट हो लाल ।
एहवा छै मिनष ने देवता,	त्यांरो कर्म छै उंच गोत हो लाल ॥ ३१ ॥
जे जे गुण आवे जीव रे सुभ पणे,	जेहवा छै जीव रा नाम हो लाल ।
तेहवाइज नाम पुदगल तणा,	जीव तणे संयोगे तांम हो लाल ॥ ३२ ॥
जीव सुघ हूओ पुदगल थकी,	तिण सूं रूडा रूडा पाया नांम हो लाल ।
जीव ने सुघ कीघो पुदगल,	त्यांरा पिण सुघ छै नाम तांम हो लाल ॥ ३३ ॥
ज्यां पुदगल रां प्रसंग थी,	जीव वाज्यो संसार में उंच हो लाल ।
ते पुदगल पिण उच वाजीया,	त्यांरो न्याय न जाणे भूंच हो लाल ॥ ३४ ॥
पदवी तियंकर ने चक्रवत तणी,	वासुदेव बलदेव महंत रे लाल ।
वले पदवी मडलीक राजा तणी,	सारी पुन थकी लहत रे लाल ॥ ३५ ॥
पदवी देविंद्रो ने नरिंद्र नी,	वले पदवी अहमिंद्र वखाण हो लाल ।
इत्यादिक मोटी मोटी पदवीयां,	सहु पुन तणे परमाण हो लाल ॥ ३६ ॥

जे जे पुद्गल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जाण हो लाल ।
 त्यां सूं सुख उपजे संसार में, पुन रा फल एह पिच्छाण हो लाल ॥ ३७ ॥
 बाला विच्छेदीया आए मिले, संणा तणो मिले संजोग हो लाल ।
 ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल ॥ ३८ ॥
 हाथी घोड़ा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आण हो लाल ।
 रिख विरघ ने सुख संपत्त मिलै, ते पुन तणे परिमाण हो लाल ॥ ३९ ॥
 खेतु^१ वत्थू^२ हिरण^३ सोवनादिक^४, धन^५ धान^६ ने कुत्रीं घात^७ हो लाल ।
 दोपद^८ चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल ॥ ४० ॥
 हीरा माणक मोती मूगीया, वले रत्तां री जात अनेक हो लाल ।
 ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन विना मिले नहीं एक हो लाल ॥ ४१ ॥
 गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपच्छर रे उणीधार हो लाल ।
 ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल ॥ ४२ ॥
 ते सुख पामें देवता तणा, ते तो पूरा कह्या न जाय हो लाल ।
 पल सागरां ल्हा सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल ॥ ४३ ॥
 रूप सरीर नों सुन्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल ।
 ते गमतो लागे सर्व लोग ने, तिणरो बोल्यो गमे वास्वार हो लाल ॥ ४४ ॥
 जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जाण हो लाल ।
 ते कहि कहि नें कितरो कहुं, बुधवंत लीज्यो पिच्छाण हो लाल ॥ ४५ ॥
 ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, संसार लेखे श्रीकार हो लाल ।
 त्यांनैं मोख सुखां सूं मीढीये, तो ए सुख नहीं मूल लिंगार हो लाल ॥ ४६ ॥
 पुद्गलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल ।
 आतमीक सुख छै मुगत नां, त्यांने तो ओपमा नहीं काय हो लाल ॥ ४७ ॥
 पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लागे अतंत हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदे हूआं जीव नें, सबदादिक सर्व गमता लागंत हो लाल ॥ ४८ ॥
 सर्प डंक लागा जहर परगम्यां, मीठा लागे नीब पान हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लागे भोग परधान हो लाल ॥ ४९ ॥
 रोगीला सुख छे पुद्गल तणा, तिणमें कला म जाणो लिंगार हो लाल ।
 ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नहीं लागे वार हो लाल ॥ ५० ॥
 आतमीक सुख छै सासता, त्यां सुखां रो नहीं कोइ पार हो लाल ।
 ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल ॥ ५१ ॥
 पुन तणी वद्धा कीयां, लागे छै एकंत पाप हो लाल ।
 तिण् सूं दुःख पामें संसार में, वचतो जाये सोग संताप हो लाल ॥ ५२ ॥

जिणसूं पुन तणी वंछा करी, तिण वांछिया कांम नें भोग हो लाल ।
 त्यांने दुःख होसी नरक निगोद नां, वले वाला रा पइसी विजोग हो लाल ॥ ५३ ॥
 पुन तणा सुख अंसासता, ते पिण करणी विण नहीं थाय हो लाल ।
 निरवद करणी करे तेहने, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ॥ ५४ ॥
 पुन री वंछा सूं पुन न नीपजे, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ।
 ते तो लागे छै निरवद जोग सूं, निरजरा री करणी सूं ताय हो लाल ॥ ५५ ॥
 भली लेख्या ने भला परिणाम थी, निश्चेइ निरजरा थाय हो लाल ।
 जब पुन लागे छै जीव रे, सहजे सभावे ताय हो लाल ॥ ५६ ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी, पुन तणी मन में धार हो लाल ।
 ते तो करणी खोएनें बापडा, गया जमारो हार हो लाल ॥ ५७ ॥
 पुन तो चोफरसी कर्म छै, तिणरी वंछा करे ते मूढ हो लाल ।
 त्यां कर्म ने धर्म न ओलख्यो, करे करे मिथ्यात नी रूढ हो लाल ॥ ५८ ॥
 जे जे पुन थी वस्त मिले तके, त्यांने त्याग्यां निरजरा थाय हो लाल ।
 जो पुन भोगवे त्रिबी थको, तो चीकणा कर्म बंधाय हो लाल ॥ ५९ ॥
 जोड कीवी पुन ओलखायवा, श्रीजी दुवारा सहर मभार हो लाल ।
 संवत अठारे पचावने, जेठ विद नवमी सोमवार हो लाल ॥ ६० ॥

ढाल : ४

दुहा

नव प्रकारे पुन नीपजे, ते करणी निरवद जाण ।
 बयांलीस प्रकारे भोगवे, तिणरी ब्रुववंत करजो पिछांण ॥ १ ॥
 पुन नीपजे तिण करणी मभे, तिहां निरजरा निश्चे जाण ।
 तिण करणी री छै जिण आगना, तिण मांहे संक म आंण ॥ २ ॥
 केई साव वाजे जैन रा, त्यां दीवी जिण मारग नें पूठ ।
 पुन कहे कुपातर ने दीयां, त्यांरी गई अभितर फूट ॥ ३ ॥
 काचो पाणी अणगल पावे तेहनें, कहै छै पुन नें धर्म ।
 ते जिण मारग सू वेगला, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
 साव विना अनेरा सर्व ने, सचित अचित दीयां कहे पुन ।
 वले नांव लेवे ठाणा अंग रो, ते तो पाठे विना छै अर्थ सुन ॥ ५ ॥
 किणहीएक ठाणा अंग मभे, घाल्यो छै अर्थ विपरीत ।
 ते पिण सगला ठाणा अंग में नहीं, जोय करो तहलीक ॥ ६ ॥
 पुन नीपजे छै किण विवे, जोवो सूतर मांय ।
 श्री वीर जिणेसर भापीयो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[राजा रामजी हो रेख छमासी...]

पुन नीपजे सुभ जोग सूं रे लाल, सुभ जोग जिण आगना मांय हो । भविकजण*
 ते करणी छै निरजरा तणी रे लाल, पुन सहिजां लागे छै आय हो ॥ भविकजण ।*
 पुन नीपजे सुभ जोग सं रे लाल ॥ १* ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी रे लाल, तिणारी आगना देवे जगनाथ हो ।
 तिण करणी करतां पुन नीपजे रे लाल, व्यूं खाखलो गोहां हुवे साथ हो ॥ २ ॥
 पुन नीपजे तिहां निरजरा हुवे रे लाल, ते करणी निरवद जांग हो ।
 सावद्य करणी में पुन नहीं नीपजे रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजांण हो ॥ ३ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बीलीयां रे लाल, साधु नें देवे असुघ आहार हो ।
 तिण सूं अल्प आउखो बंधे तेहनें रे लाल, ते आउखो पाप मभार हो ॥ ४ ॥
 लांबो आउषो बंधे तीन बोल सूं रे लाल, लांबो आउषो छै पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, बले बोले नहीं मूसावाय हो ॥ ५ ॥
 तथारूप श्रमण निर्ग्रथ नें रे लाल, देवे फासु निरदोष च्यांल आहार हो ।
 यां तीनां बोलां पुन नीपजे रे लाल, ठांगा अंग तीजा ठांगा मभार हो ॥ ६ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बोलीयां रे लाल, साधु नें हेले निदे ताय हो ।
 आहार अमनोग नें अपीयकारी दीये रे लाल, तो उसभ लांबो आउषो बंधाय हो ॥ ७ ॥
 सुभ लांबो आउषो बंधे इण विघे रे लाल, ते पिण आउषो पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीव री रे लाल, बले बोले नहीं मूसावाय हो ॥ ८ ॥
 तथारूप समण निर्ग्रथ ने रे लाल, करे वंदणा ते नमसकार हो ।
 पीतकारी बेहरावे च्यांल आहार नें रे लाल, ठांगा अंग तीजा ठांगा मभार हो ॥ ९ ॥
 एहीज पाठ भगोती सूतर मभे रे लाल, पांचमें सतक षष्ठप उदेश हो ।
 संका हुवे तो निरणे करो रे लाल, तिणमें कूड़ नहीं लवलेश हो ॥ १० ॥
 वंदणा करतां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत बंधे बले ताय हो ।
 ते वंदणा करण री जिण आगना रे लाल, उत्तरावेन गुणतीसमां मांय हो ॥ ११ ॥
 धर्म कथा कहै तेहनें रे लाल, बंधे किल्याणकारी कर्म हो ।
 उत्तरावेन गुणतीसमां अवेनमें रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 करे वीयावच तेहनें रे लाल, बंधे तीर्थकर नाम कर्म हो ।
 उत्तरावेन गुणतीसमां अवेन में रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १३ ॥
 बीसां बोलां करेनें जीवइ रे लाल, करमां री कोड़ खपाय हो ।
 जब बांधे तीर्थकर नाम कर्म नें रे लाल, गिनाता आठ्मा अवेन मांय हो ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी है । प्रत्येक गाथा के अन्त में इसकी पुनरावृत्ति सगभनी चाहिए ।

सुबाहू कुमर आदि दस जणा रे लाल, त्यां साधां नें असणाविक वेंहराय हो ।
 त्यां बांध्यो आउषो मिनख रो रे लाल, कह्यो विपाक सुतर रे मांय हो ॥ १५ ॥
 प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, दुःख न दे उपजावे सोग नांय हो ।
 अभ्रूरणया नें अतीप्यणया रे लाल, अपिट्टणया परिताप नहीं दे ताय हो ॥ १६ ॥
 ए छ प्रकारे बंधे साता वेदनी रे लाल, उलटा कीषां असाता थाय हो ।
 भगोती सतबंध सातमें रे लाल, छठा उदेसा मांय हो ॥ १७ ॥
 करकस वेदनी बंधे जीवरे रे लाल, अठारे पाप सेव्यां बंधाय हो ।
 नही सेव्यां बंधे अकरकस वेदनी रे लाल, भगोती सातमां सतक छठा मांय हो ॥ १८ ॥
 कालोदाई पूछ्यो भगवांन नें रे लाल, सुतर भगोती मांहि ए रेस हो ।
 किल्याणकारी कर्म किण विध बंधे रे लाल, सातमें सतक दसमें उदेस हो ॥ १९ ॥
 अठारे पाप थांनक नही सेवीयां रे लाल, किल्यांण कारी कर्म बंधाय हो ।
 अठारे पाप थांनक सेवे तेह सूं रे लाल, बंधे अकिल्यांणकारी कर्म आय हो ॥ २० ॥
 प्राण भूत जीव सत्व ने रे लाल, बहु सबदे च्याहूंद मांहि हो ।
 त्यांरी करे अणुकम्पा दया आणने रे लाल, दुःख सोग उपजावे नाहि हो ॥ २१ ॥
 अभ्रूरणया ने अतीप्यणया रे लाल, अपिट्टणया नें अपरिताप हो ।
 या चवदे सूं बंधे साता वेदनी रे लाल, यां उलटा सूं बंधे असाता पाप हो ॥ २२ ॥
 माहा आरंभी ने माहा परिग्रही रे लाल, करे पंचिद्री नी घात हो ।
 मद मांस तणो भक्षण करे रे लाल, तिण पाप सूं नरक में जात हो ॥ २३ ॥
 माया कपट ने गूढ माया करे रे लाल, वले बोलै मूसावाय हो ।
 कूडा तोला ने कूडा मापा करे रे लाल, तिण पाप सूं तिरजंच थाय हो ॥ २४ ॥
 प्रकत रो भद्रीक^१ नें वनीत^२ छै रे लाल, दया^३ नें अमच्छरभाव^४ जाण हो ।
 तिण सूं बंधे आउषो मिनख रो रे लाल, ते करणी निरवद पिछांण हो ॥ २५ ॥
^१पाले सराग पणे साधुण्णो रे लाल, वले ^२श्रावक रा वरत वार हो ।
 बाल तपसा^३ने अकामनिरजरा^४ रे लाल, यां सूं पामें सुर अवतार हो ॥ २६ ॥
 काया सरल^५ भाव सरल^६ सूं रे लाल, वले भाषा सरल^७ पिछांण हो ।
 जेहवो करे तेहवो मुख सूं कहे^८ रे लाल, यां सूं बंधे सुभ नाम कर्म जाण हो ॥ २७ ॥
 ए च्याहूँ बोल वांका वरतीयां रे लाल, बंधे उसभ नाम कर्म हो ।
 ते सावच्च करणी छै पापरी रे लाल, तिण में नही निरजरा धर्म हो ॥ २८ ॥
 जात^९ कुल^{१०} बल^{११} रूप^{१२} नो रे लाल, तप^{१३} लाभ^{१४} सुतर^{१५} ठाकुराय^{१६} हो ।
 ए आठोई मद करे नही रे लाल, तिण सूं उंच गोत बंधाय हो ॥ २९ ॥
 ए आठोई मद करे तेहने रे लाल, बंधे नीच गोत कर्म हो ।
 ते सावच्च करणी पाप री रे लाल, तिण मे नहीं पुन धर्म हो ॥ ३० ॥

ग्यांनावर्णीं नें दरसणावर्णीं रे लाल,
 ये च्यारूँइ एकंत पाप कर्म छै रे लाल,
 वेदनी आउषी नाम गोत छै रे लाल,
 तिणमें पुन री करणी निरवद कही रे लाल,
 ए भगवती शतक आठ में रे लाल,
 पुन पाप तणी करणी तणो रे लाल,
 १ करणी करे नीहांगो नहीं करे रे लाल,
 २ समाध जोग वरते तेहनो रे लाल,
 ३ पांचूं इंद्री ने वश कीयां रे लाल,
 ४ अपासत्थपणो ग्यांनादिक तणो रे लाल,
 ५ हितकारी प्रवचन आठां तणो रे लाल,
 यां दसां बोलां बंधे जीवरे रे लाल,
 ते किल्याणकारी कर्म पुन छै रे लाल,
 ते ठाणा अंग दसमें ठाणे कह्यो रे लाल,
 अन पुने पांण पुने कह्यो रे लाल,
 मन पुने वचन काया पुने रे लाल,
 पुन्य बंधे नव प्रकार सूं रे लाल,
 ते नवोई बोलां में जिण आगना रे लाल,
 कोई कहै नवोई बोल समचे कह्यो रे लाल,
 सचित्त अचित्त पिण नही कह्यो रे लाल,
 तिण सूं सचित्त अचित्त दोनूं कह्यो रे लाल,
 पुन नीपजे दीषां सकल नें रे लाल,
 साव श्रावक पातर ने दीयां रे लाल,
 अनेरां ने दान दीषां थकां रे लाल,
 इम कहै नाम लेई ठाणा अंग नों रे लाल,
 ते अर्थ अणहंतो घालीयो रे लाल,
 जो अनेरा ने दीयां पुन नीपजे रे लाल,
 कुपातर ने दीयां पुन किहां थकी रे लाल,
 पुन रा नव बोलतो समचे कह्यो रे लाल,
 ज्युं वंदणा वीयावच पिण समचे कही रे लाल,
 वंदणा कीषां खपावे नीच गोत ने रे लाल,
 तीथंकर गोत बंधे वीयावच कीयारे लाल,

वले मोहणी नें - अंतराय हो ।
 त्यांरी करणी नहीं आग्या मांय हो ॥ ३१ ॥
 ए च्यारूँइ कर्म पुन पाप हो ।
 तिणरी आग्या दे जिन आप हो ॥ ३२ ॥
 नवमां उदेसा मांय हो ।
 ते जाणे समदिष्टी न्याय हो ॥ ३३ ॥
 ३ चोखा परिणामां समकतवंत हो ।
 खिमा करी परीसह खमंत हो ॥ ३४ ॥
 ६ वले माया कपट रहीत हो ।
 ८ समणपणे छै सहीत हो ॥ ३५ ॥
 १ ० धर्म कथा कहें विसतार हो ।
 किल्याणकारी कर्म श्रीकार हो ॥ ३६ ॥
 त्यांरी करणी पिण निरवद जाण हो ।
 तिहां जोय करो पिछांण हो ॥ ३७ ॥
 लेण सेण वल्ल पुन जाण हो ।
 नमसकार पुने नवमों पिछांण हो ॥ ३८ ॥
 ते नवोई निरवद जाण हो ।
 तिणरी करज्यो पिछाण हो ॥ ३९ ॥
 सावध निरवद न कह्यो तांम हो ।
 पातर कुपातर रो पिण नहीं नांम हो ॥ ४० ॥
 पातर कुपातर ने दीयां तांम हो ।
 ते भूठ बोले सुतर रो ले ले नांम हो ॥ ४१ ॥
 तीथंकर नामादिक पुन थाय हो ।
 अनेरी पुन प्रकत बंधाय हो ॥ ४२ ॥
 नवमा ठाणा में अर्थ दिखाय हो ।
 ते भोलां ने खबर न काय हो ॥ ४३ ॥
 जब टलीयो नहीं जीव एक हो ।
 समभो आंण विवेक हो ॥ ४४ ॥
 उण ठामें तो नहीं छं नीकाल हो ।
 ते गुणवंत सूं लेजो संभाल हो ॥ ४५ ॥
 उंच गोत कर्म बंधाय हो ।
 ते पिण समचे कह्यो छै ताय हो ॥ ४६ ॥

तीर्थकर गोत बवे वीस बोल सूं रे लाल, त्यामे पिण समचे बोल अनेक हो ।
समचे बोल घणा छै सिधंत में रे लाल, त्यामें कुण समके विगर ववेक हो ॥ ४७ ॥
जो अन पुने समचे दीघां सकल ने रे लाल, ते नवोई समचे जाण हो ।
हुवे निरणी कहुं छूं नवां ही तणीं रे लाल, ते मुणज्यो चतुर सुजाण हो ॥ ४८ ॥
अन सचित्त अचित्त दीघां सकलने रे लाल, जो पुन नीपजे छै तांम हो ।
तो इमहीज पुन पांणी दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर पुन आंम हो ॥ ४९ ॥
इमहीज मन पुने समचे हुवे रे लाल, तो मन भूडोई वरत्यां पुन थाय हो ।
क्ले वचन पुने पिण समचे हुवे रे लाल, भूडो बोल्याई पुन बंधाय हो ॥ ५० ॥
काय पुने विण समचे हुवे रे लाल, तो काया सूं हिसा कीयां पुन होय हो ।
नमसकार पुने पिण समचे हुवे रे लाल, तो सकल ने नम्यां पुन जोय हो ॥ ५१ ॥
मन वचय काया माठा वरतीयां रे लाल, जो लागे छै एकंत पाप हो ।
तो नवोई बोल इम जाणजो रे लाल, उथप गई समचे री थाप हो ॥ ५२ ॥
मन वचन काया सूं पुन नीपजे रे लाल, ते निरवद वरत्यां होय हो ।
तो नवोई बोल इम जाण जो रे लाल, सावद्य मे पुन न कोय हो ॥ ५३ ॥
नमसकार अनेरा ने कीयां थका रे लाल, जो लागे छै एकत पाप हो ।
तो अनादिक सचित्त दीयां थकां रे लाल, कुण करसी पुन री थाप हो ॥ ५४ ॥
निरवद करणी में पुन नीपजे रे लाल, सावद्य करणी सूं लागे पाप हो ।
ते सावद्य निरवद किम जांणीये रे लाल, निरवद में आग्या दे जिण आप हो ॥ ५५ ॥
अन पांणी पातर ने वेंहरावीयां रे लाल, लेण सयण वस्त्र वेहराय हो ।
त्यारी श्री जिण देवे आगना रे लाल, तिण ठामें पुन बंधाय हो ॥ ५६ ॥
अन पाणी अनेरा नें दीयां रे लाल, लेण सेण वसतर देवे ताय हो ।
त्यारी देवे नही जिण आगन्या रे लाल, तिणरे पुन किहां थी वधाय हो ॥ ५७ ॥
सुपातर ने दीया पुन नीपजे रे लाल, ते करणी जिण आगना माय हो ।
जो अनेरा नें दीयाई पुन नीपजे रे लाल, तिणरी जिण आगना नही काय हो ॥ ५८ ॥
ठाम र सुतर मे देखलो रे लाल, निरजररा ने पुन री करणी एक हो ।
पुन हुवे तिहां निरजररा रे लाल, तिहां जिण आगना छै शेष हो ॥ ५९ ॥
नव प्रकारे पुन नीपजे रे लाल, ते भोगवे वयालीस प्रकार हो ।
ते पुन उदे हुवे जीवरे रे लाल, सुख साता पामें संसार हो ॥ ६० ॥
ए पुन तणा सुख कारिया रे लाल, ते विणसंतां नहीं वार हो ।
तिणरी वद्धा नही कीजीये रे लाल, उयूं पामे भव पार हो ॥ ६१ ॥
जिण पुन तणी वद्धा करी रे लाल, तिण वंछीया काम नें भोग हो ।
संसार ववे काम भोग सूं रे लाल, तिहां पामें जन्म मरण सोग हो ॥ ६२ ॥

वंछा कीजे एक मुगत री रे लाल, और वंछा न कीजे लिंगार हो ।
 जे पुन तणी वंछा करें रे लाल, ते गया जमारो हार हो ॥ ६३ ॥
 संवत अठारे तयांले समे रे लाल, काती सुद चोथ विसपतवार हो ।
 पुन नीपजे ते ओलखायवा रे लाल, जोड़ कीघी कोठाख्या मभार हो ॥ ६४ ॥



४ : पाप पदारथ

ढाल : ५

दुहा

पाप पदारथ पाडूओ, ते जीव ने घणो भयंकार ।
ते घोर रुद्र छै बीहामणो, जीव ने दुःख नो दातार ॥ १ ॥
पाप तो पुदगल द्रव्य छै, त्याने जीव लगाया ताम ।
तिण सूं दुःख उपजे छै जीव रे, त्यारो पाप कर्म छै नाम ॥ २ ॥
जीव खोटा र किरतब करै, जब पुदगल लागे ताम ।
ते उदय आया दुख उपजे, ते आप कमाया काम ॥ ३ ॥
ते पाप उदय दुख उपजे, जब कोई म करजो रोस ।
आप कीघां जिसा फल भोगवे, कोई पुदगल रो नही देस ॥ ४ ॥
पाप कर्म ने करणी पाप री, दोनू जूआ जूआ छै ताम ।
त्याने जथातथ परगट कहं, ते सुणजो राख चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुमर हाथी रा भव मे]

घणघातीया च्यार कर्म जिण भाष्या, ते आभपडल वादल ज्यूं जाणो ।
त्यां जीव तणा निज गुण ने विगरया, चंद वादल ज्यू जीव कर्म ढकाणो ॥
पाप कर्म अन्तकरण ओलखीजे* ॥ १ ॥
ग्यानावर्णी ने दशर्णावर्णीय, मोहणी अन्तराय छै ताम ।
जीवरा जेहवा र गुण विगख्या, तेहवा र कर्मा रा नांम ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी कर्म ग्यान आवा न दे, दर्शणावर्णी दर्शण आवे दे नाही ।
मोहकर्म जीव ने करे मतवालो, अंतराय आछी वस्तु आडी छै माही ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ए कर्म तो पृथक् लही चोफरसी,
 त्यांरा उदा मू' खोटा २ जीवरा नाम,
 यां च्याहं कर्मा री जुद्धी २ प्रवृत्त,
 त्यां मू' जूजा २ जीव रा गुण अट्क्या.
 ग्यांनावर्णी कर्म री प्रवृत्त पांचे,
 मत ग्यांनावर्णी मत ग्यान रे आडी,
 अवधि ग्यांनावर्णी अवधि ग्यान ने रोके,
 केवल ग्यांनावर्णी केवल ग्यान रोके.
 ग्यांनावर्णी कर्म पयउपसन हुवै,
 केवल ग्यांनावर्णी तो खरोपसन न हुवै,
 दर्शावर्णी कर्म री नव प्रवृत्त छै,
 जीवां नें जावक कर देवे आंवा,
 चपू दर्शावर्णी कर्म उदे मू',
 अत्रमू दर्शावर्णी कर्म रे जोगे,
 अवधि दर्शावर्णी कर्म उदे मू',
 केवल दर्शावर्णी तणे परसणे,
 निद्रा मुतो तो मुखे जगत्यो जगे,
 ईंठां उभां जीव नें नींद आवे,
 प्रचला २ नींद उदे मू' जीव नें,
 पांचनी नींद छै कठन धीणोदी,
 पांच निद्रा नें च्यार दर्शावर्णी थी,
 देखन आशी दर्शावर्णी कर्म,
 दर्शावर्णी कर्म पयउपसन हुवे जव,
 दर्शावर्णी जावक पय होवे,
 तीजो धन धातिये मोहू कर्म छै,
 मूवो श्रद्धा रे विणे मूह निव्याती,
 मोहणी कर्म तणा नेय नेह क्हाया जिण,
 इन जीव रा निज गुण देण विगाड्या,
 वले दंसण मोहणी उदे हुव जव,
 चारित मोहणी कर्म उदे हुवे जव,
 दर्शन मोहणी कर्म उदे मू',
 दर्शन मोहणी उपसन हुवे जव,

त्यांनं खोटी करणी करे जीव ल्गाया ।
 तेहवा इज खोटा नाम कर्म रा क्हाया ॥ ४ ॥
 जूजा २ छै त्यांरा नाम ।
 त्यांरो थोडो सो विस्तार कहुं छूं तांन ॥ ५ ॥
 तिण मू' पांचोई ग्यान जीव न पावे ।
 सुरत ग्यांनावर्णी सुरत ग्यान न आवे ॥ ६ ॥
 मनपरज्यावर्णी मनपरज्या आडी ।
 यां पांचां में पांचनी प्रकत जाडी ॥ ७ ॥
 जव पानें छै च्यार ग्यान ।
 आ तो खय हुवां पामें केवल ग्यान ॥ ८ ॥
 ते देखना नें सुणवादिक आडी ।
 त्नां में केवल दर्शावर्णी सगलां में जाडी ॥ ९ ॥
 जीव चपू रहित हुवै अंत्र अयांण ।
 च्याहं इंद्रियां री पर जाये हांण ॥ १० ॥
 अवधि दर्शन न पामें जीवो ।
 उरजे नहीं केवल दरसन दीवो ॥ ११ ॥
 निद्रा २ उदे दुखे जगे छै तांम ।
 तिण नींद तणो छै प्रचला नाम ॥ १२ ॥
 हांतां चालतां नींद आवै ।
 तिण नींद मू' जीव जावक दव जावे ॥ १३ ॥
 जीव अंत्र हुवै जावक न सुभे ल्गारो ।
 जीव रे जावक कीयो अंगारो ॥ १४ ॥
 तीन पयउपसन दर्शन पांमतो जीवो ।
 केवल दर्शन पामें च्यू' छट दीवो ॥ १५ ॥
 तिनरा उदा मू' जीव होवै मतवालो ।
 मात्र किरतव रो पिण न होवै टालो ॥ १६ ॥
 दर्शन मोहणी नें चारित मोहणी कर्म ।
 एक सनकत न हुणे चारित धर्म ॥ १७ ॥
 मूव सनकती जीव रो हुवे निव्याती ।
 चारित खोव नें हुवे छ काय रो घाती ॥ १८ ॥
 सुणे सरवा समकत नावे ।
 उपसन सनकत निरमली पावे ॥ १९ ॥

दर्शन मोहणी जाबक खय होवे, जब खायक समकत सासती पावै ।
दर्शन मोहणी षयउपसम हुवे जब, खयउपसम समकत जीव नें आवै ॥ २० ॥
चारित मोहणी कर्म उदे सू, सर्व विरत चारित नहीं आवे ।
चारित मोहणी उपसम हुवे जद, उपसम चारित निरमला पावे ॥ २१ ॥
चारित मोहणी जाबक खाय हुवे तो, खायक चारित आवे श्रीकार ।
चारित मोहणी खयोपसम हुवे जब, खयउपसम चारित पामें च्यार ॥ २२ ॥
जीव तणा उदे भाव नीपनां, ते कर्म तणा उदा सूं पिछांणो ।
जीव रा उपसम भाव नीपनां, ते कर्म तणा उपसम सूं जाणो ॥ २३ ॥
जीव रा खायक भाव नीपनां, ते तो कर्म तणो खय हुवां सूं ताम ।
जीव रा खयोउपसम भाव नीपनां, खयउपसम कर्म हुआं सूं नाम ॥ २४ ॥
जीव रा जेहवा २ भाव नीपनां, ते जेहवा २ छै जीव रा नाम ।
ते नाम पाया छै कर्म संजोग विजोगे, तेहवा इज कर्मां रा नाम छै तांम ॥ २५ ॥
चारित मोहणी तणी छै पचवीस प्रवृत्त, त्यां प्रकृत तणा छै जूआ जूआ नाम ।
त्यांरा उदा सूं जीव तणा तांम तेहवा, कर्म ने जीव रा जूआ जूआ परिणाम ॥ २६ ॥
जीव अतंत उतकष्टो क्रोध करे जब, जीवरा दुष्ट घणा परिणाम ।
तिणने अनुताणुबंधीयो क्रोध कह्यो जिण, ते कषाय आत्मा छै जीव रो नाम ॥ २७ ॥
जिणरा उदा सूं उतकष्टो क्रोध करे छै, ते उतकष्टा उदे आया छै तांम ।
ते उदे आया छै जीव रां संच्या, त्यांरो अणुताणवधी क्रोध छै तांम ॥ २८ ॥
तिण सु कायंक थोडो अप्रत्याखानी क्रोध, तिण सुं कायंक थोडो प्रत्याख्यान ।
तिण सुं कायंक थोडो छै संजल रो क्रोध, आ क्रोध री चोकडी कही भगवानं ॥ २९ ॥
इण रीते मान री चोकडी कहणी, माया ने लोभ री चोकडी इन जाणो ।
च्यार चोकडी प्रसगे कर्मां रा नाम, कर्म प्रसगे जीव रा नाम पिछांणो ॥ ३० ॥
जीव क्रोध करें क्रोध री प्रकत सूं, मान करे मांन री प्रकत सूं तांम ।
माया कष्ट करें छै माया री प्रकत सूं, लोभ करे छे लोभ री प्रकत सूं आंम ॥ ३१ ॥
क्रोध करें तिण सूं जीव क्रोधी कहायो, उदे आइ ते क्रोध री प्रकत कहाणी ।
इण हीज रीत मांन माया ने लोभ, यानें पिण लीजो इण हीज रीत पिछांणी ॥ ३२ ॥
जीव हसे छै हास्य री प्रकत उदे सूं, रित अरितरी प्रकत सूं रित अरित वधावे ।
भय प्रकत उदे हूआं भय पामें जीव, सोग प्रकत उदे जीव नें सोग आवे ॥ ३३ ॥
दुगंछा आवें दुगंछा प्रकत उदे सूं, अस्त्री वेद उदे सूं वेदे विकार ।
तिणने पुरष तणी अभिलाषा होवे, पछे वेंतो २ हुवे वोहत विगाइ ॥ ३४ ॥
पुरष वेद उदे अस्ती नी अभिलाषा, निपुंसक वेद उदे हुवे दीयां री चाय ।
करम उदे सूं सवेदी नाम कह्यो जिण, करमां ने पिण वेद कह्या जिण राय ॥ ३५ ॥

मिथ्यात उदे जीव हुवो मिथ्याती,
 इत्यादिक माठा २ छै जीव रा नाम,
 चोथो घनघातीयो अतराय करम छै,
 ते पाचूई प्रकत पुदगल चोफरसी,
 दानांतराय छें दान रे आडी,
 मन गमता पुदगल नां सुख जे,
 भोगांतराय नां करम उदे सूं,
 उवभोगांतराय करम उदे सूं,
 वीर्यअतराय रा करम उदे थी,
 उठाणादिक हीणा थावे पांचूई,
 अनंतो बल प्राकम जीव तणो छै,
 तिण करम नें जीव लगायां सू लागो,
 पांचू अन्तराय जीव तणा गुण दाब्या,
 ए तो जीव रे प्रसगे नाम करम रा,
 ए तो च्यार घनघातीया करम कह्या जिण,
 त्यामे पुन ने पाप दोनु कह्या जिण,
 जीव असाता पावे पाप करम उदे सूं,
 जीव रा सचीया जीव ने दुःख देवै,
 नारकी रो आउखो पाप री प्रकत,
 असनी मिनख ने केई सनी मिनख रो,
 ज्यांरो आउखो पाप कह्यो छे जिणेसर,
 गति अणुपूर्वी दीसे आउखा लारे,
 च्यार सघेयण मे हाड पाड्या छे,
 च्यार संठाण मे आकार भडा ते,
 वर्ण गध रस फरस माछ मिलीया,
 ते पिण उसभ नाम करम उदे सूं,
 सरीर उपंग बंधण ने संघातण,
 ते पिण उसभ नाम करम उदे सूं,
 थावर नाम उदे छे थावर रो दस को,
 नाम करम उदे छे जीव रा नाम,
 १ थावर नाम करम उदे जीव थावर हूओ,
 २ सूक्ष्म नाम उदे जीव सूक्ष्म हूओ छै,

चारित मोह उदे जीव हुवो कुकरमी ।
 वले अनार्य हिसावर्मी ॥ ३६ ॥
 तिणरी प्रकत पांच कही जिण तांम ।
 त्यांरी प्रकत रा छै जूजुआ नांम ॥ ३७ ॥
 लामांतराय सूं वस्त लाभ सके नांही ।
 लाभ न सके सब्दादिक कांई ॥ ३८ ॥
 भोग मिलीया से भोग भोगवणी नावे ।
 उवभोग मिलीया तो वेही भोगवणी नहीं आवें । ३९ ॥
 तीनूई वीर्य गुण हीणा थावे ।
 जीव तणी सक्त जाबक घट जावे ॥ ४० ॥
 तिणनें एक अतराय करम सूं घटायो ।
 आप तणो कीयो आप रे उदे आयो ॥ ४१ ॥
 जेहवा गुण दाब्या छै तेहवा करमा रा नांम ।
 पिण सभाव देयां रो जूजुओ तांम ॥ ४२ ॥
 हिवे अघातीया करम छे च्यार ।
 हिवे पाप तणो कहू छूं विसतार ॥ ४३ ॥
 तिण पाप रो असाता वेदनी नाम ।
 असाता वेदनी पुदगल परिणाम ॥ ४४ ॥
 केइ तिर्यच रो आउखो पिण पाप ।
 पाप री प्रकत दीसे छै विलाप ॥ ४५ ॥
 त्यारी गति अणुपूर्वी पिण दीसे छे पाप ।
 इणरो निश्चो तो जाणे जिणेसर आप ॥ ४६ ॥
 ते उसभ नाम करम उदे सूं जाणों ।
 उसभ नाम करम सू मिलीया छे आंणो ॥ ४७ ॥
 ते अण गमता नें अतंत अजोग ।
 एहवा पुदगल दुःखकारी मिले छे संजोग ॥ ४८ ॥
 त्यां में केकारे माठा २ अतंत अजोग ।
 अणगमता पुदगल रो मिले छे संजोग ॥ ४९ ॥
 तिण दसका रा दस बोल पिछांणो ।
 एहवा इज नांम करमा रा जाणों ॥ ५० ॥
 तिण सूं आबो पाछो सरकणी नावे ।
 सूक्ष्म सरीर सगला नांही पावें ॥ ५१ ॥

३साधारण नाम सू जीव साधारण हूओ,	एकण सरीर में अनंता रहे तांम ।
४अप्रज्यासा नाम सू अप्रज्यासो मरे छे,	तिण सू अप्रज्यासो छे जीव रो नाम ॥ ५२ ॥
५अथिर नाम सू तो जीव अथिर कहाणो,	सरीर अथिर जावक ढीलो पावे ।
६दुम नाम उदे जीव दुम कहाणो,	नाम नीचलो सरीर पाडूओ थावे ॥ ५३ ॥
७दुभग नाम थकी जीव हुवे दोभागी,	अण गमतो लागे न गमे लोकां ने लग्गार ।
८दुःस्वर नाम थकी जीव हुवे दुस्वरीयो,	तिणरो कंठ उसम नही श्रीकार ॥ ५४ ॥
९अणादेज नाम करम रा उदा थी,	तिणरो वचन कोइ न करे अगीकार ।
१०अजस नाम थकी जीव हुओ अजसीयो,	तिणरो अजस बोले लोक वाखंवार ॥ ५५ ॥
११अपघात नाम करम रा उदे थी,	पेलो जीते ने आप पामें घात ।
१२दुम गइ नाम करम संजोगे,	तिणरी चाल किण ही ने दीठी न सुहात ॥ ५६ ॥
१३नीच गोत उदे नीच हुवो लोकां में,	उच गोत तणा तिणरी गिणे छे छोट ।
नीच गोत थकी जीव हर्ष न पामें,	पोता रो संचीयो उदे आयो नीच गोत ॥ ५७ ॥
पाप तणी प्रकत ओलखावण काजे,	जोड कीधी श्री दुवारा सहर मभार ।
संवत अठारे पचावने वरने,	जेठ सुद तीज नें बृहस्पतिवार ॥ ५८ ॥



५ : आश्रव पदार्थ

ढाल : ६

दुहा

आश्रव पदार्थ पात्रमां, निगने कहीजे आश्रव दुवार ।
 ने क्रम आवाग छें वाग्णा, ने वाग्णा नें क्रम न्यार ॥ १ ॥
 आश्रव दुवार तो जीव छें, जीव ग भला भंडा परिणाम ।
 भला परिणाम पुन ग वाग्णा, भंडा पाप तथा छें ताम ॥ २ ॥
 केइ मूढ मिथ्यानी जीवइ, आश्रव नें कहे छें अजीव ।
 त्यां जीव अजीव न ओळख्या, न्यारे मेटी मिथ्यात रो नीव ॥ ३ ॥
 आश्रव तां निच्छेइ जीव छें, श्री वीर गया छें भाख ।
 ठाम २ पिढांत मे भायीयो, ने मुणजो सूतर नी साख ॥ ४ ॥
 द्विचें पाप आवा ना वाग्णा, पेंहली कच्छू छूं ताम ।
 ने जयातय परगट कट्टं, ते मुणो गखे चित ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[विना रा भाव सुण.]

ठांगा अंग सूतर रे ममार, कहुआ छे पांच आश्रव दुवार ।
 ने दुवार छें माहा विकराळ, त्यां में पाप आवे दगचाल ॥ १ ॥
 मिथ्यात इविरत नें कपाय, पग्माद जांग छे ताय ।
 ए पांचूई आश्रव दुवार छे ताम, निच्छे जीव तथा परिणाम ॥ २ ॥
 उंचो सरखें ते आश्रव मिथ्यात, उंचो सरखें जीव साख्यात ।
 तिण आश्रव नो हंशण ह्यारो, ते समकित संवर दुवारी ॥ ३ ॥
 अत्याग भाव इविरत छें ताम, जीव तथा माठा परिणाम ।
 तिण इविरत ने देवे निवार, ते अत छे संवर दुवार ॥ ४ ॥
 नही त्याग्या छें प्यां दरकां री, आसा वांछा लो रही ज्यांरी ।
 ते इविरत जीव रा परिणाम, तिण ने त्याग्यां हुवे संवर आम ॥ ५ ॥
 आश्रव छे ताम, ए पिण जीव रा मेला परिणाम ।
 आश्रव रुवाय, जब अपरमाद संवर थाय ॥ ६ ॥

कषाय आश्रव छे आंम, जीव रा कषाय परिणाम ।
 तिण सू पाप लागे छें आय, ते अकषाय सू मिट जाय ॥ ७ ॥
 सावद्य निरवद जोग व्यापार, ए पाचूई आश्रव दुवार ।
 रुंधे भला भूडा परिणाम, अजोग सवर तिणरो नाम ॥ ८ ॥
 ए पांचूई आश्रव उघाड़ा दुवार, करम आवे या दुवार मभार ।
 दुवार तो जीव ना परिणाम, त्यां सू करम लागे छें तांम ॥ ९ ॥
 यांरा ढाकणा संवर दुवार, आश्रव दुवार ना रुंधणहार ।
 नवा करम ना रोकणहार, ए पिण जीव रा गुण श्रीकार ॥ १० ॥
 इमहिज कह्यो चोथा अंग मभारो, पाच आश्रव ने सवर दुवारो ।
 आश्रव करमां रो करता उपाय, करम आश्रव सू लागे छे आय ॥ ११ ॥
 उतरावेन गुणतीसमा माह्यो, पडिकमणां रो फल वतायो ।
 व्रतां रा छिद्र ढकायो, वले आश्रव दुवार रुघायो ॥ १२ ॥
 उतरावेन गुणतीसमा माह्यो, पचक्खाण रो फल वतायो ।
 पचखांण सू आश्रव रुघायो, आवता करम ते मिट जायो ॥ १३ ॥
 उतरावेन तीसमां रे मांह्यो, जलना आगम रुघायो ।
 जब पाणी आवतो मिट जावे, ज्यू आश्रव रुंध्या करम नावे ॥ १४ ॥
 उतरावेन उगणीसमां माह्यो, गाठा दुवार ढक्या कह्या ताह्यो ।
 करम आवा ना ठाम मिटायो, जब पाप न लागे आयो ॥ १५ ॥
 ढांकीया कह्या आश्रव दुवार, जब पाप न बघे लिंगार ।
 कह्यो छे दसवीकालिक मभार, तीजा अघेन में आश्रव दुवार ॥ १६ ॥
 रुंधे पाचूई आश्रव दुवार, ते भीषू मोटां अणगार ।
 ते तो दसवीकालिक मभार, तिहां जेय करो निस्तार ॥ १७ ॥
 पेहला मनजोग रुंधे ते सुघ, पछे वचन काय जोग रुध ।
 उतरावेन गुणतीसमा माहि, आश्रव रुंधणा चाल्या छे ताहि ॥ १८ ॥
 पांच कह्या छे अधर्म दुवार, ते तो प्रश्नव्याकरण मभार ।
 वले पांच कह्या संवर दुवार, या दोया रो घणो विसतार ॥ १९ ॥
 ठाणा अग पाचमा ठाणा माहि, आश्रव पडिकमणो ताहि ।
 पडिकम्यां पाछ्यो रुघाए दुवार, फेर पाप न लागे लिंगार ॥ २० ॥
 फूटी नाव रो दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवत ।
 भगोती तीजा सतक मभार, तीजे उदेसे छें विसतार ॥ २१ ॥
 वले फूटी नावा रे दिष्टंत, आश्रव ओलखायो भगवत ।
 भगोती पेहला सतक मभार, छट्टे उदेसे छें विसतार ॥ २२ ॥

ए तो कच्चा छें आश्रव दुवार, बले अनेक छें सूतर मभार ।
 ते पूरा कैम कहिवाय, सगला रो एकज न्याय ॥ २३ ॥
 आश्रव दुवार कच्चा ठाम ठाम, ते तो जीव तथा परिणाम ।
 त्यांनै अजीव कहे मिथ्याती, लोटी सग्या तथा पक्काती ॥ २४ ॥
 करमां नें ग्रहे ते जीव दरव, ग्रहे तेहीज छे आश्रव ।
 ते जीव तथा परिणाम, त्यां सूं करम लागे छें ताम ॥ २५ ॥
 जीव नें पुद्गल रो मेल, तीज दरव तणो नही मेल ।
 जीव लगावे जांप जांप, जब पुद्गल लागे छे आंग ॥ २६ ॥
 तेहिज पुद्गल छें पुन पाप, त्यारो करता छै जीव आप ।
 करता तेहिज आश्रव जांपों, तिण में संका मूल म आंगो ॥ २७ ॥
 जीव छै करमा रो करता, सूतर में पाठ अपरता ।
 कह्यो पेंहला अंग मभारो, जीव करमां रो करतारो ॥ २८ ॥
 ते पेंहला इज उदेसो संभालो, ए तो करता कह्यो त्रिहूं कालो ।
 जीव सत्न नों इचकार, तीन करणे कह्यो करतार ॥ २९ ॥
 करता तेहिज आश्रव ताम, जीव रा भला भूंडा परिणाम ।
 परिणाम ते आश्रव दुवार, ते जीव तणो व्यापार ॥ ३० ॥
 करता करणी हेतु नें उपाय, ए करमां रा करता कहाय ।
 यां सूं करम लागे छें आय, त्यांनै आश्रव कच्चा जिण राय ॥ ३१ ॥
 सावत्र करणी सूं पाप लागे, तिण सूं दुख भोगवसी आने ।
 सावत्र करणी नें कहे अजीव, ते तो निवचें मिथ्याती जीव ॥ ३२ ॥
 जोग सावत्र निरवद चाल्या, त्यांनै जीव दरव में घाल्या ।
 जोग व्यातना कही छै ताम, जोग नें कच्चा जीव परिणाम ॥ ३३ ॥
 जोग छें ते जीव व्यापार, जोग छें तेहिज आश्रव दुवार ।
 आश्रव तेहिज जीव निसंक, तिण में मूल म जांगो संक ॥ ३४ ॥
 लेत्या भली ने भूंडी चाली, त्यांनै पिण जीव दरव में घाली ।
 लेत्या उदे भाव जीव ताम, लेत्या ते जीव परिणाम ॥ ३५ ॥
 लेत्या करमां सूं आतम लेस, ते तो जीव तथा परदेस ।
 ते पिण आश्रव जीव निसंक, त्यांरा थानक कच्चा असंत ॥ ३६ ॥
 मिथ्यात इविरत ने कपाय, उदे भाव छे जीव रा ताय ।
 कपाय आत्मा कही छै ताम, यांनै कच्चा छें जीव परिणाम ॥ ३७ ॥
 ए पांचूँ छे आश्रव दुवार, छें करन तथा करतार ।
 ए पांचूँ छें जीव साख्यात, तिण में संका नहीं तिलमात । ३८ ॥

आश्रव जीव तणा परिणाम, नवमें ठाणे कह्यो छे आंम ।
 जीव रा परिणाम छे जीव, त्याने विकल कहे छे अजीव ॥ ३६ ॥
 नवमें ठाणे ठाणा अग माहि, आश्रव करम ग्रहे छे ताहि ।
 करम ग्रहे ते आश्रव जीव, ग्रहीया आवे ते पुदगल अजीव ॥ ४० ॥
 ठाणा अंग दसमें ठाणे, दस बोल उंघा कुण जाणे ।
 उंघा जाणे तेहिज मिथ्यात, तेहिज आश्रव जीव साख्यात ॥ ४१ ॥
 पांच आश्रव नें इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणाम ।
 माठी लेस्या तो जीव छे ताय, तिगरा लषण अजीव किम थाय ॥ ४२ ॥
 जीव ने लषण सूं पिछाणो, जीव रा लषण जीव जाणो ।
 जीव रा लषण ने अजीव थापे, ते तो वीर ना वचन उथापे ॥ ४३ ॥
 च्यार सगन्या कही ङिणराय, ते पिण पाप तणा छे उपाय ।
 पाप रो उपाय ते आश्रव, ते आश्रव जीव दरब ॥ ४४ ॥
 भला ने भूंडा अघवसाय, त्याने आश्रव कह्या जिनराय ।
 भला सूं तो लागे छे पुन, भूडा सूं लागे पाप ज्वून ॥ ४५ ॥
 आरत ने रुद्र ध्यान, त्याने आश्रव कह्या भगवान ।
 आश्रव पाप तणा छे दुवार, दुवार तेहिज जीव व्यापार ॥ ४६ ॥
 पुन ने पाप आवाना दुवार, ते करम तणा करतार ।
 करमा रो करता आश्रव जीव, तिण ने कहे अग्यानी अजीव ॥ ४७ ॥
 जे आश्रव ने अजीव जाणे, ते पीपल बाघी मूरख ज्यू ताणे ।
 करम लगावे ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब ॥ ४८ ॥
 आश्रव ने कह्यो रुचाणो, आ जिनजी रा मुख री वाणो ।
 ओ कीसो दरब हंघाणो, कीसो दरब थिर थपाणो ॥ ४९ ॥
 विपरीत तत्व गुण जाणे, कुण माडे उलटी ताणे ।
 कुण हिंसादिक रो अत्यागी, कुण रे वछा रहे लागी ॥ ५० ॥
 सबदादिक कुण अभिलाखे, कषाय भाव कुण राखे ।
 कुण मन जोग रो व्यापारो, कुण चिन्तवे म्हारों थारो ॥ ५१ ॥
 इंद्रा ने कुण मोकली मेल्ले, सबदादिक ने कुण मेल्ले ।
 इण नें मोकली मेल्ले ते आश्रव, तेहिं छे जीव दरब ॥ ५२ ॥
 मुख सूं कुण भूंडो बोले, काया सूं कुण माठो डेले ।
 ए जीव दरब नो व्यापार, पुदगल पिण वरते छे लार ॥ ५३ ॥
 जीव रा चलाचल परदेस, त्यां ने थिर थापे दिढ करेस ।
 जब आश्रव दरब हंघाणो, तब तेहिज संवर थपाणो ॥ ५४ ॥

चलाचल जीव परदेस, सारा परदेसा करम प्रवेस ।
 सारा परदेसां करम ग्रहता, सारा परदेसां करमा रा करता ॥ ५५ ॥
 त्यां परदेसा रो थिर करणहार, तेहिज संवर दुवार ।
 अथिर परदेस ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब ॥ ५६ ॥
 जोग परिणामीक ने उदे भाव, त्याने जीव कह्या इण न्याव ।
 अजीव तो उदे भाव नाही, ते देख लो सूतर माही ॥ ५७ ॥
 पुन निरवद जोगा सू लागे छे आय, ते करणी निरजरा री छे ताय ।
 पुन सहजां लागे छे आय, तिण सू जोग छे आश्रव मांय ॥ ५८ ॥
 जे जे ससार ना छे काम, त्यारा किण २ रा कर्हू नांम ।
 ते सगला छे आश्रव तांम, ते सगला छें जीव परिणांम ॥ ५९ ॥
 करमां ने लगावे तो आश्रव, तेहिज छे आश्रव जीव दरब ।
 लागे ते पुदगल अजीव, लगावे ते निश्चेई जीव ॥ ६० ॥
 करमा रो करता जीव दरब, करतापणो तेहिज आश्रव ।
 कीधा हुआ ते करम कहिवाय, ते तो पुदगल लागे छे आय ॥ ६१ ॥
 ज्यारे गूढ मिथ्यात अघारो, ते नही पिच्छाणे आश्रव दुवारो ।
 त्याने सबली तो मूल न सूभे, दिन २ इषक अलूभे ॥ ६२ ॥
 जीव रे करम आडा छे आठ, ते लग रह्या पाटानेपाट ।
 ज्यामे घातीया करम छे च्यार, मेख मारग रोकणहार ॥ ६३ ॥
 और करमां सू जीव ढंकाय, मोह करम थकी विगडाय ।
 विगड्यो करे सावद्य व्यापार, तेहिज आश्रव दुवार ॥ ६४ ॥
 चारित मोह उदे मतवालो, तिण सू सावद्य रो न हुवे टालो ।
 सावद्य रो सेवण हारो, तेहिज आश्रव दुवारो ॥ ६५ ॥
 दंसण मोह उदे सरघे उबी, हाथे मारग न आवे सुघो ।
 उबी सरधा रो सरदगहारो, ते मिथ्यात आश्रव दुवारो ॥ ६६ ॥
 मूढ कहे आश्रव ने रूपी, वीर कह्यो आश्रव ने अरूपी ।
 सूतरां मे कह्यो ठाम २, आश्रव ने अरूपी ताम ॥ ६७ ॥
 पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणांम ।
 माठी लेस्या अरूपी छे ताय, तिणरा लषण रूपी किम थाय ॥ ६८ ॥
 उजला ने मेल कह्या जोग, मोह करम सजोग विजोग ।
 उजला जोग मेल थाय, करम भरियां उजल होय जाय ॥ ६९ ॥
 उत्तरावेन गुणतीसमां माय, जोग सचे कह्यो जिणराय ।
 जोग सचे निरदोष में चाल्या, त्यां ने साधां रा गुण माहे घाल्या ॥ ७० ॥

साधां रा गुण छें सुध मान, त्यांनै अरूपी कह्या भगवान ।
 त्यां जोग आश्रव ने रूपी थाप्या, त्यां वीर नां वचन उथाप्या ॥ ७१ ॥
 ठाणा अग तीगा ठाणा मभार, जोग वीर्य रो व्यापार ।
 तिण सूं अरूपी छै भाव जोग, रूपी सरधे ते सरधा अजोग ॥ ७२ ॥
 जोग आतमा जीव अरूपी, त्यां जोगा ने मूढ कहे रूपी ।
 जोग जीव तणा परिणाम, ते निश्चे अरूपी छें तांम ॥ ७३ ॥
 आश्रव जीव सरधावण ताय, जोड कीधी छे पाली मांय ।
 संवत अठारे पंचावना मभार, आसोज सुद वारस रिक्वार ॥ ७४ ॥

ढाल : ७

दुहा

आश्रव करम आवानां वारणा, त्यांने विकल कहे छें करम ।
 करम दुवार ने करम एकहिज कहे, ते भूला अग्यांनी भरम ॥ १ ॥
 करम ने आश्रव छे जूजूआ, जूजुओओ छें त्यारो सभाव ।
 करम नें आश्रव एकहिज कहे, तिणरो मूढ न जाणें न्याव ॥ २ ॥
 वले आश्रव ने रूपी कहे, आश्रव ने कहे करम दुवार ।
 दुवार ने दुवार में आवे तेहने, एक कहे छें मूढ गिवार ॥ ३ ॥
 तीन जोगा ने रूपी कहे, त्यांने इज कहे आश्रव दुवार ।
 वले तीन जोगा ने कहे करम छे, ओ पिण विकलां रे नही छै विचार ॥ ४ ॥
 आश्रव नां वीस भेद छे, ते जीव तणी पर्याय ।
 करम तणा कारण कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखी]

मिथ्यात आश्रव तो उबो सरधे ते, उबो सरधे ते जीव साख्यातो रे ।
 तिण मिथ्यात आश्रव ने अजीव सरधे छे, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यातो रे ॥
 आश्रव ने अजीव कहे ते अग्यांनी ॥ १ ॥
 जे जे सावद्य कामां नही त्याग्या छे, त्यांरी आसा वछा रही लागी रे ।
 ते जीव तणा परिणाम छे मेल, अत्याग भाव छे इवितर सागी रे ॥ २ ॥
 परमाद आश्रव जीव नां परिणाम मेल, तिण सूं लागे निरंतर पापो रे ।
 तिणने अजीव कहे छे मूढ मिथ्याती, तिण रे छोटी सरधा री थापो रे ॥ ३ ॥
 कषाय आश्रव ने जीव कहां जिणसर, कषाय आतमा कही छें तांमो रे ।
 कषाय करवारो सभाव जीव तणो छें, कषाय छै जीव परिणामो रे ॥ ४ ॥

जोग आश्रम नें जीव कहीं जिणेर, जोग आतमा कहीं छे तांमो रे ।
 तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छैं, जोग छे जीव रा परिणामो रे ॥ ५ ॥
 जीवरी हिसा करें ते आश्रव, हिसा करे ते जीव साख्यातो रे ।
 हिसा करे ते परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे ॥ ६ ॥
 भूठ बोले ते आश्रव कहीं छे, भूठ बोले ते जीव साख्यातो रे ।
 भूठ बोलण रा परिणाम जीव तणा छे, तिणमें संका नही तिलमातो रे ॥ ७ ॥
 चोरी करें ते आश्रव कह्यो जिणेर, चोरी करें ते जीव साख्यातो रे ।
 चोरी करवा रा परिणाम जीव तणा छें, तिणमें संका नहीं तिलमातो रे ॥ ८ ॥
 मैथुन सेवे ते आश्रव चोथो, मैथुन सेवे ते जीवो रे ।
 मैथुन परिणाम तो जीव तणा छे, तिण सूं लागे छें पाप अतीवो रे ॥ ९ ॥
 परिग्रह राखे ते पांचमों आश्रव, परिग्रह राखे ते पिण जीवो रे ।
 जीव रा परिणाम छें मूर्छा परिग्रह, तिण सूं लागे छे पाप अतीवो रे ॥ १० ॥
 पांच इंद्रयां ने मोकली मेले ते आश्रव, मोकली मेले ते जीव जाणों रे ।
 राग घेष आवें सब्दादिक उपर, यानें जीव रा भाव पिछाणो रे ॥ ११ ॥
 सुरत इंद्री तो सब्द सुणे छे, चषु इंद्री रूप ले देखो रे ।
 घाण इंद्रो गन्ध ने भोगवे छे, रस इंद्रो रस स्वादे वशोपो रे ॥ १२ ॥
 फरस इंद्रो तो फरस भोगवे छें, पांचू इंद्रयां नों एह सभावो रे ।
 यां सूं राग नें घेष करे ते आश्रव, तिण नें जीव कहीजे इण न्यावो रे ॥ १३ ॥
 तीन जोगां ने मोकला मेले ते आश्रव, मोकला मेले ते जीवो रे ।
 त्याने अजीव कहे ते मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट मे तही ग्यान रो दीवो रे ॥ १४ ॥
 तीन जोगां रो व्यापार जीव तणो छे, ते जोग छे जीव परिणामो रे ।
 माळ जोग छे माठी लेस्या रा लषण, जोग आतमा कही छें तामो रे ॥ १५ ॥
 भड उपगरण सू कोई करे अजेणा, तेहिज आश्रव जाणो रे ।
 ते आश्रव सभाव तो जीव तणो छे, रुडी रीत पिछाणो रे ॥ १६ ॥
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव, सुची कुसग सेवे ते जीवो रे ।
 सुची-कुसग सेवे तिणने अजीव कहें, त्यांरे उंडी मिथ्यात री नीवो रे ॥ १७ ॥
 दरब जोगा ने रूपी कह्या छे, ते तो भाव जोग रे छें लारो रे ।
 दरब जोगां सू तो करम न लागे, भाव जोग छे आश्रव दुवारो रे ॥ १८ ॥
 आश्रव ने करम कहे छें अग्यानी, तिण लेखे पिण उंची दरसी रे ।
 आठ करमां नें तो चौफरसी कहे छे, काया जोग तो छे अठफरसी रे ॥ १९ ॥
 आश्रव ने करम कहे त्यारी सरधा, उठी जठा थी भूठी रे ।
 त्यांरा बोल्यो री ठीक पिण त्याने नाही, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे ॥ २० ॥

वीस आश्रव मे सोले एकत सावद्य, ते पाप तणा छे दुवारो रे।
 ते जीव रा किरतब माठा ने खोटा, पाप तणा करतारो रे ॥ २१ ॥
 मन वचन काया रा जोग व्यापार, वले समचें जोग व्यापारो रे।
 ए च्याहंइ आश्रव सावद्य निरवद, पुन पाप तणा छें दुवारो रे ॥ २२ ॥
 मिथ्यात इविरत नें परमाद, कषाय नें जोग व्यापारो रे।
 ए करम तणा करता जीव रे छें, ए पांचूइ आश्रव दुवारो रे ॥ २३ ॥
 यामें च्यार आश्रव सभावीक उदारा, जोग में पनरे आश्रव समाया रे।
 जोग किरतब नें सभावीक पिण छे, तिण सूं जोग में पनरेंइ आया रे ॥ २४ ॥
 हिंसा करे ते जोग आश्रव छें, भूठ वोलें ते जोग छे ताह्यो रे।
 चोरी सूं लेइ सुची कुसग सेवे ते, पनरेंइ आया जोग माह्यो रे ॥ २५ ॥
 करमां रो करता तो जीव दरब छै, कीघा हुवा ते करमो रे।
 करम ने करता एक सरबे ते, भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ २६ ॥
 अठारे पाप ठांणा अजीव चोफरसी, ते उदे आवे तिण वारो रे।
 जब जूजूआ किरतब करे अठारो, ते अठारेइ आश्रव दुवारो रे ॥ २७ ॥
 उदे आया ते तो मोह करम छे, ते तो पाप रा ठांणा अठारो रे।
 त्यांरा उदा सूं अठारेंइ किरतब करे छें, ते जीव तणो छें व्यापारो रे ॥ २८ ॥
 उदे नें किरतब जूआजूआ छे, आ तो सरघा सूची रे।
 उदे नें किरतब एकज सरबे, अकल तिणांरी उंची रे ॥ २९ ॥
 प्राणातपात जीव री हिंसा करे ते, प्राणातपात आश्रव जाणों रे।
 उदे हुवो ते प्राणातपात ठांणो छे, त्यांने रुडी रीत पिछांणो रे ॥ ३० ॥
 भूठ बोले ते मिरषावाद आश्रव छे, उदे छें ते मिरषावाद ठाणो रे।
 भूठ वोलें ते जीव उदे हुवा करम, यां देयां नें जूआजूआ जांणो रे ॥ ३१ ॥
 चोरी करे ते अदत्तादान आश्रव छे, उदे ते अदत्तादान ठांणो रे।
 ते उदे आयां जीव चोरी करे छें, ते तो जीव रा लपण जांणो रे ॥ ३२ ॥
 मैथुन सेवे ते मैथुन आश्रव, ते जीव तणा परणांमो रे।
 उदे हूओ ते मैथुन पाप थानक छें, मोह करम अजीव छे, तांमो रे ॥ ३३ ॥
 सचित्त अचित्त मिश्र उपर, ममता राखे ते परिग्रह जाणो रे।
 ते ममता छे मोह करम रा उदा सू, उदे में छे ते पाप ठांणो रे ॥ ३४ ॥
 क्रोध सूं लेइ ने मिथ्यात दरसण, उदे हूआ ते पाप रो ठांणो रे।
 यांरा उदा सूं सावद्य कांमा करे ते, जीवरा लपण जांणो रे ॥ ३५ ॥
 सावद्य कामां ते जीव रा किरतब, उदे हूआ ते पाप करमो रे।
 यां दोयां ने कौइ एकज सरबे, ते भूला अग्यांनी भरमो रे ॥ ३६ ॥

आथव तो करम आवानां दुवार, ते तो जीव तणा परिणामो रे ।
 दुवार माहें आवे ते आठ करम छें, ते पुदगल दरु छें तांमो रे ॥ ३७ ॥
 माठा परिणाम ते माठी लेस्या, वले माठा जोग व्यापारो रे ।
 माठा अववसाय नें माठो ध्यान, ए पाप आवानां दुवारो रे ॥ ३८ ॥
 भला परिणाम नें भली लेस्या, भला निरवद जोग व्यापारो रे ।
 भला अववसाय नें भलोइ ध्यान, ए पुन आवा रा दुवारो रे ॥ ३९ ॥
 भला भूंडा परिणाम भली भूंडी लेस्या, भला भूंडा जोग छें तांमो रे ।
 भला भूंडा अववसाय भला भूंडा ध्यान, ए जीव तणा परिणामो रे ॥ ४० ॥
 भला भूंडा भाव जीव तणा छें, भूंडा पाप रा वारणा जाणो रे ।
 भला भाव तो छें संवर निरजरा, पुन सहजे लागे छें आंगो रे ॥ ४१ ॥
 निरजरा री निरवद करणी करतां, करम तणो खय जाणो रे ।
 जीव तणा परदेस चले छें, त्यां सूं पुन लागे छें आंगो रे ॥ ४२ ॥
 निरजरा री करणी करे तिण काले, जीव रा चालें सर्व परदेसो रे ।
 जव महचर नाम करम मूं उदे भाव, तिण मूं पुन तणो परदेसो रे ॥ ४३ ॥
 मन वचन काया ग जोग तीनूंड, पसत्य नें अपसत्य चाल्या रे ।
 अपसत्य जोग तो पाप नां दुवार, पसत्य निरजरा री करणी में चाल्या रे ॥ ४४ ॥
 अपसत्य दुवार नें हंभणा चाल्या, पसत्य उदीरणा चाल्या रे ।
 हंभतां नें उदीरतां निरजरा री करणी, पुन लागे तिण सूं आथव में चाल्या रे ॥ ४५ ॥
 पसत्य नें अपसत्य जोग तीनूंड, त्यांरा वामठ भेद छें ताह्यो रे ।
 ते सावच्च निरवद जीव री करणी, मूतर उवाइ रे माह्यो रे ॥ ४६ ॥
 जिण कह्यो सतरे भेद असंयम, असंजम ते डविरत जाणो रे ।
 डविरत ते आसा वंछा जीव तणी छें, तिणनें वडि रीत पिछांगो रे ॥ ४७ ॥
 माठा २ किरतव नें माठी २ करणी, सर्व जीव व्यापारो रे ।
 वले जिण आज्ञा वागला सर्व कामां, ए सगला छें आथव दुवारो रे ॥ ४८ ॥
 मोह करम उदे जीव रे च्यार संजा, ते तो पाप करम ग्रहे तांमो रे ।
 पाप करम ग्रहे ते आथव, ते तो लपण जीव रा जाणो रे ॥ ४९ ॥
 उठांण कम वल वीर्य पुरपाकार प्राकम, यांरा सावच्च जोग व्यापारो रे ।
 तिण सूं पाप करम जीव रे लागे छें, ते जीव छें आथव दुवारो रे ॥ ५० ॥
 उठांण कम वल वीर्य पुरपाकार प्राकम, यांरा निरवद किरतव व्यापारो रे ।
 त्यांसूं पुन करम जीव रे लागे छें, ते पिण जीव छें आथव दुवारो रे ॥ ५१ ॥
 संजती असंजती नें संजतासंजती, ते तो संवर आथव दुवारो रे ।
 ते मंवर नें आथव धेनूंड, तिण में संका नहीं छै निगारो रे ॥ ५२ ॥

इम विरती अविरती नें विरताविरती, इम पचखांणी पिण जांणो रे ।
 इम पिंडीया बाला नें बालापिंडीया, जागरा सुत्ता एम पिच्छांणो रे ॥ ५३ ॥
 वले संबूडा असंबूडा ने संबूडासंबूडा, धमीया धमठी तांमो रे ।
 धम्मवचसाइया इमहिज जांणो, तीन तीन बोल छें तांमो रे ॥ ५४ ॥
 ए सगला बोल छें संवर नें आश्रव, त्यानें ह्डी रीत पिच्छांणो रे ।
 कोइ आश्रव ने अजीव कहें छें, ते पूरा छे मूढ अयांणो रे ॥ ५५ ॥
 आश्रव घटीयां संवर वचे छे, संवर घटीयां आश्रव वघांणो रे ।
 किसी दरब घटीयो ने वधीयो, इणने ह्डी रीत पिच्छांणो रे ॥ ५६ ॥
 इविरत उदे भाव घटीयां सू, विरत वघें छें षयउपसम भावो रे ।
 ए जीव तणा भाव वधीयां नें घटीया, आश्रव जीव कह्यो इण न्यावो रे ॥ ५७ ॥
 सतरे भेद असजम ते इविरत आश्रव, ते आश्रव ने निश्चे जीव जांणो रे ।
 सतरे भेद संजम ने सवर कह्यो जिण, ए तो जीव रा लषण पिच्छांणो रे ॥ ५८ ॥
 आश्रव नें जीव सरघावण काजे, जोड कीधी पाली मभारो रे ।
 संवत अठारे वरस पचावने, आसीज सुद चवदस मंगलवारो रे ॥ ५९ ॥



६ : संवर पदारथ

ढाल : ८

दुहा

छटो पदार्थ संवर कह्यो, तिगरा थिरी भूत परदेस ।
 आश्रव दुवार नों लंचणो, तिण सूं मिटीयो करमां रो परवेस ॥ १ ॥
 आश्रव दुवार करमां रा वारणा, ढंकीयां छें संवर दुवार ।
 आतमा वश कीयां सवर हूओ, ते गुण रतन श्रीकार ॥ २ ॥
 संवर पदारथ ओलख्यां विना, संवर न नीपजे कोय ।
 संका कोइ मत राखजो, सूतर साह्यो जोय ॥ ३ ॥
 सवर तणा भेद पांच छे, त्यां पांचां रा भेद अनेक ।
 त्यारा भाव भेद परगट कहं, ते सुणजो आंग ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[पूजजी पधारे हो नगरी]

नव ही पदारथ सरखे यथातथ, तिपने कहिजे समकत निघांन हो । भविक जण ।
 पछे त्याग करे उंधा सरवण तणा, ते समकत संवर परघांन हो । भविक जण ।
 संवर पदारथ भवीयण ओलखो* ॥ १ ॥
 त्याग कीयां सर्व सावद्य जोग रा, जावजीव तणा पचखांण हो ।
 आगार नहीं त्यारे पाप करण तणो, ते सर्व विरत संवर जाण हो ॥ २ ॥
 पाप उदे सूं जीव परमादी थयो, तिण पाप सूं परमादी थाय हो ।
 ते पाप खय हूआं के उपसम हूआं, अपरमाद संवर हुवें ताय हो ॥ ३ ॥
 कपाय करम उदे छे जीव रे, तिण सूं कषाय आश्रव छें ताम हो ।
 ते कपाय करम अलगा हुवां जीव रे, जव अकषाय संवर हुवें आम हो ॥ ४ ॥
 थोड़ा थोड़ा सा जोगां ने रूंचीयां, अजोग संवर नहीं थाय हो ।
 मन वचन काया रा जोग रूंधे सरवथा, ते अजोग संवर हुवें ताय हो ॥ ५ ॥
 सावद्य माठा जोग रूच्यां सरवथा, जव तो सर्व विरत संवर होय हो ।
 पिण निरवद जोग वाकी रह्या तेहने, तिण सूं अजोग संवर नहीं कोय हो ॥ ६ ॥
 परमाद आश्रव न कपाय जोग आश्रव, ए तो न मिटे कीयां पचखांण हो ।
 ए तो सहजांड मिटे छे करम अलगा हुवां, तिणरी अंतरंग करजो पिछांण हो ॥ ७ ॥
 सुभ ध्यांन ने लेस्या सूं करम कटियां थकां, जव अपरमाद संवर थाय हो ।
 इमहिज करतां अकषाय संवर हुवे, इम अजोग संवर होय जाय हो ॥ ८ ॥

* यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

समकित संवर ने सर्व विरत संवर,
 अपरमाद अकषाय अजोग संवर हुवें,
 हिंसा भूठ चोर मैथुन परिग्रहो,
 ए पांचू आश्रव ने त्यागे दीयां,
 पांचू इंद्रियां नें मेले मोकली,
 इंद्रियां ने मोकली मेलवारा त्याग छें,
 भला भंडा किरतब तीनुई जोगां तणा,
 त्या तीनुई जोगां नें जाबक रुधियां,
 अजेणा करें मंडउपगरण थकी,
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव कह्यो,
 हिंसादिक पनरे जोग आश्रव कहां,
 त्यां पनरां ने माठा जोग माहे गिण्या,
 तीनुई निरवद जोग रुंध्यां थकां,
 ए बीसूई संवर तणों विवरो कह्यो,
 कोइ कहे कषाय ने जोगा तणा,
 त्याने पचख्यां विनां संवर किण विघ होसी,
 पचखाण चाल्यो छें सूतर में सरीर नो,
 इम हिज कषाय ने जोग पचखाण छे,
 सामायक आदि पांचू चारित भणी,
 पुलाग आदि दे छहूई नियंठा,
 चारितावर्णी षयउपसम हूआं,
 जब काम ने भोग थकी विरक्त हुवे,
 सर्व सावद्य जोग ने त्यागे सरवथा,
 जब इविरत रा पाप न लागे सरवथा,
 धूर सू तो सामायक चारित आदर्यो,
 ते करम उदे सू किरतब नीपजे,
 भला ध्यान नें भली लेस्या थकी,
 जब उदे तणा किरतब पिण हलका पडें,
 मोह करम जाबक उपसम हुवें,
 जब जीव हुवें सीतलभूत निरमलो,
 मोहणीय करम नें जाबक खय हुवां,
 जब सीतलभूत हूओ जीव निरमलो,

ए तो हुवें छें कीयां पचखाण हो ।
 ते तो करम खय हूआं जाण हो ॥ ६ ॥
 ए तो जोग आश्रव में समां हो ।
 जब विरत संवर हुवे ताय हो ॥ १० ॥
 त्यांने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 ते पिण विरत संवर ल्यो पिछाण हो ॥ ११ ॥
 ते तो जोग आश्रव छें तांम हो ।
 आजोग संवर हुवे आम हो ॥ १२ ॥
 तिणने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 त्यांने त्याग्यां विरत संवर पिछाण हो ॥ १३ ॥
 त्याने त्याग्यां विरत संवर जाण हो ।
 निरवद जोगां री करजो पिछाण हो ॥ १४ ॥
 अजोग संवर होय जात हो ।
 ते बीसूई पाच संवर में समात हो ॥ १५ ॥
 सूतर माहे चाल्या पचखाण हो ।
 हिवे तिणरी कहुं छू पिछाण हो ॥ १६ ॥
 ते सरीर सू न्यारो हुवा तांम हो ।
 सरीर पचखाण ज्युं आम हो ॥ १७ ॥
 सर्व वरत संवर जाण हो ।
 ए पिण लीज्यो संवर पिछाण हो ॥ १८ ॥
 जब जीव नें आवे बेराग हो ।
 जब सर्व सावद्य दे त्याग हो ॥ १९ ॥
 ते सर्व वरत संवर जाण हो ।
 ते तो चारित छे गुण खाण हो ॥ २० ॥
 तिणरे मोह करम उदे रह्यो ताय हो ।
 तिण सू पाप लागें छे आय हो ॥ २१ ॥
 मोह करम उदे थो घट जाय हो ।
 जब हलकाइ पाप लागाय हो ॥ २२ ॥
 जब उपसम चारित हुवें ताय हो ।
 तिणरे पाप न लागे आय हो ॥ २३ ॥
 खायक चारित हुवे जथाव्यात हो ।
 तिणरे पाप न लागें अंसात हो ॥ २४ ॥

सामायक चारित लीये छे- उदीर नें, उपसम चारित आवें मोह उपसम्यां, खायक चारित आवें मोह करम नें खय कीयां, ते आवें सुकल ध्यान ध्यायां थकां, चारितावर्णी षयउपसम हुवां, ते उपसम हूआं उपसम चारित हुवें, चारित निज गुण जीव रा जिण कहुआं, ते मोहणी करम अलगो हूआं परगट्या, चारितावर्णी ते मोहणी करम छे, तिणरा उदे सूं निज गुण विगड्या, तिण करम रा अनंत परदेस अलगा हूआ, जब सावद्य जोग नें पचख्या छे सरवथा, जीव उजलो हुबो ते तो हुइ निरजरा, नवा पाप न लागे विरत सवर थकी, जिम २ मोहणी करम पतलो पडे, इम करता मोहनी करम खय जाए सरवथा, जगन सामायक चारित तेहना, अनंता करम परदेस उदे था ते मिट गया, जघन्य सामायक चारितीया तणा, वले अनंता परदेस उदे थी मिट गया, मोह करम घटे छे उदे थी इण विवे, तिण सू सामायक चारित नां कहुआं, अनत करम परदेस उदे थी मिट गया, चारित गुण पजवा अनंता नीपजे, जगन सामायक चारित जेहना, तिण थी उत्कथा सामायक चारित तणा, पजवा उत्कथा सामायक चारित तणा, अनंत गुणां कहुआं छे जिगन चारित तणा, छठा गुण ठांगा थकी नवमा लगे, तिणरा असंख्यात थानक पजवा अनंत छे, सुषम संपराय चारित तेहनां, एक २ थानक रा पजवा अनंत छे,

सावद्य जोग रा करे पचखाण हो ।
 ते चारित इग्यारमे गुणठाण हो ॥ २५ ॥
 पिण नावें कीयां पचखाण हो ।
 चारित छेहले तीन गुण ठाण हो ॥ २६ ॥
 षयउपसम चारित आवें निधान हो ।
 खय हूआं खायक चारित परधान हो ॥ २७ ॥
 ते जीव सूं न्यारा नहीं थाय हो ।
 त्यां गुणां सूं हुवा मुनीराय हो ॥ २८ ॥
 तिणरा अनंत परदेस हो ।
 तिणसूं जीव ने अतंत कलेस हो ॥ २९ ॥
 जब अनंत गुण उजलो थाय हो ।
 ते सर्व विरत संवर छे ताय हो ॥ ३० ॥
 विरत संवर सूं स्कीया पाप करम हो ।
 एहवो छे चारित धर्म हो ॥ ३१ ॥
 तिम २ जीव उजलो थाय हो ।
 जब जथाख्यात चारित होय जाय हो ॥ ३२ ॥
 अनता गुण पजवा जाण हो ।
 तिण सूं अनंत गुण परगट्या आण हो ॥ ३३ ॥
 अनंत गुण उजला परदेस हो ।
 जब अनंत गुण उजलो वशेष हो ॥ ३४ ॥
 ते तो घटे छें असंखेज्ज वार हो ।
 असंख्यात थानक श्रीकार हो ॥ ३५ ॥
 चारित थानक नीपजे एक हो ।
 सामायक चारित रा भेद अनेक हो ॥ ३६ ॥
 पजवा अनंता जाण हो ।
 पजवा अनंत गुणां दखाण हो ॥ ३७ ॥
 तेह थी सुषम संपराय ना वशेष हो ।
 ए सुषम संपराय लो पेख हो ॥ ३८ ॥
 सामायक चारित जाण हो ।
 सुषम संपराय दसमों गुण ठाण हो ॥ ३९ ॥
 थानक असंखेज्ज जाण हो ।
 तिणने सामायक ज्यू लीज्यो पिंछाण हो ॥ ४० ॥

मुष्म संपराय चारितीया रे सेष उदे रह्या,
 ते अनंत परदेस खख्यां निरजरा हुइ,
 जब जथाख्यात चारित परगट हुवो,
 मुष्म संपराय रा उतकथा पजवा थकी,
 जथाख्यात चारित उजल हूओ सरवथा,
 अनंता पजवा तिण थानक तणा,
 मोह करम परदेस अनंता उदे हुवें,
 अनंता अलगा हूआं अनंत गुण परगटे,
 ते निज गुण जीव रा ते तो भाव जीव छें,
 ते तो करम खय हूआं सूं नीपनां,
 सावद्य जोगां रा त्याग करें ने रुंधीया,
 निरवद जोग रुंध्यां संवर हुवें,
 निरवद जोग मन वचन काया तणा,
 सरवथा घटीयां अजोग संवर हुवें,
 साधु तो उपवास बेलादिक तप करें,
 जब संवर सहचर साधु रे नीपजें,
 श्रावक उवास बेलादिक तप करें,
 जब विरत संवर पिण सहचर नीपनों,
 श्रावक जे जे पुद्गल भोगवे,
 त्यारो त्याग कीयां थी विरत संवर हुवें,
 साधु कल्पे ते पुद्गल भोगवे,
 त्यांनं त्याग्या सूं तपसा नीपनी,
 साधु रों हालवो चालवो बोलवो,
 निरवद जोग रुंध्यां जितलो संवर हुवो,
 श्रावक रे हालवो चालवो बोलवो,
 सावद्य रा त्याग सूं विरत संवर हुवें,
 चारित ने तो विरत संवर कह्यो,
 अजोग संवर सुभ जोग रुंध्यां हुवें,
 संवर निज गुण निश्चेंड जीव रा,
 जिण दरब नें भाव जीव नही ओलख्या,
 संवर पदार्थ नें ओलखायवा,
 समत अठारे वरसे छपनें,

मोह करम रा अनंत परदेस हो ।
 बाकी उदे नही रह्यो लवलेस हो ॥ ४१ ॥
 तिण चारित रा पजवा अनंत हो ।
 अनंत गुणां कहां भगवंत हो ॥ ४२ ॥
 तिण चारित रो थानक एक हो ।
 ते थानक छें उतकथो वखेख हो ॥ ४३ ॥
 ते तो पुद्गल री पर्याय हो ।
 ते निज गुण जीव रा छें ताय हो ॥ ४४ ॥
 ते निज गुण छें बंदणीक हो ।
 भाव जीव कहा त्यांनं ठीक हो ॥ ४५ ॥
 तिण सूं विरत संवर हुवो जाण हो ।
 तिणरी करजो पिछाण हो ॥ ४६ ॥
 ते घटीयां संवर थाय हो ।
 तिणरी विघ मुणो चित्त ल्याय हो ॥ ४७ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 निरवद जोग रुंध्यां सूं ताम हो ॥ ४८ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 सावद्य जोग रुंध्यां सूं ताम हो ॥ ४९ ॥
 ते सावद्य जोग व्यापार हो ।
 तप पिण नीपजें लार हो ॥ ५० ॥
 ते निरवद जोग व्यापार हो ।
 जोग रुंध्यां रो संवर श्रीकार हो ॥ ५१ ॥
 ते तो निरवद जोग व्यापार हो ।
 तपसा पिण नीपजे श्रीकार हो ॥ ५२ ॥
 सावद्य निरवद व्यापार हो ।
 निरवद त्याग्यां सं संवर श्रीकार हो ॥ ५३ ॥
 ते तो इविरत त्याग्यां होय हो ।
 तिण माहें संक न कोय हो ॥ ५४ ॥
 तिणनें भाव जीव कह्यो जगनाथ हो ।
 तिणरो घट सूं न गयो मिथ्यात हो ॥ ५५ ॥
 जोइ कीधी नाथ दुवारा ममार हो ।
 फागुण विद तेरस मुक्त्तवार हो ॥ ५६ ॥

७ : निरजरा पदार्थ

ढाल : ९

दुहा

निरजरा पदार्थ सातमों, ते तो उजल वसत अनूप ।
ते निज गुण जीव चेतन तणो, ते सुणजो घर चूप ॥ १ ॥

ढाल

[धन्य धन्य जंबू स्वाम नें]

आठ करम छें जीव रे अनाद रा, त्यांरी उतपत आर्ख्व दुवार हो ।
ते उदे थइ नें पछे निरजरे, बले उपजे निरंतर लार हो ॥
निरजरा पदार्थ ओलखो ॥ १ ॥

दरब जीव छें तेहनें, असंख्याता परदेस हो ।
सारां परदेसां आश्रव दुवार छें सारां परदेसां करम परवेस हो ॥ २ ॥
एक एक परदेस तेहनें, समें २ करम लगंत हो ।
ते परदेस एकीका करम नां, समें समें लागे अनंत हो ॥ ३ ॥
ते करम उदे थइ जीव रे, समें २ अनंता भइ जाय हो ।
भरीया नींगल जूं करम मिटें नहीं, करम मिटवा रो न जाणें उपाय हो ॥ ४ ॥
आठ करमां में च्यार घण घातीया, त्यांसू चेतन गुणां री हुइ घात हो ।
ते अंसमात्र षय उपसमा रहे सदा, तिण सूं उजलो रहें अंसमात हो ॥ ५ ॥
कायक छन घातीया षयउपसम हूआं, जब कोयक उदे रह्या लार हो ।
षय उपसम थी जीव उजलो हुवो, उदे थी उजलो नहीं छे लिंगार हो ॥ ६ ॥
कार्यक करम खय हुवे, कार्यक उपसम हुवें ताय हो ।
ते षय उपसम भाव छे उजलो, चेतन गुण पर्याय हो ॥ ७ ॥
जिम २ करम षय उपसम हुव, तिम २ जीव उजल हुवें आम हो ।
जीव उजलो तेहिज निरजरा, ते भाव जीव छें तांम हो ॥ ८ ॥
देस थकी जीव उजलो हुवे, तिणने निरजरा कही भगवांन हो ।
सर्व उजल ते मोष छें, ते मोष छे परम निघांन हो ॥ ९ ॥
ग्यांनावरणी षय उपसम हूआं नीपजे, च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन हो ।
भणवो आचारंग आदि दे, चददे पूर्व रो ग्यांन हो ॥ १० ॥
ग्यांनावरणी री पांच प्रकत मभे, दोय षयउपसम रहें छे सदीव हो ।
तिण सूं दोय अग्यांन रहे सदा, अंस मात्र उजल रहे जीव हो ॥ ११ ॥

मिथ्याती रे तो जगन दोग अग्यांन छें, उतकष्टा तीन अग्यांन हो ।
 देस उणों दस पूर्व उतकष्टो भणे, इतरो उतकष्टो षयउपसम अग्यांन हो ॥ १२ ॥
 समदिष्टी रे जगन दोग ग्यांन छें, उतकष्टा च्यार ग्यांन हो ।
 उतकष्टो चवदें पूर्व भणें, एहवो षयउपसम भाव निधान हो ॥ १३ ॥
 मत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, नीयजें मत ग्यान मत अग्यांन हो ।
 सुरत ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, नीपजे सुरत ग्यान अग्यान हो ॥ १४ ॥
 वले भणवो आत्वारग आदि दे, समदिष्टी रे चवदें पूर्व ग्यांन हो ।
 मिथ्याती उतकष्टो भणे, देस उणो देस पूर्व लग जाण हो ॥ १५ ॥
 अवधि ग्यांनावरणी षयउपसम हूआं, समदिष्टी पामें अवध ग्यांन हो ।
 मिथ्या दिष्टी ने विभंग नाण उपजे, पयउपसम परमाणं जाण हो ॥ १६ ॥
 मनपजवावर्णी षयउपसम्यां, उपजें मनपजवा नाण हो ।
 ते साधु समदिष्टी ने उपजे, एहवो षयउपसम भाव परधान हो ॥ १७ ॥
 ग्यांन अग्यांन सागार उपीयोग छें, दोगा रो एक सभाव हो ।
 करम अलगा हूआं नीपजें, ए षयउपसम उजल भाव हो ॥ १८ ॥
 दरसणावर्णी षयउपसम हूआं, आठ बोल नीपजे श्रीकार हो ।
 पांच इद्री नें तीन दरसण हुवे, ते निरजरा उजला तंत सार हो ॥ १९ ॥
 दरसणावर्णी रे नव प्रकत मभे, एक प्रकत षयउपसम सदीव हो ।
 तिण सू अचषू दरसण ने फरस इदरी रहे, षयउपसम भाव जीव हो ॥ २० ॥
 चषू दरसणावर्णी पयउपसम हूआं, चषू दरसण ने चषू इद्री होय हो ।
 करम अलगा हूआं उजलो हूओ, जब देखवा लागो सोय हो ॥ २१ ॥
 अचषू दरसणावर्णी वशेष थी, षयउपसम हुवें तिण वार हो ।
 चषू टाले सेष इद्री, षयउपसम हुवे इद्री च्यार हो ॥ २२ ॥
 अवधि दरसणावर्णी षयउपसम हूआं, उपजें अवधि दरसण वशेष हो ।
 जब उतकष्टो देखे जीव एतलो, सर्व रूपी पुदगल ले देख हो ॥ २३ ॥
 पांच इद्री ने तीनू इ दरसण, ते षयउपसम उपीयोग अणाकार हो ।
 ते वानगी केवल दरसण माहिली, तिणमें संका म राखो लिंगार हो ॥ २४ ॥
 मोह करम षयउपसम हूआं, नीपजे आठ बोल अमाम हो ।
 च्यार चारित ने देस विरत नीपजें, तीन दिष्टी उजल होय तांम हो ॥ २५ ॥
 चारित मोहं रे पचीस प्रकत मभे, केइ सदा षयउपसम रहे ताय हो ।
 तिण सू अंस मात उजलो रहे, जब भला वरते छे अचवसाय हो ॥ २६ ॥
 कदे षयउपसम इधकी हूवें, जब इधका गुण हुवें तिण मांय हो ।
 षिमा दया संतोषादिक गुण वधे, भली लेख्यादि वरतें जब आय हो ॥ २७ ॥
 ६

भला परिणाम पिण वरते तेहनें, भला जोग पिण वरते ताय हो ।
 धर्म ध्यान पिण ध्यावे किण समे, ध्यावणी आवें मिटीयां कषाय हो ॥ २८ ॥
 ध्यान परिणाम जोग लेस्या भली, बले भला वरते अघवसाय हो ।
 सारा वरते अंतराय षयउपसम हूआं, मोह करम अलगा हूआं ताय हो ॥ २९ ॥
 चोकड़ी अंताणुबंधी आदि दे, घणीं प्रकृत्यां षयउपसम हुवें ताय हो ।
 जब जीव रे देस विरत नीपजे, इणहीज विघ च्यारुं चारित आय हो ॥ ३० ॥
 मोहणी षयउपसम हूआं नीपनों, देस विरत नें चारित च्यार हो ।
 बले षिमा दयादिक गुण नीपनां, सगलाइ गुण श्रीकार हो ॥ ३१ ॥
 देस विरत नें च्यारुंई चरित भला, ते गुण रतनां री खान हो ।
 ते खायक चरित री वानगी, एहवो षयउपसम भाव परधान हो ॥ ३२ ॥
 चारित नें विरत संवर कह्यो, तिण सूं पाप रूधें छें ताय हो ।
 पिण पाप भरी नें उजल हूओं, तिणनें निरजरा कही इण न्याय हो ॥ ३३ ॥
 दरसन मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें साची सुध सरधान हो ।
 तीनुं दिष्ट में सुध सरधान छें, ते तो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३४ ॥
 मिथ्यात मोहणी षयउपसम हुआं, मिथ्यादिष्टी उजली होय हो ।
 जब केयक पदारथ सुध सरधले, एहवो गुण नीपजें छें सोय हो ॥ ३५ ॥
 मिश्र मोहणी षयउपसम हूआं, सममिथ्या दिष्टी उजली हुवें तांम हो ।
 जब घणां पदारथ सुध सरधलें, एहवो गुण नीपजें अमाम हो ॥ ३६ ॥
 समकत मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें समकत रतन परधान, हो ।
 नव ही पदारथ सुध सरधलें, एहवो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३७ ॥
 मिथ्यात मोहणी उदे छें ज्यां लगे, सममिथ्या दिष्टी नही आवंत हो ।
 मिश्र मोहणी रा उदे थकी, समकत नही पावंत हो ॥ ३८ ॥
 समकत मोहणी ज्यां लों उदे रहें, त्यां लग षायक समकत आवें नाय हो ।
 एहवी छाक छें दरसन मोह करम नी, न्हांखे जीव नें भ्रमजाल माय हो ॥ ३९ ॥
 षयउपसम भाव तीनोंइ दिष्टी छें, ते सगलोइ सुध सरधान हो ।
 ते खायक समकत माहिली, वानगी मातर गुण निधान हो ॥ ४० ॥
 अंतराय करम षयउपसम हूआं, लबध आठ गुण नीपजें श्रीकार हो ।
 पांच लबध तीन वीर्य नीपजे, हिवे तेहनो सुणो विसतार हो ॥ ४१ ॥
 पांचोंइ प्रकत अंतराय नी, सदा षयउपसम रहें छे साख्यात हो ।
 तिण सूं पांचू लबध बाल वीर्य, उजल रहे छें अल्पमात हो ॥ ४२ ॥
 दानांतराय षयउपसम हूआं, दान देवा री लबध उपजंत हो
 लामांतराय षयउपसम हूआं, लाम री लबध खुलंत हो ॥ ४३ ॥

भोगअंतराय - षयउपसम्यां, भोग लब्ध उपनें छे ताय हो ।
उपभोगअंतराय खयउपसम हूआं, उपभोग लब्ध उपजें आय हो ॥ ४४ ॥
दांन देवा री लब्ध निरंतर, दांन देवे ते जोग व्यापार हो ।
लाम लब्ध पिण निरंतर रहें, वस्त लाभे ते किण ही वार हो ॥ ४५ ॥
भोग लब्ध तो रहे छे निरंतर, भोग भोगवे ते जोग व्यापार हो ।
उपभोग पिण लब्ध छे निरंतर, उपभोग भागवे जिण वार हो ॥ ४६ ॥
अंतराय अलगी हूआं जीव रे, पुन सारूं मिलसी भोग उपभोग हो ।
साधु पुदगल भोगवे ते सुभ जोग छे,, और भोगवे ते असुभ जोग हो ॥ ४७ ॥
वीर्य अंतराय षयउपसम हूआं, वीर्य लब्ध उपजें छे ताय हो ।
वीर्य लब्ध ते सगत छे जीव री, उतकष्टी अनती होय जाय हो ॥ ४८ ॥
तिण वीर्य लब्ध रा तीन भेद छे, तिणरी करजो पिछांण हो ।
बाल वीर्य कह्यो छे बाल रो, ते चोथा गुणठाणा ताई जांण हो ॥ ४९ ॥
पिंडत वीर्य कह्यो पिंडत तणो, छठा थी लेइ चवदमे गुण ठांण हो ।
बाल पिंडत वीर्य कह्यो छे श्रावक तणो, ए तीनीई उजल गुण जांण हो ॥ ५० ॥
कदे जीव वीर्य नें फोडवे, ते छे जोग व्यापार हो ।
सावध निरवद तो जोग छे, ते वीर्य सावध नहीं छे लिगार हो ॥ ५१ ॥
वीर्य तो निरंतर रहे, चवदमां गुण ठांणा लग जांण हो ।
बारमा ताइ तो षयउपसम भाव छे, खायक तेरमे चवदमे गुण ठाण हो ॥ ५२ ॥
लब्ध वीर्य नें तो वीर्य कह्यो, करण वीर्य ने कह्यो जोग हो ।
ते पिण सगत वीर्य ज्यां लगे, त्या लग रहे पुदगल सजोग हो ॥ ५३ ॥
पुदगल विण वीर्य सगत हुवे नहीं, पुदगल विना नहीं जोग व्यापार हो ।
पुदगल लगा छे ज्यां लग जीव रे, जोग वीर्य छे ससार मभार हो ॥ ५४ ॥
वीर्य निज गुण छे जीव रो, अतराग अलगा हूआं जाण हो ।
ते वीर्य निश्चेइ भाव जीव छे, तिण मे सका मूल म आण हो ॥ ५५ ॥
एक मोह करम उपसम हुवे, जब नीपजे उपसम भाव दोय हो ।
उपसम समकत उपसम चारित हुवे, ते तो जीव उजलो हुवो सोय हो ॥ ५६ ॥
दरसण मोहणी करम उपसम हुवां, निपजे उपसम समकत निधान हो ।
चारित मोहणी उपसम हूआं, परगटे उपसम चारित परघांन हो ॥ ५७ ॥
च्यार घणघातीया करम षय हुवे, जब परगट हुवे खायक भाव हो ।
ते गुण सरवथा उजला, त्यारो जूओ २ सभाव हो ॥ ५८ ॥
ग्यांनावरणी सरवथा खय हूआं, उपजे केवल ग्यांन हो ।
दरसणावणी पिण खय हुवे सरवथा, उपजे केवल दरसण परघांन हो ॥ ५९ ॥

मोहणी करम खय हुवे सरवथा, बाकी रहें नही अंसमात हो ।
 जब खायक समकत परगटे, बले खायक चारित जथाख्यात हो ॥ ६० ॥
 दरसन मोहणी खय हुवे सरवथा, जब निपजे खायक समकत परघान हो ।
 चारित मोहणी खय हुआं, नीपजे खायक चारित निघान हो ॥ ६१ ॥
 अंतराय करम अलगो हुआ, खायक वीर्य सगत हुवे ताय हो ।
 खायक लब्ध पाचूइ परगटे, किण ही वात री नही अंतराय हो ॥ ६२ ॥
 उपसमय खायक षयउपसम निरमला, ते निज गुण जीव रा निरदोष हो ।
 ते तो देस थकी जीव उजलो, सर्व उजलो ते मोख हो ॥ ६३ ॥
 देस विरत श्रावक तणी, सर्व विरत साधु री छें ताय हो ।
 देस विरत समाइ सर्व विरत में, ज्यूं निरजरा समाइ मोख मांय हो ॥ ६४ ॥
 देस थी जीव उजले ते निरजरा, सर्व उजलो ते जीव मोख हो ।
 तिण सूं निरजरा ने मोख दोनू जीव छे, उजल गुण जीव रा निरदोष हो ॥ ६५ ॥
 जोइ कीधी निरजरा ओल्लायवा, नाथ दुवारा सहर मम्हार हो ।
 सवत अठारे वरस छपने, फागण सुद दसम गुरवार हो ॥ ६६ ॥

ढाल : १०

दुहा

निरजरा गुण निरमल कह्यो, उजल गुण जीव रो वशेख ।
 ते निरजरा हुवे छे किण विधे, सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥
 भूख तिरषा सी तानादिक, कष्ट भोगवे विविध परकार ।
 उदे आया ते भोगव्यां, जब करम हुवे छें न्यार ॥ २ ॥
 नरकादिक दुःख भोगव्यां, करम घस्यां थी हलको थाय ।
 आ तो सहजा निरजरा हुइ जीव रे, तिणरो न कीयो मूल उपाय ॥ ३ ॥
 निरजरा तणो कामी नही, कष्ट करे छे विविध परकार ।
 तिणरा करम अल्प मातर भरे, अकाम निरजरा नो एह विचार ॥ ४ ॥
 अह लोक अर्थे तप करे, चक्रवर्तादिक पदवी काम ।
 केइ परलोक ने अर्थे करें, नही निरजरा तणा परिणाम ॥ ५ ॥
 केइ जस महिमा वधारवा, तप करे छे ताम ।
 इत्यादिक अनेक कारण करे, ते निरजरा कही छे अकाम ॥ ६ ॥
 सुध करणी करें निरजरा तणी, तिण सू करम कटे छे ताम ।
 थोडो घणो जीव उजलो हुवे, ते सुणजो राखे चित ठाम ॥ ७ ॥

दालें

[पूज्य भिखन जी रो समरण करता]

देस थकी जीव उजल हुवो छें, ते तो निरजरा अनूप जी ।
 हिवे निरजरा तणी सुघ करणी कहं छू, ते सुणजो घर चुंप जी ॥
 आ सुघ करणी छें कर्म काटण री ॥ १ ॥

ज्यूं साबू दे कपडा नें तपावे, पांणी सूं छांटे करें संभाल जी ।
 पछे पांणी सूं घोवें कपडा ने, जब मेल छटे ततकाल जी ॥ २ ॥

ज्यूं तप कर नें आतम नें तपावे, ग्यान जल सूं छांटे ताय जी ।
 ध्यान रूप जल माहें भ्रूलोले, जब करम मेल छट जाय जी ॥ ३ ॥

ग्यान रूप सावण सुघ चोखे, तप रूपी निरमल नीर जी ।
 घोबी ज्यूं छें अंतर आतमा, ते घोवे छे निज गुण चीर जी ॥ ४ ॥

कांमी छें एकंत करम काटण रो, और बंछा नही काय जी ।
 तो करणी एकंत निरजरा री, तिण सूं करम भड जाय जी ॥ ५ ॥

करम काटण री करणी चोखी, तिणारा छे बारे भेद जी ।
 तिण करणी कीयां जीव उजल हुवें छें, ते सुणजो आण उमेद जी ॥ ६ ॥

अणसण करे च्याहं आहार त्यागे, करें जावजीव पचखाण जी ।
 अथवा थोडा काल तांइ त्यागे, एहवी तपसा करें जाण २ जी ॥ ७ ॥

सुघ जोग रूंध्या साधु रे हूवो सवर, श्रावक रे विरत हुइ ताय जी ।
 पिण कष्ट सह्यां सूं निरजरा हुवे, तिण सूं घाल्यो छे निरजरा माय जी ॥ ८ ॥

ज्यूं २ भूख तिरषा लागें, ज्यूं २ कष्ट उपजे अतंत जी ।
 ज्यूं २ करम कटे हुवें न्यारा, समें २ खिरे छें अनंत जी ॥ ९ ॥

उणों रहे ते उणोदरी तप छे, ते तो दरब नें भाव छें न्यार जी ।
 दरब ते उणगरण उणा राखें, वले उणोइ करे आहार जी ॥ १० ॥

भाव उणोदरी क्रोधादिक वरजे, कलहादिक दिये छें निवार जी ।
 समता भाव छें आहार उपधि थी, एहवी उणोदरी तप सार जी ॥ ११ ॥

भिष्याचरी तप भिष्या त्याग्यां हुवे, ते अभिग्रहा छें विवघ परकार जी ।
 ते तो दरब बेतर काल भाव अभिग्रह छें, त्यांरो छे वोहत विस्तार जी ॥ १२ ॥

रस रो त्याग करे मन सुधे, छांड्यो विगयादिक रो सवाद जी ।
 अरस विरस आहार भोगवे समता सूं, तिणारे तप तणी हुवे समाद जी ॥ १३ ॥

काया कलेस तप कष्ट कीयां हुवें, आसण करे विवघ परकार जी ।
 सी तापादिक सहे खाज न खणे, वले न करे सोभा ने सिणगार जी ॥ १४ ॥

परीसंलीणीया तप च्यार परकारें, त्यांरा जूजूआ छें नांम जी ।
 इंद्री कषाय नें जोग संलीण्या, विवत सेणासण सेवणा तांम जी ॥ १५ ॥
 सोइंद्री नें विपे नां सव्व सूं वंघे, विपे सव्व न सुणे किंवार जी ।
 कदा विपे रा सव्व कानां में पडीया, तो राग घेप न करे लिगार जी ॥ १६ ॥
 इम चपू इंद्री रुप सूं संलीनता, घाण इंद्री गंघ सुं जाण जी ।
 रसइंद्री रस सूं ने फरस इंद्री फरस सूं, सुरत इंद्री ज्यूं लीजो पिछाण जी ॥ १७ ॥
 क्रोध उपजावारो संबण करवो, उदे आयो निरफल करे तांम जी ।
 मांन माया लोभ इम हिज जाणों, कषाय संलीणीया तप हुवें आंम जी ॥ १८ ॥
 पाडुआ मन ने संवे देणों, भलो मन परवरतावणो तांम जी ।
 इम हिज वचन नें काया जाणों, जोग संलीणीया हुवें आंम जी ॥ १९ ॥
 अस्त्री पभू पिंडग रहीत थानक सेवे, ते सुघ निरदोपण जाण जी ।
 पीढ पाटादिक निरदोपण सेवें, विवत सेणासण एम पिछाण जी ॥ २० ॥
 ए छत्र परकारें वाह्य तप कहां छें, ते परसिव चावो दीसंत जी ।
 हिवें छ परकारें अमितर तप कहुं छें, ते माप्यो छे श्री भगवंत जी ॥ २१ ॥
 प्रायच्छित्त कहां छें वस परकारें, दोप ओलाए प्रायच्छित्त लेवंत जी ।
 ते करम खपाय आरावक थावे, ते तो मुगत में वेगो जावंत जी ॥ २२ ॥
 विनों तप कहां सात परकारें, त्यांरो छें वोहत विसतार जी ।
 ग्यांन दरसण चारित्त मन विनों, वचन काया नें लोग ववहार जी ॥ २३ ॥
 पांचू ग्यांन तणा गुणग्राम करणा, ए ग्यांन विनों करणो छें एह जी ।
 दरसण विनां रा दोय भेद छें, सुसरपा ने अणासातणा तेह जी ॥ २४ ॥
 सुसरपा वडां री करणी, त्यांने वंदणा करणी सीम नांम जी ।
 ते सुसरपा दस विघ कही छें, त्यांरा जूवा जूवा नांम छे तांम जी ॥ २५ ॥
 गुर आयां उठ उभो होवणो, आसन छोडणो तांम जी ।
 आसन आमंत्रणों हरप सूं देणो, सतकार नें समाण देणो आंम जी ॥ २६ ॥
 वंदणा कर हाय जोडी रहे उभो, आवता देख सांहों जाय जी ।
 गुर उभा रहे त्यां लग उभा रहिणो, वें जायें जत्र पोहचावण जावें ताय जी ॥ २७ ॥
 अणअसातणा विनां रा भेद, पेंतालीस कह्या जिगराय जी ।
 अरिहंत नें अरिहंत पळ्यो धर्म, वले आचार्य नें उवभाय जी । २८ ॥
 यिवर कुल गण संघ नों विनों, किरीया दादी संभोगी जाण जी ।
 मत ग्यांनादिक पांचूई ग्यांन रो, ए पनरेई वोल पिछाण जी ॥ २९ ॥
 थां पनरां वोलं में पांचू ग्यांन फेर कह्या छें, ते दीसे छे चारित्त सहीत जी ।
 ए पांच ग्यांन नें फेर कह्या त्यांरी, विनां तणी ओर रीत जी ॥ ३० ॥

यारी आसातना टालणी ने विनों करणों, भगत कर देणो समान जी ।
 गुणग्राम करे नें दीपावणा त्यांनं, दरसन विनों छें सुघ सरधान जी ॥ ३१ ॥
 सामायक आदि दे पांचूई चारित, त्यांरो विनों करणो जथाजोग जी ।
 सेवा भगत त्यांरी हरष सूं करणी, त्यांसूं करणो निरदोष संभोग जी ॥ ३२ ॥
 सावद्य मन नें परो निवारे, ते सावद्य छें बारे परकार जी ।
 बारे परकार निरवद मन परवरतावे, तिण सूं निरजरा हुवे श्रीकार जी ॥ ३३ ॥
 इम हिज सावद्य वचन बारे भेदे, तिण सावद्य नें देवे निवार जी ।
 निरवद वचन बोले निरदोषण, बारेइ बोल वचन विचार जी ॥ ३४ ॥
 काया अजेंणा सूं नही परवरतावे, तिणरा भेद कह्या सात जी ।
 ज्यूं सात भेद काया अजेंणा सूं परवरतावे, जब करम तणी हुवें घात जी ॥ ३५ ॥
 लोग ववहार विनों कह्यां सात परकारे, गुर समीपे वरतवो ताम जी ।
 गुरवादिक् रे छ्छादे चालणो, ग्यांनादिक् हेते करणों त्यांरो काम जी ॥ ३६ ॥
 भणायो त्यांरो विनों वीयावच करणी, आरत गवेष करणों त्यांरो काम जी ।
 प्रसताव अवसर नों जाण हुवेणो, सर्वं कार्य करणो अभिराम जी ॥ ३७ ॥
 वीयावच तप छे दस परकारे, ते वीयावच सावां री जाण जी ।
 करमां री कोड खपे छें तिण थी, नेड़ी हुवे छें निरवाण जी ॥ ३८ ॥
 सभाय तप छें पांच परकारे, जे भाव सहीत ही करे सोय जी ।
 अर्थ ने पाठ विवरा सुघ गिणीया, करमां रा भड खय होय जी ॥ ३९ ॥
 आरत रोद्र ध्यान निवारे, ध्यावें सुकल ध्यान जी ।
 ध्यावतो २ उतकष्टें ध्यावें, तो उपजें केवल ग्यान जी ॥ ४० ॥
 विउसग तप छें तजवारो नाम, ते तो दरब नें भाव छें दोग जी ।
 दरब विउसग च्यार परकारे, ते विवरो सुणो सहू कोय जी ॥ ४१ ॥
 सरीर विउसग सरीर रो तजवो, इम गण नों विउसग जाण जी ।
 उपधि नों तजवो ते उपधि विउसग, भात पांणी रो इम हिज पिछाण जी ॥ ४२ ॥
 भाव विउसग रा तीन भेद छे, कषाय संसार नें करम जी ।
 कषाय विउसग च्यार परकारे, क्रोधादिक् च्याहं छोड्यां छें धर्म जी ॥ ४३ ॥
 संसार विउसग संसार नों तजवो, तिणरा भेद छें च्यार जी ।
 नरक तिर्यच मिनष नें देवा, त्यांने तजने त्यांसूं हुवें न्यार जी ॥ ४४ ॥
 करम विउसग छें आठ परकारे, तजणा आठूंइ करम जी ।
 त्यांनं ज्यूं २ तजे हल को होवें, एहवी करणी थी निरजरा धर्म जी ४५ ॥
 बारे परकारे तप निरजरा री करणी, जे तपसा करे जाण जी ।
 ते करम उदीर उदे आंण खेरे, त्यांने नेड़ी होसी निरवाण जी ॥ ४६ ॥

साध रे बारे भेदे तपसा करतां, जिहां २ निरवद जोग रूंचाय जी ।
 तिहां २ संवर हुवें तपसा रे लारे, तिण सूं पुन लागता मिट जाय जी ॥ ४७ ॥
 इण तप माहिलो तप श्रावक करतां, कठे उसभ जोग रूंचाय जी ।
 जब विरत संवर हुवें तपसा लारे, लागता पाप मिट जाय जी ॥ ४८ ॥
 इण तप माहिलो तप इविरती करतां, तिणरे पिण करम कटाय जी ।
 कोड परत संसार करे इण तप थी, वेगो जाए मुगत रे मांय जी ॥ ४९ ॥
 साध श्रावक समदिष्टी तपसा करतां, त्यांरे उतकष्टी टले करम छोट जी ।
 कदा उतकष्टो रस आवें तिणरे, तो वंचे तीथंकर गोत जी ॥ ५० ॥
 तप थी आणे संसार नों छेहडो, वले आणे करमां रो अंत जी ।
 इण तपसा तणे परतापे जीवडो, संसारी रो सिध होवंत जी ॥ ५१ ॥
 कोड भवां रा करम संचीया हुवें तो, खिण में दिये खपाय जी ।
 एहवो छें तप रतन अमोलक, तिणरा गुण रो पार न आय जी ॥ ५२ ॥
 निरजरा तो निरवद उजल हुवां थी, करम निरवरते हुओ न्यार जी ।
 तिण लेखे निरजरा निरवद कहीए, बीजूं तो निरवद नहीं छें लिंगार जी ॥ ५३ ॥
 इण निरजरा तणी करनी छें निरवद, तिणसूं करमां री निरजरां होय जी ।
 निरजरा ने निरजरा री करणी, ए तो जूआ जूआ छे दोय जी ॥ ५४ ॥
 निरजरा तो मोष तणो अंस निरवें, देश थकी उजलो छें जीव जी ।
 जिणरे निरजरा करण री चूप लागी छे, तिण दीधी मुगत री नींव जी ॥ ५५ ॥
 सहजां तो निरजरा अनाद री हुवें छें, ते होय २ ने मिट जाय जी ।
 वरम बंघण सूं निवरत्यो नाहीं, संसार में गोता खाय जी ॥ ५६ ॥
 निरजरा तणी करणी ओलखावण, जोड कीवी नाथ दुवारा मभार जी ।
 समत अठारे बरस छपने, चेत विद बीज ने गुरवार जी ॥ ५७ ॥

८ : बंध पदारथ

ढाल : ११

दुहा

आठमों पदारथ बंध छें, तिण जीव नें राख्यो छें बंध ।
जिण बंध पदारथ नहीं ओलख्यो, ते जीव छें मोह अंध ॥ १ ॥
बंध थकी जीव दबीयो रहें, कांई न रहें उघाडी फोर ।
तिण बंध तणा प्रबल थकी, कांई न चले जोर ॥ २ ॥
तलाव रूप तो जीव छें, तिणमें पडीया पांणी ज्यू बंध जांण ।
नीकलता पांणी रूप पुन पाप छें, बंध नें लीजो एम पिच्छाण ॥ ३ ॥
एक जीव दरब छे तेहने, असंख्यात परदेरा ।
सगला परदेसां आश्रव दुवार छें, सगला परदेसां करम परदेरा ॥ ४ ॥
मिथ्यात इविरत नें परमाद छें, वले कपाय जोग विख्यात ।
यां पांचां तणा बीस भेद छें, पनरे आश्रव जोग में समात ॥ ५ ॥
नाला रूप आश्रव नाला करम नां, ते खंध्यां हुवें संवर दुवार,
करम रूप जल आवतो रहे, जब बंध न हुवें लिगार ॥ ६ ॥
तलाव नों पाणी घटे तिण विचे, जीव रे घटे छ करम ।
जब कायक जीव उजल हुवे, ते तो छे निरजरा धर्म ॥ ७ ॥
कदे तलाव रीतो हुवें, सर्व पांणी तणो हुवें सोप
ज्यूं सर्व करमां नों सोपंत हुवे, रीता तलाव ज्यूं मोप ॥ ८ ॥
बंध तो छे आठ करमां तणो, ते पुदगल नीं पर्याय ।
तिण बंध तणी ओलखणा कहुं, ते मुणजो चित ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[अइ २ कर्म विडम्बना]

बंध नीपणें छे आश्रव दुवार थी, तिण बंध ने कह्यो पुन पापो जी ।
ते पुन पाप तो दरब रूप छें, भावे बंध कह्यो जिण आपो जी ॥
बंध पदारथ आंख्यो ॥ १ ॥
ज्यूं तीर्थकर आय उपनां, ते तो दरब तीर्थकर जांणी जी ।
भावे तीर्थकर तो जिण समे, होसी तेरम गुणठांणी जी ॥ २ ॥
ज्यूं पुन नें पाप लागो कह्यो, ते तो दरब छें पुन ने पापो जी ।
भावे पुन पाप तो उदे आयां हुसी, सुख दुःख सोग संताप जी ॥ ३ ॥
तिण बंध तणा दोय भेद छें, एक पुन तणां बंध जांणी जी ।
बीजो बंध छें पाप रो, दोनूं बंध शं करजां मिच्छांणी जी ॥ ४ ॥

यद् आंकडै प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पुन नों बंध उदे हूआं, जीव नें साता सुख हुवें सोयो जी ।
 पाप नों बंध उदे हूआ, विविध पणे दुःख होयो जी ॥ ५ ॥
 बंध उदे नही ज्यां लग जीव ने, सुख दुःख मूल न होय जी ।
 बंध तो छत्ता रूप लागो रहे, फोडा न पाडे कोयो जो ॥ ६ ॥
 तिण बंध तणा च्यार भेद छे, त्यांने रुडी रीत पिछांणों जी ।
 प्रकतबंध नें थितबंध दुसरो, अनुभाग नें परदेस दध जाणों जी ॥ ७ ॥
 प्रकतबंध छे करमां री जूजूइ, ते करमां रा सभाव रे न्यायो जी ।
 बांधी छे तिण समे बंध छें, जेसी बांधी तेसी उदे आयो जी ॥ ८ ॥
 तिण प्रकत ने मापी छे काल सूं, इतरा काल तांइ रहसी तांमो जी ।
 पछे तो प्रकत विल्लवसी, थित सूं प्रकत बंध छें आंमो जी ॥ ९ ॥
 अनुभाग बंध रस विपाक छें, जेसो जेसो रस देसी ताह्यो जी ।
 ते पिण प्रकत नो बंध रस कह्यो, बांध्या तेसांइज उदे आयो जी ॥ १० ॥
 परदेश बंध कह्यो प्रकत बंध तणो, प्रकत प्रकत रा अनंत परदेसो जी ।
 ते लोलीभूत जीव सूं ह्येय रह्या, प्रकत बंध ओलखाई वशपो जी ॥ ११ ॥
 आठ करमा री प्रकत छे जूजूई, एकी की रा अनंत परदेसो जी ।
 ते एकीकी परदेस जीव रे, लोली भूत हुवा छे वशपो जी ॥ १२ ॥
 ग्यांनावरणी दरसवरणी वेदनी, वले आठमों करम अंतरायो जी ।
 यांरी थित छें सगला री सारिषी, ते सुणजो चित्त ल्यायो जी ॥ १३ ॥
 थित छे यां च्याहूं करमां तणी, अंतरमुहरत परिमांणो जी ।
 उतकप्टी थित यां च्याहूं करमां तणी, तीस कोडा कोडा सागर जाणों जी ॥ १४ ॥
 थित दरसण मोहणी करम नीं, जगन तो अंतरमुहरत परमांणो जी ।
 उतकप्टी थित छे एहनी, सितर कोडा कोड सागर जाणों जी ॥ १५ ॥
 जिगन थित चारित मोहणी करम नी, अंरमुहरत कही जगदीसो जी ।
 उतकप्टी थित छे एहनी, सागर कोडा कोड चालीसो जी ॥ १६ ॥
 थित कही छे आउखा करम नीं, जिगन अंतरमुहरत होयो जी ।
 उतकप्टी थित सागर तेतीस नीं, आगे थित आउखा री न कोयो जी ॥ १७ ॥
 थित नांम ने गोत्र करम तणी, जगन तो आठ मुहरत सोयो जी ।
 उतकप्टी एकीका करम नीं, बीस कोडा कोड सागर होयो जी ॥ १८ ॥
 एक जीव रे आठ करमां तणां, पुद्गल रा परदेस अनंतो जी ।
 ते अभवी जीवां थी मापीयां, अनंत गुणां कह्या भगवंतो जी ॥ १९ ॥
 ते अवस उदे आसी जीव रे, भोगवीयां विण नहीं छटायो जी ।
 हदै आयां विण सुख दुःख हुवें नही, उदे आयां सुख दुःख थायो जी ॥ २० ॥

सुभ परिणामां करम बांधीया, ते सुभ पणे उदे आसी जी ।
 असुभ परिणामां करम बांधीया, तिण करमां थी दुःख थासी जी ॥ २१ ॥
 पांच वरणा आठोइ करम छें, दोय गंध नें रस पांचूई जी ।
 चोफरसी आठूइ करम छें, रूपी पुदगल करम आठोइ जी ॥ २२ ॥
 करम तो लूखा ने चोपड्यां, वले ठंढा उंना होइ जी ।
 करम हलका नही भारी नही, सूहाली नें खरदरा न कोइ जी ॥ २३ ॥
 कोइ तलाव जल सूं पूर्ण भख्यो, खाली कोर न रही कायो जी ।
 ज्यूं जीव भख्यो करमां थकी, आ तो उपमा देस थी ताह्यो जी ॥ २४ ॥
 असंख्याता परदेस एक जीव रे, ते असंख्याता जेम तलावो जी ।
 सारा परदेस भरीया करमां थकी, जाणें भरीया चोखूणी बावो जी ॥ २५ ॥
 एक एक परदेस छें जीव नों, तिहां अतंता करम नां परदेसो जी ।
 तें सारा परदेस भरीया छें बाव ज्यूं, करम पुदगल कीयो छें परवेसो जी ॥ २६ ॥
 तलाव खाली हुवे छे इण विघे, पेंहला तो नाला देवे रूंधायो जी ।
 पछे मोरियादिक छोडे तलाव री, जत्र तलाव रीतो थायो जी ॥ २७ ॥
 ज्यूं जीव रे आश्रव नालो रूंध दे, तपसा करें हरष सहीतो जी ।
 जब छेहंडो आवें सर्व करम नों, तव जीव हुवे करम रहीतो जी ॥ २८ ॥
 करम रहीत हुवो जीव निरमलो, तिण जीव ने कहिजे मोखो जी ।
 ते सिघ हुवो छे सासतो, सर्व करम बंध कर दीयो सोषो जी ॥ २९ ॥
 जोड कीचीं छे बंध ओलखायवा, नाथ दुवारा सहर ममारो जी ।
 संमत अठारे नें वरस छपनें, चेत विद बारस सनीसर वारो जी ॥ ३० ॥

६ : मोख पंदारथ

ढाल : १२

दुहा

मोख पदार्थ नवमों कहुओं, ते सगला माहे श्रीकार ।
सर्व गुणां करी सहीत छे, त्यांरा सुखां रो छेह न पार ॥ १ ॥
करमां सूं मूकाणा ते मोख छे, त्यांरा छे नाम विशेष ।
परमपद निरवाण ते मोख छें, सिद्ध सिव आदि छे नाम अनेक ॥ २ ॥
परमपद उक्तण्टो पद पामीयो, तिण सूं परमपद त्यारो नाम ।
करम दावानल मेट सीतल थया, तिणसूं निरवाण नाम छें ताम ॥ ३ ॥
सर्व कार्य सिधा छें तेहनां, तिण सूं सिध कहुआ छें ताम ।
उपद्रव्य करनें रहीत ह्यां, तिण सूं सिव कहीजे त्यारो नाम ॥ ४ ॥
इण अनुसारे जाणजो, मोख रा गुण परमाणे नाम ।
हिवें मोख तणा सुख वरण्वं, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

(पाखंड वधसी आरे पाचवे)

मोख पदार्थ नां सुख सासता रे, तिण सुखां रो कदेय न आवे अंत रे ।
ते सुख अमोलक निज गुण जीव रा रे, अनंत सुख भाप्या छें भगवंत रे ॥
मोख पदार्थ छें सारां सिरे रे* ॥ १ ॥
तीन काल रा सुख देवां तणां रे, ते सुख इधका घणां अधाग रे ।
ते सगलाइ सुख एकण सिध ने रे, तुले नावे अनंतमे भाग रे ॥ मो० २ ॥
संसार नां सुख तो छें पुदगल तणां रे, ते तो सुख निश्चें रोगीला जाण रे ।
ते करमां बस गमता लागें जीव नें रे, त्यां सुखां री बुधिवंत करो पिछांण रे ॥ ३ ॥
पांव रोगीलो हुवें छें तेहनें रे, अतंत मीठी लागें छें खाज रे ।
एहवा सुख रोगीला छें पुन तणा रे, तिण सूं कदेय न सीमे आतम काज रे ॥ ४ ॥
एहवा सुखां सूं जीव राजी हुवें रे, तिणरे लागे छें पाप करम रा पूर रे ।
पछें दुःख भोगवे छें नरक निगोद में रे, मुगति सुखां सूं पडीयो दूर रे ॥ ५ ॥
छूटा जनम मरण दावानल तेह थी रे, ते तो छें मोष सिध भगवंत रे ।
त्यां आठोंइ करमां नें अलग्ना कीयां रे, जब आठोइ गुण नीपना अनंत रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते मोख सिध भगवंत तो इहा हिज हूआं रे,
 सिध रहिवा नो खेतर छेतिहां जाए रह्या रे,
 अनंतो ग्यान नें दरसन तेहनों रे,
 षायक समकत छें सिध वीतराग तेहने रे,
 अमूरतीपणों त्यारो परगट हूवो रे,
 तिण सू अगुरलघू नें अमूरती कह्यां रे,
 अंतराय करम सू तो रहीत छे रे,
 ते निज गुण सुखां माहे भिल्ले रह्यां रे,
 छूटा कलकली भूत संसार थी रे,
 ते अनंता सुख पांम्यां सिवे रमणी तणां रे,
 त्यारा सुखां नें नही काई ओपमा रे,
 एक धारा त्यांरा सुख सासता रे,
 तीरथ सिधा ते तीरथ मां सू सिध हूआं रे,
 तीथंकर सिधा ते तीरथ थापने रे,
 सयबुवी सिधा ते पोतें समझ नें रे,
 बुधबोही सिधा ते समझे ओरां कनें रे,
 स्वर्लिंगी सिधा साधां रा भेष में रे,
 ग्रहर्लिंगी सिधा ग्रहस्थ रा लिंग थकां रे,
 पुरष लिंग सिधा ते पुरष ना लिंग छतां रे,
 एक सिधा ते एक समें एक हीज सिध हूआ रे,
 ग्यान दरसन ने चारित तप थकी रे,
 यां च्यांरा विनां कोइ सिध हूओ नही रे,
 ग्यान थी जाणे लेवे सर्व भाव ने रे,
 चारित सू करम रोके छें आवता रे,
 एं पनरेइ भेदें सिध हूआं तकेरे,
 बले मोष में सुख सगला रा सारिषा रे,
 मोष पदार्थ नें ओलखायवा रे,
 समत अठांरें नें बरस छानें रे,

पछें एक समा में उंचा गया छे थेट रे ।
 अलोक सूं जाए अड्या छे नेंट रे ॥ ७ ॥
 बले आतमीक सुख अनंतों जाण रे ।
 बले अवगाहणा अटल छें निरवाण रे ॥ ८ ॥
 हलको भारी न लागे मूल लिगार रे ।
 ए पिण गुण त्यांमें श्रीकार रे ॥ ९ ॥
 त्यांरे पुदगल सुख चाहीजे नांय रे ।
 कांइ उणारत रही न दीसे कांय रे ॥ १० ॥
 आठोइ करमां तणो कर सोष रे ।
 त्यांनं कहिजे अविचल मोख रे ॥ ११ ॥
 तीनोंइ लोक संसार मझार रे ।
 ओछा इधका सुख कदेय न हुवे लिगार रे ॥ १२ ॥
 अतीरथ सिधा ते विण तीरथ सिध थाय रे ।
 अतीथंकर सिधा ते विना तीथंकरताय रे ॥ १३ ॥
 प्रतेकबुवी सिधा ते कांयक वस्त देख रे ।
 उपदेस सुणे ने ग्यान वशेष रे ॥ १४ ॥
 अनर्लिंगी सिधा ते अन लिंगी मांय रे ।
 अस्त्री लिंग सिधा अस्त्री लिंग मे ताय रे ॥ १५ ॥
 निपुंसक सिधा निपुंसक लिंग मे सोय रे ।
 अनेक सिधा ते एक समें अनेक सिध होय रे ॥ १६ ॥
 सारा हूआं छें सिध निरवाण रे ।
 ए च्यालईं मोष रा मारग जाण रे ॥ १७ ॥
 दरसन सूं सरख लेवे सयमेव रे ।
 तपसा सूं करमां ने दीया खेव रे ॥ १८ ॥
 सगला री करणी जाणों एक रे ।
 ते सिध छें अनत भेदे अनेक रे ॥ १९ ॥
 जोड कीधी छे नाथ दुवारा मझार रे ।
 चेत सुद चोय ने सनीसर वार रे ॥ २० ॥

ढाल :- १३

दुहा

केह भेष घाख्यां रा षट् मन्हे जीव अजीव री खबर न कांय ।
 ते-पिप गेला फेले गालां तपा, ते-पिप चुव न दीसे कांय ॥ १ ॥
 नव पदार्थ रो त्पारे निरपों नहीं, छ-दखां रो निरपों नांय ।
 न्याय निरपा वित्तां व्व बोजरे, तिगुरो सोच नहीं मन मांय ॥ २ ॥
 जीव अजीव दोनूं लिय क्हा, तीजी दस्त न कांय ।
 जे जे वस्तु छें लोक में ते दोगों में सब तनाय ॥ ३ ॥
 नव ही पदार्थ लिय क्हा, त्पानें दोगों में घाले नांय ।
 त्पारे अंजकार षट में षणों, ते भूल गया भम मांय ॥ ४ ॥
 उंची २ करे छें पल्पणा, ते भोला नें खबर न कांय ।
 तिग सूनव पदार्थ रो निरपों क्हं, ते चुगजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[नेह कुरं हरी रा मड में]

जीव ते चेतन अजीव अचेतन, त्पानें दादर पगे तो ओलखणा सोरा ।
 त्पारा भेदानभेद जूझाजूझा करतां, जव जो ओलखणा छें अति ही दौरा ।
 जीव अजीव सूबा न सरखे मिथ्याती ॥ १ ॥
 जीव अजीव दालेनें सात पदार्थ, त्पानें जीव अजीव सरखे छें दोनूंह ।
 एही उंची सरबा रा छें नूड मिथ्याती, त्पां साबू रो भेष ले आतम विगोह ॥
 जीव अजीव सूबा न सरखे मिथ्याती ॥ २ ॥
 पुन पाप ने व्व एं तीनूंह करम, करम ते निरवेंह पुदगल जांगो ।
 पुदगल छें ते निरवेंह अजीव, तिग माहें संका-भूल म जांगो ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरखे मिथ्याती ॥ ३ ॥
 भाव करणां नें लकी क्हा छें लिंगेसर, त्पानें प्रांचूंह वपा नें रांघ छें दोग- ।
 बले प्रांचूंह रस नें चार फरस छें, एं सोलें बोल पुदगल अजीव छें सोय ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरखे मिथ्याती ॥ ४ ॥
 पुन पाप ग्हेहें नें ग्हे आश्रव, पुन पाप ग्हे ते निरवें जीव जांगो ।
 निरव्वर जोगां सून पुन ग्हेहें छें, सान्ध जोगां सून पाप लागें छें जांगे ॥
 आश्रव नें जीव न सरखे मिथ्याती ॥ ५ ॥
 कर्मां नां दुवार आश्रव जीव रा भाव, तिन आश्रवनां वीसोंह बोल पिछां-गो ।
 ते वीसोंह बोल छें कर्मां रा करता, कर्मां रा करता निरवेंह जीव जांगो ।
 आश्रव नें जीव न सरखे मिथ्याती ॥ ६ ॥

आतमा ने वस करें ते संवर, आतमा वस करें ते निश्चेंइ जीव ।
 ते तो उपसम खायक षयउपसम भाव, ए तो जीव रा भाव छें निरमल अतीव ॥
 संवर ने आवतां करमां नें रोके, संवर ने जीव न सरघें मिथ्याती ॥ ७ ॥
 तिण संवर ने जीव न सरघे अग्यांती, आवतां करम रोकें ते निश्चेंइ जीव ।
 वेस थकी करमां नें तोड़े, तिणरे नरक निगोद री लागी छे, नीव ॥
 जीव उजलो हुओ छें तेहिज निरजरा, तिण संवर नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ८ ॥
 जब देस थकी जीव उजलो होय ।
 निरजरा जीव छे, तिणमें सका न कोय ॥
 करमां ने तोड़े ते निश्चेंइ जीव, इण निरजरा ने जीव न सरघें मिथ्याती ॥ ९ ॥
 उजला जीव नें निरजरा कही जिण, करम तूटां थकां उजलो हुओ जीव ।
 जीव रा गुण छें उजल अत ही अतीव ॥
 इण निरजरा नें जीव न सरघें मिथ्याती ॥ १० ॥
 समसत करम थकी मूकावे, ते करम रहीत आतमा मोष ।
 इण संसार दुख थी छूट पड़या छे, ते तो सीतलीभूत थया निरदेष ॥
 तिण मोष नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ११ ॥
 करमां थकी मूकावे ते मोष, तिण मोष नें कहिजे सिघ भगवानं ।
 वले मोष नें परमपद निरवाण कहिजे, ते तों निश्चेंइ निरमल जीव सुघ मान ॥
 तिण मोष नें जीव न सरघें मिथ्याती ॥ १२ ॥
 पुन पाप नें बंध ए तीनूइ अजीव, त्यानें जीव नें अजीव सरघें दोनूइ ।
 एहवी उंची सरघा रा छें मूढ मिथ्याती, त्यां साघ रा भेष में आतम विगोइ ॥
 पुन पाप नें अजीवन सरघे मिथ्याती ॥ १३ ॥
 आश्रव संवर निरजरा नें मोष, ए निमाइ निश्चें जीव च्यांइइ ।
 त्यानें जीव अजीव दोनूइ सरघें, तिण उंची सरघा सू आतम विगोइ ॥
 यां च्यारां नें जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १४ ॥
 नव पदारथ में पांच जीव कह्या जिण, च्यार पदारथ अजीव कह्या भगवानं ।
 ए नव पदारथ रो निरणों करसी, तेहिज समकृत छें सुघ मान ॥
 जीव अजीव ओलखावण काजे, जीव अजीवने सुघ न सरघें मिथ्याती ॥ १५ ॥
 समत अठारे सत्तावने वरसे, जोड कीधी पुर सहर मभार ।
 भादवा सुद पूनम नें बुघवार ॥
 जीव अजीवने सुघ न सरघें मिथ्याती ॥ १६ ॥

रत्न : २

श्रावक ना बारे व्रत

व्रत पहिलो

(स्थूल प्राणातपात विरमण व्रत)

ढाल : १

दुहा

पांच अणुव्रत परवरा, तीन गुण वरत सार ।
सिष्या वरत च्यारे चतुर, तेहनो करो विचार ॥ १ ॥
पहिलां में हिंसा तजे, दूजें भूठ परिहार ।
तीजे अदत्त चौथे अवंभ, पांचमें तजे धन सार ॥ २ ॥
पहिलो गुण वरत दिसि तणो, दूजें भोग पचखाण ।
तीजें अनरथ परहरे, ए तीनू गुण वरत जाण ॥ ३ ॥
सामायक पहिलो सिख्या, दूजें संवर जाण ।
तीजें पोषद कहीजीयें, चौथें साधां नें दे दान ॥ ४ ॥
यां वारे वरतां तणों, कहीये छे विसतार ।
भाव घरी भवियण सुणों, मन मे आण विचार ॥ ५ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

श्रावक ना व्रत वार, पाले निरतीचार ।
ते दुरगत नहि पड़े ए, भवसायर तरे ए ॥ १ ॥
पेहलो वरत इम जाण, तिण में हिंसा ना पचखाण ।
हिंसा तस तणो ए, बीजी थावर भणी ए ॥ २ ॥
वसतां ग्रहस्थावास, हिंसा हुणे जास ।
आरम्भ विण करीये ए, पेट किम मरीये ए ॥ ३ ॥
करूं तस तणा पचखाण, थावर नो परमाण ।
भेद तस तणां ए, ग्यांनी कह्या घणां ए ॥ ४ ॥
कोई मोनें घाले घात, माहरो अपराधी साख्यात ।
खमतां दोहिलो ए, नहि मोने सोहिलो ए ॥ ५ ॥
सातो दे धन लेजाय, अथवा लूटे आय ।
खून करे जरे ए, सूंस नही तरे ए ॥ ६ ॥

विण	अपराधी	होय,	तिणरी	हिंसा	दोय ।
मारे	जांगतां	ए,	बले-	अजांगतां	ए ॥ ७ ॥
म्हारे	घान जोखण	रो काम,	गाडी	चढ जाऊं	गाम ।
खेती	हल खडूँ	ए,	सूर	निदांग कळं	ए ॥ ८ ॥
तिहां	बहू जीव	हणाय,	किम	पालूँ मुनीराय ।	
नही	सभे एसो	ए,	ग्रहवासे	फस्यो	ए ॥ ९ ॥
आकुटी	ने साम,	जीव	मारण रे	काम ।	
व्रत	छैँ जांगतां	ए,	नही	अजांगतां	ए ॥ १० ॥
म्हारी	इसडी इरज्या	नाहि,	चालूँ	अंधारा मांहि ।	
वसतू	पूजूं नही	ए,	लेवूँ	मूंकूँ सही	ए ॥ ११ ॥
थाप	लाठी रो	नेम,	मोसूँ	चाले केम ।	
चोपद	हाकणा	ए,	दोपद	हठकणा	ए ॥ १२ ॥
इम करतां	जीव मराय,	जीव	काया जूदा	थाय ।	
हणवा	बुध नही	घरी ए,	विना	बुध मरी	ए ॥ १३ ॥
हणवारी	बुध होय,	जीव	न माळं	कोय ।	
सेउपयोने	करी	ए,	एसी	विगत घरी	ए ॥ १४ ॥
हिसानां	पचखांग,	में	कीघा	परमाण ।	
जावजीव	करी	ए,	करण	जोग घरी	ए ॥ १५ ॥
घिन घिन	जे ले बैराग,	ज्यारे	सर्व हिंसा	रा त्याग ।	
तस थावर	तणीं	ए,	अणकंपा	घणीं	ए ॥ १६ ॥
हूँ	ग्रहस्थ मुनीराज,	म्हारे	आरम्भ	काज ।	
इविरत	बहु घणी	ए,	तस थावर	तणी	ए ॥ १७ ॥
घिन घिन	साधू मुनीराय,	ते	सुमते सुमता	थाय ।	
जीवे	ज्यां भणी	ए,	न चूके	अणी	ए ॥ १८ ॥
घिग घिग	ग्रहस्थावास,	म्हारे	मोटो पडीयो	पास ।	
हिंसा	बहु घणी	ए,	लागे मो	भणी	ए ॥ १९ ॥
ग्यांनादिक	आंकस ल्याय,	मन	नें आंणी	ठाय ।	
हिंसा	टालसूँ	ए,	ममता	वालसूँ	ए ॥ २० ॥
जावजीव	पचखांग,	नहिं	मोने	आसान ।	
लफरो	बहु घणो	ए,	न्यातीलां	तणो	ए ॥ २१ ॥
घिन घिन	साधू सूर,	जिण	लफरो	कीघो दूर ।	
तिण विध	मोवत	ए,	खातो	नहिं खतै	ए ॥ २२ ॥



व्रत दूजो

(स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)

ढाल २

ढुहा

ढूजो व्रत श्रावक तणों, करे भूठ तणों परमाण ।
त्यागे माठो जाण नें, पाले जिणवर आण ॥ १ ॥
भूठ बोला मानवी, नहि ज्यांरी परतीत ।
मनष जमारो हार ने, नरकां हुवें फजीत ॥ २ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

भूठ तणां पचखाण, नाहना मोटा जाण ।
पचखे मोटका ए, केयक छोटका ए ॥ १ ॥
छोटा न बोलूं केम, म्हारो ग्रहवासा सूं पेम ।
विणज सोदा करू ए, मन में लोभ घरूं ए ॥ २ ॥
मोटा पाच प्रकार, तेहनो करूं परिहार ।
व्रत करूं इसो ए, मोसूं निभे जिसो ए ॥ ३ ॥
किन्या गोवाली जाण, तीजी भोम पिछ्छाण ।
थापण मोसो करे ए, कूडी साख भरे ए ॥ ४ ॥
किन्यां रा भेद अपार, करणो सूंस विचार ।
वरसां छोटकी ए, न कहणी मोटकी ए ॥ ५ ॥
गहली गूंगी होय, वले आंख नहि दोय ।
कांणी मीमरी ए, आंख्यां चीपडी ए ॥ ६ ॥
काली कोढणी नार, कानां न सुणे लिंगार ।
टूटी पांगली ए, बोले तोतली ए ॥ ७ ॥
रोग घणो घट मांय, जीवण री आस न कांय ।
वेलंजर तेजरो ए, आवे एकंतरो ए ॥ ८ ॥
वले रोग छे खेन, जीव न पामें चैन ।
रक्तपीती तणी ए, दुरगंध अति घणी ए ॥ ९ ॥

कृवी दूवी होय, बाडी वांकी जोय ।
 छोटी वांवणी ए, बाख्यां वांमणी ए ॥ १० ॥
 हीण वंस री होय, तिणरी जात न जाणे कोय ।
 आ तो जाये जठे ए, साख न भरे कठे ए ॥ ११ ॥
 रूप रोग ने खोड, वले वरस दे तोड ।
 अछतो नहि भापणो ए, हुवै जिम दाखणो ए ॥ १२ ॥
 यां बोलां रो साम, आय पडे कोइ कांम ।
 घर मांडे जठे ए, भूठ न वोळूं तठे ए ॥ १३ ॥
 हासा मसकरी काज, म्हारे सूंस नही मुनीराज ।
 पलतां दोहिलो ए, नहि मोनें सोहिलो ए ॥ १४ ॥
 इत्यादिक परमाण, में कीघा पचखाण ।
 इमहीज पुरप तणां ए, कन्या ज्यूं भापणां ए ॥ १५ ॥
 इम गोवाली जाण, दूष तणो परमाण ।
 वेत न ओछारणो ए, हुवें जिम दाखणो ए ॥ १६ ॥
 भोमाली घर नें हाट, वले वाध नें घाट ।
 घरती वावण तणी ए, इत्यादिक घणी ए ॥ १७ ॥
 कोइ घन सूंपे आय, हूं राखूं घर माहि ।
 आय नें मांगे तरे ए, नटूं नहि जरे ए ॥ १८ ॥
 मांगे घणी जो आय, वाप भाई नें माय ।
 उ वारस आय अडे ए, राजा रोके जरे ए ॥ १९ ॥
 जब भूठ वोळण रो नेम, राखूं वरत सूं पेम ।
 चोखो पालसूं ए, दोपण टाल सूं ए ॥ २० ॥
 मांगे अनेरो आय, तो नट जावूं मुनीराय ।
 सूंस नही कियो ए, लोभे चित दीयो ए ॥ २१ ॥
 साख भरावे मोय, भूठ न वोळूं कोय ।
 ते पिण मोटकी ए, नही छोटकी ए ॥ २२ ॥
 जो हूं वोळूं वाय, तो घर पेलारो जाय ।
 भाषा तोलणी ए, पछे वोळणी ए ॥ २३ ॥
 करे भूठ रा भेद, त्याग्या थाण उमेद ।
 मनोरथ जद फले ए, भूठ छोटीइ टले ए ॥ २४ ॥
 करण जोग घाली ने एम, करे भूठ रा नेम ।
 बरत करे इसो ए, पोते निभे जीसो ए ॥ २५ ॥

व्रत तीजो

(स्थूल अदत्त विरमण व्रत)

ढाल : ३

दुहा

तीजो व्रत श्रावक तणो, करे अदत्त रा त्याग ।
मन मे सुमता आणीयां, चढे भाव बेराग ॥ १ ॥
अह लोके जस अति घणो, परलोके सुख थाय ।
भाव सहित अराधीयां, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥
चोरी करे ते मानवी, गया जमारो हार ।
मनष तणो भव खोय ने, नरका खाए मार ॥ ३ ॥
तीजो व्रत छे एम, करे अदत्त रा नेम ।

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

न करे मोटकी ए, वले छोटकी ए ॥ १ ॥
न्हानी किम त्यागू सांम, म्हारे घास इवण रो काम ।
खिण खिण किणनें केवुं ए, किहां किहां आम्या लेवुं ए ॥ २ ॥
न्हानी त्यागे ते चिन, पिण म्हारो नहिं मन ।
चित्त चोखो नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ३ ॥
सांतो दे गांठी छोड, घाडो कर तांलो तोड ।
वसतु मोटी अछे ए, घणी जाण्या पछे ए ॥ ४ ॥
ऐसा अदत्त रा त्याग, मे पचख्यो आण वंराग ।
ते पिण परतणी ए, नही घर भणी ए ॥ ५ ॥
म्हारा कुटंबादिक में माल, मो में पडे हवाल ।
भीड घणी सही ए, माग्यां दे नही ए ॥ ६ ॥
वले भूखो न मिले अन, म्हारा वाप भाई ने घन ।
सेठो कीयो सही ए, मोने दे नही ए ॥ ७ ॥
जबे तालो ल्युं तोड, वले गांठी छोड ।
सांतो दे चोरसूं ए, खोसल्यू जोर सूं ए ॥ ८ ॥
इतरा मो - आगार, ते नरक तणा दातार ।
रमणी वस पड्यो ए, जंजीरां जड्यो ए ॥ ९ ॥

राजा लेवे डंडे हुवे लोक में भंडे ।
 चोरी नहीं कहं ए ऐसी व्रत वहं ए ॥ १० ॥
 इसो पळे मुनीराय. नीने दो पचखाय ।
 जीवे ज्यां भगी ए व्रत चोरी तपो ए ॥ ११ ॥
 चोरी कर्म चण्डाल. तिया थी पडे हवाळ ।
 बुद्ध नरकां तनां ए. सहे अनि जणां ए ॥ १२ ॥
 चोरी ले पर माल. तिया में पडे हवाळ ।
 नरक निगोद तपां ए. फल चोरी तनां ए ॥ १३ ॥
 पर घन लेवे ताहि. दे पेल रे गहि ।
 ते नरक ना पावना ए. न्यात लजावगा ए ॥ १४ ॥
 इहलोक उदे हुवे पाप. बुद्ध भुगते आयो जाय ।
 मार घनी पडे ए. विग आइ मरे ए ॥ १५ ॥
 तियरा काटे हाय नें पाय. वळे सुली देवे चहाय ।
 नकटो नें बूटों करे ए. वळे मार घनी पडे ए ॥ १६ ॥
 मूयां पछे चोर री जाय. न्हावे लाई मांय ।
 तिहां कुत्ता आयनें ए. विगाडे जाय नें ए ॥ १७ ॥
 वळे काग चांचां सुं मार. तियरा डीया काडे गर ।
 वरीर तिया तपो ए. विकराल बीते घनो ए ॥ १८ ॥
 तिया नें देवे मात नें तात. मन में घना सीदात ।
 इप चोरी कर परतगी ए. लजाया न्हां भगी ए ॥ १९ ॥
 लोक करे चोरी नी वात. ते रुपे मात नें तात ।
 वळे उच्च रोवता ए. नीचो जोवता ए ॥ २० ॥
 चोरी सूं बुद्ध अतंत. तियरो कहिता न आवे अंत ।
 चिहू गति में भटके घनो ए. ते पाप चोरी तपो ए ॥ २१ ॥
 इम सांभलनें नर नार. चोरी म करो लिगार ।
 समता रस जांपनें ए. त्यागो जांपनें ए ॥ २२ ॥
 कोइ आपि मन वैराग. चोरी सर्व धरती दे त्याग ।
 करण जोग करी ए. नन समता वरी ए ॥ २३ ॥
 कोइ सुंस वरें दे मांग. तियरा घना नीकळती सांग ।
 महा पापी मोटकी ए. कर्मा दियो धाको ए ॥ २४ ॥
 चौडो पाल्सी सुंस, त्यांरी पुरी जे मन हूंत ।
 जासी देवलोक में ए. केई जाए मोक्ष में ए ॥ २५ ॥

व्रत चौथो

(स्वदार संतोष परदार विरमण व्रत)

ढाल : ४

दुहा

मनष तणो भव पाय ने, जे नर पाले सील ।
 सिव रमणी बेगी वरे, रहे मुगत में लील ॥ १ ॥
 साधु त्यागे सर्वथा, ग्रहचारी पर नार ।
 माठी निजर जोवे नहीं, तिण रो खेवो पार ॥ २ ॥
 एक एक श्रावक एहवा, आंणी मन वैराग ।
 भोग जाणी विष सारिषा, घर नारी दें त्याग ॥ ३ ॥

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

चौथो व्रत इम जाण, अबंभ तणा पचखांण ।
 देवंगणा मिनषणी ए, त्यागे तिरजंचणी ए ॥ १ ॥
 वले पोता री नार, तेहनो करे विचार ।
 तजे दिन रात नी ए, परणी हाथ नी ए ॥ २ ॥
 परवीयादिक नो नेम, निरतो पाले एम ।
 मोहणी परहरे ए, आतम वस करे ए ॥ ३ ॥
 कोई सर्व थकी दे त्याग, आंणी मन वैराग ।
 विषे ओघरे ए, ब्रह्म व्रत घरे ए ॥ ४ ॥
 मारे घर नारी सूं नेह, तिणनें किम वूं छेह ।
 आतम वस नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ५ ॥
 करूं दिवस दिवस तणा पचखांण, रात तणो परमाण ।
 संतोष आदरूं ए, विषे परहरूं ए ॥ ६ ॥
 पर नारी सूं पेम, म्हें कीघो छे नेम ।
 सूइ डोरे करी ए, एसी विरत घरी ए ॥ ७ ॥
 जे सेवे पर नार, ते गया जमारो हार ।
 नरकां मांहे पड़े ए, ढीलो नहिं करे ए ॥ ८ ॥
 चौथो व्रत घणो श्रीकार, सारा व्रतां रो सिरदार ।
 व्रतां रो नायको ए, मुगत रो दायको ए ॥ ९ ॥

सील व्रत छे मोटो रतन्न, तिणरा करे जतन्न ।
 ते आतम उधरे ए, सिव रमणी वरे ए ॥ १० ॥
 ए व्रत पाले निरदोष, त्याने नेडी छे मोख ।
 तिण में सँका नही ए, श्री जिण मुख कही ए ॥ ११ ॥
 चाहं जात रा देव, करे ब्रह्मचारी नी सेव ।
 वले सीस नमावता ए, वंदे गुण गावता ए ॥ १२ ॥
 जिण चोथो वरत दीयो भांग, त्यारो घणा नीकलसी सांग ।
 ते नरक माहे पड़े ए, घणो रडवडे ए ॥ १३ ॥
 इह लोके फिट फिट होय, पर लोके दुरगति जोय ।
 तिण जन्म विगाडीयो ए, मानव भव हारीयो ए ॥ १४ ॥
 जातवंत कुलवंत, ते आतम नित दमंत ।
 ते व्रत पालसी ए, कुल उज्वालसी, ए ॥ १५ ॥
 नहीं जातवंत कुलवंत, वले रस गिधी अतंत ।
 ते विषय रो प्यासीयो ए, तिण व्रत विणासीयो ए ॥ १६ ॥
 निरलजा लज्या रहीत, वले विषय विकार सहीत ।
 तिण व्रत ने कापियो ए, ते मोटो पापीयो ए ॥ १७ ॥
 ब्रह्म व्रत रा भांगणहार, धिग त्यारो जमवार ।
 ते न्यात लज्जावणा ए, दुरगति ना पावणा ए ॥ १८ ॥
 घणा लोका रे माहि, उचे सुर बोल्यो न जाय ।
 आ खांमी मोटी घणी ए, व्रत भांग्यां तणी ए ॥ १९ ॥
 कोइ ओ मोटो करे अकाज, लज्यावंत ने आवे लाज ।
 निरलजा लाजे नही ए, सेहल गिणे सही ए ॥ २० ॥
 इण सील भांग्यां रो सोय, कहतव न भिटे कोय ।
 आ मोटी मेहणी ए, जीवे ज्यां भणी ए ॥ २१ ॥
 इण पापी कियो अकाज, अजेय न आवे लाज ।
 तौही बोले गाजतो ए, निरलज नही लाजतो ए ॥ २२ ॥
 ब्रह्म व्रत तणो करे भंग, तिणरो कदे न कीजे संग ।
 कुकर्म माहे मिलीयो ए, कर्म कादे कलीयो ए ॥ २३ ॥
 जो सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 लजावे न्यात में ए, पडियो मिथ्यात मे ए ॥ २४ ॥
 परनारी मा बेन समान, त्यां सून करे माठो ध्यान ।
 चित चीखो कीयो ए, ब्रह्म व्रत लीयो ए ॥ २५ ॥

कोइ छोडी सर्म नैं लाज, त्यांसूँ इज करे अकाज ।
 ते निरलज नहिं लाजीयो ए, डाकी वाजीयो ए ॥ २६ ॥
 कर्म जोमे जाए भाज, पिण केकां ने आवे लाज ।
 केइ लाजे नंही ए, वेसरमा सही ए ॥ २७ ॥
 केई सीदावें मन मांय, म्हें मोटो कियो अन्याय ।
 पिछ्छतावे घणों ए, खोटा किरतब तणो ए ॥ २८ ॥
 जिणरो चोथो वरत गयो भांग, तिणरो पूरो - अभाग ।
 ते, नागो निरलजो - ए, तिण में नही मजो ए ॥ २९ ॥
 ब्रह्म व्रत तणी नव बाइ, ते पाले निरतीचार ।
 अडिग सेंठो घणो ए, मन जोग तणो ए ॥ ३० ॥
 जिण लोपे दीधी वाइ, तिण रो हुवे विगाड़ ।
 खुराबी हुवे घणी ए, ब्रह्म व्रत तणी ए ॥ ३१ ॥
 व्रत भांग सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 फिट फिट हुवे घणो ए, कुजस तिण तणो ए ॥ ३२ ॥
 चोखे चित्त पाले सील, ते रहे मुगत में लील ।
 राखे नित आसता ए, पामें सुख सासता ए ॥ ३३ ॥
 दिन दिन चढते रंग, पाले व्रत अभाग ।
 मन सुमता घरें ए, ते सिब रमणी वरे ए ॥ ३४ ॥
 ब्रह्म व्रत ने श्री जगदीस, उपमा कही बतीस ।
 दसमा अंग में कही ए, ते सुरा पाले सही ए ॥ ३५ ॥
 करण जोग सूं जाण, विवरा सुध पचखाण ।
 चोखे चित्त पालीये ए, दोषण टालिये ए ॥ ३६ ॥

व्रत पांचमों

(स्थूल परिग्रह विरमण व्रत)

ढाल : ५

दुहा

पांचमे व्रत त्यागे परिग्रहो, ते परिग्रह मुरच्छा जांग ।
तिण सूं निरंतर जीव रे, पाप लागे छे आंग ॥ १ ॥
ए मोटो पाप छे परिग्रह, तिण थी गोता खांय ।
सांसी हुवे तो देखलो, तीन मनोरथ मांय ॥ २ ॥
ओ अनर्थ ग्यांनी भाषीयो, नरक ले जावे तांग ।
जती मार्ग नो भांडणो, निषेद्यो इम जांग ॥ ३ ॥
खेतू वथू हिरण सोवन तणो, धन ने धान जांग ।
वले दोपद नें चोपद तणा, कुंवि घात तणो परमाण ॥ ४ ॥
खेतू ते उघाड़ी भूमका, वथू हाट हवेली जाण ।
रूपा नें सोना तणो, करे सक्त सारू पचखाण ॥ ५ ॥
घनते रोकड नांणो गिणती तणो, धान री जात अनेक ।
कुंबीघात ते घर विखेरो कह्यो, त्यांने त्यागे आंग विवेक ॥ ६ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्य छे, यां सगला रो करे प्रमाण ।
राख्या ते सगला इविरत में छें, वाकी सगलां राकीया पचखाण ॥ ७ ॥
ए नवोड जात रो, बाहिरज परिग्रह जांग ।
मुर्छा अभितर परिग्रहो, तिण सूं पाप लागे छे आंग ॥ ८ ॥
बाहिरज परिग्रह नव जात रो, ममता कर ग्रहो छै ताहि ।
तिण सूं यानेइ परिग्रह कह्यो, पिण यां सूं पाप न लागे आय ॥ ९ ॥

ढाल

[जिश भाष्या पाप अठार]

परिग्रहा नो परिहार, संख्या करे विचार ।
ममता उवरे ए, नव भेदे करे ए ॥ १ ॥
खेतू वथू छें जेह, सोनो रूप्यो तेह ।
धन धान दोपद ए, कुंबी घात चोपद ए ॥ २ ॥
ए नव विघ संख्या थाय, वंछा दीए मिटाय ।
त्रिसणा परहरे ए, मन सुमता धरें ए ॥ ३ ॥

ममता बडी बलाय, चिहुं गति में लटकाय ।
घणो रडबडे ए, नहिं जक पडे ए ॥ ४ ॥
मन सूं करी विचार, ए नरक तणी दातार ।
एहने टालवे ए, व्रत ने पालवे ए ॥ ५ ॥
नव जात रो परिग्रह नाहि, विचार करो मन मांहि ।
मुर्छा परिग्रहो ए, ओ मारग नरक रो ए ॥ ६ ॥
ए मोटो प्रतिबंध पास, करे बोध बीज रो नास ।
मारग छै कुगत रो ए, फलतो मुगत रो ए ॥ ७ ॥
परिग्रह छे मोटो फंद, कर्म तणो छै बंध ।
नरक पोंहचावे सही ए, तिहां मार घणी कही ए ॥ ८ ॥
परिग्रह छै महा विकराल, मोटो छै माया जाल ।
तिण में खूता सही ए, धर्म पावे नहीं ए ॥ ९ ॥
कनक कामणी दोय, त्यासूं दुरगति होय ।
फंद छे मोटका ए, त्यासूं खाए धका ए ॥ १० ॥
कनक कामणी दोय, पेला ने पकड़ावे कोय ।
तिण फंद में नाख्यो सही ए, निकल सके नहीं ए ॥ ११ ॥
परिग्रहो दीघां कहे धर्म, ते भूला अयांनी भर्म ।
थारे कर्म घणा सही ए, समझ पड़े नहीं ए ॥ १२ ॥
इण परिग्रहा तणा दलाल, त्यांमे पिण होसी हवाल ।
दुख नरकां तणा ए, सहसी अति घणा ए ॥ १३ ॥
ए राख्यां लागे छै कर्म, रखायां पिण नहीं धर्म ।
तीनू करण सारिखा ए, ते करजो पारिखा ए ॥ १४ ॥
परिग्रहा नां दातार, त्यारा सावद्य जोग व्यापार ।
मारग नहीं मोखरो ए, छावो लोक रो ए ॥ १५ ॥
असणादिक च्याहं आहार, श्रावक रे परिग्रहा मभार ।
ते खाए खवावे सही ए, तिणमें पिण धर्म नहीं ए ॥ १६ ॥
श्रावक ते माहों मांहि, देवो लेवो छे ताहि ।
ते सगलो परिगरो ए, सका मति करो ए ॥ १७ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र दरब, तिण में आय गया छै सरब ।
ए सगलोइ परिगरो ए, ते ममता मांहे खरो ए ॥ १८ ॥
सचित्तादिक सगला ताहि, गृहस्थ रे परिग्रहा मांहि ।
कह्यो उववाइ उपांग में ए, वले मृयगडार्यंग में ए ॥ १९ ॥

त्यांरो श्रावक कीयो परमाण, त्याग्या त्यांरी विरत पिछांण ।
 झाकी इविरत में राखीया ए, सुतर छे साखीया ए ॥ २० ॥
 सचित्तादिक सारां मांहि, सावां रे इविरत नांहि ।
 त्यां मुछ्छां परहरी ए ममता उधरी ए ॥ २१ ॥
 परिग्रहो दीयां धर्म ह्वेत, तो जिण आया वेत ।
 कहे कहे ने दरावता ए, धर्म करावता ए ॥ २२ ॥
 इण धन थी अनर्थ होय, धर्म धुरा न चले कोय ।
 भव भटकावणों ए, दुर्गति पोचावणो ए ॥ २३ ॥
 धन थी, धर्म न थाय, तीन काल रे मांहि ।
 साचो कर जाणजो ए, संका मत आणजो ए ॥ २४ ॥
 इण परिगरा माहें रक्त, त्याने आवै नहीं समक्त ।
 मुरड्या तिण में सही ए, समभ पड़े नहीं ए ॥ २५ ॥
 ज्यारे परिगरा सूं छै प्रीत, ते हूसी घणा फजीत ।
 नरकां जावसी ए, मीकां खावसी ए ॥ २६ ॥
 इण थी बघे संसार, जाए नरक निगोद मभार ।
 घणो रडवडे ए, जक नहीं पड़े ए ॥ २७ ॥
 सचित अचित ब्रव्य छे ताहि, ग्रहस्थ रे अन्नत मांहि ।
 ज्यांरो त्याग कीयो नहीं ए, त्यारो पाप लागे सही ए ॥ २८ ॥
 तीनां करणां लागे पाप, तिण सूं दुख भुगते आप ।
 त्याने त्यायां विरत हुसी ए, जब जीव होसी खुसी ए ॥ २९ ॥
 करण जोग घालीजे जाण, कीजे सुघ पचखांण ।
 चोखे चित पालीये ए, दोषण टालीये ए ॥ ३० ॥



व्रत छठा

(दिशि परिमाण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

पांच अणुव्रत धारतां, मोटी बांधी पाल ।
छोटा री इविरत रही, ते पाप आवैं दगचाल ॥ १ ॥
तिण इविरत मेटण भणी, पहलो गुणव्रत देख ।
दिस मरजाद मांडले, टाले पाप विशेष ॥ २ ॥
मांहिली इविरत मेटवा, झूजो गुणवरत धार ।
द्रव्यादिक त्यागन करे, भोगादिक परिहार ॥ ३ ॥
जे द्रव्यादिक राषीया, तेहनी इविरत जाण ।
अर्थ डंड छूटे नहीं, अनर्थ डंड पचखाण ॥ ४ ॥
छठो वरत श्रावक तणो, करे दिस तणो परमाण ।
हिसादिक त्यागे छहूँ दिस तणा, मन माहें सुमता आण ॥ ५ ॥

ढाल

[इश पुर कबल कोई न लेसी]

उंची नीची दिस कोस बे च्यार, तिण बाहिर सावध परिहार ।
त्रिछी दिस पांच सो परमाण, इण विव दिस तणा पचखाण ॥ १ ॥
प्रथवीयादिक जीव न मारें, छोटाइ भूठ तणो परिहारें ।
चोरी न करे मइथुन टाले, धन सूं ममता पाछी वाले ॥ २ ॥
माहें बेठो पिण बारली लेवो ने देवो, तिण रा पिण त्याग करे सयमेवो ।
बारली वसत माहें मंगावे नाही, मांहिली वसत वारे मेले नहिं काई ॥ ३ ॥
जिगन तो एक आश्रव त्यागे कोई, उतकष्ट आश्रव त्यागे पांचोंइ ।
एक करण तीन जोग सूं जाण, बारला आश्रव ना करे पचखाण ॥ ४ ॥
कोइ दोय करण तीन जोगां सूं ताहि, त्याग कर ने अव्रत देवे मिटाय ।
कोइ तीन करण तीन जोगां जाण, पांचोंइ आश्रवनां करे पचखाण ॥ ५ ॥
बारला आश्रवनां कीवा त्याग, इविरत छोडी छैं आण वेंराग ।
पेत्र थकी सर्व पेत्र में जाण, काल थकी जावजीव पचखाण ॥ ६ ॥
कोइ देवादिक तिण नें न्हाखे वार, तो पिण नहिं सेवे तिहां आश्रव दुवार ।
कोइ कष्ट पड्यां राखे छैं अगर, पोता नी कचाइ जांणी तिणवार ॥ ७ ॥

कोइ मित्री देवादिक ने बोलावे, तिण आगें आपरो कांम करावे ।
 तिण पिण छठे व्रत लियो तिवार, इतरो तो पहिला राख्यो छै आगार ॥ ८ ॥
 इत्यादिक राखे आगार अनेक, आगार विना करे नहिं एक ।
 आगार राख्यां इविरत रो पाप लागे, विना आगार करे तो छठे व्रत भांगे ॥ ९ ॥
 छठे व्रत तणो छे बोहत विसतार, ते कहितां कहितां न आवे पार ।
 ओ तो संक्षेप मातर कह्यो विसतार, बुद्धिवंत जाण लेसी अनुसार ॥ १० ॥
 छठे व्रत एहवा पचखांग, मांहे घणा दरबादिक जाण ।
 तेहनी इविरत टालण काज, सातमो व्रत कह्यो जिणराज ॥ ११ ॥



व्रत सातमों

(उपभोग परिभोग परिमाण व्रत)

ढाल : ७

दुहा

सातमों व्रत श्रावक तणो, तिण में उवभोग परिभोग नो त्याग ।
गमती वस्त त्यागे तेहनें, आवे छे इधिक वैराग ॥ १ ॥
भोग आवे एक वार मे, ते कहिये उवभोग ।
वाह्वार आवे भोग जीव रे, तिण ने कहा छें परिभोग ॥ २ ॥
उवभोग परिभोग श्रावक तणें, इविरत मे कहा भगवान ।
त्यारो त्याग करे सद्गुरु कनें, ते सातमों व्रत परधान ॥ ३ ॥
उवभोग परिभोग काम भोग छे, माहा दुखां री खान ।
तिणने कपाक फल री दीधी ओपमा, भगवंत श्री विरघमान ॥ ४ ॥

ढाल

[इण पुर कंवल कोई न लेसी]

अंगोचा दातण फल अभंगण, उगटणो पीट्टी ने मंजण ।
वत्थ वलेपण पूफ आभरण, धूपखेवण पीवण ने भखण ॥ १ ॥
ओदन सूप विगे साग विमास, महुर जीमण पांणी मुखवास ।
वाहण सयण पानीय सचित्त, द्रव संख्या कर त्यागे एक चित्त ॥ २ ॥
ए छावीस बोल तणो परमाण, धिन त्यागे ते सुमता आण ।
नाम लेइ विवरो कर लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ॥ ३ ॥
ए छावीस बोल भोगवीयां संताप, भोगवायां पिण लागे पाप ।
अणमोद्यां धर्म किहां थी होइ, तीनूइ करण सरीपा जोइ ॥ ४ ॥
मूरख रे दिल वात न वेसे, न्याय छोड भगड़ा में पेसे ।
सुगुर छोड कुगुर सूं परचा, भारी हुवे कर उंची चरचा ॥ ५ ॥
विरत इविरत कही जिण न्यारी, समके नहिं तिण रे कर्म भारी ।
मूढ मती नव तत्व नहिं जाणे, लीवी टेक छोडे नहिं ताणे ॥ ६ ॥
छावीस बोल तणो आगार, ते तो इविरत आश्रव दुवार ।
त्यामें केइ उवभोग ने केइ परिभोग, त्याने भोगवे ते तो सावद्य जोग ॥ ७ ॥
त्यारो त्याग करे मन सुमता आण, सकत सारुं करे पचखाण ।
एक करण ने तीन जोगां सूं त्यागे, जव पांते भोगवण रो पाप न न्यगे ॥ ८ ॥

द्वय करण तीन जोग सूं पचखाण, ते पोते पिण भोगवे नहि काइ, तीन करण तीन जोगा सुं त्यागे, भोगवे नहि भोगवावे नाहीं, जे जे सेरी छूटी रही ताहि, जे सेरी रुकी ते संवर दुवार, छूटी सेरी में श्रावक खावे ने खवावें, रुकी सेरी में खावे खवावे नाही, श्रावक ने मांहो मां छ काय खवावे, ए इविरत रा सावद्य जोग व्यापार, श्रावक ने माहों मां छ काय खवावे, तिण माहै धर्म मिथ्याती जाणे, विरत आश्री श्रावक ने कह्यो छे, धर्मी, तिण सूं श्रावक ने धर्मी अधर्मी जाणो, श्रावक रो खाणो पीणो ने गेहणों, ते तीनोइ करण इविरत मे घाल्यो, सब्द रूप रस गद्य ने फासा, एहीज उवभोग ने परिभोग, राख्या छे तिणरी इविरत जाणो, त्याने त्याग्यां होसी संवर सुखदाय, उवभोग परिभोग भोगवे जाण, भोगवावे तिणने दूजे करण पाप, अनुमोदे ते सरावे जाण जाण, श्रावक रा उवभोग परिभोग, जघन मभिम ने उतकष्टा जाण, त्यारो खाणो पीणो इविरत मे जाणो, जघन श्रावक रे इविरत घणेरी, ते इविरत आश्रव पाप रो नालो, श्रावक तप करे आंण हुलास, सावद्य जोग रुंध्यां संवर हूवो रुडो, तप पूरा हूआं पछे इविरत आगार, तिण सूं पाप कर्म लागे छे आय,

तिण छ भांगां रो पाप टाल्यो जाण । ओरां ने पिण भोगवावे नाही ॥ ९ ॥ तिण ने नव ही भागां रो पापन लागे । भोगवण वाला ने सरावे नहि काई ॥ १० ॥ तिहां पाप कर्म लागे छे आय । तिण सूं पाप न लागे लिंगार ॥ ११ ॥ खातां ने पिण छूटी सेरी में सरावे । अनुमोदना पिण न करे काई ॥ १२ ॥ वले छ काय मारे ने जीमावे । तिण माहे धर्म नही छें लिंगार ॥ १३ ॥ वले छ काय मारे ने जीमावे । कर्म तणे वस जंघी ताणें ॥ १४ ॥ इविरत आश्री कह्यो छें अधर्मी । पनवणा भगोती सू जोय पिछाणो ॥ १५ ॥ माहों मा एक एक ने लेणो ने देणो । उवाइ ने सूयगडाजंग मे चाल्यो ॥ १६ ॥ राख्या छे तिणरी लग रही आसा । तिणरा मेले छें विवध संजोग ॥ १७ ॥ तिणरो समय समय पाप लागे छे आणो । तिण सूं इविरत रा पाप मिट जाय ॥ १८ ॥ तिण सू पाप लागे छे आंण । तिण सू पिण होसी बोहत संताप ॥ १९ ॥ तिणरे पिण पाप लागे छे आण । तीनूइ करणा छे सावद्य जोग ॥ २० ॥ श्रावक गुण रत्ना री खाण । तिणने रुडी रीत पिछाणो ॥ २१ ॥ उतकष्टा श्रावक रे इविरत थोडे री । तिण सू पाप आवे दगचालो ॥ २२ ॥ उवास बेलदिक करे छ मास तपसा सू कर्म करे चकचूरो ॥ २३ ॥ खाए पीए ते सावद्य जोग व्यापार । ते पाप होसी जीव ने दुखदाय ॥ २४ ॥

पारणो करे ते पहले करण जाण, करावे ते दूजे करण पिछाण ।
 सरावणवालो छै तीजे करणो, या तीनां रो बुधवत करसी निरणो ॥ २५ ॥
 पहले करण तो पाप बंधावे, तो बीजे करण धर्म किहां थी थावे ।
 तीजे करण धर्म नहि छै लिंगार, यां तीनां रा सावद्य जोग व्यापार ॥ २६ ॥
 सावद्य जोग सूं लागे छे पाप, तिण सूं आगना नहि दे आप ।
 श्रावक ने जीमायां धर्म ह्वेत, तो अरिहंत भगवंत आगना देत ॥ २७ ॥
 केइ कहे श्रावक ने जीमाया धर्म, ते भूल गया अग्यानी भर्म ।
 पोते पिण जीम्यां लागे छै पाप कर्म, औरां ने जीमायां किम हुवे धर्म ॥ २८ ॥
 कोइ कहे लाडू खवायां धर्म, ओ तप कर म्हारा काटसी कर्म ।
 तिणसू म्हे ओरां ने लाडूडा खवावां, पछे लाडूआं साटे म्हे उवास करावां ॥ २९ ॥
 पछै तो उ करसी ते उणने होय, लाडू खवाया धर्म म जाणो कोय ।
 लाडू खावां खवायां तो एकंत पाप, ते श्री जिण मुख सूं भाख्यो छै आप ॥ ३० ॥
 श्रावक ने लाडू खवायां धर्म होय, तो एहवो धर्म करे हर कोय ।
 बडा बडा श्रावक हुआ धनवंत, ते लाडूआ खवाय ने धर्म करंत ॥ ३१ ॥
 बडा बडा सेठ सेन्यापती ताहि, त्यारे हुंती धर्म री चाहि ।
 लाडू खवायां धर्म हुवे तो आचो नहि काढत, लाडू खवाय कांम सिराडे चाढत ॥ ३२ ॥
 श्रावक ने लाडू खवाया हुवे धर्म, खवावण वाला रा कट जाए कर्म ।
 तो चक्रवत बलदेव वासुदेव, ओ तो धर्म करता सयमेव ॥ ३३ ॥
 श्रावक ने लाडू खवायां हुवे धर्म, श्रावक ने लाडू खवायां कटे कर्म ।
 तो च्याहं जात रा देव सयमेव, ओ तो धर्म करत ततखेव ॥ ३४ ॥
 एहवा धर्म थी सिव सुख होय, तो देवता आगो न काढता कोय ।
 एहवो धर्म करी पुरत मन खांत, देव भव थी पाधरा मोष में जांत ॥ ३५ ॥
 लाडू खावा खवायां धर्म छै नाहीं, खाणो खवावणो इविरत मांहीं ।
 इण माहे धर्म सरखे ते भोला, त्यारे मोह कर्म ना छै रे भखोला ॥ ३६ ॥
 लाडू खवायां धर्म नहि रे भाइ, आ तो उघाड़ी दीसे विकलाइ ।
 ओ लोलपणो जीभ्या रो सवाद, तिण सूं कर्म वचें छे वाद ॥ ३७ ॥
 खाणो खवावणो त्यागे सोय, जब सातमो व्रत श्रावक रे होय ।
 जब रूकी आवाता पाप कर्म, तेहिज उजल संवर धर्म ॥ ३८ ॥

तीनों इ करण जूआ जूआ कीजे, त्याग नें आगार ओलख लीजे ।

इविरत में पाप जांण छाडीजे, विरत मे धर्म जांण वरत लीजे ॥ ३६ ॥

सातमा व्रत रो बहुते विसतार, संषेप मातर कह्यो अनुसार ।

ए व्रत लेई ने चोखो पालीजे, मानव भव नो लाहो लीजे ॥ ४० ॥

ढाल : ८

डुहा

उबमंग परिमोग ने, मातमों इत परवान।
त्रिग माहें उर्रेमीग, पनरे करमादान ॥ १ ॥

ढाल

[इर पुर कंकर कोई न नेरी]

इंटे लीहाला सोनार ठंठारा, मडमूंजा कुंमार लुहारा।
ए कर्म करी ने पेट भरीजे, ते अंगानी कर्म कहीजे ॥ १ ॥
देचे सग पात कंद मूल, फल बीजादिक वान तंडूल।
देचे फूलादिक सवे वनराई, ते वग कर्म कहीजे भाइ ॥ २ ॥
देचे गाडादिक रख कराई, चोकी पाट पिलंग वगाई।
किवाड थंभादिक देचावे, तीणे साडी कर्म कहावे ॥ ३ ॥
हाट हवेची भाडे थाणे, रोकड नांगो व्याजे बाणे।
गाडादिक भाडे दे जेहू, भाडी कर्म कहीजे तेहू ॥ ४ ॥
देचे नालेरादिक फोडी, बले अहरोट सोनारी तोडी।
पथर फोड बल पीस वांन, पांचमों फोडी करमादान ॥ ५ ॥
कचतुरी कचडा गरदवा, मोठी बागर पान अंतवा।
चर्म हाड सींग फुहार, छटो कनदान ए वार ॥ ६ ॥
घातमें नेदे मेगसल आल, देचे लाड गुनी हरियाल।
कमूंभादिक रांगन पास, दोग्ग घगा कहा जिन तास ॥ ७ ॥
नवु मान मांदग ने दाह, सारि विणे कही जिन व्याहं।
वृष वही अत्र तेल गुल जाग, आठ्ठों ते रस दिगज पिछांग ॥ ८ ॥
वेचे उंट गवा ने गाय, घोडा हाथी व्हल नगाथ।
जल रुइ रसन थान वगाथ, केस दिगज ए नवमों थाथ ॥ ९ ॥
सीपीनेहरो आपूसार, नीलोयुधो मोदन हार।
हवंसी निगवंसी दिगजे, दसमों ते बिस दिगज कहीजे ॥ १० ॥
सिद्ध मरुमूं प्रमुद्ध पीलावे, इहू रस ता प्राण मंडावे।
संतनीलन इयानमों कर्म, कन्ता बाडे घनां अवर्म ॥ ११ ॥

कान फड़ावे नाक बीघावे, बलदादिक ने तणीय नखावे ।
 बारमो करमादान निलंछण, व्रतघारी ने लागे लंछण ॥ १२ ॥
 जाले गांम नगर दे लाय, अटव्यादिक ने दे रे लगाय ।
 वाले मुरडा ने दव आपे, तेरमो कर्म इसी पर व्यापे ॥ १३ ॥
 चवदमें भांजे नदी द्रह तीर, खेत माहे आण घाले नीर ।
 सर द्रह तलाव करे सोखत, ए कर्म करी जीव नरक पडत ॥ १४ ॥
 साध विना सगला पोखीजे, पनरमो असंजती पोख कहीजे ।
 रोजगार लेइ त्यां उपर रेवे, खाणो पीणो असंजती नें देवे ॥ १५ ॥
 ए पनरे कर्म तणो विसतार, मरजादा बांध करे परिहार ।
 पनरेई कह्या सावद्य व्यापार, करे आजीविका चलावण हार ॥ १६ ॥



व्रत आठमों

(अनर्थ दण्ड विरमण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

सात व्रत पूरा थया, हिवै आठमां नो विसतार ।
अर्थ अनर्थ ओलखवा भणी, तेहनो सुणो विचार ॥ १ ॥
सात व्रत आदरतां थका, बाकी अव्रत रहि छे ताहि ।
तिण सूं निरंतर जीव रे, कर्म लागे छे आय ॥ २ ॥
तिण इविरत रा दोय भेद छे, तिणमेंएक तो अनर्थ डंड जाण ।
एक इविरत अर्थे कही, तिण सू पाप लागे छे आण ॥ ३ ॥
अर्थ ते मुतलब आपरे, सावद्य करे विविध प्रकार ।
अनर्थ ते मुतलब विना, पाप करता पिण न डरे लिंगार ॥ ४ ॥
पाप करे छे अर्थे ने अनर्थ, त्याने रुड़ी रीत पिछाण ।
अर्थ दड तो छोडणो दोहिलो, अनर्थ दंड रा करे पचखाण ॥ ५ ॥
अनर्थ दड तणा भेद अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
पिण थोड़ा सा परगट कळं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[इण पुर क'बल कोई न लेसी]

पहिलो भेद कह्यो अपधान, तिण थी बावे अनर्थ खान ।
बीजे भेदे प्रमाद आखे, व्रतादिक ठाम उघाडा राखे ॥ १ ॥
सस्त्र जोड करे विसतार, पाप उपदेश दे विविध प्रकार ।
ए अनर्थ रा करे पचखाण, सूची पाले जिणवर आण ॥ २ ॥
ए अनर्थ डड केम कहीजे, अर्थ डड सेती ओलखीजे ।
तेहना भेद छे विविध प्रकार, सखेप मात्र कळं विसतार ॥ ३ ॥
माठा ध्यान रा दोय परकार, जग में जे ध्यावे नर नार ।
आर्त्त रुद्र ध्यान ध्यावे लोग, पामे बहु विघ हर्ष ने सोग ॥ ४ ॥
सब्दादिक इद्रया ना भोग, तेहनो ध्यावे संजोग विजोग ।
रोगादिक लागे अणगमता, भोग भोगवता ल्यावे ममता ॥ ५ ॥
इण विध जीव रचे ने विरचे, आप अर्थ कुटम्ब ने परचे ।
ठाकुर चाकर सगा सनेही, बोहरा ने घुरीया आद देइ ॥ ६ ॥

जिण सुषीए सुख वेदे आप, तिण दुषीये पांमिं सोग संताप ।
 ते पिण टाले सुमता आंण, अनर्थं ध्यानं ध्यावा पचखांण ॥ ७ ॥
 छद्द ध्यानं हिंसा जे ध्यावे, भूठ चोरी बंदीवान दरावे ।
 अर्थं करे पिण धूजे तन, अनर्थं ध्यानं तजे एक मन ॥ ८ ॥
 व्रत तेल्लादिक विणज करंतां, धूपादिक कारज अण सरतां ।
 इण विघ्न अर्थं उघाड़ा थाय, तिणरो जतन करे चित्त ल्याय ॥ ९ ॥
 परमाद रे वस आलस आंण, उघाड़ा राखण रा पचखांण ।
 घरटी मूसल उंखल राखे, म्हारे सजे नहीं इण पाखे ॥ १० ॥
 अनर्थं राखण ना पचखांण, एहवो व्रत करे मन जांण ।
 अर्थं पिण राखंता सांके, तो सस्त्र जोड़ी कुण न्हांखे ॥ ११ ॥
 भाइ भतीज चाकर ने पेस, ज्याने देवुं पाप रा उपदेश ।
 खेती विणज सोदा कर भाइ, बेठो खासी किणरी कमाइ ॥ १२ ॥
 बुववंत नर ग्यानं कर देखे, कहितां लागे पाप वसेखे ।
 तो अनर्थं कुण घर में घाले, तिण थौ कर्म मेला भाले ॥ १३ ॥
 जस कीरत मान बडाइ काजे, वले सरमा सरमी लोकां री लाजे ।
 वले घर रा उदारपणा रे तांई, हिंसादिक करे ते अर्थं डंड मांही ॥ १४ ॥
 जिण करतब कीयां करे लोक भंड, जे किरतब करे छे ते अनर्थं डंड ।
 छ छंडी राखी ते अर्थं डंड माहिं, त्यांरे काजे हिंसादिक करे छे ताहिं ॥ १५ ॥
 सुयगढायंग अधेन अठारमा मभार, अर्थं डंड रा कह्हा छे आठ आगार ।
 आत्मा न्यातीलां रे कांम, हिंसादिक करे छे तांम ॥ १६ ॥
 आगार ते घर हाटादिक कांम, परवार ते दास दासी तांम ।
 मित्री नें नाग भूत जख देव, त्यांरे तांइ हिंसादिक करे सयमेव ॥ १७ ॥
 इहलोक ने वले परलोक, जीवणो मरणो ने काम भोग ।
 यारी अर्थं वंछा कियां पाप लागे, अनर्थं कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १८ ॥
 असजती जीवां रो जीवणौ चावे, असंजती जीवीयां सूं हरषत थावे ।
 ए अर्थं कीयां तो अर्थं पाप लागे, अनर्थं कीयां आठमो व्रत भागे ॥ १९ ॥
 असजती रो मरणो चावे, अथवा त्यांनें मारे ने मरावे ।
 अर्थं तो माख्यां मरायां पाप लागे, अनर्थं माख्यां मरायां व्रत भागे ॥ २० ॥
 ग्रहस्थ नें कांम भोग भोगवायां चावे, अथवा त्यांनें काम भोग भोगवावे ।
 अर्थं भोगवायां तो पापज लागे, अनर्थं भोगवायां व्रत भागे ॥ २१ ॥
 ग्रहस्थ ने उवभोग परिभोग भोगवावे, तो निश्चेइ पाप कर्म वंघावे ।
 अर्थं भोगवावे तो अर्थं पाप लागे, अनर्थं भोगवायां आठमो व्रत भागे ॥ २२ ॥
 ग्रहस्थ रो काम करे अंसमात, तिणरे निश्चेइ पाप लागे साख्यात ।
 अर्थं कीयां तो अर्थं पाप लागे, अनर्थं कियां आठमो व्रत भागे ॥ २३ ॥
 कहिं कहिं ने कितरो एक केहूं, अर्थं नें अनर्थं डंड छे बेहूं ।
 तिनमे अर्थं री इविरत राखी छे जाण, अनर्थं डंड तणा पचखांण ॥ २४ ॥
 याने रुडी रीत पिच्छांणी लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ।
 यामें रोकौ सेरी तिण मांहें छे धर्म, छूटी सेरी छे तेहीज अधर्म ॥ २५ ॥
 आठमा व्रत रो बोहत विचार, ओ तो अल्प मातर कह्हाो विसतार ।
 हिवे नवमो व्रत कहूं छूं ताहिं, सांभलजो भवियण चित्त ल्याय ॥ २६ ॥

व्रत नवमों

[सामायिक व्रत]

ढाल १०

दुहा

पांच अणुव्रत फेल्लां, गुणव्रत दे संकड़ाय ।
 सिख्या व्रत जिम चोटली, कहे ओपमा ल्याय ॥ १ ॥
 जिम देवल इंडो चढे, मुगट मस्तक अंत ।
 जिम समदिष्टी जीवड़ा, सिख्या व्रत पालंत ॥ २ ॥
 व्रत आठ पहेलां कह्या, जावजीव लग जाण ।
 सिख्या व्रत च्यारां तणा, विविध पणे पचखाण ॥ ३ ॥
 सामायिक महोरत एक नी, जो करे चित ल्याय ।
 देसावगासी व्रत ना, जिम करे तिम थाय ॥ ४ ॥
 पोसो हुवे दिन रात नो, जो ध्यावेनिरमलध्यान ।
 बारमो व्रत सुघ साव नें, देवे सूभ्रतो दान ॥ ५ ॥

ढाल : १०

[मम करो ज्या माया कारमी]

सामायिक	सुमता	पणे,	सावद्य	जोग	पचखाण	जी ।
काल	थी	मोहरत	एक	नी,	दुविहं	तिविहेणं
					जाण	जी ॥
					सिख्या	जी व्रत आराधीए* ॥ १ ॥
उतकष्टे	भांगे	करे,	तीन	करण	तीन	जोग जी ।
ग्रहवासा	तणी	वात	नो,	न	करे	हर्ष न सोग जी ॥ २ ॥
उपगरण	सदाइ	करतां	राषीया,	तिण	उपरंत	कीया पचखाण जी ।
राख्या	ते	इविरत	परिमोग	री,	तिणरो	पाप निरंतर
					जाण	जी ॥ ३ ॥
उपगरण	समाइ	में	राखिया,	त्यांरो	पिण	करे परमाण जी ।
वाकी	तीन	करण	तीन	जोग	सूं,	पांचूं आस्रव ना पचखाण जी ॥ ४ ॥
ते	उपगरण	पेहरे	ओढे	वावरे,	विछांवणादिक	करे वासंवार जी ।
ते	सरीर	री	सातादिक	कारणे,	ते	तो सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ५ ॥
बले	गेहणां	आभरण	कनै	रह्या,	ते	पिण इविरत में जाण जी ।
तिणरो	पिण	पाप	निरंतर,	समे	समे	लागे छे आण जी ॥ ६ ॥
ते	गेहणा	आभरण	रा	जतन	करे,	त्यांमूं
आगो	पाछो	समारे	तिण	अवसरे,	सावद्य	जोग व्यापार जी ॥ ७ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपगरण गेहणा कने राखीया, ते तो नहि आवे समाइ रे काम जी ।
 काम तो आवे छे परिभोग में, सुख साता सोभदिक ताम जी ॥ ८ ॥
 समाइ री तो दीधी जिण आगना, ते तो समाइ छे संवर धर्म जी ।
 उपगरण ने गेहणा परिभोगव्यां, तिण सू तो लागे पाप कर्म जी ॥ ९ ॥
 समाइ में श्रावक री आत्मा, अधिकरण कही जिण राय जी ।
 भगोती रे सतपंध सात में, पहिला उदेसा रे माय जी ॥ १० ॥
 अधिकरण ते सस्त्र छ कय रो, तिण नें सातरो करे अंसमात जी ।
 तिणरी सार संभाल जतन करे, ते सावद्य जोग साख्यात जी ॥ ११ ॥
 कपडो ओढे पेहरे वावरे, बले वियावचादि करे ताहि जी ।
 तिण अधिकरण ने सांतरो कीयो, तिण री आगना न दे जिणराय जी ॥ १२ ॥
 अंसमात सरीर रो कार्य करे, ते तो सावद्य जोग छे ताहि जी ।
 तिण सू पाप कर्म लागे जीव रे, तिणरी आगना न दे जिणराय जी ॥ १३ ॥
 हालवो चालवो सरीर नो, सुख साता काजे करे जाण जी ।
 ते सावद्य जोग श्री जिण कह्या, तिण सू पाप कर्म लागे आण जी ॥ १४ ॥
 जिण किरतव कीयां जिण आगना नही, ते सावद्य जोग साख्यात जी ।
 जिण किरतव कीया जिण आगना, ते निरवद जोग विख्यात जी ॥ १५ ॥
 उपगरण गेहणा ने सरीर ना, जतन करे समाई मभार जी ।
 त्याने जिण आगना नही सर्वथा, सावद्य जोग तणो छे व्यापार जी ॥ १६ ॥
 कने राख्या छे त्यारा जतन करे, ओ तो राख्यो समाइ मे आगार जी ।
 समाइ करतां ज्याने त्यागीया, त्यांरा जतन नही करणा लिगार जी ॥ १७ ॥
 श्रावक रा उपगरण इविरत मभे, कह्या उवाइ ने सूयगडाअंग मांय जी ।
 त्याने सेववो सावद्य जोग छे, तिण सू आगना न दे जिणराय जी ॥ १८ ॥
 कोइ कहे सामाइ कीधी तेहने, सावद्य जोग पचखाण जी ।
 तिणरे पाप रो आगार किहां थी रह्यो, कोइ एह्वी पूछा करे आंण जी ॥ १९ ॥
 तेहने - जाब इम दीजिये, सर्व सावद्य नहि पचखाण जी ।
 सर्व सावद्य रा त्याग साधां तणे, तेहनी करो पिछांण जी ॥ २० ॥
 छ भागा समाइ में पचखीया, तिणरे तीन भांगां रो आगारं जी ।
 तिणरे पाप लागे छे निरतर, तिणरा जोग छे सावद्य व्यापार जी ॥ २१ ॥
 तिणरे पुत्रादिक हूआं हरषत हुवे, मूआं गयां हुवे सोग जी ।
 इत्यादिक आगार समाइ मभे, एहवा सामाइ में सावद्य जोग जी ॥ २२ ॥
 गहणो - पडतो - हुवे तेहने, जतन करे सामाइ रे मांहि जी ।
 ते पिण सावद्य जोग छे, तिणरी आज्ञा न दे जिणराय जी ॥ २३ ॥

मरीर कपडादिक नेहना, जतन करे सामाह रे मांय जी ।
 लाय चोगादिक ना भय थकी, एकांन ठामें जेणा मूं जाय जी ॥ २४ ॥
 कले मरुप गजादिक ना भय थकी, एकंत ठामें जयणा मूं जाय जी ।
 ने मिण मावद्य जोग छै, आगार सेव्यो समाह रे माहिं जी ॥ २५ ॥
 लाय नपादिक ग भय थकी, जेगा मूं नीकल जाए वार जी ।
 पारवती मिनख वेठो हुवे, त्यानिं तो नहिं लेजावे वार जी ॥ २६ ॥
 आररो तो आगार गन्वीयो, बीरां रो तो नहिं छे आगार जी ।
 बीरां ने त्याग्या नमाह मस्के, त्यानिं किण विव लेजावे वार जी ॥ २७ ॥
 लाय चोगादिक ग भय थकी, राख्या ते उपवि ले जाय जी ।
 पारवती कपडादिक हुवे घणा, त्यानिं वारे ले जावे नहिं ताहि जी ॥ २८ ॥
 राख्या ने दरव ले जावतां, समाह रो भंग न थाय जी ।
 ज्यानिं त्याग्या छे त्यानिं लेजावतां, समाह रो व्रत भागे जाय जी ॥ २९ ॥
 तिण मूं सर्वथा सावद्य जोग रा, नमाह में नहिं पचखांण जी ।
 आगार उपरंत मावद्य जोग रा, पचखांण कीया छे पिछांण जी ॥ ३० ॥
 तिण मूं श्रावक रे त्याग कीया तकै, ते मावद्य जोग ग पचखांण जी ।
 सर्वथा सावद्य जोग रा, ते तो त्याग मात्रां तणा जांण जी ॥ ३१ ॥
 उपगण नमाह में राखीया, ते तो पेले करण लेजो जांण जी ।
 ते बीरां ने भोगावती किण विवे, बीरां ग तो कीया छे पचखांण जी ॥ ३२ ॥
 द्रव्य थकी तो कते तिण उपरंत रा, सगलां रा कीया पचखांण जी ।
 न्नेत्र थकी मर्व न्नेत्र मस्के, काल थी मोहृत्त जांण जी ॥ ३३ ॥
 नाव थी गग द्वेष रक्षीन छै, तत्र संवग निरजरा गुण थाय जी ।
 इण गीने नमाह ओल्लव करे, जव भावे नमाह हुवे नाय जी ॥ ३४ ॥
 श्रवग सगलां ने न्याने दिया, त्यांमूं इज करे संभोग जी ।
 जव भागे नमाह व्रत नेहनां, इणरा वरतीया मावद्य जोग जी ॥ ३५ ॥
 कोह नमाह में नमाहवाला तणां, कारज करणो छे जांण जी ।
 निणगे कारज कीयां नमाह भागें नहिं, निणगे पिण करे परिमाण जी ॥ ३६ ॥
 नमाह में माहोनां कारज करे, ने तो मूत्र माहिं वीपे नहिं नाय जी ।
 निगरी निश्च तो थापणी आवे नहिं, र्यांती वदे ते मत्य बाय जी ॥ ३७ ॥
 कोह कहे नमाह में गन्वी पूजणी, गन्वी ने दया रे काम जी ।
 निणगे जाव मुणो विवग मुव, चित्त गवे एक ठाम जी ॥ ३८ ॥
 मरीगादिक पूजे नमाह मस्के, मानरादिक पण्टे छे पूज जी ।
 एहवा कारज री जिग आगना नही, तिण में घर्म कहे ते अबूज जी ॥ ३९ ॥

सरीर ने पूजे परठे मातरो, ते तो सरीरादिक नो छे काज जी ।
 जो धर्म तणो कार्य हुवे, तो आगना दे जिणराज जी ॥ ४० ॥
 जो पूंजणो परठणों करे नही, तो काया थिर करणी एक ठाम जी ।
 हस्तादिक नें विना हलवीयां, रहणी ना आवे छे तांम जी ॥ ४१ ॥
 वले आ वावा लघू बड़ी नीत नी, खमणी न आवे छे तांम जी ।
 तिण सू पूंजे छे जायगा जोय ने, ते समाइ तणो नहिं काम जी ॥ ४२ ॥
 माखी माछर कीड़ी आद दे, ते तो लामे सरीर रे आय जी ।
 ते खमणी नावे छे तेहथी, तिण सू पूंजे परीकरे ताय जी ॥ ४३ ॥
 जो काया थिर राखे एक आसणे, तिण रे पूंजण रो कोई काम जी ।
 परीसो खमणी नावे तेह सू, पूंजणी राखे छे तांम जी ॥ ४४ ॥
 जो इतरी कह्यां समझ पड़े नही, तो राखणी जिण परतीत जी ।
 जिण आगना बारे धर्म सरघ ने, नही करणी एहवी अनीत जी ॥ ४५ ॥
 सरीर उगरण रा जतन कीयां, सावच्च जोग व्यापार जी ।
 सरीर सू किरतव निरवद करे, तिण ने जिण आगना श्रीकार जी ॥ ४६ ॥



व्रत दसमौ

(देसावगासी व्रत)

ढाल : ११

दुहा

दसमा देसावगासी वरत छँ, तिणरा छँ भेद अनेक ।
थोडा सा परगट करुं, ते सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

देसावगासी व्रत ना, भांगा हुवे विव दोग जी ।
पेहलो छे छठा व्रत नी परे, दूजो सातमा ज्यू जोय जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥

दिन परते प्रभात थी, छ दिसरो कीधो परिमाण जी ।
मरजादा कीधी तिण बारला, पाचू आश्रव ना पचखाण जी ॥ सि० २ ॥
जे भोमका राखी छे मोकली, तिण माहे द्रव्यादिक व्यापार जी ।
मरजादा सकत सारुं करे, भोगादिक परीहार जी ॥ ३ ॥

काल थी दिवस ने रात नो, भावना विवध प्रकार जी ।
करण जोग घाले जेतला, जेहवो करे परीहार जी ॥ ४ ॥

वले जगन नवकारसी आदि दे, उतकष्टो घाले काल कोय जी ।
मरजाद सू त्यागे सावद्य भणी, जिम करे तिम होय जी ॥ ५ ॥

कोइ करे छे त्याग हिंसा तणो, तिण मे काल रो करे परमाण जी ।
ते त्याग पूरो हूआं तेहने, आगे तो नहीं पचखाण जी ॥ ६ ॥

हिंसा भूळ चोरी मैइथुन नो, वले पांचमो परिग्रह जाण जी ।
ए पाचौइ आश्रव दुवार नो, काल घाले ने करे पचखाण जी ॥ ७ ॥

परमाण करे छावीस बोल नो, पनरें कर्मादान तणो परमाण जी ।
वले सचितादिक चवदे नेम नो, यांरा नित नित करे पचखाण जी ॥ ८ ॥

नोकारसी पोरसी ने पुरमढ, एकासणो आंबलादिक तास जी ।
उपवास बेलादिक तप करे, उतकष्टो करे तप छ मास जी ॥ ९ ॥

तप तणो कष्ट हूवो तको, ते करणी निरजरता तणी जाण जी ।
खावा पीवा री चिरत हुइ तका, दशमो व्रत हूवो आण जी ॥ १० ॥

जे जे सावद्य त्यागे तेहमे, काल रो करे परमाण जी ।
ते तो दशमों व्रत नीपनों, ते जावजीव नहि पचखाण जी ॥ ११ ॥

व्रत इग्यारमों

ढाल : १२

(पोषध व्रत)

ढुहा

श्रावक रो व्रत इग्यारमों, पोषो कह्यो छे भगवानं ।
तीजो सिख्या व्रत रलीयामणो, ते सुणो सुरत दे कानं ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काथा माया कारमी)

पोषध व्रत वखाणीये, पचखे चउ विघ आहार जी ।
अवंभ मणी सोवन तजे, माला वणम वलेपण परिहार जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधीये ॥ १ ॥

सत्य मुसलादिक आद दे, सावद्य जोग तणा पचखाण जी ।
काल थी दिवस ने रात रो, एक पोसा तणो परिमाण जी ॥ २ ॥

जगन दोय करण तीन जोग सूं, करे सावद्य जोग पचखाण जी ।
कोइ उत्कष्टे भागे करे, तीन करण तीन जोग सूं जाण जी ॥ ३ ॥

द्रव्य थकी तो कने तिण उपरत रा, कीया सर्व दरबा रा पचखाण जी ।
पेतर थकी सर्व पेतर मग्गे, काल थी दिवस ने रात जाण जी ॥ ४ ॥

भाव थकी राग द्वेष रहीत करे, वले चोखे चित्त उपीयोग सहीत जी ।
जब कर्म रुके छे आवतां, वले निरजरा हुवे रुडी रीत जी ॥ ५ ॥

उपगरण पोसा माहे राखिया, तिण उपरत कीया पचखाण जी ।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर लागे आण जी ॥ ६ ॥

पोसा ने सामायक वरत ना, सरीषा छे पचखाण जी ।
सामाइ तो मोहरत एक नी, पोसो दिन रात रो जाण जी ॥ ७ ॥

पोसा ने समायक वरत में, या दोयां मे सरीषो छे आगार जी ।
ते कह्या छे सगला इविरत मे, ते जोय करो निसतार जी ॥ ८ ॥

जब कोइ कहे पोषध वरत मे, मणी सोवनादिक पचखाण जी ।
तिण सूं मणी सोवन कने राखीयां, पोसो भागे गयो जाण जी ॥ ९ ॥

पोसा माहें कने राखीया, मणी सोवनादिक जाण जी ।
तिण उपरत पचखाण छे, उत्तर एह पिछाण जी ॥ १० ॥

उमूक कहिता मूके दीया, त्यां मणी सोवन रा पचखाण जी ।
कने रह्या त्यांरी इविरत रही, भगोती सू करजो पिछाण जी ॥ ११ ॥

मणी सोवन रा जावक पचखाण हुवे, तो उमूक रो पाठ कहिता नांहि जी ।
 ओ तो निरणो उघाडो दीसे कीयो, विचार देखो मन मांहि जी ॥ २२ ॥
 श्रेणक ने किस्नजी री राणियां, इत्यादिक हुइ राणीयां अनेक जी ।
 त्यां पोसा कीया दीसे गेहणा थकां, समझो आंग ववेक जी ॥ १३ ॥
 त्यांरी चूडीयां में हीरा पना जड़या, बले दांतां मे जांणीजे मेख जी ।
 ओर गेहणा त्यांरे पेहरणे, त्यां उतारखा नांहि दीसे छे एक जी ॥ १४ ॥
 भारी भारी जूंहर चूड्यां जड्या, बले भारी २ हाथ गला मांय जी ।
 ते सगलाइ केम उतारसी, ओ तो मिलतो न दीसे छे न्यय जी ॥ १५ ॥
 त्या कीची समाइ संझ्या काल री, समाइ करी रात परमात जी ।
 ते खिण खिण में केम उतारसी, आ पिण मिलती न दीसे छे वात जी ॥ १६ ॥
 समाइ में गेहणा न राखणा, तो चूडो न राखणो ताहि जी ।
 गेहणो ने चूडो तो एक हीज छै, दोनूंई आभूषण मांहि जी ॥ १७ ॥
 सामायक में पोसा तणी, दोयां री विघ जाणो एक जी ।
 रीत दोयां री वरोवरी, समझो ने आण ववेक जी ॥ १८ ॥
 इहलोक रे अर्थ करे नही, न करे खावा पीवा रे हेत जी ।
 लोभ लालच हेते करे नही, पर लोक हेते न करे तेथ जी ॥ १९ ॥
 सवर निरजरा रे हेते करे, और वंछा नहि काय जी ।
 इण परिणामां पोसा करे, तो भाव थकी सुघ थाय जी ॥ २० ॥
 कोई लाडूयां साटे पोसा करे, कोइ परिग्रह लेवा करे तांम जी ।
 कोई और द्रव्य लेवा पोसा करे, ते कहिवा रो पोसो छे नांम जी ॥ २१ ॥
 ते तो अरथी छै एकंत पेट रो, ते मजूरीया तणी छै पांत जी ।
 थारा जीव रो कार्य सभे नही, उलटी घाली गला मांहि रांत जी ॥ २२ ॥
 लाडूया साटे पोसा करावसी, अथवा घन देइ ने तांम जी ।
 ते कहिवा ने पोसा करावीया, पिण सवर निरजरा रो नही ओकांम जी ॥ २३ ॥
 कर्म काण्य ने करे मजूरीया, त्यांरा घट मांहि घोर अग्यांन जी ।
 लाडू खवाय पोसा करावणा, ए तो कठेइ नही कह्यो भगवांन जी ॥ २४ ॥
 कर्म काण्य ने करे मजूरीया, त्यांरा घाट मांहि घोर अंवार जी ।
 पइसा देई पोसा करावणा, ते नाही चाल्या सुतर मझार जी ॥ २५ ॥
 मजूरीया करे खेत नेदाणवा, मजूरीया करे घर करवा कांम जी ।
 कडव काटण करे मजूरीया, कर्म काटण नही चालीया तांम जी ॥ २६ ॥
 खेत खडवा ने चाल्या मजूरीया, बले भार लेजावण कांम जी ।
 धान खाडग करे मजूरीया, कर्म काटण ने नांहि चाल्या तांम जी ॥ २७ ॥

विरक्त होय काम भोग थी, त्यांने त्याग्या छै सुध परिणांम जी ।
मोष रे हेत पोसो करे, ते असल पोसो कह्यो तांम जी ॥ २८ ॥
इण विध पोसा ने कीजीये, तो सीभसी आतम काज जी ।
कर्म रूकसी नें वले तूटसी, इम भाषीयो श्री जिणराज जी ॥ २९ ॥



व्रत वारहमों

(अतिथि सविभाग व्रत)

ढाल : १३

दुहा

अतिथि संविभाग चोथो सिख्या, ते वारमों व्रत रसाल ।
समण निग्रंथ अणगार ने, दान देवे दगचाल ॥ १ ॥
ते फासू अचित्त ने सूभत्तो, कल्पे ते दरव अनेक ।
कल्पतां खेतर काल में, दान दे आण ववेक ॥ २ ॥
जो उ दान दे मुगत रे कारणे, और वच्छा नहिं काय ।
जव नीपजें व्रत वारमों, इम भाप्यो जिणराय ॥ ३ ॥
इयारे व्रत वस आपरे, मन मानें जव नीपजाय ।
वारमों व्रत सुध साव ने, प्रतिलाभ्यां थी थाय ॥ ४ ॥
लाखां कोडां खरचीया, जीव अनती वार ।
पिण दान सुपातर दोहिलो, जीव तणो आधार ॥ ५ ॥
इण व्रत नीपावा कारणे, उदम करे नित नेम ।
भावे सावां री भावना, हाथे दान देवण सूं पेम ॥ ६ ॥
आलस छोडणो किण विधे, किण विध देणो दान ।
उदम करणो किण विधे, ते सुणो सुरत दे कान ॥ ७ ॥

ढाल

[मोह अनुकम्पा न आशीर]

वाग्गो व्रत छै श्रावक तणो, तिणरो सांभल जो विसतार जी ।
समण निग्रंथ अणगार ने, देवो चउविध सुध आहार जी ॥
इम व्रत नीपावे वारमो ॥ १ ॥
इम वसत्र पातर ने कावलो, पायपूछणों देवे एम जी ।
पीढ फलग सेज्जा ने साथरो, देवे ओपघ भेपद जेम जी ॥ २ ॥
इत्यादिक वस्तु कल्पे तका, सावां ने दीघां हरपत होय जी ।
जाणे धिन दीहाडो ने धिन घडी, वारमो व्रत नीपनो मोय जी ॥ ३ ॥
करे चितवणा साघां तणी, घर मे देखे सुध आहार जी ।
वले भांगे वेठां भावे भावना, व्रत घारी रो ओ आचार जी ॥ ४ ॥

साधु आय उभा देखे आगणे, विकसे सगली रोमराय जी ।
 असणादिक देवे भाव सूं, षणों मन रलीयात थाय जी ॥ ५ ॥
 काचा पांगी सूं थाली धोवे नही, वले सचित न राखे पास जी ।
 संघटे नहिं वेसे सचित रे, व्रत नीपजावण रो हुलास जी ॥ ६ ॥
 कोई काम पडे आय सचित रो, जब पिण रीत राखे विख्यात जी ।
 दिस अवलोक्यां विण साध ने, नहिं घाले सचित नें हाथ जी ॥ ७ ॥
 कल्पे ते वस्त पडी असुभती, कदे सहिजां सुभती होय जी ।
 तो उ खप कर राखे सुभती, सचित उपर न मेले कोय जी ॥ ८ ॥
 जे जे दरब जाणे छे सुभता, कल्पे ते साधु ने जाण जी ।
 तिणरी भावे निरंतर भावना, एहवा श्रावक चतुर सुजाण जी ॥ ९ ॥
 चित्त वित्त पातर तीनूं तणो, कदे आय मिले संजोग जी ।
 जब अढलक दान दे हाथ सूं, पछे न करे पिछतावो सोग जी ॥ १० ॥
 जे जे वरतधारी श्रावक हुवे, ते जीमे नहिं जडे कमाड जी ।
 उवाइ ने सुयगडअंग में, त्यांरा चाल्या उघाडा दुवार जी ॥ ११ ॥
 सहजे उघाडा हुवे बारणा, जब राखे उघाडा ताम जी ।
 नहिं जडे उघाडे बारणा, साध ने दान देवा काम जी ॥ १२ ॥
 ओर भेष उघाड माहे धसे, साधु नावे खोल कमाड जी ।
 तिण सूं व्रतधारी श्रावक हुवे, ते तो राखे उघाडा दुवार जी ॥ १३ ॥
 सहिजे भायो छे घरे आपरे, नीपनो देखे सुध आहार जी ।
 जब काल जाणे गोचरी तणों, तो उ बाट जोवे तिण वार जी ॥ १४ ॥
 ज्यारे हंस घणी छे मांहीली, पोते सहथ देवा दान जी ।
 त्यांरा हिरदा में साधु वस रह्या, त्यारो किण विध मूके ध्यान जी ॥ १५ ॥
 असणादिक थाल में लीचां पछे, तुरत घाले नही मुख माय जी ।
 दिस अवलोकें भावे भावना, जाणे साध पवारे आय जी ॥ १६ ॥
 इण विध भावना भावतां थका, मिले सतगुर नी जोगवाय जी ।
 तो उ दान दे उलट परिणाम सूं, चूके नहिं अवसर पाय जी ॥ १७ ॥
 सकत सारू दान दे साध ने, पिण न करे कूडी मनवार जी ।
 ठाला वादल ज्यूं गाजे नही, साचे मन बोले सुध विचार जी । १८ ॥
 अढलक दान देई साध नें, पमावे नही ओरां पास जी ।
 गिरवा गभीर रहे सदा, त्यानें वीर वखांग्या तास जी ॥ १९ ॥
 अढलक दान देशो पातरे, नही जिण तिण नें आसान जी ।
 दान देवा रो ध्यान रहे सदा, एहवा विरला छे दुववान जी ॥ २० ॥

आछी वस्त गोपव राखे नही, नांणे लोलपणों ने लोभ जी ।
 गमती वसत देवे साध ने, पिण कूडी न सावे सोभ जी ॥ २१ ॥
 आप खाए ते इविरत में गिणे, बंधता जाणे पाप कर्म जी ।
 तिण सूं दांन सुपातर ने दीया जाणें संवर निरजरा धर्म जी ॥ २२ ॥
 सुपातर दांन दे तिण अवसरे, लेखो नही करे मन मांहि जी ।
 लेखो कीयां सूं लोभ उपजे, अढलक दांन दीयो नहि जाय जी ॥ २३ ॥
 लाडू घोवणादिक वेहरावतो, राखे एक धारा परिणाम जी ।
 व्रतधारी आघो काढे नही, रुडी जोगवाइ पाम जी ॥ २४ ॥
 कदा वेहृच्छां विण पाछा फिरे, काइ आय पडे अंतराय जी ।
 जब पिच्छतावो कीयाई पुन बवे, वले कर्म निरजरा थाय जी ॥ २५ ॥
 पिच्छतावो कीयाई पुन बंधे, तो वेहरायां हुवे लाभ अनंत जी ।
 उत्तकण्टो तीर्थंकर पद लहे, इम भाष गया भगवंत जी ॥ २६ ॥
 सुभती वसत न करे असुभती, ते तो न देवा रे काम जी ।
 असुभती ने न करे सुभती, वेहरावण रा आण परिणाम जी ॥ २७ ॥
 जांणे ने नहीं देवे असुभती, करडे पिण वणीये काम जी ।
 निरदोषण दीघां वस्त हाथ सूं, पाछी लेवण री नहीं हांम जी ॥ २८ ॥
 दांन देवण न देवण कारणे, अतिकरमे नही काल जी ।
 मछर मांन वडाइ छोड ने, दांन देवे ते दोषण टाल जी ॥ २९ ॥
 आपणी वस्त कहे पारकी, दांन देवा काम जी ।
 धर्म ठिकांणे भूठ बोले नही, मूढे कूडी न राखे मांम जी ॥ ३० ॥
 इग्यारे व्रत तो त्यागन कीयां, वारमो व्रत दीघां होय जी ।
 तिण सूं कठण काम इण वरत रो, विरला नीपजावे कोय जी ॥ ३१ ॥
 सुपातर दांन देवे तेहने, नीपजे तीन बोल अमोल जी ।
 संवर निरजरा होय पुन बवे, त्यांरा अर्थ सुणो दिल खोल जी ॥ ३२ ॥
 जे जे दरब वेहराया साध ने, तिण दरब री इवरत नही काय जी ।
 ते वरत संवर हूवो इन विधे, सुभ जोगां सूं निरजरा थाय जी ॥ ३३ ॥
 सुभ जोग वरत्यां हुवे निरजरा, सुभ जोगां सूं पुन बंध जात जी ।
 पुन्य सहजे हुवे निरजरा कीया, ज्यूं खाखलो हुवे गोहां रे साथ जी ॥ ३४ ॥
 उत्तकण्टा परिणामां दान दे, तो उत्तकण्टी टले कर्म छोट जी ।
 उत्तकण्टा बंधे पुन्य तेहने, वले बंधे तीर्थंकर गोत जी ॥ ३५ ॥
 जो उणरे पुन्य उदे हुवे इण भवे, तो दुख दाल्द्र दूर पलाय जी ।
 रिघ सपत पामे अति घणी, सुख साता मे दिन जाय जी ॥ ३६ ॥

जो उदे न आवे इण भवे, तो पर भव में संका मत आण जी ।
 उंच गोतादिक सुख भोगवे, इण दान तथा फल जाण जी ॥ ३७ ॥
 पुन्य री बद्ध कर देवे नहि, समदिष्टी साधां नें दान जी ।
 देवे सवर निरजरा कारणे, पुन्य तो सहिजां बवे आसान जी ॥ ३८ ॥
 इविरत माहे दान देता थकां, पड़े श्रावक रे मन घट्टक जी ।
 ज्यांनें दान दियां विरत निपजे, त्याने दीठाइ पामे हरष जी ॥ ३९ ॥
 काम पड़े अविरत में दान रो, जब देतो ही सरमा सम जी ।
 पछे करे पिच्छतावो तेहनो, कांयक ढीला पाड़े कर्म जी ॥ ४० ॥
 इविरत में दान देवण तणो, टालण रो करे उपाय जी ।
 जाणे कर्म बंधे छे माहरे, मोने भोगवता दुख थाय जी ॥ ४१ ॥
 इविरत में दान देतां थकां, बवे आठोइ पाप कर्म जी ।
 सुपातर दान दियां हुदी, म्हारे सवर निरजरा धर्म जी ॥ ४२ ॥
 इविरत मे दान देवण तणो, कोइ त्याग करे मन सुघ जी ।
 तिण पाप निरंतर टालियो, तिणरी वीर बलाणी बुव जी ॥ ४३ ॥
 कुपातर दान मोह कर्म उदे, सुपातर दान खयउपसम भाव जी ।
 व्रत नीपजे सुपातर नें दियां, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव जी ॥ ४४ ॥
 सहिजा जायगां पडी हुवे सूभती, जब जोवे साधा री बाट जी ।
 तिणरे कर्म तणी निरजरा हुवे, बले बघ जाए पुन्य तणा थाट जी ॥ ४५ ॥
 बाट जोवता साधु पधारिया, सेज्जा दान दे हरषत थाय जी ।
 जाणे घिन दिहाडो ने घिन घडी, माहे साध उत्तरिया आय जी ॥ ४६ ॥
 सेज्जा दान देइ सुघ साधु ने, केइ करे परत संसार जी ।
 केइ बंध पाड़े सुघ गति तणो, ते तो पामे भव जल पार जी ॥ ४७ ॥
 सिज्जा थानक दे दे साधु ने, आगे तिरिया जीव अनत जी ।
 बले त्तरे नें तिरसी घणा, इम भाप गया भगवंत जी ॥ ४८ ॥
 दीघा दरायां नें भलो जाणिया, निर्दोष सुपातर दान जी ।
 व्रत निपजे दीघां वस्त आपरी, इम भाप्यो श्री भगवान जी ॥ ४९ ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, परिणाम चढावे विशेष जी ।
 त्यांनं दान देवा सनमुख करे, सीखावे सुघ विवेक जी ॥ ५० ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, दान देवा रा रहे परिणाम जी ।
 त्यासूं हेत राखे जिन धर्म नो, सुघ श्रावक तिणरो नाम जी ॥ ५१ ॥
 अडलक दान देतो देखे ओर ने, त्यारा पाड़े नहि परिणाम जी ।
 कदा देणी न आवे आप सू, तो कर दे तिणरा गुण ग्राम जी ॥ ५२ ॥

गुण सहणी नावे दातार ना, पोते पिण दान दियो न जाय जी ।
 ए दोनू अवगुण दूरा तजे, श्री जिनवर नो धर्म पाय जी ॥ ५३ ॥
 और नें दान दैता देखने, कोइ वरज पाड़े अन्तराय जी ।
 तो उ कर्म बाधे महा मोहणी, एहवो श्रावक न करे अन्याय जी ॥ ५४ ॥
 केइ अन्यतीर्थी जीमे नहि, यांरा ठाकुर ने विण दिया भोग जी ।
 नित वारे रसोड काढनें, पोषे पूजारादिक लोग जी ॥ ५५ ॥
 त्याने ठीक नहि त्यांरा देव री, देवे लेवे न लेवे भोग जी ।
 तोहि राखे छे त्यारी आसता, नित वरतावे त्यांरा जोग जी ॥ ५६ ॥
 तो व्रतधारी सुध श्रावक, धर्म सू रंग्यो तन मन जी ।
 ते गुर नी भावना भाया विना, मुख में किम धाले अन जी ॥ ५७ ॥
 केकारे गुरु छे अन्यतीर्थी, त्यारी करे साचे मन टेल जी ।
 तो साध पघाख्या आंगणे, त्याने श्रावक न गिणे सेल जी ॥ ५८ ॥
 कोइ कहे दान घणो दढावियो, ए तो लेवा रो कीधो उपाय जी ।
 एहवा उधा बोले सुव बुध विना, एहवी श्रावक न काढे वाय जी ॥ ५९ ॥
 दान देवा रा परिणाम जेहना, ते तो सुण सुण हरपत थाय जी ।
 कहे व्रत निपजावा नी विधि, मोनें सतगुरु दीधी सिखाय जी ॥ ६० ॥
 और व्रत कहुया छे देवल समा, सिख्या व्रत छे इडा समान जी ।
 त्यां मे सगलां सिरि व्रत वारमों, तिणरी बुधवंत करसी पिछांण जी ॥ ६१ ॥
 तिरया तिरि तिरसी घणा, इण दान तणे परताप जी ।
 तिण मे सका मूल न आणवी, श्री जिन मुख भाख्यो आप जी ॥ ६२ ॥
 सुतर पुराण कुराण मे, पातर दान तणो अधिकार जी ।
 पछे पातर कुपातर ओलखे, बुधवंत काढे निसतार जी ॥ ६३ ॥
 वले कहि कहि ने कितरा कहुं, इण दान तणा गुण ग्राम जी ।
 कोइ जिभ्या करे वरणवे, पूरा कहणी न आवे ताम जी ॥ ६४ ॥
 जोड कीधी बारमा वरत री, ते तो गूंदोच सहर मभार जी ।
 सवत अठारे बतीसे समे, जेठ विद वीज सूर्य वार जी ॥ ६५ ॥



रत्न : ३

कालवादी री चोपई

ढाल : १

दुहा

दसा सतखव सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार ।
नास्तक मत छें तेहनों, वले किरिया न मानें लिंगार । १ ॥
तीर्थकर चक्रवतादिक, वले साधु सती अणगार ।
त्यांने जीव न माने सरवथा, उ जाणें भर्म संसार ॥ २ ॥
तिण नास्तकवादी रा मत तणों, कालवादी पिरवार ।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, ते भूलो भर्म गिवार ॥ ३ ॥
उ सरघा परुषें एहवी, कर २ खांच अतीव ।
जे सिद्धां में गुण पावे नहीं, ते गुण सर्व अजीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, नहीं चेतन गुण परजाय ।
उण कुण २ काल में घालीया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा...]

तीर्थकर गणवर धर्म रा नायक, आचार्य ने उवभाय मोटां अणगारो ।
साध साधवीयादिक च्यारुई तीरथ, त्यांने अजीव कहे मूढ विनां विचारो ।
आ सरघा छें कालवादी री* ॥ १ ॥
वेव गुर धर्म तीनू रतन अमोलक, त्यांरो सरणो लीयां उतरे भवपारो ।
याने अजीव कहें कोइ मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर ही काल ने चेलो ही काल, कालरो विनों काल करे उछरंगो ।
काल सूं काल सभोग करें छे, काल सू काल रो मन जाए भंगो ॥ ३ ॥
काल उपदेस दे सूतर बांचे, धर्म कथा कहें मोटे मंडांगो ।
काल ही आय वलाण सुणें छे, काल कने काल लें पचखांगो ॥ ४ ॥
काल तिरने नें काल ही तारें, काल नें काल उतारें पारो ।
काल डूवें नें काल डवोवे, काल नें काल करे छें खुवारो ॥ ५ ॥
चक्रवत वासुदेव मंडलीक राजा, ए मनष हुआं करणी कर मोटी ।
भवी दरब देवादिक पांचोइ देवां ने, यांनें अजीव कहे तिणरी सरघा खोटी ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वार ही काळ ते वेगवेगळे काळ, काळ रे काळ वसें फिरवारी।
 काळ जनम लहू नोयें हुवे छे, पछे काळ रे वसें छे विषय विकारो ॥ ७ ॥
 काळ पर्याये नें काळ पर्याये, काळ रे काळ पावया आवें।
 अन्त्यादिक आहार काळ नीराए, काळ जीमें नें काळ जीसावे ॥ ८ ॥
 अन्त्यादिक पर्याये काळ, काळ छे वाच जुवान नें वृद्धे।
 तेरेद्वयो गिंच मिन नें देवा, ए भरला नें काळ व्हें छे मूढे ॥ ९ ॥
 चाळें ही काळ नें ठोळ ही काळ, काळ करे छे विगज व्यापारो।
 खेरी करमंय आदि दे काळ करे छे, वळे काळ करे छे म्हाडा नें राडो ॥ १० ॥
 एकेरी आदि दे पांचेरी नें, छकाय वुरा वर व्हें छे कायो।
 चवथेई मेद छे जीवरा त्यानें, याने अजीव व्हें अग्यांनी वायो ॥ ११ ॥
 द्वियक मृदावोयो इ काळ, चोर कुपीलीयां नें वनयातर।
 वळे नीन मो तेसठ पाण्डीयां नें, याने इ काळ व्हें छे कुमातर ॥ १२ ॥
 मोरी काळ नें जोगी काळ, वेंसि नें मित्री ए विग काळो।
 मायादीया मिथ्यादी नें काळ व्हें छे, इय सरवा रो वुचवत करती टाळो ॥ १३ ॥
 आरत वर नें वने ध्यान, ए तीर्तूई ध्यान नें व्हें छे कायो।
 छ नाच लेखा नें विग काळ व्हें छे, मूत्र रे मिर दे दे आयो ॥ १४ ॥
 अग्यांन नीन नें आर्तई मंजा, वळे चवथे गुण ठांवा व्हें छे कायो।
 वृव अकल्पमि ए विग काळ, ने कर रह्या मूख मूरी म्हाळो ॥ १५ ॥
 छ नियता नें पांचोड चागिन्, लटांग कमादिक ए विग पांच।
 वळे आत्मना च्यार नें मावच निरवड, याने काळ व्हें मूड कर र खांच ॥ १६ ॥
 इत्यादिक जीवरा वळे अनंता, त्यानें निव्हेई काळ व्हें छे अग्यांनी।
 जे जे समान सिद्धां में न पावे, ने मगला नें कर वीया काळ री वान्ती ॥ १७ ॥
 अमानता मगलाइ पाछे क्हा ने, त्यानें तो जीव व्हणी किज लेळें।
 याने जीव व्हें तो मूड वोल छे, आरगी सरवा सांही बयू नहीं देळें ॥ १८ ॥
 जे वरजा रो वाम पर्यां जीव व्हें तो, अमानता वर री पृछा कीडें।
 अमानता वर नें काळ व्हें छे, याने जीव व्हें तो मूडो वारजे ॥ १९ ॥
 अमानता वर नें जीव व्हें छे, आरगी सरवा रो वार अज्ञां।
 सिद्धां में नहीं ते गुण नें जीव थांन, तो पात्रेइ काय न वीसे सिद्धां ॥ २० ॥
 द्विद काव्यानी नें पृछा कीडें, संमार माहिं वुल किज विव पावे।
 कुण उजवे नें कुण खसावे, करजां रो करजा कुण व्हावे।
 ए प्रश्न काव्यानी नें पूछीजे ॥ २१ ॥

जो करमां रो करता जीव ने थापें, तो उणरी सरघा जाबक उठजावे ।
 करता अनेक असासता दीसे, वले सिद्धां में करता कंठासूं बत्तावें ॥ २२ ॥
 जो करमां रो करता अजीव कहें तो, घणां लोक न मांनैं तिणरी वातो ।
 असरघा हुवे तो पिण छानें राखें, एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २३ ॥
 उणरी सरघा रा एलांण एहवा दीसे, करमां रा करता ने सरघें छें कालो ।
 कदा भूठ बोले ने जीव कहे पिण, सिद्धां में नही करता ते सरघा संभालो ॥ २४ ॥
 सिद्धां माहें तो करता मूल न दीसें, ते जीव नें करता कहसी किण लेखे ।
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब भूठ बोलण री सेरी देखें ॥ २५ ॥
 केंतो भूठ जाणें ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजाणो ।
 ए वातरो निश्चों तो केवली जाणें, पिण बुचवंत होसी ते करसी पिछांणो ॥ २६ ॥
 श्री वीर कहाओ आचारंग माहें, करमां रो करता छे निश्चो जीवो ।
 चेतन गुण पर्याय सहीत ओलखसी, त्यारे अभितर ग्यान खुलसी घट दीवो ॥ २७ ॥
 हिंसादिक भूठ चोरी जीव करें छें, तिण किरतब सूं लामो जीवरे पापो ।
 तो छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहूं गति में दुख भुगतें आपो ॥ २८ ॥
 कालवादी री सरघा परगट कीघां, केइ क्रोध करें केइ मन माहें लाजें ।
 जिण आगम लोपे विरुध परूपे, ते सीहू तणी परें कदेय न गाजें ॥ २९ ॥
 इण खोटी सरघा रो उवाड़ कीयां सुं, केइ बुचवंत सुण २ रहसी दूरा ।
 केइ विपरीत सरघा आदर नें छोडें, त्यांनैं पिण वीर बवांण्या सूरा ॥ ३० ॥



ढाल : २

ढुहा

आ कालवादी नी सरवा वृणी. धोर छ्द मिथ्यांत ।
 हलुकर्मा जीव किम सरवमी, आ प्रतख सूळी वात ॥ १ ॥
 चेतन गुण पर्याय नें, कहि २ अर्ग्यानी काल ।
 उंची करेय पहपणा, वीया घणां निर काल ॥ २ ॥
 त्यांन साधु वनावें जूजूवा, जीव अजीव साग्यात ।
 पण गुरुद्वारीपा मानवी, त्यांरे वीह तिकाडज रात ॥ ३ ॥
 त्यांन धुरसू तो संत दिल्लिया नदीं, कीयां कालवादी री प्रसंग ।
 जाणें निरणें कोठें सूळीयां, काल नाग भूयंग ॥ ४ ॥
 उणनं मिलें सतगुरं गारलूं, जो उ दूर करे पखेपांत ।
 सूतर अरथ मुणाय नें, काडें जडूर मिथ्यांत ॥ ५ ॥
 कालवादी नी सग्या उयें, मूतर माहें जात्र अंतक ।
 पिण थोडुग सा पगट व्हें, नें मुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[पाण्ड वध्यां आरे पंचमें]

तीरथंकर गणधर उत्तम जीव छें रे, उत्तम छें आचारज नें उवसाय रे ।
 त्यांरा ग्यांन दग्गण चांचित छें निग्गण्य रे, यांनं वांछा मू पातक दूर पलाय रे ।
 ए अरिहंत वायक मनकर जांगजो रे* ॥ १ ॥
 वले साधु माववी थावक थावका रे, मूतर में भाप्या छें तीरथ च्यार रे ।
 त्यांनं पिण उत्तम जीव जिप कड्या रे, ग्यांनादिक गुण रत्ननां रा भंडार रे ॥ २ ॥
 त्यांनं कालवादी पापंडी इम कहें रे, ए मग्या छें जड अचेतन काल रे ।
 यांनं जीव चेतन कोड मन जांगजो रे, ए वीयां अर्ग्यानी मोटो आल रे ॥ ३ ॥
 च्याहं तीरथ तीरथंकर देव में रे, पावें गुणटांगा परजा प्रांग रे ।
 जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, यांनं अजीव व्हें छें मूंड अयांग रे ॥ ४ ॥
 त्यांरो विना वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वावे तीरथंकर गोनग्याल रे ।
 ते कह्यां छें गिना अवेन आठनं रे, वीजो वीसांड बोल मंमाल रे ॥ ५ ॥
 ओ काल वीयावच करमी किग विवें रे, काल वीयावच केम कराय रे ।
 ए कालवादी कुडो मन काडीयां, ए प्रतख चोडें भूयां जाय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भवी दरब देवादिक पाचू देवमें रे, यामे करें केइ वेक्रो रूप रसाल रे ।
 यारी गति आगति ने याशे आतरो रे, याने अजीव कहेते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेहली गतमां सू उपजें आय नें रे, ए मरनें उपजे पेंहली गति मांय रे ।
 देवाधिदेव जावे छे मुगत में रे, याने अजीव सरधे ने बूडों कांय रे ॥ ८ ॥
 परभव में जांसी ते निश्चे जीव छें रे, काल गतागत करसी केम रे ।
 इतरोइ न सुम्मे मोह अंध जीव ने रे, उ बोले सुंने चित गहला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरबादिक पाचू देवरो रे, अरथ भगोती सूतर मांहि रे ।
 नवमे उदेंसें सतक बारमें रे, ए निरणो करलेजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकद्री आदि पचिन्द्री जीव नें रे, छकाय धुरा घर कहे छे काल रे ।
 चवदेई भेद जीवरा तेहमे रे, याने अजीव कहे अग्यानी बाल रे ॥ ११ ॥
 काल समायादिक वरते तेहने रे, नही कोइ खब देस परदेस रे ।
 तिण काल नें एकद्रीयादिक जे कहे रे, ते करे अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
 एकद्री आदि पचिन्द्री जीव नें रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवो भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
 ते दशमें उदेंसें दूजा सतक मे रे, वले दशमां सतक रे पेहले जांण रे ।
 सोलमें सतक उदेंसे आठमें रे, ए निरणो कर लेजो चतुर सुजाण रे ॥ १४ ॥
 वले दसमें उदेंसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे निसतार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नो रे, रूपी अरूपी नो विसतार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयों तिरजंच मिनख ने देवता रे, त्यारे आठेई करम कह्या भगवत रे ।
 ए जीव हूसी तो यारे करम छें रे, त्याने निश्चेइ जीव जांणो मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोइ डंडक नियमा जीव छें रे, नियमा कह्यो ते वीसबावीस रे ।
 दसमें उदेंसे छठ्ठा सतक मे रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीवरा चवदे भेद सिघत में रे, ते निश्चेइ जीव कह्या साख्यात रे ।
 याने मूढ मिथ्याती कहे अजीव छें रे, आ प्रतख भूठे तिणसी बात रे ॥ १८ ॥
 वले दशवीकालिक चोथां अवेन में रे, निश्चेइ जीव कही छकाय रे ।
 तिणने अग्यानी जीव न लेखवें रे, ते करें बूडण रो मूढ उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सुतर रा तीजा अवेन मे रे, ठाणां अंग में तीजा ठाणा मांय रे ।
 छजीव नीकाय माहे सका कर रे, तो अहेत असुख ने समकित जाय रे ॥ २० ॥
 छवभाव लेस्या ने जीव जिण कही रे, तिणरी अतर में करो पिछांण रे ।
 माठी लेस्या रा माठा लखण छें रे, रुडी लेस्या रा रुडा जांण रे ॥ २१ ॥
 जीव रें मोह करम उदे हुवे रे, जब जीव वरते जो सावद्य कांम रे ।
 ते पाप उपजावे मेल्ल जोग सू रे, माठी लेस्या रा ए परिणांम रे ॥ २२ ॥

कदे मोह करम रो खयउपसम हुवें रे, जव जीव वरतें जो निरवद ठाम रे ।
 ते पाप खपाय उपजावें पुन नें रे, रुडी लेस्या रा ए परिणाम रे ॥ २३ ॥
 ए लेस्या छें निश्चें लषण जीवरा रे, तो कांय भारी हुवों कहि कहि काल रे ।
 जोवों उतरारावेन चोतीसमें रे, वले पन्नावगा लेस्या पद संभाल रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या परिणाम कह्या छें जीवरा रे, ठांगा अंग दसमां ठांगा मांय रे ।
 वले जोग उपीयोग पावे तेहमें रे, तो निश्चेंइ जीव जाणों इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 मति सुरतादिक च्याहं ग्यान रा रे, कीघा अग्यानी दोय दोय भेद रे ।
 सुतर अरय विनां मुख सूं कहें रे, करमावस करें अणहुती खेद रे ॥ २६ ॥
 मति सुरतादिक ने कहें काल छे रे, ग्यान कहे छें यांसूं न्यार रे ।
 दोय २ भेद कीयां छें इण विघे रे, उण उंधी अकल सूं कीयों विचार रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी री मति नें मतिग्यान कह्यां रे, मिथ्याती री मति ते मति अनांण रें ।
 ए निरणो नदी सूतर में काढीयों रे, तो ही करें अग्यानी कूडी तांण रे ॥ २८ ॥
 पांच ग्यान ने तीन अग्यान नो रे, वले च्याहंई दरसण तणो विचार रे ।
 त्यांरा भेद कीयां छें ग्यानी अतिघणां रे, ते दोय उपीयोग तणो विसतार रे ॥ २९ ॥
 जे भेद कीयां छें जिण उपीयोग रा रे, ते भेद नें तेहीज उपयोग जांण रे ।
 त्यांमें काल रो भेद अग्यानी घालीयो रे, ते नंदीय सूतर सूं करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
 वले अग्यानने कही छे नियमा आतमारें, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 ए दसमें उदेसैं सतक वारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
 उवाइ उंपग नें ठांगा अंग मे रे, च्याहंई ध्यान तणो विसतार रे ।
 ध्यान घ्यावे ते लषण जीवरों रे, यांनं अजीव कहे ते मूढ गिवार रे ॥ ३२ ॥
 चवदे गुणठांणा लखण जीवरा रे, जोवो समवायंग सूतर मांय रे ।
 ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय नें रे, काल परुपें डूवो कांय रे ॥ ३३ ॥
 च्याहंई संज्ञा चेतन दरव छे रे, वीर कह्यो ठाणा अंग मांय रे ।
 जोवो चोथो दसमां अवेन में रे, संका मत आणों भवीयण कांय रे ॥ ३४ ॥
 जे जे दरव में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुण ठांगा पर्याय प्राण रे ।
 ते तो दरव निश्चेइ जीव छें रे, ए सरघा में संका मूल म आंण रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

ढुंहा

कालवादी रा मति तणी, केइ कर रह्या कूडी तांण ।
त्यांनं खुलवा जाव वतावीया, साख सूतर री आंण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरघा छुड़ायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितराएक तो वले कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[निहव तेरासीया केड़ायत ओलखो]

छ नियठा नें पांचूइ चारित भणी, यांनं कहें छें अग्यांनी काल हो ।
ए निश्चेंइ चेतन गुण पर्याय छें, ते सुणजो सुरत संभाल हो ॥
कालवादी रो मत कूडो घणों* ॥ १ ॥
छ नियठा नें पांचूइ चारित तणा, छतीस छतीस छे दुवार ।
पच्चीस में सतक उदेसे छठें सातमें, ए भगोती में कह्यो विसतार हो ॥ का० २ ॥
यांरा पजवा अनंता कहा छें एक एक ना, त्यां पजवारी अल्पा बोहत जाण ।
ते संख असंख अनंत गुणा कहा, ते पजवारी करजों पिछांण हो ॥ ३ ॥
निग्रंथ सनातक नें यथाख्यात रा, यांरा पजवा वरोबर जाण ।
षेध चारित नें नियठा मेंला कहा, तिणसूं छें पजवारी हांण हो ॥ ४ ॥
ए कुण दरबे मेंलो कुण उजलों, तिण दरब री करजों तहतीक हो ।
याने दरब बेतर काल भाव सूं ओलखों, यांरा गुणारी पिण करजों ठीक हो ॥ ५ ॥
किण ही दोग जणां चारित साथे लीयो, समकाले छोड्या प्रांण हो ।
काल सारिषों दोगां रा चारित तणों, पिण चारित गुण में फेर जांण हो ॥ ६ ॥
चारित नें जगन मभम उतकण्टों कह्यो, ते तो चेतन गुण पर्याय हो ।
ते चारितावणीं करम दुरा हूआं, निजगुण परगट थाय हो ॥ ७ ॥
ए संजया नें नियठा तों निश्चेंइ जीव छें, तिण मांहीं संका म आंण हो ।
यांनं काल परुपें करम वांधो मती, छोड दो कूडी तांण हो ॥ ८ ॥
सजती असजती ने सजता संजती, एहवा बोल घणां छे ताहि हो ।
ए सगलां ने जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो ॥ ९ ॥
चारित आतमा श्री जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमें उदेसे सतक वारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चारितावर्णी चारित नें विगाडीयो, ओ विगड्यो ते निजगुण जाण हो ।
 परगुण आडो करम आवें नहीं, इणरी पिण करजों पिछाण हो ॥ ११ ॥
 ए चारितावर्णी जेणावर्णी करम कह्यो, तो चारित जेणा जीव पर्याय ।
 ए नवमें सतक उदेते इगतीस में, सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
 समाइ पचखांण संजम नें संवर, ववेक नें बिउसग जाण हो ।
 ए सगला ने कही छे जिणेसर आतमा, तो कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ १३ ॥
 ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में, नवमों उदेसो संभाल हो ।
 समाइ समता परिणाम गुण जीवरा, त्याने भोलेइ म सरखो काल हो ॥ १४ ॥
 ग्यांन दरसण चारित गुण कह्या जीवरा, ते अनुयोग दुवार मभार हो ।
 कोई जीव रो निजगुण चारित नही लेखवें, ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
 दसमें अग छठा अघेन माहें कह्यो, प्रथम संवर दया जाण हो ।
 ते दया ने नियमा निजगुण जिण कही, तिण गुण सू.पोहचें, निरवांण हो ॥ १६ ॥
 सुख दुख ग्यांन दरसण चारित तप, वले वीर्य उपीयोग वखांण हो ।
 ए आठ लखण कह्या चेतन दरब ना, ते अठावीसमा उत्तरावेन जाण हो ॥ १७ ॥
 चारित परिणाम कह्या छें जीवरा, दसमेघेन ठांगाअंग मांय हो ।
 ते जीव परिणाम ने अजीव परूपनें, कोई मति करो वूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
 ठांगाअंग चोथे कही छे. च्यार परवजा, धन पूंजीयादिक समांण हो ।
 तेकरमन्यारा कीयां परवजा हुवे निरमली, तिण परवजा नें निजगुण जांण हो ॥ १९ ॥
 वले ठांगाअंग चोथे च्यार चारित कंहा, भिन्नेजजरीए समांण हो ।
 छिदर सहीत नें रहित चारित कंहा, ते जीवनां गुण परमाण हो ॥ २० ॥
 ए ग्यांन रो इंदर केवलग्यांन छे, समकत रो खायक समकत इंद हो ।
 जथाख्यात चारित इंद्र चारित तणों, ए तीजे ठांणे कह्यो छे छिपांद हो ॥ २१ ॥
 उतकष्टा चेतन गुण ने इंदर कंहा, तिणमें चारित गुण सूं पांमें निरवांण हो ।
 तिण चारित गुण ने काल परूपने, कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ २२ ॥
 जगन मभम उतकष्टी आराधना, ते ग्यांन दरसण चारित री जांण हो ।
 ते कुण दरब नें जीव आराधीयो, तिण दरब री करजो पिछाण हो ॥ २३ ॥
 जिण जीव कीयां निजगुण ने निरमला, तिण मोह करम ने टाल हो ।
 जिण चारित आराध्यो ते निजगुण आपरो, तिणनें मूरख सरखे काल हो ॥ २४ ॥
 देस चारित नें सर्व चारित कह्यो, ते त्याग परमाणे गुण जोय हो ।
 काल दरब तो देस न चालीयो, तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
 चारितादिक गुण अनेक असासता, त्यानें सरखे अग्यांनी काल हो ।
 उ भावें जीव न मानें असासतो, ते तो - सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

ओ विगड्यो ते निजगुण जाण हो ।
 इणरी पिण करजों पिछाण हो ॥ ११ ॥
 तो चारित जेणा जीव पर्याय ।
 सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
 ववेक नें बिउसग जाण हो ।
 तो कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ १३ ॥
 नवमों उदेसो संभाल हो ।
 त्याने भोलेइ म सरखो काल हो ॥ १४ ॥
 ते अनुयोग दुवार मभार हो ।
 ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
 प्रथम संवर दया जाण हो ।
 तिण गुण सू.पोहचें, निरवांण हो ॥ १६ ॥
 वले वीर्य उपीयोग वखांण हो ।
 ते अठावीसमा उत्तरावेन जाण हो ॥ १७ ॥
 दसमेघेन ठांगाअंग मांय हो ।
 कोई मति करो वूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
 धन पूंजीयादिक समांण हो ।
 तिण परवजा नें निजगुण जांण हो ॥ १९ ॥
 भिन्नेजजरीए समांण हो ।
 ते जीवनां गुण परमाण हो ॥ २० ॥
 समकत रो खायक समकत इंद हो ।
 ए तीजे ठांणे कह्यो छे छिपांद हो ॥ २१ ॥
 तिणमें चारित गुण सूं पांमें निरवांण हो ।
 कांय बूडो कर कर तांण हो ॥ २२ ॥
 ते ग्यांन दरसण चारित री जांण हो ।
 तिण दरब री करजो पिछाण हो ॥ २३ ॥
 तिण मोह करम ने टाल हो ।
 तिणनें मूरख सरखे काल हो ॥ २४ ॥
 ते त्याग परमाणे गुण जोय हो ।
 तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
 त्यानें सरखे अग्यांनी काल हो ।
 ते तो - सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

दरबे सासतो नें भावे असासतो,
 ते सूतर भगोती रे सतक सातमें,
 दरबे सासतो जीव नें यूँ कह्यो,
 भावे जीव नें कह्यो छें, असासतो,
 निजगुण फिरें नें परगुण भरपडे,
 परगुण भरियां हुवें निजगुण निरमला,
 असुख निजगुण फिरियां सुख निजगुण हुवे,
 सुख निजगुण फिरियां असुख निजगुण हुवे,
 जे मेला निजगुण मोह वसें,
 मोह रहित निजगुण हुवे निरमला,
 सात करम उदे सूँ निजगुण मेला हुवें,
 ते करम भरिया हुवे निजगुण निरमला,
 आठ करम उदे हूआं नीपजे
 आठ करमां नें खय कीघां नीपनां,
 च्यार करमां नें खयउपसम कीया नीपजे,
 मोह करम उपसमीयां परगटे,
 ए च्यारुई भाव परिणामीक जीव छे,
 ए भाव फिरें पिण दरब फिरे नही,
 तत सुख सरध्या हुवे जीव समकती,
 उहीज ग्यानी रो अग्यानी हुवे,
 नारकी नें देवता रो मिनष तिरजंच हुवे,
 इत्यादिक जीवरा भाव अनेक ही,
 सासतो जीव दरब छे अनादरो,
 ते पर्याय हांण विरध हुवे करम सू,
 जे भाव फिरे पिण दूर पडे नही,
 इणविध भावे जीव असासतो,
 उ जीव रा भाव न सरधे असासता,
 याने काल कहें ते कुवद लगाय ने,
 वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री,
 ते तीजा उदेसा छठा सतक मे,
 आदि नें अंत रहीत ए जीव छे,
 के आदि सहीत ने अंत रहीत छे,

जीव नें कह्यो जिणराय हो।
 हूजा उदेसा मांय हो ॥ २७ ॥
 जीव रो अजीव न थाय हो।
 ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥ २८ ॥
 ते परगुण पुदगल जाण हो।
 आ सरधा घट में आण हो ॥ २९ ॥
 ते परगुण करदे दूर हो।
 तिणसूँ परगुण लागें पूर हो ॥ ३० ॥
 त्यां निजगुण सूँ करम बंधाय हो।
 त्यांसूँ परगुण दूर पलाय हो ॥ ३१ ॥
 त्यांसूँ पाप न लागें ताम हो।
 त्यांरा गुण निपन छें नाम हो ॥ ३२ ॥
 निजगुण उदें भाव अनेक हो।
 निजगुण खायक भाव वशेख हो ॥ ३३ ॥
 निजगुण खयउपसम भाव हो।
 निजगुण उपसम भाव हो ॥ ३४ ॥
 ते चेतन गुण पर्याय हो।
 ते पिण सुणजे न्याय हो ॥ ३५ ॥
 उंधा सरध्या मिथ्याती थाय हो।
 अग्यानी रो ग्यानी हुय जाय हो ॥ ३६ ॥
 मिनख तिरजंच देवता थाय हो।
 ते ओर रो ओर हूय जाय हो ॥ ३७ ॥
 तिणरी पर्याय अनती जाण हो।
 पिण दरब री नही विरध हांण हो ॥ ३८ ॥
 त्यां भावां रा नाम अनेक हो।
 ते सरधों आण ववेक हो ॥ ३९ ॥
 तिण काढ्यो छें मत कूर हो।
 तिणरी संगत करजों दूर हो ॥ ४० ॥
 सूतर भगोती मांय हो।
 ते सामल जो चित्त ब्याय हो ॥ ४१ ॥
 के आदि नही अत सहीत हो ॥ जिणेर ॥
 के आदि ने अंत सहीत वदीत हो ॥ जिणेर ॥
 ए गोतम सामी पूछ्यो श्री वीर ने* ॥ ४२ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

श्री वीर जिणेसर कहें सुण गोयमा, ए च्याल्ई भांगा छें जीव हो ।
 त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरघ्यां समकत री नीव हो ॥ ४३ ॥
 ए आदि रहीत नें अंत रहीत छें, ए अभव सिद्धीया जीव जाण हो ।
 आदि नहीं पिण अंत सहीत छें, ते भव सिद्धी जीव पिछाण हो ॥ ४४ ॥
 जे करम खपाय नें सिद्धी गति भे गया, त्यांरी आदि छे पिण अंत रहीत हो ।
 नारकी तिरजंच भिनख ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥ ४५ ॥
 ए च्याल्ई जीव जिणेसर भापीया, त्यांनो जीव न सरवें मूढ हो ।
 ते वूडें छे वीरनां वचन उत्थापनं, कर कर कूडी रुढ हो ॥ ४६ ॥



ढाल : ४

दुहा

कालवादी चेतन नही ओलख्यों, तिणमे खोट अनेन्त ।
तिमहीज पुदगल दरब में, कहितां न धावें अंत ॥ १ ॥
एक वर्ण एक गंध छे, एक रस फरस छें दोय ।
उ माने छें पुदगल एहनें, ते पिण सुध न कोय ॥ २ ॥
पांच वर्ण दोय गंध छें, पांच रस फरस छें च्यार ।
उ समचें पुदगल कहें एहनें, ते पिण असुध विचार ॥ ३ ॥
भारी हलको सुहालो खरदरो, ए पुदगल दरब साख्यात ।
याने कालवादी कहे काल छे, ते प्रतख भूठ मिथ्यात ॥ ४ ॥
खंड देस परदेस परमाणुओ, यानें पुदगल मानें नाहि ।
त्यानें पिण कहे काल छे, आ उंची अकल घट मांहि ॥ ५ ॥
ए प्रतख पुदगल दरब ने, कहे छें अग्यांनी काल ।
उणरीसरधानें सरधा रा उतर कहें, ते सुणजो सुरत संभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

पुद्गल रूपी दरब तणा, च्यार भेद कीयां जिणराय रे ।
खंड देस परदेस परमाणुओ, छत्तीसमां उत्तराधेन मांय रे ।
कालवादी री सरधा सुणो* ॥ १ ॥
पुद्गल रा भेद च्याहं भणी, याने कहे छें अग्यांनी मूढकाल रे ।
ए करमा वस सुध सूफे नही, अभितर फूटी आयां जाल रे ॥ २ ॥
वीसामीसा वले पोगसा, ए पुद्गल री तीन जात रे ।
यां पुदगलां नें काल दरब कहें, तिणरे छे गूढ मिथ्यात रे ॥ ३ ॥
अठारें पाप ठाणा चोफरसी कह्या, आठकरमे चोफरसी कह्यां वीर रे ।
मन बचन जोग दरवे लीया, चोफरसी कह्यो कारमण सरीर रे ॥ ४ ॥
सब्द अंधारा उद्योत नें, प्रकास छाया तावरो जाण रे ।
इत्यादिक एहवा सूक्ष्म खंड ने, चोफरसी पुद्गल ने पिछाण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छत्र दरब लेस्या च्यार सरीर नें, घणो दधी घणवाय तणवाय रे ।
 काय जोग नें केइ बादर खद ने, याने अठ फरसी कहुआ जिणराय रे ॥ ६ ॥
 दीप समुदर देवलोक नें, मुगत सिला पिण तेह रे ।
 नरकावासा जाव वेमाणिया, ए सर्व अठफरसी दरब एह रे ॥ ७ ॥
 ए चोफरसी आठफरसी पुद्गल कहुआ, ते वरण गंध रस सहीत रे ।
 यानें काल कहे मूढ मूरख थको, तिणरी सरघा घणी विपरीत रे ॥ ८ ॥
 धर्म अधर्म आकाश नें, काल पुद्गल जीव वखांण रे ।
 यामें पांच दरबे नें अरूपी कहुआ, रूपी एक पुद्गल जांण रे ॥ ९ ॥
 ए भगोती रे सतक बारमें, पांचमें उदेने संभाल रे ।
 ज्यानें पुद्गल दरब श्री जिण कहुआ, त्यानें मूरख परुपें छें काल रे ॥ १० ॥
 हाट घर मिंदर मालीया, आसण सयण-सेंण जांण विमांण रे ।
 वसत्र गंहणा आभूषण, हिरण सोवनादिक जांण रे ॥ ११ ॥
 गंध कसबोइ बाजंत्रादिक, असणादिक च्यार आहार रे ।
 ए उवभोग परिभोग आवे जीव रे, एक वार बहू वार रे ॥ १२ ॥
 त्यामें सब्द रूप दोग कामा कहुआ, गंध रस फरस तीन भोग रे ।
 ए काम ने भोग रूपी जिण कहुआ, ते आय मिलीयां जीव रे संजोग रे ॥ १३ ॥
 ए काम नें भोग रूपी ते पुद्गल कहुआ, त्यानें काल परुपे बूडो कांय रे ।
 ए भगोती रे सतक सात भे, सातमां उदेसा रे मांय रे ॥ १४ ॥
 घृत ने खांड मेदें करी, कोइ नीपजावे विविध पकवानं रे ।
 ए प्रतख वात सरघे नही, ओ पिण पूरों अग्यांन रे ॥ १५ ॥
 घी खांड मेदों तो कहें काल था, ए तीनूइ गया विललाय रे ।
 यां तीना सूं पकवानं नही नीपनां, एतो काल परगट हुओ आय रे ॥ १६ ॥
 पकवानं नें काल दरब कहें, यांरां नाम दरब कहें एक रे ।
 इण विपरीत सरघां रा उत्तर कहू, ते सांभलो आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 घृत ने खांड मेदे करी, कोइ निपजावे विविध पकवानं रे ।
 त्यांरा नाम एक २ रा अनेक छे, सूतरे भाष्यो भगवानं रे ॥ १८ ॥
 ए पकवानं तो पुद्गल दरब छे, तिणमें पांच वर्ण दोग गंध रे ।
 पांच रस आठ फरस छे, ते पुद्गल मिलीया छे बध रे ॥ १९ ॥
 त्यांरा नाम तो ओलखवा भणी, ते नाम छे सूरत ग्यान रे ।
 ते नाम नें दरब छे जूजूआ, ए वीर वचन सत मान रे ॥ २० ॥
 ए नाम दरब जूदो सरघायवा, ओलखों दरब आकाण रे ।
 ते दरब छे लोक अलोक में, इणरो नाम छें जीव रें पास रे ॥ २१ ॥
 इण परें दरब अनेक छे, ते दरब छे दरब रे ठाम रे ।
 त्यां दरबां रा नाम जाणें जठे, जीव कनें सर्व नाम रे ॥ २२ ॥

ढाल : ५

ढुहा

चदरमा ने सूर्य नी चाल सू, नीपजे समयादिक काल ।
 तिणरी उतपत छे, प्रवाह ज्यू, निरन्तर दगचाल ॥ १ ॥
 ते अढाई दीप दोय समुद में, सेष दीप समुद सर्वटाल ।
 पतालीस लाख जोजन लगे, तिरछो वरते काल ॥ २ ॥
 उचो जोतक चकर लगे, ते नवसो जोजन परमाण ।
 सहंस जोजन नीचो कह्यो, दोय विजे उडी तांइ जाण ॥ ३ ॥
 मेरू विचे उची दिस तिहां, प्रतिबब सू वरते काल ।
 अठा बारे काल कठे नही, तिणरो सूतर माहे निकाल ॥ ४ ॥
 कालवादी कहे लोक अलोक मे, सगले वरते काल ।
 ते सूतर अर्थ विनां बके, वले देवे सूतर सिर आल ॥ ५ ॥
 उघा अर्थ करे अकल विना, वले बोले आल पपाल ।
 हिवे काल दरब रो निरणो कहु, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[म्हारो सेशा रो साथी रे वीछीयो]

चाल सासती ले जोतष्यां तणी, जीव पुद्गल रो जघन व्यापार जी ।
 तिणने समो कह्यो तीथकरे, तिणरो सांभलजो विसतार जी ।
 काल वरते अढाई दीप मे* ॥ १ ॥
 असंख्याता समां री आवलका हुवे, जाव पुद्गल परावर्तन जाण जी ।
 अतीत अनागत वरतमान ने, काल दरब री करजो पियछांण जी ॥ का० २ ॥
 जिण खेतर में समो वरते नही, तठे आवलकादिक पिण नही जी ।
 आवलकादिक तो समां सू हुवे, अघा समो सगला रे मांहि जी ॥ ३ ॥
 उतरावेन में छ दरबां तणा, चाल्या दरब खेतर काल भाव जी ।
 काल वरते समय खेतर मभे, तठे कह्यो उघाडो न्याव जी ॥ ४ ॥
 समय खेतर कहे सर्व खेतर ने, कालवादी सूतर रो अजांण जी ।
 समय खेतर चाल्यो सिद्धांत में, तिणरा पाठ री करजो पियछांण जी ॥ ५ ॥
 अढाई दीप दोय समुद ने, समय खेतर कह्यो जिणराय जी ।
 भगोती रे सतक दूसरे, जोवो नवमां उदेसा मांय जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सीमंत नामा नरका वासो कह्यो,
 वले मुगत सिला चोथी कही,
 च्याहं पेंतालीस लाख जोजन तणा,
 समय खेतर समय सहीत छे,
 परमाण^१ आहाउनिव्वत^२ काल छे,
 च्याहं भेद छें अघाकाल ना,
 अघाकाल छें मिनख लोक मे,
 आतो सूर्यादिक री चाल छे,
 इंदा^३ अगी^४ जमा^५ ने नेरइ^६,
 सोमा^७ इसणीया^८ विमला^९ दिसि,
 नव दिस मे अजीव अरूपी तणा,
 छव भेद नीची तमा दिस मभे,
 ए भगोती दसमां सतक मे,
 तो ही कालवादी भूठो थको,
 नीचा तिरछा खेतर लोक में,
 छ भेद कह्या ऊंचा लोक में,
 ए भगोती रे सतक इग्यार मे,
 उचा लोक मे काल निपेवीयो,
 छहं दिस लोक नें अंत छेहडे,
 अजीव अरूपी रा छ भेद छे,
 घर्म अघर्म नें आकाग नां,
 कालवादी कहे तिहां काल छे,
 छ भेद अरूपी रा कह्या,
 काल परुपें लोक रे छेहडे,
 इग्यारे भेद तो काढ सके नहीं,
 उंची परुपे सुव बुव बाहिरा,
 रूपी अरूपी विण वसतु नहीं,
 त्यारो लेखो तो मूढ करे नहीं,
 रूपी अरूपी जीव अजीव रो,
 भगोती रे सतक सोलमें,
 कालवादी कहें काल अलोक मे,
 अजीव दरव रो देस अलोक में,

समय खेतर ने उडू विमाण जी ।
 ए तो च्याहं बरावर जांग जी ॥ ७ ॥
 ठांणाअंग चोथा ठांणा माहि जी ।
 गुण निपन नाम छें ताहि जी ॥ ८ ॥
 वले मरण^६ ने अघाकाल जी ।
 ठाणाअंग चोथो ठांणो संभाल जी ॥ ९ ॥
 ते तो समयादिक जांणे एहू जी ।
 अठो दीप बारे नहीं तेह जी ॥ १० ॥
 वाइणी^५ वायवा^६ दिस जांग जी ।
 दसमी दिस तमा^९ पिछांण जी ॥ ११ ॥
 सात भेद तिहा वरते काल जी ।
 अवा समो दीयो जिण टाल जी ॥ १२ ॥
 पेहले उदैने जोय संभाल जी ।
 लोक अलोक मे कहं काल जी ॥ १३ ॥
 अजीव अरूपी रा भेद सात जी ।
 अघाकाल टाल्यो साख्यात जी ॥ १४ ॥
 लेजो दसमें उदैने संभाल जी ।
 तो अलोक मे किहां थी काल जी ॥ १५ ॥
 नहीं वरतें समयादिक काल जी ।
 अघासमों दीयो जिण टाल जी ॥ १६ ॥
 देस परदेस कह्या जिणराय जी ।
 तो तू सातमों भेद बताय जी ॥ १७ ॥
 रूपी रा कह्या छे भेद च्यार जी ।
 तो तूं काढ बताय इग्यार जी ॥ १८ ॥
 लोक अलोक मे कहे काल जी ।
 दे दे सूतर रे सिर आल जी ॥ १९ ॥
 जीव अजीव विण नहीं काय जी ।
 यूही कूड़ी करे वकवाय जी ॥ २० ॥
 रुडी रीत काढचों नीकाल जी ।
 आठमें उदैने संभाल जी ॥ २१ ॥
 ते बोले नहीं वचन विमास जी ।
 अनंत भाग उणो छे आकास जी ॥ २२ ॥

दसमें उदेसे दूजा सतक मे, भगोती में काढ्यो नीकाल जी ।
 पिण कालवादी भूठ आदख्यो, अलोक में कहि २ काल जी ॥ २३ ॥
 रात-दिन अनंता नीपजे, ते तो लोक असंखेग मांय जी ।
 अढी दीप में दरब अनत छे, इण लेखें अनता थाय जी ॥ २४ ॥
 एक २ दरब उपर गिण्यां, एक २ रात दिन जाण जी ।
 इम अनता दरब उपर गिण्यां, अनता रात दिन पिछाण जी ॥ २५ ॥
 वले तीनुंइ काल तणा गिण्यां, तो पिण अनंत हुवे दिन रात जी ।
 ए भगोती सतक पांचमे, नवमे उदेते कह्या साख्यात जी ॥ २६ ॥
 काल फरसे पांचू दरबा तणा, छ दिस ना परदेस चकवाल जी ।
 पिण परदेस पांचू दरब नां, केइ फरसे न फरसे काल जी ॥ २७ ॥
 समय खेतर परदेस आगलो, तठा बारे न फरसे काल जी ।
 माहे परदेस पांचू दरब ना, अवा समों फरसे दगचाल जी ॥ २८ ॥
 जो काल हुवे लोक अलोक मे, तो सगला परदेस फरसे काल जी ।
 फरसे न फरसे जिण क्याने कहे, कोइ समभो सुरत संभाल जी ॥ २९ ॥
 भगोती रे सतक तेरमें, चोथे उदेसे ए विसतार जी ।
 फरसे नही फरसे ते बिबरो कह्यो, छ ही दरबां तणो निसतार जी ॥ ३० ॥
 नीची दिस थी उची दिस मभे, दरब अनत गुणां तिण मांय जी ।
 छ दरबां री अल्पावोहत मे, तिणरो अर्थ सुणो चित्त ल्याय जी ॥ ३१ ॥
 नीची दिस में काल वरते नही, उची दिस काल वरते तांहि जी ।
 ते काल दरब माहें मिल्यां, अनंत गुणां उंची दिस मांहि जी ॥ ३२ ॥
 फिटकरत्तकरंड मेह तणो, तिहां उंची दिस वरतें काल जी ।
 चंद सूर्य नी प्रभा पड़े तठे, समां नीपजे दग चाल जी ॥ ३३ ॥
 उंचा लोक थी नीचा लोक में, दरब अनंत गुणां छें ताहि जी ।
 तठे समां अनंता नीपजे, दोय विजे उडी तिण मांहि जी ॥ ३४ ॥
 उंचा लोक थी नीचा लोक मे, पुदगल जीव इधक विशेष जी ।
 अनता गुणां कह्यां ते काल सू, छ दरब री अल्पा वोहत देख जी ॥ ३५ ॥
 उंचा लोक में काल वरतें नही, नीची दिस मे न वरते काल जी ।
 काल वरते कहे सर्व खेतर में, ते करे मूढ भूठी भखाल जी ॥ ३६ ॥
 पन्नावणा रा तीजा पद मभे, तठे कह्यो घणों विसतार जी ।
 तिणरो निरणो करें घट भीत रे, कालवादी रो संग निवार जी ॥ ३७ ॥
 लोक आकाशती सर्व लोक में, तिणरा देस ने फरसे काल जी ।
 तिमहीज फरसें देश लोक नों, ए तो अवा समो दगचाल जी ॥ ३८ ॥

आकाशती रा देस परदेस सू, अलोक ने फरस्यो जाण जी ।
 और दरब नही अलोक मे, ए श्री जिणवचन परमाण जी ॥ ३६ ॥
 अढाई दीप द्योय समुद ने, अधासमो फरसें दगचाल जी ।
 सेष दीप समुदर तेहने, अधासमों न फरसे काल जी ॥ ४० ॥
 समय खेतर बारे छे नही, आ तो जोतपीयां री चाल जी ।
 जेठ समयादिक नीपजे नही, तटे किहां थी फरसे काल जी ॥ ४१ ॥
 पन्नवणा सूतर रे पद पनरमे, कोइ बुधवंत लेजो संभाल जी ।
 पिण कालवादी करमां वसे, लोक अलोक मे कहे काल जी ॥ ४२ ॥
 नीपनें सूर्यादिक चालीया, समयादिक काल अनत जी ।
 ए भगोती रे सतक बारमे, छठे उदसे कहां भगवंत जी ॥ ४३ ॥
 नरकादिक गति में वरतें नही, समो आवलिकादिक जाण जी ।
 त्यांरा आउषादिक ने मापवा, भिनष खेतर में मान परमाण जी ॥ ४४ ॥
 आखा लोक मे काल वरते नही, तो अलोक मे किहांथी होय जी ।
 भगोती रे सतक पांच मे, लेजो नवमो उदसे जोय जी ॥ ४५ ॥
 खेतर उजाड़ मे घान नीपनो, कोइ कहे मण सो द्योय च्यार जी ।
 तिणरा मापा तोला छे गांम में, उण उनमान कहां विचार जी ॥ ४६ ॥
 ज्यूं नरकादिक जीवां कने, आउषादिक पुद्गल पाय जी ।
 ते तो समे २ पुद्गल खिरे, त्यांरो मापो समय खेतर कांय जी ॥ ४७ ॥
 कपड़ो छे बजाज रा हाट में, गज दरजी रे घर ताहि जी ।
 ज्यूं आउषादिक जीवां कने, मापो छें समय खेतर मांहि जी ॥ ४८ ॥
 गाय भेस उहाडै हांचले, कोइ कहे दूध सेर छें च्यार जी ।
 पिण तोला पड्या घर हाट में, इणरे उनमान कहां विचार जी ॥ ४९ ॥
 ज्यूं ससारी जीवां तणा, आउषादिक सगलों तीर जी ।
 त्यांरा आउषादिक ने मापवा, समय खेतर में कहां काल वीर जी ॥ ५० ॥
 जीव अजीव अवगाहे रह्या, तिणरो मापो छे खेतर आकास जी ।
 केइ उमजें विगसे केइ सासता, काल सू माप लेजो विनास जी ॥ ५१ ॥
 संचिठण गति च्यार मे, तिणरा अरथ री कीजो पिछाण जी ।
 सुन असुन मिश्रपणें रह्यो, तिणने काल सू गिणीयो जाण जी ॥ ५२ ॥
 जीव नरक सू गयो गति ओरमें, फेर पाछो आयो नरक मांहि जी ।
 जद नेरइय मेल गयो हुंतो, ते तो एक रह्यो नही ताहि जी ॥ ५३ ॥
 ते तो सुन संचिठण मे रह्यो, ते तो काल सू गिणीयो वीर जी ।
 हिवें असुन संचिठण नें कही, तिणरो सुणजो अरथ सधीर जी ॥ ५४ ॥

जीव नरक सूं गयो गति ओर में, फेर पाछो आयो नरक ताहि जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँ तो, ते तो सगलाइ हुवें नरक मांहि जी ॥ ५५ ॥
 ते तो असुन संचिठण में रह्यो, ते तो काल सूं गिणीयो एम जी ।
 हिवें मिश्र संचिठण नें कहुँ, तिणरो अरथ सुणों घर पेम जी ॥ ५६ ॥
 जीव नरक सूं गयो गति ओर मे, फेर पाछो आयो नरक मांय जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँतो, केइ उवेहीज केइ ओर आय जी ॥ ५७ ॥
 ते तो मिश्र संचिठण में रह्यो, तिणनें काल सू गिण्यो भगवंत जी ।
 पिण काल न वरते नरक में, तिणरो न्याय सुणो बुधवत जी ॥ ५८ ॥
 सुन असुन मिश्र काल नरक में, ते काल कहुआ ओर न्याय जी ।
 तिणरो डिष्टन्त दे निरणो कहुँ, ते सांभल जो चित्त ल्याय जी ॥ ५९ ॥
 एक चाडो भरयो तेल तेहने, कोइ कहुँ तेल सेर छ सात जी ।
 पिण सेर नही चाडा मभे, ज्युं नरक में नही काल विख्यात जी ॥ ६० ॥
 कालवादी कूडो मत थापवा, नरक माहे परूपे काल जी ।
 सुन असुन मिश्र कालरो, भेद जाणयां विण करे मखाल जी ॥ ६१ ॥
 कालवादी रा मत तणी, एक इचरज वाली वात जी ।
 समभायो समभे नही, तिणरा घट मांहे गूढ मिथ्यात जी ॥ ६२ ॥
 हूँ कहि २ नें कितरो कहुँ, कालवादी रा मत रो कूड जी ।
 इम सांमल नें नरनारीयां, कालवादी सू रहजो दूर जी ॥ ६३ ॥
 काल दरब ओलखायवा, जोड कीवीं खेरवा मभार जी ।
 समत अठारें नत्तीसैं समें, आसाढ सुद एकम सोमवार जी ॥ ६४ ॥



ढलल : ६

दुहल

कललवलदी रे करड उदें हुवलं, तलणसूं हुवलं घणों वलडरीत ।
तलणने छेडवीयल उलढो डडें, नही न्यलय डेलण री नीत ॥ १ ॥
अरलहंत देव ने आडरीयल, वले उवडलय सगलल सलघ ।
त्यलनें अजीव कहें डूरख थको, वले डूठों करें वलषवलद ॥ २ ॥
इण कललवलदी डलषडी तणों, करडें घणों छे डलथ्यलत ।
केइ डलरीकरडल जीवडल, ते डलनें इणरी वलत ॥ ३ ॥
केइ डेषी छे सुघ सलघलं तणलं, त्यलरे डोर रुड डलथ्यलत ।
त्यलनें सडड डडे नही सर्वथल, तोही करें इणरी डखडलत ॥ ॡ ॥
तलरण तलरण उततड डुरषल डणी, अजीव कहतो नलणें डूढ ललज ।
हलवे सलडु करे छे डरूडणल, यलनें जीव सरडलवण कलज ॥ ॡ ॥

ढलल

[धन्यल श्री ःलजनगर डें वलइडे]

अरलहंत देव जलण सलसण रल नलयक, ते नलशुचेइ उततड जीवो रे लो ।
त्यलनें अजीव कहे कोइ डूढ डलथ्यलती, तलण दीधी नरक री नीवो रे लो ॥
देखो रे आवल चेतु नही* ॥ १ ॥
अरलहंत देव अरी करडलं नें हणीयल, त्यल कीधी घडं री आदो रे ।
कर २ कूडी वलषवलदो रे लो ॥ दे० २ ॥
अरलहत आड तलरे ओरलं ने तलरे, तलरण तलरण उघलडें छे डलठो रे ।
यलने अजीव सरघे उसड उदे सूं, त्यलरो डलग उगडीयो डलठो रे लो ॥ ३ ॥
अरलहंत देव डुगत ललवलरल कलडी, त्यल दीधी संसलर ने डूठो रे ।
त्यलं अरलहंतल ने जीव न सरघे, ते डत नलशुचेइ डूठो रे लो ॥ ॡ ॥
सगलल डुनीसरलं रल ढोलल डलहे, तीथकर देव डोढल रे ।
ते डुनीसरलं ने तीथंकर देवल ने, अजीव सरघे तलण खलडल खोढल रे ॥ ॡ ॥
सलघलं रल गण अधलडती गणघर, ते अनेक गुणलं कर सहीतो रे लो ।
त्यलनें अजीव कहें केइ डलरीकरडलं, ते होसी चलहूंगतल डें डजीतो रे लो ॥ ६ ॥
आचलर्य डलण डोढल डुनीसर, ते छरुतीस गुणलं सहीतो रे लो ।
त्यलनें अजीव कहें केइ डत हीण डलंनव, त्यलरी वलकल करें डरतीतो रे लो ॥ ७ ॥

*यह आंकडी डुरत्येक गलथल के अन्त डे है ।

उवभाय पिण मोटां मुनीवर, ते पचीस गुणां सहीतो रे ।
 त्यांने अजीव कहें केइ अकल विहूंगा, ते नरभव खोय जासी रीतो रे लो ॥ ८ ॥
 साधु रिषीसर मोटा मुनीसर, ते सत्तावीस गुणां करे पूरा रे ।
 त्यांने अजीव कहें बाल अग्यांनी, तिणरी वात माने ते कूडा रे ॥ ९ ॥
 अरिहंत आचार्य उवभाय ने साधु, ते सगलाई मोटा अणगारो रे ।
 त्यांने अजीव सरधे उसभ उदे सूं, ते वूड गया काली घारो रे ॥ १० ॥
 यां मोटां पुरषां नें अजीव सरघसी, तिणरें बघसी पाप रा पूरो रे ।
 उवे उदे आसी जद दुखीयो होसी, तिणमें म जाणों कूडो रे ॥ ११ ॥
 जो इणहीज भव मे पाप उदें हुवे, तो पडे बाहलां रो विजोगो रे ।
 बले रिघ संपत सगली विल्लावें, वले मिले दुसमण रो जोगो रे लो ॥ १२ ॥
 कदा इण भव माहें उदे पाप न होवे, तो परभव में संका मत आणो रे ।
 उत्तम पुरपां नें अजीव सरधें त्यांने, भव २ मे दुखीयो जाणो रे ॥ १३ ॥
 उत्तम पुरषां नें अजीव सरघीयां, आसातणा लागे भारी रे ।
 उसभ करम लागे इण सरघा थी, तिण सूं भव २ में होसी खुवारी रे लो ॥ १४ ॥
 अरिहंत आचार्य उवभाय ने साधु, त्यारो भजन करो दिन रातो रे ।
 त्यांने अजीव कहें छे कुपातर, तिणरी मूरख मानसी वातो रे लो ॥ १५ ॥
 अरिहंत आचारज उवभाय ने साधु, यां सगलां ने ई जीव जाणो रे ।
 आगम संभालो नें जिणमत जोवों, इणमे संका मत आणो रे ॥ १६ ॥
 कालवादी री सरघा पुरभे परगट कीधी, भव जोवां रो करण उघारो रे ।
 समत अठारे बरस अडतीसे, वैसाख मुद पांचम बुधवारो रे लो ॥ १७ ॥



ढलल : ७

दुहल

अगिहंत आचार्य उवलय नें, कले मावु मीठं मुनीराय ।
 त्यानि कालकाशी कहे काल छे, कडा कुहेत लाय ॥ १ ॥
 अगिहंत नें अगिहंतनो, इत दोय र वेळ लाय ।
 मोला नें पाड्या भन में, त्यानें अजीव दीया सराय ॥ २ ॥
 अगिहंतनो छुटे गयो, सावुरगो निग छुट जाय ।
 जीव हुवो मित्र निग भन, जेवें ए कयं गया दिखलाय ॥ ३ ॥
 जीव नें जीव रा गुण मासदा, ने कदे नही दिखलाय ।
 ते दिखलाय पुनो हुवें, ने काल दरद छे ताय ॥ ४ ॥
 इत कहे र मोला लंक नें, मांड्या भन जाण मांय ।
 निग अगिहंत मावु ने मित्र हुवो, ने जावक खबर न वांय ॥ ५ ॥
 अगिहंत मावु रा मित्र हुवें, ते मृतर में जाव अके ।
 हिंवे थोडा सा पगट कहे, ते मुजजे आंग ववेक ॥ ६ ॥

ढलल

[चतुर विचार करे नें देखे]

नमोयुगं अगिहंत मिठां नें कीवो, ते अगिहंत श्री हुआ सिवो रे ।
 अंम र नमोयुगं मंभानो, ओ चोई पाठ प्रसिवो रे ।
 चतुर विचार करे नें देखो ॥ १ ॥
 जे अगिहंत जेवंचा विचरे, ते मुगत जावा रा कामी रे ।
 आगे अगिहंत हुवा अनंदा, त्यां मगलाइ मित्र गति पानी रे ॥ २ ॥
 पेंहणे नमोयुगं कीयो अगिहंत मिठां नें, बीजे नमोयुगं अगिहंता नें रे ।
 त्यां अगिहंतां नें अजीव पदये, सिगरी वात अग्यानी माने रे ॥ ३ ॥
 चोदीसां ने अमृता लोगम गुजो, ते अगिहंत सिव हुआ चोइसोई रे ।
 त्यां अगिहंतां नें अजीव मरवे, ते गया जमारो खोई रे ॥ ४ ॥
 अगिहंतां रा गुण करे अगिहंत वाजे, सावां रा गुणां सुं सावु जाजे रे ।
 त्यां मीठां पुरणां नें अजीव कहंतां, मूख मूळ न लाजे रे ॥ ५ ॥
 ज्यां पुरणां रा नाम लीयां श्री, कटे पाव अहंती रे ।
 त्यां पुरणां नें अजीव पदये, त्रिग बीवा तरद रा मुजो रे ॥ ६ ॥
 कालकाशी कहे साव जीव हुवे गो, सिवां में सावु वनावो रे ।
 भाव तो काल दरद पुनो हुवो, जव उननें साव वनावे छे न्यावो रे ॥ ७ ॥

रुइ रो सूत करे कपड़ो कीयो, पिण उतपत रुइ री जाणो रे ।
 ज्यू साध अरिहंत थई ने सिध हूआ, पिण यांरी उतपत साध पिछांणो रे ॥ ८ ॥
 तिण कपड़ा नें रुइ कहैं त्याने, मतहीण मानवं जाणों रे ।
 ज्यू सिद्धां ने साध परूपे, ते मूढ मिथ्याती अयांणो रे ॥ ९ ॥
 रुइ रा गुण तो कपड़ा मे संमाया, ज्यू साध रा गुण सिधां में समावें रे ।
 पिण वरतमान काले हुवें जिम कहणों, ते समझ विरलां ने आवें रे ॥ १० ॥
 रुइ रो गराम आयां कपड़ो जोवे, पिण रुइ कठा सुं पावे रे ।
 ज्यू कोइ साध सिधां माहे पूछे, सिद्धां में साध किहां थी वतावे रे ॥ ११ ॥
 खांड रो बूरो करें कीधी मिश्री, पिण स्वाद न पडीयो जूओ रे ।
 ज्यू वधता र जीव रा गुण वधीया, जब ओ साध तणो सिध हुओ रे ॥ १२ ॥
 मांखण ताएनें घृत कीधों, ते घृत हुओ छें चोखो रे ।
 ज्यू साधां रा सिध हूआ करणी करें, त्यां सकल करम कीयां सोखो रे ॥ १३ ॥
 आखा लोक में धर्मास्तीकाय रा, खंघ परदेस दोय भेद पावे रे ।
 आखा लोक में पूछे धर्मास्ती रो देस, तिणमे देस किहां थी वतावे रे ॥ १४ ॥
 खंघ हुवें तिहां देस न हूवे, देस हुवे तिहां खंघ न पावे रे ।
 आखो ते खय ने उणो ते देस, दोनूं भेला किहां थी वतावे रे ॥ १५ ॥
 ज्यू आतमिक सुख पूरा सिद्धां में, देस सुख साधां माहे पिछांणो रे ।
 सपूर्ण सुख ने सिध कहीजे, देस सुख ते साध नें जाणों रे ॥ १६ ॥
 संपूर्ण सुख तिहां नही अधूरा, अधूरा तिहां संपूर्ण नांही रे ।
 पूरा सुख सिधां में उणा सुख साधां में, दोनूं सुख नहीं एकण मांही रे ॥ १७ ॥
 जिण समे साध तिण समें देस सुख, सिध तिण समें देस सुख नांही रे ।
 जब साध मरे ने सिध हूवो जद, देस सुख आयो सर्व सुख मांही रे ॥ १८ ॥
 धर्मास्तीकाय रो खय हुवे तिहां, देस रो खय नहीं हूत्रों रे ।
 ज्यू साध रो सिध हूवों जब, साध न पडीयो जूओ रे ॥ १९ ॥
 मोष री साधन करतों साध कहिवांणो, साधन कर चूका ने सिध जाणों रे ।
 उणहीज साध रो सिध हुवों छे, तिण माहे संका मत आपो रे ॥ २० ॥
 तिण सानु ने अजीब कहे छे अग्यांनी, ते वूड गयो काली धारो रे ।
 इण सरधा ने कोइ साची जांगे, ते पिण जासी जन्म विगाडो रे ॥ २१ ॥
 साध रो सिध भगवंत हूवो छें, तिणरी खबर न कायो रे ।
 तिण साध ने अजीब कहें कालवादी, तिण गालां रो गोलो चलायो रे ॥ २२ ॥
 कोरा धान ने कोरो धान कह्यो छे, सीभ्रता ने कहे सीभ्रे धानो रे ।
 सीभ्र गया ने कह्यो सीझ्यौ धान, ए तीनूं धान जाणो वृधवांनो रे ॥ २३ ॥

कोय बोन छुं अरिणी समदिती, सीमें छुं नाहु अरक निछुंनो रेः
 नीइया बोन छुं सिद्ध सावणं छुं, ए सीमें उत्तम जेव जांनो रे ॥२७॥
 कोय बोन गी तव कीयां मीइयो, व्हुं समदिती रो अरक हूणो जांनो रेः
 रछुं अरक मे साव अरिहंत हूणो, अरिहंत मे हूणो सिद्ध निरवाणो रे ॥२८॥
 केने बोन उत्तम जरे मीइयो, तिनो कोरो किहो रो सवे रेः
 व्हुंउत्तम जरे साव मे सिद्ध हूओ, एका मे साव कदा रो वरुवे रे ॥२९॥
 अरकको व्हुं सम्राड कीयो हूओ, एके सम्राजो कीयो हूओ रेः
 कीयो वपु मे जेव मही छुं, उन वही २ सोरो मे किरो रे ॥३०॥
 कीउ कीयो वपु मे जेव न पने, कीउ सिद्धो मे सिद्ध व्हुं मने मे
 सिद्ध दिन कारो मे कीया हूओ छुं, अ दिन वरु मही छुं छुंने मे ॥३१॥
 महेजिउ मे मया मुंडा साव हूओ, वे रो कीयो हूओ हूओ रेः
 तिन मुं मावे जेव मे कछो कसपरो, तिन मुंवर साहो मे जेव मे ॥३२॥
 मावे न पने असापरो जेव मे, एका मुंवर रा वरु उत्तम मे
 असापरो जेव न साव न सखे, हूओ छुं मुंवर जने मे ॥३३॥
 वरु जेव अरुह परदेसी, वे रो कीयो हूओ साहो मे
 कीवरा मड जे महे कीयो हूओ, रोको सिद्धो मे साहो मे ॥३४॥
 उत्तम २ मुंवर साहो जेको, साव मेहता निरवाणो मे
 एका साव मे उत्तम जेव मरयो, छुंउ वे हूओ जांनो मे ॥३५॥
 मयउ अरुने वरु अरुनि, वैसाय मुंवर अरुन ररिणी रोः
 जाइ कीयो एर महर रे साहो, नव कीयो रो करण उरुवे रे ॥३६॥

सीमें छुं नाहु अरक निछुंनो रेः
 ए सीमें उत्तम जेव जांनो रे ॥२७॥
 व्हुं समदिती रो अरक हूणो जांनो रेः
 अरिहंत मे हूणो सिद्ध निरवाणो रे ॥२८॥
 तिनो कोरो किहो रो सवे रेः
 एका मे साव कदा रो वरुवे रे ॥२९॥
 एके सम्राजो कीयो हूओ रेः
 उन वही २ सोरो मे किरो रे ॥३०॥
 कीउ सिद्धो मे सिद्ध व्हुं मने मे
 अ दिन वरु मही छुं छुंने मे ॥३१॥
 वे रो कीयो हूओ हूओ रेः
 तिन मुंवर साहो मे जेव मे ॥३२॥
 एका मुंवर रा वरु उत्तम मे
 हूओ छुं मुंवर जने मे ॥३३॥
 वे रो कीयो हूओ साहो मे
 रोको सिद्धो मे साहो मे ॥३४॥
 साव मेहता निरवाणो मे
 छुंउ वे हूओ जांनो मे ॥३५॥
 वैसाय मुंवर अरुन ररिणी रोः
 नव कीयो रो करण उरुवे रे ॥३६॥



रत्न : ४

इन्द्रियवादी री चौपई

ढाल : १

दुहा

केइ कहें इग्यारमें ने बारमें, दोग गुण ठांगा नव नव जोग ।
 च्यार च्यार जोग मन वचन रा, नवमों उदारीक रों छे प्रयोग ॥ १ ॥
 इम कहें ते वीतराग नें, भूठाबोला कहें छे तांम ।
 ते ववेक विकल सुख बुव दिना, भूठ बोले वेफांम ॥ २ ॥
 त्यांरो भूठों मन वरते नही, मिश्र मन वरते नांहि ।
 वले भूठ न बोले सवंधा, मिश्र भाषा नही त्यारे मांहि ॥ ३ ॥
 इग्यारमां गुण ठांगा सूं आदिदे, चवदमां गुण ठांगा लग जांण ।
 जथाख्यात चारित छे निरमलो, जथातथ गुण रत्नारी खांण ॥ ४ ॥
 ए च्यारां गुण ठांगां वीतराग छे, त्यांने पाप न लागे अंस मात ।
 कषायादिक जोग माठा नही, त्यांरी मूल न विगटे वात ॥ ५ ॥
 इग्यारमें वारमे ने तेरमें, तीन गुण ठांण पुन बंवाय ।
 ते पिण निरवद जोग सूं, इरिया वही कर्म लागे आय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिख आग्या मे]

जथतथ चाले वीतराग हुआ ते, त्यांने भूठ लागतो मूल म जांणो ।
 भूठ सूं पाप निकेवल लागें छे, ते अभितर जोय करों पिछांणों ।
 वीतराग भाव अंतकरण ओलखजौ* ॥ १ ॥
 भूठो मन मिश्र मन त्यांरो न वतें, भूठी ने मिश्र भाषा मूल न बोले ।
 निरदोष अखंड चरित छे त्यांरो, करलें काम पख्यां पिण मूल न डोलें ॥ २ ॥
 भेषधारी कहे त्यांने भूठ लागे छे, ते ऊठी जठा थी निकेवल भूठी ।
 वले तांणा तांण करे छे अग्यांनी, त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ ३ ॥
 भूठा जोग सूं पाप निकेवल लागें छे, ते पाप न लागें च्याहूं गुण ठांणें ।
 भूठा जोग वरत्यां सूं पुन पिण न लागें, ते न्याय निरणा विण अग्यांनी तांणें ॥ ४ ॥
 कदा कहिवा ने कहे पाप न लागें, जथाख्यात च्याहूं गुण ठांणें ।
 वले भूठाबोला त्यांने कहिता न संके, पोतारा बोल्या नें पोते नही पिछांणें ॥ ५ ॥
 भूठ लागो कहे जथाख्यात चरित नें, त्यांने जाब पूछ्यां बोले ढाल पंपालो ।
 ते भारीकर्मा जीव मूढ मिथ्याती, तीन काल रा अरिहत नें दीयो आलो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अठारे' पाप ठांगा मोह कर्म री प्रकृत,
 ज्यारे मोह कर्म उदे जावक नांही,
 पापरा किरतब छे ससार में सगला,
 ते जयाख्यात चारितीयों नही सेवे',
 त्याने' निरवद जोग सू पुन लागे छें,
 जब उ पण कहे त्याने पाप न लागे,
 कदा विण उपीयोगे कह्यो हुवे' तिणने'
 जो उ समभायो' समभे' नही मूरख,
 वीतराग ने' भूठ लागे कहे तिणरे',
 कदा तांण करता टाको जलेतो,

त्यांरा उदा सू सेवे छे किरतब अठारो ।
 ते सावद्य किरतब न करे लिंगारो ॥ ७ ॥
 हिसा भूठ आदि दे सेवे' अठारों ।
 त्यारे' निरवद जोग तणो व्यापारो ॥ ८ ॥
 भूठ ने' मिश्र जोग हूआ लागे पापो ।
 पिण भूठ बोळण री करे' मूढ थापो ॥ ९ ॥
 समभक्तो देखें तो समभक्तय दीजें ।
 तिणने' न्याय करे ने' भूठो घालीजें ॥ १० ॥
 घट मांहे' घणो छे घोर अंधारो ।
 उतकष्टो भमे तो अनत संसारो ॥ ११ ॥



ढाल : २

दुहा

आठ कर्म जिणेसरभाषीया, तिणमें घणघातीया कर्म च्यार ।
 ए च्याहं पाप कर्म उदे हूआं, जीवरे हूवें बोहत विगाड़ ॥ १ ॥
 ए च्याहं कर्म षयोपसम हूआं, जब जीव उजल हुवें ताय ।
 जिम जिम च्याहं कर्म पातला पडे, तिम तिम गुण परगट थाय ॥ २ ॥
 ए च्याहं कर्म षयोपसम हूआं, जीव पावें बोल वत्तीस ।
 ते वतीसोई षायक भाव मांहिला, चोखा उजला विसवावीस ॥ ३ ॥
 उजला हूवा करमां सूं निवरते, ते उजला लेखे निरवद एह ।
 वले बीजों निरवद किरतव कह्यों, तिणसू कर्म रुके तूटे तेह ॥ ४ ॥
 कर्म रोके आतमा वस करे, ते संवर निरवद जाण ।
 वले कर्म काटण करणी करे, ए बीजो निरवद वखांण ॥ ५ ॥
 षयोपसम भाव छै निरमलो, तिणते कहे अग्यांनी आम ।
 त्यांरा केयक बोल निरवद कहे, केइ सावच्च निरवद कहे तांम ॥ ६ ॥
 षयोपसम भाव नें सावच्च कहे, तिणरी प्रतख भूठी वात ।
 तिण सावच्च निरवद नही ओल्लख्यो, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ७ ॥

ढाल

[पुन नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

हिंवें षयोपसम भाव ओल्लखो रे लाल, आंख हीयारी उचाड हो । भविक जण*
 निरणों करो घट भितरे रे लाल, ते सावच्च नही छै लिंगार हो ॥ भव० ॥
 षयउपसम भाव निरवद जाणजों रे लाल* ॥ १ ॥
 जो षयउपसम भाव सावच्च हुवें रे लाल, तो षायक भाव सावच्च वशेप हो ।
 षयउपसम षायकभाव मांहिलो रे लाल, यां दोयारों छे निजगुण एक हो ॥ प० २ ॥
 ग्यांनावणीं दर्सनावणीं मोहणी रे लाल, चोथों घणघातीयो अंतराय हो ।
 ए च्याहं कर्म घनघातीया रे लाल, ते धर्म आवा न दे ताय हो ॥ ३ ॥
 आभ पडल ज्यूं घणघातीया रे लाल, देस थकी पय थाय हो ।
 जब जीव उजल हुवे देस थी रे लाल, ते सावच्च कठा थी आयो ताय हो ॥ ४ ॥
 च्याहं कर्म देस थी अलगा हूआं रे लाल, मांसू सावच्च निकलीयो कहे मूढ हो ।
 तिण सावच्चवणीं कर्म थापियों रे लाल, तिणरे गाडी मिथ्यात री रुड हो ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सावद्यवर्गी कर्म चाल्यो नहीं रे लाल,
 त्रिग मूँ पयउरमन नाव नें रे लाल,
 मोहनी कर्म जीव रे उदे हूआं रे लाल,
 वासी जीव कर्म उदे हूआं रे लाल,
 उदे हूआंई सावद्य न नीपजे रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य नीपनो कहे रे लाल,
 जीव उरला हूआं नें सावद्य कहे रे लाल,
 सावद्य बटीये कहे उपम उदे हूआं रे लाल,
 उगरी मरवा रे लखे सावद्य मूँ मिटे रे लाल,
 सावद्य सेवे च्याहं कर्म बाव नें रे लाल,
 धनवातीया देन थी बलगा हूआं रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य बचीयो कहे रे लाल,
 ए च्याहइ कर्म पातला पख्या रे लाल,
 कर्म सातला पख्या सावद्य नीपजे रे लाल,
 कर्म अलगा हूआं निरबद नीपजे रे लाल,
 त्रिग निरबद नें सावद्य कहे रे लाल,
 आठ करनो नाहे छै अति बुरा रे लाल,
 ते पतला पख्या अदिरे ओंगुग कहे रे लाल,
 जिनमें अदिनादिक ओंगुग घगा रे लाल,
 सिष्ट पुन सीदग नें सावद्य कहे रे लाल,

सावद्य आडा च्याहं कर्म नाहि हो ।
 सावद्य सरवे मत पडजो फंद माहि हो ॥ ६ ॥
 जब तो सावद्य किरतव होय जात हो ।
 सावद्य नहीं नीपजे तिल मात हो ॥ ७ ॥
 तो कटीयां नहीं सावद्य अंतमात हो ।
 आ विकलां री इचर्यावाली बात हो ॥ ८ ॥
 तो नेला हूआं सावद्य मिट जाय हो ।
 उगरी मरवा मिली इण न्याय हो ॥ ९ ॥
 च्याहं कर्म उदे आयां पूर हो ।
 उदे बांधे सावद्य करगो दूर हो ॥ १० ॥
 सावद्य भूडो नीपनो कहे ताम हो ।
 ते तो बूडे अग्यानी बेफाम हो ॥ ११ ॥
 कहे सावद्य नीपनो मत जांग हो ।
 आतो पापडीयांरी छे बांग हो ॥ १२ ॥
 आतो जिनजी रा मुख री बात हो ।
 त्रिग रे उदे बायो छे मियात हो ॥ १३ ॥
 धनवातीया च्याहइ कर्म हो ।
 ते नूला कयांती सम हो ॥ १४ ॥
 त्रिगरी सरवा रहे नहीं मुष हो ।
 त्रिगरी मिष्ट हुई छै वृष हो ॥ १५ ॥

ढाल : ३

ढुहा

कायक षणघातीया कर्म षय हुआ, वले उदे हुआ ते षय जाय ।
बाकी दवीया छे ते उपसम्यां, षयउपसम कर्म हुआं इण न्याय ॥ १ ॥
च्याहं कर्म षयउपसम हुआं, थोरो सो जीव उजल थाय ।
ते उजलो खयउपसम भाव छे, ते चेतन गुण परजाय ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी षयउपसम हुआं, आठ गुण परगट थाय ।
च्यार ग्यान ने तीन अगिनान कह्या, सूत्रादिक नो भणवो ताय ॥ ३ ॥
ए आठ गुण छेकेवल ग्यान मांहिला, त्यामे सावद्य नही छे एक ।
जो यां मांहिलो कोई सावद्य हुवे, तो केवल ग्यान सावद्य वरोष ॥ ४ ॥
ग्यानावर्णी षयउपसम हुआं, ग्यान आयो कहे ते तो न्याय ।
पिण अग्यान कठा थी आवीया, कोई एहवी पूछां करे आय ॥ ५ ॥
परमार्थ ग्यान अग्यान रो, एक कह्यो जिणराय ।
ते पिण आवे छे ग्यानावर्णी घट्यां, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[जीव मोह अनुकम्पा न आशीये]

गिनान ने अगिनान दोया तर्णो, षयउपसम भणवो तो एक जांणरे ।
ते तो समदिष्टी रो ग्यान जिण कह्यो, मिथ्याती रो कह्यो अनाण रे ।
निरवद षयउपसम भाव छै* ॥ १ ॥
समदिष्टी भणे आगम गिनान ने, तेहिज भणे मिथ्याती गिनान रे ।
उणरो ग्यान छे उणरो अग्यान छे, तिणरो निरणो कीजो वुचवान रे ॥ नि० २ ॥
भारतादिक साख पर समे, स्थाने भणे मिथ्याती जाणे रे ।
तेहिज भणे समदिष्टी जाण ने, उणरे अनाण उणरे नाण रे ॥ ३ ॥
केइ निखद कहे गिनान ने, पछे सरथा वतावे विरुध रे ।
सावद्य निरवद कहै छै अग्यान नें, आतो प्रतष वात विरुध रे ॥ ४ ॥
अगिनान ने सावद्य कहे, तिणरा घडा ल्गावै आंम रे ।
खोट्टा साख भणे जांण जांण ने, उवाडे मुख घोखे ताम रे ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाया के अन्त मे है ।

अग्यान सावद्य हुवे इण विद्य भण्णां, तो ग्यांन पिण सावद्य होय रे ।
 एहीज भणें समदिष्टी इण विधें, ए दोनूं वरोवर सोय रे ॥ ६ ॥
 समदिष्टी खेती करें जाण नें, ग्यांन सूं जाणें होसी धान रे ।
 नही जाणें तो खेत वावें नही, तो ही सावद्य नही छे ग्यांन रे ॥ ७ ॥
 समदिष्टी जाणें ग्यांन सूं, पुत्र होसी परणीज्यां नार रे ।
 पछे जाण परणीजे नार नें, पिण ग्यांन नही सावद्य लिंगार रे ॥ ८ ॥
 समदिष्टी रे कोई वेरी हुवै, तिणनें मारण रो लग रह्यो ध्यान रे ।
 ते पिण मारे छे ग्यांन सूं जाण ने, ते पिण सावद्य नही छे ग्यांन रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सावद्य करें, समदिष्टी ग्यांन सूं जाण रे ।
 तो पिण ग्यांन सावद्य मत जाणजों, सावद्य किरतव लेजों पिछांण रे ॥ १० ॥
 एहीज किरतव मिथ्याती करे, अग्यांन सूं जाण पिछांण रे ।
 जो ग्यांन निरवद छे निरमलो, तो अग्यांन पिण निरवद जाण रे ॥ ११ ॥
 ग्यान अग्यान दोनूं छे उजला, त्यांरी धारणा निरवद जाण रे ।
 धारणा दोनूं री छे सारिणी, तिण में संका मूल म आण रे ॥ १२ ॥
 ग्यांन ने अगिनान तेह ने, जाणपणा तणों गुण जाण रे ।
 ओंर गुण ओगुण नही एह में, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे ॥ १३ ॥
 जे जे कर राखी छे धारणा, ते तो धारणा निरवद जाण रे ।
 ते धारणा उंबी सरधीयां, मिथ्यात उदें भाव पिछांण रे ॥ १४ ॥
 गाळ भणवारो उदम करे, तेतो जोग तणो व्यापार रे ।
 सावद्य जोग उदें भाव मोह सू, निरवद जोगारी करणी सार रे ॥ १५ ॥
 ग्यांन अग्यांन छत्ता रूप जीव रे, तिणसू जाण रह्यो छे ताय रे ।
 जे जे कोई सावद्य नीपजे, मोह उदा तणी परजाय रे ॥ १६ ॥
 बोलवा चालवादिक अति धणी, जीवरी परजाय अनेक रे ।
 जाण पणा विण ग्यान अग्यांन री, परजाय नहीं छे एक रे ॥ १७ ॥
 कोई अग्यांन ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतष भूठी वात रे ।
 तिणरे उसभ उदे रा जोर सू, चोरें पडवजीयों मिथ्यात रे ॥ १८ ॥



ढाल : ४

दुहा

दरसणावर्णी घणघातीयो, षयउपसम ह्योय पड्यो खीन ।
जब आठ गुण परगट हुवें, पांच इंद्री नें दर्शन तीन ॥ १ ॥
ए आठू गुण निरदोष छे, उजला लेखे निरवद जाण ।
ते केवल दर्शण माहिला, गुण रंतनां री खाण ॥ २ ॥
केई अग्यांनी इम कहे, आठोई गुण निरवद नाहि ।
यांनैं सावद्य निरवद दोनूं कहे, भोला ने न्हांखे फंद माहिं ॥ ३ ॥
यां आठां गुणां में सावद्य हुवें, तो केवल दर्शण सावद्य विशेष ।
ए तो केवल दर्शण माहिला, यां सगलां रो गुण एक ॥ ४ ॥
पांच इंद्री ने तीन दर्शण मभे, सावद्य नही छे एक ।
ते जथातथ परगट कळ, ते सुणजों आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[जोयजो रे समकित : आउषो टूटी ने साधो को नही रे]

चषू दर्शण मे चषू इंद्री अछें रे, अचषू दर्शण में आइ इंद्री च्यार रे ।
यां विना देखें कोई मरजाद सूं रे, ते अविद्य दर्शण छे यां सूं न्यार रे ।
षयउपसम भाव छे निरवद जिण कह्यो रे* ॥ १ ॥
सुरतइंद्री सुने छे तीन शब्द ने रे, पांच वर्ण चषू इंद्री देखें ताहि रे ।
यांरो तो ओहिज गुण सभाव छे रे, गुण अवगुण और नही त्यां माहि रे ॥ २ ॥
षणइंद्री वेदे द्योय गंध ने रे, रस इंद्री रस वेदे पांच सवाद रे ।
फरस इंद्री वेदें आठ फरस ने रे, यासू नही विषे तणो विवाद रे ॥ ३ ॥
ए त्रेवीस प्रकारे पुद्गल जूजूआरे, वेदे देखे ते दर्शण जाण रे ।
यां में राग ने घेष सेव्यां विषे हुवे रे, तिणसूं तो पाप लगे छै आण रे ॥ ४ ॥
सुरतइंद्री में पुद्गल आए पडे रे, ते सुरतइंद्री रे नावे भोग रे ।
चषू इंद्री देखें छे पुद्गल दूर थी रे, ते पिण नावे छे तिण रे भोग प्रजोग रे ॥ ५ ॥
बाकी तीन इंद्री में पुद्गल आए परे रे, ते पुद्गल आवें छे त्यारे भोग रे ।
गंध रस ने फरस भोगवे रे, त्यां पुद्गल नो आय मिले संजोग रे ॥ ६ ॥
सुरतइंद्री ने चषूइंद्रीयां रे, यांरे तो पुद्गल आवे काम रे ।
भोग नही छे यांरे सर्वथा रे, तिणसू यारो कामी इंद्री नाम रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

घणइद्री रसइद्री नें फरस इंद्रीया रे,
 तिण सूं तीनूं इद्री भोगी कही रे,
 कांमी नें भोगी तो इंदरखां कही रे,
 त्यासूं तो पाप न लागें सर्वथा रे,
 कांमभोग सूं सुमता नही हुवै रे,
 कह्यो छे उतरावेन बतीस भे रे,
 सज्म निरवाहण राखण शरीर ने रे,
 ते निरवद जोग तणो व्यापार छे रे,
 त्यारे निरवद जोगा सूं निरजरा हुवै रे,
 त्यां साधा रे सावद्यनही राख्यो सर्वथा रे,
 ग्रहस्थ उदीरे पुदगल भोगवे रे,
 तिण शरीर प्रग्रहा नों कीयो जाबतो रे,
 वले छे काय रो सख्ख ने तीखा कीयो रे,
 तिण सूं पुदगल ने भोगववा तणी रे,
 सेह हजे इंदरखां में पुदगल आए पड़े रे,
 जब पाप रो अस न लागे तेहने रे,
 पुदगल नें भोगवे देखे उदीर ने रे,
 तिणरो सावद्य निरवद किरतब ओलखों रे,
 जिण आग्या सहीत पुदगल ने भोगवे रे,
 कर्म कटे छे तिण सूं आगला रे,
 जिण आगना विण कोइ पुदगल भोगवे रे,
 तिण सू पाप कर्म लागे छे तेहने रे,
 आंख्या सूं देखे कागादिक जीवने रे,
 तिणसूं चषू इद्री ने सावद्य कहे रे,
 चषू इद्री सू रूप देखें नारी तणो रे,
 तिण सू चषू इंद्री ने सावद्य कहें रे,
 इत्यादिक रूप अनेक देखने रे,
 तिणसूं चषू इद्री ने सावद्य कहे रे,
 च्यारां इंदरखां भे पुदगल आए पड़े रे,
 जब केयक जीवां रे अवगुण नीपजे रे,
 चषू इद्री पुदगल देखे दूर थी रे,
 जब केयक जीवां रे आंगुण नीपजें रे,

यारें तो पुदगल आवें भोग रे ।
 त्यानें पुदगल रों आय मिल्यां संजोग रे ॥ ८ ॥
 कामभोग नें पुदगल जाण रे ।
 पाप लागे छे राग धेष सूं आण रे ॥ ९ ॥
 असुमता पिण तिण सूं नही लिंगार रे ।
 सो नें पहली गाथा मभार रे ॥ १० ॥
 पुदगल रो करे छे साधु आहार रे ।
 इदरयां रों नहीं छे विषे विकार रे ॥ ११ ॥
 जब पुन्य पिण सेहजें नीपजे छें ताय रे ।
 त्याने आजा दीधी छें श्री जिण राय रे ॥ १२ ॥
 ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे ।
 वले इंदरखां री सेवा विषे विकार रे ॥ १३ ॥
 इत्यादिक अवगुण छे तिण मांहि रे ।
 सुघ साधां विण श्री जिण आग्या नांहि रे ॥ १४ ॥
 त्याने कोई वेदे देखे छे ताय रे ।
 राग धेष सूं पाप लागें छें आय रे ॥ १५ ॥
 ते तो छे जोग तणों व्यापार रे ।
 जिण आग्या अणआग्या रो कुरो विचार रे ॥ १६ ॥
 ते निरवद जोग तणो व्यापार रे ।
 वले नवो न लागे पाप लिंगार रे ॥ १७ ॥
 ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे ।
 ते जीव नें दुखना आपणहार रे ॥ १८ ॥
 जब करे सिकारी तिणरी घात रे ।
 ते प्रतष भूठी तिणरी वात रे ॥ १९ ॥
 जब करे अकारज तिण सूं तेह रे ।
 तिण पिण भूठ बेल्यां छे एह रे ॥ २० ॥
 केइ जीवा रे उठे विषे विकार रे ।
 ते निरणों न जाणें मूढ गिंवार रे ॥ २१ ॥
 ते इंदरखां वेद लेवे छें ताहि रे ।
 ते अवगुण बतावे इंदरखां मांहि रे ॥ २२ ॥
 ते देखणरो गुण छे तिण में तांम रे ।
 खोटा वरत्या तिणरा परिणाम रे ॥ २३ ॥

सावध कहे पांचू इदख्यां भणी रे, तिणरें उदे छे मोह मिथ्यात रे।
 ते इंदरयां ने निरवद जिणकही रे, तिण में सका नही तिलमात रे ॥ २४ ॥
 जो देख्यां वेद्यां इंदख्यां सावध हुवे रे, तो जांप्यां सूं ग्यांन सावध होय जाय रे।
 ग्यांन दर्शण रा गुण दोईज छे रे, सावध निरवद छै ओर परजाय रे ॥ २५ ॥
 दर्शण रो सभाव छे देखण तणों रे, और गुण ओगुण नही तिणरो एक रे।
 और गुण ओगुण नीपजें जीव रें रे, ते परजा छे जीव तणी अनेक रे ॥ २६ ॥



ढाल : ५

ढुह्रां

च्यार कर्म घणघातीया, तिण में मोटों मोहणी कर्म ।
तिणरा उदा सूं जीव पामे नही, समकत चारित धर्म ॥ १ ॥
तिणमे दर्शन मोहणी उदे हुवां, पड़े उंधी सरघा मांही आंग ।
साची सरघा मूल सूभे नही, बूडे कूडी कर कर तांग ॥ २ ॥
चारित्र मोहणी रा जोग सू, करे सावद्य किरतब अनेक ।
खोटा २ काम सर्व आवीया, बाकी सावद्य रह्यो नही एक ॥ ३ ॥
ते मोहणी षयउपसम हूआ, जब आठ गुण परगटे आय ।
च्यार चारित्र देसविरत पांचमो, तीन दिष्ट पयउपसम थाय ॥ ४ ॥
ए आठोई बोल छें उजला, त्याने निरवद कह्या जिणराय ।
ते आठोई षायक भाव माहिला, त्यांसू कर्म न लागें आय ॥ ५ ॥
षयउपसम भाव मिथ्यादिष्टे, सावद्य कहे अग्यानी तांम ।
तिणरी जथातथ ओल्लखणा कहूं, ते सुणज्यो राखे चित्त ठाम ॥ ६ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव पावणो]

उधो सरघे ते मिथ्यादिष्ट छे, ते दसविध कह्यो मिथ्यात हो । भविकजन ।
ते आश्रव उपाय छे पाप रो, ते उदे भाव कह्यो जगनाथ हो ॥ ७० ॥
षयउपसम भाव छे निरमलो* ॥ १ ॥
दसोई उंधा बोल मांहिलो, कोइ सूघो सरघे बोल एक हो ।
ते निरदोष षयउपसम भाव छे, पाछे सावद्य रह्या बोल शेष हो ॥ ७० २ ॥
जिम २ घट छे उंधो सरघवो, तिम २ घटे छे मिथ्यात हो ।
उधो घटयां वधे सूघो सरघवो, ते षयउपसम भाव साख्यात हो ॥ ३ ॥
ते षयउपसम भाव निरवद कह्यो, श्री जिणमुख सूं आप हो ।
ते उजला लेखे निरवद कह्यो, बले लुकीया छें तिणसूं पाप हो ॥ ४ ॥
इम घटता २ सगला घटया, उंधा दसोई बोल जांग हो ।
जब हूवो मिथ्याती रो समकती, एहवो पयउपसम भाव पिच्छांग हो ॥ ५ ॥
कोइ, षयउपसम निरवद भाव ने, सावद्य कहे छें कर २ तांग हो ।
ते यूही बूडे छे बापडा, ते जिण मारग रा अजांग हो ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है

मिथ्यात मोहणी कर्म उदे हुआं, जब उदें भाव सावद्य मिथ्यात हो ।
 ते घटीयां सावद्य वधीयो कहे, ते विकलां वाली छें वात हो ॥ ७ ॥
 उदें भाव कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मिथ्यात मोहणी सु जाण हो ।
 वले षयउपसम कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मोह कर्म पख्यां हांण हो ॥ ८ ॥
 मोह कर्म उदे सावद्य नीपजें, षयउपसम हूआं सावद्य नांहि हो ।
 षयउपसम हूआं निरवद्य नीपजें, बुधवंत समझो मन मांहि हो ॥ ९ ॥
 मिथ्यादिष्ट षयउपसम भाव छे, समाभिथ्या दिष्ट तिमहीज जाण हो ।
 षयउपसम भाव निरवद्य कहां, तिण माहे संका मत आंण हो ॥ १० ॥
 जो षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो षायक भाव सावद्य वशेख हो ।
 षयउपसम षायक भाव मांहिलो, यां दोयां रो छे निजगुण एक हो ॥ ११ ॥
 षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो उदे भाव सूं मिट जाय हो ।
 उणरी सरधा रो ओहीज न्याय छे, उदे भाव रो करणों उपाय हो ॥ १२ ॥
 तो मिथ्यात मोहणी कर्म बांधणों, तिण सूं षयउपसम मिट जात हो ।
 साची सरधा नें उंधी सरध ने, पाछो पडिबजणों मिथ्यात हो ॥ १३ ॥



ढलल : ६

दुहल

चोथो कर्म घणघलतीयो, भलरी कर्म अंतरलय ।
 - जलण २ वसतुरी छे चलवनल, तलण आढे होय रह्यो तलय ॥ १ ॥
 अंतरलय कर्म तणल, पलंच भेद कह्यल जलणलय ।
 प्रथम दलंनल अंतरलय छे, बीजो भेद ललभल अंतरलय ॥ २ ॥
 भोग उवभोग आढी होय रही, ते भोग उवभोग अंतरलय ।
 वीर्य अंतरलय कर्म थकी, सकत दबे रही तलय ॥ ३ ॥
 षयउपसम हुवे अंतरलय जब, आठ गुण परगटो आय ।
 पलंच लब्द नें तीन वीर्य हुवे, ते निर्मलल गुण परजलय ॥ ॡ ॥
 ए आठोई गुण निरवद उजलल, त्यलं नें सलवद्य कहे केइ मूढ ।
 तलण-ऊंघ मती री सरघल सुंणो, छोड हीयल री हूढ ॥ ५ ॥

ढलल

[वलनलरल भलव सुख सुख गूजे : डलभ मुंदलक नी डेरी]

धूर सूं तो दलंनल अंतरलय, तलणरो षयउपसम थलय ।
 दलंन आढी नही छे तलय, दलंन लब्द परगट हुवे आय ॥ १ ॥
 तलण लब्द नें निरवद जलंणो, तलण मलंहे संकल मत आंणो ।
 तलणनें सलवद्य कहे तलंण तलंण, ते तो जलण मलग अजलंण ॥ २ ॥
 इण लब्द में ओगुण नलंही, लब्द तो जलण आगनल मलंही ।
 गुण अवगुण दलंन में जलंणो, सलवद्य निरवद भेद पलछलंणो ॥ ३ ॥
 इवलरत में दलन देवे जलंणो, ते तो सलवद्य जोग पलछलंणो ।
 वलरत में दलंन देवे छे कोय, तलणरल निरवद जोग छे सोय ॥ ॡ ॥
 दलन ने सलवद्य निरवद जलंणो, त्यलंनें हूडी रीत पलछलंणो ।
 सलवद्य दलंन तो प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ५ ॥
 दलन लब्द ने दलंन छे न्यलरो, तलणरो बुधवंत जलणे वलचलरो ।
 दलन लब्द जतनज कीजे, सलवद्य दलन जलवक त्यलग दीजे ॥ ६ ॥
 दलंन लब्द छे निरवद भलवो, तलण मलंहे संकल मत ल्यलवो ।
 दलन लब्द सलवद्य कहै कोय, उपरे लेखे निरवद कलम होय ॥ ७ ॥
 कर्म बलंवे दलंनल अंतरलय, सतलव सूं उदे अणलय ।
 षयउपसम नें देणो घटलय, उणरे लेखे निरवद इम थलय ॥ ८ ॥

दांन अंतराय कर्म घटीयो, जीव उजल हूवों कर्म मिटीयो ।
 तिण उजल ने सावद्य कहे ते भूटो, मोह कर्म उदे हीयो फूटो ॥ ६ ॥
 सावद्य वधीयो कहे घटियां कर्म, ते भूला अग्यांनी भर्म ।
 ते सावद्यावर्णी कर्म थाप, यू ही दाचे अग्यांनी पाप ॥ १० ॥
 दूजी लाभ अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 लाभ आडी नहीं छे ताय, लाभ लब्द परगट हुवे आय ॥ ११ ॥
 तिण लब्द ने निरवद जाणों, तिण माहें सका मत आणों ।
 तिणनें सावद्य कहे तांण २, ते तो जिणमारग रा अजांण ॥ १२ ॥
 इण लब्द में आंगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण आगुण लाभ लेण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ १३ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, इविरत में लेण रो उपाय ।
 तिणने मेल्यां मिले छे आय, तिणरा सावद्य जोग छे ताय ॥ १४ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, जिण आग्या सूं मेलण रो उपाय ।
 तिण ने मेल्या मिले छे आय, तिणरा निरवद जोग छे ताय ॥ १५ ॥
 सावद्य जोग सू पाप बंधाय, निरवद जोग सू निरजरा थाय ।
 नहीं तूटे बधे लब्द सू कर्म, लब्द छे निरजरा धर्म ॥ १६ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जांण, दान लब्द ज्यूं लेजो पिछांण ।
 लाभ लब्द मे ओगुण नाही, गुण अवगुण पुदगल मेल्यां मांही ॥ १७ ॥
 तीजी भोगा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 भोग आडी नहीं छे ताय, भोग लब्द परगट हुवे आय ॥ १८ ॥
 तिण लब्द ने निरवद जाणों, तिण माहें संका मत आंणो ।
 तिणने सावद्य कहे तांण २, ते तो जिण मारग रा अजांण ॥ १९ ॥
 इण लब्द में आगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण ओगुण भोगवण मे जांणो, सावद्य निरवद भेद पिछांणो ॥ २० ॥
 पुदगल भोगवण री छे चाहि, इविरत में भोगवे छे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, तेतो सावद्य जोग व्यापार ॥ २१ ॥
 पुदगल भोगवणरी छे चाहि, जिण आग्या सूं भोगवे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, ते तो निरवद जोग व्यापार ॥ २२ ॥
 सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय ।
 नहीं तूटें बधे लब्द सू कर्म, लब्ध छे निरजरा धर्म ॥ २३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जांणो, दांन लब्द ज्यूं लेज्यो पिछांणों ।
 भोग लब्द में ओगुण नाहीं, गुण ओगुण भोगवण रे मांही ॥ २४ ॥

असणादिक च्याहं आहार, ते भोग आवे एक वार ।
 ते उवभोग कह्यो जिनराय, तिण आडी नहीं छे ताय ॥ २५ ॥
 वल्ल गंहणादिक अनेक प्रकार, ते तो भोग आवे वारुंवार ।
 ते परिभोग कह्यो जिनराय, तिण आडी नहीं छे ताय ॥ २६ ॥
 उवभोग लब्द ज्युं जाणों, परिभोग लब्द पिच्छाणों ।
 सगलोई कह्यो विसतार, लब्द सावद्य नहीं छे लिगार ॥ २७ ॥
 पांचमी वीर्य अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 वीर्य आडी नहीं छे ताय, वीर्य लब्द परगट हुवे आय ॥ २८ ॥
 तिण लब्द नें निरवद जाणो, तिण माहें संका मत आणो ।
 तिण नें सावद्य कहे तांण तांण, ते तो जिण मारग रा अजांण ॥ २९ ॥
 इण लब्द मे ओगुण नांही, लब्द तो जिण आगता मांही ।
 गुण ओगुण किरतब मे जाणों, सावद्य निरवद भेद पिच्छाणो ॥ ३० ॥
 संसार रो किरतब करे जाणों, ते तो सावद्य जोग पिच्छाणो ।
 निरवद किरतब करे कोय, तिणरा निरवद जोग छें सोय ॥ ३१ ॥
 किरतब नें सावद्य निरवद जाणो, त्यां नें रुद्धी रीत पिच्छाणो ।
 सावद्य किरतब प्रतष खोटो, लब्द गुण छे निरंतर मोटो ॥ ३२ ॥
 वीर्य लब्द ने किरतब न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणें विचारो ।
 वीर्य लब्द रा जतन कीजें, सावद्य किरतब नें त्याग दीजे ॥ ३३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जाणो, दांन लब्द ज्युं लीज्यो पिच्छाणो ।
 वीर्य लब्द में ओगुण म जाणों, गुण अवगुण किरतब मे पिच्छाणों ॥ ३४ ॥
 कोइ कहे बल प्राकम नहीं हुवें ताय, तो खोटा किरतब केम कराय ।
 तिण सूं बल प्राकम सावद्य छे भूडो, इण सूं कर्म बांधे जीव बूडो ॥ ३५ ॥
 उसभ उदें एहवी चरचा आणे, ते बल प्राकम ने सावद्य जाणें ।
 एहवी उंवी करे बकवाय, इणरो न्याय सुणों चित्त ल्याय ॥ ३६ ॥
 अंतराय रो षयउपसम थाय, बल वीर्य सक्त हुवे ताय ।
 ते उजला लेखे निरवद रुडा, त्याने सावद्य कहे ते कूडा ॥ ३७ ॥
 यां सू किरतब करे भला भूडा, भला सू तिरे भूडा सू बूडा ।
 किरतब नें जोग व्यापार जाणों, सावद्य निरवद री करो पिच्छाणों ॥ ३८ ॥
 बल वीर्य सक्त प्राकम ताह्यो, वीर्य लब्द में सर्व समायो ।
 ए छता रूप जीव रे मांहि, तिणसूं कर्म तूटे बधे नाहि ॥ ३९ ॥
 धर्मी पुरष छे बलवंत रुडा, करणी करे कर्म करे दूरा ।
 अधर्मी तो निरवउ हुआ रुडो, नहीं बांधे पाप रा पुरो ॥ ४० ॥

ते तो बल छे किरतब रूप ताह्यो,
जोवो सुतर भगोती रे म्हांयो,
सावद्य जोग उदे भाव भूडा,
लब्द षयउपसम भाव छे रूडो,
षयउपसम ने उदे भाव,
षयउपसय ने सावद्य जांणे,
बले वीर्य सकत पिछांणो,
ते गुण जीव सूं नही छे जूआ,
जेहवा सरीर पुदगल बघाय,
बल प्राकम हीणो इधिको होय,
शरीर गाढो हुवे अतंत,
शरीर पुदगल घट जावे,
जीव शरीर सूं हूवों न्यारो,
जब गयो जीव मुगत रे माही,
बल शरीर रे परसग,
तिणरो कह्यो घगो विसतारो,
भार ले जावे बूढो ने तरुणो,
तरुणा ज्यूं बालक तीर चलायो,
आहार सिज्जा उपघादिक ज्याने,
ते किरतब लेखे कह्या जांणे,
आहार सिज्जा उपघादिक जेह,
ते तो सावद्य निरवद नाही,
ज्यूं बल प्राकम वीर्य पिछाणों,
माठी बुध मत कही छे ताय,
बुध मत सूं करे विचारो,
माठो विचार्यो माठो जोग पूरो,
इत्यादिक बोल अनेक पिछांणो,
पिण षयउपसम भाव छे चोखो,
वाल वीर्य गुण ठाणां च्यार,
तिण वीर्य सूं सावद्य रो आगार,
तिण इविरत सूं पाप लागे,
पिण वीर्य लब्द छे षयउपसम भावो,

सावद्य निरवद जोग में आयो ।
जयवंती नें वीर बतायो ॥ ४१ ॥
तिणसूं जीव अनंता बूडा ।
ते पामें छे कर्म हूवां हूरो ॥ ४२ ॥
त्यांरो छे जूदो जूदो सभाव ।
ते अग्यांनी थका उघी तांणें ॥ ४३ ॥
ते जीवरा उजल गुण जांणो ।
पिण शरीर रे प्रयोगे हूआ ॥ ४४ ॥
तेहवा बल प्राकम थाय ।
ते शरीर काचे पाके सोय ॥ ४५ ॥
जब जीव में बल अनंत ।
जब प्राकम हीणो थावे ॥ ४६ ॥
जब नही बल प्राकम लिंगारो ।
तठे बल प्राकम नही कांई ॥ ४७ ॥
जोवो रायप्रसेणी उपंग ।
केसीकुपर मोटा अणगारो ॥ ४८ ॥
कावर दिष्टंत दे कीयो निरणो ।
तीर कबांण रो मेल्ह्यो न्यायो ॥ ४९ ॥
सावद्य निरवद कह्या वीर त्याने ।
तिण ने रूडी रीत पिछांणो ॥ ५० ॥
ते तो पुदगल दरब छे एह ।
ते विचार करो मन मांही ॥ ५१ ॥
सावद्य जोग किरतब सूं जांणो ।
ते पिण कही छे किरतब रे न्याय ॥ ५२ ॥
ते पिण मन जोगरो व्यापारो ।
अछो विचार्यो निरवद जोग रूडो ॥ ५३ ॥
त्याने किरतब लेखे सावद्य जांणो ।
ते निश्चै निरवद निरदोखो ॥ ५४ ॥
तिणमें पिण ओगुण नही लिंगार ।
तिण आगार सूं हुवे छे विगाड ॥ ५५ ॥
तिण ने माठी जाणे नें त्याणें ।
ते तो निरजरा गुण छे चावो ॥ ५६ ॥

पिंडत वीर्यं नद्रगुणठांणा मांहीं, तिण सूं सावद्य न सेवणों काई ॥
 सावद्य सेवण रो त्याग्यो आगारो, तिण सूं इविरत न रही लिंगारो ॥ ५७ ॥
 ज्व चारित पयउपसम हूवो, ते चारित छे वीर्यं सूं जूओ ।
 तिण चारित सूं पाप रक जावे, लब्द उजल रही थिर भावे ॥ ५८ ॥
 बाल पिंडत वीर्यं ने पिछांणो, तठें तो पांचमों गुण ठांणो ।
 देस थकी इविरत नें त्यागी, देस थकी हूवो वैरागी ॥ ५९ ॥
 इण त्याग सूं पंडित जांणो, इविरत रही सूं बाल पिछांणो ।
 बाल पिंडत इण लेखे हूओ, वीर्यं रो गुण इण सूं जूओ ॥ ६० ॥



कुतारु नें नाग सरखें कोइ, नाग नें कुतारु सरखें सोइ ।
 अनाइ नें सरखें साइ, साइ नें सरखे असाइ ॥ ६ ॥
 अनुकांन नें मरखे नूकांनों, नूकांनों सरखे अनुकांनों ।
 इत्यादिक उंवा बोल सरखाइ, तिन सूं जीव निव्याती थाइ ॥ ७ ॥
 ईअन मोह उदे हूवों आय, उंवाँ सरखा लागे ताय ।
 उव हूवो जीव निव्याती, उंवाँ सरखा रो पयनाती ॥ ८ ॥
 मात्री सरखा मात्री जगनाइ, ते उंवाँ सरखां आवें निव्यात ।
 आँ उंवाँ मरखनी आवे, जो नूठ लागे तिन सरखा न जावें ॥ ९ ॥
 निव्याती उंवाँ सरखा सूं बागों, तिन रे क्लिय निव्यात रो लागे ।
 ते अंजन मोह उदे भाव जानों, तिन नें हवी रीत पिछांगो ॥ १० ॥
 तिनरे पयउत्तम भाव अनांग, तिन सूं पाव न लागे बांग ।
 पयउत्तम भाव नें उजळ जांगो, निव्याती रे छे तिन सूं अनांगो ॥ ११ ॥
 ओहीज समदिष्टी रे छे चांगो, पयउत्तम भाव दोयां रो एक जांगो ।
 ग्यांवावनीं रो पयउत्तम हूओ, तिन सूं दोयां रो गुण नहीं जूओ ॥ १२ ॥
 मनदिष्टी रे कह्यो छे ग्यांन, निव्याती रे कह्यो छे अग्यांन ।
 तिन सूं मनदिष्टी बापो ग्यांनी, निव्याती बापो अग्यांनी ॥ १३ ॥
 जिगरी सरखा छे मूव नांग, ते ननीयो पूर्व रो ग्यांन ।
 एक बोल उंवाँ मरखें ताय, उव निरवें निव्याती थाइ ॥ १४ ॥
 तिनरो ननीयो पूर्व रो ग्यांन, तिनरो ग्यांन नें कह्ये अग्यांन ।
 इन ग्यांन नें आंगुन नहीं लियार, अग्यांन बाओं निव्यात रो लार ॥ १५ ॥
 ओहीज बोल मूवो मरखें ताय, उव उंहीज समदिष्टी थाइ ।
 तिनहीज अग्यांन नें ग्यांन जांगो, मनकत लारे ग्यांन कह्यो जांगो ॥ १६ ॥
 नाच्य उदे भाव निव्यादिष्ट, निरवद पयउत्तम भाव दिष्ट ।
 उवद सूं पाव लागे आय, निरवद सूं पाव कर्म ल्याइ ॥ १७ ॥
 ग्यांन अग्यांन तो पयउत्तम भाव, जांगना देखवा रो सनाइ ।
 यां नें जो ओहीज गुण रिछांगो, उज्जल लेखे निरवद जांगों ॥ १८ ॥
 त्यां सूं कर्म क्ले तूटे नाहीं, त्यां सूं पाव न लागे जाई ।
 केवल ग्यांन नें दर्शन रिछांगो, त्यां माहिरी बांगगी जांगो ॥ १९ ॥
 ग्यांन नागार उरीयोग जांगो, तिनरो दोय दोष दहांगो ।
 तिन में विदरो विचार विगनांन, दर्शन विवेक ग्यांन प्रचांन ॥ २० ॥
 कौन उरीयोग छे नगार, तिन में नहीं विगनांन विचार ।
 तिन में देखन रो गुण छे ताहि, और गुण नहीं छे तिन माहि ॥ २१ ॥

दर्शन देखवा रो गुण छे ताय, ग्यांन विना खबर नहीं काय ।
तिण सूं ग्यांन कह्यो परघांन, दर्शन नें कह्यो सामान ॥ २२ ॥
यां री खबर जुदी जुदी पाडो, बुधवंत हीया में विचारो ।
मतग्यांन रा अठावीस भेद, ते सुणजो आंण उमेद ॥ २३ ॥
सुरतइंद्री में शबद पडे आय, मतग्यांन विण खबर न काय ।
उग्रह करे विचारे कोय, निरणों कर धारी राखें सोय ॥ २४ ॥
विचारणा निरणो करे सोय, ते तो सावद्य निरवद होय ।
ते तो जोग तणों व्यापार, सावद्य निरवद लेजों विचार ॥ २५ ॥
धारणा कर राखें सोय, ते पिण सावद्य निरवद होय ।
तिण में मन जोग रो व्यापार, ते पिण बुधवंत लेजों विचार ॥ २६ ॥
उग्रह इहा उवाय नें धारे, संसार नें हेत विचारे ।
ते सावद्य जोग कह्या जिणराय, माळी बुध मत छे इण न्याय ॥ २७ ॥
उग्रह इहा अवाय नें धारे, निरजरा हेते मन में विचारे ।
ते निरवद जोग कह्या जिणराय, आळी बुध मत छे इण न्याय ॥ २८ ॥
बुधरो व्यापार मन जोग जांणो, मन विण नहीं कठे ठिकांणो ।
बुध षयउपसम भाव छे न्यारो, तिण सूं नहीं सुघारो विगाड़ो ॥ २९ ॥
इम पांचूं इंद्री नें मन जांणो, उग्रहादिक च्याहं सगलें पिछांणो ।
च्याहं इंद्री ना वंजण च्यार, त्यां में चषू नें मन कीयो न्यार ॥ ३० ॥
ए मतग्यान रा भेद अठावीस, सुतर में भाष्या जगदीस ।
ते सुणवादिक सूं करे विचार, सावद्य निरवद जोग व्यापार ॥ ३१ ॥
जांण जांण सावद्य करे कोय, तो ही ग्यांन सावद्य नहीं होय ।
ग्यांन षयउपसम भाव छे ताहि, सावद्य किरतब उदे भाव माहि ॥ ३२ ॥
ग्यान परिज्ञा समदिष्टी रे होय, पिण पचखांण परिज्ञा न कोय ।
ते सावद्य कामा करे जांण, तिण सू पाप कर्म लागे आंण ॥ ३३ ॥



ढलल : ॢ

[चतुर वललर करी ने देखी]

गढुड रूड गंघ रस नें फरस, रुडड डडर आंणें छे, रागो रे ।
 डडुडड डडर डेडड आंणें, तलणरे डड कड आड ललगो रे ।
 चतुर वललर करे नें देखी* ॥ १ ॥
 गढुड रूड गंघ रस ने फरस, रुडड डडर न आंणें रागो रे ।
 डडुडड डडर डेड न आंणें, तलणरें डड रो अंस न ललगारे ॥ २ ॥
 राग डेड आडड वलण डड न लगे, ते डुववंत करो वललरो रे ।
 डडंघ इंड्रडडं सूं डड कडे नही लगे, डडं में अवगुण नही ललगारो रे ॥ ३ ॥
 इंड्री तो डडडडडड डड छे चोखो, राग डेड डडे डड डडंणों रे ।
 ते चारलत डोह डडे सूं नीडन, डडं नें रुड्डी रीत डलछडंणों रे ॥ ॡ ॥
 डडगर नें डणडगर डुडडडड, तडडं ओलखलुडो घट डडंहुडों रे ।
 अनंतड डडडरुड डडणें नें देखें, तलण सूं अनंती डरडडडो रे ॥ ॡ ॥
 डडणडणड नें डडगर डुडडडड डडंणो, ओर गुण आंगुण तलणडें नडंही रे ।
 डणडगर डुडडडड डे देखण रो गुण, ओर गुण अवगुण नही तलण डडंही रे ॥ ॢ ॥
 डुडडडड डुडडडड री डरडडड सूं, कड रुके तूटे नडंही रे ।
 वले डुडडडडड सूं कड न लगे, डोवो डुरव गुण डरडडड डडंही रे ॥ ॣ ॥
 केड डडंनव कहुं डुडडडड डेती, रुके तूटे छे कडों रे ।
 वले कहुं कड डुडडडडड सूं लगे, ते डूल छें डडक डडों रे ॥ ॢ ॥
 डुरव गुण डरडडड डुडडर लोकरडं नें, रुड्डी रीत डीखडे रे ।
 डलण आडरड वोलुडड री डडडड डडे नही, तलण सूं डडल रड डोल चलडे रे ॥ ॢ ॥
 अनंतड डडडरुड डडणें नें देखें, डुडडडड रड ए गुण वतडे रे ।
 डुरव गुण डरडडड डलन २ लोकरडं नें, रुड्डी रीत डीखडे रे ॥ ॢ० ॥
 वले कहुं छे कड रोकें नें तोडे, ते तो डडगर नें डणडडरुडो रे ।
 वले कहुं कड डुडडडडड सूं वंघें छे, ओ डुरतड देखो अंवारो रे ॥ ॢ१ ॥
 डडडडडड डंडर नें डडडड सरघें, डडडं सूं ललगडो डुडुडों रे ।
 आडरी सरघडें डड अलुडुडें, डव डडुडो कुण डडंनडी डुडुडो रे ॥ ॢ२ ॥
 डडडडडड डड नें डडडड सरघें, डव डडडड खोडो डडडुडडडो रे ।
 तलण डडडड नें आलव कडुडड लडुडें, तडडरी वलणडी सरघड वडुडो रे ॥ ॢ३ ॥

*डह आंकडी डुरतुडेकर डडडड के अनंत डें डै ।

सावद्य कह्यो जब आश्रव निश्चै, कह दियो चोड़े साख्यातो रे ।
तो ही सावद्य कहें पिण आश्रव न कहें, कूड़ी टेक भाल्यांरी आ वातो रे ॥ १४ ॥
जब कहे म्हें षयउपसम भाव तिणें, उदा सूं कहां सावद्य तांमो रे ।
सुष जाब नायां दूसरी ले उटे, तिणनें पाछो कहणो वले आंमो रे ॥ १५ ॥
जो थे उदा सूं षयउपसम सावद्य जांणो, तो पिण सावद्य कह्यो पयउपसम भावो रे ।
सावद्य कह्यो तिणनें आश्रव कहीजे, थारे मूढे थें कर दीयो न्यावो रे ॥ १६ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य कहे पिण, आश्रव कहितां आणे संको रे ।
ते लीघी टेक छूटे नहीं तिण थी, ते कर्म तणे वस वंको रे ॥ १७ ॥
आगे आश्रव में दोय भाव परुप्या, उदे नें परिणामीक भावो रे ।
षयउपसम कहां उठे आगली सरधा, तिण सूं खेले छे खोटा डवो रे ॥ १८ ॥
जाणे भूठ बोलूं पिण आगली सरधा, उवा पिण कुसले खेमें राखू रे ।
तो दोय भाव आश्रव मांहे दाखूं, तीजो षयउपसम भाव न भाखूं रे ॥ १९ ॥
पिण षयउपसम भाव ने प्रसिध चोड़े, सावद्य तो कह चूको रे ।
सावद्य कह्यो जव आश्रव कह दीयो, तो तीन भाव कहां मांन मूको रे ॥ २० ॥
तो पिण तीन भाव आश्रव मांहे, मुख सूं कहणी न आवे रे ।
इसडी ताण आले रह्या त्यां नें, किण न्याय करे समभावें रे ॥ २१ ॥
जो आश्रव में तीन भाव नही कहो, तो षयउपसम ने सावद्य मत भाखो रे ।
उदे ने परिणामीक कहे ने, आगली सरधा राखो रे ॥ २२ ॥
इणविध चरचा में बंध कीघां, जाव नायां बोले कूरो रे ।
वले अकबक करनें उघो बोलें, वले क्रोध करे भागे दूरो रे ॥ २३ ॥
कोइ गहलो कहे म्हारी मा बांमडी छे, ते चोड़े कहुं नहीं छाने रे ।
मो पूत तणी मा बांमडी निश्चै, एहवी बातडा हो कुण मानें रे ॥ २४ ॥
ज्यू कोई षयउपसम नें कहे सावद्य, पिण सावद्य नें आश्रव कहे नांही रे ।
म्हारी मां नें वले बांमडी छे तिम, एहवो अंधारो छे तिण मांही रे ॥ २५ ॥
केइ मानव पांचूं इंदव्यां नें, सावद्य कहे छें लोकां नें रे ।
कूडा २ कुहेत ल्गाए, चोड़े कहे नही छे छाने रे* ॥ २६ ॥
सुरतइंद्री नों सभाव छे एहवो, भला ने भूडा शब्द सुणायो रे ।
और गुण आंगुण नही सुरतइंद्री में, तिण में संका म जांणो कोयो रे ॥ २७ ॥
भला २ शब्द सुणने राग आणें, धेष आणे शब्द सुणे भूडा रे ।
ए प्रतष आंगुण राग धेष में, त्यां सूं पाप कर्म वांधे वूडा रे ॥ २८ ॥

*ए २६ वी गाथा समूचे षयोपसम भाव उपर कही छे ।

ऋषू इंद्रियों समाव छे एह्वो,
 और गुण आंगुण नहीं ऋषू इंद्रियों में,
 भला २ रूप देखनें राग आणे,
 ए प्रत्य आंगुण राग वेप में,
 घागइंद्री नों समाव छे एह्वो,
 और गुण अक्वगुण नहीं घागइंद्री में,
 भला २ गंव उपर राग आणे,
 ए प्रत्य आंगुण राग वेप में,
 रमइंद्री नों समाव छे एह्वो,
 और गुण आंगुण नहीं रमइंद्री में,
 भला २ रम उपर राग आणे,
 ए प्रत्य आंगुण राग वेप में,
 फरसइंद्री नों समाव छे एह्वो,
 और गुण अक्वगुण नहीं फरस इंद्री में,
 भला फरस उपर राग आणे,
 ए प्रत्य आंगुण राग वेप में,
 राग वेप में अक्वगुण वीते उवाडो,
 और गुण परजाय छे न्यारी २,
 कोई कहे छे आंगुण मुरतइंद्री में,
 इमइ ० कूड कु हेत ल्याए,
 इमइ कूड कु हेत मुण नें,
 हिदे निगणे जाव मुणे भव जीवां,
 किय ही ठामें पुरष अनेक वेडा था,
 के कां रे तो अरुद गराज न आओ,
 के कां तो गळ नें जयातय जाण्यो,
 के कां रे अरुद सुगे वैराग उनो,
 केडक तो मळ मुणनें रीड्या,
 के कां रे गळ मुणनें डूपे आयो,
 मुणवो तो मगळ रो जगो मरीपो,
 वेप उदे प्यउमसम भाव नीपता,

भला मूंडा रूप देखें रे ।
 वृषवंत ग्यांन सू इम पेखें रे ॥ २६ ॥
 मूंडा देखनें आणे वेपो रे ।
 ऋषू इंद्रियों कांई नहीं लेखो रे ॥ ३० ॥
 भला नें मूंडा गंव वेदायो रे ।
 मूषी समरु पारो इण न्यायो रे ॥ ३१ ॥
 मूंडा गंव उपर डूपे आणे रे ।
 घागइंद्री में अक्वगुण भोला जाणे रे ॥ ३२ ॥
 भला मूंडा वेदे रस सवावो रे ।
 इण मू मूल नहीं विपवावो रे ॥ ३३ ॥
 मूंडा रस उपर वेप आणे रे ।
 रसइंद्री में आंगुण भोला जाणे रे ॥ ३४ ॥
 भला मूंडा फरस वेदायो रे ।
 इण नें ओलखल्यो इण न्यायो रे ॥ ३५ ॥
 मूंडा फरस उपर आणे वेपो रे ।
 फरसइंद्री नों नहीं कोई लेखो रे ॥ ३६ ॥
 पिण इंद्री में अक्वगुण नाहीं रे ।
 विचार देखो मत माहीं रे* ॥ ३७ ॥
 सवद मुणीयां राग वेप आयो रे ।
 सुरतइंद्री नें सावद्य कहे ताह्यो रे ॥ ३८ ॥
 मुरतइंद्री नें सावद्य जाणे रे ।
 मन नें आण ठिाणे रे ॥ ३९ ॥
 त्यां सवद सुण्यो विपे कारी रे ।
 त्यांरे गुण अक्वगुण न हूवो ल्यारिरे ॥ ४० ॥
 ते निरवद जोग व्यापारो रे ।
 त्यांनं संसार लागो खारो रे ॥ ४१ ॥
 त्यांरा तो सावद्य जोग छे मूंडो रे ।
 ते पिण सावद्य जोग सू वूड रे ॥ ४२ ॥
 सुरतइंद्री नों ओहीज समावो रे ।
 ते मुणजां जयातय न्यावो रे ॥ ४३ ॥

* ए ३७ वें गाथा समचे इंद्रियों उपरे छे ।

सबद सुण्यो पिण गराज न आयो,
जथातथ जाण्यो तिण विचार करे ने,
जथातथ जाण्यो ते गिनान मे आयो,
ए दोनूई परजाय निरवद जाणो,
वैराग भाव उपनो तिण रे,
ओपिण सुरतइंद्री नों गुण छे नाही,
राग ने घेप आयो छे त्यारे,
ते पिण अवगुण नही छे सुरतइंद्री मे,
राग ने घेप आया ते मोह उदे सू,
राग घेप तणी परजाय छे,
राग ने घेप तणा परिणाम,
ए पिण परिणाम जूआ जूआ छें,
एहवा भला भूडा परिणाम वरते छे,
ते पिण सावद्य जोग वरत्या छे,
सुरतइंद्री सू सबद साथे लगो सुणीयो,
तिणा काले तो सम रह्या सारा,
हिवे के कारे अंतर मोहरत माहे,
के कां रे मोहरत दोय मोहरत पाछे,
इम पोहर दो पोहर दिवस पख मास,
राग आवे तिण शबद रे उपर,
सुरतइंद्री सू शब्द साभल लीघो,
हिवे तो शब्द ग्यान सू याद आयो छे,
ग्यान सू याद आया विषे सेवा लागो,
जो याद न आवे तो विषे न सेवत,
जो शब्द सुण्यां सू राग उपनों,
ज्यू ग्यान सू याद आया राग आवे,
सुरतइंद्री ने ग्यान तो सावद्य नाही,
तांणातांग छोडो भव जीवां,
भूडा भूडा शब्द सुणीयां घेप आवे,
रागरी ठोड तो घेप ने कहणो,
कोइ कहे छे अवगुण चषू इंद्री में,
इसडा कूडा र कुहेत लगाए,

ते पिण सुरतइंद्री नों स्वभाव जाणो रे ।
ग्यान दूजो निरवद्य जोग पिछांणो रे ॥ ४४ ॥
विचाख्यो ते निरवद्य जोग मांही रे ।
ते तो सुरतइंद्री नों गुण नाही रे ॥ ४५ ॥
चारित मोहणी षयउपसम हूजो रे ।
वैराग भाव इण सू जूओ रे ॥ ४६ ॥
पाप कर्म वधाणा भारी रे ।
ते बुधवत करज्यो विचारी रे ॥ ४७ ॥
ते सुरतइंद्री नीं नही परजायो रे ।
ते सुरतइंद्री में केम समायो रे ॥ ४८ ॥
बले वीतराग परिणामो रे ।
त्यारा जूआ जूआ छें नामो रे ॥ ४९ ॥
ते गुण अवगुण छें या मांही रे ।
ते तो सुरतइंद्री मे नाही रे । ५० ॥
घणा मिनखां रो व्रदो रे ।
कोई न पख्यो विषे रे फंदो रे ॥ ५१ ॥
परिणाम माठा आया रे ।
त्यां पिण माठा परिणाम चलाया रे ॥ ५२ ॥
तथा वरस छ मास रे मांही रे ।
ते सुरतइंद्री में अवगुण नाही रे ॥ ५३ ॥
ते तो वीत गयो तिण कालो रे ।
मोह उदे सू हूवो मतवालो रे ॥ ५४ ॥
उणरे लेखे सावद्य ग्यांनो रे ।
आ सरवा क्यूं नही मांनो रे ॥ ५५ ॥
सुरत इंद्री सावद्य होय जायो रे ।
तो ग्यांन सावद्य क्यूं नहीं थायो रे ॥ ५६ ॥
सावद्य तो राग घेप रो चालो रे ।
श्री जिण वचन संभालो रे ॥ ५७ ॥
राग ज्यूं सगलोई कहणो रे ।
रुडी रीत विचारी लेणो रे ॥ ५८ ॥
रूप दीठां राग द्वेष आवे रे ।
चषू इंद्री ने सावद्य बतावे रे ॥ ५९ ॥

वले कहे जीव दीठो आंख्यां थी,
 जो नहीं देखे तो वयानें हणतो,
 इत्यादिक अनेक करे छे अकारज,
 ते सर्व अवगुण छे चषू इंद्री नो,
 इण लेखे म्हे चषू नें सावद्य कहां छां,
 ग्यांन रो जाणपणो छे निरवद्य,
 इत्यादिक कूड़ा र कुहेत मुणे नें,
 हिवें तिणरो जाव सुणों भवजीवां,
 क्रिण ही ठामें पुरष अनेक बेंठा था,
 के कारे रूप गराज न आयो,
 सुरतइंद्री नो विस्तार कह्यो तिम,
 उठे शब्द कह्यो अठे रूप नें कहिणो,
 वले चषू इंद्री नों विसतार कहूं छूं,
 कोई चक्षु दर्शन ने सावद्य म जाणो,
 चषूसूं देखनें करे सावद्य कामो,
 तो ग्यांन सूं जाण करे सावद्य कामा,
 आंघे पुरष वेटा नें मोटो हूवो जाण्यो,
 जो नहीं जाणतों तो नहीं परणावतो,
 ग्यांन सूं जांणने श्रावक खेती करे छूं,
 ते जाणे म्हारे धान इण विद्य होसी,
 कोई श्रावक समायक कर वेठो,
 याद आइ तो परिणाम चलीया,
 जीव देख्यो तो हिंसा जीवरी कीषी,
 जो देखवो सावद्य तो जाणवो सावद्य,
 केइ समदिष्टी जांणने करावे,
 हाट हवेली मेंह्लादि करावे,
 जाण र नें एहवा कामा करे छे,
 देखनें करे छे सावद्य कामा,
 कोई ग्यांन सूं जाण ने संचो करे छे,
 वले विद्य प्रकार संचो करे तोही,
 तो दर्शन सूं देखने करे संचो,
 जांण ने देखने कीया सावद्य कामा,

जव कीषी जीवरी घातो रे ।
 इण लेखे आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
 जो कीषा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
 इसरो वतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
 चषू माहें छे मोटो दोखो रे ।
 तिणसूं ओ उपीयोग छै चोखो रे ॥ ६२ ॥
 कोई चषू इंद्री ने सावद्य जाणें रे ।
 मन नें आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
 त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
 त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिंगारी रे ॥ ६४ ॥
 चखुइंद्री नो पिण जाणो रे ।
 ते पिण रुद्धी रीत पिच्छाणो रे ॥ ६५ ॥
 ते सामल च्यो चित्त ल्यायो रे ।
 तिणरो न्याय धारो मन मांहाणें रे ॥ ६६ ॥
 जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
 ते ग्यांन सावद्य क्यूं न थायो रे ॥ ६७ ॥
 तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
 सूर नेदाणादिक करावे रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
 तिणनें थेली भूली याद आइ रे ।
 उठ चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
 थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
 तिणमें कांइं धालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
 गढ कोट किलादिक भारी रे ।
 नहीं जाणे तो न करे लिंगारी रे ॥ ७२ ॥
 तोही ग्यांननें नहीं कहो छो भूंडो रे ।
 तो दर्शन ने सावद्य कहि कांय वूडो रे ॥ ७३ ॥
 गुल तेलादिक धन धानो रे ।
 सावद्य नहीं वहे ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
 तो दर्शन सावद्य कांय जांणो रे ।
 दोयां री एक रीत पिच्छाणो रे ॥ ७५ ॥

समदिष्टी न्यातीलादिक नें मूंआ जाण्यां, विगड्या जाण्यां काम अनेको रे ।
 तिण जाण्यां सूं आर्त्तध्यान ध्यावा लागो, ज्ञान नें दोष न कहो एको रे ॥ ७६ ॥
 तो एहीज कामा देखतां विगड्यां, जब पिण ध्यायो आरत ध्यानी रे ।
 जो देखनें कीबां दर्शन सावद्य कहों छो, तो जाणे कीबां सावद्य हूवों ज्ञानो रे ॥ ७७ ॥
 समदिष्टी घर में धन गडीयो जाणे, और माल मुलक वले ताह्यो रे ।
 जब याद आवे तब मन माहे मूर्खें, नही जाणे तो नही मूरछायो रे ॥ ७८ ॥
 ग्यानं सूं जाण्यां तो मूर्छा आई, जब ग्यानं नें निरवद जाणो रे ।
 तेहीज सारा निजरां देख मूर्खें, जब उलटी कांय ताणों रे ॥ ७९ ॥
 जाण नें सावद्य कीयां ग्यानं छे निरवद, देखे सावद्य कीयां दर्शन चोखो रे ।
 अवगुण उदेभाव किरतब में छे, दोनूं उपीयोग छे निरदोषो रे ॥ ८० ॥
 काम भोग जथातथ ग्यानं सूं जाणें, त्यां नें भोगवे जाण पिछांणो रे ।
 जो नहीं जाणें तो नहीं भोगवतो, जब थें ग्यानं ने निरवद जाणो रे ॥ ८१ ॥
 तो चषू देखनें भोग भोगवे, जब चषू नें सावद्य कांय भाखो रे ।
 एक जाण भोगवे एक देख भोगवे, दोयां ने सरीषा क्यूं न दाखो रे ॥ ८२ ॥
 धन भूलो ते समदिष्टी ने याद आयो, तिण सूं कीबा उदंगल अनेको रे ।
 याद नही आवे तो नही करत उदंगल, जद ग्यानं कहो निरदोषो रे ॥ ८३ ॥
 तो चषू सूं देखने करे उदंगल, ते चषू नें सावद्य कांय भाखो रे ।
 जो जाण कीयां ग्यानं सावद्य हुवे तो, देख कीयां चषू सावद्य दाखो रे ॥ ८४ ॥
 माठी वस्त अजाण्यां खाची, जाण्यो जब मन हूवो भूडो रे ।
 तिणरे मन भूडो वरत्यां पाप बंधाणों, ते किसा उपीयोग सूं बूडो रे ॥ ८५ ॥
 देख खाचों जब मन भूडो न वरत्यो, जाण्यो जब मन वरत्यो भूडों रे ।
 तिण जाणपणा नें निरवद्य जाणो, तो चषू सावद्य कहे कांय बूडो रे ॥ ८६ ॥
 चास बटाउ देखने पीची, पछे सुणनें जाण्यो जहर पीघो रे ।
 जाण्यो जब घसको पड्यो त्यां रे, पाप कर्म बाधें काल कीघो रे ॥ ८७ ॥
 बटाउ मूंआ ते घसको परयां थी, जहर सुणने ग्यानं सूं जाण्यो रे ।
 ते जाणपणा नें निरवद थापो, तो चषू सावद्य मत कहो ताणो रे ॥ ८८ ॥
 साधु अपछरा देख रह्यो समभावे, घणा दिनां पछे अणसण लीघो रे ।
 तिणरो रूप आछो जाण नें साधु, भोग वंछा नीहाणो कीघो रे ।
 तिणरा रूप री धारणा याद आई, तो साधु कीघो नीहाणों रे ।
 ते धारणा ग्यानं री निरवद जाणों, तो चषू माहें अवगुण कांय जाणो रे ॥ ८९ ॥
 धारणा याद आयां राग उपनो, देख्यो जब तो राग न आयो रे ।
 चषू इंद्री नों अवगुण मूल न दीसे, तिणरो काल वीत गयो ताह्यो रे ॥ ९१ ॥

काम नोप सेव्या ते याद आया जह, हूवे काम नोप से गयी रे।
 जह किन्ना उरियोग मूं याद आया छे, किन्ना उरियोग मूं वाड नायी रे ॥ ९२ ॥
 स्थान मूं याद आयो तो राग उरयो, जह स्थान मान्यो ये हडो रे।
 चडू आदि ईश्री नें माळ्ड यारो, जो थें बंडो चलायो कुडो रे ॥ ९३ ॥
 अश्री नें हन वेह विहार उरजे, रव नागे छे चोरी बाडो रे।
 ते निग देहनें स्थान मूं जान्यां पाछे, वाड नागी कडीयो विहारो रे ॥ ९४ ॥
 मारो वाड नागे स्थान मूं जान्यां पाछे, ऊपेदांगी तो सरछेई स्थानो रे।
 निग स्थान नें निरवह बोडो जांगो, तो क्कन सावड काय नानो रे ॥ ९५ ॥
 देहनें करे छे छे निग स्थान मूं जांगे, नन मूं करे विचारो रे।
 चांग नें करे छे दिहूँ देहन से नज्ज, ए निगो हडो रीत्र बारो रे ॥ ९६ ॥
 नेक्कुमार हाथी ग मव नें, जज्जिननरग मूं याद आयो रे।
 जह एक जेहनरो मंडयो कीयो, इना संह उमाव्या जाचो रे ॥ ९७ ॥
 याद आयो चारिपनरग सेवी, निरतें तो क्हो छो चोले रे।
 चडू मूं फाछिगे मव याद न आयो, त्रिगनें काय क्कतयो बोडो रे ॥ ९८ ॥
 जिग छे तिमहिज जांग कीयां मूं, स्थान सावड नहीं जाह्यो रे।
 जिग छे तिमहिज देह कीयां मूं, कसगन सावड किन थायो रे ॥ ९९ ॥
 जिग छे तिमहिज देह कीयां थी, चडू क्कन नें नहीं होतो रे।
 होयो उरयो राग देव उदेनाड, त्रिग मूं क्कें छैं फारगि पोतो रे ॥ १०० ॥
 इनाकि अक्क करे सावड जाना, त्यां नें केह स्थान मूं जांगे रे।
 केह क्कन मूं केव करे छे, त्यां नें हडो रीत्र निछांगो रे ॥ १०१ ॥
 इनां से म्मरव तो हूवे २ छे, और म्मरव जं नें न पावे रे।
 और उदें नें फयउरपन नहीं होइयां मूं, इन म्मरव्या पंचा निड जावे रे ॥ १०२ ॥
 केह जांग करे केह देह करे छे, सावड निरवह मारोई मंडो रे।
 उरियोग तो छैं बंड निरवह मूं, त्यां नें सावड मरखे नत हडो रे ॥ १०३ ॥
 वेदुं उरियोग फयउरपन नाव छैं चोला, उरया लेखे निरवह जांगो रे।
 चडू उरियोग नें सावड मरखे ते, कूडे छैं कर ० हांगो रे ॥ १०४ ॥
 जह केह क्कें मूं मोह छे मूं, फयउरपन नें सावड जांपो रे।
 त्रिगें पाछे इन उरर दीजे, हडो उंडो नड हांगो रे ॥ १०५ ॥
 चारिप नोहणी उदे हूवे इ, कीनरग नाव विक्कयवे रे।
 जिग मूं राग नें केव उरव कडीया, त्रिग मूं नाव जोग च्चोदे रे ॥ १०६ ॥
 मोह क्कें फयउरपन हूवे जह, फयउरपन नाव फरपटीयो रे।
 नेहोच नोहणी फे उदे हूवे, नेहीज फयउरपन छटीयो रे ॥ १०७ ॥

हूवे काम नोप से गयी रे।
 किन्ना उरियोग मूं वाड नायी रे ॥ ९२ ॥
 जह स्थान मान्यो ये हडो रे।
 जो थें बंडो चलायो कुडो रे ॥ ९३ ॥
 रव नागे छे चोरी बाडो रे।
 वाड नागी कडीयो विहारो रे ॥ ९४ ॥
 ऊपेदांगी तो सरछेई स्थानो रे।
 तो क्कन सावड काय नानो रे ॥ ९५ ॥
 नन मूं करे विचारो रे।
 ए निगो हडो रीत्र बारो रे ॥ ९६ ॥
 जज्जिननरग मूं याद आयो रे।
 इना संह उमाव्या जाचो रे ॥ ९७ ॥
 निरतें तो क्हो छो चोले रे।
 त्रिगनें काय क्कतयो बोडो रे ॥ ९८ ॥
 स्थान सावड नहीं जाह्यो रे।
 कसगन सावड किन थायो रे ॥ ९९ ॥
 चडू क्कन नें नहीं होतो रे।
 त्रिग मूं क्कें छैं फारगि पोतो रे ॥ १०० ॥
 त्यां नें केह स्थान मूं जांगे रे।
 त्यां नें हडो रीत्र निछांगो रे ॥ १०१ ॥
 और म्मरव जं नें न पावे रे।
 इन म्मरव्या पंचा निड जावे रे ॥ १०२ ॥
 सावड निरवह मारोई मंडो रे।
 त्यां नें सावड मरखे नत हडो रे ॥ १०३ ॥
 उरया लेखे निरवह जांगो रे।
 कूडे छैं कर ० हांगो रे ॥ १०४ ॥
 फयउरपन नें सावड जांपो रे।
 हडो उंडो नड हांगो रे ॥ १०५ ॥
 कीनरग नाव विक्कयवे रे।
 त्रिग मूं नाव जोग च्चोदे रे ॥ १०६ ॥
 फयउरपन नाव फरपटीयो रे।
 नेहीज फयउरपन छटीयो रे ॥ १०७ ॥

चारितमोहणी कर्म उदे सूँ, राग घेष उदे भाव थायो रे।
तो षयउपसम विगड्यो उदे भाव हूवों, तो षयउपसम नही छे ताह्यो रे ॥ १०८ ॥
मोह उदे सूँ मोहरो षयउपसम विगड्यो, ते षयउपसम भाव छे नांही रे।
ज्यूँ साधु विगड्या ने साधु म जाणो, ते गिण लेजों असाध रे मांही रे ॥ १०९ ॥
ज्यूँ षयउपसम विगड्या नें उदेभाव जाणो, षयउपसम भाव म जाणो रे।
षयउपसम आछो उदे भाव खोटो, इम सावद्य निरवद पिछाणो रे ॥ ११० ॥
मोह उदे सूँ नीपजें सावद्य सारा, निरवद नीपजें षयउपसम तेथी रे।
पाप लागे मोह उदे भाव सूँ, नही लागे ते षयउपसम सेती रे ॥ १११ ॥
मोह उदे हूआं मोह रो षयउपसम विगरे, और षयउपसम विगारे नांही रे।
चारित मोह सूँ षिमादिक गुण विगरे, और गुण विगारे नहीं कांइ रे ॥ ११२ ॥
दंसणमोह सूँ सूधी सरधा विगाडे, ओर तो गुण विगाडे नांहीं रे।
दंसण नें चारित मोहनों ओहीज होदो, ओर गुण विगाडे नही कांइ रे ॥ ११३ ॥
अंतानबंधी चोकरी उदे हूआं, कदा दंसण मोह साथे उदे होयो रे।
जब जीवरा दोनूँइ गुण विगरे, आप आपरा न्यारा लो जोयो रे ॥ ११४ ॥
दंसण मोहणी उदे हूवें जब, चारित मोहणी उदे हूवे साथे रे।
जब पिण जीवरा दोनूँइ गुण विगरे, जोवो सूतर में साख्यातो रे ॥ ११५ ॥
आधाकर्मी आहारादिक असुध कह्यो छे, ते तो किरतब आसरी जाणो रे।
ते आहार असुध सावद्य दोनू नाही, आहारादिक थी सावद्य पिछाणो रे ॥ ११६ ॥
ज्यूँ सुरत इंद्रीयादिक आश्रव कह्यो ते, राग घेष आश्री जाणो रे।
पिण सुरत इंद्री तो आश्रव नांही, अहार ज्यूँ लो इंद्रया पिछाणो रे ॥ ११७ ॥
ज्यूँ अजीव काय असंजम कह्यो छे, ते इविरत आश्री जाणो रे।
पिण अजीव तो असंजम नाही, असंजम इविरत आश्री पिछाणो रे ॥ ११८ ॥
ज्यूँ इंदर्या मोकली मेली ते आश्रव, ते विषें इविरत आश्री जाणो रे।
पिण इंद्रयां तो आश्रव छे नांही, ते अजीव असंजम ज्यूँ इंद्रयां पिछाणो रे ॥ ११९ ॥
वले अजीव काय ने संजम कह्यो छे, ते त्याग विरत लेखे वतायो रे।
ते अजीव तो संजम छे नांही, त्यांरी विरत लेखे ओलखायो रे ॥ १२० ॥
ज्यूँ इंद्रयां नें वस करे ते संवर, ते विषे री विरत आश्री जाणो रे।
पिण इंदर्यां ने संवर विरत मति जाणो, अजीव सजम ज्यूँ इंदर्यां पिछाणो रे ॥ १२१ ॥
परिग्रहो कह्यो सचित अचित नें मिश्र, ते दुरगति मांहे डबोवे रे।
ते परिग्रहो तो डबोवे नांही, तिणरी मूर्छां विषे विगोवे रे ॥ १२२ ॥
ज्यूँ इंदरयां की विषे नें सावद्य कही ए, ते राग घेष आश्री जाणो रे।
पिण इंदर्यां तो सावद्य छे नांही, ते परिग्रहा ज्यूँ इंदर्यां पिछाणो रे ॥ १२३ ॥

यों तीन प्रकार को परिग्रहो कह्यो ते, पाप कर्म न लागे तेथी रे।
 पाप लागे तिगरी मुद्धा आयां सूं, वले तिगरी इवित्त सेती रे ॥ १२४ ॥
 ज्युं पांचू इंद्रियां सूं पाप न लागे, पाप लागो विषे सूं जांगो रे।
 केइ कहैं इंद्रियां सूं ई लागें, ते प्रतल भूठ पिछांगो रे ॥ १२५ ॥
 जन पुने पाप पुने कह्यो सूतर में, नमस्तकार पुने नवमों ब्रतायो रे।
 दिग ए तो नवोंई पुन छे नांही, पुन नीपजे परिणाम सूं ताह्यो रे ॥ १२६ ॥
 ज्युं इंद्रियां नें वस करे ते संवर, पिग इंद्रियां नें संवर म जांगो रे।
 विषे त्यागी ते परिणाम संवर नां छें, जन पुने ज्युं इंद्रियां पिछांगो रे ॥ १२७ ॥
 जोड़ कीशी इंद्रियां ती विषे बोल्लावन, नेंपवा सहर मभरो रे।
 संवत अजारे नें वस छयांलें, जेठ सुद तेरस बुववारो रे ॥ १२८ ॥

ढाल : ९

दुहा

पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदे^१ उपसम^२ क्षायक^३ भाव ।
 षयउपसम^४ ने परणांमीक^५ पांचमों, तिणरो जांणे समदिष्टी न्याव ॥ १ ॥
 धूरला च्यार भावां तणो, जुवो जुवो गुण जांण ।
 परणांमीक भाव छे पांचमों, ते मिले सगलां माहें आंण ॥ २ ॥
 आठ कर्म उदे हूआं, त्यांसूं नीपनों उदे भाव जाण ।
 त्यांरो जूओ जूओ सभाव छे, तिणरी बुधवंत करजों पिछांण ॥ ३ ॥
 उपसम एक मोहणी कर्म हुवे, जब नीपजे उपसम भाव ।
 तिण उपसम भाव तेह में, और भाव रो नहीं छे लगाव ॥ ४ ॥
 आठ कर्म षय हूआं नीपजे, षायक भाव अनेक ।
 ते सगलाई षायक भाव में, और भाव न पावे एक ॥ ५ ॥
 च्यार कर्म षयउपसम हूआ, नीपजे षयउपसम भाव अनूप ।
 ते षयउपसम भाव निरमलो, तिणरो जूओ जूओ छे सरूप ॥ ६ ॥
 च्यारू भावं समावे आप आप में, परिणांमीक सगलां में जांण ।
 समदिष्टी जथातथ ओलख्या, जिम छे तिम लीया छे पिछांण ॥ ७ ॥
 पांच भाव पूरा नहीं ओलख्या, ते करे अग्यांनी तांण ।
 नव पदार्थ रो निरणो नहीं, ते मूढ मिथ्याती अयांण ॥ ८ ॥
 केइ ओलख नें उलटा पखा, मोह कर्म उदे हूओ आंण ।
 तिण सू निन्व हूवा किण विधें, ते सुणजो चंतुर सुजांण ॥ ९ ॥

ढाल

[पुन निपजे शुभजोग सू रे लाल]

इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छें आछो ध्यान हो ।
 मणागार उपीयोग कहे तेहने रे लाल, तिणरा घट माहे घोर अग्यांन हो ॥
 सरधा सुणो निन्वां तणी रे लाल ॥ १ ॥
 माठा ध्यान ने इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो ।
 मणागार उपीयोग त्यां नें पिण कहे रे लाल, एहवा कूडा करे छे निरंत हो ॥ २ ॥
 विरत इविरत भला मूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छें मणागार उपीयोग हो ।
 उबी अकल हिया रा जोर सू रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ॥ ३ ॥

विरत इविरत भला भूँडा ध्यान नें रे लाल,
 तिणरी खोटी सरधा छे सर्वथा रे लाल,
 विरत इविरत भला भूँडा ध्यान नें रे लाल,
 त्यारो विवरा सुध निरणो कहूं रे लाल,
 इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल,
 सूतर सू मिलती नहीं रे लाल,
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल,
 तिण सू चेतन जीवरे रे लाल,
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल,
 तिण सू ए तो दोनूइ जू जूआ रे लाल,
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल,
 छठे गुण ठाणे आरत ध्यान छे रे लाल,
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल,
 धर्म ध्यान चोथें गुण ठाणे हुवे रे लाल,
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल,
 श्रावक रे इविरत छे सदा रे लाल,
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल,
 श्रावक रें विरत पिण छे सदा रे लाल,
 श्रावक रे दोनू निरंतर हुवे रे लाल,
 जो विरत इविरत ध्यान छे रे लाल,
 विरत इविरत भलो भूँडो ध्यान हुवे रे लाल,
 बले ध्यान ते ध्यान तीसरो हुवे रे लाल,
 तीन ध्यान एकण समे हुवे नहीं रे लाल,
 हीया मांहे विचारे निरणो करो रे लाल,
 इविरत नें कहे माठो ध्यान छे रे लाल,
 आ उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल,
 माठा ध्यान ने पिण इविरत कहे रे लाल,
 आपिण उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल,
 धर्म ध्यान थकी निरजरा हुवे रे लाल,
 संवर तो हुवे छे विरत सू रे लाल,
 संवर ने निरजरा कहे रे लाल,
 दोनू प्रकारे बूडे छे बापड़ा रे लाल,

कहे छे उपीयोग मणागार हो ।
 ते बुधवंत करजो विचार हो ॥ ४ ॥
 जूदा जूदा कह्या छें भगवान हो ।
 सुणो सुरत दे कान हो ॥ ५ ॥
 तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ।
 ते सुणजो देई उपीयोग हो ॥ ६ ॥
 ते निरंतर लगती जाण हो ।
 पाप लागे निरंतर आण हो ॥ ७ ॥
 ध्यान तो ध्यावे जब होय हो ।
 यां नें एकम जाणो कोय हो ॥ ८ ॥
 तो छठे गुण ठाणे इविरत होय हो ।
 जब तो विरत रो अंस न कोय हो ॥ ९ ॥
 तो चोथें गुण ठाणे विरत होय हो ।
 जब तो इविरत जावक न कोय हो ॥ १० ॥
 तो श्रावक रे निरंतर माठो ध्यान हो ।
 ते पिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ ११ ॥
 तो श्रावक रे निरंतर आछो ध्यान हो ।
 ओ पिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ १२ ॥
 विरत ने इविरत दोय हो ।
 दोनू ध्यान निरंतर होय हो ॥ १३ ॥
 तो श्रावक रे निरतर दोय ध्यान हो ।
 ओपिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ १४ ॥
 विरत इविरत एकण समें दोय हो ।
 उंची ताणकर बूडो मत कोय हो ॥ १५ ॥
 विरत ने कहे छे आछो ध्यान हो ।
 ते किण विव माने बुधवान हो ॥ १६ ॥
 आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो ।
 तिणमें करे अग्यानी निरत हो ॥ १७ ॥
 धर्म ध्यान सूं सवर न होय हो ।
 तिण सूं विरत ने ध्यान छे दोय हो ॥ १८ ॥
 निरजरा ने सवर कहे तांम हो ।
 उंची अकल सूं वेफाम हो ॥ १९ ॥

विरत इविरत भला भूडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण हीया रा जोर सूं रे लाल, आ पिण सरवा घणी छे अजोग हो ॥ २० ॥
 इविरत तो उदे भाव अघर्म छे रे लाल, मोह कर्म उदे सूं जाण हो ।
 मणागार उपीयोग छे उजलो रे लाल, ते तो षयउपसम भाव पिछांण हो ॥ २१ ॥
 मोह कर्म षयउपसम हुवां रे लाल, विरत नीपजें षयउपसम भाव हो ।
 तिण मणागार उपीयोग रो रे लाल, मूल नही छे लगाव हो ॥ २२ ॥
 विरत सूं तो रूके कर्म आवता रे लाल, ते निश्चेइ संवर जाण हो ।
 मणागार तो देखण रो सभाव छे रे लाल, विरत में मिले नहीं आंण हो ॥ २३ ॥
 विरत इविरत तो निरंतर हुवे रे लाल, मणागार निरंतर नांहि हो ।
 विरत इविरत मणागार किहां थकी रे लाल, ते निरणो करो घट मांहि हो ॥ २४ ॥
 विरत इविरत नें कहे मणागार छे रे लाल, तिणरी सरवा में घोर अंधार हो ।
 ते भूठ बोले छे सर्वथा रे लाल, तिणमें सावद्य नहीं छे लिगार हो ॥ २५ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहूं रे लाल, त्यानें कहे छे मणागार असुघ हो ।
 धर्म शुक्ल ध्यान बेहूं भला रे लाल, त्याने कहे छे मणागार सुघ हो ॥ २६ ॥
 भला भूडा च्याखंड ध्यान ने रे लाल, त्याने कहे उपीयोग मणागार हो ।
 ओतो गालां सूं गोलो चलावीयो रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥ २७ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहूं रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो,
 ते सावद्य किरतव पारुओ रे लाल, ते निश्चे नहीं मणागार हो ॥ २८ ॥
 मोहकर्म उदे सूं माठो ध्यान छे रे लाल, ते तो पाप कर्म रा उपाव हो,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, तिणरो देखण रो इज सभाव हो ॥ २९ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा तेह ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग ।
 एहवी उची करे छे परूपणा रे लाल, तिणरी सरवा घणी छे अजोग हो ॥ ३० ॥
 धर्म शुक्ल ध्यान बेहूं भला रे लाल, ते तो निरवद जोग व्यापार हो ।
 ते निरवद करणी निरजरा तणी रे लाल, ते पिण निश्चे नही मणागार हो ॥ ३० ॥
 अंतराय ने मोहणी षयउपसम्या रे लाल, जब ध्यावे छे आछो ध्यान हो ।
 तिण सूं कर्म कटे छे जीवरा रे लाल, मणागार तो देखण रो इज तांन हो ॥ ३२ ॥
 धर्म शुक्ल आछा ध्यान ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण उची करे छे परूपणा रे लाल, आपिण सरवा घणी छे अजोग हो ॥ ३३ ॥
 हिंसा करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले मूसावाय हो ।
 चोरी करे सेवे मइथुन ने रे लाल, परिग्रह मेलणरो करे उपाय हो ॥ ३४ ॥
 करें क्रोध मान माया लोभ नें रे लाल, राग धेष कलहो करे तांम हो ।
 अभिषण पेसुण पर परवाद ने रे लाल, रति अरति माया मोसों आंम हो ॥ ३५ ॥

चोथे गुणठाणे एक भाव ग्यांन में रे लाल, समकत मांहे तो छें तीन भाव हो ।
 त्यांरी समकत नें ग्यांन म जाणजी रे लाल, यांरो जूओ २ छें सभाव हो ॥ ५२ ॥
 दंसण मोहणी कर्म उदे हूआं रे लाल, समकत रो हूओ छे मिथ्यात हो ।
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छें रे लाल, तिणरी खोटी सरघा साख्यात हो ॥ ५२ ॥
 सागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, मिथ्यात उदे भाव अंधकार हो ।
 सागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल, ते बृधवंत करजो विचार हो ॥ ५४ ॥
 मिथ्यात उदे भाव तेहथी रे लाल, लागे छे किरिया मिथ्यात हो ।
 सागार षयउपसम भाव थी रे लाल, पाप न लागे तिलमात हो ॥ ५५ ॥
 समकत उपसमादिक तेह थी रे लाल, टल जाए किरिया मिथ्यात हो ।
 समकत रो मिथ्यात प्रतिपष छे रे लाल, बिगडयो सुघरयो होय जात हो ॥ ५६ ॥
 सागार बधीयां कर्म खके नहीं रे लाल, घटीयां पाप न आवे लगार हो ।
 बले कर्म न तूटें सागार थी रे लाल, उजला लेखे निरवद सागार हो ॥ ५७ ॥
 सागार बघे ग्यांनावर्णी घट्यां रे लाल, ग्यांनावर्णी बधीयां घटे सागार हो ।
 सागार घटीयां सावद्य न नीपजें रे लाल, बधीयां निरवद न नीपजें लिगार हो ॥ ५८ ॥
 मिथ्यात सावद्य छे मोटको रे लाल, तिणसूं पाप लागे दग चाल हो ।
 तिण मिथ्यात नें सागार कहे केई रे लाल, ते बोले छे आल पंपाल हो ॥ ५९ ॥
 कोइ सागार नें समकत कहे रे लाल, बले कहे छे सागार नें मिथ्यात हो ।
 संवर आसव कहे छे सागार नें रे लाल, तिणरी प्रतष भूझी वात हो ॥ ६० ॥
 सागार तो संवर आसव नहीं रे लाल, संवर आसव तो समकत मिथ्यात हो ।
 सागार नें संवर आसव कहे रे लाल, ते चोडे भूला जात हो ॥ ६१ ॥
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, ते तो अंतरमोहरत मांहि हो ।
 समकत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहि हो ॥ ६२ ॥
 मिथ्यात रहे त्यां लग निरंतर रहे रे लाल, किण ही समें विरहो पडे नांहि हो ।
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल, सोच देखो मन मांहि हो ॥ ६३ ॥
 मिथ्यात ने समकत बेहूं दिष्ट छे रे लाल, ते निश्चें नहीं छे सागार हो ।
 बेहूं दिष्ट नें सागार म सरघज्यो रे लाल, करे हीया में विचार हो ॥ ६४ ॥
 बेहूं दिष्ट ने घाली सागार में रे लाल, तीजी दिष्ट किम राखसी न्यार हो ।
 जो इण नें ई कहे सागार छे रे लाल, तो अंधार मांहे फेर अंधार हो ॥ ६५ ॥
 समा मिथ्या दिष्ट छे तीसरी रे लाल, ते दिष्ट छे तीजे गुण ठाण हो ।
 दंसणमोहणी उदे षयउपसम हूआं रे लाल, मिश्र दिष्ट नीपजती जाण हो ॥ ६६ ॥
 मिश्र दिष्ट नें कहे सागार छे रे लाल, सागार नहीं मिश्र दिष्ट हो ।
 मिश्र दिष्ट ने कहे छे सागार छे रे लाल, तिणरी सरघां घणी छे भिष्ट हो ॥ ६७ ॥

तीनां दिशं नें कहे सागार छे रे लाल,
 आप डूवे ओरां नें डबोवता रे लाल,
 तीनूं दिष्ट ने सागार उपीयोग रा रे लाल,
 ए सगल नें धाल्या सागार में रे लाल,
 तीन दिष्ट ने सागार उपीयोग रो रे लाल,
 दिष्टे निरणो कहु छूं मणागार नों रे लाल,
 मणागार उपीयोग ने चारित कहे रे लाल,
 ते वेहूं विघ सरधा उंची घणी रे लाल,
 चारित मोहणी षयउपसम हुआं रे लाल,
 तिणसूं इविरतादिक री किरिया मिठी रे लाल,
 मणागार तो दर्शण उपीयोग छे रे लाल,
 तिण चारित नें कहे मणागार छे रे लाल,
 छ्त्रा गुणठांगा थी वारमां लगे रे लाल,
 तठा तांइ चारित में तीन भाव छे रे लाल,
 छ्त्रा गुणठाणा थी दसमां लगे रे लाल,
 उपसम चारित गुणठाणें इयारमें रे लाल,
 षायक उपसम षयउपसम चारित तिहां रे लाल,
 तिणसूं मणागार नें चारित जूजूआ रे लाल,
 चारित तो उपसम भाव जिण कहीं रे लाल,
 ए न्यारा २ दोनूं जाण जो रे लाल,
 दर्शणावर्णीं कर्म षयउपसम हुआं रे लाल,
 तिण मणागार ने चारित कहे रे लाल,
 चारित मोहणी कर्म उपसम हुआं रे लाल,
 तेहीज चारितमोहणी षय हुआं रे लाल,
 चारित मोहणी षयोपसम हुआं रे लाल,
 यां तीनां ने कहे मणागार छे रे लाल,
 चारित मोहणी कर्म घटीयां थकां रे लाल,
 दर्शणावर्णीं कर्म घटीयो तेहूं सूं रे लाल,
 तिण सूं मणागार नें चारित जूजूआ रे लाल,
 कोई चारित नें गिणें मणागार हो लाल,
 षयउपसम ग्यांन छ्दमस्थ रो रे लाल,
 तिण चारित नें मणागार मजांण जो रे लाल,

तिणरे उदे हूवो छे मिथ्यात हो ।
 कर २ भूठी वात हो ॥६८॥
 जूआ २ गुण तास हो ।
 तिणरी समकत रो हूवो छे विणास हो ॥६९॥
 निरणों कीयो छे तांम हो ।
 ते सुणजों राख चित्त ठाम हो ॥७०॥
 चारित नें कहे छे मणागार हो ।
 तिण में साच नहीं छे लिगार हो ॥७१॥
 जब पामें चारित श्रीकार हो ।
 ते तो निश्चेइ नहीं मणागार हो ॥७२॥
 चारित ने तो त्याग भाव जांण हो ।
 ते पिण पूरा मूढ अयांण हो ॥७३॥
 मणागार तो षयउपसम भाव हो ।
 तिणरो सुणो विवरा सुघ न्याव हो ॥७४॥
 षयउपसम चारित जांण हो ।
 षायक चारित वारमें गुणठांण हो ॥७५॥
 षयउपसम छे मणागार हो ।
 तिणमें शंका म राखो लिगार हो ॥७६॥
 मणागार उपसम भाव नांय हो ।
 यां नें एक सरधे वूडो कांय हो ॥७७॥
 जब नीपजे षयउपसम मणागार हो ।
 तिणरा घट मांहे घोर अंवार हो ॥७८॥
 जब उपसम चारित होय हो ।
 षायक चारित पामें सोय हो ॥७९॥
 षयउपसम चारित थाय हो ।
 ते तो चोडे मूला जाय हो ॥८०॥
 जब चारित पामें श्रीकार हो ।
 पामें छे षयउपसम मणागार हो ॥८१॥
 जूई जूई त्यांरी परजाय हो ।
 तिण गेंहला नें खबर न कांय हो ॥८२॥
 त्यांरा चारित मांहे तीन भाव हो ।
 यां रो जूओ २ छें सभाव हो ॥८३॥

चारित मोहणी कर्म उदें हूयां रे लाल,
 तिण अचारित नें कहे मणागार छे रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल,
 मणागार उदे भाव हुवे नहीं रे लाल,
 अचारित उदे भाव तेहथी रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव थी रे लाल,
 चारित सामायिकादिक तेहथी रे लाल,
 चारित रों प्रतिपक्ष अचारित हुवे रे लाल,
 मणागार बबीयां कर्म रुके नहीं रे लाल,
 वले कर्म न तूटे मणागार थी रे लाल,
 दर्सावर्णी कर्म घटे बधे रे लाल,
 मणागार बबीयां घटीयां थकां रे लाल,
 इविरत तो सावध छे अति बुरी रे लाल,
 तिण इविरत नें कहें मणागार छे रे लाल,
 कोइ मणागार ने चारित कहे रे लाल,
 संवर आश्व कहे मणागार नें रे लाल,
 मणागार तो संवर आश्व नहीं रे लाल,
 मणागार नें संवर आश्व कहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 चारित रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल,
 इविरत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 दसमें गुणठांणे चारित निरंतर हुवे रे लाल,
 जो मणागार चारित हुवे रे लाल,
 मणागार उपीयोग हुवे जिण समें रे लाल,
 तिणसूं सागार नें मणागार नों रे लाल,
 मणागार नो उपीयोग नहीं हुवे रे लाल,
 तिणसूं विरत इविरत मणागार नों रे लाल,
 विरत इविरत छे बेहूं जू जूइ रे लाल,
 यां दोयां नें मणागार म जाणजो रे लाल,
 विरत तो छे धर्म पक्ष मफे रे लाल,
 विरताविरत मिश्र पक्ष तीसरो रे लाल,

जब चारित रो अचारित हूवो जाण हो ।
 ते पूरा मूढ अयांण हो ॥ ८४ ॥
 अचारित तो उदे भाव जाण हो ।
 से निरणो करो चतुर सुजांण हो ॥ ८५ ॥
 इविरत किरीया लागे साख्यात हो ।
 पाप न लागे अंसमात हो ॥ ८६ ॥
 टलजाए किरिया पात हो ।
 विगड्यो सुखड्यो होय जात हो ॥ ८७ ॥
 घटियां पाप न लागे लिगार हो ।
 उजला लेखे निरवद मणागार हो ॥ ८८ ॥
 जब बधे घटे मणागार हो ।
 सावध नहीं नीपजे लिगार हो ॥ ८९ ॥
 तिणसूं पाप लागे दग चाल हो ।
 ते बोले छें आल पंपाल हो ॥ ९० ॥
 वले कहे मणागार नें इविरत हो ।
 ते तो कूड़ा करे छें निरत हो ॥ ९१ ॥
 संवर आश्व तो विरत इविरत हो ।
 ते चोडे भूलो छें निसरत हो ॥ ९२ ॥
 ते अंतर मोहरत मांहि हो ।
 किण ही समें विरहो पडे नांहि हो ॥ ९३ ॥
 किणही समें विरहो पडे नांहि हो ।
 ते विचार देखो मन मांहि हो ॥ ९४ ॥
 दसमें गुणठांणे नहीं मणागार हो ।
 तो चारित न हुवे तिणवार हो ॥ ९५ ॥
 तिण समें नहीं सागार उपीयोग हो ।
 समकाले वेहां रो नहीं जोग हो ॥ ९६ ॥
 जब विरत इविरत हुवे ताहि हो ।
 मिलाप नहीं मांहो मांहि हो ॥ ९७ ॥
 ते निश्चेंइ नहीं मणागार हो ।
 करे हीया में विचार हो ॥ ९८ ॥
 इविरत नें अधर्म पक्ष जाण हो ।
 यांरी पिण करज्यों पिछांण हो ॥ ९९ ॥

दोय तो पद्म धाल्या मणागार में रे लाल, मित्र पद्म किन् राखंसी न्यार हो ।
 जो इण नें इ कहे मणागार छे रे लाल, तो बंधारा में फेर बंधार हो ॥१००॥
 मित्र पद्म छे तीसरो रे लाल, मित्र पद्म पांच में गुणग्रंण हो ।
 चारित मोहणी उदे पयउपसम हूवां रे लाल, मित्र पद्म नीपजतो जाण हो ॥१०१॥
 मित्र पद्म मणागार निश्चें नहीं रे लाल, मणागार मित्र पद्म चांहि हो ।
 मित्र पद्म नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पडीया मिथ्यात रे मांहि हो ॥१०२॥
 तीनां पद्मां नें कहे मणागार छें रे लाल, तिणरे उदे हूवो छें मिथ्यात हो ।
 आप डूवें ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ कूडी वात हो ॥१०३॥
 तीनुं पद्म नें मणागार ज्योयोग रा रे लाल, जूडा २ गुण वास हो ।
 यां सगलां नें धाल्या मणागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हूवो छे विगास हो ॥१०४॥
 तीनां इ पय नें मणागार नां रे लाल, ए निरणों कह्यो छें तांम हो ।
 हिवें निरणो कहूंछुंतीनुंजोगांतणो रे लाल, ते मुणजो राख चित्त ठाम हो ॥१०५॥
 अठारे पापयानक सेवे तेहनां रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो ।
 ते तो चारित मोहणी रा उदा थकी रे लाल, ते तो निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०६॥
 हिंसा करे छे प्राणी जीवरी रे लाल, ते तो प्रणातपात आश्व दुवार हो ।
 ते पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०७॥
 मूठ बोले कोई मोटी छोटको रे लाल, ते मिरपावाद आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०८॥
 कोई छोटि मोटी चोरी करे रे लाल, ते अदत्तादान आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०९॥
 अस्त्रीयादिक सूं सेवें मैथुन नें रे लाल, ते मैथुन आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ मणागार हो ॥११०॥
 सचित्त अचित्त मित्र राखे परिग्रहो रे लाल, ते परिग्रह आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१११॥
 इम क्रोधादिक मिथ्यात अठारमों रे लाल, अठारोंइ आश्व दुवार हो ।
 अठारे पापयानक रा उदा थकी रे लाल, ते अठारोंइ नही मणागार हो ॥११२॥
 सतरे पापयानक छें चारित मोहणी रे लाल, अठारमों दंसण मोहणी जाण हो ।
 त्यांरा उदा सूं ए किरतव करे रे लाल, त्यांनं जूदा २ लो पिछांण हो ॥११३॥
 हिंसादिक अठारेइ किरतव करे रे लाल, ते अठारेंइ सावद्य जोग हो ।
 ते अठारोंइ आश्व दुवार छें रे लाल, निश्चेंइ नहीं मणागार उपयोग हो ॥११४॥
 हिंसा री इविरत निरंतर हुवे रे लाल, हिंसा रा जोग निरंतर नांहि हो ।
 हिंसा रा जोग तो हिंसा करे जवी रे लाल, विचार देखो मन मांहि हो ॥११५॥

हिंसादिक अठारे पाडूवा रे लाल, ज्यारी इविरत निरंतर जाण हो ।
 हिंसादिक रा जोग बरते जदी रे लाल, यांरी करो हीया मे पिछाण हो ॥ ११६ ॥
 यां अठारां री इविरत तेहना रे लाल, पूरा भेद कहां नही जाय हो ।
 यां अठारां रा किरतव माळजोगना रे लाल, कहितो २ पार न आय हो ॥ ११७ ॥
 अठारां री इविरत नें माळजोगने रे लाल, कहीजे आश्व दुवार हो ।
 ते मोहकर्म रा उदा थकी रे लाल, ते निश्चेइ नही मणागार हो ॥ ११८ ॥
 सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, केई कहे छे आश्व दुवार हो ।
 तिणरी उंधी सरधा छे सर्वथा रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥ ११९ ॥
 पनरे करमादांन सेवे जू जूवा रे लाल, आरंभ करे अनेक परकार हो ।
 विविष पर्णे किरतव पाडूआ करे रे लाल, त्यानें कहे छे ग्यानी मणागार हो ॥ १२० ॥
 वले कूटवो पीटवो नें रोयवो रे लाल, वले घर रा कारज अनेक हो ।
 त्यां सगलां नें कहे मणागार छे रे लाल, त्यां विकलां नें नही छे विवेक हो ॥ १२१ ॥
 आश्व संवर ने निरजरा तणा रे लाल, त्यांरा भेदां रो नही छे कोइ पार हो ।
 यां सगलां नें कहे मणागार छे रे लाल, तिण मिथ्यात कीयो अंगीकार हो ॥ १२२ ॥
 पसारी तणा हाट तेह में रे लाल, किराणों छे विवध परकार हो ।
 त्यांरी कोथलीयां छे जू जूइ रे लाल, यां में जूइ जूइ नो जाणकार हो ॥ १२३ ॥
 तिण पसारी रो वेठें हीया फूट थो रे लाल, तिण विकल में नही छे विवेक हो ।
 तिण सगली कोथलीयां खोलने रे लाल, किराणा रो कीयो ढिग एक हो ॥ १२४ ॥
 दोय कोथला हुंता तिणरी हाट में रे लाल, ते किराणो घाल्यो दोयां मांही हो ।
 ते मन में जाणेहूं डाहो घणो रे लाल, मोसरीषो म्हारो पिता पिणनांही हो ॥ १२५ ॥
 पूत कपूत हुवो पसारी तणो रे, तिण कीयो नीवी रो नास हो ।
 इण दिष्टते निन्व हूआ रे लाल, त्यां कीयो समकत रो विणास हो ॥ १२६ ॥
 अनंती परजाय छें जीवरी रे लाल, ते मांहो मांही न खाए मेल हो ।
 जे निन्हव हूआ उधी अकल का रे लाल, त्यां कर दीधी भेल संभेल हो ॥ १२७ ॥
 समकत नें मिथ्यात नी परजाय ने रे लाल, त्याने कहे छे सागार उपीयोग हो ।
 एहवा ववेक विकल निन्वां तणें रे लाल, लागो मिथ्यात रो रोग हो ॥ १२८ ॥
 वले चारित अचारत री परजाय ने रे लाल, त्याने कहे मणागार उपीयोग हो ।
 एहवा हीया फूट निन्वां तणी रे लाल, आ सरधा घणी छे अजोग हो ॥ १२९ ॥
 इत्यादिक जीवरी परजाय ने रे लाल, कर दीधी भेल संभेल हो ।
 जूइ जूइ परजाय नही ओलखी रे लाल, ते बोले वालक जिम वेहल हो ॥ १३० ॥
 सागार नों गुण जाणव तणा रे लाल, देखवा रो गुण छे मणागार हो ।
 और गुण अक्वगुण यांमें कोइ नही रे लाल, ते करो हीया में निस्तार हो ॥ १३१ ॥

सागर मणागार उपीयोग नें रे लाल, संवर आव्व म सरघो कोय हो ।
 जो संका पड़े इण बात में रे लाल, तीं सूतर नें लो जोय हो ॥ १३२ ॥
 संवत अठारे सेंतालेस में रे, फागुण विद आठम शनीसर वार हो ।
 जोड कीधी भव जीवांनें प्रति बोधवा रे लाल, नेणवा सहर मझार हो ॥ १३३ ॥



ढाल : १०

दुहा

च्यार कर्म धनघातिया, अन्न पटल ज्यूं जीवरे ताय ।
 ग्यानवर्णी दर्शनावर्णी मोहणी, चोथो कर्म अंतराय ॥ १ ॥
 च्यार कर्म षयउपशम हुआं, नीपजे निरवद भाव ।
 ते- निजगुण सुद्ध पर्याय छें, त्यांरो जूदो र छें सभाव ॥ २ ॥
 उजला लेखे सगलां भणी, निरवद कहुआ भगवान ।
 केइ गुणा सूं पाप कर्म छके, उजला लेखे सर्व निधान ॥ ३ ॥
 ए च्याखं कर्म उदे हुवां, पड़े गुणा री हाण ।
 जे र गुण विगड़े जिण कर्म थी, ते जाणें चतुर-सुजाण ॥ ४ ॥
 गुण विगड़े जिण र कर्म थी, ते भोला ने खबर न काय ।
 तिण सूं ऊंधी करे छें परूपणा, तिणरा जाब सुणो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

ग्यानवर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ गुण पामें श्रीकार रे ॥ सुगणनर* ॥
 च्यार ग्यान ने तीन अग्यान नें रे लाल, बले सूतर नों भणबो सार रे ॥ सु० ॥
 निज गुण रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
 ग्यानवर्णी कर्म रा उदा थकी रे, ग्यान तणो छे विगाड़ रे ।
 और गुण नही विगड़े एहथी रे, तिणमे संका नही छे लिगार रे ॥ सु० नि० २ ॥
 दर्शनावर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे, आठ बोल पामें श्रीकार रे ।
 पांच इन्द्री ने दर्शण तीन नें रे, और गुण नही पामें लिगार रे ॥ ३ ॥
 दर्शनावर्णी उदे हुआं रे, मणागार दर्शण रो विगार रे ।
 और गुण इणथी विगारे नही रे, इणरो तो ओहीज विचार रे ॥ ४ ॥
 मोहणी कर्म षयउपशम हुआं रे, आठ बोल नीपजे विशिष्ट रे ।
 च्यार चारित ने देश विरत पांचमों रे, बले क्षयोपशम तीन दिष्ट रे ॥ ५ ॥
 ते मोहणी कर्म उदे हुवां रे, समकत नें चारित नों विगार रे ।
 तिण-षयउपशम हुआं गुण नीपनां रे, त्यांरो विगारणहार रे ॥ ६ ॥
 अंतराय कर्म षयउपसस हुआं रे, आठ बोल पामें तंतसार रे ।
 पांच लब्धि नें वीर्य तीन नें रे, आठ गुण उजला श्रीकार रे ॥ ७ ॥

*प्रत्येक गाथा के अन्त मे इनकी पुनरावृत्ति है ।

अंतराय कर्म उदे हूआं रे, लब्धि नें वीर्य री पड़े हाण रे।
 अनेक वस्तु आडी होय रही रे लाल, तिणरी चोखी करज्यो पिछाण रे ॥ ८ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती इम कहें रे, मोह उदे सूं विगरे उपीयोग रे।
 कर्म बांधे विगख्या उपीयोग थी रे, तिण सूं बूढ़ रह्या छे लोक रे ॥
 सरधा सुणों निन्वां तणी रे लाल ॥ ९ ॥
 दंसण मोहणी उदे हुवे रे, जब पामें जीव मिथ्यात रे।
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छे रे, सागार विगख्यो कहे छे साख्यात रे ॥ १० ॥
 दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे, जब पामें समकत सार।
 तिण समकत नें कहे सागार छे रे, तिणमें साच नही छे लिगार रे ॥ ११ ॥
 चारित मोहरा उदा थकी रे, नीपजे माठी अविरत अजोग रे।
 तिण अविरत नें कहे मणागार छे रे, तिणरे लागो मिथ्यात नों रोग रे ॥ १२ ॥
 चारित मोहिणी षयउपसम हूआं रे, चारित नीपजे सुखदाय रे।
 तिण चारित नें कहे मणागार छे रे, एहवी कूड़ी करे बकवाय रे ॥ १३ ॥
 समकत तो सागार निश्चें नही रे, मिथ्यात पिण नही सागार रे।
 चारित ते मणागार निश्चें नही रे, अचरित पिण नही मणागार रे ॥ १४ ॥
 मोह कर्म उदे सूं विगड़े नही रे, सागार ने मणागार रे।
 दयादिक गुण विगरे मोह थी रे, कोइ बुधवंत करज्यो विचार रे ॥ १५ ॥
 मोहकर्म षयउपसम हूआं रे, दयादिक गुण नीपजे अठार रे।
 त्यांरो जूओ २ निरणो कहूं रे, तो कहितां न आवे पार रे ॥ १६ ॥
 वले निपजावे तो नीपजे रे, मोहणी कर्म परीयां हाण रे।
 निरबद्ध जोग निपजावे तो नीपजें रे, वले धर्म नें शुक्ल न्यान रे ॥ १७ ॥
 भली लेश्या निपजावे तो नीपजे रे, भला अध्ववसाय ने परिणाम रे।
 इत्यादिक गुण निपजाया नीपजें रे, ते मोह दूरो हूआं ताम रे ॥ १८ ॥
 वले मोह कर्म दूरो हूआं रे, मिट जाए तिण रो मिथ्यात रे।
 वले वीतराग भाव नीपजे रे, राग द्वेष षय जात रे ॥ १९ ॥
 इत्यादिक गुण निपजे अति घणा रे, ते सगलाई गुण श्रीकार रे।
 ते पामें मोहणी षयउपसम हूआं रे, त्यांरो कहितां न पामें पार रे ॥ २० ॥
 ते मोहणी कर्म उदे हूआं रे, समकत नें चारित रो विगार रे।
 मोह षयउपसम हूआं गुण नीपना रे, त्यां गुणरो विगारणहार रे ॥ २१ ॥
 समकत विगरे मिथ्याती हूओ रे, दंसण मोह उदे सूं जाण रे।
 चारित मोह कर्म रा उदा थकी रे, पडी कुण २ गुणांरी हाण रे ॥ २२ ॥
 दया तणो गुण मिट गयो रे, हिसा रो अवगुण प्रगट थाय रे।
 झूठ चोरी मैथुन परिग्रहो रे, एइवा ओगुण बवे छे ताय रे ॥ २३ ॥

*प्रत्येक गाथा के बाद यह आंकड़ी है।

क्षमा नरमाइ विगरे मोह थी रे, वले सरलपणो संतोष रे ।
 क्रोध मान माया लोभ परगटे रे, मोह कर्म उदे सूं एहवा दोष रे ॥ २४ ॥
 वीतरागपणो विगार दे रे, राग द्वेष वधे तिणसूं ताम रे ।
 घणा - कर्म बंधे राग द्वेष थी रे, वले माठा वरते परिणाम रे ॥ २५ ॥
 वले मोह कर्म रा उदा थकी रे, अविरत नीपजे ताम रे ।
 सतरे पाप सेवण रो उद्यम करे रे, अनेक सावद्य करे काम रे ॥ २६ ॥
 सतरे पापथानक सेवे जीवडो रे, माठी लेख्या माठा अध्यवसाय रे ।
 ध्यावे आर्ती रीद्र ध्यान नें रे, चारित मोह उदे सूं ताय रे ॥ २७ ॥
 माठा जोग वरते छे जीवरा रे, ते पिण मोह उदा सूं जाण रे ।
 कहि - २ नें कितरो कहुं रे, ते करज्यो हिया में पिछाण रे ॥ २८ ॥
 मोहणी कर्म षयउपसम हूआं रे, गुण नीपजे श्रीकार रे ।
 ते उदे हूआं यांहीज गुणा तणों रे, ओहीज विगारणहार रे ॥ २९ ॥
 कोइ मूढ मिथ्याती इम कहे रे, ग्यान आडो छे मोहणी कर्म रे ।
 ते विवेक विकल सुधवुव विनां रे, ते तो भूलो अग्यानी भर्म रे ॥ ३० ॥
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, मोह बारमें गुणठाणे हुवे दूर रे ।
 जब केवलग्यान न उपजे रे, तो पडी सरघा में घूर रे ॥ ३१ ॥
 ग्यान आडो कहे कर्म मोहणी रे, ते पूरा मूढ गिंवार रे ।
 आप हुवे ओरोंनें डुबोवता रे, साची सरघा सूं करे छे खुवार रे ॥ ३२ ॥
 नाण मोह चाल्यो सूतर मभे रे, तो ग्यान में उपजे व्यामोह रे ।
 ते ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते मोह निश्चेई न कोय रे ॥ ३३ ॥
 नाणमूढे कह्यो सूतर मभे रे, ग्यानावर्णी उदे सूं जाण रे ।
 व्यामोह पडे तिण जीव ने रे, तिणरी पूरी न करे पिछांण रे ॥ ३४ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, व्यामोह पामे छे ताय रे ।
 तिण व्यामोह नें थाप्यो मोहणी रे, भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
 दिसामोहेण कह्यो आवसग मभे रे, ते दिसि नें पाम्यो व्यामोह रे ।
 ते पिण ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते हिरदे विचारी जोय रे ॥ ३६ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ग्यान भूले सांसो पर जाय रे ।
 दंसणमोहणी रा उदा थकी रे, पदार्थ उंचो सरघाय रे ॥ ३७ ॥
 मोहणी कर्म जावक षय गयो रे, जब आयो वारमें गुण ठांण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते षय गयां उपजे केवलनाण रे ॥ ३८ ॥
 मोहणी कर्म जावक उपशाम्यो रे, इग्यार में गुणठाण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते उपशाम्यो उपजे उपनाम नाण रे ॥ ३९ ॥

जात कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर ने ठुकराय ।
 ए आठोंइ मदरा कारण कहा, पिण एतो नही मदरा उपाय ॥ ५ ॥
 आठ बोल ज्यूं पांचूइ इंदर्यां, ए पिण कारण कहि छे ताय ।
 आठ बोलां सूं पाप लागे नहीं, ज्यूं इंदर्यांसुं पिण पाप न थाय ॥ ६ ॥
 जो पांचूं इंदरी सावद्य हुवे, तो ए पिण आठुइ सावद्य होय ।
 जो ए आठूं बोल सावद्य नहीं, तो पांचूं इंदरी सावद्य नहीं कोय ॥ ७ ॥
 कोइ कहे आंधो हुवें छें तेहनें, देखण रो पाप टल जाय ।
 तो सुतर भण नें कोइ वीसख्यो, तिण रे टलीयो सुतर मद ताय ॥ ८ ॥
 कानें बहरो हूवो तेहने, सुणवारो पाप मिटियो ताय ।
 कोइ तप करनें भागल हुवो, तिणरे पिण तप मद मिट जाय ॥ ९ ॥
 इण विद्य पांचूं इंदरी हीणी पख्यां, त्यारो पाप न लागे आय ।
 तो जात कुलादिक आठुइ मिष्ट हुवें, तिणरे आठुइ मद मिट जाय ॥ १० ॥
 पांच इंदरी तो सावद्य नहीं, जातादिक आठूं मद नहीं ताहिं ।
 रागद्वेष ओलखायो छे एहथी, ते निरणो करो घट माहिं ॥ ११ ॥
 इंद्री घटीयां सूं गुण वधीयो कहे, ते जिण मारग रा अजाण ।
 इंद्री घटे छे उसभ उदे हूवां, तिणरी विकलां नें नही छे पिछाण ॥ १२ ॥
 उणरी सरघा रे लेखे इंदरीहार नें, थावर में उपनां गुण होय ।
 जात कुलादिक आठां तणो, त्यारे मद नहि आवे कोय ॥ १३ ॥
 उणरे लेखे मिनष छें दलदरी, हीयाफूट इंद्रीहीण होय ।
 जातादिक आठूं हीणा हुवां, तिणरे मद नहीं आवे कोय ॥ १४ ॥
 जीव नीच जाति माहे उपनो, तिणरे जात रो मद आवे नाहिं ।
 जो नीच कुल में जीव उपनो, तो कुल मद नही आवे मन माहिं ॥ १५ ॥
 जो बल करनें निरबल हुवें, तो बल रो मद नावें ल्गार ।
 जो रूप मे जीव कुरूप हुवे, तो रूप रो नही आवे अहंकार ॥ १६ ॥
 तपसा तिण सूं मूल हुवें नहीं, तिणरे तपसा रो मद नहीं आय ।
 अस्वणादिक जाबक मिले नही, तिण नें लाभ रो मद मावें ताय ॥ १७ ॥
 कोई ठोठ तो सुतर भणे नही, तो सुतर मद नावें ताय ।
 जो सिखादिक जाबक मिले नहीं, तो ठुकराइ रो मद नहीं आय ॥ १८ ॥
 जातादिक आठूं पामें पाडूवा, ते उसभ कर्म सूं जाण ।
 पांचूं इंद्री हीणी पडे तेहनें, उसभ कर्म उदे हुआ आण ॥ १९ ॥
 उसभ उदे सूं गुण नीपनां कहे, तिणरे उदे हूओ छें मिथ्यात ।
 उसभ घटीया सावद्य नीपणों कहे, आतो विकला वाली छें वात ॥ २० ॥

कोई जीव दो भागी नें दल दलदरी, दुख भोगवे विविध परकार ।
 तिणनें चावे ते वस्त मिले नहीं, तिणरे गुण कहें मूढ गिवार ॥ २१ ॥
 एतो उदें आया कर्म भोगवे, तिणरे गुण नहीं हुआ लिंगार ।
 गुण तो होसी जद जीवरे, मिलीया त्यागसी तिण वार ॥ २२ ॥
 रूडा रूप छे विविध प्रकार नां, त्यां ने देखे चषू इंद्री तांम ।
 रूप नें चषू इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य छे खोटा परिणाम ॥ २३ ॥
 रूडा शब्द विविध प्रकार नां, ते सुणे सुरत इंद्री तांम ।
 शब्द नें सुरत इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २४ ॥
 रूडा गंध छे विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे घणेद्री तांम ।
 गंध नें घाणेद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २५ ॥
 रूडा रस विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे रस इंद्री तांम ।
 रस ने रस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २६ ॥
 रूडा फरस छे विविध प्रकार ना, त्यांने वेदे फरस इंद्री तांम ।
 फरस नें फरस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २७ ॥
 शब्दादिक पांचूं रूडा उपरे, राग ते सावद्य जाण ।
 शब्दादिक पांचूं पाडुआ उपरे, धेष आवे ते सावद्य पिच्छाण ॥ २८ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, जो ग्रिघपणो करे कोय ।
 ते जिण अगना रो चोर छे, तिणरो चारित कोयला होय ॥ २९ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, ग्रिघपणो करे नहीं कोय ।
 तिणरो चारित न हूवो कोयला, तिणरे कर्म निरजरा होय ॥ ३० ॥
 रस इंद्री सावद्य नहीं, सावद्य नहीं मनोग्य आहार ।
 ग्रिघपणा ने सावद्य कह्यो, तिणसू चारित हूवो छार ॥ ३१ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष करे तिण वार ।
 तिणरे चारित में धूवो उठीयो, हूवो श्री जिण आगना वार ॥ ३२ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष न आणे लिंगार ।
 तिणरो चारित कुसले रह्यो, बले कर्म तूटा तिण वार ॥ ३३ ॥
 रस इंद्री तो सावद्य नहीं, सावद्य नहीं अमनोग्य आहार ।
 धेष आयो तिण नें सावद्य कह्यो, तिणसूं हूवो चारित रो विगार ॥ ३४ ॥
 देखो राग धेष सावद्य कह्यो, ते सावद्य जोग व्यापार ।
 भगोतीरे सतक खंद सातमे, पेंहिला उदेसामें विसतार ॥ ३५ ॥
 श्रेणिक राजा ने राणी चेलणा, त्यांरो रूप मनोहर देख ।
 साधु साधवियां नीहाणो कीयो, त्यांरा खोटा परिणाम विशेष ॥ ३६ ॥

ढाल : १२

दुहा

केइ भारीकर्मा जीवडा, ते कर रह्या कूडी टेक ।
 ते पांचू इंदरयां नें सावद्य कहें, ते बूडे छे विना ववेक ॥ १ ॥
 जो इंदरयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटीयां सावद्य मिट जाया ।
 उणरे लेखे इंद्री हारीयां, लाभ अनंतो थाय ॥ २ ॥
 इंद्रयां प्रयउपसम भावछे निरमलो, केवल दरसण मांहिली चीज ।
 त्यां इंदरयां नें सावद्य कहे, ते रह्या मिथ्यात में भोज ॥ ३ ॥
 कहे जो इंदरयां कायम रहे, तो पडे नरक में जाय ।
 दूसरो ओगुण कहे इंदरयां ममे, ते एकंत मूसावाय ॥ ४ ॥
 अवगुण तो छें राग घेष में, ते दीया इंदरयां सिर नांख ।
 त्यांने किम समझावियें, ज्यांरी फूटी अभितर आंख ॥ ५ ॥
 केइ शब्दादिक सुख भोगवे घणा, तो ही जावे देवलोक मांय ।
 त्यांरी इंदरया पिण कुसले रहे, तिणरो जाणे समदिप्टीन्याय ॥ ६ ॥
 इंदरयां काम रहां कह नारकी, ते भूठ रा बोलणहार ।
 तिणरी खीटीसरजारो निरणो कहूं, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[पाषण्ड वधसी आरे पांच में]

तीन पल आउषारा जुगलीया रे, त्यांरी तीन कोस री- हूंती काय रे ।
 इंद्री पांचौइ त्यांरी निरमली रे, ते मरनें निश्चेंइ देवता थाय रे ।
 इंदरयां ने सावद्य कोइ मत जांणज्यो रे* ॥ १ ॥
 जुगलीया मरने हुवे छे देवता रे, त्यांरे हूंता शब्दादिक नां सुंख पूर रे ।
 इंदरी कायम रहां कहे नारकी रे, तिणरी सरघा रो प्रतष देखो कूड रे ॥ २ ॥
 काम ने भोग जुगलीयां रे घणा रे, त्यांरा सुख पूरा केम कहवाय रे ।
 पिण राग ने घेष तीवर नहीं तेहने रे, तिणसूं जुगलीया नरक न जाय रे ॥ ३ ॥
 काम ने भोग उत्तकप्टा भोगवे रे, जो उत्तकप्टो राग तिणसूं होय रे ।
 तो जुगलीयो मरने जाए नारकी रे, देवता होय न सके कोय रे ॥ ४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते वांजत्र सुणे छे विविध प्रकार नां रे,
 कसबोइ लेवे विविध प्रकार नां रे,
 फरस भोगवे विविध प्रकार नां रे,
 पिण राग नें घेष तिणा रें पातला रे,
 जुगलीयां रा सुख रे भाग अनंत में रे,
 जो राग ने घेष त्यांरे प्रबल हुवे रे,
 ए प्रतष अवगुण छे राग घेष में रे,
 पाप लागे छे सवद्य जोग थी रे,
 घणा काम नें भोग जुलीयां भोगवे रे,
 केइ थोडा भोगवीयां जाए नरक में रे,
 जुगलीयां रा सुख सूं सुख अनंत गुणा रे,
 पिण मूर्छां नें तिसणा त्यांरे अल्प छें रे,
 भवणपति नें व्यंतर जोतवी रे,
 त्यां सगला रा सुख सूं अनंत गुणा रे,
 त्यां रे सुख छें उतकष्टा शब्दादिक तणां रे,
 त्यां रे अल्प कर्म लागे छे तेह सू रे,
 केइ दोनूंइ पुरष बरोबर भोगवे रे,
 पिण पाप न लागे त्यांने सारिषो रे,
 कोइ काम नें भोग तीवर परिणाम सूं रे,
 तिण मूर्छां सूं पाप लागे छे चीकणा रे,
 कोइ काम ने भोग मनोग्य भोगवे रे,
 तो अल्प कर्म लागे तिण राग थी रे,
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडुवा रे,
 तिण घेष सूं कर्म लागे छे चीकणा रे,
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडुवा रे,
 तो अल्प कर्म लागे तिण घेष थी रे,
 राग ने घेष करे छे जीवडो रे,
 जेहवो करे छे तेहवो पाप नीपजे रे,
 घेष सूं तंदुल नामे माछलो रे,
 ते एकंत सावद्य मन रा जोग थी रे,
 नाटक पड़े छे विविध प्रकारना रे,
 बले गीत ने नाद घणा रलीयामणा रे,

बले विविध प्रकारे देखे रूप रे।
 भोजन करे छे विविध अनूप रे ॥ ५ ॥
 त्यांरे कांमभोग घणा सुखदाय रे।
 तिण सूं तो अल्प पाप बंधाय रे ॥ ६ ॥
 केइ राजा नां सुख छें अल्प लिगार रे।
 तो पादरा जाए नरक मभार रे ॥ ७ ॥
 ते इंदरयां रे माथे न्हाषिं कांय रे।
 विचार करे देखो मन मांय रे ॥ ८ ॥
 ते तो न जाए नरक मभार रे।
 तिणरो कोइ बुधिवंत करो विचार रे ॥ ९ ॥
 एक सवार्थ सिद्ध देवतां रा जाण रे।
 तो अल्प कर्म लागे छें आंण रे ॥ १० ॥
 बले नर मनष सगलाइ नर नार रे।
 एक देवता रा सवार्थ सिद्ध मभार रे ॥ ११ ॥
 पिण राग नें घेष अल्प छे ताय रे।
 ते मिनष थइ ने मुक्ति में जाय रे ॥ १२ ॥
 काम ने भोग मनोग्य जाण रे।
 पाप परिणामा लार पिछांण रे ॥ १३ ॥
 भोगवे गाढी मूर्छां आंण रे।
 ते पिण इंदरयां रो दोष म जाण रे ॥ १४ ॥
 तिण ऊपर आणे अल्पसो राग रे।
 ते पिण इंदर्यां रो नही विभाग रे ॥ १५ ॥
 त्यां ऊपर करे जो गाढो घेष रे।
 ते इंदर्यां रो काई नही विशेष रे ॥ १६ ॥
 तिण उपर करे अल्प सो घेष रे।
 ते पिण इंदर्यां रो नहीं विशेष रे ॥ १७ ॥
 जगन मभ्रम उतकष्टो जाण रे।
 पिण इंदर्यां सूं पाप न लागे आंण रे ॥ १८ ॥
 गयो छे सातमी नरक मभार रे।
 तिणरी इंदरी में दोष नही लिगार रे ॥ १९ ॥
 तिहां बांजत्र बाज रह्या धुंकार रे।
 ते तो सावद्य जोग तणों व्यापार रे ॥ २० ॥

ते नाटक देखे छे, गायां भेंसीया रे, वले तेहीज नाटक देखे नर नार रे।
वले गीत वाजंत्र सघला सांमले रे, यां में कुण २ कर्मां रा बांघणहार रे ॥ २१ ॥
नाटक देखे छे, गायां भेंसीयां रे, त्यानिं तो समझ पड़ी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नहीं वरतीयो रे, देख्यां सू पाप न लागे ताय रे ॥ २२ ॥
गीत सुणियां छे, गायां भेंसीयां रे, त्यानिं तो समझ पड़ी नहीं काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नहीं वरतीयो रे, त्यानिं सुणीयां सू पाप न लागो ताय रे ॥ २३ ॥
त्यांरे सुणीयां देख्यांरी नही विचारणा रे, विचार्यां विन मन सूं हरप न थाय रे।
कदा कोयक विचारी नें हरखत हुवे रे, जब तिणरे पिण पाप कर्म बंधाय रे ॥ २४ ॥
तेहीज नाटक देख्या नर नारीयां रे, ते मन सूं हुआ घणा गलतान रे।
जब पाप लागो छे मनरा जोग थी रे, तिण पाप सूं होसी घणा हेरान रे ॥ २५ ॥
तेहीज गीत सुण्यां नर नारीयां रे, वले सुणीयां वाजंत्र ना धुंकार रे।
जब केइ नर नारी मनसूं हरषीया रे, त्यां सघलां ने पाप लागो तिण वार रे ॥ २६ ॥
ते नाटक देख ने कोइ हरष्यो नहीं रे, नही हरष्यो सुणने वाजंत्र गीत रे।
जब पाप न लागो तिणने सर्वथा रे, इंदरयां नें दोष नहीं इण रीत रे ॥ २७ ॥
नाटक देख्यो छे, गायां भेंसीयां रे, नाटक देख्यो नरनारी ताम रे।
यांमें पाप कर्म लागो छे जेहनें रे, जिणरा वरत्या खोटा परिणाम रे ॥ २८ ॥
पाप न लागे सुणिया देपीयां रे, तिण माहें संका मूल म आण रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, मोह उदे भाव नीपन सूं जाण रे ॥ २९ ॥
च्यार कषाय नें तीन वेद थी रे, वले मिथ्यात इविरत सेती जाण रे।
माठी लेस्या ने माठा जोग सूं रे, यां बोलां सूं पाप लागे छे आण रे ॥ ३० ॥
वले कोइ मोह उदे सू नीपना रे, त्यांसूं पिण लागे पाप एकंत रे।
पिण पाप न लागे षयउपसम भावथी रे, विचार करे देखो मतवंत रे ॥ ३१ ॥
सात कर्म उदा सूं नीपनां रे, तिण सूं इ पाप न लागे आय रे।
तो षयउपसम कर्म हुआं गुण नीपनां रे, त्यां गुणा सूं पाप केम बंधाय रे ॥ ३२ ॥
पाप बधे कहे षयउपसम भाव थी रे, तिणरी सरघा में पूरो घोर अंधार रे।
ते आप डूबें ओरां ने बोवता रे, तिण जीतव जन्म दियो विगार रे ॥ ३३ ॥
पांचू इंदर्यां ने मेहले मोकली रे, ते शब्दादिक माहें त्रिधी थाय रे।
ते निरुचेइ राग तणी परजाय छे रे, तिणसूं सावद्य जोग वरते छे ताय रे ॥ ३४ ॥
पांचू इंदर्यां ने जो कोई वस करे रे, ते त्रिधी शब्दादिक सूं नहीं थाय रे।
ते तो वीतराग तणी परजाय छें रे, जब निरवद जोग वरते छे ताय रे ॥ ३५ ॥
इंदर्यां तो षयउपसम भाव छे निरमलो रे, तिण सूं तो पाप न लागे आय रे।
पाप लागे छे उदे भाव थी रे, ते राग ने घेप तणी परजाय रे ॥ ३६ ॥

पांचूं इंद्रियां नें राग घेष रो रे, सभाव जूओ २ छे तांम रे।
 इंद्रियां रा सभाव मांहे अवगुण नही रे, कषाय तणा खोटा परिणाम रे ॥३७॥
 काम नें भोग शब्दादिक तेह थी रे, समता नही पामें जीव लिगार रे।
 असमता पिण नहीं पामें छे एहथी रे, यां सूं मूल न पामें जीव विकार रे ॥३८॥
 जो राग ने घेष आणे त्यां ऊपरे रे, ते हिज विकार विषय कषाय रे।
 ते कह्यो छे उत्तराखेन वत्तीस में रे, सो उपरली पहली गाथा मांय , रे ॥ ३९॥
 इंद्रियां नें राग घेष ओलखायवा रे, जोड कीधी आंतरदा गांम मभार रे।
 संवत अठारे सेंताले समें रे, वैसाख सुदि वारस ने रविवार रे ॥४०॥

ढलल : १३

दुहल

केइ इंदरयां नें सावद्य कहे, ते जिणमारग ना अजाणं ।
 ते आगम अर्थ अंवल करे, बूडे छें कर कर तांण ॥ १ ॥
 पांचू इंदरी दमवी कही, निग्रह करवी कही छे ताय ।
 वले इंद्रयां नें संवरवी कही, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ २ ॥
 शब्द सुणें रूडा पाडुआ, राग घेष न करवो ताय ।
 निग्रह करवी कही छे इण विघे, दमणी संवरवी इण न्याय ॥ ३ ॥
 रूप दीठा रूडा पाडुआ, राग द्वेष न करवो ताय ।
 इण विघ निग्रह करवी कही, दमवी संवरवी इण न्याय ॥ ४ ॥
 शेष इंदरी तीनां तणो, इण रीत सूं कहणो ताय ।
 निग्रह करणी दमणी ने संवरवी, सगलां रो छे ओहीज न्याय ॥ ५ ॥
 राग घेष उपजे जीव रे, शब्दादिक थी ताय ।
 ते इंदरयां कर ओलखावीयो, ते भोलां नें खबर न कांय ॥ ६ ॥
 ते आंगुण तो राग घेष में, पिण इंदरयां में आंगुण नांहि ।
 इंद्रयां हिसादिक अठारा में नही, विचार देखो मन मांहि ॥ ७ ॥
 इंदरयां ने सावद्य निरवद कहे, ते परमारथ रा अजाणं ।
 हिवे जथातथ निरणो कहूं, ते सुणजों चुतर सुजाणं ॥ ८ ॥

ढलल

[चन्दगुप्त राजा सुणो]

शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणे सुरतइद्री ताह्यो रे ।
 तिण सूं हरष ने सोगरो आगार छे, ते इविरत कही जिण राग्यो रे ।
 कोइ इंदरयां नें सावद्य मत जाणजों ॥ १ ॥
 इविरत अत्यागभाव तेहसूं, पाप लागे निरतर आणो रे ।
 शब्द सुणियां रो कारण को नही, इविरत संबंधीयो पाप जाणो रे ॥ को० २ ॥
 शब्द रूडा ने पाडुआ, ते सुणियां हर्ष सोग थायो रे ।
 तिणरा सावद्य जोग वरतीया, मन वचन नें कायो रे ॥ ३ ॥
 तिण सावद्य जोग थी जीवरे, पाप कर्म आय लागे रे ।
 जोग वरते तठा ताई जाणज्यो, तिणरो नही निरंतर पाप आगे रे ॥
 २२

शब्द रूडा नें पाडुवा, ते सुणे सुरत इंद्री ताह्यो रे ।
 त्यां सूं हरष नें सोगरा त्याग छे, तिणनं विरत कही जिण रायो रे ॥ ५ ॥
 ते विरत त्याग भाव तेहसूं, रूके निरंतर पापो रे ।
 शब्द सुणीयां रो कारण को नहीं, थिर परिणाम राख्या थापो रे ॥ ६ ॥
 शब्द रूडा नें पाडुवा, जो सुणनं वेराग आणे ताह्यो रे ।
 तिण रा जोग निरवद वरतीया, मन वचन नें कायो रे ॥ ७ ॥
 तिण निरवद जोग थी जीव रे, कटे छे पाप कर्मो रे ।
 ते जोग वरते छे त्यां लगे, ते पिण नहीं निरंतर धर्मो रे ॥ ८ ॥
 शब्द री विरत ने निरवद जोग थी, हुवे छे संवर निरजरा धर्मो रे ।
 शब्द री इविरत नें माठा जोग थी, लागे छे पाप कर्मो रे ॥ ९ ॥
 विरत नें निरवद जोग वरतीया, ए दोनूं इंदरयां नाही रे ।
 इविरत नें सावद्य जोग वरतीया, ते पिण इंदरयां नहीं कांड रे ॥ १० ॥
 शेष च्याहं इंदरयां भणी, सुरत इंद्री जेम पिच्छाणो रे ।
 विरत इविरत सुभ उमुभ जोग थी, सघली इंदरयां नें न्यारी जाणो रे ॥ ११ ॥
 शब्दादिक रूडा नें पाडुवा तणा, इविरत नें उमुभ जोग भूंड रे ।
 पिण इंदरयां नें भूंडी मत जांगजों, छोड मिथ्यात री रूडा रे ॥ १२ ॥
 पांचूं इंदरयां नें संवर कही, वले मन वचन ने काया रे ।
 मंड उवगरण ने सूची कुसग, ए दसोंई संवर बताया रे ॥ १३ ॥
 एहीज दसोंई असंवर कह्या, त्यां नें रूडी रीत पिच्छाणो रे ।
 एतो दसोंई संवर असंवर नहीं, त्यांरो न्याय परमारथ जाणो रे ॥ १४ ॥
 शब्दादिक पांचूं विषें रा त्याग छे, मन वचन काया इम जाणो रे ।
 माठा वरतावण रा त्याग छे, संवर एह पिच्छाणो रे ॥ १५ ॥
 मंड उपगरण री ममता रो त्याग छे, वले अजयणा करवारो त्यागो रे ।
 सूची कुसग अजयणा रो त्याग छे, ए दसोंई संवर त्याग वेरागो रे ॥ १६ ॥
 शब्दादिक आदि सूची कुसग नों, नहीं त्याग्या दसोंई बोल तामो रे ।
 वले जोग वरतावे पाडुवा, ते असंवर खोटा परिणामो रे ॥ १७ ॥
 संवर नें आस्रव दोनूं तणो, ते इंद्रयां सूं कांड लेखो रे ।
 संवर भांगा इंद्रयां भागे नहीं, इविरत पिण इमहीज देखो रे ॥ १८ ॥
 प्रथवी पाणी तेउ बाउ काय नें, वनसपती ने बेंद्री कायो रे ।
 तेइंद्री चोरिंद्री नें पचिंद्री, दसमों अजीव काय बतायो रे ॥ १९ ॥
 प्रथवी कायादिक दसां भणी, संजम कह्यो ठाणाअंग मांह्यो रे ।
 यां दसाई नें असंजम कह्यो, तिणरो मूढ न जाणे न्यायो रे ॥ २० ॥

प्रथवी कायादि दसोंइ संजम नही, असंजम पिण नहीं छे दसोंई रे ।
 यांनं हणवा रो त्याग संजम कह्यो, विना त्याग असंजम कह्यो सोई रे ॥ २१ ॥
 संजम असंजम नें इंद्रयां कहे, ते पूरा मूढ अयांगो रे ।
 संजम असंजम नें इंद्रयां भणी, निश्चेइ जूवा २ जाणो रे ॥ २२ ॥
 मोह उदे नें षयउपसम हूआं, संजम नें असंजम जाणो रे ।
 दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम्यां, पांचूं इंद्रयां प्रंगटी पिछ्छाणो रे ॥ २३ ॥
 संजम नें तो संवर जाणजो, असंजम नें असंवर जाणो रे ।
 त्यांनं इंद्रयां कही किण कारणे, तिणरी करो हिया में पिछ्छाणो रे ॥ २४ ॥
 सुरतइंद्री नें मेले मोकली, तिणें सुरतइंद्री मत जाणो रे ।
 मोकली मेहेले ते भाव और छे, तिण नें रूडी रीत पिछ्छाणो रे ॥ २५ ॥
 सुरतइंद्री नों सभाव सुणवा तणो, मोकली मेले ते राग घेषो रे ।
 ए सांप्रत दोनूंइ जूजूआ, यां दोयां ने एक म लेखो रे ॥ २६ ॥
 सुरतइंद्री सुणे ते जीव छे, ते तो षयउपसम भाव छे चोखो रे ।
 मोकली मेले ते पिण जीव छे, ते तो उदे भाव सदोखो रे ॥ २७ ॥
 उदे नें षयउपसम भाव दोय छे, त्यां ने एक कोइ मत जाणो रे ।
 षयउपसम सूं कर्म लागे नही, उदे भाव सूं कर्म लागे आणो रे ॥ २८ ॥
 चषू इंद्री नें मेहेले मोकली, तिणें चषू इंद्री मत जाणो रे ।
 सुरतइंद्री जिम पांचूं इंद्रयां भणी, इणहीज रीत पिछ्छाणो रे ॥ २९ ॥
 पांचूं इंद्रयां नें सत्रू कही, उत्तराधेन तेवीसमां मभारो रे ।
 ते राग घेष ओलखायो इंद्रयां करी, तिणरो पिंडत जाणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 चोर कही पांचूं इंद्रयां भणी, उत्तराधेन बत्तीस मां मभारो रे ।
 ते विकार उलखायो इंद्रयां करी, तिणरो बुधवंत जाणे विचारो रे ॥ ३१ ॥
 एक २ इंद्री रा विकार सूं, मरण पाम्यां छे अकालो रे ।
 ग्रिधी थका राग पीडिया, त्यांरी घात हुइ ततकालो रे ॥ ३२ ॥
 रूप रे विषे ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो पतंगीयो, रूप लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३३ ॥
 ग्रिधी घणो मनोग्य शब्द सूं, ते पामें विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो मिरगलो, शब्द लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३४ ॥
 मनोग्य गंध सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो सर्प गंध ओषधी, गंध लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३५ ॥
 मनोग्य रस सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो मछमांस नें ग्रहे, रस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३६ ॥

मनोग्य फर्श सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो महिप जल पडे, फरस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३७ ॥
 मनोग्य भाव सूं ग्रिधी घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो हस्ती कामभोग सूं, लम्पटपणा सूं मरे ततकालो रे ॥ ३८ ॥
 एक २ इंद्रि नां विकार थी, पामी अकाले घातो रे ।
 आतो इण भव केरी वानगी, कहे दिखाई छे वातो रे ॥ ३९ ॥
 एक २ इंद्रि ना विकार थी, दुख पामें छे एमो रे ।
 तो पांचू इंद्रि ना विकार थी, दुखां नों कहियो केमो रे ॥ ४० ॥
 इंद्रयां रा विकार राग घेष छे, ते इंद्रयां रा गुण थी न्यारा रे ।
 इंद्रयां तो शब्दादिक सुणे देख ले, शब्दादिक राग सूं लागे प्यारा रे ॥ ४१ ॥
 शब्दादिक जयातथ जाण्यां देषीयां, पाप न लागे लगारो रे ।
 पाप लागे छे राग घेष आणियां, राग घेष छे विषय विकारो रे ॥ ४२ ॥
 राग नें घेष दोनूं पय क्रियां, तो वितरागी गुण थावे रे ।
 इंद्रयां तो कुसले रहे, ए तो केवल दर्शन में समावे रे ॥ ४३ ॥
 तिण सूं इंद्रयां तो सावद्य नहीं, सावद्य छे राग घेषो रे ।
 पाप कर्म लागे तेहथी, ते तो इंद्रयां रो नहीं लेखो रे ॥ ४४ ॥
 करलो वचन कह्यो श्रवणे सुण्यो, मन सूं जाण्यो जब जाग्यो घेषो रे ।
 तिणरो गरीर सघलोइ प्रजल्यो, आंख्यां हुई लाल वगेषो रे ॥ ४५ ॥
 विपेकारी वचन श्रवणे सुण्यो, मनसूं जाण्यो जब उपनो रागो रे ।
 सगलो सरीर विपे सूं फलफूलीयो, विकार सहित जोवा लागो रे ॥ ४६ ॥
 राग द्वेष छे सर्व प्रदेस में, तिणसूं सर्व प्रदेसां पाप लागे रे ।
 बले सावद्य जोग कषाय थी, पाप लागे नें निजगुण भागे रे ॥ ४७ ॥
 बले कहि २ नें कितरो कहूं, इंद्रयां नें सावद्य मत जाणो रे ।
 इंद्रयां सू पाप लागे नहीं, त्यांनैं हडी रीत पिछांणो रे ॥ ४८ ॥
 जोड कीची इंद्रयां नें ओलबायवा, इंद्रगढ सहर मभारो रे ।
 संवत अठारे सेंताले समें, जेठ विद चवदस सोमवारो रे ॥ ४९ ॥

दुहल

केह इंदरयां नें मूढ सावद्य कहे, कूडा २ कुहेत ल्गाय ।
 तिण श्री जिण वचन उथापने, खांच लीधी गलारे मांय ॥ १ ॥
 कहे इंद्रयां निग्रह करणी कही, दमणी जीतणी कहीं ठांम २ ।
 वस करणी नें संवरणी कही, सावद्य छे तो कही छे आंम ॥ २ ॥
 इण विघ करे छे परूपणा, तिणरो मूल न जाणे भरम ।
 तिण रहिस न जांण्यो सिद्धांत रो, भूला अज्ञानी भरम ॥ ३ ॥
 पांचूं इंदरयां नें सावद्य थापवा, करे अनेक उपाय ।
 वले खोटी २ जोडां करे, भोला लोकां ने दीया भरमाय ॥ ४ ॥
 इंदरयां नें निग्रह करणी कही, तिणरो न्याय न जाणे मूढ ।
 तिण सूं उंधी करे छे परूपणा, मूठी माल रह्या छे रुढ ॥ ५ ॥
 शब्दादिक पांचूं उपरे, राग घेष न करणा हेत पीत ।
 इम निग्रह करणी दमणी जितणी, वस करणी संवरणी इण रीत ॥ ६ ॥
 वले वशेषें तेहनो, विवरो कहू छूं तांम ।
 चित्त ल्गाय ने सांभलो, र्थूं सीके आतम काम ॥ ७ ॥

ढलल

(आ अशुकं पा जिन आग्या मे)

शब्दरी चाहि करणें शब्द सुणे ते, शब्द सुणवा री चाहि विषे रस जांणों ।
 तिण विषे सेवण रा सुद्ध साधु नें, जीवे ज्यां लग छे पचखाणो ।
 इंद्रयां रो सभाव सुणो भव जीवां ॥ १ ॥
 परमारथका जे शब्द सुण्या नहीं दोष, वले सहिजां सुणे तोही दोष न लागे ।
 गमता शब्दरी चाहि अभिलाष करे तो, जब त्याग वैराग साधु रो भागे ॥ २ ॥
 शब्दरी अभिलाषा ने शब्द रो सुणवो, एतो दोनूं सभाव जूषा २ जांणो ।
 अभिलाषा तो मोह उदे राग भाव छे, इंद्रयां नें षयउपसम भाव पिछांणो ॥ ३ ॥
 मोह भाव अभिलाषा तिणने, मेट दीयां नीतरागी थाय ।
 षयउपसम इंदरी मेट हुवे तो, जाय पड़े अंध कूप रे मांय ॥ ४ ॥
 सुरतइंद्री नें निग्रह इण विघ करणी, मन गमता शब्द सूं मगन न थाय ।
 अमनोगम उपरे घेष न आणे, तिण सुरतइंद्री निग्रह कीधी छे ताय ॥ ५ ॥
 सुरतइंद्री नें निग्रह कही जिण रीते, दमणी ने जीतणी इमहीज जाणो ।
 इमहिज वस करणी नें संवर लेणी, या पांचां रो परमारथ एक पिछांणो ॥ ६ ॥

सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रहो,
ज्यूं इंदर्यां ने पिण सत्रू कही छे,
सचित्त अचित्त नें मिश्र परिग्रह,
ज्यूं पांचू इंदर्यां पिण सत्रू नहीं छे,
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे,
समचे शरीर नें नावा कही जिण,
ज्यूं इंद्रयां नें शत्रू तिहां इज कही छे,
ज्यूं शरीर तो नावा निश्चे नहीं छे,
त्यांरो परमारथ समदिष्टी जाणें,
शरीर थी सावद्य सेवण आगार जे,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग आणे तो,
शरीर थी सावद्य रा त्याग छे त्रिविधे,
ज्यूं शब्दादिक ऊपर राग न आणे,
प्रथवीकाय नें संजम कह्यो जिण,
ते न्याय न जाणे मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय तो संजम निश्चे नहीं छे,
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू निश्चे नहीं छे,
प्रथवीकाय नें असंजम कह्यो जिण,
ते पिण न्याय न जाणें मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय असंजम नहीं निश्चे,
ज्यूं इंदर्यां पिण सत्रू निश्चे नहीं छे,
सतरे भेदे संजम ने असजम,
त्यांरो त्याग सजम ने अत्याग असंजम,
काम ने भोग कह्या छे अनर्थरा मूल,
त्यां नें किपाक फल री ओपमा दीधी,
काम नें भोग कह्या छे अनरथ रा मूल,
ज्यूं इंद्रयां नें पिण सत्रू कही छे,
काम ने भोग अनर्थ रा मूल नाहीं,
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू छे नाहीं,
काम ने भोग थी जीव समता न पामें,
उत्तराधेन वत्तीसमें घेने,

तिणें अनर्थ रो मूल कह्यो भगवानं ।
त्यांरो न्याय न जाणें ते विकल समानं ॥ २३ ॥
ते तो निश्चेइ अनर्थ रो मूल नाहीं ।
ते न्याय विचारे देखो घट मांही ॥ २४ ॥
तिणेंरी मूर्छा सावद्य जोग अनरथ जाणो ।
तिण राग ने सत्रू लीजो पिछाणो ॥ २५ ॥
उत्तराधेन तेवीसमां घेन मांय ।
ते पिण विकलां नें खबर न कांय ॥ २६ ॥
ज्यूं इंद्रयां पिण सत्रू निश्चेइ नाहीं ।
पिण भोलां ने खबर पडे नहीं कांई ॥ २७ ॥
तिण आगार नें फूटी नावा जाणो ।
तिण राग नें शत्रू लीजो पिछाणो ॥ २८ ॥
ते त्याग छे नावा गुण रत्नां री खाणो ।
तिण त्याग ने मित्री कह्यो जिण जाणो ॥ २९ ॥
ज्यूं इंदर्यां नें सत्रू कही भगवंत ।
तिणरो परमारथ जाणे मतवंत ॥ ३० ॥
संजम छे प्रथवी हणवा रो त्याग ।
सत्रू शब्दादिक सूं कीयां राग ॥ ३१ ॥
ज्यूं इंद्रयां नें सत्रू कही भगवंत ।
तिणरो परमारथ सुणज्यो मतवंत ॥ ३२ ॥
असंजम तो प्रथवी हणवारो अत्याग ।
सत्रू तो शब्दादिक सूं कीयां राग ॥ ३३ ॥
प्रथवीकाय ज्यूं सतरेइ जाण ।
त्यांरी जूवी २ कर लीजो पिछाण ॥ ३४ ॥
त्यां नें कह्या छे महादुख ने दुख तणी पांन ।
ज्यूं इंदर्यां ने सत्रू कही भगवानं ॥ ३५ ॥
ते तो राग ने वेष आसरी जाणो ।
तिण ने लीजो रुडी रीत पिछाणो ॥ ३६ ॥
त्यां सूं भिघ पणो अनर्थ रो मूल जाणो ।
सत्रू तो शब्दादिक सूं राग पिछाणो ॥ ३७ ॥
काम ने भोग थी नहीं पामें विकार ।
सो ऊपरली पेंहली गाथा मभार ॥ ३८ ॥

ढाल : १५

ढुहा

दरबे जीव छे सासतो, भावे जीव असासतो छे ताहि ।
 भगोती रे सतषेव सातमें, कह्यो बीजा उदेसा माहि ॥ १ ॥
 दरब तो तीन काल में सासतो, असंख्यात प्रदेसी जाण ।
 उपजे ने विणसे ते भाव जीव छे, तिणरी बुववंत करजो पिछ्छाण ॥ २ ॥
 दरब ने भाव दोनूं छे जूजूआ, ते जीव लेखे तो एक हीज जाण ।
 उदयादिक पांच भावां करी, भाव जीव नें लीजो पिछ्छाण ॥ ३ ॥
 छ दरब जिणेसर भाषीया, त्यांनें सासता कह्या तीन काल ।
 ते तो गिणती रा छहुं दरबां ने गिण्यां, अठे भाव रो न कह्यो निकाल ॥ ४ ॥
 छ दरबां ने छ दरब कह्या, त्यांरीं गिणी नहीं परजाय ।
 परजाय तो एकीका दरब री, अनंती अनंती कही जिणराय ॥ ५ ॥
 जीव दरब री परजाय ने, भावे जीव कह्यो जिणराय ।
 ते परजाय तो नीपनी हुवे, दरब घटे बघे नहीं ताय ॥ ६ ॥
 दरब ने भाव जीव रो, विवरो कहूं छूं ताय ।
 ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकपा जिश आग्या मे]

दरब नें भाव जीव रो निरणो कीजो, वीर रा वचन आगम मांहे जोवो ।
 आगम नां उवा २ अर्थ करेनं, मानव नों भव कांय विगोवो ।
 दरब नें भाव जीवरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 नव पदारथ में धुर सूं जीव कह्यो जिण, तिणमें द्रब नें भाव दोनू ई आया ।
 कांई दरब गुण परजाय बारे न राखी, समचे जीव कह्यो तिण मे सर्व समाया ॥ २ ॥
 आश्व संवर निरजरा नें मोष, ए च्यांरु पदारथ छे भाव जीवो ।
 यांने समदिष्टी ओलखिया अभितर, त्यांरे अभितर ग्यांन खुल्यो घट दीवो ॥ ३ ॥
 आश्व संवर निरजरा ने मोष, यांने दरबे जीव कह्यो छे अग्यांनी ।
 तिण भाव जीव ने द्रब जीव सरध्या, तिण नें समदिष्टी किण विव जाणे ग्यांनी ॥ ४ ॥
 अववसाय परिणाम ध्यांन नें लेस्या, त्यांरा भेद अनेक कह्या भगवंत ।
 ए जीवरा भाव असासता निस्चें, त्यांनें भावे जीव जांणो मतवंत ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले जोग उपीयोग नें दिष्ट तीनोंइ, कषाय संज्ञादिक बोल अनंत ।
 ए पिण जीवरा भाव असासता निश्चं, त्यांनेई भावे जीव कह्या भगवंत ॥ ६ ॥
 नारकी तिरजंच मिनख नें देवा, वले चोवीस डंडक नें छकाय ।
 इत्यादिक अनेक असासता त्यांनं, भावे जीव कह्या जिण राय ॥ ७ ॥
 द्रव आत्मा नें दरवे जीव कही . जे, सेप जीवरी परजाय आतमा सात ।
 तिण परजाय नें दरवे जीव सरवे, तिणरे निश्चेइ आय चूको छे मिथ्यात ॥ ८ ॥
 भाव जीव नें दरव जीव सरवे, ते अन्हाखी थको करे भूठी भखाल ।
 ते आगम उथापने उंची परूपे, अनंता अरिहंता पे सिर दीवो आल ॥ ९ ॥
 दरवे तो जीव नें एक कह्यो छे, तिण एक रा दोंय कदे नही होय ।
 तिण दरव रा लखणां नें भाव जीव कहीजे, तिण भाव री संख्या नहीं छे कोय ॥ १० ॥
 सुखदेव सिन्धासी पृच्छा कीधी, तिणरो जाव दीयो थावचे अणमार ।
 दरव थकी तो हूं एक हो सुखदेव, ते हूं सासतो तीनोंइ काल मभार ॥ ११ ॥
 नाणदंसणठ्या ए दोंय पिण हूं छूं, प्रदेसठ्याए अपय पिण हूं छूं ।
 प्रजोगठ्याए अनेक पिण हूं छूं, ए तोने जाव सूत्र सूं देऊं छूं ॥ १२ ॥
 वले सोमल नें कह्यो वीर जिणेसर, दरव थकी हूं सोमल एक ।
 अठारमां सतक रे दसमें उदेशों, भगोती सूतर जोय छोड दो टेका ॥ १३ ॥
 वले पारसनाथजी कह्यो सोमल नें, दरव थकी हूं सोमल एक ।
 निराबलिका सूतर जोय निरणो कीजो, परभवसाहमों जोय नें छोड दो टेक ॥ १४ ॥
 इत्यादिक सूतर में ठाम ठाम, दरव थकी जीव कह्यो छें एक ।
 तिण दरव रा भाव नीपनां त्यांनं, भाव थकी जीव नें कहीजे अनेक ॥ १५ ॥
 दरव थकी जीव तो सासतो कहीजे, भाव थकी असासतो केहणो ।
 भगोती रे सातमें सतक कह्यो छे, दूजा उदेसा मांहें जोय लेणो ॥ १६ ॥
 जीव दरवे सासतो भावे असासतो, जमाली नें वीर कह्यो छें ताहि ।
 भगोती सूतर रा नवमां सतक में, तेतीसमां उदेसा रे मांहि ॥ १७ ॥
 नरेइयो नरेइयो द्रव थी तूला, प्रदेस थकी पिण तूला जाणो ।
 अबग्राहणा नें थित आशी तो, चउठाणवडीयो लेजो पिछांणो ॥ १८ ॥
 नव उपीयोग आशी छठाणवडीयो, तिणरी धारणा करनें रीत सूं कहीजे ।
 चउठाण नें छठाणवडीयो, त्यांनं भावे जीव पिछाण लीजे ॥ १९ ॥
 दरव नें प्रदेस ववे घटे नांही, ववे घटे तिण नें भाव जीव कहीजे ।
 नारकी तिम डंडक चोवीसोइ कहणा, जिण जिण मे बोल पावे ते लीजे ॥ २० ॥
 ए पन्नवणा रा पांचमां पद मांहें, तिण ठामें तो छे धणो विस्तारो ।
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी, दरव भाव सरख लो न्यारो न्यारो ॥ २१ ॥

इत्यादिक सूतर में ठाम ठाम,
भावे जीव असासतो जीव कह्यो छे,
भावे जीव असासतो तिण नें
एहवी उंधी परूपणा करनं अग्यानी,
दरबे जीव तो नित सासतो छे,
याने ओलखीयां विण उंधी परूपे,
दरब रा लषणां ने दरब न कहीजे,
दरब नें लखण न्यारा न्यारा कहीजे,
जिण दरब ने भाव ओलषीया नाही,
त्याने प्रश्न पूछ्यां तो डिगता बोले,
दरब री ठोर तो भाव बतावे,
तिणरी अमितर आंख हिया री फूटी,
दरब ने भाव जीव ओलषीया नाही,
दरब जीव ने एक के अनेक कहीजे,
जो उ दरब जीवने सासतो कहदे,
तिणरो वचन गाढो कर चरचा कीजे,
पछ्छे दरब ने भाव री चरचा करने,
जो समभायो समभे नही मूरख,
सासतो असासतो दोनूं न जाणे,
अजांग थको उंधी तांग करे छे,
दरब ने भाव जीव ओलखावण काजे,
समत अठारे ने वरस सेताले,

दरबे जीव नें सासतो कह्यो वीर ।
दरब ने भाव जांण्या छे सरघा सधीर ॥ २२ ॥
दरब नें भावे कहे छे दोनूं ।
उसभ कर्म उदे साची सरघा नें खोइ ॥ २३ ॥
तिणने पिण कहे दरब नें भाव दोनूंइ ।
तांग कर कर ने यूही आतम विगोइ ॥ २४ ॥
लषणां रा दरबां ने लखण न कहीजे ।
जीव रे लेखे दोयां ने एक गिणीजे ॥ २५ ॥
ते खाय रह्या छे अग्यानी भखोला ।
त्यांरी परतीत करने बूढे कोइ भोला ॥ २६ ॥
भाव री ठोर दरब नें बतावे ।
तिणसूं आमो सांहमो भखोला खावे ॥ २७ ॥
तिणने समभावण पूछ्या कीजे ।
वले सासतो के असासतो कहीजे ॥ २८ ॥
वले दरब जीव ने कह दे एक ।
भाव जीव असासतो कहीजे अनेक ॥ २९ ॥
समभतो जाणे तो समभाय लीजे ।
तिणसूं विषवाद कदेय न कीजे ॥ ३० ॥
वले दरब ने भावरा नही निवेरा ।
तिण नरक सूं सनमुख दीघा डेरा ॥ ३१ ॥
जोड कीधी मावोपुर सहर मभारो ।
चेत विद वीज ने सोमवारो ॥ ३२ ॥



ढल १

दुहा

दसासतखंघ सूयगडाअंग में, अकिरीया वादी रो विसतार ।
नास्तक मत छे तेहनों, ओं जाणें भर्म संसार ॥ १ ॥
तीथंकर चक्रवरतादिक, वले साधु सती अणगार ।
त्यानें जीव न सरघे सरवथा, ते भूलो भर्म गिवार ॥ २ ॥
तिण नास्तक वादी रा मत तणो, परजायवादी पिरवार ।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, तिणराघट माहें घोरअन्वार ॥ ३ ॥
उ चेतन गुण परजाय नें, नहीं सरघें जीव अजीव ।
एहवी उधी करे छें परूपणा, कर २ खांच अतीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरब नें इम कहें, जीव अजीव दोनुइ कहें नाहिं ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु छें, ते तों नहीं गिणती रे माहिं ॥ ५ ॥
नियमा निश्चे जीव तेहनें, जीव गिणे नही ताय ।
तिणरी सरघा परगट करूं, ते सुणजों चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढल

[आ अशुकपा जिन आग्या में]

तीथंकर गणवर धर्म नां नायक, आचार्य उवभाय मोटां अणगारो ।
साधु साधवीयादिक च्यारुई तीर्थ, याने जीव न सरघे ते मूढ गिवारो ।
आ सरघा छें, परजायवादी री* ॥ १ ॥
देव गुर धर्म तीनुइ रतन अमोलक, त्यारों सरणों लीयां उत्तरे भवपारों ।
यानें जीव न सरघे ते मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचीने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर नही जीव चेलों नहीं जीव, विनों अविनों करे ते पिण जीव नाहीं ।
माहोमां करे समोग असणादिक नो, तिण मे पिण जीव रो अंस न काई ॥ ३ ॥
आठोइ करमां सूं मूकावे ते मोख, त्याने तो कहीजें सिध भगवानं ।
त्यानें पिण जीव न सरघें अग्यांनी, त्यां विकलां में नही छे जाबक विगनां ॥ ४ ॥
सूतर बांचे ते जीव नही छे, धर्म कथा कहे ते पिण नहीं जीव ।
वखाण सुणे ते पिण जीव नाही, त्यां दीवी मिथ्यात री उंडी नीव ॥ ५ ॥
तिरण तारण जीवने नही सरघें, जीव नें जीव नही उतारें पारो ।
जीव ने जीव डबोवे नाही, वले जीव ने जीव न करे खुवारो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चक्रवत् वासुदेव मंडलीक राजा, ए मिनख हुआ करणी कर मोटी ।
 भवी दरबादिक पांचूइ देवां नें, जीव न कहें तिणरी सरधा खोटी ॥ ७ ॥
 बाप नही जीव बेटो नही जीव, वले जीव नही सगलो पिरवारो ।
 जीव जनमें नही जीव मरें पिण नाहीं, जीव नही भोगवें विषें विकारो ॥ ८ ॥
 परणीजे परणावे ते जीव नहीं छें, जानी मांडी आया ते पिण नहीं जीव ।
 असागादिक नीमजावें ते जीव नही छें, जीमें जीमावें ते नही जीव अजीव ॥ ९ ॥
 अज्जापतो होय प्रजापतो हुवों, पछे बाल जुवांन ने होय गयों बूढो ।
 नेरइय तिरजंच मिनख ने देवा, यां नें जीव न सरखें ते जावक मूढो ॥ १० ॥
 हालें चाले तिणनें जीव न कहीजे, वले जीव न करें छें विणज व्यापारो ।
 खेती करसणादिक करें ते जीव नही छें, जीव तो नही करें छें भगडा नें राडो ॥ ११ ॥
 एकिंद्री आदि दे पंचिंद्री ने, वले प्रथवी आदि देइ छकय ।
 वले चउदें भेद छे जीवरा त्याने, यां सगलां ने जीव कहें नहीं ताय ॥ १२ ॥
 हिंसक भूठाबोलो नही जीव, वले चोर कुसीलीयों नें धनपातर ।
 वले तीनसों तेसठ पाबंडीयां ने, या सगलां नें जीव न सरखें कुपातर ॥ १३ ॥
 भोगी नही जीव जोगी नही जीव, वेरी ने मित्री ए पिण जीव नांही ।
 मायावीया मिथ्याती ने जीव न जाणे, इण खोटी सरधा माहे कला न काई ॥ १४ ॥
 आरत रुद्र धर्म नें सुकल, यां च्यालूं ध्यांना नें जीव न जाणें ।
 छ भाव लेंस्या नें पिण जीव न जाणें, अग्यांनी थका मूढ उधी ताणे ॥ १५ ॥
 बारें उनीयोग नें चवदे गुण ठांणा, त्यानें पिण जीव न जाणें अग्यानी ।
 जीव न जाणें चोवीस डंडक ने, तिणनें बुधवत कोइ न जाणें ग्यानी ॥ १६ ॥
 छव नियंठा नें पांचूइ चारित, उठाण कमादिक ए पिण पाच ।
 वले आतमा सात ने सावद्य निरवद, याने जीव न माने करे कूडी खांच ॥ १७ ॥
 इत्यादिक जीव रा भेद अनेक, त्यानें निश्चेई जीव कह्या जिणराय ।
 त्याने जीव अजीव न कहे दोनुंइ, तीजी रास कहे छे ताय ॥ १८ ॥
 असासता सगलाइ पाछें कह्या ते, त्याने तो जीव कहसी किण लेखे ।
 याने जीव कहें तो भूठ बोले छे, आपरी सरधा सांहा कयूं नही देखे ॥ १९ ॥
 जो चरचा रो कांम पड्यां जीव कहे तो, असासता दरब री पूछा कीजे ।
 असासत दरब ने जीव न सरचे, याने जीव कहे तो भूठो घालीजे ॥ २० ॥
 जो असासता दरब ने जीव कहे तो, आपरी सरधा रो आप अजाणों ।
 सूने चित्त हीयाफूट विकल ज्यूं, आपरी सरधां री पिण नही पिछाणों ॥ २१ ॥
 हिंवें परजायवादी ने पूछा कीजे, संसार माहे दुख किण विध पावे ।
 कुण उपजावे ने कुण खपावे, करमा रो करता कुण कहावे ।
 ए प्रश्न परजायवादी ने पूछीजे* ॥ २२ ॥

*इस आंकड़ी को प्रत्येक गाथा के अन्त में समझें ।

जो उ करमां रो करता जीव नें थापें, तो उणरी सरघा जाबक उठ जावे ।
करता अनेक असासता दीसैं, असासता नें जीव यूंही वतावें ॥ २३ ॥
जो उ करम रों करता ने जीव नहीं कहें तो, घणां लोक न मानें तिणरी वातो ।
जो सरघा हुवें तो पिण छांनैं राखें, एहवा कपटी रो भूठ नें गूढ मिथ्यातो ॥ २४ ॥
उणरी सरघा रा अहलांण एहवा दीसे छें, करमां रा करता ने गेबी जांणो ।
करमां रो करता तो असासतो छें, गेबी जांणजो इण अहअंणो ॥ २५ ॥
धर्म नें करम रो करता जीव छे, तिणनें जीव अजीव न कहें दोनूइ ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु न कांई, तीजी कहे ते तेरासी होइ ॥ २६ ॥
जीव अजीव विनां वस्तु थापें, तिणनें नियमाइ निश्चें तेरासीयो जांणों ।
तिणनें कोइ तेरासीयों नही जांणें, ते पिण मूढमती छे अयांणो ॥ २७ ॥
करमां रो करता सासतो नांही, तो उ जीव नें करता कहसी किण लेखे ।
एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब भूठ बोळण री सेरी देखें ॥ २८ ॥
के तो भूठ जांणी ने बोलें छें, के आपरी भाषा रो आप अजांणो ।
ए वात रो निश्चों तो केवली जांणे, पिण बुधवंत हूसी ते करसी पिछांणो ॥ २९ ॥
श्री वीर कह्यो आचांरग मांहे, करमां रो करता छे निश्चें जीवो ।
चेतन गुण परजाय सहीत ओलखसी, त्यांरे अभितर ग्यांन खुलसी घट दीवों ।
आ सरघा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३० ॥
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करें छे, तिण किरतव सूं लागे जीवरे पावो ।
ते छेदन भेदन जनम मरण रा, चिहूं गति मे दुःख भुगते आपो ॥ ३१ ॥
परजायवादी री सरघा परगट कीघां, केइ क्रोध करें केइ मन मांहे लाजे ।
जिण आगम लोप विरुध परूपे, ते सीह तणी परे कदेय न गाजे ॥ ३२ ॥
इण खोटी सरघा रो उघाड कीयां सूं, केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा ।
केइ विपरीत सरघा आदर ने छोडि, त्यांने पिण वीर वखाण्या सूरा ॥ ३३ ॥
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपे, जीव ने जीव री परजाय नही छें एक ।
जीवरी परजाय नें जीव न सरखें, ते अग्यांनी थको कूडी करे छे टेक ॥ ३४ ॥
पीजणी पेडा ने वले नाम नें ओघण, इत्यादिक जूआ जूआ नांम अनेक ।
यां सगला ने गाडो निश्चेंइ कहीजे, गाडा री परजाय नें गाडो छे एक ॥ ३५ ॥
जिम गाडा री परजाय ने गाडो कहीजे, तिम जीव री परजाय ने जीव छे एक ।
जीवरी परजाय ने जीव न सरखें, तिण खोटी सरघा धारी विना ववेक ॥ ३६ ॥
गाडां री परजाय तो भेली करी छे, ते तों कदेइ काले पड जाएं दूरी ।
पिण जीवरी परजाय न पड़े छे दूरी, उपजे उपजे नें होय जाए पूरी ॥ ३७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाया के अन्त में है ।

जे जे परजाय पूरी होय जाए, तिणरी प्रतख बीजी हुवे ताय ।
 जे मिनष मूओ ते देवादिक हुवो, इत्यादिक ओर रो ओर हुय जाय ॥ ३८ ॥
 देस थकी दिष्टत दीयो छे गाडं रो, ते बुधवंत जाण लीजो मन माय ।
 पिण जीव री परजाय ने जीव एक छे, तिण माहे संका म आणजो कांय ॥ ३९ ॥

ढलल : २

दुहल

आ परजलयवलदी री सरघवल बूरी, घोर छद मिथ्यलत ।
हललुकरभीं किम सरघसी, ए प्रतख भूठ मिथ्यलत ॥ १ ॥
चेतन गुण परजलय ते जीव छें, जोवों सूतर मलंहीं संभलल ।
चेतन गुण नें जीव सरघें नही, तिण दीयो अरिहंत सिर आल ॥ २ ॥
त्यलनें सलघ वतलवें जूजूआ, जीव रल गुण जीव सलख्यलत ।
पिण गुधू सरीखल मलंनव मलंने नहीं, त्यलरें दिवस तकलइज रलत ॥ ३ ॥
त्यलनें धुर सूं तो संत मिलीयों नहीं, कीघों परजलयवलदी रो परसंग ।
जलंणें निरणें कोठें भूंवीयों, कललो नलग भूयंग ॥ ॡ ॥
उणनें मिलें सतगुर गलरलू, जो उ दूर करे पखपलत ।
सूतर अरथ सुणलय नें, कलढे जेहर मिथ्यलत ॥ ५ ॥
जीवरल गुण लखण परजलय छें, त्यलनें जीव कहूओ जिनरलय ।
त्यलनें जीव न सरघें सरवथल, ते चोढे भूलल जलय ॥ ६ ॥
परजलयवदी री सरघल उपरे, सूतर में जलव अनेक ।
पिण थोडल सल परगट कलहं, ते सुणजो आंग ववेक ॥ ७ ॥

ढलल

[पलणड वधसी अरे पलच मे]

तीथंकर गणघर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छें आचलर्य नें उवमलय रे ।
त्यलरल ग्यलंन दरसण चलरित छें निरमल रे, यलंने वलंढल सूं पलतिक दूर पलय रे ।
ए अरिहंत वलयक सतकर जलंगजो रे* ॥ १ ॥
वले सलघ सलघवी श्रलवक श्रलवकल रे, सूतर में भलख्यल छे तीरथ च्यलर रे ।
त्यलंने पिण उत्तम जीव जिन कह्यल रे, ग्यलनलदिक गुण रतनलं रल भंडलर रे ॥ ए० २ ॥
यलं सगलंने जीव न सरघे सरवथल रे, परजलयवलदी पलखंडी वलल रे ।
वले एहवी करे छे भूढ परूपणल रे, तिण दीयो अग्यलंनीं मोंटो अलल रे ।
ए परजलयवलदी रो मत हडो नही रे ॥ ३ ॥
ए च्यलहं तीरथ तीथंकर देव में रे, पलवें गुणठलंगल परजल प्रलंग रे ।
जोग उपीयोग लेस्यल तेहमें रे, यलने जीव न पिणें ते मूढ अयलंग रे ॥ ए० ॡ ॥

*यह अंकडू प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

त्पारो विनो वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वाघें तीथंकर गीत रसाल रे ।
 ते कह्यो गिनातावेन आठमे रे, लीजो बीसोंइ बोल सभाल रे ॥ ५ ॥
 विनों वीयावच करे ते निश्चें जीव छे रे, जीव विनां वीयावच कुण कराय रे ।
 यानें परजायवादी जीव गिणें नही रे, एं प्रतख चोडे भूलों जाय रे ॥ ६ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव में रे, यां में करे केइ वेक्रे रूप रसाल रे,
 यारी गति आगति ने यारो आंतरो रे, यानें जीव न सरघे ते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेंहली गति मां सूं उपजे आय नें रे, ए मरनें उपजे पेंहली गति मांय रे ।
 देवातदेव जाए छे मुगत में रे, यानें सूतरमें जीव कह्या जिणराय रे ॥ ८ ॥
 परभव मे जासी ते निश्चे जीव छे रे, जीव विनां गतागति करे- केम रे ।
 इतलो न सुमे मोह अंध जीव नें रे, ओ बोले सूणें चित्त गेहला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव नों रे, विसतार भगोती सूतर मांहि रे ।
 नवमे उदैसे सतक बारमे रे, ए निरणो कर लीजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकंद्री आदि पंचिंद्री जीव छे रे, छ काय नें जीव कही जिण राय रे ।
 जीवरा चवदे भेद ते जीव छे रे, त्याने जीव न गिणें अग्यानी-ताय रे ॥ ११ ॥
 वले परजायवादी पाखंडी इम कहे रे, परजाय रे नही छें देस परदेस रे ।
 जीवरी परजाय नें जीव माने नही रे, ते करें अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
 एकंद्री आदि पंचिंद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवों भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
 दसमें उदैसे दूजा सतक में रे, वले दसमां सतक रे पेंहले जांण रे ।
 सोलमें सतक उदैसे आठमें रे, ए निरणों करलीजों चतुर सुजांण रे ॥ १४ ॥
 वले दसमें उदैसे सतक इग्यारमें रे, तिहां पिण तेहीज छे विस्तार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नों रे, रूपी अरूपी नों विस्तार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयो तिरजंच मिनष ने देवता रे, त्यारे आठोंइ करम कह्यां भगवंत रे ।
 ए जीव होसी तो यारें करम छें रे, त्याने निश्चोइ जीव जांणों मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोंइ डंडक नियमा जीव छे रे, नियमा कह्यो ते विसवावीस रे ।
 दसमे उदैसे छठा सतक में रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीव रा चवदे भेद सिधंत मे रे, ते निश्चोइ जीव कह्या साख्यात रे ।
 यानें मूंड मिथ्याती जीव गिणें नही रे, आ प्रतख भूठी तिणरी वात रे ॥ १८ ॥
 वले दसवीकलिक चोथा अधेयन मे रे, निश्चोइ जीव कही छव काय रे ।
 तिणनें अग्यानी जीव न लेखवे रे, ते करें बूडण रों मूड उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सूतर रा तीजा अधेन मे रे, ठांणा अंग में तीजा ठांणा मांय रे ।
 छ जीव नीकाय माहे सका करे रे, अहेत असुख नें समकत जाय रे ॥ २० ॥

अरिहंत कही छें आठूं आतमा रे, आतमा ते निश्चें जीव साख्यात रे ।
 कोइ सात आतमा नें जीव सरखें नहीं रे, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात रे ॥ २१ ॥
 हिसादिक अठारें थानक पाप रा रे, त्यां अठारां रो वेरमण ते परिहार रे ।
 पांच थावर नें धर्म अधर्म आकासासती रे, वले सलेसी साध मोटां अणगार रे ॥ २२ ॥
 बादर कलेवर ने परमाणूओ रे, वले सरीर रहीत जीव छे ताथ रे ।
 ए सारा अडतालीस वोलां भणी रे, जीव अजीव दरब कह्या जिणराय रे ॥ २३ ॥
 ए भगोती सूतर रे सतक अठारमें रे, कह्यो चोथा उदेसा माहि रे ।
 जीव अजीव री परजाय नें रे, जीव अजीव दरब कह्या छे ताहि रे ॥ २४ ॥
 जीव री परजाय नें जीव एक छे रे, जीवरी परजाय ते निश्चे जीव रे ।
 परजायवादी परजाय ने जीव गिणें नही रे, तिण दीधी खोटी सरघा री नीव रे ॥ २५ ॥
 चोथे उदेसे सतक तेरमें रे, भगोती में पूछयो गोतम सांम रे ।
 आप कहो सामी किरपा करी जी रे, जीव रे जीव आवें छे कांम रे ॥ २६ ॥
 जब वीर कह्यो छें सुण तूं गोयमा रे, जीव रें जीव आवे छे कांम रे ।
 उपीयोग कांम आवे छें जीव रे रे, त्यां उपीयोगा रा छे बारे नाम रे ॥ २७ ॥
 जीव कह्यो छे वीर उपीयोग नें रे, निसक पणें कीयो निस्तार रे ।
 जे कोइ जीव नहीं सरखें छे उपीयोग ने रे, ते निश्चेइ पूरो मूढ गिवार रे ॥ २८ ॥
 केवल ग्यान तणों विनों कीयां रे, कट जाएं माठा पाप करम रे ।
 कोइ जीव न गिणें छे केवल ग्यान नें रे, ते भूला अग्यांनी जाबक भर्म रे ॥ २९ ॥
 अगिनांन ने कही छें नियमा आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 ए दसमें उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
 गिनांन ने नियमा कही छे आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 दसमे उदेसे सतक बारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
 आतमा छे तेहीज निश्चें ग्यान छे रे, ग्यान छे तेहीज आतमा जांण रे ।
 ते आचारंग पांचमां अवेन में रे, पाचमें उदेसे जोय पिछांण रे ॥ ३२ ॥
 जे जे दरब में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुणठांणा परजाय प्राण रे ।
 ते तो दरब निश्चेइ जीव छे रे, ए सरघा में सका मूल म आण रे ॥ ३३ ॥

ढलल : ३

दुहा

परजायवादी रा मत तणा, केइ कर रह्या कूडी ताण ।
त्याने खुलवा जाब वतावीया, साख सूतर री आण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छडायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितरा एक तो वले कहूं, ते सुणजों विल्यात ॥ २ ॥

ढलल

[पूज जी पधारी हो नगरी सेविधा]

संजती असंजती ने संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताहि हो ।
ए सगला नें जीव जिणेसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती मांहि हो ।
ए अरिहंत वायक सतकर जाण जो* ॥१॥

संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छे ताय हो ।
ते सगलाइ भावे जीव असासता, ते भाष्यों छें श्री जिणराय हो ॥१०२॥

समाइ पचखाण संजम ने संवर, ववेक नें विउसग जाण हो ।
ए सगला नें कही छे जिणेसर आतमा, ए भावे जीव पिछांण हो ॥३॥

ए सूतर भगोती रा पेहला सतक में, नवमां उदेसा मांय हो ।
समाइ आदि छहु आतमा भणी, भावे जीव कह्यो जिणराय हो ॥४॥

चारित परिणाम कह्या छें जीवरा, ठांणाअंग दसमां ठांणा मांय हो ।
ते जीव रा परिणाम तो निश्चे जीव छे, तिणमे संका म आंणो कांय हो ॥५॥

दरब कषाय जोग उपीयोग आतमा, रयान दरसण चारित ताय हो ।
वले आठमी कही छें वीर्य आतमा, आठोइ जीव कही जिण राय हो ॥६॥

एक जीव गिणे छें दरब आतमा भणी, ते सासती नित सदीव हो ।
सेष आतमा सात नही छे सासती, त्याने जाबक न गिणे जीव हो ॥७॥

आतमा आठोइ जीव जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमे उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥८॥

उ भावे जीव न सरखे असासतो, तिण सूतर दीया छें उथाप हो ।
उ साप्रत जीव ने जीव गिणे नही, यूं ही कूडो करें छें विलाप हो ॥९॥

दरबे सासतो ने भावे असासतो, जीव नें कह्यों जिणराय हो ।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो ॥१०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दरबे सासतो जीव नें यूँ कह्यो, जीव रो अजीव न थाय हो ।
 भावे जीव नें कह्यो छें असासतो, ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥ ११ ॥
 निजगुण फिरें नें परगुण भरपडे, ते परगुण पुदगल जाण हो ।
 परगुण भडीयां हुवें निजगुण निरमलो, आ सरधा घट में आण हो ॥ १२ ॥
 असुघ निजगुण फिरीयां सुघ निजगुण हुवें, ते परगुण कर दे दूर हो ।
 सुघ निजगुण फिरीयां असुघ निजगुण हुवें, तिणसूं परगुण लागें पूर हो ॥ १३ ॥
 जे मेंला निजगुण मोहकरम वसें, यां निजगुणां सूं करम बंधाय हो ।
 मोह रहीत निजगुण हुवे निरमला, त्यां सूं परगुण दूर पलाय हो ॥ १४ ॥
 सात करम उदें सूं निजगुण मेंला हुवे, त्यां सूं पाप न लागें ताम हो ।
 ते करम भरुखां हुवें निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छें नाम हो ॥ १५ ॥
 आठ करम उदे हूवां नीपजें, निजगुण उदें भाव अनेक हो ।
 आठ करमां नें षय कीषां नीपनां, निजगुण षायक भाव वगोख हो ॥ १६ ॥
 च्यार करमां नें षयोपसम कीयां नीपजे, निजगुण षयोपसम भाव हो ।
 मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥ १७ ॥
 ए च्याहूई भाव परणामीक जीव छें, ते चेतन गुण परजाय हो ।
 ए भाव फिरे पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥ १८ ॥
 तत्व सुघ सरध्यां हुवें जीव समकती, उंधी सरध्यां मिथ्याती थाय हो ।
 उहीज ग्यांनी रो अगनांनी हुवें, अग्यांनी रो ग्यांनी हुय जाय हो ॥ १९ ॥
 नारकी देवता रो मिनष तिरजंच हुवें, मिनष तिरजंच देवता थाय हो ।
 इत्यादिक जीवरा भाव अनेक छें, ते ओर रो ओर होय जाय हो ॥ २० ॥
 सासतो जीव दरब छें अनादरो, तिणरी परजाय अनंती जाण हो ।
 ते परजाय हांण विरध हुवें करम सूं, पिण दरब री नही विरध हांण हो ॥ २१ ॥
 जे भाव -फिरे पिण दूर पडें नहीं, त्यां भावां रा नाम अनेक हो ।
 इण विध भावे जीव असासतो, ते सरधो आंण ववेक हो ॥ २२ ॥
 ओ जीव रा भाव न सरधें असासता, तिण काढयो छें मत कूर हो ।
 यांने जीव न सरधें मूढ मूरख थको, तिणरी संगत करजो दूर हो ॥ २३ ॥
 वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती माय हो ।
 ते तीजा उदेसा छळा सतक में, ते सांभल जो चित्त ल्याय हो ॥ २४ ॥
 ए आदि ने अंत रहीत जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो ।
 के आदि सहीत ने अंत रहीत छे, के आदि ने अत सहीत हो ।
 ए गोतम सांमी पूछ्यो श्री वीर नें ॥ २५ ॥
 श्री वीर जिणसर कहे सुण गोयमा, ए च्याहूं भांगा छे जीव हो ।
 त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नीव हो ॥ २६ ॥

ए आदि र्हीत नें अंत र्हीत छें, ए अमव सिवीया जीव जाण हो ।
 आदि नहीं, पिण अंत सहीत छें, ते भव सिवीया जीव पिच्छाण हो ॥२७॥
 जे करम द्दनाए नें सिव गति में गया, त्यांरो आदि छें पिण अंत र्हीत हो ।
 नारकी तिरज्जं मिनप नें देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥२८॥
 ए च्याह्ंई जीव जिणेतार भापीया, त्यांनै जीव न संखें मूड हो ।
 ते वूडें छें वीर ना वचन उयापनै, कर कर कूडी रह हो ॥२९॥



रत्न : ६

टीकम डोसी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिघ नें आयरिया, उवभाया सगला साध ।
ए पांचूं पदां नें नमण कीयां, पांमें परम समाध ॥ १ ॥
नव पदारथ ओलख्यां विनां, निश्चेइ समकती नांहि ।
केइ ओलख नें उंवा पड्या, ते तो निनवां री पांत माहि ॥ २ ॥
एक एक वचन उथाप ने, निनव हूआं छें कर २ तांण ।
तो अनेक वचन उथापे तके, ते तों निश्चेइ निनव जांण ॥ ३ ॥
करणी छे निरजरा तणी, तिणने संवर सरघे कोय ।
ते समकत खोय मिथ्याती हुवों, जीतव जनम विगोय ॥ ४ ॥
प्रबल उदे छे दंसण मोहणी, तिणसूं विगडी दिष्ट अतंत ।
विभ्रम पडीयो मिथ्यात रे, तिणरी मती हुइ भय भ्रंत ॥ ५ ॥
जिण अनेक वचन उथापीया, उंधा अर्थ करे ने ताय ।
कुण कुण वचन उथापीया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल


[साध म जागो इण चल गत सू]

करडी सीखामण कहुं जोड नें, सुण नें मत घरजो घेष जी ।
जो परभव री चित्ता हुवे घट में, तो निरणों करों विगेष जी ।
उंधी सरघा कोई म राखो* ॥ १ ॥
सुभ जोगां ने संवर सरघे, संवर नें सरघे सुभ जोग जी ।
तिण रे दोनूं कांनी पड्यो दिवालो, आ सरघा घणी अजोग जी ॥ ३०२ ॥
धुरला पांच गुणठांणां तांइ, नही सरघे सुभ जोग जी ।
इसडी उंधी सरघा छें तिणरे, मोटें मिथ्यात रो रोग जी ॥ ३ ॥
केवल ग्यांनी नें कहे अधरमी, त्यांरें सरघे सावद्य जोग जी ।
वले सावद्य सूं पुन लागों सरघे, आ पिण वात अजोग जी ॥ ४ ॥
पाप ठाणो इविरत रो पय हूआं, कहे सर्व विरत आवे नांहि जी ।
देस विरत नीपनी सरघे, आ सरघा नही जिणमत मांहि जी ॥ ५ ॥
पांच महावरतां ने कहुं सुभ जोग, सुभ जोगां ने कहे महावरत जी ।
आपिण प्रतख उंधी सरघा, तिण में मूल नही छे सत जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पांच चारित ने कहें सुभ जोग छे, सुभजोगांने कहे चारित पांच जी ।
 ते समकत खोय नें नें हूआ मिथ्याती, कर कर उंधी खांच जी ॥ ७ ॥
 सुभ जोगां ने कहें उपसम भाव, ओ पिण 'बडो अन्याय जी ।
 तिणरे जोग तणी ओलखणा नांही, चोडे भूला जाय जी ॥ ८ ॥
 असुभ जोग तणा कीघा पचखांण, तिणसूं नीपना कहे सुभ जोग जी ।
 आपिण उंधी सरघा तिण री, ते किम सरघे डाहा लोग जी ॥ ९ ॥
 दरव जोग तीनुंइ रूपी, तिण सूं लागो कहे पुन जी ।
 पुनरो करता रूपी सरघे, आ सरघा घणी जवून जी ॥ १० ॥
 वले सावद्य सूं पुन लागों सरघें, तिण सावद्य ने कहें अघर्म जी ।
 पुनरो करता कहें अघर्म, ते जावक भूलों मर्म जी ॥ ११ ॥
 जीव रा भाव थकी नही लागें, पुनरो एक प्रदेस जी ।
 ए प्रतख खोटी सरघा तिणमें, नही साच तणों लवलेस जी ॥ १२ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतव नही कोड, कहे विण कीघां पुन होय जी ।
 आ सरघा जिणमत सू न्यारी, तिणने मत धारो कोय जी ॥ १३ ॥
 कहे इरियावही किरिया छे घर्म, तिहां नीपनों कहे सावद्य जी ।
 तिण सावद्य नें अघर्म सरघे, ते कहितां न आवे लाज जी ॥ १४ ॥
 कहे असुभ कर्म रों परिग्रहण, सर्व सावद्य कहे छें तांम जी ।
 तिण सावद्य नें कहे अघर्म, ते यूंही वकें वेफांम जी ॥ १५ ॥
 कहे सुभ लेस्या ने सुभ जोगां विण, कहे घर्म ने निरजरा नांहि जी ।
 इसडी उंधी करें परूपणा, ते नही जिण आग्या मांहि जी ॥ १६ ॥
 केवलीयां रें सावद्य सरघे, तिण सावद्य ने कहें अघर्म जी ।
 तिणरी थित कहे दोय समां री, तिणरो मूढ न जाणे मरम जी ॥ १७ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतव नही कोड, इसडो परुमें कोय जी ।
 ते पिण श्री जिण आग्या वारे, च्यार तीर्थ में नही होय जी ॥ १८ ॥
 कहे सुभ जोगां ने आश्रव सरघ्या, बीस संवर नो हुवों विच्छेद जी ।
 एहवी उंधी करें परूपणा, तिण पांडयो धर्म में भेद जी ॥ १९ ॥
 कहे सुभ लेस्या ने आश्रव सरघ्या, तो निरजरा नो थाए विच्छेद जी ।
 आपिण उंधी सरघा तिणरी, ओ घाल्यो घर्म में भेद जी ॥ २० ॥
 महावीर ना सासण मांहे, निनव हूयां सात जी ।
 त्यां तो एकीको वचन उयाप्यो, पडवजीयो मिथ्यात जी ॥ २१ ॥

एक वचन उथाप्यां निनव हुवें, तिण में संक म राखो कोय जी ।
तो अनेक वचन उथापें ते तो, निश्चें निनव होय जी ॥२२॥
तिण एहवी उंची सरधा काढे, वले बोले आल पंपाल जी ।
तिण तीन कालरा तीथंकरा नें, दीयो अग्यांनी आल जी ॥२३॥



ढाल : २

दुहा

भारी कर्म छे जेहने, तिण सू लीधी न छूटें टेक ।
ज्यूं छेरवे ज्यूं उलटो पडें, साची वात न मांनी एक ॥१॥
मोह कर्म पतलो पडीयां विना, नही जांणे सूतर रो न्याय ।
मद छावया मतवाला नी परें, समझ पडें नही काय ॥२॥
हिवे मांन वडाइ छोड ने, आणे समता भाव ।
तो लीधी टेक म राखजो, जो समकत री हुवें चाव ॥३॥
लारें खोटी सरधा कही तेहनो, उत्तर सुणो भव जीव ।
जो सुण सुण नें निरणो करो, तो लागे मुगत री नीव ॥४॥
खोटी सरधा रा एक एक बोल रो, उत्तर कहू सूतर रे न्याय ।
जो मुगत जावा री हुवें चावना, तो सांभलजो चित्त ल्याय ॥५॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आग्या मे]

चारित संवर नें सुभ जोग सरधें, इण सरधा सूं होसी घणा खराब ।
सुभ जोग नें संवर जिण कह्या न्यारा, त्यारो सुणजों विवरा सुध जाब ।
सुध सरधा रो निरणो कीजो* ॥१॥

तेरमें गुणठाणे आतमा सात, तिहा कषाय आतमा टल गइ ताय ।
चवदमे गुणठाणे छ आतमा छे, तिहां जोग आतमा गइ छे विल्लाय ॥सु०२॥

जोग आतमा मिटी चवदमें गुणठाणे, चारित आतमा तो मिटी नही कोय ।
इण लेखे चारित नें सुभ जोग, प्रतख जूआ जूआ छे दोय ॥३॥

चारित ने जोग एक सरधें तो, आठ आतमा री हुवें आतमा सात ।
सुभ जोग ने चारित एक सरधे तिण, चोडेइ पडवजीयो मिथ्यात ॥४॥

बारेंमें तेरमें चवदमे गुणठाणें, षायक चारित छे जथाख्यात ।
ते चारित निरंतर एक धारा छे, ते तो बवे घटे नही छे तिलमात ॥५॥

चारित मोहणी षय हुवे जब, षायक चारित नीपजे ताय ।
इण चारित संवर रो एक सभाव, सुभ जोग ते चारित कदेय न थाय ॥६॥

चारित मोहणी उपसम हुवे जब, उपसम चारित नीपजें ताय ।
षयउपसम हुआ षयउपसम चारित, खय हुआं षायक चारित थाय ॥७॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चारित मोहणी षय षयउपसम हूआं, तिण सू तो सुभ जोग नीपजे नांही ।
 मोह घट्यां सुभ जोग नीपना सरखें, ते पड गया मोह मिथ्यात रे मांही ॥ ८ ॥
 सुभ जोग नीपजण री विघ न जाणें, असुभ जोग तणी पिण विघ नही जाणे ।
 सुभ जोग ने ओलखीयां विण आंघा, पीपल बावी मूरख ज्यूं ताणे ॥ ९ ॥
 सुभ नें असुभ जोग नीपजें तिणरों, निरणो वीर सूतर मे वतायो ।
 त्यारो थोडों सो विसतार कहूं छूं, ते सांभलजों भवीयण चित्त ल्यायो ॥ १० ॥
 अंतराय करम षय षयउपसम हूआं, नीपजें षायक पयउपसम ताय ।
 ते लवद वीर्य छें उजळों निरमल, तिण वीर्य सूं करम न लागें आय ॥ ११ ॥
 तिण लवद वीर्य सूं करम न ह्क्के, वले वीर्य सूं करम कटें नही ताय ।
 लवद वीर्य छें पुदगल नें संजोगें, तिण ने वीर्य आतमा कही जिणराय ॥ १२ ॥
 लवद वीर्य तणों जीव करें व्यापार, ते व्यापार छें करण वीर्य जोग ।
 तिण व्यापार ने भाव जोग कहीजें, त्यारो व्यापार छें पुदगल रे संजोग ॥ १३ ॥
 सावद्य काम करें ते सावद्य जोग, निरवद काम करें ते निरवद जोग ।
 तेतो दरब जोग पुदगल नें संघातें, दरब नें भाव जोग रों भेलो संजोग ॥ १४ ॥
 सावद्य जोगां सूं पान लागें छे, निरवद जोगां सूं निरजरा होय ।
 वले निरवद जोगां सूं पुन पिण लागें, सुभ जोगां ने संवर सरघो मत कोय ॥ १५ ॥
 सुभ जोग छे करणी करम काटण री, संवर सूं तो ह्क्के छें करम ।
 सुभ जोगां ने संवर सरखे छें भोला, तेतो करमां तणे वस भूला छे भर्म ॥ १६ ॥
 मन वचन जोग उतकष्टा रहे तो, अंतर मोहरत तांड जाण ।
 चारित तो उतकष्टों रहे तां, देसउणों कोड पूर्व परमाण ॥ १७ ॥
 सुभ मन वचन जोग चारित हुवे तों, चारित पिण अंतर मोहरत तांड ।
 जो उ चारित री थित इघकी परूपे, तिणने आपरा बोल्या री समझन कांड ॥ १८ ॥
 मन वचन रा दोय दोय तीन काया रा, ए सात जोग तेरमें गुणठाणे ।
 जोग ने संवर कहे तिण ने पूछा कीजे, तू किसा जोग ने संवर जाणें ॥ १९ ॥
 कदेयक तो सत मन जोग वरतें, कदेयक वरते जोग ववहार मन ।
 एक एक समें दोनू मन नही वरते, इमहीज वरते दोनू जोग वचन ॥ २० ॥
 काया रा तीन जोग साथे नही वरते, एक समें वरते काया रो जोग एक ।
 चारित संवर तो निरतर एक, जोग तो जूजूवा वरते अनेक ॥ २१ ॥
 जो उ सातोड जोगां ने संवर सरखे, ते सातोड जोग नही एक माय ।
 कदे कोड वरते कदे कोड वरते छें, संवर तो एक घारा रहे छे नाभ्यात ॥ २२ ॥
 संवर ने सुभ जोग जूजूवा दीसे, यां दोया ने एक वहे किण देखे ।
 अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो विण विघ देखे ॥ २३ ॥

केवली समदघात करें तिण कालें, काया रा तीन जोग तणों व्यापार ।
 पेंहले नें आठमें ओदारीक जोग, बाकी रा जोग नही तिण वार ॥ २४ ॥
 बीजें छूटे वले सातमें समें, ओदारीक नों मिश्र जोग व्यापार ।
 तीजें चोथें नें पांचमें ए तीन समां में, कारमण जोग वरते तिण वार ॥ २५ ॥
 ए कारमण जोग तो नवों नीपनो, आगें जोग हुंता ते गया विल्लाय ।
 सुभ जोगां नें चारित गिणें तिण लेखे, चारित पिण विलें होय गयो ताय ॥ २६ ॥
 जो उ कारमण जोग ने चारित सरखें, ते पिण मिटसी तेरमें गुणठाणे ।
 जब उणरे लेखे ते पिण चारित मिटीयो, जब उ किसान जोग नें चारित जाणे ॥ २७ ॥
 जो उ ओदारीक रा मिश्र नें चारित सरखें, ते पिण जोग जासी विल्लाय ।
 जब तिणरें लेखे ते पिण चारित विल्लांयो, आप री सरघा समझ देखें मन् मांय ॥ २८ ॥
 वले पांच जोग नीपजे त्यारे, त्यारे पिण चारित सरघ उभों रहे ताय ।
 ते पिण जोग निरंतर नांहीं, त्यां जोगां नें चारित कहसी किण न्याय ॥ २९ ॥
 चारित निरंतर केवलीयां रे, जोग निरंतर नही छें एक ।
 ए प्रतख न्याय उघाडों दीसें, हलूकर्मि होसी ते छोडसी टेक ॥ ३० ॥
 तेरमां थी जायें चवदमें गुणठाणें, जब पेंहला तो मन जोग रों रुखें व्यापार ।
 तठा पछे रुखें छें वचन रो जोग, जब एक काय जोग रह्यो छें लार ॥ ३१ ॥
 जो उ मन वचन जोग संवर सरखें, तिणरे लेखें तो दोनूइ संवर घट जाय ।
 अजोग संवर पिण नीपनो नांही, एक काया रो जोग बाकी रह्यो ताय ॥ ३२ ॥
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें, जब हलूकर्मि हुवे तो सवलों सूभे ।
 भारीकरमो हुवें तो ऊंचो पड जायें, वले उंची सरघा मांहे इधको अलूमें ॥ ३३ ॥
 सुभ जोग ने संवर न्यारा न्यारा छें, याने एक सरखें ते मूढ मिथ्याती ।
 वले दिन दिन इधकी तांण करे तों, ते उंची सरघा रो हुवो पखपाती ॥ ३४ ॥

ढाल : ३

ढुहा

सुभ जोग संवर निश्चें नही, सुभ जोग निरवद व्यापार ।
 'ते करणी छें निरजरा तणी, तिण सूं करम न रुके लिंगार ॥ १ ॥
 समदघात करे जब केवली, कांय जोग तणों व्यापार ।
 तिण सूं करम तणी निरजरा हुवे, पुन पिण लागे तिण वार ॥ २ ॥
 त्यारी निरजरा सूं पुदगल भ्रुखा, त्यां सूं सर्व लोक फरसाय ।
 जोगा सूं निश्चे निरजरा हुवें, चोडे देखो सूतर रो न्याय ॥ ३ ॥
 सुभ जोगां सूं निरजरा हुवें, ते कह्यो सूतर रे मांय ।
 ते थोडा सा परगट करुं, ते सांभलजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

'अकुसेल जोग रुधतां निरजरा हुवे, ते निरजरा रुवें त्यां लग जाणों रे ।
 वले निरजरा हुवें कुसेल जोग उदीखां, ते प्रवरतें छे त्यां लग पिछांणो रे ।
 सुभ जोग छें निरजरा री करणी* ॥ १ ॥
 ओ तो परिसलींणीया तंप कह्यो श्री जिणेसर, सूतर उवाई मांह्यो रे ।
 त्यां सुभ जोगां नें कोइ संवर सरधें, ते तो चोडे भूला जायो रे ॥ सु० २ ॥
 प्रसस्त जोग पडवेजीयो सांधु, अणतंघाती करमां नें खगयो रे ।
 'ए उंत्तरावेन गुणतीसमे अघेने, सात्तिमों बोल कह्यो जिणरायो रे ॥ ३ ॥
 सामायक रो फल सावद्य जोग निवरते, इणरो 'ए गुण नीपनो ताह्यो रे ।
 'ए पिण उंत्तरावेन गुणतीसमें घेनें, कह्यो आठमां बोल रें मांह्यो रे ॥ ४ ॥
 पांच परकार नी सभाय कीयां सूं, निरजरा हुइ कटीया करमो रे ।
 सभाय करे ते निरवद जोगां सूं, जब नीपनो निरजरा धर्मो रे ।
 सुघ सरवा रो निरणो कीजो ॥ ५ ॥
 ए पिण उंत्तरावेन गुणतीसमें घेनें, उगणीस सू तेवीस तांड रे ।
 त्यां सुभ जोगां नें संवर सरधे, ते भूल गया भर्म माही रे ॥ ६ ॥
 जोग तणा पचखांण कीयां सूं, अजोग संवर हुवो रे ।
 ते अजोग संवर चारित नाही, अजोग संवर चारित सू जूवो रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अजोग संवर सुभ जोग रुध्यां नीपनों, जब छटो निरवद व्यापारो रे ।
 चारित नीपनो सर्व इविरत त्याग्यां, बाकी इविरत न रही लिगारो रे ॥ ८ ॥
 अजोग संवर हुवें निरवद जोग त्याग्यां, तिणमें सावद्य रो नहीं परिहारो रे ।
 चारित हुवें सर्व इविरत त्याग्यां, नव कोटी त्याग्यो सावद्य व्यापारो रे ॥ ९ ॥
 तीन करण जोगां सर्व सावद्य त्याग्यो, ते तो तीन गुपत संवर धर्मो रे ।
 पांच सुमति छे निरवद जोग व्यापार, त्यासूं कटें छे आगला करमो रे ॥ १० ॥
 गुपत संवर तो निरंतर साधु रे, पांच सुमत निरंतर नाही रे ।
 पांच सुमत तो निरतर नही छे, ए तो प्रवरते छे जठा तांइ रे ॥ ११ ॥
 इर्या सुमत तो चालें जठा तांइ, भाषा सुमत बोलें जठा तांइ रे ।
 एसणा सुमत तो प्रवरते छे त्यां ल्ग, त्यांनं संवर कहीजें नाही रे ॥ १२ ॥
 आयाण भड मत निखेवणा सुमत, ते तो लेवें मूकें तठा तांइ रे ।
 परठणा सुमति परठें जठा तांइ, त्यांनं पिण संवर कहीजें नाही रे ॥ १३ ॥
 सुमति छें सुभ जोग निरजरा री करणी, सुभ जोगां नें संवर कहें कोयो रे ।
 यांनं एक कहें तिणरी उंधी सरघा, संवर नें सुभ जोग छे दोयो रे ॥ १४ ॥
 सुभ जोग रुध्यां मिटें निरजरा री करणी, पुन ग्रहवारा दुवार रूधांणा रे ।
 जब अजोग संवर नीपनों तिण कालें, करण वीर्य जोग मिटांणो रे ॥ १५ ॥
 जीव तणा प्रदेस चलावें, तेहीज जोग व्यापारो रे ।
 ते प्रदेस थिर हूआं अजोग संवर छे, सुभ जोग मिट्या तिणवारो रे ॥ १६ ॥
 सुभ जोग व्यापार सूं करम कटें छें, जब जीव रा प्रदेस चाले रे ।
 जीव रा प्रदेस चालें तठा तांइ, पुन रा प्रदेस भाले रे ॥ १७ ॥
 चारित ना परिणाम थिर प्रदेस, त्यांरो सीतलभूत सभावो रे ।
 तिणसू सुभ जोग नें चारित न्यारा न्यारा छें, ओतों देखों उघाडो न्यावो रे ॥ १८ ॥
 वीयावच करण रो फल वतायो, बंधें तीथंकर नाम करमों रे ।
 ते वीयावच करें सुभ जोगां सू, त्यांसूं हुवों निरजरा धर्मों रे ॥ १९ ॥
 बंदणा करता नीच गोत खपावें, वले बांधें उंच गोते करमों रे ।
 बंदणा करे छे सुभ जोगां सू, तिण सू हुवो निराजरा धर्मों रे ॥ २० ॥
 सावद्य जोगां सू सेवे पाप अठारें, ते तो पाप री करणी जांणो रे ।
 ते सावद्य करणी करतां पिण निरजरा हुवे छें, त्यांरो न्याय हीया मे पिच्छणो रे ॥ २१ ॥
 उदीरी उदीरी नें करे क्रोधादिक, जब लागे छे पाप ना पूरो रे ।
 उदीरी नें क्रोधादिक उदें आंण्या ते, करम भरें पडें दूरो रे ॥ २२ ॥
 पाप री करणी करतां निरजरा हुवे छे, तिण करणी में जाबक खांमी रे ।
 सावद्य जोगां पाप ने निरजरा हुवें छें, ते निरजरा तणों नही कांमी रे ॥ २३ ॥

ज्यं सुभ जोग छें निरवद व्यापार, ते करणी निरजरा री जाणो रे ।
 तिण करणी करतां पिण पुन लागे छें, त्यांरो न्याय हीया में आणो रे ॥ २४ ॥
 उदीर नें करणी निरवद करतां, लागे पुन रा पूरा रे ।
 करम उदीर उदीर उदें आणी नें, करम भाटक करे दूरो रे ॥ २५ ॥
 निरजरा री करणी करतां पुन हुवें छें, तिण करणी मांहे नही खांमी रे ।
 निरवद जोगां सूं निरजरा ने पुन हुवे छे, ते पुन तणा नही कांमी रे ॥ २६ ॥
 सुभ जोग सूं निरजरा री करणी, तिणरो छे आगम साखी रे ।
 सुभ जोगां नें कोइ संवर सरखें, ते भारी करमां जीव अन्हाखी रे ॥ २७ ॥
 कहि कहि नें कितरो एक कहूं, सुभ जोग ते संवर नांहीं रे ।
 सुभ जोगा नें संवर सरखे, ते निनवारी पांत माही रे ॥ २८ ॥
 सुभ जोग ने सुभ लेस्या सेती, पुन लागों सरखे नांही रे ।
 ते जिण मारया सूं न्यारा पडीया, ते पिण निनवारी पांत मांही रे ॥ २९ ॥
 भली लेस्या ने उदे भाव में आणी, अनुजोगे दुवार सूतर मझारो रे ।
 वले भली लेस्या घर्म में पिण आणी, तिणरो मूढ न जाणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 भली लेस्या थी तो पुन ग्रहें छे, तिण सूं उदें भाव माहें आणी रे ।
 निरजरा हुवें तिण सूं घर्म में आणी, आ श्री जिणवरनी वाणी रे ॥ ३१ ॥
 लेस्या अवेन री धुरले गाथा में, करम लेस्या छहूं जिण भाखी रे ।
 वले भली लेस्या ने घर्म में आणी, उत्तराघने चोतीसमो साखी रे ॥ ३२ ॥
 करमां ने ग्रहे तिण सूं कही करम लेस्या, निरजरा हुवें तिण सूं लेस्या घर्मो रे ।
 उदें भाव ते करम ग्रहवारो हेत, सुभ लेस्या सूं लागे पुन करमो रे ॥ ३३ ॥
 समवे जोगां नें उदें भाव में आणया, तिण में सावद्य निरवद दोनूं जाणो रे ।
 निरवद जोगा सूं तो पुन ग्रहे छे, सावद्य सूं पाप लागे छे आणो रे ॥ ३४ ॥
 सुभ जोगां सूं निरजरा हुवे छे, तिण सूं निरजरा री करणी में चाल्या रे ।
 वले सुभ जोगां सूं पुन पिण लागें, तिण सूं आश्रव माहें घाल्या रे ॥ ३५ ॥
 गोहूं नीपावे छें गोहां कें कारणें, पिण खाखला री नही चावो रे ।
 तो पिण साथे खाखलो नीपजे छे, बृधवंत समझों इण न्यावो रे ॥ ३६ ॥
 ज्यु करणी करें निरजरा रे काजें, पिण पुन तणी नही चावो रे ।
 पिण पुन नीपजे छे निरजरा करतां, खाखला ने गोहां रे न्यावो रे ॥ ३७ ॥
 भली लेस्या ने भला जोगां सूं, निरजरा ने पुन होयो रे ।
 लेस्या ने जोगां मे कांयक फेर छे, तिण सूं लेस्या ने जोग छे दोयो रे ॥ ३८ ॥
 सुभ लेस्या ने सुभ जोगा सूं पुन लागे, त्यांरो न कीयो घणो विसतारो रे ।
 जो इतरे कहे किण ने समझ न पडे तों, सूतर सूं करो निसतारो रे ॥ ३९ ॥

ढाल : ४

दुहा

पेह्ला गुणठांगा थी पांचमां- लों, कदे वरते नहां- सुभ, जोग ।
 एह्वी उबी करें, छें पल्पणा, तिणरें लागों मिथ्यात, रों रोग ॥ १ ॥
 पेह्ला गुणठांगा थी- छ्छा- लों, सावद्य, निरवद्य- जोग छें ताहि ।
 सातमां- थी- तेरमां- लों, एक- निरवद्य-जोग- त्यां मांहि ॥ २ ॥
 केड मूड- मिथ्याती- जीवडा, कर- रह्या उंची तांग ।
 श्रावक रें मुभ जोग- सरखें- नही, ते, पूरा मूड अयाण ॥ ३ ॥
 श्रावक- रें मुभ जोग सरखें- नही, ते- भव भव- में होमी खुराव ।
 श्रावक रें- मुभ जोग- जिण- कहां, ते- नुणजों मूतर रो जाव ॥ ४ ॥

ढाल

[आखांड समकित उचरे रे ताल]

श्रावक सामायक- ब्रत उचरे- रे लाल, सावद्य जोग रा करे पचखाण हो- भविकजन*,
 ते भणे- सभाय- बोल थोकडा रे- लाल, बले- वोलें निरवद्य वाण हो- भविकजन-
 सुव सरचा रो- निरणो करो रे- लाल* ॥ १ ॥
 श्रावक पांच पदां- नें- वंदणा करे रे- लाल, त्यांस- वरतें- निरवद्य- जोग- हो ।
 श्रावक रे मुभ जोग- सरखें- नही- रे- लाल, तिणरे मोटों- मिथ्यात रो- रोग- हो ॥ भ० सु० २ ॥
 आवो पवारो- कहें साचां भणी- रे- लाल, ते- ववहार- वचन- जोग- सुव- हो ।
 तिण वचन ने कहें- असुभ जोग छें- रे- लाल, तिणरी मिष्ट- हुइ- छें, वुव- हो ॥ ३ ॥
 बले मायां नें श्रावक- वान- दें- रे- लाल, तिणरी तीनुंड- जोग- हुवे- सुव- हो ।
 वान देवा रा जोगां ने असुव कहें रे- लाल, तिणरी विगड- गड- सुव- वुव- हो ॥ ४ ॥
 तीन मनोरय मन चितवे रे- लाल, ते सुव मन- जोग- निरदोप- हो ।
 तिण मन नें कहें- असुभ जोग छें- रे- लाल, तिणरी सरचा फोगट- फोक- हो ॥ ५ ॥
 वनं व्यान ध्यावें- श्रावक तिण समें- रे- लाल, जव सुभ जोगां रो छें- व्यापार- हो ।
 तिण व्यापार ने कहें- असुभ- जोग छें- रे- लाल, तिणरी खोटी सरचा नें विकार- हो ॥ ६ ॥
 श्रावक भावे साचां री भावना- रे- लाल, साव आवें जो देड- सुव- बाहार- हो ।
 इण भावना रा जोगां नें असुव कहें रे- लाल, तिण- जीतव- दीयां- विगार- हो ॥ ७ ॥
 श्रावक सीलादिक वारें ब्रत उचरे रे- लाल, जव निरवद्य जोगां रो व्यापार- हो ।
 तिण जोगां नें असुव कहें रे- लाल, ते- तो- पूरा- मूड- गिवार- हो ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रावक निरवद किरतब करें रे लाल, ते निरवद जोगां सूं होय हो ।
 तिण जोगां नें सुध सरखे नहीं रे लाल, तिण समकत दीधी खोय हो ॥ ९ ॥
 मन पुने वचन काय पुने कह्या रे लाल, ए- तीनूँइ सुध जोग जाण हो ।
 या तीनां नें कहें असुध जोग छें रे लाल, ते तो जिन मारग नां अजाण हो ॥ १० ॥
 श्रावक तो जिह्वाँइ रह्या रे लाल, मिथ्याती रे पिण सुभ जोग जाण हो ।
 जब परत संसार मिथ्याती करे रे लाल, तिणरा निरवद जोग पिच्छाण हो ॥ ११ ॥
 सुख विपाक सूतर में दस जणां रे लाल, दांन दे कीयों परत संसार हो ।
 त्यारा तीन करण जोग सुध था रे लाल, जोवो विपाक सूतर रे मकार हो ॥ १२ ॥
 दांन दीयों भगवान् नें रे लाल, विजें-गाथापती आदि च्यार हो ।
 त्या पिणतीन करण तीन जोग सूं रे लाल, कीधो परत संसार हो ॥ १३ ॥
 ठांम ठांम सिचांत मांहे कह्यो रे लाल, मिथ्याती-कीयो परत संसार हो ।
 त्यारे सुभ जोग मूल सरखे नहीं रे लाल, ते तो भूठ-रा बोलणहार हो ॥ १४ ॥
 सूतर भगोती मांहे कह्यो रे लाल, इंद्र निरवद भाषा बोले जाण हो ।
 निरवद भाषा ते निरवद जोग छें रे लाल, तिणरी कर्यें हीया में पिच्छाण हो ॥ १५ ॥



ढाल : ५

दुहा

अरिहंत सिघ ने आयरीया, उवभाय सगला साध ।
ए मुगंत नगर नां दायका, पांचूई पद अराध ॥ १ ॥
पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदें उपसम षायक जाण ।
ष्योपसम नें परिणामिक छे, त्यारी बुधवंत करजों पिछांग ॥ २ ॥
आठ करम उदे हूआं नीपजे, जीव तणा उदें भाव ।
त्यानें भाव जीव जिणवर कह्या, त्यारों जूओ जूओ छे सभाव ॥ ३ ॥
नारकी तिरजुंच मिनष देवता, पृथ्वी आदि देइ छ काय ।
क्रिस्तादिक भाव लेस्या छहूँ, क्रोधादिक च्यार कषाय ॥ ४ ॥
तीन वेद मिथ्याती नें अविरती, असनी नें अनांग ।
वले अहारथा नें संसारथा, असिघ नें अकेवली जाण ॥ ५ ॥
छदमस्थ ने संजोगीपणों, ए बोल कह्या तेतीस ।
ते सारा उदें भाव जीव छे, ते भाष गया जगदीस ॥ ६ ॥
त्यामे मोह उदें सू नीपनां, ते साराइ सावद्य जाण ।
सेष करम उदें सू नीपनां, त्यांसू पाप न लागे आंग ॥ ७ ॥
नाम करम उदे सू नीपनां, त्यामें केयक निरवद जाण ।
केइ सावद्य निरवद दोनूं नही, त्यांसू करम न लागें आण ॥ ८ ॥
छ करम उदे हूआं नीपनां, ते सावद्य निरवद नांहि ।
त्यारा भाव भेद परगट करूं, ते निरणो करो घट मांहि ॥ ९ ॥

ढाल

[आ अशुकं पा जिण आग्या मे]

च्यार गति छ काय असनी नें अनांगी, संसारथा ते तो संसार रे माहि ।
असिद्ध अकेवली ने छदमस्थ, ए सोलें बोल सावद्य निरवद नांहि ।
उदे भाव जीव अतेकरण ओलखजो* ॥ १ ॥
च्यार कषाय ने तीन माठी लेस्या, वले तीनो वेद मिथ्यात नें इविरत ।
ए बारोइ बोल छें एकत सावद्य, त्यासू एकंत पाप लागे छें निरत ॥ २ ॥
तीन भली लेस्या छे एकत निरवद, त्यासू निरजरा होय पुन लागे छे आय ।
आहारीक ने सजोगी छें सावद्य निरवद, त्यासू पुन नें पाप दोनूइ बंधाय ॥ ३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अंतराय करम षय षयउपसम हूआं,
ते उजला लेखे' छें एकंत निरवद,
वीर्य चलावें छें' नाम करम संजोगें,
जब करम कटे' तिण निरवद जोगा सूं,
नाम करम संजोगें' प्रदेस चलावें,
अववसाय परिणामादिक सर्व रूडा,
भली लेस्या भला जोग करणी रे लेखे',
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिण लेखे',
चवदमें गुणठांगे चवदे' जोग सरवे',
ए सरधा छे विपरीत प्रतख खोटी,

चवदमें गुणठांगो अजोगी कह्यो जिण,
पिण भारी करमां ने सक्ली न सूके',
तेरमें गुणठांगे पे'हला मन जोग रूधे,
ए तीनुं जोग रूधीं नें हूआ अजोगी,
जब तो कहें प्रवर्तन जोग रूधांणा,
ओ तों अणहूंतो गोलों चलायो,
ए निरवतन जोग छें सुभ जोग सवर,
ते किण ही सूतर माहे' चाल्यो न दीसे',
सुभ जोग ने संवर सरवे' मिथ्याती,
ते हीया फूट गधा रा साथी,
जोग तो व्यापार जीव तणों छें,
थिर प्रदेस ने जोग सरवे' छें,
सुभ जोग ने संवर जूआ जूआ छें,
त्यां दोयां नें एक सरवे' अग्यांनी,
सुभ जोगां सूं पुन करम लागे छें,
सुभ असुभ करम संवर सूं रुके' छें,
सवर सूं जीवा रा प्रदेस बंध हुवे' छें,
या दोयां ने एक सरवे' छें अग्यांनी,

जब वीर्य लब्ध उपजे' छें आय ।
तिणसूं पुन पाप निरजरा क्युंही न थाय ॥ ४ ॥
ते निरवद जोग तणो व्यापार ।
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिणवार ॥ ५ ॥
ते भली लेस्या भला जोग व्यापार ।
जब निरजरा पुन हुवे' तिणवार ॥ ६ ॥
षायक षयउपसम भाव छें' ताय ।
उदे' भाव माहे' घाल्या जिणराय ॥ ७ ॥
तीणमें कारमण जोग नें वीर्यो छे टालो ।
तिणरो मूढ मिथ्याती न कडे' निकाल ।
इण खोटी सरधा रो निरणो कीजो ॥ ८ ॥
जो सका हुवे' तो सूतर नें संभालो ।
तिणरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ ९ ॥
पछे' वचन रूधे पछे' रूधे काया ।
त्यारे' पाछा जोग कठी सूं आया ॥ १० ॥
निरवतन जोग छे तिण मांही ।
ते तो किण ही सूतर में दीसे' नाहीं ॥ ११ ॥
ओ पिण अणहूंतो चलायो गोलो ।
आ पिण मिथ्यात्यां रे' मोटी भोलो ॥ १२ ॥
आतो उठी जठा थी जाबक भूठी ।
त्यारी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ १३ ॥
जीव रा प्रदेस हाले' चाले' त्यांही ।
तिणरे' मोटो मिथ्यात रह्यो घट मांही ॥ १३ ॥
त्यां दोयां रो जूओ जूओ छे' सभाव ।
तिण निश्चे'इ कीघो छें' मोटों अन्याव ॥ १५ ॥
असुभ जोगां सूं लागें पाप करम ।
वले सुभ जोग सूं हुवे' निरजरा धर्म ॥ १६ ॥
जोग सूं जीव रा प्रदेस री हुवे' छें छूट ।
ते निश्चे'इ नेमा छें' हीया फूट ॥ १७ ॥



रत्न : ७

निषेपां री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, वले उवाभाय नें सर्व साध ।
यांरा गुण ओलखनें वंदणा करें, ते पामें परम समाध ॥ १ ॥
केइ हिसाधमी जीवडा, मानें निगुणा देव गुर धर्म ।
मारें छक्राय रा जीव नें, वाधें उसभ करम ॥ २ ॥
नाम थापना दरब भाव ने, ए मानें नषेपा च्यार ।
त्यांरी पिण समज पडे नही, घट मे घोर अंधार ॥ ३ ॥
ए च्यार नषेपा रो नाम ले, भोलां ने दे भरमाय ।
त्यांरी सरघा रा प्रश्न पूछीयां थकां, तो भूठ बोलें फिर जाय ॥ ४ ॥
ते भूठ बोलें छें किण विधें, किण विध फिर फिर जाय ।
हिंवे नाम नषेपा रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे]

ढेढ डूब थोरी नें सरगरा रे, भील मेणा ने मूसलमान रे ।
चंडाल धुरा धुर सर्व जात में रे लाल, कें कारो छें नाम भगवान रे ।
नाम नषेपा रो निरणो सुणो रे लाल* ॥ १ ॥
जे गुण विण नाम माने तेहनें रे, सगला नाम भगवान बंदणीक रे ।
तिणने पूछणो सगली न्यात ने रे लाल, करणी नाम भगवान री ठीक रे ॥ ना०२ ॥
पछे गुण विण नाम भगवान नें रे, जो उन वादें सगला रा पाय रे ।
उण सरघा थापी ते उथप गद रे लाल, पिण गहलां ने खबर न कांय रे ॥ ३ ॥
केइ जोगी सिन्यास्यां रा नाम छे रे, सिधगिरी ने सिधनाथ रे ।
जे गुण विणा नाम माने तके रे लाल, सिधां ने वयूं न वादे जोडी हाथ रे ॥ ४ ॥
केइ करे मिनषां रो कारट्य रे, ते पिण वाजे आचार्य लोकां मांय रे ।
जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, क्यूं न वादे तिण आचार्य रा पाय रे ॥ ५ ॥
केइक ब्राह्मण लोक में रे, त्यांरी जात वाजें उपाध्याय रे ।
जे गुण विणा नाम मानें तके रे लाल, क्यूं न वादें उण उपाध्याय रा पाय रे ॥ ६ ॥
केइ साध वाजे भगत हुंढीया रे, ते निगुण छें रहीत समाध रे ।
जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, ते क्यूं न वादें एहवा साध रे ॥ ७ ॥
ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, त्यांरा पूछे पूछे नें नाम रे ।
जे गुण विणा नाम माने तेहने रे लाल, वादे पूजे करणा गुण ग्राम रे ॥ ८ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, जो उनमें तो सरधा में फूट रे ।
 भाव भगत करी वादें नहीं रे लाल, तो नाम नषेपो गयो उठ रे ॥ ६ ॥
 नाम नषेपो माने गुण विणा रे, पिण कांम पड्यां दे उथाप रे ।
 ते पग २ भूठ बोले घणां रे लाल, ते कर रह्या कूडा विलाप रे ॥ १० ॥
 नाम वादण रो कह्यां थकां रे, तब ते बोले एम रे ।
 कहे नाम छे तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणनें सीस नमावां केम रे ॥ ११ ॥
 जे नाम नकेवल मानता रे, ते गुण रो सरणो ले किण न्याय रे ।
 यांरी खोटी सरधा अठकें घणीं रे लाल, जब साच बोली आया ठाय रे ॥ १२ ॥
 ते कहवा नें ठाम आवीयों रे, पिण माहें न भीजे मूढ रे ।
 त्यारें लाग्गा डंक कु गुरां तणा रे लाल, ते किण विघ छोडें रुढ रे ॥ १३ ॥
 ए नाम नषेपो करें रह्यां रे, तिण री पिण समझ न काय रे ।
 भरमाया कुगुरा तणा रे लाल, ते चोडे भूला जाय रे ॥ १४ ॥
 सोनों रूपो दीयों नाम मिनष रो रे, ते कहवा ने छे नाम रे ।
 जो काम पडे गेहणा तणो रे लाल, तो नावें गेहणा रे कांम रे ॥ १५ ॥
 किण ही मिनष रो नाम हीरो पनों दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडे जडाव रो रे लाल, तो नावें जडाव रे काम रे ॥ १६ ॥
 किण ही मिनष रो मांणक मोती नाम छे रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे ।
 जो पेहरें सिणगार करवा भणी रे लाल, तो नावें पेंहरण रे काम रे ॥ १७ ॥
 केसर किस्तुरा नाम दीयों मिनष रो रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडे वलेपण गंध रो रे, तो नावें वलेपण गंध कांम रे ॥ १८ ॥
 किण ही मिनष रो नाम लाडू दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे ।
 पिण भूख लागें तिण अवसरे रे लाल, तो नावें खावण रे काम रे ॥ १९ ॥
 किण ही लकडी रो नाम घोडो दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 जो कांम पडें चालण तणो रे, तो नावें चढण रें कांम रे ॥ २० ॥
 इत्यादिक जीव अजीव रा रे, दीघां नाम अनेक रे ।
 पिण गरज सरें नही ते नाम सूं रे लाल, समझो आण ववेक रे ॥ २१ ॥
 ज्यूं गुण विण नाम भगवान छे रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे ।
 पिण धर्म नही तिण वादीया रे लाल, ते तिरण तारण नहीं तांम रे ॥ २२ ॥
 नाम भगवान सर्व जीव रो रे, दीयों अनंती वार रे ।
 पिण गुण विण नाम भगवान सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे ॥ २३ ॥
 गुण विण नाम भगवान सूं रे, न टलें आतम दोष रे ।
 जे त्याने वाधां सुव गति हुवें रे लाल, तो सगलाइ जीव जाता मोख रे ॥ २४ ॥

गुण विण नांम बांघां थकां रे, गरज सरें नही कांय रे ।
 गरज सरे एक भाव सूं रे लाल, जोबो सूतर रे मांय रे ॥ २५ ॥
 गुण विण नाम माने तेहनें रे, बोली रो न दीसे बंध रे ।
 फिरती भाषा बोले घणां रे लाल, ते होय रह्या मोह अध रे ॥ २६ ॥
 गुण करने अरिहत छें रे, गुण करतें सिध साध रे ।
 त्यांरा गुण नें नांम एक हीज छे रे लाल, त्यांने बांघां हुवे परम समाध रे ॥ २७ ॥
 किणरी मातां रो नांम सरूपां छें रे, तेहीज नांम अस्त्री रो होय जांय रे ।
 जे गुण विण नाम माने तेहनें रे लाल, दोयां ने गिण लेंगी माय रे ॥ २८ ॥
 के दोयां ने गिण लेणी अस्त्री रे, उणरी सरघा सांहाो जोय रे ।
 जो उ अस्त्री ने मां जुदी गिणे रे लाल, तिण नांम नपेपो दीयो खोय रे ॥ २९ ॥
 किणरा बाप रो नाम धनरूप छे रे, त्यांरे मांहीमां हेत मिलाप रे ।
 जे गुण विणा नांम माने तेहनें रे लाल, सगला छें धनरूप बाप रे ॥ ३० ॥
 सगला धनरूप नांम तेहनें रे, संकतो नही लेखवें बाप रे ।
 ओर धनरूप सूं दुजागी करे रे लाल, तिण दीयो नांम नपेपो उथाप रे ॥ ३१ ॥
 बेन बेनोइ काका बाबादिके रे, यांरें नांम छे नांम अनेक रे ।
 त्यांने नांम परमाणे न लेखवे रे लाल, तो छोड देणी कूडी टेक रे ॥ ३२ ॥
 गुण ओर ने नांम ओर छें रे, ते कह वतलावण कांम रे ।
 कोई भोलेइ मत भूलजो रे लाल, सुण सुण एहवो नांम रे ॥ ३३ ॥
 केयक नांम कहिवा नें दीया रे, केइ गुण निपन छें नांम रे ।
 कहिवा रा नाम कहिवा भणी रे लाल, पिण गुण निपन आवें कांम रे ॥ ३४ ॥
 इम कहि कहि ने कितोक कहूं रे, नांम नपेपो रो विसतार रे ।
 जे गुण विण नांम बांघे नही रे लाल, तिण सफल कीयो अवतार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : २

ढुहा

गुण विण नांम दीयों लोक में, ते प्रतख लेजो देख ।
बले थोडा सा परगट करूं, ते सुण सुण म करो देख ॥ १ ॥

ढाल

[देशी - चौपई नी]

नांम दीयों सुरो रणधीर, भागो जाअे दीठें तीर ।
नांम दीयों छें राधाकिसन, सेवतो जाअें सातो विसन ॥ १ ॥
नांम दीयों छे गोबिंदराय, फिर फिर चरावे पराइ गाय ।
बाई रो नाम दीयों छें लाछ, मांगी न मिले कुलडी छाछ ॥ २ ॥
सासु कहे म्हांरी कपूरदे बहू, भांभल नाम बोलवें सहू ।
नांम दीयो कसतूरी जास, माहें न मिलें हीग री वास ॥ ३ ॥
टेट घगी ने बांको न्हाल, दुरभख पढीयो देस दुकाल ।
नाम दीयो थो जगतपाल, पिण सगलां पेंहली बेच्या बाल ॥ ४ ॥
किण ही एकरो नाम सोनो दीयो, साथ विणा एकलो चालीयो ।
घणों दलद वहेज लार, नाम नें कदेय न उठें घाड ॥ ५ ॥
बाइ रो नांम दीयों छें खुसाल, पिण मिट्यो नही सोक रो साल ।
कुड कुड ने दिन पूरा करे, कूअें वावडी पड ने मरें ॥ ६ ॥
नांम दीयो छें घर्मोसाह, परभव नी नही छे परवाह ।
कूड कपट लंपट चित घरें, इसडो घरमो नरकां पडें ॥ ७ ॥
लोक कहे आ लिछमी बाय, उओं सूर छांणां ने जाय ।
किण ही एक रो नाम सरूपां दीयो, एक काली ने कुजस लीयो ॥ ८ ॥
सुंदर नांम दीयों छें अनूप, खोटी बोलें बले कुरूप ।
कुत्ता चाटे छे हांडीयां, सेडे करनें घर भांडीयां ॥ ९ ॥
ज्युं नांम दीयों अरिहंत भगवानं, पिण माहें न दीसें अकल गिनांन ।
तिरण तारण री समझ न काय, तिणने मूरख बादिं जाय ॥ १० ॥
इण अनुसारे दीघा नांम अनेक, त्यांसूं गरज सरें नही एक ।
ते सुणनें समझे चतुर सुजाण, पिण मूरख माडे तांणा तांण ॥ ११ ॥

ढलल : ३

दुहल

ँ नलं नषेडु डुलखलवुडु, हलवुं थलडनल रु डधकलर ।
 गुण वलण देखु थलडनल, डुलल डरुड संसलर ॥ १ ॥
 वलदे डुडुं तुडरुथकर रल थलडनल, तुडरुं डलकरुं डथर कुुरलड ।
 सुनुं डुडतल धलत डनेक सुं, तुडरु डलकरुं वलव डरलड ॥ २ ॥
 वले कलगद कडडलदलक डुडरुं, डगवंत रु डडु डलकर ।
 तुडणुं सुस नडलड वंदणल करुं, डलणु हुवु ललड डडलर ॥ ३ ॥
 कहुं डलण डुरतलडल डलण सलरखु, डेर ड डलणुं कुुड ।
 दुनुं ने वलंघलं थकलं, ललड सरुखु हुडु ॥ ॡ ॥
 वले गुण ललरुं डुडल कहुल, नलगुण डुडतल डलड ।
 डुं कुुडुं डुलल डलंनवु, तुडलंन कुड डलंणुडुं ठलड ॥ ॡ ॥
 कदे तु कहुं वलंघलं गुणल डणु, कदे कहु वलंघलं डलकर ।
 तुडरुं सरधल डुं डुड डलडुतु डधणु, ते कहुतलं न डलवे डलर ॥ ॢ ॥
 डुं गुण वलणल डलकर नुं वलंघतल, तुडलंन डुरधन डुडुं डलड ।
 तु डलर डलडुं डुडु डुलुं धणुं, ते सुणडु कुत लुडलड ॥ ॣ ॥

ढलल

[डल डुरशुकडुडल डलश डुरलगुडल डु]

ककुरत वलसुदेव ने वलदुदेवल, ते तु छे तुन खड तणल सरदलर ।
 इतुडलदलक केइ डलनष ने सरुव डुगलुडलडल, ते सगललइ छे डगवंत रे डलकर ।
 थलडनल नलषेडल रु नलरणु सुणडु* ॥ १ ॥
 डवनडतु ने वुडंतर देवल, डुतकु डेव ने वलडलंणुक वखलंण ।
 ते डलण छुं डलरलहुंत रुं डलकरुं, सडकुुरस छे सगललं रु संठलण ॥ थल० २ ॥
 डे गुण वलणल डलकर डगवलंन रु वलंघे, तुडणरे लेखुं वलंघणल कुण २ डलकरु ।
 सडकुुरस संठलण रल डलनष ने देवल, तुडलंन हरष धरे वलंघणल वललुं वलरु ॥ ३ ॥
 डु ड हरष धरे डलंन वलंघे नहुलं तु, डणरु सरधल डणरुं लेखुंइ कुुडु ।
 डलड थलडु ते डलड डथलडुं, डल डलण डलंघलं रे डुलुड डुडु ॥ ॡ ॥
 डथर धलतु कुतलरलंडलदलक नलं, कर कर वलंघे डगवंत रु डलकरु ।
 तु ललद डुडवर धूर कुुडललदलक नलं, डलकर करुं वलंघणल वललुं वलरु ॥ ॡ ॥

*डह डलंकडु डुरतुडेक गलथल के डनुत डुं हु ।

जो गोवरदिक नां अकार न बाँदें,
 पथर बाहु चित्तसंनदिक नां,
 केई शान्ता चित्त नें अचित्त बरद नीं,
 तिन जगें आय पाँवूँ अंग ननें नें,
 तिनगरी सेवा पूजा करें नात्र नगत सूं,
 निग तेजो एकरे लीद अग्यंती,
 आचार्य उच्यन्त साव गुणवंता.
 जे गुण विना आकार बाँदें ते,
 जे जे आकार निगन तना छें,
 जे गुण विना आकार बाँदें ते,
 जो उ सर्व निगना नें नहीं बाँदें तो,
 अँ अकल विदुषा सरसा पह्यें,
 जो आकार बाँदन रो कहें बोइ जग नें,
 ए आकार छे तो पिन गुण नहीं नाहें,
 जे शान्ता आकार नाहें निकैक,
 बाँरी नरवा अक्छां वाइ न जावें,
 ते कहवा नें जय जाया जांगें,
 त्यारे कृपुसं रा अँ करवा लाभा,
 ए शान्ता शान्ता कर रक्षा नूरल,
 कृपुसं रां नरनाथा अग्यंती,
 जो उ हाथी नछल्यां नांत कइवे देवे जइ,
 जो उ गुण विन आकार बाँदें निग लेहें,
 कहें हाथी नछल्यां नांत कइवे फाँदां सूं,
 तो नगवंत रे आकारें प्रतिना बाँदां,
 चिनरा सगा सब्बी व्याही त्याहीला,
 नगवंत रे आकारे प्रतिना पूछें,
 कहें रेत रा लडू नें सवाद नहीं छे,
 गुण विन बनहु ते अर्थ न जावें,
 पथर कौराय नें प्रतिना बगावें,
 तिन नें दिनहीन पथर रा स्तीया देवें ते,
 धृष्ट तेजान्दिक नां सोबो देइ नें,
 तो नाज तना नगवंत बनाए,

तो शायरी सरवा रो आय अजांगों।
 आकार केही नूइ नर्म नुलपो ॥ ६ ॥
 नगवंत रे आकार बगावें चैरी।
 मनोयुगं गुणें मूह होय होय देये ॥ ७ ॥
 एहीर न्हारी अवागन निवारें।
 ए तिरें नहीं ते दिन विर तारें ॥ ८ ॥
 त्यारे आकारें बुँकीयादिक नपचारि।
 जो जो क्यूं न बाँदें यंरो देह अकारि ॥ ९ ॥
 तेहीन आकार सायां रा जांग।
 सर्व निगना नें क्यूं नहीं बाँदें अघांग ॥ १० ॥
 तिन शान्ता आकार बीयो उलय।
 ते पग पग नूळ बोलें फिर जय ॥ ११ ॥
 उइ तो मूयो बोलें नुह सुं एन।
 दिनमें न्हें सीध नमावां के ॥ १२ ॥
 ते गुण रो सरयो लें छें दिन त्याय।
 जइ साव बोली ते जायो छें जय ॥ १३ ॥
 निग मन में न नीजें अग्यंती नूडो।
 ते दिन विर छोडें लोटी लडो ॥ १४ ॥
 तिन शान्ता रा पिन सनन न बायो।
 ते बोडे मारग नूळ जायो ॥ १५ ॥
 त्यांग फाडी फाडी करें दोय दोय डूका।
 तो हाथी नछल्यां मारग कांय डूका ॥ १६ ॥
 हाथी नछल्यां माखां रा न लागे पान करजों।
 तिन नेंडे निरवें न जांगों धनों ॥ १७ ॥
 तिन नें रेत रा लडू बनाय नें नेलें।
 ते रेत रा लडू पाछा कांय छेलें ॥ १८ ॥
 तो प्रतिना नें गुण नूळ न जांगो।
 सनमो रे सनमो ये नूइ अजांगो ॥ १९ ॥
 तिन प्रतिना नें नगवंत ज्यूं लेवें।
 जो चोला स्तीया नें क्यूं नहीं लेवें ॥ २० ॥
 पथर रा स्तीया लेइ फलें न बावें।
 उ नगवंत ज्यूं दिन लेवें बाँदें ॥ २१ ॥

भाठा रा रूपीयां लेइ वसंतु देवें,
 ज्यूं भाठा रा प्रभूं वादें तिणरी मत,
 रूपा तणां रूपीयां रे ठिकाणें,
 ते तिरण तारण भगवंतं री ठारे,
 भाठा रा रूपीया लेइ घालें खेजानें,
 ज्यूं भाठां रां भगवंत थापी वादें ते,
 कोइ परंख विणा खाअें रूपीयां में खोटो,
 ए भगवंत में खोटो खावा किण लेखें,
 कोइ कागद उपर कटकं अलकें,
 त्यामें सूरपणा रो अंस न दीसें,
 ज्यूं चौबीस आदि अनेक तीथंकरे,
 त्यामें ग्यानादिक गुण अंस न पावें,
 जो उ राखें भरोसो कागद रां कटक रो,
 ज्यूं प्रतिमा नें वादें तिरण रे भरोसें,
 पोल रे दोनूं कवले हाथी वणाया,
 ज्यूं प्रतिमा कराय देवल में वेंसारी,
 लण री अस्त्री मूआं जो फेर परणीजे,
 गुण विण आकार वादें तिण लेखें,
 भरतार मूआं जो अस्त्री रोवें तो,
 गुण विण आकार वादें तिण लेखें,
 अस्त्री री गरज ढूली नहीं सारें,
 इण दृष्टते गुण विण आकार वादें,
 वले बालपणे रमें डावडा डावडी,
 ज्यूं भगवंत री प्रतिमा कर वादें,
 पापड रा लोया नें गघा रा लीडा,
 ज्यूं प्रतिमा छें भगवंत रे आकारें,
 गघा रा लीडा रा पापड न थायें,
 ज्यूं प्रतिमा ने वांघ्यां धर्म किहां थी,
 इण लोक में मोह अंध मिनष घणां छें,
 तिणरो वछडो हूंतो ते चल गयो चेतन,
 वछडा री खाल देखी गाय भूली,
 आ प्रतिमा नहीं भगवंत री काया,
 २८

तो नीवी में पंड जायें जांवक टोटो ।
 खोटो रे खोटो निकेवल खोटो ॥ २२ ॥
 पथर रा रूपीयां कदे नहीं हाले ।
 भाठा रा भगवंत किण विघ चाले ॥ २३ ॥
 त्यारो कांमं पंडे जंव घणो सीदावे ।
 परभव मांहे घणो पिछतावे ॥ २४ ॥
 ते तो रूपा रा भोल तणो परतापो ।
 आ तो प्रतख दीसें पथर री थापो ॥ २५ ॥
 मांहे भलं घोरीया असवार वणावें ।
 वेरी दुसंमण हटावण रें अर्थ न आवें ॥ २६ ॥
 त्यांरां जथतथ आकार वणावे ।
 तें तरण तारण रें काज न आवें ॥ २७ ॥
 तो इजत जाय रहें नहीं आवो ।
 ते चिहुं गति में होसी घणां खुरावो ॥ २८ ॥
 ते चढ्वा रें कांम कदे नहीं आया ।
 आं पिण जाणजो थोथी माया ॥ २९ ॥
 तो उ पिण जणरी सरंघां गयो भूली ।
 अस्त्री रे आकारे कर लेणी ढूली ॥ ३० ॥
 उवा पिण सरथा गइ छें भूलो ।
 भरतार रें आकारे कर लेणो ढूलो ॥ ३१ ॥
 भरतार री गरज सारें नहीं ढूलो ।
 त्यांरी पिण जाणजो ओहीज सुलो ॥ ३२ ॥
 ते विकल पणें करें ढूली नें ढूला ।
 ते भूला रें भूला निकेवल भूला ॥ ३३ ॥
 यां दोयां रो दीसें एक आकारो ।
 अें गुण विण अर्थ न आवें लिंगारो ॥ ३४ ॥
 कोरा खावां पिण विगडे मूंडो ।
 छोडो रे छोडो थे खोटो हडो ॥ ३५ ॥
 जेहवी सूजाडी मोह अंध गाय ।
 तिणरी खाल चाटी २ पावस जाय ॥ ३६ ॥
 तो अें प्रतिमा देख भूला किण लेखें ।
 ते तो मोह अंध गाय सूं भूला दणेपे ॥ ३७ ॥

अरिहंत भगवंत मुगत गया जब,
 ते तो गुण विण जड अचेतन पुद्गल,
 त्यांरो असल आकार सरीर पड्यो ते,
 तो ओर आकार वणाय ने वांदे,
 गुण विण आकार वादण वालो बोले,
 तिण मूं भगवत री प्रतिमा कर वांदा,
 परिणाम चले कहे अल्ली दीठां,
 ज्यूं प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें,
 उण रें मा बेंन अल्ली हुवें एक आकारें,
 पिण एक तीनूंइ ज्यूं काम न आवें,
 कदे प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें,
 पिण धर्म तो भगवंत रा गुण वांघां,
 मा बेंन आकारें अल्ली तिण सू,
 जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें,
 मा बेंन आकारें अल्ली तिण नें दीठां,
 ज्यूं प्रतिमा देखी मन हरप घरें तो,
 मा बेंन रे आकारे अल्ली हुवें ते,
 ज्यूं भगवंत रे आकारे प्रतिमा कीधी ते,
 भगवंत रे आकारे प्रतिमा वांदें,
 तो उणरा बाप रे आकारे मिनप घणा छें,
 जो सगला नें बाप लेखवतो लाजे,
 जो गुण विण आकार माने अग्यानी,
 उण री मा रे उणीयारे वीदणी हूंती,
 गुण विण आकार वादे तिण लेखें,
 के दोग्यां नें अल्ली लेखव लेंणी,
 वले मा रें उणीयारें अनेक लूगायां,
 वले बेन बेंनोइ काका बाबादिक,
 त्याने आकार परमाणे नहीं लेखवे तो,
 कोइ वाइ छें हिंसा धर्मी अनार्य,
 आकार वादें तिण बाइ रे लेखें,
 के दोग्यां नें बेटा लेखव लेंणा,
 जो भरतार नें बेटा जूदा गिणे तो,

त्यांरो सरीर आकार लारें रही काय ।
 तिण ने कोइ वांदें तो धर्म न थाय ॥ ३८ ॥
 तिणनेंइ वांघां बंधें निश्चे कर्मो ।
 त्यां आंघां नें किण विघ होसी धर्मो ॥ ३९ ॥
 आकार वांघा कहे लाम अनंत ।
 तिण प्रतिमा नें लेखव त्यां भगवंत ॥ ४० ॥
 मा बेंन दीठां रहे सुध परिणाम ।
 एहवा कुहेत लगावें तांम ॥ ४१ ॥
 कहे एक दीठां याद आवें तीनूंइ ।
 याद आइ पिण गरज सरी नही कोइ ॥ ४२ ॥
 कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें ।
 प्रतिमा रा गुण वांघां करम बंध जावें ॥ ४३ ॥
 घर वासो करतो संक न आणें ।
 तो अल्ली नें मा बेंन क्यू नही जाणें ॥ ४४ ॥
 हरपे ते विषें रे काम ।
 छ काय मारण रा उठें परिणाम ॥ ४५ ॥
 मा बेंन री गरज निश्चेंइ न सारें ।
 आ पिण जाणजो कदेइ न तारें ॥ ४६ ॥
 तिण आगें करे वले अनेक विलापो ।
 त्यां सगला नें लेखव लेंणा बापो ॥ ४७ ॥
 ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो ।
 ते कर रह्यां मूरख फेन फित्तुरो ॥ ४८ ॥
 तिणनें घन खरचे परणीजे ल्यायो ।
 दोग्यां नें लेखव लेंणी मायो ॥ ४९ ॥
 आपणी सरघा रो देखी न्यायो ।
 त्यां सगल्यां नें लेखव लेंणी मायो ॥ ५० ॥
 यारे आकारे छें मिनष अनेक ।
 छोड देणी कूडी जावक टेक ॥ ५१ ॥
 तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो ।
 दोग्यां नें गिण लेंणा भरतारो ॥ ५२ ॥
 तो उणरी सरघा में उवा परवीण दूरी ।
 उण री सरघा लेखें आ पडसी कूडी ॥ ५३ ॥

इत्यादिक जीव अजीव तणा छें, कीघा अकीघा आकार अनेक ।
 पिण गरज सरें नही आकार वांछां, समभो रे समभो थे आण ववेक ॥५४॥
 गुण विण थापना भगवांन री छें, ते देखीं नें जांणे लेणो आकार ।
 पिण धर्म नही त्यानें सीस नमायां, तिरण तारण मत जांणो लिगार ॥५५॥
 भगवंत रो आकार सर्व जीवां रे, ह्रवो छें अनंत अनंती वार ।
 पिण गुण विण आकार भगवांन रा सूं, किणरोइ ह्रवो न दीसें उद्धार ॥५६॥
 गुण विण आकार भगवांन रा सूं, निश्चेइ न टले आतम दोख ।
 जो आकार वांछां सू मुदगति जावें तो, सगला जीव जाय विराजता मोख ॥५७॥
 गुण विनां आकार वांछां सूं, निश्चेइ गरज सरें नहीं कांय ।
 गरज सरें एक भाव नें वांछां, सांसो ह्रवें तो जोवो सूतर मांय ॥५८॥
 गुण विण आकार वांदे तिणां रे, बोली में मूल न दीसें वंघ ।
 ते फिरती भाषा बोलें अग्यांनी, ते होय रह्या मतवाला ज्यूं अंध ॥५९॥
 गुण करनें अरिहंत भगवंत छें, गुण करनें छें रखेसर साध ।
 त्यांरा आकार सूं गुण न्यारा नहीं छें, त्यानें वांछां सूं पांमें परम समाध ॥६०॥
 जे गुण विण आकार थाप राख्यो ते, कहि वतलावण आवें कांम ।
 भर्म म भूला आकार देखी नें, वले सुण सुण ने आकार रो नांम ॥६१॥
 केयक आकार कहिवारा छें, केइ गुण निपन चारित परिणाम ।
 कहिवारा आकार कहिवा भणी छें, गुण निपन आवे वांदण कांम ॥६२॥
 इम कहि २ नें कितरो एक कहीजे, इण थापना निघेपा रो विसतार ।
 गुण विण थापना वांदे नहीं, त्यां निश्चेइ सफल कीयो अवतार ॥६३॥



ढाल : ४

दुहा

ए थापना नपेपो कह्यो, हिवें दरव री करजो पिछ्ठांण ।
 केइ दरव नपेपो सांभली, भूला लोक ब्रजाण ॥ १ ॥
 ते गुण विण वांदें दरव नें, कूडा कुहेत लग्गाय ।
 अतीत अनागत काल री, मानें गुण परजाय ॥ २ ॥
 कहे साव हुवा श्री रिषभ नां, त्यां कीयो चोइसत्यो ले नांम ।
 चोवीस तीथंकर हुवा नहीं, त्यांने वांदें कीयां गुणप्रांम ॥ ३ ॥
 इम कहि २ भोला लोक नें, करें निगुणा वांदण री थाप ।
 उंची करें परुपणा, बोहल्ला वांवे पाप ॥ ४ ॥
 त्यांसू कांम पडें चरचा तणो, तो भूठ वोलें फिर जाय ।
 त्यांरी सरवा ने भूठ परगट कळं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आउखो तूटा ने साधो नही]

तीथंकर होसी आगमीया काल में रे, त्यांनें वांदें नें करें अग्यांनी जाप रे ।
 ते भेल नमोथुणं में घालीयो रे, त्यां कीधी निगुणा वांदण री थाप रे ।
 ए दरव नपेपा रो निरणो सुणो रे* ॥ १ ॥
 नमोथुणं चोवीसत्यो करतां थकां रे, कहे गुण रो मत जाणो कोइ कांम रे ।
 तो उणरी सरघा रें लेखें कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठाम रे ॥ २ ॥
 एक मूला मांसू जीव नीकली रे, अनंता तीथंकर आगें थाय रे ।
 जे दरव तीथंकर वांदें गुण विनां रे, तो मूलां ने कयूं नही वांदें जाय रे ॥ ३ ॥
 पृथवी आदि देइ छ काय नें रे, दरवे तीथंकर अनंत पिछ्ठांण रे ।
 जे दरव तीथंकर वांदें गुण विनां रे, तो कयूं नही वादि यांनें जाण रे ॥ ४ ॥
 अनंता दरवे सिघ छें छ काय में रे, सिघ होसी ग्यांनादिक पांमी रिघ रे ।
 जो दरव तीथंकर वांदें गुण विनां रे, तो कयूं नही वांदें दरवे सिघ रे ॥ ५ ॥
 अनताइ छे साव छ काय में रे, भावे होसी चारित आराव रे ।
 जो दरवे तीथंकर वांदें गुण विनां रे, तो कयूं नहीं वांदें छे साव रे ॥ ६ ॥
 ए दरवे तीथंकर सिघ साव कहा रे, त्यांनें ओहीज न वांदें सीस नमाय रे ।
 इण लेखे उण री सरघा खांटी पडी रे, पिण आंवां नें समझ पडे नही काय रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भरत चक्री नो हुवो डीकरो रे, ते महावीर सांभी नो जीव मरीच रे ।
 ते घर छोडी नें हुवो तिरडंडीयो रे, तिण री सावच्च करणी ने सरघा नीच रे ॥ ८ ॥
 ते दरवे तीथंकर हुंतो तिण दिने रे, श्री रिषभ जिणेसर दीयो वताय रे ।
 तो रिषभ जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, क्यूं नहीं बांछा तिण रा पाय रे ॥ ९ ॥
 जो चोइथो करतो वांदें तेहनें रे, तिण सू तो भेलो करणो आहार रे ।
 वले रिषभ जिणेसर सरिषो लेखवी रे, अं करता बंदणा नें नमसकार रे ॥ १० ॥
 श्री रिषभदेव रा साघ साघव्यां रे, त्या नही बांछो निगुण मरीच रे ।
 जे कोइ दरव तीथंकर वांदसी रे, तिण री पिण सावच्च करणी नीच रे ॥ ११ ॥
 वले भरतजी बांछो कहें मरीच नें रे, ते पिण नहीं छें सूतर मांय रे ।
 भोलां ने चिगोए पाड्या भमं में रे, ते निगुणां नें वादे हरेपत थाय रे ॥ १२ ॥
 वले दरवे तीथंकर हुंता किसनजी रे, त्यानें नेम जिणंद दीयो वताय रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, त्या किसन रा क्यूं नहीं बांछा पाय रे ॥ १३ ॥
 त्यां उलटा किसन नें पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरवे न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथो करतां निगुणा किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुघ सू जोय रे ॥ १४ ॥
 वले दरवे तीथंकर हुंती देवकी रे, वले रोहिणी बलभद्रजी जाण रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, नही बांछा ते गुण विण दरव पिछ्छाण रे ॥ १५ ॥
 यां तीनां नें उलटा पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरव न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथी करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुघ सू जोय रे ॥ १६ ॥
 वले दरवे तीथंकर श्रेणक राय थो रे, त्याने वीर जिणेसर दीयों वताय रे ।
 पिण वीर जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, त्यां श्रेणक रा क्यूं नहीं बांछा पाय रे ॥ १७ ॥
 त्यां उलटा श्रेणक ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरव न बांछो कोय रे ।
 तो चोइथो करता निगुण किम वांदसी रे, हिरदे विमासी बुघ सू जोय रे ॥ १८ ॥
 मोटी सतीयां थी रांण्यां किसन री रे, त्यां री तीथंकर वादण रो घणों हुलास रे ।
 जो वे दरवे तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो किसन सू नहीं करती घरवास रे ॥ १९ ॥
 वले मोटी सतीयां श्रेणक नी राणीयां रे, त्यां री तीथंकर वादण रो घणो हुलास रे ।
 जो दरवे तीथंकर वादे गुण विनां रे, तो श्रेणक सू नहीं करती घरवास रे ॥ २० ॥
 त्यां भरतार जांणी नें कीधी विटंबणा रे, वले त्यांसू पिणं सेव्या कांम नें भोग रे ।
 ते नमोथुणं गुणतां किम वांदसी रे, ते तो कुमुरां री सरघा जाण अजोग रे ॥ २१ ॥
 किसनजी ने श्रेणक री रांणीयां रे, ते तो समदिष्टी चतुर सुजाण रे ।
 त्यां सामायक पोसां में वदणा करी रे, ते तो भावें तीथंकर देव जाण रे ॥ २२ ॥
 जे दरवे तीथंकर वादें गुण विना रे, त्यानें गुण विण वादणा दरवे साघ रे ।
 जो उ कहू दे दरवे साघ न वादणा रे, उणने उण री सरघा री न पडी लाघ रे ॥ २३ ॥

केइ आगमीये काले सुघ साघ होसी रे,
 ते दरब छें गुण विण ठाली ठीकरा रे,
 जो दरबे साघां ने वांदे गुण विनां रे,
 उणरी सरघा रें लेखे कुण कुण वांदणा रे,
 तो गोसाला कुपातर नें पिण वांदणो रे,
 जो उ दरबे साघ ने वांदे गुण विनां रे,
 वले इग्यारें श्रेणक राजा रा डीकरा रे,
 अें साघ होसी आगमीया काल में रे,
 जमाली नें कुंडरीकादिक जे हुवा रे,
 जे दरबे साघ नें वांदे गुण विनां रे,
 इत्यादिक भाँगल नें हुवा कुसीलीया रे,
 जे दरबे साघ नें वांदे गुण विनां रे,
 जो उ न वांदें याने भाव सूं रे,
 वले दरबे साघ ने वांदे गुण विनां रे,
 उण अस्त्री परणी सूं घरखासो कीर्यो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 उण नें जनम देइ ने मा मोटो कीर्यो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 मा नें तो लेखव लेंगी अस्त्री रे,
 जे माने निकेवल गुण विण दरब ने रे,
 इण रें सगलाइ जीव हुवा छें अस्त्री रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 वले बेटो इण रे घरे आय जनमीयो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 इण रो बाप ते पाछल भव बेटो हुंतो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 थोरी मेंणादिक सर्व जीवां तणो रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे,
 जो उ सगला नें बाप न लेखवें रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब ने रे,
 वले काका बाबादिक सगपण तेहनें रे,
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब ने रे,

केइ भागल हुवा चारित विराघ रे ।
 त्यां सगला नें कहीजे दरबे साघ रे ॥ २४ ॥
 तो यां सगला नें वांदणा करणी तांम रे ।
 हिवें दरबे साघ रा कहूं छूं नांम रे ॥ २५ ॥
 ते पिण आगमीयो काले साघ थाय रे ।
 तो गोसाला नें क्यूं नही वादें ताय रे ॥ २६ ॥
 ते कोणक नें कालादिक कुमार रे ।
 यानें पिण वांदणा वाखंवार रे ॥ २७ ॥
 ते बिगड्या समकत नें संजम खोय रे ।
 तो यानें पिण वांदणा नीचो होय रे ॥ २८ ॥
 त्यांरो दरब नषेपो न गयो तांम रे ।
 तो यानेंई वांदणा ले ले नांम रे ॥ २९ ॥
 तो उण रो उणहीज दीयो उयाप रे ।
 त्यांरें छें पोतें बोहला पाप रे ॥ ३० ॥
 ते माता हुंती पाछिल भव मांय रे ।
 तो अस्त्री नें लेखव लेणी मांय रे ॥ ३१ ॥
 ते तो अस्त्री थी पाछल भव मभार रें ।
 तिण लेखे मा नें गिण लेंगी नार रे ॥ ३२ ॥
 अस्त्री नें लेखव लेंगी मांय रे ।
 उणरी सरघा रो ओहीज उंबो न्याय रे ॥ ३३ ॥
 सगलाइ जीव हुवा मा बेन रे ।
 तिण रा किण विघ चलसी कूडा फेन रे ॥ ३४ ॥
 तिण रो पाछल भव बेटो हुंतो आप रे ।
 तो बेटा नें इण लेखे गिणणो बाप रे ॥ ३५ ॥
 तिणरोइज बेटो हुवों आय रे ।
 तो बाप ने बेटो गिणणो इण न्याय रे ॥ ३६ ॥
 त्यांरे बेटो हुंतो पाछिल भव आप रे ।
 इण लेखे सगला जीव इण रा बाप रे ॥ ३७ ॥
 तो उणरेंइ लेखेइ सरघा कूड रे ।
 त्यांरो चिहुं गति में होसी घणो फितुर रे ॥ ३८ ॥
 सगला जीव हुवा अन्ती वार रे ।
 ए किण विघ करसी मूढ विचार रे ॥ ३९ ॥

बले अरिहंत सिध साध इण जीव रे रे, ते हुवा न्यातीला वार अनंत रे ।
 जे माने निकेवल गुण विण दरब ने रे, तिणरे लेखे छे सगला एकण पंत रे ॥ ४० ॥
 ओ कुण कुण मारे ने कुण कुण पूजसी रे, तिण रो कहतां तो कदेय न आवे थाग रे ।
 ते बूडा अग्यांनी निगुणा वांद ने रे, त्यांरो भव भव में होसी घणो अभाग रे ॥ ४१ ॥
 अं दरब नषेपो वांदे गुण विनां रे, पिण कांम पड्यां देवे उथाप रे ।
 पगले पगले भूठ बोले घणों रे, ते कर रह्या कूडा मूढ विलाप रे ॥ ४२ ॥
 याने गुण विण दरब वांदण रो कह्यां रे, जब तो उवे सूघो बोले एम रे ।
 कहे दरब छे तो पिण गुण माहे नही रे, तिणने म्हे सीस नमांवा केम रे ॥ ४३ ॥
 जे दरब निकेवल वांदे तेहने रे, ते गुण रो सरणो लेवे किण न्याय रे ।
 आ खोटी सरघा यांरी अटकी घणी रे, जब साच बोले ने आया ठाय रे ॥ ४४ ॥
 ते कहिवा ने ठाय अग्यांनी आवीया रे, पिण माहे नही भीजे मूरख मूढ रे ।
 त्यादे डक करडा लागा कुगुरां तणा रे, ते किण विघ छोडे खोटी छ्ढ रे ॥ ४५ ॥
 ए दरब नषेपो मुख सूं कर रह्यां रे, तिणरी पिण समझ पडे नहीं काय रे ।
 जे भरमाया लागा छे कुगुरां तणा रे, ते प्रतख चोडे भूला जाय रे ॥ ४६ ॥
 केइ दरब तीथंकर काल अनाद रा रे, त्यांरी पिण गरज सरी नही काय रे ।
 तो वदणा करे तिणने किम तारसी रे, ववेक आंणी समझो इण न्याय रे ॥ ४७ ॥
 जे दरबे तीथंकर छे केइ गुण विनां रे, ते पिण कहिवा ने दरबे नांम रे ।
 पिण घर्म नही तिणाने वांदीयां रे, ते तिरण तारण नहीं छे तांम रे ॥ ४८ ॥
 गुण विण दरबे तीथंकर तेहसू रे, किण विघ टलसी आतम दोख रे ।
 जो त्यांने इ वांद्यां सूं सुघ गति हुवे रे, तो जीव सगलाइ जाता मोख रे ॥ ४९ ॥
 जे दरबे तीथंकर वांदे गुण विनां रे, त्यारे मूल न दीसे बोले बंध रे ।
 ते फिरती भाषे बोले कपटी थका रे, ते होय रह्या पूरा मोह अंध रे ॥ ५० ॥
 गुणा करे तीथंकर देव छे रे, गुण करने कह्या छे सिध साच रे ।
 त्यांरा गुण ने दरब तो एक हीज छे रे, त्यांने वांद्यां सूं पामे परम समाध रे ॥ ५१ ॥
 गुण और ने दरब और छे रे, ते तो छे कह वतलावण कांम रे ।
 कोइ भोलें मत भूलो गुण विण दरब ने रे, सुण सुण दरब रो चोखो नांम रे ॥ ५२ ॥
 केइ दरबा रा नांम कहिवा ने दीयां रे, केइ गुण निपन दरबां रा नांम रे ।
 ते कहिवारा दरब जांणो कहिवा भणी रे, पिण गुण निपन ते आवे कांम रे ॥ ५३ ॥
 इम कहतां कहतां पूरो हुवे नहीं रे, इण दरब नषेपा रो विसतार रे ।
 जे गुण विण थोथा दरब वांदे नही रे, तिण सफल कीयो निश्चे अवतार रे ॥ ५४ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

नाम थापना दरब तणो, यां तीनां रो कह्यो विसतार ।
ए निगुणा भाव रहीत में, कण नही रे लिगार ॥ १ ॥
गुण विण नाम निकेवलो, गुण विण थापना आकार ।
दरब नषेपो गुण विना, ए तीनूं नषेपो असार ॥ २ ॥
तिण कारण मोटो कह्यो, गुण सहीत नषेपो भाव ।
च्यारूं नषेपो तिण भाव में, तिणरो विरला जाणें न्याय ॥ ३ ॥
भाव नषेपो रूडी रीत सूं, ओलखजो नर-नार ।
इण नें ओलखीयां विना जीव रे, घट में घोर अंधार ॥ ॡ ॥
जे जे दरब रो नाम छे, नाम जिंसा छें गुण तिण मांय ।
ए भाव नषेपो श्री जिण कह्यो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ॡ ॥

ढलल

(पूज्य जी पधारो हो नगरी सेविा)

अनंता तीथंकर आगें हुसी वले, ते हिवडां रुले च्यारू गति माहि हो । भ० ज० ।
दरबे तीथंकर कहिजे तेहनें, पिण भावें एकद्रीयादिक ताहि हो । भ० ज० ।
भाव नषेपो भवीयण सांभलो* ॥ १ ॥
तीथंकर ग्रहवासें वसतां थकां, जद भोगी पुरष विख्यात हो ।
दरब तीथंकर त्यानेंइ जिण कह्या, पिण भावें ते गृहस्थ साख्यात हो ॥ भ० भा० २ ॥
तीथंकर घर छोडे नें चारित लीयो, पालें छें सुघ आचार हो ।
तो ही दरबे तीथंकर कहीजे तेहनें, भावे हूआं मोटां अणगार हो ॥ ३ ॥
केवल ग्यान दरसण उपनां पछें, थापें तीरथ च्यार हो ।
भावे तीथंकर कहीजे तेहनें, समभो आंण विचार हो ॥ ॡ ॥
चोतीस अतसय कर नें परबख्या, वाणी छें गुण पे तिस हो ।
तीथंकर ना गुण सगला छें तेह में, ते तीथंकर भावे जगदीस हो ॥ ॡ ॥
अनत अरिहत आगे हुसी वले, हिवडां तो चिहुं गति गोता खाय हो ।
दरबे तो अरिहत त्यानेंइ जिण कह्या, पिण भावे एकद्रीयादिक माय हो ॥ ६ ॥
घर छोडे सुघो पालें साधपणो, पिण हणीया नही करम च्यार हो ।
त्यां लगे दरबे अरिहत कह्या तेहनें, तें भावे हुवा सुघ अणगार हो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार करम घन घातीया छें अरि,
 भावे अरिहंत कहीजें तिण समें,
 अनंत सिध आगमीये काले हुसी,
 दरबे सिध कहीजे तेहने,
 बले अरिहंत साध मुगत ने नीकल्या,
 पिण ज्यां लग मुगत न पोहतां त्यां लों,
 सकल कार्य सामी मुगते गया,
 त्यां आवागमण मेट्यो गति च्यार नों,
 अनंत आचार्य उवभाय साध होसी,
 ते आचार्य उवभाय साध दरबे कह्या,
 बले आचार्य उवभाय साध घर में थकां,
 त्यामें गुण परगट हुवा घर छोड्यां पछें,
 केइ आचार्य उवभाय साध भागल थया,
 त्यामें आगमीये काले गुण परगट्यां,
 छतीस गुणां आचार्य परवस्था,
 सत्तावीस गुणां सहीत साध कह्या,
 ए भावे अरिहंत सिध साध कह्या,
 निगुणा तीन नषेया वांदीया,
 जो मात पिता रा अंग सूं उपनों,
 मात पिता पिण भावे तेहनां,
 ते पुतर मरे ओर जायगां उपनो,
 ओ पिण मात पिता नही भावे तेहनां,
 कोइ अस्त्री परणे ग्रहवासो करे,
 ते पाछिल भव में इण री माता हुंती,
 इम माइ भतीजा काका वावादिक,
 जे जे सगपण वरतमान काल में,
 भावे सगपण जे जे संसार में,
 दरबे सगा सगलाइ एक एक रे,
 भावे सगपण वीतां पछें तेहने,
 दरब छे तो पिण गुण मांहे नही,
 सगलाई जीव छे दरबे नेरीया,
 तिहां छेदन भेदन खेतर वेदना,
 २६

ए अरी हणीयां सूं अरिहंत हो ।
 ओलख नें वांदो मतवंत हो ॥ ८ ॥
 ते तो हिवडा चिहुं गत गोताखाय हो ।
 पिण भावें एकंद्रीयादिक माय हो ॥ ९ ॥
 त्यांरा भाव परमाणे गुण रिघ हो ।
 त्यांने दरबे कहीजे सिध हो ॥ १० ॥
 त्यां आठोइ करम षय कीघ हो ।
 त्यांनें भावे कहीजे सिध हो ॥ ११ ॥
 ते हिवडां नरकादिक में तांम हो ।
 भावे नेरइयादिक नांम हो ॥ १२ ॥
 ते दरबे छें भाव रहीत हो ।
 जब भावे छें गुण सहीत हो ॥ १३ ॥
 ते दरबे छें गुण रहीत हो ।
 जद होसी बले भाव सहीत हो ॥ १४ ॥
 पचीस गुणां उवभाय हो ।
 ए सगला भावे मुनीराय हो ॥ १५ ॥
 त्यांनें वांद्यां निरजरु धर्म हो ।
 वंधें सात आठ उसभ करम हो ॥ १६ ॥
 ते भावे पुतर साख्यात हो ।
 जीव ज्यां लग त्यांरो अंगजात हो ॥ १७ ॥
 जब यारो नही भावे अंगजात हो ।
 भावे सगपण नही तिलमात हो ॥ १८ ॥
 ते भावें बरतें नार हो ।
 ओ सगपण न रह्यो लिंगार हो ॥ १९ ॥
 वेन वेनोइ आदि पिछाण हो ।
 ते भावे सगपण जाण हो ॥ २० ॥
 आवे गुण परमाणे कांम हो ।
 त्यांरा कुण कुण कहीजे नांम हो ॥ २१ ॥
 भावे ज्यूं अर्थ न आय हो ।
 तिण सू गरज सरे नही काय हो ॥ २२ ॥
 पिण भावे तो नारकी मस्कार हो ।
 ते खाये अनंती मार हो ॥ २३ ॥

जे देवता होसी आगमीया काल में, ते दरबे देवता पिछांग हो ।
 भवणपती वंतर जोतकी वेमाणीया, त्यांनै भावे देवता जाण हो ॥ २४ ॥
 नारकी आदि चोवीसोइ डंडक मभे, तिहां जीव उपनों जाय हो ।
 जे भावे तो कहीजें वरतें तेहवो, ते जोवो सूतर मांय हो ॥ २५ ॥
 अणघडीया रूपा नें दरबे रूपीयो कहां, तिण रो घडे आकार तेह हो ।
 पछें उपर सीको दीयो चलण हुवें जेहवो, जब भावे रूपीयो एह हो ॥ २६ ॥
 सूत पूंणी नें दरबे कपडो कह्यो, ते गुण विण तिण रो नाम हो ।
 भावे कपडो कहीजे वणीयां पछें, आवें पेहरण रे काम हो ॥ २७ ॥
 इत्यादिक भाव नषेपा अनेक छें, ते पूरा केम कहिवाय हो ।
 पिण इण अणुसारे बुधवंत समझ ने, अटकल लेजो न्याय हो ॥ २८ ॥

ढाल : १

ढुहल

ढुनीयां ढें ढोलुड धणी, ते कही कढल लुग ललड ।
अरुथ अनरुथ धरुढ करुणें, हण रहुलल जीव अथलड ॥ १ ॥
अरुथें हणें ते आढलं करुणलं, आतडल^१ नुडलत^२ धर^३ डरलवर^४ ।
डरुतुर^५ नलड^६ डूत^७ नेंडकुष^८ डलंरो, कहुलें धणो वरुसतलर ॥ २ ॥
आढलं करुणलं वरुण हणें, ते अकल वरुनल वेडलंढ ।
ते अनरुथ डंड शुरी डरण कहुलें, छ कलड हणे वरुण कलड ॥ ३ ॥
देव गुर धरुढ करुणें, डलंणें जीव हणुडल छे धरुढ ।
धरुढ हेते हणें छे इण वरुडे, ते डूल अगुडलनी डरुढ ॥ ४ ॥
अरुथ अनरुथ धरुढ करुणें, सगले ढलंढे हण रहुलल डुरलंण ।
ते दडल कुरीसी ढोर डललसी, अे डूढडती अडलंण ॥ ५ ॥
डे हुरीसल धरुढीं जीवडल, तुडलरे उदे डरुथुडलत अगुडलंन ।
तुडलंरो छे कलड डलरण तणो, रहे नरुतरुड धुडलंन ॥ ६ ॥
देव गुर धरुढ करुणें, कुरण वरुड हणे छे कलड ।
तुडलंरी खोटी सरुधल डरुणुड कहुं, ते सुणओ कुरत लुडलड ॥ ७ ॥

ढलल

[देशुी—वरुडुधुडलनी]

अरुहंत देव री करे थलडनल, हण रहुलल जीव छे कलड जी ।
देव कलडे हणें जीव कुरण वरुडे, ते सलंडलओ कुरत लुडलड जी ।
जीव डलरें ते धरुढ आछुओ नही* ॥ १ ॥
ते तो देवललदक करलवतलं, ललडलवे हुरलरलं दलड जी ।
धन खरुचे डूडल करुणें, वले करे अनेक हुरलंण जी ॥ जी० २ ॥
डथर खलंन सूं कलढे डंगलवतलं, तस थलवर डरे अनेक जी ।
तुडलंरो लेखुओ करुओ घुड डरुडतरे, कुओड डुधवंत आंण ववेक जी ॥ ३ ॥
डथर डुओडुडल डृथुवीकलडल डरे, डलंणी धललें चूतलदक डलंड जी ।
वलडुकलड डरे लेतलं डेलतलं, ढलंकी ललडलं उठें तेडुकलड जी ॥ ४ ॥
वनसडतुड नें तस जीवडल, गलडलदक हेठें चीथुडल डलड जी ।
नलंव देड देवल चूणतलं थकलं, तठें डुरण डरें जीव छे कलड जी ॥ ५ ॥

*डह आंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनुत डें है ।

चूनो दाल उपर देतां थकां, तिहां पिण मरें जीव अयाग जी ।
 अनंता जीव मारे देवल कीयों, ओ तो नहीं छें मुगत रो माग जी ॥ ६ ॥
 देवल करावतां हिंसा हुड, ते तो पूरी केम कहवाय जी ।
 पछें पूजादिक करावतां, नित रा नित मारें छ काय जी ॥ ७ ॥
 कठें टांची वाजें छें निरंतर, नित नित मारें पृथ्वीकाय जी ।
 त्यांनं दुल्ल उपजे छें तिण समें, घणी अतुल वेदना थाय जी ॥ ८ ॥
 नित पाणी ढोले न्हवरावतां, अग्न मारें दीवो उज्वाल जी ।
 नितका वाउकाय मारें घणां, कूट कूट मजीरा ताल जी ॥ ९ ॥
 नित नित काची कलीयां तोड नें, माला गुंथें चडावे आंग जी ।
 दीवादिक सुं मरें पतंगीया, तसकाय रो करें घमसांग जी ॥ १० ॥
 इण विघ छ काय नें मारवा, करें छें नित का संग्राम जी ।
 वले कहें म्हानें पाप लागो नहीं, हणीयां अरिहंत देव रे काम जी ॥ ११ ॥
 आवें दया पाळण रो पगधीयो, तिय परव पजूसण मास जी ।
 ते तो तिण दिन जीव मारें घणां, करें अनेक जीवां रो विगास जी ॥ १२ ॥
 वले सतर भेदे पूजा रचें, तिणरो मांडें घणों विसतार जी ।
 तठें दया तपो सींचो नहीं, करें छ काय रो संगार जी ॥ १३ ॥
 वले वावें पगां रे गूधरा, हाय में ले मजीरा ताल जी ।
 ते तो गावें वजावे कूदता, करें छ काय रो खेंगाल जी ॥ १४ ॥
 देव काजें हणें जीव इण विवें, तिण में मूल न जाणें दोल जी ।
 जाणें लाम हुवो जिण घर्म नो, तिण सुं देदी छें अविचल मोल जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक देवल काजे हणें, तिणरो कहितां न आवे पार जी ।
 हिवें गुर काजें हणे जीव नें, ते सांमलजो विसतार जी ॥ १६ ॥
 देव रें काजें देवल करवता, तस थावर लूट्या प्रांग जी ।
 तिम गुर काजें थानक कीयां, हुवें छ काय रो घनसांग जी ॥ १७ ॥
 थानक करावतां हिंसा हुड, ते तो देवल नी परें जांग जी ।
 छ काय मारें छें तिण विवें, तिण री बृधवंत करजो पिछांग जी ॥ १८ ॥
 वले वावें पडदा परेच नें, चंदरवा ताटादिक आंग जी ।
 इत्यादिक थानक करें कारणें, हणें तस थावर रा प्रांग जी ॥ १९ ॥
 खीर खाड फीणा रोट्यां करें, पाणी उकाले भर भर डाम जी ।
 ओर वसत अनेक करें घणी, गुर नें प्रतिलाभ्य काम जी ॥ २० ॥
 आहार पाणी आदिक निपजांवता, करें छें काया रो विपास जी ।
 पछें तेड वहरावे तेहनें, वले करें मुगत री वास जी ॥ २१ ॥

इत्यादिक गुर काजे हिंसा करे, ते तो पूरी केम कहिवाय जी ।
 धर्म काजे हिंसा करे जीव री, ते सांभल जो चित लाय जी ॥ २२ ॥
 करे उजवणा ने पारणा, वले सांही बछल जाण जी ।
 त्याने नहत जीमावा कारणे, करे छे काय रो घमसांण जी ॥ २३ ॥
 वले धर्म काजे धूंकल करे, संघ काढे ले जावे जात जी ।
 चोमासादिक में जाता आवतां, करे तस थावर री घात जी ॥ २४ ॥
 तप माड्यो ते पूरो हूआं पछे, जीमण करे लोक जीमाय जी ।
 वले लाडू आदिक करे घणां, ते तो हण हण जीव छ काय जी ॥ २५ ॥
 वले समदड होइ दान दे, उपर वाडा रा फल दे जाण जी ।
 आबादिक फल नी चोवीसी दीये, इत्यादिक दांन पिछांण जी ॥ २६ ॥
 हणें अर्थे अनर्थे जीव ने, ते तो भारी हुवे वांघे पाप जी ।
 धर्म हेते हणे छ काय ने, ओ तो कुगुर तपो परताप जी ॥ २७ ॥
 पंखी आला घाले देवल मभे, इंडा मेल बते तिण मांय जी ।
 ते निजर पडे कुगुरां तणी, तो आला दे तुरत पडाय जी ॥ २८ ॥
 केइ इंडा पंखी जीवां मरे, केइ उड भागे आकास जी ।
 त्यामें धर्म पळवे पापीया, करावे जीवां रो विणास जी ॥ २९ ॥
 अनार्य आवे देस उपरे, जब करे अकार्य काम जी ।
 दुख उपजावे रांक गरीव ने, फिर फिर मारे नगर ने गांम जी ॥ ३० ॥
 तिम कुगुर अनार्य सारिषा, त्यांरा दुष्ट घणां परिणाम जी ।
 ते पिण गांमां नगरां फिरता थका, मरावे पंखीया रा गांम जी ॥ ३१ ॥
 अनार्य देस मारे गयां पछे, वले गांम नगर वसें आंण जी ।
 कदे अनार्य फेर आवे तिहां, तो वले मार करे घमसांण जी ॥ ३२ ॥
 ज्यू कुगुर विहार कीयां पछे, पंखी फेरें आला घाले लग जी ।
 वले कुगुर आवे तिण गांम में, जब पंख्यांरो जांणों अभाग जी ॥ ३३ ॥
 मोटां विरद महाजन रा कुल मभे, वाजे जीव दया प्रतिपाल जी ।
 पिण कुगुरां तणा भरमावीया, पाडे पंखी जीवां रा आल जी ॥ ३४ ॥
 अनार्य गांम नगर माख्यां पछे, कोइ आणे मन पिछताप जी ।
 कुगुर जीव मराय हरषत हुवें, त्यारे हिंसा धर्म री थाप जी ॥ ३५ ॥
 अनार्य करे कतल जीवां तणी, ते पिण फेरे दुहाइ वेग जी ।
 कुगुर जीव मरावण नित नवा, त्यारो कडेय न दीसें थेग जी ॥ ३६ ॥
 अनार्य विचें तो कुगुर दुरा, त्यांरी मूर्ख मानें वात जी ।
 ते तो धर्म जाणें जीव मार नें, ओं तो करलों घणां छे मिथ्यात जी ॥ ३७ ॥

कुगुर कहें हिसा कीयां विनां, धर्म न होवें कोय जी ।
 पोतें त्याग कीयो हिसा तणों, त्यानें धर्म किहां थी होय जी ॥ ३८ ॥
 जो हिंसा कीयां धर्म नीपजें, तो गृहस्थ होय जावें निहाल जी ।
 पिण सावां नें हिंसा करणी नहीं, त्यांरो होसी कुण हवाल जी । ३९ ॥
 जीव माख्यां में धर्म कहें, अँ तो कुगुर तणा छें वेण जी ।
 त्यानें वादें पूजे गुर जाण नें, त्यांरा फूटा अभितर नेण जी ॥ ४० ॥
 जीतव्य नें परसंसा हेतें हणें, वले मान वडाइ काम जी ।
 हणें जनम मरण मूंकायवा, वले दुख दूरा करवा तांम जी ॥ ४१ ॥
 मारें छ कारणं छ काय नें, त्यांरे अहित रो कारण साख्यात जी ।
 धर्म हेतें हणें तिण जीव रे, समकत जाय आवें मिथ्यात जी ॥ ४२ ॥
 ए छ कारणे हिंसा कीयां, वधें आठ करम गांठ पूर जी ।
 निश्चे मोह नें मार वधे घणी, नहीं वरतें नरक सूं दूर जी ॥ ४३ ॥
 ए छ कारणा हिंसा करें, ते तो दुख पांमैं इण संसार जी ।
 ए आचारांग पँहला अवेन में, छ उदेसां कह्यो विसतार जी ॥ ४४ ॥
 केइ समण माहण अनार्य थका, करें हिंसा धर्म री थाप जी ।
 कहें प्राण भूत जीव सत्त्व नें, धर्म हेतें हण्यां नही पाप जी ॥ ४५ ॥
 एहवी उंची परुषें तेहने, आर्य साव बोल्या केम जी ।
 तुम्हे भूंडो दीठो सांभल्यो, भूंडो मान्यो भूंडो जाण्यो एम जी ॥ ४६ ॥
 जीव माख्यां रो दोप गिणें नही, ए तो वचन अनार्य रो जाण जी ।
 एहवा मूढ मिथ्याती दुरमती, त्यांरी सुध दुध नही टिकाण जी ॥ ४७ ॥
 कोइ हिंसा धर्मा नें इम कहें, थानें माख्यां हुवें धर्म कें पाप जी ।
 जव कहें मोनं माख्यां पाप छें, साच बोली सुधी करें थाप जी ॥ ४८ ॥
 जो थान माख्यां रो पाप छे, तो इम सर्व जीव माख्यां जाण जी ।
 ओरां नें माख्यां धर्म परुष नें, थे कांय वूडो करं कर तांण जी ॥ ४९ ॥
 आचारांग चौथा अवेन में, वीजें उदेसैं ए विसतार जी ।
 हिंसा धर्मा अनार्य तेहनें, कीधा जिण मारगं सूं न्यार जी ॥ ५० ॥
 धर्म होसी एकंद्री मारीयां, तो वेद्री माख्यां पाप न थाय जी ।
 इधके माख्यां इधको धर्म छें, उण री सरधा रो ओहीज न्याय जी ॥ ५१ ॥
 जो एकंद्री माख्यां पाप छें, तो वेद्री माख्यां पाप वसेख जी ।
 इधके हण्यां इधको पाप छें, इम जिण धर्म साहो देख जी ॥ ५२ ॥
 केइ हिंसा धर्मा चोडें कहें, हिंसा क्रीवां विण नही हुवें धर्म जी ।
 केइ चोडें न कहें कपटी थका, साचो कहितां आवें समं जी ॥ ५३ ॥

केइ दया धर्मी वाजें लोक में, चालें हिंसा धर्मी री - रीत जी ।
 ते पिण छें तिण हीज पांत रा, बतलायां बोलें विपरीत जी ॥ ५४ ॥
 सूतर सिधंत में इम कह्यो, जीव माख्यां सू लागें पाप जी ।
 नही माख्यां पाप लागे नही, श्री जिण-मुख भाख्यो आप जी ॥ ५५ ॥
 वले देहरा प्रतिमा करावतां, जीव हण रह्या पृथवीकाय जी ।
 त्यांनं मंद बुधी श्री जिण कह्या, दसमें अंग पेंहला अघेन मांय जी ॥ ५६ ॥
 वले रुद्रमति कही तेहनी, ते तो जढ मूढ घणो अतंत जी ।
 ते दूरंत पंत लखण रो घणी, हिंसा धर्मी ने कह्यो भगवंत जी ॥ ५७ ॥
 जीव हिंसा करें तेहनें, ओलखायो श्री जिणराय जी ।
 हिवे हिंसा धर्मी रा फल कहुं, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ५८ ॥
 केइ हिंसा धर्मी जीवडा, मरी उपजे नरक मभार जी ।
 तिहां छेदन भेदन पांमें घणी, वले खाये अनंती मार जी ॥ ५९ ॥
 मार खाये नरक थी नीकले, पडे तिर्यच गति में जाय जी ।
 तिहां पिण दुख पांमें अति घणां, ते तो पूरा केम कहियाय जी ॥ ६० ॥
 वले निगोद में पडीयां पछे, दुख पांमें अनंतो काल जी ।
 परिभमण करे संसार में, जाणें अरट तणी घड माल जी ॥ ६१ ॥
 इम रलतो रलतो संसार मे, कदे मिनष तणो भव पाय जी ।
 ते कुण कुण पांमे अवस्था, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ६२ ॥
 त्यांरी बालपणें माता मरे, वले पिता रो पडे विजोग जी ।
 सेण सगां रो विछोहो पडे, मिले दुसमण रो संजोग जी ॥ ६३ ॥
 बालक थकां मरे बेटा बेटीयां, वले घर भागें अघगाल जी ।
 दुखे दुखे जनम पूरो हुवे, माये आवे अणहुंतो आल जी ॥ ६४ ॥
 केइ होय जाअें टूटा पांगुला, केइ गुगा बहरा जाण जी ।
 केइ होय जाअें आंधा दलद्री, रहे दिन दिन तांणा तांण जी ॥ ६५ ॥
 सोलें रोग सरीरे उपजें, तिण सू पांमे दुख संताप जी ।
 जनम मरण जरा दुख पांमें घणां, हिंसा धर्मी तणें परताप जी ॥ ६६ ॥
 सुयगडायंग अघेन अठारमें, ए भाव कह्या जिणराय जी ।
 इम जाणें नर नारीयां, धर्म काजे म हणो छ काय जी ॥ ६७ ॥
 देवल हिंसा निषेधी सांभले, केइ पाछो उत्तर दे आंम जी ।
 पाप हुवें तो नहीं लगावता, लाखां कोडां हजारों दाम जी ॥ ६८ ॥
 आगे वडा वडेरा भोला नही, धन खरचें लगावें पाप जी ।
 किण री उठाइ उठें नही, म्हारा वडा वूडां री थाप जी ॥ ६९ ॥

आगें सिव मारगी हुवा घणां, ज्यांरो जोवो पुराणे विचार जी ।
 त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, कराया देवल हरदुवार जी ॥ ७० ॥
 आगे वडा वडेरा तुरकां तणा, मोटीं कराइ मसीत जी ।
 त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, त्यांरी पिण छें आहीज रीत जी ॥ ७१ ॥
 ग्यांनी सिवी नें मुसलमांन रे, सगला वडां री आ रीत जी ।
 सगरा लाखां कोडां लगाय नें, कराया देवल आदि मसीत जी ॥ ७२ ॥
 ओर देवल मसीत करावीयां, त्यांनं पाप वतावें पूर जी ।
 जिण रा देवल कीयां तेहनें, धर्म कहें ते एकंत कूड जी ॥ ७३ ॥
 धर्म होसी तो सगला नें धर्म छें, पाप होसी तो सगला नें पाप जी ।
 ए लेखो कीयां तो लड पडें, खोटी सरघा री करवा थाप जी ॥ ७४ ॥
 आप रा देवल री करें थापना, ओर देवल देवें उथाप जी ।
 पिण धर्म नही हिंसा कीयां, कोइ मत करो कूड विलाप जी ॥ ७५ ॥
 दया धर्म छे जिणवर तणो, तिण में जीव न हणवो कोय जी ।
 जीव माख्यां धर्म न नींपजें, प्रवचन सांह्यो जोय जी ॥ ७६ ॥

रत्न : ८

लिन्य री चौपई

ढाल : १

ढुहा

ढांणारंग उवाइ उरुंगमें, निन्व नो आचार ।
वले सुयगडाअग तेरमें, अर्थ तणो विसतार ॥ १ ॥
श्री वीर तणा सासण भक्के, निन्व चाल्या सात ।
त्यांरी सरघा नांम नगरी भणू, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[राग—सल कोई मत राखजो]

जे कारज करवा माडीयो, काइ कीघो ने काइ करणो रे ।
कीघा ने मूल माने नही, भारी करमें न कीघों निरणो रे ।
सरघा सुणो निन्वां तणी* ॥ १ ॥
ए जमाली^१ सिष्य भगवान रो, ओ सुध सरघा थी भागो रे ।
वीर थकांइज विगटीयों, सावथी नगरी ने वागो रे ॥ स० २ ॥
असष प्रदेसी जीव छे, वीर सगले चेतन भाख्यो रे ।
ए प्रभु वचन उथाप ने, एक प्रदेस ने जीव दाख्यो रे ॥ ३ ॥
ए तीसगुत्त^२ निन्व ढूजो, नगरी राजभ्रही जाणो रे ।
तिण चेतन दरब न ओलख्यो, पड गयो उलटी ताणो रे ॥ ४ ॥
सजमादिक मे सका पडी, त्यां मांहोमां बंदणा छोडी रे ।
साधा में सरघे देवता, ते नमें नही कर जोडी रे ॥ ५ ॥
सुध ववहार उयापीयों, करम उदे वात विगडी रे ।
ए आसाड^३ निन्व तीजों, ते हूओ सेवीया नगरी रे ॥ ६ ॥
नरकादिक च्याखं गतां, थोडी थोडी घट जासी रे ।
छेड्डो आसी सर्व जीव रो, ओ संसार सुनो थासी रे ॥ ७ ॥
मिथला नगरी ने भक्के, परगइ मन मे भातो रे ।
विछेद सरघ्यो संसार नो, ए आसमित्त^४ निन्व चोथो रे ॥ ८ ॥
संपराय इरियावही आद दे, एक समें किरिया दोय लागे रे ।
विगट्यो बोल अनेक सू, परूप दी लोकां आगे रे ॥ ९ ॥
ए गगे^५ निन्व पांचमा तणी, उत्पत्ति. उलका तीर नगरी रे ।
एक समे किरिया दोय थापतां, सभकत सरघा दिगडी रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जीव अजीव दोनों जिन कहा, तीजी रास तेरासीयें थापी रे।
 वोव बीज विगासीयों, संकीयों नहीं मूरख पापी रे ॥ ११ ॥
 अंतरंजी नगरी मझे, ओ हूय गयो समकल भठो रे।
 तीन रास पल्पी ताण नें, ए छल्लूक^१ निन्व छठों रे ॥ १२ ॥
 खीर नीर ज्यूं आठोंइ करम छें, जिन कहा लोलीभूतो रे।
 ते कांचूवा नी परें करम नें, ओ उंची सरख विगूतो रे ॥ १३ ॥
 दगनपुर नगरी तिहां, ते गोधानाहिल^२ जाणों रे।
 ए सातांइ निन्वां तणी, सरखा एह पिछांणों रे ॥ १४ ॥
 ए सात निन्व तो हूय गया, बले हूसी त्यांरी केडाण्ट रे।
 सरखा परगट कीयां तेहनीं, सुण नें हुवा रलीयायत रे ॥ १५ ॥
 जे आचार में ढील पखा, सुख सरखा थी पिण चूका रे।
 भव जीवां नें देवी समभता, तो कर लेकां जाणें कूका रे ॥ १६ ॥
 पालंडीयां सूं मिल गया, सावां सूं अंतर बेखों रे।
 केडें चालें लोक रे, ए प्रतल निन्व देखों रे ॥ १७ ॥
 पूरा दान दया नहीं ओलख्या, घालें अणहूंता घोचा रे।
 सुख सावां नें निन्व कहें, ए कुगरां भाल्या चौचा रे ॥ १८ ॥
 गोसाले आद्रक कुमार पें, वीर में दोष बत्ताया रे।
 संका नहीं आंगी भूठ री, कूडा गोला चलाया रे ॥ १९ ॥
 आद्रक कुमार उत्तर दीयां, तव पाछा जाव न आया रे।
 कुळ करें घट भितरें, ओर पायंडीयां नें लगाया रे ॥ २० ॥
 इम अजुणाइ काल में, नहीं न्याय मेलग री नीतो रे।
 लोकां सूं करें लगावणी, त्यां लीधीं गोसाला री रीतो रे ॥ २१ ॥
 महावरतां री चरचां कीयां, पगला मूल न मडि रे।
 सरणो लीयों संसार नों, भेष ले जिन मारग भाडें रे ॥ २२ ॥
 ग्यान दरसन चारित तप विनां, धर्म बतवण लाग़ा रे।
 सके नहीं सावद्य बोल्तां, ते वरत विहूणा नागा रे ॥ २३ ॥

ढाल : २

दुहा

बंस गयो पांच निन्वां तणो, प्रसिघ न सुप्यो कोय ।
दोय तणा परगट हूआं, सांभलजो सहु लोय ॥ १ ॥
दो किरिया निन्व पांचमो, छठो तेरासीयो जाण ।
त्यांरा केडायत उठीया, प्रतख देखो अहलांण ॥ २ ॥
माहोमांही निन्व कहे, ते रागा धेखो जाण ।
लखणां कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर सुजांण ॥ ३ ॥
कहूं थोडीसी वानगी, तेरासीया नी वात ।
भव जीवां ने प्रति बोधवा, काढण मूल मिथ्यात ॥ ४ ॥

ढाल

[देशी—पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

जीव अजीव दोनूइ जिण कह्या, तीजी वस्तु न काय हो ।
तीजी रास पल्पी तेरासीये, तो निन्व कह्यो जिण राय हो ।
निन्व तेरासीया केडायत ओलखो* ॥ १ ॥
धर्म अघर्म जिणसर भाखीयो, तीजो पंथ न कोय हो ।
तीन पल्पे ते निन्व जांणजो, छलूक छठा जिम होय हो ॥ नि० २ ॥
मिश्र पख ने तो मिश्र धर्म कहे, तिण रो न पायो भेद हो ।
विरत इविरत दोनू न्यारी कीयां, कुड कुड पामे खेद हो ॥ ३ ॥
सुयगडाअंग अघेन अठारमें, श्रावक धर्म विरत वखांण हो ।
इविरत रही ते अघर्म जिण कही, तिण मे मांडी तांण हो ॥ ४ ॥
इविरत सेवाया सेवीया भलो जांणीयां, तीनूइ करणां पाप हो ।
एहवो भगवंत वचन उयाप ने, कीधीं छे मिश्र री थाप हो ॥ ५ ॥
सर्व विरत छे धर्म साचां तणो, देस विरत श्रावक जांण हो ।
ए दोनूइ धर्म मे जिणजी री आगना, तिण री न करे पिछांण हो ॥ ६ ॥
तीजा गुणठांणा ने मिश्र धर्म कहे, भोलां ने दीयां भरमाय हो ।
नाख्यां मोह मिथ्यात री जाल में, हिवे साभलो तिण रो न्याय हो ॥ ७ ॥
साची सरधा तो समकत माहिली, तिण सूं न लागे करम हो ।
कायक मिथ्यात रह्यो घट भितरें, तिण मे नही जिण धर्म हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दोनूं सरघा घट में जूजूइ, जूओ जूओ तिण रो सभाव हो ।
 सममिथ्या दिष्टी तो समचें कह्यो, ए तीजा गुणठांगा रो न्याव हो ॥ ६ ॥
 मिश्र भाषा नें मिश्र धर्म कहे, एहवो चलायो भूठ हो ।
 करम बंधे इण थी महामोहणी, जो बोलें सभा में आकूट हो ॥ १० ॥
 तीसांड बोलां बंधे महामोहणी, धर्म, रो अंस न कोय हो ।
 जो गुणतीस बोलां मे मिश्र न नीपजें, तो एकण में किम होय हो ॥ ११ ॥
 अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, भूला तिण रें भर्म हो ।
 वीर कही छें बोलण आंसरी, पिण न कटें तिण सूं करम हो ॥ १२ ॥
 साची भाषा पिण सावज बोलतां, बंध जाय सात आठ करम हो ।
 ते साची भाषा ने कही छे आराधवी, तिणमेंइ न दीसे धर्म हो ॥ १३ ॥
 तो मिश्र भाषा में धर्म किहा थकी, भोरोइ म करजों तांण हो ।
 भूठ री नेश्राय साचो नीकलें, ते साच ही सावद्य जांण हो ॥ १४ ॥
 जो करमा वस इतरी समभ पडे नही, तो भेल समेल म जांण हो ।
 साच नें भूठ दोनूइ न्यारा करो, सावद्य निरवद्य पिच्छाण हो ॥ १५ ॥
 जमीकद खाधां खवाया भलो जाणीयां, तीनूइ करणां पाप हो ।
 ए चोडे मारग श्री जिणराज रो, ते पिण दीयों छें उंथाप हो ॥ १६ ॥
 मिश्र परुपें अग्यानी एह में, भोलां ने वतावें भेद हो ।
 खवाये तिरपत कीयो पर जीव नें, ए सरघो धर्म उमंद हो ॥ १७ ॥
 करम वधाख्या छें तिण जीव रें, जमीकद खवाय हो ।
 जीव अनंता मार जूंहर कीयो, मिश्र किहां थी थाय हो ॥ १८ ॥
 एक डबोयो अनंता मार नें, ते कुगुर जांणें उपगार हो ।
 ए प्रतख पाप लागों दोनूं विधें, तिणरोइ घट में अंधार हो ॥ १९ ॥
 काचो पाणी छाण्या मिश्र धर्म कहे, ते भूठ चोज लगाय हो ।
 के धर्म हूओ तस जीव न्यारा कीयां, आ दया रही घट मांय हो ॥ २० ॥
 तस री दया ने घात पांणी तणी, मिश्र वतावे एम हो ।
 हिवे साध कहे ते भवीयण सांभलो, एक मना धर पेम हो ॥ २१ ॥
 एक गले बीजो अणगल पीये, ते वुधवत करसी नीवेर हो ।
 पांणी रो पाप देयां ने बरोबर, तस माहे पडीयो फेर हो ॥ २२ ॥
 पाणी छाण्यां घात हूइ अपकाय री, देख दीयों तस ने गोताय हो ।
 ठिकांगा छुडाय अबला जीवां तणा, ते मिश्र किहां थी थाय हो ॥ २३ ॥
 अणगल पीयां तो पाप लागें घणो, गल पीया अरु करम हो ।
 थोडों घणो छे पाप दोनूं मणी, नही छेरवीयां छें धर्म हो ॥ २४ ॥

मिश्र अणहुंतो उठाय बेठो कीयो, विगटाय्या वोल अनेक हो ।
ए बांकी गति छे मोह करम तणी, तिण सूं न छूटे टेक हो ॥ २५ ॥
चाले चाल असल निन्वां तणी, ओरां सिर दे आल हो ।
निरणो न काढे समता भाव सू, बोले आल पंपाल हो ॥ २६ ॥



ढाल : ३

दुहा

हिवें पांचमां नित्व तणा, ओलखजो पिरवार ।
 ते विगडायल जिण भेष में, ते न कहें धर्म विचार ॥ १ ॥
 कहें दया आंण ने जीव मारीयां, हिवें छें धर्म नें पाप ।
 ए करम उदे पंथ काडीयो, भगवंत वचन उथाप ॥ २ ॥
 पाप कीयां धर्म न नींपजे, धर्म थी पाप न होय ।
 एक करणी में दोय न नींपजे, ए संका म आंणो कोय ॥ ३ ॥
 धर्म अवर्म करणी जू जूइ, ते मांहोमाहीं नही मेल ।
 दो किरिया नित्व केडायतां, कर दीधी भेल समेल ॥ ४ ॥
 एक सावद्य करणी करें तेह नें, धर्म अवर्म दोय वताय ।
 कुण कुण चाला चालव्या, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[देही-धिग धिग काम विडम्बणा]

एक सावद्य करणी कीयां थकां, धर्म अंस न होय रे ।
 ए अरिहंत वचन माने नहीं, ते सावद्य में सरखें दोय रे ।
 दोय किरिया नित्व केडायत सुणों* ॥ १ ॥
 हंख्यादिक अठारेंइ सेवीयां, तीनूंइ करणां पाप रे ।
 ए न्याय मारग जिणराज रो, ते निन्वां दीर्यो उथाप रें ॥ २ ॥
 खरच आवरण्णी जीमणवार में, वले नहत जीमावें लोक रे ।
 त्यांने धर्म अवर्म दोनूं कहें, ते नित्व सरखा फोक रे ॥ ३ ॥
 छकाय नां जीव विणासीया, ए जिण भाप्यो नहीं धर्म रे ।
 वले विपे सेवारी पर जीव नें, दोनूं विव वंचीया करम रे ॥ ४ ॥
 कहें अवड नां सिप्य सातसो, अण दीघों लीवो नांय रे ।
 त्यां आगना ले पांणी लीर्यो, वले ओरां डवोया कांय रे ॥ ५ ॥
 वले आणद आदि दे श्रावकां, मारो ल्याया आहार रे ।
 ते सरलवुवो था जीवडा, त्यां कांय क्रियोया दातार रे ॥ ६ ॥
 इम कहे विरुच परूपता, हख्या दिदावे मूड रे ।
 हिवें एहनो विवरों सांभलो, छोडो मिथ्यात री हड रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

किण ही सूंस लीयों सतगुर कनें, जाव जीव - न परणूं नार रे ।
 मोने बाप परणावे तो परणीज सूं, इतरो राख्यों आगार रे ॥ ८ ॥
 बाप परणावे तेह ने, तो हरप घरें मन मांय रे ।
 तो उण री सरघा रें श्रावकें, बाप डबोयो कांय रे ॥ ९ ॥
 ज्यूं अंबड आणंद आदि श्रावकां, वेरागें कीयां पचखाण रे ।
 मांगण री इविरत पेंहलां हुंती, ते नवो पाप म जाण रे ॥ १० ॥
 जाचीयो नें अण जाचीयो, सचित अचित आहार रे ।
 सुभत्तो ने अण सुभत्तो, सगलोइ थो आगार रे ॥ ११ ॥
 वले पूछ्या ने विण पूछीयां, पाप करता न आणता लाज रे ।
 ते विरत करी विण पूछीयां, ते इविरत टालण काज रे ॥ १२ ॥
 जे जे आगार त्यागें दीयो, ते श्रावक नों छे धर्म रे ।
 बाकी रह्यो आगार सेवारीया, ते निश्चें बंधसी करम रे ॥ १३ ॥
 ए आगार तो पेहलां हुंतो, नवो न सीख्यो कोय रे ।
 इविरत सिची पार की, ते धर्म - किहां थो होय रे ॥ १४ ॥
 लेवाल रें इविरत लेण री, दातार रें देण री जाण रे ।
 ए दोयां रे काल अनादरी, ते त्याग्यां थो निरवांण रे ॥ १५ ॥
 वले कोइ अभिग्रह ले एहवों, हुं रनवन खेतमें जाय रे ।
 विण कहें विरख वाढूं नही, ते पूछी न्हाखें ढाय रे ॥ १६ ॥
 इम हिज फल फूल चार नों, तस थावर जीव अनेक रे ।
 विण आग्या हणवो नहीं, सूंस लीयों आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 इण अनुसारे बोल अनेक छें, सावद्य किरिया करे कोय रे ।
 जे अधर्म री देसी आगनां, तो आद्या फल नही होय रे ॥ १८ ॥
 अंबरना सिष्यां नें दीधी आगना, कहें खपे स भरलों नीर रे ।
 तिण हिंसा में सिर घालीयो, न सरायों तिण ने वीर रे ॥ १९ ॥
 हिंसा तणी आग्या दीयां, नफो म जाणों कोय रे ।
 ए निरणो न कीयो घट भितरें, ते गया जमारो खोय रे ॥ २० ॥
 वरसी दान दीयो तीथंकरे, एक कोड नें आठ लाख जाण रे ।
 ए प्रतख सावद्य सुफे नही, पर गया उलटी तांण रे ॥ २१ ॥
 सोनइया लीघा तिण ने कहे, हुओ छें एकंत पाप रे ।
 दीया तीथंकर तेह ने, दो किरिया दीधी थाप रे ॥ २२ ॥
 धर्म अधर्म दोनूं कहे, सोनइया दीवां दान रे ।
 पाप जाणें तो देता नही, ते एहवा आणे तांण रे ॥ २३ ॥

इम कहे भोलां लोक नें, घर्म सूं दीयां भिरकाय रे ।
 हिंसें साव कहे ते सांभलो, वरसी दांन रो न्याय रे ॥ २४ ॥
 एक कनक दूजी कांमणी, त्याग्यां सिव सुख होय रे ।
 पेह्ला नें पकरावीयां, घर्म म जाणों कोय रे ॥ २५ ॥
 जो नफो जाणें सोनइया दीयां, तो ओरां डबोया कांय रे ।
 लेवाल नें भारी कीयां, ए कपट रो मारग नांय रे ॥ २६ ॥
 जो सो सो सोनइया दीयां एक नें, तिण लेखे वांध्यो तू मार रे ।
 दिन रा मिनप हूआं एतला, एक लाख नें आठ हजार रे ॥ २७ ॥
 एक वरस तणा तीन कोड ने, अठ्यासी लाख नें असी हजार रे ।
 एहवे उनमाने मांनव्यां, पाप लग्गयो अपार रे ॥ २८ ॥
 ए जस महिमां देव वधारवा, ते समभों चतुर मुजांण रे ।
 ए सासती थित छें तेहनीं, उत्तर एह पिछांण रे ॥ २९ ॥
 आठ सहस्र नें वले चोसठ, कलसा ढोल्या भर नीर रे ।
 वाजंन अनेक आरंभ कीयां, दीख्या लीधीं जिण दिन वीर रे ॥ ३० ॥
 ए सगलाइ सावद्य जिण कह्या, राखों सूतर परतीत रे ।
 महोच्छ्र दांन सिनांन तो, ए गृहवासा री रीत रे ॥ ३१ ॥
 ग्यांन दरसण चारित तप विनां, सर्व करणी अघर्म जांण रे ।
 ज्यां श्री जिणघर्म न ओलख्यो, ते कर रह्या उलटी तांण रे ॥ ३२ ॥
 तीथंकर सोनइया दीयां लोक नें, कहे हूओं छे पाप नें घर्म रे ।
 सुघ आहार गवेषे ने भोगव्यो, कहे बांध्या जसम करम रे ॥ ३३ ॥
 सुघ आहार दीयो भगवंत नें, घर्म कहे ते तो न्याय रे ।
 पाप लागो कहे सगवंत नें, ए प्रतख मुसावाय रे ॥ ३४ ॥
 आप तिरे ओरां ने डबोय ने, आप डूबे ओरा नें तार रे ।
 ए दोनूं वोल विरुध छे, ते बुधवंत करसी विचार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ॡ

दुहा

सुयगढा अंग तेरमें, जथातथ छे भाव ।
साध ने निन्वां तणों, कह दीयों भगवंत न्याव ॥ १ ॥
एक मारग कह्यो मोष रो, बीजों कह्यो ससार ।
किरिया भली नें पाडवी कही, मेल न राख्यो लिंगार ॥ २ ॥
निन्व पाषंडी बोटकादिक, ते उठ्या दिवस नें रात ।
ते सूतर भणे जिण भाखीया, पिण गिर रह्या गूढ मिथ्यात ॥ ३ ॥
प्रबलपणो अहंकार नों, बले चालें उलटी रीत ।
समाध मारग सेवे नही, ते अपछंदा अक्नीत ॥ ॡ ॥
श्री जिण मारग उथपें, भाषे कुमारग जेह ।
निन्व पापडी त्याने कह्या, बले सांभलजो विघ तेह ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आगन्या मे]

विसुध निरदोषण मारग मुगत रा रे, ग्यान दरसण चारित तप च्यार रे ।
ते छोड ने परीया करें कदागरो रे, ए निन्वां री सरघा ने आचार रे ।
त्याने पाषडी निन्व जिण कह्या रे ॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित तप विनां रे, जे धर्म कहें छे ते विपरीत रे ।
बले जोड करे हिंसा धर्म थापवा रे, 'त्यारे केडें पिण डूबे कर परतीत रे ॥ २ ॥
सवर सूं रूके छें करम आवता रे, निरजरा सूं कटें आगला करम रे ।
शेष कारज सगला संसार नां रे, तिण में पाषडी थापे धर्म रे ॥ ३ ॥
ग्यान आगम मे संका आणता रे, पिडत वाजें मन मे अभिमान रे ।
प्रश्न पूछ्या रो जाब ने उपजे रे, जब आणे अग्यांनी कूडा तांन रे ॥ ॡ ॥
विनां करावण ने आगा घणां रे, म्हें पदवीघर छां मोटा अणगार रे ।
सतावीस गुण सूं वरते वेगला रे, बले सरघा मे पूरो घोर अघार रे ॥ ५ ॥
केइ हीण आचारी कूगुर छोडनें रे, सुध सरघा ने पाले वरत रसाल रे ।
त्याने कहि ए निन्व मायावीया रे, दे दे अणहूंतो भूडो आल रे ॥ ६ ॥
एहवा असाध साध कहावता रे, कपट सहीत त्यांरी घात रे ।
ते तो भमण करसी ससार मे रे, उतकष्टी अनती पामें घात रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाया के अन्त मे है ।

केइ गुर कनें भण नें गुर नें गोपवें रे, केइ प्रसिध आचार्य रो ले नांम रे ।
 केइ भूठ बोले कहे हूं पोतें भण्यो रे, ए भारी करमां जीवां रा कांम रे ॥ ८ ॥
 उस्नादिक पाबंडीयां आगें भण्यो रे, पिण भूठ न बोले उत्तम जीव रे ।
 खोटा जाण ने त्यानें छोडणा रे, ए न्याय मारग छेसिध गति नीव रे ।
 ए अरिहंत वायक सतकर जाणजो रे* ॥ ९ ॥
 केइ सूतर सिधंत भणे असवी कने रे, तोही पूछ्यां तो कहि दे तिण रो नांम रे ।
 पिण जाणे मिथ्याती तिण नें मूलगो रे, नही कोइ गुर चेला रो कांम रे ॥ १० ॥
 सिधत भणायो अनन्ता जीव नें रे, अनन्ता आगें भणीयो सिधंत रे ।
 गुर ने चेलों हूओ सर्व जीव नों रे, साची सरघा विन न मिटी भ्रत रे ॥ ११ ॥
 गधा मे घाल्यो चदन वावनो रे, ते भार तणो विभागी जाण रे ।
 जे किरिया मे हीण थका सूतर भणे रे, समकत विण थोथा मूढ अयाण रे ॥ १२ ॥
 कोइ भणे भणावे करवा नाम नां रे, केइ प्रसंसा मांन वडाइ हेत रे ।
 सूने चित परमार्थ पायो नही रे, ए बीज विण रहि गयो खाली खेत रे ॥ १३ ॥
 सुध साध पें घर छोडे सूतर भणे रे, आचार सरघा में देखे चूक रे ।
 तो काण न राखे चेला गुर तणी रे, भागल जाणें तो जाबे मूक रे ॥ १४ ॥
 अजाणपणें कुगुर नें गुर करे रे, पिण ठीक पख्यां छोडें ततकाल रे ।
 त्यागी वेंरागी त्याने जिण कहा रे, ए सांसो हुवें तो सूतर संभाल रे ॥ १५ ॥
 वले क्रोध घणो बोलें अलखामणा रे, उपसम्यो कलहो करवा त्यार रे ।
 खिमा रो मारग छोडे उभर पख्या रे, ते पिण दुख पामें संसार रे ॥ १६ ॥
 कोइ भेपले हलका बोलें एहवा रे, मो तुल कुण छें ग्यान भंडार रे ।
 हूं जीवादिक नवतत रो निरणो कळ रे, हूं तपसी छूं उतकष्टो अणगार रे ॥ १७ ॥
 एहवा अहंकारी साध भेष में रे, त्यां दीयां नरकादिक जावा सूत रे ।
 अनेरा उत्तम साध ने श्रावकां रे, जाणें आकार मात विबभूत रे ॥ १८ ॥
 कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंदरमा रो सगले छें प्रतिबिब रे ।
 सुध साध श्रावक नें एहवा लेखवे रे, आ भाली पाबंडीयां भूठी भव रे ॥ १९ ॥
 ते मिरग ज्यू परीया छे कुड जाल मे रे, जे चारित लेनें करे अहंकार रे ।
 ते भमग करसी गाढा दुखीया थकां रे, इण भाव कूट संसार मभार रे ॥ २० ॥
 ए दिष्टंत मुलटा रों उलटों करें रे, साध नें कहें असाध एम रे ।
 ए हिज निन्व म्हां मांसू निकल्या रे, सगलां नें गिणीया प्रतिबिब जेम रे ॥ २१ ॥
 इम कहि कुगुरु कुब्द चलाय नें रे, साधां ने घाले निन्व मांय रे ।
 चंद्रमा^१ने प्रतिबिब^२निन्व^३साव^४रो रे, ए च्यारां तणो सुणजो भवियण न्याय रे ॥ २२ ॥
 कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंद्रमा रो सगले छे प्रतिबिब रे ।
 मूर्ख जाणें गिरलूं चंद्रमा रे, पिण ते तों आकासें अंतर लंब रे ॥ २३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

प्रतिबिब ने जे कोइ मांनैं चंद्रमा रे, ते तों कहिजें विकल समान रे ।
 ज्युं गुण विण सरघे साधु भेष ने, ते खूता मिथ्याती पूर अग्यांन रे ॥ २४ ॥
 प्रतिबिब ने प्रतिबिब कह्यां थकां रे, भूठ म लागो जाणो कोय रे ।
 सतावीस गुण विहुणा सांग नैं रे, असाधु कह्यां थी दोष न होय रे ॥ २५ ॥
 साव री गुण री चरन्वा माडीयां रे, जब तो कांती दे जाये दूर रे ।
 घणां लिंग धाखा सूं भेलप करे रे, सुध साध ने निन्व कहिवा सूर रे ॥ २६ ॥
 घणां रे भरोसे कोइ रहिजो मती रे, सरघा नैं चलगति मीढी जोय रे ।
 लोक भाषा माहिं पिण इम कहे रे, घी खाधो पिण कुलडोन गयो कोय रे ॥ २७ ॥
 कोइ साधा म्हासूं निकल भागल हुवे रे, केइ भागल छोडे ने हुवे छे साव रे ।
 वले थोडा घणां रो कारण को नही रे, सुध करणी सूं पामे सदा समाघ रे ॥ २८ ॥
 सुध साघां ने छोडे सरघा विगटीया रे, ते गिणजो पापडो निन्व माहिं रे ।
 सुध सरघा भाले ने छोड्या भागलां रे, आचार पाले ते निन्व नाहिं रे ॥ २९ ॥
 पूजा सलगा उचा गोत ने रे, पाम्या छे जीव अनती वार रे ।
 जे वेरागे घर छोडे संजम लीयो रे, गरब छूट्यो तो खेवो पार रे ॥ ३० ॥

ढाल : ५

दुहा

केरायत दोय निन्वां तणा, ओल्लाया रूडी रीत ।
 हिवें जमाली रा परगट कलं, ते सुणजो घर पीत ॥ १ ॥
 श्री वीर तणा सासण मभ्हे, निन्व हूअ ासात ।
 तिण मे प्रथम निन्व जमाली हूओ, तिण री विगडी सरखा वात ॥ २ ॥
 काई कीधों ने काई करणो अछे, ते प्रसिघ चावी वात ।
 काई कीवा ने मूल माने नही, तिण रे इण विव आयों मिथ्यात ॥ ३ ॥
 सावथी नगरी नां वाग मे, इण रे रोग उपनो आय ।
 जव इण सावां नें तेडी कह्यो, मांहरें करो संथारो जाय ॥ ४ ॥
 जव सावां करणो माड्यां साथरों, काई कीधो ने करें तिणवार ।
 जव जमाली सावां ने कहे, अजे कीयो के न कीयों सथार ॥ ५ ॥
 जव सावां कह्यो न कीयो करां छां साथरो, तव आयो जमाली चलाय ।
 इण पूरों न दीठे साथरो, तिण सू उवी विचारी मन माय ॥ ६ ॥
 भगवत कहे करवा माडीयो, तिण ने कीधो कहे साख्यात ।
 वले चलवा माड्यां ने चलीयो कहे, ते एकंत भूठी वात ॥ ७ ॥
 तिण भगवत ने भूठा कहे, पडवजीयों मिथ्यात ।
 तिणरा केडायत उठीयां, ते सुणजो विख्यात ॥ ८ ॥

ढाल

[देशी—आ अणुकम्या जिण आगन्ध मे]

काई कीवा ने काई करणो छे वाकी, तिण कीधां कारज ने जे नही माने ।
 इसडी सरखे ते जमाली रा केडायत, ते बुधवंत आगे किण विव रहसी छांने ।
 आ सरखा जमाली निन्व री* ॥ १ ॥
 पांच सेर तणी रोटी करणी छे, तिण मे सेर तणी कीधी छें रोटी ।
 सगली कीवा विना कहे कीधी न कहणी, तिणरी पिण सरखा जावक खोटी ॥ आ० २ ॥
 चोवीस हाथ रो थान वणवा माड्यो, तिण माहे वणीयो छे एक हाथ ।
 आखो वणीयां विनां कहे वणीयो न कहिणो, तिणरो पिण जाणजो ओहिज मिथ्यात ॥ ३ ॥
 घर हाट हवेली करवा मांड्यां, काई कीवा पिण न कीयां छे पूरा ।
 अधूरा कीयां ने कहे कीयां न कहिणा, त्याने पिण जाणजो जिणजी री सरखा सूं दूरा ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाय के अन्त मे है ।

दस कोस तणें गामंतरें चाल्यो, काई चाल्यो नें काई चालणो सेप ।
थेट पोहता विना कहे चाल्यो न कहिणो, आ पिण खोटी सरघा जमाली री टेक ॥ ५ ॥
कोइ मास खमण चोखे चित कीघो, तिण गुणतीसमे दिन एक खावी रोटी ।
जमाली रे लेखे मास खमण न भागों, तिण सूं जमाली री सरघा खोटी ॥ ६ ॥
लाय लागी नें लाय लागी नही कहिणी, पूरो बलीयां पछे कहें बलीयो ताय ।
इण अनुसारे छे वोल अनेक, आ खोटी सरघा पूरी केम कहवाय ॥ ७ ॥
सुदंसणा भगवंत री वेटी, तिण वीर कने लीयो संजम भार ।
तिणरें सरघा जमाली री आई, ते पिण हुइ जमाली री लार ॥ ८ ॥
ते आहार करती थी परेच वाचे नें, ते आर्या सहीत वेठी थी मांय ।
त्याने ढीक श्रावक समभावण काजें, अग्न सूं परेच ने दीघी ल्गाय ॥ ९ ॥
जब केइ आर्या कहे परेच वलें छें, जब ढीक श्रावक बोल्यो छें एम ।
परेच बली कह्या थारी खोटी हुवे सरघा, पूरी बली विनां बली कहो छों केम ॥ १० ॥
इम सुदंसणा सांभल नें डरपी, जमाली री सरघा छोडी खोटी जाण ।
वीर कने सुघ हुइ आलोए, प्राछित ले पाछी आई ठिकाण ॥ ११ ॥
आ प्रतख खोटी जमाली री सरघा, ते सरघा भेष घाख्यां रे आई ।
जमाली रा थकां भगवंत रा बाजें, ते पिण विकलां ने खवर न काई ॥ १२ ॥
दोष सेव्यों सेवे नें सेवसी आगें, तिणरोई चारित सरघे नही भागो ।
बले करम तणे वस उंचा बोले, कहे वरत न भागों पिण दोपण लागों ॥ १३ ॥
किण ही साध सावद्य किरतव कीघों, पांच महावरत में दोपण लागो ।
जे जे होसी जमाली रा केडायत, तिणरो संजम सरखें नही भागों ॥ १४ ॥
हिंसा कीयां पेंहलो वरत भांगे, भूठ बोल्यां दूजो वरत भागों ।
जमाली रा केडायत कहें भेष घारी, वरत भागों नही पिण दोपण लागों ॥ १५ ॥
अदत लीया तीजों वरत भांगे, विपे परिणाम आयां चोथो वरत भागों ।
तिण भागां ने भागो न सरखें अग्यांनी, ते पिण जमाली रे केडें लागो ॥ १६ ॥
उपगरण मरजादा सूं इधका राखें, थानकादिक उपर ममता रही लागों ।
बंधो करावें दीव्या मो आगे लीजें, तिणरो पांचमों वरत न सरखें भागों ।
ते निन्वां जमाली रा केडायत* ॥ १७ ॥

किंवाड जड्या दोप लागों न सरखे, लागों सरखें तोड वरत भागों न सरखें ।
निसंक थकां पापी जडे उघाडें, रात दिवस रांक जीवां ने मरदे ॥ ते० १८ ॥
ठाम ठाम थानक मांडी ने वेठा केड, आवाकरमी केइ मोल रा लीघा ।
त्यांरो सावपणो भागो नही सरखें, त्यां नरक सूं सनमुद्ध डेरा दीव्य ॥ १९ ॥
असणादिक नित एकण घर वेहखां, वीर कह्यो तिण नें अणाचारी ।
केइ आहार पाणी नित घोवण वेहरें, तिण ने सरखें मूंड मुघ आचारी ॥ २० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

पुस्तक पांना वले लोट नें पातरा,
 थोडो घणों त्याने मोल वतावे,
 जीमणवार आरा माहें जावें,
 सूतर माहे वरज्यो तोही नहीं मांनं,
 गृहस्थ रें घरे मेलें पोथी पांना,
 जीवां रा जाल जमें तिण माहें,
 श्री पारसनाथ तणी साधवीयां,
 ते भिष्ट हुइ हाथ पग धोई ने,
 त्या समकत सहीत साधपणो खोयो,
 समदिष्टी विमाणीक देवता हुवें छें,
 भेपधारी भिष्ट भागल होय वेठा,
 त्यांरी विकलाई देख फिरे लोक त्यांसू,
 एहवी भागल विरायक नें सरखे साधवीया,
 त्यांरा विनां वीयावच में धर्म थापें,
 सेलग राय ऋषी ढीलें पख्यो जद,
 वीर कह्यो इसडो साध हुवें तो,
 हेल्वा निंदवा जोग कह्यो सेलग नें,
 तिणरी वीयावच पंथक कीधी,
 उस्नादिक वाद्या नसीत रे माहें,
 उस्नादिक पांचू दोप सेलग में पावे,
 सेलग ने पारसनाथ तणी साधवीयां,
 यांरा पूरा भागां विण भागां न सरखें,
 याने कहि कहि नें कितरो एक कहिजे,
 याने बुववत जांग लेसी थोडा में,

सांनी करें साध मोल लरावें ।
 वले साध रो मूरख विडद घरावें ॥ २१ ॥
 वेंठी पांत मा सू पातरा भर ल्यावे ।
 वले लोकां माहें साध ज्यू पूजावें ॥ २२ ॥
 वले पडिलेह्यां विनां राखें वरस छ मासों ।
 एहवा साध वाजें त्यांरो दुरगत वासों ॥ २३ ॥
 दीय सो नें छ साधपणो विगारी ।
 त्याने साधवीयां सरखें भेपधारी ॥ २४ ॥
 समकत रही हुवें तो देवी हुवें नाहि ।
 त्यानें साध सरखे ते जमाली रे माहि ॥ २५ ॥
 ते आप मे दोपां रो पार न देखे ।
 त्याने साधवीयां सरखे इण लेखें ॥ २६ ॥
 त्याने वांचां पूज्या कहें एकत धर्मो ।
 ते भूला मिथ्याती एकत धर्मो ॥ २७ ॥
 उस्नो कुसीलीयो कह्यो भगवंत ।
 उतकष्टो श्ले तो काल अनंत ॥ २८ ॥
 तिणनें वांचां वंचे पाप करमो ।
 तिण नें भेपधारी कहे छें धर्मो ॥ २९ ॥
 च्यार महीनां रो प्राच्छित आवें ।
 तिण नें वांचां धर्म मिथ्याती वतावें ॥ ३० ॥
 यारा साधपणा सगला रा भागां ।
 त्याने समकत विहूणा कहिजे नागां ॥ ३१ ॥
 यारी सरखा रो छेह न आवे वेगो ।
 यांरी खोटी सरखा नें भूठ रो ठेगो ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

ढुहा

भेषधारी विगडायल जेंन रा, ते भूला सूतर वांच ।
 उंधा अर्थ करे घणां, त्यारो विकल माने ले साच ॥ १ ॥
 सुघ सावां नें निन्व कहें, ले ले सूतर रो नांम ।
 पोतें केडायत निन्वां तणा, ते पिण खबर नही छें तांम ॥ २ ॥
 त्यांरी सुघ बुघ तो चलती रही, तिण सूं बोले आल पंपाल ।
 त्यारे न्याय निरणो घट में नही, तिण सूं भाषें अग्यांनी अलाल ॥ ३ ॥
 निन्व कहिजें केहनें, किण नें कहिजें सुघ साघ ।
 समचें ओलखाउं दोनूं भणी, त्यांरी विरलां परसी लाघ ॥ ४ ॥

ढाल

[भव जीवां तुम्हें जिण धर्म ओलखो]

एक धर्म कहें जिण आगना मभे, एक कहें रे धर्म जिण आगना बार ।
 यांमें साची सरघा छें केहनी, किण री भूळी रे सरघा घोर अंधकार ।
 बुघवंता यांमें निन्व कहिजें केहनें* ॥ १ ॥
 धर्म कहें श्री जिण आगना मभे, ते केडायत रे श्री जिणजी रा जाण ।
 जिण धर्म जिण आगन्या बारें कहे, ते केरायत रे निन्वां रा पिछाण ॥ बु० ॥ २ ॥
 जिण करणी में जिण आगना नही, तिण करणी में रे साघ सामे मून ।
 तिण में एक कहे मिश्र धर्म हवो, एक कहे रे ए तो करणी जवून ॥ ३ ॥
 साघ मून सामें पिण बोले नही, तिण करणी नें रे सावद्य जाणें तो ठीक ।
 मिश्र कहे ते केडायत निन्वां तणा, तेरासीया रे जिम जाणजों तहतीक ॥ ४ ॥
 आहार पांणी कपडादिक आंण नें, जिण आग्या सूं रे भोगवें छें सुघ साघ ।
 तिण में एक कहे पाप लागे नही, एक कहे रे इविरत नें परमाद ॥ ५ ॥
 साघ आहार पांणी कपडादिक भोगव्यां, पाप न कहे रे ते तो जिणजी रा साघ ।
 पाप कहें ते पाषंडी कें निन्वा, त्यारे होसी रे भव-भव मे असमाव ॥ ६ ॥
 एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, तिण करणी में रे पाप करम लागे नांहि ।
 एक कहें जिण आगना दीयें तिहां, पाप लागे रे तिण करणी रे मांहि ॥ ७ ॥
 जिण आगना दीये तिण करणी मभे, पाप लागो रे न कहे ते साची वात ।
 जिण आगना सहीत करणी मभे, पाप कहे छें रे तिण रा घट में मिथ्यात ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक कहें हैं अमुक शोक भोगते,
एक कहें बंदीज अमुक भोग्यते,
अमुक भोगते ते तो बंदीज नहीं,
दिन में बंदीज तो दिखल कहें
एक कहें नव नव ओज्यो नखे,
एक कहें नव नव ओज्यो विना,
नव नव ओज्यो देतो भावना,
नव नव ओज्यो विना देतो कहें,
एक कहें सोचो बरत सोचें तेह नें,
एक कहें दिख्य देह सो गहनो,
बरत सोचें दिख्य देह छोटें करे,
बरत सोचें बह सो बडो गहरो,
एक कहें पार कीजो बगरीयो,
एक कहें तार कीजो पार छे,
पार कीजो बगरीयो मर्यो जरीयो,
कीजो गार बगरीयो मिश्र कहें,
एक बरं कहें छे विन नें,
एक बरं कृप निन्द नें कृप मात्र छे,
विन नहिं बरं कहें तेहनी,
इविन नहिं बरं कहें तेहनी,
एक कहें वेदगु बरं बगरीयो,
एक कहें वेदगु बरं बगरीयो,
वेदगु बरं बरें हनुवा नहीं,
इम कहें ते वेदगु, कीन ना,
एक कहें टोला नुं न्याग तेहने,
एक कहें टोला कहाँ नुं बंदना,
टोला नुं न्याग कीजो - तेहने,
दिन बरं ओज्यो विनाग सो,
एक कहें अक्षय दिनें एकलो,
एक कहें अक्षय दिनें एकलो,
अक्षय एकल दिनें तेहने,
अक्षय एकल नें मात्र तेहने,

ते तो मात्र रे नखे नहीं बंदीज ।
या देखा नें रे दिन सो मरवा ठेक ॥१६॥
आ जो जगो रे मुख मात्र सो बर ।
ते तो बहें रे निम्न सो पात नख ॥१७॥
दिख्य देह रे मर्यो बगरी अहार ।
दिख्य देह रे इचन कर्मा विहार ॥१८॥
इम माहें रे ते जो दिखी रा मंत ।
इम माहें रे ते जो निम्न सो मंत ॥१९॥
दिख्य देह रे छोटो करनी कहे ।
आ जो जू रे बंदना का माहें ॥२०॥
आ जो माही रे मरवा छे ठेक ।
आ निम्न सो रे लखा जगो वृत्तिक ॥२१॥
मर्यो जग्यो रे तीनुं करनी छे पार ।
कर्मा रे कीजो मिश्र बरं अर ॥२२॥
या तीनों नें रे पार कहें ते कीर बर ।
दिन निम्न रा रे पूज्य अक्षय नें ॥२३॥
एक कहें रे बरं अक्षय नें तांग ।
जगो दिन रे कर लीजो निखन ॥२४॥
मरवा बंदी रे मरवा रे न्याग ।
मरवा बंदी रे निम्न सो छे तांग ॥२५॥
नहीं हनुवा रे छलय ग लीज ।
छलय नें रे हनुवा निम कीज ॥२६॥
कीजो सो रे छकोई बर ।
हनुवा कहें रे ते तो निम्न ग बर ॥२७॥
नहीं बंदना रे विन काह्यो निखन ।
या बंधो नें रे दिन सोगि दिन पार ॥२८॥
नहीं बंधि रे विन काह्यो निखन ।
बंधि दिन रे सोगी दिन बंधी पार ॥२९॥
दिन एकल नें रे मात्र मरवा नो माहें ।
दिन नें मात्र रे सखें पडनें पना माहें ॥३०॥
मात्र न मरवें ते जो दिखी रा मात्र ।
ते तो निन्द रे मर्यो करे दिखार ॥३१॥

साध ने बांढण जाता थकां, मारग में रे तस थावर री हुवे घात ।
 तिण रो एक तो पाप लागो कहे, एक कहे रे पाप नहीं अंस मात ॥ २५ ॥
 तस थावर मूंआ रो पाप लेखवे, ते तो सरघा रे सुघ साघां री अटल ।
 जीव मूंआ त्यांरो पाप न लेखवें, त्यांने जाणों रे निश्चें निन्वां असल ॥ २६ ॥



रत्न : ६

मिथ्याती री करणी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरीया, उवम्भाया सगला साध ।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचू पद अराध ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण घणी, सासण नायक सांम ।
त्यां माथे हाथ देइ करी, साख्यां घणां ना कांम ॥ २ ॥
त्यां श्री जिण मुख सूं भाखीया, आगम सार सिधंत ।
त्यांरो हलूकमीं निरणों कीयो, त्यां पायों छें मारग तंत ॥ ३ ॥
केई सूतर वाचे जिण भाखीया, पिण पूरा मूढ अयाण ।
उंघा उंघा अर्थ करें, ते ववेक विकल समाण ॥ ४ ॥
पेहला गुणठांणा रो घणी, वेराग मन मांहे आंण ।
दांन सीयल तप भावनादिक, निरवद करणी करे जांणजांण ॥ ५ ॥
तिण करणी ने मूढ मूर्ख कहे, मिथ्याती री करणी नही सुध ।
उणरे संसार वघे करणी कीयां, उणरे प्राकम सर्व असुध ॥ ६ ॥
जो उ घणी घणी करणी करे, तो घणो घणो वघें संसार ।
तिणरी सरघा परगट कळं, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आगन्या मे]

केई परकत रा भद्रीक मिथ्याती, वले विनेवंत साचां रा ताहि ।
दया तणा परिणांम छे चोखा, वले मच्छर नहीं तिणरा घट माहि ।
इण निरवद करणी रो निरणो कीजों ॥ १ ॥
तिणरे घर साधूजी गोचरी आया, ते साध ने देख हुबो हरख अपार ।
सात आठ पग सांहो आय ने, सीस नमाय वांघा वाळ्वार ॥ २ ॥
पछे रसोडा घर माहे लेजाए, प्रतिलाभ्यों असणादिक च्याहंइ आहार ।
तिणरो असुध प्राकम सरघें अग्यांनी, वले कहे तिणरे वचीयों संसार ॥ ३ ॥
मिथ्याती साचां ने असणादिक देवे, तिणरो तो उ प्राकम असुध जाणे ।
तो पिण उणरे घर जाए अग्यांनी, असणादिक किण लेखे आणे ॥ ४ ॥
वले वस्त्र पातर आहार ने पांणी, साचां ने दीयां जाणे छे वघतो संसारो ।
तेहीज तिणरो असणादिक वेहरें, तो उणरे लेखे उ कांय पाडें छे घाडो ॥ ५ ॥

जिण नें आप जाणें छें निश्चें मिथ्याती,
अमुघ प्राकम जाणें छें त्यांरो,
जो मिथ्याती उणनें असणादिक देवें,
उणरी करणी नें प्राकम अमुघ जाणें छें,

ज्यांरो आहार पांणी कपडादिक लेवें,
आप रा मुतलव काज ओरां नें डवोवे,
मन गमतों चोखो चोखो आहार वेंहरायों,
तिणरो दांन नें प्राकम असुघ जाणें छें,
असणादिक नित ल्यावे छें घणा घरां रो,
नित नित घणां रे संसार वचारें,
इण री सरखा रे लेखें मिथ्याती रा घर रो,
वले सेज्या संधारो वस्त्र नें पातर,
जो अनेरी सरखा रों उग ने आय पूछे,
थाने दांन दीयां करणी सुघ कें असुघ,
आप नें भारी भारी म्हें वस्त्र वेंहराया,
म्हे कल्पे ते वस्त आप नें दीवी,
आप नें दान दीयां री सुघ करणी हुवें,
जो सुघ नहीं हुवे तो असुघ कहों थे,
सुघ करणी कहां निज सरखा उठे छें,
प्रश्न पूछ्यां रो जाव तो देणी न आवें,
जव उ कहे म्हें पुन री तो पूछा न कीधी,
भली करणी कहां पुन नें धर्म जाणें,
थाने दांन दीयां आछी करनी न जाणों,
तिण सू आप करणी हुवे ते वतावो,
हूं कहवायां विनां आप ने नही छोड़ू,
थानें दांन दीयां आछी करणी कहो,
थाने दांन दीयां आछी करणी न कहो तो,
म्हें थाने दान दीयां ते करणी,
म्हे तो म्हारें कारण पूछा करी छें,
थाने दांन दीयां री भूंडी करणीं छें,
थे साव थइ इसरा कांम कीघां,

त्यांरो असणादिक जांणी जांणी नें ल्यावें ।
तो उणरें लेखे उ ठागों कांय चलावें ॥ ६ ॥
तो ओ तुरत लेवण नें त्यांरी होवें ।
तो साव थइ ओरां नें कांय डवोवें ।
इण मूढ मती रो निरणों कीजो* ॥ ७ ॥
त्यांरें सांप्रत जाणें छें वधतो संसार ।
घिग घिग छें तिणरो जमवारो ॥ ८ ॥
वले मही मही चोखो कपडो वेंहरावें ।
वले तिण हीज दांन नें तेहीज सरावें ॥ ९ ॥
त्यां सगलां रें जाणें छे ववीयों संसार ।
ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार ॥ १० ॥
असणादिक वेंहरणों नही कांइ ।
तिण मिथ्याती रो जावक वेंहरणों नाही ॥ ११ ॥
म्हारों असणादिक थे वेंहरी वेंहरीने ल्यावों ।
म्हारें फल लागें ते जथातथ वतावों ॥ १२ ॥
मनगमतों वेंहरायो म्हें आहार नें पांणी ।
म्हें तो आप नें दांन दीयां धर्म जांणी ॥ १३ ॥
तो सुघ करणी मुख सू कही आप ।
यां दीयां में एकण री करो थाप ॥ १४ ॥
असुघ करणी कहां तो उ वेखी थावें ।
जव पुन कहे ने उ पिडों छुडावें ॥ १५ ॥
थानें दान दीयां री करणी कहो आप ।
भूंडी कहां तो जाण सू एकंत पाप ॥ १६ ॥
थाने दांन दीयां करणी जांणो थे भूंडी ।
हिवें मती करों आप गला गोलो ।
मोनें पिण आप निपटम जांणो भोलो ॥ १७ ॥
तो हूं जाण सू थानें मोटा अणगारो ।
हूं जाण लेसूं थाने पिण दगादारो ॥ १८ ॥
आछी जांणो तो चोड़े कहिदो आछी ।
संका कांय आणो थे कहितां सान्नी ॥ १९ ॥
तो थे ठा ठा नें म्हारो स्वावो छें मार्लों ।
थांरों परभव में होसी कूण हवालो ॥ २० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

थानें दान दीयां आछी करणी न जाणों,
 वले भूंडी करणी कीयां पुन वतावों,
 पुन सरधो थे भूंडी करणी मे,
 भूंडी करणी कीयां निश्चे पाप लागे छें,
 जो इसडों मिलें कोइ पूछण वालो,
 जब अकल विकल थइ उघो बोलें,
 पेहले गुणठाणे दान साधां नें देइ ने,
 तिण दान रा गुण देवतां पिण कीधां,
 — सुपातर दान री कोइ करे दलाली,
 सुपातर दान री कोइ करे परसंसा,
 पेहले गुणठाणे सील पाले छे,
 तिणरो सील असुघ जाणें अग्यानी,
 पेहलें गुणठाणे तपसा करे छें,
 वले हरी नीलोतरी त्याग करे छे,
 दान सील तप तणी भावना भावें,
 जो उ घणो घणो बेराग करे तो,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 इसडी परूपणा करे अग्यानी,
 पेहलें गुणठाणे निरवद करणी करे छें,
 अतिचार लागो कहे समकत मांही,
 निरवद करणी कोइ करे मिथ्याती,
 तिणने भगवत पिण आगना नही देवे,
 मिथ्याती री करणी मांहे गुण नही जाणें,
 वले तेहीज मिथ्याती नें सूंस करावे,
 वले कहि कहि मिथ्याती ने हरी छुडावें,
 उपवास बेलादिक कहि कहि ने करावे,
 वले मिथ्याती ने उपदेस देई ने,
 राती भोजनादिक रो पिण त्याग करावें,
 वले बखाण सुणावें छें तिणने,
 संथारो पिण करावे उपदेस देइने,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 वले असुघ प्राकम जाणे छे तिणरो,
 ३३

थाने दान दीयां करणी जाणो थे भूंडी ।
 ते निश्चें न चाले खोटी हूंडी ॥ २१ ॥
 तो पाप होसी किण करणी माय ।
 ते पिण थानें समझ न कांय ॥ २२ ॥
 तो पग पग सरधा मांहे अटकावें ।
 पिण पूछ्या रो जाब पूरो नही आवें ॥ २३ ॥
 परत ससार कीधो छे जीव अनत ।
 ठाम ठाम सूतर में कह्यो भगवंत ॥ २४ ॥
 वले हर कोइ देवे सुपातर दान ।
 यांतीनां री आछी करणी कही भगवान ॥ २५ ॥
 बेराग सहीत चोखे परिणाम ।
 वले ससार वधीयो जाणे छे ताम ॥ २६ ॥
 उपवास बेलादिक चोखे परिणाम ।
 ते सगलाई असुघ कहें छे ताम ॥ २७ ॥
 वले तिणने ससार लागें खारो ।
 उ घणो घणो जाणे वधतो ससारो ॥ २८ ॥
 तिण करणी ने जावक जाणे असुघ ।
 तिणरी मिष्ट हुइ छे सुघ ने बुध ॥ २९ ॥
 तिणरी करणी सराया में दोषण जाणे ।
 तिणरो न्याय जाण्यां विण मूर्खें ताणे ॥ ३० ॥
 तिणरे कहे गुण नीपजे नही कांइ ।
 एहवी कहे छे अग्यानी परपदा मांही ॥ ३१ ॥
 सरावे तिणने पिण दोष बतावे ।
 त्यांरा बोल्या री परतीत किण विघ आवे ॥ ३२ ॥
 जमीकंदादिकना पिण सूंस करावे ।
 तेहीज तिण करणी ने असुघ बतावें ॥ ३३ ॥
 कुसीलादिक छोडे तो छोडावे ।
 छकाय ने चवदे नेमादिक सीखावे ॥ ३४ ॥
 वले कहि कहि ने तिणने ग्यान सीखावे ।
 तेहीज तिणरी करणी असुघ बतावे ॥ ३५ ॥
 तिणरी असुघ करणी कहे छें वाह्वार ।
 वले करणी कीयां जाणें वधीयो ससार ॥ ३६ ॥

ढाल : २

ढुहा

जीव अजीव जाणे नही तेहनें, पेहले गुणठाणे कह्यो जिणराय ।
 त्यांरा पचखाण दुपचखाण कहा, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ १ ॥
 पेहले गुणठाणे विरत न नीपजे, तिण लेखे कहा दुपचखाण ।
 पिण निरजरा लेखे पचखाण निरमला, उत्तम करणी बखाण ॥ २ ॥
 पेहले गुणठाणे करणी करे, तिणरे हुवे छे निरजरा धर्म ।
 जो घणो घणो निरवद प्राकम करे, तो घणा घणा कटे छे कर्म ॥ ३ ॥
 पेहले गुणठाणे दान ददा थकी, कीयो छे परत संसार ।
 थोडासा परगट करू, ते सुणजो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल

[पाखड वधसी आरे पाच मे]

सुलभ थो सुमुख नामे गाथापती रे, तिण प्रतिलाभ्या सुदत्त नामे अणगार रे ।
 तिण परत संसार कीयो तिण दान थी रे, विपाकसूतर मे छे विस्तार रे ।
 ए निरवद करणी मे छे जिण आगना रे ॥ १ ॥

सुमुख गाथापति ज्यू दसा जणा रे, त्यां पिण प्रतिलाभ्या अणगार रे ।
 त्या परत संसार कीयां सगला जणा रे, विपाक मे जूवो जूवो विस्तार रे ॥ २ ॥
 जव देवता वजाइ थी देवदुदमी रे, तिण दान रा कीयां घणा गुणग्राम रे ।
 थे भिनष जन्म तणो लाहो लीयो रे, जस कीरत कीवीं छे तिण ठाम रे ॥ ३ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती करे पल्पणा रे, मिथ्याती तो न करे परत संसार रे ।
 जो मिथ्याती दान देवे सावां भणी रे, तिण करणी मे सार नही लिंगार रे ॥ ४ ॥

सुमुख ने आदि देइ दसां जणां रे, त्या दान थी न कीयो परत संसार रे ।
 ते साध ने देखे ने हरखत हूआं रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे ॥ ५ ॥
 त्यां उपसम समकत थी दसां जणां रे, सगलाइ कीयो परत संसार रे ।
 ते समकत अंतरमुहरतमें वमी रे, पछे भिनष आउखो बांध्यो तिणवार रे ॥ ६ ॥

इसडी वार्ता मन सूं उठाय ने रे, दान री करणी कहे असुघ रे ।
 ते सके नही सूतर उयापता रे, भिष्ट हुइ छे तयारी वुव रे ॥ ७ ॥
 सांप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दानथी कीयो परत संसार रे ।
 भिनष रो आउखो बांध्यो दानथी रे, जोवो विपाक सूतर मफार रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

मुग्ध को विशय नाने गाथापति रे, निग प्रनिन्दाभ्या भगवत श्री महावीर रे ।
 तिण पन्न मगार हीया तिम धान्नी रे, दानं नूं पांमो भवउत् नीर रे ॥ ६ ॥
 आपन्न ने मुग्धवत् तिम हीरं रे, क्ले क्लृप्त वाद्यण निमरीज जांन रे ।
 ह्यं वीर ने दान देउ न्यार उपां रे, पन्न मगार हीयो छे देनां पाण रे ॥ १० ॥
 चां च्यार रे सान्ताग ही विरगा ह्य रे, पान दग्द पण्टया ताम रे ।
 निहा देउ मगार देउत्तमी रे, या न्यानां न कीया घना मुग्धम रे ॥ ११ ॥
 क्ले धिन थिन नो छे न्याने देउवा रे, छे मफल हीयो मानव अद्वार रे ।
 दानं निरदोपण देउ वीर ने रे, मित्त नो उतत्त हीयो मुग्ध रे ॥ १२ ॥
 जम हीर नो ही न्यानी देउता रे, वदे मित्त तिम हीया घना मुग्ध रे ।
 तिगरा धित्तार मगार रे धान पनो रे, भगोनी रा पनग्दा मनक रे माहि रे ॥ १३ ॥
 ह्याने दान हीय छे मित्या ही भकं रे, मित्यानी भायां हीयो पन्न मगार रे ।
 उण करणी नी मित्या नी छे आगता रे, तिण करणी मे अवगुण नी विगार रे ॥ १४ ॥
 विधे सावापति अदि च्यात्त न्या रे, न्या दान नी न वीयां पन्न मगार रे ।
 ने तिम नान ने केही करणीया रे, उगमम मगारन आउ तिगवार रे ॥ १५ ॥
 ह्या उगमम मगारन पानी थी च्यात्त न्या रे, मगारन कीयो पन्न मगार रे ।
 देव नगो आउतां वांहीयो रे, ए मित्यानी नी ह्या तिगवार रे ॥ १६ ॥
 उनही घना मन नूं उठार ने रे, दान नी करणी वहं अनुध रे ।
 ते नके नही सूतर उथापता रे, भिट ह्य छे त्यां नी द्य रे ॥ १७ ॥
 सांप्रत सूतर माहं उम क्लो रे, दान थी कीयो पन्न मगार रे ।
 देव आउतो वाध्यो दान थी रे, भगोनी रा पनग्दा मनक मभार रे ॥ १८ ॥
 घणा मित्यानी श्री भगवान ने रे, हर्य नूं वीयो निरदोपण दान रे ।
 तिण दान नी करणी ने कहे अनुध छे रे, ह्या विद्वानं न घट मे घोर अग्यान रे ॥ १९ ॥
 अनंता तीर्थकर ह्या तेहने रे, ह्याने हर्य नूं वीयो अनता दान रे ।
 ह्या सगलां नी करणी कहे अनुध छे रे, ने भवभव मे होनी घणा हिंगन रे ॥ २० ॥
 — देवती वेहरायो विजोग पाक ने रे, तिण दान सू कीयो परत संसार रे ।
 क्ले देव आउतो वांध्यो दान थी रे, ते विजय ज्यूं जाण लेजो विस्तार रे ॥ २१ ॥
 जिग ने वाटे हरकेसी साध ने रे, ब्राह्मणा वीयो निरदोपण दान रे ।
 तिण दान री जम महिमा कीवी देवता रे, ते सूतर माहें गूंथ्यो भगवान रे ॥ २२ ॥
 मित्याती अनता मातर दान थी रे, निच्छेइ कीयो परत संसार रे ।
 ए वीर ना वचन उथापे पापीया रे, भूठ वोउ ने ह्या त्यार रे ॥ २३ ॥
 सीले आचार करं सहीत छे रे, पिण सूतर ने समकत् तिणरे नाहि रे ।
 तिणने आराधक कह्यो देसथी रे, विचार कर जोवो हीया माहि रे ॥ २४ ॥

देस थकी तो आराधक कह्यो रे, पेंहले गुणठाणे ते किण न्याय रे ।
 विरत नही छें तिणरें सर्वया रे, निरजरा लेखे कह्यो जिगराय रे ॥ २५ ॥
 जो पेहले गुणठाणे असुघ करणी हुवे रे, तो देस आराधक कहिता नाहि रे ।
 ते विस्तार भगोती सतकज आठमें रे, ए चोभगी दसमा उद्देसा माहि रे ॥ २६ ॥
 देस आराधक करणी जिण कही रे, ते करणी छे जिण आग्या माय रे ।
 कर्म कटे छे तिण करणी थकी रे, तिणने असुघ कहे ने बूंडो काय रे ॥ २७ ॥
 तामलीतापस तप कीवो घणो रे, साठसहंस वरसां लग जाण रे ।
 बेले बेले निरतर पारणों रे, बेराग भावे सुमता आंण रे ॥ २८ ॥
 आहार बेहरी ने ल्यायों तेहने रे, पांणी सू धोयो इक्वीस वार रे ।
 सार काढे ने कूकस राखीयो रे, एहवो पारणे कीयो आहार रे ॥ २९ ॥
 तिण संथारो कीयों भला परिणाम सूं रे, जब देवदेवी आया तिण पास रे ।
 त्यां नाटक पाडे विवध परकारना रे, पछे हाय जोडी करें अरदास रे ॥ ३० ॥
 म्हे चमरचंचा राजघ्यांनी तणा रे, देवदेवी हूआ म्हे सर्व अनाथ रे ।
 इंद्र हूंतो ते म्हांरो चव गयो रे, थे नीहाणो कर हुवो म्हारा नाथ रे ॥ ३१ ॥
 इम कहे ने देवदेवी चलता रह्या रे, पिण तामली न कीयो नीहाणो ताय रे ।
 तिण कर्म निरजरीया मिथ्याती थकां रे, ते इसाण इद्र हुवो छे जाय रे ॥ ३२ ॥
 ते देवचवी नें होसी मांनवी रे, महाविदेह खेतर मभार रे ।
 ते साध थई ने सिवपुर जावसी रे, ससारनी आवागमण निवार रे ॥ ३३ ॥
 इण करणी कीवी छे मिथ्याती थके रे, तिण करणी सू घटीयो छे ससार रे ।
 इंद्र हुवो छे तिण करणी थकी रे, इण करणी सूं हुवो एकावतार रे ॥ ३४ ॥
 जो तामलीतापस तप करतो नही रे, तो तपसा विण इंद्र हूतों नाहि रे ।
 एकावतारी पिण हूंतो नही रे, विचार करे देखों मन माहि रे ॥ ३५ ॥
 जो निरवद करणी मिथ्याती करे रे, ते पिण कर्म करे चकचूर रे ।
 तिण निरवद करणी ने कहे असुघ छे रे, तिणरी सरघा मे कूड कूड मे कूड रे ॥ ३६ ॥
 तामली बालतपसी तेहनी रे, करणी तणो करो निस्तार रे ।
 ए भगोती सूतर रे सतकज तीसरे रे, पेहला उद्देसा मे विस्तार रे ॥ ३७ ॥
 असोचा केवली मिथ्याती थकां रे, छठ छठ तप कीयो निरंतर जाण रे ।
 वले लीवी सूर्य सांही आतापना रे, बांह दोनूड उंची आंण रे ॥ ३८ ॥
 परकत रों भद्रीक ने वनीत छे रे, उपसंतपणो घणों छे ताहि रे ।
 क्रोध मान माया ने लोभ पातला रे, मांन ने मर्द लीयो तिण माहि रे ॥ ३९ ॥
 इद्री ने वस कर लीवी जांण नें रे, वले घणा छे गुण तिण माहि रे ।
 इसरा गुणा सहीत तपसा करे रे, करमां ने पतला पाडे छे ताहि रे ॥ ४० ॥

इन कर्तों एकाग्र श्रद्धाओं सेहोना दे,
 को चढी चढी, सेस्या दिगुव छे दे,
 उदावनी कर्न पयउपमन हुना दे,
 न्याय नाराग ने कर्ता गेवयना दे,
 जो श्रद्धों जगों विमंग अनांग मूं दे,
 उरुत्रों जगों ने सेहें तैहू मूं दे,
 को जगों विमंग अनांग मूं दे,
 पार्वीयों ने जगों पाहुना दे,
 नारागी सगिउही जगों तेहने दे,
 विमुव निगदं,वन हुंजा तेहने दे,
 इन गीतें पेंहला जो मनकत पारीयों दे,
 पछे अनुकने हुवा केवरी दे,
 अनेत्रा केवरी हुवा इन रीत मूं दे,
 कर्म पतला पख्ता निव्याती शकां दे,
 जो निव्याती शकां जगना कर्तों नहीं दे,
 श्रांथादिक नहीं पाइतो पातला दे,
 जो श्रेया परिणाम मला हुंजा नहीं दे,
 इत्यादिक बीदा मूं हुवें उनरुटी दे,
 पेंहलें गुणतापें निव्याती शकां दे,
 तिन करपी श्री नीव लागी छें सुत्र री दे,
 अनेत्रा केवरी री करपी तगो दे,
 नवनां मदक रें उहें इपातिम में दे,
 मनकत तिन हायो रा नव मने दे,
 तिन पन्त संनार बीदों दया शको दे,
 निव्याती निरवद करपी कर्तां शकां दे,
 तिन करपी ने अमुष व्हें छें पागीया दे,

जया मुन अत्रवपय परिणाम दे।
 विषय विचार कर्तां र्नीं हान दे ॥४१॥
 करवा लागो ते सुव विचार दे।
 विमंग अनांग उरुत्रें विगहार दे ॥४२॥
 आंगुल दे अनांग्याता में नारा दे।
 अनांग्याता जोवन महें री नारा दे ॥४३॥
 लीव नें अरीव तगों नारा दे।
 त्यानिं हुंजा जगों नवजल हुं दे ॥४४॥
 संकेलन कर्ता जगों छें तान दे।
 त्यानिं तिन ज्ञान कीया तिन ज्ञान दे ॥४५॥
 विमंग अनांग दे हुवो अवधि गिनान दे।
 पछे पयो पांचमी गति प्रकांत दे ॥४६॥
 निव्याती शकां तिन करपी बीव दे।
 तिन मूं अनुकने तिवदूर लीव दे ॥४७॥
 निव्याती शकां नहीं छेत्तो जातार दे।
 ते, तिन विष कर्ता इत्या पान दे ॥४८॥
 जो तिन विष पानत्र विमंग अनांग दे।
 अनुकने पेंहता छें निरवान दे ॥४९॥
 निरवद करपी बीदीं छें ज्ञान दे।
 ने करनी चोही ने सुव परिणाम दे ॥५०॥
 विस्तार नगोती सुत्र महि दे।
 तिहां जोय निरगों कर लीजो ताहि दे ॥५१॥
 मुमला री दया पाली छें ताहि दे।
 जेवों पेंहला अनेन गिनाता ताहि दे ॥५२॥
 समजद पाय पोहता निरवान दे।
 ते निरवद पूरा मूठ अर्धान दे ॥५३॥

ढाल : ३

ढुहा

सूयगडाअंग आठमा अघेन मे, दौय गाथा कही तिण मांय ।
तेवीसमी ने चोवीसमी, तिणरो मूढ न जांणे न्याय ॥ १ ॥
जे ततवना अजांण छे, मोटा भाग सहीत ।
ते वीर सुभट वाजे लोक में, पिण समकत कर ने रहीत ॥ २ ॥
ते करणी निरवद करे, दांन सीलादि निरदोष ।
मास खमणादिक तपसा करे, तिणरी करणी कहे सर्व फोक ॥ ३ ॥
असुध प्राकम कहे तेहने, करणी कीयां वधे संसार ।
कर्म वध कहे तिणरे सर्वथा, निरजरा नही कहे लिगार ॥ ४ ॥
इण विध अर्थ उंघा करे, निरवद करणी ने कहे छे असुध ।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ ५ ॥
तेवीसमी गाथा तणो, तिण मूल न जांण्यो न्याय ।
असुध प्राकम कह्यो तेहनो, तिणरो अर्थ सुणो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[श्री नेम जिखद समोसरथा रे लाल]

असुध प्राकम कह्यो तेहनो रे, ते असुध करणी तणो कथन जांण रे ।
सुध करणी रो कथन इहां नही रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे ।
जे खोटी करणी मिथ्याती करे रे, सुध सरधा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
ते असुध प्राकम तिणरो कह्यो लाल, ते जिण आगना बाहिर जाण रे ।
असुध करणी रो असुध प्राकम कह्यो रे, तिणसूं पाप कर्म लागे आंण रे ॥ सु० रे ॥
तिणसू निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, ते विकलां ने खवर न काय रे ।
सावद्य निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणने असुध कहे ताय रे ॥ ३ ॥
तो उणरी सरधा रो लेखो कीया रे लाल, यां दोनू ने कहे छे असुध रे ।
जे ततवतणा केइ जाण छे रे, समकती रो प्राकम सर्व सुध रे ॥ ४ ॥
ते वीर सुभट वाजे लोक में रे लाल, ते मोटा भाग सहीत रे ।
ते करणी निरवद करे रे, ते समकत करने सहीत रे ॥ ५ ॥
मास खमणादिक तपसा करे रे लाल, दांनसीलादिक निरदोष रे ।
तिणसू कर्म तणो हुवे सोख रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

निरवद करणी ते सुघ प्राकम कह्यो रे,
 शेष करणी असुघ प्राकम कह्यो लाल,
 ते असुघ प्राकम समदिष्टी तणो रे,
 सुघ प्राकम मिथ्याती तणो लाल,
 तिण ठामें तो कथन इतलोज छें रे,
 समदिष्टी रा सुघ प्राकम तणो रे लाल,
 सावच्च निरवद करणी मिथ्याती तणी रे,
 तो समदिष्टी री दोनू करणी तणो रे लाल,
 मिथ्याती निरवद करणी करें रे,
 ते ववेक विकल सुघ बुध विनां रे लाल,
 बले मूढ मिथ्याती इम कहें रे,
 मिथ्याती तणी करणी तणो रे लाल,
 निरवद करणी मिथ्याती तणी रे,
 अे दोनू दुर्गत रो कारण कहे रे लाल,
 आचारंग पांचमां अघेयन रो रे,
 भोला नें न्हाखें भर्म में रे लाल,
 आचारंग तिण ठामें तो इम कह्यो रे,
 तिण करणी करण रों उदम करे रे लाल,
 निरवद करणी जिण आगना सहीत छे रे,
 ते पिण कुमारग में पड्या रे लाल,
 अठें कुमारग री करणी कही रे,
 अें दोनू कुगति रा कारण कह्या रे लाल,
 अठें मिथ्याती ने समदिष्टी तणों रे,
 उठे करणी निखेवी आग्या वारली रे लाल,
 बले निखेध्यों परमारद नें रे,
 तिणने दुर्गतिनो कारण कह्यो लाल,
 करणी जिण आगना मांहिली रे,
 जे करसी ते सुख पावसी रे लाल,
 एहवो कथन आचारंग नें मझे रे,
 तिणसूं निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल,
 निरवद करणी मिथ्याती करे रे,
 समदिष्टी रा परमाद सरिखी कही र लाल,

ते जिण आगना माहिलों जाण रे ।
 तिण सू पाप कर्म लागें आण रे ॥ ७ ॥
 तिणरो कथन नहीं तिण ठाम रे ।
 तिणरो पिण कथन नही छें तांम रे ॥ ८ ॥
 असुघ प्राकम मिथ्याती रो तांम रे ।
 फल वतायो तिण ठाम रे ॥ ९ ॥
 यां दोयां रो प्राकम हुवें असुघ रे ।
 प्राकम हो जाअे सुघ रे ॥ १० ॥
 तिणरी करणी कहें छें असुघ रे ।
 त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुघ रे ॥ ११ ॥
 समदिष्टी तणों परमाद रे ।
 यां दोयां ने कहें असमाद रे ॥ १२ ॥
 समदिष्टी तणो परमाद रे ।
 एहवो कूडों करें छें विवाद रे ॥ १३ ॥
 छठों उद्देसों वताय रे ।
 तिणरो उधो अर्थ वताय रे ॥ १४ ॥
 सावच्च करणी जिण आगना वार रे ।
 ते पडीया कुमारग मझार रे ॥ १५ ॥
 तिणमें उदम नही छें लिगार रे ।
 करमां रा वधारण हार रे ॥ १६ ॥
 सनमारग रों कह्यो परमाद रे ।
 ए साची सरध्यां होसी समाद रे ॥ १७ ॥
 कथन नही छे लिगार रे ।
 दुर्गतति नी पोहचावण हार रे ॥ १८ ॥
 करणी न करे जिण आगना सहीत रे ।
 तिहां जोय लो हडी रीत रे ॥ १९ ॥
 तिहां वीर कही निरदोष रे ।
 आग्या वारे करणी सर्व फोक रे ॥ २० ॥
 तिणरों अर्थ न जाण्यो ताय रे ।
 तिणनें कही दुर्गतति रों उपाय रे ॥ २१ ॥
 तिणने कहे दुर्गतति रो उपाय रे ।
 बले पुन वतावें तिण मांय रे ॥ २२ ॥

समदिष्टी रा परमाद थी रे, पाप लागें छें आय रे
तो मिथ्याती री करणी मफे रे लाल, पुन क्युं वतावे ताय रे ॥ २३ ॥
उगरी करणी दुरगति रो कारण कहे रे, तिण लेखें तों पुन नाहि रे ।
पुन सूं तो जाअें सुदगति मफे रे लाल, ते पिण निरणो नही घट माहि रे ॥ २४ ॥
मिथ्यात्वी निरवद करणी करें रे, तिणने दुरगति रो कारण कहे मूढ रे ।
परमाद कहे अन्हाखी थकां रे लाल, तिण भाली मिथ्यात री रूढ रे ॥ २५ ॥
मिथ्याती दान देवे सावां मणी रे, तिणरे जांणे दुरगति रो उपाय रे ।
बले तेहीज बेहरे तिणरो जाण नें रे लाल, इसडो कांय करे छे अन्याय रे ॥ २६ ॥
मिथ्याती देवे वस्त्र पातरा रे, बले देवे असणादिक व्याहं आहार रे ।
तिणरें जांणे उपाय दुरगति तणो रे लाल, तो लेवा नें कांय हुवे तयार रे ॥ २७ ॥
घणा मिथ्यात्यां रा घर तणो रे, नित्य नित्य ल्यावे आहार रे ।
त्यारे दुरगति वघारें जाण जाण ने रे लाल, त्यांने किम कहिजें अणगार रे ॥ २८ ॥
शील पालें मिथ्याती बेराग सूं रे, तपसा करें बेराग सूं ताय रे ।
हरियादिक त्यागे बेराग सू रे लाल, तिणरे कहे दुरगत रो उपाय रे ॥ २९ ॥
इत्यादिक निरवद करणी करें रे, बेराग मन माहे आंण रे ।
तिणरी करणी दुरगत रो कारण कहें रे लाल, ते जिण मारग रां अजांण रे ॥ ३० ॥
बले तेहीज मिथ्याती जीव ने रे, उपदेस दे दे वाहंवार रे ।
कुसील छोडावे तेहनें रे लाल, बले तपसा करावण ने त्यार रे ॥ ३१ ॥
बले तिणने छोडावे नीलोतरी रे, बले छोडावे वस्त अनेक रे ।
तिणरी करणी रा फल दुरगति कहे रे लाल, त्या विकलां में नही छें ववेक रे ॥ ३२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें कहें दुरगति ने परमाद रे ।
ते ववेक विकल सुघ वुध विनां रे लाल, बोलें छे मिरखावाद रे ॥ ३३ ॥
निरवद करणी ओलखायवा रे, जोड कीची नेणवा मभार रे ।
समत अठारे सेंतालें समें रे लाल, वेसाख विद वारस थावरवार रे ॥ ३४ ॥



ढाल : ४

दुहा

मिथ्याती निरवद करणी करे, तिणरें निरजरा कही जिणराय ।
 तिण माहें संक म राखजो, जोवो सूतर रें मांय ॥ १ ॥
 मिथ्याती आछी करणी कीयां विनां, किण विघ पामें समकत सार ।
 सुध प्राकम सूं समकत पांमसी, तिणमें संका म राखो लिगार ॥ २ ॥
 धूर सूं तो जीव मिथ्याती थकां, सुणें साघां री वांण ।
 ग्यांन समकत पाय साघां कने, अनुक्रमें पोहचें निरवांण ॥ ३ ॥
 साघां री संगत कीयां थका, दस बोलां री प्राप्त जाण ।
 धुर सूं तो सुणवो सिधंत रो, पछें ग्यान विगनान पचखाण ॥ ४ ॥
 सजम नें आश्व रहीत पणो, तपसा ने कर्म बोदाण ।
 नवमो क्रीया रहीत पणों, दसमों सिध निरवांण ॥ ५ ॥
 संका हुवें तो भगोती में जोय लो, दूजें सतक पांचमें उद्देस ।
 सुणीयां सूं समकत पांमसी, इणमे कूड नही लवलेस ॥ ६ ॥
 जो मिथ्याती री करणी असुध हुवें, वले असुध प्राकम हुवें ताय ।
 जब सुणवोइ तिणरो असुध हुवे, तो उ समकती कदेय न थाय ॥ ७ ॥
 मिथ्याती निरवद करणी करे, तिणने असुध कहें ते अयांण ।
 तिणरा जाब कहूं सूतर थकी, ते सुणजों चतुर सुजांण ॥ ८ ॥

ढाल

[जगत गुरू तिसला नदन वीर]

किल्यांण कारणी वारता, सुणीया सूं जाणे साख्यात ।
 वले जाणे सुणीया थकी, अकिल्यांण कारणी वात ।
 चंतुर नर समझों ग्यांन विचार* ॥ १ ॥
 किल्यांण ने अकिल्यांण री, सुणीयां सूं दोयां री ठीक होय ।
 दसवीकालिक चौथा अवेयन में जी, इर्यारमी गाथा जोय ॥ च० २ ॥
 मिथ्याती सुणे साघां कने, पछे करे छें मन मे विचार ।
 निरणों करे घट भितरें, तिण सूं पामें समकत सार ॥ ३ ॥
 जो मिथ्याती रो प्राकम असुध हुवे, तो विचारणा सुध नही होय ।
 असुध प्राकम ने असुध विचार थी, समकत नहीं पामें कोय ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

समकत पामे सुध विचारीया, ते निश्चे सुध प्राकम जाण ।
तिण प्राकम ने असुध कहें, ते तो पूरा मूढ अयाण ॥ ५ ॥
सकडाल पुत्र श्री वीर नें जी, वदणा कीधी सीस नमाय ।
वले जायगा माहे उतारीया, पाट पाटला दीधा वेंहराय ॥ ६ ॥
तिण दान दीयो श्री वीर ने, मिथ्याती थकें निरदोष ।
अनुक्रमे समरु श्रावक हुवो, तिण कीयो कर्मा रो सोप ॥ ७ ॥
तिणरा प्राकम ने कहे असुध छे, वले असुध करणी कहे ताय ।
कर्म बंधवा रों कारण कहे, ते तो चोडे भूला जाय ॥ ८ ॥
धर्म करवा ने जावक न उठीया, धर्म सुणवो न वांछे ताहि ।
तिणने पिण धर्म सुणावणो, जोवो आचारग मांहि ॥ ९ ॥
जिणरो सुणवा रो असुध प्राकम हुवे तो, सीखणों पिण असुध होय ।
जव धर्म न सुणावणो तेहने, ग्यान सीखावणो नही कोय ॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद सीखे सुणे, तिणरी करणी जाणे छे असुध ।
तेहीज सुणावे सीखावे तेहने, उणरे लेखे उणरी भिष्ट बुध ॥ ११ ॥
सोगवीया नगरी वाहिरे, नीलासोग वाग मभार ।
तिहा सुखदेव सिन्यासी आवीयो, साथे ल्यायो सीप हजार ॥ १२ ॥
तिण थावरचा अणगार ने जी, पूछ्या प्रश्न अनेक ।
त्यांरा जाब सुणे हरखत हुवो जी, घट माहे आयो ववेक ॥ १३ ॥
पळे वाणी सुणे हीये सरख ने, समकत पामी तिण ठाम ।
तिण संजम लीयो एक सहस सू जी, साख्या आतम कांम ॥ १४ ॥
तिण प्रश्न पूछ्या मिथ्याती थके, मिथ्याती थके सुणीया जाव ।
मिथ्याती थकां कीधी विचारणा, तिण सू समकत पायो सताव ॥ १५ ॥
जो मिथ्याती रो सुणवो असुध हुवे तो, समकत नही पांमतो ताम ।
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध हूतो, तिण सू समकत पायो तिण ठाम ॥ १६ ॥
खधक नामे सिन्यासी हूतो जी, सावथी नगरी माय ।
तिणने प्रश्नज पूछ्या जी, पिगल नियठे आय ॥ १७ ॥
जब तिणने जाव न उपनो, तिण सू आयो वीर ने पास ।
तिणने वीर आगूच वतावीयो, ते सुणने पांम्यो हुलास ॥ १८ ॥
तिण मिथ्याती थके वाणी सुणे, पांम्यो समकत सार ।
श्रीवीर जिणसर आगले, तिण लीघो सजम भार ॥ १९ ॥
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध थो, तिण सू पामीयो समकत सार ।
तिणरा प्राकम कोइ असुध कहे, ते पूरा मूढ गिवार ॥ २० ॥

हृथणापुर नगर नाँ वासीयो, सिवराज रखेस्वर जांग ।
 ते राज छांडे तापस हुवों, तिणलें उपनो विभंग नांग ॥ २१ ॥
 सातघीप समुंदर देखीया, इतलोइज जांण्यों संसार ।
 असख घीप समुंदर सुण्या जब, संका पडी तिणवार ॥ २२ ॥
 संका पड्यां इतरोइ देखें नही, जब आयो वीर नें पास ।
 वीर वचन सुणे हीये सरघीया, जब समकत्त पांमीयो तास ॥ २३ ॥
 वीर वचन सुण्या मिथ्याती थकां, तो पांमीयो समकत्त सार ।
 तिणरो सुणवारों प्राकम सुघ छे, तिणमें सका नही लिगार ॥ २४ ॥



रत्न : १०

एकल री चौपई

ढाल : १

दुहा

आरंभ जीवी ग्रहस्थी, फिरे त्यांरी नेश्राय ।
अणतीर्थी पासथादिक, ते पिण तेहवा थाय ॥ १ ॥
केइ वेरागे घर छोड ने, राचें विषे रस रंग
राग घेख व्याकुल थकां, करे व्रत नो भंग ॥ २ ॥
रित पांमें पाप कर्म मे, सावद्य सरणो मान,
गण छोडी हुवें एकला, कुड कपट री खान ॥ ३ ॥
न्यात लजावे पाछली, वले भेख लजावण हार ।
एहवा मानव फिरें एकला, धिग त्यारो जमवार ॥ ४ ॥
घणां में रहे सके नही, ते एकलडा थाय ।
कुण कुण दोख तिणमें कहा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[समरु' मन हरखे तेह सती]

आप छांदे फिरे जे एकला, ते जिण मारग में नही भला ।
साघ श्रावक धर्म थकी टलीया, ससार समुद्र में कलिया ॥ १ ॥
एकल्ये देख ने लोक पूछा करें, घणो क्रोध करी तिण सूं रे लडे ।
कोइ वादे नही तब मान वहे, करला वचन तिणने रे कहे ॥ २ ॥
कपटाइ घणी छे एकल तणी, सूतर माहे भाखी त्रिभुवन घणी ।
वले लोभ घणो छे वोहल पणे, श्री वीर कह्यो छे एकलतणे ॥ ३ ॥
बहु आरंभ ने विषे रक्त घणो, संचो करें बजर पाप तणों ।
नट नी परे अर्थी भोग तणो, बहु भेख घरे माहे गिघपणो ॥ ४ ॥
घणे प्रकारे करे धुरतपणो, संके नही करतो कर्म रिणो ।
अवसाय मन रा अतही घणा, माठा वर्ते छें एकल तणा ॥ ५ ॥
बहु^१ कोहे माणे^२ माया^३ लोभ^४ पणो, रते^५ नडे^६ सडे^७ संकप घणों ।
ए आठ आगुण घट मे वर्ती, हिंसादिक आश्रवना अर्थी ॥ ६ ॥
वले साधु नो लिंग लीयां रहे, कर्म आछावो एम कहे ।
हूं सुध चारितीयो आचारी, सतरे भेदे संजमघारी ॥ ७ ॥
रखे कोइ देखे अकार्य करतो, आजीवका अर्थी रहे डरतो ।
अग्यान परमाद दोख भस्वों, निरंतर मूढ मोह्यों कुपथ पस्वों ॥ ८ ॥

जिणधर्म न जाणें अपच्छांदें रह्या, त्यानें कर्म बांधण नें पिडत कह्या ।
 पाप करण सूं अलगा रे नही, तिणनें संसार में भमण कही ॥ ९ ॥
 आचारंग पांचमें अधेनें आख्यो, पेंहले उदेसें जिण भाख्यो ।
 ए चिरत कह्या छे एकल तणा, इण अनुसारें अतहि घणा ॥ १० ॥
 एहवा अपच्छंदा अवनीत, त्यां छोडी घर्म तणी रीत ।
 निरलजा भागल विपरीत, किम आवें तिणरी परतीत ॥ ११ ॥
 उस्नादिक पाचूं रे तणी, संगत वर्जी छे त्रिभुवन घणी ।
 ए मोख मारग ना छे फदा, एहवा छें जेंन तणा जिदा ॥ १२ ॥
 त्या छोडी लोकीक तणी लजीया, सकों नहीं आणें करता कजीया ।
 दोखण काढ्यां तो तपता रहे, ते आया परिसा केम सहें ॥ १३ ॥



बाल २

दुहा

ठाणाअंग मांहे कह्यो, एकल रो ववहार ।
 आठ गुणा सहीत छे, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
 सरघा में सेंठो घणो^१, न सके देव डिगाय ।
 सतवादी^२ प्रज्ञासूर^३ छे, बौले नही अन्याय ॥ २ ॥
 सूतर ग्रहवा सक्त घणी, मरजादा वंत वखाण ।
 बहुश्रुती^४ नवत्रा पूर्व तणी, तीजी आचार वथू नो जाण ॥ ३ ॥
 पांचमें पाचू समरथा^५, तप सूतर एकलपणो जाण ।
 सत्व करी सेंठो घणों, वले समरथ सरीर वखाण ॥ ४ ॥
 कलहकारी^६ छठें नही, सातमे धीरज^७ ताहि ।
 अनुकूल प्रतिकूल उपसग्र सहे, आठमें वीरज^८ अच्छाहि ॥ ५ ॥
 ए आठों गुणां सहीत छें, तो करणो उग्र विहार ।
 तो पिण गुर आग्या दीयां, फिरें एकलमल अणगार ॥ ६ ॥
 ए आठ गुणां विण एकला फिरे, ते अवक्त मूढ अयाण ।
 वले आचारंग में निखेचीयो, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

बाल

[पाखड बधसी आरे पाच में]

एकल ने मुनी रो भाव नखेचीयो रे, अवक्त ने कह्यो छें घणो विगाड रे ।
 दुष्ट पराक्रम नो थानक तेहने रे, दुष्ट कह्यो तिनरो विहार रे ।
 अवक्त ने नखेध्यो रहणो एकलो रे ॥ १ ॥
 धुर सूं तो लोपी अरिहत आगना रे, एक तो आहीज मोटी खोड रे ।
 वले नांम धरावे एकल साध रो रे, ए तो छे जिण सासण मे चोर रे ॥ २ ॥
 सूतर अवक्त वय अवक्त पणे रे, तिणरी चोभंगी चित्त में धार रे ।
 यां दोनू बोला माहे काचो नही रे, तो नचित रहो एकल अणगार रे ॥ ३ ॥
 कोद गण मांहे रहतां पडीयो चूक मे रे, तिणने गुर हित सूं दीवी सीख रे ।
 अवक्त क्रोध तणे वस आय ने रे, वचन न बोलें गुर ने ठीक रे ॥ ४ ॥
 कहे सगला साध तो इमहीज चालता रे, त्यांने सीखांमण न दीए कांय रे ।
 हू घणा माहे तो रहे सकूं नही रे, ओघट घाट घणी मन मांय रे ॥ ५ ॥

अभिमानि आपणपो मोटो मानतो रे, प्रबल मोह मांहेँ मुरझाय रे।
 कार्य अकार्य सुघ सूझेँ नहीं रे, ववेक विकल ते एकल थाय रे॥६॥
 गांमानुमांम विचरतां तेहनेँ रे, घणी आवावा उपजेँ आय रे।
 आवावा एकल नेँ खमतां दोहिली रे, खमवा रो जांणेँ नहीं उपाय रे॥७॥
 वीर कह्योँ म्हांरा उपदेस थी रे, तोनेँ सीप एकल्पणो म होय रे।
 ए तो सरवा तीर्थंकर देव री रे, गण मत्त छोडो सूतर जोय रे॥८॥
 आचारंग पांचमां अवेन में रे, चोयेँ उद्देसेँ छेँ ए भाव रे।
 उपसग्र थी आवावा उपजेँ तेहनेँ रे, विसतार कहूँ छूँ तिगरो न्याव रे॥९॥



ढाल : ३

दुहा

सास खास ताव तेज रो, रोग उपजें अनेक विध आय ।
 बले गरढापौ आयां थकां, विवध पणें दुख पाय ॥ १ ॥
 बले परिणाम चल विचल हूआं, किण री हटक न कांय ।
 ज्यां एकलपणों आदखों, त्यांने परभव चिंतन कांय ॥ २ ॥
 जो सावां री संगत करे, तो बघें घणों बेराग ।
 आप छ्दि एकला फिखां, जाए संजम थी भाग ॥ ३ ॥
 भागण रा उपाय छे अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
 पिण कह् थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[सत्य कोड़ मत राखजो]

ताव चढे कदा आकरो, वाचा रुके बोल्यो न जायो रे ।
 तिरखा अतुल वाय भिडकीयां, कुण सखाइ थायो रे ।
 विग विग अवक्त एकलो* ॥ १ ॥
 कर्म जोगे कुत्तो डसे, तो ठरलें मात्र किम जावे रे ।
 डांवरु जांन्हौ वालादिक हुवां, आहार पांणी कुण ल्यावें रे ॥ वि० २ ॥
 जब केइ कायर सीदावता, आप छ्दिं करें मन जांण्यो रे ।
 भूख त्रिषा ना पीळीया, खाये ग्रहस्थ नो आंण्यो रे ॥ ३ ॥
 केइ आरत ध्यान माहे मरे, नरक तिरजंघ मे जायो रे ।
 उतकष्टो अनंता भव भमें, चिहं गति गोता खायो रे ॥ ४ ॥
 अखी आय बकारीयां, तो लग जाए तिण चाले रे ।
 विटल हुवा होसी घणा, किणरी लज्जा सील पाले रे ॥ ५ ॥
 विखे अतत पीळ्या थकां, वेस्यादिक नें घरे जायो रे ।
 माठी भावना भावीया, कुण आणें तिणने ठायो रे ॥ ६ ॥
 अकार्य करतो संकें नही, थोडा सुखां नें काजे रे ।
 वात चावी हुवां लोक में, कने वेसणवाला-पिण लाजे रे ॥ ७ ॥
 यूं जाणे नर नारीयां, एकल दूर ताजीजे रे ।
 घरे हांण हांसो हुवे लोक मे, इसरो कांम न कीजें रे ॥ ८ ॥

*मह आंकड़ी प्रत्येक पाथा के अन्त में है ।

क्या सूं प्रकत पाछी वलें नही, किण सूं न मिलें सभावो रे ।
 दुख वेदी हुवें एकला, केइ करे घणो अन्यावो रे ॥ ६ ॥
 क्यां सूं पोते आचार पलें नही, वले कूड कपट रो चालो रे ।
 गण छोडी हुवें एकला, ओरां रें सिर दे आलो रे ॥ १० ॥
 क्यां सूं पोते आचार पले नही, पिण समकत राखें चोखो रे ।
 गण छोडी हुवे एकला, नही काढे ओरां में दोखों रे ॥ ११ ॥
 पछे मोह कर्म उदें हुवां, कुड कपट चलावे रे ।
 फिरती भाषा बोलें घणी, अणहंता आगुण गावें रे ॥ १२ ॥
 गावां नगरा विचरतां, लोक पूछें हर कोइ रे ।
 थे साधा मांसूं नीकले, आतम कांय विगोइ रे ॥ १३ ॥
 जब केयक बोलें पाधरा, केइ बोलें आलपंपाली रे ।
 केइ क्रोध करें केइ परजले, केइ मूह करें विकरालो रे ॥ १४ ॥
 केइ दोखण ढाके आपणा, ओरां में वतावें चूर्को रे ।
 पूछ्यां न बोले पाधरो, पूजा सलगा रो भूखों रे ॥ १५ ॥
 कोइ लालालो करे, आहारदिकनां लपटी रे ।
 पूरो निकालो काढे नही, अँसा एकल कपटी रे ॥ १६ ॥
 आए साधां नें वंदणा करे, माहें माछ परिणामी रे ।
 विनो नरमाइ करें घणी, ए पेट भरण रो कामो रे ॥ १७ ॥
 समभू नर नार वादे नही रे, आगना लोप एकल देखी रे ।
 आहार पांणी न दे भाव भगत सूं, तो हुवें साधां रो धेखी रे ॥ १८ ॥
 छल छिद्र जोवतों रहें, दुष्ट परिणामां दिन काढे रे ।
 च्यार तीरथ सूं तपतो रहे, मोख तणी विरत वाढे रे ॥ १९ ॥
 दगध बीज करें आप रो, वले घाले ओरां रे संका रे ।
 भर्म में पाडे लोक नें, अँसा छे एकल बंका रे ॥ २० ॥
 चित भरम्यों फिरतो रहें, तिणनें साची सरधा नावे रे ।
 कदाच जो आइ हुवें, तो थोडा माहे गमावें रे ॥ २१ ॥
 मागे न खाणो पार को, वले कने साधां रो भेखी रे ।
 सरधा राखे निरमली, केयक विरला देखो रे ॥ २२ ॥
 च्यार तीरथ नें ओर लोक में, फिट फिट सगले कहिवाणो रे ।
 जो अवगुण जाणें आप में, साची सरधा रो एह अहङ्गणो रे ॥ २३ ॥
 वले अवगुण काढें गुर तेहनां, तो ही कुलष भाव नही आणे रे ।
 अभितर समकत परगामी, ते तो मोटां उपगारी जाणे रे ॥ २४ ॥

बोध समकत पायो त्या कनें, त्या दीळं हरपत थायो रे ।
विनीं भगत करे घणीं, साची सरघा दीसे तिण माह्यो रे ॥ २५ ॥
साध साधवी ने सरधा तणा, पूठ पाछे गुण गावे रे ।
एकण घारा बोलतां, परतीत इण विघ [आवे रे ॥ २६ ॥



ढाल : ४

ढुहा

भला कुल री विगरी तका, जोवे विरांणा साध ।
 ज्यूं साध विगस्त्रों आचार थी, ते किण विघ आवें हाथ ॥ १ ॥
 आग्या लोपें सतगुर तणी, तिणनें ओपम छें गलीयार ।
 आप छांदें एकलो भमें, ज्यूं ढोर फिरें रलीयार ॥ २ ॥
 विगस्त्रां धान री पाखती, वेठां दुदुरगंध आय ।
 ज्यूं एकल री संगत कीयां, वुववंत अकल पत जाय ॥ ३ ॥
 जो एकल नें आदर दीए, तो वधें मिथ्यात ।
 फूट परें जिण धर्म में, ते सुणजी विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल :

[भव जीवा तुम जिण धर्म ओलखो]

जिण सासण में आग्या वडी, आ तों वांची रे श्री भगवंत पाल ।
 अें तो सजन असजन भेला रहे, छांदि चालें रे प्रभु वचन संभाल ।
 वुववंता एकल संगत न कीजिए* ॥ १ ॥
 छांदो रूंध्यां विण संजम नीपजे, तो कुण चाले रे परनी आग्या मांय ।
 सह आप मतें हुवें एकला, खिण भेला रें खिण वीखर जांय ॥ वु० २ ॥
 आप मतें एकला हुवां, तो सासण में रे पर जाए घमडोल ।
 एहवा अपछंदा री करें थापना, ते पिण भूला रे भेद न पायो रही भोल ॥ ३ ॥
 ढेंराग घटें तिणरी पाखती, कें उण संगत रे आवें मूल मिथ्यात ।
 कें साध सूं उतर जाय आसता, साची सरध्यां रे एकल तणी वात ॥ ४ ॥
 अें तो भिडकावे साधां रा समदाय थी, आपस में रे वोलें विरुवा वेंण ।
 चले छिद्र घरावें एक एक नें, साध दीठां रें वलें अंतर नेंण ॥ ५ ॥
 नकटादिक चोर कुसीलीया, वधी चावें रे आप आपणी न्यात ।
 ज्यूं भागल ने भागल मिल्यां, घणों हरपे रे करें मनोगत वात ॥ ६ ॥
 चोरी जारी आदि खून अकरज कीयां, राजा पकडे रे करें छुनी छेद खोड ।
 चले देस नीकालो दें काडीयां, त्यानें राखे रे भील मेंणादिक चोर ॥ ७ ॥
 ते विगाड करे तिण देसनो, भीलमेंणा रे त्यानिं आंणी साथ ।
 दुख उपजावे रेंत गरीव नें, धन लेजावें रे करे करे तयारी घात ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गायक के अन्त में है ।

त्यांनं असणादिक आदर दीयां, लफरो लागे रे भांग्यां राजा तणी आंण ।
 कदा राय कोपे तो धन खोस लें, जीवां मारे रे तिणरा अें फल जांण ॥ ९ ॥
 इण दिष्टते साघां रा समदाय में, दोखण सेव्यां रे साघ काढे गण बार ।
 ते आप छ्वांदि एकला रहे, के भागल रे आगें पाछे फिरें लार ॥ १० ॥
 अे तो साघां रा ओगुण बोलता फिरे, मुख मीठा रे खेले अंतर घात ।
 ओछी वुधवाला नें विगोवता, कूडी कथणी रे कूडी कर कर वात ॥ ११ ॥
 त्यांरी भाव भगत संगत कीयां, तिण भागी रे भगवंत नीं आंण ।
 ते तो दुख पांमें इण ससार में, उतकथां रे अनंत जांमण मरण जांण ॥ १२ ॥
 चोर नें तो आहार आदर दीयां, इह लोके रे धन जीतव नों विणास ।
 भेष धारी ने भागल एकल तणी, संगत कीघां रे बंधे करम तणी रास ॥ १३ ॥
 उसनां कुसीलीया पासथा, अपछ्वांदा रे ससत्तादिक जांण ।
 त्यांने तीरथ मे गिणवा नहीं, ओ कर लीजो रे जिण वचन परमाण ॥ १४ ॥
 अें तो हेलवा निंदवा जोग छे, खिष्ट करवा रे तिणरी ग्याता में साख ।
 त्यांरो संग परचो करणो नहीं, सूतर मांहे रे भगवत गया भाख ॥ १५ ॥
 यां तो अनत ससार आरे कीयों, इह लोके रें परलोके हुसी भंड ।
 त्यांनं आहारपांणी उपध दीयां, तिणनें आवे रे चोमासी नों दंड ॥ १६ ॥
 भेला बेस सभाय करवी नहीं, नही करणो रे त्यांरे साथे वीहार ।
 यांरो संग परचो करतां थकां, ग्यांन दरसण रे व्धारित नों विगार ॥ १७ ॥

ढल : ॡ

दुहा

केइ भेषघलखलं रल टोलं थकी, लड भगड नलकलें वलर ।
ते आड छलंढें फलरें एकल, जूँ डोर फलरे लूललर ॥ १ ॥
तलणनें हीर हटक कलणरी नही, स इछलचलरी फलरे छे सदीव ।
वले डवल उदे तलणरे डोहणी, एहवल एकल भलरी करडल जीव ॥ २ ॥
ते नलं डरलवें सलव री, डलण डूंक दीवी डरजलद ।
वले वलड लीपी व्रह्म वरत री, करतुं फलरें डूढ उडलव ॥ ३ ॥
आठं गुणलं वलण एकलें, सलव नें रहलवलं नलंहल ।
श्री वीर जलणेर भलखीडु, डुवलें आगड रे डलंहल ॥ ॡ ॥
जे आड छलंढें फलरें एकल, श्री जलण वचन वलरलव ।
जलण लुक लजूडल डलण डरहरी, तलणनें डूरख सरखें सलव ॥ ॡ ॥

ढल

[वतुर वलचलर करी ने देखे]

वलवीस टोलं वलजे तुंलरी आ सरवल, सलघलं नें एकलु नहीं रहणु रे ।
हलवें तेहीज एकल ने सलव थलडें, तुंलरी वलकललइ री कलंइ कहणु रे ।
एकल भेषघलरी री संग न कीजे ॥ १ ॥
डु एकल ने वुडे सलव डरखें, तु ललणें लुकलं डलंहें डूडी रे ।
डु एकल नें गलणे वलवीस टोलं डें, तु सगल री सरवल वूडी रे ॥ २ ॥
तुंल वीर नलं वचन तु हेठ डेलुडल, तु एकल सूं डीत वलंघें रे ।
एकल ने कुडु सलव सरखे तलण, आगड उडलडुडल आंघे रे ॥ ३ ॥
कडलरुं नेव चवं कडलरी चवं नेवली, ते तु रहे एकल सूं डरतल रे ।
जलणें एकल डुंलरु उघलड करें ल, तलण सूं संकतल रहे ललजलं डरतल रे ॥ ॡ ॥
तुंलरल श्रलवक श्रलवकल वलंढें एकल ने, तुनल इतरु डलण कहणुं कलठु रे ।
थे एकल ने वलंढुं कलण लेखें, गुणें तीखुतु रल डलठु रे ॥ ॡ ॥
एकल तु जलण आगनल वलरें, तलणने वलंघलं तु नहीं छे डरडुं रे ।
थे सीस नडलड एकल नें वलंढें, कलंड वलंघुं चीकणल करडु रे ॥ ॢ ॥
इतरु कहेंनें एकल री वंदणल छुडलवे, तु एकल घणु डुख डलवं रे ।
जव एकल डलण डलंरल खुडल खुडल कलरतव, वुडे लुकलं डें वतलवं रे ॥ ॣ ॥

केइ इण कारण डरता थकां भेषधारी, राखें एकल सूं मिलापो रे।
 वले उलटी खुसामदी करें एकल री, न करे एकल री उथापो रे ॥ ८ ॥
 केइ तो भेषघाख्या रे ओहीज कारण, ते एकल ने उथापे केमो रे।
 वले वीजों कारण भेषघाख्यां रे, ते सांभलजो घर पेमो रे ॥ ९ ॥
 एकला रा श्रावक भेषघाख्यां ने, साध सरखे वादे पूजे रे।
 वले आहार पांणी भावभगत सू देवें, तिणसूं एकल रा अवगुण न सूं रे ॥ १० ॥
 वले एकल रा श्रावक श्रावका पासे,, एकल रा गुण गावें रे।
 तेतों पेटभरा इहलोक रा अरयी, एकला ने साध सरखावें रे ॥ ११ ॥
 मन माहें तों आछों न जाणे एकल ने, पिण मुख सूं खोटो कहणी नावे रे।
 पिण निज मुतलब रे काजें भेषधारी, एकल ने नही रीसावे रे ॥ १२ ॥
 अे तों कूड कपट कर काम चलावे, त्याने पूछ्या करे गालागोलो रे।
 यासूं एकल ने असाध चोडे कहणी नावे, यारे पिण ताबा उपर भोलो रे ॥ १३ ॥
 कठेक तो एकल ने साध कहे छे, कठें कहे एकल ने असाधो रे।
 यारें काम पडे जेहवी भाषा बोलें, त्याने किम कहिजे वीर नां साधो रे ॥ १४ ॥
 जो एकल भेषघाख्यां रे काम न आवे, तो तुरत दे तिणनें उडायो रे।
 खोटो सरघाय ने वंदणा छोडावें, घाले असाध तणी पात मायो रे ॥ १५ ॥
 जिण एकल मे पाणी मरे विवध परकारे, ते तो ओरा ने केम उथापे रे।
 भागल एकल नें भेषधारी, त्या सगला ने साध थापें रे ॥ १६ ॥
 ते एकल भेषघाख्या सूं मिलतो चालें, वले करें त्यांसूं नरमाड रे।
 आप रा किरतव आपने सूंके, मन छानी चोरी नही काइ रे ॥ १७ ॥
 एहवो एकल भागल भेषघाख्या सूं, डरतो रहे दिन रातो रे।
 वले भूठ बोलें त्यारा अवगुण ढाके, त्यांरी कूडी करे पखपातो रे ॥ १८ ॥
 इमहीज भेषधारी भागल एकल सू, डरता रहे दिन रातो रे।
 ते पिण भूठ बोली दोष ढाके एकल रा, वले कूडी करे पखपातो रे ॥ १९ ॥
 एकल पिण भेषघाख्या रो न करें उघाड, अे पिण न करें एकल रो उघाडो रे।
 गालागोलो कनें ठग खावें लोकाने, धिग्रधिग्र त्यारो जमवारो रे ॥ २० ॥
 काम पड्या एकल सूं करे आहार पाणी, काम पड्यां उतर जावें भेला रे।
 काम पड्या देवो लेवो करें एकल सू, काम पड्या वादें किण वेला रे ॥ २१ ॥
 काम परजाए तो भेषधारी एकल सू, करे बारेंड संभोगो रे।
 एकल पिण भेषघाख्या सूं करें संभोग, ते मेल दें सर्व सजोगो रे ॥ २२ ॥
 कदेक तो एकल सूं करें संभोग, कदेक न करे एकल सूं सभोगो रे।
 एकल सू संभोग करे छे त्यांरा, वरत छें माठ जोगो रे ॥ २३ ॥
 ३६

कदेक तो एकल मूं होय जाएं जूडा, कदेक होय जाएं भेअ रे ।
 ए सावां रा भेप में प्रतख देवो, जाणें नाचें कुवडी खेला रे ॥ २४ ॥
 गवा रा कंठ नें उंट वखाणें, उंट रों रूप गवा वखाणें रे ।
 ए तो दोनूं जणां मांहोमां हिल्लमिलीया, ते तो परमारथ नही पिछाणें रे ॥ २५ ॥
 ज्यूं भेपवाखां नें एकल सरावें, एकल नें भेपवारी सरावें रे ।
 ए पिण मांहोमां हिल्लमिल एक हूवा, टाटा लोकां नें खावें रे ॥ २६ ॥
 चोर मांहोमां मिल्लें चोरी करें नें, पर धन कुसले ल्यावे रे ।
 ज्यूं एकल नें भेपवारी मिल चालें, तो मोलां नें टा टा खावें रे ॥ २७ ॥
 जो चोरां रे मांहोमां फाट पडें तो, पर धन हाय न आवें रे ।
 ज्यूं यारे पिण मांहोमां रे फाट पडें तो, यां आगें पिण कुग टावें रे ॥ २८ ॥
 एकल नें भेपवारी भेला मिल चालें, ओं प्रतख देवो पोलणो रे ।
 ए ठप-ठप नें माल खावें लोकां रो, त्यांरी वृववंत कगें पिछाणो रे ॥ २९ ॥
 भेपवाखां रा थावक नें एकल ग थावक, त्यांरा घट मांहें घोर अंवागो रे ।
 ते साव अमाध रा गुण नहीं जाणें, नहीं जाणें सावां रो धाचारी रे ॥ ३० ॥
 ते एकल नें पिण साव सरावें, यारें आ पिण मुख वुव नांहि रे ।
 समझाया पिण समकें नही भोला, परीया एकल रा फंद मांहि रे ॥ ३१ ॥
 भेपवाखां रा थावका त्यांरी, मुखवृध जावक त्रिगडी रे ।
 ते एकल नें बादिं तीखुतीं करनें, मय्यक पगां रे रगडी रे ॥ ३२ ॥
 केइ एकल नें भेपवाखां ग थावक, ते पिण एकल रा दोप हाकें रे ।
 मुख सावां रे आल देतां अग्यांनी, भारी करमा मूल न साकें रे ॥ ३३ ॥
 सावां रे आल दें एकल ग दोप हाके, ने तों दोनूं परकारें वूडा रे ।
 ते तों नरक निगोद ग वीढ वण्यां छें, चिहंगति माहें दीस सी भूडा रे ॥ ३४ ॥
 त्यांरा गुर में हुंता दोप वतावें, तो लडवा नें छें तयांगे रे ।
 निकाल काडण री तो बात न कांड, उलटां करें कजीया ने राडो रे ॥ ३५ ॥
 त्यांनं परभव गी चिन्ता नही कांड, त्यांग मत्त मांहि गाडा वूलीया रे ।
 त्यांरे न्याय निरणो तो मूल न दीमें, जेंसा हुंता जिसा गुर मिलीया रे ॥ ३६ ॥

ढाल : ६

दुहा

केइ भेषवारी एकला फिरे, --अवक्त मूढ अयांग ।
वदेक विकल सुधवुम विनां, जिण मारग रा अजाण ॥ १ ॥
सगला एकल नही सरिखा, सगलां री सरधा नहीं एक ।
चलगत पिण त्यारी जूजूइ, त्यारा चाला चिरत अनेक ॥ २ ॥
केइ एकल छे भोलीया, केइ विकल छे ताम ।
केइ एकल छे पेटारथी, केकांरा छे दुष्ट परिणांम ॥ ३ ॥
केइ एकल छें घूरत अति घणा, कूड कपट री खान ।
केइ एकल छे कुसीलीया, त्यांरो एकत विषे सूं ध्यांन ॥ ४ ॥
केइ एकल तपसा करें, लोकां नें ठिगण रे कांम ।
ते छानो खावे तपसा मभे, ते तो थोथा करे छे हगाम ॥ ५ ॥
केइ एकल दुष्ट छे अति घणा, निज दोषण देवे डांक ।
मोटा मोटां अकार्य पोते करे, देवे ओरां सिर न्हांख ॥ ६ ॥
एकल माहे तो अवगुण घणां, ते पूरा कह्या न जाय ।
थोडा सा परगट कहं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केइ एकल कुपातर कुसीलीया छे, ते तो बुगल ध्यांनी वणजायो रे ।
तिणरे ठांम ठांम बायां सू परचो, ते करता फिरें विषे रो उपायो रे ।
एकल भेषवारी रो सग न कीजे ॥ १ ॥
बुगला रो ध्यांन तो मछल्या उपर, ज्युं एकल रे विषे सूं ध्यांनो रे ।
तिणने भोला लोक तो सावु जाणे छे, पिण पिडत सूं नही छे छानो रे ॥ २ ॥
एहवा एकल उतरे खूणें खचूणे, ते जायगा छे अपतीतकारी रे ।
तिण ठामें रात री अखी रहे तो, लोकां ने न पडे ठीक लिगारी रे ॥ ३ ॥
बले रात रो आडो जडे सूअे एकल, जब कुण जाणे अखी छे मांहीं रे ।
इण वात रो कुण करें गवेसो, गवेसो कीया मिले त्याने कांइ रे ॥ ४ ॥
घणा साध रहे कदा एहवें ठिकाणे, तो अखी नो जोर न लागें रे ।
जो एकल एहवे ठिकाणें रहें तो, ब्रह्मव्रत तिणरो भागे रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दिन एकल रा परिणाम नहीं छे जिनाये, ते उतरें एहदी जायगं रे।
 जे उतरें अश्रुतीतकारी जिनाये, ते तां वरत बिहना नाग रे ॥ ६१ ॥
 दिन एकल रें सील पाकगों नहीं, ते तां अजोग जिनायों जेवें रे।
 दिन ठमैं नितक सुं करे अकारज, एकल आत्म विरोधें रे ॥ ७ ॥
 हुमें लक्ष्मणें उतरें ते जिनाये, धनी अस्त्रियां तिन तिन ठमैं आवें रे।
 लानें हासा कहुहक री वातां सुपाय, धनी अस्त्रां नें मोह उपजवें रे ॥ ८ ॥
 लानें मोली बायां केयक इन दोलें, जानां नें जोपरी नहीं जायें रे।
 लानेजी रों जानां सुं मोह धनो छे, ते एकल रा चाला चारितन निछायें रे ॥ ९ ॥
 लानें केयक अश्री कुनातर हूवें ते, एकल सुं सिद्ध लगवें रे।
 दिनरी निजर चेला देख नें एकल, तिननें विधेँ चहीत बतलावें रे ॥ १० ॥
 दिनरी लाज सरम छोडाय नें एकल, अकारज करतों जायें संजो रे।
 नया कुल री नें सिद्ध करतों नहीं सके, केइ एहवा छेँ एकल वंका रे ॥ ११ ॥
 पांन पांन विचरें सिहां एकल, ठामं ठामं ओहीन चालो रे।
 एकल अकारज करेँ छेँ तिनरो, कुप काडें नीकालो रे ॥ १२ ॥
 टोलावर नेपथारी नेला रहें छेँ, ते तां साध बाजे भली भांतो रे।
 त्यां माहें निप कोइ कपडाविक देइ, विधेँ सेवी पूरें मन खांतो रे ॥ १३ ॥
 टोलां माहिलों विधेँ सेवें इय रीतें, तो एकल रो कांई कह्यो रे।
 धनां नेलां रहें ते तां संकोच पायें, तो एकल नें तो एकलो रह्यो रे ॥ १४ ॥
 धनां नेलां रहें ते तां अकारज करतों, राखें ओरां री संजो रे।
 एकल नेपथारी अकारज करेँ ते, निडर धको नितकनो रे ॥ १५ ॥
 टोलां माहिलों कपडो दे करेँ अकारज, तिननें पूछें कोइ टोला बालो रे।
 थारे कपडों हुंतो कियनें दोषों, इन पूछी नें काडें नीकालो रे ॥ १६ ॥
 एकल कपडाविक देइ करेँ अकारज, तिननें कुग पूछें काडें नीकालो रे।
 तिनसुं एकल नें डर कियरो न दीसैं, ते विधेँ रो किम करली टालो रे ॥ १७ ॥
 टोलां माहिलो नेडेरो आवें जिनायें, तिननें पूछें तूं हुंतो कठें रे।
 जो एकल नोडों आवें तो कुग पूछें, तिनसुं ओं फिरें छेँ मनमानें लठे रे ॥ १८ ॥
 हुटंभवाली अश्री रा परिणाम चालीया, तो सरमा सरनी विपन करेँ अजानो रे।
 जो आगें पाछें तियरे कोइ न हुबें, तो छोड दें सरम नें लाशो रे ॥ १९ ॥
 ज्यूं एकल रें आगें पाछें कोइ न वीसैं, तियरे किगरी न दीसैं लाजो रे।
 दिन एकल रा परिणाम कल जाअें, तो सके नहीं करतों अजानो रे ॥ २० ॥
 एकल तो गुर नें गुर भायां सुं न्यारा, बले संभोगी विप तियरे माहीं रे।
 तिनसु ओर नीकाल काडें क्यारे तांड, यानें दोष न लागे कांइ रे ॥ २१ ॥

ते उतरें एहदी जायगं रे।
 ते तां वरत बिहना नाग रे ॥ ६१ ॥
 ते तां अजोग जिनायों जेवें रे।
 एकल आत्म विरोधें रे ॥ ७ ॥
 धनी अस्त्रियां तिन तिन ठमैं आवें रे।
 धनी अस्त्रां नें मोह उपजवें रे ॥ ८ ॥
 जानां नें जोपरी नहीं जायें रे।
 ते एकल रा चाला चारितन निछायें रे ॥ ९ ॥
 एकल सुं सिद्ध लगवें रे।
 तिननें विधेँ चहीत बतलावें रे ॥ १० ॥
 अकारज करतों जायें संजो रे।
 केइ एहवा छेँ एकल वंका रे ॥ ११ ॥
 ठामं ठामं ओहीन चालो रे।
 कुप काडें नीकालो रे ॥ १२ ॥
 ते तां साध बाजे भली भांतो रे।
 विधेँ सेवी पूरें मन खांतो रे ॥ १३ ॥
 तो एकल रो कांई कह्यो रे।
 तो एकल नें तो एकलो रह्यो रे ॥ १४ ॥
 राखें ओरां री संजो रे।
 निडर धको नितकनो रे ॥ १५ ॥
 तिननें पूछें कोइ टोला बालो रे।
 इन पूछी नें काडें नीकालो रे ॥ १६ ॥
 तिननें कुग पूछें काडें नीकालो रे।
 ते विधेँ रो किम करली टालो रे ॥ १७ ॥
 तिननें पूछें तूं हुंतो कठें रे।
 तिनसुं ओं फिरें छेँ मनमानें लठे रे ॥ १८ ॥
 तो सरमा सरनी विपन करेँ अजानो रे।
 तो छोड दें सरम नें लाशो रे ॥ १९ ॥
 तियरे किगरी न दीसैं लाजो रे।
 तो सके नहीं करतों अजानो रे ॥ २० ॥
 बले संभोगी विप तियरे माहीं रे।
 यानें दोष न लागे कांइ रे ॥ २१ ॥

जो घणां भेला हुवे तो कोइ काढें नीकालो, सारां ने दोष लागतों जांणी रे ।
 तिण एकल री चिता नही किणनं, तिणरो निकाल काढे कुण तांणी रे ॥ २२ ॥
 केइ करमां रे जोगे फिरे एकला, दोष सेवें छें विवध परकारो रे ।
 पिण लोक लज्या सूं सील पालें छे, ते तो उत्तरें प्रभु बाजारो रे ॥ २३ ॥
 ते खूणें खचूणें उतरतों सके, रखें आवे अण हूतो आलो रे ।
 तो एकल नें कुण साचो जाणे, कुण काढे एकल रो नीकालो रे ॥ २४ ॥
 यूं जाणें नें केयक एकल भेषधारी, नही उतरे अप्रतीत काखें ठांमो रे ।
 ओर ओगुण तो अनेक छे तिणमें, पिण कुसील रा नहीं परिणामो रे ॥ २५ ॥
 वले सेसतों परचो न करे बायां सूं, वले न करे आलाप सलापो रे ।
 केइ तो एकल एहवा फिरे छे, तिणरे कुसील री नही थापो रे ॥ २६ ॥
 एकल होय नें करे बायां सूं परचो, तिण तो हाथां सूं वात विगाळी रे ।
 तिणरा उवाडा अहलांण दीसैं भागल रा, तिण ने कुण कहसी ब्रह्मचारी रे ॥ २७ ॥
 आजूणा काल मे पांचमें आरे, केइ अवक्त रहे एकलो रे ।
 ते तों निश्चेइ छे च्यार तीरथ वारे, एहवो एकल कदेय न मलो रे ॥ २८ ॥
 इण विघ फिरे एकल भेषधारी, तिणमें साध तणी नही रीतो रे ।
 तिणरी तपसा ने आचारसील वरतरी, किम आवे परतीतो रे ॥ २९ ॥
 ए तों एकल कुभातर कुसीलीया रे, कह्या उतरवा रा ठांमो रे ।
 हिंदे फिरवा रा चिरत कहूं छूं एकल रा, ते सामलजो सुघ परिणामो रे ॥ ३० ॥
 केइ एकल घर घर फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरे हलीयारो रे ।
 ते विषे रों बाहों फिरें एकलो, तिणरो वुघवंत करजो विचारो रे ॥ ३१ ॥
 केइ एकलो पातरो घाले पडला में, फिरें छे घर घर बारो रे ।
 ते तो विषे विकार रो पीडीयो एकल, करतों फिरे बायां रों दीदारो रे ॥ ३२ ॥
 बायां ने दरसण देवा रो नांम लेवे छे, ते पिण भूठ बोले छें तांमो रे ।
 बायां ने देखण री चावना पोतें, तिणसूं घर घर फिरें इण कांमो रे ॥ ३३ ॥
 जो बायां रे चावना दरसण री छे, तों बायां आय दरसण करसी रे ।
 जो एकल रे चावना बायां देखण री, तो एकल घर घर फिरसी रे ॥ ३४ ॥
 तिण एकल नें केयक इम पूछे, थे क्यूं फिरो घर घर आंमो रे ।
 थे आहार पांणी बेहरता न दीसो, ओर थारे कांइ कांमो रे ॥ ३५ ॥
 जब एकल कहें वाया ने दरसण देवा, घर घर फिलं जाणें उपगारो रे ।
 ओर तो मांहरे कांम न कोइ, इम कहिने उतर जाअें पारो रे ॥ ३६ ॥
 निरलज घर घर फिरें एकलो, बायां ने दरसण देतो रे ।
 आ चलगति खोटी प्रतख दीसे, ए अजोग एकल रो पेंतो रे ॥ ३७ ॥

बायां नें दरसण देवा घर घर फिरणो,
 आ तों रीत काडी छें एकल भागल,
 कोइ गरडी गिलांण छें तपसण बाइ,
 इत्यादिक कोइ उपगार जाणें तो,
 घर घर फिरें बायां ने दरसण देवा,
 दरसण देवा नें फिरें घर घर एकलो,
 दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो,
 अकाल वेला में फिरे घर घर एकलो,
 एकल घणां घरां फिरें खोज भांगण नें,
 विवध पणें चाला चारित करें नें,
 जो उणहीज घर जाअें दरसण देवा,
 ओर बाया पिण मांहीमां माडें किचाकिच,
 जो एकल विकलां ने मूड करे चेला,
 आप तो एकलो परगांवां जाअें,
 एकल चेला नें राखें ठिकाणें,
 ते पिण जाअें बायां नें दरसण देवा,
 दरसण देवा बाया नें जाअें एकलो,
 पांच सात रात तिहां रहे एकलो,
 लखण तो उणरा ओ ही जाणें,
 छद्मस्थ तो बारलो ववहार देखी,
 एहवा धूरत केइ एकल भागल,
 तिण एकल नें कोइ साधु जाणें,
 एकल घर घर फिरे कुवेला,
 किण किण सूं करें अंग कुचेष्टा,
 छोटी डवरीयां रे माथे हाथ फेरे,
 जो तुरणी रा माथा उपर हाथ फेरे,
 जो उण लखणी कोइ बाइ हुवे तो,
 एकल सू हिलमिल करे अकारज,
 कोई जातवंत कुलवंत हुवे बाई,
 जाणें रखे मोने आल आवे अणहंतों,
 जब एकल कहे मोनें आल देवे छें,
 वले कहे एकल नें थे भूठ बोलो ला,

आ तों सुध साधारी नहीं रीतो रे ।
 ते तो उवाडी दीसें विपरीतो रे ॥ ३८ ॥
 कोइ करती जाणें पचखांणो रे ।
 कारण पडीया दरसण देवा जांणो रे ॥ ३९ ॥
 ते तो सूतर में नहीं पाठो रे ।
 तिणरो सील भाचार छें माठो रे ॥ ४० ॥
 ते पिण गोचरी री वेला टालो रे ।
 ओ प्रतख दाल में कालो रे ॥ ४१ ॥
 दरसण देवा रों ले ले ओटो रे ।
 करें निसाणें चोटो रे ॥ ४२ ॥
 तो पडजाअें हाथां सूं कूरो रे ।
 वले करें एकल रो फित्तुरो रे ॥ ४३ ॥
 त्यांनें तो म्हेलें तिण गामो रे ।
 बायां नें दरसण देवा कामो रे ॥ ४४ ॥
 एकलो जाअें परगांमो रे ।
 तिणरा कुण जाणें सुध परिणामो रे ॥ ४५ ॥
 चेलां राखें ठिकाणें रे ।
 तिणने ब्रह्मचारी कुण जाणें रे ॥ ४६ ॥
 कें केवल ग्यानी जाणें रे ।
 खोटो जाणें छें तिणनें अलाणें रे ॥ ४७ ॥
 त्यारी कुण करसी प्रतीतो रे ।
 ते भव भव में होसी फजीतो रे ॥ ४८ ॥
 किण सूं करें विषें री वातो रे ।
 किण किण रे फेरें मस्तक हाथो रे ॥ ४९ ॥
 ते तों मोह उपजावण कामो रे ।
 जब तो दीसें विषें रा परिणामो रे ॥ ५० ॥
 ते तो वात न काडें बारें रे ।
 उ विगख्यो ओरां नें विगाडें रे ॥ ५१ ॥
 ते तो कर दें एकल रों उवाडी रे ।
 तिण सूं आ तो कहिनें हुवे न्यारी रे ॥ ५२ ॥
 जब आ पाडे एकल ने कूडो रे ।
 तो इधको होसी वले फित्तुरो रे ॥ ५३ ॥

ए वात सुणें एकल रा श्रावक श्रावका, तो उलटा मांडे तिणसूं कजीया रे ।
 वले बंदी करे दरवारां तांइ, त्यां छोळी लोकीक री लोजीया रे ॥ ५४ ॥
 तिणने भेला होय दबकावे अग्यांनी, वेदे अणहंता दाबा रे ।
 म्हारां गुरां नें तूं आल देवें छे, वले करें लोकां में हाबा रे ॥ ५५ ॥
 तिणनें अनेक परकारे करी ते डरावे, तिणरो कर कर लोकां में फितूरो रे ।
 त्यारे निरणो काढण री तो बात न कांइ, खपे छें बोलावण कूडो रे ॥ ५६ ॥
 जाणें इण आगा सू भूठ बोलाए, उतारा गुरां रो आलो रे ।
 पिण इसरी तो विकलां रे मन में आवें, आपां काढां इणरो नीकालो रे ॥ ५७ ॥
 तिणमें कोयक वाइ काची हुवे ते, डरती थकी भूठ बोले रे ।
 जब विकल जाणें गुर रो आल उतरीयो, पिण अर्भितर री आंख न खोले रे ॥ ५८ ॥
 जो केयक वाइ गाढी हुवे हीया री, वले साची हुवे साहस पूरो रे ।
 तिणनें एकल रा श्रावक श्रावका पूछे, तो डरती न बोले कूडो रे ॥ ५९ ॥
 तिणसू घेघ घरें पिण निकाल न काढे, यारे दोष ढांकण री रीतो रे ।
 एहवा मत ग्राही मानव मत माहे घुलीया, त्यारे न्याय तणी नही नीतो रे ॥ ६० ॥
 अ तों दोष जाणें तोही दावे राखें, जाणें लागे लोकां माहें भूडी रे ।
 वले षड जाखेला म्हारां मत में विखेरो, तो जावक जायला वात बूडी रे ॥ ६१ ॥
 इम जाणें ने एकल रा दोष ढाके, नही काढें तिणरों नीकालो रे ।
 एकल रे बदले भूठ बोली ने, आतमा नें लगवे कालो रे ॥ ६२ ॥
 वले एकल घर घर फिरें तो अग्यांनी, साता पूछे वायां री रे ।
 त्यारे सुखीअे सुखी त्यारे दुखीअे दुखी हुवें, वरग वहे छें आछा खांया री रे ॥ ६३ ॥
 साता पूछे बाया सू माया मोह बांधे, त्यांसूं कर कर गमती वातां रे ।
 जे विकल वायां तिणनें गुर जाणे, ते करे एकल री पखपातां रे ॥ ६४ ॥
 जो गृहस्थ री साता साध पूछे तो, ते तों साध निश्चे अणाचारी रे ।
 तिण अणाचारी ने गुर जाण वांदे, ते गया जमारो हारी रे ॥ ६५ ॥
 कोइ गृहस्थ बाइ भाइ मांदो हुवे तो, त्यांरी फिर फिर पूछे समाधो रे ।
 एहवो विकल एकल भेषवारी, ते तों निमाइ निश्चें असाधो रे ॥ ६६ ॥
 ए तों एकल रो विषे विकार वतायो, थोडीसी कही विकलाइ रे ।
 हिंवें लोलपणा री विष कहुं एकल री, ते सांभलजो चित्तलाइ रे ॥ ६७ ॥

ढलल : ७

ढुहल

केइ खलवल डीवल रों अतललोलडी, ते घणलं डेलो रहें केड ।
 गण छुडी एकलु डलरें, तलणरे खलवल रु धुडलंन नलत नेड ॥ १ ॥
 आड छलदें एकल गुरुरी करें, ते डुगल धुडलनी डण डलड ।
 तलजे आहलर तूटुं डरें, ललंडुं देखुडलं तुरुत डलर डलड ॥ २ ॥
 एकल डलणें आहलर नलतकुं ककुं, तुु न डललें सरस आहलर ।
 तडसल करू तुु आहलर तलरुं डललें, वले डस डेले लुक डडलर ॥ ३ ॥
 इड डलणी एकल तडसल करें, तलणरी तडसल री कलसी डरतीत ।
 तलणरी वलकलइ वेंहरण तणी, देसुं घणी वलडरतीत ॥ ॡ ॥
 रस डुरलडी री तडसल तणी, डरतीत आवें केड ।
 तलणरी वेंहरण री वलड डरगट ककुं, ते सुणकुु डर डेड ॥ ॡ ॥

ढलल

[आ अनुकडुडल डलख आगुड डें]

एकल ने आखी रूटी डवल री वेंहरलवें, डड तुुं घणलं गलड सुं लेवें डटकुु ।
 कुु ललडू सेरेक वेहरलवें एकल नें, तुु तुरुत वेहरी ने करडलजे गटकुु ।
 एकल डेषधलरी रल डलरलत ओखलकुु* ॥ १ ॥
 आखी रूटी न लेवे नें डटकुु लेवें, ते तुु आखुु ललडू वेहरे कलण लेखें ।
 डटकल रे लेखे तुु डली लेणी ललडू री, आडरी सरधल सलहुुु कुु नही देखे ॥ए० २॥
 आखी रूटी न लेवे नें डटकुु लेवें, तलणरु डेड डुली डलडल नही डलणे ।
 आहलर थुुडुु वेहखुु तलणसू गुण गलवे, तलणरु डरडलरथ डुरुु न डलछलणे ॥ ३ ॥
 आतुु डर डर डलरें आछलआहलर ने रलगतुुं, तलण तुु आछे आहलर खलणे डलत डीघुु ।
 ते डवलं री रूटी आखी कलड खलवे, तलणसू डवल री रूटी रु डटकुु लीघुु ॥ ॡ ॥
 कलणरेइ डरे तुु डटकुुइ न लेवे, गलल गोलुु करे डवलं री रूटी देख ।
 आगले डर गडल आहलर डुुखुु देवे तुु, डुरतलडुरुु आहलर लेवे वशेख ॥ ॡ ॥
 कुुइ तुु डलइ कुुं डुहलरे डटकुु लीघुु, कुुइ कुुं डुहलरे डूल न लीडुुं आहलर ।
 ते तुुं डलल डलल ने एकल रल गुण गलवे, ते एकल रल डलवल डलरलत न डलणे ललगलर ॥ ६ ॥
 डलरे दडल रल ललडू डलणें तलण ठलडे, उरलल डर छुडी ने तलण डर डलवें ।
 तलहलं एकल ने डलइ ललडू वेहरलवे, तुु डलवे डलतल एक डर नल लुडलवें ॥ ७ ॥

*डह आंकडी डुरलडेक गलथल के अनुत डे है ।

जब रोटी रो तों बटको बटको वेंहरें,
 बटको बटको वेंहख्यो तिणसूं महिमा वधारे,
 किणरे खरच विवाह रा लाडू वच्यां हुवें,
 ओर दातार छोडी ने तिण घर जावें,
 पारणें पारणें तिणहीज घर जावें,
 लाडू पूरा हुआं पछें जावें आगा ज्यूं,
 जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे,
 ताजा आहार उपर तो तुटो पडे छें,
 जवां री रोटी रों तो बटको लेवें,
 वले फिरतों फिरतों ताजा घर सोभें,
 घणा लाडू वेहख्यां तो दोष न कोइ,
 दोष तों छे आहार असुघ वेंहख्यां में,
 घणी रोटी वेंहख्यां कोइ दोषण जाणें,
 ते मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 जवां री रोटी रो तो बटको वेहरे,
 वले बेरांगी वाजें बटको वेंहख्यां सूं,
 आखी रोटी न वेंहरें ने बटको वेंहरे,
 इण कारण एकल घणां घरां भटके,
 आखीआखी रोटी वेहख्या थोडा घरा में आवे,
 दूब दही पिण थोडोइज आवें,
 तिणसूं घर घर रोटी रो बटको वेंहरे,
 जब विगे पिण आवें छें घणां घरां नों,
 विगें सुखडी घणी खायां हुवें राजी,
 सरस आहार रे कारण घणां घरां भटकें,
 केइ धूरत एकल छें मायावीया कपटी,
 ते एकंत आछों आहार खावा रे तांड,
 जिण गांव में थोडो आहार मिलतो जाणें,
 जब लांबो पातलों आहार न छोडें,
 केइ एकल महिमा वधारण काजें,
 वले तपसा जणाय ताजो आहार ल्यावे,
 किणही कनें तो कपडादिक देवे,
 अथवा कोइ वाइ हुवे रागण एकल री,
 ३७

लाडू वेंहरावें तो लेवें भरपूर ।
 ते तों समक पड्यां विण बोलें कूर ॥ ८ ॥
 तिण नें आपरो रागी दातार जाणें ।
 खपें जिता एकण घर रा आणें ॥ ९ ॥
 बोहत लाडू वेहरावे छें जिहां ताई ।
 तिण री भोलां नें खबर पडे नही काई ॥ १० ॥
 लाडू वेंहरावे तो लगाय दें भीकों ।
 एहवा एकल नें कदेय म जाणो नीको ॥ ११ ॥
 गोहां री देवे तो लेवे दोय च्यार रोटी ।
 आ एकल री चलगत देखलों खोटी ॥ १२ ॥
 गोहां री रोटी घणी वेंहख्यां दोष नाही ।
 कें दोष छें लोलपणा रे मांही ॥ १३ ॥
 घणां लाडू वेहख्यां कोइ दोषण जाणें ।
 ते पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणें ॥ १४ ॥
 ताजों आहार देवे तो लेवे भरपूरों ।
 एहवा कपटी रो वेराग कूडी फितूरों ॥ १५ ॥
 जाणें आछों आहार मिलसी ओर ठाम ।
 ताजों ताजों आहार गवेषण काम ॥ १६ ॥
 जब विगें सुखडी पिण थोडीज आवे ।
 जब थोडा सूं एकल संतोष न पावे ॥ १७ ॥
 जब तो बीस तीस घरां वेंहर ल्यावें ।
 सुखडी दूब दही अे पिण घणां आवें ॥ १८ ॥
 वले टाल राखे छे त्यांरा दातार ।
 तिणरें किणरी हटक न दीसें लिगार ॥ १९ ॥
 ते तो कूड कपट कर काम चलावे ।
 तिणसूं बटको बटको वेहरी ने ल्यावे ॥ २० ॥
 तो जवां री रोटी वेहरे दोय च्यार ।
 जाण नें अणोदरी न करे लिगार ॥ २१ ॥
 तपसा कर लोकां मांहें पमावे ।
 पछें छाने छाने तपसा माहे खावे ॥ २२ ॥
 किणही रे घर मेले सुखडियादिक सार ।
 ते छाने छाने देवे एकल ने आहार ॥ २३ ॥

कोइ एकल राखे आप तणा थानक में, ते मेल दे एकंत गुप्त ठिकाणे ।
 ते तों रातेवासी राखे तपसा में खावे, एहवा एकल रा चरित तो केवली जाणें ॥ २४ ॥
 एकल कहें मोनें वीस बरस हुआं छे, निरंतर वेलें वेलें पारणों करतां ।
 तिणरों डील तों दीसैं आगा जिम पुष्टो, वले थाको नही वीहार करतां विचरतां ॥ २५ ॥
 जो बेले बेले पारणो कहें निरंतर, तो पिण हीणों कुमलणो दीसे नाहीं ।
 तिणरी तपसा री परतीत किण विघ आवें, कोइ चतुर विचार देखों मन मांही ॥ २६ ॥
 तिणरो डील पिण दीसे चिलका करतो, वले लोही ने मांस तूटा दीसे नाही ।
 चाल तों पिण दीसे सेठो थको एकल, तिणरे तपसा रा लखण न दीसे काई ॥ २७ ॥
 तिणरा सरीर रो गोलो दीसे एक धारा, वले वल प्राकम पिण तिणरो दीसे छें गाढो ।
 बेला तेला तिणरा किण विघ कहीजें, पेट में पिण परीयों न दीसे खाडो ॥ २८ ॥
 इणरा डील तणा अलांण देखतां, तपसा रो अंस न दीसैं लिगार ।
 एहवा एकल भागल छे भेषधारी, ते तो निश्चेद छे जिण आगना वार ॥ २९ ॥
 एकल री तपसा री नही परतीत, वले एकल रा सील री नही परतीत ।
 तपसा नाम लेवें छे ठाण लोका ने, एहवा एकल होसी भव भव मे फजीत ॥ ३० ॥

ढाल ८

[सेवो रे साथ सयाशा-]

के कांसू तो घणां भेलो रहणी न आवे, तिणसू फिरे एकलो आपे ।
 ते सुध साधा ने पिण कहे असाध, ते करे एकल री थाप रे । भवीयण ।
 जोवों हिरदय विचारी, थे छोड दें तिणरी लारी रे । भवीयण ।
 एकल छे जिण आगना बारी* ॥ १ ॥

केइ विषे रा बाया फिरें एकला, तिणसू घणां भेलो रहणी नावे ।
 वले खावा रो गिथी रसनो लोलपी छे, घणां मे केम खटावे रे ॥ २ ॥
 ज्याने साध सरखे त्यासू न रहे भेला, आप छदि फिरे एकलो ।
 एहवो भागल फिरे एकलो, तिणने कदेय म जाणजो भलों रे ॥ ३ ॥
 अनेक टोलाधर फिरे छे त्याने, साधु सरखे वादे कर जोड ।
 त्यासू भेलो न रहे ने फिरे एकलो, तिणमे जाणजो मोटी खोड रे ॥ ४ ॥
 घणा भेला र्ह्यां परतो वीसे उघाड, तिणसू एकला फिरें अघर्मी ।
 तिणरा अहलांण तो उघाडा दीसे, जाणीजे साचेलो कुकरमी रे ॥ ५ ॥
 तिण एकल ने पूछे थे टोले कांय छोडयो, जब एकल बोलें छे आमो ।
 म्हे डीला जाणे ने छोडया छे त्याने, म्हांरे नहीं छें घणां सू कामो रे ॥ ६ ॥
 मो सरीखो जे कोइ आयं मिले तो, जब तो कहुं तिणने चेलो ।
 जो मो सरीखो कोइ नहीं मिले चेलो, तो आपरे मेले रहू एकलो रे ॥ ७ ॥
 इम कहि कहि एकल आपो जणावे, ते पिण बोले वध न काई ।
 तिण एकल ने विकल मिले चेलो, त्याने पिण मूड लेवे माही रे ॥ ८ ॥
 ओ कहितो मो सरीखा ने करसू चेलो, तिण मूड लीया विकल ने माही ।
 ओ पिण भूठ उघाडो एकल रो, ते पिण विकलां ने खबर न काई रे ॥ ९ ॥
 थे पेहला कहिता हूं चेलो कहुं तो, मों सरीखो करसू सुवनीत ।
 हिवे चेलो कीयां भोला विकलां ने, थारा बोलयां री किसी परतीत ॥ १० ॥
 एहवा चतुर विचक्षण श्रावक हुवें तो, इम पूछ करे तिणने खिष्ट ।
 भारीकरमा मूड श्रावक त्याने, गुर मिलियो एकल भिष्ट ॥ ११ ॥
 एकलपणा रो खोज भागण ने, विकलां ने मूड कीयां भेला ।
 जो उणरा श्रावक ने समझ पड़े तो, तुरत करे तिणरी हेला रे ॥ १२ ॥
 चेला ने रात रा न्यारा राखे, आप रात रो रहे एकलो ।
 तिण एकल री अपरतीत वीसे उघाडी, एहवो एकल कदे नहीं भलो रे ॥ १३ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तिण एकल रा चेला ववेक विकल छें,
 म्हारो गुर म्हांसू रात रो रहें एकलो,
 एहवा कुकरमी फिरें एकल,
 ते चेलो करे तो ही रहें एकलो,
 एहवां एकल गये कारले हुआ अनंता,
 केइ वरतमान काले पिण एहवा छें एकल,
 एकल रा चारित तो एकल जाणे,
 छद्मस्य तो अहनांगा सू जाणे,
 केइ भेषधारी फिरें एकल,
 तिणने पिण साध सरखे केइ भोला,
 ओ तो साध सरखे छें अनेक टोलां ने,
 वले त्यासू पिण संभोग करे छें,
 त्यासू भेलों पिण रहें नहीं एकल,
 गांमां नगरा पिण फिरें एकलो,
 ओ किण कारण फिरें एकलडो,
 तिणरा कूड कपट ने दोष सेवण री,
 तिण एकल माहे अनेक अवगुण छें,
 ते एकल रहें छें सगला थो डरतो,
 विण कारण फिरें घर घर एकलो,
 अवसर देखनें एकल पापी,
 घर घर फिरतो तपसा जणावे,
 पछें पारणा रे दिन तिण घर सेती,
 तिण एकल री सील आचार तपसा री,
 कोइ चतुर विचक्षण डाहा होसी ते,
 केइ क्रोधी कपाइ लोलपी होसी,
 वले विपे तणा वाया फिरें एकलो,
 ठाम ठाम सूतर माहे वीर नषेवो,
 केइ एकल ने साध सरखे ने वादे,
 इम साभल ने उत्तम नर नारी,
 उत्तम साध हुवे सुध आचारी,
 इण पाचमें आरे फिरें एकलो,
 ते ववेक विकल जिण आगना वारे,
 त्याने इतरी समझ छें नाही ।
 किसान मुतलब रे ताइ रे ॥ १४ ॥
 तिणरे कुकरम रो छें चालो ।
 ते नही सके लगावतो कालो रे ॥ १५ ॥
 अनंता होसी आगमीये कालो ।
 तिणरो कुण काढे नीकालो रे ॥ १६ ॥
 के केवलग्यानी रह्या जाणों ।
 कोइ आप म लेजो ताणों रे ॥ १७ ॥
 अपछंदा अवक्त मूढ ।
 कर कर कूडी हूढ रे ॥ १८ ॥
 त्याने वादे छें सीस नमाय ।
 वले मुख सू करे गुण ग्राम रे ॥ २९ ॥
 रहें एकलडो न्यार ।
 वले करे एकलडो वीहार रे ॥ २० ॥
 ते तो भोलां ने नही ठीक ।
 कुण करे तहतीक रे ॥ २१ ॥
 वले कूडकपट रो मंडार ।
 रखे करे म्हांरो उघाड रे ॥ २२ ॥
 पातरो लेइ हाथ ।
 फेरे बायां रे माघे हाथ रे ॥ २३ ॥
 ताजो आहार पिण गली आवे ।
 ताजो आहार ताकी ल्यावे रे ॥ २४ ॥
 भोला करसी परतीत ।
 एकल ने जाणें विपरीत रे ॥ २५ ॥
 ते फिरसी एकल ।
 एहवा एकल कदेयन भला रे ॥ २६ ॥
 साध ने एकलो रहणों नांही ।
 ते पडीया मोटां फंद माही रे ॥ २७ ॥
 एकल दूर तजीजे ।
 त्याने हरष सहीत गुर कीजे रे ॥ २८ ॥
 ते नीमाइ निष्चे भिष्टी ।
 तिणने साध न सरखे समदिष्टी रे ॥ २९ ॥

रत्न : ११

जिनाग्या री चौपई

ढलल : १

दुहल

श्री ऒण धर्म ऒण आगनल मभे, आगनल बलरें नही ऒण धर्म ।
तलण सूं डलड कर्म ललगे नहीं, वले कटे आगलल कर्म ॥ १ ॥
केइ मूढ मिथुडलती इम कहे, ऒण आगनल बलरे ऒण धर्म ।
ऒण आगनल मलहें कहे डलड छे, ते भूलल अरुगुनी भर्म ॥ २ ॥
ऒण आगनल बलरे धर्म कहे, ऒण आगनल मलहे कहे डलड ।
ते कलण ही सूतर मे डललुडें नही, डूं ही करें मूढ वललड ॥ ३ ॥
केइ कहे धर्म तलहल देवल आगनल, डलड छे तलहल करल नखेद ।
मलशु थलकलणें मून छे, एह धर्म नु भेद ॥ ॡ ॥
इसडी करें छे डरूडणल, ते करे मलशु री थलड ।
ते बूडल खुडें मत बलंध ने, श्री ऒण ववन उथलड ॥ ॡ ॥
केइ मलशु तु मलने नही, मलने हलसल में एकंत धर्म ।
ते डलण बूडल छे वलडडल, डलरी करे छे कर्म ॥ ६ ॥
ऒण धर्म तु ऒण आगनल मभे, आगनल बलरे नही धर्म ललगलर ।
तलणरी सलख सूतर री दे कहुं, ते सुणओ वलसुतलर ॥ ७ ॥

ढलल

[ऒीव डुहे अरुकडुडल न आरुडीे]

आगुडल में ऒण धर्म ऒणलरलओ रु, आगनल वलरे कहे ते मूढ रे ।
ववेक वलकल सुध वुध वलनलं, ते बूडे छे कर कर रुड रे ।
श्री ऒण धर्म ऒण आगनल मभे* ॥ १ ॥
रुडलन दरुण डलरलत ने तड, ए तु डुख रल डलरग डुडलर रे ।
डल डुडलरलं में ऒणओ री आगनल, डल वलनल नही धर्म ललगलर रे ॥ श्री २ ॥
डल डुडलरल मलहलल एक एक री, आगनल डलगे श्री ऒण डलस रे ।
तलण ने देवे ऒणेसर आगनल, ऒव उ डलण डलडे डन मे हूललस रे ॥ ३ ॥
डलं डुडलरल वलण डलगे कुड अगनल, तु ऒणेसर सलडे मून रे ।
ऒण आगनल वलण करणी करे, ते करणी ऒलवक ऒवून रे ॥ ॡ ॥
वीसलं भेदलं रुके कर्म आवतल, वलरे भेदलं कटे वलघुडल कर्म रे ।
तुडलरी देवे ऒणेसर आगनल, ओहीओ ऒण डलषुडु धर्म रे ॥ ॡ ॥

डह आंकडी डुरतुके गलथल के अन्त में है ।

कर्म रुकें तिण करणी में आगना,
 यां दोय करणी विनां नही आगना,
 देव अरिहंत नें गुर साध छें,
 ओर धर्म में नही जिण आगना,
 जिण भाष्या में जिण आगना,
 तिण सूं सुद गत जायें नही,
 केवली भाष्यो धर्म मंगलीक छे,
 सरणों पिण लेणो ङण धर्म रो,
 ठाम ठाम सूतर में देखजों,
 मून सामें तिहा धर्म कह्यों नहीं,
 मून सामणीयों धर्म माठो घणों,
 खाच खांच बूडें छे बापडा,
 धर्म नें सुकल दोनू ध्यान में,
 आरत रुद्र ध्यान माठा बेहूं,
 तेजू पदम सुकल लेस्या भलीं,
 तीन माठी लेख्या में आग्या नही,
 भला परिणाम में जिण आगना,
 भला परिणामा निरजरा नीपजें,
 भला अधवसाय में जिण आगना,
 भला अधवसाय सूं निरजरा हुवें,
 ध्यान लेस्या परिणाम अधवसाय,
 च्याहं माठा में जिण आगना नहीं,
 च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या,
 ए सगला छे जिण आगना मभे,
 सर्व मूल गुण उत्तरगुण,
 यां दोनू गुणां में जिण आगना,
 अर्थ परमअर्थ जिण धर्म छें,
 तिण माहे तो श्री जिण आगना,
 सर्वविरत धर्म साध तणों,
 यां दोनू धर्म में जिण आगना,
 उजल धर्म छे श्री जिणराज रो,
 मुगत जावा अजोग साध कह्यों,

कर्म कटे तिण करणी में जाण रे।
 ते सगली सावद्य पिछाण रे ॥ ६ ॥
 केवलीयें भाष्यो ते धर्म रे।
 तिण सूं लामें पाप कर्म रे ॥ ७ ॥
 ओर रो भाष्यो ते ओर जाण रे।
 पाप कर्म लागें छें आण रे ॥ ८ ॥
 ओहीज धर्म उत्तम जाण रे।
 तिणमें जिण आगना परमाण रे ॥ ९ ॥
 केवली भाष्यों ते धर्म रे।
 मून सामें तिहां पाप कर्म रे ॥ १० ॥
 भेष धाख्यां परुष्यों ताण रे।
 सूतर - रा मूढ अजाण रे ॥ ११ ॥
 जिण आग्या दीधी वारुंवार रे।
 यानें ध्यावें ते आग्या बार रे ॥ १२ ॥
 त्यामें जिण आग्या नें निरजरा धर्म रे।
 तिण सूं बंधे पाप कर्म रे ॥ १३ ॥
 माठा परिणाम आग्या बार रे।
 माठा परिणामा पाप दुवार रे ॥ १४ ॥
 आग्या बारे माठा अधवसाय रे।
 माठा अधवसाय सूं पाप बंधाय रे ॥ १५ ॥
 च्याहं भलां में आग्या जाण रे।
 यांरा गुणां री कीजो पिछाण रे ॥ १६ ॥
 च्यार सरणा कह्या जिणराय रे।
 आग्या विण आछी वस्त न काय रे ॥ १७ ॥
 देस मूल उत्तर गुण दोय रे।
 आगना बारे गुण नहीं कोय रे ॥ १८ ॥
 उवाइ सूयगडाजंग मांय रे।
 सेख अनर्थ में आग्या न कांय रे ॥ १९ ॥
 देसविरत श्रावक रो धर्म रे।
 आग्या वारें तो बंधसी कर्म रे ॥ २० ॥
 ते तो श्री जिण आग्या सहीत रे।
 ते जिण आगना सूं विपरीत रे ॥ २१ ॥

आग्या लोपी चाले छादे आप रें, तेग्यांनादिकघन सूं ठालो थाय रे ।
 आचारंग अघेन दुसरे, जोवो छठा उदेसा मांय रे ॥ २२ ॥
 आग्या सूं कळूं ते घन मांहरो, एहवो चितवें साधु मन मांय रे ।
 आगना विण करवो जिहांइ रह्यो, रुडें बोलवो पिण नही कांय रे ॥ २३ ॥
 आग्या माहिलो ते घर्म मांहरो, ओर सर्व पारको थाय रे ।
 आचारंग छठा अघेन में, दूजें उदेसें कळ्यो जिणराय रे ॥ २४ ॥
 आगना मांहे सजम ने तप, आगना में दांन परमाण रे ।
 आगना रहीत घर्म आछ्यो नही, जिण कळ्यो पलाल समाण रे ॥ २५ ॥
 आश्रव निरजरा रो ग्रहण जूदो कळ्यो, ते जाणसीजिण आग्या रो जाण रे ।
 आचारंग चोथा अघेन में, पेंहलें उदेसें जोय पिछांण रे ॥ २६ ॥
 निरवद धर्मी चतुरविध संघ छे, ते आग्या सहीत बांछे अनुष्ठान रे ।
 ते आचारंग चोथा अघेन में, तीजे उदेसें कळ्यो भगवान रे ॥ २७ ॥
 तीर्थंकर धर्म कीधो तको, ते मोख रो मारग सुघ वेस रे ।
 ओर मोख रो मारग को नही, पाचमे आचारंग तीजे उदेस रे ॥ २८ ॥
 जिण आगना बारली करणी तणो, उदम करे अग्यांनी कोय रे ।
 आग्या माहिली करणी रो आलस करे, गुर कहे सीष तोनें दोनूं म होय रे ॥ २९ ॥
 कुमारंग तणी करणी करें, सुमारंग रो आलस करे कोय रे ।
 दोनूं कारण दुरगत तणा, आचारंग पाचमो घेन जोय रे ॥ ३० ॥
 जिण मारंग रा अजाण ने, जिण उपदेस रो लाभ न होय रे ।
 ते आचारंग नां चोथा अघेन में, तीजा उदेसा में जोय रे ॥ ३१ ॥
 जो दांन सुपातर नें दीयो, तिणमे श्री जिण आग्या जांण रे ।
 कुपातर दांन मे आगना नही, तिणरी बुधवंत करजो पिछाण रे ॥ ३२ ॥
 साध विनां अनेरा सर्व ने, दांन न दे साध माठो जाण रे ।
 दीघां भमण करें भंसार में, तिणसूं साघां कीया पचखांण रे ॥ ३३ ॥
 सूर्यगडाअग नवमां अघेन मे, तेवीसमी गाथा जोय रे ।
 वले दीघां भागे वरत साधु रा, जिण आगना पिण नही कोय रे ॥ ३४ ॥
 पातर कुपातर दोनूं ने दीयां, विकल जाणे दोयां मे धर्म रे ।
 घर्म होसी सुपातर दांन में, कुपातर नें दीयां पाप कर्म रे ॥ ३५ ॥
 खेतर कुखेतर श्री जिणवर कळ्या, चोथे ठांणे ठांग्राअंग माय रे ।
 सुखेतर मे दीयां जिण आगना, कुखेतर मे आग्या नही कांय रे ॥ ३६ ॥
 आहार पांणी ने उपवादिक, साध देवे गृहस्थ ने कोय रे ।
 तिणने चोमासी डंड नसीत मे, पनरमें उदेसें जोय रे ॥ ३७ ॥

गृहस्थ नें दांन दें तिण साव नें, प्रायच्छित आदें छें कीवां अघर्म रे ।
 तो तेहीज दांन गृहस्थ दीयें, त्यांने किण विघ होसी घर्म रे ॥ ३८ ॥
 असंजम छोडें संजम आदस्थों, कुसील छोडें हूचो ब्रह्मचार रे ।
 अकल्पणीक अकारज परहरे, कल्प आचार कीयो अंगीकार रे ॥ ३९ ॥
 अग्यांन छोडे नें ग्यांन आदस्थों, माठी किरिया छोडी माठी जाण रे ।
 भली किरिया नें सावां आदरी, जिण आग्या सूं चतुर सुजाण रे ॥ ४० ॥
 मिथ्यात छोडे समकत आदस्थों, अबोध छोडें नें आदरीयो बोध रे ।
 उनमारग छोडें सनमारग लीयों, तिणसूं आतम होसी तोष रे ॥ ४१ ॥
 आठ छोड्या ते जिण उपदेस सूं, पाप कर्म तणो बंध जाण रे ।
 जिण आगना सूं आठ आदस्था, तिणसूं पामें पद निरवाण रे ॥ ४२ ॥
 ठाम ठाम सूतर में देख लो, जिण घर्म जिण आग्या में जाण रे ।
 ते मूढ मिथ्याती जाणें नहीं, यूंही वूडे छें कर कर ताण रे ॥ ४३ ॥
 हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, आग्या वारें नहीं घर्म मूल रे ।
 आग्या वारे घर्म कहें तेहनी, सरवा कण विण जाणों घूल रे ॥ ४४ ॥



ढलरु : २

दुहा

केइ साबु वाजे जेन रा, ते कूड - कपट री खान ।
ते आगना बारे धर्म कहे, त्यारा घट माहें घोरअग्यान ॥ १ ॥
त्याने ठीक नहीं जिण धर्म री, जिणआग्या रीपिणनही ठीक ।
त्याने पिरवारबवेक विकल मिल्यो, त्यामे वाजें पूज महिदीक ॥ २ ॥
ते बडा उट ज्युं आगे चलें, लारे चालें जेम कतार ।
ते बोहला बूडें छे बापडा, बडा बूडां री लार ॥ ३ ॥
हिवें वले बरोखे जिण आगना, ओलखजो बुधवान ।
तिणरा भाव भेद परगट करुं, ते सुण सुरत दे कांत ॥ ४ ॥

ढल

[बालम मोरा हो]

साध सामायक वरत उचरें, तिणमें सावद्य रा पचचांण ।
तेहीज सावद्य गृहस्थ करे, तिणमें श्री जिण धर्म म जांण ॥
श्री जिण धर्म जिण आगना तिहां* ॥ १ ॥
श्रावक सामायक पोसो करे, तिणमे पिण सावद्य रा पचखांण ।
तेहीज सावद्य कांमा छूटो करे, तिणमें पिण जिण धर्म म जांण ॥ श्री० २ ॥
धर्म कहे साध जिण आगना मभे, आग्या बारे धर्म कहे मूढ ।
तिण श्री जिण धर्म न ओलख्यो, तिण भाली मिथ्यात री रुढ ॥ ३ ॥
जिण धर्म री जिण आगना दीये, जिण धर्म सिखावे जिणराय ।
आग्या बारे धर्म किण सिखावीयो, इणरी आग्या देवे कुण ताय ॥ ४ ॥
केइ आगना बारे मिश्र कहें, केइ धर्म पिण कहे आग्या वार ।
तिणने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यो, तिणरो नांम चोडे तूं पार ॥ ५ ॥
इन मिश्र ने धर्म रो कुण धणी, इणरी आग्या कुण दे जोड्यां हाथ ।
देव गुर मून सामे न्यारा हूवा, उणरी उतपत रो कुण नाथ ॥ ६ ॥
केइ वेस्या रा पुत्र नें पूछा करें, थारी मा कुण नें कुण तात ।
जव ओ नाम बतावे किण तात रो, ज्युं आ मिश्र चाला री छे वात ॥ ७ ॥
वेस्या रा अंग रो उपनों, तिणरो कुण हुवें उदीरी ने वाप ।
ज्युं आग्या बारे धर्म ने मिश्र री, जिण धर्मी कुण करसी थाप ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वेस्या रा अंग रो उपनो, उण लखणो हुवे उदीरी नें बाप ।
 ज्युं जिण आग्या बारें धर्म नें मिश्र री, केइ करें छें पाषंडी थाप ॥ १६ ॥
 बाप विण बेटो निश्चे हुवे नही, ज्युं जिण आगना विण धर्म न होय ।
 जिण आग्या होसी तो जिण धर्म छें, आगना विण धर्म न कोय ॥ १० ॥
 कोइ कहें मांहरी मा तो छें बांझडी, तिणरो हूं छूं आतम जात ।
 ज्युं मूर्खं कहे जिण आगना विनां, करणी कीघां धर्म साख्यात ॥ ११ ॥
 मा विण बेटा रो जनम हुवें नहीं, जनमें ते वांझ न कोय ।
 ज्युं आग्या विण धर्म हुवे नही, जिण आग्या तिहां पाप न होय ॥ १२ ॥
 गूधू पंखी नें चोर दोनूं भणी, गमती लागें अंधारा री रात ।
 ज्युं भारी करमा जीव तेहनें, जिण आग्या बारलो धर्म सुहात ॥ १३ ॥
 काग नीबोली में रित करें, भंडसूरा रें मिष्टो आवे दाय ।
 ज्युं काग भंडसूरा जेहवा मानवी, रीमें आग्या बारली करणी मांय ॥ १४ ॥
 चोर परदार सेवण कुसीलीया, ते तो सेरी जोवें दिन रात ।
 ज्युं आग्या बारें धर्म सरघायवा, उंची कर कर अग्यानी वात ॥ १५ ॥
 दुष्ट जीव मंजारा नें चीत रा, छल सूं करें पर जीवां री घात ।
 एहवो दुष्ट मिश्र सरघा रो घणी, छल सूं घालें विकलां रे मिथ्यात ॥ १६ ॥
 सतगुर री आग्या मानें नही, ते तो अपछंदा ने अक्नीत ।
 ज्युं कोइ जिण आग्या विण करणी करे, ते करणी पिण छे विपरीत ॥ १७ ॥
 विगडायल हुवां न्यात बारे करे, ते विगडायल फिरे न्यात रे बार ।
 जेहवो धर्म जिण आग्या बारलो, तिणमें कदे मत जाणो भली वार ॥ १८ ॥
 न्यात बारें ते न्यात माहें नही, तिणनें नहीं बेसाणे एक पांत ।
 ज्युं जिण आग्या विण धर्म अजोग छें, कीयां पूरीजें नही मन खात ॥ १९ ॥
 जो आग्या विण करणी में धर्म छें, तो जिण आग्या रो कांम न कोय ।
 तो मन मांनी करणी करसी तेहने, सगली करणी कीयां धर्म होय ॥ २० ॥
 जिण आग्या बारली करणी कीयां, पाप नही लागें नें धर्म थाय ।
 तो किण करणी सूं पाप नीपजें, तिण करणी रो तू नाम वताय ॥ २१ ॥
 ग्यांन दरसण चारित ने तप, ए च्याखंड छे आगना माय ।
 या च्यांरा माहे तो धर्म जिण कह्यो, यां विनां ओर नाम वताय ॥ २२ ॥
 इम पूछ्यां रो जाब न उपजे, भूठ बोले वणाय वणाय ।
 विकलां ने विगोवें छे पापीया, जिण आग्या बारें धर्म सरघाय ॥ २३ ॥
 जिण धर्म जिण आग्या बारें कहे, ते पिण छे जिण आगना बार ।
 इण सरघा सूं वूडे छें बापडा, ते भव भव में होसी खुवार ॥ २४ ॥

जिण आगना बारे घर्म कहे, ते विगडायल जेन रा जाण ।
 त्यांरी अभितर फूटी छे माहिली, ते अंधारा ने कहे भाण ॥ २५ ॥
 जिण आगना विण करणी करे, ते तो दुरगतना आगेवाण ।
 जिण आग्या सहीत करणी कीयां, तिण सूं पामें पद निरवाण ॥ २६ ॥
 आग्या बारे घर्म कहे तेहनी, जोड कीघी खेरवा मझार ।
 सवत अठारें चालीसे समें, असोज विद पांचम थावरवार ॥ २७ ॥



ढलल : ३

दुहल

केइ ढलखंडी जेंन रल, सलघ नलंढ ढरलड ।
ते ढलढ कहें जलण आगनल ढढे, कूडल कुहेत लगलड ॥ १ ॥
आहलर ढलंणी सलघ ढोगवे, ते श्रीजलण आगनल सहीत ।
तलण ढें ढरढलद ने इवलरत कहें, तलंरी सरखल घणी वलढरीत ॥ २ ॥
वले वसतुर ढलतर कलंवलु, इतुडलदलक उढघ अनेक ।
ते ढलण जलण आगनल सूं ढोगवे, तलंनं ढलढ कहें ते वलगर ववेक ॥ ३ ॥
तलं श्रीजलण घढं न ओलखुडें, जलण आगनल ढलण ओलखुडी नलंहल ।
तलणसूं अनेक वुलं तढूं, ढलढ कहें जलण आगनल ढलंहल ॥ ॡ ॥
कहे नंदी उतरें तलण सलघ नें, आगनल दे जलण आढ ।
ते ढुरतख हलंसल देख लु, जलण आगनल छे ढलण ढलढ ॥ ॡ ॥
इतुडलदलक वुल अनेक ढे, आगनल दे जलणरलड ।
तलहलं हलंसल हुवे छें जीव री, तलण सूं ढलढ ललगें आड ॥ ॢ ॥
इढ कहल कहल जलण आगनल ढढे, थलढे छे ढलढ एकरंत ।
हलवं ओलखुखलउ जलण आगनल, ते सुणजुं ढतवंत ॥ ॣ ॥

ढलल

[ढगथ देस कु रलजल रलजे]

जे जे कलरज जलण आगनल सहीत छें, ते उढडुडुग सहीत करे कुड ।
जे कलरज करतलं घलत जीव तढूं हुवं, तलणरुं सलघ नें ढलढ न हुडुडु रे । ढवुडीण ।
जुवुओ हलरदुडु वलचलरी, थे कलंड करुं रुड हलडल री रे । ढवुडीण ।
जलण आगनल सुखकलरी ॥ १ ॥
जीव तढूं घलत हुवे सलघ थुी, तलणरुु सलघ नें ढलढ न ललगें ।
जलण आगनल ढलण लुढुी न कहलंजें, वले सलघ रुु वरत न ढलगें रे ॥ ढ० जल० २ ॥
ए इचरुडु वलली वलत उघलडी, कलकलं रे हलडुं केढ सढलवे ।
जुडलं जलण आगनल ओलखुडी नही ढुरी, ते जलण आगुडल ढें ढलढ वतलवें रे ॥ ३ ॥
नंदी उतरें जव सुघ सलघलं नें, आगनल दे जलण आढ ।
जुं नंदी उतरें तलंनं ढलढ हुवं तुु, आगनल दीथुी तलंनं ढलण ढलढ रे ॥ ॡ ॥
छुदढसुडु सलघ नंदी उतरें तलंनं, केवलुी आगनल दे सुडु ।
ढुतें ढलण केवलुी नंदी उतरें छे, ढलढ हुुसी तुु दुुडुडुलं ने हुुडुडु रे ॥ ॡ ॥

जे नंदी उतरें छें केवलग्यांनी, त्यांने पाप न लागें लिगार ।
तो छद्रमस्थ ने पाप किण विघ लागे, या दोयां रों छें एक आचार रे ॥ ६ ॥
छद्रमस्थ ने केवली नदी उतरे जब, दोयां सूं हुवे जीवां री घात ।
जो जीव मूआ त्यांरी हिंसा लागे तो, दोयां ने लागें परणातिपात रे ॥ ७ ॥
केवल ग्यांनी नंदी उतरे त्यांने, पाप न लागें कोय ।
तो छद्रमस्थ साध नंदी उतरे जब, त्यांने पिण पाप न होय रे ॥ ८ ॥
कोइ कहें केवली नें पाप न लागे, नंदी उतरतां जोग सुघ ।
पिण छद्रमस्थ ने पाप लागे नंदी रो, ए प्रतख वात विरुध रे ॥ ९ ॥
जिण विघ केवली नंदी उतरे जिम, पिण छद्रमस्थ उतरें जो नांहि ।
तो खांमी छें तिणरे इरज्या सुमत में, पिण खांमी नही किरतव मांहि रे ॥ १० ॥
ते खांमी पडे ते अजांग पणे छें, इरियावही पडिकमण री थाप ।
वले इघकी खांमी जाणे इर्या सुमत में, तो प्राच्छित ले उतारे पाप रे ॥ ११ ॥
साध नदी उतरे ते किरतव, सावद्य म जाणों कोय ।
जो सावद्य हुवें तो संजम भांगे, ते विराधक री पांत होय रे ॥ १२ ॥
आगे नंदी उतरतां अनंता साघां ने, उपनो केवलग्यांनो ।
ते नंदी मांहे आजपों पूरो करने, गया पांचमी गति परघांनो रे ॥ १३ ॥
कोइ कहे साध नदी उतरे ते, इतरी हिंसा रो छे आगार ।
तिणरों पाप लागे पिण व्रत न भांगें, इम कहे ते मूढ गिवार रे ॥ १४ ॥
जो साध रे हिंसा रो आगार हुवे तो, नदी उतरतां मोख न जावे ।
हिंसा रो आगार ने पाप लागे जब, चवदमोइ गुणठांगो नावे रे ॥ १५ ॥
कोइ कहे नंदी उतरे जब साघने, लागे असक हिंसा परीहार ।
तिणरो प्राच्छित विण लीयां सुव नही छे, इम कहे तिणरेंई अंधार रे ॥ १६ ॥
जो नदी उतख्या रो प्राच्छित विण लीवां, साध सुघ न थावें ।
तो नंदी मांहे साध मरे तो असुघ, ते मोख मांहे क्यूं जावे रे ॥ १७ ॥
साध नंदी उतख्या माहे दोप हुवे तो, जिण आगना दे नांहि ।
जिण आगना देतां पाप नही छे, थे सोच देखो मन मांहि रे ॥ १८ ॥
नंदी उतरे त्यांरो ध्यान कीसो छे, किसी लेश्या किसा परिणाम ।
जोग किसा अचवसाय किसा छें, भला भूडां री करो पिच्छाण रे ॥ १९ ॥
ए पांचू भला छे तो जिण आगना छें, माठा में जिण आग्या न कोय ।
ए पांचू माठा सूं पाप लागे छे, भलां सूं पाप न होय रे ॥ २० ॥
छद्रमस्थ ने केवली नंदी उतरे जब, लारे छद्रमस्थ केवली आगें ।
छद्रमस्थ उतरें केवली री आग्या सूं, त्यांने पाप किसे लेखे लागे रे ॥ २१ ॥

श्रावक माहोमांहि वीयावच कीधी, तिण दीयो सरीर रो साज ।
 छकाय रो ससतर तीखो कीधो, तिणसू आग्या न दे जिणराज रे ॥ ५४ ॥
 गृहस्थ री वीयावच कीधी तिणरो, अठावीसमो अणाचार ।
 साता पूछ्यां रो अणाचार सोलमो, तिण मे धर्म नहीं छे लिगार रे ॥ ५५ ॥
 सरीरादिक ने श्रावक पूजें, मातरादिक परठें पूज ।
 इयादिक कारज री नहीं जिण आग्या, तिणमें धर्म कहे ते अबूज रे ॥ ५६ ॥
 सरीर पूजे मातरादिक परठें, ते तो सरीरादिका रों छें काज ।
 जो धर्म तणो ए कारज हुवें तो, आगना देतां जिणराज रे ॥ ५७ ॥
 जो पूजणो परठणों न करे जावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम ।
 हस्तादिक ने विनां चलाया, रहणी न आवे तांम रे ॥ ५८ ॥
 लघू बडी नीत तणी अवाचा, खमणी ठामणी नावे तांम ।
 पूज ने परठें तोही कामो सावच्च, तठे जिण आग्या रों नहीं कांमरे ॥ ५९ ॥
 कदा थोडी वुध ज्यानें समझ पडे नहीं, त्यानें राखणी जिण परतीत ।
 आगना मांहे पाप आग्या वारे धर्म, इसडी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥
 जिण आगना माहे पाप कहे ज्यांरी, मति घणी छे माठी ।
 जिण आगना वारे धर्म कहे छे, त्यांरी अकल आडी आई पाटी रे ॥ ६१ ॥
 जिण आगना मांहे पाप कहितां, मूखें मूल न लाजें ।
 वले धर्म कहे जिण आगना वारे, ते पिडत पाखंड्यां मे वाजे रे ॥ ६२ ॥
 जिण आगना मांहे पाप कहे छे, ते बूडे कर कर तांण ।
 जिण आगना वारे धर्म कहे छे, ते पिण पूरा मूढ अयांण रे ॥ ६३ ॥
 संवत अठारे वरस इकतीसे, जेठ सुदि तीज सुकरवार ।
 श्री जिण आगना ओलखावण, जोड कीवी पर उपगार रे ॥ ६४ ॥

ढाल : ४

ढुहा

पाप अठारे कह्या अति बुरा, श्री जिण मुख सू आन ।
 ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूइ करणा पाप ॥ १ ॥
 ए श्री जिण वचन उत्थापने, वेई उंधी परुपे ताहि ।
 कहे करण जोग मिले नही, पाप अठारां माहि ॥ २ ॥
 पाप कीयां पाप नीपनों कहे, पाप करायां कहे छे' धर्म ।
 इण विघ करे छे परुपणा, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३ ॥
 त्याने प्रश्न पूछे इण वात रो, पाप करायां धर्म किध थाय ।
 जब कल्प वतावे' साघ रो, पिण सूघो बोल्यो नही जाय ॥ ४ ॥
 तिण जिण आगना नही ओलखी, साघरो कल्प ओलख्यो नांहि ।
 त्या करण जोग विगटावीया, पाप कहे जिण आगना माहि ॥ ५ ॥
 कहे साघ न पेहरे कांचूवो, पेहख्यां लागे पाप कर्म ।
 पिण साघवी ने आगना दीया, हुवे छे निकेवल धर्म ॥ ६ ॥
 इत्यादिक अनेक वोल कल्प रा, त्यामें घाले' घुचलाई मूढ ।
 करण जोग उथापे अग्यांनी थकां, त्यां भाली मिथ्यात रो रुढ ॥ ७ ॥
 कल्प साघ साघवी तणो, जुदो जुदो बांध्यो जिणराय ।
 तिण कल्प मे जिणजी री आगना, तिणमें पाप कीहां थी थाय ॥ ८ ॥
 साघने कल्पे ते साघ करे, साघवी करे कल्पे ते तांम ।
 पाप नही त्यारा कल्प में, करण जोग रो अठे नही काम ॥ ९ ॥
 हिवे' कल्प साघ साघवी तणो, सांभलजो नर नार ।
 निरणो कीजे घट भितरे', ज्यू उतरो भवपार ॥ १० ॥

ढाल

[माघ देस को राज राजे]

साघ साघवी रा कल्प माहे अग्यानी, पाप कहे मूढ कोय,
 तिण कल्प माहे श्री जिणजी री आग्या, तिहां पाप रो अस न होय रे ॥
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, कांय करी आतम भारी रे ।
 जिण बांध्यो कल्प सुखकारी* ॥ १ ॥
 साघ साघवी रो कल्प श्री जिण बांध्यो, तिणारी श्री जिण आगना दीघी ।
 तिण माहे पाप बताए अग्यानी, खाच गला ने लीघी रे ॥ जि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तीन पिछोवडी साध नें कल्पे, साधवी नें कल्पे च्यार ।
 यां देयां नें छे श्रीजिण आग्या, तिभे पाप नही छे लिंगार ॥ ३ ॥
 च्यार पछोवडी साधवी राखें तो, साध आग्या देवे भलीभांत ।
 जो पोतेई साध च्यार राखें तो, भागल री छे पांत रे ॥ ४ ॥
 कांचूओ नें जांधीयो साधवी राखे, तिणने आग्या दे साध रखावे ।
 जो साव पेहरे कांचूओ जांधीयो, तो जिण आग्या रो चोर कहावे रे ॥ ५ ॥
 गांमां नगरां साधवी नें कल्पे, शेखाकाल रहिणो मास देय ।
 जो शेखा काल साध रहे दोग्य महीना, तों जिण आगना रो चोर होय रे ॥ ६ ॥
 साधवीयां कमाड जडे नें उघाडे, सील व्रत राखण रे काजे ।
 जो साध कमाड जडे नें उघाडे, तो पेहिलो माहावरत भाजे रे ॥ ७ ॥
 साधवीयां किवाड जडे नें उघाडे, त्यानें जिण आगना दें सोय ।
 साध नें किवाड जडण उघाडण री, जिण आगना नही कोय रे ॥ ८ ॥
 कदा साधवी राखे उघाडो दुवार, तिणने प्राच्छित्त दे करे सुध ।
 तिणने आगना दे किवाड जडण री, साध पोतें जडे तो असुध रे ॥ ९ ॥
 पेहला नें छेहला तीर्थकर त्यांरा, ते वाजे कपठीया साध ।
 त्यांरे धवला नें अल्पमोला कपडा, वले गिणती मे पिण मरजादा रे ॥ १० ॥
 विचला तीर्थकर बावीस त्यांरा, ते वाजे अकपठीयां साध ।
 त्यांरे पांच वर्णा नें बहुमोला कपडा, वले गिणती में नही मरजादा रे ॥ ११ ॥
 जे कपठीया ने नही कल्पे ते कपडा, भोगवे तो लागे पाप कर्म ।
 तेहीज कपडा अकपठीया नें कल्पे, त्यानें भोगवीयां छे धर्म रे ॥ १२ ॥
 पांच वर्णा नें बहु मोला कपडा, अकपठीया राखे भली भांत ।
 त्यानें कपठीया आगना दे तो ही धर्म, पोते राखे तो चोरां री पात रे ॥ १३ ॥
 कपठीया साध साधवी नें, गांमा नगरां मरजादा सूं रहिणो ।
 अकपठीया रहे विण मरजादा, जिण आग्या परिमाणे वहिणो रे ॥ १४ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो कपठीयां रे ताई ।
 ते कपठीया सर्व साध ने न कल्पे, अकपठीया ने दोष नाही रे ॥ १५ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक कपठीया ताई ।
 तो पिण कपठीया ने न कल्पे, अकपठीया नें दोष नाही रे ॥ १६ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो, कीधो अकपठीया रे ताई ।
 तो कपठीया अकपठीया बेहूं नें, कल्पे नही मूल काई रे ॥ १७ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीधो एक अकपठीया ताई ।
 तो अकपठीया ने कल्पे उण विनां, कपठीया साध नें कल्पे नाही रे ॥ १८ ॥

संधटो साधवी रो साध नें न करणों, कारण पडीया कीयां दोष नांही ।
 ओ पिण कल्प जिणेसर बांध्यो, पाप नही तिण माही रे ॥ १६ ॥
 साध साधवी ने राते भेलों न रहिणों, कारण पडीयां तो रहिणो भेलों ।
 जिण रीते वीर कल्यों तिण रीते, रहितां ने कोइ मत हलो रे ॥ २० ॥
 साध साधवी नें साथे विहार न करणों, कारणे करणों साथे विहार ।
 त्यानें आगना दे हर कोइ साध, तिणने पिण नही पाप लिगार रे ॥ २१ ॥
 साध ने तो एकलो रहिणों न कल्पे, साधवी ने न कल्पें दोग्य ।
 त्याने पिण रहिणों कल्पें कारण पडीयां, जिण आगना पिण छे सोय रे ॥ २२ ॥
 साधवी दिखत घणा काल री छे, तो ही नव दिखत साध ने वदे ।
 साधवी पद तीथकर पांमी, तिणनें साध वादे आंगदे रे ॥ २३ ॥
 दिख्या वडी साधवी साध ने वादे, साध पिण साधवी ने वादे ।
 ओ पिण कल्प तीथंकर बांध्यो, ओर नही बांध्यो आप छादे रे ॥ २४ ॥
 दोग्य कोस उपरंत आहार च्यारुई, साध ने भोगवणो नाहि ।
 पेहला पोहर तणो आहार छेहला पोहर में, ते पिण नही घालणो मुख माहि रे ॥ २५ ॥
 जो गाढा गाढ रो कारण पडे तो, पेंहला पोहर तणों पोहर छेहले ।
 ओषघादिक जिम जाणे नें साधु, मुख माहे निसंक सूं मेलें रे ॥ २६ ॥
 ओ पिण कल्प छे कपठीयां रो, अकपठीयां रो केवली जाणें ।
 ते पिण त्यांरा कल्प माहे रहिसी, ते निश्चो काडे कुण ताणें रे ॥ २७ ॥
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक, ते सूतर सूं कीजो पिछांणों ।
 आप आप तणा कल्प माहे चाल्यां, तिण में जिण आगना थे जाणो रे ॥ २८ ॥
 साधरा कल्प में साध चालें, त्यानें लागे नाही पाप कर्म ।
 यानें आगना दे कोइ यांरा कल्प री, तिणनें हुवे छे निरजरार धर्म रे ॥ २९ ॥
 साधवी रा कल्प में साधवी चाले, यानें पिण नही छे पाप कर्म ।
 याने पिण आगना दें यांरा कल्प री, तिणनें पिण निरजरार धर्म रे ॥ ३० ॥
 एहवो कल्प तीथंकर बांध्यो, तिण कल्प परमाणे चालो ।
 इण कल्प मे पाप म सरखो कोइ, आ सरखा सेठी कर भालो रे ॥ ३१ ॥
 करण जोग विगटावण अग्यांनी, करें साध रा कल्प री वात ।
 जे जे कल्प तिथंकर बांध्यो, तिणमे पाप नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 तीथंकर कल्प बांध्यो तिण माहे, पाप हुवे तो कल्प छे भूंडो ।
 तिण कल्प तणी कोइ आगना देसी, ते पिण जावक वूडो रे ॥ ३३ ॥
 जे मोटा पुरुषां रो कल्प बांध्यो छें, तिणमें पाप कहें ते पापी ।
 ते वूड गयो मानव भव पाए, वीरनो वचन उथापी रे ॥ ३४ ॥

तीर्थकरे कल्प बांध्यों छें तिणरी, तीर्थकर आगना दे आप ।
 त्यांरी आग्या नें कल्प में पाप हुवें तो, किणरी आग्या नें कल्प निपाप रे ॥ ३५ ॥
 साध नें आगना दे साध रा कल्प री, त्यांरी निरवद भाषा जाणो ।
 निरवद भाषा सूं निश्चें हुवें निरजरा, तिणमें संका मूल म आणो रे ॥ ३६ ॥
 साधां तो सावद्य सगलोइ त्याग्यो, त्यारें पाप रो नहीं आगार ।
 त्यांरा कल्प में आगार पाप तणो हुवें, तो निश्चें नही अणगार रे ॥ ३७ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मइथुन परिग्रह, इत्यादिक पाप थानक अठारें ।
 ते सेव्यां सेवायां नें भलो जाण्या, तिणमें धर्म नही छें लिगारे रे ॥ ३८ ॥
 जे जे किरतब कीघाई पाप छें, तो कराया अणमोघ्यांइ पाप ।
 इणमेई घोचो घाले अग्यांनी, श्री जिण वचन उथाप ॥ ३९ ॥
 कीघांइ पाप करायांइ पाप, अणमोघ्यां पिण हुवें पापो ।
 इण माहें संका मूल म जाणों, श्री जिण भाख्यो छे आपो रे ॥ ४० ॥
 साधु रो कांम करे कोइ श्रावक, श्रावक रो कांम करे जो साध ।
 यां दोयां नें श्री जिण आग्या नाहि, या दोयां रे नही समाध रे ॥ ४१ ॥
 कोइ श्राविका कांम करे साधु रो, श्राविका रो करे साधु कांम ।
 यां दोयां नें पिण जिनाग्या नाहि, वले धर्म नही छे ताम रे ॥ ४२ ॥
 कोइ श्राविका साधु रो पेट मसल नें, साधु नें जीवां बचावे ।
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचंमी, साधु नें बाई साता उपजावे रे ॥ ४३ ॥
 वले कांटो काढे बाई साधु रा पग थी, फांटो काढे आंख्यां थी बारे ।
 इत्यादिक साधु रो कांम बाई करे तो, तिणनें जिनाग्या नही लिगारे रे ॥ ४४ ॥
 श्राविका साधु रो कांम करे तिम, श्रावक करे साधवियां रो काम ।
 यां दोयां नें पिण जिण धर्म नांही, जिनाग्या नही छे ताम रे ॥ ४५ ॥
 साधवी रो पेट मसल नें श्रावक, साधवी मरती नें बचावे ।
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचंपी, साधवी नें सांता उपजावे रे ॥ ४६ ॥
 साधवी रो कांटो श्रावक पग थी काढे, फांटो काढे आंख्यां बारे ।
 इत्यादिक साधवी रो करे कांम श्रावक, जिनाग्या नही लिगारे रे ॥ ४७ ॥
 श्रीजिण पाल बांधी ते भांगे, तिणने साधु तो न कहे धर्म ।
 केई धर्म बतावें भेषधारी भागल, ते तो भूला ग्यानी भर्म रे ॥ ४८ ॥
 जे जिनाग्या बारे धर्म कहें त्यां, जिनाग्या दीवी छें भागो ।
 एतो उधी श्रद्धा रा मूढ मिथ्याती, त्यां पहर विगाड्यो सांगो रे ॥ ४९ ॥
 साधु साधवी नें श्रावक जीवां बचावे, अथवा वले साता उपजावे ।
 अरिहंत भगवंत कह्यो तिण रीते, कर्मा री कोइ खपावे रे ॥ ५० ॥

अरिहंत भगवंत री आग्या लोपे, करे साधु साधवियां रो कांम ।
 तिण माहिं धर्म कहे भेषघारी, ते तो यू ही बके बेफांम रे ॥ ५१ ॥
 संवत अठारे वरस बयाले, असाड विद एकम सोमवार ।
 साधु साधवी तणो कल्प ओलखायो, नाथ दुवारा सहर मकार रे ॥ ५२ ॥



ढाल : ५

ढुहा

केई जेंनी नांम घराय नें, वांचें सूतर सिद्धंत ।
 पिण सवलो न सूके तेहनें, उंधा उंधा अर्थ करंत ॥ १ ॥
 त्यामिं केई उचाडे मस्तकें, केई पोतीया मस्तक वंव ।
 ते वचन उयापें वीर ना, ते होय रह्या मोह अंव ॥ २ ॥
 ते साघ उयापण सांतरा, बोलें आलमंपाल ।
 नांम लेइ सूतर तणों, देवे अणहुंतो आल ॥ ३ ॥
 ते चवदे उपगरण कहे छे साघ रे, इधकों राखणो कहे छें नाहि ।
 इधको राखें छें तेहनें, न गिणे सावां तणी पांत मांहि ॥ ४ ॥
 एहवी उंधी करे छें परूपणा, घणा लोकां रें मांय ।
 सुघ सावां सूं भिडकावीया, कर कर कूडी वक्रवाय ॥ ५ ॥
 उपगरण इधकां रो नांम ले, सुघ सावां ने दीयां छे उयाप ।
 वले वीर वचन उयापनें, कर रह्या मूढ विलाप ॥ ६ ॥
 श्री वीर वचन सतमेव छें, त्यानें उयापजों मत कोय ।
 एक वचन उयापें जांण नें, तो अनंत संसारी होय ॥ ७ ॥
 भंड उपगरण कह्या छे साघ नें, ते वीर गया छे भाख ।
 चित्त लगाय ने साभलो, तिणरी सूतर में छें साख ॥ ८ ॥

ढाल

[पाखंड वधसी आरे पाच मे रे]

उपगरण उगणीस तो लगता कह्या रे, दसमां अंग दसमां अघेन मांय रे ।
 ते नामें परनामिं कह्यां छे जूजूआ रे, सांभलों एकमना चित्त ल्याय रे ।
 उपगरण भाख्या छें भगवंत साघ ने रे* ॥ १ ॥
 भोजन भड नें वले पातरा रे, संग्रह सबद में तीन पातरा जांण रे ।
 जो तीनां पातरा तणी संका पडे रे, तो तीनां सूतरां सूं करों पिछांण रे ॥ २ ॥
 तीन पातरा कह्यां सूतर बवहार में रे, दूजा उदेसा मे जिणराय रे ।
 वले पातरा कह्यां छें तीन नसीत में रे, उदेसा अठारमां रे मांय रे ॥ ३ ॥
 भंड कह्यो छे ते माटी तणों रे, ते उचारादिक रे आवे छे कांम रे ।
 तिणरों कांम पडे छे अचाचूक रो रे, तिण सूं भड कह्यो छे तिणरों नाम रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भोली कही छें पातरा बाधवा रे, पाय केसरीया पातरा पडिलेहण जाण रे ।
 पाय ठवणच ते कह्यो भंडल्यो रे, तीन पडिला कह्या छें ते परमाण रे ॥ ५ ॥
 रसतांन गोछो नें तीन पिछोवडी रे, रजोहरणों नें चोलमटों कह्यो ताम रे ।
 मुहपती चाली छें मुख बांधवा रे, पायपुछणो कह्यो विछावण कांम रे ॥ ६ ॥
 पायपुछणादि कह्यो तेहमें रे, आदि मांहे उपगरण छें अनेक रे ।
 ते सूतर जोय जोय परगट कळं रे, सांमलजों भवीयण वांण ववेक रे ॥ ७ ॥
 पातरा लूहवा नें चाल्यों लूहणो रे, दसवीकाल्त्रि पांचमा मांहि रे ।
 गलणों कह्यो छे पांणी छंणवा रे, कल्प सूतर में जोवो ताहि रे ॥ ८ ॥
 बांह परमाणें डांडो नें वले लाकडी रे, पगे कादो लूहवा नें कही खपाट रे ।
 वांसादिक नी पिण सूइ कही रे, नसीत रे पेंहलें उदेसे पाठ रे ॥ ९ ॥
 सूत नी डोरी नें वले रासडी रे, चिलमिली आडी बांधवा जाण रे ।
 ते नसीत सूतर मांहे जिण कही रे, पेंहलें उदेसें में जोय करो पिछांण रे ॥ १० ॥
 डोरा चाल्या छे कपडो सीववा रे, ते कह्या छे सूतर आचारंग मांय रे ।
 ते पिण उनमान जाण नें राखणा रे, तिणरी संका मत राखो कांय रे ॥ ११ ॥
 दोय वार सुच लेणो कह्यो खंडीया थकी रे, नसीत रे चोथा उदेसा मांहि रे ।
 ते खंडीया तो गिणती में दीसें नहीं रे, जीत ववहार सू जांणे लेसी ताहि रे ॥ १२ ॥
 आज्या रे च्यार उपगरण इधका कह्या रे, कांचूओ जांधीयो पिछोवडी एक रे ।
 वले साडी मांहे कपडो इधको कह्यो रे, वेतकल्प आचारंग लीजों देख रे ॥ १३ ॥
 साठ वरसा में हूआं नें थिवर कह्यो रे, त्यांनें उपगरण इधका वखेख रे ।
 ते ववहार सूतर उदेसे आठमें रे, संका पडें तो लेजो देख रे ॥ १४ ॥
 छत्तवा कह्यो छे ते तो छत्तरडो रे, ते कंबलादिक नों कर राखे ताम रे ।
 ते राखें छें सी तापादिक टालवा रे, ओर मूतलब रो नही छे कांम रे ॥ १५ ॥
 सरीर परमाणें डांडो कल्पें छें तेहनें रे, माटी नो भंड कल्पें छे ताहि रे ।
 ते राखे वडी नीतादिक कारणे रे, वले मान्नीयों राखें इधक सवाय रे ॥ १६ ॥
 लाठी राखणी कल्पे तेहनें रे, ते कही छें दोड हाथ परमाण रे ।
 ते बेसतां उठतां आचार छें रे, एहवें कारण कही छे जाण रे ॥ १७ ॥
 पाटली कही दीसें बेसवा भणी रे, गरदा नें वायादिक हुवेती जाण रे ।
 रोग उपजतो जांणी नें कही रे, सूतर सूं कर लेजों परमाण रे ॥ १८ ॥
 वस्त्र इधको कल्पें कह्यो थिवर नें रे, मसतकादिक बांधवा रे कांम रे ।
 रोग वधतो जांण्यों तिण सूं कह्यो रे, चोखा रहता जांण्या परिणाम रे ॥ १९ ॥
 वडी नीतादिक रो कारण वेगो पडें रे, वारे जांणो पडतो जांणे अकाल रे ।
 तिण सूं चिलमिली कही दीसें छें थिवर ने रे, आडी बांधेनें दीये आबाधा टाल रे ॥ २० ॥

चर्म नें चर्म तणी वले कौथली रे,
 ए पिण कहां बायादिक टागवा रे,
 ए इयारें उपगरण इयका छें थिवर ने रे,
 कहां छें संयम थिग् रहवा भणी रे,
 नीस उपगरण सावु रे मूतर थी कहां रे,
 इयारें उपगरण थिवर ने कहां रे,
 खैल करवाने अवस चाहिजे खेलीयो रे,
 एहवा उपगरण राखें ते आदि सबद में रे,
 वले उपगरण मूतर माहें नीकले रे,
 वीर वचनां नें कुग उयामसी रे,
 केड मूड मिय्याती ते वक्रवोकरे रे,
 चवदें उपगरण सू इयका राखें तेहने रे,
 मूतरां री तो पृरी समक पडे नहीं रे,
 चवदें उपगरण सू इयका राखें तेहने रे,
 उपगरण चवदें सू तो इयका कहां रे,
 ने वचन उयापे वूडा वागडा रे,
 त्यां तीयंकर उयाय्या छें तीन काल ना रे,
 वले मूतर उयाप्या भगवंत माखीया रे,
 तीन काल रा अरिहंत ने सावां भणी रे,
 ने कर्म वाचे नें वूडा वागडा रे,
 घणा मोलां नें मिडकाया नुव सावा थकी रे,
 ते पेट मरा अन्हाखी पापीया रे,
 त्यां घणा लोकां नें बोया पापीया रे,
 तांण करे चवदें उपगरण नी रे,
 ते मूतर रा वचन न मांनें पापीया रे,
 थां पीड्यां खन बाळ दीयां मावां भणी रे,
 केड मूड मिय्याती जीव इम कहें रे,
 पातां पिण साव नें नहीं राखगा रे,
 चवदें उपगरण सू इयका नहीं राखगा रे,
 उपगरण इयका राखे ते साव निश्चें नहीं रे,
 एहवी भूठी भूठी करे पक्ष्यणा रे,
 त्यांनें सुव सावां सू तो मिडकावीया रे,

चर्म तणी वले कटकों जाण रे।
 सरीरादिक कारण जाण पिछाण रे ॥ २१ ॥
 गरुडपणा तणी वय जाण रे।
 तिग माहें संका मूल म आण रे ॥ २२ ॥
 आरज्या रे उपगरण इयका च्यार रे।
 मूतर सू जोय कीयां छे न्यार रे ॥ २३ ॥
 पायपुछ्यादि सबद मे जाण रे।
 अलमात्र राखें उनमान परमाण रे ॥ २४ ॥
 ते पिण कर लेणों परमाण रे।
 ओर कर लेणा साचा जाण रे ॥ २५ ॥
 मूतर अरय तणा अजाण रे।
 सुव साव न सरवे मूड अयाण रे ॥ २६ ॥
 वले मूतरां रा अर्य मरोड मरोड रे।
 मरत्रे छें तीयंकर ना चोर रे ॥ २७ ॥
 ते मूतर में भाव गया भगवान रे।
 त्यांरा घट माहें पुरी घोर अयान रे ॥ २८ ॥
 तीन काल रा दीवा साव उयाप रे।
 मत वांवरण नें कीवी खोटी थाप रे ॥ २९ ॥
 दीयां अयानी अछतो आल रे।
 त्यारे भव भव में होसी घणों जंजाल रे ॥ ३० ॥
 चवदें उपगरण रो ले ले नाम रे।
 त्यारे एकंत मत वांवरण रो कांम रे ॥ ३१ ॥
 ने पिण मांनी छें तिणरी बात रे।
 सुव सावां सू पडवजीयो मिय्यात रे ॥ ३२ ॥
 मुमता आणे नें काठें नहीं निकाल रे।
 कर कर भूठी मूड भ्रवाल रे ॥ ३३ ॥
 साव नें लिखणों कल्पें नाहि रे।
 इम कहें छे घणा लोकां रे माहि रे ॥ ३४ ॥
 पांता राख्यां तो उपगरण इयका थाय रे।
 एहवी उंची पक्षे लोकां माहि रे ॥ ३५ ॥
 घणा लोकां नें दीयां उजोय रे।
 परभव सू तो मूल न डरीयो कोय रे ॥ ३६ ॥

लिखणो चाल्यो छें सुघ साधां भणी रे, तिणरी छें सूतर माहि साख रे।
 तिणरी संका कोइ मत आणजो रे, भगवंत आगम में गया भाख रे ॥ ३७ ॥
 आचार्य री चाली छें आठ संपदा रे, तिण माहि लिखणों कह्यो साख्यात रे।
 दसासुतखंध सूतर जोय निरणो करो रें, छोड दो भवीयण भूठ मिथ्यात रे ॥ ३८ ॥
 वले प्रश्न व्याकरण में लिखणों चालीयो रे, साच बोलें ज्यूं लिखणों साच रे।
 दूजे संवर ते अघेन सातमो रे, संका काढो ते सूतर बांच रे ॥ ३९ ॥
 वले नसीत सूतर पुरों हुवे जठे रे, तिहां पिण लिखणों चाल्यो छें ताम रे।
 वले नंदी सूतर मे लिखणों कह्यो रे, नरकादिक अलंकार चित्राम रे ॥ ४० ॥
 लिखणों चाल्यो तो लेखण राखणी रे, स्याही आदि दे रंग राखणी रे।
 नालेरी आदि स्याही गालण नें राखणी रे, पाटी पाटला पांना बांधण रे कांम रे ॥ ४१ ॥
 पांना राखे ते ग्यांन रे कारणे रे, पांना रा उपगरण छें अनेक रे।
 त्यां पांना तणा जतन करवा भणी रे, मेणीयादिक राखें वले वशेख रे ॥ ४२ ॥
 पांना विण ठीक किसी आचार री रे, पांना विण किम पाले आचार रे।
 पांना तणी पूरी परतीत छे रे, आंजूणा पाचमा काल मभार रे ॥ ४३ ॥
 घूर सूं तो पांना लिख्या आचारीया रे, तिणसूं पाना री छे परतीत रे।
 अणाचाख्यां रा लिख्या जो सूतर हुवे रे, तो सूतर पाठ हुवे विपरीत रे ॥ ४४ ॥
 जिण सासण चालसी आरे पांचमे रे, तिणमे मत जाणों कोइ सक रे।
 जो आचार सरधा मे संका पडे रे, जब पांना जोय ने हुवे निसंक रे ॥ ४५ ॥
 साध नें लिखणों निषेधे पापीया रे, त्यांरी भिष्ट हुइ छे सुघ नें बुध रे।
 ते यूंही बूडे छे अन्ह्याखी थका रे, कर कर खोटी परूपणा विरुध रे ॥ ४६ ॥
 सरधा नें आचार थकी भिष्टी हूआं रे, त्यां खोटां घाली सूतरा मभार रे।
 त्यां खोटा नें समदिष्टी जथातथ जाण ने रे, कर वीधा दूध पांणी ज्यूं न्यार रे ॥ ४७ ॥
 साधु रा उपगरण नें लिखणा तणी रे, जोड कीधी नाथदुवारा सहार मभार रे।
 समत अठारे छपना वरस मे रे, फागुण विद छठ सनीसरवार रे ॥ ४८ ॥

रत्न : १२

पोतिया बन्ध री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया, उवभ्राय सगला साव ।
 मुगत नगर नां दायका, ए पांचूं पद आराव ॥ १ ॥
 ए पांचूं पद वादे भाव सूं, पातक दूर पलाय ।
 शिव रमणी वेगा वरे, जनम मरण मिट जाय ॥ २ ॥
 केइ अग्यानी इम कहे, इम बांधां नही जिण धर्म ।
 उलटो लागे अविनो आशातना, तिण सूं बंधे पाप कर्म ॥ ३ ॥
 पेहला वादे अरिहंत नें, पछें वादे सिद्ध भगवान ।
 तिण सू लागे सिद्धां री आशातना, एहवा करे अग्यानी तांन ॥ ४ ॥
 वले सर्व सावां ने बांधां थकां, आ पिण न लागे ठीक ।
 बडा साधु हुवे तेहनें, छोटा किम बंदनीक ॥ ५ ॥
 इम कहि कहि भोला लोक ने, सका घाले घट मांय ।
 पांचूं पद वांदण तणी, पाडे मोटी अंतराय ॥ ६ ॥
 सिद्धा पेहली अरिहंत ने वांदणा, सिद्धां पेहली अरिहत रा नांम ।
 सूतर शाख दे वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ७ ॥

ढाल

[धोज करे सीता सती रे]

पेहली अरिहंत रा गुण करे रें, पछे करे सिद्धां रा गुण ग्राम रे । सुगुण नर ।
 तो बधे तीथंकर गोत तेहने रे लाल, जो आवे उतकष्टो रस तांम रे ॥ सुगुण नर ॥
 बांदो पांचू पद भाव सूं रे लाल* ॥ १ ॥
 ए ग्याता सूतर रे अघेन आठमें रे, वीसां बोलां रो विस्तार रे । सु० ।
 सिद्धां पेहली अरिहंत रा गुण कीया रे, ते जीवो आंख उघाड रे ॥ सु० बां० २ ॥
 सिद्धां पेहलां अरिहत ने बांधियां रे, कहे न हुवो विने मूल धर्म रे ।
 तौं उ बीस बोल गुणसी जदी रे, उणरे लेखेइ बंधसी उणरे कर्म रे ॥ ३ ॥
 इम कह्यां संवली सूमे नही रे, त्यारा घट मांहे गूढ मिथ्यात रे ।
 ते गुधू सरिषा होय रह्या रे लाल, त्यारे दिवस तिकाइज रात रे ॥ ४ ॥
 जब केइ कहे पांचूं पद तणा रे, लगता काढो सूतर में नांम रे ।
 तो भे मानां नवकार नें रे लाल, तो सुणी राखे चित्त ठाम रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया रे, उवभाय सगला साव ताहि रे।
 ए पांचूं पद लगता कहा रे लाल, चंदपनत्ती सूतर मांहि रे ॥ ६ ॥
 इरियावही कहेनें काउस्सग ठावणो रे, पारणो कहेनें नमोकार रे।
 दसवेकालिक अवेन पांचमें रे लाल, तेराण्मीं गाथा मभार रे ॥ ७ ॥
 वले आवसग सूतर विपें कह्यो रे, लगतो पांचूं पदां नें नमस्कार रे।
 त्यामें पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे, ते जोय करो निस्तार रे ॥ ८ ॥
 वले आजातना टालण तणा रे, घणा वोल कहा जिणराय रे।
 त्यां पेंहली अरिहंत सिद्ध पछे कहा रे, ते पिण आवस्सग मांय रे ॥ ९ ॥
 सावु समवे वादे सब साव नें रे, ते पाठ छें आवस्सग मांय रे।
 तिगरी वुववंत करजो विचारणा रे लाल, जोए सूतर रो न्याय रे ॥ १० ॥
 जे पांचूं पद लगता मानें नही रे, त्यां काउस्सग दीवों उत्थाप रे।
 त्यां कीत्री आजातना अरिहंतनी रे लाल, त्यांरे जाणजों जाडा पाप रे ॥ ११ ॥
 च्यार मंगलीक कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध सावु धर्म रे।
 तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १२ ॥
 च्यार उत्तम कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध सावु धर्म रे।
 तिहां पिण पेंहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १३ ॥
 च्याहं सरणा लेणा कहा साव ने रे, अरिहंत सिद्ध साव धर्म रे।
 त्यांनें पेंहलों सरणो अरिहंत नों कह्यो रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १४ ॥
 च्यार मंगलीक च्यार उत्तम छें रे, वले च्याहं शरणा कहा ताहि रे।
 तिहां पेंहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे लाल, ते पिण आवस्सग मांहि रे ॥ १५ ॥
 सिद्धां पेंहली अरिहंत रो नाम छे रे, सूतर में जायगां अनेक रे।
 संका म घालो लोकां भणी रे, छोड दो कूडी टेक रे ॥ १६ ॥
 दोनूं टंका साव पडिक्कमणो करे रे, ते पडिक्कमणो आवस्सग सूत रे।
 ते आवस्सग सूतर मानें नहीं रे, ते जिण सासन में कपूत रे ॥ १७ ॥
 साव आवस्सग सूतर वांच्यां विनां रे, जो वांचे ओर सिद्धांत रे।
 नसीत उद्दें उगणीस में रे लाल, चोमासी दंड कह्यो भगवंत रे ॥ १८ ॥
 ए पडिक्कमणो आवस्सग सूतर छे रे, नित करणो सावु नें दोय वार रे।
 ते नें कीयां विरावक जिण धर्म नों रे, जोवो अनुयोग दुवार मभार रे ॥ १९ ॥
 आगे सूतर भण्या सावु साववी रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे।
 ते सामायक सूतर आदि दे रे, ते सामायक छे आवस्सग रो नाम रे ॥ २० ॥
 केइ आवस्सग मोलो कही रे, जावक दीवों उत्थाप रे।
 ते डरे नही भूठ वोलता रे, त्यांरे भव भव में होती संताप रे ॥ २१ ॥

दोनू टकां आवस्सग कीयां रे, टले करमा री छीत रे ।
 जो आवे उतकण्टो रस तेहनें रे, तो बंधे तीथंकर गोत रे ॥ २२ ॥
 ए ग्यातारो आंठमां अघ्येन मे रे, बीस बोलां में इग्यारमों बोल रे ।
 जे आवस्सग सूतर मानें नहीं रे, त्यारे पूरी जाणजो पोल रे ॥ २३ ॥
 नमस्कार लगतो पाचू पद भणी रे, ए माने नहीं किण न्याय रे ।
 जो साचा हुवो-तो सूतर में-बताय दो रे, नहीं तो-मत-करो कूडीं वकवाय-रे ॥ २४ ॥
 नमस्कार लगतो पांचू पद भणी रे, कीघां कहे अविनों होय रे ।
 एहवी ऊंठी करें पळपणा रे लाल, पिण पोते अविनां री खबर न कोय रे ॥ २५ ॥
 देव अरिहंत गुर साधुजी रे, ए चोडे सूतर रो न्याय रे ।
 गुर बाजे श्रावक थकां रे, ओ प्रतख मांड्यो अन्याय रे ।
 ते श्रावक नहीं भगवान रा रे ॥ २६ ॥
 ते चेला चेली करता फिरे रे, श्रावक नांम घराय रे ।
 भोला नें भरमाय नें रे, तिकखुता सूं बंदावे पाय रे ॥ २७ ॥
 आगे श्रावक हुआ भगवान रा रे, आणद आदि अनेक रे ।
 ते घर में थकां पडिमा बुहा रे, पिण चेलो न कीघो एक रे ।
 ए साचो मत जिणराज रों रे ॥ २८ ॥
 ते पडिमा बुहा जव कीघी गोचरी रे, आपणी न्यात में जाय रे ।
 पिण ओर कुल में कीघी नहीं रे, जोवो दसासुतबंध उपासग दसा मांय रे ॥ २९ ॥
 चेला चेली करतां फिरे रे, घणा कुल री रोटी खाये मांग रे ।
 आगे श्रावक हुआ भगवान रा रे लाल, एहवो किण ही न काढ्यो दीसे सांग रे ॥ ३० ॥
 अंबड संन्यासी रे चेला सातसो रे, ते रीत संन्यास्यां री जाण रे ।
 पछे समझे श्रावक हुआ रे, इणरी म करजो कोइ तांग रे ।
 ते रीत संन्यास्यां री मूलगी रे लाल ॥ ३१ ॥
 त्यां संन्यासी थकां चेला कीयां रे, ते कुल री रीत परमाण रे ।
 त्यां सांग न पलट्यो मूलगो रे लाल, तिणरी बुववंत करजो पिच्छांग रे ॥ ३२ ॥
 श्रावक श्रावक ने नमें रे, वले नेंहत जीमावे च्यांरु आहार रे ।
 त्यांनें अरिहंत री आग्या नहीं रे लाल, ए लौकिक रो व्यवहार रे ॥ ३३ ॥
 साधु साधवियां नीं परे रे, श्रावक श्रावका री थापी रीत रे ।
 ते पिण रीत चाले नहीं रे, यारे लेखेई ए अवनीत रे ॥ ३४ ॥
 श्रावक वेसैं आंगणे रे, श्रावका वेसैं पाट रे ।
 यांरो विनों मारग यां उत्थापियो रे, त्यारे लेखेई होसी भूजे घाट रे ॥ ३५ ॥

बले श्रावकं वादे श्रावकं भणी रे, यारे लेखे जा उंघी रीत रे ॥ ३३ ॥
 यारे लेखे यां विनों जत्यापियो रे, ते चिहूँ गति होती फगीत रे ॥ ३४ ॥
 ए विनों विनों कर रह्या रे, पिण विनां री खदर न कोय रे ॥ ३५ ॥
 त्यांसूँ लेखो कीयां तो लडपडे रे लाल, त्यानें किम आणीजे ठाय रे ॥ ३६ ॥
 नोकार री कुणसी चली रे, यां उयाप्यां बोल जनेक रे ॥ ३७ ॥
 ते थोडासा परगट कहे रे लाल, ते सुणजो आण वदेक रे ॥ ३८ ॥

ढाल : २

दुहा

याने छत्ता साघ सूके नही, घट मे घोर अंघार ।
 पोथा पांता बांच ने, भूला भर्म गिवार ॥ १ ॥
 वले केइ अग्यांनी इम कहे, कठे अवारु साघ ।
 ते भूटा थका बकवोकरें, त्या परमारथ नहीं लाव ॥ २ ॥
 प्रतख अरि पांचमें, साघ कहा जिणराय ।
 सांसो हुवे तो देख लो, सूतर भगोती मांय ॥ ३ ॥
 साघ हुंता तो सूतर छे, जेन जतीको वेस ।
 यांहीज साघु देख लो, ओहीज आरज वेस ॥ ४ ॥
 जेवंतो जिण धर्म छे, आंघा करे अघेर ।
 छेहूडा सूधी चालसी, तिण में म जांगो फेर ॥ ५ ॥
 कुमती चालणी सारीखा, त्याने किहां लगे उपदेस ।
 सार सार तो गेर दे, ग्रहे तूंतडा केस ॥ ६ ॥
 एक साव नें उयपे, तिणरें बधे धणो संताप ।
 तो घणा साघा नें उयपे, तिणरें पोते बोहला पाप ॥ ७ ॥
 जे देवालियो हुवे ते इम कहे, आज नही साहुकारा री रीत ।
 ज्यांसूं पोते संजम पले नही, ते उतारे साघां री परतीत ॥ ८ ॥
 साहुकार होसी तिके, छत्ता दिखावसी साह ।
 ज्यू साघुपणो सुघ पालसी, ते खरो दिखावसी राह ॥ ९ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती मूरख थकां, श्रावक श्राविका नाम धराय ।
 ते कुण कुण बोल उथापिया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[बे बे-मुनिवर वहरश पागुच्चा रे]

त्यां समाई पडिकमणो उथापियो रे, वले दशमां व्रत ने दीयो उथाप रे ।
 वले पोसो उथाप्यो व्रत इग्यारमो रे, त्यारे होसी परभव में घणो सताप रे ।
 त्याने श्रावक मत जांगो भगवानं रा रे* ॥ १ ॥
 सुघ आचारी साघा ने माने नही रे, तिणथी भावसूं दांन दीयो नही जाय रे ।
 इण लेखे व्रत उथाप्यो वारमो रे, वले साघु वांघण रा सूंस दिराय रे ॥ त्या०२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बले व्रत उथाप्यो मूरख आठमों रे, तिणमें अर्थ विनपाप करण रा त्याग रे ।
 ते पोतें पिण एहवो त्याग करें नहीं रे, ओर करें त्यारो पाडे वेंराग रे ॥ ३ ॥
 जे मागे नें खाए रोटी पार की रे, तो ही अनर्थ पाप करण आगार रे ।
 त्यांनैं वादे अग्यानी सतगुरु जाण नें रे, त्यां दोयां रो विगड गयो जमवार रे । ४ ॥
 बले समाई पडिक्कमणो करे नहीं रे, नहीं पोसो करवा सूं त्यारो पेम रे ।
 बले सुघ आचारी साधु सूफे नहीं रे, त्यां विकलांनैं श्रावक कहीजें केम रे ॥ ५ ॥
 उतारे साधा री मूरख आसता रे, बले कनें जातां नें राखे पाल रे ।
 जाणे खोटा सरधेला मो भणी रे, आ चोडें रेणा देवी री चाल रे ॥ ६ ॥
 मिनकी फिरे छे घर घर बारणे रे, तिणरी ऊंदरा ऊमर खोटी दिष्ट रे ।
 ज्यूं समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें संका घाले ने करदे भिष्ट रे ॥ ७ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिणरे संका घाले नें पाडे धडक रे ।
 जद केयक भोला सामायक छोड दे रे, तब पामें अग्यानी मन में हरष रे ॥ ८ ॥
 सामायक पचखण री विघ जाणे नहीं रे, बले पालण रो जाणें नहीं विचार रे ।
 पचखण पालण री विघ जाणयां विनां रे, संका घालण ने पापी त्यार रे ॥ ९ ॥
 समाई करे त्यारो मन भांग दे रे, बले भिष्ट करण रो करे उपाय रे ।
 परिणांम पेलारा पारण सांतरा रे, दोष बत्तीस सुणाय सुणाय रे ॥ १० ॥
 ए समाई रा दोष बत्तीस कहे तिके रे, किण ही सूतर में दीसैं नाही रे ।
 तो ही मान्या सामायक ने उथापवा रे, त्यारि घोर अंधारो छे षट मांही रे ॥ ११ ॥
 त्यांरी परतीत नें संगत करे तेहनें रे, बत्तीस दोषण देवे सीखाय रे ।
 जाणे रखे समाई पडिक्कमणो करे रे, इसडो घडको त्यारि मन मांय रे ॥ १२ ॥
 कोइ समाई पडिक्कमणो करे रे, तिण सूं घरे अग्यानी द्वेष रे ।
 कोइ समाई पोसो करणो छोड दे रे, जब पामें प्रापीडा हर्ष वशेष रे ॥ १३ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, बले वादे सावां ने जोडी हाथ रे ।
 तो भिष्ट परूपे मूरख तेहनें रे, ओ चोडे देखो त्यारो मिथ्यात रे ॥ १४ ॥
 कोइ समाई पोसा रो बंधो करें रे, त्यारो पिण देवे सूंस भंगांय रे ।
 तिण नें कूड कपट केलव करे आपणो रे, बले समाई करवा न देवे ताय रे ॥ १५ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण ने भिष्ट करे बोले आल पंपाल रे ।
 ओछी अकल रा भोला मिनष नें रे, माहे न्हांखण नें चोडे मांड्यो जाल रे ॥ १६ ॥
 केइ मागे नें खाए रोटी पारकी रे, ते बोले अग्यानी एहवी वांण रे ।
 म्हे करां सामायक पोसा किण विघे रे, म्हांरो नहीं रे मन रो जोग ठिकाण रे ॥ १७ ॥
 यांरी सरधा रा सगला इमहीज बोलता रे, त्यारो बवेक विचार नहीं छें सुघ रे ।
 त्यां समाई पोसा करणा उथापिया रे, आ भिष्ट हुइ सगलां री बुद्ध रे ॥ १८ ॥

कैइ मागे ने खाए रोटी पारकी रे, तो ही सुख-न रहे त्यारा परिणाम रे ।
 त्यांसूं एक घडी पिण मन बस हुवे नहीं रे, ते घर छोडी नें-खोटी हुवा बेकाम रे ॥ १६ ॥
 आगे हुवा मोटा मोटा राजवी रे, बले सेठ सेनापती आदि पिछाण रे ।
 त्यांरा घर में आरभ नें परिग्रहो अति घणो रे, त्यां पिण कीवी सामायक समता आण रे ॥ २० ॥
 त्यांरे राजविणज रा विभा था घणा रे, बले तरह तरह रा हूता काम रे ।
 त्यां पिण सामायक ने पोसा कीया रे, ते थोडासा कहे ब्ताळं नाम रे ॥ २१ ॥
 राय उदाइ हूतो मोटको रे, ते सोले देसां री करतो राज रे ।
 तिण समाई पोसा पडिकमणा कीया रे, छोडे सगलाइ घर रा काज रे ॥ २२ ॥
 अदीनसत्तु राजा रो डीकरो रे, कुमर सुबाहू तिणरो नाम रे ।
 पांचसो राप्या हूती तेहने रे, तिण कीवी समाई सुख परिणाम रे ॥ २३ ॥
 कुमर सुबाहु आदि दस जणां रे, ते सगलाई मोटा राजकुमार रे ।
 त्यां सगलां रे पांचसो पांचसो राणियां रे, त्यां कीवी सामायक समता धार रे ॥ २४ ॥
 राय परदेशी हूतो पापियो रे, तिण समके नें लीवा व्रत रसाल रे ।
 उण पिण घर मांहे वेठां थकां रे, कीवी सामायक दोषण टाल रे ॥ २५ ॥
 सुबुद्धी प्रवान आगे समभियो रे, जितशत्रु नामें राजेंद रे ।
 तिण पिण सामायक नें पोसा कीयां रे, ग्याता में भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ २६ ॥
 कासी नें कोशल देस तणा घणी रे, हूता अठारे मोटा राय रे ।
 श्रीवीर निरवांण गया तिण अवसरे रे, त्यां पोसा कीवां था तिण दिन आय रे ॥ २७ ॥
 आणंद आदि दे श्रावक दस हुवा रे, त्यांरा घर में हूतो केडां रो घन रे ।
 हजारं गमें त्यांरे गायां हूती रे, त्यां कीवी सामायक चोखे मन रे ॥ २८ ॥
 वले तुंगीयां नगरी नां श्रावक मोटका रे, त्यांरा घर मांहे घन हूतो परभूत रे ।
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा करे रे, मुक्ति जावा नां दीघा सूत रे ॥ २९ ॥
 इत्यादिक राजा सेठ सेनापति रे, त्यांरो कहतां कहतां नही आवें पार रे ।
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा कीयां रे, त्यां घर मे वेठां पाल्या व्रत धार रे ॥ ३० ॥
 तो घरवार छोडे नें गेहला थकां रे, न करे सामायक मूढ अयाण रे ।
 ते कहवा नें श्रावक वाजें मोटका रे, पिण श्री जिण धर्म तणा अजाण रे ॥ ३१ ॥
 श्रावक रा वारे व्रतां मांहिलां रे, व्रत उयाप्या मूरख पांच रे ।
 बाकी सात व्रतां मे मन पचखे नही रे, कर्मा वस कर कर कूडी खांच रे ॥ ३२ ॥
 बले उत्थापी इयांवी नें तस्सुत्तरी रे, बले लोगस उथाप्यों जिण सतूत रे ।
 खवर विना उथाप्यां खामणा रे, त्या दीवा दुरगति जावा ना सूत रे ॥ ३३ ॥
 एक वचन उथाप्यां श्री भगवंत रो रे, उतकटो हलें तो अनंतो काल रे ।
 तो घणा उथापें बोल सिद्धांत रा रे, ते भमसी ज्युं अरट तणी घड माल रे ॥ ३४ ॥

चिरमी नें उडद दोनू देख्या थका रे, भिडके पूर्वीया भगते वगेख रे।
 इण दिष्टाते भरमाया भोला लोक नें रे, ते भिडके साधा नें निजरो देख रे ॥ ३५ ॥
 ते वरत पचखाण करे ते मन विना रे, पिणमनसू तो जावके नही पचखाण रे।
 त्यांरो विकल्पणा री विच परगट कह रे, ते विवरा सुघ सुणजो चतुर सुजाण रे ॥ ३६ ॥

ढाल : ३

दुहा

आप छांदे उबी अकल सूं, काढ्योँ मत विपरीत ।
 त्यां सूंस पचखांण कीयां तिके, सगलाई मन रहीत ॥ १ ॥
 त्यारे सिष्य सिष्या दुआं तिके, राखी उणरी परतीत ।
 ते पिण भूला भर्म में, ते चाले उणहीज रीत ॥ २ ॥
 बडो अंट आगे चलें, पाछे चले कतार ।
 ज्यूं बहुला बूडा वापडा, या बडां बूडां री लार ॥ ३ ॥
 लीधी टेक छटे नही, घट में घोर मिथ्यात ।
 गुधू सरिषा हीय रह्यां, त्यारे दिवस तिकाइज रात ॥ ४ ॥
 कूआ तणो डेडक कूए रंजे, तिण सायर लहर न दीठ ।
 ज्यूं साया री संगत करी नही, त्यानें लागें पाषंड मत मीठ ॥ ५ ॥
 त्यां जिण मारण नही ओल्ल्यो, नही ओलखिया सुघ साव ।
 वले श्रावक विघ समझे नही, यूंही करता फिरें विषवाद ॥ ६ ॥
 जिण वस्तु सू कांम पडे नही, तिणरो पिण न करे नेम ।
 त्यां कुण कुण आगार राखिया, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[जिण धर्म आराधीये ए]

त्यांरा मत मांहे संका मोटकी ए, ते मन सूं न करे पचखांण ।
 परमारथ जाण्या विनां ए, ए बूडा करें करे तांण ।
 भविक जन सांभलो ए* ॥ १ ॥
 मुरगी गाडर वाकरा ए, वले हिरण सूंसा नें गाय ।
 त्यानें मारण तणी ए, मन सूं विरत न कीधी कांय ॥ भ० २ ॥
 वले जलचर थलचर खेचरा ए, वले उरपर भुजपर जाण ।
 यांनि मारण तणो ए, मन सूं न कीयो पचखांण ॥ ३ ॥
 वले मात-पिता सुत बंधवाए, सेंण सगा मित्र विचार ।
 त्यानें पिण मारण तणो ए, मन सूं राख्यो आगार ॥ ४ ॥
 वले इडा जात अनेक रा ए, त्यानें मन सूं मारण रो नही नेम ।
 एहवा मूरखां भणी ए, विकल वादे धर पेम ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

नीड पतंग मनरा माखियां	ए. क्रीडी नाकण लट नें गीडेळ।
मन सूं राख्यां नारणा	ए. त्यां विकलां रे मोटी मोल ॥ ६ ॥
पुडवी पांगी अग्नि नें वाय रो	ए. वले वनस्पती नें तन जांग।
ए छक्राय नें हणवा तगा	ए. मन सूं न कीयां पचदांग ॥ ७ ॥
जीव अनंत छक्राय नें	ए. त्यांनी विवव परकारे छे घात।
त्यांनै हणवा तणी	ए. मन सूं विरत नहीं तिलमाड ॥ ८ ॥
ओर जीव तो जिहांई रखा	ए. गुर री पिय न छोडी घात।
हणवा ने मन मोकली	ए. ए इचरज वाली गद ॥ ९ ॥
देव अरिहंत गुर सावजी	ए. यांनै हणवा रो मन सूं जागार।
इसरोई सूंस कीयां नहीं	ए. त्यांरा जीतव नें विचार ॥ १० ॥
वले चेली चेली आपरा	ए. गुर भाई गुर बहिन पिछांग।
त्यांनैई हणवा तणो	ए. मन सूं न कीयां पचदांग ॥ ११ ॥
मोटी भूळ पांच परकार नां	ए. वले छोटी विवव परकार।
मन सूं दोळग तणो	ए. सगलोई राख्यो जागार ॥ १२ ॥
मोटी चोरी पांच परकार नां	ए. वले छोटी रा भेद अनेक।
ते सगली चोरी मोकली	ए. निय मन सूं न छोडी एक ॥ १३ ॥
देव देवांगणा मिनप मिनपणी	ए. वले तिर्यव तिर्यचणी विचार।
त्यांनै सेवग तणो	ए. मन सूं सगलोई जागार ॥ १४ ॥
जिय माता री कूखे उपनो	ए. वले बहिन देवी आदि जांग।
चेली गुर बहिन नें	ए. मन सूं सेवा रा नहीं पचदांग ॥ १५ ॥
हीरा माणक मोती मूंगीया	ए. सोनो ह्यादिक सर्व घात।
कंकर पत्थर घणां	ए. वले रत्नां री सोले जात ॥ १६ ॥
सर्व परिग्रहो छे सुवजात रो	ए. तीनुई लोक मभार।
ते मन रा जोग नूं	ए. यारे सगलोई जागार ॥ १७ ॥
पान अठारें सेवग तणो	ए. तीनुई लोक मभार।
ते मन रा जोग सूं	ए. जावक नहीं परिहार ॥ १८ ॥
गेंहणां कपडा विवव परकार नां	ए. खावा पिवा री जात अनेक।
फूळ बहु जात रा	ए. यां मन सूं न छोड्यो एक ॥ १९ ॥
मद पिवग मांस खावन तणो	ए. वनस्पती अठारें भार।
जमीकंद सर्व री	ए. मन सूं राख्यो सर्व जागार ॥ २० ॥
हाथी घोडादिक वाहण तणो	ए. घणी जात रा पीठी मरदन।
घूनादिक खेवणो	ए. त्यांनै सगलोई मोकली मन ॥ २१ ॥

सर दह तलाव फोडण तणो ए, दवदे करें जीवां रो संघार ।
 गामांदिक वालण तणो ए, यारे मन सूं सगलो आगार ॥ २२ ॥
 मोटां मोटा वृष बाढण तणो ए, वले कटावणा वाग ।
 घाणी फेरण तणो ए, मन सूं न कीधो त्याग ॥ २३ ॥
 पनरे कर्मादांन में ए, आयो सगलोई विणज व्यापार ।
 तिणरा भेद अति घणा ए, ते सगलोई मन सूं आगार ॥ २४ ॥
 इत्यादिक कुकरम घणा ए, ते तों पूरा कहां न जाय ।
 ते मन सू न पचखिया ए, त्यारे बंधसी कर्म अथाय ॥ २५ ॥
 अर्थे कांम करणो तो ज्यांही रह्यो ए, अर्थ विलां न करणो पाप ।
 ते मन सू न त्यागियो ए, आ खोटा मत री थाप ॥ २६ ॥
 मन सूं तंदुल माछलो ए, अशुभ कर्म उपाय ।
 अंतर महुरत मभे ए, पडे सातमी नरक मे जाय ॥ २७ ॥
 ज्यांरो सदा काल मन मोकलो ए, सगलाई कुकरम मांय ।
 त्यांरो कांडे पूछणो ए, ए चोडे वूडा जाय ॥ २८ ॥
 माठी माठी वस्तु खावा भणी ए, चलता न दीसे परिणांम ।
 तिणमेई मन मोकलो ए, ओ राख्यो अग्यांनी किण कांम ॥ २९ ॥
 आखा जनम में करणा पडे नही ए, माठा माठा अकारज अनेक ।
 ते मन सू न पचखिया ए, आ खोटा मत री टेक ॥ ३० ॥
 एहवा ववेक विकलां भणी ए, पूछा कीजे आंम ।
 अकारज करवा भणी ए, मन मोकलो राख्यो किण कांम ॥ ३१ ॥
 इम पूछ्यां जाव न उपजे ए, जव क्रोध करे घट माय ।
 चरचा करवा थकी ए, मूह टालो दे जाय ॥ ३२ ॥
 कदा लाजां भरता मन पचख दे ए, छोडे खोटा मत री रूढ ।
 इण लेखे यांरा वडवडा ए, सगला हुआ ते मूह ॥ ३३ ॥
 इम कहि कहि ने कितरो कहूं ए, इण मत रो घोर अंधार ।
 समझ पड्यां विलां ए, ए भूला भरम गिवार ॥ ३४ ॥
 त्यां आपो न ओलख्यो आपणो ए, तो ही साधु उत्थापण गूर ।
 भोलां ने भरमायवा ए, कर रह्या फेन फितूर ॥ ३५ ॥
 ते जिण मारग रा धारवी ए, कूडो उठायो घघ ।
 जिण वचन उथाप ने ए, चोडे मांड्यो फद ॥ ३६ ॥
 इम सुण ने नर नारियां ए, छोडो कूडी टेक ।
 साबां री सेवा करो ए, मन मे आंण ववेक ॥ ३७ ॥



ढाल : ४

दुहा

केइ श्रावक वाजे' घर छोडनें, मांगे ल्यावे आहार ।
 पिण न्याय मारग सुभे' नहीं, घट में घोर अंधार ॥ १ ॥
 चेला चेली करतां फिरें, बले साधां ज्यू' रह्या पूजाय ।
 बले खोटी करे छे परूपणा, ते पिण खबर न कांय ॥ २ ॥
 अधर्म करे करावे त्यारे कारणे, तिण ने' बतावे धर्म ।
 कोइ धर्म करे जिण भाषियो, तिणने' कहे छे' अधर्म ॥ ३ ॥
 एहवी ऊंधी करे परूपणा, ते पूरी केम कहिवाय ।
 पिण थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[सल कोइ मत राखो जी]

यांरा कपडा घोवे कोइ गृहस्थी, तिणमें कहे विने' मूल धर्मो रे ।
 एहवी ऊंधी करे परूपणा, भोलां नें पाड्या भर्मी रे ।
 सरघा सुणजो विकलां तणी* ॥ १ ॥
 जब केयक गृहस्थ बापडा, कपडा घोवे जीवां ने मारी रे ।
 तिणनें कहे ओ तो वनीत छे, धर्मी पुरुषां ने साताकारी रे ॥ २ ॥
 ए हिंसा धर्म परूपियो, अभितर री आंख मीचो रे ।
 कोइ चतुर पुरुष होसी तिको, एहवो कांम न करसी नीचो रे ॥ ३ ॥
 यांरा कपडा घोवे तेहनें, निश्चेई बंधसी कर्मो रे ।
 जे धर्म कहे इण कांम में, तिण थाप्यो अधर्म ने धर्मो रे ॥ ४ ॥
 नमस्कार करे पांचूं पद भणी, सीस नमी जोडे हाथो रे ।
 यांनें बांधां पाप लागे कहे, त्यांरा घट माहिं घोर मिथ्यातो रे ॥ ५ ॥
 यांरा कपडा घोवे पांणी आंग ने, तिण ने लाभ बतावे मोटो रे ।
 नोकार गुण्या कहे पाप छे, ओ मत निश्चेई खोटो रे ॥ ६ ॥
 बले जूंवां कडावे गृहस्थ कने, काढणवाला नें मुख थी सरावे रे ।
 विने मूल धर्म कहे तेहनें, ए तो इसडा गोला चलावे रे ॥ ७ ॥
 साधु सूतर लिखे जेपां करी, ते तो ग्यांन बधारण हेतो रे ।
 तिण साधु ने पाप लागे कहे, त्यांरा फूटा अभितर नेतो रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

यारी जूआं काढ्यां तो धर्म कहे, साधु सूतर लिल्यां कहे पापो रे ।
 ते दोनूं विघ बूडे वापडा, कर कर कूड विलापो रे ॥ ६ ॥
 यांने वेसावे गाडे घोडे पीठी ए, करे तस थावर नी घातो रे ।
 तिण वेंसाण वाला ने धर्म कहे, आ ऊंची सरघा साख्यातो रे ॥ १० ॥
 साधु सूतर रा न्याय सूं, जोडें तवन सभायो रे ।
 तिणमें पाप वतावे भूठा थकां, कर कर कूडी वकवायो रे ॥ ११ ॥
 यांने गाडे घोडे वेसाणिया, तिणने धर्म कहे छे अग्यांनी रे ।
 साधु जोड कीयां अघर्म कहे, त्यांने किण विघ कहीजे ग्यांनी रे ॥ १२ ॥
 ए तो अघर्म नें धर्म कहे, धर्म ने अघर्म कहे अन्हाखी रे ।
 त्यांने निश्चे मिथ्याती जिण कह्या, ठाणांग दसमो ठाणो साखी रे ॥ १३ ॥
 यांने थानक देवे असूभ्तो, तिणमे धर्म कहे निसंको रे ।
 त्यां ववेक विकल भोला मिनष रे, लगाया मिथ्यात रा डंको रे ॥ १४ ॥
 थानक दडे लीपे यारे कारणे, वले केलू सारे छांन छावे रे ।
 ते मारे अनता जीवां भणी, तिणमे धर्म वतावे रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक यारे कारणे, जीव छकाय रा हतिया रे ।
 वले धर्म सरघे जीव मारने रे, ते वूड गया त्यांरा मतिया रे ॥ १६ ॥
 यांने आहार पांणी दें असूभ्तो, तिणने कहे निकेवल धर्मो रे ।
 ते भोलां नें समझ पडे नहीं, ते तों भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ १७ ॥
 कहिवा ने कहे त्यां म्हे सूभ्तो, तिणरो पूरो न जाणें विचारो रे ।
 जाण जाण ने लेवें असूभ्तो, ते सांभलजो विस्तारो रे ॥ १८ ॥
 यारे गाम पर गाम थी वीदडी, चौमासा दिक में चाली आवे रे ।
 जब जीव अनेक मरें घणां, तिणमेई धर्म वतावें रे ॥ १९ ॥
 आहार पांणी वस्त्र पात्रादिक, यारे कारणे मोल ले आणें रे ।
 इण विघ वेहरावे असूभ्तो, तिण दातार ने धर्म जाणे रे ॥ २० ॥
 धी - खाड लाडू आदि चोर ने, वहू ले आवे साधु छांन रे ।
 त्यांने आण वेहरावे तेहमें, धर्म निकेवल माने रे ॥ २१ ॥
 ए बात चावी हुवे लोक मे, तो दोनूंई दीसें भूडी रे ।
 चोरी कर ने वेहरायो असूभ्तो, ते तो दोनूं प्रकारे वूडी रे ॥ २२ ॥
 जाये ग्रहस्थ रे घरे गोचरी, जब मांडे फेन वसोषे रे ।
 कहे असूभ्तो मांहरे लेणों नही, माने वेहरायजो सुघ देखे रे ॥ २३ ॥
 साहमें आण दे वरसता मेह में, तिणरो तो न करे टालो रे ।
 घूतवादी करे गृहस्थ ने घरे, एहवो कूड कपट रो चालो रे ॥ २४ ॥

यों इन विष बँहुरता देखे नें, कोई खूबगो काहे जंगो रे।
 जब तो कहे न्हें छां गृह्णी, सेखां जके नूड ख्यांगो रे ॥ २१ ॥
 जो अमुष लेखी गृह्णी थकां, तो गुर किग लेखे बजे रे।
 अँछा जीव रे कारणे, इप्रडो काय करो अजातो रे ॥ २२ ॥
 देव अग्रिहंत गुर सावु निग्रन्थ छें, तो आवक गुर किग लेखे रे।
 मोह निग्र्यात नें नूजा थकां, ते जें मुरर नानुनो न केले रे ॥ २३ ॥
 आहार अमुष बँहुरे जांग नें, त्यारो होमी काँडे नूयो ने।
 बले अमुष दीयां नें बर्न कहे, थे किग मारग गया नूयो रे ॥ २४ ॥
 आवक नें आहार देवें अमूनतो, तिनरो निग ओहीज नूयो रे।
 बर्न जांगे तो पाव अतरनो, ते रहा निग्र्यात नें नूयो रे ॥ २५ ॥
 साधां नें आहार देवें अमूनतो, तिन नें बसावें पातो रे।
 आवक नें देवें अमूनतो, तिन नें क्रीषीं बर्न ती थयो रे ॥ २६ ॥
 साधां नें आहार अमुष बँहुरावियां, पाव कहें तो सत बानी रे।
 बर्न कहें आवक नें अमुष दीयां, आ सरथा कडा नूं जांगी रे ॥ २७ ॥
 साधां नें आहार पांगी अमुष दीयां, पाव लागे ब्रथे बन हूयो रे।
 आवक नें अमुष दीयां बर्न कहे, ओ इप्रडो काँडे छे लोयो रे ॥ २८ ॥
 साधां नें आहार पांगी अमुष दीयां, एकांत पाव निज्यांगो रे।
 ज्यूं आवक नेंई अमुष दीयां, तिखेई बर्न न जांगे रे।
 आवक नें आवकां नगी, का साधी सरथा बगवत रे ॥ २९ ॥
 बर्न जांगे त्यांतिं वांदियां, गुण नें तिकडुता रो पातो रे।
 वडा आवक बजे वरतां करी, ओ मत्र तिखेई नाजे रे ॥ ३० ॥
 यारे लेखेई ए मूला थकां, ते तां छोद्य आवक नें शारे रे।
 इम कहां जाव न जयवें, कर्म तप्य पूज शारे रे ॥ ३१ ॥
 कहे नें घर दार छोड त्यारा हूयां, जब कूर बन्ड कयावें रे।
 छ काय छोडी कहे सर्वथा, बले छ काय छोडी वरतवें रे ॥ ३२ ॥
 ए नूऊ गेले छे दोनू विषें, बले छोड्यो कहे घर बरो रे।
 घर छोड्यो कहे मुख थकी, ते सामलजे विस्तारो रे ॥ ३३ ॥
 तिन घर रो नाम थांनक दीयां, निग नाम दान देवा घर नाडी रे।
 तिन थांनक रे कारणे, विष पणे जीव नारी रे।
 तिन थांनक नें क्रीयां जावरो, ए नोडें वेखी वरवारी रे ॥ ३४ ॥
 छ काय छोडी कहें सर्वथा, तो राज पड्यां काय हारो रे।
 तिहां जीव अनेक मरे घगां, बले विनां जोयां तिन बाले रे ॥ ३५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक पाया के अन्त में है।

बले वेसं गाडे घोडे पोठीए, करे अनंत जीवां री घातो रे ।
 छकाय छोडी कहे सर्वथा, ते चोडे बोलें भूठ साख्यातो रे ॥ ४१ ॥
 बले छांटां में उठे गोचरी, साह्यो आंग दीयो पिंग लेवे रे ।
 तिहां जीवां री हिंसा हुवे घणी, बले बूहारी सूं बूहारो देवे रे ॥ ४२ ॥
 इत्यादिक कामां करतां थकां, विवघ पणे जीव मारे रे ।
 बले छ काय छोडी कहे सर्वथा, ते भूठ बोली जनम बिगाडे रे ॥ ४३ ॥
 इम कहां जाब न ऊज्जे, जब सूवा बोले तिण वारो रे ।
 में छोडी जिती म्हारे विरत छे, बाकी रह्यो आगारो रे ॥ ४४ ॥
 तो ग्रहस्थ छोडी छ काय देस थी, ते पिंग हुवो वरत धारो रे ।
 तिण लेखें तो ऊ श्रावक बडो, तिण बडा नें पगे कांय पारो रे ॥ ४५ ॥
 जब कहे में छ काय छोडी घगी, इण श्रावक छोडी छे थोडी रे ।
 इण श्रावक सूं मां में गुण घगां, म्हाने तिण सूं बांदे हाय जोडी रे ॥ ४६ ॥
 एहवी ऊंधी करे परूपणा, बडा श्रावक नें पगे लगावे रे ।
 इण बात रो प्रश्न पूछियां, ते पिंग जाब न आवे रे ॥ ४७ ॥
 किण ही गृहस्थ संयारो कीयो, च्यांरू आहार दीयां वोसरायो रे ।
 जब यांसूं तो उण में गुण घगां, तिणनें क्यूं नही बांदे जायो रे ॥ ४८ ॥
 गुर रे पचखाण हुवे मोकला, लारे चेलो हुवे इधक वेरागी रे ।
 घगां गुण वाला ने कहे बादणो, तो चेला ने बांदणो पगे लागी रे ॥ ४९ ॥
 चेला ने बांदणी आवे नही, जब करे बडा री थापो रे ।
 ते न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या कूड विलापो रे ॥ ५० ॥
 तो बरतां बडो छे ऊ गृहस्थी, ऊ पिंग श्रावक बाजें रे ।
 आप छोटा छे उण श्रावक थकी, तिण बडा नें बांदता कांय लाजे रे ॥ ५१ ॥
 कदे करे बडा री थापना, कदे करे गुणा री थापो रे ।
 ते बंदणा रा भूखा थकां, ओरां नें डबोय डूबसी आपो रे ॥ ५२ ॥
 एहवा पाखडी लोक में, गृहस्थ थकां गुर बाजें रे ।
 करावे तिकखुत्ता सूं बंदणा, पिंग निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 जिम अरिहंत सिघ नें बंदणा करे, तिमहिज आप बांदवे रे ।
 ए गुण विण ठाली ठीकरा, अरिहंत सिघ रे जोडे किम आवे रे ॥ ५४ ॥
 त्याने तिकखुत्ता सूं बंदणा करे, ते जिण मारा गया भूलो रे ।
 ज्या गुर कीधा गृहस्थी भणी, ते रह्या मिथ्यात में भूलो रे ॥ ५५ ॥
 इम सांभल ने नर नारियां, पाषंड मत निवारो रे ।
 सुघ सावां ने ओलख गुर करो, ज्यूं उतरो भव पारो रे ॥ ५६ ॥

रत्न : १३

निन्द रास

ढाल : १

दुहा

भेषधारी भागलां थकी, पले' नही आचार ।
 वले सरधा पिण त्यांरी बुरी, तिणमे अतंत अंघार ॥ १ ॥
 केइ नाम घरावे साघ रो, पिण वरत न पाले एक ।
 ते भिष्ट थया आचार थी, सेवण लागा दोष अनेक ॥ २ ॥
 ते आचार तणी वातां सुणे, तो लागे अभितर लाय ।
 तलतलट करता थकां, बोले मूंसावाय ॥ ३ ॥
 सुध साघा ने निन्व कहे, वले बोले' फिरता वेण ।
 सिकल विकल बुध बाहिरा, त्यांरा फूटा अभितर नेण ॥ ४ ॥
 त्यांरे सरधा छे निन्वां तणी, ते अरू वरू ल्यो' देख ।
 वले भिष्ट थया आचार थी, त्यां पेहर विगाड्यो भेख ॥ ५ ॥
 मांहोमां निन्व कहे, ते तो' रागा वेषो जाण ।
 लखणा कर ओलखाय दे, ते डाहा चतुर मुजाण ॥ ६ ॥
 त्यांरा टोला अनेक छे जूजूआ, जूइ जूइ सरधा छें तांम ।
 जूइ जूइ करे छे परूपणा, ते पिण साघ घरावे नाम ॥ ७ ॥
 ते आचार में हीणा घणां, वले लोप दीधी मरजाद ।
 साची सूतर री वात मांने नही, कूरो करे रह्या विषवाद ॥ ८ ॥
 ते दोष सेवे छे अति घणां, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोरा सा परगट कळं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[हू वलीहारी जादवा]

अरिहत्त सिघ ने आयरिया, उवभाय नें उत्तम सुध साघ के ।
 मुगत नगर नां दायका, ए पांचू पद ने लीजो अराघ के ।
 रास भणूं निन्वां तणो* ॥ १ ॥
 नमूं बीर सासण घणी, वले नमूं गणवर गोतम सांम के ।
 त्यां मोटां पुरुषां ने नमीया थकां, सीभे मन वछ्त आतम कांम के ॥ २ ॥
 इण दुषम आरे पांचमें, सांग पेहरे दाजे' साघ अणगार के ।
 सरधा त्यांरे निन्वां तणी, वले' छे त्यांरो भिष्ट आचार के ।
 नीचो मत निन्वां तणो ॥ ३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

त्यांरा चेंहन लखण परगट करूं, कोइ म घरजो मन मांहें घेव कें ।
 निरणों कीजों घट भितरें, जे जे कहूं ते निजरां लेजो देख कें ॥ ४ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो जूतों धुरल कें, ते घन उदकें छे थानक रें काज कें ।
 ते दांन लेइ थानक करें, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज कें ॥ ५ ॥
 वले थानक करावण कारणें, अउत तणों लेवें छें माल कें ।
 तिण थानक मांहें रहें, ओ प्रतख जाणों खांपण वालो ख्याल कें ॥ ६ ॥
 लिंगडा लिंगड्यां कारणें, जागां वाधी छें मठ जेम कें ।
 मठवासी ज्यूं मांहें वसें, त्यां विकलां नें साध कहीजे' केम कें ॥ ७ ॥
 आधाकरमी थानक भोगवें, वले मोल रा लीया में रहें छें ताहि कें ।
 वले भाडे लीया पिण भोगवें, त्यांनें निश्चेंइ जाणों निन्वां री पांत माहि कें ॥ ८ ॥
 कोइ मिनप आंतरीयो जूतों धरल कें, ते घर री जायगां नें थानक दे थाप कें ।
 तिण थापीता थानक में रहें, तिण थानक रा घणी होय बेंटा आप कें ॥ ९ ॥
 एहवा थानक भोगव्यां, बुध अकल पत त्यांरी जाय कें ।
 त्यां भेष भांड्यो छें भगवांन रो, ते बूडा साध नांम धराय के ॥ १० ॥
 ए चाला तो पोतें चालवें, कांम पड्यां कपटी होय जाए दूर कें ।
 थानक भायां निमते' कहें, जाणे जाणें ने मूरख बोले कूर कें ॥ ११ ॥
 दडें लीपे साधां रें कारणें, ओडीयां ओडीयां आणें छें गार कें ।
 ते पिण बूड गया बापडा, वले गुर रोइ जनम दीयो छें विगाड कें ॥ १२ ॥
 केइ भेषधारी नें भेषघाख्यां, हाथां दडें लीपें छें गार कें ।
 त्यां भेष भांड्यो भगवांन रों, त्यांनें वादें ते पिण मूढ गिवार कें ॥ १३ ॥
 साध काजे' वादें चंदरवा, वले वाधें पडवा परेच कनात कें ।
 ते पिण बूडे गया बापडा, वले गुर नें मिष्ट कीयां साख्यात कें ॥ १४ ॥
 केलू फेरें साधां रे कारणें, जमीया उखेलें छे जीवां रा जाल कें ।
 नीलण फूलण कुलायता, अनंत जीवां रा छें खंगाल कें ॥ १५ ॥
 छपर करें साध कारणें, वले उपर चढ छावें छें छांन कें ।
 ते गुर नें सेवग बेहूं जणां, भव भव में होसी घणां हिरान कें ॥ १६ ॥
 मुरड न्हांखे नीलो उखणें, अनंत जीवां री करें छें घात कें ।
 जब साध श्रावक बेहूं जणां, चोडेंइ बूड गया साख्यात कें ॥ १७ ॥
 थानक री भीत पड गइ, जब श्रावक फेर चुणावें भीत कें ।
 तिण हिंसा रा पाप उदे' हूआं, चिहुं गति में होसी घणा फजीत कें ॥ १८ ॥
 साध रेत आणे नें पाथरें, ते रहें रों छार उपर बरसें मेह कें ।
 जीव अनंत मरें तिहां, तिण रा साधपणा रो आए गयो छेह कें ॥ १९ ॥

वले टांची वजावे सिलावटां, साधां रें थानक सुधारण काज के ।
 तिण जायगा मे साधु रहे, त्या छोट्यो संजम नें लोकां री लाज के ॥ २० ॥
 पका थांभा मंगावे पर गांम थी, तिहां अनंत जीवां रो करे छे संघार के ।
 ते बूडो जीवां थी वेर वाघ ने, गुर रो पिण दीघों जनम विगाड के ॥ २१ ॥
 नवी जायगां उठाय बेठी करे, थेट सूं नवी दराए नीव के ।
 साधा निमते हिंसा करे, ते तां निश्चेइ हिंसक दुष्टी जीव के ॥ २२ ॥
 हिंसा करे साधां रे कारणे, त्यां जीवां रो जाणजो पूरो अभाग के ।
 तिण विघ विघ सूं जीव मारीया, त्यारो कहितां कहितां न आवें थाग के ॥ २३ ॥
 गरथ दीयों छे थानक करायवा, तिण अनंत जीवा रों करायों छे नास के ।
 पाप रो मूल भूदे तो तेहिज छें, तिणने निश्चेइ जाणजो दुरगति वास के ॥ २४ ॥
 एहवा थानक भोगवे, ते निश्चेइ छें भगवत रा चोर के ।
 आचाराम नसीत सूत्तर मभे, तिहां वीर जिणंद कीयों छे निचोड के ॥ २५ ॥
 नवो थानक त्यारे मोल लें, जब आगलो थानक वेचे करे दांम के ।
 ते व्याज देवें सामग्री मभे, ते थानक तालके कहे छे ताम के ॥ २६ ॥
 मुखादिक रो माल ले भेलो करे, ते व्याज देइ नें वघारे माल के ।
 तिणने पिण कहे थानक तालके, ते बूडा देवाल लेवाल दलाल के ॥ २७ ॥
 जिणरो थानक तिणरो परगरो, ओर रो परगरो म जाणो कोय के ।
 ते थानक छें भेषवाख्यां तणो, त्यांरो इज परगरो जाणो लीजो सोय के ॥ २८ ॥
 वले थापीता थानक मे रहें, ओ पिण छे उघाडो दोष के ।
 तिण दोष नें दोष जाणें नही, ते मिथ्याती किण विघ जावसी मोख के ॥ २९ ॥
 कहि कहि ने कितरो कहुं, इण अनुसारे बोल अनेक के ।
 एहवा थानक भोगवे, त्यामें आखो वरत न पावे एक के ॥ ३० ॥
 राते किंवाड जड्या उघाडीयां, तिहां पिण हुवें छे जीवां री घात के ।
 तिणरो पाप नें दोष गिणे नही, त्यांने निन्द जाणो साख्यात के ॥ ३१ ॥
 नित को वेहरे एकण घरे, घोवण पाणी असणादिक आहार के ।
 ते भिष्ट हुआ जिण धर्म थी, विगड गयो विकला रो आचार के ॥ ३२ ॥
 साध नाम धराय नें, बेठी पांत आरा माहे जाय के ।
 त्या भेष भांड्यो भगवान रो, त्या विकलां ने जाणजो निन्दारे माय के ॥ ३३ ॥
 कलाल ना घर नो पांणी पीये, ते पिण दोष सहीत असुध के ।
 एहवो पांणी पीये तेहनी, भिष्ट हुइ छे सुध नें बुध के ॥ ३४ ॥
 पाणी वेहरे कलाल नां घर तणो, ते पिण मोल रो लीघो छे तांम के ।
 वले स्पीया नें व्याज दे तेहनें, ते पांणी वेहरे ते निन्दां रो कांम के ॥ ३५ ॥

विण पडिलेह्यां गिज पोथ्यां तणो, त्यांमें अनंत जीवां री हुवें छें घात कें ।
 त्या जीवां रों पाप गिणें नहीं, ते तों असल निन्व साख्यात कें ॥ ३६ ॥
 ववेक विकल बालक विरध छें, ते तों समकत चिरत जाणें नही ताहिकें ।
 वले साधपणों नही ओलख्यो, एहवा विकलां नें मूढे ले माहि कें ॥ ३७ ॥
 सात आठ वरस रों डावडों, समकत विण हीण बुधीयो जीव कें ।
 तिणनें दिव्या दे आहार भेलो करे, त्यां पिण दीधी छें नरक री नीव कें ॥ ३८ ॥
 तिण बालक नें न्यातीला पकड नें, पाछो गृहस्थ करे तिणरो भेष उतार कें ।
 तिणनें पाछें निन्व जाय नें, धरणो पाडे वाखंवार कें ॥ ३९ ॥
 पूछ्यां कहें म्हें धरणो पाड्यो नही, जाणें जाणें नें बोले सांप्रत कूड कें ।
 एहवा किरतव तो निन्व करे, त्यारो लोकिक मे पिण हुवो फितूर कें ॥ ४० ॥
 कोइ निरघन घर छोडे त्यां कने, तिणनें घर रा आगना देवे नही ताम कें ।
 जब निन्व आमना करे, गृहस्थ कनाथी दरावें छें दाम कें ॥ ४१ ॥
 दाम दरावण री दलाली करे, त्यांरो पाचमों वरत हुवों चकचूर के ।
 दसवीकाल कें देखलो, साधपणो गयो वेहतीरे पूर के ॥ ४२ ॥
 मूआ गयां रा पातरा, इधका राखें थानक रे माय के ।
 त्यांने पूछे तो कहे गृहस्थ ना, सांप्रत बोलें मूंसावाय के ॥ ४३ ॥
 ते पडिलेह्यां विण पडीया रहे, जाल जमे जीवा री हुवे घात के ।
 इधका राख्यां भागों वरत पांचमो, त्यांनें जाणजों निन्व साख्यात के ॥ ४४ ॥
 इधका थान राखें कपडा तणा, ते पिण विण पडिलेह्या ताम के ।
 त्यांने आला में घालें मूंद दे, अे तो भेषघारी निन्वा रा काम के ॥ ४५ ॥
 आरा मां सूं साधां रे - करणे, धोवण मांड मेले अनेरे घर आण के ।
 ते दोखीलें वेहरे जाण ने, एहवो मिष्ट आचार निन्वा रो जाण के ॥ ४६ ॥
 धोवण माहे नीलोतरी, तिण धोवण नें वेहरे जाण के ।
 वले दोष गिणें नही तेह मे, ते निन्व - छे पूरा मूढ अयाण के ॥ ४७ ॥
 भूरी घोवे छें जुवार री, तिण धोवण मे जुवार रा दाणा अनेक के ।
 ते घोवण वेहरे छे जाण ने, त्यां छोड दीवी जिण धर्म री टेक के ॥ ४८ ॥
 बायां घर घर नों धोवण भेलो करे, साधां ने वेहरावण रे काज के ।
 ते धोवण वेहरे साध जाण नें, त्यांने किम कहिजे मुनिराज के ॥ ४९ ॥
 छती सकत फिरवा तणी, तोही लिंगडा लिंगडी थाणे वेसे ताहिके ।
 कल्य मरजादा भांगी छें पापीयां, त्यांनें गिणो निन्वा री पात माहि के ॥ ५० ॥
 सहर मे फिरें गोचरी उतावला, वलेहाय माहे लीयां चाले छे भार के ।
 वले मेड्यां चढें नें - उतरे, त्या विकला नें छें तीन धिकार के ॥ ५१ ॥

थाणे बेंठा छे खावा घालीया, ते थाणें न बेंठा खाणे बेंठा जाण के ।
 ते रस, जिची नगर पिडोलीया, त्या भेषघाख्यां भांगी छे जिणवर आणके ॥ ५२ ॥
 एक दिन माहे एकण घर मभे, वेहर ल्यावे छे तीन च्यार वार के ।
 ते पिण सख्या छे नही, त्या विकला रो विगड गयो आचार के ॥ ५३ ॥
 ते पिण विनाइ कारण वेहरता, त्या भागे दीवी छे कल्प मरजाद के ।
 एहवा भेषधारी भागल फिरें, विकल थका बाजे छे साच के ॥ ५४ ॥
 माहोमाहि साच सरवे नही, त्यारा मूअे गये करे माहोमा मूकाणके ।
 आदर भाव नही आयां तणी, ते निन्व जिण मारग रा अजाण के ॥ ५५ ॥
 वले ग्रहस्थ ने वेंसण री आमना करे, जायगा वतावे वेंसण सुवण नें ताय के ।
 तिण कीयो संभोग गृहस्थ सू, तिणरी पिण विकलां ने खवर न काय के ॥ ५६ ॥
 प्रश्न व्याकरण दसमा अग मभे, साव ने न राखणो चसमो कांच के ।
 ते राखे छे सूतर उथाप ने, त्यां निन्वा रो विकल माने छे साच के ॥ ५७ ॥
 एकलो साच चोमासो करे, वले एकलो रहे छे सेपे काल के ।
 तिणने अव्यक्त भगवत भाखीयो, साचपणा थी दीयो छे टाल के ॥ ५८ ॥
 दोय साचवीया चोमासो करे, दोय जणी रहे सेखा काल के ।
 कारण जिण विचरे दोय जणी, तिण लोपी मरजादा-भागे दीवी पाल के ॥ ५९ ॥
 पाणी ठारे गृहस्थ रा ठाम मे, भोगवी पाछा सूप दे ताहि के ।
 त्यांने अणाचारी जिणवर कह्या, दसवीकालक तीजा अघेन रे माहि के ॥ ६० ॥
 मातरीयादिक रों नाम ले, पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
 तिण माहे दोष जाणे नही, त्याने जाणो निन्वा री पात माहि के ॥ ६१ ॥
 कारण विनाइ साचव्या, काजल घाले आख्यां रें माहि के ।
 अणाचारणी त्याने कही, दसवीकालक तीजा अघेन रे माहि के ॥ ६२ ॥
 केइ आयां पेहरे छे कांचूओ, मिश्रू आदि वले खीनखांप के ।
 ते विगडायल छे जेन री, त्याने वांछा पूच्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
 बंधो करावे गृहस्थ ने, तू दिख्या ले तो लीजे म्हारे पास के ।
 ओर साच कने लीजे मती, तिण श्री जिण आगना लोपे दीवी तास के ॥ ६४ ॥
 मोल लरावे लोट पातरा, वले पांता परत लारावे मोल के ।
 वले मोल वतावे थोडो घणो, ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
 लोट पातरा वसतर पोथीयां, सेठी घाले भुंयरा रे माहि के ।
 त्यारी पडिलेहण करे नही, एहवा मिष्ट आचारी छे निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
 लोट पातरा वसतर ने पोथीयां, गृहस्थ रे घरे मेले छे ताम के ।।
 त्यांरी भलावण देवे गृहस्थ ने, पछे विहार करे जावे ओर गाम के ॥ ६७ ॥

ते थाणें न बेंठा खाणे बेंठा जाण के ।
 त्या भेषघाख्यां भांगी छे जिणवर आणके ॥ ५२ ॥
 वेहर ल्यावे छे तीन च्यार वार के ।
 त्या विकला रो विगड गयो आचार के ॥ ५३ ॥
 त्या भागे दीवी छे कल्प मरजाद के ।
 विकल थका बाजे छे साच के ॥ ५४ ॥
 त्यारा मूअे गये करे माहोमा मूकाणके ।
 ते निन्व जिण मारग रा अजाण के ॥ ५५ ॥
 जायगा वतावे वेंसण सुवण नें ताय के ।
 तिणरी पिण विकलां ने खवर न काय के ॥ ५६ ॥
 साव ने न राखणो चसमो कांच के ।
 त्यां निन्वा रो विकल माने छे साच के ॥ ५७ ॥
 वले एकलो रहे छे सेपे काल के ।
 साचपणा थी दीयो छे टाल के ॥ ५८ ॥
 दोय जणी रहे सेखा काल के ।
 तिण लोपी मरजादा-भागे दीवी पाल के ॥ ५९ ॥
 भोगवी पाछा सूप दे ताहि के ।
 दसवीकालक तीजा अघेन रे माहि के ॥ ६० ॥
 पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
 त्याने जाणो निन्वा री पात माहि के ॥ ६१ ॥
 काजल घाले आख्यां रें माहि के ।
 दसवीकालक तीजा अघेन रे माहि के ॥ ६२ ॥
 मिश्रू आदि वले खीनखांप के ।
 त्याने वांछा पूच्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
 तू दिख्या ले तो लीजे म्हारे पास के ।
 तिण श्री जिण आगना लोपे दीवी तास के ॥ ६४ ॥
 वले पांता परत लारावे मोल के ।
 ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
 सेठी घाले भुंयरा रे माहि के ।
 एहवा मिष्ट आचारी छे निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
 गृहस्थ रे घरे मेले छे ताम के ।।
 पछे विहार करे जावे ओर गाम के ॥ ६७ ॥

मोल ले राखें साधां नें वेहरायवा,
 ते वेंहर आणें लोलपी थकां,
 गृहस्थ नें देवें लोट पातरा,
 वले देवे ओघो नें पूंजणी,
 थोडोइ उपधि गृहस्थ नें दीयो,
 नसीतर रे पनरमें उद्दसे कह्यो,
 इधका राखें छे लोट नें पातरा,
 वरत भागों त्यारो पांचमों,
 कागद लिखावे गृहस्थ कनें,
 तिण मांहे समाचार आपरा,
 केइ तों कागद हाथां लिखे,
 कहे ओर किणही ने दीजो मती,
 कपडा वेंहरावे त्यांनं मोल ले,
 ते भिष्ट हूआं जिण धर्म थी,
 मोल लीघो थानक भोगवें,
 कपडा पिण मोल लीघा भोगवें,
 सिजातर पिंड भोगवें,
 घणी छोडे आग्या ले ओर नी,
 त्यांरा श्रावक खावें केइ मांग ने,
 तिणमें मुतलब जाणे आपरों,
 ओ मोल ल्यावें घी खांड ने,
 ओ पिण खावे मन मांनीयो,
 उपरे निठे खांतां ने देवतां,
 जब ओ पिण वेहरावे उण रीत सूं,
 कोइ घर सूं आयों बोलायवा,
 तिण घर जाए तेडीया,
 घर हाट मूं आयो चलाय नें,
 तिहां पिण जाये तेडीया,
 साह्यो आण्यो ले जाए तेडीयो,
 ते पिण वेहरे निसक सूं,
 पाट बाजोट आणें गृहस्थ रा,
 मरजावा लोपी नें भोगवें,

घी खांड आदि दे वस्तु अनेक कें ।
 त्या पेंहर विगाडयो साथ तणो भेख कें ॥ ६८ ॥
 पूठा पांना नें परत वणेष कें ।
 ते भिष्ट हूआ ले साथ रो भेप कें ॥ ६३ ॥
 त्यारो आखो वरत रह्यो नही एक कें ।
 ओ पिण नही विकलां रे ववेक के ॥ ७० ॥
 इधका राखे कपडा लोपे मरजाद के ।
 त्यां विकलां ने विकल जाणेंछे साथ कें ॥ ७१ ॥
 ओर गांम मेलण ने ताहि कें ।
 ते पिण छें निन्वां री पांत मांहे के ॥ ७२ ॥
 मेल देवे गृहस्थ रे साथ के ।
 छाने दीजों साथ साघव्यां रे हाय के ॥ ७३ ॥
 ते जाण ने वेंहरे छे ताहि के ।
 त्यांने निश्चेइ जाणजों निन्वां रे मांहे के ॥ ७४ ॥
 मोल रो लीघो भोगवें आहार के ।
 त्यांने निश्चेइ मत जाणजो अणगार के ॥ ७५ ॥
 ते सरस आहार तिणरो आवतो देख के ।
 तिण पेहर विगाडयो साथ तणो भेख के ॥ ७६ ॥
 त्यांने सांनी करे दरावे दाम के ।
 इणरे होसी ते आवसी म्हारे काम के ॥ ७७ ॥
 वले चिरक पणो मेवा मिष्टान के ।
 गुर नें पिण दे अडलक दांन के ॥ ७८ ॥
 जब फेर त्यारी करे दातार के ।
 एहवो छे भेषघास्यां रे अंधार के ॥ ७९ ॥
 वेहरायवा असणादिक आहार के ।
 त्यां विकला रो विगाड गयों आचार के ॥ ८० ॥
 कपडो वेहरण नें ले जावें बोलाय के ।
 त्यांने पिण कला मत जाणजों काय के ॥ ८१ ॥
 ए दोनूइ दोष कह्या भगवान के ।
 त्यांने भिष्ट आचारी जाणे बुववान के ॥ ८२ ॥
 पाछा देवण री नही छे नीत के ।
 आ तो निश्चेइ जाणो निन्वा री रीत के ॥ ८३ ॥

केइ पाट बाजोट मोल रा लीया, केइ आघाकरमी पाट बाजोट के।
 केइ तो सांहा आणे दीया, ओ पिण त्यामें मोटकों खोट के ॥ ८४ ॥
 भांगां तूटा करावे त्याने सांतरा, खाती रे पासे पागादिक दराय के।
 केइ पाट बाजोट आगा लीये, केइ थानक ज्यू थापे राख्या ताय के ॥ ८५ ॥
 गृहस्थ नें लिखावें बोल थोकडा, आप तणों पांनो दे उतारण ताय के।
 ते उतारे छे पानो देख ने, इण दोष री विकलां ने खवर न कांय के ॥ ८६ ॥
 पेंहलों करण लिख दीयां में पाप छें, तो लिखायां पिण होसी पाप के।
 तिणमें निन्व जाणे घर्म छे, त्यां श्री जिण वचन ने दीयां उथाय के ॥ ८७ ॥
 पुस्तक पातरा आदि दे, मोल लरावें ले ले नांम के।
 आछा भूंडा कहें तेहनें, अे पिण छे भागलां रा कांम के ॥ ८८ ॥
 गराग नें तो कइयो कह्यो, कुगुर छें तिण विच दलाल के।
 वंचण बालो वाणीयो कह्यो, यां तीनां रो जाणजों एक हवाल के ॥ ८९ ॥
 क्रय विक्रय माहें वरते साघजी, त्याने महा दोषण छे एह के।
 उत्तराघेन पेतीसमें, तिणने तो साघ न कह्यो छे तेह के ॥ ९० ॥
 जो मोल लरावें अचित वस्त ने, तो सुमत गुप्त होय जाजें खंड के।
 पांचू महावरत भागें गया, तिणरो आवे चोमासी डड के ॥ ९१ ॥
 ए भाव कह्या छें नसीत में, संका हुवें तो जोवो उगणीस मे उद्देस के।
 सुघ साघा विण कुण कहे, सूतर तणी उंडी रेस के ॥ ९२ ॥
 पोथां रा गिज राखे पडिलेह्या जिनां, त्यां माहे जमें छे जीवां रा जाल के।
 पडे कंधुया माकड उपजें, नीलण फूलणादिक जीवां रो हुवे खेगाल के ॥ ९३ ॥
 जोवे वरस छे मास नीकल्यां थकां, तों पेहलां वरत तणों हुवे खंड के।
 नसीत रे दूजे उद्देसे कह्यो, एक मास रों आवें डड के ॥ ९४ ॥
 गृहस्थ रें साथें सदेसों कहे, जब गृहस्थ सू भेलो कीयो संभोग के।
 ते साघ नही भगवान रा, त्यारे लागो मिथ्यात रो रोग के ॥ ९५ ॥
 भेषघारी मांहोमां कजीया करें, घरणा पाडे दरावें आंग के।
 आंम्हा सांहा बेसैं बाजार में, अन खावा रा दरावें पचखाण के ॥ ९६ ॥
 अन पांणी छोडावे आंग दे, कदा होय जाजे तिण मिनष री घात के।
 एहवा किरतब करें तेह मे, साघपणो रह्यो नही अंसमात के ॥ ९७ ॥
 घरणो पाडें साघ रा भेष में, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज के।
 ते वेसरमा सम वाहिरा, त्यां विकलां ने विकल कहें मुनीराज के ॥ ९८ ॥
 त्याने बांदि पूजे ते भोलीया, त्याने साघपणा री खवर न कांय के।
 ते पिण दूडें गया वापडा, कुगुर तणी पखपात रें मांय के ॥ ९९ ॥

डोला बारें काढें तुरकां तणें, जब मोटें मोटें सब्दे करें आइधोय कें।
 ज्यूं निन्वां रो मत विखरें जवे, आहिज रीत जाणें लेजी सोय कें ॥ ११६ ॥
 सैद माख्या तुरकां तणा, तिण सूं आए बरस करें छें आइधोय कें।
 ज्यूं ज्यांरा खेतर श्रावक फिरें, आइधोय ज्यूं करें छें हाय बोय कें ॥ ११७ ॥
 सूतर विरुध जोडां करे, तिणरा कागदियां लिख दीघा हाथ कें।
 आइधोय ज्यूं करता थकां, बकता फिरें हाटां में दिन रात कें ॥ ११८ ॥
 सुघ साधां ने निन्व कहें, निन्वां नें कहें सुघ साघ कें।
 ते दोनूं विघ बूडा बापडा, त्यांरा घटमें उपनी मिथ्यात री द्याघ के ॥ ११९ ॥
 नवकरवाली निद्या तणी, कुगुरां दीघी छें त्यानें पकडाय के।
 जाप जपे नित तेहनों, रात दिवस करें छें बुडण रो उपाय के ॥ १२० ॥
 सुघ साधां तणी निद्या करे, वले अणहंता देवे आल के।
 गेहला ज्यूं बकबोकरे, साच भूठ तणो नही काढे निकाल कें ॥ १२१ ॥
 ओरां रे माथें आल दे, तिणसूंड पांमें भव भव में आल के।
 ज्यूं साधां रे आल देवें तिको, उतकपटों हलें तो अनंतो काल के ॥ १२२ ॥
 जो पाप उदे हुवे इण भवे, तो घर माहे आवे दलदर भूख के।
 बिजोग पडें वाहलां तणों, वले दिन दिन उपजे दुख माहे दुख कें ॥ १२३ ॥
 रोग सोग संताप वधें घणों, जीवें जां लग रहें खांचा तांण कें।
 वले दुख पांमे नरक निगोद नां, सुघ साधां री निदा रा ए फल जाण कें ॥ १२४ ॥
 जिहां विचरे साघजी, तिहां तिहां मिले परषदा रा थाट के।
 तिहां भेषधारी ने निन्वां, रात दिवस करें छें तलतलट कें ॥ १२५ ॥
 जिहां जिहां निन्व संचरे, तिहां तिहां हुवे जिण धर्म री हाण कें।
 कजीयो कलेस वधें घणों, तिहां मूरख बूडे छे कर कर तांण के ॥ १२६ ॥
 जिहां जिहां सूर्य उदे हुवे, तिहां तिहां हुवे चोरा तणी घात के।
 जिहां जिहां विचरे साघजी, तिहा तिहां पतलों पडें छें मिथ्यात के ॥ १२७ ॥
 साघ रो आचार परगट करे, जब भेषघाच्यां रे लागें दाह के।
 रोम रोम तिणां रा परजले, ओर लोकां रे तो नही परवाह के ॥ १२८ ॥
 कजीया कलेस तो अेहिज करे, अेहीज करे जिण धर्म री हांण के।
 अेहीज निद्या करे पारकी, ते पिण विकलमें नही छे पिछाण कें ॥ १२९ ॥
 मत विखरतो देखे आप रो, वले परती देखें छें मत माहे फूट कें।
 जब निन्व नें निन्वां रा श्रावका, मिल मिल नें चलावे छें भूठ के ॥ १३० ॥
 स्वान भुसें छें मुख उचो करे, कानां सुणे भालर रो भिणकार कें।
 ज्यूं साधां रा सब्द कानां सुणें, स्वान ज्यूं निन्व करे भुसवार के ॥ १३१ ॥
 ४४

माठी वस्त नें ज्यूं ज्यूं उकरालीयां, ज्यूं ज्यूं नीकलें दुरगंभ वास के।
 ज्यूं ज्यूं निन्वां नें छेडवे, ज्यूं ज्यूं उंघा बोलें छें तास के ॥ १३२ ॥
 नीब फले जब कागलो, घणों हरणें नीबोली देख के।
 ज्यूं काग सरीषा मांनवी, मिश्र री सरघा सूं हरणे वशेष के ॥ १३३ ॥
 ते मल मल नें गावें मिश्र ने, जाणें सार काढ्यो इण सरघा मांय के।
 न्याय निरणों त्यारे नहीं, यूंही करे थोथी बकवाय के ॥ १३४ ॥
 मिश्र दांन उठाय बेंठो कीयों, ते सरघा छें एकंत भूठ मिथ्यात के।
 ते किण किण में मिश्र कहे, ते सांभलजो छोडी पखपात के ॥ १३५ ॥
 आठ दांन कह्या संसार नां, तिण मांहे कहे जिण धर्म रो भेल के।
 आ उंघी सरघा निन्वां तणी, ते जिण मारग सूं नहीं खाअे मेल के ॥ १३६ ॥
 अणुकंपा आंण गाजर मूला दीयें, वले सर्व नीलोतरी ने जमीकंद के।
 ते पिण दीयां मिश्र कहें, एहवो छे निन्वां री सरघा रो फंद के ॥ १३७ ॥
 बंदीवानादिक नें दांन दें, सच्चित्तादिक नीलोती अनेक के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ खोटी सरघा भाले रह्या टेक के ॥ १३८ ॥
 ग्रह करडा आयां भय रो घालीयो, थावरीयादिक ने देवे दांन के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरघा घोर अग्यांन के ॥ १३९ ॥
 खरच मूआ रे केडें करें, ए चोथो दांन लोकिक ववहार के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरघा छे घोर अंधार के ॥ १४० ॥
 सांकडे पडीयो लज्या सू दांन दे, ते सासरादिक में जमाइ ज्यूं जाण के।
 तिणमें भेल कहे जिण धर्म रो, एहवा निन्वां छें मूढ अयांण के ॥ १४१ ॥
 गरब चढ्यो दांन दे जेह भणी, मुकलावोपेंहरावणी मूसालों रंगरेल के।
 रावलीयादिक नें दांन दें, तिण मांहे कहें जिण धर्म रो भेल के ॥ १४२ ॥
 हांती नेतो देवो नेत घालवो, इत्यादिक आमों सांहायो देवो लेवो तांमके।
 ए नवमों दसमों दांन छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल कहें छे अलामके ॥ १४३ ॥
 पीहर वाजें छकाय नां, छकाय खवायां कहे मिश्र दांन के।
 जब पीहर तों पूरो पड्यो, दया रहीत छे विकल समान के ॥ १४४ ॥
 एक करणी करे तेहमें, नीपनो कहे छे धर्म नें पाप के।
 एहवी करे छें परूपणा, मिश्र दांन री कीवी छे थाप के ॥ १४५ ॥
 जीव खाबां खवायां भलो जाणीयां, तीनूइ करणा कह्यो जिण पाप के।
 जीव खवाया मिश्र कहे, त्यां निन्वां रे होसी भव भव माहे संताप के ॥ १४६ ॥
 भात वरोटी जीमणवार में, नेत जीमावें सगा नें सेण के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, त्यांरा फूट गया अभितर नेण के ॥ १४७ ॥

छही छकाय जीवां तणी, कोइ मंडावे छही दान साल के।
 त्यांमे किणहीक में तो मिश्र कहें, किणहीक रों नही काठें निकाल के ॥ १४८ ॥
 बावीस टोलां ने कहे साघ छे, त्यां पिण मिश्र री सरधा जाणेलीधी कूडके।
 खोटी जाणें ने परहरी, ज्यूं माठी वस्त उपर दे धूर के ॥ १४९ ॥
 बावीस टोलां ने कहे साघ छे, ओ पिण भूठ बोले जाण जाण के।
 पिण मन माहि साघ जाणें नही, त्यां भूठा बोलां री करजो पिछांण के ॥ १५० ॥
 जो साघ सरधे छे तो तेहनी, बंदणा छडावे छे किण न्याय के।
 एहवा प्रश्न पूछे सांकडें लीयां, जब तो जीम पडे नही ठाय के ॥ १५१ ॥
 कदे करडे काम सांकडे पड्यां, बावीस टोलां ने कहिदे साघ के।
 ओं पिण भूठ बोले छे जाण जाण ने, पिण अंतरग माहे जाणे असाघ के ॥ १५२ ॥
 मिश्र दान उथापे तेहने, हिसाघमीं कहे छे तांम के।
 हिसा घमीं तो निश्चेइ असाघ छे, जब तो बावीस टोलां री पाडो मांम के ॥ १५३ ॥
 मिश्र दान ने उथपे, त्याने पाखडी कहे छे तांम के।
 बले हिसाघमीं त्याने कहे, बले भूठाबोलां कहे छे ठाम ठाम के ॥ १५४ ॥
 बले खोटो मत कहे तेहनो, बले अग्यांनी कहे छें तांम के।
 ग्यान बिना आघा कहे, विघ विघ सूं पाडे छे माम के ॥ १५५ ॥
 जोड कीधी छे त्या उपरे, तिणमे निषेद्या छे विवध परकार के।
 साघपणा ने समकत तणो, खेरो मूल न राख्यो लिगार के ॥ १५६ ॥
 ज्याने भिन भिन कर ने नषेधीया, बले त्यानेइज कहे छे साघ के।
 एहवा भूठाबोलां छे निन्वां, त्यां विकलां रे किण विव होसी समाव के ॥ १५७ ॥
 बावीस टोलां मे केइ भोलीया, त्यां भूठाबोलां ने कहे छे साघ के।
 ते पिण सुध वुच वाहिरा, त्यां रे पिण कदेय म जाणों समाव के ॥ १५८ ॥
 सील भागे निन्वां रा टोला मभे, तिणने कहिवा ने तो दिख्या दे फेर के।
 पिण वडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, एहवा छे निन्वा रा मन में अघेर के ॥ १५९ ॥
 कुसीलीया भागल भेला रहे, त्यांरो तो किण विघ काठे निकाल के।
 पांणी भरे सगलां मभे, कण रहीत भेलो कीयो छे पराल के ॥ १६० ॥
 साघ साघवी सूं वरत भाग दे, तिणनें दसमो प्राच्छित कह्यो जिण आप के।
 ते ठांगाअग वेदकल्प में, ते प्राच्छित निन्वां दीयो उथाप के ॥ १६१ ॥
 सील भागे साघ साघवी थकी, तिणने न्याय करण नें दिख्या दे फेर के।
 तिण ने वडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, ओ पिण निन्वा रे अतंत अघेर के ॥ १६२ ॥
 फेर दिख्या दे सगला सू छोटी कीयो, जब सगलां वादणा सीस नमाय के।
 तिणरी वदणा तो जिहाइ रही, उलटा वडां ने पाडे छे पाय के ॥ १६३ ॥

रत्न : १४

विनीत अविनीत री चौपई

ढाल : १

दुहा

नमूं वीर सासन घणी, ते पाम्यां पद निरवांण ।
 त्यां विनो परूप्यो सद्गुर तणो, बांधी मर्याद परमाणं ॥ १ ॥
 केइ साधु नाम घरावतां, ते बोलें आल पंपाल ।
 सुघ आचार श्रद्धा थी वेगला, ज्यूं कण रहित पराल ॥ २ ॥
 एहवा भेषघारी मिष्टी थकां, मुख सूं कहे म्हें साव ।
 ते विनों परूपें भागल तणो, श्री जिण वचन विराव ॥ ३ ॥
 त्यांसूं महाव्रतां री चरत्वा कीयां, तो भागें भृग ज्यूं दूर ।
 घणा आडंबर करे पूजावता, वले भाखें अनेक विध कूड ॥ ४ ॥
 त्यांरो विनो करे गुर जाण ने, भोला लोक अयांण ।
 केडे लाग़ा कुगरां तणे, ते बूडें कर कर तांण ॥ ५ ॥
 कुगुर आदर ने छोडण तणो, कठिन घणो ए कांम ।
 कोइ छोडे हिरदे ग्यांन परगट्यां, त्यांने वीर वखाण्या तांम ॥ ६ ॥
 विनो करणो छे सतगुर तणो, त्यांरा गुणा री करी पिछांण ।
 उत्तरावेन पेहले कह्यो, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल :

[पाणड वधसी आरे पांचमें रे]

संजोग छोड्या अभितर बाहिरला रे, ते मोटा ऋषिस्वर छे अणगार रे ।
 ते सर्व सावद्य त्यागे ने नीकल्या रे, त्यांरे पाप करण रो नही आगार रे ।
 विनों कीजे एहवा सतगुर तणो रे ॥ १ ॥
 ते करणी कर भेदे भिक्वु कर्म ने रे, निरदोषण मिख्या ना लेवणहार रे ।
 विनो परूप्यो एहवा सतगुर तणो रे, सूत्तर में श्रीवीर कह्यो विस्तार रे । वि० २ ॥
 जे चाले निरंतर गुर री आगतां मफे रे, समीपे रहे तो रुडी रीत रे ।
 ते जाण वरते गुर री अंग चेष्टा रे, तिणनें श्रीवीर कह्यो सुविनीत रे ॥ ३ ॥
 विनो तो जिण सासन रो मूल छें रे, विनो निरवांण सावन रो काज रे ।
 जे विनों करण सूं उपराठा पड्या रे, ते गया संजम नें तप सूं भाज रे ।
 ते अविनीत भारी कर्मा एहवा रे ॥ ४ ॥
 केइ गुर री नहीं पाले मूरख आगनां रे, समीपे रहिता सके मन माय रे ।
 रखे- करावे कारज मोक ने रे, एहवो वूडण रो करे उपाय रे ॥ ते० ५ ॥

ने प्रत्येक संदर्भ में गुर नों पादियो रे
उगरे कूड कदत ने बेठारगो घनों रे
जो कार्य करें अविनीत गुर तगो रे
दिन बने दिनार नों नहीं ओलख्यो रे
जो तर कर क्य कष्टे आदगी रे
के पूजा स्तवा रो मूठो यको रे
जो बगवे गृहस्थ में बोल थोकडा रे
ओ आते प्रसन्न अवर ने निरुतो रे
अविनीत में आते बनवो बेहियो रे
ओ दिन विष चल गुर नी आपता रे
उगरे चेत करन रो मन में अति बनी रे
गडे सोने छोड दिख्यो ले गुर कने रे
कोड गुर कने निर्या ले जो जंग ने रे
बुल ब्यांती झू बने दिन कने रे
उगरे टोला ने गुर रो आपता रे
ओ परमद रो डर नहीं आंग जारियो रे
अविनीत रे चेलो रो हुवे चावता रे
उ चेलो हुंडो देहे जो आगने रे
अविनीत आगे घर छोडे तेहने रे
बले कुल्ला सीढाय निरुकेवे गुर यकी रे
अविनीत आगे घर छोडे तेहने रे
जो गुर नहीं सुंदे दिख्य अविनीत में रे
ओ अपाव फरवे सरला प्राव ने रे
बले कान न जहने बारी तेहनी रे
कोड गुर रो आग्या रूपे चेलो करे रे
वे छि छि हुसी मनलू लोक में रे
बैंगल बरयो ने आते बस नहीं रे
उरने दिख्य निरियां सुं जो मिथक बडे रे
विनीत दिख्य रे दिख्य रो मन में उगनी रे
दिन आतना बनने छंथा बघ बघ रे
जो विनीत आगे घर छोडे तेहने रे
हुं गुर रो आग्या दिन चेलो दिन कहं रे

उन दिनों न जांयो लडी रीत रे।
दिनने श्रीवर कह्यो अविनीत रे ॥ ६ ॥
जो जनि आयांति के सुनात रे।
ने चिहुं गति मे होसी बगो हेंगत रे ॥ ७ ॥
ने ज्य कीर्ति के कावा ब्यांन रे।
दिन दिनों करगो तो नहीं आपता रे ॥ ८ ॥
ने दिन मान बडाई काज रे।
ने अविनीत निरालव नागे काज रे ॥ ९ ॥
दिनरा अधिर परिणाम रहे सदाव रे।
जे केशी अहंकारी दुष्टी जीव रे ॥ १० ॥
दिनसुं गुर रो गुण मुड सुं कखान जाय रे।
एहरो ओरत घट घगी मन नांथ रे ॥ ११ ॥
जो फाइन रो करे नूड उराय रे।
नहर सगत झूं आते दीये छियाय रे ॥ १२ ॥
नाव चाण्डिया पावे नाथ रे।
चेलो क्य रो मन में जाय रे ॥ १३ ॥
दिन गुर में आग्या नेतां नहीं जंग रे।
जो गुर सुं दिन जोडे नूड ब्यांन रे ॥ १४ ॥
ने अविनीत करे चेलो तडकाच रे।
दे दे अहुंडा कूडा आल रे ॥ १५ ॥
दिनने जो पूरी खर न जाय रे।
जो कुन कुन करे अकारज जाय रे ॥ १६ ॥
बले गुर सुं दिन रावे मुरख देव रे।
दिन पहर विगाड्यो प्राव रो नेप रे ॥ १७ ॥
दिन छोडी छे दिन साधन रो रीत रे।
परमद में दिन होसी बगो कर्तित रे ॥ १८ ॥
दिगरे रहे चेलो करन रो ब्यांन रे।
बले बले मोलंगो में अनियंत रे ॥ १९ ॥
दिन गुर रो आग्या दिन न करे चाव रे।
दिख्य निरियां न निरियां सरल स्वभाव रे ॥ २० ॥
जो विनीत बले सुतर रे न्याय रे।
हुं दिख्यो दे सुं गुर ने जाय रे ॥ २१ ॥

कोइ उपगारी कंठ कला धर साधु री रे, प्रगंसा जज्ञ कीरति बोलें लोग रे ।
 अविनीत अभिमानी सुण सुण परजले, उणरे हरष घटे नें वधें सोग रे ॥ २२ ॥
 जो कठ कला न हुवे अविनीत री रे, तो लोकां आगें बोलें विपरीत रे ।
 यां गाय गाय रीभाया लोक ने रे, कहे हू तत्व ओलखाउं रुडी रीत रे ॥ २३ ॥
 एहवा अभिमानी अविनीत ते लोकां कने रे, एहवी जणावे ऊधी रेस रे ।
 उना रे उत्तम साधा री आसता रे, तिण छोड्यो छे सतगुर नों आदेस रे ॥ २४ ॥
 ओ गुर रा पिण गुण सुण नें विलखो हुवे रे, ओ गुण सुणे तो हरषत थाय रे ।
 एहवा अभिमानी अविनीत तेहने रे, ओलखाऊं भव जीवां ने इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 कोइ प्रत्यनीक ओगुण बोले गुर तणा रे, अविनीत गुर द्रोही पासे आय रे ।
 तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने रे, अमितर मे मन रलियायत थाय रे ॥ २६ ॥
 प्रत्यनीक ओगुण बोलें तेहनी रे, जो आवे उणरी पूरी परतीत रे ।
 तो अविनीत एकठ करे उण सं घणी रे, ओ गुर रा ओगुण बोले विपरीत रे ॥ २७ ॥
 वले करे अभिमानी गुर सूं बरोवरी रे, तिणरे प्रबल अविनों नें अभिमान रे ।
 ओ जद तद टोलां में आछो नही रे, ज्यूं विगड्यो विगाडे सडियो पांन रे ॥ २८ ॥
 ओ खिण माहे रग विरंग करतो थको रे, वले गुर सूं पिण जाए खिण मे रूस रे ।
 जब गूथें अग्यांनी कूडा गूथणा रे, ओर अविनीत सू मिलवा री मनहूस रे ॥ २९ ॥
 जो अविनीत ने अविनीत भेला हुवे रे, तो मिल मिल करे अग्यांनी गुरू रे ।
 क्रोध रे वस गुर री करें आसातना रे, पिण आपो नही खोजे मूढ अवूम रे ॥ ३० ॥
 जो अविनीत अविनीत सू एकठ करे रे, ते पिण थोडा मे विखर जाय रे ।
 त्यारे क्रोध अहंकार ने लोलपणो घणो रे, ते तो साधां मे केम खटाय रे ॥ ३१ ॥
 उणने छोटा ने छादे चलावण तणी रे, ते पिण अकल नही घट माय रे ।
 वडा रे पिण छादे चाल सके नही रे, तिण अविनीत रादुख माहे दिन जाय रे ॥ ३२ ॥
 पुस्तक पाना वसतर ने पातरा रे, इत्यादिक साधु रा उपधि अनेक रे ।
 गुर ओर साधा ने देता देख ने रे, तो गुर सू पिण राखे मूरख वेख रे ॥ ३३ ॥
 जब करें मांहोमां खेदो ईसको रे, वले वांछे उत्तम साधां री घात रे ।
 तिण जनम विगाड्यो करे कदागरो रे, करे माहोमां मन भांगण री वात रे ॥ ३४ ॥
 एहवा अभिमानी नें अविनीति री रे, करे भोला भारी कर्मां परतीत रे ।
 उणरा लषण परिणाम कह्या छे पाडुआ रे, कोइ चतुर अटकलसी तिणरी रीत रे ॥ ३५ ॥



ढाल : २

दुहा

टोलां माहें रहिवा री आसा नहीं, क्रोधो अविनीत जाणे एम ।
 तिण सूं छाने छाने लोकां कनें, बोले थावरिया जेंम ॥ १ ॥
 गर्भवती नें कहें डाकोत रो, थारें होसी पुत्र अनूप ।
 पाडोसण ने कहें होसी डीकरी, ते पिण अतंत करूप ॥ २ ॥
 गुर भगता श्रावक श्रावका कनें, गुर रा गुण बोले तांम ।
 आपो वज हुवो जाणें तिण कने, ओगुण बोले तिण ठांम ॥ ३ ॥
 थावरिया डाकोत ज्यूं, बोलें अनेक विघ कूर ।
 इह लोक तणो अरथी घणो, वले मांनं आपण पो सूर ॥ ४ ॥
 कनें रहे तिण साधु तणो, वर बुद्धी ज्यूं जाण ।
 खीटोरखेडाइ करें घणी, पग पग तांणा तांण ॥ ५ ॥
 कलहगारा अभिमांनी अविनीत ने, निषेध्यों सूवर मांय ।
 तिणनें माठी माठी दीधी ओपमा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[रावण दिगजय चालियो]

कुह्या कानां री कूतरी, तिणरे भरे कीडा राव लोही रे ।
 सगले ठांम सूं काठें हुड हुड करे, घर में आवण न दे कोइ रे ।
 घिग घिग अविनीत आतमा* ॥ १ ॥
 कुत्ती विगाडे रमणीक आंगणो, न्हांखे कीडा राव ने लोही रे ।
 वास दुरगंध आवे अति बुरी, तिणनें घुर घुर करें तव कोइ रे ॥ वि० २ ॥
 जेहवी कुह्या कानां री कूतरी, तेहवा अविनीत ने अभिमांनी रे ।
 तिणरो पाडुओ शील ने मुख अरी, तिण सूं सगलाइ दे जाए कानी रे ॥ ३ ॥
 अविनीत रा मुख मां सू नीकलें, ते तो कुवचन कीडा सम जाणो रे ।
 रमणीक आंगणा ज्यूं सुध साध ने, पाप लगावे क्रोध उठाणो रे ॥ ४ ॥
 थिर करण माहे राखे तेहने, छिद्र ग्रहे हुवे द्रोही रे ।
 तिणने कुह्या काना री कूतरी ज्यूं, गण वारें काढे सर्व कोइ रे ॥ ५ ॥
 कण सहित कुंडो छोड नें, भिष्टो भखे भंडसूरो रे ।
 तिण भंडसूरा री ओपमा, अविनीत ने दीधी वीरो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते अविनो छें भिष्ठा सारिखो, तिणनें अविनीत आचर लीघो रे ।
 विनां धर्म सू अल्लो पडें, अनंत संसार आरे कीघो रे ॥ ७ ॥
 हरिया जव तो मिलें खावा भणी, पीवा नें मिलें पाणी ताह्यो रे ।
 तिण सूं भिडके मूढ मिरगलो, पछे जाय पडे जाल माह्यो रे ॥ ८ ॥
 ते अविनीत छें मिरग सारिखो, ते तों विनों करतो संक आणे रे ।
 अविनां रूपणी जाल में पडे, ते पिण मूढ न जाणे रे ॥ ९ ॥
 तिण भंडसूरा ने मिरग री, ए ओपमा अविनीत नें छाजे रे ।
 तिणरो विगड्यो इहलोक परलोक, तोही निरलज मूल न लाजे रे ॥ १० ॥
 गलियार गधो घोडो अविनीत ते, कूट्यां विन आगो न चालें रे ।
 ज्यूं अविनीत ने काम भलावियां, कह्यां नीठ नीठ पार घाले रे ॥ ११ ॥
 गलियार गधो घोडो मोल ले, खाडेती घणो दुख पावे रे ।
 ज्यूं अविनीत ने दिख्या दीया पछें, पग पग गुर पिच्छतावे रे ॥ १२ ॥
 बुटकने गवडे दुराचरी, तिण कीवी घणी खोटाई रे ।
 आप छांदे रह्यो उजाड मे, एक बलद नें कुबद सीखाई रे ॥ १३ ॥
 तिण अविनीत बलद ने तुरकियां, मार गाडा में घाल्यो रे ।
 बुटकनां ने आंग जोतख्यो, हिंवे जाये उतावल सूं चाल्यो रे ॥ १४ ॥
 ज्यू अविनीत ने अविनीत मिल्या, अविनीतपणो सिखावे रे ।
 पछे बुटकनां ने बलद ज्यू, दोनू जणा दुख पावे रे ॥ १५ ॥
 कुशिष्य रो चेलापणी, जेहवो वेश्या नों धरवासो रे ।
 खिण खिण आय विनों करे, खिण खिण हुवे उदासो रे ॥ १६ ॥
 ते वेश्या मुतलब आपणे, करे सोले सिणगारो रे ।
 पुरष रीभावे पारका, किणरी म जाणो नारो रे ॥ १७ ॥
 ज्यूं अविनीत बाजे विनो करें, ते तो मुतलब रों छे यारो रे ।
 जो स्वारथ देखे असीभत्तो, तो खिण माहे ह्य जाय न्यारो रे ॥ १८ ॥
 वेश्या सूं घर वासो करे तिके, धन खूटां पछें पिच्छतावे रे ।
 ज्यू अविनीत ने कनें राखियां, ते तो कांम पड्यां सीदावे रे ॥ १९ ॥
 वेश्या नें अविनीत री, यां दोयां री एकज रीतो रे ।
 त्यांरो इहलोक परलोक विगडियो, वले भव होसी फजीतो रे ॥ २० ॥
 अंगीकार न करे गुर वचन ने, विरुओ बोले पाडें विरोधो रे ।
 मूढ सुकुमाल गुर छे खिम्यावंत, उणरी सगत सू करे क्रोधो रे ॥ २१ ॥
 तिणने चूक पड्यां गुर सीख दे, तो अविनीत नें दूपे जागे रे ।
 वले कलहो करे उलटो पडे, पिण गुर री सीख न लागें रे ॥ २२ ॥

ते सीख छें किल्याण कारणी, ते अविनीत एहवी धारी रे ।
 मोने मारे चपेटा नें टाकरा, देवें डंडादिक परिहारी रे ॥ २३ ॥
 बाघ्यो कालारी पाखती गोरियो, वर्ण नावें पिण लखण आवे रे ।
 जूं विनीत अविनीत कने रहे, तो उ कांयक कुबद सीखावें रे ॥ २४ ॥
 अभिमानी अविनीत सूं, सुघ विनो कीयो नहीं जावे रे ।
 कोइ विनीत गुर रो विनों करे, जब आप घणो सीदावे रे ॥ २५ ॥
 अविनीत दुखदाई केहवो, जेहवी सोक वरते दुखदाई रे ।
 ते छल छिद्र जोवतो रहे, खुद्र परिणाम रहे सदाई रे ॥ २६ ॥
 ज्यू सोक रो सोक लोकां कने, करें चावत नें वाछें घातो रे ।
 ज्यूं अविनीत वरते गुर थकी, आहिज रीत विख्यातो रे ॥ २७ ॥
 काई जात कुजात री उपनी, भरतार सूं लडे रीसावें रे ।
 पछे ताके कुवा ने बावडी, के ओर साथे उठ जावे रे ॥ २८ ॥
 ज्यू अविनीत गुर सूं लठो थको, करे संलेखणा माडे मरणो रे ।
 ते मरणो अविनीत नें दोहिलो, तिणसूं ताके ओरां रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 तिणरो संथारो ज्यू कूवो बावडी, तिण सूं मरे तोहि बाल मरणो रे ।
 ओर साथे उठ जावे अस्त्री, ज्यूं ओर अविनीत रो ले सरणो रे ॥ ३० ॥
 सोर ठडो लागें मुख मे घालियां, अग्नि माहे घाल्या हुवें तातो रे ।
 ज्यू अविनीत नें सोर री ओपमां, सोर ज्यूं अलगो पडे जातो रे ॥ ३१ ॥
 आहार पाणी वस्त्रादिक आपियां, तो उ श्वान ज्यूं पूछ हलावे रे ।
 करडो कहां उठे सोर अग्नि ज्यू, गण छोडी एकल उठ जावे रे ॥ ३२ ॥
 सोर आप बले बालें ओर नें, पछें राख थइ उड जावे रे ।
 ज्यू अविनीत आप ने परतणां, ग्यांनादिक गुण गमावें रे ॥ ३३ ॥
 सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुघवत रहे छें दूरा रे ।
 ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे, ते तों परमेश्वर रा पूरा रे ॥ ३४ ॥
 उत्तरावेन पेहलां अघेन सूं, अविनीत ने ओलखायो रे ।
 बले तिण अनुसारे निषेधियो, ते तों ले ले सूतर रो न्यायो रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

ढुहा

वले अवनीत ने ओलखावियो, दशविकालिक मांय ।
 निरणो कहू नवमां अघेन सूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ १ ॥
 अहंकारे करी क्रोधे करी, जात्यादिक मद तास ।
 वले पांच परमाद रे वस पढ्यो, विनों न सीखे गुर पास ॥ २ ॥
 यां च्यार बोलां अविनीत रे, हुवे ग्यांनादिक रो विणास ।
 ज्यूं वंस फल विणांसे वंस ने, ज्यूं अविनें सू निजगुण नास ॥ ३ ॥
 कोइ अविनीत मद मूरख थकां, गुर ने बालक जाण ।
 वले थोडा भण्या गुर तेहनो, अविनों करे मूढ अयाण ॥ ४ ॥
 जे गुर री हेला निदा करे, तिण पडवजियो मिथ्यात ।
 तिणरे दरसन मोह उदे हुवां, संवली न सूंके वात ॥ ५ ॥
 केइ बालक गुर बुधवत छे, केइ बालक अल्प बुद्धिताय ।
 पिण चारित पाले निरमलो, वले गुण घणां त्यां मांय ॥ ६ ॥
 त्यारी हेला निदा कीयां थकां, सकल गुण खय थाय ।
 तिणने उपमा देने निषेधियो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[निह्व तेरासिया केहायत आलखो]

ज्यूं अग्न मे रूडी वस्त घाल्यां थकां, तो वल जल भस्म होय जाय हो । भविक जन
 ज्यू अविने रूपणी अग्न सू गुण वले, ओगुण परगट थाय हो । भविक जन
 श्रीवीर कह्यो अविनीत ने अति बुरो* ॥ १ ॥
 कोइ बालक नाग जागे ने खीजावियो, तो पामें तिण सूं घात हो । भ० ।
 इण दृष्टान्ते गुर री हेला निदा कीयां, पामे एकेन्द्रयादिक जात हो ॥ भ० श्री० २ ॥
 आसी विष सर्प अतंत रूठां थकां, जीव घात सूं इधको न थाय हो ।
 पिण गुर रा पग अप्रसन हुआं थकां, अबोध ने मुगत न जाय हो ॥ ३ ॥
 कोइ अग्नि प्रजलती ने चांपे पग थकी, कोइ सर्प ने क्रोधे चढाण हो ।
 कोइ ताल पुट विष खाये जीवशा भणी, ज्यूं गुर नी आसातना जाण हों ॥ ४ ॥
 कदा अग्नि न बाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो इ सर्प न खाय हो ।
 कदा ताल पुट विष न मारे खायां थकां, पिण गुर हेलणा सूं मुगत न जाय हो ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ पर्वत वांछे सिर सूं फोडवो,
 कोइ भाला री अणी नें मारें छें टाकरां,
 कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तकें,
 कदा भालोइ न भेदे टाकर मारियां,
 कोइ क्रोधी कुशिष्य अग्यांनी अहंकार सूं,
 ते मायावियो धुरत तांणीजसी संसार में,
 अविनीत नें सीख दीये हेत जुगत सूं,
 ते आवती लिखमी नें ठेले डांडे करी,
 केइ हस्ती घोडा छें अविनीत आतमा,
 तो अविनीत धर्माचारज तेहनो,
 वले अविनीत आतमा दुख पामें घणो,
 ते विकलेद्रिय सारिखा छें सुघ बुध बाहिरा,
 ते तों डांडे शस्त्रकरी मारीजता,
 तो गुर रा अविनीत ने सुख किहां थकी,
 वले अविनीत देव दाणव गंधच्वा,
 तो गुर रा अविनीत नें मार अनंत गुणी,
 अविनीत ग्यांन दरसण चारित तणो,
 उणने ऊंघोई सूभे नें ऊंघो अरथ करें,
 केइ विनीत अविनीत भण्या दोनूं गुर कर्नें,
 तिणनें सूघोई सूभे नें सूघो अरथ करे,
 ते विनीत अविनीत मारग जातां थकां,
 अविनीत कहे हाथी गयो इण मारगे,
 विनीत कहे हथणी पिण कांणी डावी आंख री,
 वले पुत्र रतन छे तिणरी कूख में,
 वले आगे गयां एक बाइ प्रश्न पूछियो,
 म्हारो पुत्र प्रवेश गयो ते मिलसी किण दिने,
 हुं काटूं रे चाहुं जीमडली तांहरी,
 तूं धसको कयूं नांखे रे पापी एहवो,
 विनीत कहे पुत्र थारो घरे आवियो,
 इणरो साच न माने ओ भूठ बोले घणो,
 ए दोनई बोला में अविनीत भूठो पड्यो,
 जब अविनीत घेष धर्यो गुर ऊपरे,

कोइ सूतोइ सिंह जगाय हो ।
 ज्यूं गुर नी आसातना थाय हो ॥ ६ ॥
 कदा कोप्योइ सिंह न खाय हो ।
 पिण गुर हेल्णा सूं मुगत न जाय हो ॥ ७ ॥
 बोलें विगर विचारी वांण हो ।
 काष्ट बूहो जाये पांणी में ड्यूं जांण हो ॥ ८ ॥
 तो उ क्रोध करें तिण वार हो ।
 ते तो पूरों छें मूढ गिंवार हो ॥ ९ ॥
 त्यांनं प्रतख दीसे छे दुख हो ।
 ते किण विघ पामें सुख हो ॥ १० ॥
 लोक माहें नरनार हो ।
 त्यांरों विगड्यो दीसें आकार हो ॥ ११ ॥
 भूख तिरखा रा दुख सहीत हो ।
 तिण छोडी छें जिण धर्म रीत हो ॥ १२ ॥
 ते पिण खाये छे मार हो ।
 नरक निगोद मकार हो ॥ १३ ॥
 उ दिन दिन पामें विणांस हो ।
 वले बुध ने अकल रो हुवे नास हो ॥ १४ ॥
 पिण विने सहीत भणियो विनीत हो ।
 भण भण ऊंघो पडे अविनीत हो ॥ १५ ॥
 हथणी रो पग देखी तांम हो ।
 ओ बोल्यो निसंक पणे आंम हो ॥ १६ ॥
 उपर राजा री राणी सहीत हो ।
 विवरा सुघ बोल्यो विनीत हो ॥ १७ ॥
 ते ऊमी सरवर पाल हो ।
 जब अविनीत कहे कीघो उण काल हो ॥ १८ ॥
 तु बिह्यो बोले केम रे दो भागी ।
 जब विनीत बोले छे एम हो ॥ १९ ॥
 आज मिलसी तोसूं निसंक हो ।
 इणरी जीम वेरण रो वंक हो ॥ २० ॥
 साच उतरियो विनीत हो ।
 कहे मोनें न भणायो रूडी रीत हो ॥ २१ ॥

एहवी ऊंधी करे विचारणा,
 कहे मोनें न भणायो थें कूड कपट करी,
 अविनीत ने बोल्यो जाण वुरी तरें,
 निरणो करे संका काढी अविनीत री,
 इहलोक तणा गुर रा अविनीत री,
 तो धर्माचारज रा अविनीत री,
 नकटी बूटी कुलखणी नार नें,
 तिण विगडायल ने जोगी भखडादिक आदरे,
 नकटी तो आप सरिखो आवे मिल्यां,
 ते इधको न वाछे आपणपो खोजियां,
 नकटी सरिखो छे अविनीत कुलखणो,
 तिणनें आप सरिखो को एक आए मिलें,
 नकटी तो जोवे जोगी भखडादिक,
 जो अशुभ उदे हूवें घणो अविनीत रे,
 कांदा ने सो वार पाणी सू धोवियां,
 ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेज दीये घणो,
 कांदा री तो वास धोया मुवरी पडें,
 जो छोडवे तो अविनीत अंवलो पडे घणो,
 कोइ गुर मत्ता छे सुविनीत आतमा,
 जो हेत देखें तिण ऊपर गुर तणो,
 विनीत ऊपर घणो हेत हूवें गुर तणो,
 जब ओगुण सूभे अणहूताइ गुर तणा,
 अविनीत जाणो विनीत मूआ थकां,
 एहवा परिणामा घात वाछे सुविनीत री,
 वले ओषध भेषज आहार पांणी तणी,
 दुख ने असाता वांचे सुविनीत री,
 ओरां री अंतराय असाता दुख चिंतव्यां,
 सितर कोडा कोड सागर त्यां लगे,
 ते तो जिहां जिहां उपजें तिहा तिहां दुख हूवें,
 अंतराय अविनीत पणो छें एहवी,
 जो पाप उदे हूवे अविनीत रे इण भवे,
 वले गमतों न लागे इणरो बोलियो,

आए गुर सू भगड्यो अविनीत रे ।
 वले वोलें घणो विपरीत रे ॥ २२ ॥
 तिण सू गुर पूछ्यो दोयां नें विचार हो ।
 पिण उणरो तो उहिज आचार हो ॥ २३ ॥
 अकल विगड गई एम हो ।
 ऊंधी अकल रो कहिवो केम हो ॥ २४ ॥
 तिणनें परहरी निज भरतार हो ।
 ते पिण जाए तिणहिज लार हो ॥ २५ ॥
 घणो हरष धरे मन पीत हो ।
 तिमहिज जाणो अविनीत हो ॥ २६ ॥
 तिण सू निज गुर न धरे पीत हो ।
 तिणसूंई इधको अविनीत हो ॥ २७ ॥
 ज्यूं अविनीत जोवे अजोग हो ।
 तो मिल जाए सरिखो संजोग हो ॥ २८ ॥
 तो ही न मिटे तिणरी वास हो ।
 पिण मूल न लागें पास हो ॥ २९ ॥
 निरफल छें अविनीत नें उपदेश हो ।
 उणरे दिन दिन इधक कलेशा हो ॥ ३० ॥
 गुर छद्दे रो चालणहार हो ।
 तो अविनीत मुख दे विगाड हो ॥ ३१ ॥
 तो अविनीत ने दुख हूवे साख्यात हो ।
 वले वाछें विनीत री घात हो ॥ ३२ ॥
 पछे म्हारोईज हुसी आग हो ।
 तिण लीधो कुगति रो माग हो ॥ ३३ ॥
 ओ जाणे ने पाडे अन्तराय हो ।
 अविनीत ने ओलखो इण न्याय हो ॥ ३४ ॥
 तिणरे बंधे महा मोहणी कर्म हो ।
 नही पांमं जिणवर धर्म हो ॥ ३५ ॥
 उतकपटो अनंतो काल हो ।
 कोइ बुधवंत देसी टाल हो ॥ ३६ ॥
 तो सगला नें लागे जहर समान हो ।
 आगे खुलसी दुखां री खान हो ॥ ३७ ॥

गुर बारा सूं आयां उठ ऊभो हवें, पग पूंज नेमें सुविनीत हो ।
 अविनीत ने इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करें तोही भूंडी रीत हो ॥ ३८ ॥
 पग पूंज वीयावच करणी अविनीत ने, ते तों कठण घणो छे काम हो ।
 ते काम पड्यां अविनीत टालो दीये, तिणरे प्रबल अविनो नें अभिमान हो ॥ ३९ ॥
 गुर भक्ता उपर द्वेष अविनीत रो, वले ईसको ने खेदो अतंत हो ।
 उणरा छिद्र जोवें छे उतारणा आसता, तिणरा चारित जाणे मतवंत हो ॥ ४० ॥
 वले करे विनीत सू मूढ बरोबरी, पिण विनो कीयो मूल न जाय हो ।
 वले अवगुण न सूझें अविनीत ने आपरा, तिण सूं दिन दिन दुखियो थाय हो ॥ ४१ ॥



ढाल : ४

दुहा

छ बोलं करी सहित नें, करणो गण अधिकारी जांग ।
 ते तों करे वधोतर गण तणी, ते गुण रतनां री खांग ॥ १ ॥
 कलहगारी अभिमांनी अविनीत नें, जो करे आगेवांग ।
 तो पाडे विखेरो गण मभे, करे सावां री हांग ॥ २ ॥
 केयां नें लडलड ने दूरा करे, वले वांछे केयां री घात ।
 गुणवंत सावां रा गुण सुणे, ते पिण सह्या न जात ॥ ३ ॥
 उ आमी साहमीं वातां करे, उठावें मांहोमां वेष ।
 करे मांहोमां लगावणी, ते अविनीत लेजें देख ॥ ४ ॥
 इसडा अजोग अविनीत सूं, कोइ करे अग्यांनी प्रीत ।
 ते पिण घणो पिच्छतावसी, होसी घणो फजीत ॥ ५ ॥
 आगें अविनीत हुवा घणा, त्यांरो सूतर में छें नांम ।
 इण अनुसारें अवर ने, ओलख लेजो तांम ॥ ६ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

घनावो सेठ सुत च्यारे वडू रे, उभिया ने भोगवती जांग रे । सुगण नर* ।
 रखिया ने वले रोहिणी रे लाल, त्यांरी सेठ कीधी छे पिछांग रे । सुगण नर ।
 भाव सुणो अविनीत रा रे लाल* ॥ १ ॥
 पांच पांच साल दाणा सूप नें रे, मांग्या किते एक काल रे । सु० ।
 उभिया कण उछाले दीया रे, भोगवती गिल गई साल रे ॥ सु० भा० २ ॥
 रखिया जतन कर रखिया रे, रोहिणी कीधी वधोतर भरपूर रे ।
 ते तो मुसरे मांग्यां सूपे दीया रे लाल, धुरली दोग्यां रो विगड्यो नूर रे ॥ ३ ॥
 सेठ च्यारां ने साच बोलाय ने रे, यांरा न्यातीला उभां आंग रे ।
 सेठ सूप्यो कांम च्यारां भणी रे, यांरा गुण परिणामें जांग रे ॥ ४ ॥
 गोवर वासीदो उभिया भणी रे, भोगवती रसोइदार रे ।
 कोठार सूप्यो रखिया भणी रे लाल, रोहिणी नें सगलो घर वार रे ॥ ५ ॥
 उभिया भोगवती दुखणी थई रे, घरती मन माहिं रोस रे ।
 ते हेला निंदा पांमी लोक में रे लाल, पिण सुसरो हुवो निरदोप रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्युं गुर गण सूपे सुविनीत नें रे, ते छे रखिया नें रोहिणी समान रे।
 जब अविनीत दुख पारमें घणो रे लाल, उभिया भोगवती ज्युं जाण रे ॥ ७ ॥
 उभिया नें भोगवती दुखपी हुई रे, ते तों एकण भव मभार रे।
 पिण अविनीत दुखियो हुसी घणो रे, तिणरो कहितां नावें पार रे ॥ ८ ॥
 उभिया भोगवती नें घर सूपियां रे, ते करें खजानो खुराब रे।
 ज्युं अविनीत नें गण सूपियां रे, तो जाए टोलां री आव रे ॥ ९ ॥
 जिण टोलां में अविनीत छे रे, तिणसूं आछो कदेय म जाण रे।
 तिणरी खप करने ठाम आणजो रे, नहीं तो परिहरो चतुर सुजाण रे ॥ १० ॥
 किण ही गाय दीधीं च्यार ब्राह्मणां भणी रे, ते वारे वारे दूहे ताय रे।
 तिणनें चारे न नीरे लोभी थकां रे, म्हारे काले न दूजें आ गाय रे ॥ ११ ॥
 त्यारें मांहोमां लागो इसको रे, तिण सूं दुखे दुखे मूइ गाय रे।
 ते फिट फिट हुवा ब्राह्मण लोक में रे, ते दिष्टंत अविनीत नें ओलखाय रे ॥ १२ ॥
 गाय सारिखा आचारज मोटकां रे, दूघ सारिखो .दे ग्यान अमोल रे।
 कुशिष्य मिल्या तो ब्राह्मण सारिखा रे, ते ग्यान तो लेवें दिल खोल रे ॥ १३ ॥
 आहार पांणी आदि वीयावच तणी रे, ए न करें सार संभाल रे।
 एहवा अविनीतां रे वस गुर पड्या रे, त्यां पिण दुखे दुखे कीयो काल रे ॥ १४ ॥
 ब्राह्मण तो फिट फिट हुवा घणां रे, ते - तों एकण भव मभार रे।
 तो गुर रा अविनीत रो कहिवो किसूं रे, तिणरो भव भव हुसी विगाड रे ॥ १५ ॥
 ज्यारे सिखां रो लोभ लालच नहीं रे, ते तो दूर तजें अविनीत रे।
 ते गरग आचारज सारिखा रे, गया जमारो जीत रे ॥ १६ ॥
 गरग आचारज नें मिल्या रे, पांचसो शिष्य अविनीत रे।
 ते गुर वचनें उलटा पड्या रे, हिवें सुणजो त्यारी रीत रे ॥ १७ ॥
 गुर नें रोग उपना थकां रे, पडियो ओषधादिक रो काम रे।
 अविनीत मेल्या जाये नहीं रे, ते तों जुआ जुआ बोलें आंम रे ॥ १८ ॥
 एक कहें मोनें नही ओलखो रे, बीजों कहें न देसी मोय रे।
 तीजी कहें घरे हुसी नहीं रे, चौथो कहे मेलो थें ओर जोय रे ॥ १९ ॥
 केइ सुण सुण उत्तर दे नहीं रे, मून साभे कपट सहीत रे।
 केइ अलगा जाय बेसैं गुर थकी रे, कार्य करवा सूं डरिया अविनीत रे ॥ २० ॥
 केइ राय बेठियां री परें मानता रे, केइ बतलायां मुख दे विगाड रे।
 एहवा अविनीतां ऊपरे रे, गुर खेद पाम्या तिणवार रे ॥ २१ ॥
 म्हे दिख्या दे सूतर भणाविया रे, भात पांणी सूं पोख्या अविनीत रे।
 मारे काम न आया दिन आजरे रे लाल, यां लीचीं पंखियां वाली रीत रे ॥ २२ ॥

विनीत अविनीत री चौपई : ढाल ४

पंखी इंडा पाल मोटा करे रे, पछें उड जाये आयां पांख रे।
 ज्यू ए अविनीत भण भण विगडिया रे, म्हारी मूल न माने सांक रे ॥ २३ ॥
 सीदावें छे म्हारी आतमा रे, या अविनीतां रे परसंग रे।
 इहलोक परलोक मांहरो रे, रखे विगड जाये यारें संग रे ॥ २४ ॥
 एहवा शिष्य छे मांहरा रे, गलियार गवा ज्यू अविनीत रे।
 त्यानें हूर तजे अल्लो रहे रे, सुघ संयम पालू ह्डी रीत रे ॥ २५ ॥
 छोड्या पांचसो अविनीत नें रे, आण्यो मन संतोष रे।
 करणी करे कर्म काट नें रे, पहुंता अविचल मोख रे ॥ २६ ॥
 ज्यू अविनीत ने छोड्यां थकां रे, ग्यानादिक गुण वधता जाण रे।
 मिट जोय कलेश कदागरो रे लाल, त्याने नेडी हुसी निरवांण रे ॥ २७ ॥
 केइ अविनीत नरके गया रे, केइ जाय पड्या छे निगोद रे।
 आप छादे ऊंधी अकल सू रे लाल, गमाय नें समकित बोध रे ॥ २८ ॥
 अविनीत मे अवगुण घणा रे, ते तो पूरा कह्या न जाय रे।
 पिण इण अनुसारें अनेक छे रे, ते बुधवंत देसी ब्ताय रे ॥ २९ ॥
 अविनीत रा भाव सांमले रे, घणो हरख पामें नरनार।
 केइ भारी करमा उलटा पडे रे, त्यारे घट माहे घोर अघार रे ॥ ३० ॥

ढाल : ५

दुहा

केइ अविनीत एकल फिरे, विटल हुआं बेकाग।
 ने बीठा निरलज लोक में, त्पारो विगड गयो जमवार ॥ १ ॥
 निप एकल नूं अविनीत बुरो, सायां रा गज मांज।
 ने स्वामनेही सेवग जिती, न डरे करलें अन्धाय ॥ २ ॥
 दुमनो चाकर दुसमग सारिखो, ते प्रसिद्ध लोक बरीत।
 ज्यूं छिद्री थकों टोप्यां माहें रहें, ते आछो नहीं अविनीत ॥ ३ ॥
 ओ भेलो रहे कपटी थकों, ते करे घगी तरमाय।
 छल बल खेहें चोर ज्यूं, करें बूझ्य रो उजाय ॥ ४ ॥
 तिगरी चरचा उपदेज छे अति वुगे, ते फाडा नोडा रें कांम।
 अभिमानी अविनीत री रीत नें, कहि बजाज तांम ॥ ५ ॥

ढाल

[जिरा धनं ब्रह्मीं र]

अविनीत	समभावे	तेहने	ए.	आपरो	कर	गये	काम।
ओगं	नूं	करें	ओपरो	रे.	तिगरो	आगे	बन गयी टंम के।
					अविनीत	एहवा	ए ॥ १ ॥
ओर	मानां	रा	काहें	गृहस्थ	खूं चगा	ए.	तिग नूं बात करें दिख लोम।
अंन	मे	जाणें	आपरो	ए.	निगने	मीगवे	बगना टोम के ॥ २ ॥
ओर	ओर	सायां	रा	गुप	करें	ए.	तो अविनीत नूं मजा रे न जय।
निग	नूं	उन	भांज	नें	ए.	तिगनें	ग्यांत चरचा न मीगार के ॥ ३ ॥
जो	ननगुर	आगे	समझियो	ए.	ननगुर	नी	घगी छे गमनी।
निररे	ओगुन	नीपजे	ए.	जो	आम	मिं	प्रसिद्धि ॥ ४ ॥
निगने	आज	डेज	बोल	पूछ	ने	ए.	तिगरी समझिन छे रे वुगना।
आगे	पगट	करे	ए.	जो	चरचा	टोम	मीगार ॥ ५ ॥
जो	चरचा	बोल	मीलाय	नें	ए.	उन	बोके प्रसिद्धि ॥ ६ ॥
जिं	हुन	छे	समझनी	ए.	निररे	मत	सने मीगरी गीर ॥ ७ ॥
ने	ने	रन	अवमान	आते	ए.	मान	बजाज
ने	आम	गमना	ए.	निग	न	जिग	जिग

* ५४ * अविनीत प्रयोग गद्य के अन्त में है।

तिणनें आप तणो करें रागियो ए, शंका ओरां - री घाल ।
 अभिमांनी अविनीत - री ए, एहूवी छे उंधी - चाल ॥ ८ ॥
 कोइ गुर गुर भायां आगें समभियो ए, तिण व्रत लीया तिण पास ।
 चांदें त्यांरें नांम ले ए, जब अविनीत पामे उदास ॥ ९ ॥
 अविनीत रो नांम लेवां दे नही ए, तो तिण सूं राखें घेष ।
 भूखो घणो नाम रो ए, तिण पहिर विगाड्यो मेघ ॥ १० ॥
 कोइ विनीत आगे व्रत आदरे ए, तो विनीत बोले एम ।
 म्हारें सो गुर थांहरे रे, हिवें अविनीत बोलें केम ॥ ११ ॥
 जो अविनीत आगे व्रत आदरे ए, तो उन ले गुर रो नांम ।
 पोतेंइ गुर ठेहरे ए, ते पिण मान बडाई कांम ॥ १२ ॥
 विनीत सीखावे करणी वंदणा ए, तो घुर सूं ले गुर रो नांम ।
 अविनीत सीखावता ए, ते तो आपरो नांम ले तांम ॥ १३ ॥
 विनीत तणा समभाविद्या ए, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय ।
 अविनीत रा समभाविद्या ए, ते कोकला ज्यूं कांनी थाय ॥ १४ ॥
 समभाया विनीत अविनीत रा ए, त्यामे फेर कितोयक होय ।
 ज्यूं तावडो नें छांहडी ए, इतरो अन्तर जोय ॥ १५ ॥
 कोइ अविनीत आगे समभियो ए, पिण ग्यान रो होय गराग ।
 को एक हुवें समकती ए, नही लागो अविनीत रो दाग ॥ १६ ॥
 कोइ कंठ कलाघर साथ जी ए, ते तों करे घणो उपगार ।
 हेत नें जुगत करी ए, समभावें नर नार ।
 उपगारी साध एहवा ए ॥ १७ ॥
 केयां ने साध पणो अदरावतां ए, केयां नें श्रावक व्रत दराय ।
 केया ने करे समकती ए, नवतत्त्व निरणो कराय ॥ १८ ॥
 केयां ने जिण धर्म सू सनमुख करें ए, तिणसूं दान देवें निरदोख ।
 संसार परित्त करे ए, तिणसू पामें अविचल मोख ॥ १९ ॥
 केइ दयासत सील आदरे ए, केइ तप कर करम दें तोड ।
 ते पिण सुण्या सांभल्यां ए, वले पामे आणंद कोड ॥ २० ॥
 केइ सुण सुण ने सुलभ पडे ए, घणो हरप पामें भवि जीव ।
 उपदेश सुणिया थकां ए, घणा जीव दे मुगत री नीव ॥ २१ ॥
 ते तों जिण मारग करे दीपतो ए, धर्म कथा रे सजोग ।
 महिमा फेले अतिघणी ए, त्यांने धन धन करे बहुलोग ॥ २२ ॥
 अविनीत सुणे तो मुंह मचकोड ने ए, करे हासो मतकरी ठेक ।
 कहे न्हें सगला देखिया ए, समकती न दीठो एक ॥ २३ ॥

पेला रा गुण सहिवा दोहिला ए, तिण सूं ऊंओ बोलें अविनीत ।
 करें घणी इरखा ए, तिणमें होसी घणी रे कुपीत ॥ २४ ॥
 तिणनें चतुर विचक्षण अटकले ए, ए गुर भायां रो अविनीत ।
 ओलख ने परहरे ए, राखें सतगुर री परतीत ॥ २५ ॥
 कोइ अविनीत आगे समभियो ए, जो उ राखें उणरी परतीत ।
 ओरां री नही आसता ए, तो उणरी पिण आहिज रीत ॥ २६ ॥
 अविनीत समभायो तेहनें ए, जो उ मानें अविनीत री वात ।
 ओरां सूं रहे ओपरो ए, तिणरे माहें रह्यां मिथ्यात ॥ २७ ॥
 अविनीत नें अविनीत श्रावक मिले ए, ते पामें घणो मन हरख ।
 ज्यूं डाकण राजी हुवे ए, चढवा नें मिलिया जरख ॥ २८ ॥
 डाकण जरख चढी फिरें ए, ज्यूं अविनीत अविनीत रे साथ ।
 डाकण मारें मिनष नें ए, ज्यूं ओ करें समकत री घात ॥ २९ ॥
 डाकण चोर राजा तणी ए, तिणनें राजा मारें तो एक बार ।
 अविनीत चोर जिण तणो ए, ते भव भव में खासी मार ॥ ३० ॥
 केइ काछ लपटी कुशिलिया ए, ते न गिणे जात कुजात ।
 गृद्धि घणा रूप रा ए, नीच रे घरे जाये साख्यात ॥ ३१ ॥
 ते फिट फिट हुवे सांगली न्यात में ए, बले राजा लेवे डंड ।
 कुजरबी बणे घणी ए, हुवें देश विदेश में भड ॥ ३२ ॥
 ए काछ लपटी री ओपमां ए, अविनीत नें दीधीं इम जाण ।
 गिरधी घणो खांग रो ए, तिणसूं विकलां नें मूडे ताण ॥ ३३ ॥
 ओर आगे विकलाइ कर सकें नहां ए, तिणसूं चेला री भूख अतंत ।
 सके नहीं दोष सूं ए, ते कुण कुण करें विरतंत ॥ ३४ ॥
 पेला रो शिष्य फटावतो ए, ओ न करे जेज लिगार ।
 को एक आए मिले ए, तो लेजाये घाडोपाड ॥ ३५ ॥
 पेला रो शिष्य फाड आपणो करे ए, तिणनें भारी प्रायश्चित्त आय ।
 ते पिण सूभें नही ए, तिणरे लग रहि चेला री चाय ॥ ३६ ॥
 कोइ अजोग अविनीत गिरधी घणो ए, तिणरी परतीत नही रे लिगार ।
 इसडो इ शिष्य सुंपियां ए, करवा ने होय जाय त्यार ॥ ३७ ॥
 विकल नें शिष्य पणे आदरे ए, ते तों अभिमांनी के अविनीत ।
 कें गिरधी छें आहार रो ए, त्यांरी किम आवें परतीत ॥ ३८ ॥
 उणनें विकल अजोग जाणया पछें ए, तिणनें चेलो करें मर्तहीण ।
 निरलज सके नही ए, ते तो करम बांघण परवीण ॥ ३९ ॥

ज्यांरे चेला री तृष्णा अति घणी ए, त्यांरा अधिर रहे परिणांम ।
चरित नें आराधणो ए, तिणरो छें काठी काम ॥ ४० ॥



ढल : ६

दुहा

ए अविनीत भाव ओल्लावियो, इमहिज साधवी जांप ।
 वले श्रावक श्रावका तणी, तिमहिज करजो पिछांग ॥ १ ॥
 केयक गृहस्थ अजोग छें, श्रावक श्रावका ताम बराय ।
 ते अविनीत घना साधां तगा, सके नहीं करता अन्याय ॥ २ ॥
 त्यांनं विनो धर्म मूळें नहीं, प्रबल अविनो नें अभिमान ।
 दगात्राजी करे जिग धर्म में, वले कूड कपट री खान ॥ ३ ॥
 ते करे साधां री क्षमातना, वले बोले घणा विपरीत ।
 त्यांची ओगुग ग्राही छे आजमा, अतिही घणा अविनीत ॥ ४ ॥
 एहवा अविनीतां में अवगुण घगां, कहितां नावें पार ।
 विग थोडा ना परगट कवं, ते सुणजे आज उवाड ॥ ५ ॥

ढल


[मन करो कदा माद्य करमी]

केइ अविनीत श्रावक श्रावका, सके नहीं बांघता कर्म रे ।
 करे धर्म ठिकाने कदागरो, नहीं उलख्यो विने मूल धर्म रे ।
 केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
 ते साब साधव्यां री निग करे, अवगुण बोले विपरीत रे ।
 ते सुंस कराय ग्रहस्थ नें, त्यांची भोला मानें परतीत रे ॥ २ ॥
 ते सुंस री संका रो मारियो, क्रिग विव जाडें निकाल रे ।
 जो प्रतीत राखे एहवा अजोग री, ते वांचे अगुभ कर्म जाल रे ॥ ३ ॥
 उंवा सुंन दीया अविनीत रा, ते सरव्यां हुवे समकित नास रे ।
 एहवा दुपच खांगा दूरा करे, आलोदग करे गुर पास रे ॥ ४ ॥
 उग वही ते सगली कहे गुर कर्ने, गोपत्री नहीं राखे लिंगार रे ।
 नहीं कख्यां तो सत्य माहें रहें, ते मतवंत करज्यो विचार रे ॥ ५ ॥
 वात अविनीत री मानियां, उगरे कुग कुग अवगुण धाय रे ।
 उत्तर जाये साधां री आसता, नुघ वंदगा पिग कीवीं न जाय रे ॥ ६ ॥
 दांन पिण देणी नावे भाव सुं, असणादिक च्यार बाहार रे ।
 संका सहित वेंहरावियो, किम करे परित संसार रे ॥ ७ ॥

हुलास न आवे साधु देखियां, अनेक गुणां री पडें हांण रे ।
 दग्ध बीज दाधा रीगा हुवे, तिणरी संगत रा एकल जांण रे ॥ ८ ॥
 जो उ सूंस भागण सूं डरतो थको, नहीं काढे तिणरो निकाल रे ।
 तो उ भमण करे इण संसार में, ज्यूं अरट तणी घड माल रे ॥ ९ ॥
 सूंस दराय नें अवगुण कहे, काढण न दे निकाल रे ।
 एह्वा अविनीत अजोग ने, बुधवंत जांण देसी टाल रे ॥ १० ॥
 कोइ अविनीत हुवे साधु साधवी, तिण सूं मिलें मूढ जाय रे ।
 ओ अणहंता अवगुण कहे तिके, धार राखे मन मांय रे ॥ ११ ॥
 ते गुर कने आय कहे नहीं, अविनीत रो न करें उघाड रे ।
 वले ओगुण बोलावण कारणे, तिण जनम कीयो छे खुवार रे ॥ १२ ॥
 उ साच माने अविनीत रो, वले तिणरी करें पखपात रे ।
 सुघ साघां री निंदा करतो फिरें, तिणरे न मिथ्यो मूल मिथ्यात रे ॥ १३ ॥
 अविनीत नरमाइ करें उण कने, वले बोलें मीठा मीठा वेंण रे ।
 करे खुसामदी तेहनी, रोवे घणो भर भर नेंण रे ॥ १४ ॥
 पछें अवगुण वोलें ओ गुर तणा, केइ एह्वा छें दुष्ट अविनीत रे ।
 गरीब होय आपो छिपाय दे, तिणरी मूरख माने परतीत रे ॥ १५ ॥
 जो साच मानें अविनीत रो, घणां री न मानें परतीत रे ।
 पखपात करे अविनीत री, ते चिहुंगति में होसी फजीत रे ॥ १६ ॥
 अविनीत नरमाइ करे घणी, तिणरी वात राखे सर्व दाव रे ।
 तिण ने साध लेखव नें विनों करें, तिणरी पिण जावसी आव रे ॥ १७ ॥
 आप सूं आय मिले तेहना, ओगुण दे सर्व ढांक रे ।
 रहितो जांणें आप सूं ओपरो, तो उणने आल देतो नांणे सांक रे ॥ १८ ॥
 ए राग नें घेष रो घालियो, कर रह्यो कूडी पखपात रे ।
 एह्वा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूरख मानसी वात रे ॥ १९ ॥
 एह्वा जनम कदापरी अजोग सूं, गूज्म करे मतिहीण रे ।
 कर्म बंधे उणरी संगत कीया, तिणनें दूर तजें परवीण रे ॥ २० ॥
 कोइ अविनीत अजोग साधु तिण कने, लीया श्रावक व्रत पचखांण रे ।
 वले सीख्यो सभाय बोल थोकडा, पिण तिणरी न कीवी पिछांण रे ॥ २१ ॥
 जो उ निंदा करे सुघ साघ री, तो उ मान लेवे ततकाल रे ।
 उणनें श्रद्धे सत्यवादी भोलो थको, वले संकतो नहीं काढे निकाल रे ॥ २२ ॥
 अविनीत ओगुण कहे ओर नां, जो जांण राखे घट मांय रे ।
 पिण कोइक उणरा ओगुण कहे, तो कह दे उ तिण कने जाय रे ॥ २३ ॥

ते भणियां नें वरत लीयां तणी, ए कूडी करे पखपात रे ।
 ओ आछो जाणे छे अविनीत नें, ते तो निश्चेंइ वूडो साख्यात रे ॥ २४ ॥
 केइ एइवा छे श्रावक श्रावका, वले लड पडे काढ्यां निकाले ।
 ते तो राम नें घेष मांहे कल्या, ते निफल गमावे छे काल रे ॥ २५ ॥
 वले गृहस्थावास मांहे थकां, उणरे स्वारथ पूगो छे एक रे ।
 तिणने साचो करवा भणी, तांण करे मूढ अनेक रे ॥ २६ ॥
 एक स्वारथ पूगो थो आपणो, तिण सूं इस राखें मन मांय रे ।
 तिण साचा नें भूठो करवा भणी, करे ओ अनेक उपाय रे ॥ २७ ॥
 उणरा गुण कीरत जण सांभले, तो लागे अभितर लाय रे ।
 तिणरा अणहुंता ओगुण परगट करे, गुण गुण दे रे उडाय रे ॥ २८ ॥
 वले छल छिद्र जोवतो रहे, सदा रहे दुष्ट परिणाम रे ।
 उणरी आसता उत्तारण खप करे, यूंही जनम गमावे वेकाम रे ॥ २९ ॥
 ए दोष आलोयां विनां मरे, ते मरणो छे सत्य सहीत रे ।
 पछे पाप उदे हुवां तेहने, भव भव होसी कुपीत रे ॥ ३० ॥
 जिण उपर घेष हुवे तेहनों, छिद्र जोवें दिन रात रे ।
 उणरा दोष अणहुंताइ कहें गुर कनें, करे मन भांण तणी वात रे ॥ ३१ ॥
 सावु कहे दोष लागो नहीं, ओ कहे लागो दोष साख्यात रे ।
 डंड दो एहनें निसंक सूं, तिणमें कूड नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 सावु कहे डंड लेवूं नहीं, जब गुर बोल्या छे आंम रे ।
 डंड ले नें संका काढो एहनीं, ते तों भगडो भांजण कांम रे ॥ ३३ ॥
 उणनें डंड दीयो गुर समभाय नें, वले केतव न राख्यो लिगार रे ।
 डंड दिरायो तिणने कहे, ओर नें नहीं कहिणो लिगार रे ॥ ३४ ॥
 जो कह्यो तो तोनें भूठो जांण ख्यां, वले जांण लेखां थारो वेख रे ।
 एहवी कीधीं छें थापना, ते सर्व ग्यानी रखा देख रे ॥ ३५ ॥
 तिण अंतर द्वेष हुवे तेहनों, पिण सूं कहां विण केम रहिवाय रे ।
 उ कहे छांनें छांनें लोकां कनें, सूंस दराय दराय रे ॥ ३६ ॥
 पछें आल देवे मन मानियो, वले वोले घणो विपरीत रे ।
 वेंर जाग्यो तिण उपरें, तिणरी किण विज आवे परतीत रे ॥ ३७ ॥
 उणरी वात चालें तो पडती कहे, घणी निदा करे परपूठ रे ।
 उणनें चतुर हुंता त्यां जांणें लीयो, ओ द्वेष वस बोले छे भूठ रे ॥ ३८ ॥
 छद्मस्थ एहनांण सूं अटकल्यो, ओ अजोग घणो अविनीत रे ।
 कदा साच कहे पिण तेहनीं, पूरी नावें परतीत रे ॥ ३९ ॥

उणरो वचन न माने तिण ऊपरे, क्रोध करे मूंह दे विगाड रे।
उण लारे बोल्या हरषित हुवे, तो घिग घिग तिणरो जमवार रे ॥ ४० ॥
वले आपो जणावे भूठो थकीं, वले भूठो दरायो छें डंड रे।
एहवा अविनीत अजोग छे, ते चिहुंगति में होसी भंड रे ॥ ४१ ॥



ढाल : ७

ढुहा

कूडा कूडा आल सांधा रे दीयां, महामोहणी करम वंधाय ।
 समकित वोध गमाय नें, पडे नरक निगोद में जाय ॥ १ ॥
 तिहां छेदन भेदन पामें घणी, कहितां नावें पार ।
 उत्क्रुष्ट अनंता भव करे, तिहां खावें अनंती मार ॥ २ ॥
 केइ खावें श्रावक घर तणो, केयक मागे खाय ।
 पिण अविनीत पणो छूटे नही, तो गरज सरे नही कांय ॥ ३ ॥
 केइ पेढी जमावे आपणी, मागे नें ल्यावे आहार ।
 त्यां सूं विनों करणो छे दोहिलो, छोडे नें गरब अहंकार ॥ ४ ॥
 पिण सगला नही छे सारिसा, सुविनीत नें अविनीत ।
 त्यांनं जथातथ परगट करूं, त्यारी सुणजो भवियण रीत ॥ ५ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुशें]

ज्यांरे मागे नें खावणो पारको, त्यांरे श्रद्धा रो कठिन छे कामी रे ।
 वले मांन वडाइ रा भूखा थकां, त्यांनं न गमें साधां रा गुण प्रांमो रे ।
 केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
 जो लोक न देवे खावा पहिरवा, ऊंचो हाथ न करे त्यांनं देखो रे ।
 वले आदर सनमान देवें नही, तो साधां उपर करे खेलो रे ॥ के० २ ॥
 साध साधवियां ने दीठां थकां, उठे अभितर आलो रे ।
 वले पेट रे कारण पापिया, डरे नही देता भालो रे ॥ ३ ॥
 म्हाने दीधां में अविरत कहे, तो म्हे उठाय दां यांरी परतीतो रे ।
 तिणसूं लोकां रा मन भांगता थकां, वोळें घणा विपरीतो रे ॥ ४ ॥
 साधां री छे लोकां में आसता, तिणसूं नही छे म्हारो आयो रे ।
 आध विना बेहरासी म्हाने किण विधें, यांनं पेट भरण रो सोच लागो रे ॥ ५ ॥
 त्यांने दीधां में पुन परुपियां, तो श्वान ज्यूं पूंछ हलायो रे ।
 वले दरावे कर कर आमना, तो वांदि लुळ लुळ पायो रे ॥ ६ ॥
 केउ अविनीत हुवे साध साधवी, कदा गुर दे लोकां ने जतायो रे ।
 ते जनम कदागरी सांभले, तो तुरत कहदे तिण वने जायो रे ॥ ७ ॥

विनीत अविनीत री चौपई : ढाल ७

अविनीत नें तीखो करे घणो, विगट्या नें
तिणरो मन भागे कूड कपट करी, टोलां माहें भंड पावो
अविनीत ने पोगां चढाय ने, अवगुण बोले तिण पावो
ते सुण सुण ने हरषत हुवे, ते तो वाधे करमा री रामा
उ छांनो विगड्यो थो घणा दिनां, पिण लोकां मे न पड्यो उघाडो रे ।
अविनीत सू एकठ कीयां पछे, प्रगट हुवो लोक मभारो रे ॥ १० ॥
जो दोप लागो देखे साध नें, तो कहे देणो तिणनें एकंतो रे ।
जो उ मानें नही तो कहिणो गुर कने, ते श्रावक छे वुद्धिवंतो रे ।

सुविनीत श्रावक एहवा ॥ ११ ॥
प्रायश्चित्तराय नें सुच करे, पिण न कहे ओरां रे पावो रे ।
ते तां श्रावक गिरवा गमीर छे, त्यांने वीर वखाण्या तावो रे ॥ १२ ॥
उणरे मूढे तो दोष कहे नही, उणरा गुर नें पिण न कहे जणो रे ।
ओर लोकां आगें कहतो फिरे, तिणरी परतीत किण विच जणो रे ।
वले साधां ने आय वंदणा करे, साववियां ने न वादे ह्यो ने रे ।
त्यांने श्रावक श्रावका म जाणजो, ते तां मूढ मति छे अविनीत रे ।
तिण श्री जिण घरम न ओलख्यो, वले भण भण करे अविनीत रे ।
आप छ्त्रदे माठी मत उपजे, तिणने लागो नही गुर रे ।
कोइ साप पड्यो थो उजाड में, चेत नही सुच रे ।
तिण सर्प री अणुकंपा आण नें, मिश्री घाले नें रे ।

भाव सुणो रे ।
ते सर्प सचेत थयां पछे, आडो फिरियो खावो रे ।
जो उ लूठो हुवे तो उणनें दाव दे, कावो हुवे तो डक रे ।
सर्प सारिखो अविनीत कोइ मानवी, एकल फिरे ज्यू छे रे ।
त्यांने समकित चारित पमाड ने, कीवो मोटो रे ।
एहवो उपगार कीयो तिको, ततकाल मूले रे ।
वले उलटा अवगुण बोलें तेहनां, उणरे सर्प वले रे ।
केइ अविनीत रे ।

आहार पांणी कपडादिक कारणे, ते पिण मूटो रे ॥ ११ ॥
इणने उपरलो हुवे तो दावे डंड दे, आषो तो रे ।
सर्प ने मिश्री दूध पायां पछे, डक तो रे ॥ १२ ॥
ज्यू ओ समकित चारित लीया पछे, हुवो रे ।
वले खाणा पीणा रो हुवो लोलपी, रे ।
छेडवियां सू साह्यां मडे, रे ॥

तिणने दूर करे तो दुसमण थको, बोलें घणो विपरीतो रे ।
 असाध परूपे सगला साध ने, साच बोलण री नही नीतो रे ॥ २३ ॥
 वले प्रायश्चित्त देने मांहे लिये, तो मांहे आवे ततकालो रे ।
 इसडा अजोग अविनीतरो, साच मानें अग्यानी वालो रे ॥ २४ ॥
 त्याने भागल असाध परूपिया, त्यामें प्रायश्चित्त लेई मांहे आवे रे ।
 कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिणने बुधवंत मूढे न लगावे रे ॥ २५ ॥
 सुगरा सांप ने दूध पायां थकां, तो उ करे पाछो उपगारो रे ।
 तिणने धन देई ने धनवंत करे, वले दीठां हुवे हरख अपारो रे ॥ २६ ॥
 ज्यूं कोई आप छादे थो एकलो, सरल परिणांमी ने सुध रीतो रे ।
 तिणने समभ्राय ने संजम दीयो, ते आग्या पाले रूडी रीतो रे ॥ २७ ॥
 कीधो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काजे सूपे रे ।
 त्यांरो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व काम मे घोरी ज्यूं जूपे रे ॥ २८ ॥
 तिणने समकित्त ने संजम वेहूं, रुचिया अभितर पूरो रे ।
 ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रूध ने, पाछो उपगार करण ने सूरु रे ॥ २९ ॥
 वले गामां नगरा फिरता थका, सदा काल करे गुण ग्रामा रे ।
 ते सुविनीत गुण ग्राही आतमा, त्याने वीर बखाण्या तांमो रे ॥ ३० ॥
 ए भाव कह्या अविनीत रा, सांभल ने नरनारो रे ।
 सतगुर रो विनो करो, तो पामो भव जल पारो रे ॥ ३१ ॥

दुहा

ढाल : ८

ज्यांरी विनेवंत छे आतमा, ते हलु करमी छे जीव ।
 ते विनो करण उद्यमी घणा, त्यां दीधी मुगत री नींव ॥ १ ॥
 ते विनो करें सत गुर तणो, त्यारा गुणां री करे पिछांण ।
 भेषघारी भागल ने परहरे, ते डाहा चतुर सुजांण ॥ २ ॥
 सतावीस गुणा सहित छे, तारण तिरण जिहाज ।
 एहवा गुरां रो विनों कीयां थकां, सीमे आतम काज ॥ ३ ॥
 भेषघारी भागल तणो, विनों कीयां बंधे कर्म रास ।
 धर्माचार्य सुध गुर तणो, विनों कीयां हुवे सुध गतिवास ॥ ४ ॥
 ते तो सर्व सावध तज नीकल्या, नही पाप करण रो आगार ।
 विनो करणो कह्यो छे वीर तेहनों, ते सूतर में विस्तार ॥ ५ ॥
 त्यांरो विनों करणो छे किण विधे, वले करणो कितोयक काल ।
 त्यारी आग्या पालणी किण विधे, ते सुणजो सूतर संभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[३ जीव मोह अशुकम्पा न आसिधे]

पालें गुर री निरंतर आगना, कने राख्यां हुवे हरख अपार जी ।
 वले वरते गुर री अंग चेष्टा, जिण सफल कीयो अवतार जी ।
 श्री वीर वखाण्यो विनीत ने* ॥ १ ॥
 तिण अभितर छोडी कषाय नें, नही मुख तणो लवाल जी ।
 एहवा गुर समीप रखां थकां, छता गुण दीपे रसाल जी ॥ श्री २ ॥
 तिणने करडे काठे वचने करी, गुर सीख देवे किणवार जी ।
 तो उ खिम्या करे धर्म जांण ने, पिण न करें क्रोध लिगार जी ॥ ३ ॥
 सुकुमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखावण मोय जी ।
 सुविनीत हुवे ते इम चितवे, मोने हेत रो कारण होय जी ॥ ४ ॥
 कदा क्रोध करे करमा वसे, तो ओलवे नहीं राखे विनीत जी ।
 आलोवे ने प्रायश्चित्त ले गुर कने, नही विचरे सत्य सहीत जी ॥ ५ ॥
 भद्र किलाणकारी घोडे चढ्या, असवार ३ हरष आणंद जी ।
 ज्यूं सीख दीयां सुविनीत नें, गुर पामें परमानन्द जी ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विनीत शोडो आर्त्तार्थ जात रो, चादखो वगी रे हाय देख जी।
 मन मन्तो चाले असवार रे, चादखानी न खाए एक जी ॥ ७ ॥
 इन दृष्टान्ते मुक्तीत नें ओख्खो, ते तौ चाले गुर अनुभार जी।
 चादखा रन वचन जाणां दिनां, देखी वरुं गुर रो आहार जी ॥ ८ ॥
 ते तौ नन वचन काया करी, चित्त चोखे हडे परिनाम जी।
 भारवाड नां शोरी नी परें, विग कहां करें गुर काम जी ॥ ९ ॥
 जे जे गुर नें कारज ऊगनां, जव मुक्तीत रो आहार जी।
 एहवा गुर मगता विनीत रो, जव कीरती बोले संसार जी ॥ १० ॥
 गुर नां चित्त केडें चाख्खो, कार्य करें विलंब रहीत जी।
 कदा कोधी गुर हुवे आकरा, निग प्रसन्न करें मुक्तीत जी ॥ ११ ॥
 कोष न चडावे गुर नें सर्वथा, मुक्तीत गूनां रो मंजार जी।
 ते तौ धान न बाँछें गुर तगी, न हुवें छिद्र गव्यगहार जी ॥ १२ ॥
 विनीत जाणें गुर नें कोषिया, तो उमजावें परी परतीत जी।
 दोनूं हाय जोडी गुर नें कहे, हं कदेय न चानूं कुरीत जी ॥ १३ ॥
 विनीत दनी छे आतना, तिय मंजन तम मूं सोय जी।
 तिन जलम मुवाख्यो आनगो, वेहूं लेक में मुखियो होय जी ॥ १४ ॥
 दोनूं पासं बरोबर वेसैं नही, नहीं वेसैं पूठ अजाय जी।
 सायल मूं सायल संघटे नहीं, नहीं वेसैं पसारी पाय जी ॥ १५ ॥
 पग उर पग चडाय नें, गुर पासं नहीं वेसैं जाय जी।
 बले ठामली मार वेसैं नहीं, उवे आसन न वेसैं जय जी ॥ १६ ॥
 विनीत नें गुर बोलावियां, वेसो नहीं रहे मून सान जी।
 आसन छोडी जाय उमो रहे, मोसूं बिरसा करी गुर जान जी ॥ १७ ॥
 आसन वेसो न लेवे बांचगी, बांचगी लेवे खी रीत जी।
 सनमुद्ध जाय वेसैं ऊकड़, दोनूं हाय जोडी मुक्तीत जी ॥ १८ ॥
 आहार पांगी कनडादिक भोगटे, ते भिन्न गुर री आग्या सहीत जी।
 भिन्न भिन्न न करे विग आगना, पालें जिन आसन री रीत जी ॥ १९ ॥
 बले उमवादिक नां जाचवो, इत्यादिक काम अनेक जी।
 बले देवो लेवो ओर साव नें, गुर आग्या दिग न करें एक जी ॥ २० ॥
 उमवास वेचदिक तन करें, करें रसादिक भंगहार जी।
 ते भिन्न न करें आगनां विदा, बले सच्छिना संथार जी ॥ २१ ॥
 करें दग्गदच्च ओर साव री, ओर पासं बराबे अर जी।
 ते भिन्न गुर आगनां हुवां, एहवीं जिन आसन री धान जी ॥ २२ ॥

अंसमात्र करणो करावणो, ते पिण आग्या लें सुविनीत जी ।
 सर्व कारज में लेणी आगनां, एह्वो बाधी छे अरिहंत रीत जी ॥ २३ ॥
 सुविनीत टोला मांहे रह्यां, ते तों सगलां ने गमतो होय जी ।
 ओर साबु साये मेल्यां थकां, तिणने पाछो न ठेले कोय जी ॥ २४ ॥
 आतमा दमें इंद्र्यां वस करे, उपजावे सार्वां नें परतीत जी ।
 वले लोक वतावें आंगुली, एह्वो काम न करे विनीत जी ॥ २५ ॥
 विनीत सू गुर प्रसन्न हुवे, तो आपे ग्यांन अमूल जी ।
 तिण सू शिव रमणी वेगी वरें, रहे साहजत सुख में भूल जी ॥ २६ ॥
 अमहोत्री ब्राह्मण अम्र ने, नमस्कार करे हाथ जोड जी ।
 घृतादिक सीची ने मत्र भणे, तिणने आरावे मांन मोड जी ॥ २७ ॥
 इण दिष्टान्ते गुर ने अरावतां, केवली थयो शिष्य सुविनीत जी ।
 तो पिण सेवा भगत करे गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत जी ॥ २८ ॥
 राज मे हाथी घोडा विनीत छे, ते तो सुख पामें रूडी रीत जी ।
 नरनारी रिद्ध सम्पत करी, सुखी दीसे छे सुविनीत जी ॥ २९ ॥
 वले सुखी दीसे देवी देवता, जगवत् मोटी रिद्ध पाय जी ।
 जावजीव लगे सुख भोगवे, लोक जस कीरति थाय जी ॥ ३० ॥
 ते पाच्छिल भव पुन्य वांध्या तिके, भोगवे उदे आयां आप जी ।
 पिण प्रतख दीसे लंक मे, जाणे विना तणो परताप जी ॥ ३१ ॥
 ज्यूं कोइ गुर ने रिम्भावे विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष जी ।
 तिणरा ग्यान दरसन चारित वधे, वेगो पामे अविचल मोख जी ॥ ३२ ॥
 केइ पेट भराइ कारणे, सीखे सिल्प कला विग्यांन जी ।
 ते तो संसार ना गुर कने, ते पिण विनों करे मूंके मांन जी ॥ ३३ ॥
 इहलोक तणां अरथी थका, भणे राजादिक नां कुमार जी ।
 गुर करडा वचन कहे तेहने, देवे इडादिक परिहार जी ॥ ३४ ॥
 ते पिण तिण गुर नां पग पूज ने, देवें सतकार ने सनमांन जी ।
 वले घणा सताषे तेहने, वले देवें प्रीतीदांन जी ॥ ३५ ॥
 तो सिद्धांत भणावे तेहनी, विनेवत किम लोपे कार जी ।
 ते तो गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कीयो अवतार जी ॥ ३६ ॥
 इहलोक नां गुर नो विनो कीयां, कदा सीकें इहलोक काज जी ।
 पिण सतगुर नो विनो कीयां, पामे मुगतपूरी नो राज जी ॥ ३७ ॥
 मूल ने खंघ थी वृक्ष उपजे, पछे साखा पडिसाखा वखाण जी ।
 पांन फूल फल रस नीपजे, ते उत्पत्ति सहु मूल री जाण जी ॥ ३८ ॥

इण दिष्टान्ते जिण धर्म विरख रे, विने रूपियो मूल वखाण जी ।
 समकित रूप थाणो तेहनें, धीरज रूपियो खंब पिछाण जी ॥ ३६ ॥
 जश रूप खंब विने वेद का, शील रूपियो गंघ वखाण जी ।
 शुभ ध्यान रूपी छे कूपलां, पंच महाव्रत शाखा जाण जी ॥ ४० ॥
 प्रति शाखा ते पचीस भावनां, बहु गुण रूपियो छे फूल जी ।
 पंच संवर रूप फल तेहनें, दया रूपियो रस अमूल जी ॥ ४१ ॥
 मोष रूपियो बीज तिण फल मने, एहवो धर्म विरख छे अखोम जी ।
 ते समदृष्टि रे हिये विराजतो, विने मूल सूं रह्यो सोभ जी ॥ ४२ ॥
 ज्युं विरख रो मूल सूकां थकां, शाखादिक सगला सूक जाय जी ।
 ज्युं विने रूप मूल खिस गयां, सगलाइ गुण खय थाय जी ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाई नें टोलां तणा, गुण बोलें रुडी रीत जी ।
 लोक पिण गुण ग्राम करतां थकां, सुण सुण हरखे सुविनीत जी ॥ ४४ ॥
 शिष्य शिष्यणी मिले ओर साध नें, मिले उपवादिक अनेक जी ।
 वले कंठ कला देखी ओर नीं, विनीत तो हरखे विशेष जी ॥ ४५ ॥
 किण ही साध रो न करे ईशको, सर्व साध नें हुवे हितकार जी ।
 एहवा सुविनीत री वंसावली, फेले तीनुंइ लोक मभार जी ॥ ४६ ॥
 गमतो लागें तीरथ च्यार में, जिण शासन रो सिणपार जी ।
 एहवा सुविनीत पासे रह्यां, सीखावे विनो आचार जी ॥ ४७ ॥
 ज्यांरी जात माता री निरमली, पिता रो कूल छें निरदोष जी ।
 ते पिण लज्या कर सहीत छे, ते विनो कर लेसी मोख जी ॥ ४८ ॥
 ते पिण मोह कर्म पतलो पड्यां, सुध रीत जाणें बुधवांन जी ।
 हाड मिंजा रंगी जिण धर्म सूं, तिणनें विनों करणो आसान जी ॥ ४९ ॥
 केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, मेघ पहिरी करे कपटाय जी ।
 इहलोक तणा अरथी घणा, त्यां सूं विनो कीयो किम जाय जी ॥ ५० ॥
 अविनीत में अवगुण घणा, ते तों जाबक छोडे विनीत जी ।
 विनां रा गुण सगला आदरे, ते तों गया जमरो जीत जी ॥ ५१ ॥
 उत्तरावेन पेंहला अध्ययन में, दसविकालिक नचमें जाण जी ।
 वले ओर अनेक सिद्धांत मे, कीया विनीत रा वखाण जी ॥ ५२ ॥
 सतगुर तणा विनीत में, गुण भाख्या श्री भगवंत जी ।
 ते कोड जीभ्या कर वरणवे, पिण कहितां न आवे अंत जी ॥ ५३ ॥

ढाल : ६

दुहा

अविनीत रा भाव सांभले, अविनीत घणो दुख पाय ।
केइ कुगुर सुघ बुध बाहिरा, ते पिण हरषत थाय ॥ १ ॥
विनीत तणा गुण सांभले, विनीत रे आणंद ओच्छ्राव ।
ते पिण कुगुर हरषत हुवे, त्यांरे विनों करावण चाव ॥ २ ॥
ते तो विनो पळेपे निसंक सू, मन में आणंद कोड ।
शिष्यां ऊपर हुकम चलावतां, कर कर मन रो जोड ॥ ३ ॥
ज्यांनं समझ नहीं जिण धर्म री, सूतर री खबर न कांय ।
त्यांरो विनो करे भोला थकां, करे वूडण रो उपाय ॥ ४ ॥
एहवा कुगुरां ने वीर निषेधिया, तो ही विनों सुणी हरखंत ।
त्याने जथातथ परगट कहं, ते सुणजो कर खंत ॥ ५ ॥

ढाल

[डाम मूजादिक नी डोरी]

विनां रा भाव सुण सुण गूजे, आपरा किरतव नहीं सुमे ।
ते तो व्रत विहूणा नागा, ते पिण विनों करावण आगा ॥ १ ॥
देखो कुगुर हीण आचारी, हुवा विनों करावण त्यारी ।
आपण किरतव नहीं देखे, विनों करावसी किण लेखे ॥ २ ॥
हसली नी देखी हाल, बुगली पिण काढी चाल ।
पिण बुगली सू चाल न आवे, तिणसूं हंसली उपर दुख पावे ॥ ३ ॥
एहवा कुगुर साधा नें देखी, ते पिण करवा लगा शेखी ।
आडम्बर कर विनों करावे, पिण आचार पाल्यो नहीं जावे ॥ ४ ॥
सुण कोयल रा टहुकारी, कां कां काग करे तिण वारी ।
सतियां रा सुण सोभागी, केइ कुसत्यां कुडवा लागी ॥ ५ ॥
काग बोले कुराले गाढें, पिण कोयल जेहवो शब्द न काढें ।
कुसती लजा करे किण वारे, सती रे तुले नावे लिगारे ॥ ६ ॥
काग कुसती जेहवा भेषधारी, ते तों वितल थया वेकारी ।
ठाला वादल ज्यूं थोथा गाजें, विनो करावता नहीं लाजे ॥ ७ ॥

गति गयवर की देखी श्वान, भूसवा लागा ऊचा कर कान ।
 ज्यूं सावां नें देखे भेपवारी, श्वान ज्यूं वोलें मूंह विगारी ॥ ८ ॥
 ते पिण विनो करावण भूखा, वले वोलें अग्यांनी अचूका ।
 कने राखें साधु रो भेप, तिण सू वूडे लोक अनेक ॥ ९ ॥
 ते तो व्रत न पाले एक, तोही कर रह्या कूडी टेक ।
 वले चढ गया मांन रे छाजे, एहवा पिण लोक में गुर वाजे ॥ १० ॥
 विनो पस्पता तो गाजे, आचार वतावता लाजे ।
 त्यांमे दोखां रा छेह न पारा, त्यांरे चिहुं विणि पडिया वधाग ॥ ११ ॥
 सीप सिबोटिया रा साथी, थेट रा मूलगा छे मिथ्याती ।
 कूडा कर रह्या पापड फेन, एहवा पांचमां आरा रा चेत ॥ १२ ॥
 वाध्या थानक भिष्टाचारी, वले माया ममता धारी ।
 ते पिण नाम बरावे पूज, ते तो पूरा मूढ खूज ॥ १३ ॥
 नहीं जिण शासन री ठीक, त्यां नरक ने कीवी नजीक ।
 एहवा ने पिण गुर कर पूजे, समकित विन संवली न सूमे ॥ १४ ॥
 त्यांरा मत मांहे मोटी भोलो, जाणे मड रह्यो गागी रोलो ।
 फेल्यो कूड कपट रो चालो, त्यांरो कुण काडे निकालो ॥ १५ ॥
 नव तूवा तेरे नेगदारो, तिण राज में पूरो अवारो ।
 ए पोपां वाई रो राज पिछांणो, ए तो दटांत लोकिक जाणो ॥ १६ ॥
 एहवो भेपवाख्यां रे अंधारो, ते तो फेल्यो लेक मभारो ।
 ठा ठा खाए लोकां रो माल, चिहुंगति में होसी हवाल ॥ १७ ॥
 ज्यांरा गुर छे भिष्ट आचारी, त्यांरें हुइ नरक नी त्यारी ।
 दुख में दुख पामे अथागा, कुगुर बांवां रा ए फल लागा ॥ १८ ॥
 कुगुर वादे पग भाल, मुख सूं करे लाल ने पाल ।
 वले सावां री निंदा ने सूरा, ते तो डूवसी मूरख पूरा ॥ १९ ॥
 एक सत गुर रो अविनीत, एक कुगुर रो सुविनीत ।
 ए दोनूं मारग गया भूल, रह्या पाप कर्म मे भूल ॥ २० ॥
 कुगुरा रा तो दोषण ढांके, सावां रे आल देतो न साके ।
 ते तो करे वूडण रो उपाय, भव भव मांहे दुखिया थाय ॥ २१ ॥
 सावा रा गुण सुणे मिथ्याती, के का री बल उठे छाती ।
 थो पिण छे वूडण रो उपाय, सेजे दलद्र लीयो वुलाय ॥ २२ ॥
 कुगुर बांवां सूं हुवे छे खुवारी, सुगुर हेल्यां हुवे अनंत संसारी ।
 कुगुर छोडे ने सतगुर वादे, ते तों शिवपुर सूं पीत सावे ॥ २३ ॥

कुगुर निषेध्या सुणे अविनीत, ऊंघा अर्थ करे विपरीत ।
 नही विनो करण री नीत, तिण सू वोले कपट सहीत ॥ २४ ॥
 उण सूं विनों कीयो नही जावे, तिणसूं गुर ने कुगुर सरघावे ।
 आपणा दोष सगला ढाके, साघां सिर आल देतो न साके ॥ २५ ॥
 ते तो गुर सू पिण नही गुदरे, त्यांरा कारज किण विघ सुघरे ।
 तिण ने करे टोलां सू न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करे विगाडो ॥ २६ ॥
 सगला साघां ने कहे असाध, वले करे घणो विषवाद ।
 सर्व साघां रो होय जाय बेरी, केइ एहवा छे अविनीत गेरी ॥ २७ ॥
 तिणने लोक आरे करे नाही, तो उ प्राच्छित्त ले आवे मांही ।
 ज्यांने असाधु पळ्प्या था मुख सूं, त्यांरा बांदे पग मस्तक सूं ॥ २८ ॥
 जो उ वले न चाले सूवो, तो उग ने कर देवे गुर जूवो ।
 जब अविनीत रे उवाइज रीत, त्यांरो कीया बोले विपरीत ॥ २९ ॥
 लोका ने साघां सूं मिडकावे, आप बुगल घ्यानी होय जावे ।
 वले कूड कपट रो चालो, आतमा ने लग्गवे कालो ॥ ३० ॥
 ओतो ओगुण काढे अनेक, बुधवत न माने एक ।
 एहवा अविनीत छे गुर द्रोही, तिण आतम पूरी विगोई ॥ ३१ ॥
 जे माने अविनीत री वात, त्यांरे घट में आवे मिथ्यात ।
 एहवा अविनीत अवगुणगारा, त्यां सूं बुधवंत रहसी न्यारा ॥ ३२ ॥
 इम सुण सुण ने नरनारी, छोडो कुगुर हीण आचारी ।
 अविनीत सू रहसी दूरा, ते तों परमेश्वर नां पूरा ॥ ३३ ॥
 विनीत सुण सुण पामें हरष, पडे अविनीत रे मन घडक ।
 ते तो रहे चोर ज्यूं राच, लेवे आपण ऊपर खांच ॥ ३४ ॥
 विनीत अविनीत रा अहेलाण, इम ओलख कीजो पिछांण ।
 रुखी रीत सू काढे नीकालो, अविनीत सूं दीजो टालो ॥ ३५ ॥
 विनां अविना रो ए विस्तार, कीधो खेरवा शहर मभार ।
 वत्तीसे वरष सवत अठारो, भादवा सुद छठ सुकरवारो ॥ ३६ ॥



रत्न : १५

विनीत अविनीत री ढाल

ढाल : १

ढुहा

केइ अविनीत छे दुष्ट आतमा, ते सके नहीं करता अन्याय ।
त्यानें जथातथ प्रगट कलं, ते मुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[समरू मन हरखे तेह]

छिद्रपेही छिद्रवारी राखे, कदे काम पडे जब कहे दाखें ।
तिणरे चारित पालण री नही नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १ ॥
ओर साघां ने दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहे तो निरापेखी ।
आ सुघ साघां री छोडी नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ २ ॥
गुर री निंदा करे छाने छाने, तिण अविनीत री वात अविनीत मानें ।
ते चिहुंगति में होसी फजीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ३ ॥
छाने छाने टोलां में जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छादे ।
तिण संजम सहीत खोई परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ४ ॥
गुर सूं चेला रो मन फाडे, वले टोलां में मूरख भेद पाडे ।
कूड कपट कर कर बोले विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ५ ॥
सतगुर री वात देवे ठेली, अविनीत रो तुरत हुवे वेली ।
तिण छोडी सतगुर सूं प्रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ६ ॥
गुर ने वादे तिकबुत्ता रो पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओघटघाट घणी ।
वले खेले कपट दगा सहीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ७ ॥
जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष ढांके, तूटां हेत देतो आल नही सांके ।
पछे मन मानें ज्यूं बोले नचीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ८ ॥
ते नागा निरलज्ज होय वेठा, त्याने वतलायां वचन बोलें घेठा ।
त्यारे संजम रूप खिस गई भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ९ ॥
पेला ने कुसावण रे कामो, पोते नाक काटे नें मिले साहूँ ।
ज्यूं अविनीत री छे आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १० ॥
सुघ साघां ने उत्थापण काजे, पोते असाव हुवतो पिण नही लाजे ।
त्यां जनम खोयो पिण वे रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ११ ॥
अविनीत साघां रा ओगुण गावे, ते तो भेष धार्यां रे मन भावे ।
त्यारें लारे ए पिण गावें गीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १२ ॥

त्यां लाज सरम अलगी मेली, त्यांरा भेषवारी भागल बेली ।
 अविनीत नें यांरी एकहीज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १३ ॥
 अविनीत भण भण उलटो वूडे, कर कर अभिमान बेसें तूडे ।
 तिणरे विनो नरमाइ नही घट भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १४ ॥
 इसडा अविनीत जावक भूंडा, त्यांरे केडे लगा ते पिण बूडा ।
 त्यांमें पिण हुसी घणी कुपीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १५ ॥
 अविनीत नें हाथ जोडी वादे, ते तों सात कर्म निश्चें बाधे ।
 तिणनें सतगुर री नही परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १६ ॥
 अविनीत रो वखाण सुणवा जावे, तिणरे मिथ्यात वेगो आवे ।
 तिणनें पिण कर देवे विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १७ ॥
 अविनीतां आगे करेणें समाई, तिणरे पिण जाणजो भोलाई ।
 तिण अविनीतां री नही जांणी रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १८ ॥
 अविनीतां सूं जे कोइ प्रीत बाधे, तिण धर्म न ओलखियो बांधे ।
 समकित्त जावण री आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १९ ॥



ढलल : २

दुहल

सलष सलघवी सर्व नें, सतगुर नी ए सीख ।
आदर जो आछी तरे, चित्त नें रखे ठीक ॥ १ ॥

ढलल

[ढलम मूजलदिक नी ढोरी]

गुर उभो सूकलवे तो उभो सूके, ओ पिण अवसर नही चूके ।
गुर करलवे शिष्य नें संथारो, ते पिण आग्यल न लोपे लिलारो ॥ १ ॥
शक्ति न हुवे तो कहे जोडी हलथ, म्हलंरी शक्ति नहीं सलमी नलथ ।
शक्ति हुवे तो आघो नही कलढं, आप कहो ते सिर उपर चलढूं ॥ २ ॥
एहवल शिष्य गुर रल सुविनीत, आगन्यलं पलले इण रीत ।
ते पिण जीवे ज्यलं लग जलण, गुर को वचन करे परमलण ॥ ३ ॥
गुर पिण अवसर कल जलण, ते पिण एहवी क्यलंने करें तलण ।
सूस करलवे अवसर देख, किलण सूं मूल न रखे घेख ॥ ॡ ॥
अपछंढल मे घणल छे दोष, छलंढो रूंध्यलं सूं पलमें मोष ।
उतरलधेन चोथल अधेन मभलरु, कोइ वृषवंत करज्यो विचलरु ॥ ५ ॥
गुर ने शिष्य री उपजे अপরतीत, विनलंदिक में जलणें विपरीत ।
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, तो उपजलवे गुर ने परतीत ॥ ६ ॥
जिण जिण वोलं री गुर ने संक, ते संकल कलढें ने करें निशंक ।
करडल करडल सूंस खलवे, गुर ने परतीत उपजलवे ॥ ७ ॥
सूंस कीघलंई परतीत नलणे, सूंसलं नें पिण लोपतो जलणे ।
तो सूंस लिख दे कोरे पलने, ते किलण सूं न रखें छलने ॥ ८ ॥
हूं इण लिख्यल परमलणो हललूं, आगन्यलं लोप कदे नही चललूं ।
जो शिष्य हुवे सुविनीत, इम उपजलवे परतीत ॥ ९ ॥
सूंस लिखत री नलणे परतीत, आगें गुर ने घणी अপরतीत ।
तोही हलथ जोडे सुविनीत, विने सहित वीले रूडी रीत ॥ १० ॥
थें म्हलंरी परतीत मूल न रखी, तो हिवें च्यलर तीरथ देउं सलखी ।
म्हलंरल सूंस कलगद में लिखलय, च्यलर तीरथ नें देउं वंचलय ॥ ११ ॥
हू चललूं इण लिख्यल परमलणो, कदल चूक में पडियो जलणो ।
तो च्यलर तीरथ ने देजो जतलय, मोने हेलें निदे आणे ठलय ॥ १२ ॥

जो यारे कहे न चालूं सूघो, तो मोनें कर देजो गण सूं जूदो ।
 पिण मोसूं किरपा करो स्वामी नाथ, म्हारि मस्तक राखो हाथ ॥ १३ ॥
 हूं मरजादा नही चूकूं, आपरो शरणो नहीं मूकूं ।
 आपरो छे मोनें आधार, मोनें उतारो भव पार ॥ १४ ॥
 जब गुर कहे तूं बोले सुघो, हिवडां मूल न दीसें ऊंधो ।
 रखे हुवेला विस्वासघाती, बांवलिया रा बीज रो साथी ॥ १५ ॥
 बांवल बीज वाया पाणी पूगे, तो उ सूलं लीयाईज उगे ।
 बांवल बीज सुहालो थो आगे, हिवे ज्यूं वधें ज्यु शूला लगे ॥ १६ ॥
 ज्यूं तूं रहे छे गण मांय, घणो विनों करे छे ताय ।
 रखे साध साधुविया फारे, गुर सूं परिणाम उतारे ॥ १७ ॥
 पछे आल दे नीकलेला बारें, ओरां ने ले जावेला लारे ।
 पाछला नें परूपे असाध, करेला घणो विपवाद ॥ १८ ॥
 घणा जीवां रे घाले ला संका, लगावे ला मिथ्यात रो डंक ।
 ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखे खोटो ॥ १९ ॥
 आ पिण शंका छे थारी मोने, बारवार कहूं हिवे तोने ।
 आ परतीत उपजाव तू गाढी, करडा सूसादिक काढी ॥ २० ॥
 जो तूं सरल छे नही अनाखी, तो तूं च्यार तीरथ दे साखी ।
 जो थारे रहिणो छे गण मांय, तो इण विघ परतीत उपजाय ॥ २१ ॥
 इम सामल नें सुविनीत, विने सहित बोले रुडी रीत ।
 आप कहो तिणने साखी देखं, आप कहो तिको सूंस लेऊं ॥ २२ ॥
 कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो ओरां ने न ले जाऊं लारो ।
 कोइ आफे आवे म्हारि लार, तिण सूं भेलो न कळं आहार ॥ २३ ॥
 गण में रहूं निरदावे एकलो, किण सूं मिलें न बाधूं जिलो ।
 किणने रागी करे राखूं म्हारो, एहवो पिण न कळं विगाडो ॥ २४ ॥
 साध साधवियां री वात, उत्तरती न कळं तिल मात ।
 वले मांहोमां कलहो लागे, किणरी नही कहूं किण आगे ॥ २५ ॥
 इण विघ रहूं गण मभारो, किणरो ओगुण न बोळूं लिगारो ।
 एहवा सूस करावो आप, च्यार तीरथ नें शाखी थाप ॥ २६ ॥
 कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो ।
 ओ पिण सूस करावो मेय, तिणरा साखी करो सहू कोय ॥ २७ ॥
 च्यार तीरथ नें दो थे जताय, मो छूटकरी न माने वाय ।
 याने ही दो सूस कराय, पिण मोनें राखो गण माय ॥ २८ ॥

गुर नें उपनी जाणें अपरतीत, तो इम उपजावे परतीत ।
 ज्यारे मुगत जावा री नीत, गुर ने आरावे इण रीत ॥ २६ ॥
 जे समता रस में रह्या भूल, ते तो मरणो कर दें कबूल ।
 पिण गुर कुल वासो नहीं मूके, विनांदिक्क गुण सूं नहीं चूके ॥ ३० ॥
 सुविनीत गुर नें आराधे, ते आतम कारज सावें ।
 विनों कर गुर नें रीभावे, ते मुगत तणा सुख पावे ॥ ३१ ॥



रत्न : १६

उरण री ढाल

ढाल : १

ढुहा

ढात ढिता सूं उरण किण विघ हुवे, सेठ सूं उरण हुवे केढ ।
वले गुर सूं उरण किण विघ हुवे, ते ढुणजो धर ढेढ ॥ १ ॥

ढाल

[ङाढ ढूँजादिक नौं ङारी]

ढात ढिता जनढ रा दातार, करे संसार नौं उढगार ।
तिणने ढाले ढोसे रुडी रीत, त्यांरो कोयक हुवे सुविनीत ॥ १ ॥
त्यांने गढता ढोजन खवावे, गढता गेहुणा वस्तर ढेहरावे ।
ढीठी ढरदन सिनांन करावे, गढती सेज्या ढें जाय ढोढावे ॥ २ ॥
वले कावड ढाहे वेसाय, कावड खांधे लीयां फिरें ताय ।
घणो विनौं करे जोडी हाथ, ते उरण हुवो नहीं तिलढात ॥ ३ ॥
ढाडतां रो जाणे उढगार, त्यांरो विनो करे वाख्ंवार ।
जाव जीव रहे आगन्यांकारी, तोही उरण न हुवे लिंगारी ॥ ॡ ॥
इसडो ढाडतां ने हितकारो, जीव हुवो अनंती वारो ।
ढुगत जावा रो उढगार, तिण न कीयो ढूल लिंगार ॥ ॡ ॥
ढात ढिता सूं उरण थावे, जो उ जिण धरुं त्यांनें ढढावे ।
सढढाय ढेले ढुगत ढें ताय, ते ढा बाढ सूं उरण थाय ॥ ॢ ॥
कोइ दलद्री दल्लिद्ध सहीत, धन धानादिक सूं रहीत ।
नीठ नीठ ढरे छे ढेट, तिणने राख्यो गुढासतो सेठ ॥ ॣ ॥
दलद्री तिणने सेठ ववाख्यो, तिणरो दल्लिद्ध दूर निवाख्यौं ।
तिणने कीघो रिघिवंत ढारी, सेठ इसडो हुवो उढगारी ॥ । ॥
कदे सेठ न्यारो कीयो ताय, जब ओ ओर सहर रह्यो जाय ।
तो ढिण सेठ री आगन्यां ढांय, त्यांरो नांढ धरावे ताय ॥ ॥ ॥
वले लाखां कोडां ढामी आथ, हुवो घणा नरां नो नाथ ।
तिणरे गुढासता ढोहत कढावे, सगलां उढर हुकढ चलावें ॥ १० ॥
आढ हुवो घणा रो सेठ, तोही निज सेठ सूं वरते हेठ ।
त्यांरो गुढासतो आढ वाजे, ढुख सूं ढिण कहतो न लाजे ॥ ११ ॥
ढूलगा जाणे उढगारी, त्यांने किण विघ घालें विसारी ।
त्यांरो सिक्को धारे रह्यो सेठो, त्यांरो थको तिहां रहे ढेठो ॥ १२ ॥

लारे सेठ रे दिन आयो खोटो, तिणरे पड गयो जाबक तोटो ।
 बले घर में आई पूरी खाल, बाकी क्यूं ही रह्यो नही माल ॥ १३ ॥
 सेठ रा पुन पड गया माठा, गुमासता पिण घन ले नाठा ।
 कांनी कांनी रह्या धन दाव, थोडा में छेडो आयो सताव ॥ १४ ॥
 माथे पिण ऋण हुवो पूरो, सेण सगा हुवा सरव दूरो ।
 उपर सूं पडियो दुरभख ताही, खावा घान नही घर माहीं ॥ १५ ॥
 लोकां मांहे पिण पडियो उघाडो, तिणसूं माथेई न मिले उबारो ।
 अन्न विण मरतां भेली नाकी, जब गुमासता री दिशि ताकी ॥ १६ ॥
 तिण दलद्री रो सेठ कीचो, तिणरो शरणो लेवा मन कीचो ।
 अबुम उदे विपद रो घाल्यो, तिणरी दिशि नें चाल्यो ॥ १७ ॥
 तूटो डील नें तूटी सभाई, मुख वदन गयो कुमलाई ।
 पगां ल्यातरा वाजें ताहि, इण रीते आयो शहर रे मांहे ॥ १८ ॥
 निज सेठ ने आवतो देखी, हरख्यो मन मांहे वखेली ।
 गादी तकिया छोडी साहों जाय, सेठ रा पगां में पडियो आय ॥ १९ ॥
 विने सहीत बोलें जोडी हाथ, मोनें आज कीयो थें सनाथ ।
 थारो दरसन मे दीठो आज, म्हांरा सरिया वंछित काज ॥ २० ॥
 म्हांरे आज भलो दिन उगो, मन रो मनोरथ पूगो ।
 घणी अतंत कीधी लघुताई, इण कुमिय न राखी कांई ॥ २१ ॥
 विनो नरमाई करता देख, लोक इचरज पाभ्यां वखेव ।
 त्यानें उत्पति घुर सूं बताय, सगलां ने दीया समझाय ॥ २२ ॥
 पछे निज सेठ ने घरां ल्याय, मरदन सिनांन कराय ।
 मोय मूंहा ने हलका तोल मांय, एहवा वस्त्र गेहणा पहिराय ॥ २३ ॥
 पछे मन गमता भोजन कराय, ह्डी सेज्या में आण पोडाय ।
 बले भोजन अनेक रसाल, नित्य जीमावे काल रा काल ॥ २४ ॥
 डीलां में चाका कीयो जहरो, सूरत में घणो सनूरो ।
 गादी तकिया वेंसाणे आण, हिवे बोले किण विव वाण ॥ २५ ॥
 आप पवास्था इण ठांम, ते मोने फुरमावो कांम ।
 जब सेठ बोले इम वाय, मोमें विपत पडी छे आय ॥ २६ ॥
 देश दुरभख पडियो ताथ, खावा घान नही घर मांय ।
 माथे पिण न मिले उबारो, जब हूं आयो थारी दिशि घारो ॥ २७ ॥
 आ हूं आप कनें कर्हं अरज, कांयक तो करो म्हांरी गरज ।
 जब ओ बोल्यो सीस नमाय, इसडी भोले म काडजो वाय ॥ २८ ॥

आप तो म्हारा सिर घणी सेठ, हूं तो गुमासतो थारो नेठ ।
 हूं दलद्री तिणनें आप वधाख्यो, म्हारो मिनष जमारो सुघाख्यो ॥ २६ ॥
 म्हे आ पांमी रिधि विस्तार, ओ सगलो आप तणो उपगार ।
 हिचे सगली अवेरलो आथ, रिधि सहित सगलां रा थें नाथ ॥ ३० ॥
 आ रिधि खावो पीवो उडावो, सगलां ऊपर हुकम चलावो ।
 मोने पिण ऋजक रोटी दो आप, हूं पिण इधका क्याने करू टाप ॥ ३१ ॥
 सेठ नें सगली सोपे आथ, सेवग थको रहे जोडी हाथ ।
 वले कदेय न हुवे त्यांसूं जूओ, तो पिण सेठ सूं उरण न हूवो ॥ ३२ ॥
 इसवो सेठ ने हितकारो, जीव हुवो अंनती वारो ।
 मुगति जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिगार ॥ ३३ ॥
 जे कोइ सेठ सूं उरण थावे, ते सेठ ने जिण धर्म पमावे ।
 समझाय मेले मुगत रे मांय, इम सेठ सू उरण थाय ॥ ३४ ॥
 सेठ नें माईत कीयो उपगार, तिणसूं उलटो बधे ससार ।
 ए तो सावद्य रो दातार, तिणमे धर्म नही छे लिगार ॥ ३५ ॥
 जो उ मुगत गांमी जीव होवे, तो एहवा उपगार साहों न जोवे ।
 जो इण उपगार में धर्म जाणे, ते तों भर्म में भूला ताणे ॥ ३६ ॥
 एहवा उपगारी ने देखे ताय, थोडो घणो हरपे मन मांय ।
 तिणरे निश्चे वधें कर्म सात, आ तो जिणजी रा मुख री वात ॥ ३७ ॥
 एहवो पाछो करे उपगार, तिणरें पिण बधे ससार ।
 एहवा आह्वां साह्वां उपगार, कीघा नही पामें भव पार ॥ ३८ ॥
 कोइ हुंतो जीव मिथ्याती, खोटा देव गुर रो पखपाती ।
 करें अधर्म ने धर्म जाणे, महामूढ थको ऊंधी ताणे ॥ ३९ ॥
 तिणनें मिल्या मोटा मुनिराय, समदिष्टि कीयो समझाय ।
 वले श्रावक करे साधु कीघो, मुगत गामी निश्चे कर दीघो ॥ ४० ॥
 ते साधपणो सुध पाल, पछे कीयो तिहां थी काल ।
 ते उरनों देव लोक में जाय, गुर भगता घणो छे ताय ॥ ४१ ॥
 तिण उपयोग दे जोयो तांम, गुर ने देख लीया तिण ठांम ।
 गुर चोमास कीयो तिणवार, काल पडियो ते देश मझार ॥ ४२ ॥
 गोचरी गयां न मिले आहार, जावक तूट गया दातार ।
 लोक होय गया हेरान, खावा नें पूरो न मिले घांन ॥ ४३ ॥
 ओर देश मे सुगियो सुगाल, पिण मारग मे दुरभख काल ।
 तिहां पिण जांवा रो काठो काम, विच में उज्जड होय गया गांम ॥ ४४ ॥

जब कष्ट घणो गुर मांय, मोत घात आए लागी ताय ।
 जब उ गिष्य देवलोक मभार, कष्ट देखी नें कीयो विचार ॥ ४५ ॥
 म्हांग गुर में पडी इसडी वेला, तो हूं जाय करूं अन्न भेला ।
 इम चिन्तव सताव सूं आय, गुर ने मेल्या सुगाल रे मांय ॥ ४६ ॥
 गुर नो कष्ट मेट्यो शिष्य आय, अन्न विण मरता राख्या ताय ।
 बले हरख्यो घणो मन मांय, तो पिण गिष्य उरण हुवो नांय ॥ ४७ ॥
 बले गुर भूला मोटी अटवी मांय, मारग री पिण खवर न कांय ।
 बले भूख तिरखा लागी आय, पग भर ओषो खिसियो न जाय ॥ ४८ ॥
 अन्न पांणी चिनां अटवी मांय, जुदा हुवे जीव ने काय ।
 सिध चित्तादिक तिहां आय, उपसर्ग देवा लगा ताय ॥ ४९ ॥
 जब उ गिष्य देवलोक थी आय, गुर नें वसती में मेल्या उठाय ।
 गुर नें जीवां मरता राख्या ताय, तो पिण शिष्य उरण नही थाय ॥ ५० ॥
 बले गुर रा बरीरे मांय, सोले रोग उपनां आय ।
 तिण रोग सूं हुवे जीव घात, बले सुख नहीं तिल मात ॥ ५१ ॥
 जब उ गिष्य देवलोक थी आय, सोलेई रोग वीया गमाय ।
 सुख साता कीधी जीवां वचाय, तो पिण गुर सूं उरण नही थाय ॥ ५२ ॥
 काल रा मेल्या सुगाल रे मांय, अटवी सूं मेल्या वसती मे ताय ।
 रोग कीया शरीर थी न्यार, तोही उरण न हुवो लिगार ॥ ५३ ॥
 जो इसडा करे अनेक उपाय, तोही गुर सूं उरण नही थाय ।
 उरण न हुवो ते किण लेखे, ते परमारथ विरला देखे ॥ ५४ ॥
 जो उ गिष्य आए इम न करंत, तो पंहेले छेहडे गुर जीवां मरत ।
 मरनें संसार में न पडंत, कष्ट सही कर्म दूर करंत ॥ ५५ ॥
 तो पिण बले नही हुआ कर्म, बले घटती नही त्यारो धर्म ।
 मुगत जावा रो न कीयो उपाय, उरण न हुओ ते ण न्याय ॥ ५६ ॥
 गुर धर्म थी भिष्ट हुवे ताय, ने आंणे गिष्य ठाय ।
 पडता राख्या भव कूआं मांय, जब गुर सूं उरण हुवो ताय ॥ ५७ ॥
 कदा गुर भिष्ट होय वेंठा ताय, ग्यांनादिक गुण सर्व गमाय ।
 रात दिवस हणे छे छे काय, जावक खूता संसार रे मांय ॥ ५८ ॥
 जब उ शिष्य देवलोक थी आय, खपकर आंणे गुर नें ठाय ।
 पाछा साधु करे समभाय, ते गुर सूं उरण हुवे ताय ॥ ५९ ॥
 जो गुर भगता हुवे गिष्य सुविनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत ।
 ए ठाणां अंग सूतर माय, तीजे ठांणे कष्टो जिणराय ॥ ६० ॥

गुर कीघो भारी उपगार, गुर उताख्यो संसार थी पार ।
 कीघो मुगत तणो अधिकारी, त्यानें किण विघ घालें विसारी ॥ ६१ ॥
 रात दिवस गुर रो ध्यांन ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे ।
 गुर रो कीघो उपगार वतावे, गुर रा गुण किण विघ गावे ॥ ६२ ॥
 गुर मोसूं कीयो मोटो उपगार, ग्यांनादिक गुण रा दातार ।
 हूं तो हुंतो जीव अग्यांनी, मोने सतगुर कीघो ग्यानी ॥ ६३ ॥
 हूं अनाद काल रो हुंतो मिथ्याती, हिंसा धर्म तणो पखपाती
 ते म्हारी श्रद्धा खोटी छुडाय, गुर समकित दे आय्यो ठाय ॥ ६४ ॥
 हूं खूतो थो संसार मभार, जब हूं सेवतो पाप अठार ।
 मोनें दीख्या दे कीयो साध, म्हारी भव भव री मेटी व्याध ॥ ६५ ॥
 हूं डूवो इण संसार मांह्यो, गुर बारें काड्यो बांह संभायो ।
 सुध श्रावक रो धर्म पमायो, त्यासूं उरण किण विघ थायो ॥ ६६ ॥
 ह अनंत ससारी जीव थो भारी, ते मोनें गुर कीयो परित संसारी ।
 हूं दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोनें सुलभ बोधी कीयो सरलो ॥ ६७ ॥
 ह तो कृष्ण पखी जीव थो कुकरमी, हिंसाधर्मी ने पूरो अधर्मी ।
 मोने शुक्ल पखी गुर कीघो, मुगतगढ रो पट्टो लिख दीघो ॥ ६८ ॥
 ह तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार नां छेड्डा रहीत ।
 गुरां चरम करे सिर चाढ्यो, म्हारा संसार नों छेड्डो काढ्यो ॥ ६९ ॥
 मोने गुर कीघो मुगत नजीक, इन्द्र नों पिण कीयो पूजनीक ।
 म्हारो जीतव जनम सुधाख्यो, मोने संसार पार उताख्यो ॥ ७० ॥
 शिष्य सुविनीत हलुकर्मी होवे, तो गुर रा उपगार साह्यो जावे ।
 जिण आगम सीखामण सूधी घारी, हिंवे कुण कुण करे विचारी ॥ ७१ ॥
 कोइ पट्टो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे ।
 ते पिण विनों करे जोडी हाथ, वले लेखवे सिर धणी नाथ ॥ ७२ ॥
 तिणनें करडी मूहम धणी मेले, तो पिण धणी रो वचन नही ठेलें ।
 मर जाये तिणरा मूंडा आगे, धणी ने मंल पाछो नही भागे ॥ ७३ ॥
 तिण धणी रो पिण काचो आधार, थोडा में पट्टो देवे उतार हो ।
 वले काढ दे देश रे वार, कदा जीवां पिण नांखे मार ॥ ७४ ॥
 तिण धणी रो वचन न लोपें, मरण साह्यो मडे पग रोपें ।
 जाणें आउं धणी रे कांम, तो हू नही होऊं लूण हराम ॥ ७५ ॥
 रिजक रोटी पट्टा रे काजे, मर जाये पिण पाछो न भाजें ।
 तो हूं मुगत जावा रे काज, पिंडन मरण करतो नाणू लाज ॥ ७६ ॥

गुर गिब्य नें मुगत गांमी कीचो, मोष रो पट्टो अविचल दीचो ।
 दल्लिद्र दीयो दूर समाय, र्यांन दरसन चारित पमाय ॥ ७३ ॥
 जो उ गिब्य हुवे सुविनीत, गुर री जान्या पालें ह्डी रीत ।
 ते गुर रो वचन किम लोपें, मरण साह्यो तुरत पग रोपें ॥ ७४ ॥



रत्न : १७

मोहणी कर्म बंध री ढाल

ढाल

दुहा

महामोहणी कर्म री, स्थिति लांबी कही जिणराय ।
 सितर कोडा कोड सागर तणी, ते भोगवतां दुख थाय ॥ १ ॥
 आठ कर्मा माहे राजवी, मोटो मोहणी कर्म ।
 इण कर्म उदे वस जीवडो, पामें नहीं जिण धर्म ॥ २ ॥
 जे जे माठा किरतब करे, मोह कर्म उदे वस जीव ।
 पाप कर्म उपजावे अति घणा, तिणसूं पामें दुख अतीव ॥ ३ ॥
 इण मोह कर्म रा जोर सूं, माठी माठी अकल वुद्धि थाय ।
 सावु श्रावक धर्म सूं चूक ने, पडें नरक निगोद में जाय ॥ ४ ॥
 जे कर्म बंधे महामोहणी, तिणरा छे तीस बोल ।
 ते चित्त लगाय नें सांमलो, आंख हीया री खोल ॥ ५ ॥

ढाल

[विधिधानी]

दुष्ट परिणामां तस जीव नें, डबोवें पांणी रे मांय रे ।
 तिणनें मारे पांणी में वुरी तरें, जुदा करे जीव ने काय रे ।
 इम कर्म बधे महामोहणी* ॥ १ ॥
 मुख भींच मारे तस जीव नें, वले मारे नाकादिक भींच रे ।
 मारे गले देई गल भींचियो, इण विघ मारे भूंडी कुमीच रे ॥ २ ॥
 घणा जीव बाडा मे घाल ने, देवे चोफेर अगन लगाय रे ।
 मारे अगन धूआ रा जोग सूं, खं.टां परिणामां ताय रे ॥ ३ ॥
 मारे खडग सूं मस्तक भेद ने, मारे मुगदरादिक सिर मार रे ।
 अथवा मस्तक फाडे विदार ने, करे जीव ने काया न्यार रे ॥ ४ ॥
 तस जीव तणा मस्तक मस्से, आलो बांध वीटे तांण तांण रे ।
 पछे आंण वेसाणे तावडे, इण विघ हूणे प्रांणी रा प्रांण रे ॥ ५ ॥
 काला गेहला ने मारे हसे, कतोहल करवा कांम रे ।
 वले कपट करी भेष पालटे, ते आपो छिपावण कांम रे ॥ ६ ॥
 खोटो आचार गोपवे आपरो, देखाडे रुडो आचार रे ।
 वले माया डांकण माया केलवे, भूठ बोली गोपे वास्वार रे ॥ ७ ॥
 अणाचार सेव्यो नहीं तेहनें, हेले देवे भूठ आल रे ।
 आप दोष अणाचार सेव ने, ओर रे सिर देवे राल रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भरी सभा में बेटो थको, संके नही करतो अन्याय रे।
 मिश्र भाषा बोले तिण अवसरे, भूठ ने भूठ जाणतो नांय रे ॥ ९ ॥
 राजा रे रूबे लिखमी आवती, द्रोही प्रवांन कपट सहीत रे।
 वले भेद पांडें सुभटां थकी, राजा नें करे राज रहीत रे ॥ १० ॥
 राज लिखमी गयां विल विल करे, तिणनें बोले मरम मोसावाय रे।
 वले भोग भोगवतां तेहनें, जोरी दावे देवे अंतराय रे ॥ ११ ॥
 आचारज गणनायक अघपति, त्यांरे शिष्य कोइ दुष्ट अविनीत रे।
 ते मन भांगे ओर साधां तणो, गुर नें करे पदवी रहीत रे ॥ १२ ॥
 जश कीर्ति घटावे गुर तणी, देवे पूजा श्लाघा घटाय रे।
 वले शिष्य हो तो देखनें वरज दे, उपघादिक री देवे अंतराय रे ॥ १३ ॥
 राजा रे रूबे लिखमी आवती, तिणमें दरवे चोरी री खोड रे।
 इण विध गुर सूं चेलो करे, ते तीथंकर रो चोर रे ॥ १४ ॥
 बाल ब्रह्मचारी नहीं ते कहे, हूं तो बाल ब्रह्मचारी अकन कवार रे।
 वले अस्त्री सेवण गिरओ घणो, विषय पिण वांछे वाहंवार रे ॥ १५ ॥
 ब्रह्मचारी नहीं वले इम कहे, हूं छं शीलवंतो ब्रह्मचार रे।
 जिम गधो भूके गायां मफे, तिम ओ बोले साधां रे मभार रे ॥ १६ ॥
 जिणरी नेश्राय करे आजीवका, घन वधियो तिणरी नेश्राय रे।
 जश कीरति वधी तिणरी नेश्राय सं, तिणरो घन लूजे जाय रे ॥ १७ ॥
 वधियो राजादिक री नेश्राये, त्यांनेंईज दगो दे ताय रे।
 वले छल बल खेले तेह सूं, उपगारी नें हुवे दुखदाय रे ॥ १८ ॥
 गुण वधिया गुर री नेश्राये, त्यां सूं दगो करे मन मांय रे।
 छल छिद्र जोवे चोर नी परे, शिष्य शिष्यणी लेवे फंटाय रे ॥ १९ ॥
 साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यांनें फाहण रो करे उपाय रे।
 गुर सूं मन भांगे तेहनों, भूठा भूठा अवगुण दरसाय रे ॥ २० ॥
 करे विश्वासघात मांहे थको, मुख मीठो खोठो मन मांय रे।
 वले जिल्लो वांधे ओर साध सूं, आपरो कर राखे ताय रे ॥ २१ ॥
 राजा नही तिणनें राजा कीयो, राज दीघो मोटे मंडण रे।
 ते तो उपगारी छे मूलगो, तिणनेंईज दुख दुख देवे जांण रे ॥ २२ ॥
 सर्पणी इंडा गिले आपरा, अस्त्री मारे निज भरतार रे।
 वले चाकर मारे ठाकर भणी, गुर नें शिष्य नांखे मार रे ॥ २३ ॥
 मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नें हणे माठे ध्यान रे।
 कोइ मारे अधिकारी पुरुष नें, कुल में दीवा समान रे ॥ २४ ॥

मोहणी कर्म बध री ढालं

कोइ सत रिषेस्वर मोटको, घणा जीवां रो तारणहार रे ।
 द्वीपा समान इबता जीव नें, त्यांने हणे कोइ घेपघार रे ॥ २५ ॥
 केई चारित लेवा उठिया, केइ चारित पाले ताय रे ।
 तिण चारितीया नें चारित थकी, भिष्ट करवा रो करे उपाय रे ॥ २६ ॥
 उतकष्टा ग्यानी केवली, त्यांरे संजम तप री समाध रे ।
 ते तों प्रतिबोधे भवि जीव ने, त्यांरा बोले अवगुणवाद रे ॥ २७ ॥
 न्याय मारण छे सुघ मुगत रो, तिणसूं तपतो रहे दिन रात रे ।
 तिण मारण सूं घणा ने चूकाय दे, खोटी श्रद्धा हिया मे घात रे ॥ २८ ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, साव हुवो छोडे माया जाल रे ।
 वले भणियो सिद्धात त्या कनें, त्यानेइज निदे मूरख वाल रे ॥ २९ ॥
 आचार्य उवभाय तेहनें, न करे सेवा भगत मन सुघ रे ।
 विनो वियावच पिण करे नही, अहमेव पणा री बुद्ध रे ॥ ३० ॥
 आचार्य उवभाय त्या कनें, ग्यान दरसन चारित पाय रे ।
 त्यां सूं पिण करे मूढ बरोबरी, वले सनमुख भगडे आय रे ॥ ३१ ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, समझे कीयो परित्त ससार रे ।
 वले सजम रे सनमुख कीयो, त्यांरा अवगुण बोले वालंवार रे ॥ ३२ ॥
 आचार्य उवभाय गण थकी, अविनीत ने देवे दूर टाल रे ।
 जब अविनीत क्रोध तणे वसे, हेले देदे भूठा आल रे ॥ ३३ ॥
 आचार्य उवभाय तेहनी, वंदणा छोडावे संका घाल रे ।
 उत्तमा री उतारे आसता, दुष्ट अविनीत री आ चाल रे ॥ ३४ ॥
 आचार्य उवभाया अमरे, कोइ पडिवजियो मिथ्यात रे ।
 तिण अविनीत ने सवलो सूझे नही, करे जोम ने गाढ री वात रे ॥ ३५ ॥
 कोइ बहुश्रुती तो निश्चे नही, ते कहे हूं छू बहुश्रुती साध रे ।
 मो बरोबर सूत्तर कुण भण्यो, अभिमांनी करे भूठो विवाद रे ॥ ३६ ॥
 कोइ तपसी तो निश्चे नही, ते कहे हूं छूं तपसी घोर रे ।
 तिणने तीन लोक रा चोर सूं, उतकष्टो कहां वीर चोर रे ॥ ३७ ॥
 बालक तपसी गरढा गिलाण छे, त्यांरी न करे वियावच देख रे ।
 ते छती सगत घेठो थको, वले राखे त्यां अमर घेख रे ॥ ३८ ॥
 वले कपट केलव भूठो कहे, हूं करूं छू वियावच ताय रे ।
 पिण दुष्ट परिणामां तेहने, उलटी देवे अतराय रे ॥ ३९ ॥
 कलह कारणी कथा कहे, वले घाले मांहोमां खेद रे ।
 आह्मी साह्मी करे लगावणी, पाडे च्यार तीरथ मे भेद रे ॥ ४० ॥

चेला रो मन भांगे गुर धकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग रे।
 यानें भेद घाली न्यारा करे, तिण पहर विगाह्यो सांग रे ॥ ४१ ॥
 गुर मोटा उपगारी सुगत रा, त्यां सूं दूर करे भरमाय रे।
 जीवे ज्यां लग्न भेला हुवे नहीं, एहवी मोटी देवे अंतराय रे ॥ ४२ ॥
 गण माहें वसे साधु साधवी, त्यामें पाडे विखेरो कोय रे।
 चित्त भंग करे यांरो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय रे ॥ ४३ ॥
 साधु साधवी गुर सूं फाड नें, आपरा कर राखे ताय रे।
 गुर सूं छानें छानें बांधे जिल्लो, मूरख चोरी करे गण मांय रे ॥ ४४ ॥
 जोतिष निमित्तादिक भाखे घणा, वले हिंसा कीयां कहे धर्म रे।
 वले पूजा श्लाघा रे कारणे, करे वसीकरणादिक कर्म रे ॥ ४५ ॥
 कांम भोग मिनष देवता तणा तिणमें रहे अतृप्तो ताय रे।
 तिणरे वंछा घणी कांम भोग री, वले लंपट रहे तिण मांय रे ॥ ४६ ॥
 मोटी रिच संगत पांमी देवता, ते संजम तप रे प्रसाद रे।
 इसडा मोटका देवता तणा, कोइ बोले अवगुण वाद रे ॥ ४७ ॥
 देवता नहीं देखे ते कहें, हूं देवता देखूं साख्यात रे।
 वले अग्यांनी थको लोकां मभे, जिणेसर ज्यूं पूजावे विख्यात रे ॥ ४८ ॥
 तीसां बोलां बंधे महामोहणी, एतो कह्यो तीथंकर देव रे।
 त्यांनैं साधु तो वरजे सर्वथा, त्यांरी करे इंद्रयादिक सेव रे ॥ ४९ ॥
 संवत अठारे सेंतीसे समें, सावण विद सातम रिववार रे।
 कर्म बंधे छे महामोहणी, जोडी पाटू गांम मभार रे ॥ ५० ॥
 भवि जीवां ने समभायवा ॥

रत्न : १८

दसवें प्राञ्चित्त री ढाल

ढाल

ढुहा

ठण्णअंग तीजे न पांचमें, दगमों प्राछित्त कह्यो जिणराय ।
जघन्य मभिम प्राछित्त किण ही बोल में, ते पिंडत जांगें न्याय ॥ १ ॥
कोइ दगमो प्राछित्त सेवनें, ए आलोए तो मतिवंत ।
ते जथातथ प्रगट करूं, ते सुणजो कर खंत ॥ २ ॥

ढाल

[समरू' मन हरखै तेह सती]

दुष्ट परिणामां ऊंची घारे, गुरवादिक मूवां रा दांत पाडे ।
तीत्र कषाय वस समता नावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें ॥ १ ॥
करे प्रमाद वस अकार्य मोटो, ते प्रतख लोक विख्य खोटो ।
तिणरो लोकिक् पिण विगडी जावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ २ ॥
साध साधवियां रो पेहरण सांग, मांहीमां चोथो ब्रत देवे भांग ।
ते च्यार तीर्थ में फिट फिट थावें, तिणनें दशमों प्राछित्त आवें ॥ ३ ॥
रहें एक आचार्य रा शिष्य भेला, कुल मांहे वसें सहु मनमेला ।
त्यामें भेद पाडण उचमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ ४ ॥
रहे दोय आचार्य रा शिष्य भेला, गण मांहे वसे सहु मनमेला ।
त्यामें भेद पाडण उचमी थावे, तिणने दशमों प्राछित्त आवे ॥ ५ ॥
गुरवादिक री वांछे घात, एहवो ध्यान रहे दिन न रात ।
ते मन में पिण नही पिछ्छतावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे ॥ ६ ॥
ओर सावां रा छिद्र जोवे तांम, तिणने हेल्वा निंदवा रे कांम ।
दोष भेला कर कर पछे उडावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे ॥ ७ ॥
प्रश्न पूछे हिंसादिक वाख्वार, तिण चारित बाल कीयो छार ।
ते इहलोक रो अरथी थावे, तिणनें दगमों प्राछित्त आवे ॥ ८ ॥
कुल गण मे भेद पाडे केइ, हिंसा नें छिद्र तणो पेही ।
सावध प्रश्न वाख्वार वतावे, तिणने दशमो प्राछित्त आवे ॥ ९ ॥
दुष्ट प्रमाद ने अनमन सेवे, तिणरो प्राछित्त हाथ जोडी लेवें ।
जे आलोव न सुभ थावे, तिणनें दशमों प्राछित्त आवे ॥ १० ॥
ठण्णअंग तीजे ने पाचमे ठांगे, त्यांरा भेद अनेक पिंडत जांगे ।
जघन्य मभिम भेद न्यारा थावे, उत्तरूटो प्राछित्त दशमो आवें ॥ ११ ॥

रत्न : १६

जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल

ढल

दुहल

चररत आवे चोखो चरत हुवऱं, पतलो पड्यऱं मोह कर्म ।
 आतम वस छे आपरे, ते पालें छें जण धर्म ॥ १ ॥
 जे तीखी बुद्धर रा मऱनवी, सरल सभऱव मतरवंत ।
 ते समक सतऱव संयम लीयो, ज्यांरी पूरीजे मन खंत ॥ २ ॥
 केइ समझ्यऱ छे सतगुर कने, पण न मरिटी मन री भोल ।
 त्यांने चररत आवे कण वरिधे, मऱहें मोटी कर्म किलोल ॥ ३ ॥
 त्यांने संसर खऱरो लगो नहीं, लपट रह्यऱ तण मऱंय ।
 ते संजम री भऱवे भऱवऱनऱ, पण संजम आवे नऱंय ॥ ४ ॥
 जण लखणऱ चररत आवे नही, जण लखणऱ चररत आय ।
 त्यांरऱ भऱव भेद परगट कऱं, ते सुणजो चरत ल्यऱय ॥ ५ ॥

ढल

[समरुं मन हरख तेह सती]

त्यारे समकत री सेठी नीव, वरनेवंत हलुकर्मऱ जीव ।
 ते संसर सूं रहे नररदऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो आवे ॥ १ ॥
 जे वेरऱग मऱहें भीनऱ पूरऱ, ते लोभ लऱलच सूं रहे दूरऱ ।
 वेरी वऱहलऱं ऊपर रहे समभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो आवे ॥ २ ॥
 त्यारे न्यऱतीलऱं सूं नेह थोडो, वले मोह कर्म रो नहीं जोरो ।
 दरन दरन चोकडी घटऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो आवे ॥ ३ ॥
 ते ऱगूंच मोह मऱयऱ मुंके, वले सतगुर मरल्यऱं ऱवसर नही चूके ।
 कर्म कऱटण ने तप तेज संभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो आवे ॥ ४ ॥
 त्यारे मुगत ऱवण री लग रही ऱस, ते कऱल रो नहीं करे वरश्वऱस ।
 ते ऱगूंच ऱपऱो संभऱवे, यऱं लखणऱ चररत वेगो आवे ॥ ५ ॥
 केइ सजम लेवऱ करे टऱलऱ टोलऱ, पल पल में ऊठे ऱनेक डोलऱ ।
 खण में रंग वररंग होय ऱवऱवे, यऱं लखणऱ चररत वही आवे ॥ ६ ॥
 लोभ लऱलच त्यांरे नही छटो, न्यऱतीलऱं सूं नेह पण नही तूरो ।
 मऱयऱ मेरण री मनसऱ ल्यऱवे, यऱं लखणऱ चररत नही आवे ॥ ७ ॥
 वेरऱग वरनऱं नररथक वेठऱ, त्यांने वतलऱयऱं वचन बोलें वेठऱ ।
 शूर वीरपणो त्यांमें नही पऱवे, यऱं लखणऱ चररत नही आवे ॥ ८ ॥

वले दिन दिन इधक मेले तांता, आऊखा मांसू दिन नहीं जाणे जाता ।
 हलफल में यूंही दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ६ ॥
 वले नवा नवा सगपण सांघे, आगला सूं नेह इधको वांधे ।
 त्यारे काजे कर्मबंध कमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १० ॥
 ज्यांनै संसार लागे छे अति मीठो, त्यांरो निश्चेंई वेंराग जाणो फीटो ।
 ते अंतरंग भावना किम भांवे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ११ ॥
 आरा मोसर आरंभ में आघो, छकाय मारण केडे लागो ।
 वले मान बडाई में नहीं मावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १२ ॥
 जिण आगन्यां पालण सूं दूरा, वले सावद्य काम करण शूरा ।
 तिणनै सरायां फल फूल होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १३ ॥
 मूंडे मीठा पिण नहीं समभावा, घणा जीवां सूं राखे कावा दावा ।
 रात दिवस पेला रो भूडो चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १४ ॥
 संसार में राड भगडा कजिया, तिण माहे नितका सजिया ।
 थोडा मे पेला रो घर गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १५ ॥
 आह्यो साह्यो घणा सूं डस राखे, वले मान बडाई मुख भाखे ।
 वले कुबुद्धि करे कलह लगावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १६ ॥
 वेंराग रहित वोलें पोला, त्यांरो मनडो खाय रह्यो भोला ।
 त्यारे चारित री चित्त मे नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १७ ॥
 अथिर सभावी घर छोडण री कहें, त्यांरो आरंभियो तो यूहीज रहे ।
 घडी घडी में परिणाम फिर जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १८ ॥
 वरस छमास में छोडूं गृहपासा, ते दिन आयां ओर वांधे आसा ।
 आगे लगा दिन चलिया जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १९ ॥
 संसार नीं वातां सुण सुण हरषे, संजम री वात कीयां घडके ।
 संजम लेवा सूं नहीं उमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २० ॥
 केइ कर रह्या संजम लेऊं, जाणें गृहवासो जोग सामूं बेहू ।
 इम करतां करता ने काल गटकावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २१ ॥
 संजम लेवा करे गाथा गूथा, ते तों यूंही रहे घर में खूता ।
 परिणाम चढ चढ नें पड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २२ ॥
 काचे मन चारित री वात काढे, ते तो काम सिराडे किम चाडें ।
 पांणी पर पोटा ज्यूं वेंराग विललावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २३ ॥
 केइ आपरा मन सूं बूरा वाजे, काम पड्यां डेरो नाखे भाजे ।
 इण दिप्टान्ते केइ पडिया पोमावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २४ ॥

घर छोडतां करें थागा थेगो, त्यारे नही वेंराग रस सकेगो ।
 थागा थेगा कर दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २५ ॥
 इसडा जीव आगे अनंत हुवा, उवे आसा अलुधा यूंहीज मुवा ।
 ते तों चिहंगति में गोता खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २६ ॥
 केइ घर छोडण मन वेराग धरे, जब ओरां नें माहे लेऊं बंधो करे ।
 पछे परिणाम पडे जब सीदावेँ यां लखणा चारित नही आवे ॥ २७ ॥
 उणरो वेली घर छोडण री करे, जब कायर रे मन घडक पडें ।
 बंधो करनें पडियो पिछ्छतावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २८ ॥
 जब उणरा परिणाम पाडण खपे, घणो कूड कपट मुख सूं रे जपे ।
 कर्म बंधवा रो डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २९ ॥
 आप घर छोडण सूं मन उमावे, जब उणरा पिण परिणाम चढावे ।
 आप डिंगियो ओरा नें डीगावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३० ॥
 चारितिया ने चारित सूं मिष्ट करे, तो महामोहणी कर्म रो बंध पडे ।
 ते तो संसार में दुखियो थावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३१ ॥
 साधु सुध उपदेण दे सुविचारी, उणरा वेली ने करे सजम सूं त्यारी ।
 जब ऊ साधां ऊपर पिण दुख पावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३२ ॥
 के उ-भागण री ओर ताके सेरी, घणो भूठ बोले भाषा फेरी ।
 ते बधो भांग ने भागल थावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३३ ॥
 भागल थई भूठ बोले भारी, केइ होय जाय अनंत संसारी ।
 पछे दडी दोटा ज्यू भीकां खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३४ ॥
 बंधो भांग सत बोले निरापेखो, इरडा तो केयक बिरला देखो ।
 भारीकर्मां सूं साच वोलणी नावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३५ ॥
 सूंस भागे ने घर में रहिवा री करे, ते तो साधां रा छिद्र जोवतो रे फिरे ।
 मिनक्री उदर ज्यू माठी भावना भावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३६ ॥
 कोइ घर छोडण री चित्त में घारे, जब ओरां रा परिणाम ढीला पाडे ।
 जाणे रखे मोसू दडो होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३७ ॥
 केइ सूंस वरत देवे भंगो, जब मूरख पापें उछरंगो ।
 भागल ने भागल बधिया चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३८ ॥
 घर छोडण रा सूंस भागे, जब सावां ने असाधु श्रद्धण लागे ।
 आल देतो पिण डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३९ ॥
 निर्लज सूंस वरत देवे भाग, त्यांरा चिहंगति में नीकले सांग ।
 वले लौकिक पिण विगड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४० ॥

लज्यावंत उत्तम नरनार, सूंस वरत करे ते घाले पार ।
 त्यांरा तीथंकर पिण गुण गावे, यहाँ लखणा चारित नही आवे ॥ ४१ ॥
 दोय दोय तरवार बाधे गाढी, वरसो वरस खुरसाण चाढी ।
 कांम पड्यां बारे काढणी नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४२ ॥
 ज्यूं त्यागी वेंरागी बाजें पूरा, घर छोडण निमित्त वीसे शूरा ।
 कांम पड्या ते पिचक जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४३ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलकी, तिण ठामें कायर जाए सलकी ।
 विरुदावली बोलताई नाठो जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४४ ॥
 ज्यूं परीसा रूप वहे बाण गोला, ते कायर सुण भाग जाये भोला ।
 तिण भागल ने वेराग विरुद न सुहावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४५ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलके, तिण ठामें शूरा हुवे ते नही सलके ।
 ते तों मरण रो डर मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४६ ॥
 ते परीसा रूप गोला बाण वहे, ते सुण सुण उत्तम जीव दृढ रहे ।
 घर छोडतां परीसा रो डर नही ल्यावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४७ ॥
 केइ कायर संग्राम मांहे जावे, तिणनें न्यातीलादिक याद आवे ।
 ते सनमुख लोह किण विध खावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४८ ॥
 यू घर छोडण री चित्त मांहे घरे, ते न्यातीलादिक ने याद करे ।
 त्याने छोडी नें किम हुवे निरदावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४९ ॥
 शूर संग्राम चढे शस्तर भाले, न्यातीला मे चित्त नही घाले ।
 आप जीते ओरा नें हठावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५० ॥
 ज्यूं घर छोडण नें शूरा होवे, ते न्यातीला साहमो नही जोवे ।
 संजम लेनें कर्म वेरी खपावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५१ ॥
 संसार शूरा पिण सेंठी घारे, नासण भागण री नहीं विचारे ।
 मरण सूं साहमो मंड जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५२ ॥
 इण दिष्टाते वेराग मांहे पूरा, मुगत जावण ने हुवे शूरा ।
 ते घर छोडण रो डर नही ल्यावे, त्यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५३ ॥
 कर्म रोकण तोडण री सेठी घारे, ओर आल पपाल नही विचारे ।
 आड दोड चित्त में मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५४ ॥
 एक मुगत जावण री रखे आसा, ओर छोड दे सर्व आसापासा ।।
 ससार सुखां मे रति नही पावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५५ ॥
 इम सुण नें उत्तम नरनार, सूंस वरत पालो निरतीचार ।
 ज्यूं जनम मरण दुख मिट जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५६ ॥

वरस पेतीसे संवत अठारे, महासुदि चोथ दिन बुधवारे ।
देश मेवाड वनेडे गांम, जोड पूरी कीधी छे तिण ठांम ॥ ५७ ॥



रत्न : २०

सूंस भंगावण रा फल री ढाल

ढाल

दुहा

वनस्पति ढाल ने पांच काय थी, अनत गुणां अमवी जाण ।
 त्यासूं पडिवाई समदिष्टी अनंत गुणां, समकित भिष्ट अयाण ॥ १ ॥
 त्यामे केकां तो भांग्यो सावपणो, केका भांग्यो श्रावकपणो जाण ।
 केइ भिष्ट हुवा समकित थकी, होय गया मूढ अयाण ॥ २ ॥
 ते पडिया छे नरक निगोद मे, तिहां खाये अनती मार ।
 अनत काल लगे दुख भोगवे, तिणरो वेगो न आवे पार ॥ ३ ॥
 भागलं हुवा छे वापडा, दीधो जीतव जनम विगाड ।
 थोडा सुखां रे कारणे, गया जमारो हार ॥ ४ ॥
 भागल भिष्ट्यां ने निषेधियां, सूतर सिद्धांत रे माय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते मुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[मवियश सेवो रे साध सथाखा]

छोटो मोटो सूंस व्रत आदरो तो, पालज्यो रूडी रीत ।
 जे सूंस भांग ने भिष्ट हुवा ते, चिह्न गति मे होसी फजीत रे ।
 मवियण सूंस म भागो लिंगारी, सूंस भांग्यां सूं घणी खुवारी रे ॥ भ० ॥
 टांको भले तो अनंत संसारी* ॥ १ ॥
 छोटीइ सूंस भागे छे तिणमें, हवाल पडे छे अतंत ।
 तो मोटा मोटा सूंस भागे छे तिणरो, होसी कुण विरतंत रे ॥ भ० २ ॥
 हिसा भूठ चोरी मैथुन ने परिग्रहो, त्याने त्यागे छे आण वेरागो ।
 त्यारा त्याग जाण ने भागे, तिणरो छे पूरो अभागो रे ॥ ३ ॥
 छक्राय हणवा रा त्याग करे ने, पह्ख्यो साव रो सांग ।
 शीलादिक आदख्यो रूडी रीते, वले रोटी खाए छे मांग रे ॥ ४ ॥
 करडा करडा सूंस कीया छे त्याने, भांग करे चकचूर ।
 ते वूडा छे वापडा जीव अग्यानी, ते पड गया मुगत सूं दूर रे ॥ ५ ॥
 केइ सूंस भांगी ने परणीजे पापी, वले चोथो व्रत देवे भांग ।
 तिण पापी जीव रा चिह्नगति माहे, घणा निकलसी सांग रे ॥ ६ ॥
 चोथो- व्रत शील आदर ने भागे, तिण दीधी नरक नी नीव ।
 तिणने परमावांमी मार देसी जब, करसी नरक मे रीव रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाया के अन्त में है ।

शीलव्रत आदर नें सर्व अस्त्री नें,
 तिणनें परणीजे तिणसूं करे गृहवासो,
 शील आदरियो जब सर्व अस्त्री नें,
 तिणसूं हीज पाछो करे ग्रहवासो,
 व्रत भांग नें भागल हुवा तिण,
 नरक निगोद तपो पाहुणो होय वेठो,
 सूंस तणा भागल छे त्यांनै,
 दुख भोगवसी नरक में निरंतर,
 सूंसा रो भागल संसार मांहेँ खले तो,
 ते तो नरक निगोद में भीकां खासी,
 अनंतैइ काले मिनष हुवे तो,
 आछो खाणो पीणो मिले नहीं तिणनें,
 वाल्हां रो विजोग पडे उगतां रे,
 आदर भाव कठे नहीं पांमै,
 कहि कहि नें कितरा एक कहूं,
 छेदन भेदन पांमै संसार रे मांहेँ,
 इहलोक मांहेँ पिण फिट्र फिट्र हुवे,
 मस्तक नीचो धाले लोकां में,
 लज्या रहित निरलज्या मानव,
 तिणनें परलोक नी परवाह नही छे,
 शील व्रत भांगो छे तिणरा,
 मानव नो भव खोए अग्यांती,
 पाप करे त्यांनै पापी कहीजेँ,
 पिण सूंस व्रत भांगे ते महापापी छे,
 तिणरे पाप उदे हुवे इण भव मांहेँ,
 रिधि संपति रो छेहडो आवे इण भव में,
 जातिवंत लज्यावंत कुलवंत तिणरो,
 ते परभव ने लोकिक सूं डरतो,
 भागल होय होय नें पाछा उठ्वा अनंता,
 सूंस भांगा ते पाछा सताव सूं सांवे,
 सूंस भांग नें भागल भिट्र हुआ ते,
 काल कीयो आलोयां पडिकमियां विण,

थापी छे मा वेंन सामान।
 ते चिहुंगति में होसी हेंरान रे ॥ ८ ॥
 मूख सूं कही छे मा वेंन।
 ते किण विध पांमसी चेंन रे ॥ ९ ॥
 दीयो जीवत जनम विगाड।
 गयो जमारो हार रे ॥ १० ॥
 जक कठे नहीं होय।
 तिहां सुख नों संचार न कोय रे ॥ ११ ॥
 उतकद्यो अनंतो काल।
 तिणरो वेगा न आवे निकाल रे ॥ १२ ॥
 गूंगो मूंगो दुखियारी होय।
 रहे हींजरतो सोय रे ॥ १३ ॥
 मिले दुगमण तपो संजोग।
 नित्य रहे संताप ने सोग रे ॥ १४ ॥
 तिणरा दुखां रो छेह न पार।
 तिणरो कहणी नावें विस्तार रे ॥ १५ ॥
 सूंस व्रत रो भांगणहार।
 तिणने सहु कोइ देवे धिक्कार रे ॥ १६ ॥
 सूंस भांगता मूल न लाजे।
 वकाखाई गीदड जिम भाजे ॥ १७ ॥
 पांचूं व्रत हुवा चकचूर।
 गयो बहती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 पाप्यां तणी पांत मांय।
 महा पाप्यां री पांत मांहेँ निणाय रे ॥ १९ ॥
 तो ववें घणो रोग सोग।
 पडे वाल्हां तणो विजोग रे ॥ २० ॥
 कर्म जोगे गयो व्रत भागी।
 पाछो ऊठ खडो रहे जागी ॥ २१ ॥
 टाल्या आतम ना सर्व दोष।
 उणहिज भव पोहता मोष ॥ २२ ॥
 धर्म सूं होय गयो रीतो।
 तिणमें भव भव में होसी कुयीतो रे ॥ २३ ॥

केइ भागल भिष्टी छें भारीकर्मा, ते तो भागल बघिया चावे ।
 घर छोडण रो बघो कीयो आप साये, तिणरोई बंधो भंगावे रे ॥ २४ ॥
 सूंस भागे ने भागल भिष्ट हुआ छे, त्यां सूं साधपणो लेणी नावे ।
 तिणने आपरा अवगुण तो मूल न सूंभे, उलटा सावां में दोष बतावे रे ॥ २५ ॥
 केइ टोला तणा टालोकड भिष्टी, त्यां सावां सूं पडिवजियो मिथ्यात ।
 ते पिण सावां मे दोष कहे अणहुंता, भूठ सूं न डरे तिलमात रे ॥ २६ ॥
 केइ साधपणो लेवा ने उठ्या, सूंस भांग रह्या घर मांय ।
 ते पिण सावां में दोष कहे अणहुता, निज अवगुण देवे छिपाय रे ॥ २७ ॥
 टोलां रा टोलाकड भागल भिष्टी, त्यांरा बोल्या री नही परतीत ।
 त्यांरी समदिष्टी ने संगत न करणी, आजिण मारग री रीत रे ॥ २८ ॥
 केइ तो सूंस भागे नें बेठा, केइ पेला रा सूंस भंगावे ।
 त्यांरी पिण आहिज रीत जांणों, नरक निगोद मे दुख पावे रे ॥ २९ ॥
 कोइ चढता परिणामां सूंस पाले छे, चढता परिणामां अधिक वेरागो ।
 चारित लेवा उदमी थया छे, मुगत जावा सूं चित्त लागो रे ॥ ३० ॥
 तिणरा कोइ सूंस भंगावण दुष्टी, करे अनेक उपाय ।
 ते डूव गया बापडा अग्यांनी, त्याने भव भव मे दुख थाय रे ॥ ३१ ॥
 केइ सूंस भगावे उपसर्ग कर ने, दुख देइ विवध परकार ।
 चारित लेवा ने उठ्या छे तिणने, कर दे थोडा में खुवार रे ॥ ३२ ॥
 केइ चारित लेवा उठ्या छे तिणने, कु कलाकार देवे चलाय ।
 विषय री वातां सुणाए तिणने, संसार नां सुख बताय रे ॥ ३३ ॥
 कोइ चारित लेवा ने उठ्यो छे तिणने, भिष्ट करण ने तांम ।
 सावां में दोष अणहुता बताए, पाडे तिणरा परिणाम रे ॥ ३४ ॥
 सावां री आसता उतारण ने उणरा, परिणाम करे चकचूर ।
 चारितियां ने भिष्ट करे चारित सूं, ते तों गया बहती रे पूर रे ॥ ३५ ॥
 सुघ सावां ने असावु सरघा ए पापी, करे चारित सूं भिष्ट ।
 एहवा कांम करे ते मिथ्याती, भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे ॥ ३६ ॥
 सुघ सावां ने असावु कह्या तिण, मोटो कीयो अन्याय ।
 बले भिष्ट कीयो चारित लेवा सूं, ओ तो पूरो वूडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 छकाय हणवा रा त्याग करने, रोटी तिण माग ने खावे ।
 बले पांच आश्रव नां त्याग छे तिणरा, जोरी दावो करे भंगावे रे ॥ ३८ ॥
 पांच आश्रव नां त्याग भगाए पापी, साधपणो लेवा दे नांय ।
 तिण मोटो अकार्य कीवो अग्यानी, वूडो संसार समुद्र रे मांय रे ॥ ३९ ॥

ते तो भागल बघिया चावे ।
 तिणरोई बंधो भंगावे रे ॥ २४ ॥
 त्यां सूं साधपणो लेणी नावे ।
 उलटा सावां में दोष बतावे रे ॥ २५ ॥
 त्यां सावां सूं पडिवजियो मिथ्यात ।
 भूठ सूं न डरे तिलमात रे ॥ २६ ॥
 सूंस भांग रह्या घर मांय ।
 निज अवगुण देवे छिपाय रे ॥ २७ ॥
 त्यांरा बोल्या री नही परतीत ।
 आजिण मारग री रीत रे ॥ २८ ॥
 केइ पेला रा सूंस भंगावे ।
 नरक निगोद मे दुख पावे रे ॥ २९ ॥
 चढता परिणामां अधिक वेरागो ।
 मुगत जावा सूं चित्त लागो रे ॥ ३० ॥
 करे अनेक उपाय ।
 त्याने भव भव मे दुख थाय रे ॥ ३१ ॥
 दुख देइ विवध परकार ।
 कर दे थोडा में खुवार रे ॥ ३२ ॥
 कु कलाकार देवे चलाय ।
 संसार नां सुख बताय रे ॥ ३३ ॥
 भिष्ट करण ने तांम ।
 पाडे तिणरा परिणाम रे ॥ ३४ ॥
 परिणाम करे चकचूर ।
 ते तों गया बहती रे पूर रे ॥ ३५ ॥
 करे चारित सूं भिष्ट ।
 भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे ॥ ३६ ॥
 मोटो कीयो अन्याय ।
 ओ तो पूरो वूडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 रोटी तिण माग ने खावे ।
 जोरी दावो करे भंगावे रे ॥ ३८ ॥
 साधपणो लेवा दे नांय ।
 वूडो संसार समुद्र रे मांय रे ॥ ३९ ॥

साधु रो भेष उतरावे पापी, माथे बंधावे पाप ।
 छक्राय मारण ने सह कीयो छे, तिणरो पिण जाणो पूरो अभाग रे ॥ ४० ॥
 भेष उतारण री कोइ करे दलाली, तिण दलाली सूं होसी खुराव ।
 ते पिण चिहुंगति मांहे गोता खासी भव भव मांहे जासी आव रे ॥ ४१ ॥
 परतणा सूस भंगावे पापी, मोप जावा री दे अतराय ।
 तिणरे चीकणा कर्म वंवे छे भारी, तिणसूं भव भव में दुख थाय रे ॥ ४२ ॥
 चारितीया ने मिष्ट करे चारित सूं, इणसूं इधको नही कोइ पाप ।
 एहवा पाप सूं जाए पडे नरक मांहे, तिहां होसी घणो सोग संताप रे ॥ ४३ ॥
 चारितिया ने मिष्ट चारित सूं, करवा ने, खोटी काडे मूढा सूं वांणी ।
 तिणरी परमाधामी नरक रे मांहे, जीभ काडे जडां सूं तांणी रे ॥ ४४ ॥
 नरक तणा दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावणहारो ।
 छेदन भेदन मार अनंती, तिणरो कहितां न आवे पारो रे ॥ ४५ ॥
 उत्कष्टो रले तो काल अनंतो, नरक निगीद मभार ।
 अनंता काल में दुख सहे अनंता, सूंसा रो भंगावण हार रे ॥ ४६ ॥
 कदा पाप उदे हुवे इण भव मांहे, तो वधे घणो रोग सोग ।
 वले छेहडो आवे रिघ संपत केरो, पडें वाल्हां तणो विजोग रे ॥ ४७ ॥
 केइ तो आंवा होय जाअे इण भव में, जावक होय जाये निराधार ।
 भीख भमता हुवे इण भव में, सूंसा रा भंगावण हार रे ॥ ४८ ॥
 केइ तो मर जाअें अन्न विहुणा, करता थर्का विल विलाट ।
 परतणा सूस भंगावे तिणरा, भव भव में हुवे एहिज घाट रे ॥ ४९ ॥
 सर्व संसार नां कांमा चालू कीया छे, सूंसा रो भंगावण हार ।
 तिण महामोटो पाप में सीर घाल्यो, ते तों वूड गयो काली घार रे ॥ ५० ॥
 इम सांभल उत्तम नरनारी, पेला रा सूस मति भंगावो ।
 इण कुकरम री दलाली मत करज्यो, जो जीव नें सुख चावो रे ॥ ५१ ॥
 कोइ धर्म थकी डिगितो हुवे तिणने, पाछो समझाय ने थिर कीजे ।
 यूं कीवां तो कर्म तणी निरजरा हुवे, दूवता ने पिण उद्धर लीजे रे ॥ ५२ ॥
 धर्म सूं डिगिता ने थिर कीयां सूं, टल जाए कर्म री छोट ।
 जो उत्कष्टो रस आवे तो जिण रे, वंवे तीर्थकर गोतर रे ॥ ५३ ॥
 सूस भंगावे तिण रा फल उपर, जोडी पाहू गांम मभार ।
 संवत अठारे नें चोपनैं वरसे, चेत सुद तेरस नें गुरवार रे ॥ ५४ ॥

रत्न : २१

सांम धर्मी सांमद्रोही री ढाल

ढाल

[म्हें तो भार लियो सो लियो]

ऊंदर ऊपर मिनकी त्रापी जाण, जब जोगी ऊंदर री अणुकंपा आण ।
 तिण जोगी मंत्र पढ्यो ततकाल, ऊंदर ने कीयो घोघड विकराल ॥ १ ॥
 जब मिनकी न्हाट्टी घोघड ने देख, घोघड देख नें त्राप्यो स्वान वशेख ।
 जोगी घोघड नी करुणा लीघ, कुतो सिकारी ततक्षण कीघ ॥ २ ॥
 अहो कर्म गति इधकी देख, जोगी मोह्यो राग वशेख ।
 स्वान देखी चीत्तो त्राप्यो आय, जब स्वान नें जोगी सिह कीयो ताय ॥ ३ ॥
 जब चीत्तो नाठो सिधरी देख हाक, सीकंप हुवो पडी मन में धाक ।
 हिचे तिण सिह ने भूख लागी छे तांम, तिण जोगी ने खावा उठ्यो तिण ठांम ॥ ४ ॥
 जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच ऊंदर री जात ।
 इणरी मिनकी करती अकाले घात, ते म्हे बचा लियो साख्यात ॥ ५ ॥
 म्हारो उपगार कीयो न गण्यो तिलमात, म्हारी उलटी मांडी करवा घात ।
 म्हें नीच ऊंदर ने ऊंचा लियो, सिध नी पदवी दे ने मोटो कीयो ॥ ६ ॥
 नीच ने बधाख्यां आछो हुवे नांहि, ते भाख्यो छे नीति साख मांहि ।
 तो इणने पाछो ऊदर कल मंत्र राल, सिध ने ऊंदर कीयो ततकाल ॥ ७ ॥
 ते ऊंदर जाबक हुवो अनाथ, तिण री मिनकी वले करवा मांडी घात ।
 जोगी देख अणुकंपा कीधी नांहि, किरतघन मुवो ते बिल रे मांहि ॥ ८ ॥
 ज्यू नीच नें ऊंच पदवी जीखे नांहि, जोय देखो लोकिक् लोकोत्तर मांहि ।
 किण ही राय बधाख्या अमराव दोय, वले कीया पदवी घर मोटा सोय ॥ ९ ॥
 यामे एक तो सांम घर्मी सुवनीत, वले राजनीति जांणे सर्व रीत ।
 तिण सूं राय रूठो किणवार, पट्टो उतार काढ्यो देश वार ॥ १० ॥
 जब राय ऊपर इण न कख्यो रोस, जांण लियो निज कर्म रो दोष ।
 अलगो रहे तोही माने कीयो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार ॥ ११ ॥
 कदा राजा नें भीड पडी सुण कांन, भीड आयो लेइ साथ सामांन ।
 वले मुख सूं कहें म्हारा सिर घणी आप, सारो दीसे ते आप तणो परताप ॥ १२ ॥
 इम सुण ने तिण सूं रीइयो राय, आगे विचेइ घणो बधाख्यो ताय ।
 वले घणो बधाख्यो तिणरो मांन, आगेवांण कीयो सगली ठांम ॥ १३ ॥
 बीजो हरामखोर लूणहराम, सांमब्रोही रा दुष्ट परिणांम ।
 तिण सूं पिण राय रूठो किणवार, तिणरो पट्टो उतार काढ्यो देज वार ॥ १४ ॥

जब ऊ घाडा करे बले करे उजाड, राय तपा देस में, करे ब्याड।
 फिर फिर मारे बले नगर नें ग्रान, बलि राय सूं सनसुब करे संगन ॥ १५ ॥
 राजा सूं जुष करे तांग तांग, देखे चीत्र बशाखां रा ए फल कोण।
 ज्यां बशाख्यो त्यांसूं ही मांड्यो पर्व, उफगार कीयो ते भूल गयो जर्व ॥ १६ ॥
 जब राजा अनेक करमें उनाय, हरानखोर नें पड्ड लीयो राय।
 इपरा हाथ पांव कांन नाक नें काट, पांस दोले फेस्थो पडे चाड ॥ १७ ॥
 बले दिवष परकारे दीधी मार, फिट रिट हुवो लोक मत्तार।
 एतो लोकिक कह्यो दिद्यंत, हिचे लोकोत्तर सुनो मन खांत ॥ १८ ॥
 एक जानार्थ मोटो अगगार, दोष जगा सूं कीयो उगगार।
 त्यांनै समकित पमाय नें कीया साध, बले ग्यांन भणाय नें करी छे रनाड ॥ १९ ॥
 यामें एक तो गुर भगता चुवनीत, तिण नें असल साध री रीत।
 घणो भणे तोही न करे मांन, अदनीत री बात सुणे नही कांन ॥ २० ॥
 तिणनै गुर करडे वचनै देवे सीख, तो पिण न करे क्रोध लिंगार ॥ २१ ॥
 बले गुर दिलेदे बालंवार, तो पिण न दिगाडे नुब नो नूर।
 गुर नें देखी करडी निजर कळड, गुर डूरी राखे तो सुबे रहे डूर ॥ २२ ॥
 गुर राखे तो रहे गुर नीं हजूर, रात दिवस करे गुर रा गुप ग्रंन।
 सदा गुर सूं राखे जुष परिणाम, ते तों कवेय न बाले विचार ॥ २३ ॥
 याद आवे गुर नों कीयो उगगार, अनुक्रमें पानें अविचल : मोल।
 एहवा गुणां करे कर कर्मां नो सोख, त्यांन सुख रों कोइ पार नहीं ॥ २४ ॥
 एहवा उंच जीव उंच पदवी लही, घणो भणे ज्यूं घणो अदनीत।
 डूजा अदनीत री ऊंशी रीत, और अदनीत ने लगवे कान ॥ २५ ॥
 गुर सूं पिण यो करे अस्मिमांन, तो तुरत जागे अदनीत नें डेक।
 तिणनै गुर सीख देवे चूको देख, क्रोध करे नें होय जाय त्यार ॥ २६ ॥
 घणो छेडेवे तो करे विगाड, तिणनै पिण देवे भरनाण।
 बले डूजो अदनीत हुवो टोलां मांय, तिण अदनीत नें ले जावे साध ॥ २७ ॥
 गुर सूं मन भागे कूडी कर कर बाज, संका पिण नांपे तिलनात।
 गुर ना अवगुण बोले दिन रात, झूठी कर कर नुब सूं बात ॥ २८ ॥
 अदनीत बघारे अति ही मिथ्यात, अदनीत हुवे छे एहवा गैर।
 टोलां नें गुर सूं जागे वेर, त्यांन छेडवियां बोले विपरीत ॥ २९ ॥
 कैयक एहवा हुवे अदनीत, अगे नरक निगोद में ढाए मार।
 ते फिट फिट हुवो इहलोक मन्तर, तेहनौ कहियां नावे पार ॥ ३० ॥
 घणो भमण करे संसार मन्तर,

नीच ने वधाख्यां आछो नाहिं, ज्युं अविनीत जाण लेजो मन मांहिं ।

इम सांभल नें उत्तम नर नार, अविनीत ने नीचनो सग निवार ॥ ३१ ॥



रत्न : २२

शील की नव बाड

ढाल : १

डुहा

श्री नेमीसर चरण जुग, प्रणमूं उठ परभात ।
 बावीसमां जिण जगत गुर, ब्रह्मचारी विख्यात ॥ १ ॥
 सुंदर अपछर सारिखी, विद्यु सम राजकुमार ।
 भर जोवन मे जुगति सूं, छोडी राजल नार ॥ २ ॥
 ब्रह्मचर्यं जिण पालीयो, घरतां दूधर जेह ।
 तेह तणां गुण वरणव्या, पांमें भव जल छेह ॥ ३ ॥
 कोड केवली गुण करे, रसना सहस वणाय ।
 तो ही ब्रह्मचर्यं नां गुण घणां, पूरा कह्या न जाय ॥ ४ ॥
 गलित पलित काया थई, तो ही न मूकें आस ।
 तरुणपणें जे वरत घरे, हूं बलीहारी तास ॥ ५ ॥
 जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार ।
 थोडा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार ॥ ६ ॥
 वस दिष्टते दोहिलो, लाघो नर भव सार ।
 सील पाली नव बाढ सूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥
 सील मांहे गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
 थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[मन मधुकर मोही रह्यो]

सीयल सुर तरुवर सेवीये, ते वरतां मांहे गिरवो छे एह रे ।
 सीयल सूं सिव सुख पामीये, त्यां सुखां रो कदे नावें छेह रे ।
 सीयल सुर तरुवर सेवीये* ॥ १ ॥
 सीयल मोटो सर्व वरत में, ते भाष्यो छे श्री भगवंत रे ।
 ज्यां समकित सहीत वरत पालीयो, त्यां कीयो संसार नां अंत रे ॥ सी० २ ॥
 जिण सासण वन अति भलो, ते नंदण वन अनुसार रे ।
 जिणवर वनपालक तेह में, ते कठणा रस भंडार रे ॥ ३ ॥
 विरख तिण वन में सील रूपीयो, तिणरें मूल दिढ समकित जाण रे ।
 साखा छें महावरत तेहनी, प्रति साखा अणुवरत वखाण रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधा साधवी श्रावक श्रावका, त्यांरा गुण रूप पत्र अनेक रे।
 महुकर करम सुभ बंध नों, परमल गुण वशेख रे ॥ ५ ॥
 उत्तम सुर सुख रूप फूलडा, सिव सुख ते फल जाण रे।
 तिण सीयल विरख रा जतन करो, ज्युं वेगी पांमों निरवाण रे ॥ ६ ॥
 संसार सीयल थकी उधरे, जो पाले नव कोटी अभंग रे।
 तो स्वयंभू रमण जितलों तिख्यों, सेष रही नदी गंग रे ॥ ७ ॥
 उत्तराधेन रें सोल में, बंध समाही ठाण रे।
 कीधी तिण विरख नें राखवा, नव बाड दसमों कोट जाण रे ॥ ८ ॥



ढाल : २

ढुहा

हिवें कहुं छूं जू जूइ, सील तणी नव वाड ।
 दसमों कोट ते चिहुं दिसा, माहे ब्रह्मचर्य वरत सार ॥ १ ॥
 खेत गांव रे गोरवें, ते न रहे कीर्षा राड ।
 रहिसी तो खेत इण विधे, दोली कीर्षा वाड ॥ २ ॥
 ज्यूं ब्रह्मचारी विचरे तिहा, ठंम ठंम छे नार ।
 तिण कारण इण सील री, वीर कही नव वाड ॥ ३ ॥
 बाड न लोपे तेहने, रहे वरत अभंग ।
 ते बेरागी विरकत थका, ते दिन दिन चढते रंग ॥ ४ ॥
 हिचे पेहली बाड मे इम कह्यो, नारी र्हें तिहां रात ।
 तिण ठामे रहिणो नही, रह्यां वरत तणी हुवे घात ॥ ५ ॥
 अथवा नारी एकली, भली न संगति तास ।
 धर्मकथा कहवी नही, वेसी तिणरे पास ॥ ६ ॥
 तिण थी ओगुण उपजे, संका पांमें लोक ।
 आवे अछत्तो आल सिर, वले हुवे वरत पिण फोक ॥ ७ ॥
 तिण सू ब्रह्मचारी भणी, रहिणो छे एकंत ।
 हिचे कुण-कुण जायगां वरजवी, ते सुणजो मतिवंत ॥ ८ ॥

ढाल

[नगदल नी देशी]

भाव घरी नित पालीये, गिरउ ब्रह्म वरत सार हो । ब्रह्मचारी-
 जिण थी सिव सुख पांमीये, तू वाड म खडे लिंगार हो ।
 आ पेहली वाड ब्रह्मचर्य नी* ॥ ब्रह्मचारी १ ॥
 मंजारी संगत रमे, कूकड मूसग मोर हो । ब्र० ।
 कुसल किहा थी तेहने, मारे घांटी मरोड हो ॥ ब्र० आ० २ ॥
 अखी पसु निपूसक जिहां वसे, तिहा रहिवो नही वास हो ।
 तेहनी संगत वारीए, वरत नो करे विणास हो ॥ ३ ॥
 हाथ पांव छेदन कीया, कान नाक छेद्या तास हो ।
 ते पिण सो वरस नी डोकरी, रहिवो नही तिहां वास हो ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सम सिगगार देवांगणा, आई चलावण तास हो ।
 तिण आगे तो चलीयो नहीं, तो ही रहिणों एकंत वास हो ॥ ५ ॥
 अस्त्री हुवें तिहां वासो रहें, कदा चल जाअें परिणाम हो ।
 जब दिढ रहिणों दोहिलों, भिष्ट हुवें तिण ठाम हों ॥ ६ ॥
 सींह गुफावासी जती, रह्यो देख्या चित्रसाल हो ।
 तुरत पख्यों वस तेहनें, गयो देस नेपाल हो ॥ ७ ॥
 कुल बालूरो साध थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो ।
 कोणक री गणका वस पख्यों, ते रुलसी अंततो काल हो ॥ ८ ॥
 मंजारी जिहां उंदर रहें, ते घात पामे ततकाल हो ।
 ज्यूं नारी तिहां ब्रह्मचारी रहें, भागे सीयल रसाल हो ॥ ९ ॥
 बाड सहीत सूध पालीयें, पूरीजे मन खांत हो ।
 आ सीख दीधी छें तो भणी, तूं रहिजे जायगां एकंत हो ॥ १० ॥



ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड ।
जो नारी कथा कहे तेह सूं, हुवे वरत विगाड ॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन माय ।
ते ब्रह्मचारी नें नारी कथा, करवी सोभे नांय ॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो र]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह ।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सू नेह रे ।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग ।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रग रे ॥ २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण ।
हंस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे ॥ ३ ॥
कूख छे जेहनी अति भली रे, वले अग उपंग अनेक ।
त्याने वारवार न सरावणा रे, आंणी मन में विवेक रे ॥ ४ ॥
जथातथ कहितां थका रे, दोष नही छे लिगार ।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे ॥ ५ ॥
नारी रूप सरावता रे, बधे छे विषे विकार ।
परिणाम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे ॥ ६ ॥
मली कुमारी नो रूप सांभल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम ।
त्यां सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो मांहोमाही तान रे ॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप सांभल्यो रे, चडप्रद्योत राजान ।
तिण कोसंबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे ॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूही हुओ खुराव ।
फिट फिट हुओ लोक में रे, घणी पडाइ आव रे ॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कने रे, द्रोपदी रा रूप री सुण बात ।
देव कने मंगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

नारी कथा सुणनें विगड्या घणां रे, त्यांरा कहितां न आवें पार।
 ते भिष्ट हुवां वरत भांग नें रे, ते हार गया जमवार रे ॥११॥
 नीबू फल नीं वारता सुण्यां रे, मुख पांणी मेलें छें ताय।
 ज्यूं अस्त्री कथा सुणीयां थकां रे, परिणाम थोडा में चल जाय रे ॥१२॥
 संका कंखा वितिगड्या मन उपजें रे, सीयल वरत पालूं के नाहीं।
 तिण सूं नारी कथां करवी नहीं रे, दूजी बाड रें मांहीं रे ॥१३॥
 वार वार अस्त्री तणी रे, कथा न कहणी ताम।
 ए बीजी बाड सुघ पालसी रे, ते पांमसी अविचल ठाम रे ॥१४॥



ढाल : ४

दुहा

हिवे तीजी बाड में इम कह्यो, ब्रह्मचारी नार सहीत ।
एकण सय्या नही बेसवो, ए जिण सासण री रीत ॥ १ ॥
अगन कुड पासें रहे, तो प्रगले घृत नो कुम ।
ज्यू नारी संगति पुरष नों, रहें किसी पर बंभ ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी जोगी जती, न करें नार प्रसंग ।
एकण आसण बेसतां, थाबे वरत नो भंग ॥ ३ ॥
पावक गालें लोह ने, जो रहें पावक संग ।
ज्यू एकण आसण बेसतां, न रहें वरत सूरंग ॥ ४ ॥

ढाल

[अभिया राशी कहे धाय नें]

तीजी बाड हिवे चित्त विचारो, नारी सहित आसण निवारो लाल ।
एकण आसण बेठां कांम दीपें छे, ते ब्रह्मचारी ने आछो नही छे लाल ।
तीजी बाड हिवे चित्त विचारो ॥* १ ॥

एकण आसण बेठा आसंगो थाबे, आसगे काया फरसावें लाल ।
काया फरस्यां विवे रस जागे, इम करतां जावक वरत भागे लाल ॥ ती० २ ॥

पाट बाजोट सेज्जा सयारो जाणो, एहवा आसण अनेक पिछाणों लाल ।
तिहा नारी सहीत बेसों मत कोइ, जिण वचनां साह्यो जोई लाल ॥ ३ ॥

अस्त्री सहीत बेसों एकण आसण, तो वले लोक पडे छे विमासण लाल ।
अछतोई आल दे करें फित्तूरो, वले बोलें अनेक विध कूडो लाल ॥ ४ ॥

जिन ठामे बेठी हुवे नारी, तिण ठामे न बेसे ब्रह्मचारी लाल ।
बेसे तो अंतर मूहरत टाली, वेद सभाव संभाली लाल ॥ ५ ॥

नारी वेद रा पुदगल तिण थी, नर वेद विकार वेदें जिण थी लाल ।
यूहीज नारी ने पुरष सूं जाणो, मांहीमां वेद विकार पिछाणो लाल ॥ ६ ॥

नारी फरस वेद्यां हुवे भोग रो रागी, जब जावे वरत सूं भागी लाल ।
इण कारण एकण आसण वेसणो नाही, नारी फरस सूं डरणों मन मांही लाल ॥ ७ ॥

श्री राणी सम्भूत बांधो आणी मन रागों, कर फरस मुनी तन लागों लाल ।
तिण चारित्र खोय नीहांणो कीषो, दुरगत नो पंथ लीघो लाल ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते देव थई चक्रवत हुवों, भोग माहें ग्रिबी थकों मूंजो लाल ।
 सातमीं नरक माहें जाय पडीयो, पाप सूं पूर्ण भरीयो लाल ॥ ६ ॥
 नारी फरस वेद्यां सूं ओगुण अनेक, तिण सूं आसण न बैसणों एक लाल ।
 संका कंखा वितिगछा उपजें मन माहीं, सील वरत पालूं के नाहीं लाल ॥ १० ॥
 ए बाड लोपी तिण बात विगोई, तिण दीयो ब्रह्म वरत खोइ लाल ।
 ते नरक निगोद माहें जाय पडीया, ते संतार में रडबडिया लाल ॥ ११ ॥
 काचर कोहलो फाड्यां कर फाटों, तिण सूं वाक तुट हुवें आठो लाल ।
 ज्यूं अस्त्री सूं एकण आसण बेंठां तांम, ब्रह्मचारी रा चलें परिणाम लाल ॥ १२ ॥
 मा बेंन बेटी पिण इम हीज जाणों, एकण आसण मत्तीय बैसाणों लाल ।
 त्यां सूं पिण भाग गया छें अनंत, ते भास्यो छें श्री भगवंत लाल ॥ १३ ॥
 इम सांभल तीजी वाड म लोपो, ब्रह्मचर्य में धिर पग रोपो लाल ।
 तो सिव रमणी नें वेगी वरसों, आवागमण न करतों लाल ॥ १४ ॥

ढाल : ५

दुहा

नारी रूप नही विरखणो, ए जिण कही चोयी वाड ।
 ए सुव मान जे पालती, तिण सफल कीयो अवतार ॥ १ ॥
 चित्र लिखित जे पृतली, ते पिण जोयवी नांहि ।
 केवलग्यांनी इम कह्यो, दशवेकालिक मांहि ॥ २ ॥

ढाल

[मोहन मूंदछी ते गयो]

मनहर इंद्री नार नी रे, तिण दीठाई ववे विकार ।
 मिरग जाल ज्यूं नर भणी रे, पास रच्यो संसार ।
 नारी रूप न जोईये, जोईये नहीं घर राग* ॥ १ ॥
 नारी रूप दीवलो रे, भोगी पुरप पतंग ।
 भप्पे सुख रे कारणे रे, दामें कोमल अंग ॥ ना० २ ॥
 कामणगारी कामणी रे, वस कीयो सर्व संसार ।
 आखी अणी कोयक रहां रे, सुर नर गया सर्व हार ॥ ३ ॥
 रूपें रंभा सारिणी रे, वले मीठा बोली हुवे नार ।
 ते निजर भरे ने निरखतां रे, वरत ने होवे विगाड ॥ ४ ॥
 रूप में रुडो देखनें रे, माहे पडे काम अंध ।
 सुख भाणे जाणे नहीं रे, ते पाडे दुरगत नों बंध ॥ ५ ॥
 रूप घणों रलीयांमणो रे, वले अपछरें रे उणीयार ।
 ते देखे रीभो कियूं रे, आ मल मूतर रो भंडार ॥ ६ ॥
 अक्षुच अपवित्र नों कोयलो रे, कलह काजल नों ठाम ।
 बारें श्रोत वहे सदा रे, चरम दीवडी नाम ॥ ७ ॥
 देह उदारीक कारमी रे, खिण में भंगुर थाय ।
 सपत घात रोगकुली रे, जतन करतां जाय ॥ ८ ॥
 अबला इंद्री निरखतां रे, बाघे विषे रस पेम ।
 राजमती देखी करी रे, तुरत डिग्यों रहनेम ॥ ९ ॥
 नारी वेद नरपति थायो रे, वले चवू कूसीलीयो ते थाय ।
 बाड भांग लाखां मवां रे, हलीयो रूपी राय ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सेठ	घरे	जांमो	लीयो	रे,	नांम	इलापुतर	जांण ।
ते	नटवी	रुपें	मोहीयो	रे,	ते	वसीयो	नटवां घरे वांण ॥ ११ ॥
ते	वांस	उपर	चढ़	नाचतो	रे,	ते	मन मांहेँ हुरष न मात ।
ओ	वांछें	घन	राय	नों	रे,	राय	वांछें इणरी घात ॥ १२ ॥
मणरथ	वंघव	मारीयो		रे,	मेणरेहा	रो	देखी रूप ।
मरण	पांम्यों	तिण	जोग	सूं	रे,	वले	जाय पख्यों अंघ कूप ॥ १३ ॥
अरणक	संजम	आदख्यो		रे,	दीघी	संसार	नेँ पूठ ।
ते	नारी	रुपें	मोहीयो	रे,	ते	नारी	लीयो तिण लूट ॥ १४ ॥
एक	पत्री	आंणों	लेजावतां	रे,	मारग	मांहेँ	मिलीयो चोर ।
तिणनेँ	पत्री	वांण	वाया	घणां	रे,	चोर	फरसी सूं न्हांख्या तोड ॥ १५ ॥
हिंवेँ	एक	वांण	वाकी	रह्यो	रे,	जव	अस्त्री निज रूप दिखाय ।
ते	चोर	तिणरे	रूप	विलंवीयो	रे,	जव	पत्री वांण सूं दीयो ढाय ॥ १६ ॥
चोर	पख्यों	ते	देखनेँ	रे,	पत्री	करवा	लागों मांण ।
चोर	कहेँ	गरवे	किसूं	रे,	म्हारे	नारी	नेणां रा लाग-वांण ॥ १७ ॥
इत्यादिक	वह	मांनवी		रे,	त्यारो	कहितां	न आवे पार ।
जे	नारी	रूप	में	रीझीवा	रे,	ते	गया जमारो हार ॥ १८ ॥
नारी	रूप	कांनेँ	सुणी	रे,	भिष्ट	हुआ	छें अनेक ।
तो	दीठां	गुण	होसी	किहां	रे,	समभों	आंण विवेक ॥ १९ ॥
काची	कारी	आंख	नीं	रे,	सूर्य	सांन्हों	जोयां अंघ होय ।
ज्यूं	नारी	नेणा	निरखीयां	रे,	ब्रह्म	वरत	देवे खोय ॥ २० ॥
ब्रह्मचारी	निरखे	मती		रे,	नारी	रूप	सिणगार ।
आ	सीख	दीघी	छें	तो भणी	रे,	रखे	चूकैला चोथी वाड ॥ २१ ॥

ढाल : ६

ढुहा

भीत परेच ताटी आंतरे, जिहां रहिता हुवें नर नार ।
तिहां ब्रह्मचारी ने रहिवो नही, ए जिण कही पांचमी वाड ॥ १ ॥
संजोगी पासे रहे, ब्रह्मचारी दिन रात ।
तेह तणा सब्द सुण्यां थका, हुवें वरत नी घात ॥ २ ॥
जेवर नेजर खलकती, ते सब्द पडे तिहां कांन ।
जव चल जाअे ब्रह्म वरत थी, लागे विपे सूं घ्यान ॥ ३ ॥

ढाल

[आशुद समकित उचरे रे लात]

वाड सुणों हिवे पांचमी रे लाल, सील तणी खबवाल ब्रह्मचारी रे ।
ज्यं वरत कुसल रहे ताहरों रे, वले नावे अछती आल ।
वाड सुणो हिवे पांचमीं रे लाल* ॥ १ ॥
भीत परेच ताटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरप रहिता हुवे रात ।
तिहां कुण कुण दोषण उपजे रे लाल, ते सांभलजे चितलाय ॥ वा २ ॥
केल करे निज कत सू रे लाल, ते बोलती जगावे छे कांम ।
कुई सब्द करे तिहां रे लाल, रुदन सब्द करे तिण ठांम ॥ ३ ॥
कोयल जिम बोले कत सूं रे लाल, गावे मधूरे साद ।
काम वसे हडि हडि हसे रे लाल, बोलती करे उनमाद ॥ ४ ॥
वले थणित क्रदित सब्द तिहां रे लाल, वले विलपति सब्द हुवे तांम ।
तिहा रहितां एहवा सब्द सांभले रे लाल, जव चल जाअे तुरत परिणांम ॥ ५ ॥
गाज तणो सब्द सुणी रे लाल, रित पांमे पपहीया मोर ।
ज्युं भोग समे रा सब्द सांभल्यां रे लाल, लागे वरत ने खोड ॥ ६ ॥
इम सांभल ने रहिवो नही रे लाल, सब्द पडें तिहां कांन ।
ए पांचमी वाड पालीयां रे लाल, पांमे मुगति निवांन ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।



ढलः ७

दुहा

हिवें छ्ठी बाड में इम कह्यो, चंचल मन म डिगाय ।
खाघो पीघों विलसीयो, ते मत याद अणाय ॥ १ ॥
मन गमता भोग भोगव्या, ते याद कीयां गुण नाहि ।
ए बाड भांग्यां वरत खंड हुवें, वले अजस हुवें लोक माहि ॥ २ ॥

ढाल

[२ जीव मोह अनुकम्पा नाशीए]

हाव भाव सब्द नारी तणा, त्यां सुणीयां बधे विषें विकार रे ।
एहवा सब्द आगें सुणीया हुवें, त्यांनं याद न करणा लिगार रे ।
छ्ठी बाड सुणो ब्रह्मचर्य नी* ॥ १ ॥
बर्ण गोरदिक सरीर नों, रूप सोभायमान अतंत रे ।
एहवी अछी सूं भोग भोगव्या, चीतारें नही वरतचंत रे ॥ २ ॥
गंध चोवा नें चंदणादिक, रस मधूरादिक अनेक रे ।
ते पिण अछी संघातें भोगव्या, ते पिण याद न करणों एक रे ॥ ३ ॥
हाथ पग सुखमाल नारी तणा, सुखमाल सरीर सुखदाय रे ।
एहवी अछी सूं कीला करी, ते चीतारें नही मन मांय रे ॥ ४ ॥
सब्द रूप गन्ध रस नें फरस, पांच परकार नां काम भोग रे ।
ते तों अछी संघातें भोगव्या, त्यांनं याद करणा नही जोग रे ॥ ५ ॥
रम्या सारी पासा सोगटादिक, जूवटादिक रामत अनेक रे ।
ते अछी संघातें रामत करी, त्यांनं याद न करणी एक रे ॥ ६ ॥
सब्द सुणीयां भांगे बाड पांचनीं, रूप सूं चोथी बाड विगाड रे ।
फरस सूं भांगे बाड तीसरी, अछी कथा सूं दूजी बाड रे ॥ ७ ॥
एक याद करे यां माहिलों, तिण सूं भोगें छ्ठी बाड रे ।
तो सगलाई याद कीयां थकां, ब्रह्म वरत ने हुवे विगाड रे ॥ ८ ॥
मन गमता काम भोग भोगव्या, तिण सूं हरखत हुवें सभाल रे ।
तिण वाड सहित वरत खंडीया, पांणी किम रहें फूटां पाल रे ॥ ९ ॥
पूर्वला काम भोग चीतार नें, कीची रेणा देवी सूं पीत रे ।
जब जिन रिष नें जब न्हांखीयो, रेणा देवी माख्यो वेंरीत रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जहर सहीत चास पीये चालीयां, त्यांरो वाकोई न हुवो वाल रे ।
 त्यांने घणां वरसां पळे कह्यो, तिण सूं मरण पांम्यो ततकाल रे ॥ ११ ॥
 भाई ने पवन भूंय्यो देख ने, भाई ने न जणायों ताय रे ।
 जणायो जिण दिन घसकों पडे, ततकाल छोडी तिण काय रे ॥ १२ ॥
 ए मूंआ जहर याद अणावीयां, पांमी अणचित्ती असमाध रे ।
 ज्यूं भागे ब्रह्मचारी सील सूं, काम भोग नें कीघां याद रे ॥ १३ ॥
 काम भोग ने याद कीयां थकां, संका कंखा उपजे मन माय रे ।
 सील पालूं के पालूं नहीं, वले जावक पिण मिष्ट थाय रे ॥ १४ ॥
 इम सांभल ने नर नारीयां, मत लोपो छठी वाड रे ।
 तो सील वरत सुच नीपजे, तिण सूं हुवें खेवो पार रे ॥ १५ ॥

ढाल : ८

दुःख

निज निज अति सरस आहार नै, वरध्यों नादनीं चाड ।
 ते इह्यानी निज भोगवें, जो वरत नै हूँ विगाड ॥ १ ॥
 अजादिक सूं पूगें मख्यों, एह्वो नागि आहार ।
 ते वातु बीनावें अति धनीं, तिग सूं वषे छे विकार ॥ २ ॥
 खास खास चरनरा, बले नीज भोगन जेह ।
 बले विविध पने रस नीरवें, ने रसना मुख रस केह ॥ ३ ॥
 जेहनीं रसना व्य मही, ते चाहे मरम आहार ।
 ने वरत नागि भागल हूँ, लोवें इह्य वरत सार ॥ ४ ॥

ढाल

[हूं तो कल मरने दंडा !]

कदवां करें आहार उनासनां, वृत्त दिवू मरतो आहार नागि रे ।
 एह्वो आहार सरस चांद चांद नै, निज निज न करें इह्यागरे रे ।
 वय नुरगी काया रोप महीन छे, ने करें सरस आहारो रे ।
 ने आहार रुडी रीत परसनें, तिग सूं वषे अंत विकारो रे ॥ १ ॥
 विकार वध्यां इह्य वरत नै, बोध अनेक दिव आगें रे ।
 बले अंग कुवेष्टा उनजे, जाकर वरत निग नागि रे ॥ २ ॥
 सरस आहार निज चांने बीयां, वरत नागि विगडे देहू लोपो रे ।
 मंगार में दुखीयो हूँ, वदतो जाए रोग नै सोगो रे ॥ ४ ॥
 वय नुरगी काया बीन पडी, ते करें सरस आहारो रे ।
 जो पेट फाटे पथ्यों टल वलें, बले जावें अजीरज इकारो रे ॥ ५ ॥
 बले विविध पने रोग उनजे, निज मरस आहार बीयां नागि रे ।
 अकाले मरे वन लोव नै, प्रछे होय जाए अंत संसारी रे ॥ ६ ॥
 वय नुरगी रो वनीं इष दिव नै, निज बीयां सरस आहारो रे ।
 जो वृद्धा रो कहियो किनूं, इनरे पेट तुलत मालें नारो रे ॥ ७ ॥
 इह्य इह्य विविध पनवांन नै, मरस आहार भोगवे रहूं नूतों रे ।
 पान समन कहों उत्तरावेन में, ने साधना की किनूतो रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाय के अन्त में है ।

चक्रवत नी रसवती भोगवे, भूदेव ब्राह्मण छोडी लाजो रे ।
 काम विटंबणा तिण लही, वेन बेटी सूं कीयों अकाजो रे ॥ ९ ॥
 सरस आहार तणो लपटी घणो, मंगू आचार्य तेहो रे ।
 मरने गयों व्यंतरीक में, संजम लारे उडाई खेहो रे ॥ १० ॥
 वले सेल्ला रायं रिषीसरु, सरस आहार तणो हुवो ग्रिषी रे ।
 ते जिभ्या वस पडीये थके, किरिया अल्मी घर दी रे ॥ ११ ॥
 कुडरीक रस लोलपी थकों, पाछो घर में आयो रे ।
 भारी आहार सू रोग उपज मूंओ, पडीयो सातमी नरक में जायो रे ॥ १२ ॥
 इत्यादिक बहू साव नें साधवी, लोपी ने सातमी वाडो रे ।
 ब्रह्मचर्य वरत खोय ने, गया जमारो हारो रे ॥ १३ ॥
 सनीपातीयो हूष मिश्री पीये, तो सनीपात वधतो देखो रे ।
 ज्यू ब्रह्मचारी ने सरस आहार सूं, विकार ववे छे वसेखो रे ॥ १४ ॥
 इम सांभल ब्रह्मचारीयां, नित भारी म करजो आहारो रे ।
 शील वरत सुघ पाल ने, आवा गमण निवारो रे ॥ १५ ॥
 सरस आहार तो जीहांई रह्यो, लूखोई पिण आहारो रे ।
 चांप चांप दिन प्रते करणों नही, ते कहिसूं आठ्मी वाडो रे ॥ १६ ॥

ढाल : ९

दुहा

आठमीं बाड में इम कह्यो, चांप चांप न करणो आहार।
 प्रमाण लोप इधको करे, तो वरत नें हुवें बिगाड ॥ १ ॥
 अति आहार थी दुख हुवें, गलें रूप बल गात।
 परमाद निद्रा आलस हुवे, बले अनेक रोग होय जात ॥ २ ॥
 अति आहार थी विषें बधे, घणोइज फाटें पेट।
 घान अमाउ उरतां, हांडी फाटें नेट ॥ ३ ॥
 केइ बाड लोपे विकल थकां, करसी इधक आहार।
 त्यारे कुण कुण ओगुण नीपजे, ते सुणजो विसतार ॥ ४ ॥

ढाल

[विमल केवती रंज रे चम्या नगरी]

भर जोवन रे मांहि रे, देह निरोगी हुवें।
 मांहि तेजस रो जोरो घणों ए ॥ २ ॥
 ते चांपे करे आहार रे, ते पचें सताब सूं।
 तो विषें बधें तिण रे घणी ए ॥ २ ॥
 जब गमता लागें भोग रे, ध्यान माठो रहे।
 बले गमती लागे अस्त्री ए ॥ ३ ॥
 हूं सील पालूं कें नांहि रे, ए संका उपजे।
 पछें भोग तणी बंछां हुवें ए ॥ ४ ॥
 मोनें लाभ होसी कें नांहि रे, सील वरत पालीयां।
 ए पिण सांसो उपजे ए ॥ ५ ॥
 जब सिष्ट हुवें वरत भांग रे, भेष मांहें थकां।
 केइ भेष छोडी हुवें गृहस्थी ए ॥ ६ ॥
 जे चांपे कीचां आहार रे, पचें आछी तरें।
 तो इसडो अनरथ नीपजे ए ॥ ७ ॥
 के कां रं हुवें रोग रे, आहार इधको कीयां।
 बधे असाता वेदनी ए ॥ ८ ॥
 फाटें पेट अतंत रे, बंध हुवें नाडीयां।
 बले सात लेवे अदलो थकां ए ॥ ९ ॥

वले हुवे अजीरण रोग	रे,	मुख वासैं बुरों । पेटें भालें आफरो ए ॥ १० ॥
वले उठें उकाला पेट	रे,	चालें कलमली । वले छूटें मुख थूकणी ए ॥ ११ ॥
डील फिरें चकडोल	रे,	पित घूमे घणां । चालें मुजल वले मुलकणी ए ॥ १२ ॥
आवें माठी घणी डकार	रे,	वले आवें गूचरकां । जब आहार भाग उलटो पडें ए ॥ १३ ॥
वले चाले मरोडा पीड	रे,	पेट दुखें घणो । लोही ठाण फेरो हुवें ए ॥ १४ ॥
वले नाड्यां में हुवें रोग	रे,	ते आहार मल्लें नहीं । ज्यूं खावे ज्यूं नीकले ए ॥ १५ ॥
वले ताव चढ़ें ततकाल	रे,	बंध हुवें मातरो । आहार इवको कीयां थका ए ॥ १६ ॥
घणी देही पडे कथाय	रे,	आहार भावें नहीं । जब मांस लोही दिन दिन घटें ए ॥ १७ ॥
खीण पडे जब वेह	रे,	निबलाई पडें । हाथ पगां सोजों चढे ए ॥ १८ ॥
जब ठमे अतीसार	रे,	ओषध करें घणां । दिन दिन फेरो इवको हुवे ए ॥ १९ ॥
पछे जावक छूटे अन	रे,	चूकें घर्म ध्यान थी । वले बोलें घणों दयामणो ए ॥ २० ॥
वले हुवे सांस ने खास	रे,	जलोदर वधें । सून बून देही पडे ए ॥ २१ ॥
वधे अपचों रोग	रे,	आहार पचे नहीं । ओषध को लागे नहीं ए ॥ २२ ॥
वले उपजें दाह सरीर	रे,	बलण लागी रहे । पेट सूल चालें घणी ए ॥ २३ ॥
वेदन हुवें आंख नें कांन	रे,	खाज हुवें घणों । वले रोग पीतंजर उपजें ए ॥ २४ ॥
इत्यादिक बहु रोग	रे,	उपजें आहार थी । कहि कहि नें कितरो कहूं ए ॥ २५ ॥

ए ह्वे आहार श्री रोग दे जक तान लें कर नों।
 कृद कण्ड वरें इनों ए॥ २३॥
 वे चने कने आहार दे शिरी नें दे।
 तानें काव दोलने दोहने ए॥ २४॥
 नेह सार वहे एन दे श्री आहार इक्को करें।
 जो इनों कृहे तिन करे ए॥ २५॥
 जो निरले नहे अनेक दे हुं आहार इनों करें।
 जो ही कहों न नने केहों ए॥ २६॥
 केह पूरन नरे निद्र पेट दे इक्को चार नों।
 जक पांगी पूरे नने नही ए॥ २७॥
 जक तिरया काणे अरुठ दे पेट फटें इनों।
 जक उल्लवच करे इनों ए॥ २८॥
 बले लारें अंदला डील दे जक नही केहों।
 अक इनी बले केहों ए॥ २९॥
 इसवी पहे विरत दे जो ही शिरी नें दे।
 निद्र अकृण्य छेहे नही ए॥ ३०॥
 जक रोग पीडले अंग दे नरे नारी करें।
 श्री तिन वने गनन नें ए॥ ३१॥
 पहे च्याहं गति दे नाहि दे मनन करे इनों।
 अरुठ काल बुद नगेवें ए॥ ३२॥
 कूंडरीक दे उनतों रोग दे आहार इक्को कीयों।
 वे नरनें पयों नरक सतनी ए॥ ३३॥
 हांडी फटें पेट दे इक्को उरीयों।
 जो पेट न फटें तिन विरे ए॥ ३४॥
 ब्रह्मचारी इन जांप दे इक्को नही कीनीयें।
 अजोदरीय रुप इनों ए॥ ३५॥
 ए जउन अपोदरी तन दे नरतां दोहिली।
 वैराग तिन हूँ नही ए॥ ३६॥
 ए नही आठनी बाड दे ब्रह्मचारी स्त्री।
 चहेँ चित्त आपबलो ए॥ ४०॥



ढाल : १०

दुहा

नवमीं बाड ब्रह्मचर्य नी, विभूषा न करणी अंग ।
विभूषा कीयां थकां, थाये वरत नों भंग ॥ १ ॥
सरीर विभूषा जे करे, ते करे तन सिणगार ।
बले रहे घटाख्या मठारीया, त्या लोपी ब्रह्म व्रत बाड ॥ २ ॥
सरीर विभूषा जे करें, ते संजोगी होय ।
ब्रह्मचारी तन सोभवें, ते कारण नही कोय ॥ ३ ॥
बाड भांग्यां किण विघ रहे, अमोलक सील रतन ।
तिण सूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य नां, किण विघ करें जतन ॥ ४ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

सोभा न करणी देह नी रे लाल, नही करणो तन सिणगार ब्रह्मचारी रे ।
पीठी उगटणों करणो नही रे लाल, मरदन नही करणो लिंगार ब्रह्मचारी रे ।
ए नवमी बाड ब्रह्म वरत नी रे लाल ॥ १ ॥

ठंडा उन्हा पांगी थकी रे लाल, मूल न करणो अंगोल ।
केसर चंदण नही चरचणा रे लाल, दांत रगे न करणा चोल ॥ २ ॥
बहू मोलां ने उजला रे लाल, ते वसत्र ने पेहरणा नांहि ।
टीका तिलक करणा नही रे लाल, ते पिण नवमी बाड रे मांहि ॥ ३ ॥
कांकण कुंडल ने मूंदळी रे लाल, धले माला मोती ने हार ।
ते ब्रह्मचारी पेंहरें नही रे लाल, बले गेहणा विवध परकार ॥ ४ ॥
नही रहणो घटाख्यां मठारीयो रे लाल, केसादिक ने समार ।
बले वसत्रादिक पिण पेहरने रे लाल, मूल न करणो सिणगार ॥ ५ ॥
विभूषा अंग छें कुसील नों रे लाल, तिण सूं चीकणा करम बंधाय ।
तिण सूं पडें संसार सागर मभे रे लाल, तिणरो पार वेगों नहीं आय ॥ ६ ॥
सिणगार कीयां रहे तेहनें रे लाल, अस्त्री देवे चलाय ।
मिष्ट करें सील वरत थी रे लाल, ठाजो कर देवें ताय ॥ ७ ॥
रतन हाथे आयो रांक रे रे लाल, ते दीठां खोस ले राय ।
ज्यूं ब्रह्मचारी विभूषां कीयां रे लाल, अस्त्री सील रतन खोसे ताय ॥ ८ ॥

-यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ब्रह्मचारी इम सांभली रे लाल, सील विभूषा मत करजे लिगार।
 ज्युं सीयल रतन कुसलें रहें रे लाल, तिण सूं उतरें भव जल पार ॥ ६ ॥



ढाल : ११

दुहा

ए नव वाड कही ब्रह्मचर्यं री, हिवें दसमों कहे छे कोट ।
 ए वाड लोपी बीटे रह्यो, तिणमें मूल न चाले खोट ॥ १ ॥
 कोट भांगा जोखो छे वाड ने, वाड भांगा वरत ने जाण ।
 तिण सूं कोट भिलण देवे नही, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २ ॥
 कोट भांग वधारा पडीयां थकां, वाड भांगता किती एक वार ।
 तिण सूं वशोष कोट रो, करवो जतन विचार ॥ ३ ॥
 सेर कोट सेठो हुवे, तो चिंता न पामें लोक ।
 ज्यूं अडिग कोट ब्रह्मचर्यं रो, तिण सूं सील न पामें दोख ॥ ४ ॥
 ते कोट करणो किण विघ कह्यो, किण विघ करणो जतन ।
 ते ब्रह्मचारी विवरा सुच, सामलजो एक मन ॥ ५ ॥

ढाल

[ङाम मुजादिक नी डोरो]

मन गमता सब्द रसाल, अण गमता सब्द विकराल ।
 गमता सब्द सुण्यां नही रीभें, अण गमता सुण्यां नही खीजें ॥ १ ॥
 काला नीला राता पीला धोला, पाच परकार ना रूप बोहला ।
 राग नाणें भला रूप देख, माठा देख न आणणो घेख ॥ २ ॥
 गघ सुगंध दुगघ छे दोय, गमता अण गमता सोय ।
 गमता सू नही रति सोय, अण गमता सूं अरति न कोय ॥ ३ ॥
 रस पाच परकार नां जाणों, त्यांरा स्वाद अनेक पिछाणो ।
 गमता सूं राग न करणो, अण गमता सूं घेष न घरणो ॥ ४ ॥
 फरस आठ परकार नां ताम, त्यांरा जूआ जूआ छे नांम ।
 रागी गमता रो अण गमता रो घेखी, यां दोयां सूं रहणो निरापेखी ॥ ५ ॥
 सब्द रूप गन्ध रस फरस, भला भूंडा हलका भारी सरस ।
 यां सूं राग घेष करणो नांही, सील रहसी एहवा कोट मांही ॥ ६ ॥
 सील वरत छे भारी रतन, तिणरा किण विघ करणा जतन ।
 सगला व्रतां मांहे वरत मोटो, तिणरी रिष्या भणी कह्यो कोटो ॥ ७ ॥
 जो सब्दादिक सू हुवे राजी, तो कोट जाअे छे भाजी ।
 कोट भांगां वाड चकचूरो, ब्रह्म वरत पिण पर जाअे पूरो ॥ ८ ॥

तिण सूं कोट रा करणा जतन, तो कुसले रहे सील रतन ।
 टल जाअें सगल दोख, जब पामें अविचल मोख ॥ ९ ॥
 इम सांभल नें ब्रह्मचारी, तूं कोट म खंडें लिगारी ।
 ज्यूं दिन दिन इघको आणन्द, इम भाष्यों छें वीर जिणंद ॥ १० ॥
 ए कोट सहित कही नव बाड, ते सांभल नें नर नार ।
 इण रीत सूं ब्रह्म वरत पालों, ज्यूं मिटे सर्व आल जंजालो ॥ ११ ॥
 उत्तरावेन सोलमां मभारों, तिणरो लेई नें अनुसारो ।
 तिहां कोट सहीत कही नव बाड, ते संखेप कह्यों विसतार ॥ १२ ॥
 इगतालीसैं नें समत अठार, फागुण विद दसमीं गुरवार ।
 जोड कीधीं पादू मभार, समभावन नें नर नार ॥ १३ ॥



रत्न : २३

समकित्त री ढालां

ढाल : १

[म्हारो मनडो उमाहो प्रभुजी नें बादवा]

राय सिद्धार्थ नें घर जनमिया, रांणी तिसलादे अंग जात ।
छेह्ला तीर्थंकर श्री महावीर जी, चावा तीनूं लोक विख्यात ।
श्री वीर जिणेस्वर सुणज्यो मोरी वीनतीः ॥ १ ॥

त्यां अथिर संसार छोडी संजम लियो, तोड्या घनघातिया कर्म ।
तीरथ चलायो हो केवली थयां पछे, परूपियो निरवघ घर्म ॥ श्री० २ ॥
चवदें सहस्र मुनिस्वर तारिया, बले आयां छतीस हजार ।
पाप अठारे हो सर्व पचखाय नें, उताखा भव पार ॥ ३ ॥
एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक हूवा, त्यांनं कीया वारें व्रत धार ।
श्रावका तीन लाख अठारे हजार नें, त्यांरो पिण कीयो उदार ॥ ४ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप निरमला, ए जिवपुर मारग च्यार ।
ए साव श्रावक नो घर्म बताय नें, पहुंचता मुक्त मभार ॥ ५ ॥
अवेन अठवीसमां उत्तराघेन में, मोष मार्ग कह्या च्यार ।
ग्यांन दरसण चारित ने तप विनां, नहीं श्रद्धुं घर्म लिगार ॥ ६ ॥
देव अरिहत निग्रंथ गुर मांहरे, केवलीए भाखित घर्म ।
ए तीनूंई तत्व सेंटा कर भाळिया, ओर छोड दीया सहु भर्म ॥ ७ ॥
ए तीनूं ही तत्व मांहि जिणजी री आगन्या, मै कर लीवी परमाण ।
घर्म शुक्ल घ्यांन ध्यावे आ आत्मा, हूं इम पालूं तुम आंण ॥ ८ ॥
केवल ग्यांनी भरत में को नहीं, बले पूर्व ग्यांन विच्छेद ।
कुबधी कवाग्रही उठ्या अति घणा, त्यां घाल्यो घर्म में भेद ॥ ९ ॥
बले उंचा तो कुल नां हो मोटा राजव्यां, त्यां छोड दीयो जिण घर्म ।
बले लिगडा नें लिगडी साधु रा भेष में, त्यांरो पिण निकल गयो भर्म ॥ १० ॥
द्रव्य जेनी केइ साधु कहावतो, त्यां सूं चरचा कीजे जाय ।
त्यां शरणो लियो हो सगला दरशण्या तणो, त्यांनि किम आणिजे ठाय ॥ ११ ॥
जिण घर्म माहे साहेबा विखो पड्यो, मांहे राजा न दीसे एक ।
गुण विनां भेष बज्यो भगवानं रो, त्यांरी सरखा चाल अनेक ॥ १२ ॥
एक एक री उत्तारे मांहेमांहि आसता, बंदना रा सूस दिराय ।
न्याय री चरचा रो कांम पड्यां थको, भूठ बोलें एक होय जाय ॥ १३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरी सरवा रो मुंह मायो को दीसें नहीं, बले वोलें घणा विपरीत ।
 पिण मांहरे तो आवार छे प्रभु ए बडो, एक सूतर री परतीत ॥ १४ ॥



बाल : २

[कद ठाकुर फुरमायो]

देव तणो आचार न जाणे, गुर री खवर न काई रे।
 धर्म तणो तूं नाम न जाणे, तूं राखे धणी ठसकाई रे।
 प्राणी समकित किण विघ आई रे ॥ १ ॥
 नव तत्व नां भेद न आवे, कूडी करे लपरई रे।
 धर्म तणो धोरी होय वेठो, तोमें दीसे धणी भोलाई रे ॥ प्रा० २ ॥
 जीव न जाणे अजीव न जाणे, पुन्य नी पारखा नाई रे।
 पाप तणी प्रकृति नही धारी, ये कीधी धणी नहराई रे ॥ ३ ॥
 आश्व नाला छूटा नही देखे, संवर सुमता नाई रे।
 निरजरा तणो निरणो नही कीषो, कठे गइ चतुराई रे ॥ ४ ॥
 वव मोष वेहू नो जोडो, तिणरी समझ न पाई रे।
 समदिष्टी तूं नाम धरावे, तोनें कुगुरां दीयो भरमाई रे ॥ ५ ॥
 हाथ जोडी नें समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे।
 अजाण पणो मिटियो नही अंतर, मिथ्यात दीयो बोसराई रे ॥ ६ ॥
 न्याय री वात हृदय मे नही वेसैं, थोथी करे बडाई रे।
 आग्या वारे धर्म परुषें, दूड गई चतुराई रे ॥ ७ ॥
 करण जोग भांगा नही धाख्या, वतां री खवर न काई रे।
 अवत माहिं धर्म परुषें, या ही नरक री साई रे ॥ ८ ॥
 पाप धर्म नो नही निवेडो, अकल गई दपटाई रे।
 जब तोने कोइ जाण पणो पूछे, तो उलटी करे लडाई रे ॥ ९ ॥
 पोथा पानां काढ ने वेठो, भोला नें दे भरमाई रे।
 कूड कपट कर फंद मे पाडे, ते मांडी पेट भराई रे ॥ १० ॥
 सांगधारी नें साधज सरखें, पडे पगा मे जाई रे।
 तिखुत्ता सूं करे वंदणा, मन मे हरषित थाई रे ॥ ११ ॥
 सावध करणी सू पापज लागे, तिण री विगत न पाई रे।
 निरवद्य मे धर्म पुन्य दोनूई, ते पिण अटकल नाई रे ॥ १२ ॥
 द्रव्य खेतार काल भाव न धाख्या, गुण विण वस्तु न काई रे।
 च्यार निषेपा नो निरणो नही कीषो, ते मिनष जमारो पाई रे ॥ १३ ॥
 सगला मे तूं बडेरो वाजे, मन मे मगज न माई रे।
 न्याय मार्ग तोने किण विघ आवे, कुगुरा दीया डंक लगाई रे ॥ १४ ॥

सरघा दुर्लभ जिणेश्वर भाखी, सूतर मे दीयो जताई रे।
 चतुर हुंता त्यां निरणो कीघो, ते मिनष जमारो पाई रे ॥ १५ ॥
 जीव अजीव ए छ द्रव्य कीघा, नव कीया न्याय वताई रे।
 समदिष्टी ओलखिया अंतर, त्यांने नही सके देव डिगाई रे ॥ १६ ॥



ढलल : ३

दुहल

नवु ढदलरुथ ओलुखुडल वलनलं, सडडकलत नहुल तलण डलहुल ।
सडडकलत वलण सलघडणु नहुल, सलवडणल वलण शलवडुर नलहुल ॥ १ ॥
तलण सुं वशुष सडडकलत तणु, खड करडुडु डव डुव ।
सडडकलत सहुलत करणु करु, तुडलरु नलशुवड डुतुकुतल रु नुव ॥ २ ॥

ढलल

[डलडु डलनव डडलरु डतल हलरु]

दुव गुरु घडु रल डलरखल करु, डखडलत डलहुल कुड डतल डरु ।
छुडुडु कुगुरुलं तणु ललरु, सगललं डलहुल सडडकलत सलरु* ॥ १ ॥
डलवु डलतलरल तलड तडु, वलु डलवु डलतलरल डलड डडु ।
डलण सडडकलत वलण न हुवु उदुडलरु ॥ स० २ ॥
डुडुडु अनेक डलडु दुखु, आंक वलनलं नहुल ललगु लुखु ।
डुडु आकल डलसुल सडडकलत घलरु ॥ ३ ॥
सलघु रु ओललर डुरु डललु, दुडुडण सगलल वलव सु डललु ।
तु सडडकलत वलण नहुल डलडु डलरु ॥ ॡ ॥
कुडक उडलड डलहु रहु, सुल तलडलदलक नलं दुख सहु ।
डलण सडडकलत वलण डुरु अंघलरु ॥ ५ ॥
सुस ओलखडु सलंकडल कुडल, वलु सलघु शुरलवक नल वुरत लुडल ।
सडडकलत वलण वरत नहुल ललडलरु ॥ ॢ ॥
उणल डुरुव वश डण वलडु गुडलंनल, डलण सडडकलत वलण छु अगुडलंनल ।
तलणरु ततुव तणु नहुलं वलवलरु ॥ ॣ ॥
शुरुणलक रलड डर डु वुडुं, तु सडडकलत डलहुल रहुडु सुडु ।
तलण सु हुलसुल तुथंकलर अवतलरु ॥ । ॥
अरणक नु वलु कलड दुवु, तुडलं धरुड तणु नहुल छुडुडु डुवु ।
डुडलं कनु दुव गडल हलरु ॥ ॥ ॥
ससुकुत डुरलकुकुत डणलडु डुलकल, डलण सडडकलत वलण सगलल डुलकल ।
तलण सु ततुव तणु नलरणु घलरु ॥ १० ॥
वुडलकरण डणलडु डुडु डंडलण, वलु षुड वलव डलडल रु डलण ।
डलण ततुव वलनलं सगलल छलरु ॥ ११ ॥

*डहु आंकडु डुरलडुडु कलथल कु अनुत डुं हु ।

विद्वि	विद्वि	शत	नगे	नागे,	त्यांरा	अर्थ	करे	गुह्य	विचारि।
केह	नग	नग	ने	उल्ल	वृह्	ज्वा	अर्थ	करे	केन
सुखा	कुल्ल	जिग	नाडी,	उत्तर	जिग	आदि	केले	सखी।	
सुख	जीव	निश्चय	दीयो	सूत्रे,	ते	सोप	गानी	जीव	होय
निश्चय	द्वय	परकारे,			त्यनिं	एक	रह्यो	वाली	यारे।
					तो	ही	सन्निहित	यंगि	प्राप्त



रत्न : २४

गणधर सिखावणी

ढाल : १

[सत्य कोइ मत राखज्यो]

श्री वीर कहे सुण गोयमा, इण जीव तणी नही आदो रे ।
 हिवें नीठ नीठ नर भव लह्यो, समो एक म कर परमादो रे ॥ श्री०* १ ॥
 वृक्ष तणो जिम पानडो, पंडुर थद भड जायो रे ।
 इम अथिर आऊखो मिनष रो, खिण मे वेरंग थायो रे ॥ २ ॥
 डाभ अणि जल जेहवो, वले अथिर सुपना री माया रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनप रो, खिण में घूल घांणी हुवे काया रे ॥ ३ ॥
 अथिर घजा देवल तणी, अथिर पांणी में पतासो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनप रो, जेहवो चेर वाजी रो तमासो रे ॥ ४ ॥
 अथिर वेग नदी तणो, वले अथिर द्वादल नीं छायां रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवी जुवारी री माया रे ॥ ५ ॥
 अथिर वचन का पुरप रो, वले अथिर सीख अवनीतो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर नारी री प्रीतो रे ॥ ६ ॥
 अथिर फूस नौं तापवो, अथिर उन्हाला रो मेहो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, अथिर कन्या धन जेहो रे ॥ ७ ॥
 अथिर रंग पतंग रो, ते जातां न लागे वारो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जाणें आंख तणो टिमकारो रे ॥ ८ ॥
 अथिर धनुष आकाग रो, अथिर कुंजर नो कानो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जेहवो संध्या रो वानो रे ॥ ९ ॥
 अथिर परपोटो पांणी तणो, अथिर भालर रो भिणकारो रे ।
 ज्यूं अथिर आऊखो मिनष रो, जाणे विजली तणो चमतकारो रे ॥ १० ॥
 एहवो अथिर आऊखो मिनष रो, तिणमें घणो उदवेगो रे ।
 इम जांग परमाद ने परहरो, मरण आवे छे वेगो रे ॥ ११ ॥
 मिनष तणो भव पाय नें, आंणे वेराग सवेगो रे ।
 काल अनंतो दोहिलो, वार वार न पांमसी वेगो रे ॥ १२ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढाल २

[आरुखो दुटा नें साधो को नहीं रे]

श्री जिणवर गणघर मुनिवर नें कहे रे, एक समो पिण मत कर परमाद रे ।
 सुभति गुप्ति आठूं सुध पालजे रे, ज्युं तोने उपजे परम समाध रे ॥ १ ॥
 भूसर परमाणें इरिया सोधजे रे, ऊंची तिरछी दिष्टी म जोय रे ।
 दश बोल वरजे तूं मारग चालतो रे, ज्युं जीव तणी हिंसा नही होय रे ॥ २ ॥
 भाषा विचारी निरवद बोलजे रे, करकस कठोर मूल मत बोल रे ।
 सावद्य भाषा मत बोले सरवथा रे, मीठो बोले तूं पेहली तोल रे ॥ ३ ॥
 दोष बयांलीस सगला टाल ने रे, असणादिक वेहरे च्याहं आहार रे ।
 पांच दोषण टाले मंडला तणा रे, ज्युं तोनें पाप न लागे लिंगार रे ॥ ४ ॥
 वस्त्र पातर लेतां मेलतां रे, जोय पूजे तू रूडी रीत रे ।
 हिंसा हुवे तिम कीजे मती रे, दया सूं राखे अंतरंग पीत रे ॥ ५ ॥
 उचार पासवणादिक नें परठतां रे, जायगां जोय ने परठे ताम रे ।
 त्यां पिण जयणा कीजें जीव नी रे, सिक्के निकेवल आतम काम रे ॥ ६ ॥
 मन वचन काया शुद्ध तूं गोपवे रे, ज्युं तोने मूल न लागे पाप रे ।
 ए आठूंई प्रवचन पाले निरमला रे, तो मिट जाय जनम मरण संताप रे ॥ ७ ॥
 जयणा सूं चाल्यां जयणा सूं बोलियां रे, जयणा सूं कीघां शुद्ध आहार रे ।
 जिण आग्या सहित करणी कीयां रे, तोने पाप न लागे मूल लिंगार रे ॥ ८ ॥
 पांच महाव्रत पाले निरमला रे, बले पाले तू पांच आचार रे ।
 पांचूं इंद्री नें वस कर राखजे रे, तेवीसूंई विषय परिनिवार रे ॥ ९ ॥
 छ काय जीवां री जयणा राखजे रे, निरभय रहिजे भय सात निवार रे ।
 मद रा थानक आठूंई परहरे रे, बले शील तणी पाले नव वाड रे ॥ १० ॥
 वीस थानक वरजे असमाधिया रे, इकवीस सबला दोषण टाल रे ।
 बावीस परिषह जीते जुगत सूं रे, सतावीस साधु रा गुण पाल रे ॥ ११ ॥
 तीसां बोलां बंधे महा मोहणी रे, तीसूंई टाले विसवावीस रे ।
 जोग संग्रह नां बोल बतीस छे रे, टाले तूं आसातना तेतीस रे ॥ १२ ॥
 आहार सेजा नें वस्त्र पातरा रे, लीजे बयांलीस दोषण टाल रे ।
 अनाचार विध टाले सरवथा रे, श्री जिण आग्या चोखी पाल रे ॥ १३ ॥
 सेवा भक्ति कीजे शुद्ध साध री रे, अणाचारी सूं रहिजे दूर रे ।
 ए दोनूं सीखामण सेंठी धारजे रे, ज्युं कर्म आठूंई हुवे चक्रचूर रे ॥ १४ ॥

प्रीति पुराणी विणसे क्रोध सू रे, मानं सू विनय तणो हुवे नास रे ।
 मित्रीपणो विणसे माया कपट सू रे, लोभ सू सर्व तणो हुवे नास रे ॥ १२ ॥
 क्रोध मानं माया नें लोभ सू रे, लागे छे निश्चे पाप कर्म रे ।
 तिण कर्मां सू भमण करे संसार में रे, पांम न सके श्री जिण धर्म रे ॥ १६ ॥
 ए च्याहंई चंडाल तणी छे चौकडी रे, तिण सू तप संजम नो हुवे नास रे ।
 इहलोक परलोक विगडे एह थी रे, त्यानें मत राखे लगता पास रे ॥ १७ ॥
 शब्द रूप गद्य रस फर्शां छे रे, राग धेख मत धरज्यो कोय रे ।
 पांचू इन्द्री ने वस कीयां थकां रे, संवर निरजर रा दोनूं होय रे ॥ १८ ॥
 शब्द रूप रस गद्य फर्शां छे रे, गमता सू राग म धरो लिंगार रे ।
 धेख मत धरज्यो भडा ऊमरे रे, ज्युं पासें भव सागर रो पार रे ॥ १९ ॥
 शरीर जीरण पडे छे तांहरो रे, केश पण्डूर पडे छे वगेख रे ।
 इन्द्री पिण हीणी पडे छे ताहरी रे, परमाद मत करतू समो एक रे ॥ २० ॥
 कपडा रो तार तूटे इता विचे रे, असंख्याता समा वहे अगाध रे ।
 एहवो सूक्ष्म समो छे काल रो रे, एक समो पिण मत करजे परमाद रे ॥ २१ ॥
 एक समा तणा परमाद में रे, सात आठ लागे पाप कर्म रे ।
 प्रदेण अनंता एकीका कर्म नां रे, त्यां कर्मां सू खोवे श्री जिण धर्म रे ॥ २२ ॥
 ज्यां लग पाचं इंद्री परवरी रे, जरा न व्यापी तोने आय रे ।
 वले देही में रोग न फेल्यो ज्या लगे रे, कर्म काटे ए अवसर मांय रे ॥ २३ ॥
 जोड कीची गणधर सीखामणी रे, केलवा सहर माहिं हित ल्याय रे ।
 समत अठारे तयांलीस में रे, पोष महिना सुध पख माय रे ॥ २४ ॥



रत्न : २५

दांन री ढालां

ढाल : १

[पूज पाणड न देता छड]

दान	थी	दलदर	दूर,	दान थी	दोलत पूर आज हो ।
				दान थी	जोत कांति हुवे डील नी जी ॥ १ ॥
दांन	सू	पामे	रिघ,	दांन सूं	पामे विरघ आज हो ।
				दांन सू	दीपे तीरथ च्यार मे जी ॥ २ ॥
भरिया		रिघ	भडार,	ते जावा	ने हुवा तैयार आज हो ।
				दांन थी	थिर लिखमी रहे तेहनी जी ॥ ३ ॥
दान	सू	रहे	मुख	सनूर,	रोग सोग रहे सहू दूर आज हो ।
				दान सू	कदेय न आवे आपदा जी ॥ ४ ॥
दान	सू	करे	परत	ससार,	दांन सू पामे भव पार आज हो ।
				दांन सूं	पामे शिव सुख सासता जी ॥ ५ ॥
दान	सू	पामे	सर्व	थोक,	दांन सूं जावे देवलोक आज हो ।
				दांन सू	जावे सिद्ध गीत पांचमी जी ॥ ६ ॥
दान	सू	टले	कर्मा	री	छोट,
					वले वावे तीथंकर गोत आज हो ।
दान	थी	पावे	नव	ही	निघांन,
					दान सुखा री खांन आज हो ।
					मन रा मनोरथ सीफे दांन थी जी ॥ ७ ॥
इसो	छे	सुपातर		दान,	नहीं जिण तिणने आसान आज हो ।
					कृपण ने दांन सुपातर दोहिलो जी ॥ ८ ॥
मिले		सुपातर		आंण,	जव मन में उजम आण आज हो ।
					अडलक दांन दीया उद्धरे जी ॥ १० ॥
भरत		नरेशर		जांण,	पाछल भव दीयो दान आज हो ।
					चक्रत्रत पदवी पांमी दांन थी जी ॥ ११ ॥
सुबाहु	कुमर	आदि		जाण,	सुखे सुखे जासी निरवाण आज हो ।
					परत संसार कीघो दान थी जी ॥ १२ ॥
दीयो		रेवती		पाक,	तिण सूं वीरजी हो गया चाक आज हो ।
					परत संसार करी ने उद्धरी जी ॥ १३ ॥
संख		नामें		राजांन,	दीयो धोवण रो दान आज हो ।
					तीथंकर हुवा जिण वावीसमां जी ॥ १४ ॥

ढाल : २

दुहा

दान शील तप भावना, ए च्याहं जिण आम्मा सहीत ।
 जे समदिष्टि जिण धर्म में, याने ओलखो रुडी रीत ॥ १ ॥
 कडुवा फल छे कुपातर दान रा, तिणसू भ्रमण करे संसार ।
 आछा फल छे सुपातर दान रा, तिणसूं पामे भव पार ॥ २ ॥
 दान सुपातर ओलख्यो, तो ही देता धूजे हाथ ।
 कुपातर दान दे हर्ष सू, आ इचरज वाली वात ॥ ३ ॥
 पाप जाणे कुपातर दान में, सुपातर दान मे जाणे छे धर्म ।
 तो ही सुपातर दान मे कृपण हुवे, तिणरे बहुत भारी छे कर्म ॥ ४ ॥
 कर्म बान्ध्या छे भव पाछिले, ते उदय हुवा छे आय ।
 ते छेते जोग मिलिया थकां, पातर दान दीयो नही जाय ॥ ५ ॥
 दातार ने कृपण तणी, ठीक पाडे वृधवान ।
 हिवे ओलखाउं कृपण भणी, सुपो सुरत दे कांन ॥ ६ ॥

ढाल

[नखदल हे नखदल]

दानान्तराय निकाचित बंध्यो, वले मोह कर्म उदय जोर । भवियण ।
 तिण कर्मा कर कृपण हुवो, त्यांन देवण रो नही कोड ॥ भवियण ।
 कृपण ने दान देणो दोहिलो ॥ १ ॥
 घर रो माल देणो तो दोहिलो, ओरा आडा अतराय ने तयार । भ० ।
 इणरा कृपणपणा रा प्रताप थी, संवलो न सुभे लिंगार ॥ भ० कृ० २ ॥
 सुपातर दान में कृपणपणो, कुपातर दान माहि दूर ।
 ते दोनूं प्रकारे हुवे दलद्री, त्या सू दुरगति नही छे दूर ॥ ३ ॥
 कृपण ने दान देता थकां, कोड देखे लेवे दानार ।
 तो सरधा घटे तिणरे दान री, करतो रडे परत संमार ॥ ४ ॥
 कोड कृपण साधा रे पातरे, जो देखे सरस आहार ।
 तो दोष अणहुंतो जाणे साध में, ऊधो सुभे तिण वार ॥ ५ ॥
 कोड दान दे उलट परिणाम सू, असणादिक सरस आहार ।
 ते निजर पाडे कृपण तणे, तो मूडो दे तुरत विगाड ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पोते बेरावणो तो जिहाइ रह्यो, देखणो पिण जिहां रह्यो तांम ।
 सरस आहार वेहख्यो काने सुणे, तो विगडे तुरंत परिणाम ॥ ७ ॥
 कृपण रो कृपणपणो, कृपण नही जाणे लिगार ।
 आपो न सूभे आपरो, हूं सूभ छूं के दातार ॥ ८ ॥
 साधु समचे निपेचे कृपणपणो, समचे करे दान रा गुण ग्राम ।
 ए दोनू वात कृपण सुणे, गमती न लागे तांम ॥ ९ ॥
 कृपण भाणे वेठ न भावे भावना, ते कृपणपणा नो प्रताप ।
 साधु विण वेहख्यां घर सूं पाछा फिरे, तो पिण मूल न करे पिछाताप ॥ १० ॥
 कदा कृपण भावे भावना, ते तों तिण वेला हरप ।
 जो ऊ साधु आया देखे वारणे, तो पड जाय मन में धडक ॥ ११ ॥
 कृपण आदरे व्रत वारणो, तोही भावना नहीं भाय ।
 हाथ सू दान देवण तणी, हूस नही मन माय ॥ १२ ॥
 कदा कृपण हाथां सूं वेंहरावतां, मन में नही हरष विशेष ।
 जो न कहे नाकारो साधु तो, साधां ऊपर करे धेष ॥ १३ ॥
 कृपण जो लोलपी हुवे, वले हुवे लोभ असमान ।
 ए तीनूई दोप निण मे हुवे, ते किण विव देवे दान ॥ १४ ॥
 जो कृपण अति मानी हुवे, तो घन खरचे जग कीर्ति काम ।
 पिण दान सुपातर देवण तणा, आघा चाले नही परिणाम ॥ १५ ॥
 तिणने राजा खोसे के घरे गिले, तसकर लगे के लाय ।
 कृपण ने कापुखप री खाटवा, माल मस्करा खाय ॥ १६ ॥
 कण कण सचो कीडी करे, ते कण तीतर चुग जाय ।
 ज्यू कृपण रो घन सचियो, यू ही जावे विललाय ॥ १७ ॥
 केड घनवत पिण कृपण हुवें, केइ निरघन हुवे दातार ।
 छते जोग मिल्यां कृपण थकी, लाहो लेणी न आवें लार ॥ १८ ॥
 कृपण दान दे तिण समे, कोड देखे अनेरो ताम ।
 ते कृपणपणो पिण आदरे, उत्तर जावे दान सू परिणाम ॥ १९ ॥
 दातार दान दे तिण समे, कोइ देखे अनेरो ताम ।
 तो दान देवां सूं तेहना, चढे घणा परिणाम ॥ २० ॥
 दातार री संगत कीयां थकां, ते पिण हुवे दातार ।
 कृपण री संगत कीयां, कृपणपणो छे तयार ॥ २१ ॥
 दान शील तप भावना, यासू सीझे आत्म अर्थ ।
 तीनां में कवडी लागे नही, दान दीयां घट जाय गर्थ ॥ २२ ॥

केइ धनवंत पिण कृपण हुवे, केइ निरघन ही हुवे दातार ।
 ते धनवंत रह गयो दरिद्री, निरघन करे परत संसार ॥ २३ ॥
 घर में धन माल छातां थकां, बले छाती जोगवाइ पांम ।
 लाहो लेणी न आवे दांन रो, ओ कृपण रो कांम ॥ २४ ॥
 आगे दांन थकी तिरिया घणा, कृपण ने कहे वात मांड ।
 तो पिण टूब न लागे तेहनें, ज्यू रेत री न हुवे खांड ॥ २५ ॥
 कृपण नें दांन देवण तणो, साधु उपदेण दे दगचाल ।
 ज्यूं लाखां प्रकारां हुवे नही, कदे गेहूं री दाल ॥ २६ ॥
 बुद्धि पाम्यां फल तत्व विचारणा, देह पाम्यां रो फल व्रत धार ।
 धन पाम्यां फल दांन सुपातरां, वाचा फल बोले हितकार ॥ २७ ॥
 मोटका नें खिम्या करणी दोहिली, कृपण नें दोहिलो दांन ।
 भर जोवन में झील दोहिलो, कायर नें दोरो चारित निधानं ॥ २८ ॥
 एक सूम नी त्रिया कहे, आज कांई पीऊ मुख दीन ।
 के कछु ही खोयो गयो, के किण ही ने दीन ॥ २९ ॥
 ना कछु ही खोयो गयो, ना किण ही नें दीन ।
 एक पाडोसी नें देतां देखने, मांहरो मुख थयो दीन ॥ ३० ॥
 जब सूमन की त्रिया कहे, थारा धन पाम्यां ने धूर ।
 थां सूं दांन देणी तो आवे नहीं, थें देख विगाड्यो कांय नूर ॥ ३१ ॥
 जब सूम कहे त्रिया भणी, मोनें न गमे दांन री वात ।
 दांन देणो तो जिहांइ रह्यो, कानें सुणियो पिण न सुहात ॥ ३२ ॥
 आवे अगाट करतो अहंकार जब, कृपणपणो गयो बहती रे पूर ।
 षय उपगम री तयारी हुवां, जब कृपणपणो छे हजूर ॥ ३३ ॥
 कांम पडे सावच्च दांन रो, जब कृपणपणा रो हुवे नास ।
 पयउपसम देखे आवतो, जब कृपणपणो छे पास ॥ ३४ ॥
 दातार नें कृपण वेहूं, रहे एकण घर माय ।
 जो दातार डरे कृगण थकी, तिण सूं दांन दीयो नही जाय ॥ ३५ ॥
 दातार नें कृपण वेहूं, रहे एकण घर मांहि ।
 जो कृपण डरे दातार थी, देतां बरजणी आवे नांहि ॥ ३६ ॥
 घर में दातार नें कृपण वेहूं, त्यारे आय ऊभा साधु वार ।
 जब दातार उठ्यो बेहरायवा, तिण पेंहली कृपण हुवो तयार ॥ ३७ ॥
 जो सगलाइ घर में कृपण हुवे, त्यारे साधु ऊभा वार ।
 जब सगलां रे हुलास बेहरावण तणी, मांडे मांहोमां मनवार ॥ ३८ ॥

कृपण रे घसको दातार नों, रखे ओ देला बहुत वेंहराय ।
 दातार रे घसको कृपण तणो, रखे ओ देला मोने अन्तराय ॥ ३६ ॥
 घर मे सगला कृपण हुवें, के सगलाइ हुवें दातार ।
 तो कजियो न लागे दांन रो, पछें किरतत्र सारु फल लार ॥ ४० ॥
 किगरे दांन देवण री मन में घणी, पिण मिलियो कृपण रो जोग ।
 ते मन री मन मांहि ले गयो, इसडो छे कृपण रो संजोग ॥ ४१ ॥
 दाता धनवंत रो निरघन हुवे, तो ही दांन देवण रो हुलास ।
 घर मे वस्तु न हुवे तेहने, तो ही करे दलाली ओरां पास ॥ ४२ ॥
 असली राजा रो राज गयां थकां, तो ही ओ राखे राज री रीत ।
 ज्यूं दातार रो घन खूटे सरवथा, तो पिण दांन देवण सूं पीत ॥ ४३ ॥
 कदे कृपण निरघन रो घनवंत हुवे, तो ही देणी न आवे दांन ।
 बले वरजे घर रां ने कहे छो मती, वात न गमे दांन री कांन ॥ ४४ ॥
 कमसल रे राज घरे थकां, तो ही शुद्ध नहीं राज रीत ।
 ज्यूं कृपण ने घन मिलियां थकां, दान देवण री नहीं पीत ॥ ४५ ॥
 एक मेह गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण वरसे नही कांय ।
 एक गाजे नही पिण वरसे घणो, एक गाजे वरसे नांय ॥ ४६ ॥
 ज्यूं एक दातार गाजे नें वरसे घणो, एक गाजे पिण नहीं छे दातार ।
 एक गाजे नही पिण दातार छे, एक न गाजे न वरसे लिगार ॥ ४७ ॥
 केइ कृपण थोथा गाजे घणा, पिण मूल नहीं दातार ।
 केइ कृपण मूल गाजे नही, दांन पिण नही देवे लिगार ॥ ४८ ॥
 केइ कृपण पिण एहवा, थोथा करे गुमान ।
 ठाला बादल ज्यूं गाजे घणा, पिण देणी नावे दांन ॥ ४९ ॥
 केइ ओरां ने देतां देखनें, मुरझ रहे मन मांय ।
 हाथ न चाले आपरो, तिण सूं वोल्यो पिण नहीं जाय ॥ ५० ॥
 कृपण दांन देवे नही, तिण उपर साधु करें घेख ।
 दोनूं बूडें छें वापडा, त्याने ग्यानी रह्या छें देख ॥ ५१ ॥
 वार वार कृपण भणी, निबेघण रो नही कांम ।
 राग घेख बवे घणो, न रहे शुद्ध परिणांम ॥ ५२ ॥
 कोइ दातार रो कृपण हुवे, कोइ कृपण रो हुवे दातार ।
 पछे कर्मा गति छे वांकडी, तिण सूं जीव न रहे एक धार ॥ ५३ ॥
 सुपातर दांन दे तेहने, वरज्यां वंघे भारी अन्तराय ।
 तिण सू दुख असाता हुवे अति घणी, चिहुंगति गोता खाय ॥ ५४ ॥
 ६०

नीठ नीठ नर भव लह्यो, इण जग में नर नार ।
 पिण कर्म जोगे कृपण हुवा, महा लोभी परले पार ॥ ५५ ॥
 कृपण नें दान दोहिलो, हुवा सत हीणा नर सूम ।
 दिने फरग फूट्तरा, हलका थोथा वूम ॥ ५६ ॥
 सूमा केरी संपदा, चोडें कुपातर खाय ।
 के रोकीले रावले, पिण हाथां सू दीयो नही जाय ॥ ५७ ॥
 सूम सावां नें आया देख नें, मूड्डो फेर दे पूठ ।
 कला करी वस्तु छिपाय दे, के कोइ बोले भूठ ॥ ५८ ॥
 घर में धन पिण दलद्री, जिके न देवे दान ।
 भार भूत धन तेहनों, कोरो करे गुमान ॥ ५९ ॥
 जीव कटे कृपण तणो, देतां लडथड धूजे हाथ ।
 कृपण काठो भाअ सारीषो, कपिला दासी वाली जात ॥ ६० ॥
 सात थोक देवे सूमडा, कृपण आडा देवे किंवाड ।
 के आडा पय दे आण ने, वेठो उत्तर देवण ने तयार ॥ ६१ ॥
 कृपण सीख दे दातार ने, कदे नहीं दीजें दान ।
 जो घर रा मिनपां ने देता देखने, तो तोडे जांसूं तांन ॥ ६२ ॥
 देखे साधु आया नें अन्न सूभूतो, देखे वेहरावूं एकण वार ।
 भाले कुडछी वल्लतो थको, वले पाछा नहीं आवे दुजी वार ॥ ६३ ॥
 कृपण करे कदागरो, करे सावां ने भांड ।
 मांहरो असूभूतो आहार ले गया, कहे काचा पांणी कने मांड ॥ ६४ ॥
 दातार ने दान देता देख ने, मूड्डो दे कुमलाय ।
 पारका दुखां हुवे दुवल्लो, भांणे वेठो रोटी नहीं खाय ॥ ६५ ॥
 कृपण रो धन कारमों, धर्यो रहे घर मांय ।
 लेखे क्यूं ही लागे नहीं, धन पापी रो परले जाय ॥ ६६ ॥
 कीडी सिंचे कहे लोक में, तेहनो तीतर खाय ।
 कृपण कीडी सारिषो, कहे लोक दुनियां रे मांय ॥ ६७ ॥
 छाती फाटें सूम री, जो देता देखे दान ।
 दान तणा गुण वरणवे, तो कृपण कदे न मांडे कान ॥ ६८ ॥
 घणो उपदेग दे दान रो, कृपण नें किरपाल ।
 लाखां प्रकारां न हुवे, कदे गेहुं तणी दाल ॥ ६९ ॥
 मूल कदेही मानें नहीं, कृपण केरी वात ।
 कृपण आयां कोइ हरये नहीं, जिम अमावस री रात ॥ ७० ॥

कदे सूम री सोभा हुवे नही, देखो सहु संसार ।
 जात न्यात ने लोक में, सहु देखलो नर नार ॥ ७१ ॥
 लाहो मिनष जन्म तणो, कृपण न लीनो कोय ।
 धन माल सहु मेल नें, चाल्यो कलदर होय ॥ ७२ ॥
 परलोके पाप परगटें, भरे नेणा भरे तीर ।
 हाय में दांन दीयो नही, अब कुण वटावे पीड ॥ ७३ ॥
 कृपण रांक ते बापडा, बाधी पूर्व भव अतराय ।
 तिण कारण तिण जीव सू, दांन दीयो नही जाय ॥ ७४ ॥
 कृपण ओलखणी प्रगट करी, कहिज्यो अवसर देख ।
 जो कृपण नें सुणावोला माड ने, तो तुरत जागोला घेख ॥ ७५ ॥
 सवत अठारे वयांलीस मे, कार्तिक मास मभार ।
 कृपण ने ओलखावीयो, सरीयारी सहर मभार ॥ ७६ ॥



रत्न : २६

वैराग री ढालां

ढलल : १

[श्री गलखवर गखधर सुनलवर ने कहें रे]

वृक्ष तणो ज्यूं पाको पानडो रे, ते पडतां कांय न लागे वार रे ।
ज्यूं तूटे आउखो मरतां मलनष नों रे, जब कोइ न सके राखण हार रे ॥
ढील मत करज्यो चतुरां धर्म नी रे ॥ १ ॥

मात पलतादलक ऊभा मेलने रे, पर भव में जासी एकलडो आप रे ।
वलछडलडयां ने पाछो मललणो दोहललो रे, कुण गतल में जासी मा वेडो वाप रे ॥ ढी० २ ॥
जीवडो तो अल्लुभ रह्यो माया भभे रे, वले छी मात पलतादलक मांय रे ।
तांगा वेजा तलणरे लागे रह्या रे, पलण आसा अलधा छोडी जाय रे ॥ ३ ॥
जीव काया छोडे तलण अवसरे रे, चलत्तवे मन माहे अनेक जंजाल रे ।
मूहे धन जोवन रो लाहो लीयो नहीं रे, इम वलल वलल करतो कर जाये काल रे ॥ ॡ ॥
जीवडो तो जांणे केइ दलन थलर रूह रे, पलण मरण आगे नहीं लागें जोर रे ।
जन्म मरण री सगला जगत में रे, मुदे तो आहलज मोटी खोड रे ॥ ॡ ॥
काया माया सगली छें कारमी रे, कारमो छे सगलो परलवार रे ।
ते मलल मलल वललावे वादल नी परे रे, एहवो छे सगलो अथलर संसार रे ॥ ॢ ॥
धन गडीयो घर माहे लेंणो लोक में रे, जांणे पुत्रादलक ने देऊं सर्व बताय रे ।
जीभ थकी जब न आवे वोलणी रे, ते पलण रह गइ मन री मन मांय रे ॥ ॣ ॥
कांइ कीधो कांइ करणो अछे रे, घर हाटादलक वलणज व्यापार रे ।
वले माया मेलूं मेलू करतो फलरे रे, पलण काल अण चलत्यो न्हांखे मार रे ॥ ॡ ॥
घर रा कारज पूरा कर नहीं सके रे, अध बीच छोड चलया सहू कोय रे ।
घवा माहल कललया रहे सदा रे, ते गया नलरर्थक मानव भव खोय रे ॥ ॥ ॥
मलनष तणो भव छे अतल दोहललो रे, उतकधो पामे अनते काल रे ।
ते अल्प सुखा रे कारण पड्यां रे, हारे मानव भव मूरख बाल रे ॥ १० ॥
एहवो अथलर आउखो जांण ने रे, करो जलणेश्वर भाव्यो धर्म रे ।
जो शुद्ध गतल जावा री छे चावनां रे, तो दलन दलन पतला पाडो कर्म रे ॥ ११ ॥
हू कहल कहल नें कलत्तरो कहूं रे, संसार छे सगलो अतत असार रे ।
ग्यान दरसण चारलत तप वलनां रे, सार म जांणो मूल ललगार रे ॥ १२ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बैराग री ढालां : ढाल २

बूढला रा पुन्य परवास्था, तिणसूं वचन जाए मास्था ।
 जब बूढलो मन में खीजे, बेटा बहु मूल न भीजे ॥ ६ ॥
 बूढा रे बालपणा रा हेवा, जांणे खावूं मिधान नें मेवा ।
 मन गमता भोजन खावूं, लाडू पेडा जलेबी मंगावूं ॥ १० ॥
 जन्हों सीरो मगद वले खाजा, एहवा भोजन भावे ताजा ।
 जांणे नरमसी खीचडी खावूं, दही दूध ने दूरो मगावूं ॥ ११ ॥
 बूढा ने आछा भोजन भावे, पुन्य विनां कहो कुण खवावे ।
 ओ तो स्वारथ किणरे न आवे, तिण सूं घर रां नें मूल न सुहावे ॥ १२ ॥
 घर सूं सूखी लूखी रोटी आवे, ते तों दातां सूं खाइ न जावे ।
 जब बूढो हुवो दिलगीर, काढे आंख्यां मां सूं नीर ॥ १३ ॥
 जां की बोली पिण न सुहावे, मीठा भोजन कुण खवावे ।
 बूढे हाथां सूं द्रव्य कमाया, बेटा दाब रह्या धन माया ॥ १४ ॥
 जब ओ कर कर लोकां ने भेला, करे बेटा बहुं नी हेला ।
 म्हारा कहा में को नही चाले, पूरो घान खावानें न घालें ॥ १५ ॥
 जब लोक हसैं पीटें ताल्यां, बोले बेटा बहु नें गाल्यां ।
 कहे बेटा बहु नें एम, डोकरा नें दुख दो केम ॥ १६ ॥
 केइ केहवा लगा एम, थे तो मत हुवो लूण हराम ।
 जब बेटा बहु इम बोले, डोकरा रा परदा खोले ॥ १७ ॥
 ओ तों लोका सूं एकठ मांडे, म्हाने यूं ही अनाबी भांडे ।
 म्हे तो आछा भोजन नित घालां, इणरे केडें सगला चालां ॥ १८ ॥
 इणरे पीत मुरीद न कांई, ओ तो यूं ही करे विकलाई ।
 इणरी गइ अकल विग्यांनो, इणरी वात कोइ मत मानो ॥ १९ ॥
 बूढा रो कुण उठे बेली, उणरी वात गइ सर्व ठेली ।
 बूढा रा पुन्य पड गया पूरा, तिण सूं सेंण सगा हुवा दूरा ॥ २० ॥
 निज नारी री आहिज रीत, बूढा सूं न घरे प्रीत ।
 वले ओर सगा सेंण सारा, बूढा सूं होय जाय न्यारा ॥ २१ ॥
 कदे धी गुरू सूंघा होय जात, जब वाछे बूढा री घात ।
 घर रां तो मांड्यो अति आंचो, ओ तो मरे न छोडे मांचो ॥ २२ ॥
 बाल जवान तो मर जावे, इण बूढा ने मरण न आवे ।
 ओ तो नित नवो होय रह्यो सेंठो, म्हारे वारणे रिणाइ ज्यूं वेठो ॥ २३ ॥
 म्हे तो सगला हुवां छां काया, इण डोकरे बोहत सताया ।
 गगनी नाई नां पर गया विरखो, ओ तों अजे न मुंवो जरखो ॥

म्हारे उधडी पाप री खानो, इण वूडा मूं पडियो पातो ।
 एहवा वचन वूडा नें मुणावे, जव वूडो अनंत दुःख पावे ॥ २१ ॥
 वूडे कर्म कीया था जाडा, ते तों आया कुवेलां मे आडा ।
 ते भोगवतां दुख पावे, मुमता विण पडियो सीदावे ॥ २२ ॥
 वूडा री विपत अनेक, पूरी कहणी नावें वगेव ।
 थोडीमी कही वांनगी मान, देखो अखरु मान्यात ॥ २३ ॥
 इणरी मुणज्यो लोक लुगाड, एहवी विपत वूडापे आई ।
 जो ऊ पेंहली धर्म करतों, एहवी विपत मे वत्राने पडतो ॥ २४ ॥
 वूडो पेंहलां वूडो मद छकियो, जिण धर्म ओल्लव नहीं सकियो ।
 हिवे रह्या आरत व्यान ध्याय, तिण सू धर्म कीयो किम जाय ॥ २५ ॥
 वूडे पेंहलां कीवी कूडी मेखी, गह्यो धर्म तपो नित वेखी ।
 करतो सानु थावकां री हेला, हिवे आय पडी छे वेलां ॥ २६ ॥
 पेंहलां कीवी न्यातीलां ठेले, जिण धर्म नें जाणियो नेले ।
 हिवें न्यातीला आडा न आवे, जव आप पड्यो पिछ्यावे ॥ २७ ॥
 मोह माया में रह्यो कलियो, दुरगति नों टांको भलियां ।
 जोवन हुंनो ते जीवो गमाय, हिवे कारी न लागे कांय ॥ २८ ॥
 पछें मरनें माठी गनि जावे, चिहुंगति में गोता खावे ।
 पाप आगे न चाले जोरो, पाछो तर भव पावणो वगे ॥ २९ ॥
 केइ वूडा घर रां नें इगवे, लड भगड नें आछो खावे ।
 वले कर कर लोकां नें साखी, वेटा वहु ने भांडे अन्हाखी ॥ ३० ॥
 वले करे खीटोर खोराई, घर गं नें घणो दुखदाड ।
 केइ वूडा छे एहवा पापी, रह्या घर गं नें नित संतापी ॥ ३१ ॥
 केइ वूडा नूवा हूवे जोग, वेटा वहु मिलिया अजोग ।
 कदा आछी वस्तु वूडो खावे, तो उवे खूगे घाली घुक्खावे ॥ ३२ ॥
 कहे तूं तो हुवो गटकायो, म्हारे वन नहीं घर मांयो ।
 मूवो वेडो रोटी क्यूं न खावे, म्हानें कांय अन्हाखी मत्तावे ॥ ३३ ॥
 जव वूडो मंके लाजां मरतो, वारे वचन न काडे टग्नो ।
 वूडे कीयो विचारज ऊंडो, गखे दीमूं लोकां में भूंडा ॥ ३४ ॥
 एनो कर रह्या फेल फितूरो, म्हारे घोलां मे धालें धरो ।
 यांनं छेडवियां नहीं वाकी, रखे जावे वूडापे नाकी ॥ ३५ ॥
 म्हारो काण कुख थो भारी, रखे लौकिक विणडे म्हानें ।
 इम जांणी वूडे मून सामी, जाण्यो गखूं वूडाने वाजी ॥ ४० ॥

जो न हुवे दोयां मांहे लजिया, तिणरा घर मांसूं न मिटे कजिया ।
 कुड कुड काढे राता डोला, नीकले नित सांग बनोला ॥ ४१ ॥
 वात करतां माथे सल चाढे, नितका दुख में दिन काढे ।
 देखो नीठ मानव भव पायो, राग घेख में यूंही गमायो ॥ ४२ ॥
 संसार नां सगा सर्व काचा, त्यांने जांण रह्या मूढ साचा ।
 तिण री वृधवत करज्यो पिछांणो, यांने जांणज्यो वेंरी समाणो ॥ ४३ ॥
 केइ वूढा रे पुन्य रहे बाकी, घर रा कार न लोपे जांकी ।
 जिण रे पूर्व पुन्य छे भारी, तिणरी मरजादा राखे नारी ॥ ४४ ॥
 जिण पूर्व पुन्य उपाया, त्यांरे हाथ जोड रे जाया ।
 जो ऊ थोडीसी वस्तु मंगावे, तो उवे थाल भरी वेगा ल्यावे ॥ ४५ ॥
 सर्व जी जी कारे बतलावे, वले वूढा को हुकम चलावे ।
 मन गमता भोजन खवावे, सारां पेहली वूढा ने जीमावे ॥ ४६ ॥
 जिण पूरी कीची पुन्याई, वेदा बहु मिल्या सुखदाई ।
 हडा हडा वस्त्र पहरावें, सुख सेज्या माहे पोढावे ॥ ४७ ॥
 वले कांण कुख राखे भारी, सगला रहे आगन्या कारी ।
 देव परमेश्वर ज्यूं पूजे, करडी नजर कीया सर्व घूजे ॥ ४८ ॥
 एहवा सुख में वूढो रति पावे, वले रही लोकिक लोका मे ।
 वूढो एहवी साता सुख पाय, घणो मगन हुवो मन मांय ॥ ४९ ॥
 एतो सारा मिल्या सुखदाय, पिण त्राण गरण नही थाय ।
 एतो इण भव केडे चाले, परभव जाता साथे न हाले ॥ ५० ॥
 साय आवे पुन्य नें पाप, सुख दुख भोगवे आपोआप ।
 इम सांमल ने नर नारी, करज्यो मन मांहे विचारी ॥ ५१ ॥
 एहवा सुख तो सगलाइ फीका, त्यांने कदे म जांणो नीका ।
 ते तो थोडा मांहे विललावे, सुपता जिम आल माल होय जावे ॥ ५२ ॥
 त्यामे कदे म जांणज्यो सार, ते तो मिलिया अनती वार ।
 एहवा सुख ऊपर निजर न दीजे, करणी कर लाहो लीजे ॥ ५३ ॥
 आचारंग रो ले अनुसारो, कच्चो वूढा तणो विस्तारो ।
 इम जाणी करो जिण घरम, ज्यूं पामो मुगत सुख परम ॥ ५४ ॥
 संवत अठारे चोतीसे वरस, अपाढ विद तिथ इग्यारस ।
 सनीसर वार विचारो, जोड किची सरियारी मफारो ॥ ५५ ॥

ढाल : ३

[इग धुर कंठर कोई न नेकी]

देखो नारी काँहें में खूना, लोक फिरे सहू हा हा हूँ।
 जल थल देव प्रकेशां जावे, तो पिय नारी मुख कर आवे ॥ १ ॥
 जग नुंजग दया री हूँ, खूँ खूँ वन ल्यावूँ लूँ।
 अया डाव अनेक उमावे, पिय पूर्व पुण्य हुवे ते पावे ॥ २ ॥
 किग उहां देठे कीर्षीं सगाइ, पिय पाछा घर न सक्या आइ।
 किग नें विचे आंइज नाखा, देखो नर नव यूहिइ हाखा ॥ ३ ॥
 केइ आय परपीव्या नारी, बन हूँ वले हूँ उदायी।
 किग ही द्रव्य इहाइज कनाया, पिय निरचे छे कानी नाय ॥ ४ ॥
 खांग नांग छे कर्म बलाय, पहूलां स्वाद विगडे जाय।
 जूँ विप चटिया नें नीन ही नावे, पांव रोपी नें दाव मुहवे ॥ ५ ॥
 एसा कानां मुख सहू फीका, अंत लागु छे निरचे जी दा।
 इंरी कइं नुद नहीं होवे, यूँ ही मूख कमारो हंडे ॥ ६ ॥
 नरय ननो भय न मिट्यो जेय, कायूँ मुख भुवतेयो नेय।
 मोह्यो दिपे नार नो दास, कुग कुग कान करावे जग ॥ ७ ॥
 फिर फिर वन्तु धयो जो आंणी, तो पिय आगल नार रोषानी।
 हूँ तुक्त केठें आगी फोक, काइ न आंग नयिय रोके ॥ ८ ॥
 गेहना गांठा मुक्त नें जोइजे, तुक्त श्री कारज कोइ न मीनें।
 किग हूँपे नें मुक्त नें परणी, घर दिन चाल्सी थारी करणी ॥ ९ ॥
 हूँतो कर्म सहू घर नो कान, तूँ जाय वसें बीजी जग।
 ए तुक्त नें किग बात सीखाइ, घर री चित न जगिं काई ॥ १० ॥
 आज तो जोइजे घर में हांडी, चूरो भांज गयो घर मांडी।
 ईवग री भागी गई खूटी, बांन गयो नाचा री तूटी ॥ ११ ॥
 बांन पीसण जोगी नहीं बरटी, बांण आप मुक्त गेहूँ बरटी।
 नाच दाल घृत ल्यावग पाछो, तुक्त नें नावे आछो आछो ॥ १२ ॥
 वाञ्छ कूंकुं डागी हार, गेहना आंग नकुं निगार।
 टीकी राखडी तेल मुंगव, पेह आरसी मंड मंडेर ॥ १३ ॥
 मेल्य बरय बोई नें ल्याव, जूता जेय हूँ नव करव।
 मूई मूत्र बीजगो छाज, जोडी आंग मुक्त पहरवा काज ॥ १४ ॥

साजी लूण हीग मिरच वेसवार, खुवारो बुहारी दातणा चार ।
 ऊंखल मूसल आछी गाय, कुडछी डोयला छुरी मोलाय ॥ १५ ॥
 ढहिया घर तूं नवा कराय, डावडा रमवा दडी वणाय ।
 गुडी गुली तीर घुणी नें हटरी, टोपी भगो हण भलियो कुलडी ॥ १६ ॥
 एता ल्याव सताव संभाल, कानां हेटे मती फुजाल ।
 अजे न ल्यायो कदकी कूकी, थारी अकल गइ छे चूकी ॥ १७ ॥
 मोर मसल थाकी कहे कांमण, वेटो आज छे आंमण दूमण ।
 वेस तूं इण ने खोले लेइ, कांम कर न सकूं हूं वेई ॥ १८ ॥
 दोहिली हुवे नें ए में जायो, हिवें तूं पालीस कांय उपायो ।
 सवा नव मास वूही हूं भार, तूं दोरो लेतो खिणवार ॥ १९ ॥
 क्रिण ही काज रीसाणी नार, मनावे पगे लग तिवार ।
 डावा पगरी दे सिर लात, तो पिण मूरख तजे न तात ॥ २० ॥
 पाप तणे वस पडियो समणी, रुदन करावे छे वलि रमणी ।
 भेष लेइ केइ विषें विगूता, ते पिण यूं घर ने भार जूता ॥ २१ ॥
 भांत भांत रा सुख मधु विंद, आगे नरक तणा छिद भिंद ।
 इण परे रोलवे पुरुष ने नारी, नीचा काम करावे भारी ॥ २२ ॥
 दास तणी पर आगे ध्यावे, तो पिण विरत न काचित आवे ।
 जीव तो थोडा सुखां ने काजे, गुलामपणो करतो नही लाजे ॥ २३ ॥
 एहवा दुख नें सुख कर माने, यूंही बूडा जाय अग्यानें ।
 भटके तलफे सुख के ताई, ज्यू ज्यूं अलूम पडे दुख मांही ॥ २४ ॥
 नर्चित होय बेठा नर अंघ, वाघे पर घर केरा वघ ।
 परणीजे जाणे घर मांड्या, इसडा घर अनंता छंइया ॥ २५ ॥
 तो ही तृप्त न हवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
 घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग माहे तिरसी ॥ २६ ॥
 केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख डाले ।
 देव थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी ॥ २७ ॥
 नरक दिखावण दीवी नार, मोप जावण ने आडी किवाड ।
 सुयगडायांग तडुल वियालिए साख, तिण मे वीर गया छे भाख ॥ २८ ॥
 स्त्री दोष जिण कहा अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूंही एक ।
 बुरो मती मानें नर नारी, निश्चे देखो ग्यांन विचारी ॥ २९ ॥
 छेदाणा जस हाथ ने पाय, कांप्या कांन ने नांक कहाय ।
 ते पिण सो वरसां नी नारी, दूर तजे रहे ब्रह्मचारी ॥ ३० ॥

विषे दिष्टी वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी ।
 सूर्य साह्यो जोयां घटें तेज, ज्युं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥ ३१ ॥
 उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण बास ।
 तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥ ३२ ॥
 इम जाणो रहे साधु एकंत, आपनें हित वांछे ते संत ।
 शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनो जाणो सुगत नजीक ॥ ३३ ॥



ढलल : ॡ

[तलरल हल डुरतख डलहशी]

स्वलरथ सहु नल वलल हल, स्वलरथ जग डंडलण । चतुरनर ।
उचड डलवल करल घणल, डुरलसुत डलग डुरडलण ॥ चतुरनर ॥
स्वलरथ जग डंडलण* ॥ १ ॥

डुलहरलडलं सुं डुतुरी रलकल रहल, कुडलं लग वलवघ डणल आवल डलल ।
डुतललव डुरल तुडलं लुगल, तुडलंनलं दलडलं हुवल अतंत कुडलल ॥ २ ॥

कल डुलहरलडलं हलड डलड दरलडुी, डुतुरी नलं घर तलकल दलख ।
कल डलंगल कलडक डुतुरी कनल, तल तुरत कलगल तलण नल धलख ॥ ३ ॥

डुतुर नलं डलल डुलडलं करल, सुं डुल सलरुल घर घन डलल ।
तल गरदुडलडणल डुतुरल डणुी, डुतुर कलणल डुतुरल नल सलल ॥ ॡ ॥

घर रल कलड नल आवल सरुवथल, नलकडुल डुलडुल खलवल घलन ।
कडुल गडतुल नल ललगल कलहनल, खलरुल ललगल वलष सडलन ॥ ॡ ॥



*डुलह आंकडुी डुरतुडलक गलथल कल अतुत डुल हल ।

रत्न : २७

जुआ री ढाल

दुहा

विसन सातोंई छे अति बुरा, त्यानों छोडे उत्तम जीव ।
 त्यानों सेवे भारीकर्मा जीवडा, त्यां दीधी नरक री नींव ॥ १ ॥
 प्रथम विसन जूवा तणो, तिण खेल्यां बंधे छे कर्म ।
 मतिभ्रष्ट हुवे तेहथी, बले खाय देवे जिण धर्म ॥ २ ॥
 जूवे रमे ते मानवी, गया जमारो हार ।
 इह लोक परलोक विगाड ने, गया नगर निगोद मझार ॥ ३ ॥
 तिण जूवा में अक्वण घणा, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोडा सा परगट कर्हं, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[२ भविष्य सेवो रे साध सघाणा]

जूवे रमे त्यारो रहे माठो ध्यान, माठी लेख्या नें माठा परिणाम ।
 बले माठाइ जोग ने माठा अध्यवसाय, बले चित्त न रहे एक ठाम रे । भविष्यण ।
 जूवो मत रमजो कोइ, इण जूवा थी आछो न होइ रे । भविष्यण ।
 हीये विमासी जोइ ॥ १ ॥
 जूवे रमे तिणरे भूठ ने चोरी, दोनूं लारे लागी रहे नित । भ० ।
 थोडा में दरिद्री होय जावे, थोडा में हार दें सर्व वित्त रे ॥ भ० ही० २ ॥
 बले धसको निरंतर न मिटे तिणरो, बले न मिटें सोग संताप ।
 बले बिलखे मूढे फिरे लोकां में, इन जूवा तणे परताप रे ॥ ३ ॥
 जुवारी रा घर मे धन माल हुवे तो, थोडा में हार दें ततकालो ।
 बले लोका री माथे उचारो ल्यावे, मांग्यां काठें तुरत देवालो रे ॥ ४ ॥
 लोक आय मांग्यां माथो नीचे घाले, तिण सूं पाछो तो देंगी न थावे ।
 कोइ लाजा मरतो कूवो वावडी ताके, केठ परदेशां उट जावे रे ॥ ५ ॥
 जूवे रमें जुवारी तिणरो, घर रा पिण न करे विश्रार ।
 जाणे रखे घर मासू चोर लंजावे, रमे नीदीं तणां करे नास रे ॥ ६ ॥
 तिणरा सगा संवधी नें मंत्री न्यातीला, त्यारे घरं जुवारी आवे ।
 जब त्यारे पिण धमकी पछे तिणरो, रमें कायक करे लंजावे रे ॥ ७ ॥
 मात पिता मासू नें गुगगा, बले रंण मायां के माहि ।
 बले सजन नें अयजन गाग में, जुवारी श्री परतीन माहि रे ॥ ८ ॥

कोइ जुवारी नें बेटी देतो सके, इणरे जूवा रो कलंक लागो ।
 इण नें बेटी परणाए कयाने विगोऊं, ओ तों धन खोय हुंतो दिसे नामो रे ॥ ९ ॥
 कोइ जुवारी ने व्याज देवे छे, कोइ जूवारी ने देवे उवारी ।
 कोइ जुवारी सूं सीर मांडे छे, यां तीनां रो हुवे विगाडो रे ॥ १० ॥
 कोइ जुवारी री संगत करे छे, ते पिण जुवारी होवे ।
 ते पिण धन माल खोय ने होय जाय रीतो, पछे छाने - छानें घणो रोवे रे ॥ ११ ॥
 जुवारी री संगत कीधी ते बोले, हूं इण री संग सू गाढो वूडो ।
 घर में धन माल हुंतो ते सारोई हाखो, वले दीठो लोकां मे भूंडो रे ॥ १२ ॥
 जुवारी जूवे रमे ते व्यसनी, बाप दादा ने मेंहणी बोलावे ।
 उवे जुवारी तणी बात कांनो सुणे जब, त्यां सूं पिण पूरो बोल्यो न जावे रे ॥ १३ ॥
 जुवारी रा बेटा नें पोता सुधी, मेंहणी बोलावे लोकां माहि ।
 इण रो वाप दादो जुवारी हुंतो, जब ए नीचो माथो घाले ताहि रे ॥ १४ ॥
 जुवारी रो आबरू घटे लोका मे, वले कांण कुख जावक घट जावे ।
 वले जुवारी री संगत करे छे, तिण रा पिण विसवा हीणा थावे रे ॥ १५ ॥
 वले जुवारी री स्त्री जूवा थी, दुखे दुखे काढे दिन रात ।
 इण भरतार लारे आयां पछे मोने, कदे मुख न हुवो तिलमात रे ॥ १६ ॥
 वले जुवारी रा माता ने पिता, जुवारी थी सारा हुवा काया ।
 ओ पापी म्हारे घर आय ऊपनो, इण निठाय दीनी म्हारी माया रे ॥ १७ ॥
 जुवारी रे कुटंब कबीलो, सगलाइ दुखिया थाय ।
 जुवारी सारो धन हार जावे जब, न्यातीला पिण सीदावें ताय रे ॥ १८ ॥
 जुवारी जूवे रमतो हार जावे, सारो धन स्त्री ने माल ।
 पछे भीख भमतो फिरे लोकां में, रोतां रा पिण पडे हवाल रे ॥ १९ ॥
 जुवारी रे घर कोइ थापण मेले, तिण ने जुवारी हार देवे ।
 तो पाछो आय मांग्यां कठा सूं देवे, जब ऊ घणा धमेडा लेवे रे ॥ २० ॥
 जुवारी जूवे रमें तिण काले, तिणनें देवे कोइ उवारी ।
 ते पिण ठूजें तीजे करण जुवारी, ते जुवारियां रो सिरदारो रे ॥ २१ ॥
 जूवा रो पट्टो कराय सही कराई, ते सगला जूवा तणो अविकारी ।
 तिण सगला जुवाख्यां रे छूट कराई, तिण रे नरक तणी छे तयारी रे ॥ २२ ॥
 केइ चोपड रमे छे गरथ अडे नें, ते पिण निरुचें जुवारी साह्यात ।
 मार. मार करे मुख बोले रीणोइ, तिण री पिण विगडी छे बात रे ॥ २३ ॥
 भेला करे पासो ने सारी, मुख बोले मार मारी ।
 चोपड रमें कर्म वांध्या भारी, ते हुवा नरक ने तयारी रे ॥ २४ ॥

जूवे रमे केइ माल अडे ने, हारी ने वले रोवे ।
 इण भव पर भव मे दुख पावे, दोर्नई जन्म विगोवे रे ॥ २५ ॥
 जिण गांव में जुवारी घणा हुवे ते, गांव री पेट गमावे ।
 भला भला मिनष छे तिण गांम माहे, ते सगलां ने भूडा दिखावे रे ॥ २६ ॥
 जुवारी गांम रा सगला लोकां नें, देगां देशां में मेंहणी बोलावे ।
 जो जुवारी सगला ने कहावे, गांम री हलकी घणी लगावे रे ॥ २७ ॥
 जान बरात पर गांम में जाये, जो तिण माहें जुवारी होवे ।
 तठे पिण तिण गांम री हलकी लगावे, जानियां रो पिण आबरू खोवे रे ॥ २८ ॥
 जुवारी जूवे रमें धन माल हारे, तिणने मुख मुख दे फिटकारो ।
 शोभा तो लोकां मे कठेय न दीसे, धिग धिग छे तिण रो जमवारो रे ॥ २९ ॥
 जूवे रमें तिण रे उतकष्टे भांगे, विसन सातोई आवे ।
 आगला नें पाछला न्यातीलां ने, जुवारी सगला ने लजावे रे ॥ ३० ॥
 नल राजा तो जूवो रमे ने, सर्व राज ने स्त्री हारी ।
 देव नगर साराइ छोडी ने, एकलो चाल्यो मूंह विगाडी रे ॥ ३१ ॥
 पाचोई पांडव जूवे रमें ने, हाख्यो हथनापुर नों राज ।
 देग प्रवेशा भमता फिरिया, त्यां गमाई लोकां मे लाज रे ॥ ३२ ॥
 आगे वडा वडा राजा अनेक हुवा ज्यां, जूवा थी राज हाख्यो ।
 भीख मंगता हुवा भिख्यारी, त्यां जीतव जनम बिगाड्यो रे ॥ ३३ ॥
 जूवे रमे जुवारी तिण रे, अजक रहे दिन रात ।
 ताणा वेजा लगा रहे चित्त में, तिण रा दुख माहे दिन जात रे ॥ ३४ ॥
 पछे जुवारी मरने माठी गति जावे, तिहां पावे दुख अनंत ।
 नरक निगोद मे भीकां खावे, इम भाख्यो छे श्री भगवंत रे ॥ ३५ ॥
 साहुकार रो वेटो जूवे रमें नित्त को, साहुकार सू वरजणी नावे ।
 जाण्यो वरजू तो वेटो अपघात करने, रखे अकाले मर जावे रे ॥ ३६ ॥
 रसे रसे वेटा ने समझायो घणो, पिण वेटा सू जूवो छोडणी नावें ।
 जब साहुकार वेटा थी डरियो, रखे सारो घन जुवा मे गमावे रे ॥ ३७ ॥
 म्हारो कह्यो वेटो मूल न माने, इणने छेडवूं तो हूणो हूणों ।
 ओ तो कपूत उठ्यो म्हारा पाप रे उदे, करतो दीसे छे घर रो पूणो रे ॥ ३८ ॥
 इतले साहुकार मांदो पड्यो जब, वेटा ने कहे एकंत बोलाय ।
 मो काल कीयां पछे हू कहुं ज्यू कीजे, ज्यू तोने सुख थाय रे ॥ ३९ ॥
 म्हारा खरच ऊमर देगां देशां रा, जूवास्थां ने लीजे बोलाय ।
 खरच कीया पछे तूं पाट वैसे जब, जुवास्थां कने टीको कढाय रे ॥ ४० ॥

जुवाख्यां में बड़ा जुवारी पास, तिण कनें तूं टीको कढाय ।
 तूं चोडें कहीजे न्यातीलां सारां नें, मोनें तात कह्यो छें बोलाय रे ॥ ४१ ॥
 इम कही नें काळ साहुकार कीयो, जूवो छोडवण रो कीयो उपाय ।
 तिणरी वेदा नें समझ पडी नहीं काई, पिण न्यानूं दीयो समझाय रे ॥ ४२ ॥
 हिंवे साहुकार रे- खरच रे ऊमर, जुवागी लिया अनेक बोलाय ।
 भारी खरच करे सारी न्यात जीमाए, पछे जुवारी सर्व जीमाय रे ॥ ४३ ॥
 साहुकार रो वेठो पाट वेठो जव, न्यातीलां नें कह्यो संभलाय ।
 म्हारे पिता कह्यो तूं पाट वेमे जव, जुवारी आगें टीको कढाय रे ॥ ४४ ॥
 इम न्यातीलां रा कानां में काढे, सारा जुवारियां नें बोलाय ।
 यां में पक्का में पक्को जुवारी हुवे ते, म्हारे टीको काडो आय रे ।
 भायां मत करो जेज लियार ॥ ४५ ॥
 एक कहे हूं पक्को जुवारी, जुवारी मांहि पक्का सूं पक्को ।
 म्हारे धन माल हंतो ते सगलोई हाख्यो, होय वेठो छूं फक्रम पक्को रे ।
 टीको तो हूं देमूं ॥ ४६ ॥
 दूजो कहे हूं थां थकी पक्को जुवारी, जुवाख्यां मांहि दडो जुवारी ।
 म्हें पिण धन माल हंतो ते सगलोई हाख्यो, हाट हवेली म्हें अतिकी हारी रे ॥ ४७ ॥
 तीजो जुवारी कहे थां थकी म्हारो, मुणो थें सगलोई ढालो ।
 हाट हवेली म्हें पिण हाख्यो, बले म्हें अतिको काड्यो दिवालो रे ॥ ४८ ॥
 चोयो जुवारी कहे हूं थां थकी पक्को, थानें खर नहीं छे म्हारी ।
 थें हाख्यो छे ते म्हें पिण हाख्यो, थां सूं स्त्री म्हें अतिकी हारी रे ॥ ४९ ॥
 पांचमों कहे हूं थां सूं पक्को जुवारी, मोनें गांव वारे काड्यो कूटो ।
 थें हाख्यो छे ते म्हें पिण हाख्यो, अविकाड रो ठिकाणो छूटो रे ॥ ५० ॥
 छठो कहे थां थकी पक्को जुवारी, थें हाख्यो ते म्हें पिण हाख्यो ।
 मोनें गवे चढाय गांव वारे काड्यो, बले ऊमर जूनां सूं माख्यो रे ॥ ५१ ॥
 सातमों कहे हूं थां थो पक्को जुवारी, थां में वीती ते सारी मो मांयो ।
 थानें संका हुवे तो निजरां देखल्यो, म्हें हाय अतिकेरो कढायो रे ॥ ५२ ॥
 आठमों कहे हूं सारां सिरे जुवारी, तिणरो लेखो तूं मुण रे भाया ।
 थां सगलां में वीतीं ते मो में वीतीं, म्हें हाय ने नाक दोनूं कढायो रे ॥ ५३ ॥
 जुवाख्यां रे मांहोमांहि वाड लागो, त्यांरो देखी माहोमां तांण ।
 जव साहुकार तणे वेठो डरियो, जुवारी लाग जहर समांण रे ॥ ५४ ॥
 तिण जुवारी आगे टीको नहीं कढायो, त्यांनें काड दीया घर वारो ।
 जूवो रमवो तिण जावक छोड्यो, हीया में कीयो शुद्ध विचारो रे ॥ ५५ ॥

म्हारे बाप मरते थके कह्यो थो मोनें, तूं जुवारी आगे टीको कढाय ।
 ते तो एकत म्हारो जूवो छोडावण, त्यां इण विघ मोनें समभाय रे ॥ ५६ ॥
 जो हूइज वले जूवो रमू, इण सारिखो हूं पिण थाऊं ।
 तो जीतव जन्म विगाहूं म्हारो, घन माल पिण सगलो गमाऊं रे ॥ ५७ ॥
 जुवारी मर ने माठी गति जावे, पावे दुख अनंत ।
 नरक निगोद मे भीका खावे, इम भाख्यो श्री भगवंत रे ॥ ५८ ॥
 कही-कही ने कितरो एक कहूं, जूवा मांहे अवगुण अनेक ।
 इम सांभल ने उत्तम नर नारी, जूवा नें छोडो आण ववेक रे ॥ ५९ ॥
 कोइ जूवा तणा अति अवगुण सुण नें, जूवो छोडे साघां हजूर ।
 ते सूस भांग नें जूवे रमे पापी, तिणरा जीतव जन्म नें घूड रे ॥ ६० ॥
 जूवा ने ओलखावण काजे, जोड कीधी पुर सहर मभार ।
 संवत अठारे वरस सतावनें, सावण सुदी पंचमी शनिसर वार रे ॥ ६१ ॥



रत्न : २८

व्याहृतो

ढाल

साखी	शब्द	कहे	घणा,	सीखी	अकल	उठाण ।
परमारथ	खोजे		तिके,	ते	नर	विरला
कद	कूपल	बोली	हंसी,	पांन	दीयो	कव
वीर	बखाणी		ओपमां,	समभे	लोग	जाब ।
नवा	नवा	लोक	जाण	ने,	कह्या	घणा
करज्यो	मती		कदागरो,	जोयजो	सूतरां	प्रस्ताव ।
अछ्त्रा	ने	ओपमा	छत्री,	छत्रे	अछ्ती	न्याव ॥ ३ ॥
इम	जांणी	नें	गुण	ग्रहो,	भगडो	होय ।
मति	ग्यांन	रा	भेद	छे,	सुणज्यो	कोय ॥ ४ ॥
एक	सूतर	नेश्राय	छे,	बीजो	चित्त	लग्गाय ।
अणदीठो		अणसांभल्यो,	मेले		विण	नेश्राय ॥ ५ ॥
जैसे	नर	देखे	तिसो,	उत्तर	वचन	रसाल ।
इसी	बुद्धि	उत्पात	की,	वीर	दे	ततकाल ॥ ६ ॥
सग्य	हुवे	तो	देखलो,	नदी	बखाणी	ताहि ।
लोक	तिके	पिण	यूं	कहे,	कनक	ठांणाअग
साधु	कहे	तिण	में	किसूं,	इण	कांमणी
कहे	लोक	जांणें	नहीं,	पूरो	छलिया	नर
विषे	रूपिया	फद	रो,	सुणज्यो	अवे	इद ॥ ८ ॥
जोगी	जोग	सेठो	रहे,	भोगी	तजे	परमारथ ।
तिणं	उपर	दिधान्त	छे,	सुणज्यो	रोस	अरथ ॥ ९ ॥
प्राणी	चाल्यो		परणवा,	जब	आगूच	विकार ।
तोरण	तारा		छांहडी,	किम	कर	तजे
जो	तूं	बेटो	शाह	नों,	करें	दीयो
तो	तुमने		परणावस्यां,	इण	विघ	वांघ्यो
तोही	विषे	मे	अंघ	हुओ,	तुरंत	कसाई
सालां	न्हांखे		धूल	सिर,	चेत	मेले
तव	थोडोतो		बोलियो,	मुंहडे	पोत्यो	दांम ॥ ११ ॥
पाछो	पिण	जावे	नटी.	उगो	छे	देत ।
					हठ	चेत ॥ १२ ॥
						देय ।
						लेय ॥ १४ ॥

सासू	म्हांसूं	सलसली,	आई	मोडा	वार ।
चोडें	लोकां	देखतां,	मांड्यो	कोण	विचार ॥ १५ ॥
नाक	ताण	दही	चोडियो,	अब तो हुबो	अधिराज ।
भोग	थकी	नरके	गयो,	नकटा	अब तो लज ॥ १६ ॥
साले	थूलो		न्हांखियो,	सासू	खांच्यो नाक ।
सालो	सुसरो	स्यूं	करे,	डर	लाग्यो तिण घाक ॥ १७ ॥
रुपिया	सेती		राजवी,	बस हो जावे	तेह ।
तो	स्यूं छे	आ	बापडी,	नांगे	घरसी नेह ॥ १८ ॥
इम	चितव	आघा	कीया,	घाल्या	रुपिया रोक ।
तुरंत	उतारे		आरती,	इचरज	पाम्यां लोक ॥ १९ ॥
मिल	नें	माहे	लेगया,	माया	दराई घोक ।
कोइक	जूती		मेलके,	हांसी	करेज लोक ॥ २० ॥
अनमी	भूम्यां	ज्यूं	नम्यां,	चाकर	ऊमो आय ।
आपो	परवरा		वेचियो,	तिणरी	खबर न कांय ॥ २१ ॥
हाथी	हलकां		आवज्यो,	मोत्यां	चोक पुराय ।
पग	हेठे	गंगा	वहे,	कूडी	करें सराय ॥ २२ ॥
केशरियो	वनडो		कहे,	घणो	लडायो जोर ।
गाल्यां	गावा		ओसरी,	जाणें	दीवी भाटा री ठोर ॥ २३ ॥
कोइ	कहे	तुभ	मा इसी,	तो	करे रावला लग ।
साल्यां	भाडे	तव	हंसें,	तिण	जीतव ने विग ॥ २४ ॥
बोल्हो	तव	मोल्हो	कह्यो,	पांणी	लावण दास ।
कुड्म्व	कबीलो		भांडियो,	तोइ	न हुयो उदास ॥ २५ ॥
भोला	कहे	गाया	भला,	रीभ	गया घर गीत ॥ २६ ॥
ग्यांनी	मन	में	मुलकिया,	ए	गेल्यां वाला थाय ।
जातादिक	तेडाव		सूं,	दुनियां	हरषित दाय ॥ २७ ॥
मन	लागो	छे	मुगत	सूं,	तिण और न आवे जाल ।
घर	में	सेंठो	घाल	नें,	नांख्यो माया संभाल ॥ २८ ॥
आगे	मेल्यो	भूस	रो,	अब तो	सुरत भार ।
बदल	तणी	परि	खांचसी,	सगला	घर नों प्रहार ॥ २९ ॥
आलस	करनें	बेससीं	तो,	देसी	वचन जाय ।
छेहडे	छेहडो		बांघियो,	नास	न सके संभाय ॥ ३० ॥
नेनी	गने	ठाव	को,	तो	सेठो हाथ

व्याहुलो

बीच	मेंदी	घाली	बली,	दागल	कीयो	तिवार ।
देखो	कांम		विडम्बनां,	ओ	लाजे नही	लिगार ॥ ३१ ॥
ओलख	लेस्यां	आप	स्यूं,	मेदी	रे	एलांण ।
लाखां	हजारं	लोक	में,	पकडे	लेसां	तांण ॥ ३२ ॥
चिहुंगति	चवरी		जाणज्यो,	बंधन	डोर छे	कर्म ।
थोथा	तीनू		बांसडा,	कुगुर	कुदेव	कुधर्म ॥ ३३ ॥
हिंसा	धर्म	वताय	नें,	घणो	ह्लावसी	तोय ।
पांच	थावर	च्यार	त्रस,	ए	नव घाटी	जोय ॥ ३४ ॥
होम	तणी	पर	होमसी,	पापी	नरकां	मांय ।
रंक	राव	सब	एकसा,	कारण	किसका	नांय ॥ ३५ ॥
नरक	पंथ	जाणें	नही,	आव	वतावूं	नाह ।
तीन	फेरा	आणें	लीया,	चोथे	चलियो	जाह ॥ ३६ ॥
खीच	तणी	पर	खांडसी,	भूरे	जेम	कपास ।
इण	विघ	बेला	बीतसी,	तो	पिण जीवण	री आस ॥ ३७ ॥
जुवारी	जिम		जाणज्यो,	हाख्यो	जाय	गिंवार ।
कर्म	गांठ	काठी	होसी,	जातां	मोष	किवार ॥ ३८ ॥
पेहला	हुतो		माणसियो,	अवे	हुवो छे	डोर ।
बाया	पिण	गावें	खरी,	ओ	हिज इचरज	जोर ॥ ३९ ॥
डोल	घुरावे	जीत	रा,	देखो	उलटी	चाल ।
मानस	खोडे	मार	ने,	गावे	टोडर	माल ॥ ४० ॥
जीत्चो	नही	पिण	हारियो,	इम	भावे धन	खूट ।
पइसा	भर	भर	नीठ	सूं,	देव देव	कर छूट ॥ ४१ ॥
आगेवाणी	तूं		होसी,	पापे	मेलसी	आथ ।
दोरो	काकण		दोरडो,	ते	खुलसी एकण	हाथ ॥ ४२ ॥
विणज	पाप	नारी	तणो,	थोडा	कर्म	बंधाय ।
तिण	सू	खोले	दोरडो,	दोनूं	हाथ	लगाय ॥ ४३ ॥
सूंक	पाक	दीवी	घणी,	दे	जाचकां	दांन ।
इतरो	थोकां		परणियो,	तोइ	करे छे	मांन ॥ ४४ ॥
घर	चिंता	लागी	घणी,	दिन	भूरंता	जाय ।
अछत्रे	छत्रे		तिरपतो,	तडफे	फासी	मांय ॥ ४५ ॥
चोर	कसाई	रिण	दगो,	भूठ	गुलामी	वेठ ।
इतरा	बानां				नीठ भरीजे	

एक	कवलियो	जद	होसी,	अनंता	जीव	संहार ।
दोटे	ले	दोली	फिरी,	इण	विघ	दां ला मार ॥ ४७ ॥
कद	सासू	मुख	सूं	कह्यो,	कह्यो	कुण दीयो जताय ।
नरक	दीवी	श्री	जिण	कही,	तिण	स्यूं मेल्यो न्याय ॥ ४८ ॥
नारी	सेती	नेह	करी,	रुलियो	काल	अनंत ।
इम	सांभल	नें	थडहर्या,	शूर	वीर	गुणवंत ॥ ४९ ॥
तडके	मोहज		तोडियो,	चित्त	लगो	निरवाण ।
आज	पछे	वियें	सेववा,	मोनें	देव	गुर री आण ॥ ५० ॥
तोरण	सूं	पाछ्छा	फिख्या,	बावीसमां	जिण	चंद ।
जानी	जोवंत		रह्या,	छोड	दीया	घर फंद ॥ ५१ ॥
चोसठ	सहस्र		अतेवरू,	पायक	छिन्नू	कोड ।
भरत	चक्रवर्ति		सारिखा,	छिन	में	दीघा छोड ॥ ५२ ॥
एकीका	नर		बोलिया,	ए	आगली	रीत ।
मोटा	मोटा		मांनवी,	मांडी	इण	सूं पीत ॥ ५३ ॥
तिणरो	जाब	सुणो	तुमें,	क्रोध	कषाय	निवार ।
आगम	वेद	कुरान	में,	भाख्यो	दोषण	नार ॥ ५४ ॥
मोटा	मोटा		मांनवी,	मांड्यो	इण	सूं प्यार ।
थोडा	सुखां	रे	कारणें,	भव	भव	हुआ खुवार ॥ ५५ ॥
महाभारत	इण	श्री	हुओ,	आतो	बात	वदीत ।
रावण	सारिखा		जीवडा,	बहुला	हुआ	फजीत ॥ ५६ ॥
लंका	कोट	चितोड	पिण,	मार	कीया	पेमाल ।
नारी	हंदा	नेह	सूं,	कुण	पड्या	हवाल ॥ ५७ ॥
लोक	तिके	जाणें	घणा,	परे	मांडे	छे रांत ।
मांडे	होलू	भोज	री,	कराइ	बकडावतां	री घात ॥ ५८ ॥
नारी	घर	आई	तरे,	करे	कवण	कृतंत ।
भेद	घाल	पर	भावसी,	चिता	गले	पडत ॥ ५९ ॥
माता	जण	मोटो	कीयो,	पिता	पोषियो	वेह ।
भाई	बहन		रमाडता,	त्यांसूं	तोडायो	नेह ॥ ६० ॥
नारी	बोली	नाह	सूं,	घर	रो	कांम चलाय ।
आरों	अवसर		आवियो,	हिम्मत	हिंवे	संभाय ॥ ६१ ॥
के	तो	जावो	चाकरी,	के	जावो	परदेस ।
के	करषण	व्यापार	कर,	बेठा	कांय	अजेस ॥ ६२ ॥

न्यायन लड्डो करे, हाकिम दहे हमेश ।
 ज्युं त्रुं कर घन आण नें, मेटो परो कलेश ॥ ६३ ॥
 उगर्ना आरो आवियो, घर मे नही दरख ।
 दिन दिन चिता मे गले, किण विव करे रहे गरख ॥ ६४ ॥
 सगा सेण सूं मांगणी, जाये क्युंडक करो अरज ।
 म्हारी शर्म थांसूं रहिस, धर्म करे गरज ॥ ६५ ॥
 शीण पुन्ती कोडक स्त्री, धर्म करे दे नांय ।
 बेर काढे भरतार सू, न्हांखे हुकम तो अवे पियण चलावे वार ।
 चाकर नी पर चूकले, पिऊ, हुतो, अवे पियण तन विरचे सोस ।
 दिल केडें चाले उजम हुतो, अवे पियण तन लीघा खोस ॥ ६६ ॥
 परण्यो जव गले कलेबणी, रुपिया लीघा खोस ॥ ६७ ॥
 बांधी गले कलेबणी, रुपिया लीघा खोस ॥ ६८ ॥



रत्न : २६

तात्त्विक ढालां

ढलल : १

[जलषु डररुग डे धुर सू आदल जलषुद के]

जलषु डररुग डे धुर सू आदल जलषुद के, तुररु आदल कलढी जलषु धरुड री जी ।
 तुररुरी सेवल सलरे सुर नर कुओसठ इद के, तुररु सलरल डेहली संजड ललडु जी ॥जल०*१॥
 जलषु डररुग डे रलषड देव जी कुु डूत के, डरतेशुवर छु खणुड नुु धणी जी ।
 तुरल डलषु दूधल डुगलतल नगर नलं सूत के, तुरलगी कुउसठ सहसु अनुतेवरु जी ॥ २ ॥
 सडुदु वलजुड सुत नेड डुहल डललवलन के, तीथंकर डलवीसडलं जी ।
 तुरल तुुरण सेती डलछुडी डलली जलन के, तेल कुढी तज नीकलुडल जी ॥ ३ ॥
 जलषु डररुग डे डुरगदुडल डलरस नलथ के, जलन नलंडी थुडल जगत डे जी ।
 दलखुडल लूधुी तीनसुु डुरडलं सघलत के, जलषु जलसण नल अधलडती जी ॥ ॡ ॥
 जलषु डररुग डे डुगवत शुरी वरवडलंन के, तुरल सूर डणे संजड ललडु जी ।
 कषुड सही उडकलडु केवल गुडलन के, आज गलसण वरते तेहनुु जी ॥ ॡ ॥
 शलतल जलषुेशुवर उडनल गडु डे आड के, देश नगर डे शलतल हुई जी ।
 ँकण डव डे कुहुं डदवी डलड के, डुगत गडल तीरथ थलडने जी ॥ ॢ ॥
 जलषु डररुग डे शलतल कुथु अरनलथ के, तीरथ धरुड दीडलडने जी ।
 दलखुडल लूधुी सहसु डुरुषु सघलत के, डलस संथलरे शलव लहुडल जी ॥ ॣ ॥
 जलषु डररुग डे तीथंकर कुुवीस के, कुथुडल कुल नलं उडनलं जी ।
 तुरल सगल कुलरलत डललुडु वलसवलं डीस के, कुथुडल तीरथ थलडने जी ॥ । ॥
 जलषु डररुग डे सलगर नलडे डलड के, सलठ सहसु सुत डुवल डुणी जी ।
 दीधुी सगली छु खणुड रलदुधल कुडुडकलड के, वेरलगे डन डललने जी ॥ ॥ ॥
 जलषु डररुग डे कुनुदुरती सनत कुडलर के, तस रुड देखण देव आडलडु जी ।
 रुग उडननुु जलणी देही असलर के, कुलरलत ले डुगते गडल जी ॥ १० ॥
 जल० डरत सगर डधव सनत-कुडलर के, शलतल कुंथु अर जलणलडे जी ।
 डुहलडड हुरलषेण जड वलकलर के, दसुंई कुनुदुरती डुुडकल जी ॥ ११ ॥
 तुरलरे लख कुुरलसी हुड गड रथ नल थलड के, कुुओसठ सहसु अनुतेवरु जी ।
 ते कुुओकुथु डलड डलल कुुड खणुड रलदुधल गहुघलड के, जलषु डररुग कुुडुुु दीडतु जी ॥ १२ ॥
 जलषु डररुग डे नडुं ही डलदेव के, रलज रडण सव डरलहुरी जी ।
 डुगत डहुतल शुरी जलषु डररुग सेव के, डलडडुर गडल सुर डलंकुडे जी ॥ १३ ॥
 जलषु डररुग डे दशलरण नलंन नरेद के, देश दशलरण कुुु धणी जी ।
 तलस डलरखल करवल आडुु गकुंकेर के, वीर सडुडडे दलखुडल गुरहु जी ॥ १ॡ ॥

*डह आंकुडी डुरतुडेक गलथल के अनुत डे हू ।

ढलल : २

[सलुतु कुडु डत रलसुतुतुतु]

गणघर	गुतडड	सुवलड	कुु, सडरुंडु	सुख	दलतलरु	कुु ।
कुुनुस	डंडक		ऊडरु, डदवुी	रु	वलसुतलरु	कुु ।
			डलव	घरुी	डवलडुण	सुणु ॥* १ ॥
सडदलषुडुी	शुरलवक		डुनल, कुवलुी	कुुणवडर	कुुणु	कुु ।
कुुकुरुी	हलुलघर		कुेशलवल, डंडलुीडतुी	रलकुुनुनु	कुु ॥सलडु०२॥	कुु ।
सेनलडडतुतल			गलथलडडतुतल, डडहुी	डुरुहुत	कुुतु	कुु ।
इतुथुी	हडु	गडु	कुुणकुुतुतु, ए	रल	डडकुनुडुी	हुतुतु कुु ॥ ३ ॥
कुुकुर	कुुतुर	कुुरड	डंड, असुी	डणुी	कुुगणुी	सलतु कुु ।
सलतुुं	नरक	रु	नुीकुलुतुतु, ए	न	लहुे	डदवुी वलकुुथलतुतु कुु ॥ ॡ ॥
डुहुलुी	नरक	रु	नुीकुलुतुतु, डदवुी	सुलुे	डलवुे	कुु ।
दुकुुी	रल	डनरल	लहुे, कुुकुरवतुतु	नहुी	थलवुे	कुु ॥ ॡ ॥
तुीकुुी	रल	तुेरल	लहुे, टललुतुल	डल	वलसुदुवुे	कुु
कुुतुथुी	रल	डलरल	लहुे, न	हुवुे	दुवलधलदुवुे	कुु ॥ ॢ ॥
डलंकडुी	नरक	इगुतुलर	कुुे, कुवलकुुगुतुतुनुी	न	हुतुतु	कुु ।
कुुतुी	रल	दश	रलध	लहुे, सलधु	न	थलतुे कुुतुतु कुु ॥ ॣ ॥
सलतडुी	नरक	रल	नुीकुलुतुतु, तलरुतुतु	डलहुल	ललवुे	कुु ।
हडु	गडु	सडकुतुतु	कुुणकुुतुतु, डदवुी	तुीनकु	डलवुे	कुु ॥ । ॥
डृथुवुी	डलणुी		वनसुडडतुतु, तलरुतुतु	डलनड	डलखलणु	कुु ।
कुुल	कुुरी	नुे	रलध	लहुे, संखुतुल	कुुणुीस	डरडलणु कुु ॥ ॥ ॥
तुीरुथंकुर	कुुकुरवतुतु		नुी, टललुतुल	डल	वलसुदुवुे	कुु ।
तुेवुीस	डदवुी		डलहुललुी, कुुतुलर	डदवुी	नहुी	लुवुे कुु ॥ १० ॥
डुे	तुे	कुुडनुडुी	कुुीवडल, रलध	लठलरुे	डलवुे	कुु ।
कुुतुलर	डुल	लुतु	डलकुुलल, वलुे	कुवलकुुगुतुतुनुी	न	थलवुे कुु ॥ ११ ॥
तुेड	डलड	रल	नुीकुलुतुतु, डदवुी	नव	डलखलणु	कुु ।
एकुनुडुी	सलतुे		सहुी, वलुे	घुुडुुे	नुे	हलथुी कुुणु कुु ॥ १२ ॥
डवन	डडतुतु	डुतुतुतर	कुुतुतुतुडुी, डदवुी	इड	इकुवुीसु	कुु ।
तुीरुथंकुर	वलसुदुवुे		नुी, वुे	न	लहुे	कुुहुी कुुणुदुीसु कुु ॥ १३ ॥

*यहु आंकडुी डुरतुतुेक गलथल कुे अनुत डुे हुे ।

तात्त्विक ढालां : ढाल २

पेह्ला	वीजा	देवलोक	रा,	पदवी	तेवीस	पावे	जी ।
तीजा	सू	आठमां	लगे,	एकेन्त्री	नही	थावे	जी ॥ १४ ॥
च्यार	देव लोक	नव ग्रीवेक	नां,	रिधि	लहे दग	च्यारो	जी ।
घोडो	ने हाथी	टल	गया,	लेज्यो	चतुर	विचारो	जी ॥ १५ ॥
पांच	अनुत्तर	विमाण	रा,	पदवी	आठज	पावे	जी ।
चवदे	रत्न	चक्रवर्ती	नां,	दले	वासुदेव	न थावे	जी ॥ १६ ॥
ए	तेवीस	पदवी जिण	कही,	भव	जीवां	रे भागो	जी ।
भणे	गुणे	सुणे	सांभले,	आणज्यो	घट	वेरागो	जी ॥ १७ ॥



ढाल : ३

दुहा

एक आंचो नें एक पांगलो, दोनूं पडिया अटवी मांय ।
 इणरे आंख नहीं उणरे पग नहीं, त्यां सूं नगर गयो नहीं जाय ॥ १ ॥
 आंचो इंडटी मारतो थकें, आमो साहमों भसलेट्य खात ।
 पांगलो पडियो तिहां आवियो, दोनूं करे मांहोमांहि वात ॥ २ ॥
 पांगलो कहे हूं दुखियो घणो, हूं पडियो छूं अटवी मांय ।
 दोनूं पग नहीं भाई मांहेरे, मोसूं नगर गयो नहीं जाय ॥ ३ ॥
 जव आंचो कहे हूं पिण दुखियो घणो, हूं पिण मारूं अटवी में इंडट ।
 आंख्या विण नगर पोहचूं नहीं, नोनें कुण वतावे वाट ॥ ४ ॥
 जो तं खांचे वेसे मांहेरे, तूं मोनें मारग चलय ।
 तो आपां दोनं जणा, नगरी पहुंचा जाय ॥ ५ ॥

ढाल

[डाम नृजादिक नी डेरी]

पांगलो सुण हरख्यो ताहि, मिसल्ल कीवी मांहोमांहि ।
 पांगला ने उठायो आंचे, वेसाण्यो पोतारा खांचे ॥ १ ॥
 पांगलो ने आंचा नें चलावे, सांनोकर मारग वतावे ।
 इण विच अटवी लांची ताहि, दोनूं आया छें नगरी मांहि ॥ २ ॥
 नगरी आया तो मुखिया हुआ, अन्न पांणी विनां नहीं मुवा ।
 ए दिष्टान्त वडी रीत जांणों, संसार ने मुगत पिछांणो ॥ ३ ॥
 मोटी अटवी जिम संसार, तिण में दुखिया जीव अपार ।
 नगर जिम मुगति नं जांणो, तिण नें वडी रीत पिछांणो ॥ ४ ॥
 आंचा ज्यूं जीव ग्यान रहित, अग्यांनी मिथ्यात सहित ।
 तिण रे क्रिया रूप नहीं पाय, ते मुगत नगर क्रिम जाय ॥ ५ ॥
 ते जीव क्रिया करवा लागो, पिण नहीं जाणे मुगत रो मागो ।
 जिण आगम नों जांण नांहीं, जीवादिक न जाणे वाई ॥ ६ ॥
 ते मुगत नगर क्रिम जावें, संसार में मोळा खावें ।
 ते तो आंचा जेम अलूमें, ग्यान विनां संबलो न सूमे ॥ ७ ॥
 कदा जीवादिक नो हुवो जांण, मोप मारग लियो पिछांण ।
 पिण क्रिया करणी नहीं आवे, तो पिण मुगत नहीं जावे ॥ ८ ॥

मिलिया आंघो ने पांगलो दोय, सुखे नगर पोंहता सोय ।
 ज्युं ग्यान क्रिया नों सयोग थाय, तो जीव मुगत माहे जाय ॥ ९ ॥
 क्रिया तो ग्यान छे नाही, क्रिया तो जाणे देखे नहीं काइ ।
 क्रिया तो सुमता रस भाव, कर्म रोकण तोडण रो सभाव ॥ १० ॥
 ग्यान दरसन छे उपयोग, ते जाणे देखे लोक अलोक ।
 कोइ क्रिया नें कहे उपयोग, तिण ते मोटो मिथ्यात रो रोग ॥ ११ ॥
 ग्यान क्रिया छे दोय, त्यां ने एक म जाणो कोय ।
 त्यांरो सभाव जूवो जूवो जाणो, त्याने रुडी रीत पिछाणो ॥ १२ ॥



ढाल : ४

दुहा

केइ अर्यांनी इम कहें, एकेन्द्रिय ना पुन्य अन्व मात ।
त्यांनं मार पवेन्त्री पोषियां, तिण में कहें धर्म साख्यात ॥ १ ॥
तिण एकेन्द्री नें वेदना हुवे, ते भोलां नें खबर न कांय ।
तिणरी गोतम स्वांमी पूछा करी, जव दीवी वीर दत्ताय ॥ २ ॥

ढाल

[स्वांमी म्हारा राजा नें धर्म सुराण्यो]

हाथ जोडी बिनती करे, नीचो शीप नमाय हो । स्वांमीः ।
पृथवी काय हणियां थकां, वेदना केहवी थाय हो । स्वांमीः ।
अरज कहं छूं बिनतीः ॥ १ ॥
तिणरे आंख कांन नासिका नहीं, जिम्या पिण नहीं ताय हो । स्वांमीः ।
बले मन बचन विण वेदना, भोगे छे किण न्याय हो ॥ स्वांमीः ॥ २ ॥
बल्ला वीर इसडी कहे, अति वेदन हुवे ताय हो । गोतम ।
दिष्टांत देइ नें कहूं तो कले, सुण तूं चित लगाय हो । गोतम ।
उपकारी इम उरदिचे ॥* ३ ॥
कोइ गुंगो पुछय छे जन्म रो, बहरो जन्म रो जाण हो ।
ते पिण आंधो ने पांगुलो, बले रोग घेरित छे आण हो ॥ गोतम ॥ ४ ॥
तिण अंब पुत्प नें भालां करी, भेदें जायगां बत्तीस हो ।
बले बत्तीस जायगां खड्ये करी, छेदे कर कर रीस हो ॥ ५ ॥
तिण अंब पुरुष नें हुवे वेदनां, छेदे भेदे तिण वार हो ।
एहवी वेदन पृथवी काय नें, हुवे छे दीयां परिहार हो ॥ ६ ॥
ते रांक गरीब छें वापडा, त्यांरी करे हर कोइ घान हो ।
त्यांरी पुकार लागें किण आगले, ए इसडा जीव अनाय हो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाय्या के अन्त में है ।

ढाल : ॡ

दुहा

मेण लाख लकडा तणों, चोथो माटी रो ताहि ।
 ए च्याखंड गोला कह्या, सूतर ँणायंग मांहि ॥ १ ॥
 ज्यूं च्यार जात रा मानवी, इण संसार मभार ।
 केइ गीदड केइ सूरमां, ते सुणज्यो विस्तार ॥ २ ॥
 साघां री वांणी सुणी च्याहं जणा, आयो मन वेराग ।
 आपे इतला दिन आंवां वूहा, अबे उधडिया भाग ॥ ३ ॥
 हिंवें थानक बारे नीकल्या, केइ लोक बोल्या छे तडकी ।
 थे वेठ मंडो बांघ ने, भली गमाइ घरकी ॥ ४ ॥
 केइक तो इम बोल्या, केइकां दीघी गाल ।
 मेण गोला ज्यूं परगल्यो, ताप लागो ततकाल ॥ ५ ॥
 मेंण गोलो सूर्य रा ताप थी, गल ने हुवो नरम ।
 ज्यूं इण लोकां रा ताप थी, छोड दीयो जिण धर्म ॥ ६ ॥
 तीन पुरुष गाढा रह्या, त्यांने पाछा उत्तर आप ।
 पोता पोता रे घरे आवियां, जिहां वेठा छे मा बाप ॥ ७ ॥
 मात पिता ने इम कहे, म्हें सुणी साघां री वांण ।
 त्यां वचन अमोलक बागख्या, म्हाने लागा अमिय समाण ॥ ८ ॥
 जब माता त्रिसूलो चाढ नें, बोली मुख सूं गेर ।
 निकल म्हारा घर थी, लेने थारी वेर ॥ ९ ॥
 ते हाथ जोडी ने इम कहे, तूं म्हारे जन्म री दाता ।
 हूं साघां कने जाऊं नही, आज पछे हे माता ॥ १० ॥
 सूर्य ताप थी नही पिंगलियो, तिण ने लागी अग्नि री भाल ।
 लाख तणो गोलो हुतो, पिंगलियो ततकाल ॥ ११ ॥
 माता वचन करडा कह्या, तिण ने अग्नि जिम भाल ।
 पोते लाख गोला जिसो, ते मिष्ट हुवो ततकाल ॥ १२ ॥
 दोय पुरुष गाढा रह्या, न हुवा मूल उदास ।
 माता पिता ने उत्तर दीया, हिंवे आया नारी रे पास ॥ १३ ॥
 नारी पूरी कलेसणी, तिण रे धर्म न आवे दाय ।
 तीन लिलाडी सल चाढ ने, किण विघ बोले वाय ॥ १४ ॥
 तडक भडक बोली इसी, कर आवे ज्यूं दाय ।
 ओ घर ने ए टावख्या, हूं कूवे पड स्यू जाय ॥ १५ ॥

हूं जीमण रांधूं जुगत सूं, तूं आवे खाण नें हूंस्यो ।
 तूं जाय बेठो मुख बांध नें, बडो धर्म को धूंस्यो ॥ १६ ॥
 ए वचन सुणी नारी तणा, भय पाम्यो छे अतंत ।
 आ मरसी मो ऊपरे, तो करवो कुण विरतंत ॥ १७ ॥
 आ मरती दीसैं खरा खरी, तो हिवें छोड देवूं जिण धर्म ।
 ज्यूं सगा संबंधी लोकां मझे, रहे ज्यूं म्हारी समं ॥ १८ ॥
 ओ नारी सूं डरतो कहे, राखो म्हारी समं ।
 थें कूवे कदे पडज्यो मती, हूं कदे न करसूं धर्म ॥ १९ ॥
 सूर्य अग्नि रा ताप सूं, पिगल्यो मेंण नें लाख ।
 त्यां काठ गोलो काठो रह्यो, ते हुवो अग्नि सूं राख ॥ २० ॥
 हूं कोड घणो परण्यो हुंतो, घणां लोका री साख ।
 काठ गोला सारिखो थो गीदख्यो, ते बल नें होय गयो राख ॥ २१ ॥
 स्त्री अग्नि जिसी कही, तिण री भरे सहु कोइ साख ।
 काठ गोला जिसो हुंतो, तिण नें बाल कीयो छे राख ॥ २२ ॥
 जे आग्याकारी नार नां, ते पडिया इण रे पास ।
 ते नित डरता रहे तेह सूं, जाने आग्याकारी दास ॥ २३ ॥
 उठ वेस आव जाव रो, कर अमकडियो काम ।
 बानर जेम नचावियो, जाणे असल गुलाम ॥ २४ ॥
 इसडा गीदड बापरा, तिण सूं धर्म कीयो किम जात ।
 हिवें चोथो गार गोला जिसो, सुणज्यो तिण री बात ॥ २५ ॥
 तिण लोका ने उत्तर दीया, कर मा बाप सूं जाव ।
 निज स्त्री बेठी तिहां, आयो तुरत सताव ॥ २६ ॥
 तिण स्त्री ने मांडी कही, मे जिण धर्म जाण्यो आज ।
 हिवें सामायक पोसा करी, साहं आतम काज ॥ २७ ॥
 ए वचन सुणी ने स्त्री, कीघो क्रोध अपार ।
 अगल डगल बोली घणी, तीन लीटी चाढी निलाड ॥ २८ ॥
 थे मूंडे बांधी मुंहपती, मांड्यो घर में फेन ।
 हूं जहर फांसी खाये मरूं, थे कित्तो एक पावो चैन ॥ २९ ॥
 पापंड छोडी चालो पादरा, थें मानों म्हारी वात ।
 नहीं तो हूं थां ऊपरे, मर सूं कर अपघात ॥ ३० ॥
 जब इम जाण्यो आ पापणी, नाहरी सम छे नार ।
 कह्यो कहां जो एहनों, तो न्हांखे नरक मझार ॥ ३१ ॥

जो हूं नरमाइ कलं, तो आ उलटी पाड आबे ।
 तो वणसी म्हारा भाग री, हिवे देऊ पादरा जाव ॥ ३२ ॥
 तूं कूवे बावडी पड मरे, थारे उदे हुआ छे कर्म ।
 पिण हूंतो थारे कारणे, छोडूं नहीं जिण धर्म ॥ ३३ ॥
 म्हारे बंधन छे एक तांहरो, तो तुट जावे इणवार ।
 तूं कूवे बावडी पड मरे, तो हूं लेसूं संजम भार ॥ ३४ ॥
 कंत वचन इसडो कह्यो, जब पीहर गइ रीसाय ।
 घणो ओसीयालो होय नें, मोनें ले जासी मनाय ॥ ३५ ॥
 स्त्री आगे मूल चलयो नही, ओ अडिग रह्यो व्रत माल ।
 ओ तों गार गोला जिसे, ज्यूं घमे ज्यूं लाल ॥ ३६ ॥
 इण लारे तेलो करे, आडा जडे किवाड ।
 तीन पोसा ठाय नें, धर्म ध्यान ध्यावे तिणवार ॥ ३७ ॥
 स्त्री वाट जोए रही, मनाय लेजावे मोय ।
 तीन दिन विचे गया, पिण अजे न आयो कोय ॥ ३८ ॥
 छोरा छोरी पीहर तणा, भेला कर भेल्या सोय ।
 थारो बेनोइ काई करे, पाछो आय कहिज्यो मोय ॥ ३९ ॥
 ते भेला होय ने आविया, जोवे छेकली मांहि ।
 मस्तक उघाडे मुंह मुंहपती, वेठो वीठो घर मांहि ॥ ४० ॥
 ते देखी पाछा आय ने, मांड कही सर्व वात ।
 जब धसको पड्यो तेहने, घर गयो दीसे साख्यात ॥ ४१ ॥
 बेन भाइ मा बाप ने, साथे ले आइ तेह ।
 हिवें हाथ जोडी ने इम कहे, मोने कदे म दीजो छेह ॥ ४२ ॥
 टाबरियां घर तणी, थानें छे आशर्म ।
 उवे मुनिवर मोटा जती, थे करो जोख सूं धर्म ॥ ४३ ॥
 मै संजम री सुणी बारता, म्हारा गल गल हुवा नेंण ।
 थें बुरो मूल मानो मती, म्हे हसती बोल्या वेंण ॥ ४४ ॥
 हू कह्यो न लोपूं तुम तणो, हूं रहसूं आग्याकार ।
 थें घर बेठाइ करो धर्म, मत लो संजम भार ॥ ४५ ॥
 जब कंत कहे सुण कांमणी, ओ हूं कलं नही करार ।
 जब म्हारो मन ऊठसी, तब लेसूं संजम भार ॥ ४६ ॥
 जब स्त्री मन मांहि जाणियो, ओ रखे छोडेलो मोय ।
 तो विनय भक्ति कलं घणी, इण रो कह्यो न लोपूं कोय ॥ ४७ ॥

ढाल : १

दुहा

अणुकंपा नें आदरे, कीजों घणा जतन ।
जिणवर ना धर्म मांहिली, समकत पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भेस आक थोर नों, ए च्वाहई दूध ।
तिम अणुकंपा जाणजों, राखे मन में सूघ ॥ २ ॥
आक दूध पीघां थकां, जुदा करे जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अणुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोलेंई मत भूलजों, अणुकंपा रे नाम ।
कीजो अंतरंग पारखा, ज्यूं सीमें आतम काम ॥ ४ ॥
अणुकंपा में आगन्यां, तीर्थकर नी होय ।
सावद्य निरवद्य ओलखों, सूतर साहां जोय ॥ ५ ॥

ढाल

[समकित वमियो नन्दश०]

मेघ कुंमर हाथी ना भव में, श्री जिण भाषी दया दिल आई ।
उंचो पग राख्यों सुसीयो न माख्यों, या करणी श्री वीर सराई ।
या अणुकंपा जिण आगन्या में* ॥ १ ॥
कष्ट सहो तिण पाप सूं डरतें, मन विढ सेठी राखी तिण काया ।
बलता जीव दावानल जांणी, सूंड सूं गिर गिर बारे न ल्याया ॥ या० २ ॥
परत संसार कीयो तिण ठामें, उपनो श्रेणक नें घर आई ।
भगवंत आगला दीध्या लीची, पहला अघेन गिनाता मांहि ॥ ३ ॥
मांडलो एक जोजन रो कीवो, घणा जीव वचीया तिहां आई ।
तिण वचीयां रो धर्म न चाल्यो, समकत आयां विण समझ न कांई ।
या अणुकंपा सावद्य जांणो ॥ ४ ॥
नेम कुंमर परणीजण चाल्या, पसू पंखी देख दया दिल आंणी ।
एहवो काम सिरें नहीं मोनें, म्हारे काज मरें बहु प्रांणी ॥ ५ ॥
परणीजणा सूं परिणाम फिरिया, राजमती नें उभी छिट्काई ।
कर्म तणा बंध सूं नेम डरीया, तोडी आठ भवां री सगाई ॥ ६ ॥
आप सूं मरता जीव जांणी नें, कडवा तूंबा रो कीवों आहारो ।
कीडीयां री अणुकंपा आंणी, घिन घिन धर्म रूची अणगारो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

फोडवी लब्ध अणुकंपा आंणी, गोसाला नें वीर वचायो ।
 छ लेस्या छदमस्थ हूंता, मोह कर्म वस रागज आयो ।
 या अणुकंपा सावध जाणों ॥ ८ ॥
 असंजती गोसालो कुपातर, तिणनें साहज सरीर रो दीघो ।
 धर्म जाणे तो जगत दुखी था, वले वीर ए काम कांय न कीवों ॥ ९ ॥
 तेजु लेस्या मेल गोसालें, बाल्या दोग साव भसम करी काया ।
 लब्ध धारी था साव घणाई, मोटा पुरुषां नें क्युं न वचलया ॥ १० ॥
 जिण राखिये अणुकंपा कीघी, रंगा देवी तिण साह्यो जोयो ।
 सेल्य जप हेठो उताख्यो, देवी आंण खडग में पोयो ॥ ११ ॥
 भगता हिरण गमेषी नी सुलसा, कीघी अणुकंपा विलखी जांणी ।
 छ वेटा देवकी रा जाया, सुलसा रें घर मेल्या आंणी ॥ १२ ॥
 जगन वाडे हरकेसी आया, असणांदिक् तेहने नहीं दीघो ।
 जषदेव अणुकंपा आंणे, रुद्र वमंता ब्राह्मण कीघां ॥ १३ ॥
 सेषकुमार गर्भे हूंता जब, सुख रें ताई कीघां अनेक ज्पायो ।
 धारणी रांणी कीघी अणुकंपा, मन गमता असणांदिक् खायो ॥ १४ ॥
 अभयकुमार रो मित्री देवता, तिण अभयकुमरे री अणुकंपा आंणी ।
 धारणी रांणी रो डोहलो पूरख्यो, अकाले विरवा कर ने वरसायो पांणी ॥ १५ ॥
 किसनजी नेम वंदण नें जातां, एक पुरुष नें दुखीयो जांणी ।
 साज दीयो अणुकंपा कीघी, इंट उठाय जपरे घर आणी ॥ १६ ॥
 दुखीया दोहरा देख दलद्री, अणुकंपा जगरी किण आणी ।
 गाजर मूलादिक् सचित्त खवावे, वले पावे काचों अणगल पांणी ॥ १७ ॥
 दुखीया जीव मारग माहें देखी, टल जाए साव संकोची काया ।
 आप हणे नहीं पाप सू डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया ॥ १८ ॥
 उपाडे नें जो छाया मेले तों, असंजती नीं वीयावचा लागी ।
 या अणुकंपा साव करे तो, जाए पांचूई महावरत भागी ॥ १९ ॥
 सो साव त्रिषमकाल उन्हालें, पांणी विनां हुवे जुदा जीव काया ।
 अणुकंपा आंणे नें असुघ वेंहरावे, छ काया रा पीहर सावु वचाया ॥ २० ॥
 गज सुखमाल ले नेम री आग्या, काजसग कीयो मसंगा में जाई ।
 सोमल आंण खीरा सिर घाल्या, सीस न धूणों दया दिल् आई ॥ २१ ॥
 सावु विनां अनेरा सर्व जीवां री, अणुकंपा आंणे साव वांचे वंवावे ।
 तिणनें नसीत रे वारमें उद्देसें, तिण साव नें चोमासी प्राद्धित आवे ॥ २२ ॥

रासडीयादिक सू तस जीव बध्या छे, ते तों भूख तिरखादि सू अतंत दुख पावे ।
 त्याने अणुकंपा आणे ने छोडे छोडावे, तिण साघ ने चोमासी प्राच्छित आवे ॥ २३ ॥
 व्याघ कसटादिक रोगीलो सुण ने, तिण उपर वेद चलाए नें थावें ।
 साजो करे अणुकंपा आणे, गोली चूरण दे रोग गमावें ॥ २४ ॥
 लबदघारी ना खेलादिक थी, सोलेई रोग जडां सू जावें ।
 वले जाणे साघ ए रोग सू मरसी, अणुकंपा आणे रोग नहीं गमावे ॥ २५ ॥
 जो अणुकंपा साघ करे तों, उपदेस देई वेराग चढावे ।
 चोखे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्याहई आहार नां त्याग करावे ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २६ ॥
 गृहस्य भूलो उजाड वन मे, अटवी ने वले उजड जावे ।
 अणुकंपा आणे साघ मारग चतावे, तो च्यार महीनां रो चारित जावे ॥ २७ ॥
 अटवी मे भूला ने अतंत दुखी देख, च्याहई सरणा साघ दिरावें ।
 मारग पूछे तो मुनज सामे, बोले तो भिन भिन धर्म सुणावें ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २८ ॥



अणुकम्पा री चौपई : ढाल २

सिघ वाधादिक मंजारी, हिसक जीव देखी आचारी ।
 त्यानें मार कऱ्यां हिंसा लागे, पेंहलोई महावरत भागे ॥ १० ॥
 मत मार कऱ्यां उगरो रागी, तीजे कारण हिंसादिक लागी ।
 सुयगडाअंग छें साखी, श्री वीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥
 गृहस्थ नां सरीर ममता में, साधु वेठों समता में ।
 रह्या धर्म सुकल ध्यान घ्याई, मूआ गयां फिकर न कांई ॥ १२ ॥
 इह लोक नें पर लोक, जीवणो मरणो काम भोग ।
 ए तो पांचूई छे अतिचार, वांध्यां नही धर्म लिंगार ॥ १३ ॥
 आपणोई वांछें तो पाप, पर नो कुण घाले संताप ।
 घणों जीवणो वांछे अग्यानी, समभाव राखें ते ग्यांनी ॥ १४ ॥
 वायरो विरषा सी ताम, रह्यो न रह्यो चावे तो पाप ।
 राज विरोध रहीत सुकाल, उपद्रव जावो ततकाल ॥ १५ ॥
 साता बोलां रो ए विसतार, ओलखीयो ते अणगार ।
 घट माहें जो सुमता आवे, हुवा न हुवा एको ही न चावे ॥ १६ ॥
 एकण रे दे रे चपेटी, एकण रो दे उपद्रव मेटी ।
 ए तो राग द्वेष नों चालो, दसवीकालक संभालो ॥ १७ ॥
 साव वेठो नावा में आई, नावडीए नाव चलाई ।
 नावा फूटी माहे आवे पाणी, साव देखे लोकां नही जांणी ॥ १८ ॥
 आप इबे अनेरा प्रांणी, किणरी अणुकंपा नांणी ।
 वतायां वरत रो भंग, तिणरो साखी आचारग ॥ १९ ॥
 सांनी कर साव जतावे, लोक कुसले खेमें घर आवे ।
 इबा पिण साव न चावें, रह्या चावे तो तुरत वतावे ॥ २० ॥
 मून साव रह्या ते संत, तिके करे संसार नो अंत ।
 परिणामज राखे सेठा, धर्म ध्यान माहे रहे वेठां ॥ २१ ॥

ढाल : ३

दुहा

वाँछें मरणों जीवणों, तो धर्म तणों नहीं अंस ।
 ए अणुकंपा थकां, वधें कर्म नों वंस ॥ १ ॥
 मोह अणुकंपा जे करे, तिणमें राग नें धेष ।
 भोग वधें इद्र्यां तणो, अंतर उंडो देख ॥ २ ॥
 दया अणुकंपा आदरे, तिण आतम आंणी ठाय ।
 मरतो देखे जगत नें, सोच फिकर नही कांय ॥ ३ ॥
 कष्ट सह्या घर में थकां, पाल्या वरत रसाल ।
 मोह अणुकंपा श्रावकां, त्यां पिण दीघी टाल ॥ ४ ॥
 काचा था ते चल गया, ते होय गया चकचूर ।
 के सेठां रह्या चलीया नहीं, त्यांनैं वीर वंखांप्या सूर ॥ ५ ॥

ढाल

[तुम जायेज्यो रे स्वारथ ना सगा]

चंपा नगरी नां वांणीयां, ज्याज भर नें समुदर में जाय - रे ।
 हिंवे तिण अवसर एक देवता, त्यांनैं उपसर्ग कीघो आय रे ।
 जीव मोह अणुकंपा न आणीए ॥ १ ॥
 मिनका सीयाल खाधें वेसांग नें, गलें पेंहरी छे हंड माल रे ।
 लोही राध सू लीप्यो सरीर नें, हाथे खडग दीसैं विकराल रे ॥ जी० २ ॥
 लोक घड घड लागा धूजवा, ओर देव रह्या मन ध्याय रे ।
 अरणक श्रावक डरीयो नहीं, तिण काउसग दीघो ठाय रे ॥ ३ ॥
 सागारी अणशण कीर्यो, धर्म ध्यांन रह्यो चित्त ध्याय रे ।
 सगलां नें जांप्या इवता, अणुकंपा न आंणी कांय रे ॥ ४ ॥
 अरणक श्रावक ने डिगायवा, देव वदि वदि बोले वाय रे ।
 जो अरणक धर्म न छोडसी, तो ज्याज डबोवूं जल माय रे ॥ ५ ॥
 उंची उपाड नें उंधी न्हांख नें, कर सुं सगलां री घात रे ।
 काली बोली अमावस रा जण्या, मान रे तूं अरणक वात रे ॥ ६ ॥
 ग्यांन दरसण म्हांरा वरत नें, इणरो कीघो विघ्न न थाय रे ।
 हूं सेवग हूं भगवान रो, मोने कोइ न सकें चलाय रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

लोक विल विल करता देख नें, अरणक रो न विगड्यो नूर रे ।
 मोह करुणा न आंणी केहनी, देव उपसर्ग कीवो दूर रे ॥ ८ ॥
 देव चिन चिन अरणक ने कहे, तू तो जीवादिक नो जाण रे ।
 थारा सुधर्मो सभा मभे, इंद्र कीया घणा बखण रे ॥ ९ ॥
 अरणक श्रावक रा गुण देख नें, आया देव री दाय रे ।
 दोय कुंडल री जोडी आप ने, देव आयो जिण दिस जाय रे ॥ १० ॥
 नमीराय रिषि चारित लीयो, ते तों उभो बाग में आय रे ।
 इंद्र आयो तिणनें परखवा, ते किण विघ बोलें वाय रे ॥ ११ ॥
 थारी अगन करी मियला बले, एकर सू साह्यो जोय रे ।
 अतेवर बलतो मेलसी, ए वात सिरें नही तोय रे ॥ १२ ॥
 सुख वपराय सारा लोक में, बिलखा देख पुत्र रतन रे ।
 जो तूं दया पालण नें उठीयो, तो कर तूं थारा जतन रे ॥ १३ ॥
 नमी कहे वसूं जीवूं सुखे, म्हारी पल पल सफला जात रे ।
 या मिथला नगरी दाभक्तां, म्हारो बले नही तिलमात रे ॥ १४ ॥
 मोने हरष नही मिथला रह्यां, बलीयां नही सोग लिगार रे ।
 मै सावद्य जाण त्यागी जका, रही बली न चावे अणगार रे ॥ १५ ॥
 नमिराय रिषी आंणी नही, मोह अणुकंपा नी वात रे ।
 समभाव राखे मुगते गयां, करे अष्ट कर्मा री घात रे ॥ १६ ॥
 श्री केसव केरो बंधवो, यो तो नामे गजसुखमाल रे ।
 तिण दीख्या ले काउसग्ग रह्यो, सोमल आयो तिण काल रे ॥ १७ ॥
 माथे पाल वाघो माटी तणी, माहे घाल्या लाल अंगार रे ।
 कष्ट उमनों देवन अति घणी, नेम करुणा न आंणी लिगार रे ॥ १८ ॥
 श्री नेम जिणेसर जाणता, होसी गज सुखमाल री घात रे ।
 पिण अणुकंपा आंणी नही, ओर साव न मेल्या साथ रे ॥ १९ ॥
 श्री वीर जिणद चोवीसमां, कल्यातीत मोटा अणगार रे ।
 त्याने देव भिनष तिरजंच ना, उपसर्ग उपनां अपार रे ॥ २० ॥
 संगम देवता भगवंत ने, दुख दीवा अनेक प्रकार रे ।
 अनार्य लोकां पिण वीर ने, स्वानादिक दीवा लार रे ॥ २१ ॥
 चोसठ इंद्र मोहछत्र आवीया, दीष्या दिन मेला होय रे ।
 पिण कष्ट पड्यो भगवानं ने, नायो उपसर्ग टालण कोय रे ॥ २२ ॥
 दुख देता टेखी जगनाय ने, किण अलगा न कीवा आय रे ।
 संभदिष्टी देव हुंता घणां, त्यां करुणा न आंणी कांय रे ॥ २३ ॥

देवता जाण्यो श्री विरघमान रे, उदे आया दीसैं छे कर्म रे ।
 अणुकंपा आण विचें पड्यां, ए जिण भाष्यो नही धर्म रे ॥ २४ ॥
 धर्म हुवें तो आषों नही काढता, वले वीर नैं दुखीया जाण रे ।
 परीसो देवण आवे तेहनें, देव अलगो करता ताण रे ॥ २५ ॥
 मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रां मांय रे ।
 भगवंत कहे जो इंद्र नैं, तो थोडा में दीयें मिटाय रे ॥ २६ ॥
 पडती जाणें अंतराय नैं, तो अचित खवारें पूर रे ।
 एहवी सकत घणी छे इंद्र नीं, पिण कर्म न हुवे दूर रे ॥ २७ ॥
 चूलणी पीया ने पोसा ममें, देव दीघा छें दुख आय रे ।
 कुण कुण हवाल तिण कीया, ते सांभलजो चित्त ल्याय रे ॥ २८ ॥
 तीन बेटां रा नव सूला कीया, तिणरा मूंढा आगें लाय रे ।
 तेल उकाल नैं माहें तल्या, बलबलता सूं छांटी काय रे ॥ २९ ॥
 समें परिणामां वेदना सही, जाणी आपणा संच्या कर्म रे ।
 अणुकंपा नांणी अंगजात री, तिण छोड्यो नहीं जिण धर्म रे ॥ ३० ॥
 मत मारण रो कह्यो नहीं, ते तो जाण्यो सावध वाय रे ।
 करुणा नांणी मरता देख ने, सेंठों रह्यो धर्म ध्याय रे ॥ ३१ ॥
 जो तूं धर्म न छोडती, तो थारें देव गुर जिम छे माय रे ।
 तिणने माहूं विघ आगली, थारा मूंढा आगें ल्याय रे ॥ ३२ ॥
 जद आरत ध्यान तूं ध्याय नैं, परसी माठी गति में जाय रे ।
 सुणनें चूलणीपीया चल गयो, मानें राखण रो करें उपाय रे ॥ ३३ ॥
 ओ तो पुरष अनर्थ करे जिसो, भाल राखूं ज्यूं न करे घात रे ।
 ते तो भद्रा वचावण उठीयो, इणरें थाभो आयो हाथ रे ॥ ३४ ॥
 अणुकंपा आंणी जणणी तणी, तो भागा वरत ने नेम रे ।
 देखो मोह अणुकंपा एहवी, तिणमें धर्म कहीजें केम रे ॥ ३५ ॥
 चूलणीपीया नैं सूरदेव नां, चलशतक ने सकडाल रे ।
 यां च्यांरा रा माख्या दीकरा, देव तलीया तेल उकाल रे ॥ ३६ ॥
 बेटां नैं मरता देखीया, नांणी मोह अणुकंपा पेम रे ।
 उठ्या मात त्रियादिक राखवा, तो भागा वरत ने नेम रे ॥ ३७ ॥
 मात त्रियादिक राखतां, भागा वरत नैं बंध्या कर्म रे ।
 तो साध विचे जाए पडीयां थकां, यांनैं किण विघ होसी धर्म रे ॥ ३८ ॥
 चेडा ने कोणिक री वारता, निराबल्लिका भगोती साख रे ।
 मानव मूंआ दोय संग्राम में, एक कोड ने असी लाख रे ॥ ३९ ॥

भगवंत अणुकंपा आण नें, पोतें न गया न मेल्या साव रे ।
 यानें पेंहला पिण वरज्यां नही, घणा जीवां री जाणें विराध रे ॥ ४० ॥
 ए दया अणुकंपा जाणता, तो वीर बडालें जाय रे ।
 सगला ने साता वपरावता, थोडा में देता चकाय रे ॥ ४१ ॥
 कोणिक भगता भगवान रो, चेडे बारें वरतधार रे ।
 इंद्र भीडी आयो ते समकती, अं किण विघ लोपता कार रे ॥ ४२ ॥
 ग्यान दरसण चारित माहिलों, वघतो जाणें किणरों उपाय रे ।
 तो करें अणुकंपा भव जीव री, वीर विनां बोलायां जाय रे ॥ ४३ ॥
 समुद्र पाली सुखां में म्फिल रह्यो, संसार विषें रस लाग रे ।
 चोर ने मारतो देखी ऊपनो, उतकण्टो परम वेंराग रे ॥ ४४ ॥
 चारित लीयो कर्म काटवा, जाणें मोष तणो उपाय रे ।
 पिण करुणा न आणी चोर नी, छोडावण री न काढी वाय रे ॥ ४५ ॥
 साव श्रावक नीं एक रीत छें, तुमे जोवो सूतर नों न्याय रे ।
 देखो अंतर माहे विचार नें, कूडी कांय करों बकवाय रे ॥ ४६ ॥



ढाल : ४

दुहा

दुखीया देखी तावडें, जो नही मेलें छाया ।
 साध श्रावक न गिणें तेहनें, ए अन तीरथी नीं वाय ॥ १ ॥
 माख्यां मरायां भलो जांगीयां, तीनुईं करणां पाप ।
 देखण वाला नें जे कहें, ते खोट्य कुगुर सराप ॥ २ ॥
 करमां कर नें जीवडा, उपजें ने मर जाय ।
 असंजम जीतव्य तेहनो, ते साध न करें ज्पाय ॥ ३ ॥
 देखे मांहोमांहि विणसता, अल्लो करदां जाय ।
 एहवो कहें तिण उपरें, साध वतावें न्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव काई तुमें]

नाडो भरीयो छे डेडक माछल्यां, मांहें नीलण फूलण रो पूर हो । भविकजण ।
 लट फूहारा आदि जलोक सूं, तस थावर भरीया अरुड हो । भविकजण ।
 करजों पारख जिण धर्म री ॥ १ ॥
 सुलीया धान तणो ढिगलो पखो, मांहें लटां ने ईल्यां अथाय हो ।
 सुलसल्यां ईडादिक अति घणा, किल विल करें तिण मांय हो ॥ २ ॥
 एक गाडो भखों जमीकंद सूं, तिणमें जीव घणा छे अनंत हो ।
 च्यार प्रज्या च्यार प्राण छें, माख्यां कष्ट कहाो भगवंत हो ॥ ३ ॥
 काचा पांणी तणा माटा भख्या, घणा जीव छें अणगल नीर हो ।
 नीलण फूलण आदि लटां घणी, त्यामें अनंत वताया छे वीर हो ॥ ४ ॥
 खात भीनों उकरडी लटां घणी, गीडोला गधईया जाण हो ।
 टलबल टलबल कर रह्या, याने कमां नांख्या छे आण हो ॥ ५ ॥
 कांयक जायगां में उंदर घणा, फिरें आमां ने सांहा अथाग हो ।
 थोडों सो खडकों सांभलें, तो जाअें विशोदिस भाग हो ॥ ६ ॥
 गुल खांड आदि मिसटांन में, जीव चिहुं दिस दोड्या जाय हो ।
 माख्यां नें मांका फिर रह्या, ते तों हुचकें मांहोमा आय हो ॥ ७ ॥
 नाडों देखी नें आवें मेंसीयां, धान डूकें बकरा आय हो ।
 गाडें आवें बलद पाघरा, माटो आय उभी छें गाय हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पखी चूँ उकरली उपरे, उंदर पासें मिनकी जाय हो ।
 माखी ने माका पकड ले, साधु किणने वचावें छोडाय हो ॥ ९ ॥
 भेस्यां हाकल्यां नाडा माहिलां, सगलां रें साता थाय हो ।
 बकरां ने अलमा कीयां, इंडादिक जीव ते वच जाय हो ॥ १० ॥
 थोडा सा बलदां ने हाकल्यां, तो न मरें अनंत काय हो ।
 पांणी फूंहारादिक किण विघ मरें, नेंडी आवण न दें गाय हो ॥ ११ ॥
 लट गीडोलादिक कुसले रहे, जो पंखी ने दीये उडाय हो ।
 मिनकी छछकार नसार दे, तो उंदर घर सोग न थाय हो ॥ १२ ॥
 मांका ने आवो पाछो करे, तो माखी उड नाडी जाय हो ।
 सावां रे सगला सारिषा, ते तों विचे न पडे जाय हो ॥ १३ ॥
 मिनकी धाकल उदर वचाय ले, माखी राखे माका ने धकाय हो ।
 ओर मरता देख राखें नही, यामें चूक पड्यो ते वताय हो ॥ १४ ॥
 साव पीहर बाजे छ काय नां, एक छोडावे तस काय हो ।
 पांच काय मरती राखें नही, तो पीहर किण विघ थाय हो ॥ १५ ॥
 रजुहरण लेई ने उ उठीयो, जोरी दावे दीयो छुडाय हो ।
 ग्यांन दरसन चारित मांहिलो, यारें वधीयो ते मोय वताय हो ॥ १६ ॥
 ग्यांन दरसन चारित तप विनां, ओर मुगिति रो नहीं उपाय हो ।
 छोड मेला उपगार संसार नां, तिण थी सद गति किण विघ जाय हो ॥ १७ ॥
 जितरा उपगार संसार नां, ते तो सगलाइ सावद्य जांग हो ।
 श्री जिण धर्म मे आवे नही, कूडी म करो तांग हो ॥ १८ ॥
 अग्यांनी रो ग्यानी कीया थकां, हुवो निरुचें पेलो रो उवार हो ।
 कीयो मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयो भव पार हो ॥ १९ ॥
 असंजती नें कीयो संजती, ते तों मोष तणा दलाल हो ।
 तपसी कर पार पोहचावीयो, तिण मेट्या सर्व हुवाल हो ॥ २० ॥
 ग्यात दरसन चारित ने तप, यारों करें कोइ उपगार हो ।
 आप तिरें पेलो उवरे, दोयां रो खेवो पार हो ॥ २१ ॥
 ए च्यार उपगार छें मोटका, तिणमे निरुचेई जांणों धर्म हो ।
 शेष रह्या कार्य संसार नां, तिण कीयां वंधती कर्म हो ॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

जीव दया छें उपरें, मुलगा तीन दिष्टंत ।
आगें विसतार करें जितों, ते सुणजो कर खंत ॥ १ ॥

ढाल

[सहेल्था ए वादो रुडा साध नें]

एक चोर चोरें धन पार को, वले दूजो हों चोरावें आगेंवाण ।
तीजों कोइ करें अनुमोदनां, ए तीनां रा हो खोटा किरतब जाण ।

भव जीवां तुमें जिण धर्म ओलखों* ॥ १ ॥

एक जीव हणें तसकाय ना, हणावे हो बीजों पर नां प्राण ।
तीजों पिण हरखे मारीयां, ए तीनूई हो जीव हिंसक जाण ॥ भ० २ ॥

एक कुसील सेवें हरष्यों थको, सेवाडे हो ते तो दूजे करण जोय ।

तीजों पिण भलो जाणें सेवीयां, ए तीनां रे हो कर्म तणों बंध होय ॥ ३ ॥

ए सगला नें सतगुर मिल्या, प्रतिबोध्या हो आंण्या मारग ठाय ।

किण किण जीवां नें साधां उधख्या, तिणरो सुणजो हो विवरा सुघ न्याय ॥ ४ ॥

चोर हिंसक नें कुसीलीया, यारें ताई रे दीवो साधां उपदेस ।

त्यांनें सावद्य रा निरवद कीया, एहवो छें हो जिण दया धर्म रेत ॥ ५ ॥

ग्यांन दरसण चारित तीनू तणों, साधां कीवो हो जिण थी उपगार ।

ते तो तिरण तारण हुआं तेहनां, उताख्या हो त्यांनें संसार थी पार ॥ ६ ॥

ए तो चोर तीनू समभ्यां थकां, धन रह्यो रे धणी नें कुसले खेम ।

हिंसक तीनू प्रतिबोधीयां, जीव बचीया हो कीवो मारण रो नेम ॥ ७ ॥

सील आदरीयो तेहनी, अस्त्री पडी हो कूआ माहें जाय ।

यारो पाप धर्म नहीं साध नें, रह्या मूंआ हो तीनू इविरत मांय ॥ ८ ॥

धन रो धणी राजी हुवों धन रह्यां, जीव बचीया हो ते पिण हरषत थाय ।

साध तिरण तारण नहीं तेहनां, नारी नें पिण हो नहीं डबोई आय ॥ ९ ॥

कोइ मूंढ मिथ्याती इम कहें, जीव बचीया हो धन रह्यो ते धर्म ।

तो उणरी सरथा रे लेखें, अखी मूंई हो तिणरा लागें कर्म ॥ १० ॥

जीव जीवें ते दया नहीं, मरें ते हो हिंसा मत जाण ।

मारण वाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तों दया गुण खाण ॥ ११ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

नीब आंबादिक विरष नी, किण ही कीबो हो वाढण रो नेम ।
 इविरत घटी तिण जीव नी, विरष उभो हो तिणरो धर्म केम ॥ १२ ॥
 सर ब्रह तलाव फोडण तणों, सुंस लेइ हो मेट्या आवता कर्म ।
 सर ब्रह तलाव भख्या रहें, तिण माहि हो नही जिणजी रो धर्म ॥ १३ ॥
 लाडू घेवर आदि पकवान नें, खाणा छोड्या हो आतम आंणी तिण ठाय ।
 बेंरग बध्यों तिण जीव रें, लाडू रह्यो हो तिणरो धर्म न थाय ॥ १४ ॥
 दव देवो गाम जलायवो, इत्यादिक हो सावच्च कार्य अनेक ।
 ए सर्व छोडावें समभाय नें, सगला री हो विच जाणों तूमें एक ॥ १५ ॥
 हिबें कोइक अग्यांनी इम कहें, छ काय काजें हो घां छां धर्म उपदेस ।
 एकण जीव नें समभावीयां, मिट जाए हो घणा जीवां रो कलेस ॥ १६ ॥
 छ काय घरे साता हुइ, एहवो भापे हो अण तीरथी धर्म ।
 त्यां भेद न पायो जिण धर्म रो, ते तो भूला हो उदें आयो मोह कर्म ॥ १७ ॥
 हिबें साध कहे तुमे सांभलो, छ काया रे हो साता किण विच थाय ।
 सुभ असुभ बांध्या ते भोगवे, नही पाम्यां हो त्यां मुगत उपाय ॥ १८ ॥
 हणवा सुंस कीया छ काय नां, तिणरे उलीया हो म्नेला असुभ कर्म पाप ।
 ग्यांनी जाणें साता हुई एहने, मिट गया हो जनम मरण संतोष ॥ १९ ॥
 साध तिरण तारण हुआ एहना, सिध गति में हो मेल्यों अविचल ठाम ।
 छ काय लारे भिल्लती रही, नही सभ्नीया हो तिणरा आतम काम ॥ २० ॥
 आगें अरिहंत अनंता हुआ, कहतां कहतां हो कदे नावे त्यांरो पार ।
 आप तिख्या ओरां ने तारीया, छ काया रे हो साता न हुइ लिगार ॥ २१ ॥
 एक पोतें बच्यो तें मरवा थकी, दूजे कीबो हो तिणरें जीवण रो उपाय ।
 तीजों पिण हरष्यों उण जीवीयां, यां तीनां में हो कुण सुघ गति जाय ॥ २२ ॥
 कुसले रह्यो तिणरे इविरत घटी नही, तो दूजा ने हो तुमें जाणजो एम ।
 भलो जाणें तिणरे विरत न नीपनी, ए तीनूंई हो सुघ गति जासी केम ॥ २३ ॥
 जीवीयां जीवायां भलो जाणीयां, ए तीनूंई हो करण सरीपा जाण ।
 कोइ चतुर होसी ते परखसी, अणसमझ्यां हो करसी तांणा तांण ॥ २४ ॥
 छ काया रो बांछें मरणो जीवणों, ते तो रहसी हो संसार मभार ।
 ग्यांन वरसण चारित तप भला, आदरीयां हो आदरायां खेवो पार ॥ २५ ॥

ढलल : ६

दुहल

पोतें हणें हणलवें नहीं, पर जीवलं नल प्रलण ।
 हणें जलणनैं भलो जलणें नहीं, ए नव कोटी पचखलण ॥ १ ॥
 ए अभय दलंन दयल कही, श्री जलण आगम मलय ।
 तो पलण द्दंघ उठलवीयों, जेंनी नलंन धरलय ॥ २ ॥
 अभय दलंन न ओलख्यो, दयल री खबर न कलय ।
 भोलल लोकलं आगलें, कूडल चोज लगलय ॥ ३ ॥
 कहें सलध बचलवें जीव नैं, ओरलं नैं कहें तूं बचलय ।
 भलें जलणें वचलयलं थकलं, पलण पूछ्यलं पलटे जलय ॥ ॡ ॥

ढलल

[जगत-गुरु तलसलल नन्दन वीर]

इण सलधलं रल भेष में जी, बोलें एहवी वलय ।
 म्हें पीहर छलं छ कलय नलं जी, जीव वचलवलं जलय ।
 चतुर नर समभो ग्यलंन वलचलर ॥ १ ॥
 एहवी करें परूपणल जी, बोलें बंध न होय ।
 पलट जलए पूछ्यलं थकलं जी, भोललं खबर न कोय ॥ चु० स० २ ॥
 पेट दुखे सो श्रलवकलं जी, जुदल हुवें जीव कलय ।
 सलध आयल तलण अवसरे जी, हलथ फेर्यलं सुख थलय ॥ ३ ॥
 सलध पचलख्यो देख नैं जी, गृहस्थ बोल्यल वलय ।
 थें हलथ फेरो पेट उपरें जी, जें श्रलवक जीवलं जलय ॥ ॡ ॥
 जब कहें हलथ न फेरणो जी, ए सलध नैं कल्पें नलय ।
 थें कहलतल जीव वचलवणो, तो बोल ने ददलो कलय ॥ ॡ ॥
 गोसलल नैं वीर वचलवीयो जी, तलणमें कहे छे धर्म ।
 सों श्रलवक नहीं वचलवीयलं, त्यलंरी सरधल रो नलकल्यों भर्म ॥ ६ ॥
 गोसलल रे करणें जी, लब्ध फोडी जगनलय ।
 सो श्रलवक मरतल देख नैं, ते कलय न फरो हलय ॥ ७ ॥
 धर्म कहे भगवंत नैं, पोतें कलय छोडी रीत ।
 सो श्रलवक नहीं वचलवीयलं, त्यलंरी कुण मलंनै परतीत ॥ ८ ॥

गोसाला ने वचावीयां मे, धर्म कहे साख्यात ।
 तो सों श्रावक नही वचावीयां, त्यांरी विगळी सरवा त्रात ॥ ९ ॥
 इम कहां जाव न ऊाजे, जब कूडी करें वकवाय ।
 हिवे साध कहें तुमे सांभलो जी, गोसाला रो न्याय ॥ १० ॥
 साध नें लब्द न फोडणी, कहां सूतर भगोती रे मांय ।
 पिण मोह कर्म वस राग थी जी, लीयो गोसालो वचाय ॥ ११ ॥
 छ लेस्या हूती जद वीर में जी, हूता आठूई कर्म ।
 छदमस्थ चूका तिण समें जी, मूर्ख थापे धर्म ॥ १२ ॥
 छदमस्थ चूक पड्यो तिकों जी, मुंढे आणे बोल ।
 निरवद कोइ म जाणजो जी, अकल हीया री खोल ॥ १३ ॥
 ज्युं आणंद श्रावक नें घरे जी, गोतम बोल्या कूड ।
 पडीया छदमस्थ चूक मे जी, सुघ हुवा वीर हजूर ॥ १४ ॥
 इम अवस उदे मोह आवीयो, नही टाल सक्या जगनाथ ।
 ते तो न्याय न जांणीयो, त्यांरे मांहे मूल मिथ्यात ॥ १५ ॥
 गोसाला ने नही वचावता तो, घटतो अछेरो एक ।
 निरुचे होणहार टले नहीं जी, समभो आंण ववेक ॥ १६ ॥
 गोसाला नें वचावीयो तो, वधीवो घणों मिथ्यात ।
 लोहीठाण, कीयो भगवंत नें, वले दोग साधां री घात ॥ १७ ॥
 गोसाला ने वचावीयां में, धर्म जाणें ए सांम ।
 तो दोग साध वचावत आपणा, वले करता ओहिज कांम ॥ १८ ॥
 गोसाला नें वचायने जी, धर्म जाणें जिणराय ।
 दोग साध न राख्या आपणा, यो किण विघ मिलसी न्याय ॥ १९ ॥
 जगत नें मरता देख नें जी, आडा न दीघा हाथ ।
 धर्म जाणें तो आगो न काढतां, अें तिरण तारण जगनाथ ॥ २० ॥
 ए विवरा सुघ वतावीयो जी, सूतर भगोती रे न्याय ।
 कुबर्दी करें कदागरों जी, सुबुधी री आवे दाय ॥ २१ ॥
 साधां रा मुख आगळें, पंखी पडीयो माला थी आय ।
 कहे मेहलां ठिकाणे हाथ सूं तो, दया रहें घट मांय ॥ २२ ॥
 तपसी श्रावक उपासरे जी, काउसग दीयो ठाय ।
 तांगी मिरगी आय ढहि पखो जी, गावड भागे जीव जाय ॥ २३ ॥
 कोइ गृहस्थ आंण ने कहें जी, थे मोटां मुनिराज ।
 धें वेठें न कख्यो एहने जी, ओ मर छे गावड भांज ॥ २४ ॥

जब तो कहें मूँ साव छां जी, श्रावक बेठों करां केम ।
 मांहेरे काम काई गृहस्थ सूं जी, बोलें पाघरा एम ॥ २५ ॥
 श्रावक बेठों करें नहीं जी, पंखी मेले माला मांय ।
 देखो पूरो अंधारों एहनें जी, ए चोडें भूला जाय ॥ २६ ॥
 पंखी माला में मेळतां जी, सके नहीं मन मांय ।
 तो श्रावक नें बेठों कीयां में, घर्म न सरघे कांय ॥ २७ ॥
 इतरी समझ पडे नहीं, त्यांनं समकत आवे केम ।
 छकीया मोह मिथ्यात में, बोलें मतवाला जेम ॥ २८ ॥
 कहें साव नें उंदर छोडावणो जी, मिनकी पाछें जाय ।
 श्रावक नें बेठों करें नहीं, अं किण विव मिलसी न्याय ॥ २९ ॥
 मुंसादिक वचावतां जी, मिनकी नें दुख घाय ।
 श्रावक नें बेठां कीयां जी, नहीं किण रे अंतराय ॥ ३० ॥
 मुंसादिक नें कारणें जी, मिनकी नें न्हसावे डराय ।
 श्रावक मरें मुख आगलें, बेठों न करें हाय संभाय ॥ ३१ ॥
 ए प्रतख वात मिलें नहीं जी, तावडा छांया जेम ।
 श्री जिण मारग ओलख्यों, त्यारें हिरवे वेंसें केम ॥ ३२ ॥
 लाय लागें तो दांडां खोल नें, साव काडें उघाडें दुवार ।
 श्रावक नें बेठों करें नहीं, या सरवा करसी खुवार ॥ ३३ ॥
 दांडां नें तो खोलतां जी, खप घणी छें ताय ।
 सों श्रावक हाय फेख्यां वचें, त्यांरी नांणे काई मन मांय ॥ ३४ ॥
 कहें दांडां खोल वचावसां, पिण श्रावक रें न फेरं हाय ।
 एह अग्यांनी जीव री जी, कोइ मूर्ख मानें वात ॥ ३५ ॥
 गाडा नीचें आवें डावडों, कहें साव ने लेणों उजाय ।
 श्रावक नें बेठो करे नहीं, ओ उघें पंथ इण न्याय ॥ ३६ ॥
 रिंत वरसाला नें समें जी, जीव घणा छें ताय ।
 लटां गजायां नें कातरा जी, पडीया मारग मांय ॥ ३७ ॥
 साव वारे नीकल्या जी, जोय जोय मूकें पाय ।
 लारें दांडां देख्या आवतां, पिण साव न लेवें उजाय ॥ ३८ ॥
 जे वालक लेवें उजाय नें, यां जीवां नें न ले उजाय ।
 तो उणरी सरवा रें लेवें, उणरे दया नहीं घट मांय ॥ ३९ ॥
 जो वालक नें लेवें उजाय नें, जोर जीव देखी ले नांय ।
 इण सरवा री करजों पारिखो, कोइ रखे पडों फंद माय ॥ ४० ॥

ढाल : ७

दुहा

मछ गलागल लोक में, सबला ते निबलां नें खाय ।
 तिण में घर्म परूपीयो, कुगुरां कुबुद्ध चलाय ॥ १ ॥
 मूला जमीकंद खवावीयां, कहें छें मिश्र घर्म ।
 आ सरवा पावंड्यां री आदर्यां, जाडा बंधसी कर्म ॥ २ ॥
 मूला खवायां पांणी पावीयां, ओर सचित्तादिक अनेक ।
 खावा खवायां भलो जांणीयां, यां तीनां री विघ एक ॥ ३ ॥
 ए तो न्याय न जांणीयो, उजड पडीया अजाण ।
 करण जोग विगटावीया, अे मिध्यादिष्टी अेंलाण ॥ ४ ॥
 कुहेत लगाए लोक नें, हिंसा घर्म भाषंत ।
 हिंवे सात दिष्टत साघ कहे, ते सुणजो घर खंत ॥ ५ ॥
 मूला पांणी अघ नों, चोथो हूका रो जाण ।
 तस जीव कलेवर तस तणों, सातमो मिनष वखाण ॥ ६ ॥
 यामें तीन दिष्टत करडा कह्या, जाणे अग्यानी विरुध ।
 समदिष्टी जिण घर्म ओलख्यो, ते न्याय सूं जाणे सुध ॥ ७ ॥
 केसी कुमर दिष्टंत करडा कह्या, तो छोडी प्रदेसी रुध ।
 न्याय मेले हुवो समकती, भगडो भाले ते मूढ ॥ ८ ॥
 जिणरी बुध छे निरमली, ते लेसी न्याय विचार ।
 सुणे भारीकर्मा जीवडा, तो लडवा ने छे तयार ॥ ९ ॥
 ए सात दिष्टंत धुर सूं चले, आगें घणों विसतार ।
 भिन भिन भवियण सांभलो, अंतर आख उघाड ॥ १० ॥

ढाल

[वीर सुखो मोरी वीनती]

मूला खवायां मिश्र कहें, लगावे हो खोटा दिष्टंत एह ।
 कहे पाप लागो मूलां तणो, घर्म हूवो हो खावां बचीया एह ।
 भवियण जिण घर्म ओलखो* ॥ १ ॥
 कहे कूआ वाव खणावीयां, हिंसा हूइ हो तिणरा लाग कर्म ।
 लोक पीये कुसले रह्यां, साता पामी हो तिणरो हूवो घर्म ॥ भ० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

इम कहें मिश्र परूपतां, नहीं संके हो करता बकवाय ।
 इण सरधा रो प्रश्न पूछीयां, जाब नावें हो जब लोक लाय ॥ ३ ॥
 हिवें सात दिष्टंत री थापनां, त्यांरी सुणजो हो विवरां सुध बात ।
 निरणो करजों घट भितरें, बुधवंता हो छोड नें पखपात ॥ ४ ॥
 सो भिनषां नें मरता राखीया, मूला गाजर हो जमीकंद खवाय ।
 वले कुसले राख्या सो मानवी, काचो पांणी हो त्यानें अणगल पाय ॥ ५ ॥
 पोह माह महीनें ठारी परें, तिण काले हो वाजें शीतल वाय ।
 अचेत पख्या सो मानवी, मरता राख्या हो त्यानें अग्न लाय ॥ ६ ॥
 पेट दुखें तलफल करें, जीव दोरो हो करे हाय विराय ।
 साता वपराइ सो जणा, मरता राख्या हो त्यानें होको पाय ॥ ७ ॥
 सो जणा दुरभख काल में, अन्न विनां हो मरें उजाड माय ।
 कोइ एक मारें तसकाय ने, सो जणा नें हो मरता राख्या जीमाय ॥ ८ ॥
 किण ही कालें अन्न विनां, सो जणा रा हो जुदा हुवें जीव काय ।
 सहजें कलेवर मूंघो पड्यो, कुसले राख्या हो त्यानें एह खवाय ॥ ९ ॥
 मरता देखी सो रोगला, ममाइ विण हो ते तो साजा न थाय ।
 कोइ ममाइ कर एक भिनष री, सो जणां रे हो साता कीची बचाय ॥ १० ॥
 जमीकंद खवायां पांणी पावीयां, त्यामें थापें हो धर्म ने पाप दोय ।
 तो अगन लगायां होको पावीयां, इत्यादिक हो सगले मिश्र होय ॥ ११ ॥
 जो धर्म सरखे बचीया तिकों, हिसा तिणरा हो लाग जाणे कर्म ।
 तो सातूंई सारिषा लेखवे, कहि देणों हो सगलें पाप नें धर्म ॥ १२ ॥
 जो सातां में मिश्र कहे नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्या री परतीत ।
 आप थापें आप उथपें, तो कुण मानें हो आ सरधा विपरीत ॥ १३ ॥
 जो सातांइ में मिश्र कहे, तो नही लागें हो गमती लोकां ने बात ।
 मिलती कह्यां विण तेहनीं, कुण करे हो कूडां री पखपात ॥ १४ ॥
 एक दोय बोलां में मिश्र कहे, सगलां में हो कहितां लाजें मूढ ।
 एहवो उलटों पंथ भालीयो, त्यांरें केडें हो तांणें मूर्ख ह्द ॥ १५ ॥
 सो सो भिनष सगलें बच्या, थोडी घणी हो सगलें हुइ घात ।
 जो धर्म बरोबर न लेखवें, तो उथप गई हो मूला पांणी री बात ॥ १६ ॥
 बात उथपती जाण नें, कदा कहिदें हो सगलें पाप नें धर्म ।
 पिण समदिष्टी सरखे नही, ए तों काढ्यो हो खोटी सरधा रो भर्म ॥ १७ ॥
 असंजती रों मरणो जीवणो, बंछा कीचां हो निह्वें राग नें धेप ।
 ओ धर्म नहीं जिण भाखियो, सांतो हुवें तो हो अंग उपंग देख ॥ १८ ॥

काच तणा देखी मिणकला, अण समभा हो जाणे रतन अपोल ।
 ते निजर पड्यो सराफ री, कर दीघो हो त्यांरो कोड्या मोल ॥ १६ ॥
 मूला खवायां मिश्र कहे, या सरधा हो काच मणी समान ।
 तो पिण भाली रतन अमोल ज्युं, न्याय नं सूझे हो चाला कर्मां रा जाण ॥ २० ॥
 जीव मारें भूठ वोल ने, चोरी करने हो पर जीव वचाय ।
 वले करें अकार्य एहवा, मरता राख्या हो मइथुन सेवाय ॥ २१ ॥
 घन दे राखें पर प्राण ने, क्रोवादिक हो अठारे सेवाय ।
 ए सावद्य कांम पोते करी, पर जीवा ने हो मरता राखें ताय ॥ २२ ॥
 जो हिंसा करे जीव राखीयां, तिणमें होसी हो धर्म ने पाप दाय ।
 तो इम अठारेंड जाणजो, ए चरचा में हो विरलो समभे कोय ॥ २३ ॥
 जो एकण में मिश्र कहे, सतरां में हो भापा बोले ओर ।
 उबी सरधा रों न्याय मिलें नही, जव उलटी हो कर उठे भोड ॥ २४ ॥
 जीव मारें जीव राखणा, सूतर में हो नही भगवत वेंण ।
 उंधो पंथ कुगरा चलावीयो, सुघ न सूफे हो फूट अतर नेण ॥ २५ ॥
 कोइ जीवता मिनप तिर्यच नां, होम करे हो जुघ जीतण संगराम ।
 एक तो ओ पाप मोटको, जीव होम्या हो वीजों सावद्य कांम ॥ २६ ॥
 कोइ नाहर कसाइ मार नें, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक ।
 जो गिणें दोग्यां ने सारिषा, त्यारी विगडी हो सरधा वात ववेक ॥ २७ ॥
 पेहला कहिता जीव वचावणा, तिण लेखें हो बोले सुघ न कांय ।
 जीव वचीया रों धर्म गिणें नही, खिण थापें हो खिण में फिर जांय ॥ २८ ॥
 देवल घजा तेहनी परे, फिरता बोले हो न रहे एकण ठाम ।
 त्यांनै पापडी जिण कह्या, भगडो भाल्यो हो नही चरचा रोकांम ॥ २९ ॥
 जो एकण नें अवर्म कहे, तो दूजा ने हो कहणो धर्म ने पाप ।
 ए लेखो कीयां तो लड पडे, त्यांरा घट मे हो खोटी सरधा री थाप ॥ ३० ॥
 वले सरणो लेइ श्रेणक तणो, सावद्य बोले हो तिणरी खबर न काय ।
 जोरी दावे पेला नें बरजीया, तिण मांहे हो जिण धर्म बताय ॥ ३१ ॥
 कहे श्रेणक फडहो फेरावियो, हणों मती हो फेरी नगरी मे आण ।
 तिण मोष हेते धर्म जांणीधों, एहवो भावे हो मिथ्या विष्टि अजाण ॥ ३२ ॥
 कहे राय श्रेणक तो समक्ती, धर्म विनां हो किम करसी ए काम ।
 इम कहि कहि भोला लोक नें, फंद में न्हाखे हो श्रेणक रो ले नाम ॥ ३३ ॥
 श्रेणक नें करे मुख आगले, आह्मी साह्मी हो माडे खांचा ताण ।
 आप छारें उटकां मेलतां, कुण पाले हो श्री जिणवर आण ॥ ३४ ॥

समदिष्टी तर्णों कोइ नाम ले, भरमावे हो अणसमइया अजाण ।
 तो सकंद्र समदिष्टि देवता, जिण भगता हो एका अवतारी जाण ॥ ३३ ॥
 ते मीढ आए कोणक तणी, जुष कीषा हो तिण सावध जाण ।
 एक कोड -असी लाख उपरें, मिनषां रो हो कर दीयो घमसांण ॥ ३६ ॥
 श्रेणक राय फड्हो फेरावीयो, ए तो जाणो हो मोटां -राजां रो रीत ।
 भगवंत न सरायो तेहनें, तो किम आवें हो तिणरी परतीत ॥ ३७ ॥
 फड्हो फेख्यों हणो मती, इतरी छें हो सूतर में बात ।
 कोइ धर्म कहें श्रेणक भणी, ते तो बोलें हो चोडें भूठ -विख्यात ॥ ३८ ॥
 लोकां सूं मिलती बात जाण नें, कर रह्या हो कूडी बकवाय ।
 मिश्र कहे ते पिण अटकलां, साचा हुवें तो हो सूतर मे दे बताय ॥ ३९ ॥
 ए तो पुत्रादिक जायां परणीयां, ओछवादिक हो ओरी सीतला जाण ।
 एहवो कारण कोइ उपजे, श्रेणक राजा हो फेरी नगरी में आण ॥ ४० ॥
 ते रूकीया नहीं कर्म आवतां, नही कटीया हो तिणरा आगला कर्म ।
 नरक जातो रह्यो नही, न सीखायो हो तिणनें भगवंत धर्म ॥ ४१ ॥
 भगवते मोटा मोटा -राजवी, प्रतिबोध्या हो आप्या मारा ठाय ।
 साध श्रावक धर्म बतावीयो, न सीखायो हो फड्हो फेरयो ताय ॥ ४२ ॥
 तो श्रेणक सीख्यो किण आगलें, भगवंत हो -पूछ्या -साझे मून ।
 बले न जणावें आंमना, आग्या विण हो करणी जाणो जबून ॥ ४३ ॥
 वासुदेव चक्रवत मोटकां, त्यांरी वरती हो तीन छ खंड में आण ।
 जो फड्हो फेख्यां मुगत मिले, तो कुण काडें हो आषो जिण धर्म जाण ॥ ४४ ॥
 कोउ रांगण दीवादिक सिनांन नें, विसन-सातू हो विना मन दे छोडाय ।
 जो इण विघ जिण धर्म नीपजे, तो छ खंड मे हो वरजे आंण फेराय ॥ ४५ ॥
 फल फूल अनंत काय ने, हिसादिक हो अठारें पाप नें जाण ।
 जोरी दावें पेंला नें मना कीयां, धर्म हुवे तो हो फेरे छ खंड में आण ॥ ४६ ॥
 तीर्थकर घर मे थकां, त्यांने हुता हो तीन ग्यान वडोप ।
 हाल हुकम थो लोक में, त्या नही फेख्यो हो फड्हो सूतर देख ॥ ४७ ॥
 बल देवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पाप पचखाण ।
 श्रेणक जिम फड्हो न फेरीयो, जोरी दावे हो न वरताइ आण ॥ ४८ ॥
 ब्रह्मदत्त चक्रवत तेहने, चित्त मुनी हो प्रतिबोधण आय ।
 साध श्रावक नो धर्म कहां, फड्हारी हो न कही आंमना काय ॥ ४९ ॥
 बीसां भेदां रूकें कर्म आवतां, बारें भेदा हो कटें आगला कर्म ।
 ए मोष रा मारग पाधरा, छोडा मेला हो सगला पापंड धर्म ॥ ५० ॥

दोय वेस्या कसाइवाडें गइ, करता देख्या हो जीवां रा संघार ।
 दोनूं जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव एक हजार ॥ ५१ ॥
 एकण गेंहणो देइ आपणो, तिण छोडाया हो जीव एक हजार ।
 दूजी छोडाया इण विधे, एकां दोया हो चोथो आश्रव सेवार ॥ ५२ ॥
 एकण नें पापडी मिश्र कहे, तो दूजी ने हो पाप किण विघ होय ।
 जीव बरोबर बचावीया, फेर पडीयो हो ते तो पाप में जोय ॥ ५३ ॥
 एकण सेबायो आश्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेबाय ।
 फेर पड्यो तो इण पाप में, धर्म होसी हो ते तो सरीषो थाय ॥ ५४ ॥
 एकण ने धर्म कहितां लाजें नही, दूजोडी नें हो कहितां आवे संक ।
 जब लोकां सूं करे लगावणी, एहवो जाणो हो चोडे कुगुरां रा डंक ॥ ५५ ॥
 एक वेस्या सावद्य कांमो करी, सहस्र नांणो हो ले वडी घर मांय ।
 दूजी किरतव करी आपणा, मरता राख्या हो सहस्र जीव छोडांय ॥ ५६ ॥
 धन आय्यो खोटा किरतव करी, तिणरें लागा हो दोनूं विघ कर्म ।
 दूजी जीव छोडाया तेहने, उण लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥ ५७ ॥
 पाप गिणें मइथुन मे, जीव बचीयां हो तिणरो न गिणे धर्म ।
 पोतें सरधा री खबर पोते नही, ताणे ताणे हो वाचे भारी कर्म ॥ ५८ ॥
 ए प्रश्नां रो जाव न उपजे चरचा मे हो अटके ठाम ठाम ।
 तो पिण निरणो करे नही, वक उठे हो जीवां रो ले नांम ॥ ५९ ॥
 जीव जीवे काल अनाद रो, मरे तेहनीं हो पर्याय पलटी जांण ।
 संवर निरजरा तो न्यारा कहाा, ते ले जावें हो जीव ने निरवांण ॥ ६० ॥
 पृथवी पांणी अग्न वाय ने, वनस्पति हो छठी तसकाय ।
 मोल ले ले छोडावें तेहने, धर्म होसी हो ते तों सगलां में थाय ॥ ६१ ॥
 तसकाय छोडायां धर्म कहे, पांच काय में हो नहीं बोलें निसक ।
 भर्म में पाड्या लोक ने, त्यां लाया हो मिथ्यात रा डक ॥ ६२ ॥
 त्रिविधे त्रिविधे छकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंत री वाय ।
 मोल लीयां कर्म कहे मोष रो, ए फंद माड्यो हो कुगुरां कुबद चलाय ॥ ६३ ॥
 देव गुर धर्म रतन तीनूं, सूतर में हो जिण भाष्या अमोल ।
 मोल लीयां नही नीपजें, साची सरखो हो आंख हिया री खोल ॥ ६४ ॥
 ग्यान दरसण चारित नें तप, मोष जावा हो मारण छें च्यार ।
 त्याने भिन भिन ओलखे आदरें, सुष पालें हो ते पामे भव पार ॥ ६५ ॥

ढाल : ८

डुहा

दया दया सहको कहें, ते दया बर्न छें ठीक ।
 दया बोल्ख नें पान्नी, त्यांनै मुगत नगीक ॥ १ ॥
 आ दया तो पहिलो व्रत छें, साव श्रावक नौ बर्न ।
 पाप रकें तिण सूं वादता, नवा न लणें कर्न ॥ २ ॥
 छु कय हणायें नहीं, हणीयां भलो न जानें दाय ।
 मन बचन काया करी, आ दया रही जिनराय ॥ ३ ॥
 आ दया चोखें चित्त पालीयां, तिरें घोर खर संसार ।
 बले आहीज दया पलनै, भव जीवां उतारें पार ॥ ४ ॥
 एक नाम दया लोकीक री, तिजरा भेद अनेक ।
 तिगनें भेषवारी भूजा घना, ते सुगर्जो जांग बदेक ॥ ५ ॥

ढाल

[प्रकंड नत रां निरखीं कीजं]

दवे लाय लागीं भावे लाय लागीं, दवे कूबो नें भावे कूबो ।
 ए भेद न जांगें मूंड मिय्याती, संसार नें मुगत रो मारण बूजे ।
 भेष घर नें भूजा रो निरखीं कीजे ॥ १ ॥
 कोइ दवे लाय सूं बल्लतों राखें, दवे कूबो पडता नें भाल बचायों ।
 ओं तो उगार कीयो इण भव रो, जो वदेक विदल त्यांनै खर न कायो ॥ २ ॥
 घट नें ग्यान बाल नें पाप पचखावें, तिग पडतो राख्यो भव कूबा मांहीं ।
 भावे लाय सूं बल्ला नें काठें रिपेखर, ते पिग सहेलां भेद न पायो ॥ ३ ॥
 सूनै चित्त सूतर खाचे निध्याती, त्यारे दव नें नाव रा नहीं निवेरा ।
 पिरवार सहीत कुपथ में पडीअ, त्यां नरक सूं सनसुल दीया डेरा ॥ ४ ॥
 गृहस्थ नें औपव भेषद देइ नें, अनेक उपाय करे जीवां बचावें ।
 ए संसार तपा उपगार कीयां में, मुगत रो मारण मूंड ब्यावें ॥ ५ ॥
 करे नितर जंतर भाडा नें न्यटा, सरपादिक नौं जेहर देवें उतारी ।
 काठें डाकण सांकण भूत जपादिक, तिगमेंड बर्न कहें सांगवारी ॥ ६ ॥
 एहवा किरतव सावध जाणें, त्रिविधे त्रिविधे तावां त्याग कीवें ।
 भेषवारी लोकां सूं मिल्लें अयांनी, त्यां जीव बचावन रो सरगो लीवें ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाय के अन्त में है ।

उवे जीव बचावण रो मुख सूं कहें पिण, कांम पड्यां बोलें फिरती वाणों ।
 भोला नें भर्म में पाड विगोया, ते पिण डूवें छे कर कर तांणो ॥ ८ ॥
 कीड्यां मकोडा नें लटां गजायां, ढांढां रा पग हेठें चींध्या जावे ।
 भेषघारी कहे म्हें जीव बचावां, तो चुण चुण जीवां ने क्यूं न बचावें ॥ ९ ॥
 कोइ आखो चोमासो उपदेस देवें तो, दण पांच जीवां नें दोहरा समभावें ।
 जो उच्चम करें च्यार महीनां माहे, तो लाखां गमे जीव तेह बचावें ॥ १० ॥
 सो घर रे आंतर कोइ लेवे संधारों, तो तुरत आलस छोडी देवण जावें ।
 सो पगलां गयां जीव लाखां वचें छे, त्यां जीवां नें जाए क्यूं न बचावें ॥ ११ ॥
 घर छोडतों जाणे सो कांसों उपरें, तो सांग पेहरावण सताब सूं जावें ।
 एक कोस गयां जीव कोडां वचे छें, त्यां जीवां जाय क्यूं न बचावें ॥ १२ ॥
 जब तो कहें म्हारो कल्प नहीं छे, म्हें तो संसार सूं हूआ न्यारा ।
 कव ही कहे म्हें जीव बचावां, उवे वांणी न वोलें एकण धारा ॥ १३ ॥
 साव तो आपरा व्रत राखण नें, त्रिविध त्रिविध जीव नही सतावें ।
 संसार माहे जीव पच रह्या छे, त्यांसूं तो साव हुव निरदावे ।
 जीवणों मरणों त्यांरो नही चावें, आ सरवा जिणवर भ्राखी ॥ १४ ॥
 ग्यानादिक गुण घट माहे घाले, समभ्रतो देखें तो साध समभावें ।
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव आवें तो, मुगतनगर मे साव पोहचावे ॥ १५ ॥
 ते पिण जीव बचावण काजें, भेषघारी कहें म्हे तुरत वतावां ।
 इविरती जीवां रो जीवणो वांछें, म्हे सर्व जीवां रों जीवणो चावां ॥ १६ ॥
 आ सरवा अग्यानी री पग पग अटके, तिण भर्म रो परमारथ नही पायो ।
 गृहस्थ रे तेल जाअें मूण फूटां, ते सांभलजों भवियण चित ल्यायो ॥ १७ ॥
 बिच मे जीव आवे ते तेल सूं वहिता, ते कीड्या रा दर माहे रेलो आवे ।
 जो अन्न उठें तो लाय लागें छे, वले तेल बुहो बुहो अगनि में जावें ॥ १८ ॥
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव वतावे, तो तस थावर जीव माख्या जावें ।
 पग सूं मरता जीव वतावें, तो तेल डूळें ते बासण क्यूं न वतावें ॥ १९ ॥
 आ खोटी सरवा उघाडो दीसैं, तेल सूं मरता जीवां नें नही वतावें ।
 वले भेषघारी विहार करतां मारग में, पिण अभितर आंघां रे निजर न आवें ॥ २० ॥
 ते मारग छोड नें उज्जड पडीयां, त्यानें श्रावक साह्यां मिलीया आयो ।
 श्रावकां ने उज्जड पडीयां जाणें, तस थावर जीवां नें चीथता जायो ॥ २१ ॥
 गृहस्थ रा पग हेठे जीव वतावे, तस थावर जीवां नें मरता देखें ।
 तो मारग बताय देणो इण लेखें ॥ २२ ॥

एक पग हेठें जीव मरें ते बतावें,
 श्रावकां नें उज्जड सूं मारग घाल्या,
 एक पग हेठें जीव बचावे अग्यांनी,
 त्यांनै श्रावक उजाड में मारग पूछें तो,
 थोडी दूर बतायां थोडो धर्म हुवें तो,
 घणी दूर रों नांम लीयां बक उठे,
 कोइ आंधो पुरुष गामांतरें जातां,
 कीड्यां माकादिक चीथतो जावें,
 भेषधारी संहजाइ साथे जातां,
 जो पग पग जीवां नें नहीं बतावें,
 त्यांनै बताय बताय नें जीव बचावणा,
 इण धर्म करण सूं तो पोतेंइ लाजें,
 वले इल्यां सुल सलीयां सहीत आटो छे,
 तपती रेत उनाला री तिण में,
 गृहस्थ्यं नहीं देखे आटो दुलतों,
 उवे पग सूं मरता जीव बतावें,
 इत्यादिक गृहस्थ्य रा अनेक उपध सूं,
 ते पग हेठें जीव बतावें त्यांनै,
 किण हीक ठोडें जीव बतावें,
 समझ पड्यां विण सरघा परूपें,
 ए पग पग जाव अटकता देखे,
 कूड कपट करे मत कुसले राखण नें,
 गृहस्थ्य रों न वांछणों जीवणो मरणों,
 राग धेष रहीत रहिणो निरदावे,
 समोसरण ते एक जोजन मांडला में,
 अरिहंत आगें वाणी सुणवा त्यांनै,
 च्यार कोस माहे तस थावर हुंता,
 नर नाख्यां रा पगां सूं विण उपीयोगे,
 नंद मिणीयारो डेडकों हुय नें,
 तिणें चीथ माख्यो श्रेणक रे वछेरे,
 गृहस्थ्य रा पग हेठे जीव आवे ते,
 भारी कर्मां लोकां नें मिष्ट करण नें,

तो थोडा सा जीवां नें बचता जाणो ।
 घणां जीव वचें तस थावर प्राणो ॥ २३ ॥
 ठाला बादल अंबर ज्यूं गाजें ।
 मोन सामे बोलता कांय लाजें ॥ २४ ॥
 घणी दूर बतायां घणो धर्म जाणों ।
 त्यांरी खोटी सरघा रो ए अहंलाणो ॥ २५ ॥
 ऊ आंख चिनां जीव किण विध जोवें ।
 तस थावर जीवां रो घमसाण होवें ॥ २६ ॥
 आंधां रा पग सूं जीव मरता देखें ।
 तो खोटी सरघा जाणजों इण लेखें ॥ २७ ॥
 कें पूंजी पूंजी नें करणा दूरो ।
 तो दूजें कुण मानसी यो मत कूडो ॥ २८ ॥
 ते गृहस्थ्य रे दुलें मारग मांयो ।
 ते परत पांण जुदा हुवें जीव कायो ॥ २९ ॥
 ते भेषघाख्यां री निजख्या आवे ।
 आटे दुलतें मरता जीव क्यूं न बतावें ॥ ३० ॥
 तस थावर जीव मंवा नें मरसी ।
 सगली ठोड बतावणां पडसी ॥ ३१ ॥
 किण हीक ठोड संका मन आणें ।
 पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं ताणें ॥ ३२ ॥
 कदा सर्व आरे हुवें अग्यांनी थूलो ।
 पिण बुधवंत बात न मानें मूलो ॥ ३३ ॥
 ते वाछें बतायां लागें पाप कर्मां ।
 एहवां निकेवल श्री जिण घर्मां ॥ ३४ ॥
 तठें नर नाख्यां रा व्रंद आवें नें जावें ।
 भगवत भिन भिन भाव सुणावे ॥ ३५ ॥
 मर गया जीव उराणें आया ।
 पिण भगवत कठेय न दीसे बताया ॥ ३६ ॥
 वीर बांदण जांतो मारग मायां ।
 वीर साघ साह्यां महली क्यूं न बचायो ॥ ३७ ॥
 साधां नें बतावणां कठेय न चाल्यो ।
 ओ पिण घोचो कुंगुरा रो घाल्यो ॥ ३८ ॥

जव साधां रो नांम तो अलगां मेले,
साव सूं मरता जीव साव बतावें,
सिधंत रा बल विण बोलें अग्यानी,
अं गालां रा गोला मुख सूं चलाया,
साधां रा पग हेठे जीव मरे ते,
तो अरिहत नी आग्या लोपावें,
साव तो साधां ने जीव बतावें,
श्रावक श्रावकां ने जीव नही बतावें,
श्रावक श्रावकां ने न बतायां पाप लागो कहे,
श्रावकां रें सभोग साधा ज्यूं हुवें तो,
पाट बाजोटादिक साव बारे मेले,
लारें ओर साव त्यानं भोजतो देखें,
रोगी गरढा गिलाण साव री वीयावच,
महा मोहणी कर्म तणो बंध पाडें,
आहार पांणी साव वेहरे आणें,
आप आण्यो जाण इधिको लेवें तो,
इत्यादिक साव साध रे अनेक बोलां रो,
याहिज बोलां रो श्रावक श्रावकां रे,
श्रावकां रे सभोग साधां ज्यूं हुवें तो,
ए सरधा रो निरणों न काडें अग्यानी,
जो ए श्रावक श्रावकां रा नही करें तो,
त्यां श्रावकां रें सभोग साधां ज्यूं परुप्यो,
श्रावक रें सभोग तो श्रावक सूं छे,
त्यांरो सभोग तो अविरत में छें,
त्यांसूं सरीरादिक रो सभोग टाले नें,
उपदेस देइ निरदावे रहिणो,
लाय लागी जो गृहस्थ देखे तो,
ए सावद्य किरतव लोक करे छें,
अगन पांणी छे काय मूई त्यांरों,
ओर जीव वच्या त्यारो धर्म बतावे,
ए पाप नें धर्म रो मिश्र परुपे,
त्यां भेषधाख्यां री परतीत आवे तो,
६६

श्रावकां री चरचा मुख ल्यावे ।
ज्यूं श्रावक श्रावकां नें जीव बतावे ॥ ३९ ॥
श्रावका रो सभोग साधां ज्यूं बतायो ।
ते न्याय मुणो भवीयण चित्त ल्यायो ॥ ४० ॥
सभोगी साव देखी जो नहीं बतावे ।
पाप लागो नें विराधक थावें ॥ ४१ ॥
ते पोता रो पाप टलावण रे काजे ।
तो किसो पाप लागो किसो वरत भाजें ॥ ४२ ॥
ओ भेषधाख्यां मत काढ्यो कूडो ।
पग पग बंध जायें पाप रा पुरो ॥ ४३ ॥
ठरळें मातरादिक कारज जावे ।
जो ओ न ल्यावें तो प्राच्छित्त आवे ॥ ४४ ॥
साव न करे तो श्री जिण आगना बारें ।
इह लोक नें परलोक दोनूं बिगाडे ॥ ४५ ॥
संभोगी साव नें बांटे देवा री रीतों ।
अदत्त लागें ने जायें परतीतो ॥ ४६ ॥
संभोगी साव सूं न कीयां अटकें मोषो ।
न करे तो मूल न लागें दोषो ॥ ४७ ॥
श्रावक श्रावकां नें पिणइण विव करणों ।
त्यां वितल थइ लीयो लोकां रो सरणों ॥ ४८ ॥
भेषधाख्यां रे लेखें भागल जाणो ।
ते पड गया मूर्ख जलटी तांणो ॥ ४९ ॥
बले मिथ्याती सूं राखें भेलापो ।
ते त्याग कीया सूं टलसी पापो ॥ ५० ॥
ग्यांनादिक गुण रो राखें भेलापो ।
पॅलो समभे नें टाळें तो टलसी पापो ॥ ५१ ॥
सुरत बुभ्रवें छे काय नें मारी ।
तिण माहिं धर्म कहे सांग्घारी ॥ ५२ ॥
थोडो सो पाप कहे हुवें कानी ।
लाय बुभावण री करें सानी ॥ ५३ ॥
तोटा विचें लाभ घणों बतावे ।
लाय बुभावण दोख्या जावें ॥ ५४ ॥

ढलल : ६

दुहल

जीव हलसल छे अतल वुरल, तलण मलहें ओगुण अनेक ।
दयल धर्म मे गुण घणल, ते सुणओ आंण ववेक ॥ १ ॥

ढलल

[ओ मल रे सीतल पतल आओ]

दयल भगुतल छे सुखदलई, ते मुगत पुरल नलं सलइ जी ।
सलठ नलंम दयल रल कहुल जलण, दसमलं अंग रे मलहल जी ।
दयल धर्म श्री जलणओ रल वलंणीः ॥ १ ॥

पूजणीक नलंम दयल रल भगुतल, मंगलीक नलंम छे नीकु जी ।
जे भव जीव आयल इण सरणे, तयलंन छें मुगत नओओ जी ॥ द० २ ॥

त्रलवलवे त्रलवलवे छु कलड न हणवल, आ दयल कहुल जलणरलयु जी ।
तलण दयल भगुतल रल गुण छे अनंतल, ते पूरल केम कहवलओ जी ॥ ३ ॥

त्रलवलवे त्रलवलवे छु कलड जीवल ने, भय नहुल उपओवे तलमओ जी ।
ए अमयदलन कहुओ भगवते, ए पलण दयल रल नलंमओ जी ॥ ॡ ॥

त्रलवलवे त्रलवलवे छु कलड मलरण रल, तयलग करे मन सुधे जी ।
आ पूरल दयल भगवते भलषल, तलण सूं पलप रल वलरण रुंवे जी ॥ ५ ॥

तयलग कलडल वलण हलंसल टलले, तओ कर्म नलरओरल थलयु जी ।
हलंसल टलल्यल सुभ ओग वरते छे, तलहलं पुन रल थलट वधलयु जी ॥ ६ ॥

इण दयल सू पलप कर्म रुक ओवे, वले कर्म करे चकचूरो जी ।
यलं दलय गुणल में अनंत गुण आयल, ते पललें छें वलरलल सूरो जी ॥ ७ ॥

आहुलओ दयल छे महलवरत पहलुओ, तलणमें दयल दयल सर्व आई जी ।
ते पूरल दयल तओ सलध जी पलले, वलकुल दयल रहल नहुल कलई जी ॥ ८ ॥

छु कलड नें हणें हणलवं नहुल, वले हणतलं ने नहुल सरलवे जी ।
इसओ दयल नलरतर पललें, तयलरे तुले वलओं कुण आवे जी ॥ ९ ॥

आहुलओ दयल ओखें वलत पलले, ते केवललयलं रल छे मलदल जी ।
आहुलओ दयल सभल में परुधे, तलणनें वलर कहुओ न्यलयवलदल जी ॥ १० ॥

आहुलओ दयल केवललयलं पललल, मन-परयव अवधल रयलंनल जी ।
वले मतल रयलंनल नें सुरत रयलंनल, आहुलओ दयल मन मलंनल जी ॥ ११ ॥

यह आंकड़ी प्रत्येक गथा के अन्त मे है ।

आहीज दया लब्ध धार्या पाली, आहीज पूर्व घर ग्यानी जी ।
 संका हुवें तो निसंक सूं जोवो, सूतर में नहीं छे बात छांनी जी ॥ १२ ॥
 देस थकी दया श्रावक पालें, तिणनें पिण साध बलाणें जी ।
 ते श्रावक हिंसा करें घर बेठां, पिण तिण माहें धर्म न जाणें जी ॥ १३ ॥
 प्राण भूत जीव नें सतव, त्यारी घात न करणी लिगारो जी ।
 या तीन काल नां तीर्थकर नीं वांणी, आचारंग चोथा अघेन मभारो जी ॥ १४ ॥
 मत हणों मत हणों कह्यो अरिहंतां, अं जीव हणे किण लेखें रे ।
 ज्यारी अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो न देखें रे ॥ १५ ॥
 जीवां री हिंसा छे महा दुखदाई, ते नरक तणी छे साई जी ।
 खोटा खोटा नाम तीस हिंसा रा, कह्या दसमां अंग रे माहि जी ।
 प्राण घात हिंसा छे खोटी, हिंसा धर्म कुगुरां री वांणी* ॥ १६ ॥
 तिण जीव हिंसा माहें अवगुण अनेक, ते सर्व जीव नें दुखदायो जी ।
 केइ कहें म्हें हिंसा कीयां में, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ १७ ॥
 पिण हिंसा कीयां विण धर्म न हुवें, जाणां छां पाप एकंतो जी ।
 केइ कहें म्हें हणां एकेंद्री, म्हे किण विघ पूरा मन खंतो जी ॥ १८ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, पंचेंद्री जीवां रे तांड जी ।
 एकेंद्री थी पंचेंद्रीय नां, धर्म घणों तिण माहि जी ॥ १९ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोष्यां, मोटां घणा पुन भारी जी ।
 केइ इसडों धर्म धारे नें बेठा, म्हानें पाप न लागें लिगारी जी ॥ २० ॥
 निसंक थका छ काय नें मारें, ते तो कुगुरां तणा सीखायो जी ।
 कोइ पांच थावर नें सहल गिणी नें, वले मन माहें हरषत थायो जी ॥ २१ ॥
 तिण सूं त्यानें हणतां संक न आणें, माख्यां न जाणें पापो जी ।
 पांच थावर नां आरंभ सेती, ओ तो कुगुरां तणो परतापो जी ॥ २२ ॥
 कह्यो दसवीकालक छठें अघेने, दुरगत दोष बवारें जी-
 छ काय जीवां ने जीवां मारे नें, तो बुधवंत किण विघ मारें जी ॥ २३ ॥
 ए प्रतख सावद्य संसार नों कांमो, सगा सेंण न्यात जीमावें जी ।
 जीवां नें मारे जीवां नें पोषें, तिण माहि धर्म बतावें जी ॥ २४ ॥
 तिण माहें साध धर्म बतावें, ते तो मारग संसार नों जाणो जी ।
 मूला गाजर सकरकंद कांदा, ते पूरा छें मूढ अयाणो जी ॥ २५ ॥
 ते पिण दांन दीयां में पुन परूपें, इत्यादिक नीलोती अनेको जी ।
 केइ जीव खवायां में पुन परूपें, ते बूडें छे विना चव्केको जी ॥ २६ ॥
 ए दोनूइ हिंसा धर्मी अनार्य, केइ मिश्र कहें छें मूढो जी ।
 ते बूडें छें कर कर रूढो जी ॥ २७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जीवां री हिंसा में पुन परूपें, त्यांरी जीभ वहे तलवारो जी ।
 वले पहरण सांग साधु रो राखे, धिग त्यांरो जमवारो जी ॥ २८ ॥
 केइ साध रो विड्ढ घरावें लोकां मे, वले वाजे भगवंत रा भगता जी ।
 पिण हिंसा माहें धर्म परूपें, त्यारा तीन वरत भागे लगता जी ॥ २९ ॥
 छ काय माख्यां माहें धर्म परूपें, त्याने हिंसा छ काय री लागे जी ।
 तीन काल री हिंसा अणुमोदी, तिण सूं पेहलो महावरत भागें जी ॥ ३० ॥
 हिंसा में धर्म तो जिण कह्यो नांही, हिंसा धर्म कहां भूठ लागें जी ।
 इसडी भूठ निरंतर बोळें, त्यांरो बीजोइ महावरत भागें जी ॥ ३१ ॥
 ज्या जीवां ने माख्यां धर्म परूपे, त्यां जीवां रो अदत्त लागो जी ।
 वले आग्या लोपी श्री अरिहंत नी, तिण सूं तीजोई महावरत भागो जी ॥ ३२ ॥
 छ काय माख्यां माहे धर्म बतावे, त्यारी सरघा घणी छें उघी जी ।
 ते मोह मिथ्यात मे जडीया अग्यानी, त्याने सरघा न सुफे सूधी जी ॥ ३३ ॥
 त्यानें पूछ्यां कहे म्हे दयाधर्मी छां, पिण निरुचे छ काय रा घाती जी ।
 त्या हिंसाधर्म्यां ने साध सरघे केइ, ते पिण निरुचे मिथ्याती जी ॥ ३४ ॥
 केइ कहें साध जीव बचावे, राखे रखावे भलो जाणें जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, इसडी चरचा आंणे जी ॥ ३५ ॥
 साध तो जीवां ने कयाने बचावे, ते पचे रह्या निज कर्मों जी ।
 कोइ साध री संगत आय करें तो, सीखाय देवे जिण धर्मों जी ॥ ३६ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो न चावे जी ।
 त्यारो जीवणो मरणो साध वंछे तो, राग धेष बेहूं आवे जी ॥ ३७ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यांरो जीवणो मरणो खोटों जी ।
 त्यानें हणवा रो त्याग कीयो तिण माहे, दया तणों गुण मोटों जी ॥ ३८ ॥
 असंजम जीतव नें बाल मरण, या दोयां री वच्छां न करणी जी ।
 पिड्डत मरण नें संजम जीतव, यांरी आसा वच्छां मन घरणी जी ॥ ३९ ॥
 छ काय रा सहस्र जीव इविरती, त्यारो असंजम जीतव जाणो जी ।
 सर्व सावद्य त्याग कीया त्यारो, संजम जीतव एह पिच्छांणों जी ॥ ४० ॥
 त्रिविधे त्राइ छ काय रा साध, त्यांरी दया निरंतर राखे जी ।
 ते छ काय रा पीहर छ काय नें माख्यां, धर्म किसे लेखे भापे जी ॥ ४१ ॥
 छ काय रा जीवां नें हणें ससारी, त्यारें विचे पडें नही जायो जी ।
 विचें पड्यां वरत भागे साध रो, ते विकलां ने खवर न कायो जी ॥ ४२ ॥
 केइ तो कहे साघां ने विचे न पडणो, केइ कहे विचें पडणो जी ।
 साघां ने समभावे रहणो, ते विकलां रे नही छें निरणो जी ॥ ४३ ॥

साधां नें बिचें पडणों त्रिविधे निषेध्यों, ते हणतां बिचें न पडें जायो जी ।
 पिण गृहस्थ नें धर्म कहे बिचें पडीयां, तो घर रों धर्म कांय गमायो जी ॥ ४४ ॥
 हणे जीतब नें परसंसा रे हेतें, हणें मान नें पूजा रे कांमो जी ।
 वले जनम मरण मूकावा हणें छें, हणें दुख गमावण तांमो जी ॥ ४५ ॥
 यां छ कारणं छ काय नें मारें तो, अहेत रो कारण थावें जी ।
 जनम मरण मूकावण हणें तो, समकत रतन गमावें जी ॥ ४६ ॥
 ए छ कारणें छ काय ने माख्यां, आठ कर्मां री गांठ बंधायो जी ।
 मोह नें मार वधें घणी निश्चें, वले पडें नरक में जायो जी ॥ ४७ ॥
 अर्थ अनर्थ हिंसा कीघा, अहेत रो कारण तासो जी ।
 धर्म रें कारण हिंसा कीघां, बोध बीज रो नासो जी ॥ ४८ ॥
 ए छ कारणें छ काय नें मारें, ते तो दुख पामें इण संसारो जी ।
 ए तो आचारंग रे पेंहलें अधेनें, छ उदेसा में कह्यो विसतारो जी ॥ ४९ ॥
 केइ समण माहण अनार्य पापी, करें हिंसा धर्म री थापो जी ।
 कहें प्रांग भूत जीव नें सतव, धर्म हेते हण्यां नही पापो जी ॥ ५० ॥
 एहवी उंधी परूपणा करे अनार्य, त्यानें आर्य बोल्या घर पेमें जी ।
 थें भूडो दीठो ने भूडो सांभलीयो, भूडो मान्यो भूडो जाण्यो एमो जी ॥ ५१ ॥
 जीव माख्यां मे धर्म परूपे, ए तो अनार्य री वाणो जी ।
 ते तो मूढ मिथ्याती भारीकर्मां, त्यांरी सुध बुध नही ठीकाणो जी ॥ ५२ ॥
 त्यां हिंसाधर्मां नें आर्य पृच्छ्यों, थानें माख्या धर्म कें पापो जी ।
 जब तो कहें म्हांनें माख्यां छे पाप एकत, साच बोले कीघी सुध थापो जी ॥ ५३ ॥
 जब आर्य कहे थाने माख्यां पाप छे, तो सच जीवां नें इम जाणो जी ।
 ओरां नें माख्यां धर्म परूपें, थें कांय बूडो कर कर तांणो जी ॥ ५४ ॥
 इम हिंसाधर्मां अनार्य त्यानें, कीघा जिण मारग सूं न्यारो जी ।
 जोवो अचारंग चोधा अधेन माहे, बीजें उद्देसैं विसतारो जी ॥ ५५ ॥
 ओरां ने माख्यां धर्म परूपें, आप नें माख्यां पापो जी ।
 आ सरघा विकलां री उंधी, तिणमें कर रह्या मूढ विलापो जी ॥ ५६ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे काजें, जीव हणें छ कायो जी ।
 तिणनें मंद बुधी कह्यो दसमा अंग में, पेंहला अधेन रे मायो जी ॥ ५७ ॥
 छ काय जीवां रो घमसांण करनें, श्रावकां ने जीमावें जी ।
 उणनें मंद बुधी तो कह दीयो भगवंत, तिणनें धर्म किसी विध थावे जी ॥ ५८ ॥
 कोइ तो जीवां नें मार खवावें, कोइ जीव खवावे आषा जी ।
 तिण माहें एकंत धर्म परूपें, ते अनार्य री भाषा जी ॥ ५९ ॥

केइ जीव माख्यां माहें धर्म कहें छे, ते पूरा अग्यांनी उंघा जी ।
 त्यानं जाण पुरुष मिले जिण मारग रो, किण विघ बोलवे सुधा जी ॥ ६० ॥
 लोह नों गोलो अगन तपाए, ते अगन वर्ण करें तातो जी ।
 ते पकड संडासे आयो त्यां पासें, कहें बलतो गोलो थें भालो हाथो जी ॥ ६१ ॥
 जब पाषडीयां हाथ पाछो खांच्यो, जब जाण पुरुष कहें त्यानं जी ।
 ये हाथ पाछो खांच्यो किण कारण, थांरी सरघा म राखों छाने जी ॥ ६२ ॥
 जब कहे गोलो म्हे हाथे ल्यां तों, म्हांरो हाथ वलें लागे तापो जी ।
 तो थांरो हाथ बाले तिणने पाप के धर्म, जब कहे उणनें लागो पापो जी ॥ ६३ ॥
 थारो हाथ बाले तिणने पाप लागे तो, ओरां नें माख्या धर्म नाही जी ।
 थें सर्व जीव सरीपा जाणों, थें सोच देखों मन माहि जी ॥ ६४ ॥
 जे जीव माख्यां मे धर्म कहे ते, रूले काल अनतो जी ।
 सुंयाडा अंग अवेन अठारमें, तिहां भाष गया भगवंतो जी ॥ ६५ ॥
 स्थानक करावे छ काय हणे ते, करे अनत जीवां री घातो जी ।
 अहेत नो कारण निश्चे हुवो छे, धर्म जाणे तो आवे मिथ्यातो जी ॥ ६६ ॥
 जब कहे म्हे स्थानक करावां तिणमें, जाणां छा एकंत पापो जी ।
 तिण कहिवा ने पाप क्हाओ भूठ बोले, सरघा गोप विगोयो आपो जी ॥ ६७ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो छे तिण काले, धन उदके स्थानक काजो जी ।
 जो उ पाप जाणे तो पर भव जातें, इसडो कांय कीयो अकाजो जी ॥ ६८ ॥
 घर रो धन देने जीव मराया, ते अर्थ न दीसे कांई जी ।
 अनर्थ पिण जाण्यो नही दीसे, धर्म जाण्यो दीसे तिण माहि जी ॥ ६९ ॥
 हिंसा री करणी मे दया नही छे, दया री करणी मे हिंसा नाही जी ।
 दया ने हिंसा री करणी छे न्यारी, ज्यू तावडो नें छांही जी ॥ ७० ॥
 ओर वसत मे भेल हुवे पिण, दया में नही हिंसा रो भेलो जी ।
 ज्यू पूर्व ने पिच्छम रो मारग, किण विघ खाये भेलो जी ॥ ७१ ॥
 केइ दया ने हिंसा री मिश्र करणी कहे, ते कूडा कुहेत ल्मावे जी ।
 मिश्र थापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोका ने भरमावे जी ॥ ७२ ॥
 जो हिंसा कीयां थी मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवे पाप अठारो जी ।
 एक फिच्छां अठारे फिरे छे, कोइ बुधवंत करजो विचारो जी ॥ ७३ ॥
 जिण मारग री नीव दया पर, खोजी हुवे ते पावे जी ।
 जो हिंसा माहे धर्म हुवें तो, जल मयीयां धी आवे जी ॥ ७४ ॥
 संवत अठारे ने वरस चमालें, फागुण सुद नवमी रिचवारो जी ।
 जोड कीची दया धर्म दीपावणां, वगडी सहर ममारो जी ॥ ७५ ॥

ढलल : १०

दुहल

नडूं वीर सलसन घणी, गणघर गोलतम सलंम ।
 त्यों डोटल डुरुषलं रल नलंम थी, सीडडे आतड कलंम ॥ १ ॥
 त्यों घर छुडडे संजड लीडुडु, डगवंत श्री वलरघडलंन ।
 डलरे वरस नें तरे डखे, छुदडसुथ रखुड डगवलंन ॥ २ ॥
 त्यों गोलसलल नुने डेलु कीडुडु, ते तुु नलरुडुडु अजुग सलखुडलत ।
 सरलग डडलव आडुडु तेह थी, ते डलण छुदडसुथ डणल री डलत ॥ ३ ॥
 तीथंकर सलघ छुदडसुथ थकलं, डेलु न करुं डीखुडल देवे नलही ।
 घडुडकथल डलण कहे नही, नव डे ठलणे अरुथ डलंही ॥ ॡ ॥
 डलरुं वरस नें तरे डख डडुडु, डीखुडल दे डेलुं, न करुखुडु कुडुडु ।
 एक गोलसलल अजुग नें डेलु कीडुडु, नलरुडुडु हुणहलर टलुं नही सुडुडु ॥ ॡ ॥
 तीथंकर सलरुथुं डीखुडल लीडुडु, तलणने डीखुडल दे जलणरलडु ।
 डखुं केवली हुवुं नही त्यों लगुं, कीडुण नें डीखुडल देवुं नलडु ॥ ॢ ॥
 गोलसलल नें वीर डुडलवीडुडु, छुदडसुथ डणल री सडलव ।
 डुह रलग आडुडु तलण डुडरे, तलणरु वलकल न जलणुंनुडुडुव ॥ ॣ ॥
 गोलसलल नुने वीर डुडलवीडुडु, तलणनुं डुखुं थलडे घडुडु ।
 सुनुं डलत डुकडुडु करुं, ते डुलुल अगुडलंती डुडुडु ॥ ॢ ॥
 कहे डगवंत डीखुडल लीडुडु डखुं, न कीडुडु कुडुडु डलत डरडलडुने डलडु ।
 जलणतलं नें अजलणतलं, कडे डुडुष न सुनुडुडुडु जलण आडु ॥ ॢ ॥
 इडु कही डुडुल लुकलं डुणी, नुहलखे छे डुडु डलडु ।
 तलणरु नुडुडुडु नलरुणु जथलतथ कहुं, ते सुणजु डलत लुडुडुडु ॥ १० ॥

ढलल

[डलणड वधसुी आरे डलडुडे]

गोलसलल नें डुडलडुडु वीर सरलग थी रे, तलण डलंहुं घडुडु नही लललगर रे ।
 ओ तुु नलरुडुडु हुणहलर टलुं नही रे, तलणरु डुडुल नहीं जलणुं डुलु वलडलर रे ।
 कुडलतर नें डुडलडुडु वीर सरलग थी रे, कुडलतर नें डुडलडुडु घडुडु कलहलं थकी रे* ॥ १ ॥
 संकल हुवुं तुु डुगुडुडु रीं अरुथुं देखुने रे, तलणडु डे जलणुं कुडु कूडु रे ।
 डुडु डुडु सरघल नें कर डु डुडु रे ॥ कुडु २ ॥

*डुह आंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनुत डे हू ।

भारीकर्मा जीवा ने समभ पड़े नही रे, ते तो कुगुरां रे वदले बोले कूड रे ।
ताणा ताण मे जासी ताणीया रे, वेहती अगाव नंदी रे पूर रे ॥ ३ ॥
गोसालो तो अघर्मी अवनीत थो रे, भारीकर्मां कुपातर जीव रे ।
वले दावानल छे जिण धर्म रो रे, दुष्टया में दुष्टी घणो अतीव रे ॥ ४ ॥
भगवत ने भूछा पाडण पापीये रे, तिल नें उखणीयो पापी जाण रे ।
मिथ्यात पडवजीयो श्री भगवानं थी रे, त्यांरी मूल न राखी पापी काण रे ॥ ५ ॥
जगत तणा सगला चोरां थकी रे, गोसालो छे इधको चोर निसंक रे ।
वले कूड नें कपट तणो थो कोथलो रे, तिणरे करडो मिथ्यात तणों छे डंक रे ॥ ६ ॥
तिणने वीर वचायो वलतों जाण ने रे, लवद फोडवे सीतल लेस्या मूंक रे ।
राग आय्थो तिण पापी उपरे रे, छदमस्थ गया तिण काले चूक रे ॥ ७ ॥
केइ मेघधारी भागल इसडी कहे रे, गोसाला ने वचायां हूवो धर्म रे ।
त्या धर्म जिणसर नो नही ओलख्यो रे, ते तो भूल गया अग्यानी भर्म रे ॥ ८ ॥
वले कहे छे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, दोष न सेव्यो मूल लिंगार रे ।
परमाद किंचत मात्र सेव्यो नही रे, वले आश्रव न सेव्यो किण ही वार रे ॥ ९ ॥
इम कहि कहि नें सचवादी हुवे रे, पिण एकंत बोले छे मूसावाय रे ।
त्या धर्म जिणसर नों नही ओलख्यो रे, फूटा ढोले ज्यूं वोलें विरुआ वाय रे ॥ १० ॥
ते भूठ बोले छे सुघ बुघ वाहिरो रे, त्यांरी सरखा री त्यांने खबर न काय रे ।
त्या विकला री सरखा ने परगट करू रे, ते भवीयण सांभलजो चित व्याय रे ॥ ११ ॥
भगवंत आहार कीयो छे जाण ने रे, तिणमें कहे छे परमाद ने आश्रव पाप रे ।
वले निद्रा लीत्रां में कहे पाप छे रे, ते निद्रा पिण लीघी भगवंत आप रे ॥ १२ ॥
परमाद न सेव्यो कहे भगवान ने रे, वले कहितां जाअें पापी परमाद रे ।
न्याय निरणो विकला रे छे नही रे, यूही करे कूडो विषवाद रे ॥ १३ ॥
मोह करम उदय सू सावद्य सेवीयो रे, छदमस्थ थकां थी भगवानं रे ।
अजाणपणें ने विण उपीयोग छे रे, ते वुधवत सुणो सुरत दे कांन रे ॥ १४ ॥
दस सुपना पिण भगवत देखीया रे, दस सुपना रो पाप लागो छे आण रे ।
ते पिण दस सुपनां रो पाप जुओ जुओ रे, तिणरी सका मत करजो चतुर सुजाण रे ॥ १५ ॥
कोइ कहे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, पाप रो अंस न सेव्यों मूल रे ।
जो उवे सुपना देख्यां मे पाप पळ्यसी रे, तो त्यारे लेखे त्यांरी सरखा मे घल रे ॥ १६ ॥
सात प्रकारे छदमस्थ जाणीये रे, कह्यो छें ठांगाअ ग सूतर मांहि रे ।
हिंसा लागें छे प्राणी जीव री रे, वले लागे मृपा ने अदत्त ताहि रे ॥ १७ ॥
शब्दादिक आस्वादे रागे करी रे, पूजा सतकार वांछे छें मन मांय रे ।
कदे असणाविक पिण सावद्य भोगवे रे, वागरें जेसो करणी नावे ताय रे ॥ १८ ॥

ए सातोई सावद्य रा थानक कहा रे, छद्मस्थ सेवें छें किण ही वार रे ।
 त्यांरो पिण प्राद्धित जथायोग छें रे, जाण अजाण सेव्यां रो करें विचार रे ॥ १६ ॥
 ए सातोई बोल न सेवें केवली रे, छद्मस्थ पिण निरंतर सेवें नाहि रे ।
 सेवें तो मोह कर्म उदें हुआं रे, सका हुवें तो जोवों सूतर माहि रे ॥ २० ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तिण दिनें रे, छद्मस्थ हुंता जिण दिन भगवानं रे ।
 मोह राग आयों भगवंत नें तिण दिनें रे, निश्चें होणहार टालण नहीं आसांन रे ॥ २१ ॥
 छद्मस्थ थकां पिण श्री भगवानं नें रे, समें समें लागता कर्म सात रे ।
 मोह कर्म वशेष थकी उदें हुवो रे, कुपात्र नें बचाय लीधों साख्यात रे ॥ २२ ॥
 गोसालो दावानल श्री जिण धर्म नों रे, ते दुष्टां में दुष्टी घणो अतीव रे ।
 वले कोथलो कूड कपट रो तेहनें रे, बचायां रा फल सुणों भव जीव रे ॥ २३ ॥
 गोसाले तेजू लेस्या मेलनें रे, दोय साधां री कीधी घात रे ।
 उंधो अंवलें बोल्यो भगवानं नें रे, वीर सूं पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या मेली पापी वीर नें रे, त्यांरी पिण एकंत करवा घात रे ।
 तिण जाण्यों जमाउ सासण मांहरों रे, एहवो गोसालो दुष्ट कुपात रे ॥ २५ ॥
 तिल रो, प्रश्न पूछ्यां भगवंते कह्यो रे, सुगली माहें तिल बताया सात रे ।
 जब वीर ने भूठा घालण पापीयें रे, तिल उखण नें कीधी घात रे ॥ २६ ॥
 तेजू लेस्या सीखाइ गोसाला भणी रे, तिण लेस्या सूं कीधी साधा री घात रे ।
 वले लोही ठाणे कीधी भगवंत नें रे, इसडा कांम कीया पापी साख्यात रे ॥ २७ ॥
 गोसाला पापी नें वीर बचावीयों रे, तो बधीयो भरत में घणो मिथ्यात रे ।
 घणा जीवां नें पापी बोवीया रे, उंधी सरधा हीया में घात रे ॥ २८ ॥
 कूड कपट करे ने पापीयें रे, भूठोइ सासण दीयो थाप रे ।
 अणहूतों तीथंकर वाज्यो लोक में रे, वीर नो सासण दीयो उथाप रे ॥ २९ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तठा पछे रे, घणा जीवां रें हुवो बिगाड रे ।
 ओ पापी धाडायत हूवो धर्म रो रे, इण गुण तो न कीधो मूल ल्लिगार रे ॥ ३० ॥
 गोसाला पापीडो बचीयां पछें रे, तिण कीधा पापीडे अनेक अकाज रे ।
 तिण दुष्टी नें बचायां धर्म किहा थकी रे, विकलां नें मूल न आवें लाज रे ॥ ३१ ॥
 गोसाला नें बचायां धर्म कहे तके रे, गोसाला रा केडायत जाण रे ।
 त्यां धर्म न जाण्यों श्री जिणराज रो रे, यूं ही बूडें अग्यांनी कर कर तांण रे ॥ ३२ ॥
 जो धर्म होसी गोसाला ने बचावीयां रे, तो छ ही काय बचायां होसी धर्म रे ।
 जो उवे जीव बचायां धर्म गिणें नही रे, तो विकलां री सरधा रो निकल्यों भर्म रे ॥ ३३ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो जिण विधे रे, श्रावक ने तिण विध बचावें नाहि रे ।
 कहें छें तिण हीज विध करे नहीं रे, तो धूर छें त्यांरी सरधा माहि रे ॥ ३४ ॥

पेट दुखे छें सो श्रावकां तपो रे, जूदा हुवे छे जीव नें काय रे ।
 साध पचाख्या छे तिण अचसरे रे, त्यारें हाय फेरें तो साता थाय रे ॥ ३५ ॥
 लवदवारी तो साध पचाख्या देख नें रे, गृहस्थ बोलया छे इम वाय रे ।
 हाथ फेरो त्यांरा पेट उपरे रे, नहीं फेरो तो श्रावक जीवां जाय रे ॥ ३६ ॥
 जब कहे म्हाने तो हाथ न फेरणा रे, अँ मरो भावें दुखी घणा हुवो तांम रे ।
 मरणो जीवणो मूल न वाछे तेहनो रे, म्हारें गृहस्थ सूं काई कांम रे ॥ ३७ ॥
 तो गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे कही छो निकेवल धर्म रे ।
 तो श्रावक मरतां ने नही बचावीयां रे, त्यांरी सरघा रोत्याहीज काढ्यो भर्म रे ॥ ३८ ॥
 श्रावक ने बचायां धर्म गिणे नही रे, गोसाला ने बचायां गिणें धर्म रे ।
 ते वके विकल छे सुध बुध बाहिरा रे, उंधी सरघा सू बांचे पाप कर्म रे ॥ ३९ ॥
 गोसाला पापी दुष्टी रे कारणे रे, लवद फोडी छे श्री जगनाथ रे ।
 तो सो श्रावक जीवा मरतां देख नें रे, थे काय न फेरो त्यारे हाथ रे ॥ ४० ॥
 धर्म कहे गोसाला ने बचावीयां रे, तो पोते कांइ छोडी धर्म री रीत रे ।
 सो श्रावक मरता ने बचावे नही रे, त्यां विकलां री विकल करे परतीत रे ॥ ४१ ॥
 गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण मांहे धर्म कहे साख्यात रे ।
 सो श्रावक मरता ने नही बचावीया रे, त्यां विकलां री बिगडी सरघा बात रे ॥ ४२ ॥
 श्रावक आखड ने पड मरतो हुवे रे, जिण ने पडता भेले राखे नाहि रे ।
 गोसाला ने बचायां में कहे छे धर्म रे, ओ पिण अंधारो त्यारे माहि रे ॥ ४३ ॥
 ग्यान वरसन ने देस चारित श्रावक ममे रे, गोसालो तो एकत अधर्मी जाण रे ।
 तिणने बचाया धर्म किहा थकी रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ अयाण रे ॥ ४४ ॥
 गोसाला ने बचाया रो कहे धर्म छे रे, श्रावक ने बचायां कहे पाप रे ।
 एहवो अघारो छे विकला तणे रे, उंधी सरघा री कर राखी छें थाप रे ॥ ४५ ॥
 वारे वरस नें तेरे पख ममे रे, छदमस्थ रह्या छे श्री भगवान रे ।
 तिणमे एक गोसाला ने बचावीयो रे, किणने न बचायां श्री विरघमान रे ॥ ४६ ॥
 गोसाला दुष्टी नें बचावीया रे, जो धर्म कठेइ जाणे सांम रे ।
 तो दौनूइ साध बचावत आपणा रे, बले रात दिन करता ओहीज कांम रे ॥ ४७ ॥
 गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, तिण मांहे धर्म जाणे जिणराय रे ।
 दोय साध मरता नही राख्या आपणा रे, ओ पिण किण विघ मिलसी न्याय रे ॥ ४८ ॥
 अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीघा भगवंत हाथ रे ।
 धर्म हुवे तो भगवत आघो नही काढता रे, निरुचेइ तिरण तारण जगनाथ रे ॥ ४९ ॥
 अंत चोवीसी तो आगें हुइ रे, हिबडां तो रिषभादिक चोवीस रे ।
 त्यां ताख्या भव जीवां ने समभाय ने रे, पिण मरता न राख्या श्री जगदीस रे ॥ ५० ॥

एक गोसालो वीर बचावीयो रे, ते तो निश्चेइ होणहार रे।
 मोह राग आयो भगवानं ने रे, तिणरो न्याय न जाणें मूढ गिवार रे ॥ ५१ ॥
 संवत अठारे तेपने समें रे, आसाड विद इग्यारस मंगलवार रे।
 गोसाला कुपातर नें ओलखावीयो रे, जोड कीधी छें माढा गाव मभार रे ॥ ५२ ॥



ढाल : ११

दुहा

दोय उपगार श्री जिण भाषीया, त्यांरो बुधवंत करजो विचार ।
 तिणमे एक उपगार छे मोष रो, बीजो संसार नो उपगार ॥ १ ॥
 उपगार करें कोइ मोष रो, तिणरी जिण आगनां दे आप ।
 उपगार करें ससार नों, तिहां आप रहे चुपचाप ॥ २ ॥
 उपगार करे कोइ मोष रो, तिणने निश्चेइ धर्म साख्यात ।
 उपगार करे ससार नों, तिणमें धर्म नही तिलमात ॥ ३ ॥
 दोनूं उपगार छे जुवा जुवा, ते कठेंइ न खाअें मेल ।
 पिण मिश्र पाषड्यां परूप नें, कर दीयो मेल समेल ॥ ४ ॥
 कुण कुण उपगार छे मोष रो, कुण कुण ससार ना उपगार ।
 त्यांरो भाव भेद परगट कळं, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगना में]

ग्यान दरसण चारित ने बले तप, या च्यारां रो कोइ करे उपगार ।
 तिणने निश्चेइ निरजरा धर्म कळ्यो जिण, बले श्री जिण आगना छे श्रीकार ।
 ओ तो उपगार निश्चेइ भुगत रो ॥ १ ॥
 ग्यान दरसण चारित ने तप, या च्यारा बिना कोइ करे उपगार ।
 तिणने निश्चेइ धर्म नही जिण भाष्यो, बले जिण आगना पिण नही छे लिगार ।
 ओ तो उपगार संसार तणो छें# ॥ २ ॥
 ससार तणो उपगार करे छे, तिणने निश्चेइ ससार वधतो जांणो ।
 मोष तणो उपगार करे छे, तिणने निश्चेइ नेडी दीसं निरवांणो ॥ ३ ॥
 कोइ दलदरी जीव ने धनवत कर दे, नव जात रो परिग्रहो देड भर पूर ।
 बले विवव प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दलदर कर दे दूर ॥ ओ० ४ ॥
 छ काय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारी साता पूछी ने साता उपजावे ।
 त्यारी करे वीयावच विवध प्रकारे, तिणने तीथकर देव तो नही सरावे ॥ ५ ॥
 शुस्स्य रो साता पूछ्यां ने वीयावच कीयां, तिण सूं साव तो होय जाअं अणान्तारी ।
 तो त्यारी साता पूछ्यां ने वीयावच कीयां में, जिण आगना पिण नही छे, लिगारी ॥ ६ ॥

यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साता पूछ्यां तो साध नें पाप लागे छें,
 पिण मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 कोइ मरता जीव नें जीवां बचावें,
 वले अनेक उपाय करें नें तिणनें,
 कोइ मरता जीव नें सूंस करावे,
 ग्यांन ध्यांन मांहे परिणाम चढावें,
 श्रावक नों खाणों पीणो छे सर्व इविरत में,
 वले नव ही जात रो परिग्रहो इविरत में,
 श्रावक नों खाणो पीणों छे सर्व इविरत में,
 वले नव ही जात रों परिग्रहो इविरत में,
 कोइ लाय सूं बलतां नें काढ बचायों,
 तलाब मांहे डूबा नें बारें काढें,
 जनम मरण री लाय थी बारें काढें,
 नरकादिक नीची गति माहे पडतां नें राखें,
 किणरें लाय लागी घर बले छें,
 कोइ लाय बुझाय त्यांनें बारें काढें,
 किणरें तिसणा लाय लागी घर भितर,
 उपदेस देइ तिणरी लाय बुझावें,
 कोइ टाबर पाले नें मोटा करे छें,
 वले मोटें मंडाण करे परणावें,
 कोइ बेटा नें रुडी रीत समभाए,
 काम भोग अस्त्रीयादिक खावों नें पीवों,
 मात पिता री सेवा करे दिन रात,
 वले कावड कांघे लीयां फिरें त्यांरी,
 कोइ मात पिता नें रुडी रीतें,
 ग्यांन दरसण चारित त्यांनें पमावें,
 जिणरो खाणो पीणो गेहणो इविरत में,
 वले मांगे जिको तिणनें धन धान आपें,
 जिणरों खाणो पीणों गेहणो इविरत में छें,
 तिणरें ग्यांनादिक गुण घट में घाले,
 किणरा वाला काढे किणरा कीडा काढे,
 कानसिलाया बुगादिक काढे,

तो साता कीघां में धर्म किहां थी होवें ।
 ते श्री जिण आगनां साह्यो न जोवें ॥ ७ ॥
 भाडा भमटा करे ओषध देइ तांम ।
 मरतो राख्यो साजो कीयो तमांम ॥ ८ ॥
 च्याहं सरणा देइ नें करावें संथारों ।
 न्यातीलां सूं देवें मोह उतारो ॥ ९ ॥
 ते सेवें तो सावद्य जोग व्यापारो ।
 तिणनें सेवारें छें कोइ वाह्वारो ॥ १० ॥
 तिणरों त्याग करावें चढाय वेंरागों ।
 ते छोडें छोडावे त्यारे सिर भागो ॥ ११ ॥
 वले कूअें पडता नें भाल बचायों ।
 वले उंचा थी पडतां नें भाले लीयो ताह्यो ॥ १२ ॥
 भव कूआ माहि थी काढें बारें ।
 संसार समुद्र थी बारें काढ उघारे ॥ १३ ॥
 तिणनें नान्हा मोटा जीव बलें लाय मांहि ।
 घणां रें साता कीधी लाय बुझाई ॥ १४ ॥
 ग्यांनादिक गुण बलें तिण मांय ।
 रुंम रुंम में साता दीधी वपराय ॥ १५ ॥
 आछी आछी वस्त तिणनें खवाय ।
 वले धन माल देवें कमाय कमाय ॥ १६ ॥
 धन माल सगलोइ देवें छोडाय ।
 भली भांत सूं त्याग करावे ताय ॥ १७ ॥
 वले मन मान्यां भोजन त्याने खवावें ।
 वले बेहूं टकां रो सिनान करावे ॥ १८ ॥
 भिन भिन कर नें धर्म सुणावे ।
 काम भोग शब्दादिक सर्व छोडावें ॥ १९ ॥
 तिणनें मन मानें ज्यूं खवावे पीवावे ।
 वले विवध पर्णें तिणनें साता उपजावें ॥ २० ॥
 तिणनें उपदेस दइ ने परहो छोडावे ।
 तिणरी तिसणा लाय ने परी मिटावें ॥ २१ ॥
 वले लटा जूआदिक काढें छे ताहि ।
 घणी साता उपजावें शरीर रें माहि ॥ २२ ॥

किणरे बाला कीडा ने लटां जूंआदिक,
 तिणने बारे काढण रा त्याग करावे,
 गृहस्थ भूलो उज्जड वन में,
 तिणने मारग बताय ने घरे पोहचावे,
 संसार रूपणी अटवी में भूला ने,
 सावध भार ने अलगो मेलाए,
 नाग नागणी हुता बलता लकडा में,
 अग्न मे बलता ने राह्या जीवता,
 पारसनाथ जी घर छोडे काउसग कीघों जब,
 जब पदमावती हेठे कीर्यों सिंघासण,
 नाग नागणी ने नोकार मुणाए,
 ते सुभ परिणांमां सूं मरने हूआ,
 सुग्रीव सूं उपगार कीर्यों राम लछमण,
 सीता री खबर आणे रावण ने मरायो,
 कोइ दुष्टी जीव जूं ने मारतो थो,
 ते जू रो जीव मिनष हुवां जब,
 घणी रा मूढा आगे सेवग मरे ने,
 जब घणी तूठे थको रिजक रोटी दे,
 दोय इदर आयां कोणक री भीडी,
 एक कोड असी लाख मिनषां ने मारें,
 एकीका जीव ने अनंती वार बचाया,
 आमां साह्यां उपगार संसार नां कीघां,
 हांती नेहतादिक देवे आमां साह्यां,
 अथवा कोइक आघाइ पिण देवे,
 संसार नों उपगार करे जिण सेती,
 ए तो उपगार एकीका जीवां सूं,
 संसार नां उपगार सव ही फीका,
 संसार नां उपगार फीका छें,
 संसार तणा उपगार कीयां में,
 ते श्री जिण मारग ओलखीयां विण,
 जितला उपगार संसार तणा छे,
 साध तो त्यानं कदे न सरावे,

शरीर में उपनां जीव अनेक ।
 कहे सरीर बारे काढणो नही छे एक ॥ २३ ॥
 अटवी ने वले उजाड जावे ।
 वले थाको हुवें तो काघें बेसावे ॥ २४ ॥
 ग्यांनादिक सुघ मारग बतावे ।
 सुखे सुखे सिवपुर मे पोंहचावे ॥ २५ ॥
 त्याने पारसनाथ जी काढ्या कहे छे वार ।
 पांणी ने अगनादिक रा जीवां ने मार ॥ २६ ॥
 कमठ उपसर्ग कर वरपायो पांणी ।
 घर्णिन्द्र छत्र कीर्यों सिर आंणी ॥ २७ ॥
 च्याखूं सरणा ने सूस दराया जांणी ।
 घर्णिन्द्र ने पदमावती रांणी ॥ २८ ॥
 जब सुग्रीव हुवो त्यांरो सखाइ ।
 तिण पाछो उपगार कीर्यों भीड आइ ॥ २९ ॥
 तिणने वरजे ने जूं ने वचाइ ।
 इणरो कजीयो इण पिण दीयो मिटाइ ॥ ३० ॥
 घणी ने जीवतो कुसले खेमें काढे ।
 इणरो इहलोक रो काम सिराडें चाढे ॥ ३१ ॥
 कोणक रे साता कर दीघी तांम ।
 कोणक रो सुधाख्यो काम ॥ ३२ ॥
 त्यां पिण इणनं अनती वार बचायो ।
 त्यांसू तो जीव री गरज सरी नही कायो ॥ ३३ ॥
 लाडू खोपरादिक देवे आमां साह्यां ।
 इत्यादिक छे अनेक संसार नां कामा ॥ ३४ ॥
 कदा ते पिण पाछों करे उपगार ।
 कीघा छें अनंत अनंती वार ।
 आ सरघा श्री जिणवर भापी ॥ ३५ ॥
 ते तो थोडा मांहे विलें होय जावें ।
 त्यांसू मुगति तणा सुख कोयन पावें ॥ आ० ३६ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती घर्म वतावे ।
 मन मानें ज्यूं गालां रा गोला चलवे ॥ ३७ ॥
 जे जे करे ते मोह वस जांणो ।
 संसारी जीव तिणरा करसी वखाणों ॥ ३८ ॥

संसार तणा उगार कीया में,
 संसार तणा उगार कीया में,
 किण ही जीव नैन नदन कर नें बचायो,
 जो धर्म होसी तो दियो नें धर्म होसी,
 बचावन बाच किंचे तो उगारवन बालों,
 यारो निरणो कीया विष धन कहें छे,
 बचावन बालों नें उगारवन बालों,
 एहवा उगार करे आचा माह्यां,
 जीव नें जीवां बचलें तिग नूं,
 जो पर नव नें ऊ आय निले तो,
 जीव नें जीव नां छे तिग नूं,
 ने पर नव में उ आय निले तो,
 निधी सूं निधीयों बचीयो जावें,
 छे तो राग बेष कर्ना रा चाला,
 कोई जगुकर्या आंगी घर मंडावे,
 ओ प्रतद राग नें बेष उगारो,
 कोई तो पैला रा काम सोग बचारे,
 ओ पिग राग नें बेष उगारो,
 कोई पैला रों धन गनीयो बचारे,
 कोई काम नें तोटो लोकां नें बचारे,
 कोई वैद्यगों करे करे ने कोकां रों,
 ओ उगार कोकां सूं कीकां,
 कहि कहि नें कितरोएक कहूं,
 र्थात वरुण्य चान्ति नें तप दिनां,
 मंत्र ना नेत्र जीम कृह्या जिण,
 ओ व्तीसूंइ वेरु उगार नुगत रा,
 संसार नें मोष तणा उगार,
 तिग निव्याती नें दनर उहें नहीं चूदी,
 संसार नें मोष रो नाग जोल्लावग,
 मंडन कठारे दें वरस चोपदें,

जिग धर्म रो जंम नहीं छे निगार ।
 धर्म कहें ते तो नूंइ निवार ॥ ४३ ॥
 किण ही जीव उगारय नें कीयो मोटों ।
 जो तोटों होसी तो दियो नें तोटों ॥ ४० ॥
 सांभद चीमें उगारो मोटों ।
 र्थारो तो नत निक्किळ खोटों ॥ ४१ ॥
 ओ तो वेनुं संसार तणा उगारो ।
 जिगनें केवली रो धर्म नहीं छे निगारो ॥ ४२ ॥
 बंध जायें तिगरों राग सनेह ।
 देवत पांग जागे तिग सूं नेह ॥ ४६ ॥
 बंध जायें तिग नूं बेष बरोख ।
 देवत पांग जागे तिग नूं बेष ॥ ४४ ॥
 बैरी सूं बैरीयों बचीयो जावें ।
 ते श्री जिग धर्म नहीं नहीं जावें ॥ ४५ ॥
 कोई मंडता घर नें केवें संगय ।
 ते काणें ल्या देनुं बचीया जाय ॥ ४६ ॥
 कोई दान सोग री दें अंतगय ।
 ते जाणें ल्या देनुं बचीया जाय ॥ ४७ ॥
 बले अस्त्रीयांदिग निग गनीया बचारे ।
 तिग सूं आणें ल्या राग बचीयो जावें ॥ ४८ ॥
 नेग प्रमाय नें जीवां बचारे ।
 बागे ल्या राग बचीयो जावें ॥ ४९ ॥
 संसार तणा उगार अनेक ।
 मोष तणां उगार नहीं छे एक ॥ ५० ॥
 निरजरा तणा नेत्र कृह्या छे वार ।
 ओर मोष रों उगार नहीं छे निगार ॥ ५१ ॥
 समधिष्ठी हुवे ते त्वारा त्वारा जाणें ।
 तिग सूं मोह कने कम उंठी ताणें ॥ ५२ ॥
 जोइ कीयो छें खेरवा नहर मकार ।
 आनोज सुदि बीज नें मुकरवार ॥ ५३ ॥

ढाल : १२

ढुहा

चोवीसमां जिणवर हुआ, महावीर विल्यात ।
 त्यांरी पहली वांणी निरफल गई, ते हुवो अछेरो इचरज वात ॥ १ ॥
 जंभीक गाम ने वाहिरे, सांम नांम करपणी रे खेत ।
 तिहां साल नांमा विरख थो, गहर गभीर पांन समेत ॥ २ ॥
 तिण साल विरख हेठें आवीया, भगवंत श्री विरघमान ।
 वेसाख सुदि दसम दिने, उपनो केवल ग्यांन ॥ ३ ॥
 केवल महोछव करवा भणी, तिहां देवता आया अनेक ।
 पिण मिनपा ने ठीक पडी नही, तिणसूं मिनप न आयो एक ॥ ४ ॥
 देवता आगे वाणी वागरी, थित साचववा कांम ।
 कोड साच थावक हुवो नही, तिणसूं वांणी निरफल गईआम ॥ ५ ॥
 जो धन थकी धर्म नीपजे, तो देवता पिण धर्म करंत ।
 वीर वांणी सफली करे, मन माहे पिण हरष धरंत ॥ ६ ॥
 वरत पचखाण न हुवे देवता थकी, धन सूं पिण धर्म न थाय ।
 तिण सूं वीर वांणी निरफल गई, तिणरो न्याय सुणों चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[जीव मोह अशुकम्पा न आशिषे]

जिण धर्म हुवे सोनइयां दीयां, तो देवता देता हाथो हाथ जी ।
 पुरत मनोरथ मन तणा, वीर वांणी निरफल न गमात जी ।
 भव करजों परख जिण धर्म री* ॥ १ ॥
 रतन हीरा ने माणक पना, मन माने ज्यू देवता देत जी ।
 वीर री वाणी सफल करे, देवता पिण लाहो लेत जी ॥ भ० २ ॥
 धन दीयां हुवे धर्म जिण भाखीयों, देवता दान दे दग चाल जी ।
 यूं कीयां वीर वांणी सफल हुवे, तो अछेरो नही हुवे तिण काल जी ॥ ३ ॥
 धन धानादिक लोकां ने दीयां, ए तो निश्चेइ सावद्य दान जी ।
 तिणमे धर्म नही जिण राज रो, ते भाष्यो छे श्री भगवान जी ॥ ४ ॥
 जो जीव बचायां जिण धर्म हुवे, ओं तो देवता रे भासान जी ।
 अनंता जीवां ने बचाय ने वांणी सफल करता देवां न जी ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

असंख्याता समदिष्टि देवता, एकीको वचावत अन्त जी ।
 जो धर्म हूवें तो आशो न काडता, वीर नौं बांणी सफल करंत जी ॥ ६ ॥
 साध श्रावक रौं धर्म छे विरत नें, जीव हणवा रा करें पचत्ताण जी ।
 ए धर्म देवता थी हूवें नहीं, तिगसूं निरफल गई वीर बाण जी ॥ ७ ॥
 जीवां नें जीवां वचावीयां हूवें, संसार तणों उपगार जी ।
 यूं तो सरुल न हूवें बांणी वीर नौं, धर्म रो नहीं असं लिंगार जी ॥ ८ ॥
 असंजती नें जीवां वचावीयां, बले असंजती नें वीयां दांन जी ।
 इन क्रीयां वीर बांणी सरुल हूवें, जो तो देवतां रे पिण आसांन जी ॥ ९ ॥
 कुमातर जीवां नें वचावीयां, कुमातर नें वीवां दांन जी ।
 ओ सावद्य किरतव संसार नौं, भाप्यो श्री भगवान जी ॥ १० ॥
 उत्तरावेन अडावीसनें कह्यौं, मोष नां मारा भाप्या च्यार जी ।
 बाकी सर्व कांसा संसार नां, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ११ ॥
 जो धर्म हूवें सावद्य दांन में, असंजती नें वचायां हूवें धर्म जी ।
 तो निश्चैइ समदिष्टी देवता, ओ धर्म करे काटें कर्म जी ॥ १२ ॥
 कर्म कटें इण सावद्य धर्म नूं, एहवा सावद्य कांसा अनेक जी ।
 ते तो थोडा सा परगट कलं, ते मुणजौं बाण वके जी ॥ १३ ॥
 मछ गलागल ला रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
 मोटो मछ छोट नें मखें, उगसूं मोटौं उणनैइ खाय जी ॥ १४ ॥
 जो उद्यम करे एक देवता, तो एक दिन में वचावें अनेक जी ।
 धर्म हूवें तो आशों काटें नहीं, ओ तो छें देवता नें वके जी ॥ १५ ॥
 जीव वचायां अन्य दांन हूवें, तो अभय दांन प्रणां नें नेत जी ।
 धर्म जांणें जीव वचावीयां, देव भव में पिण लाहो लेत जी ॥ १६ ॥
 मछला वचावें एक दिन मले, लाखां कौडाइ गिगिया न जाय जी ।
 इणमें धर्म हूवें जिण भापीयां, तो देवता देवें मछला छुडाय जी ॥ १७ ॥
 मच्छ आगा सूं मछ छोडावीयां, ऊनरे परती जांणे अंतराय जी ।
 तो अचित्त मछ उज्जाय नें, उगलें पिण देवे लवाय जी ॥ १८ ॥
 जो धर्म हूवें मछला नें वचावीयां, मछला नें पोप्यां हूवें धर्म जी ।
 एहवा धर्म तो हूवें देवता धरती, यूं कर कर काटें कर्म जी ॥ १९ ॥
 जो धर्म हूवें तो देवता, असंख्याता मछला ने वचाय जी ।
 असंख्याता पोपें माछला, बाल्त पिण न करें ताय जी ॥ २० ॥
 पृथ्वी पांगी तेड बाड भक्के, जीव कहा छें असंख्यात जी ।
 इनसपती में अन्त छें, यांनै पिण देव वचात जी ॥ २१ ॥

तीन विकलेद्री मिनष तिर्यच ने, बचायां धर्म जाणें जो देव जी ।
 तो त्यानेइ ब्रचावण री खप करें, समदिष्टी देवता स्वमेव जी ॥ २२ ॥
 नाहर चित्तादिक दुष्ट जीव छें, करें गायान्दिक री घात जी ।
 गायान्दिक ने तो खावा दें नही, त्यानें पिण देव अचित्त खवात जी ॥ २३ ॥
 जीव जीव तणो भक्षण करें, त्यानें बचावें अचित्त खवाय जी ।
 जो यूं कीयां में धर्म नीपजे, तो देवता करे ओहीज उपाय जी ॥ २४ ॥
 अढाइ दीप मिनषां तणे, घर घर आरंभ करें जाण जी ।
 ते तो कतल करे जीवां तणी, छ ही काय तणो घमसांण जी ॥ २५ ॥
 नित एकीका घर मे जूजूओ, आरंभ हुवें दिन रात जी ।
 छेदन भेदन करे निलोतरी, करें अनंत जीवां री घात जी ॥ २६ ॥
 दलणो पीसणो नें पोवणो, घर घर चूहलो धुकावे तास जी ।
 आवट कूटें करें छ काय नों, करें अनंत जीवां रो विणास जी ॥ २७ ॥
 एकीका समदिष्टी देवता, त्यांरी शक्त घणी छे अतंत जी ।
 अढी दीप रों आरभ भेट ने, बचावें जीव अनंत जी ॥ २८ ॥
 अढी दीप तणा मिनषां भणी, भूखा तिरषा न राखे कोय जी ।
 अचित्त अन पाणी नीपजाय ने, सगला ने करे तिरपत सोय जी ॥ २९ ॥
 विवध प्रकार नां भोजन करे, विवध प्रकार नां पकवान जी ।
 खादिम सादिम विवध प्रकार नां, विवध प्रकारे सीतल पांन जी ॥ ३० ॥
 साग व्यंजण विवध प्रकार नां, फल नीलोती विवध प्रकार जी ।
 मनसा भोजन सगला मिनषां भणी, करावें देवता वार वार जी ॥ ३१ ॥
 ठाम ठाम अचित्त पाणी तणा, कूड भर भर राखे तांम जी ।
 वले भोजन विवध प्रकार नां, त्यांरा ढिगला करे ठाम ठाम जी ॥ ३२ ॥
 ज्यारूइ आहार अचित्त नीपाय नें, दीघां हुवें धर्म ने पुन तांम जी ।
 वले धर्म हुवे जीव बचावीयां, तो देवता करें ओहीज कांम जी ॥ ३३ ॥
 देवता खाणों देवे मिनषां भणी, तो खेती रो आरंभ टल जाय जी ।
 वले गेंहणा कपडा देवें देवता, तो घणा जीव मरे नही ताय जी ॥ ३४ ॥
 घर हाट हवेली मेंहलायतां, इत्यादिक कमठाणा ताय जी ।
 जे पिण निपजाय देवे देवता, तो अनंता जीव मरता रहि जाय जी ॥ ३५ ॥
 ते छावणा लीपणा ना पडे, ते तो सुदर ने सोभाय मांन जी ।
 ते पिण दिसें घणा रलीयांमणा, देवता ने करता आसान जी ॥ ३६ ॥
 एहवी करणी कीयां धर्म नीपजे, तो देवता आधो नही काढंत जी ।
 आ करणी करे कर्म काट ने, कांम सिराडे देता चाढंत जी ॥ ३७ ॥

दान दीयां नें जीव बचावीयां, जो कर्म तणों हुवें सोख जी ।
 तो दान दे जीव बचाय नें, देवता पिण जाये मोष जी ॥ ३८ ॥
 अनेरा नें दीयां पुन नीपजे, देवता रे हुवें पुन रा थाट जी ।
 वले धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो देव मोष जावें कर्म काट जी ॥ ३९ ॥
 असंजती जीवां रो जीवणों, ते सावद्य जीतव साख्यात जी ।
 तिणनें देवे ते सावद्य दान छें, तिणमें धर्म नहीं असमात जी ॥ ४० ॥
 धर्म हुवें तो सगला मिनषां तणें, रतनां जड्या कर दे मेहेल जी ।
 ते पिण थोडा में नीपजाय दें, देवता नें करता सेंहल जी ॥ ४१ ॥
 खांगो पीणो गेहणों कपडादिक, गृहस्थ तणा सारा काम भोग जी ।
 त्यांरी करें वधोतर तेहनें, बंधें पाप कर्म नो संजोग जी ॥ ४२ ॥
 काम नें भोग सारा गृहस्थ नां, दुख नें दुख री छे खान जी ।
 त्यांनें किपाक फल री ओपमां, उत्तराघेन में कह्यों भगवानं जी ॥ ४३ ॥
 त्यांनें भोगवावें धर्म जाण नें, तिणरे बंधे छे पाप कर्म जी ।
 तिणमें समदिष्टी देवता, असमात न जाणें धर्म जी ॥ ४४ ॥
 केइ अग्यांनी इम कहे, श्रावक नें पोष्यां छें धर्म जी ।
 लाडू खनाए दया पलावीयां, तिणरा कट जाए पाप कर्म जी ॥ ४५ ॥
 लाडूआ साटें उपवास बेला करे, तिणरा जीतव नें छे धिकार जी ।
 तिणनें पोषें छें लाडू मोल लें, तिणमें धर्म नहीं छें लिंगार जी ॥ ४६ ॥
 लाडूआ साटें पोषा करे, तिणमें जिण भाष्यों नही धर्म जी ।
 ते तो इह लोक रे अरथे करे, तिणरो मूरख न जाणें मर्म जी ॥ ४७ ॥
 धर्म हुवें तो समदिष्टी देवता, अचित्त लाडूआदिक नीपजाय जी ।
 वले पांगी पिण अचित्त नीपजाय नें, श्रावकां नें जिमावें ताहि जी ॥ ४८ ॥
 जाव जीव सगला श्रावकां भणी, लाडूआदिक अचित्त खवाय जी ।
 अढी दीप तणा श्रावकां भणी, दया पलावें पोषा कराय जी ॥ ४९ ॥
 त्यांने आरम्भ करवा दें नही, त्यांनें कल्पे ते देवता देत जी ।
 धर्म हुवे तो आघो नहीं काढता, ओ पिण देवता लाहो लेत जी ॥ ५० ॥
 श्रावकां नें वस्त दें चावती, उणायत राखें नही कांय जी ।
 धर्म हुवे तो आघों काढें नही, त्यारें कुमीय न दीसे कांय जी ॥ ५१ ॥
 जो धर्म हुवें श्रावक ने पोषीयां, तो देवता पिण करें ओ धर्म जी ।
 असंख्याता श्रावकां नें पोष नें, काटता निज पाप कर्म जी ॥ ६२ ॥
 असंख्याता दीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छें तांम जी ।
 त्यांनें पोषें समदिष्टी देवता, जो जाणें धर्म नो काम जी ॥ ५३ ॥

श्रावक रो खाणो पीणों सरवथा, इविरत में कह्या छे आंम जी ।
 तिण सूं समदिधी देवता, एहवो किम करसी कांम जी ॥ ५४ ॥
 सकेद नें इसाण इंद्र छें, तिरछा लोक तणा सिरदार जी ।
 हाल हुकम छें सगलां उपरें, असंख्याता दीप समुद्र मभार जी ॥ ५५ ॥
 मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
 जो घर्म हुवें जीव बचावीयां, तो इंद्र थोडा में देवें मिटाय जी ॥ ५६ ॥
 भगवंत कहीं हुवें इंद्र नें, जीव बचायां घर्म होय जी ।
 तो दोनूं इंद्र जीव बचावता, आलस नही करता कोय जी ॥ ५७ ॥
 मछ आगा सूं मछ छोडाय नें, मछां नें देता जीवां बचाय जी ।
 त्याने पिण भूखा नही राखता, अचित्त मछ कर देता खवाय जी ॥ ५८ ॥
 यूं कीयां जिण घर्म नीपजें, तो भगवंत सीखावत आप जी ।
 वले आगना देता तेहनें, वले चोडें करता आहीज थाप जी ॥ ५९ ॥
 जीव ने जीवां बचावीयां, ओ तो संसार नों उपगार जी ।
 तठें जिण आगना जात्रक नहीं, घर्म पिण नहीं छे लिंगार जी ॥ ६० ॥
 छ काय नां सस्त्र बचावीयां, छ काय रो वेरी होय जी ।
 त्यारो जीतब पिण सावद्य कह्यो, त्याने बचायां घर्म न होय जी ॥ ६१ ॥
 असंजती रा जीवणां मभे, घर्म नही उंसमात जी ।
 वले दांन देवें छे तेहनें, ते पिण सावद्य साख्यात जी ॥ ६२ ॥
 दांन देवों नें जीव बचायवों, यो तो देवता नें आसांन जी ।
 यूं कीया घर्म हुवे तो देवता, जायें पांचमी गति परवान जी ॥ ६३ ॥
 जीव बचावणो नें सावद्य दांन नें, ओलखायो पुर सहर मभार जी ।
 सवत अठारें वरस सातवनें, काति विद चोदस नें सुकरवार जी ॥ ६४ ॥



रत्न : ३१

विरत इविरत री चौपई

ढाल : १

[चतुर विचार करी ने देखो]

साध नें श्रावक रतना री माला, एक मोटी दूजी नांनी रे ।
 गुण गुंथ्या च्याहं तीरथ नां, इविरत रह यह कांनी रे ।
 चतुर विचार करी नें देखो* ॥ १ ॥

समणोवासय पडिमा आदर नें, आपणी न्याति में लीघो रे ।
 तिणनें च्याहं आहार वेहराय, परित संसार न कीघो रे ॥ २ ॥

ए तो गोचरी आपणे छांदे, जोवो सिघंत संभाली रे ।
 दातार ने लेवाल वेहू मे, जिण आग्या किण पाली रे ॥ ३ ॥

श्रावक नो खांगो पीणो नें गेंहणो, इविरत मांहे घाल्यो रे ।
 उवाइ सुयगडा अंग मांहे, पाठ उघाडो चाल्यो रे ॥ ४ ॥

सेवायां इविरत कर्मज लागें, ए तो सरधा सुंघी रे ।
 कर्म तणें वस धर्म परूपें, अकल तिणां री उंघी रे ॥ ५ ॥

करण जोग विगटावे अग्यांनी, लाग रह्या मत भूठें रे ।
 न्याय करे समभतवें तिण सुं, क्रोध करे लडवा उठें रे ॥ ६ ॥

खायां पाप खवायां धर्म, ए अन्य तीर्थी री वायी रे ।
 विरत इविरत री खवर न कांई, भोलां ने दे भरमायो रे ॥ ७ ॥

कहें ममता उत्तरीया धन सुं, दे उपजावे साता रे ।
 इसडो धर्म वतावें लोकां मे, जके मोह मिथ्यात मे राता रे ॥ ८ ॥

द्रव्ये साता नें भावे साता, मूरख भेद न जाणें रे ।
 सावद्य साता जिण धर्म बारें, ग्यांनी विण कुण पिच्छाणे रे ॥ ९ ॥

कहे श्रावक रतनां रो भाजन, तिण पोष्यां नहीं तोटो रे ।
 च्याहं आहार वेहराय ने हर्षें, तिण ने लाभज मोटो रे ।
 कुगुर तणे उपदेस म भूलो ॥ १० ॥

ए तो सरधा अनारज केरी, लोक रीभावण लाग्गा रे ।
 जे कोइ साध कहे तो उपरा, पाचूंइ महाव्रत भाग्गा रे ॥ ११ ॥

रतनां रो भाजन व्रतां करनें, गुण आदरीया हूवो रे ।
 खावो पीवो लेवो ने देवो, ए तो भारग जूवो रे ॥ १२ ॥

श्रमण निग्रथ नें दान रा दाता, बारमा व्रत में आग्या रे ।
 परित संसार कीघो सुघ देने, ज्यानें श्री मुख वीर बखाण्या रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सामायक	संवर	पोषां	में,	सावां	नें	हृषं	वेहरावें	२ ।		
सो	श्रावक	तेला	रे	पारणें,	त्याने	क्यूं	न	जीमावें	२ ॥ १४ ॥	
आ	करणी	जिण	आग्या	वारें,	व्रतां	माहें	न	आवें	२ ।	
सावद्य	जोग	ग	त्याग	क्रीया	तिण,	श्रावक	केम	जीमावें	२ ॥ १५ ॥	
श्रावक	नां	च्यार	विन्नामा	तिण	में,	छोड्यो	ते	माठो	जांणी	२ ।
सावद्य	भार	नें	अल्लो	मेल्यो,	जिण	आग्या	आगेवांणी	२ ॥ १६ ॥		
वार	वार	दांन	नें	प्रससे,	मेद	न	जाणें	मिथ्यानी	२ ।	
सुयगढा	अंग	अवेन	इयारमें,	कह्यो	छ्काय	रो	घाती	२ ॥ १७ ॥		
दांनमात्ता		मांडी	प्रदेसी,	मोप	रो	हेत	न	जांण्यो	२ ।	
च्यारुं	भाग	राज	रा	कीवा,	सावां	नहीं	वखांण्यो	२ ॥ १८ ॥		
तीन	भागां	में	पाप	कह्यो	थें,	एकण	री	कांय	तांणी	२ ।
केसी	कुमार	तो	मुनज	साजी,	च्यारुं	वरावर	रा	जांणी	२ ॥ १९ ॥	
आणंद	श्रावक	व्रत	आदर	नें,	एहवो	अमिग्रहो	लीवो	२ ।		
अन्य	तीरथी	नें	दांन	न	देवूं,	श्री	जिण	आगल	कीवो	२ ॥ २० ॥
छ	छंडी	गे	आमारज	राख्यो,	धापणी	जांण	कचाड	२ ।		
सामायक	संवर	पोषा	में,	ते	पिण	दे	छिट्काइ	२ ॥ २१ ॥ १		
एक	तो	त्याग	करे	नें	वेठों,	एक	दांनसात्ता	मंडावें	२ ।	
भगवंत	री	आगना	किण	पाली,	साधु	किण	नें	सरावें	२ ॥ २२ ॥	
अमंजती		दांन	दीयां	में,	धर्म	नें	पुन	कांय	थापो	२ ।
श्रीर	कह्यो	भगोती	माहें,	निरजरा	नहीं	एकंत	पापो,	२ ॥ २३ ॥		
जिणनें	अन	दीयां	नीपजें	पुन,	नमसकार	इम	जांणी	२ ।		
उल्लटा	पड	पड	कर्म	म	वांघो,	कर	कर	तांगा	तांणी	२ ॥ २४ ॥
निग्णो	न	कीवा	नव	बोलां	रो,	तिणरें	मोलय	मोटी	२ ।	
नव	ही	बोला	सरीपा	न	थापें,	तिणरी	सरधा	बोटी	२ ॥ २५ ॥	
जिनरा	द्रव्य	मुनातर	बेंहरें,	तेहीज	द्रव्य	वताया	२ ।			
गायां	भेंस्यां	घन	धांन	घरती,	त्यानें	क्यूं	न	जनाया	२ ॥ २६ ॥	
कर्त्ता	पाप	देखी	महें	वरज्यां,	धर्म	करावां	माडांणी	२ ।		
मिथ	टिकाणें	मुनज	साभां,	ए	कुंदसण्या	नी	वांणी	२ ॥ २७ ॥		
साव	श्रावक	नों	एकज	मारग,	दोय	धर्म	वताया	२ ।		
ते	पिण	दोनुं	आग्या	माहें,	मिथ	अणहूनी	ल्याया	२ ॥ २८ ॥		
मिथ	पप	नें	मिथ	भापा,	मिथ	गुणठांणो	चाल्यो	२ ।		
इणरो	ले	ले	नांम	अग्यांनी,	भूटो	भगडो	भाल्यो	२ ॥ २९ ॥		

या तीनां रो तार काढ्यो तिण, जिण सीखावण मांनी रे ।
 मिश्र धर्म नें किण विघ सरधे, भगवंत रा संतानी रे ॥ ३० ॥
 हाथी घोडां रथ बेसीं नें, वीर वांदण नें चाल्या रे ।
 सिनान कीया गंहणा फूल पहच्या, श्री मुख सूं नही पाल्या रे ॥ ३१ ॥
 पाप तणा फल कडवा वताया, ए वायक जगनाथो रे ।
 सुण सुण नें वेराग हुंता ज्यां, सूंस लीया जोडी हाथो रे ॥ ३२ ॥
 मूला गाजर ने काचो पांणी, कोइ जोरी दावे ले खोसी रे ।
 जे कोइ वस्त छोडावें विनां मन, इण विघ धर्म न होसी रे ॥ ३३ ॥
 भोगी नां कोइ भोगज रुंधें, वले पाडें अतरायो रे ।
 माहामोहणी कर्मज वांधें, दसाश्रुतखंघ मांहि वतायो रे ॥ ३४ ॥
 देव गुर धर्म नें कारण, मूंड हणे छत्रायो रे ।
 जलटा पडीया जिण मार्ग थी, कुमुरां दीया वेहकायो रे ॥ ३५ ॥
 धर्म हैतें धावक नेंतरीयो, मन मे अधिक हूलासो रे ।
 आरंभ कर जीमायां धर्म जाणें, तो बोध बीज रो नासो रे ॥ ३६ ॥
 वीर कह्यो आचारंग मांहें, जिण ओलखीयो तत सारो रे ।
 समदिष्टी धर्म नें कारण, न करें पाप लिंगारो रे ॥ ३७ ॥
 एकंद्री मारे पचंद्री पोषे, ते निरुचें वाधें कर्मो रे ।
 मच्छ गलागल चोडे मांडी, ए पाषडीयां रो धर्मो रे ॥ ३८ ॥
 लोही खरड्यो जो पितंबर, लोही सू केम घोवायो रे ।
 तिम हिंसा में धर्म कीयां थी, जीव उजलो किम थायो रे ॥ ३९ ॥
 कहे म्हे पाप करां थोडो सो, पछे होसी धर्म अपारो रे ।
 सावद्य काम करां इण हेते, तिणथी खेत्रो पारो रे ॥ ४० ॥
 चोखी सिन्यासण धर्म कह्यो तिण, दान सिनान वतायो रे ।
 आठमा अघेन गिनाता मांही, घणा लोक दीया भरमायो रे ॥ ४१ ॥
 जिम कोइ सावद्य दान दिडाइ, मन मे हुवें रलियायत रे ।
 लोकां रे मन गमता बोले, चोखी जोगण ना केडायत रे ॥ ४२ ॥
 वा सरघा सुखदेव, सिन्यासी री, सहस जणा सिप्य जाणी रे ।
 सेठ सुदंसण तिण रो भगता, हाड मिजा रगाणी रे ॥ ४३ ॥
 कर्म थोडा नें सुलटो सुइयो, अतर गति निरणो कीघो रे ।
 थावचे अणगार प्रतिबोधयो, खोटी छोड सजम लीघो रे ॥ ४४ ॥
 चतुरविघ सधना कोठा ठाख्या, पाछळ भव दांन वतायो रे ।
 सनत कुमार इंद्र हूवो तेथी, ए पिण मूसा वायो रे ॥ ४५ ॥

ए तो पूछा वर्तमान काले, पाछिल भव री नहीं चाली रे ।
 फंद में नाखे अजांग लोकां ने, कुद्व हीया में घाली रे ॥ ४६ ॥
 तीनां काल री समभ्न पडे नही, तो हेत ने सुख वतावां रे ।
 च्याहं आहार नो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे ॥ ४७ ॥
 अंवर ना सिष्य सात सो हूँता, अण दीवो नही लीवो रे ।
 काचो पांणी अधर्म जांग पीता, अण मिलीयां अणसण कीवो रे ॥ ४८ ॥
 जे कोइ मिलतो दातार तिणा नें, हूँ वेहरावत पांणी रे ।
 लेवाल तो अविरत में लेता, इमहीज दातार जांणी रे ॥ ४९ ॥
 ग्यांनी पुरपां दोनूं जणां री, सावच करणी जांणी रे ।
 दातार ने कोइ धर्म कहे तो, अन्य तीर्थ नी वांणी रे ॥ ५० ॥
 समकत वमीयो नंदणमणीयारे, साची सरघा भागी रे ।
 तेले करे तीन पोपा ठाया, भूख तिरपा अति लागी रे ॥ ५१ ॥
 संगत पायंडीयां री करने, उलटो मारग लीघो रे ।
 घिन घिन कूजा तलाव खणावे, तिण सफल जमारो कीवो रे ॥ ५२ ॥
 पोषो पार श्रेणक नें पूछे, पोखरणी दाव खणाइ रे ।
 घन खरचे जस लीयो लोकां में, वले दांसाला मंडाड रे ॥ ५३ ॥
 सोलें रोग सरिरे उपनां, मूओ अति ध्यांन ध्यायो रे ।
 आप खणाइ में जावे पडीयो, डेडक रो भव पायो रे ॥ ५४ ॥
 आर्द्र कुमार नें ब्राह्मण वोल्या, छोड तूं सगला परचा रे ।
 म्हांरो धर्म उत्तम नें उजल, युण तूं मोरी चरचा रे ॥ ५५ ॥
 दोय सहंस ब्राह्मण जीमाड्यां, परलोक में सुख दायक रे ।
 देव हूवे पुन खंच उपाजीं, वेद तणो ए वायक रे ॥ ५६ ॥
 आर्द्रकुमार कह्यो अपात्र ने, नित जिमाडे तेही रे ।
 दोय सहंस ब्राह्मण ने दाता, नरक पहुँचे वेही रे ॥ ५७ ॥
 मंजारी जिम रसना गिरवी, कहि दीयो - सर्म न राखी रे ।
 धर्म ने पुन रो अस न भाप्यो, सूर्यगडा अंग छे साखी रे ॥ ५८ ॥
 भगू पिरोहित कहे वेटां नें, सांभल मोरी सिप्या रे ।
 वेद भणी ब्राह्मण जीमाडी, लेजो थे पछे दील्या रे ॥ ५९ ॥
 ब्राह्मण जीमाड्यां ए फल लागें, पहुंचाडें तमतमा रे ।
 उत्तराघेन चवदमें भाप्यो, ए तो सावच धमां रे ॥ ६० ॥
 खोटी सरघा नें हीण आचारी, पूजा श्लागा रा भूखा रे ।
 कर्म घणा नें संवली न सूमें, कदागरो करवा हुका रे ॥ ६१ ॥

राते भूला तो आसा राखें,	दीयां सूझसी सूला	रे ।
कहो ने आसा राखे किण विघ,	दीयां दोपारां रा भूला	रे ॥ ६२ ॥
भाव मारग थी भूला अग्यांनी,	उजड चलीया जायो	रे ।
मन में आसा मुगत री राखे,	दिन दिन अलगा थायो	रे ॥ ६३ ॥
सूतर नी चरचा अलगी मेले,	लोक कीया पखपाती	रे ।
साची सरधा किण विघ आवे,	हूआ घणा रा साथी	रे ॥ ६४ ॥
जो थारें दिल काय न वेसैं तो,	सगलो भगडो चूको	रे ।
समता आदर ने कजीया छोडो,	जिण तिण आगे म कूको	रे ॥ ६५ ॥
इविरत ओलखो उत्तम प्राणी,	छोड द्यो राग ने घेखो	रे ।
मानव नों भव अहल म हारो,	परभव सांमो देखो	रे ॥ ६६ ॥



ढलल : २

[चतुर विचार करी न देखो]

संख नें पोखली जिमण कीचो, ते तो आपणों छांदो रे ।
तिणनें सरावें मूंड अग्यांनी, कर्मा रा पूंज वचें रे ॥ १ ॥
तिण जीमग नें माठो जांणी, पोपो कर दीवो त्यागी रे ।
पखी रे दिन पाप नें पचख्यो, संख वडो वेरागी रे ॥ २ ॥
उपल श्रावका पोखली घर आयां, विनों कीयो सीस नमायो रे ।
ते तो छांदो आणणों जांण्यो, भगवंत नहीं सिखव्यो रे ॥ ३ ॥
नमसकार अंतर नें कीयो चेलं, ते तो सूतर उवाइ में चाल्यो रे ।
भगवंत भाव दीठा जिम भाप्या, जिण धर्म माहिं न घाल्यो रे ॥ ४ ॥
नवकार ना पद पांच पल्प्या, श्रावक नें दीचो टालो रे ।
जिण आग्या नहीं ग्रहस्य वांदण री, भगवंत वचन संभालो रे ॥ ५ ॥
माहोभाहि वीनों वीयावच कीवां, भगवंत नहीं वखाण्यां रे ।
ग्रहस्य ना कार्य सावद्य दीठा, मनकर भला न जाण्या रे ॥ ६ ॥
कहें म्हें अचिरत सेवां जिण में, जाणां छां वंघता कर्मा रे ।
पिण कोइ सेवारें इविरत माने, जिणनें हुवें छें धर्मा रे ॥ ७ ॥
आ सरवा श्रावक नहीं राखें, न दें किण नें दगो रे ।
धर्म ठिकाण भूठ वोलतो, जिण सासण में ठगो रे ॥ ८ ॥
आपतो अचिरत माहिं आणें, भोला नें धर्म वताइ रे ।
श्रावक एहवो भूठ न वोलें, जिण धर्म माहि आइ रे ॥ ९ ॥
साव नें कोइ अनुच वेंहरावें, ते गर्म में आडो आवें रे ।
श्रावक नें कोइ सचित खवरावें, ते सुद गति किण विव जावें रे ॥ १० ॥
एक एक मानव कर्म तणें वस, कर रह्या उंची तांणो रे ।
सचित अनुच रोकड छों मानें, होसी धर्म संका म आंणो रे ॥ ११ ॥
पेट रें कारण अनरय भावें, परभव सांमो न जेवे रे ।
वले पखनात कर कुगरां री, मानव नो भव खेवे रे ॥ १२ ॥
दांन सील तप भावना च्यालं, मुगत नगर ले जावें रे ।
तिण में वान सुपातर आयो, ते इविरत माहिं न ल्यावे रे ॥ १३ ॥
समचें दांन में धर्म कहें तो, नाइ जिण धर्म सेली रे ।
आक नें गाय रो दुव अग्यांनी, कर दीयो मेल समेली रे ॥ १४ ॥

इविरत मे दान ले पेंलां रो, मोष रो मार्ग वतावें रे ।
 धर्म कइयां विण लोक नहीं दे, जब कूर कपट चलावें रे ॥ १५ ॥
 कहें ओर जायगां धन देता देखें, खरच हूं लेखे लेखें रे ।
 ए श्रावक सुपातर त्यानें, दान दे तूं वसेखे रे ॥ १६ ॥
 कल्पें ते वस्त श्रावक नें देनं, गोत तीर्थकर बांधे रे ।
 एहवो धर्म अनारज भाषें, ते किण विघ लागे सांधो रे ॥ १७ ॥
 आगार ने सुपातर कहि कहि, सांनि कर साधु दरावें रे ।
 तिण रें दीसे घोर अंधारो, समकत किण विघ आवें रे ॥ १८ ॥
 खेती करे व्याज वोहरावे पालें, घर रो काम चलावें रे ।
 करें सगपण आरा ने मोसर, वेटा वेटी परणावें रे ॥ १९ ॥
 साचां रें आहार नें पाणी वधें तो, परठ दें एकंत जायो रे ।
 इग्यारमी पडिमा रो श्रावक मांगे तो, तिण नें न दें किण न्यायो रे ॥ २० ॥
 धरती परठ्यां तो व्रत रहे छें, दीघा दोप उघाडा रे ।
 पांच महाव्रत मूलगा तिण में, सगला पडीया वधारा रे ॥ २१ ॥
 धरती परठ्यां तो अरथ न आवें, ए करणी नही नीची रे ।
 दीघां दराया ने भलो जाण्या, सावद्य इविरत सीची रे ॥ २२ ॥
 जगन मम्मिम उतकष्टा श्रावक, तीनां री एकज पांतो रे ।
 इविरत छे सगलां री माठी, तिणमे म राखो भ्रांतो रे ॥ २३ ॥
 कोइ श्रावक ना व्रत ले साचां पे, आयो जिण दिस जायो रे ।
 मार्ग मा दोय मित्री मिलिया, ते वोल्या जूदी जूदी वायो रे ॥ २४ ॥
 एक कहे व्रत चोखा पाले, ज्यूं कटें आठोइ कर्मो रे ।
 काल अनादि रे भमते भमते, पायो जिणवर धर्मो रे ॥ २५ ॥
 एक कहें तूं आगार सेवे, सचितादिक सर्व संभाली रे ।
 जतन घणा कीजें डीलां रां, वले कूटंब तणी प्रतपाली रे ॥ २६ ॥
 व्रत पालण ही आग्या दीघी, ए तो धर्म रो मित्री मोटो रे ।
 अविरत आग्या दीघी तिण नें, ग्यानी तो जाणें खोटो रे ॥ २७ ॥
 गुर तो मिलिया जावक आंधा, चेला पूरा निरंदो रे ।
 ए तो जाल रच्यो तिण चोडें, कोइ आय पडें तिण फंदो रे ॥ २८ ॥
 न्याय री चरचा रो काम पडें तो, एके होय माडें लडणों रे ।
 पापंडीयां सूं जाय मिलिया वले, लीयो लोकां रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 अत ही दृष्ट हुवे हिंसाधर्मो, निन्दा करे परपूठे रे ।
 कोइ खांच ताण साचां पें आणें, तो अवगुण लेनं उठें रे ॥ ३० ॥

कहें दांन दीयो तीर्थंकर तिण में, जांणां छां कटीया कर्मों रे ।
 ते तो सोनइयां देवां आण दीघा, त्यानें पिण हुसी धर्मों रे ॥ ३१ ॥
 कर्म कटें सोनइयां साटें, तो करणी नहीं करता रे ।
 ए मारग थी सिवपुर पोहचें, तो घर छोड दुख में न पडता रे ॥ ३२ ॥
 सोनइयां दीघां कर्म कटें तो, वरस री जेज न पाडत रे ।
 लोकां रा घर भर सोनइयां, देता कर्म विडारत रे ॥ ३३ ॥
 कहें लीघा पाप ने दीघां धर्म, तिण लेखे रह गया कोरा रे ।
 देवां कनें ले मिनष नें दीघा, पडीया अणहुंता फोडा रे ॥ ३४ ॥
 एक कोड आठ लाख सोनइया, निकल्या वर्सांदांन देइ रे ।
 मुगत रों मारग तिणमें न जांण्यो, संवर निरजर न बेइ रे ॥ ३५ ॥
 वर्सीं दांन महोच्छव सगला, केवलीयां नहीं वखांण्यो रे ।
 तीर्थंकर नें देव दोनूं इविरती, त्यां पिण धर्म न जांण्यो रे ॥ ३६ ॥
 भगवंत दीख्या लीघी तिण कालें, चढीया अतंत वेंरागो रे ।
 सावद्य दांन सिनांन सोनइयां, माठा जांणी दीघा त्यागो रे ॥ ३७ ॥
 भगू पिरोहित धन छोड निकलीयो, इखुकार राजा मंगायो रे ।
 धन सूं धर्म ने कर्म कटे तो, अेली साटें कांय गमायो रे ॥ ३८ ॥
 घर छाडें त्यांमें अकल घणी थी, आलस कर आघो न काडत रे ।
 धन सू धर्म हुवें ते करनें, कांम सिराडे चडत रे ॥ ३९ ॥
 धर्म री धुरा धन सूं न चालें, भगू नें कह्यो बेटां दोइ रे ।
 माहोमां धन दीयां धर्म थापें, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ४० ॥
 रिषभदत्त ब्राह्मण ने देवानंदा, वांणी मुण आयो वेंरागो रे ।
 त्यां पिण धन नें छोड्यो अधर्म जांण, धर्म हुवें तो न काडत आघो रे ॥ ४१ ॥
 कहें आरा मोसर डायचादिक में, मिश्र धर्म कर रह्या तांणो रे ।
 राय उदाइ राज दीयो भाणेजा नें, तिण लेखें तो मोटो लाभ जांणो रे ॥ ४२ ॥
 ए परिग्रह छे अनरथ रो मूल, करें बोध बीज री घाता रे ।
 वीर कह्यो छें दसमां अंग में, ए नरक तणों छें दाता रे ॥ ४३ ॥
 ठांम ठांम सूतर सिद्धांतां में, धन सूं धर्म न थाप्यो रे ।
 किण विध कर्म कटें दाता रा, ए तो अविरत माहें आप्यो रे ॥ ४४ ॥
 जंबूकुमार आठ परणे आयो, डायचे रिघ लीयो अपारी रे ।
 कोड निनाणू तो पेंरावणी रो, वले घर में हुंती रिघ भारी रे ॥ ४५ ॥
 कनक कामणी सूं विरक्त भावें, उताम चारित लीघो रे ।
 वेंराग आणे धन छोड दीयो पिण, धन सूं धर्म न कीघो रे ॥ ४६ ॥

बीस हजार सोना रूपा ना आगर, खूटें नही अखूट भंडारो रे ।
 चक्रवत् छे खंडकेरो साहिब, तिणरी रिघ रो घणो विस्तारो रे ॥ ४७ ॥
 एहवी रिघ मे काल कीयो तिण, नरक पढ्या बांधो कर्मो रे ।
 दुरगति टल जाय धन दीघां, तो दे दे करता घर्मो रे ॥ ४८ ॥
 श्रावक तो जिण कालेइ हुंता, धन लेवा नें तयारो रे ।
 यानें दीघां उवार हुवें तो, दे उत्तरें भव पारो रे ॥ ४९ ॥
 चित्त मुनी संभूत समभावा, साध श्रावक घर्म बतायो रे ।
 धन सूं सुद गति जाय विराजें, इसडो न कह्यो उपायो रे ॥ ५० ॥
 कहें साध आहार करें इविरत में, संजम नो छें ओटो रे ।
 एतो वचन अनारज करों, तिण आदरीयो मत खोटो रे ॥ ५१ ॥
 इविरत नें परमाद वेहूं नें, संजम नों छें घको रे ।
 ओटो कहें तिणरी उंधी सरघा, तिण गिरीयो मिथ्यात नें पको रे ॥ ५२ ॥
 साधां सावद्य सगलो त्यागयो, पाप रो नहीं आगारो रे ।
 इविरत में आहार ल्यावें खावें, ते निश्चें नहीं अणगारो रे ॥ ५३ ॥
 च्यार गुणठांणां में अकेली इविरत, श्रावक में दोनूं पावें रे ।
 साधां रे इविरत मूल न दीसैं, कुब्दी कूड चलावें रे ॥ ५४ ॥
 इविरत में साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं देता रे ।
 पाप- जाणें तो मुनज सामेंत, ए पिण आग्या न लेता रे ॥ ५५ ॥
 प्रतख पाप जाणें आहार कीघां, कर्म तणो बंध होवें रे ।
 तो आग्या ले गुरनी मुख, गुर नें कांय डबोवे रे ॥ ५६ ॥
 गुरनी आग्या ले पाप करण री, ते तो मलेछ अनारज रे ।
 विनैं सहित कोइ सावद्य सेवें, तिण मोटो कीयो अकारज रे ॥ ५७ ॥
 त्याने गुर पिण मिलीयो अतंत अग्यांनी, कर्मा कर सुइयो भूंडो रे ।
 पाप- करण री आग्या देणें, पोते अली साटें कांय बूडो रे ॥ ५८ ॥
 चेला नें आग्या इविरत री दे, घाल्यो पाप में सीरो रे ।
 देखो अकल गइ तिण गुर री, इण नें कांई पडी थी भीरो रे ॥ ५९ ॥
 पाप करण री आग्या देसी, ते निश्चें होसी भारी रे ।
 कुण चेलो गुर ने गुर भाइ, जोबो अंतर माहें विचारो रे ॥ ६० ॥
 साध आहार कीयां परमाद नें इविरत, तो दातार नें नहीं घर्मो रे ।
 इविरत री इविरत में घाल्यो, तो दोयां रे बंधसी कर्मो रे ॥ ६१ ॥
 कर्म तणे वस मूंड अग्यांनी, सबली सीख न घारें रे ।
 आप डूवे इविरत में ल्याड, ते ओरां नें किण विघ तारें रे ॥ ६२ ॥

साध आहार कीयां में पाप परूषें, त्यारें मोह मिथ्यात रो चालें रे ।
 तीन काल रा मुनीसरां नें, दीयो अणहंतो आलो रे ॥ ६३ ॥
 आहार करण री सुघ साधां नें, भगवंत आग्या दीधी रे ।
 तिण में पाप वतावे अग्यानी, खांच गला में लीधी रे ॥ ६४ ॥
 जो थानें समझ पडे नहीं पूरी, तो राखो जिण परतीतो रे ।
 आग्या माहें पाप परूषें, एहवी म करो अनीतो रे ॥ ६५ ॥
 जिण आग्या में पाप परूषें, ते भूला भरम अग्यानी रे ।
 आग्या वारे धर्म कहें त्यानें, किण विघ कहिजें ग्यानी रे ॥ ६६ ॥
 गुण विण भेख धरे साधु रो, करें विकलां री थापो रे ।
 छ कारणां विण आहार करसी, तिणनं छें एकंत पापो रे ॥ ६७ ॥
 छ कारणें साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं लोपी रे ।
 पाप तिणां ने किण विघ लाणें, संवर कर आतम गोपी रे ॥ ६८ ॥
 निरवद गोचरी रिषेसरां री, मोप री साधन भाखी रे ।
 पाप कर्म आहार करतां न लागे, दसवीकालक साखी रे ॥ ६९ ॥
 सात कर्म साध ढीला पाडें, आहार करे तिण कालो रे ।
 सुघ भोगवीयां ए फल लागें, सूतर भगोती संभालो रे ॥ ७० ॥
 सेलक जप रे कांचें वेस नीकलीयो, राखी रेंगा देवी सूं पीतो रे ।
 अणुकंपा आणें साह्यो जौयो, जिणरिष हूवो फजीतो रे ॥ ७१ ॥
 सेलक जप जिम संजम जाणो, रेंगा देवी ज्यूं इविरत मेंली रे ।
 मुगत नगर नें संत नीकलीया, त्यां इविरत छोडी पेंली रे ॥ ७२ ॥
 सेलक जप ने रेंगादेवी रे, मांहोमां नहीं मेलपो रे ।
 विरत सूं धर्म ते पार पोहचावे, इविरत लगवें पापो रे ॥ ७३ ॥
 रेणा देवी एक भव दुखदायक, इविरत अन्ततो कालो रे ।
 सांसो हूवे तो गिनाता माहें, नवमों अघेन संभालो रे ॥ ७४ ॥

ढाल : ३

[चतुर विचार करी ने देखो]

मुयगडां अंग अघेन इग्यार में, त्यां दान रो कीधो निचोडो रे ।
 मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते करे अणहूँती भोडो रे ॥ १ ॥
 चतुर विचार करी ने देखो ॥
 सोलमी गाथा सू लेइ इकवीसमी ताई, ए छव गाथा रा अर्थ छे सूंघा रे ।
 तिहा सावद्य दांन मे मिश्र थापण नें, अर्थ करे छे उंघा रे ॥ च० २ ॥
 ते सावद्य दांन संसार नां कारण, तिण में निरवद रो नही भेलो रे ।
 ससार ने मुगत रा मारग न्यारा, ते कठें न खावे मेलो रे ॥ ३ ॥
 ए छ गाथा रा अर्थ छें भारी गूढा, त्यांरो निरणो कीजों वुधवांनो रे ।
 ते अर्थ विवरां सुध त्यांरो, सुणजों सुरत दे कांनो रे ॥ ४ ॥
 दांन रे अर्थ जीव हणें त्यांने, साधु तो भलो न जाणे रे ।
 देवे पो सतुकार खोदावे कूवादिक, लाभ जाणें सरघा परमाणे रे ॥ ५ ॥
 ते आय साधां नें प्रस्न पूछे, ते आरंभ लीयां बोले बांणी रे ।
 इण करणी में पुन हुवे के नाही, जब साध करे मून जांणी रे ॥ ६ ॥
 पून पिण साध न कहे तिणने, वले न कहे थारे पुन नांही रे ।
 वेह प्रकारें माहा भय रो कारण, मून करे ते कारण काई रे ॥ ७ ॥
 दान रे कारण लोक करे छे, तस धावर री घातो रे ।
 पुन कहां त्यांरी दया उठे छे, दया बिण नही पुन साख्यातो रे ॥ ८ ॥
 असंजती नें उदीरी उदीरी, आरभ कर जीमावे अन पांणी रे ।
 पुन नही कह्या अंतराय पडे छे, ओहीज कारण जांणी रे ॥ ९ ॥
 साधु तो अंतराय किणने न देवे, उण वेलं जीम क्यांने हलावें रे ।
 चरचा रो कांम पडें तिण काले, हुवे जिसा फल बतावें रे ॥ १० ॥
 जे कोइ दांन प्रससे तिणने, कह्यो छकाय रो घाती रे ।
 तो देवे दिरावें त्यांरो स्यूं कहिवों, ए पिण उणरा साथी रे ॥ ११ ॥
 हिंसा भूठ चोरी कुसील प्रससे, ते बूड गया काली धारो रे ।
 तो करण करावण वाला रों, किण विघ होसी उवारो रे ॥ १२ ॥
 कोइ गांव जलावे ने गायां कटावे, इत्यादिक कारज सब मूडां रे ।
 त्यांने सरावे ते वूड गया छें, तो करण वाला तो वगेष वूडा रे ॥ १३ ॥
 ज्यु सावद्य दांन प्रससे तिणने, कह्यो छे छकाय रो घाती रे ।
 देवें तिणने धर्म मिश्र कहे त्यांने, कहीजें मूढ मिथ्याती रे ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

माठो काम सरायां वूडें छें, तो कीबां वूडसी गाढो रे ।
 आ सरवा सुण सेंठी धारो, थें सल अमितर काढो रे ॥ १५ ॥
 सावद्य दान प्रससैं तिणरा, माठा फल कहुआ जिण रायो रे ।
 हिवें दान नपेवणों नहीं साधु नें, तिणरो पिण सुणजों न्यायो रे ॥ १६ ॥
 दातार दान देवें तिण कालें, लेवाल लेवें घर पीतो रे ।
 जब साध कहे तूं मत दें इणनैं, नपेवणों नहीं इण रीतो रे ॥ १७ ॥
 जो दान देता नें साध नपेदें तो, लेवाल रे पडें अंतरायो रे ।
 अंतराय दीयां फल कडवा लागें, तिणसूं नपेव न करें इण न्यायो रे ॥ १८ ॥
 अंतराय सूं डरता साधु न बोलें, ओर परमारथ मत जाणो रे ।
 ते पिण मून छें वरतमान कालें, बुधवंत कीजों पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 उपदेस देवें साध तिण कालें, दूध पांणी ज्यूं करें नीवेडो रे ।
 विनां वतायां च्यार तीरथ में, किण विव मिटें अंबेरो रे ॥ २० ॥
 दोनूं भापा साधु नहीं बोलें, पुन छें अथवा पुन नांही रे ।
 ते वरज्यों वरतमान काल आसरी, थें सोच देखों मन मांहीं रे ॥ २१ ॥
 कोइ कहें पुन कहणों न कहणों वरज्यों, तो पुन में पाप रो भेल जाणो रे ।
 तिणसूं मिथ्र ठिकाणों ले उठ्या अग्यांनी, ते कर कर उंबी तांणो रे ॥ २२ ॥
 पुन छे कें नहीं रो प्रस्न पूछ्यों, पाप रो कथन न चाल्यो रे ।
 मिथ्र री सरवा वाले अग्यांनी, घोचो मिथ्र रो बाल्यो रे ॥ २३ ॥
 दान में मिथ्र नहीं जिण भाप्यों, पुन होसी कें पापो रे ।
 सुपातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, पिण खोटी मिथ्र री थापो रे ॥ २४ ॥
 बले सुयगडा अंग अवेन इकवीसमें, दीय वार्ता जिण भाखी रे ।
 त्यां पिण न कहुओ छें मिथ्र ठिकाणों, जोवों वतीसमीं गाथा साखी रे ॥ २५ ॥
 दातार नें देतां लेवाल नें लेतां, साधु इसडों देखें विरतंतो रे ।
 जब गुण अवगुण न कहें तिण कालें, तिहां मून करें एकंतो रे ॥ २६ ॥
 तिण दान तणा साधु गुण करें तो, असंजम री अणुमोचनां लागें रे ।
 असंजम छें ते एकलो अधर्म, ते अणुमोचां संजम भागें रे ॥ २७ ॥
 जिण दान नें साधु भलो न जाणें, भलो जाण्यां ववें पाप कर्मो रे ।
 तो तिणहीज दान तणा दाता नें, किण विव होसी मिथ्र नें धर्मो रे ॥ २८ ॥
 पाप अणुमोचां तो पाप हुवें छें, धर्म अणुमोचां धर्म होयो रे ।
 तो मिथ्र अणुमोचां मिथ्र चाहीजें, ते मिथ्र न वीसैं कोयो रे ॥ २९ ॥
 दान देवें दिवरावें भलो जाणें, यां तीनां री एकज पांतो रे ।
 पुन पाप मिथ्र होसी तो तीनां नें, तिणमें म राखों भ्रांतो रे ॥ ३० ॥

जिण दांन तणा गुण कीचां साधु नें, असंजम री अणुमोदनां लागे रे ।
 ते दांन असंजम में जिण घाल्यो, ओगुण कहां रो बोलतों आणें रे ॥ ३१ ॥
 दांन तणा ओगुण कीचां में, लेवाल रें पडें अंतरायो रे ।
 अंतराय देंगी ते साधु नें न कल्पें, तिण सूं मून करे मुनीरायो रे ॥ ३२ ॥
 इण न्याय साधु नें मून कही छे, पिण मिश्र न जाणें तिणमें रे ।
 इण दांन में मिश्र ने धर्म थापें तो, कोरो मिश्र्यात छें तिण में रे ॥ ३३ ॥
 गुण कहां असंजम अणुमोदीजे छें, अवगुण कहितां लागें अंतरायो रे ।
 यां दीयां सूं डरतो साधु न बोलें, अठे मिश्र किहां थी थायो रे ॥ ३४ ॥
 साधु मून करे वरतमान कालें, पिण उपदेस में मून न राखें रे ।
 द्रव्य खेतर काल भाव देखें तो, हुवे जिसा फल दाखें रे ॥ ३५ ॥
 मिश्र थापण नें मूढ अग्यांनी, छल छिद्र रह्यो नित देखो रे ।
 सूतर में ओर बोल घणा छें मिश्र रा, त्यामें मिश्र दान दे टेकों रे ॥ ३६ ॥
 कोइ कहे पाप कहे तिण देतां पाल्यो, इसडी बोलें छे वाणों रे ।
 ए दोनूं भाषा ने एकज सरखे, ते भाषा तणा मूढ अयाणो रे ॥ ३७ ॥
 कोइ कहे पाप कहे तिण दांन निषेद्यो, ते पिण भाषा रा अजाणो रे ।
 सावध दांन नें थापण अग्यांनी, बोले छे उंची वाणो रें ॥ ३८ ॥
 दांन देता नें कहे तूं मत दें इण ने, तिण पाल्यो निषेद्यो दांनो रे ।
 पाप हुतो ने पाप बतायो, तिणरो छे निरमल ग्यांनो रे ॥ ३९ ॥
 असजती ने दांन दीयां में, कहि दीयो भगवंत पापो रे ।
 त्या दांन नें वरज्यो निषेद्यो नांही, हुंती जिसी कीची थापो रे ॥ ४० ॥
 किण ही साधु ने कहाओ आज पछे तूं, म्हारे घर कदे मत आयो रे ।
 किणही ए करडा वचनज बोल्यो, हिवे साधु किसे घर जायो रे ॥ ४१ ॥
 साधां ने वरज्यो तिण घर में न पेसें, करडा कहा तिण घर माहे जावे रे ।
 निषेद्यो ने करडो बोल्यां ते, दोनूं एकण भाषा मे न समावे रे ॥ ४२ ॥
 ज्यूं कोइ दांन देतां वरज राखे, कोइ दीघा में पाप बतावे रे ।
 ए दोनूई भाषा जुदी जुदी छे, ते पिण एकण भाषा में न समावे रे ॥ ४३ ॥
 कोइ रांक गरीब ने भरता देखी नें, त्यारी अणुकंपा मन माहे आवे रे ।
 जब पैला रों माल चोरी कर पोते, रांका ने हाथ सूं पकडावें रे ॥ ४४ ॥
 धणी नें विण पूछ्यां चोरी कर देवें, रांकां री अणुकंपा काजें रे ।
 उणरी सरखा रे लेखें तो इणनेइ मिश्र, अठें मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ ४५ ॥
 माल धणी रे दाह दीवी तिणरो, हुवो एकंत पाप कर्मो रे ।
 तो रांकां नें दीयो ते अणुकंपा भांणे, उणरें लेखें ओ प्रतख धर्मो रे ॥ ४६ ॥

पैलां रो धन खोस रांकां नें देवें,
तो उठ गई मिश्र री सरधा,
पर रो धन चोर रांकां नें दीघां,
तो जाबक जीव हणे रांक नें पोषे,
कोइ चोरी कर रांकां नें पोषे,
इण एकंत पाप में मिश्र कहे,
रांकां नें पोषे घणा जीव हणे ने,
ते चोरी तो त्यांरा सरीर री लागी,
रांकां नें पर धन चोर देवें त्यांने,
ए दोनू किरतब करें अणुकंपा आंणे,
पर नीं चोरी करे रांकां ने देवे,
तो हिंसा कर ने कुपातर पोषे,
कहे आराधवी विराधवी मिश्र भाषा छें,
आराधवी जितरो छे एकलो धर्मो,
इम कहि कहि मिश्र करणी थापें,
इम आंटी घालें सावद्य दांन माहे,
ते मिश्र भाषा छे एकंत सावद्य,
महामोहणी कर्म बंधें तिण सूं,
आराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही,
अठें पाप धर्म रो कथन न चाल्यो,
आराधवी कही छें सत भाषा नें,
ते साची भाषा छें सावद्य निरवद,
साची भाषा सावद्य तिणने,
पिण एकंत पाप बंधें तिण बोल्यां,
ववहार भाषा नें कही छे जिणेसर,
ते पिण कही छे बोलवा लेखें,
धर्म अधर्म लेखे तो ववहार भाषा,
निरवद ने आराधवी जांणो,
जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखें,
तो ववहार भाषा बोलसी तिणने,
जो साची भाषा बोले धर्म रे लेखें,
तो साची भाषा सावद्य बोल्या,

तिणमें मिश्र कहें नांही रे ।
थें सोच देखो मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
तिण में मिश्र हुवें नांहीं रे ।
अठें मिश्र कठें तिण मांहीं रे ॥ ४८ ॥
कोइ जीव हण नें पोषे रांको रे ।
त्यांरी सरधा में पूरो छे बांको रे ॥ ४९ ॥
तिणनें चोरी हिंसा लागें दोयो रे ।
जीव हणीयां री हिंसा होयो रे ॥ ५० ॥
एक चोरी तणों पाप होयो रे ।
ते गया जमारो खोयो रे ॥ ५१ ॥
इण किरतब सूं जो बूडें रे ।
ते क्यूं नही बेंससी तूडें रे ॥ ५२ ॥
ते भाषा छें धर्म अधर्मो रे ।
विराधवी सूं लागे पाप कर्मो रे ॥ ५३ ॥
तिण करणी में कहें धर्म पापो रे ।
करे मिश्र री थापो रे ॥ ५४ ॥
तिम बोल्यां बंधें पाप कर्मो रे ।
तिणमें किहां थी धर्मो रे ॥ ५५ ॥
ते तो बोलवा लेखें रे ।
तिणरा सुणजो भेद वशेखें रे ॥ ५६ ॥
ते पिण बोलवा लेखें पिछांणो रे ।
तिण सावद्य में धर्म म जांणो रे ॥ ५७ ॥
आराधवी कही बोलवा लेखें रे ।
ते मिश्र में मूढ पाप न देखें रे ॥ ५८ ॥
आराधवी विराधवी नांही रे ।
धर्म अधर्म लेखो नही यांहीं रे ॥ ५९ ॥
आराधवी विराधवी जांणो रे ।
विराधवी सावद्य नें पिछांणो रे ॥ ६० ॥
आराधवी विराधवी होइ रे ।
धर्म अधर्म नही कोइ रे ॥ ६१ ॥
थापे आराधवी कोयो रे ।
एकंत धर्मज होयो रे ॥ ६२ ॥

जो मिश्र भाषा माहे मिश्र हुवें तो, सत भाषा मे एकंत धर्मो रे ।
 ववहार भाषा तो सुन होय जावें, बोल्यां नही धर्म ने पाप कर्मो रे ॥ ६३ ॥
 ए तो बोलवा आश्री च्यांरुई भाषा, आराधवी विराधवी जांणो रे ।
 अठे धर्म अधर्म रो कथन न चाल्यो, पनवणा सूं करो पिच्छांणो रे ॥ ६४ ॥
 सत असत मिश्र ने ववहार, ए च्यार भाषा जिण भाखी रे ।
 त्यामें असत नें मिश्र तो जावक सावद्य, जोवो दसवीकालक साखी रे ॥ ६५ ॥
 सत भाषा ने ववहार भाषा, ए तो सावद्य निरवद्य दोई रे ।
 ते सावद्य टाले ने निरवद्य बोलें, तो पाप न लागें कोई रे ॥ ६६ ॥
 असत ने मिश्र तो जावक छोडणी, ते बोल्यां बूडे जावे वहिता रे ।
 जो मिश्र भाषा माहे मिश्र धर्म हुवे तो, जावक छोडणी नही कहितां रे ॥ ६७ ॥
 धर्म अधर्म आश्री च्यांरुई भाषा, बोलवी नही बोलवी चाली रे ।
 सत ने ववहार विचार बोलवी, असत मिश्र ने सरवथा पाली रे ॥ ६८ ॥
 तीसां बोलां वंघे महामोहणी कर्म, ते एकंत छे पाप कर्मो रे ।
 तो मिश्र भाषा बोले तिण माहे, किण विघ होसी पाप ने धर्मो रे ॥ ६९ ॥
 जो गुणतीस बोलां में एकलो पाप, तो मिश्र भाषा मे एकत पापो रे ।
 कोइ मिश्र भाषा माहे मिश्र धर्म कहे, तिण आगम दीया उथापो रे ॥ ७० ॥



ढलल : ॡ

दुहल

श्री ऒण आगम मलहें इम कहूँ, धर्म अधर्म करणी दूय ।
धर्म करणी मलहे ऒण आगनल, अधर्म करणी में आगनल न कुूय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म करणी कुई कुई, ते कुठें न खलवें मेल ।
ऐे मूढ मिथुयलती ऐीवडल, तुयलं कर दीधी मेल सभेल ॥ २ ॥
कुतुर वुयलपलरी वलणऐ करें, ऐेंहर ने इमृत दूय ।
मलंगें ते वसत देवें गरलकु नें, पलण ओर न देवें कुूय ॥ ३ ॥
ववेक वलकुल वुयलपलरी हुवें, तलणनें वसुत री खवर न कुय ।
ऐेंहर घललें इमृत मभे, इमृत घललें ऐेंहर रे मलय ॥ ॡ ॥
ऐुयलनें वसत री ठीक पडें नहीँ, ते घललें ओर री ओर मलय ।
ते नलश करें नीवी तणों, तलम ऐलंगों धर्म री नुयल ॥ ॡ ॥

ढलल

[कुतुर वलकलर करी ने देखू]

ऐलम कुूइ धुरत तंवलखू वलणऐें, पलण वलसण वलगत न पलडें रे ।
धुरत लेई तंवलखू में घललें, ते दूनूँई वसत वलगलडें रे ॥ १ ॥
ऐुयं इवलरत रू दलन वलरत में घललें, कुतुर वलकलर करी ने देखू* ।
वलरत री वलगत पलडुयलं वलण डलंगल, पलण वलरत री वलगत न पलडें रे ।
शुरलवक मलहूँमलहि ऐीमें ऐीमलवें, सूँनेँ कुवलत दलन पूकरें रे ॥ कु० २ ॥
तलण मलहे धर्म पलरुपें अगुयलनी, ते तुू एकंत आशुरव ऐलंगू रे ।
ऐीम रू ओषद आंखुयलं में घललुयों, ते पूरल मूँड अगुयलंगू रे ॥ ३ ॥
तलण री आंखुई फूटी नें ऐीमइ फलटी, आंखुयलं रू ओषद ऐीम में घललुू रे ।
ऐुयं अधर्म रल कुलमल धर्म मलहें घललुयल, दूनूँई इंद्री खूूय कुललुू रे ॥ ॡ ॥
दूनूँई वलध कुर्म डलधे अगुयलनी, धर्म रल कुलमल अधर्म में घललुयल रे ।
सलवध कलरतव में धर्म ऐलंगें, दुरगत मलहे कुललुयल रे ॥ ॡ ॥
सलवध नलरवद में नहीँ सलमभें, नलरवद में पलप ऐलंगें रे ।
सकुवल अकुवल दूीघलं कुहें पुन, अगुयलनी थकुल उंधी तलंगें रे ॥ ॢ ॥
वले पुन कुहे पलतर कुपलतर नें दूीघलं, वले सुष असुष दूीघलं कुहे पुनू रे ।
ओ मत ऐलवक ऐुडूने रे ॥ ॣ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

पातर कुपातर दोनां नें दीघां, पुन कहे छें कर कर तांणी रे ।
 तिण पातर कुपातर गिणीया सारीघां, आ पावंडीयां री वांणी रे ॥ ८ ॥
 कूडाघर्मी कूडें वेंस जीमें जव, भेला जीमें एकण कूडा माह्यो रे ।
 जात कुजात नें चोखा अचोखा, त्यांरी भिन न राखे कांयो रे ॥ ९ ॥
 ज्युं पातर कुपातर सर्व नें दीघां, पुन कहे एक धारो रे ।
 ओ मत कूडापंथी जिम जांणो, किण सूं भिन न राख्यो लिंगारो रे ॥ १० ॥
 केइ बहा हुवें ते कूडा पंथ्यां ने, न्यात जात सूं जांणें भिष्टी रे ।
 ज्युं पून कहे दांन कुपातर दीघां, त्यांनें ग्यांनी जाणें मिथ्यादिष्टी रे ॥ ११ ॥
 श्री वीर कहां पातर दांन दीघां, धर्म ने पुन दोनूं होयो रे ।
 कुपातर दांन में पुन कहे ते, गया जमारो खोयो रे ॥ १२ ॥
 श्रावक नें एकंत सुपातर कहे नें, तिण पोख्यां में धर्म बतावे रे ।
 इसडी परूपणा कर कर अग्यांनी, भोला लोकां ने इम भरमावें रे ॥ १३ ॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छे, ते पूरा मूंड अग्यांनी रे ।
 त्यांनें श्रावक पिण इसडाइज मिलीया, त्यां पिण सरघा साची कर मांणी रे ॥ १४ ॥
 नांव मातर श्रावक ववेक रा विकल, त्यांनें निज अवगुण नहीं सूंमों रे ।
 त्यांनें गुर पिण मिलीया त्यांहीज सरीषा, तिण सूं दिन दिन इधका अलूमे रे ॥ १५ ॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर कहे, ते तो उठी जठाथी भूठी रे ।
 सावद्य किरतव मूल न सूंमे, त्यांरी हीया नीलाडी री फूटी रे ॥ १६ ॥
 आघा मिनष ने आंघो मिलीयो, जव कुण बतावे वाटो रे ।
 ज्युं श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छें, त्यारे आयो अभितर पाटो रे ॥ १७ ॥
 श्रावक सुपातर विरता रे लेखे, इविरत लेखे जेंहर रो बटको रे ।
 इविरत रो इणरे काम पडे जब, छकाय रो कर जाय गटको रे ॥ १८ ॥
 श्रावक सुपार वरतां सूं हूवो, इविरत सूं अघर्मी जांणो रे ।
 इविरत रो इणरें काम पडे तो, छकाय रो करें घमसांणो रे ॥ १९ ॥
 छकाय जीवां रो गटको करे छे, छकाय रो करें घमसांणो रे ।
 इण किरतव ने सुपातर जांणे, ते जिण मारग रा अजाणो रे ॥ २० ॥
 श्रावक अस्त्री सेवे सेवावे, वले परणें नें परणावें रे ।
 तिणें एकत सुपातर थापे, ते तो गाला रा गोला चलावे रे ॥ २१ ॥
 केइ श्रावक रे हुवें अस्त्री हजारं, पासवांन खवासण अनेको रे ।
 एहवा भोगी भमर नें सुपातर जांणें, त्या विकला नें नहीं ववेको रे ॥ २२ ॥
 हिंसा भूळ चोरी मइथुन सेवे, परिग्रह मेले विवव प्रकारो रे ।
 तिणें एकत सुपातर परूपे, त्यांरा मत मांहे पुरो अंधकारो रे ॥ २३ ॥
 ७४

श्रावक लाखां बीषां घर खेती करें छें, कोडां मण काढे अणगल पांणी रे ।
 त्यांनै पिण एकंत सुपातर कहें छें, ते तो पाषंडीयां री वांणी रे ॥२४॥
 दमडी काजें पागडा पाहें पडावें, आंमी साह्णीं पेजारां चलावें रे ।
 एहवा श्रावक नें सुपातर कहितां, विकलां नें लाज न आवें रे ॥२५॥
 कजीयाखोर बथोकडा बगीया, मन मानें ज्यूं बोलें भूंडा रे ।
 ममा चचा री गाल्यां तो बस रही मूढें, त्यांनै सुपातर सरखे कांय बूडा रे ॥२६॥
 केइ नागडा निरलज फीटा बोलें, ते दीसैं उघाडा कुपातर रे ।
 केइ एहवा कुपातर नें कहें छें सुपातर, त्यांनै पिण कहीजें एहवा सुपातर रे ॥२७॥
 केइ दगा दगी रो विणज करें छें, कपडादिक बेचें नग बदलावें रे ।
 त्यांनै एकंत सुपातर कहि कहि, ते विकलां नें विकल रीभावें रे ॥२८॥
 श्रावक तो घर माहें बेटों, करें छें अनेक अकाजो रे ।
 तिण घरबारी नें सुपातर कहितां, विकलां नें न आवे लाजो रे ॥२९॥
 आगें मोटा मोटा राजा श्रावक हुआ, जीवादिक नवतत रा जांणो रे ।
 ते रिण संगराम चढ्या तिण काले, घणां मिनषां रा कीयां घमसांणो रे ॥३०॥
 एक कागादिक मारण रा त्यांग कीयां, ते पिण श्रावक री पांत माहें रे ।
 बाकी रा सर्व किरतब खोटा करें छें, ते सुपातर पणां में नांही रे ॥३१॥
 श्रावक नें सुपातर किण न्याय कहीजें, किण न्याय अधर्मी कुपातर रे ।
 सूतर माहे जोए भव जीवां, हीया माहें करो जमें खातर रे ॥३२॥
 सूयगडांग अघेन अठारमें, तीन पष तणो विसतारो रे ।
 धर्म अधर्म मिश्र पष तीजों, यां तीनां रो सुणो भेद न्यारो रे ॥३३॥
 सर्व विरत नें धर्म पष कहीजे, इविरत नें अधर्म पष जांणो रे ।
 कांयक विरत नें कांयक इविरत, मिश्र पष एह पिछांणो रे ॥३४॥
 धर्म पष माहें एकंत साघां नें घाल्या, त्यांनै सर्व थकी विरत जांणो रे ।
 अधर्म पष माहे असंजती घाल्या, त्यांनै जावक नही पचखाणो रे ॥३५॥
 मिश्र पष माहें श्रावक नें घाल्या, तिणरो न्याय सुणो चित ल्यायो रे ।
 जे विरत कीया ते धर्म पष माहें, इविरत छें अधर्म पष माहों रे ॥३६॥
 तिण सूं श्रावक नें कहीजे धर्मी अधर्मी, संजती नें असंजती जांणों रे ।
 वले श्रावक नें कहीजे विरती इविरती, पिडत नें बाल दोनूं पिछांणो रे ॥३७॥
 श्रावक नें वरतां कर संजती कहीजें, गुण रतनां री खांणो रे ।
 वरत आदरतां इविरत - राखी, तिण सूं कोरों असंजती जांणों रे ॥३८॥
 श्रावक रो खांणों पीणों नें गेंहणों, इविरत माहें जांणो रे ।
 तिण इविरत नें असंजती कहीजे, तिण माहें धर्म म जांणो रे ॥३९॥

कोइ श्रावक नें असणाविक देवें, ते तो असंजतीपणा माह्यो रे ।
 असंजती नें दान दें त्यारें, आछा फल नही लागे ताह्यो रे ॥ ४० ॥
 असंजती ने दान दीयां में, पाप कह्यो छें एकंती रे ।
 भगवती आठमें सतक छठे उद्देशें, इम भाष गया भगवंतो रे ॥ ४१ ॥
 साव श्रावक विण सर्व संसारी, एकंत असंजती जाणो रे ।
 श्रावक री इविरत पिण असंजती छें, ते रुडी रीत पिछ्छाणो रे ॥ ४२ ॥
 अवर्मी जीव च्यारां गुण ठांगां, श्रावक रो पांचमो गुण ठाणो रे ।
 वाकी नव गुण ठाणा साव रिषेसर, ए संसार में सर्व जीव जाणो रे ॥ ४३ ॥
 पांचूं इद्री मोकली मेल्यां पाप, मेल्यां पिण लागे छें पापो रे ।
 पांचूं इद्री नी तेवीस विषे सेवायां, पाप कह्यो जिणेसर आपो रे ॥ ४४ ॥
 कोइ श्रावक नी रस इद्री पोषें, पांचूं रस मन गमता जीमावे रे ।
 तिण रस इद्री नी विषे सेवाइ, तिण में धर्म अग्यानी बतावे रे ॥ ४५ ॥
 कोइ श्रावक री पांचूं इद्री पोषे, विषे सेवारे तेवीसो रे ।
 तिण माहे धर्म पळ्पें मिध्याती, ते वूढा छे विसवावीसो रे ॥ ४६ ॥
 केइ मूढ मती जीव अतंत अग्यानी, ते इसडी चरचा आणे रे ।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो च्यार तीरथ मे क्यूं जाणे रे ॥ ४७ ॥
 च्यार तीरथ ने कही रतनां री माला, तिण माला रा भेद न जाणे रे ।
 गुण अवगुण सर्व माला में घाल्या, ग्यानी थकां उधी ताणे रें ॥ ४८ ॥
 च्यार तीरथ छे गुण रतना री माला, तिण मे इविरत नही लिंगारो रे ।
 माला माहें श्रावक रा वरत घाल्या, इविरत ने काडे दीधी बारो रे ॥ ४९ ॥
 इविरत ने एकलो अवर्मी कहीजे, तिणरा अनेक माठा माठा नामो रे ।
 ते रतनां री माला में किण विघ घाले, ते तो सगलाई सावद्य कामो रे ॥ ५० ॥
 श्रावक ने एकंत सुपातर थापण, कोइ इसडी चरचा ल्यावे रे ।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो देवलोकं किम जावे रे ॥ ५१ ॥
 श्रावक जावे छे देवलोक माहे, ते तो समकत वरत सूं जाणो रे ।
 एक समकत सूं पिण देवलोक जावे, तो श्रावक रे छे समकत पचखाणो रे ॥ ५२ ॥
 इविरती समदिष्टी चोथे गुण ठाणे, ते एकत असंजती जाणो रे ।
 ते पिण देवलोक माहे जावे छे, ते समकत गुण पिछ्छाणो रे ॥ ५३ ॥
 श्रावक देवलोक माहें जावे छे, ते तो समकत वरत मे पूरा रे ।
 त्यारे पुन वंघे छे शुभ जोगां सूं, वले पाप कर्म करे दूरा रे ॥ ५४ ॥
 जे देवलोक जावे ते निरवद गुण सूं, अवगुण लेजावे दुरगत ताणो रे ।
 ज्यूं श्रावक पिण देवलोक जावे छे, ते तो गुणां री वोहलता जाणो रे ॥ ५५ ॥

अंभवी जीव एकंत मिथ्याती, ते निश्चं सुपातर नाही रे ।
 ते पिण कष्ट तणें परतापें जावे छें, नवमा ग्रीवेक तांड रे ॥ ५६ ॥
 ते तो समदिष्टी साध श्रावक पिण नाही, ते पिण नवमे ग्रीवेक जावें रे ।
 वले सिन्यासी नें गोसाला मती पिण, ते पिण विमांणीक थावे रे ॥ ५७ ॥
 वले कृष्ण पषी तिरजंच मिथ्याती, ते पिण आठमें देव लोक जायें रे ।
 जो देवलोक जावें ते सर्व सुपातर, तो ए पिण सुपातर माह्यो रे ॥ ५८ ॥
 बारे देवलोक ने नव ग्रीवेक माहे, जीव गयीं अनंती बारो रे ।
 जे देवलोक गया ते सुपातर हुवे तो, नहीं छले अनंत संसारो रे ॥ ५९ ॥
 समदिष्टी नें पिण कहीजे सुपातर, ते तो समकत ग्यान सूं जाणो रे ।
 जणरी इविरत नें खोटा किरतब कीघां, एकंत कुपातर पिछांणो रे ॥ ६० ॥
 वले मिश्र पष में पाषंड्यां ने घाल्या, कष्ट नें कहिवा रे लेखें जाणो रे ।
 ते समकत विण छें एकंत इविरती, अधर्मी पेंहलो गुण ठाणो रे ॥ ६१ ॥
 जो किरतब सूं मिश्र पष हुवें तो, सामु पिण हुवे मिश्र पष माह्यो रे ।
 साधु नें पिण कषाय माठी लेख्या आवे, माठा जोग पिण वरते ताह्यो रे ॥ ६२ ॥
 कदे आरत ध्यान साघां ने पिण आवे, माठा आवे अधवसाय परिणांमो रे ।
 तो पिण साघां नें मिश्र पष में न घाल्या, ते तो सगला सावद्य था कांमो रे ॥ ६३ ॥
 माठा किरतब ने कुमारग कहीजें, इविरत ने अधर्मी कही ताह्यो रे ।
 अधर्म नें कुमारग न्यारा कह्या छे, ठाणांग दशमा ठाणा माह्यो रे ॥ ६४ ॥
 धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी, मिनषां माहे तीनूई जाणो रे ।
 तिरयंच माहें छें धर्मी अधर्मी, बाकी सर्व अधर्मी पिछांणो रे ॥ ६५ ॥
 जो किरतब सूं धर्माधर्मी हुवें तो, देवता पिण धर्माधर्मी होथो रे ।
 देवता पिण निरवद किरतब करे छें, जोग लेख्या भला हुवे सोयो रे ॥ ६६ ॥
 देवता ने एकंत अधर्मी कह्या छें, ते तो इविरत रे न्याय जाण्यो रे ।
 ज्यूं धर्मी अधर्मी धर्माधर्मी, विरत इविरत में तीनूं आप्यो रे ॥ ६७ ॥
 संवत अठारें वरस तयाळें, आसोज विद दसम रिक्वारो रे ।
 पातर कुपातर ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मझारो रे ॥ ६८ ॥

ढाल : ॡ

ढुहा

आगना श्री अरिहंत नी, निरवद दांन में जांण ।
 सावद्य दांन नें थापवा, मूरख मांडे तांण ॥ १ ॥
 मिश्र धर्म परूपीयो, ते नही सूतर रो न्याय ।
 न्हाखे फद में लोक नें, कूडा कुहेतु लागाय ॥ २ ॥
 इविरत आश्रव में कही, श्री जिण मुख सू आप ।
 सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनुई करणां पाप ॥ ३ ॥
 विरत में धर्म श्री जिण तणो, इविरत अधर्म जांण ।
 मिश्र मूल दीसैं नही, करे अग्यांनि तांण ॥ ४ ॥

ढाल

[अधर्मी अवनीत...]

जिण भाख्या पाप अठार, सेव्यां नही धर्म लिगार ।
 संका मत आंणजो ए, साचो कर जाणजो ए ॥ १ ॥
 जो थोडो घणो करो पाप, तिण थी हुवें संताप ।
 मिश्र नही जिण कह्यो ए, समदिटी सरधियो ए ॥ २ ॥
 कहे अग्यांनि एम, श्रावक नही पोखां केम ।
 भाजन रतनां तणो ए, नफो अति घणो ए ॥ ३ ॥
 इणरो नही जांणे न्याय, त्याने किम आंणी जे ठाय ।
 भगडो भालीयो ए, वेदो घालीयो ए ॥ ४ ॥
 हिचे सुणजो चतुर सुजान, श्रावक रतनां री खांण ।
 व्रतां कर जांणजो ए, उलटी मत तांणजो ए ॥ ५ ॥
 केइ हंख बाग मे होय, आंब घतूरा दोय ।
 फल नही सारिखा ए, करजो पारिखा ए ॥ ६ ॥
 आबा सूं लिबलाय, सीचे घतूरो आय ।
 आसा मन अति घणी ए, अंब लेवा तणी ए ॥ ७ ॥
 पिण आंब गयो कुमलाय, घतूरो रह्यो डहिडाय ।
 आय ने जोवे जरे ए, नेणा नीर भरे ए ॥ ८ ॥
 इण दिष्टते जाण, श्रावक व्रत अंब समांण ।
 इविरत अलगी रही ए, घतूरा सम कही ए ॥ ९ ॥

सेवारे	इविरत	कोय,	व्रतां	साह्यो	जोय ।
ते भूला	भर्म	में	ए, हिंसा	धर्म	में ए ॥ १० ॥
इविरत	सूं	बंधे	कर्म,	तिणमें	नहीं निश्चें धर्म ।
तीनूं	करण	सारखा	ए, ते	विरला	पारिखा ए ॥ ११-॥
कहे	खाधां	बंधइ	कर्म,	खवायां	मिथ्र - धर्म ।
ए भूठ-	चलावीयो	ए,	मूरख-	मन	भावीयो - ए ॥ १२ ॥
ए मिथ्र	नहीं	साख्यात,	तो कांय	सरधे	ए बात ।
अकल	नही	मूढ	में ए,	ते पडिया	रुढ में ए ॥ १३ ॥
पोतें	नहीं	बुध	प्रकास,	लागों-	कुगरां रो पास ।
ते निरणों	नहीं	करे	ए, ते	भव	कूवे पडे ए ॥ १४ ॥
साधु	संगत	पाय,	सुणें	एक	चित्त लगाय ।
पखपात	परहरें	ए,	खबर	बेगी	पडें ए ॥ १५ ॥
आणंद	आदि	दे	जाण,	श्रावक	दसूंई वखाण ।
त्यां	पडिमा	आदरी	ए,	ते चरचा	पाधरी ए ॥ १६ ॥
जे जे	कीधो	छे	त्याग,	आंणी	मन वेंराग ।
ते करणी	निरमली	ए,	करने	पूरी	रली ए ॥ १७ ॥
पिण	बाकी	रह्यो	आगार,	इविरत	मे आंण्यो आहार ।
आपणी	न्यात	में	ए, समझो	इण	बात में ए ॥ १८-॥
इविरत	मे	दे	दातार,	ते किम	उतरे- भव पार ।
मारग	नहीं	मोष	रो ए,	ए छांदो	लोक रो ए ॥ १९ ॥
दाता	नें	अन	सुध	थाय,	पिण पातर इविरत में ल्याय ।
ते	किम	तारसी	ए,	पार	उतारसी ए ॥ २० ॥
जूनो	छे	गूढ	मिथ्यात,	तिणरें	किम बेसे ए बात ।
कर्म	घणा	सही	ए,	समझ	पडे नहीं ए ॥ २१ ॥
उपासग	उवाई	उपंग,	वले		सूयगडाअंग ।
सूतर	थी	उधरी	ए,	इविरत	अलगी करी ए ॥ २२ ॥
आगम	नी	दे	साख,	श्री वीर-	गया छें साख ।
भवीयण	निरणो	करें	ए,	तो भव	सागर तिरे ए ॥ २३-॥
देइ	सुपातरां	दांन,	न	करें	मन अभिमान ।
संसार	परत	करे	ए,	सिव	नगरी वरे ए ॥ २४ ॥
दांन	सू	तिख्या	अनंत,	भाष्यो	श्री भगवंत ।
ते दांन	न	जांणीयो	ए,	न्याय	न छांणीयो ए ॥ २५ ॥

ढलल : ६

दुहल

दस दलन भगवते भलषीयल, सुतर ठलणलंग मलंय ।
गुण नलपन्न ज्यलरल नलंम छे, पलण भोललं नें खबर न कलंय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म दोय मूलगल, प्रसलष लोकर में एह ।
आठलं रो अर्थ उंघो करे, मलश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मलश्र धर्म परूप नें, कूडो वलद करंत ।
पलण आठे अधर्म में जलण कहुल, सलंभलो एक दलषुंत ॥ ३ ॥
आंवल ने नींव रूख नो, जूदो जूदो वलसतलर ।
नींवभर नीबोली तेल खल, ए नींव तणो पलरवलर ॥ ॡ ॥
इम आठेइ दलंन जलंगज्यो, अधर्म तणो पलरवलर ।
धर्म दलंन में आवें नही, श्री जलण आग्यल वलर ॥ ५ ॥
इतरे समझ पडे नही, तो सुणो जूजूवल भेद ।
वलवरु सुध वतलवीयलं, म करो कुष नें खेद ॥ ६ ॥

ढलल

[जलरो छे रलय तूं रत]

कलरपण दीन अनलथ ए, मलेछुलदलक तुयलरी जलत ए ।
रुग सुग नें आरत ध्यलंन ए, तुयने दे ते अणुकंपल दलंन ए ॥ १ ॥
देवें मूललदलक जमीकंद ए, तुयमें अनंत जीवलं रल फंद ए ।
इण दीघलं कहुें मलश्र धर्म ए, ज्यलरे उदें आयो मोह कर्म ए ॥ २ ॥
लूण आदल दे पृथवी कलय ए, आपें अगन पलंणी ढोले वलय ए ।
देवें ससुत्र वलवध प्रकलर ए, ए दलंन श्री रूलें संसलर ए ॥ ३ ॥
बंदीवलंनलदलक नें कलज ए, तुयलंनं कषुट पडुयलं दे सलभ ए ।
थोरुी वलवरी भील कसलइ नें ए, सवलतुतलदलक द्रव्य खवलइ नें ए ॥ ॡ ॥
छुओवलें गर्थ दे तलंम ए, संग्रह दलंन छे तलण रो नलंम ए ।
ए तो संसलर नुं उपगलर ए, अरलहंत नीं आग्यल वलर ए ॥ ५ ॥
ग्रह करडल आयल जलंण ए, सुणी ललगी पनोती आंण ए ।
फलकर धणी मरवल तणी ए, वले कुटंब तणल जतन भणी ए ॥ ६ ॥

भय रो घालीयो देवे आंम ए,	भय दान छे तिणरो नाम ए ।
ते ले छे कुपातर आय ए,	तिण में धर्म किहां थी थाय ए ॥ ७ ॥
खरच करे मूआ नें केडे ए,	जीमावे न्यात नें तेडें ए ।
तीनां वारां दिना उनमान ए,	ते चौथो कालुणी दान ए ॥ ८ ॥
क्ले वरस छ मासी सराव ए,	जिम जिम छे कुल मरजाद ए ।
मूआ पेंली खरचे कोय ए,	घणा नें करे तिरपत सोय ए ॥ ९ ॥
आरंभ कीयां नही धर्म ए,	जीमायां पिण वंधइ कर्म ए ।
बुववंत करो विचार ए,	नही सवर निरजरा लिगार ए ॥ १० ॥
घणा नी लज्या वस थाय ए,	साकडे पडीयो देवें ताय ए ।
देवें सचितादिक धन धान ए,	ते पांचमो लज्या दान ए ॥ ११ ॥
ए सावद्य दान साख्यात ए,	ते दीयो कुपातर हाथ ए ।
कोइ कहे हुवो मिश्र धर्म ए,	ते निश्चे वांछें कर्म ए ॥ १२ ॥
मूकलवो पैरांणी मुसाल ए,	सगा ने जूआ जआ संभाल ए ।
जे द्रव्य दे जस रे काम ए,	गरव दान छें तिणरो नाम ए ॥ १३ ॥
किरतनीया वादी मल ए,	रावलिया रांमत चल ए ।
नट भोपा आदि वशेप ए,	दान दे त्यानें द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥
ए दान थी वचे कर्म ए,	मूरख कहे मिश्र धर्म ए ।
ज्यांरी प्रतख भूठी वात ए,	खोटी सरधा मूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥
गणिकादिक सेवा कुशील ए,	दान दें त्यानें करवा कील ए ।
ए प्रतख खोटो कांम ए,	अधर्म दान छें तिणरो नाम ए ॥ १६ ॥
सूतर अर्थ सीखाय ए,	सुघ मारग आंणे ठाय ए ।
आपे समकत चारित एह ए,	धर्म दान छें आठमों तेह ए ॥ १७ ॥
क्ले मिले सुपातर आण ए,	देवे निरदोपण द्रव्य जाण ए ।
ए दान मुगत रो माग ए,	दीयां दलदर जावे भाग ए ॥ १८ ॥
छकाय मारण रो त्याग ए,	कोइ पचखें आण वेंराग ए ।
अमय दान कछो जिणराय ए,	धर्म दान में मिलियो थाय ए ॥ १९ ॥
सचितादिक द्रव्य अनेक ए,	उवारा जिम देवें वशेख ए ।
पाछो लेवा रो मन ध्यान ए,	नवमों कार्यति दान ए ॥ २० ॥
लेणात ने जिम दे जेह ए,	हांती नेहतादिक दे देह ए ।
पाछो लेवा रो एकत काम ए,	कर्तती दान तिणरो नाम ए ॥ २१ ॥
नवमे दसमे दान ए चाल ए,	धुर वाहरा वालो म्याल ए ।
ग्यांनी जांणें सावद्य माय ए,	तो मिश्र किहां थी थाय ए ॥ २२ ॥

ए दस दान तगों विचार ए, संखेन कखों विसतार ए ।
 वीर नीं आग्या में एक ए, आग्या वारे दान बनेक ए ॥ २३ ॥
 असंजती श्रावक घरे आवियो ए, निरदोषण आहार वैहरावियो ए ।
 त्रिगने वीयां एकंत पाप ए, भगोती में कखों जिग आप ए ॥ २४ ॥
 इम सामंज करो विचार ए, बाटे अघर्म तगो पिरवार ए ।
 बना सुजयं नीं शास्त्र ए, श्री वीर गया छें भाष ए ॥ २५ ॥
 घने अघर्म दान छे दोष ए, विष मित्र म जांगो कोष ए ।
 किन सरखें निध्यात्री जीव ए, नूल में नहीं समकत नीव ए ॥ २६ ॥

ढाल : ७

दुहा

केइ भेषघारी भागल थकां, त्पारें दया नही घट मांय ।
 हिसा धर्म परूपीयो, ते नही सूतर रो न्याय ॥ १ ॥
 दया दया मुख सूं कहें, पिण दया री खबर न कांय ।
 भोला नें पाड्या भरम में, ते हणें जीव छक्राय ॥ २ ॥
 उवें हिसा धर्म दिढावता, वले बोलें फिरता वेंण ।
 आप डूवें ओरां नें डबोवता, फूटा अभितर नेण ॥ ३ ॥
 हिसावमीं री परतीत सूं, डूवा जीव अनेक ।
 त्पारी खोटी सरघा परगट करूं, ते सुणजों आंण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगना मे]

श्रावक नें मांहोमांहि छक्राय खवावें, वले छक्राय मारे नें जीमावे ।
 ए जीव हिसा रो राहज खोटी, तिण मांहें धर्म अनारज बतावे ।
 यां हिसा धर्म्यां रो निरणो कीजो ॥ १ ॥
 छ काय जीवां रो तो घमसांण कीघो, जीमाय कीयो उणनें कर्मा सूं भारी ।
 दोनूं कांनी जोयां दीसैं दिवालो, इण मांहें धर्म कहे भेषघारी ॥ २ ॥
 छ काय जीवां नें खावां खवायां, अरिहंत भगवत पाप बतावें ।
 ए वचन उथापें ने मिश्र परूपे, तिण दुष्टी रे दिल दया न आवें ॥ ३ ॥
 रांकां ने मार घीगां नें पोख्यां, ए तो बात दीसे घणी गेंरी ।
 तिण मांहें दुष्टी धर्म बतावे, ते रांक जीवा रा उठ्वा वेंरी ॥ ४ ॥
 पाड्डिल भव पाप उपाया तिण सूं, ते हुआ एकेंद्री पुन पखारी ।
 त्पारं रांक जीवां रे उसभ उदें सूं, लोकां सहित लागू उठ्वा भेषघारी ॥ ५ ॥
 कुपातर वान में पुन परूपे, तिणसूं लोक जीवां ने हणें वसेष ।
 कुगुर एहवा चाला चलावें, ते सिष्ट हुआ लेइ साधु रो भेष ॥ ६ ॥
 कोइ पूछें तो कहे मून साभां म्हे, पिण सांनी कर जीव मरावण लागा ।
 हेउलो जोबरो खेच अलगा हुवें, ते विरत विट्ठणा कहीजे नागा ॥ ७ ॥
 कोइ माली रे ओडो भूळो आय उभों, तिणनें मूला गाजर घपाय खवावें ।
 ए एकंत पाप उचाडो दीसैं, तिणमेंइ मूरख धर्म बतावे ॥ ८ ॥

यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढलल : ८

दुहल

जलण आगनल बलरली कलरलरल करेँ, तलहलं जीव तणी हुवेँ घलत ।
 जे हलसलधरुीं छेँ जीवडल, तलणरो पलप न गलणेँ तललडलत ॥ १ ॥
 जीव डलरेँ छेँ छ कलड रल, तलणरो पलप न गलणेँ ललडलर ।
 तुडलरी खीटी सरघल परगट करुँ, ते सुणजु वलसतलर ॥ २ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करी ने देखु]

अतल ही दुषुटी हुवेँ हलसलधरुीं, ते तु हलसल धरुं वलदलव रे ।
 दडल धरुं तलणसुँ डलडकलवेँ, दुरगतल डलहेँ डुँहचलवे रे ।
 हलसल धरुीं रु सुंग न कीजेँ* ॥ १ ॥
 सलघ नेँ तडलवेँ अगन सुँ अगुडलनी, ते तु पलप अठलरलं डेँ डेँहलु रे ।
 तलण डलहेँ डुन डरुडेँ अगुडलनी, तलणनेँ डलडडत कहीजेँ के गेँहलु रे ॥ हल० २ ॥
 सलधु नेँ तडलडलं डेँ डुन डरुडेँ, ते तु डूढ डलधुडलती छेँ डुरु रे ।
 अगन रुी हलसल डेँ पलप न जलणेँ, ते डत नलरुचेँडु कूडु रे ॥ ३ ॥
 सडुडलड सुतवन कहेँ डुख उघलडेँ, जब वलउ जीवलं रुी हुवेँ घलतु रे ।
 केडु कहेँ वलउकलड रुी पलप न ललगेँ, आ उंघ डती रुी छेँ बलतु रे ॥ ॡ ॥
 शुरलवक नेँ डलहेँडुडलं छ कलड खवलवेँ, छ कलड डलरे नेँ जीडलवेँ रे ।
 ए डुरतष डलप उघलडु डीसेँ, तलणडेँ कुगुरु धरुं बतलवेँ रे ॥ ॡ ॥
 सलघलं नेँ वलदण जलतल डलरग डेँ, तस थलवर रुी हुवेँ घलतु रे ।
 जुडलं सुँ जीव डूडल जुडलनेँ पलप न सरखेँ, तुडलरल घट डलहेँ डुरु डलधुडलतु रे ॥ ॢ ॥
 वलण उडुडुडुडेँ डलरग डलहेँ चल्लेँ, जब डरेँ जीव छ कलडु रे ।
 ए डुरतष डलप उघलडु डीसेँ, डलण वलकलरलं नेँ खडर न कलडु रे ॥ ॣ ॥
 वलण उडुडुडुडेँ डलरग डलहेँ चल्लेँ, कडे न डरेँ जीव कलण डलरु रे ।
 तु डलण वीर कहुँ छेँ तलण नेँ, छ कलड रुी डलरणहलरु रे ॥ । ॥
 जु जीव डूडल तुडलरुी पलप न ललगेँ, तु जुडु जुडु नेँ कुण हललेँ रे ।
 नलसंक थकलं छ कलड जीवलं नेँ, डरदतल डरदतल चल्लेँ रे ॥ ॥ ॥
 डुीतल डुीतल रलजल गडल वीर वलदण नेँ, चउरंगणी सेनुडल ले सलथु रे ।
 तुडलं आरंड कीघल अनेक डुरकलरेँ, तलहलं हुडु छ कलड रुी घलतु रे ॥ १० ॥

*डह आँकडी डुरतुडेक गलथल के अनुत डेँ है ।

कोइ कहें जीव मूआ रो पाप न लागो, ते तो उठी जठा थी भूठी रे ।
 ए प्रतप पाप उवाडो न सूभे, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे ॥ ११ ॥
 जो वांदण जावें ईया जोवतां, तो जीवां री हिंसा न थायो रे ।
 विण जोयां चालें तो प्रतप हिंसा, तिण सूं निश्च लागे आयो रे ॥ १२ ॥
 कूंडापंथी रो आचार कूंडापंथी सूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे ।
 एको दुको मिले कोइ आप सारीषो, तिण आगे कांयक बतावें रे ॥ १३ ॥
 उणने भरमाय भरमाय कूडे बेसावें, माठी माठी वसत खवावें रे ।
 पछें धीरां धीरां ओ पिण इसडो हुवें, जब ओ पिण कूडा घर्म दिडावें रे ॥ १४ ॥
 ज्यूं जीव खवायां में पुन कहे त्यांसूं, चोडे लोकां में कहणी न आवें रे ।
 एको दूको कोइ आय मिलें जब, थोडोसों रहस्य बतावें रे ॥ १५ ॥
 इम भोलां नें भरमाय मत मांहे घालें, पछे हिंसा में घर्म सीखावें रे ।
 पछें ते पिण त्यां सा रीषो होय जावें, जब जीव मारतां संका न आवें रे ॥ १६ ॥
 कूंडावर्मीं कूडे बेस जीमें जब, मन रलीयायत थायो रे ।
 ज्यूं हिंसावर्मीं हरखें जीव खवायां, पुन नीपनो जाणें तिण माह्यो रे ॥ १७ ॥
 जीव खवाया में पुन जाणें छे, त्यांरी दया घट मांहीं सूं न्हाठी रे ।
 वले छ काय हणें जीमायां घर्म जाणें, एहवी कुगुरां दीधीं मति माठी रे ॥ १८ ॥
 जीव खवायां पुन कहे छें, पिण पूछ्यां पलटे वांणो रे ।
 ते छानें छाने सरघा सीखावे, ते तो जार गरम जिम जाणों रे ॥ १९ ॥
 जमीकंद मे जीव अनंता, ए भगवंत वायक जांणी रे ।
 मूला खवायां में पुन परूपें, आ कुगुरां री वांणी रे ॥ २० ॥
 कर्म घणा नें बोहल संसारी, आ सरघा साची कर मांनी रे ।
 कुगुर तो वीद वण्या नरक जावा, विकलां नें साथे लिया जांणी रे ॥ २१ ॥
 ढाका बंगाला ने कांगरु देस रा, वीद्या मंतर धुतारो रे ।
 इण सरघा रो इचरज आवें, ओ घर्म सीखायो कें धारो रे ॥ २२ ॥
 खरव आगरणी ने भात व रोटी, सगा सेंण नेहत जीमायो रे ।
 इण लूटा लूट में पुन परूपें, ओ कुगुरां कूड चलायो रे ॥ २३ ॥
 आ सरघा घराए लोकां नें, हुवा नरक अधिकारी रे ।
 बडा उंट जिम आगे चालें, विकलां लारें बांधी कतारी रे ॥ २४ ॥
 छ काया रा तो पीहर वाजें, सांग साधां रो धरीयो रे ।
 जीव खवायां में पुन परूपें, ओ पीहर पूरो पडीयो रे ॥ २५ ॥
 गृहस्य ने मांहोमां छ काय खवावे, ते पाप थानक छें पेंहलो रे ।
 तिण मांहे मूरख घर्म बतावें, ते पिंडत कहीजे कें गेहलो रे ॥ २६ ॥

संवत् अठारें नें वरस तयाले, आसोज विद आठम सुकरवारो रे।
 हिसाधर्मी ओलखावण काजे, जोड कीधी नाथ दुवारा मम्मारो रे ॥ २७ ॥



ढलल : १

दुहल

जिण आगम मलहे इम कह्यो, श्री जिण मुख सू आप ।
 अरुथ अनरुथ धरुम करुणें, जीव हणुयल छें पलप ॥ १ ॥
 केइ अरुगलंनी इम कहें, धरुम कलजें हणें जीव कोय ।
 चोखल परुणलंमल जीव मलरीयलं, तुयलंरो जलवक पलप न हुयेय ॥ २ ॥
 जीव मलरे छे उदीर ने, तिणरल चोखल कहे परुणलंम ।
 ते ववेक विकल सुच बुध वलनलं, वले जेंनी धरलवें नलंम ॥ ३ ॥
 सलधल नें वलदण जलतलंने वेहरलवतलं, तलहलं जीव तणी हुवें धलत ।
 तिणरुं कहें पलप ललगुं नही, एहवी उंध मतुयलं रीछे बलत ॥ ॡ ॥
 इण वलध करुं छें परुपणल, ते विकललं मलंने लीधी बलत ।
 तुयलरी खोटी सरुधल परुगट करुं, ते सुणजो वलखुयलत ॥ ॡ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करुी ने देखुो]

कोइ गलडी जोतर सलधलं नें वलदण, चोमलसल में सो कोसलं जलवें रे ।
 जब लुटलं गजलयलं ने कीडी मकोडल, मलरग मलंहुं वुहुत चिंधलवें रे ।
 यलं हलसल धरुम्यलं री संग न कीजें* ॥ १ ॥
 वले नीले अललो नीलण फूलण चोमलसें, ते पिण जीव चीधुयल जलवे रे ।
 वले नदीयलं अनेक उतरे मलरग में, ठलंम ठलंम रसुई नीपजलवें रे ॥ यलं २ ॥
 इतुयलदलक हलसल कीधी अनेक प्रकलरें, तिण री पलप ललगुं कहें नलंही रे ।
 इण वलध हलसल मलहे धरुम थलपे, ते विकललं री परुषधल मलंहीं रे ॥ ३ ॥
 कहे सलधलं ने वलदण चलरुयो जठलधी, सगलुई धरुम करुज जलंणु रे ।
 वलचें जीव मूअल तुयलंरो पलप न ललगुं, आ पलषंडीयलं री वलंणु रे ॥ ॡ ॥
 पलणी री भीक पडे तिण कललें, कोइ वरसतलं वलदण जलवें रे ।
 पलणी रल जीव मूअल छे तुयलंरो, पलषंडी कहे पलप न थलवें रे ॥ ॡ ॥
 वले उधलडे मुख वलतलं करुतलं चललें, सगपण सुधल करे मलरग मलंही रे ।
 इतुयलदलक सलवध करे छे वलदण जलतलं, तिणरुी पिण पलप कहे छे नलंही रे ॥ ॢ ॥
 इण वलध जीव मूअलं री पलप न जलंणुं, तिण री नलयमल नलशुचें मत कुडु रे ।
 ते भूठल थकल जेंनी नलंम धरलवे, पिण जिण मलरग थी हुरु रे ॥ ॣ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

केइ ईयां जोवतां वांदण जावें, केइ जीवां नें मरदता जावें रे ।
 केइ गाडें घोडे रथ बेंसनें जावें, कहें किणनेंइ पाप न थावें रे ॥ ८ ॥
 इण लेखें तो इयां जोवण वाला नें, लाभ हुचो नहीं कांई रे ।
 हिवें इसडो हिंसा धर्म्या री सरघा रा, जाब धारों मन मांहीं रे ॥ ९ ॥
 सामायक संवर पोषा में, साधां नें वांदण जावें रे ।
 जब जीव तणी कोइ घात हुवें तो, ते प्राच्छित ले सुघ थावें रे ॥ १० ॥
 सामायक मांहें वांदण जातां हिंसा हुवें, तिणरो पाप लाग्गां प्राच्छित आवें रे ।
 तो ओर वांदण जातां हिंसा हुवें छें, तिण ने पाप क्यूं नही थावें रे ॥ ११ ॥
 साधां नें वांदण जातां मारग में, करें जिंसा फल पावें रे ।
 सावद्य निरवद - तीनूं जोगां सू, पुन पाप न्यारा न्यारा थावें रे ॥ १२ ॥
 वांदण जातां मन जोग सुघ हुवें तो, एकंत निरजरा थायो रे ।
 वचन नें काया असुघ हुवें तो, तिण सू पाप लागें छें आयो रे ॥ १३ ॥
 कदे काया नें वचन दोनूं जोग सुघ हुवें, त्यांसूं पिण हुवें निरजरा धर्मो रे ।
 एक मन रो जोग असुघ रह्यो बाकी, तिण सू लागें पाप कर्मो रे ॥ १४ ॥
 कदे तीनूंइ जोग सुघ हुवें तो, पाप न लागें लिंगारो रे ।
 इण बिध वांदण जातां मारग में, तीनूं जोगां रो व्यापार न्यारो रे ॥ १५ ॥
 उसभ जोगां सू पाप सुभ जोगां सू पुन, तिण मांहें म जाणों फेरो रे ।
 सावद्य निरवद रा फल जूवा जूवा छें, दूध पांगी ज्यूं जाणो निवेडो रे ॥ १६ ॥
 पछें भाव सहीत तिण साधां नें वांघा, करमां री कोइ खपावें रे ।
 उत्कष्टों पद तीर्थकर पामें, मुगत में बेगो सिधावें रे ॥ १७ ॥
 साधां नें वांदण जावण आवण रो, ए पिण दोनूं किरतब न्यारो रे ।
 वले तीजो किरतब वंदणा रो न्यारो, यां तीनां रो सुणों विसतारो रे ॥ १८ ॥
 साधां नें वांदण जावें ते वंदणा रे कारण, पाछो घर रे कारण घरे आवें रे ।
 साधां नें वंदणा कीषी तिखुतो करनं, ए तीनूं करणी भेली न थावें रे ॥ १९ ॥
 कोइ उघाडे मुख बोल साधां नें बेहरावें, जब मारें छें वाउकायो रे ।
 ते वाउकाय मूखां रो कहें पाप न लागें, इम बोलें पाषंडी वायो रे ॥ २० ॥
 कोइ साधां नें असणादिक आहार बेहरावें, ते बोलें छें मुख उघाडे रे ।
 काया रो जोग तो निरवद तिणरो, वचन सू वाउकाय नें मारें रे ॥ २१ ॥
 उघाडें मुख बोलें वाउकाय मांख्यां, तिणरो लागें पाप कर्मो रे ।
 काया रा जोग सू जेंणां करनं बेहरायों, तिणरो छें एकंत धर्मो रे ॥ २२ ॥
 काया रा जोग सू साधां नें बेहरावें, जो काया सू हुवें जीव घातो रे ।
 जब तो साधु तिण रा हाथां सू, बेहरें नही तिल मातो रे ॥ २३ ॥

काया रा जोग सूं करतो अजेंणा, साधां नें असणांदिक देवे रे ।
 फूंक देवे करे भटको फटको, जब तो साधु मूल न लेवे रे ॥ २४ ॥
 मन वचन तणा जोग दोनूं असुघ, एक काया तणों जोग चोखो रे ।
 तिणरा हायां सूं साच वेहरें तो, मूल नहीं छे दोखो रे ॥ २५ ॥
 साधु वेंहरें काया रो सुघ जोग हुवें तो, -जब वेंहखां वेंहरायां धर्म निसंक धर्मी रे ।
 मन वचन रा जोग असुघ हुवें तो, तिणरो तिणनें इज लागें कर्मों रे ॥ २६ ॥
 संवत अठारें नें वरस तयालें, आसोज सुद चवदस सनीसर वारो रे ।
 हिंसावर्मी ओलखावण काजे, जोड कीची कोठाखां मभारो रे ॥ २७ ॥



ढाल : १०

ढुहा

केइ साधु बाजे लोके में, त्यांरी सरवा अतंत अजोग ।
ते जयातय परगट कहं, ते सांभलजो सहू लोग ॥ १ ॥
जीव मारे नें जीव बचावीयां, कहें धर्म नें पाप ।
ए कर्म उदें पंथ काइ नें, कीबी मिश्र री थाप ॥ २ ॥
इम मिश्र कहें छें तेहनें, न्याय निरणों नहीं घट माय ।
बले अंध नहीं त्यारें बोलीयें, प्रश्न पूछ्यां सुरंत फिर जाय ॥ ३ ॥
त्यांरी सरवा छें मिल्ली लोक सूं, जिण मारग थी विपरीत ।
त्यांरी एक धारा बांणी नहीं, बोली माहें फूट फजीत ॥ ४ ॥
सरवा परमाणें बोले नही, बोले आवें ज्यूं मन दाय ।
हिंवे सरवा कहें छूं तेहनीं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[एक चोर चारे धान पार जोग]

काचो पांणी पावे अणुकम्मा आंग नें, तिण रो कहें छें रे मिश्र धर्म ने पाप ।
धर्म अणुकम्मा रो पाप पांणी तणों, इण विघरें करें मिश्र री थाप ।
भव जीवां तुम्हे मिश्र म मानजों * ॥ १ ॥
जो काचो पांणी पायां मिश्र धर्म हुवे, ते पांणी खोस्यां रे तोपिण मिश्र धर्म होय ।
अणुकम्मा आंगे पांणी रा जीवां तणी, पाप लागो रे अंतराय तणों सोय ॥ अ० २ ॥
कोइ अणुकम्मा आंग पंखिया तणी, मुख आणें रे न्हाखें एकंद्री आंग ।
कोइ अणुकम्मा आंग एकंद्री तणी, उरा लेई रे मेलें एकंत जांग ॥ ३ ॥
पंखियां री अणुकम्मा आंग नें, एकंद्री न्हाख्यां रे धर्म नें पान होय ।
तो एकंद्री नी पिण अणुकम्मा आंग नें, पंखी आगा सूं रे उरा लीवां मिश्र जोय ॥ ४ ॥
जमीकंद आदि दैगण बालोल नें, दांन देवे रे अणुकम्मा आंग ।
कोइ अणुकम्मा आंग जमीकंद री, खोस लेवे रे खातां आगा सूं तांग ॥ ५ ॥
अणुकम्मा आंग जमीकंदादिक दीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तो जमीकंदादिक री अणुकम्मा आंग नें, खोस लीवां रे दोनुं बयूं नहीं होय ॥ ६ ॥
कोइ अणुकम्मा आंग रांक गरीब री, छ ही काया रे हणें देवे सत्तुकार ।
कोइ अणुकम्मा आंग छकाय री, बरज राखें रे कहें तूं मत दें लिगार ॥ ७ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छ ही काय हण रांकां नें पोखीयां,
तो अंतराय दे राखी छ काय नें,
खरच व रोट्टी आदि जीमण करे,
तिण नें धर्म ने पाप दोनूं कहे,
छ काय हणे नें न्यात पोषीयां,
तो अंतराय दें राखे छ काय नें,
खणावें कूवा बाव तलाव ने,
घणा रे साता हुइ रो धर्म हुवों कहे,
तो कूवा तलाव खणावे तेह ने,
घणा जीव वच्यां रो धर्म हुवे,
जिण जिण किरतव मे मिश्र कहे,
जो अतराय तणों पाप लागसी,
धर्म पाप हुवे एक करणी कीयां,
ते बरज राख्यां पिण दोनूं नीपजें,
पाप छूटा रे छूटें छे धर्म तेहनों,
इसडी दोघड लागी मिश्र धर्म मे,
दान दीघां धर्म पाप दोनू हुवे,
तिण में सदा इविरत तिण रे पापी री,
असजती इविरती जीव तेहने,
भगोती रे सूत खघ आठ में,
तिण दान ने साधां जावक छोडीयो,
भलो पिण नही जाणे तिण दान ने,
इण दान तणी परससा करे,
सूयगज अग अधेन इग्यार में,
तिण दान नें परससे अग्यानी थकां,
श्री वीर वचन उथाप ने,
मिश्र करणी माहे लेस्या किसी,
परिणांम मिश्र मे वरतें केहवा,
लेस्या ध्यान अधवसाय परिणांम ते,
धर्म भला माहे पाप भूंडा मभे,
इम पूछ्या रो जाव न उपजे,
तिण सूं आल पंपाल वकें घणो,

तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ॥ ८ ॥
छ काय हण नें रें पोपें घणां जीवा नें ताय ।
पाप आरंभ रो रे धर्म पोष्यां रो थाय ॥ ९ ॥
तिण ने होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
मिण ने पिण रे धर्म नें पाप होय ॥ १० ॥
तिण नें पिण रे कहे मिश्र धर्म ।
हिंसा हुइ रे तिण रो लागो कहे पाप कर्म ॥ ११ ॥
बरजें राख्यां रे हुवे मिश्र धर्म ।
अंतराय दीघी रे तिण रो लागे पाप कर्म ॥ १२ ॥
तिण किरतव नें रे बरज्यां पिण मिश्र जोय ।
तो जीव वचीयां रे तिण रो धर्म क्यू न होय ॥ १३ ॥
ते करणी रे करायां पिण दोनूं होय ।
ते पिण निरणो रे तिण रे नही कोय ॥ १४ ॥
धर्म छूटा रे छूटे छे तिण रो पाप ।
तिण मिश्र ने रे कीघां बोहत संताप ॥ १५ ॥
ते तो देसी रे जब होसी पाप धर्म ।
तिण सू बघे रे समें समें सात कर्म ॥ १६ ॥
दान दीघां रे होसी एकंत पाप ।
छूटें उद्दें रे कह्यो श्री जिण आप ॥ १७ ॥
देवे नही रे दरावें नही कोय ।
तिण माहे रे धर्म किहाथी होय ॥ १८ ॥
तिण ने कह्यो रे छ काय रो घाती वीर ।
तिण माहे रे साधु किम घाले सीर ॥ १९ ॥
तिण माहे रे कहे धर्म ने पाप ।
खोटी कीघी रे निश्च मिश्र री थाप ॥ २० ॥
ध्यांन किसो रे किसा वरते अधवसाय ।
इम पूछीजे रे मिश्रवालां नें ताय ॥ २१ ॥
ए तो च्यांरू रे भला के भूंडा जांग ।
मिश्र नही रे तिणरी करजो पिच्छांग ॥ २२ ॥
जब उ जाणे रे पिडताइ में पडती घूड ।
मिश्र थापण ने रे दोलें अनेक विघ कूड ॥ २३ ॥

हं कहि कहि नें कितरो कहूं, घणी खोटी रे सरघा मिश्र री जाण ।
 भारी कर्मा जीवां त्यां आदरी, कर्मा वस रे वूडें कर कर तांण ॥ २४ ॥



ढाल : ११

दुहा

केइ भेषधाख्यां री सरघा बुरी, तिण सूं कर रह्या मूढ विलाप ।
 त्पारें उसम उदेंरा जोग सूं, किधी मिश्र री थाप ॥ १ ॥
 त्यां गाला मांसूं गोला करे, फेंक्या लोकां मांय ।
 ते मिश्र कहे छें मून में, ते पिण समम न कांय ॥ २ ॥
 कहें म्हें करणों न करणो कवां नहीं, आगना पिण न थां कोय ।
 ते करणी ग्रहस्थ करे, तिण में पाप धर्म हुवें दोय ॥ ३ ॥
 जो धर्म हुवे तो थां आगना, पाप हुवें तो वरजां तांम ।
 पाप धर्म दोनूं हुवें, तठें मून करां तिण ठाम ॥ ४ ॥
 इण विव करे छें पक्ष्पणा, मिश्र कहें छें निसंक ।
 त्यांनैं त्यां सारिषा आए मिल्या, त्पारें लागा मिथ्यात रा डंक ॥ ५ ॥
 कहिवा नें मिश्र मुख सूं कहे, त्यांनैं पूछ्यां रा नावें जाब ।
 जब बंध नही त्पारें बोलीये, फिर जावें तुरत सताब ॥ ६ ॥
 पाप धर्म रो मिश्र कहें मून में, तिणरी सरघा में धोर अंधार ।
 हिंवें किण किण ठिकाणें मुन छें, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ धुर नें दान दें बांधी सारें, ते पिण निनांग नें काजें रे ।
 त्यांनैं देतां लेतां साधु निजरा देखे तो, बोलें नही मून सामें रें ।
 मून में मिश्र कहे छें अग्यानी* ॥ १ ॥
 कोइ साधु देखतां करे सगाई, तिहां साधु तो रहे मून सामो रे ।
 जो मून सामे तिहां मिश्र होसी तो, इणरेइ मिश्र छें ताजो रे ॥ मू० २ ॥
 कोइ शोरी बावरी ने ससतर देवें, ते साधु देखे तो सामें मूनो रे ।
 जो मून में मिश्र होसी तो इणरेइ मिश्र छें, यो किम रहसी निभूनी रे ॥ ३ ॥
 कोइ धान पीसण ने देवें घरटी, वले उखल मूसल देवें कोयो रे ।
 तो साधु देखे तो मून करे छें, तो इणरें पिण मिश्र होयो रे ॥ ४ ॥
 कोइ धास काटण नें देवे दांतरलौ, कोइ विरष काटण नें देवें कुहारो रे ।
 जो साधु मून साइयां मिश्र हुवें तो, इणरेइ मिश्र छें तयारो रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साध कसी कूदालादिक देतां देखें तो, मून साभें निरदोपों रे ।
 जो मून साभें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोखों रे ॥ ६ ॥
 ससतर अनेक साध देतां देखें तो, साध न वोळें तिण ठोडें रे ।
 जो मून साभें तिहां मिश्र होसी तो, इणरेंइ मिश्र छें चोडें रे ॥ ७ ॥
 कोइ होको पीवण नें देवें तमाखू, कोइ अगन पांणी घालें तांमो रे ।
 कोइ भांग तिजारो घोटी पावें, साध रे मून सगली ठांमो रे ॥ ८ ॥
 घांणी अरटको सीटों खडवा, वले गाडा हल खडवा काजें रे ।
 त्यानिं बलद कोइ मांग्या देवें, ते साध देखें तो मून साभें रे ॥ ९ ॥
 कोइ रोटी करण ने चूलो देवें, कोइ छांणा देवें बालण काजें रे ।
 कोइ छ काय हणी नें कर दें रसोड, कोइ साध देखें तो मून साभें रे ॥ १० ॥
 कोइ अणगल पांणी रात रो पावें, सूलीयो धान खवावे रांधी रे ।
 कोइ भडमूंजा नें धान देवें सूलीयो, ते साध देखें नें मून सांधी रे ॥ ११ ॥
 कोइ गेंहणा कपडा फूल पेंहरावें, करावें मरदन पीठी रे ।
 वले काचा पांणी थी सिनांन करावें, ते साध देखें तो मून मीठी रे ॥ १२ ॥
 कोइ सोर सीसों सिकारी नें देवें, मछीगर नें सूत जाली काजें रे ।
 कसाइ नें नाणों दें जीव ल्यावण नें, ते साध देखें तो मून साभें रे ॥ १३ ॥
 कोइ अर्थ अनर्थ हिंसक जीव पोपें, कोइ पांणी काढण नें देवें नांणो रे ।
 कोइ चोर नें धान दें चोरी करावण, साध रे तो अठेंइ मून जांणो रे ॥ १४ ॥
 कोइ सावण करण नें तेल खरीदें, कोइ लोहडो देवें ससतर काजें रे ।
 कोइ लोह धवण नें धवण देवें छें, तिहां मून करें ते मुनीराजो रे ॥ १५ ॥
 कोइ हाट हवेली आदि व्याह थापणा रा, मोहरत देवें विवध प्रकारो रे ।
 इसडो वरतमान सावु देखें तो, तिहां साधु न वोळें ल्लिगारो रे ॥ १६ ॥
 कोइ लूण पांणी देवें अणुकंपा आणे, वले घालें अगन नें वायो रे ।
 वले वनसपती तस काय देता देखें, मून करें ते मुनीरायो रे ॥ १७ ॥
 कोइ सच्चित देवें बंदीवानादिक नें, डाकोतादिक नें देवें भय काजें रे ।
 वले खरच करें छें मूआ नें केडें, साधु तो सगलेई मून साभें रे ॥ १८ ॥
 लज्या रो घाल्यों देवें मलेछादिक नें, राबलीयादिक नें देवे मान आंणो रे ।
 कोइ देवें उवारों कोइ पाछो देवें, तिहां साधु रे मून पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 कुसील सेवण नें देवें गणकादिक नें, ते साध देखें तो मून साभें रे ।
 जो मून में मिश्र तो इणरेंइ मिश्र छे, इणनें मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ २० ॥
 सुरियाभ देवता नाटक करण री, आग्या मांगी भगवंत पासो रे ।
 जब भगवंत मून साभी नही बोल्या, त्यां एकंत जांण तमासो रे ॥ २१ ॥

जमाली आग्या मांगी विहार करण री, वीर समीपे आणों रे ।
 काई कारण देखी भगवंत नही बोल्या, पिण नही जाण्यो मिश्र ठिकाणो रे ॥ २२ ॥
 सिष्य होण रो कह्यो भगवंत नें गोशालो, भगवंत कीधी मून तांमो रे ।
 अजोग जाणी वीर आरे न कीघो, पिण मिश्र न जाण्यो तिण ठामो रे ॥ २३ ॥
 चित्तजी विनती कीधी केशी कुमार नें, आप सेवीया नगरी पघारो रे ।
 नही जाण रा परिणाम तिण सूं न बोल्या, पिण मिश्र न जाण्यो लिंगारो रे ॥ २४ ॥
 इत्यादिक मून रा बोल अनेक छें, ते कहितां न आवें पारो रे ।
 जो मून में मिश्र तो सगलें मिश्र छें, कहि देणो एकण घारो रे ॥ २५ ॥
 किणहीक मून में मिश्र कहि दें, किणही मून माहे कहें पापो रे ।
 जो सगलेंई मिश्र कहितां लाजे, तो उड गई मिश्र री थापो रे ॥ २६ ॥
 जे मून मे मिश्र कहे छें चोडे, ते पाप कहसी किण लेखें रे ।
 जो पाप कहें तो मिश्र उठें छें, जब किसी सरघा साह्यों देखें रे ॥ २७ ॥
 जो सगले मिश्र कह्यां लोक न मानें, होय जावें जाबक फितुरो रे ।
 जब किण ही मून माहे पाप पिण कहि दे, तो पडी मिश्र माहें घुडो रे ॥ २८ ॥
 यो मिश्र अणहुंतों चलायो अग्यांनी, ते सूतर माहें कडेय न चाल्यो रे ।
 भारी कर्मा जीवां ने डबोवण, घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ २९ ॥
 देव गुर तो मिश्र न होवें, तो धर्म मिश्र किण लेखें रे ।
 अभिन्तर आख हीया री फूटी, ते सूतर सांहो न देखें रे ॥ ३० ॥
 मून में मिश्र कहे छ अग्यांनी, ते उठी जठायी भूठी रे ।
 एक करणी मे पाप धर्म दोनूं कहे त्यांरी, हीया निलाड री फूटी रे ॥ ३१ ॥
 मून मे पाप धर्म दोनूं कहि कहि, घणां लोकां नें विगोया रे ।
 वले सिष सिषणी पोता रा हुता, त्यांने तो जाबक बोया रे ॥ ३२ ॥
 मून मे मिश्र री करें परूपणा, ते खोटें घणों छें विल को रे ।
 ते श्री जिण आगना उलंघे अग्यांनी, ते थोथो जमायो खिलको रे ॥ ३३ ॥
 अववसाय परिणाम ध्यान नें लेस्या, च्याळं भला के भूंडा जाणों रे ।
 भला में धर्म भूंडा में अधर्म, मिण मिश्र रो नही छे ठिकाणो रे ॥ ३४ ॥
 विरत माहे धर्म इविरत माहें अधर्म, पिण मिश्र रो नही छे ठिकाणो रे ।
 इविरत सेवायां एकंत अधर्म, तिण माहे शंका मत आणो रे ॥ ३५ ॥
 पाप अठारे सेव्यां एकंत पाप, ते सेव्यां नही धर्म होयो रे ।
 पाप धर्म री करणी छे न्यारी, पिण मिश्र करणी नही कोयो रे ॥ ३६ ॥
 इण मिश्र रो मुंहमाथो नही दीसैं, ओ निश्चें अणहुंतो गोलो रे ।
 ते जिण मारग सूं चोडे भूला, त्यां लीयों मिश्र रो ओलो रे ॥ ३७ ॥

कुपातर दांन ते एकत सावद्य, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांहीं रे ।
 अंतराय पडें तिण सू मूनज साभें, पिण धर्म नही तिण मांहीं रे ॥ ३८ ॥
 कुपातर दांन नें साधां त्रिविधे त्याग्यो, तिणनें मन करे भलोई न जाणें रे ।
 तिण दांन में धर्म पल्पें, ते जिण धर्म केम पिच्छाणें रे ॥ ३९ ॥
 सामायक पोषां मांहीं श्रावक, साव विनां ओरां नें देवा त्यागो रे ।
 जो उ ओर कनें सांनी करे दिरावें, तो सामायक पोषों भागों रे ॥ ४० ॥
 जिण दांन सू भागे सामायक पोषों, वले साधपणों पिण भागों रे ।
 एहवो सावद्य दांन छे खोटो, तिणरा आछा फल किम लागें रे ॥ ४१ ॥
 अन पुने पाण पुने कह्यो सूतर में, लेंण सेंण वसतर पुन चाल्यो रे ।
 ते पातर सू पुन कुपातर सू पाप, ओ धोचों मिश्र रो काई घाल्यो रे ॥ ४२ ॥
 अन मिश्रे पाण मिश्रे न चाल्यो, लेंण सेंण वसतर मिश्र नही रे ।
 मिश्र धर्म भगवते न भाष्यो, किणही सूतर रे मांही रे ॥ ४३ ॥
 दस दांन कंहा ठाणांग मांहीं, गुण जिसाइ त्यांरा नामो रे ।
 आठां दानां रा अर्थ उंवा करे नें, मिश्र ले उठ्वा तांमो रे ॥ ४४ ॥
 कहे धर्म अधर्म दांन कर दीया न्यारा, आठ दांनो रो विवरो नांही रे ।
 तिण सू मिश्र कहां धर्म अधर्म रो, आठूइ दांन रे मांही रे ॥ ४५ ॥
 इण विघ मिश्र कहें छें अग्यांनी, ते गाढो रह्या मत झाली रे ।
 साची बात सूतर री न मानें, त्यारे आडी छें कर्म रूप राली रे ॥ ४६ ॥
 नव पदारथ मांहे जीव अजीव, न्यारा न्यारा बतावे रे ।
 इण सरधा रे लेखे सात पदारथ, जीव अजीव रों मिश्र थावें रे ॥ ४७ ॥
 नव पदारथ में धुर सू जीव अजीव, बाकी गुण जिसा नाम सातोइ रे ।
 जो आठ दांन मांहीं मिश्र होसी तो, ए पिण सातोई मिश्र होइ रे ॥ ४८ ॥
 जो सात पदारथ मांहीं मिश्र न थापें, तो दांन मिश्र नहीं आठो रे ।
 उठें जीव अजीव अठें धर्म अधर्म, बाकी समचे सूतर रो पाठो रे ॥ ४९ ॥
 पुनादिक सात पदारथ मांहीं, जीव अजीव रो भेल नांही रे ।
 ज्यू मेला नहीं छें धर्म अधर्म, आठूइ दांन रे मांहीं रे ॥ ५० ॥
 दांन साला मंडावें लूण पाणी अगन री, वाउ वनसपति ने तसकायो रे ।
 आय मांगें त्यांने दांन दे दगचाले, खावा पीवा भोगववा ताह्यो रे ॥ ५१ ॥
 छ काय रा जीवां नें जीवां मारी नें, मन मांनें त्यांनें खवावें रे ।
 अथवा हाथां सू छ काय जीवां रो, कहि कहि नें गटको करावें रे ॥ ५२ ॥
 जो पाप होसी तो सगलां नें पाप, मिश्र होसी तो सगलां नें मिश्रो रे ।
 जो किणही एक बोल में पाप कहें तो, मिश्र होय गयो फितरो रे ॥ ५३ ॥

जीव ने जीव खवावण नें देवें, वले हाथां सूं मार खवावें रे ।
 ए प्रतष पाप उघाडो दीसैं, तिणमें मिश्र किहाथी थावें रे ॥ ५४ ॥
 जीव खवाया में मिश्र परूपें, ते सरघा घणी छे खोटी रे ।
 इण सरघा सूं नरक गया अनता, त्यां लीधी छे अटवी मोटी रे ॥ ५५ ॥
 इण मिश्र मे ओगुण अनेक कह्या जिण, ते पूरा कहणी न आवें रे ।
 इम साभल उत्तम नरनारी, मिश्र रे संग न जावें रे ॥ ५६ ॥

ढाल : १२

ढुहा

जिण शासण में जिण आगन्यां बडी, ते ओलखे बुधवांन ।
ज्यां जिण आगन्यां ओलखी नहीं, ते जीव विकल समान ॥ १ ॥
दोय करणी संसार में, सावद्य निरवद जाण ।
निरवद करणी में जिण आगन्यां, तिणसूं पामें पद निरवाण ॥ २ ॥
सावद्य करणी संसार नी, तिणमें श्री जिण आगन्यां नांही ।
संसार वधें छें तेहथी, धर्म नहीं तिण मांही ॥ ३ ॥
हिंवें किहां किहां छें जिण आगन्यां, किहां किहां आगन्यां नांहिं ।
बुधवंत करे विचारणा, निरणों करों मन मांहिं ॥ ४ ॥

ढाल

कोइ करें पचखांण नोकारसी, तिणरी आगन्यां द्यो जिण आप हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो ।
हू बलिहारी हो श्री जिणजी री आगन्यां* ॥ १ ॥
जिण आगन्यां सहीत नोकारसी, कीधां कटें सात आठ कर्म हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, ते तो आपरो भाष्यो नहीं धर्म हो ॥ हूं २ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडो, तिणरी आग्या द्यो थे जिणराज हो ।
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दें, तठे आप रहो मून साभ हो ॥ ३ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, ते तो आपरों सीखायो छें धर्म हो ।
तिण सूं कर्म कटें तिण जीव रे, उतकष्टा पामें सुख परम हो ॥ ४ ॥
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दे, ते तो आपरो सीखायो नहीं धर्म हो ।
ओ तो उपगार संसार नों, तिणसूं कटता न जाण्या आप कर्म हो ॥ ५ ॥
कोइ साधां नें वैहरावें एक तिणखलो, तिणरी आग्या द्यो आप साष्यात हो ।
कोइ श्रावक जीमावें कोडांग में, तिणरी आग्या न द्यो अंसमात हो ॥ ६ ॥
साधां ने वैहरावें एक तिणखलो, तिणरें बारमों वरत कह्यो आप हो ।
तिण सूं आग्या दीवी आप तेहनें, वले कटता जाण्या तिणरा पाप हो ॥ ७ ॥
कोइ श्रावक नें जीमावें कोडांग में, ते तो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ।
उण छ कय रो सख पोखीयो, तिण में धर्म री न करी थे थाप हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ करें वीयावच श्रावकां तणी,
 उण तीखो कीयों सख छ काय रो,
 उघाडे मुख गुणें छें सिघंत ने,
 जिण मे आप तणी आगन्यां नही,
 उघाडे मुख गुणें छे नवकार नें,
 तिणमे धर्म सरखें भोला थका,
 जेणा सूं गुणें एक नवकार ने,
 तिणमे आप तणी छे आगन्यां,
 केइ साधु नांम धराय ने,
 त्या भेष भांड्यो भगवांन रो,
 मून कही थे साधु रें सावद्य दांन मे,
 तिणरो फल ते सूतर में बतावीयो,
 प्रदेसी राजा कह्यों केसी सांम ने,
 म्हारे सात सहंस गाम छे खालसे,
 एक भाग राण्यां निमते करे,
 तीजो भाग घोडा हाथ्या निमते करें,
 च्याहू भाग सावद्य कांमो जांण ने,
 जो उवे धर्म कठेइ जांणता,
 सावद्य किरतब च्याहू भाग राज रा,
 तिण सू च्याहूं बरोबर जाण ने,

दान देत्रा मांडी दांनसाल नें,
 सात सहंस गांम हुता खालसे,
 च्याहूं भाग करे आप न्यारो हुवो,
 तिण तिथ न कीधी तिण राज री,
 ओ तो दान ओरां ने भलाय ने,
 चवदें प्रकार नो दांन साध ने,
 चोथो भाग ते दांन रे ताल के,
 तीन भाग ज्युं इण ने पिण थापीयो,
 साबा सतरसो गांम दांन ताल के,
 त्यांरा हासल रो धांन रंदाय ने,
 टालवा गांम जांणीजें खालसे,
 हासल आयो ते तो जाणीजे घणो,

तठें पिण आपरें छें मून हो ।
 ते किरतब जांणों आप जबून हो ॥ ९ ॥
 वले कोडांग में गुणे छे नवकार हो ।
 तिण मे धर्म न सरखूं लिंगार हो ॥ १० ॥
 तिण वाउ काय माख्या असंख हो ।
 तिणरें लागा कुगुरां रा डंक हो ॥ ११ ॥
 तिण सूं कोडा भवां रा कटें कर्म हो ।
 तिणरे निश्चे छे निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 प्रससे छे सावद्य दांन हो ।
 त्यारा घट माहे घोर अग्यांन हो ॥ १३ ॥
 ते तो अंतराय पडती जाण हो ।
 तिणरी बुधवंत करसी पिछांण हो ॥ १४ ॥
 म्हारे तो छें चढतों वेराग हो ।
 तिणरा करे च्यार भाग हो ॥ १५ ॥
 बीजो भाग करे खजांन हो ।
 चोथो भाग करे देवा दांन हो ॥ १६ ॥
 मून सामे रह्या केसी सांम हो ।
 तो करता तिणरा गुणग्राम हो ॥ १७ ॥
 त्यामें जीवां री हिंसा अतंत हो ।
 मून सामी मतवंत हो ।
 हूं बलिहारी हो श्री जिणजी री मून में ॥ १८ ॥
 परदेसी राजांन हो ।
 तिणरो चोथो भाग दीयों दांन हो ॥ १९ ॥
 तिण जाण्यो संसार नो माग हो ।
 रह्यो सुगत सं सनमुख लाग हो ॥ २० ॥
 तिणरी पूछी न दीसे बात हो ।
 ओ तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ २१ ॥
 नही राख्यो पोता रे हाथ हो ।
 छ काय जीवां री जांणी घात हो ॥ २२ ॥
 दिन दिन प्रते मठेरा पांच गांम हो ।
 दानसाला माडी ठाम ठाम हो ॥ २३ ॥
 ते तो चोथा आरा रा था गाम हो ।
 नेपे हुंती घणी अमांम हो ॥ २४ ॥

हासल आयो हुवें एकीका गांम रो, दस सहस्र मण रें उनमान हो ।
 दिन दिन प्रतें मठेरा पांच गांम रो, उणो पचास हजार मण धान हो ॥ २५ ॥
 इण लेखें हुवो एक वरस तणों, पूणा दोग कोड मण धान हो ।
 इधको ओछो तो आप जाणें रहा, म्हें तो अटकल सूं बांध्यो उनमान हो ॥ २६ ॥
 पांणी लागें पांच कोड मण आसरें, पूणा दोग कोड मण रांध्यां धान हो ।
 अगन पिण एक कोड मण जांणीजें, लूण छ लाख मण रें उनमान हो ॥ २७ ॥
 नित धान हजारां मण रांधतां, अगन पांणी हजारां मण जाण हो ।
 तठें लूण मणा बंध लागतो, वाउकाय रो ई बोहत घमसाण हो ॥ २८ ॥
 फूंहारादिक अनेक पांणी मभे, वले वनसपती पांणी मांय हो ।
 धान हजारां मण रांधतां, तिहां अनेक मूआ तसकाय हो ॥ २९ ॥
 दिन दिन प्रतें मारी छें छ काय नें, कीधी अनत जीवां री घात हो ।
 त्यांरी हिंसा रो पाप गिणें नहीं, तिणरे हिंसा धर्मी रो मिथ्यात हो ॥ ३० ॥
 एहवा दुष्ट हिंसाधर्मी जीव नें, केइ जाणे छें अग्यांनी साध हो ।
 तिणरें पिण घट में घोर अंधार छें, ते पिण नीमाइ निश्चें असाध हो ॥ ३१ ॥
 केइ जीव खवायां मे पुन कहे, केइ मिश्र कहे छे मूढ हो ।
 ए दोनूई बूडें छे बापडा, कर कर मिथ्यात री रूढ हो ॥ ३२ ॥
 जीव खाधां खवायां भलो जांणीयां, तीनूई करपां पाप हो ।
 आ सरधा परूपी छें आपरी, ते पिण दीधी आगन्यां उथाप हो ॥ ३३ ॥
 केइ कहें जीवां नें माख्यां बिनां, धर्म न हुवें तांम हो ।
 जीव माख्यां रो पाप लागें नहीं, चोखा चाहीजे निज परिणाम हो ॥ ३४ ॥
 केइ कहें जीव माख्यां बिनां, मिश्र न हुवें छे तांम हो ।
 पिण जीव मरण री सांती करे, ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ ३५ ॥
 केइ धर्म नें मिश्र करवा भणी, छ काय रो करें घमसाण हो ।
 तिणरा चोखा परिणाम किहां थकी, पर जीवां रा लूटें छें प्राण हो ॥ ३६ ॥
 कोइ जीव खवावें छे तेहनां, चोखा कहे छें परिणाम हो ।
 कहें धर्म नें मिश्र हुवें नहीं, जीव खवायां विण तांम हो ॥ ३७ ॥
 जीव खाण रा परिणाम छें अति बुरा, खवावण रा पिण खोटा परिणाम हो ।
 यूही भोलां नें न्हांखें भरम मे, ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ ३८ ॥
 जिण ओलख लीधी आपरी आगन्यां, जिण ओलख लीधी आपरी मून हो ।
 तिण आप नें पिण ओलखे लीया, तिणरी टलगी माठी माठी जून हो ॥ ३९ ॥
 जिण आग्या न ओलखी आपरी, आपरी नहीं ओलखी मून हो ।
 तिण आपनें ओलख्या नहीं, तिणरें बघसी माठी माठी जून हो ॥ ४० ॥

केइ जिण आगन्या बारें धर्म कहे, जिण आग्या मांहे कहे छें पाप हो ।
 ते दोनूं विघ बूडे छे बापडा, कूडों कर कर अग्यानी विलाप हो ॥ ४१ ॥
 आपरो धर्म आपरी आग्या मभे, आपरो धर्म नहीं आपरी आग्या बार हो ।
 जिण धर्म जिण आग्या बारे कहे, ते पूरा छे मूढ गिवार हो ॥ ४२ ॥
 आप अवसर देखी नें बोलीया, आप अवसर देखे साभ्नी मून हो ।
 जिहा आप तणी आगन्यां नही, ते करणी छें जाबक जबून हो ॥ ४३ ॥
 भेषवारी थापे सावच्च दांन नें, तिण दांन सू दया उठ जाय हो ।
 वले दया कहे छ क़ाय बचावीयां, तिण सू दांन उथप गयों ताय हो ॥ ४४ ॥
 छ क़ाय जीवां ने जीवां मार ने, कोइ दांन दे संसार रे मांय हो ।
 तिणरे तो - छ क़ाय जीवां तणी, घट मे दया रहे नही कांय हो ॥ ४५ ॥
 कोइ दांन देवें तिणने वरज नें, जीवां बचावें छ क़ाय हो ।
 ते जीव बचायां दांन उथपें, त्यांसूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ ४६ ॥
 छ क़ाय जीवां नें मारें दांन दें, तिण दांन सू मुगत न जाय हो ।
 वले फिर फिर बचावे छ क़ाय ने, तिण सू कर्म कटे नही ताय हो ॥ ४७ ॥
 सावच्च दांन दीयां दया उथपें, सावच्च दया सू उथपें अभय दांन हो ।
 ते सावच्च दया दान संसार नां, त्यांने ओलखे ते बुबदांन हो ॥ ४८ ॥
 त्रिविधे त्रिविधे छ क़ाय हणवी नही, आ थें दया कही जिण राय हो ।
 दान देणों सुपातर ने कह्यो, तिण सू मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ ४९ ॥
 दांन दया दोनूं मारग मोष रा, ते तो आपरी आगन्यां सहीत हो ।
 याने हूडी रीत आराधीयां, ते गया जमारो जीत हो ॥ ५० ॥
 आप तणी आगन्यां ओलखायवा, जोड कीधी घेनावस मभार हो ।
 संवत अठारे चमालेसमे, माहा सुदि सातम विसपतवार हो ॥ ५१ ॥



दुहा

केइ भेषधारी कहें म्हें धर्म री, आगन्यां छां छां तांम ।
 पाप करतां नें वरज छां, मून करां मिश्र नें ठाम ॥ १ ॥
 राइ पाप नें धर्म मेरू जितों, धर्म राइ नें मेरू सम पाप ।
 अनेक भांगा छे इण मिश्र ना, तठे रहां चुप चाप ॥ २ ॥
 पाप करण री आगन्यां छां नहीं, मिश्र री पिण आग्या छां नांय ।
 मिश्र करता नें पिण वरजां नही, म्हें जाण रहां मन मांय ॥ ३ ॥
 इण विघ करे छें परूपणा, पिण बोले नही बंध लिंगार ।
 प्रश्न पूछ्यां रा जाब न उपजे, जब फिरतां न लागें बार ॥ ४ ॥
 कहें एकंत धर्म री छां आगन्या, पाप करतां नें वरजां साख्यात ।
 मून करां मिश्र नें बोलां नहीं, पिण यां तीनुइ में फिरजात ॥ ५ ॥
 हिवें कुण कुण प्रश्न पूछ्यां, त्यांरी सरधा रो पडें उधाड ।
 ते चित लगाय नें सांभलो, अल्प मातर कहूं विसतार ॥ ६ ॥

ढलल

[तीजी सुमत छे सषशा य]

श्रावक श्रावक री वीयावच करे, सामायक नें पोषा मांही रे ।
 तिणमें धर्म कहें छें निसंक सूं, तिणरी आगन्यां देवें नांही रे ।
 सरधा सुणजो निनवा तणी ॥ १ ॥
 पेंहला कहिता धर्म री छां आगन्यां, धर्म सरखें आग्या देवें नांही रे ।
 त्यांरा बोल्यां री ठीक त्यांनं नही, सुघ ववेक नही त्यां मांहीं रे ॥ स० २ ॥
 श्रावक श्रावक री पडिलेहण करे, साता पुछें करे नमसकारो रे ।
 तिण में पिण धर्म चोडे कहें, तिणरी पिण आग्या नही दे लिंगारो रे ॥ ३ ॥
 श्रावक श्रावक नें देवें समायक मभे, पुंजणी कपडादिक जांणी रे ।
 तिण ने धर्म जाणे पिण न दें आगन्यां, ते तो पूरा छें मूढ अयांणो रे ॥ ४ ॥
 इत्यादिक बोल अनेक में, कहें छे एकंत धर्मों रे ।
 तिण धर्म री नहीं दें आगन्यां, जब नीकल गयो सरधा रो भर्मों रे ॥ ५ ॥
 कहें म्हें धर्म करण री छां आगन्यां, यूंही बोले अनांखी कूडो रे ।
 जो धर्म करण री आगन्यां दें नहीं, जब सरधा में पड गइ धूडो रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

करणे करण रो उपदेस दे,
 कले धर्म निकेवल कहें तेह में,
 पाप लागे जाणे आगन्यां दीयां,
 एहवी उधी सरघा छे तेहनीं,
 पाप कहें धर्म री आगन्यां दीयां,
 धर्म करण री आगन्या देतां डरें,
 कदा जाव अटकता जाण ने,
 धर्म कह्यो पाछिलां बोलां मभे,
 दोय बाना मिश्र कहें तेह ने,
 त्यानें पाछो जाव न उपजे,
 तो सामायक पोषा मभे,
 ते दोय बांन मिश्र कीयां,
 जब उ कहे दोय बाना मिश्र कीयां,
 एहवी उधी ले उठे तेहने,
 मिय कीयां सामायक भागें नहीं,
 तो ज्वे मिश्र सरखे छे सावद्य दान में,
 आठ दाना ने पिण मिश्र कहे,
 मिश्र दान भगवते न भाषीयो,
 जो मिश्र कीया सामायक भागे नाहीं रे,
 जो आठ दान सामायक में दे नहीं,
 श्रावक ने अनेक दरब दीयां,
 मिश्र कीयां सामायक भागे नहीं,
 धर्म तणी तो नहीं देवे आगन्यां,
 कले पाप तणी देवे आगन्यां,
 कहें म्हे पाप करता ने वरज छां,
 त्यारी सरघा री समभ त्यानें नहीं,
 साध चेला चेली करे तेहमें,
 पाप जाणे न देवे आगन्यां,
 साध साववी असणादिक भोगवे,
 तिणमें पाप जाणे न देवे आगन्यां,
 वीयावच करावे तिण साध नें,
 तिणरी पिण देवे छे आगन्यां,

तिणरी प्रससा गुणग्राम करता रे ।
 तिणरी आगन्यां नहीं दे डरता रे ॥ ७ ॥
 प्रससा कीयां जाणे धर्मो रे ।
 त्यारे मोटें मिथ्यात नो भर्मो रे ॥ ८ ॥
 ते उठी जठायी भूठी रे ।
 त्यारी ह्यिया निलाड री फूटी रे ॥ ९ ॥
 तो उ फिर जाये करे तांना माना रे ।
 त्यामे कहि दे मिश्र दोय बांन रे ॥ १० ॥
 न्याय चरचा माहे बांध लीजे रे ।
 एहवा प्रश्न पूछीजे रे ॥ ११ ॥
 राख्यो छे तिण उपरंत त्यागो रे ।
 सामायक ने पोषो भागो रे ॥ १२ ॥
 सामायक पोषो भागें नाहीं रे ।
 भूठ बोलण री संक न काई रे ॥ १३ ॥
 ते पिण चोडें कूड चलायो रे ।
 ते पिण देणों सामायक माह्यो रे ॥ १४ ॥
 ते पिण एकंत मूसावायो रे ।
 ओ पिण गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ १५ ॥
 तो आठ दान सामायक में देणा रे ।
 त्यां विकलां री बोली रा क्या कॅणा रे ॥ १६ ॥
 दोय बांन मिश्र कहें ताह्यो रे ।
 तो श्रावक ने देणा सामायक माह्यो रे ॥ १७ ॥
 ते मत जावक कुडो रे ।
 तिण सरघा रो सुणजों फित्तूरो रे ॥ १८ ॥
 ते पिण थोडा माहें फिर जायों रे ।
 आ पिण कूडी करे वकवायों रे ॥ १९ ॥
 पाप जाणे छे मूढ अग्यानी रे ।
 त्यानें किण विच कहीजे ग्यानी रे ॥ २० ॥
 कपडादिक दरब वशेष रे ।
 निज बोल्या साह्यो नहीं देखे रे ॥ २१ ॥
 तिणमें पाप निकेवल थापें रे ।
 आपरी सरघा आप उथापें रे ॥ २२ ॥

साध नदी उतरें छें तेहमें, पाप निकेवल जाणें रे ।
 तिणरी पिण आग्या देतां थकां, संका मूल न आणे रे ॥ २३ ॥
 इत्यादिक साधां रा क्रांम करावतां, ते पिण निरवद नें निरदोषों रे ।
 तिणमे पाप जाणें दें आगन्यां, त्यांरा बोल्या गया सर्व फोको रे ॥ २४ ॥
 पेंहला कहितां वरजां निसंक सूं, पाप करतां नें जोयों रे ।
 ते वरजणों तो जिहांइ रह्यो, उलटा आगन्यां देवें छें ताह्यो रे ॥ २५ ॥
 पाप री करणी जाणें छें तेहनें, तिणरी आगन्यां देवण सूर रे ।
 धर्म करणी जाणें न दें आगन्यां, दोनूं परकारें मूढ छें पूरा रे ॥ २६ ॥
 हरीया जव देखें नें मिडकें मिरगला, डरता थका दूर जायो रे ।
 पास मांड्या देख डरे नाहीं, जाय पडें जाल माह्यो रे ॥ २७ ॥
 मिरग सरीषा अग्यांनी जीवडा, धर्म जाणें आगन्यां दे नाहीं रे ।
 पाप करणी जाणें देवें आगन्यां, ते खूता मिथ्यात रे माहीं रे ॥ २८ ॥
 कहितां धर्म करण री छां आगन्यां, पाप करता नें वरजां ताह्यो रे ।
 यां दीयां बोलां में भूठा पड्यां, मिश्र में भूठा किण विघ थायो रे ॥ २९ ॥
 उघाडे मुख गुणें छे नोकार ने, वले सूतर बोल सफायो रे ।
 तिणमें दोय बांना मिश्र कहे, मिश्र में मून कहें छे ताह्यो रे ॥ ३० ॥
 उघाडे मुख गुणें छें तेहनें, कहें मत गुण उघाडें मूढें रे ।
 कहे मून करां म्हें मिश्र में, तो ए मून भागे कांय बूडे रे ॥ ३१ ॥
 सामायक वालों छूटा रो विनो करें, वले वीयावच ने नमसकारो रे ।
 तिणमे मिश्र सरखें नें वरज दें, जब पड गयो मून में बगारो रे ॥ ३२ ॥
 इत्यादिक बोल अनेक मे, मिश्र जाणें छें मूढ अयाणो रे ।
 ते पिण मिश्र करतां नें वरज दे, मून भांग दीधी मूढ जाणो रे ॥ ३३ ॥
 कहे म्हे मिश्र ठिकाणे बोल बोलां नहीं, तेहीज वरजें मिश्र ने जाणो रे ।
 मून छोडे नें लागा बोलवा, त्यारे ते पिण नही छें पिछाणो रे ॥ ३४ ॥
 दोय बांना तो मुख सूं कहें दीया, तो ए मून कहें किण लेखें रे ।
 दोय बांना कह्यां तो मून उड गइ, तिण साह्यो मूढ न देखें रे ॥ ३५ ॥
 दोय बांना मिश्र जाबक नही, ए तो यूं ही चलावे कूडो रे ।
 तेहीज मिश्र करतां नें वरज दें, जब पड गइ मून में धूडो रे ॥ ३६ ॥
 मून मे दोय बांना मिश्र कहें, ते तो उठी जठथी भूठी रें ।
 सावद्य में पुन पाप दोनूं कहे, त्यांरी हीया निलाखी री फूटी रे ॥ ३७ ॥
 मून वाला नें मूल बोलणो नही, कोइ परुषें कयूं ही रे ।
 मिश्र थाप्या तो मून उठे गइ, ए तो मूनं वतावें यूं ही रे ॥ ३८ ॥

मून करो भावे मिश्र कहो, यांरो परमारथ एक जाणो रे ।
 एहवी उवी करे छे परूपणा, मिश्र थापण नें मूढ अयाणो रे ॥ ३६ ॥
 कोइ प्रश्न पूछें साव नें, लोकां ना मारग सुं मिलता तांभो रे ।
 जब जाणें नही तिणने समभत्ता, जब मून करें तिण ठांभो रे ॥ ४० ॥
 जो जाव देवे जथातथा तेह नें, तो उ करे जिण धर्म री हेला रे ।
 प्रवचन तणी थावें हीणता, जब मून साकें तिण बेलां रे ॥ ४१ ॥
 इत्यादिक अनेक कारण पड्यां, जब साधु तो मूल म बोले रे ।
 पिण मिश्र न जाणे तेह ने, अवसर देखें तो बोले मून खोले रे ॥ ४२ ॥
 मिश्र दांन कहें छे तेह नें, घट माहे घोर अंधारो रे ।
 आप डूवे ओरां ने डवोवता, ते गया जमारो हारो रे ॥ ४३ ॥
 दस दांन भगवते भाषीया, त्यामें मिश्र दांन नही कोइ रे ।
 कोइ आठ दांनां में मिश्र कहें, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ४४ ॥
 दस दांन कह्या छें तेह में, केयक आछां ने केयक भूंडा रे ।
 पिण मिश्र दांन जावक नही, मिश्र सरचे अग्यांनी कांय वूडा रे ॥ ४५ ॥
 कहि कहि नें कितरो कहूं, दांन मिश्र तो नांही रे ।
 ज्यां मिश्र दांन पल्पीयो, ते खूता मिथ्यात रे माही रे ॥ ४६ ॥
 मिश्र दांन मिथ्यात ओलखायवा, जोड कीधी पाली सहर मभारो रे ।
 संवत अठारे वरस बावने, सांवण विद तेरस मगलवारो रे ॥ ४७ ॥



ढाल : १४

दुहा

केइ मेघ धाख्यां तणी, सरदहणा खोटी घणी छें अतंत ।
वले खोटी करें छे परूपणा, हीयाफूट ज्यूं मूढ बकंत ॥ १ ॥
श्रावक श्रावक रों विनो वीयावच करें, तिण में कहें छें घर्म ।
वले घर्म कहें साता पूछीयां, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ २ ॥
साध साध रो विनों वीयावच करें, तिणरें कटें छें पाप कर्म ।
ज्यूंश्रावक श्रावकां रों विनों वीयावच करें, तिणतें पिण छें घर्म ॥ ३ ॥
साध साध रों विनों वीयावच करें, तिम श्रावक श्रावक रो जाण ।
यो विनें मूल घर्म जिण भाषीयो, इसडी कहें छें मूढ अयाण ॥ ४ ॥
त्यांरी सरधा री खबर त्यांने नही, यूंही करें बकवाय ।
त्यांरी खोटी सरधा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

साध रो विनों वीयावच साध करें छें, ज्यूं श्रावक ने श्रावक रो करणों ।
केइ मूढ मिथ्याती इसडी परूपें, त्यांरी खोटी सरधा रो सांभलजो निरणों ।
इण उंची सरधा रो निरणों कीजों* ॥ १ ॥
एकण कागादिक मारण रो नेम कीघो, ते समदिष्टी हुवो श्रावक व्रतघारी ।
तिण पाछें एकण बारे व्रत लीघा, सांकडा सांकडा सूंस कीघा भारी ॥ २ ॥
कागादिक मारण रो सूंस पेंहला कीयो छें, ते तो श्रावक छें उण सेती मोटों ।
तिणरो विनों करणों साधां रे रीत छें तिम, न करे तो यारें लेखें यारो मत खोटों ॥ ३ ॥
उणते आवतों देख उभो होणों, आसण छोड विनों करणों सीस नमाय ।
साता पूछणी दोनूं हाथ जोडी नें, आपथी उंचें आसण बेंसावणों ताय ॥ ४ ॥
इत्यादिक विनों साध रो साध करें तिम, श्रावक रो विनो श्रावक नें सारोइ करणों ।
न करे तो यांरो मत याहीज उथाप्यो, आप रा बोल्यां रो नहीं आप रें निरणों ॥ ५ ॥
छोटा साध नें साध री आग्या में रहणों, ज्यूंश्रावक नें श्रावकां री आग्या माहें रहणों ।
छोटा साध नें साध आग्या में चलावें, ज्यूंश्रावक नें श्रावकां री आग्या पालण रो कहिणों ॥ ६ ॥
छोटा साध बडा री आग्या में न चालें, ते तो च्यार तीरथ दीसे छें भंडा ।
ज्यूं यारा श्रावक उणरी आग्या नहीं पालें, तो यांरा श्रावक यारें लेखें सगलाई बुडा ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

छोटा साघां ने बडा सर्व साघां री,
 ज्यूं यांरा श्रावक ने बडा सर्व श्रावकां री,
 यारा छोटा श्रावक बडा सर्व श्रावकां री,
 तो यारे लेखे यांरां सगलाइ श्रावक,
 बडा श्रावक रो करें विनो वीयावच,
 धर्म कहे पिण आगन्या न देवे,
 कोइ मा बाप पेहली बेटो श्रावक हुवों,
 यारे लेखे बेटा री आग्या मांहे रहणों,
 पेहिला श्रावक रा व्रत बेटें लीया छे,
 तिणरो विनों करणों साघां रे रीत छें तिम,
 बेटा ने आवतों देख ऊभो हुणो,
 साता पूछणी दोनूइ हाथ जोडी ने,
 मन गमती वियावच करणी बेटा री,
 वले रेकारो बेटा ने कदे नही देणों,
 इत्यादिक साघ रो साघ विनों करे तिम,
 न करे तो यारो मत यांहीज उथाप्यो,
 छोटा साघ नें बडा साघां री आग्या में रहिणो,
 जो छोटा साघ नें बडा साघ आग्या में चलावे,
 छोटा साघ बडा री आग्या ने न चालें,
 जो उ बाप बेटा री आग्या नहीं पाले,
 छोटा साघ ने बडा सर्व साघां री,
 ज्यू बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे,
 जो मा बाप थकी बेटो बडो श्रावक छे,
 तो यारें लेखे मा ने बाप दोनूइ,
 कोइ बाप पेहली बेटो साघ हुवो छे,
 ज्यूं यारे लेखे विनो करणों बेटा रो,
 पेहला तो बेटा री बहुआं श्रावका हुइ,
 यांरी सरघा रें लेखे सासू ने बहुआं रो,
 बडा साघ रो विनो वियावच करे तिम,
 न करें तो सासू अवनित बहुआं री,
 जो उवा सासू बहुआं ने पगे ल्गावे,
 यारे लेखें तो इण अवनित पणा सूं,

आसातणा टालणी छे तेतीस ।
 आसातणा टालणी निसदीस ॥ ८ ॥
 आसातणा न टाले रुडी रीत ।
 चोडें दीसे उघाडा अवनित ॥ ९ ॥
 यारें लेखें तो ओहीज विने मूल धर्म ।
 थें भूला रे भूला अग्यांनी भर्म ॥ १० ॥
 पछें मा बाप श्रावक हुआ वरत धार ।
 नित नित बेटा ने करणों नमसकार ॥ ११ ॥
 ते मा बाप थी तो छे श्रावक मोटों ।
 न करें तो यारें लेखें यांरों मत खोटो ॥ १२ ॥
 आसण छोड विनो करणों सीस नमाय ।
 आप थी उंचे आसण बेंसावणों ताय ॥ १३ ॥
 सेवा भगत करणी बेटा री दिन रात ।
 बात करतां विचे नही करणी वात ॥ १४ ॥
 बेटा रो विनो मा बाप ने सारोइ करणों ।
 आप रा बोल्यां रों नही आप रे निरणों ॥ १५ ॥
 ज्यू मा बाप ने बेटा री आग्या मे रहिणो ।
 तो बाप ने बेटा री आग्या पालण रों कहिणों ॥ १६ ॥
 ते तो च्यार तीरथ माहे दीसे छे भूंड ।
 तो यारे लेखे मा नें बाप दोनूइ बूडा ॥ १७ ॥
 आसातणा टालणी तेतीस ।
 तिणरी आसातणा टालणी निसदीस ॥ १८ ॥
 तिणरी आसातणा न टालें रुडी रीत ।
 चोडे दीसे उघाडा अवनित ॥ १९ ॥
 तिणरों विनो करे दिष्या में बडो जाण ।
 आप सूं वरतां मांहे बडो पिछाण ॥ २० ॥
 पछे सासू हुइ बारे व्रत धारी ।
 विनो करणों रहिणो आगन्या कारी ॥ २१ ॥
 बहुआ रो विनो सासू ने करणों ।
 विने मूल धर्म गयो किम तरणों ॥ २२ ॥
 जव तो यारें लेखें सासू गाढी वूडी ।
 सासू ने बहुआं सारी जासी नरकनी तूडी ॥ २३ ॥

राजा रा अमराव नें चाकर बांदा,
 राजा सूं पेंहला श्रावक व्रत लीघा,
 वले छतीस पवन माहें श्रावक बडा छें,
 त्यारो विनो करणों साघां री रीत छें तिम,
 चक्रवत् सूं बडो छें दास रो दास,
 ज्युं यारें लेखें राजा नें छतीस पवन रों,
 छोटो श्रावक सामायक पोषां माहें बेठों,
 तिणरों विनों करणो साघां रे रीत छें तिम,
 जब तो कहे ओ तो सामायक माहें वेठों,
 इण बंधीया नें छूटा रें विनों न करणों,
 बडो श्रावक तो छोटो नें नही वादे,
 ए दोनूइ मांहोमां अंठठ हुआ छे,
 जब तो यारें लेखें छोटों नें बडां रो,
 सांकडा पचखांण वाला श्रावक ने,
 छोटो श्रावक रे विरत मेरु जिती छे,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करे तो,
 छोटें श्रावक तो सील रतन आदरीयो,
 जो सामाइ में बडां रों विनों न करें तो,
 बडां श्रावक रें वरत पचखांण छें थोडा,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करणों तो,
 पेंहला तो छोटें श्रावक सामाइ कीधी छे,
 जब तो छोटो बडां रों विनों करें छें,
 वरतां लेखें तो बडां रो विनो न कीघों,
 इण बडां रो विनों कीयो किण लेखे,
 सामायक में सामायक वालो वांदे छे,
 जिण पेंहली सामाइ करी ते बडो छे,
 सामाइ में तो बडा रो विनों न कीघो,
 पछे वरता मे बडा ने सामायक वादे,
 साघा रो विनों साघ करे तिम,
 तो श्रावक श्रावक ने तीखूता सूं वांदे,
 घणो विनों कीया घणो धर्म होसी,
 श्रावक री तीखूता सू वदणा उथापे,

वले ढोली डूंबादि सरगडा तांम ।
 त्यारो राजा नें विनो करणों सीसनांम ॥ २४ ॥
 त्यारो राजा नें पूछ नें काढणो निरणों ।
 ज्युं आप सूं बडा श्रावक रो विनो करणों ॥ २५ ॥
 तिणरो चक्रवत् विनों करें बडो जांण ।
 विनों करणो वरतां माहें बडा पिछांण ॥ २६ ॥
 कोइ बडो श्रावक तिणरें पासैं आयों ।
 यारें लेखे तो कमीय न राखणी कायों ॥ २७ ॥
 बडो श्रावक तो इविरत माहें छूटो ।
 इण ही लेखें पिण यांरो हियो फूटों ॥ २८ ॥
 छोटो श्रावक पिण बडा नें वांदे नांही ।
 हिवें तो यारें विनों न दीसे काई ॥ २९ ॥
 कारण मूल न दीसैं काई ।
 बडा श्रावक नें वांदणा नांही ॥ ३० ॥
 बडा श्रावक रे विरत राइ समान ।
 ओ पिण बडां रों विनो करसी किण ग्यांन ॥ ३१ ॥
 बडां रे सीलादिक नही विरत वशेंछें ।
 ओ पिण बडां रो विनों करें किण लेखें ॥ ३२ ॥
 छोटो रें वरत पचखांण सूंस वशेंछें ।
 इण बडां रो विनो करणो किण लेखें ॥ ३३ ॥
 पछें बडे सामाइ कीधी छें आय ।
 तिण बडां रो विनों करे किण न्याय ॥ ३४ ॥
 सामाइ लेखें पछें कीधी ते छोटों ।
 सामाइ लेखे तो छोटो श्रावक मोटों ॥ ३५ ॥
 तो वरता बडां रो कारण नही काई ।
 तो उ किण लेखे पडे बडां रापगा माहीं ॥ ३६ ॥
 जब तो बडा श्रावक रो बडपण गमायो ।
 हिवे बडां रो बडपण कठा सूं आयो ॥ ३७ ॥
 श्रावक रो विनो करणो श्रावक नें थापे ।
 तो तीखूता री वदणा ने काय उथापे ॥ ३८ ॥
 थोडा विनों कीया छे थोडोइज धर्म ।
 त्यांरी सरघा रो त्यांहीज काडियो भर्म ॥ ३९ ॥

केइ भेषघाख्यां रे इसडी छे सरघा,
सामाइ ने पोसा तो उत्तर गुण विरत,
मूल गुण तो श्रावक रे जाव जीव छे,
मूल गुण विरत जिण पेहली कीया छे,
तिण लेखे सामाइ ने पोसा रे मांहे,
जो सथारो करे तो बडां श्रावक रे,
या तो छोटा रा विनो सामाइ में थाप्यो,
यामे किण री साची किण री खोटी सरघा छे,
श्रावक रो विनो थापे छे साध तणी पर,
त्यां विकलां री सरघा तो पग पग पर अटके,
श्रावक श्रावक रो विनो साध तणी पर,
यूही वकरोल करे छे अन्हाखी,
छोटो श्रावक भारी भारी वसतर पेंहरे,
जो उ वडां ने आछा वसतर नही देवे तो,
यांरां छोटा श्रावक रे भारी भारी गेहणा,
जव छोटो वडां श्रावक ने गेहणों न देवे,
छोटो श्रावक जीमें साल दाल ने मोदक,
यारें लेखे आछो आहार न दे वडा नें,
छोटा श्रावक रे चीखा हाट हवेल्यां,
जो उ हाट हवेल्या वडां नें न आपे,
छोटो श्रावक तो हाथी घोडे रथ वेठां,
त्यां पिण खोयो त्यारो विने मूल धर्म,
छोटो श्रावक चाले छे पालखी वेठो,
यारें लेखे पिण छोटके श्रावक,
छोटो श्रावक रे घर में धन घणो छे,
यारें लेखे यांरा छोटा श्रावक ने कहिणो,
इत्यादिक छोटा श्रावक रे वसत अनेक,
जव यो पिण यारें लेखे अवनीत श्रावक,
विनो विनो कर रहा मूरख,
श्रावक रो विनो करणों कहे साध तणी परें,
यांरो वडो श्रावक पिण छोटा श्रावक ने,
जव घूल पडी त्यांरा विने धर्म में,

सामाइ में छोटा नें तीखूता सूं वांदि ।
मूल गुण वाला वडां रें चालणो छदि ॥ ४० ॥
उत्तर गुण विरत इघकाइ रा तांम ।
जाव जीव छोटा सूं बडो छे तांम ॥ ४१ ॥
बडां श्रावक रो विनो साधां ज्यूं करणो ।
सीस नमाय ने पगां में पडणो ॥ ४२ ॥
यां छोटा रा विना में पाप वतायो ।
ते पिण विकलां ने खवर न कायो ॥ ४३ ॥
ते मत निश्चेंइ जाणजो कूडो ।
त्यांरी खोटी सरघा रो सुणजो फित्तूरो ॥ ४४ ॥
करतां तो किण ही नें निजरां न दीठो ।
तिणनें प्रश्न पूछ्यां पडे पग पग फीटो ॥ ४५ ॥
वडां रे लीलर कपडा ने लीलर पागो ।
जव यारें लेखे छोटा रो पूरो अभागो ॥ ४६ ॥
वडां श्रावक नें गेहणो नही एक मासो ।
तिण तो कीयो विनें मूल धर्म रो न्हासो ॥ ४७ ॥
वडो श्रावक जीमें छे कूकस कूर ।
तो विने मूल धर्म में पड गड घूर ॥ ४८ ॥
वडां रे छोटी टपरी छे तो पिण तूटी ।
जव यांरो विनो धर्म गयो उठी ॥ ४९ ॥
वडो श्रावक मूढा आगे चाले पालो ।
इण लेखे यांरी सरघा ने लागे छे कालो ॥ ५० ॥
वडो श्रावक पालखी लीधी छे कांचे ।
विने मूल धर्म ने खोयो छे आंचे ॥ ५१ ॥
वडो श्रावक दलदरी तिणने न आपे ।
तू विने मूल धर्म ने काय उयापे ॥ ५२ ॥
ते वडो श्रावक मांगे तो देवे नाहीं ।
तिणमें विने मूल धर्म न दीसे काई ॥ ५३ ॥
ते विनो करणो तो सावां रो चाल्यो ।
ओतो घोचो अणहूंतो कुगुंगं रो घाल्यो ॥ ५४ ॥
उलटो सीस नमाय करे नमस्तनगर ।
यांरी सरवा नें दीजे तीन विनार ॥ ५५ ॥

श्रावक रो विनों थापें साध तणी परें, आ तो सरधा उठी जठाथी भूठी ।
 ग्रहस्थ रा विनां मांहें धर्म कहें त्यारी, हीया निलाड री दोनूँइ फूटी ॥ ५६ ॥
 श्रावक तो निश्चें ग्रहस्थ सागे, वले अर्धामियां सूं करे संभोग ।
 तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यारे मोटो छें मिथ्यात रो रोग ॥ ५७ ॥
 श्रावक तो मांहोमां पागडी पाडे, काम पड्यां मांहोमां करे जीव घात ।
 तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यारो गाढो घट मांहें घोर मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 छ काय जीवां रो करे घमसांग, वले छ, काय जीवां रो कर जाय गटको ।
 तिणरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरी सरधा नें जांगजो जेंहर रो बटको ॥ ५९ ॥
 केइक तो मिथ्यातां विचेंई, केइ श्रावकां रे त्यांसूं इधको आरंभो ।
 त्यांरी विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यां विकलां री सरधा रोजोयजो अचंभो ॥ ६० ॥
 श्रावक मांहोमां करे छें विनों वीयावच, वले हाथ जोडी साता पूछें वखे ।
 नमसकार करे नीचो सीस नमाए, ते जिण आगन्यां मांहिलो नही एक ॥ ६१ ॥
 इत्यादिक सगलाइ छें सावद्य कांमा, तिणमें श्री जिण आगन्यां नही छें लिगार ।
 तिण मांहें धर्म कहें छें अग्यांनी, त्यांरा घट मांहे छें पूरो घोर अंधार ॥ ६२ ॥
 श्रावक श्रावक रा करणा गुण ग्राम, छता गुण ढांक त राखणा तिणरा ।
 जणरा दीपावणा ग्यांनादिक गुण ने, जिण आग्या सहीत गुणग्राम करणा तिणरा ॥ ६३ ॥
 सुसरका विनों तो साध रो करणों, श्रावक रा तो करणा गुणग्राम ।
 इमहीज विनों मतग्यांनादिक रो, जोय लेवो सूतर में ठाम ठाम ॥ ६४ ॥
 श्रावक मांहोमां आरंभ कर जीम्या, नमसकार कीयों ते सूतर में चाल्यो ।
 भगवंत भाव दीठा जिम भाप्या, ते जिण धर्म में भेषघाच्या घाल्यो ॥ ६५ ॥
 जोड कीधी सावद्य विनों ओलखावण, पाली सहर मे कीयो विचार ।
 संवत अठारे वरस वावनें, आसोज विद पाचम शुकरवार ॥ ६६ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी भिष्ट भागल हुआ तिके, करें असुघ वेंहरण री थाप ।
चोर ज्यूं असुघ अर्थ हेरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहां एक पाठ छे सूतर में, तिणरो न्याय मेळें नहीं मूढ ।
सावा नें असुघ वेंहरायां घर्म कहें, एहवी कर रहा पापी रूढ ॥ २ ॥
एक पाठ छें भगोती मभे, शतक आठमा मांय ।
अर्थ करण वालो पिण डरपीयां, तिणकेवलीयां नें दीयो छें भलाय ॥ ३ ॥
साधां नें सचित्त असुघ दीयां, कहें निरजरा बोहत अल्प पाप ।
ते उबी सरवा रों निरणों कहूं, ते सुणजो चुपचाप ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्था में]

अफासू आहार ने सचित्त कहीजें, अणेसणीजेणं ते असूमत्तों जाणों ।
ते दीधां कहे अल्प दोष नें बोहत निरजरा, त्यां विकलां री सरधारी करजो पिच्छाणों ।
भेषधर ने भूलां रो निरणो कीजो ॥ १ ॥
काचो पाणी कोरों अन साधु नें वेंहरावें, बले खादिम सादिम सचित्त वेंहरावे ।
ए च्यारुइ आहार सचित्त ने असुघ वेंहरावें, तिणरें अल्प दोष नें बोहत निरजरा बतावें ॥ मे० २ ॥
अफासू नें अणेसणी पाठ छें चोडें, तिण पाठ रों अर्थ सूघो कहणी नावें ।
जयातय तिणरो अर्थ करें तो, घणा लोका माहें सेखी उड जावे ॥ ३ ॥
तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक बतावें, कदे कारण पडियां रो नांम बतावें ।
कदे ओर सूतर सं घुचलाइ घालें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ ४ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर में घाल्यो छें, पिण आंघां रें अंतरंग नही छें पिच्छाणों ।
च्यारु आहार सचित्त नें असुघ वेंहरायां, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयाणो ॥ ५ ॥
फासू एसणीक साधु ने देवे श्रावक, ठाम ठाम बहू सूतरां रें मांही ।
ते सचित्त असुघ सुघ जाणें किम देवें, बले बोहत निरजरा जाणें किम ताहि ।
असुघ वेंहरण री थाप करो मत कोइ ॥ ६ ॥
इण पाठ नें मूढे आणे वारुंबार, त्यांरा सचित्त ने असुघ खावा रा परिणाम ।
जो असुघ वेंहरण रा परिणाम नही छें, तो यूंही क्यांनं बकसी वेकांम ॥ ७ ॥

अहू आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

च्याह्नं आहार सचित्त नें असुध वेंहरावें,
 भगोती पांचमें सतक छठें उद्देशों,
 साधु जाण नें भोगवे आघाकर्मी,
 ते तो नरक निगोद में भीका खासी,
 साधु नें जाण नें आघाकर्मी वेंहरावें,
 ते पिण नरक निगोद में भीका खावें,
 आघाकर्मी वेंहरायां छें एकंत पाप,
 च्याह्नं आहार सचित्त नें असुध वेंहरायां,
 साघां ने असुध आहार तो अभष कह्यो जिण,
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते,
 साघां ने आहार असुध देवण रों,
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणें छें,
 वले साघां नें अंतराय आहार री पाडी,
 अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी,
 श्रावक साघां नें असुध जाण नें वेंहरावें,
 ते दोय वांना नें मिश्र दांन कहो थें,
 थें कहो छों मिश्र दांन तणा म्हे,
 इण मिश्र दांन रा सूंस करायां,
 मूला गाजर जमीकंद दांन देवे छें,
 तिण दांन रा सूंस करावो नाही,
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणों छों,
 बोहत पाप नें निरजरा अल्प जाणों थें,
 साघां नें असुध वेंहरावें तिणरो,
 जब ओ कहें तिणरो बारमो व्रत भागों,
 जो असुध वेंहरायां बारमों व्रत भागें छें,
 व्रत भांग्यां तो निश्चेंड भूडों होसी,
 साघां नें असुध वेहरावें जाण नें,
 केइ अल्प दोष ने बोहत निरजरा कहें छें,
 मिश्र तणा बोल अनेक चाल्या छे,
 भारीकर्मा जीवां रे उसभ उदें सूं,
 मिश्र पष नें मिश्र भाषा कही जिण,
 वले मिश्र पाणी नें मिश्र शब्द कह्या छें,

तिणरे तो अल्प आजखों बंधाय ।
 वले तीजें ठाणें ठाणांग मांय ॥ ८ ॥
 ते तो बाघें छें उसभ कर्म रा जाल ।
 उतकष्टों रलें तो अनंतो काल ॥ ९ ॥
 ते तो चारित्त धर्म रो लूटणहार ।
 उतकष्टों रलें तो अनंतो काल ॥ १० ॥
 सचित्त नें असुध वेंहरायां ओ पिण पाप ।
 तिणनें मूढ करे बोहत निरजरा री थाप ॥ ११ ॥
 ते अभष आहार देवें दातार ।
 ते तो भूला रे भूला थें मूढ गिवार ॥ १२ ॥
 ओ त्याग करावें छें किण न्याय ।
 तिणरें निरजरा री कांय देवें अंतराय ॥ १३ ॥
 दातार नें अंतराय आहार दीधी वशेखें ।
 तिणनें सूंस करायां छें किण लेखें ॥ १४ ॥
 तिणनें धर्म नें पाप दोनूड जाणों ।
 तिण दांन रा क्यूं करावो पचखाणों ॥ १५ ॥
 किणनेंइ सूंस करावां नाही ।
 थारी सरघा री वरण बूहा नही काई ॥ १६ ॥
 तिणमें धर्म थोडों नें घणों कहो पाप ।
 मिश्र दांन जाणी रहो चुपचाप ॥ १७ ॥
 तिण दांन तणा पचखाण करावो ।
 तिण दांन रा सूंस न करावो छों किण न्यावो ॥ १८ ॥
 बारमों व्रत भागों कें नांय ।
 तो बोहत निरजरा नही छे तिण मांय ॥ १९ ॥
 तो बोहत निरजरा तिण मे कदे म जाणों ।
 तिणरी बुधवंत हीयां में करसी पिछाणों ॥ २० ॥
 तिणनें एकंत पाप कह्यां नही कूड ।
 त्यांरी सरघा तो जाणजो फेंन फित्तुर ॥ २१ ॥
 मिश्र दांन तो कठेय न चाल्यो ।
 मिश्र दांन रो घोचों पाषंड्यां घाल्यो ॥ २२ ॥
 मिश्र गुण ठाणों नें मिश्र परिग्रह दाख्यो ।
 वले मिश्र जोग भगवते भाख्यो ॥ २३ ॥

इत्यादिक दोग मिलीयां सूं मिश्र हुवें छें, त्यांरा नांम सूतर में जूवो जूवो चाल्यो ।
 पिण मिश्र दांन सूतर में न चाल्यो, ओ तो भेष धाख्यां भूठो भगडो म्हाल्यो ॥ २४ ॥
 सुपातर ने कुपातर दांन तो चाल्यो, पिण मिश्र दांन तो सूतर में नांही ।
 पिण हीया फूट गधा रा साथी, ते खूता छे मिश्र दांन री सरघा रे मांहीं ॥ २५ ॥
 श्रावक ने नेहत जीमावे तिण ने, केइ भेषघारी मिश्र दांन बतावे ।
 भोला ने मिष्ट करण नें अग्यांनी, कुण कुण कूडा कुहेत लगावें ॥ २६ ॥
 नीव रा रुख में आंवो रुंख उगो, तिण नीव रा रुंख में पांणी पावें ।
 जव दोनूई ह्वा मे पाणी पोहचे' छे, नीव नें आंवो दोनूई फल फूल थावें ॥ २७ ॥
 ज्यू श्रावक ने असणादिक आहार जीमावे, जव विरत नें इविरत दोनूं सीचांणी ।
 तिणरे दोग वाना मिश्र दांन नीपनों, एहवा कूहेत लगावें छें मूढ अयांणी ॥ २८ ॥
 जो जीमावण वाला ने दोग वाना मिश्र छे, तो जीमण वाला ने इण लेखें मिश्र होय ।
 इण पिण इण री विरत नें इविरत सीची छें, यारे लेखें इण नें एकंत पाप न कोय ॥ २९ ॥
 श्रावक तो अनेक नीलोती खायें छें, वले पीयें छें काचों अणगल पांणी ।
 इत्यादिक भोगवे छे दरख अनेक, यारें लेखे तो विरत इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३० ॥
 श्रावक ने दरख अनेक खवावे तिणने, विरत ने इविरत दोनूइ सीची वतावे ।
 श्रावक घर रा दरख खावें छे तिण ने, विरत इविरत सीची कहतां लाज कयूं आवे ॥ ३१ ॥
 घर रा दरख खाद्या कहे इविरत सीचांणी, पार को खाधां दोनूं कठाथी सीचांणी ।
 विरत इविरत पोखी कहे श्रावक जीमायां, ते पूरा छे मूरख मूढ अयांणी ॥ ३२ ॥
 जो श्रावक असणादिक आहार खाधां थी, जो विरत इविरत दोनूं पोखांणी ।
 इण लेखे श्रावक रे कुसील सेव्या थी, विरत ने इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३३ ॥
 श्रावक असणादिक सू साता पावे छें, तो कुसील सूं साता पांमें वशेखो ।
 असणादिक सू विरतने इविरत सीचांणी, तो अस्त्री सेव्यां पिण ओहिज लेखो ॥ ३४ ॥
 यारें लेखें तो असणादिक रो त्याग कीघो, वले कुसीलादिक रों कीयो पचखांणों ।
 जव पिण श्रावक रे विरत इविरत पोषांणी, यारी सरघा रे लेखे तो ओहीज जांणो ॥ ३५ ॥
 जो अणार सेव्या विरत इविरत सीचांणी, तो त्याग कीयां पिण दोनूं सीचांणी ।
 ओ तो उबी मत्या री सरघा रो लेखों, त्यां विरत इविरत हीया मे नही पिछांणी ॥ ३६ ॥
 उपभोग परिभोग श्रावक भोगवें छें, तिण सूं तो एकंत इविरत सीचांणी ।
 तिणरो त्याग कीया थी विरत ववे छे, विरत सीची कहे ते पाषंडी री वांणी ॥ ३७ ॥
 श्रावक रे वारें विरत ने वारे इविरत छे, त्यांरा फलकोड बुचवंत लेसी पिछांणो ।
 इविरत सेव्या सेवाया छे एकत पाप, विरत सेवायां एकंत घर्मज जांणो ॥ ३८ ॥
 विरत इविरत सीचे कहें छेश्रावक ने जीमायां, आ तो सरघा उठी जठाथी भूठी ।
 श्रावक नें जीमाया मिश्र दांन कहे छे, त्यांरी हीया नीलाडी री दोनूइ फूटी ॥ ३९ ॥

श्रावक रा काम भोग तो इविरत में छें, ते किपाक फल री छें ओपमा त्यानें, किपाक फल तो भोगवतां मीठा, नाडो नाड परगमीया पाछें, ज्यू काम भोग भोगवतां मीठा, तिण सूं कर्म लागें ते उदें आवें जब, किपाकफल तो एक भव दुखदाइ, ते काम नें भोग श्रावक नें सेवायां, किपाकफल खवावें तिणनें, जे चतुर विचषण डाहा हुवें ते, ज्यू काम नें भोग भोगवावें छें तिणनें, जो चतुर विचषण डाहा हुवें ते, श्रावक तो जीवादिक पदार्थ जाणें, ते तो श्रावक मांहोमां जीमें जीमावें, श्रावक रा काम भोग शब्दादिक छें त्यानें, तीनां करणां नें पाप जाणें छें एकंत, रूख बाढण नें साध कूहाडो दीघों, रूख बाढें तिणनें साज दीयो छें, घान पीसण नें साभ घरटी दीघों, घान पीसें तिणनें साभ दीयो छें, तिणनें, गांम बालण नें साभ अगन रों दीघों, गांम बालें तिणनें साभ देवें तिणनें, इत्यादिक अनेक सावद्य रों साभ देवें छें, सावद्य करें तिण नें साभ दीयो छें तिणनें, ज्यू श्रावक नें साभ असणादिक रो दीघों, खायें पीयें तिणनें साभ दीयो छें तिणनें, पाप करण रों साभ देसी तिणनें, पाप रो साभ दीयां नही धर्म नें मिश्र, विरत इविरत पोषी कहो श्रावक जीमायां, इविरत पोष्यां एकंत पाप उघाडो, तो मिथ्याती नें पोष्यां मिश्र किण लेखें, इविरत पोष्यां रों थें पाप बतायों,

ते तो भोगव्यां उसभ कर्म लागें छें आणों ।
 तीनुइ करण सारीषा जाणों ॥ ४० ॥
 तिणरो सवाद लागें जाणें अमीय समाणों ।
 जूदा हुवें जीव काया प्राणों ॥ ४१ ॥
 ते भोगवतां लागें अमीय समाणो ।
 भव भव में दुख उपजें आणो ॥ ४२ ॥
 काम नें भोग भव भव में दुखदायो ।
 धर्म नें मिश्र किहांथी थायो ॥ ४३ ॥
 ववेक विकल जाणें मित्री छें म्हारों ।
 वेंरी जाणें घात रों करणहारों ॥ ४४ ॥
 ववेक रा विकल जाणें ओ मित्री छें रूडों ।
 पाप कर्म रो दाता वेंरी जाणें पूरों ॥ ४५ ॥
 बले सावद्य निरवद भिन भिन पिछाणो ।
 तिणमें धर्म तणों अंस कदेय न जाणें ॥ ४६ ॥
 किपाकफल री ओपमा जाणी ।
 तिण श्री जिण आग्या नें रूडी पिछाणो ॥ ४७ ॥
 तिण कुहाडा सूं रूख बाढें छें आणों ।
 त्यां दोयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४८ ॥
 तिण घरटी सूं घान पीसें छे आणों ।
 यां दोयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४९ ॥
 तिण अगन सूं गांम बाले छें आणो ।
 यां दोयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५० ॥
 तिण सूं सावद्य काम करें छें जाणो ।
 यां दोयां नें एकंत पाप पिछाणो ॥ ५१ ॥
 ते असणादिक भोगवें अन पाणों ।
 यां दोयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५२ ॥
 एकंत पाप लागें छे आणो ।
 समभो रे समभो थें मूढ अयाणो ॥ ५३ ॥
 तो मिथ्याती पोष्यां इविरत पोषी जाणो ।
 तिणरी पिण मूरख करें छें ताणों ॥ ५४ ॥
 इणरी तो एकंत इविरत पोषाणी ।
 हिवे मिश्र कठा थी आयो अयाणी ॥ ५५ ॥

श्रावक भोगवें छें दरब अनेक, ते तो एकंत इविरत मांहें जाणो ।
 जीमावण वालें पिण इविरत में जीमावें, तिणमें .घर्म नही छें रे मूढ अयांणों ॥ ५६ ॥
 श्रावक जीमायां नें मूढ मिथ्याती, विरत नें इविरत दोनूं पोषांणी जाणें ।
 जिण मारग रा अजांण अग्यानी, पीपल बांधी मूरख जिम ताणें ॥ ५७ ॥
 श्रावक रा शब्दादिक भोग ओलखावण, जोड कीघी पाली सहर मभार ।
 सवत अठारे नें वरस बावनें, आसोज विद अमावस सोमवार ॥ ५८ ॥



ढुहा

भेषवारी भूला जिण धर्म थी, ते कहे छें मिश्र दांन ।
सूतर विण करे छें पल्पणा, त्यांरां घर मांहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥
सूतर ठाणांग तेह में, दस दांन कह्या भगवांन ।
गुण निपन त्यांरां नांम छे, पिण मिश्रन कह्या जिणदांन ॥ २ ॥
देवा नो नांम दांन छें, लेवा रो नांम लाभ ।
मिश्र दांन ने मिश्र लाभ नां, कठे नही सूतर में जाव ॥ ३ ॥
मिश्र दांन उठाय वेठों कीयो, त्यांरी सरघा नहीं छें सुघ ।
ते तो माठी मत रा मांनवी, त्यांरी भिष्ट हुइ छें वुघ ॥ ४ ॥
सावच्च निरवद दोनूं दांन चालीया, सुतर में ठाम ठाम ।
मिश्र दांन पाषंडीयां पल्पीयो, भूळा ले ले सूतर रो नांम ॥ ५ ॥
निज मत उयपतों जाण ने, थाप्यों छें मिश्र दांन ।
त्यांरी खोटी सरघा परगट कळं, ते सुणो सुख दे कांन ॥ ६ ॥

ढाल

[२ भविष्य संवो २]

दुरवल दुखीया री अणुकंपा आणे, तिणनें दे ते अणुकंपा दांन ।
तिग दांन नें मिश्र दांन कहें त्यांरो, भिष्ट हुवो विगनांन रे ।
भविष्य मिश्र दांन कोइ मत मांनो, ओ गूढ मिथ्यात छे छांनो रे । कुमत्यां* ।
आ सरघा छें जहर समांनो ॥ १ ॥
तिणनें सचित अचित दोनूइ देवें, छ ही काय हणी दें कोय ।
यो दांन संसार नो दीसे उघाडो, तिण में मुगत रो भेल न होय रे ।
मिश्र दांन कठा न थी काढ्यों, इण मिथ्यात थी जगत ने दाढ्यों रे । कु० ।
आत्मा नें कलंक कांय चाढ्यो रे ॥ २ ॥
वंदीवांनादिक नें दांन दे तिणनें, संग्रह दांन कह्यो जिण आप ।
तिण दांन नें मिश्र दांन कहे, तिण वीर ना दीया वचन उथाप रे ॥ ३ ॥
ओ पिण दांन संसार नां तिण में, भोष मारग रो भेल नही ।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें ते, विचार देखों मन मांही रे ॥ ४ ॥
भय रो घालीयो दांन दे तिणनें, भय दांन कह्यो भगवांन ।
ए एकंत दांन संसार तणो छें, तिणनें मूढ कहे मिश्रदांन रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ग्रह करडा जाण भय रो घाल्यो, देवें थावरीयादिक रें हाथ ।
 तिणमें जिण धर्म रो भेल बतावें, तिणरे बुक्कीयो मिथ्यात रे ॥ ६ ॥
 खरच करें मूआं रें केडें, ते तो चोथो कालुणी दांन ।
 ए तो एकंत दांन संसार नों तिण सूं, वधे लोकां में मान रे ॥ ७ ॥
 ए दांन संसार तणों किरतब छें, तिणमें मोष रो मारग नांही ।
 तिणमें तो मोष रा मारग रो भेल बतावें, ते तो भूल गया भर्म मांहीं रे ॥ ८ ॥
 सांकडें पडीयो दे लज्या रो घाल्यो, तिणनें जिण कहुओ लज्या दांन ।
 तिण दांन नें मिश्र दांन कहें त्यांरें, घट मांहे घोर अग्यांन रे ॥ ९ ॥
 सासरा में जमाइ लज्या तणें वस, देवें जाचकादिक रे तांई ।
 ओ पिण एकत दांन संसार तणों छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल नांही रे ॥ १० ॥
 देवें रावलीया भांड भवइयादिक नें, भोपादिक नें देवें धर मान ।
 मुकलावों पेंहरावणी देवें मूसालों, गरब सूं देवें ते गरब दांन रे ॥ ११ ॥
 ओ एकंत दांन संसार नो, तिणमें संवर निरजर नाहीं अंसमात ।
 इणमें मोष रा मारग रो भेल बतावें, तिण पडिवजीयो मिथ्यात रे ॥ १२ ॥
 गणिकादिक नें दांन देवें छें, कुसीलादिक सेवण कांम ।
 ओ तो दांन उघाडो सावद्य, अघर्म दांन छें तिणरो नांम रे ॥ १३ ॥
 आठयो धर्म दांन छें मोष रो मारग, तिण सूं उतर जायें भव पार ।
 सासता सुख पांमे सिव रमणी रा, तिणरो सांभलजो विसतार रे ॥ १४ ॥
 आपे ग्यांन दरसण चारित नें तप, तिण सूं पांमें पद निरवांण ।
 ए च्याळंड दान धर्म दांन में घाल्या, केवल ग्यांनीयां ग्यांन सूं जाण रे ॥ १५ ॥
 छ ही काय हणवां रा त्याग करें छे, ते अभेदान कहुओ जिण राय ।
 तिण सूं आवता पाप कर्म रुक जावें, तिणने घाल्यो धर्म दांन रे मांय रे ॥ १६ ॥
 निरदोषण दरब साधां ने देवें, तिणने कहुओं सुपातर दांन ।
 तिण दांन नें पिण धर्म दांन में घाल्यो, भगवंत श्री विरघमान रे ॥ १७ ॥
 छ काय हणवा रो त्याग करें छें, सुपातर दांन देवे छे तांम ।
 आपे छें ग्यांन दरसण ने चारित, धर्म दांन छें तिणरो नांम ॥ १८ ॥
 हांती नेहतादिक देवें सेण सगां ने, नेंहत घालें वनोला दें तांम ।
 तिण पाछो लेवा री आसा सूं दीघो, कायती दांन तिणरो नांम रे ॥ १९ ॥
 हांती नेंहतादिक देवे सेण सगां ने, नेहत घाळे वनोला दे तांम ।
 पेंहलां दीघो त्यानें पाछों देवें छे, कतंती दांन तिणरो नांम रे ॥ २० ॥
 आंमी साह्मी हांती देवे जीमे जीमावे, नेंहत पिण घालें आंमी साह्मी ।
 ए तो एकंत दांन संसार ना दोनुं, लेवा ने देवा रा छे कांमी ॥ २१ ॥

नवमों दसमों दांन देवो नें लेवो,
 तिणमें जिण धर्म रों भेल बतावें,
 ए दस विष दांन कह्या भगवते,
 केइ आठ दांनानें नें मिश्र कहें छें,
 त्यारें बडा बडेरा आगें हुआ त्यां,
 मिश्र दांन परूपें बडां नें विगोया,
 मिश्र दांन रों थापण वालो,
 भूठी २ साख सूतर री दीघी छें,
 सूयगडाअंग इग्यारमें अघेनें,
 जो तिण ठामें मिश्र दांन न काढें,
 सूयगडाअंग दूजें पांचमें अघेनें,
 बतीसमी गाथा री साख दीघी छें,
 जो तिण ठामें मिश्र दांन काढें,
 केइ चतुर विचषण डाहा होसी ते,
 आठ दांनानें मिश्र दांन बतावें,
 जो साची साख सूतर री दीघी हुवें तो,
 वले तीजा ठाणा री साख देइ नें,
 जो तिण ठामें मिश्र दांन न काढें,
 वले घणा सूतरां नाम बतावें,
 जो किण ही सूतर में मिश्र दांन न काढें,
 मिश्र दांन परूपण वालें,
 वले सिष सिषणी छें निज पोता रा,
 मिश्र दांन नें मिश्र धर्म,
 भारीकर्मा जीवां रें उसभ उदे सूं,
 मिश्र दांन कहो भावे मिश्र धर्म कहीं,
 मिश्र दांन होसी तो मिश्र धर्म छें,
 किणही मिश्र दांन तो कह दीयो चोडे,
 हिवें मिश्र दांन तो कहितां न लाजे,
 सावद्य दांन नें निरवद्य दांन,
 पिण मिश्र दांन सूतर में नाहीं,
 आठ दांनानें पिण सावद्य कहें छें,
 सावद्य कह्यो तिण अवर्म कह्यो छें,

ख्याल छें धुर वोहरा वालें।
 तिण सरखा री कीजो टालो रे ॥ २२ ॥
 मिश्र दांन कह्यो नहीं एक।
 ते बूडें छें विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 मिश्र दांन कह्यो दीसें नांही।
 पडीया पाण्ड पंथ रें मांहीं रे ॥ २४ ॥
 भूठ बोलतों संक्यों नांही।
 पिण नहीं छें सूतर रे मांहीं रे ॥ २५ ॥
 तिणरी साख दीघी ते कूडा।
 तो मूंडे पडसी घूड रे ॥ २६ ॥
 मिश्र दांन कहें छें तांम।
 साचा हुवे तो काढें तिण ठाम रे ॥ २७ ॥
 तो सरखा फेन फितुरों।
 थारो जाण लेसी मत कूडो रे ॥ २८ ॥
 ठाणाअंग दसमें कहें तांम।
 काढ दिखानो तिण ठाम रे ॥ २९ ॥
 कहें छें मिश्र दांन।
 तो यूंही वके जिम स्वान रे ॥ ३० ॥
 मिश्र दांन कहें छें साष्यात।
 तो सरखा छे भूठ मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥
 घणा जीवां नें विगोया।
 त्यांनें तो जाबक वोया रे ॥ ३२ ॥
 ए तो सूतर माहे न चाल्या रे।
 ए तो घोचा अणहुंता घाल्या रे ॥ ३३ ॥
 ए तो परमारथ एक।
 समझों आण ववेक रे ॥ ३४ ॥
 तिण कह दीयो मिश्र धर्म।
 मिश्र धर्म कहितां आवें सर्म रे ॥ ३५ ॥
 दोनूं दांन तो सूतर माह्यो।
 ओ तो गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ ३६ ॥
 वले सावद्य में सरधें छे दीय।
 ते पिण विकलां नें खवर न कोय रे ॥ ३७ ॥

मिश्र दांन कहे तिणरी सरघा रें लेखें, सावद्य दांन न कहणो ।
 मिश्र सावद्य के मिश्र निरवद कहिणो, पुछ्यां रो जाब सुधो देणो ॥ ३८ ॥
 सावद्य नें तो मिश्र कहितां लाजे, निरवदनेइ मिश्र कहितां लाजे ।
 दांन मिश्र कहितां नही लाजे, ते तो पिंडत भोलां में बाजे रे ॥ ३९ ॥
 सावद्य खोटें ने निरवद आछों, आ तो सरघा छे सूधी ।
 सावद्य मे धर्म ने पाप सरघे, अकल तिणां री उधी रे ॥ ४० ॥
 सावद्य किरतव ने अधर्म जांणो, अधर्म ने सावद्य जांणो ।
 सावद्य मे कोइ मिश्र जांणे छे, ते बूडे छें कर कर तांणो रे ॥ ४१ ॥
 सावद्य कह्यो तिण कह दीयो अधर्म, निरवद कह्यो तिण कह दीयो धर्म ।
 पिण पोत रा बोल्या री समझ न पोतें, ते तो भूला अग्यानी भर्म रे ॥ ४२ ॥
 असणादिक दातार देवे छे, तिणने दांन कह्यो जिणराय ।
 तिणमें पातर में पुन कुपातरे पाप, ते तो जोय लें सूतर माय रे ॥ ४३ ॥
 अन्न पाण पुने लेण ने सेण पुने, कथ पुने कह्यो जगनाथ ।
 यानें मिश्र कहसी कोइ मूढ मिथ्याती, तिणरी प्रतष भूठी बात रे ॥ ४४ ॥
 अन्न मिश्र पाण मिश्र न चाल्यो, लेंण ने सेण मिश्र नांही ।
 कथ मिश्र भगवते न भाख्यो, जोवो सूतर रे मांही रे ॥ ४५ ॥
 ए पाचूं बोला मिश्र दांन हुवे तो, आश्रव संवर मिश्र होय जाय ।
 कले निरजरा पिण मिश्र होय जावे, जोवो सूतर रे माय रे ॥ ४६ ॥
 आठ दांन देवण री भावना भावे, तिणरा किखा अधवसाय परिणाम ।
 तिणरी लेस्या किसी ने ध्यांन किसो छे, च्यारां मांयलो कह छो ताम रे ॥ ४७ ॥
 ध्यांन लेस्या अधवसाय परिणाम, ए तो मिश्र चाल्या नही कोय ।
 ए च्याहं भला के च्याहं भूडा छे, मिश्र हुवे तो ब्रतावो मोय रे ॥ ४८ ॥
 ए आठूइ दांन संसार ना दांन, त्यामे संवर निरजरा नांही ।
 यामे मोष रा मारग रो भेल ब्रतावे, ते तो खूता संसार ने मांही रे ॥ ४९ ॥
 पातर कुपातर हर कोइ ने देवे, तिणने कहीजे दातार ।
 तिणमें पातर दांन मुगत रो पावडीयो, कुपातर सूं रूले संसार रे ॥ ५० ॥
 विम्यां सूरा कह्या अरिहंता, तवे सूरा कह्या अणगार ।
 दांने सूरा कह्या वेसमण देवता ने, जूझे सूरा वासुदेवा धार रे ॥ ५१ ॥
 यामे दोय सूरा तो संसार ना सूरा, ते तो जस कीरत रा कांमी ।
 वाकी दोय सूरा निज आतम जीते, कर्म काटें हुवें सिव गामी रे ॥ ५२ ॥
 संसार नो दांन ने मुगत रो दांन, पिण मिश्र दांन न कोय ।
 मोष रा दांन सूं हुवें संवर निरजरा, संसार ना दांन सूं आश्रव होय रे ॥ ५३ ॥

आठ दाँन री साध परसंसा करें तो, छ, काय रों वध वंछणहारो ।
 देण वाला रे फल लागें ते, बुधवंत लेजों विचारो रे ॥ ५४ ॥
 ए बावीस टोलां नें साध कहें छें, ते पिण मिश्र दाँन न मानें ।
 मिश्र दाँन कहें तिणनें झूठो जाणें छे, सुध सरधा सूं कर दीयो कांनें रे ॥ ५५ ॥
 अधर्मी जीवां नें दाँन देवें छें, ते एकंत अधर्म दाँन ।
 धर्मी नें दाँन निरदौषण देवे, ते धर्म दाँन कह्यो भगवानं रे ॥ ५६ ॥
 सुपातर नें दीयां ससार घटें छें, कुपातर नें दीयां वधे संसार ।
 ए वीर वचन साचा कर जाणों, तिणमें संका नही छे लिगार रे ॥ ५७ ॥
 संसार ना दाँन नें साध परससैं, तिणनें कह्यो छ काय रों घाती ।
 तिणमे मुगत रा मारग रो भेल बतावें, ते तो पूरा छे मूढ मिथ्याती रे ॥ ५८ ॥
 जोड कीधी मिश्र दाँन निषेदण, सोभत सहर मभारो ।
 संवत अठारे ने वरस तेपने, सावण सुदि छठ नें सोमवारो रे ॥ ५९ ॥



ढाल : १७

दुहा

भेषधारी मूला फिरे जेन रा, बाजे लोकां मे अणमार ।
 ते धर्म कहे हिंसा कीयां, ज्यांरी जीभ बहे ज्युं तरवार ॥ १ ॥
 ते खोटी करे छे परुषणा, जावक सूतर विरुध ।
 त्या जिण मारण नही ओलख्यो, त्यांरी भिष्ट हुइ छे बुध ॥ २ ॥
 जीव दया त्यांरा घट में नही, हिंसा रो उपदेस दे तांम ।
 त्यांरो उपदेस सुणे छे तेहनां, रहे जीव मारण रा परिणाम ॥ ३ ॥
 सावच्च दान संसारी जीवां तणों, तिणमें छ ही काय री घात ।
 तिणमे धर्म ने पुन परुषता, पापी सके नहीं तिलमात ॥ ४ ॥
 बेरी उळां छें पापी छ काय ना, धर्म कहि कहि हणावे छ काय ।
 किण विघ करे छे परुषणा, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण अगन्या मे]

छ काय रा पीहर बाजे लोकां मे, पिण सानी करे छ ही काय ने मरावे ।
 छ काय हणे कोइ दान देवे छे, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ।
 आ सरचा केइ भेष धारयां री ॥ १ ॥
 मुरड माटी खडी आदि अनेक पृथवी छें, त्यांरी जुदी जुदी दान साला मंडावे ।
 दगचाल पाड्यां त्यांरो दान देवें छे, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ २ ॥
 कूआ बाव खणावे तलाव खोदावे, अथवा पाणी री पिण पो मंडावें ।
 दगचाल पाड्यां दान देवे पाणी रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ३ ॥
 अगन रा खीरां भोभर ने भरसाइ, इत्यादिक अगन री दानसाला मंडावे ।
 दगचाल पाड्यां दान देवे अगन रो, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ४ ॥
 वाया गया ने वायरो घालण, बीजणां री दानसाला मंडावे ।
 दगचाल पाड्या सहू ने वायरों घालें, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ५ ॥
 प्रतेक ने साप्रारण वनसपती री, त्यांरी जुदी जुदी दानसाला मंडावे ।
 दगचाल पाड्यां दान देवे वनसपती नो, तिण में एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ६ ॥
 लवा तीतरादिक तस जीव अनेक, त्यांरी जुदी जुदी दानसाला मंडावे ।
 तस जीव रो दान देवें दगचाल, तिण मे एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ७ ॥

अथवा छ कय जीवां. नें जीवां हणे नें,
 दगचाल पाड्यां दांन देवें जीव हणी ने,
 कोइ छ काय जीवां रो गटकों करावें,
 ओ जीव हिंसा नों राहज खोटें,
 कोइ श्रावक री अणुकंपा आंणी नें,
 अथवा नीलोती रांघ खवावें,
 बेगण बालोदिक अनेक नीलोती,
 तिण मे इ धर्म कहे भेषधारी,
 गाजर मूला ने सकरकंद कांदा,
 अथवा जमीकंद नें रांघ रांघ खवावें,
 केइ बेगण बालोदिक भडथा करे ने,
 तिण मे भेषधारी धर्म बतावे,
 कोइ धर्म जाणे श्रावक रे काजें,
 तिण माहे दुष्टी धर्म बतावे,
 श्रावक ने नीलोती विवध प्रकारें,
 तिण माहे धर्म कहें भेषधारी,
 कोइ कोडां मण जमीकंद रांघी ने,
 तिण दातार री लेस्या नें भली कहें छें,
 श्रावक नें उन्हों पांणी कर पावे,
 तिण में धर्म कहें भेषधारी अनारज,
 श्रावक री अणुकंपा आंणी नें,
 हरकोइ काम करवा रें काजें,
 श्रावक ने कल्पें ते वस्त दीयां में,
 श्रावक तो हरकोइ वसत लेवें छें,
 श्रावक तो वसत इविरत मे लेवें छे,
 इण बात रो निरणों कीयां विण विकलां,
 अंबडना सिष्य सातसों हुंता,
 तिण माहे धर्म कहें भेषधारी,
 आगन्या रे देवाल तो निसंक पणा सूं,
 सर्व नदी री आगन्या दीधी छें तिण रा,
 असंख्याता जीव तो पांणी तणा छें,
 त्यारो गटकों, करण री आगन्या दीधी,

त्यारी जुदी जुदी दांनसाला मडवें ।
 तिण में एकत धर्म नें पुन बतावें ॥ ८ ॥
 अथवा छ काय मारे ने खवावें ।
 तिण में एकत धर्म नें पुन बतावें ॥ ९ ॥
 कोरी नीलोती सचित खवावें ।
 तिण में मूरख धर्म बतावें ॥ १० ॥
 राघ रांघ जीमावें श्रावक जांणी ।
 त्यांरी भाषा छें जाणें बहती घाणी ॥ ११ ॥
 इत्यादिक जमीकंद श्रावक ने खवावे ।
 तिण माहें धर्म अनारज बतावें ॥ १२ ॥
 श्रावक ने जीमावण त्यांरी कीधा ।
 त्या नरक सूं डेरा सनमुख दीधा ॥ १३ ॥
 कोरी कवली नीलोती छमक वधारी ।
 त्यारें नरक जावा री हुइ तयारी ॥ १४ ॥
 कोरी काची खवावे वधार धूगारी ।
 त्यांरी भव भव में होसी घणी खवारी ॥ १५ ॥
 श्रावक श्रावक ने देवें अणुकंपा आणी ।
 केइ भेषधारी बोलें एहवी वांणी ॥ १६ ॥
 वले पावें काचो अणगल पांणी ।
 त्यांरी जीभ बहें जाणें बहती घाणी ॥ १७ ॥
 खपें सो देवें अणगलीयो पाणी ।
 तिण में धर्म कहें छें मूढ अयांणी ॥ १८ ॥
 धर्म कहें भेषधारी दिढाय दिढाय ।
 आ पिण विकलां नें समझ न कांय ॥ १९ ॥
 देवाल पिण इविरत में दीधी ।
 खोटी खोटी परूपणा पापीयां कीधी ॥ २० ॥
 त्यानें काचा पाणी री आगन्यां दीधी ।
 आ पिण खोटी परूपणा कीधी ॥ २१ ॥
 सर्व नदी री आगन्या दीधी छें तांम ।
 भेषधारी कहें चोखा परिणाम ॥ २२ ॥
 वले नीलण फूलण रा जीव अनंत ।
 तिण नें भेषधारी धर्म भाखंत ॥ २३ ॥

काचा पाणी री आगन्या दीधी छे तिणनें,
 भेषवारी भागल सरघा रा भिष्टी,
 जिण भाषीया तो सूतर बांचे,
 नंदी रा पांणी री आगन्या दीधी,
 कोडं मण काचो अणगल पांणी,
 तिण मांहे पुन कहे भेषवारी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 तिण सू आप डूबे अनेरां नें डबोवे,
 जीव खवायां मे पुन परूपे,
 पर जीव री पीडा न ओलखी त्यांरी,
 जीव खवाया में पुन परूपे,
 त्यांरी जीम बहे तरवार सू तीखी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 ते दया रहीत छे दुष्ट अनारज,
 जीव खवायां पुन कहे जेनी होय ने,
 समकित श्रावक नें साध पणों हुवे,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 इण सरघा सू नरक में भीका खासी,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 वले दुसमन रो जोग मिलसी तिणां ने,
 जीव खवाया पुन कहे भेषवारी,
 पापीया जेन रो भेष लजायों,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 छाने छाने तो सरघा सीखावें,
 जीव खवायां में पुन परूपे,
 परगट कहितां भूंडा दीसे,
 जीव खवायां पुन कहे त्यांरी सरघा,
 ते जेन तणा विगडायल पापी,
 कदे तों पुन कहे जीव खवायां,
 यां दोयां रो निरणो न कीयो विकलां,
 चोर चोरी री वसत छानें छानें बेचे,
 ज्यू जीव खवायां पुन कहे त्यांसू,

साधु तो त्रिविधे त्रिविधे नही सरावे ।
 ते निसंक पणे तिण ने धर्म बतावे ॥ २४ ॥
 वले लोकां में जेन रा साध बाजे ।
 तिण नें धर्म कहितां मूल न लाजें ॥ २५ ॥
 तिणरी आगना देवे हर कोइ ।
 त्यां मानव नो भव दीधो खोइ ॥ २६ ॥
 त्यां विकलां री सरघा छे जेहर समांन ।
 ते भव भव मे होसी घणा हिरान ॥ २७ ॥
 आ तो सरघा उठी जठायी भूठी ।
 त्यांरी हीया नीलाड री दोनूइ फूटी ॥ २८ ॥
 त्यां दुष्टयां ने कहिजे निश्चे अनारज ।
 त्यां विकला रा किण विध सीमखी कारज ॥ २९ ॥
 वले चिठाय चिठाय नें बोले सेठा ।
 नरक निगोद रा प्रावण होय बेंठा ॥ ३० ॥
 ते नरक निगोद नें त्यांरी हुवें ।
 त्यांरे तीनूइ बोलां में उठीयो धूंओ ॥ ३१ ॥
 त्या सुध बुव अकल ने जावक खोइ ।
 तिहां छोडावण वालो नही छे कोइ न कोइ ॥ ३२ ॥
 त्यांरे बाहला तणो पडजाय विजोग ।
 वले बधतो जासी त्यांरे रोग ने सोग ॥ ३३ ॥
 मुहपती बांधी री पिण वरग न बूहां ।
 विरत विहूणा नागडा निरलज हुआ ॥ ३४ ॥
 त्यांने पूछ्यां थकां पलटे जावे बाणों ।
 त्यांरी सरघा ने जार गरभ जिम जाणो ॥ ३५ ॥
 ते सीह तणी परे कदे न गूजें ।
 त्यांने प्रश्न पूछ्यां गाडर जिम धूजें ॥ ३६ ॥
 चोडे निसंक सू निश्चेइ उधी ।
 त्यांरी भाषा पिण किण विध नीकलेसूंधी ॥ ३७ ॥
 कदे कहें जीव वचायां पुन ।
 यूं ही बके गेहला ज्यूं हीयासून ॥ ३८ ॥
 चोडे धाडें तिण सू वेचणी नावे ।
 चोडे लोकां में वतावणी नावे ॥ ३९ ॥

जीव खवायां पुन पल्पे,
 आ उंधी सरधा बेंठी उसभ उदें सू,
 जीव खवायां पुन कहें त्यांरी सरधा,
 एहवा अनारज तो आ सरधा सरासी,
 जीव खवायां पुन कहें तै पापी,
 तिहां छेदन भेदन विवध प्रकारे,
 जीव खवायां पुन कहें त्यां पापीयां नें,
 वले जीभ काडसी त्यांरी जड सू तांणी नें,
 जीव खवायां पुन कहे भेषधारी,
 छद्मस्थ सूं पूरी कहणी न आवें,
 ते नरक मांसू नीकल नें पापी,
 तिहां जन्म नें मरण करसी अनंता,
 नरक निगोद ने तिरजंघ गति मे,
 तिणरी मार तणो छेह वेगो न आवे,
 नरक निगोद सूं नीकल नें पापी,
 घणो दो भागीयो ने दलदरी होसी,
 उगता रा मात पिता मर जासी,
 दुसमण तणों संजोग आए मिलसी,
 जीव खवायां पुन कहें भेषधारी,
 दया धर्मी री संगत कर नें,
 वले कहि कहि नें कितरा एक केहूं,
 ते भमन करसी अरट घटकारे न्याये,
 हिंसाधर्मी ओलखावण काजें,
 संवत अठारे ने पचावनें वरसें,

त्यांरी सरधा अतत छे माठी सूं माठी ।
 त्यांरी सुघ बुघ अकल जाबकगड्ढाठी ॥ ४० ॥
 मांस अहारी ने हिंसा धर्म्यां सूं मिलती ।
 पिण जिण मारग सूं तो जाबक टलती ॥ ४१ ॥
 पाधरा नरक निगोद में जासी ।
 वले मार मे मार अनती खासी ॥ ४२ ॥
 तातो ताबो उकाल नें नरक में पासी ।
 खाल उतार नें वले खार लगासी ॥ ४३ ॥
 त्यांनें नरक री मार रों छेह न पारों ।
 पल सागरा लग खासी मारों ॥ ४४ ॥
 पछे हलतो हलतो निगोद में जासी ।
 अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४५ ॥
 आमां साह्यां घणा गोता खासी ।
 अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४६ ॥
 नीठ नीठ नर नो भव पासी ।
 तिणनें निजरां दीठां पिण किणने न सुहासी ॥ ४७ ॥
 वले बाह्लां तणो पड जासी विजोग ।
 वले वघतो जासी तिणरे रोग नें सोग ॥ ४८ ॥
 त्यां दुष्टया री रुगत दूर निवारो ।
 तिरण तारण गुर माथें धारो ॥ ४९ ॥
 जीव खवायां पुन कहे त्यांरा दुख ।
 तिण पापी नें किण विघ होसी सुख ॥ ५० ॥
 जोड कीधी पाली सहर मभारे ।
 आसोज सुद एकम नें बुववारे ॥ ५१ ॥

ढाल : १८

दुहा

केइ भेषघारी भागल थया, त्यांरी भिष्ट हुइ सुघ वृष ।
 त्यां पेट भरण रे कारणे, कीधी परूपणा असुघ ॥ १ ॥
 ग्रहस्थ लाडू आदि मोल आण नें, अयवा घरे नीपाए तांम ।
 ते जीवावे त्यांरा श्रावकां भणी, तिणरो दया दीयों छे नांम ॥ २ ॥
 एहवो धर्म सीखायों श्रावकां भणी, तिण सूं उलटा वांघे छे कर्म ।
 जेंसा कूं तेसा मिल्या, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३ ॥
 लाडू खवायां धर्म परूपीयो, ते आप रे सुतलव कांम ।
 रस गिधी जीभ्या रा लोलपी, यारें आछा खावां री मनहांम ॥ ४ ॥
 दया पलाइ मुख सूं कहे, पिण प्रतप दीसें गोठ ।
 तिण गोठ रो नांम दया दीयों, ते चोडे चलायो खोट ॥ ५ ॥

ढाल

[३ भवीयण सं०]

केइ दया पलावण चोखां रे तांइ, मूसलां सूं साल खंडावे ।
 एकीका मूसलरें धमकें, असंख्याता वाउकाय मर जावे ।
 रे भवीयण आ दया कठ थी काढी, ओछा वेवज पेट रें कारण ।
 जिण धर्म तणी वरत वाढी रे, थे समभाया पिण समभो नांही ।
 थारें चोकडी दीसें जाडी रे ॥ १ ॥
 जंबूदीप भरें तिनारा रा दांगां थी, ते तो गिणती रा जीव असंख्यात ।
 तिण थी असंख्यात गुणा वाउ रा जीवां री, एकें धमके हुवें घात रे ॥ २० ॥ २ ॥
 पछें छाज में घाले भाटक पछाटे, तुसने चावल करे जुआ ।
 तिहां पिण एकीका छाज रें फरके, असंख्याता वाउकाय भूया रे ॥ ३ ॥
 दया पलावण चोखा पीसें ते, घरटी नें धमकावें ।
 एकीका घरटी रा फेरा में, असंख्याता वाउकाय मर जावे ॥ ४ ॥
 वले घरटी फेख्यां तेउकाय उठें छें, तिण अगन तणी हुवे घान ।
 एकीका घरटी रा फेरा में, तेउकाय मरे असंख्यात रे ॥ ५ ॥
 वले मेदां में घी ऊन्हों करे घाले, तिहां तेउ तणी हुवें घान ।
 खांड घाले दया रा लाडू वणावे, तठे दया नही तिलमात रे ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

केइ लाडू भुजीया नें मुरमुरीयां, दया पालण ने मोल मंगावें ।
 ओ पिण क्रय विक्रय नों दोष छे भारी, अठें पिण हिसादिक थावें रे ॥ ७ ॥
 वले दया पलावण नें सूंठ भीजोवे, वले अथाणो मोल मंगावें ।
 वेंसवाख्या भूंगडा पिण ल्यावें, केइ पापड पिण सेकावें रे ॥ ८ ॥
 हलवाइ तो लाडू मोल बेचण कीघा, मोल लेवें त्यारें आघाकर्मी ।
 एहवा लाडू खावे खवावें, त्यांनं निश्चे जाणो अघमी रे ॥ ९ ॥
 गाम परगाम थी दही मोल मंगावें, नदी वाहला उलंघी ल्यावें ।
 नीलण फूलण रा जीव मारें अनंता, पांणी फूंवारादिक माख्या जावे ॥ १० ॥
 वले जातां नें आवतां नीलो चीथ्यो, तस थावर तणी हुवें घात ।
 वाउकाय मरें उघाडें मुख वोल्यां, तठे पिण दया नही तिलमात रे ॥ ११ ॥
 साघ साघवीयां नें श्रावक श्रावकां रो, सारां रो भेलों बांधें तुमार ।
 दया पलावण धर्म रे लेखें, इण विघ नीपजावें आहार रे ॥ १२ ॥
 मुदे तो रातां हाथ री बायां बुलावें, आप म्हारें आंगण पघारो ।
 थें दया धर्म रा लाडू खाय नें, म्हारा जीवां रो करो उघारो रे ॥ १३ ॥
 ए तो निरलजीयां इण कामां ने बेंठी, ते तो सुणनें हरषत थावें ।
 पेलां रे घरे जाय उमाइ, दया धर्म रा लाडू खावें रे ॥ १४ ॥
 भेषघाख्यां नें घर सूं जाय बोलवें, म्हारें घरे आप पघारों ।
 बारमो वरत नीपजावों म्हारें, तिणसूं म्हारो होसी उघारो रे ॥ १५ ॥
 त्यांनं तेड्यां ततकाल जावें तिण घर, जाणें डोरी ताण्यो स्वान ।
 ताजे आहार तूटा वडें पापी, यारें पेट भरण रो तांन रे ॥ १६ ॥
 लाडूआं री दया तो यांहीज सीखाइ, ते तो आघों काढसी केम ।
 ए सगला लाडू खाए ते वेहरे, पूरे मन रा मनोरथ एम रे ॥ १७ ॥
 बायां नें लाडू दया रा खवायां, त्यांसूं उपवास रो करे करार ।
 भेषघाख्यां नें लाडू तेड बहराया, त्यांसूं करार न कीघों लिंगार रे ॥ १८ ॥
 लाडू खाती खाती लेवे दही रा सबडका, सवाद सूं खावे मुरमुरी भुजीया ।
 धर्म रा लाडू खाती नही लाजें, ते तों छोडो लोकीक री लजीया रे ॥ १९ ॥
 उपवास री वांथवा कर लाडू खवावें, ते खावा री ओछ राखें किण लेखें ।
 भीकों उडावे लाडू खावारों, चांप चांप खावें वशेले रे ॥ २० ॥
 ताजी ताजी वसतां खावे शिघीपणा सूं, जो एक वसत माहें हुवे कजी ।
 तो भांड ज्यूं भांडें तिणनें भांडेंकाडीयां, तिणरी निदा करें निरलजो रे ॥ २१ ॥
 ताजों आहार सराय सराय नें खावे, ते तो कर्म तणा पूंज बांधें ।
 त्यां विकलां नें जीमायां धर्म जाणें, तिण धर्म न ओलख्यो आछे ॥ २२ ॥

आछो आछो खाये तिणरी दया सुधारे, उणी रहे तो उवा दया बिगाडे ।
 एहवी रस गिबणीयां जीभ्या री लपटण, ते पेलो नें कदेय न तारे रे ॥ २३ ॥
 भिनष आंतरीयो घुरल कें जूतो, तिण उपर दया पलावे ।
 उणें प्राण छुटण री त्यारी हुइ छे, तिण घर बेठी लाडू खावें रे ॥ २४ ॥
 उण मांदा तणा मुर बाज रह्या छे, दोहरा लेवें छे सांस उसांस ।
 ए लाडू खाती दही रा लेवे सबडका, वले मन मे आंण हुलास रे ॥ २५ ॥
 तिण मादा नें तिण दिन मरतों जाणें ने, लाडू दही तिहां थी उठावे ।
 हुजे टक खावा रे तांइ, ओर जायगा आंणे नें खावें रे ॥ २६ ॥
 भिनष आंतरीयो घुरलके जूतो, तिणरा मुख सूं दया बोलावे ।
 ते मूंआ पछे तिणरा न्यातीलां रे घर, घूरलाका रा दान रा लाडू खावे रे ॥ २७ ॥
 एहवी, रीता हाथा री बायां बारणें वेंसाणे, त्याने जीमाया भलो न होगा ।
 ए श्रतप कुसावण दीसें लोकां रे लेखें, जांणे मांदा उपर नाचें भोगा ॥ २८ ॥
 मंजारी जिम फिरती रहे छे, जीमणवार री खबर रें तांइ ।
 आछा खावा रो ध्यान लग रह्यो त्यारी, तांणां बेजा लागा तिण मांहीं ॥ २९ ॥
 किणरे आरो मोसर जीमण करतां, बारदानो वधीयो सुणें ताय ।
 जब रस गिबणीयां जिभ्या री लपटण, तिण दोली फिरें छें जाय ॥ ३० ॥
 कहे मोनें लाडू खाय नें दया पलावें, थाने इण बात रो होसी धर्म ।
 म्हे लाडू खाय ने उपवास करस्या, तिणसूं थारे पिण कटसी कर्म ॥ ३१ ॥
 जब वा वाड थोडो हुंकारो भरे तो, ए खावा ने होय जावे तयार ।
 धर्म रा लाडू खाती नही लाजे, त्यां विकलां ने तीन धिकार रे ॥ ३२ ॥
 ठडी रोटी ने घाट सूं दया पलावें, तो मुख सूं कर दें नाकारो ।
 तागा माल साटें त्याने दया पलावे, तो ए तुरत हुवे खावा ने तयारो रे ॥ ३३ ॥
 ओ तो खावा तणी गटकायां उघाडी, त्याने पोष्यां वंचे पाप कर्मो ।
 तिणमें धर्म जाणे कुगुरां रा कहा थी, ते पिण भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ ३४ ॥
 एहवी खावा तणी गटकाइ त्याने, बुधवत जांणे धर्म ठगो ।
 धर्म रे ओलें खाएं ते धर्म ठगारी, भोला लोकां नें देवे छें दगों ॥ ३५ ॥
 दस बीस कोस उपर पकवानं सुणें तो, हीडोला खावां ने दोड्या जावे ।
 ए तो घरे बेठी गुर री दलाली सूं, दोनू टका लाडूडा खावे रे ॥ ३६ ॥
 हीडोला मे बीस कोस खावा पड्या जब, एक टक पिण नीठ सूं खावे ।
 याने घरे बेठा मिले दोनू टक लाडू, त्यांसूं लाडू छोड्या किम जावे रे ॥ ३७ ॥
 हीडोला तो जाये जीमें न्यात रे लेखें, ते पिण निरलज हीडोला बाजे ।
 ए पिण धर्म रा लाडू खावे निरलजीयां, बेसरम्यां मूल न लाजे ॥ ३८ ॥

ओसर मोसर विनां पेंलारें घरे, जाए वेंडी पग पसार ।
 हीडोला जिम जीमें धर्म रे लेखे, धिम त्यारो जमवार रे ॥ ३६ ॥
 मोटका घर रा केइ डहा हुवें ते, विचार करें मन मांही ।
 आपरा घर री लाडू खावा जाती हुवे, तिणनें पर घर जावा दें नांहीं ॥ ४० ॥
 रलीयार ढोर ज्यूं रलीयार हुवे ते, वरजें तोही वरजी न लागें ।
 दया पलावण रा लाडू काने सुणें तो, होय जाए सगला रे आगे रे ॥ ४१ ॥
 दया रा लाडू खावा ने उमाइ, आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें ।
 त्यांसूं जिभ्या तणो चट रस नही छूटे, गटकायां हिली छें गटके रे ॥ ४२ ॥
 यारें मूदें तो रीता हाथा री बायां, कदा कांयक सुहागण आवें ।
 तिणनें पिण कर दे गटकाइ, तिण सूं आ पिण त्यामिं जावें रे ॥ ४३ ॥
 बीजासणीयां में खेतलो देवें, खेतला विण विजासणीयां नांहीं ।
 ज्यूं रीता हाथां री दया पालें छे, तो ही भेषधारी त्यां मांही रे ॥ ४४ ॥
 याने दया तणा लाडू खावा री, भेषघाख्यां कुवद सीखाइ ।
 आप तणा मुतलव रें तांइ, आ कुगुरां कुवद चलाइ रे ॥ ४५ ॥
 गाय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवें, कूप हुवें तो अवलें आवे ।
 जाणें यानें खवावसी तो मानेंइ वेंरासी, तिण कारण ए चाला चलावें रे ॥ ४६ ॥
 कोई पांच तिथां उपवास करती न दीसें, न करे एक टक पोहर वेपारी ।
 तिणनें लाडूआ साटे उपवास करावें, तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे ॥ ४७ ॥
 जो यारें दया पालण रा परिणाम हुवें तो, घर री रोटी खाए दया पालो ।
 उपवास करें वले करदों पोसो, छ काय तणो करो टालो रे ॥ ४८ ॥
 ए सांप्रत लाडू खाए धर्म लेखें, त्यानें पूछ्यां बोल जाए कूर ।
 मूहपती वांधे नें भूठ बोले छें, त्यांरी दया में पड गइ घूर रे ॥ ४९ ॥
 ब्राह्मण तो मनसा भोजन धर्म रो जीमें, त्यांरो तो कुल में चेहरो न थाय ।
 माहजन री वेठ्यां धर्म रा लाडू खाए तो, त्यांरी निद्या हुवें लोकां मांय रे ॥ ५० ॥
 ब्राह्मण तो धर्म रे लेखें भाता लेवें, दिवणा दीयां लेवें धन धान ।
 इत्यादिक याने देवें ते लेवें, ते तो लेता न करे अभिमान रें ॥ ५१ ॥
 याने मनसा भोजन आदि देवें नें लेवें, यांरा कुल री छें आहीज रीत ।
 जो इण रीते दान महाजन री वेठ्यां लेवे, तो लोकां मे हुवें फजीत रे ॥ ५२ ॥
 आंतरीया ऊपरला लाडू खावे, त्यानें भातादिक देवें सर्व लेंगों ।
 ब्राह्मण तो दातार नें धर्म कहेलें, ज्यूं याने पिण धर्म केंगो रे ॥ ५३ ॥
 धर्म रा लाडू तो खाती नहीं लाजें, तो भातादिक लेती लाजे कांय ।
 धर्म रो लेंगो मांड्यो तो सब ही लेंगों, लेखो कर देखो मन मांय रे ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण तो दातार नें आसीस देवेँ छे, दोनू हाथ जोडी नमे सीस ।
 ज्यू ए पिण धर्म रा लाडू खाएँ ने, दातार ने देणीं आसीस रे ॥ ५५ ॥
 आणद आदि देई श्रावक अनेक हुआ त्या, एहवी दया तो किण ही न पलाइ ।
 किण ही सूतर में चाली नहीं दीसे, थे आ कुबद कठाथी चलाइ रे ॥ ५६ ॥
 त्यारे कोडाग में धन घर माहें हुंतो, जीव रा पिण किरपण नांही ।
 एहवी दया पलाया मे धर्म जांणे तो, आघो न काढता काई ॥ ५७ ॥
 आगे गोतमादिक साघ अनेक हुआ त्यां, एहवी दया पालणी कही नांही ।
 लाडू खाया खवायां तो हिंसा उघाडी, तिणमें कला मत जाणो काई रे ॥ ५८ ॥
 एहवी दया भेषधाख्यां सीखाई, तिणमें दया नहीं तिलमात ।
 लोलपणो तो उघाडो दीसे, चले छ काय तणी हुवे घात् ॥ ५९ ॥
 लाडूवा खांणी दया ओलखावण, जोड कीघी नाथ दुवारा मभार ।
 सवत अठारे ने वरस छपने, पोह विद बीज सनीसरवार रे ॥ ६० ॥



दुहा

अंबरसिन्यासी श्रावक थयो, ते हुवो साधां रो सुवनीत ।
तिण लीघा व्रत चोखा पालीया, पिण छोडी नही मत रीत ॥ १ ॥
तिणरे भगवा वसतर पेंहरणें, डंड कमडल तिणरें हाथ ।
ओर उपगरण सिन्यासी तणां, ते लीया फिरें छें साथ ॥ २ ॥
काचों पाणी नदी तणों, ते पिण निरमल बेंहतों जाण ।
ते पिण दीघो दातार नो, ते पिण पांणी लेणो छांण ॥ ३ ॥
ते पिण पांणी सावंच जिण कह्यो, तिण पांणी रों अंबर नें आगार ।
अचित पांणी ने उन्हां पांणी तणो, तिण त्याग कीयो परिहार ॥ ४ ॥
आ रीत छें सिन्यासी तणी, छूटती नहीं दीठी तास ।
तिण श्रावक रा व्रत आदर्यां, श्री वीर जिणंद रें पास ॥ ५ ॥
तिणरें विरत आदरतां इविरत रही, ते एकंत अघर्म जाण ।
ते आश्रव पाप ना बारणा, तिण सू पाप लागें छें आण ॥ ६ ॥
तिणरों खाणों पीणों नें पेंहरणों, वले उपधि उपभोग परिभोग ।
ते सगलाइ राख्या ते इविरत में, त्यानें भोगव्यां सावच जोग ॥ ७ ॥
भोगवे ते पेहले करण पाप छें, भोगवावे ते दूजे करण जाण ।
सरावे ते करण तीसरें, सारां रे पाप लागे छें आंण ॥ ८ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, अंबर नें जीमायां धर्म ।
त्यां जिण मारग नही ओलख्यों, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ९ ॥
अंबर कीघो छें सों घरां पारणों, ते निश्चेइ इविरत में जाण ।
ते जथा तथ परगट करूं, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ १० ॥

ढाल

[दया भगवती छे सुख दायी]

केइ कहें अंबर सिन्यासी श्रावक, सो घरां पारणों कीघो तांमो जी ।
सो घरां रात रों बासो कीघों, ते धर्म दीपावण कामो जी ।
बुधवंत ग्यांन करी ने देखोः ॥ १ ॥
सो घरां अंबर पारणों कीघों, सों घरां बासों लीयों ताह्यो जी ।
कोइ धर्म दीपावण रो नाम लेवें छे, ते एकंत मूषावायो जी ॥ बु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सो घरा अंबर पारणो कीघों, सो घरा बांसों लीयों ताह्यों जी ।
 तिणरो न्याय न जाणे अग्यानी, थोथी करे बकवायो जी ॥ ३ ॥
 अंबर सिन्यासी सों घरां पारणों किघो, सो घरां बींसो कीयो छे तांमो जी ।
 तिण घणां लोकां नें विसमय उपजावण, वेक्रे लवध फोरवी इण कांमो जी ॥ ४ ॥
 वेक्रे लवध फोरवी ते सावद्य जोग, वेक्रे सरीर कीयो तिण कालो जी ।
 वेक्रे सरीर करतां पांच किरिया लागी, तिण सूं पाप लागो दग चालो जी ॥ ५ ॥
 काइया अहिगरणीया नें पाउसीया, पारितावणीया पाणाइवायो जी ।
 ए पांच किरिया लागे वेक्रे कीघां, पन्नवणा छतीसमां पद माह्यो जी ॥ ६ ॥
 वेक्रे करने सों घरां बासो लीघो, वेक्रे कर सों घरा कीयो आहारो जी ।
 ए तीनूं किरतव जिण आगन्या बारे, ते सावद्य जोग व्यापारो जी ॥ ७ ॥
 धुरसू वेक्रे कीयो ते सावद्य जोग, दूजो सो घरा कीयो आहारो जी ।
 तीजो सों घरां वासो लीघों, ए तीनूं सावद्य जोग व्यापारो जी ॥ ८ ॥
 ए तीनूइ किरतव सावद्य कीघा, ते तो विसमे उपजावण कांमो जी ।
 कोइ कहे धर्म दीपावण कीघा, ते भूठ बोले बेफांमो जी ॥ ९ ॥
 धर्म दीपावण सो घरां पारणों कीघो, तो थे सूतर में काढ बतावो जी ।
 जो थे सूतर माहे नही काढो तो, गाला रा गोला मती चलावो जी ॥ १० ॥
 पारणो कीघों सो घरां धर्म दीपावण, आ तो उठी जठायी भूठी जी ।
 ते जिण मारग रा अजांण अग्यानी, त्यारी हीया निलाड री फूटी जी ॥ ११ ॥
 सो घरां पारणो कीयो विसमय उपजावण, ते तो उघाडो सावद्य साख्यातो जी ।
 तिण माहे धर्म कहे छें अग्यानी, ते प्रतख भूठ मिथ्यातो जी ॥ १२ ॥
 लवध फोडवीयां जिण मारग दीपे तो, गोटमादिक साध अनेको जी ।
 त्यामें तो लवध घणेरी हुंती, ते तो मारग दीपावत वशेखो जी ॥ १३ ॥
 साधु आप नें ओरां नें विसमय उपजावे, तिणने चोमासी प्राच्छित आवे जी ।
 नसीत रें इग्यारमे उदेसे, तिणमे धर्म किहांथी थावे जी ॥ १४ ॥
 विसमे ने इचरज कतोहलादिक विद्या, मंत्र इद्रजालादिक जाणो जी ।
 ते विसमे उपजावण अंबर सिन्यासी, फोडवी लवध पिछांणो जी ॥ १५ ॥
 साधु विसमें उपजावें तों प्रायच्छित आवे, लागे एकंत पाप कर्मो जी ।
 तो अंबर सिन्यासी विसमय उपजाइ, तिणने किण विघ होसी धर्मो जी ॥ १६ ॥
 केइ कहे श्रावक रतना रो भाजन, तिण पोख्यां छे एकंत धर्मो जी ।
 पाप रों अंस तो मूल न लागे, कटें निकेवल कर्मो जी ॥ १७ ॥
 जो श्रावक ने पोख्यां में पाप हुवे तों, अंबर ने पारणों नही करावत जी ।
 अंबर सिन्यासी पिण श्रावक हूतो, सों घरां पाप नही लगावत जी ॥ १८ ॥

'यूं कहि कहि अग्यानी श्रावक जीमायां,
 तिणनें विरत इविरत री खबर न काई,
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीघो,
 तिणरें खांणो पीणो सारो इविरत में थों,
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो कीघो,
 तिणनें पारणो कराय पाप लगायो,
 अंबर नें पेंलें करण पाप हूवो छें,
 सरावण वालों तीजे करण पापी,
 अंबर नें काचो पांणी लेवण री,
 तिणने धर्म कहे छें अग्यानी,
 जीव रो गटको करण री आगन्या देसी,
 तिण माहे धर्म कहे छें पाखंडी,
 तीन काल रा श्रावक त्यांरो,
 ते अंबर ने पारणो करायां,
 अंबर पारणो कीघो छें तिणरो,
 करावण वाला नें करावण रों पाप,
 पेंला रों लगायों तो पाप न लागें,
 सावद्य जोग दोया रा जूआ जूआ बरत्या,
 अंबर तो सो घरां पारणो कीघों,
 करणवाला ने करावणवाला नें,
 अंबर सो घरां पारणो कीघो,
 तिण सावद्य काम कीयो जब लोकां,
 जिण मारग माहें कोइ लबध फोडवी तो,
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध,
 अनेरा भेष मे केवल ग्यान उपजे,
 त्यां कने दिध्या लेवे तो दिध्या न देवें,
 वाणी वागरीया लोक सुणे इम बोले,
 अनेरा मत री वधे परससा,
 केवल ग्यानी अनेरा मत री,
 पाखंड मत ने वधतो देख्यो,
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध,
 तिण विसमे उपजावणा फोडवी लबध,

थापे' छे एकंत धर्मो जी ।
 भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ १९ ॥
 तिणने सों घर रो पाप लागो जी ।
 इविरत सेवी पिण वरत न भागो जी ॥ २० ॥
 सो घरां रो लागो छे पाप कर्मो जी ।
 त्यांनं किण विघ होसी धर्मो जी ॥ २१ ॥
 तो करावण वालो दूजें करण जाणो जी ।
 यानें रूडी रीत पिच्छाणो जी ॥ २२ ॥
 सर्व नदी री आगन्या दीघी जी ।
 तिण हिंसा धर्म री थापना कीघी जी ॥ २३ ॥
 तिणरें निश्चं बंधसी पाप कर्मो जी ।
 ते भूला अग्यानी भर्मो जी ॥ २४ ॥
 खांणो पीणो एकंत अधर्मो जी ।
 किण विघ होसी धर्मो जी ॥ २५ ॥
 अंबर ने पाप लागो छे तामो जी ।
 यांरा जूआ जूआ परिणामो जी ॥ २६ ॥
 आपरो लगायों पापज लागे जी ।
 त्यांरों पाप लागो छे सागें जी ॥ २७ ॥
 तिणनें सिन्यासी जाण करायो जी ।
 भगवते नहीं सरायो जी ॥ २८ ॥
 सो घरा वासो लीयो ताह्यो जी ।
 सिन्यास्यां रो मारग दीपायो जी ॥ २९ ॥
 भगवंत नही सरावें जी ।
 तिण में धर्म केम बतावे जी ॥ ३० ॥
 ते तो नहीं बागरें वाणी जी ।
 मिथ्यात वधतो जाणी जी ॥ ३१ ॥
 यामेंइ उपजे केवल नाणो जी ।
 वाणी नहीं बागरें इम जाणो जी ॥ ३२ ॥
 महिमा वधती जाणी जी ।
 यूं जाणे नहीं बागरी वाणी जी ॥ ३३ ॥
 तिणने लबध जीरवी नांही जी ।
 तिणमे धर्म नही छें काई जी ॥ ३४ ॥

सिन्यासी रा भेप मे लवद फोडवी,
 आपरे छोदे लवद फोडवी तिणनें,
 जब कोइ कहे अबर ने कह्यो अराधक,
 पांचमें देवलोकें देवता हूवो,
 अबर तो अराधक हूवो,
 पिण लवद फोडवी तिण सूं नही हूवो,
 अनेरा भेप मे केवल ग्यान उपनो,
 त्यानें साध श्रावक जाणे' केवल ग्यानी छे,
 तिण भेप थका साध श्रावक वांदे,
 जाणें म्हाराइ मत मे केवल ग्यान उपजे,
 कदा साध श्रावक जो त्यानें वांदे,
 घणा लोक त्यांरी देखा देख वांदे,
 गोतम सांमी पूछ्यो भगवत ने,
 इण काई करणी करे लवद पाइ छे,
 जब वीर जिणेसर कहें गोतम ने,
 अंबर सिन्यासी प्रकत रो भद्रीक छे,
 अंबर सिन्यासी वेले वेले निरंतर,
 दोनूइ बाह्यां उंची राखी नें,
 आतपना भूम नदी तट माहे ल्लेतां,
 भला अधवसाय आया तिण काले,
 एकदा प्रस्ताव तदावर्णी कर्म,
 विचारणा करता तिण काले,
 वेकें करवा री सक्त पांमी,
 वीर्य लवद छता रूप सक्त,
 वेकें लवद फोडवे' वेक्रे रूप कर नें,
 वले वासो सो घरां मे लीघो,
 वले गोतम सामी पूछ्यो भगवत ने,
 जब वीर कहे पांचमें देवलोकें,
 देव चवी महाविदेह पेत्र में,
 आठोई कर्म तणो षय कर नें,
 अंबर सिन्यासी री वेकें लवद ओलखावण,
 सवत अठारे सतावनें वरसें,

तिण सिन्यासी री महिमा वधारी जी ।
 जिण आगन्यां नही छे लिंगारी जी ॥ ३५ ॥
 तिणनें वीर जिणंद सरायो जी ।
 ते मिनष थइ मोप जायो जी ॥ ३६ ॥
 चोखा वरत पाल्यां सूं जाणो जी ।
 तिणरी सूतर सूं कीजो पिछाणों जी ॥ ३७ ॥
 ते भेप छें पेहरण तांमो जी ।
 पिण वादे नही सीस नांमो जी ॥ ३८ ॥
 तिण मत रा पाखडी गूंजे जी ।
 त्यानें उंडी तो मूल न सूके जी ॥ ३९ ॥
 तो विगडे छे जावक वातो जी ।
 जब वधें घणो मिथ्यातो जी ॥ ४० ॥
 अंबर सिन्यासी छें तांमो जी ।
 लवद फोडवे छे किण कांमो जी ॥ ४१ ॥
 सुण तूं अबर री बातो जी ।
 जाव विनेवंत साख्यातो जी ॥ ४२ ॥
 आंतरा रहीत तपसा कीधी जी ।
 सूर्य सांमी आतापना लीधी जी ॥ ४३ ॥
 आया सुभ परिणामो जी ।
 निरमली लेस्या वरतीं तांमो जी ॥ ४४ ॥
 पयोपसम कर्म हूवा चकचूरी जी ।
 वीर्य लवद पांमी छे रूडी जी ॥ ४५ ॥
 वले पांमीयो अवधि गिनांनो जी ।
 वेक्रे सूं करे रूप असमानो जी ॥ ४६ ॥
 सो घरां पारणो कीयो तांमो जी ।
 ते विसमे उपजावण कांमो जी ॥ ४७ ॥
 अंबर मरनें किहां जासी जी ।
 महीढीक देवता थासी जी ॥ ४८ ॥
 चारित पाली निरदोषो जी ।
 पाघरो जासी मोखो जी ॥ ४९ ॥
 जोड कीधी गोघदा मभारो जी ।
 चेत सुदि चोथ ने बुधवारो जी ॥ ५० ॥

दुहा

केइ हिंसा धर्मी जीवडा, ते जीव माख्यां कहें धर्म ।
 ववेक विकल सुघ बुघ विनां, भूला अग्यांनी भर्म ॥ १ ॥
 जिण आगम अर्थ ऊंआ करें, वले कूडा कुहेत लगाय ।
 हिंसा कराय जीवां तणी, घणो हरस घरे मन मांय ॥ २ ॥
 टीका चूर्ण भास नियुक्ति नां, यांरा करे घणा वखांण ।
 ए च्याह्ई नही जिण भाखीया, त्यांरी बुघवंत करजो पिछांण ॥ ३ ॥
 एवारें काली पछें कीया, भिष्ट आचाख्यां आप रे छंद ।
 त्यांमें विवध पणे भूठ गूथ नें, चोडें मांड्यो भोलां नें फंद ॥ ४ ॥
 ज्यूं ज्यूं अणाचार सेवीयां, ज्यूंज्यूं घाल्या टीकादिक मांहि ।
 वले उंधी उंधी सरघा घणी, ते घाली टीका में ताहि ॥ ५ ॥
 जीव हणवा रों उपदेस दें, घणी खोटी परुषें छें ताय ।
 धोडी सी परगट कहं, ते सुणजों चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

दाल

[३ प्राणी कर्म समो नही...]

देव गुर संघ काजें चक्रवत री सेना, कहे साघ करे चकचूरो ।
 जो नही करें तो दसमो प्राछित आवें, थे इसडो म भाषो कूडो रे ।
 कुमत्यां हिंसा धर्म कांय थापो रें* ॥ १ ॥
 थे भगवंत भाष्या सूतर बाचो, वले साघ लोकां मांहि बाजो ।
 जीव माख्यां में धर्म परुषों, इसडो म करों अकाजो रे ॥ कु० २ ॥
 गोसाले दोय साघ भगवंत रा बाल्या, वले वीर नें कीयां लोही ठाण ।
 त्यां साधां में सकत थी गोसाला बालण री, पिण खमता कीधी सुमता आंण रे ॥ ३ ॥
 ओ प्रतख गोसालो प्रतणीक हुवो, तिणरी साधां न करी घात ।
 थे प्रतणीक माख्यां में धर्म बतानों, ते मूरख मानें बात रे ॥ ४ ॥
 प्रतख गोसालो प्रतणीक नें, जो नही हणीया प्राछित आवें ।
 तिण लेखे भगवंत रा साघ लब्द धारी, प्राछित लीयां सुघ थावें रे ॥ ५ ॥
 सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, ते पिण मुख सूं बोलसी न्याय ।
 हुं छती सकत समर्थ नही खमवा, अवगुण काढसी आप मांय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विरत इविरत री चौपई : ढाल २०

बले दौय साधां रा ने वीर रा गुण गावसी, कहसी तोनें न बाल्यो तिण वार ।
 त्यांरी छत्री सकत चोखें चित खमीयो, ते घन मोटां अणगार रे ॥ ७ ॥
 सुमगल आचार्य गोसाला नें बालसी, तिणनें वतावो थे धर्म ।
 ते क्रोध करे घात करसी राजा री, तिणरे वंघसी निकेवल करम रे ॥ ८ ॥
 कोइ लब्द घारी साघ लब्द फोड नें, करें मिनषांदिक नीं घात ।
 ते जिण आग्या लोपे हुवो विराधक, तिणमें धर्म कहे ते मिथ्यात ॥ ९ ॥
 निदक जीवां नें माख्यां धर्म थापो थें, ते चोडे कहो छो लोकां नें ।
 बले धर्म कहो निदक ने माख्या, ते तो मूढ मिथ्याती माने रे ॥ १० ॥
 तीन सो तेसठ पाखंडी हुंता, त्यां घणां जीव मिथ्यात में पाड्यां ।
 बले निदक पूरा श्री जिण धर्म रा, त्यांने साधां क्यूं नहीं माख्यां रे ॥ ११ ॥
 देवल काजे बलद मूंआ तिणने, आठमो सरग बतावो ।
 एहवा गोला थें गाला मां सूं फेको, भोलां ने कांय थे भरमावों रे ॥ १२ ॥
 काजी मुल्ला जवें करे छें, ते कहे म्हे करां छां हलाल ।
 म्हे जीव मारां ते भिसत पोंहचावां, एहवो थें पिण मांड्यो छे ख्याल रे ॥ १३ ॥
 थे बलदां नें मारे देवलोक पोंहचावों, ते एकत मूसा बायो ।
 हिवें ओहीज प्रश्न पूछीयां थानें, मत करजो बकवायो रे ॥ १४ ॥
 थारा गुर गुर भाई कुटंब न्यातीला, त्यांने संधारो कांय करावो ।
 यारे पिण माथे मोटी सिला देई नें, सुध गति क्यूं नहीं पोंहचावो ॥ १५ ॥
 थे देवल काजे पथर आणो जब, यारे माथें पिण आंण्यां किम दोष ।
 यानें पिण बलदां जिम मारे, क्यूं नहीं मेलो मोख रे ॥ १६ ॥
 देवल काजें साघ श्रावक मारे, तिणनें किम गिणसो दोखो ।
 तो ही श्रावक ने बारमें देवलोक नहीं मेलो, साधां ने पिण नहीं मेलो मोखो रे ॥ १७ ॥
 साघ श्रावक ने इम सुध गति नहीं मेलो, त्यांरो जीतव नहीं थे सुघारो
 तो रांक गरीब बापडा बलदां ने, देवल काजें कांय मारो रे ॥ १८ ॥
 जो बलद मरे आठमें सरग जावे, आ बात जाणो थे साची ।
 तो पथर रा जीवां री देवल प्रतिमा हुई, यांरी पिण गति होसी आछी रे ॥ १९ ॥
 बले छ काय मूई मरे नें बले मरसी, ते पिण देवल रे कामें ।
 जो बलद मूंआ आठमें सरग जावें, तो सगलाई सदगति पांमें रे ॥ २० ॥
 बलद मरे ते पर वस दुखीया, यारे उसभ उदे हूया आयो ।
 त्यांने विनां परिणामा सदगति किम होसी, बले इम हीज जाणों छ कायो रे ॥ २१ ॥
 सिलावट मरे कोइ देवल करतो, तिणनें कहो बारमों देवलोक ।
 ओ पिण गोलो निकेवल गालां रो, ते पिण जाणों फोको रे ॥ २२ ॥

हिंसाधर्मी जीव मरायां रो, मूल गिणें नही दोख ।
 भोलां नें भरमावें अग्यानी, वले कहें याने होसी मोख रे ॥ २३ ॥
 पेंलां नें माख्यां धर्म परूवें, आप नें माख्यां न कहें धर्मों ।
 ववेक विकल सुध बुध विनां बोले, ते भूला अग्यानी भर्मों रे ॥ २४ ॥
 धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरो, मत छें जाबक भूंडो ।
 त्यांरो सरघा कोइ मूरख मानें, ते पिण नर भव खोय बूडो रे ॥ २५ ॥
 केइ ब्राह्मण कहें बकरा होमण रो, मुख सूं किण विघ कहिसो ।
 जे थारे करणो छें होम बकरा रो, तो थें सावधान थकां रहिसो रे ॥ २६ ॥
 म्हें वेद भणतां भणतां बोलां जब, कहां अजा होमण रो पाठ ।
 जब थें अजा होम छाली रा जायां रो, होम में न्हांखज्यो सिर काट रे ॥ २७ ॥
 ज्यू थें पुफांरो हण नें फलां रो हणवा रो, पाठ कहें नें समभावो ।
 उवें जीव होमें नें जज्ञ करावें, ज्यू थें पिण पूजा करावो रे ॥ २८ ॥
 यांरा यज्ञ होम में थें पाप बतावो, तो थानें धर्म होसी किण लेखें ।
 ओ तो किरतब छें दोयां रो बरोबर, निज खोटी सरघा नहीं देखें रे ॥ २९ ॥
 उवें सिर कटाय होम माहें नखावें, थें प्रतिमा काजे हणावों ।
 जो यानें पाप तो थानेंई पाप छें, ओ जोवो उचाडो न्यावो रे ॥ ३० ॥
 केइ सिरदार चोरादिक नें मरावें, जब कहें दूध पीवा जाय ।
 जब अटवी माहे तिणने ले जावें, जुदा करे जीव काय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यू थें पिण छ काय रा जीव मरावो, जब पूजा रो नांम बताय ।
 जब गृहस्थ तो छ काय जीवां रा, जुदा करे जीव काय रे ॥ ३२ ॥
 चोरादिक मरावें ते खून कीयां थी, ते मन माहें पिण पिछतावें ।
 थें हर्ष धरी धर्म हेत मरावो, थानें पिछतावो पिण नहीं आवें रे ॥ ३३ ॥
 कसाई जीव हणियां तो पाप जाणें छें, तिणसूं मरावें छें गरथ देई ।
 थें जीव हणयां रो पाप न जाणों, तो क्यूं नहीं मरावो छो थेंई रे ॥ ३४ ॥

रत्न : ३२

श्रद्धा री चौपई

ढाल : १

ढुहा

ठांगा अंग माहें कह्यो, दस प्रकार रो मिथ्यात ।
 त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं, ते सुणजो विल्यात ॥ १ ॥
 अधर्म ने धर्म सरदहे, धर्म नें सरधे अधर्म ।
 ते मूढ मिथ्याती जीवडा, भूला अग्यांनी भर्म ॥ २ ॥
 अजीव ने जीव सरदहे, जीव ने सरधे अजीव ।
 उण जीव अजीव न ओल्ल्या, ते पिण मिथ्याती जीव ॥ ३ ॥
 कुमारग ने मारग जाणे मोष रो, मारग ने कुमारग जाणें मूढ ।
 ते मिथ्याती सुध बुध वाहिरा, कर रह्या कूडी रूढ ॥ ४ ॥
 केई असाध ने साध सरधता, केई साध ने सरधे असाध ।
 ते बूडा मोह मिथ्यात मे, श्री जिण वचन विराध ॥ ५ ॥
 मोष न गया कर्म खपाय ने, त्यांने सरधे अग्यांनी मोष ।
 मोष गया ने मोष सरधे नही, ते सरधा घणी छे सदोष ॥ ६ ॥
 ए दस प्रकार नां मिथ्यात में, ऊधो सरधे एक बोल ।
 त्यांने निश्चें मिथ्याती सरधजो, आंख हीया री खोल ॥ ७ ॥
 भेषधारी ववेक रा विकल घणा, त्यांरो जुदो जुदो समदाय ।
 उंधी सरधा पिण यांरी जू जूई, पिण आघां नें खबर न कांय ॥ ८ ॥
 त्यांरो सरधा आचार नही सारिखो, तोही सरधे माहोमां साध ।
 त्यांरे बोलेइ वंध दीसे नही, मांहोमां पिण करे विषवाद ॥ ९ ॥
 अंधकार घणो यारा भेष मे, तिणरो कुण काढे नीकाल ।
 हिंवे थोडोसो परगट करू, ते सुणजो सुरत संभाल ॥ १० ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

यांरे पेहरण सांग साधा तणो रे, वले रह्या लोकां मे पूजाय रे सुगुणनर* ।
 ए कुबदी खेला ज्युं नाचता रे लाल, पिण विकलां ने खबर न कांय रे सुगुणनर ।
 जोयजो अंधारो भेष में रे लाल ॥ १ ॥
 केई सूतर सिद्धांत रा न्याय सुं रे लाल, जोड करे सुध मान रे । सु० ।
 तिणमे केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई सरधे एकंत धर्म ध्यान रे ॥ सु० जो० २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

जोड करणी निपेदे ते यानिं गिणें रे लाल, निन्हवां री पांत मांय रे ।
 ते नाम ले सुयगडा अंग नो रे लाल, तेरमों अघेन वताय रे ॥ ३ ॥
 वले जोड करे त्यानिं घालीया रे लाल, वेस्या रा करंडिया मांय रे ।
 पलमां रा गेंहणा सरीषा कीयां रे लाल, ठांणा अग चौथो ठांणो वताय रे ॥ ४ ॥
 इत्यादिक अवगुण कहे घणा रे लाल, जोड करे तिण मांय रे ।
 वले भूठा बोला सरखे तेहने रे लाल, यानिं जावक दीया उडाय रे ॥ ५ ॥
 जोड करणी थापें ते यानिं इम कहें रे लाल, ए भूठ वोले वेफाम रे ।
 जोड करणी उथापे अन्हाखी थकां रे लाल, भूठा भूठा ले सूतरां रा नाम रे ॥ ६ ॥
 कहे सावु तो जोडे जुगत सूं रे लाल, सूतर केरे न्याय रे ।
 पिण कुवदी करे कदाग्रहो रे लाल, पिण सुवुधी रे आवे दाय रे ॥ ७ ॥
 वीर वखाणी वुध उतपात री रे लाल, नन्दी सूतर रे मांय रे ।
 वले थुत गिनांन रा भेद सूं रे लाल, म्हे जोड करां इण न्याय रे ॥ ८ ॥
 वले ठांणा अंग नवमां ठांणा मभे रे लाल, उत्तराघेन गुणतीसमां मांय रे ।
 यांरा अर्थ तणा विसतार सूं रे लाल, म्हें जोड करां इण न्याय रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सूतरां तणा रे लाल, नाम ले ले थापे करणी जोड रे ।
 जोड करणी उथापे तेहमें रे लाल, सरखे छे मोटी खोड रे ॥ १० ॥
 एक थापें एक उथपे रे लाल, इण विघ करे मांहोमां विवाद रे ।
 यांरे भगडो लागो पीढीयां लगे रे लाल, यामें कुण छे साध असाध रे ॥ ११ ॥
 यामें कुण साचो कुण भूठो अछे रे लाल, कुण सूतर रो जाण अजाण रे ।
 यामें साची सरखा रो कुण समकती रे लाल, यामें कुण छे मिथ्याती अयाण रे ॥ १२ ॥
 भूठ वोल्यां भागे विरत दूसरो रे लाल, उंधो सरघ्यां आवे मिथ्यात रे ।
 सूतर जोय निरणों करो रे लाल, आ मूंडा री नही छे वात रे ॥ १३ ॥
 केई अघर्म नें घर्म सरदहे रे लाल, घर्म नें सरखे अघर्म सदीव रे ।
 त्यानिं ठांणा अंग दसमें ठांणेकह्यो रे लाल, ये दोनूं मिथ्याती छें जीव रे ॥ १४ ॥
 यांरे लेखें उवे भूठ वोले घणो रे लाल, यांरे लेखें उवे वोले भूठा वाय रे ।
 वले सरखा पिण मांहोमां उंधी कहे रे लाल, चोडे असाध कहे छे मांहोमांय रे ॥ १५ ॥
 त्यांरे काम पडे मुत्तलव तणो रे, जव यानिं पिण कह दे असाध रे ।
 ए कूड कपट केलवे घणो रे लाल, यांरे किण विघ होसी समाध रे ॥ १६ ॥
 उंधी सरखा नें भूठा बोला तेहने रे, साध सरखे ते मूंड अयाण रे ।
 ते निश्चे मिथ्याती जीव छे रे लाल, जिण मारग रा अजाण रे ॥ १७ ॥
 मांहोमांहीं साध थापें ने उथपे रे, करे विकलां वाली वात रे ।
 ए सूने चित्त वकवो करे रे, यांरा घट मां सूं न गयो मिथ्यात रे ॥ १८ ॥

यामें केयक तो करे घणा रे, नरकादिक ना चितरांम रे ।
 तिणमें केयक तो अधर्म कहे रे लाल, केई धर्म कहें छें तांम रे ॥ १६ ॥
 चितरांम निषेधे करणा साध नें रे, वरज्यो कहे नशीत रे मांय रे ।
 चितरांम करणा थापें साध नें रे, ते देवे नन्दी सूतर मे बताय रे ॥ २० ॥
 यामे कुण साचो कुण भूजे अछे रे, कुण सूतर रो जाण अजाण रे ।
 यामे कुण मिथ्याती नें कुण समकती रे, आ पिण न करे पिच्छाण रे ॥ २१ ॥
 एक वचन उथापें सिधात नों रे, हले उतकष्टो काल अनंत रे ।
 तो अनत संसारी कुण एह मे रे, इणरो निरणो करो बुधवंत रे ॥ २२ ॥
 वले साध मांहोमां ए सरवहे रे, ए इसडा छे मूढ अजाण रे ।
 याने वादे पूजे गुर जाण नें रे, ते पिण विकल समाण रे ॥ २३ ॥
 वासी ठी रोटी लालरी मफे रे, केई कहे छें बेइंद्री जीव रे ।
 केई कहे जीव निश्चे नही रे लाल, इम कर रह्या ताण अतीव रे ॥ २४ ॥
 ठी रोटी में जीव सरवे तिके रे, टाले ग्रीपम रिता ने चोमास रे ।
 ठी रोटी में सरवे नही रे, ते बेहरे बारोई मास रे ॥ २५ ॥
 ठी रोटी लेनी थापे साध ने रे, ते वतावें अचारांग री साख रे ।
 वले नाम ले दसमां अंग नो रे लाल, यामे वीर गया छे भाख रे ॥ २६ ॥
 ठी रोटी न लेणी कहे साध नें रे, ते वतावे रस चलित रो पाठ रे ।
 एक थापें एक उथापें रे लाल, यारे ओ पिण माहोमा छे फांट रे ॥ २७ ॥
 ठी रोटी में कहे छें बेइंद्री रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे ।
 जीवां ने खाय भूठ बोले तेह सुं रे, कहे भागा महावरत दोय रे ॥ २८ ॥
 एकद्री जीव खाए तेहने रे, साध सरवे त्यारे छे वूड रे ।
 तो ए खाए यारे लेखे बेइंद्री रे, त्याने साध सरवे तो एहीज मूढ रे ॥ २९ ॥
 ठी रोटी में जीव सरवे नही रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे ।
 ए भूठ बोले छे घणा दिनां रे, यां डूजो वरत दीयो खोय रे ॥ ३० ॥
 ठी रोटी मे कहे छे बेइंद्री रे, त्यानें निश्चे जाणे छे देता आल रे ।
 जो एहीज याने साध लेखवे रे, तो ए पिण अग्यानी बाल रे ॥ ३१ ॥
 इण विघ करे मांहोमा निषेधणा रे, वले सरवे मांहोमाहि साध रे ।
 ए दौनुं बूडे छे वापडा रे, ए कर कर कूडो विपवाद रे ॥ ३२ ॥
 यारे न्याय निरणो तो दीसे नही रे, कूडी मांड रह्या घमडोल रे ।
 वले केख नही यारे बोलीए रे, यांरा मत माहे मोटी भोल रे ॥ ३३ ॥
 कहिवा ने लोकां आगे तो इम कहे रे, म्हे तो साध सरवां माहोमांय रे ।
 पिण जावक उडावे जडां मूल सुं रे, तिणरी रस सुणो चित्त ल्याय रे ॥ ३४ ॥

ज्यानें साध चोडें मुख सूं कहें रे, त्यांरी बंदणा देवें छुडाय रे।
 आप आप तणा श्रावकां कनें रे, अवगुण अनेक दरसाय रे ॥ ३५ ॥
 पछें श्रावक त्यानें वादे नहीं रे, केइ उंचोई न करें हाथ रे।
 तो साध मांहोमां सरघण तणी रे, विखर गई विकलां री बात रे ॥ ३६ ॥
 यांरे श्रावक त्यानें वादे नहीं रे, जब मूल न राखी त्यांरी आव रे।
 तोही कहें म्हांनें साध लेखवें रे, आव पाडी ते पिण देवे दाव रे ॥ ३७ ॥
 सुध साधां री संका घाल नें रे, त्यांरी बंदणा छुडवें कोय रे।
 ते बूडा भव सागर ममे रे, केई अनत संसारी होय रे ॥ ३८ ॥
 ए साध मांहोमां चोडें कहें रे, वले बंदणा छुडावे मांहोमांय रे।
 ओ पिण न्याय निरणों नहीं रे, ए चोडें भूला जाय रे ॥ ३९ ॥
 यांमें आवें त्यांरा टोलां मांहिलो रे, तिणनें दिष्या दे लेवें मांय रे।
 जब तो यांनें असाध निश्चें गिण्या रे, यांरी कांण न राखी कांय रे ॥ ४० ॥
 वले केकण नें दिष्या विण मांहें लीए रे, जब यांरी पिण नही परतीत रे।
 कदे थापें कदे उथपें रे, यांरे गेंहलां वाली छे रीत रे ॥ ४१ ॥
 दिष्या नही आवे तिणनें दिष्या दीये रे, दिष्या आवे तिणने देवें नांहि रे।
 तिणनें दिष्या आवे इण डंड में रे, जोवो वेतकल्प रे मांहि रे ॥ ४२ ॥
 इसडा दोष यांमें बतायां थकां रे, तिणरो नहीं काढे नीकाल रे।
 कुड कुड नें कूके घणा रे, जांणें सीयाला रा स्याल रे ॥ ४३ ॥
 यांरे साध कहितां विरीयां नही रे, असाध कहितां नहीं कोइ बार रे।
 ज्यानें रात दिवस निवेदतां रे, त्यांसूं प्राद्धित विनाइ कर ले आहार रे ॥ ४४ ॥
 आहार पांणी भेलो कीयां पछें रे, जब तो सरघे मांहोमां साध रे।
 वले आहार पांणी तूटां पछें रे, करे मन मानें ज्यू विषवाद रे ॥ ४५ ॥
 यांरे उसभ उदे रा जोग सूं रे, दिन दिन इधको बघें छें मिथ्यात रे।
 वले वेधा उठायां रे नव नवा रे, ते इवरज वाली बात रे ॥ ४६ ॥
 धर्म अधर्म टाले आठ दांन में रे, केई कहें छें निकेवल धर्म रे।
 केई मिश्र कहें छें आठ दांन में रे, ए तो भूला मांहोमांहि भर्म रे ॥ ४७ ॥
 नव प्रकारे पुन नीपजें रे, यांरे ते पिण सरधा नही एक रे।
 उंची करें मांहोमां परूपणा रे, तिणमें विगटें छें बोल अनेक रे ॥ ४८ ॥
 केइ कहें सुपातर कुपातर भणी रे, सचित्त अचित्त देवें हर कोय रे।
 तिणमें एकंत धर्म पुन नीपजें रे, केइ कहे मिश्र धर्म होय रे ॥ ४९ ॥
 कोरो काचो अनादिक रांध सेक ने रे, सर्व जीवां नें देवें कोय रे।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें धर्म नें पाप दोय रे ॥ ५० ॥

आघाकर्मी वेंहरावे कोइ साध नें रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे ॥ ५१ ॥
 कोई नेंहुत जीमावें श्रावकां भणी रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे ॥ ५२ ॥
 भात वरोटी खरचादिक जीमण करे रे, आरंभ कर कर जीमावे सारी न्यात रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे विख्यात रे ॥ ५३ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, सगलां ने देवे अणुकम्पा आंण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांण रे ॥ ५४ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, राधे रांवे सगला ने देवे कोय रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहें छे धर्म ने पाप दोय रे ॥ ५५ ॥
 खणावें तलाव कूआ बावडी रे, घणा जीवां री अणुकम्पा आंण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तांण तांण रे ॥ ५६ ॥
 कोइ काचो पांणी पावे सकल नें रे, ते पिण अणगलीयो तिणमें तसकाय रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण माय रे ॥ ५७ ॥
 काचो पांणी उकाले भर भर ठामडा रे, साधां ने बेहरावण ताहि रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माहि रे ॥ ५८ ॥
 काचो अणगल पाणी उंनो करे रे, सगलां ने पावा कांम रे ।
 तिण में केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र धर्म कहे तांम रे ॥ ५९ ॥
 केई जायगां करावे छे जू जूइ रे, सगलां ने माहे रहवा कांम रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण ठाम रे ॥ ६० ॥
 मठ आसन बंधावे जोगी कारणे रे, भगत काजे मढी ने धर्मसाल रे ।
 तकीयो बंधावे फकीर रें रे, जती काजे उपासरो पोसाल रे ॥ ६१ ॥
 थांनक करावे केई साध रे रे, श्रावक काजे पोषघ साल रे ।
 घर हाटादिक भवन मेंहलायतां रे, करावे जयाजोग संभाल रे ॥ ६२ ॥
 इत्यादिक जायगां कर कर देवें सकल नें रे, ते हण हण जीव छ काय रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण मांय रे ॥ ६३ ॥
 पाट वाजोट करावे विरष वाढ नें रे, पछे देवे सगला नें दान रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें कर कर तांन रे ॥ ६४ ॥
 केई वसतर वणाय धोवाय ने रे, पछे देवे सगलां ने ताहि रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें तिण मांहि रे ॥ ६५ ॥
 केई दोपद चोपद देवें सकल ने रे, देवे सोना रूपादिक सारी घात रे ।
 तिणमे केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे ॥ ६६ ॥

देवें लूणादिक पृथ्वी काय नें रे, वले सगलां नें घालें तेउकाय रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छें तिण मांय रे ॥ ६७ ॥
 इत्यादिक दान देवें छे ग्रहस्थी रे, त्यां दरबां रा नांम अनेक रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र री कर रह्या टेक रे ॥ ६८ ॥
 उंधी सरघा मांहोमां यारे दान री रे, तिणरो कहितां कहितां न आवें पार रे ।
 उंधो सरघें छें बोल अनेक में रे, यारे इसडो छें मांहोमां अंधार रे ॥ ६९ ॥
 सुध असुध सगलां ने देवें तेह में रे, जोग वरतें मन वचन नें काय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७० ॥
 सुध साधां नें असुध देवें तेहमें रे, जोग वरतें मन वचन काय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७१ ॥
 धर्म कहें कुपातर दान में रे, ते गमावें मिश्र रो खोज रे ।
 कहें मिश्र री सरघा माठी घणी रे, तिणनें छोड दो सूतर सोभ रे ॥ ७२ ॥
 कहे ध्यान लेस्या मिश्र नही रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणाम रे ।
 ए च्याहूं भला के च्याहूं बुरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥ ७३ ॥
 सचित अचित सगलां ने दान देवतां रे, भला परिणाम भला अधवसाय रे ।
 वले ध्यान भलो लेस्या भली रे, जे मिश्र कहें ते मूसावाय रे ॥ ७४ ॥
 छ काय हणे पोषें सकल नें रे, तिणमें धर्म कहां म्हें इण न्याय रे ।
 उण रा परिणाम दान देवां तणा रे, जीव हणवा रा नहीं अधवसाय रे ॥ ७५ ॥
 दान देवां काजे हणे छ काय नें रे, तिणनें पाप न लागें अंस मात रे ।
 सर्व जीवां नें पोष्यां धर्म एकलो रे, मिश्र कहें ते मिथ्यात रे ॥ ७६ ॥
 मिश्र कहें कुपातर दान में रे, धर्म कहे त्याने करें भंड रे ।
 उणरी सरघा उठावे जडां मूल थी रे, वले देवें प्रायच्छित डंड रे ॥ ७७ ॥
 छ काय हणे छे उदीरनें रे, तिणरो मूल न सरघें छें पाप रे ।
 ए तो मारग छोड उजड पड्या रे, करे हिसा में धर्म री थाप रे ॥ ७८ ॥
 धर्म कहे कुपातर दान में रे, त्याने जाबक भूठा ठहराय रे ।
 करे मिश्र धर्म री थापना रे, कूडा कूडा कूहेत लागाय रे ॥ ७९ ॥
 छ काय हणी ने पोषें सकल ने रे, हिसा हुई तिणरा लागा कर्म रे ।
 धर्म हूवो साता पाई तेहनों रे, इण लेखें कहां छां मिश्र धर्म रे ॥ ८० ॥
 इण विध करें मिश्र री थापना रे, धर्म कहें त्याने भूठा घाल रे ।
 एक एक री करे उथापना रे, यारे सोकां वालो जाणों साल रे ॥ ८१ ॥
 यारे सरघा परूपणा तो जू जूई रे, रह्या जूदो जूदो मत भाल रे ।
 वले साध मांहोमांहि लेखवे रे, आ तो चोडें पाषंडीयां री चाल रे ॥ ८२ ॥

याने कहे मांझेमा लाव लेखवे रे, कडे लेखवे मांझेमा असाव रे।
 याने गेल्लो बाको जाणो पेंहरगो रे, ए जो मांझेमा करे उपाव रे ॥ ५३ ॥
 गेल्लो कडे तो पेंहे जंप मुं रे, कडे नगन वूडे कपडा न्हांव रे।
 झं ए माव थाप नें वेलें मद्ये रे, थारे फूडो अन्तर आंवे रे ॥ ५४ ॥
 क काम व्ही नें पेंपें तकळ नें रे, तिगमें कडे कहे बर्म एकट रे।
 कडे मित्र कहे पाप धमे रे, ए दोनूडे मूठ मखंत रे ॥ ५५ ॥
 मित्र कहे कुयतर वंत धं रे, तिग गाला मांसे गोला फेळ रे।
 का जन्म उडे पंथ काडोये रे, तिगमें लोक रूखा कडे वेका रे ॥ ५६ ॥
 मित्र कहे कुयतर वंत मं रे, तें किगती मुरर मं नती वात रे।
 का मित्र मूगह रो फळीयां रे, तिगण वट मांहे धार मिथ्यात रे ॥ ५७ ॥
 किगने मत मित्तो रो न्यात मू जूड रे, तिगने कती डे वृकस जात रे।
 जू कडे मित्र पळें पाप धमे रे, तिगने वृकसीयां मिथ्यात रे ॥ ५८ ॥
 मित्र कहे कुयतर वंत मं रे, तिगरा कडे कट रो नती थाप रे।
 का किंवा तिग मांहे अन वजा रे, उण रे कुवूव कडयह रो माग रे ॥ ५९ ॥
 किग नें वंत किगिया रो मत करे रे, अज रड जितो कहे पाप रे।
 का कहे मेक जिगो रे, करे एखा मित्र रो थाप रे ॥ ६० ॥
 जिगें वंत किगिया रो मत नती रे, अज मेक जिगो कहे पाप रे।
 का कहे रडे जितो रे, करे एखा मित्र रो थाप रे ॥ ६१ ॥
 का कहे काम थोडें नें सोदो धयो रे, कडे कहे थोडें वयो काम रे।
 का रो कडे कट रो वेंहेवो नती रे, मत मानो जूं जाहे जाव रे ॥ ६२ ॥
 याने वाने का ल्यावे वाडो पाव नें रे, पळे तांने भांगे सोरी वळ रे।
 झूं मित्र पळें वंत मं रे, अज तिगरा जाला जरीद अनेक रे ॥ ६३ ॥
 सोकर केंवा मीग मं रे, सीग सीग मं सीग रे।
 झूं मित्र पळें त्यारी वात मं रे, बीग बीग मं बीग रे ॥ ६४ ॥
 काकळ वाडो आकरी रे, अज उडे वूर वूर मं वूर रे।
 झूं मित्र पळें त्यारी वात मं रे, वूर वूर मं वूर रे ॥ ६५ ॥
 वाजर वंत वाव नरे रे, व्हट वंत मं व्हट रे।
 झूं मित्र पळें त्यारी वात मं रे, मूठ मूठ मं मूठ रे ॥ ६६ ॥
 वोर मिले उजाह मं रे, करे मसपट मसपट मं मसपट रे।
 झूं मित्र पळें त्यारी वात मं रे, कचट कचट मं कचट रे ॥ ६७ ॥
 वेरुड वाने मूले तिहं रे, वंज वंज मं वंज रे।
 झूं मित्र पळें त्यारी वात मं रे, वंज वंज मं वंज रे ॥ ६८ ॥

कपटी आलोचन करे तेहनें रे, रहे सल सल में सल रे।
 ज्यू मिश्र परुषें त्यांरी बात में रे, गल गल में गल रे ॥ ६६ ॥
 थोरी नेवर नें मगरे छेडव्यां रे, लागे तोट तोट में तोट रे।
 ज्यूं मिश्र परुषे त्यांरी बात में रे, खोट खोट में खोट रे ॥ १०० ॥
 बलतो दीवो तिहां आय नें रे, मरे पतंगीयो भांफ रे।
 ज्यूं मिश्र धर्म नें थापवा रे, पापी मारे फांफां में फांफ रे ॥ १०१ ॥
 धर्म अधर्म करणी जू जूई रे, बले जुदा जुदा छे पुन ने पाप रे।
 एक करणी में दौय न नीपजे रे, भूठी कीधी मिश्र री थाप रे ॥ १०२ ॥
 ध्यान लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नहीं अधवसाय परिणाम रे।
 ए च्याहूं भला के च्याहूं बुरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥ १०३ ॥
 छ काय हणी पोषे कुपातरां रे, त्यांरी माठी लेस्या माठो ध्यान रे।
 अधवसाय परिणाम माठा तेहना रे, ते निरणो करो बुधवांन रे ॥ १०४ ॥
 धर्म अधर्म मारग दौय छे रे, पिण तीजो पंथ न कोय रे।
 तीजो मिश्र मिथ्याती भूठो कहे रे, आप डूबें ओरां नें डबोय रे ॥ १०५ ॥
 छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणमें कहे निकेवल धर्म रे।
 ते मारग छोड उजड पड्या रे, भूला अग्यांनी भर्म रे ॥ १०६ ॥
 छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणरा चोखा कहे अधवसाय रे।
 ध्यान लेस्या परिणाम पिण चोखा कहे रे, ते तो चोडे भूला जाय रे ॥ १०७ ॥
 पाप न गिणे छ काय हणी तेहनो रे, धर्म गिणे कुपातर पोष्यां मांय रे।
 ते दोनूं विघ बूडा बापडा रे, साधु नाम धराय रे ॥ १०८ ॥
 प्रतष हणी छ काय उदीर नें रे, त्यांरा हणवा रा न गिणे अधवसाय रे।
 ओ मत साकमती पाषंडी तणो रे, जोवो सूयगडा अंग मांय रे ॥ १०९ ॥
 साकमती पाषंडी इम कहे रे, कोइ हणे बालक जांणी सोय रे।
 जो उ राखें परिणाम तूंबडा तणा रे, तो बालक रो पाप न होय रे ॥ ११० ॥
 इत्यादिक यांरी उंधी सरखा सुणी रे, जब आदर कुमार बोल्यो तांम रे।
 प्रतष बालक मारे उदीरनें रे, त्यांरा चोखा किहां थी परिणाम रे ॥ १११ ॥
 बालक माख्यां रो पाप थे गिणो नहीं रे, तो थें बूडा खोटो मत भाल रे।
 याने आदर कुमार निषेध्यां घणा रे, जाबक भूठा घाल रे ॥ ११२ ॥
 ज्यूं केई हणे छ काय उदीरनें रे, पछे पोषे कुपातरां रा थाट रे।
 तिणमें धर्म निकेवल कहे तिके रे, साकमती पाषंडी रे पाट रे ॥ ११३ ॥
 ज्यूं केई जीव हणे छ काय नां रे, पोषें कुपातरां नें ताय रे।
 त्यांरा ध्यान लेस्या खोटा घणा रे, बले खोटा घणा परिणाम अधवसाय रे ॥ ११४ ॥

धर्म कहे कुपातर पोषीयां रे, त्यांरी प्रतष भूळी बात रे।
 जीव हिंसा रा पाप न लेखवें रे, त्यारे भारी छें गूढ मिथ्यात रे ॥११५॥
 आगे हिंसावर्मी हुवा घणा रे, त्यां हिंसा धर्म री कीषी थाप रे।
 पिण ए सगला हिंसा धर्म्यां सिरें रे, ते जीव माखां रो न गिणे पाप रे ॥११६॥
 नमसकार पुन कह्यो सिघंत में रे, यारे ते पिण सरघा नही एक रे।
 करे जुदी जुदी परूपणा रे, तिणमें विगटे छे बोल अनेक रे ॥११७॥
 नमसकार कुपातर नें करे रे, नीचो सीस नमी जोडे हाथ रे।
 तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे विख्यात रे ॥११८॥
 सात नरक में नेरीया रे, ते खाए छे मार अन्त रे।
 केई पुन कहें त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छें एकंत रे ॥११९॥
 भड सूरा गवा कुता कागला रे, त्यांनें नमसकार करे कोय रे।
 तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई कहे एकंत पाप होय रे ॥१२०॥
 जलचर मछ कच्छादिक डेडका रे, थलचर चोपदादिक जाण रे।
 वले उरपर भुजपर ने षेहचरा रे, ए तिरजच भेद पिछांण रे ॥१२१॥
 इत्यादिक तिरजंच ने तिरजंचणी रे, त्यांरो कहितां कहितां नावे अंत रे।
 केई पुन कहे त्यांने वादीयां रे, केई पाप कहे छे एकंत रे ॥१२२॥
 भील कसाई थोरी बावरी रे, तुरक मेर मंगादिक जाण रे।
 वले भंगी ढोली ने सरगरा रे, ढेढ जटीया अनेक पिछांण रे ॥१२३॥
 वले तीनसो तेसठ पापंडीयां रे, उच नीच सगला मिनष नांम रे।
 केई पुन कहे त्यांनें वादीया रे, केई पाप कहे छे तांम रे ॥१२४॥
 च्यार जात रा देवी नें देवता रे, त्याने वादे कोइ सीस नाम रे।
 तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे तांम रे ॥१२५॥
 भवानी भेरुं ने खेतला रे, गोगा मोगा अनेक विघ जाण रे।
 जष भूतादिक चूरामणी रे, ए विन्तर जात पिछांण रे ॥१२६॥
 इत्यादिक मेला देवी ने देवता रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
 तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२७॥
 जीव अजीव री सगली थापना रे, त्यांने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
 तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२८॥
 नमसकार पुन में यारे वेदो धणो रे, ते कहितां कहितां नावें पार रे।
 एक थापे एक उथपें रे, यारे इसडो छे मांहोमांहि अंधार रे ॥१२९॥
 ते न्याय निरणो थारे नही रे, ए बूडे छे कर कर रुढ रे।
 वले साव मांहोमांहि लेखवें रे, ए इसडा अग्यांनी छे मूढ रे ॥१३०॥

पातर कुपातर उंच नीच नें रे, सगलां नें कीयां नमसकार रे।
 तिण माहें लाभ कहें तिके रे, विनेवादी पाषंडी रो पिरवार रे ॥ १३१ ॥
 विनेवादी पाषंडी इम कहे रे, सगलां नें नम्यां गुण होय रे।
 ज्युं पुन कहें सगलां नें नम्यां रे, त्यांने पिण जाणो तिमहिज सोय रे ॥ १३२ ॥
 नमसकार सगलां नें कीयां थकां रे, केई कहें बंधे पुन थट रे।
 ते विनेवादी पाषंडी तणो रे, यां राख्यो अग्यात्यां पाट रे ॥ १३३ ॥
 केई वादे पूजें छें कुपातरा रे, वले वादे अजीव नें कोय रे।
 तिणमें पुन परुयें विकल थकां रे, त्यांमें निश्चें समकत न होय रे ॥ १३४ ॥
 साधु आहार करें छे कारणें रे, तिणमें कहे छें पाप रे।
 केई कहे धर्म एकलो रे, यांरे ये पिण नहीं छें मिलाप रे ॥ १३५ ॥
 साधु आहार करें छे कारणें रे, तिणमें पाप कहे ते बोलें भूठ रे।
 त्यां भेष भांड्यो भगवान रो रे, दीधी मुगत मारग ने पठ रे ॥ १३६ ॥
 यांरे सरधा सामग्री तो जू जू रे, जुदी जुदी परुपणा छें ताहि रे।
 कदे आय पडें यांमें सांकडी रे, जब भूठ बोली मिल जाय रे ॥ १३७ ॥
 परदल कटक देखें आवतो रे, जब सगला नूनर एके हो जाय रे।
 परदल कटक पाछो फिच्यां रे, सगला नूनर बीखर जाय रे ॥ १३८ ॥
 ज्युं साधु आयां देख गांम नगर में रे, सगला भेषधारी एके थाय रे।
 वले साधु बीहार कीयां पछें रे, ये पिण खोटा कहें मांहोमांय रे ॥ १३९ ॥
 ए कदेक मांहोमां उथपें रे, कदेक देवें मांहोमां थाप रे।
 मोह कर्म उदे रा मतवाल सूं रे, ए बांधे छें बोहला पाप रे ॥ १४० ॥
 यांरे सरधा सामग्री मत जू जू रे, त्यांरे विगटें छे बोल अनेक रे।
 पिण सुध सावां नें निषेधवा रे, हुवे मांहोमांहि पापीडा एक रे ॥ १४१ ॥
 मांहोमां करें कलेस कदाग्रहो रे, यांरे सरधा खोटी घणी गॅर रे।
 यांरे साधु तो निजर पड्यां थकां रे, जाणो जाग्यो पूर्वलो वॅर रे ॥ १४२ ॥
 जो तुरक देखे करकांटीयो रे, तो जागे तुरकां नें, घेष रे।
 ज्युं भेषधारी देखें साध ने रे, त्यांने जागे घेष वशेष रे ॥ १४३ ॥
 तुरक कहे इण करकांटीये रे, म्हांरा सॅद मराया इण बताय रे।
 तिणसूं वॅरी म्हांरो करकांटीयो रे, उ बेर मांगां छा ताय रे ॥ १४४ ॥
 ज्युं भेषधारी कहे छे सावां भणी रे, यां कीधो छे म्हांरो उघाड रे।
 करडी कर कर परुपणा रे, म्हांरा श्रावक लीधां पाड रे ॥ १४५ ॥
 किरकांटीयां नें तुरक देख नें रे, मांरें कूटे बोले घणा गॅर रे।
 ज्युं भेषधारी देखें साध ने रे, तो जागें अभितर वॅर रे ॥ १४६ ॥

श्रद्धा री चौपई : ढाल १

भेष अंधारी परगट करी
संवत अठरें छतीसे समे

रे,
रे,

बागडी
काती

सहर सुद पुनम

मभार
मंगलवार

रे।
रे ॥ १४७ ॥



ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

केई आहार न मानें केवली भणी रे, केई कहें केवली करे आहार रे सुगुणनर॥
 यामें साची भूठी सरघा केहनीं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छें विचार रे । सु० न० ।
 जोयजो अंधारो भेप में रे लाल॥ १ ॥
 यां दोयां जणां में एकण तणी रे, खोटी सरघा साख्यात रे । सु० ।
 बले साब मांहोमांहि लेखवें रे, ते दोयां जणां रे मिथ्यात रे ॥ सु० जो० २ ॥
 देस उणो कोड पूर्व लगे रे, विनां कीयाई आहार रे ।
 दोलें चालें जीवें किण विघे रे लाल, आ पिण नहीं सभक लिगार रे ॥ ३ ॥
 केई कहें तीथंकर बोले नही रे, यारे अतिसय गुंजे रह्यो मांय रे ।
 केई कहें तीथंकर बोलता रे लाल, बवहार भापा नें सत वाय रे ॥ ४ ॥
 यामें एक तो भूठो असाध निश्चें खरो रे, तो ही गिणे मांहोमां साघ रे ।
 ते निरणों नही घट भित्तरे रे, त्यारे किण विघ होसी समाघ रे ॥ ५ ॥
 जो तीथंकर बोले नहीं रे, तो किण कह्यो पूर्व ग्यान रे ।
 लोक अलोक तणा भाव किण कह्यो रे, केवली विण किण नें आसान रे ॥ ६ ॥
 केई अछेरा दस मानें नहीं रे, केई मानें अछेरा तीन काल रे ।
 यामें एक तो भूठो निसंक सू रे लाल, ते पिण विकलां रे नही छे नीकाल रे ॥ ७ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिणरी सरघा कहें छें असुब रे ।
 बले तेहीज तिणनें साधु गिणे रे लाल, तो दोनूं जणां री भिट बुब रे ॥ ८ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिण सूतर दीया उथाप रे ।
 ते आप छ्त्रदे उंधी अकल सू रे लाल, ते कर रह्या कूड विलाप रे ॥ ९ ॥
 केई कहें केवल ग्यान साब नें रे, उपजे वारा थी थाय रे ।
 केई कहें केवल ग्यान उपजे रे, ते तो मांहि थी परगट थाय रे ॥ १० ॥
 केवल ग्यान वारा थी उपनों कहे रे, तिणरी खोटी छे मिथ्याविट रे ।
 तिण जीव नें ग्यान न्यारो गिण्यो रे, तिणनें साघ गिणे ते ही भिट रे ॥ ११ ॥
 केई कहें महावरत देसथी रे, तिणमें इविरत रो आगार रे ।
 केई कहें महावरत सर्व थी रे लाल, साध रे नहीं इविरत लिगार रे ॥ १२ ॥
 जिण साधु रे महावरत देसथी रे, ते नियमा निश्चें नहीं साघ रे ।
 तिण देस विरती नें साघ कहे रे, ते पिण निश्चें असाघ रे ॥ १३ ॥
 साधु रे महावरत सर्व थी रे, ठांणा अंग दसवीकाल मांय रे ।
 बले उवाइ सुयगडा अंग में रे, साधु रे नहीं इविरत कांय रे ॥ १४ ॥

*यह जाँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल २

पाच महावरत सर्व थी रे, तिणमें कूड नही तिल मात रे।
 केई कहे महावरत देस थी रे, ते निक्वे मिथ्याती साख्यात रे ॥ १५ ॥
 देस महावरत तो हुवे नही रे, महावरत तो सर्व थी होय रे।
 देस विरत कीयां श्रावक हुवे रे, तिणने साव म जाणों कोय रे ॥ १६ ॥
 कोइ देस विरती ने सावु कहे रे, ते पूरा मूंड गिवार रे।
 ते निक्वे मिथ्याती मूल्या रे लाल, सावु श्रावक री पात वार रे ॥ १७ ॥
 आहार उपघ सावु भोगवे रे, तिणमें केई कहे निरजरा धर्म रे।
 केई परमाद ने इविरत कहे रे, तिणमें जाणे मिथ्याती पाप कर्म रे ॥ १८ ॥
 आहार उपघ सावु भोगवे रे, तिणमें जाणे मिथ्याती पाप कर्म रे।
 तिण मूंड मती ने सावु गिणे रे, ते पिण भूला अयाती भर्म रे ॥ १९ ॥
 साव आहार कीयां माहे पाप छे रे, तिणरो किण विच होसी उवार रे ॥ २० ॥
 तिण सावु नें पाप भेला कीयां रे, जूयो जूयो छे त्यारो समाव रे।
 नवपदारथ छे जूया जूया रे, त्यारो मूड न जाणे न्याव रे ॥ २१ ॥
 गिने रूडी रीत न ओलख्या रे, त्यारो जीव ने एक अजीव रे।
 केई नवपदारथ ने इम कहे रे, आठ जीव ने एक अजीव रे ॥ २२ ॥
 एहवी करे छे परुपणा रे लाल, कर कर खांच अजीव रे।
 केई नव पदारथ मे इम कहे रे, एक जीव ने एक अजीव रे ॥ २३ ॥
 सात जीव तणी परजाय छे रे, ते तो नही छे जीव अजीव रे।
 केई नवपदारथ मे इम कहे रे, पाच जीव ने च्यार अजीव रे ॥ २४ ॥
 एहवी करे छे परुपणा रे, कर कर खांच अजीव रे।
 ए तीनोइ सरघा छे जू जूइ रे, एकण टोला ममार रे।
 कले साव मांहोमां सरघ ने रे, भेलो करे अग्यानी अहार रे ॥ २५ ॥
 त्यांरी सरघा तो मांहोमां जू जूइ रे, नही माने एक एक री बात रे।
 तोही करे संभोग साव सरघ ने रे, त्यारो प्रतष देखो मिथ्यात रे ॥ २६ ॥
 याने इतरी तो समरु पडे नही रे, ते तो पूरा छे मूंड गिवार रे।
 ते ववेक विकल सुघ बुध विनां रे, त्याने मूर्ख सरखे अणमार रे ॥ २७ ॥
 त्याने श्रावक पिण इसडा मिल्या रे, त्यांरा षट माहे घोर अंधार रे।
 त्याने इतरी पिण समरु पडे नही रे, ते पिण पूरा छे मूंड गिवार रे ॥ २८ ॥
 केई कहे पुन पाप जीव छे रे, केई कहे पुन पाप अजीव रे।
 केई कहे जीव अजीव दोनू नही रे लाल, यामें कृण छे मिथ्याती जीव रे ॥ २९ ॥
 जो तीनोइ ने कहे समकती रे, तो वूड गई छे त्यांरी बात रे।
 खोटी ने साची सरघा रो निरणो नही रे, त्यांरे आय चूकों छे मिथ्यात रे ॥ ३० ॥

कोई आश्रव नें कहे जीव छें रे, कोई आश्रव नें कहे अजीव रे ।
 कोई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे लाल, जूआ जूआ बोलें छें निसदीव रे ॥ ३१ ॥
 संवर निरजर मोष नें रे, कोई कहे छें जीव साख्यात रे ।
 कोई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण वद वद बोलें छें विख्यात रे ॥ ३२ ॥
 कोई कहे छें बंध अजीव छें रे, कोई कहे छें बंध छें जीव रे ।
 कोई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण कर कर तांण अतीव रे ॥ ३३ ॥
 इण विष सरखा छे जू जूइ रे, वले भेलो छें त्पारो संभोग रे ।
 त्यामें संजम समकत किहां थकी रे, त्पारे मोटो मिथ्यात रो रोग रे ॥ ३४ ॥
 यारे सरखा तो मांहोमाहि जू जूइ रे, वले सरखे मांहोमां साध रे ।
 सुध साधां ज्यूं लोकां में पूजावता रे, त्पारे किण विष होसी समाध रे ॥ ३५ ॥
 याने श्रावक वादि साध जांण नें रे, ते श्रावक विकल समांण रे ।
 थूंही वूडे छे बापडा रे, त्पारां घट मांहें घोर अग्यांण रे ॥ ३६ ॥
 वले तिरण तारण जांणें एह्णें रे, इसडी गाढी बेठ छे धार रे ।
 तें सुध बुध विनां जीव बापडा रे, भव भव में होसी खुवार रे ॥ ३७ ॥
 त्यां विकलां ने छेरव्यां थकां रे, तो लडवा नें छे तयार रे ।
 त्यां सूं न्याय निरणो हुवे नहीं रे, करवा वेठ छे भगडो ने राड रे ॥ ३८ ॥
 यारे सरखा रो मूंह माथो नहीं रे, वले मिष्ट छे आचार रे मांहि रे ।
 ते विकलां नें समझ पडे नहीं रे, कूडी पख भाले रह्या ताहि रे ॥ ३९ ॥
 साधां रे आल देतां सके नहीं रे, वले निन्दा करण नें सूर रे ।
 भागल मिष्ट नें वांदि गुर जांण ने रे लाल, त्यां सूं दुरगति नहीं छे दूर रे ॥ ४० ॥
 खोटी सरखा रा मिष्टी ओलखायवा रे, जोड कीधी माघोपुर मझार रे ।
 संवत अठारे अडतालसमें रे लाल, आसोज सुद छठ ने सोमवार रे ॥ ४१ ॥

ढाल : ३

दुहा

नमूँ वीर सासण घणी, ते पोंहता पद निरवाण ।
जनम मरण दुख खेय करी, मेट्या आवण जाण ॥ १ ॥
जे भाव भगवंते पळपीया, ते गणधरे गूंथ्या जाण ।
ते भेषवाखां रे पाने पख्या, उंघा करे अर्थ अयाण ॥ २ ॥
ते छठे गुण ठाणे निरंतर कहें, आरत ने धर्म ध्यान ।
ते परमारथ पायां विनां, बोले विकल समां ॥ ३ ॥
श्री वीर कह्यो एकण समें, दोये ध्यान न ध्यावे कोय ।
आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, धर्म ध्यान किहा थी होय ॥ ४ ॥
एहवी पिण समझ पडे नही, बले ओर पळ्ये विरह ।
आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, कहे लेस्या तीनुईं मुघ ॥ ५ ॥
आरत ध्यान ध्यावे तिण समें, आछी लेस्या किहा थी होय ।
जे बवेक विकल हुवा तेहने, आ पिण खबर न कोय ॥ ६ ॥
लेस्या नें आरत ध्यान री, यारा लखणा सू खबर पडंत ।
त्यांरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो कर खत ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अणुक्रम्या जिश आगन्या मे]

आरत ध्यान ध्यायां माठी लेस्या आवें, तिण मांहे संका मूल म आणो ।
आ प्रतप साची वात उथापें, कांय बूडो कूडी कर कर ताणो ।
माठो ध्यान ध्याया माठी लेस्या आवें ॥ १ ॥
कहे छठे गुणठाणे आरत ध्यान ध्यायां, जब पिण कहे लेस्या वरते छे रडो ।
इसडो पळ्ये लोकां में अग्यानी, त्यांरी प्रतप सरघा कूडी रे कूडी ॥ १० ॥ २ ॥
ज्यारे भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने तो जाबक साब न सरघे ।
ए प्रतप लोकां आगे पळपी, ते तो छानी वात न राखी पळे ॥ ३ ॥
भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने जो उ साघ सरघे तो दीससी भूजे ।
जो छ लेस्या वाला नें साघ सरघे वांदे, तो उ आप री सरघा रे लेखें कूजे ॥ ४ ॥
कदे उसभ जोग साधु रा बरतें, जब लेस्या पिण साधु रे माझे आवें ।
तिण उसभ जोगां में मूढ भियाती, लेस्या तिनईं लडी कावें ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कदे साधु चारितीयो मोहकर्म वस,
 खेती करसण आदि करे सुपनां में,
 वले विणज करे सुपनां में साधु,
 वले माठाई जोग नें माठीई लेस्या,
 कदे विषे कषाय माठा जोग वरतें,
 हस्त कर्मादिक कोइ करे कुचेष्टा,
 कदे कलहो करे साधु कर्म तणें वस,
 करडा काठा वचन काढे कर्म तणें वस,
 कदे लोलपणो आवे आहारादिक सूं,
 कदे फोरवे लब्ध कतूहल निमते,
 कदे शब्दादिक गमता अणगमता,
 कदे इरषा मांन बडाई पिण आवे,
 इत्यादिक जागतां सूतां सुपनां माहे,
 जब माठोई ध्यानं माठी लेस्या आवे,
 उसभ जोग आरतध्यान सरधे साधु रे,
 ते सूने चित सूतर बांचे मिथ्याती,
 आगे आगे हुआ मोटा साध रिषेसर,
 त्यां आलोई पडिकमे प्रायच्छित लीघो,
 सीहो मुनी मोटें मोटें शब्दे रोयो जब,
 जब पिण सीहा में आछी लेस्या बतावे,
 बाल भाव एमंता मुनीसर नें आयो,
 ए प्रतष सावद्य किरतब कीघो,
 रहनेम चलो देख राजमती नें,
 त्यांनें पिण माठो ध्यानं माठी लेस्या आई,
 इत्यादिक मोटा मोटा संत रिषेसर,
 ते आलोइ पडिकमी प्रायच्छित लीघा,
 केई भेष धाख्यां री एहवी सरधा,
 ते सूतर अर्थ जाणें नही मोला,
 पेहले सतक भगोती रे पहले उदेंसे,
 तिणरा पाठ अर्थ री समभ पड्यां विण,
 द्रव ने भाव लेस्या रा गुण नहीं जाणें,
 भाव लेस्या री ठोड कहे द्रव लेस्या,

सुपनां माहें सेवे कांम नें भोग ।
 जब माठी लेस्या नें माठा जोग ॥ ६ ॥
 वले पड जाए सुपनां में आल जंजाल ।
 थें समभो रे समभो सुरत संभाल ॥ ७ ॥
 कदे मईथुन संग्या साधुरे आवें ।
 जब पिण माठी लेस्या साधु में पावें ॥ ८ ॥
 आहार पांणी सिखादिक रे कांम ।
 जब माठी लेस्या ने माठा परिणाम ॥ ९ ॥
 कदे आंसू पिण मोह कर्म वस आवे ।
 जब पिण माठी लेस्या साधु में पावे ॥ १० ॥
 त्यांसू पिण कदे थाए हरष ने सोग ।
 जब माठी लेस्या ने माठा जोग ॥ ११ ॥
 कदे साधु रा वरते छे उसभ जोग मेला ।
 ते परमारथ जाणे नही गेला ॥ १२ ॥
 पिण लेस्या नें सरधे साधु माहें भूडी ।
 परमारथआयां विण त्यांरी पिडताई बूडी ॥ १३ ॥
 त्यांने माठी लेस्या आई उघडी ।
 ते सांभलजो भवीयण विसतारी ॥ १४ ॥
 आरतध्यान ने माठी लेस्या आई ।
 त्यां विकलां नें सूतर री समभ न काई ॥ १५ ॥
 जब पांणी पातरो दीयो तिराई ।
 जब माठोई ध्यानं माठी लेस्या आई ॥ १६ ॥
 खोटा मन सूं काढी खोटी वाय ।
 तिण माहें संका मत आंणो कांय ॥ १७ ॥
 त्यांने कर्म जोगे माठी लेस्या आई ।
 पिण ववेक विकला नें खबर न काई ॥ १८ ॥
 कहे साधां नें माठी लेस्या नही आवे ।
 गाला रा गोला घड घड चलावे ॥ १९ ॥
 वले ठांणां अंग रे तीजे ठांणे ।
 पीपल बांधी मूरख ज्यू ताणे ॥ २० ॥
 ते तो द्रव लेस्या री ठोड भाव लेस्या बतावे ।
 ते ववेक विकल भोलां ने भरमावें ॥ २१ ॥

भाव ने द्रव लेस्या जिणेसर भाषी,
 त्यारो विवरो कहूं सूतर में भाख्यो जिम,
 भूडा भला वरण गन्ध रस परस छे,
 जब जीव रा लखण भूडा भला आवे,
 पांच आश्रव परमाद आरभ ना जोग,
 यां माहिला केयक छठे गुणठांणे,
 इरषा ने मिरषा विषे अभिलाषा,
 रस रा लोल्पी ने साता रा गवेषी,
 वचनें करे बाकां ने बंक आचरले,
 वले राग नें वेष अदत मछर भाव,
 तीन माठी लेस्या माहिला लषण,
 जो छठे गुणठांणे आरत ध्यान सरधो,
 आरत ध्यान नें तीन माठी लेस्या रा,
 जो मिले सारिषा तो सरधलो एक,
 आरत ध्यान रा च्यार भेद कहाा जिण,
 अणगमता शब्दादिक आय मिलीया,
 मन गमता शब्दादिक आय मिलीया,
 आतंक रोग आय सरीरे उपनो,
 सेवीया काम भोग रा संजोग मिलीयां,
 ए आरत ध्यान रा भेद चारुई माठा,
 जे करे आक्रंद मोटे मोटे सब्दे,
 दलगीर होय आंसू न्हावे रोवे,
 ए च्यारुं माठा लषणां आरत ध्यान जाणो,
 ए माठो ध्यान ध्यायां माठी लेस्या आवे,
 कदे आरत ध्यान साधु रे आवे जब,
 आरत ध्यान ध्यावे साधु तिण माहें,
 ए तो आरत ध्यान रा भेद ने लषण,
 एहवो आरत ध्यान साधु ध्यावे जब,
 आरत ध्यान आयो साधु रे वतावे,
 कोइ एहवी परूपे मूढ मिथ्याती,
 भेषवारी कहे म्हारा सर्व टोला मे,
 त्याने आप तणा किरतव नही सूभे,

त्यांरा लखण जूआ जूआ ओलख लीजे ।
 ते सुण सुण घट माहें निरणो कीजे ॥ २२ ॥
 एहवा गुण सूं दरब लेस्या पिछांणो ।
 ते गुण सूं भाव लेस्या ने जांणो ॥ २३ ॥
 इत्यादिक लषणां किस्न लेस्या पिछांणो ।
 साधु नें कदेयक लागता जांणो ॥ २४ ॥
 वले वेष परमाद बोले भूठ वाय ।
 ए लषणां सूं लेस्या नील कहवाय ॥ २५ ॥
 वले कपट ने दोष रो ढांकण हारो ।
 इत्यादिकमाठा लषण कापोत रा धारो ॥ २६ ॥
 तेहीज लषण आरत ध्यान रा जांणो ।
 तो माठी लेस्या सरधण री कांय मांडी तांणो ॥ २७ ॥
 कोइ लषण मीढी जोय करी विचारा ।
 न मिले तो सरधलो न्यारा ॥ २८ ॥
 ते सांमलज्यो भवीयण चित ल्याय ।
 जब तिणरो विजोग वाछे, वेष ल्याय ॥ २९ ॥
 ते संजोग वाछे रागी थको जांण ।
 तिणरो विजोग वाछे वेष आंण ॥ ३० ॥
 ते पिण संजोग वांछे राग आंण ।
 त्यांरा लषणां री बुधवंत करजो पिछांण ॥ ३१ ॥
 वले दीन पणो करे सोग संताप ।
 वले करे अनेक विघ मोह विलाप ॥ ३२ ॥
 च्यार भेद कहाा ते पिण माठा जांणो ।
 तिण माहें संका मूल म आंणो ॥ ३३ ॥
 लेस्या पिण साधु रे माठी आवे ।
 मूढमती लेस्या आछी वतावे ॥ ३४ ॥
 उवाइ उपंग ने ठांणाअग मांय ।
 लेस्या पिण माठी व्यापें आय ॥ ३५ ॥
 जब माठी लेस्या आड नही वतावे ।
 इसडा अन्हाखी ने कुण समभावे ॥ ३६ ॥
 माठी लेस्या कदे नही व्यापे आय ।
 त्यांरा टोला रा चारित सुणोचित ल्याय ॥ ३७ ॥

आहार पांणी रे कारण करे लडाई, बले लडतां विदतां लोट पातरा फूटे ।
 जब पिण कहें माठी लेस्या न आई, ते निश्चें अग्यांनी लागी मत भूठे ॥ ३८ ॥
 बले चेला चेली आप करवा काजें, करे मांहोमांहि भूठा भगडा ।
 जब पिण कहे माठी लेस्या न आई, एहवा भूठ बोले पाषंडी बगडा ॥ ३९ ॥
 त्यांरा टोला में पग पग इसको खेचो, बले पग पग कर रह्या भगडा ने राड ।
 ए प्रतप उवाडी माठी लेस्या देखो, पिण समझे नही मुँढ मिथ्याती गिवार ॥ ४० ॥



ढलल : ॡ

दुहल

केई भेषघलरी जेंन रल, ते भलषे अग्यलंनी अललल ।
तुलनेशुरलदुक ववेक वलकल मललुल, ते डूरल अग्यलंनी वलल ॥ १ ॥
ते सुतर अरुथ उंघल करी, भलषे हलसल घरुम ।
तुलरी सरघल सुण सुण वलडल, वलंघे वुहलल करुम ॥ २ ॥
कहे सलघलं री अणुकुडुडल आंण नें, जीव मलरे मलथुलती कुुडुड ।
तलणरे एकंत डुन नीडुनो कहे, डुड रू वंघ न हुडुड ॥ ३ ॥
सलधु कडुतू देखे सीतकल में, कुडुड गृहसुथ अगन ललगलड ।
डुकड तडलवे तलण सलघ ने, तलणरे डुन तणू वंघ थलड ॥ ॡ ॥
इण वलघ डुन कहे हलसल कुुडुड, ते वलकललं ने खडर न कलड ।
तुलरी सरघल डुरगड कुुडुड थकलं, ते डुरतलं डलण वलर न कलंड ॥ ॡ ॥
डुलरी सरघल ने कुडुड कडुड री, कहुी कडल लल गलड ।
हलवे थूडी सी डुरगड कहुं, ते सुणकुुडुड कुुडुड लुललड ॥ ॢ ॥

ढलल

[३ डुरलशुी करुडुड सडुु नही कुडुड...]

सलधु ने कडुतू देख सीडलले, कुडुड अणुकुडुडल मलथुलती आणुे ।
तलण अगन ललगल सलधु ने तडलडुु, तलणडे डुन अग्यलनी आंणुे रे ।
कुडुडतुलं हलसल डे घरुड कलड थलडु* ॥ १ ॥
तलण अगन ललगल सलधु ने तडलडुु, ते हुंतू जीव मलथुलती ।
सलघ थरुई इण डें डुन डुरुडे, ते डलण उणरू सलथी रे ॥ कुडुड २ ॥
सलधु तू डुख सुं नलं नलं कहुलतल, तूही डुकड वेंसलण तडलडुु ।
तलण डुुतू अकलरुथ कुुडुड अग्यलंनी, तलणडे डुन कलहलं थुी थलडुु रे ॥ ३ ॥
सलधु अगन रू आरंभ अनरुथ आंणुुडुु, कुडुड कहुुडू डुुनें कलडे नलंही ।
तूने डलण ए कलड कुगतू नही छे, डुड आंणुु नलडेघुु तुलंही रे ॥ ॡ ॥
कुु डुन आंणुु तू सलधु नही नलडेघतल, नलडेघुु कुडुड आंणुुु छे डुड ।
अनरुथ डुड आंणुुु तलण डलंहे, डुन री कलरुडुड कलरुडुड थलडुु रे ॥ ॡ ॥
सलधु ने तडलवे अगन ललगलड, तलणडे सलधु तू डुन कहे नलंही ।
केई जेन तणल भेषघलरी अग्यलनी, डुन कहे तलण डलंही रे ॥ ॢ ॥

*डुह आंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनुत डे हू ।

साधु तो पेंहलां अनर्थ जाण निषेद्यो, पछें कह्यो थारे पुन बंधणो।
 इसडो भूठ साधु किम बोले, थानें आ पिण नही छे पिछांणो रे ॥ ७ ॥
 साधु ने अगन ल्माए तपाए, तिणमें पुन कहे छे पापंबी।
 वले सावपणा रो नाम घरावे, तिण भेष ले आतम भंडी रे ॥ ८ ॥
 साधु ने अगन ल्मायो तपायो, तिणरी लेस्या कहे छे रूडी।
 वले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, सरधा छे जाबक कूडी रे ॥ ९ ॥
 साधु ने अगन ल्माय तपायो, तिणरी लेस्या घणी छे भूडी।
 वले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, बुध अकल गई बूडी रे ॥ १० ॥
 एक चिरमी जितरी तेउकाय में, जीव असंघ बतावें।
 तो अगन जाले नें साधु नें तपायो, पुन कहितां लाज न आवें रे ॥ ११ ॥
 अगन रा आरंभ सूं दुरगत बंधे छे, दसवीकालिक छठो घेन जोय।
 तो साधु नें तपावण अगन जलायां, पुन किहांथी होय रे ॥ १२ ॥
 केइ जनम मरण मूकावण काजें, तेउकाय हणे छे कोय।
 अहेत ने अबोध कह्यो छे तिणरें, आचारंग पेंहलो घेन जोय रे ॥ १३ ॥
 आठ कर्म गांठ बंधे अगन आरंभ सूं, वले मोह मार नरक होय।
 इसडा फल लागे अगन हणयां सूं, तो पुन किहांथी होय रे ॥ १४ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे हेवें, मदबुधी हणे तेउकाय।
 वले मार अनती नरक निगोद में, ते जोवो दसमां अंग मांय रे ॥ १५ ॥
 साधु नें तपायां में पुन जांणे ते, खूध्यान तणो भेद तीजो।
 जो बंध पडे तो पडे नरक रो, ठांणअंग उवाई जोय लीजो रे ॥ १६ ॥
 साधु रे काजें अगन ल्माए, पछे साधु ने पकड तपावे।
 तिणरी आछी लेस्या नें पुन बंध कहितां, विकलां नें लाज न आवे रे ॥ १७ ॥
 कोइ त्रिषा सूं पीढ्या साधु नें पकड नें, मुख फाडे काचो पांणी पावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावें रे ॥ १८ ॥
 कोइ भूख सूं पीढ्या साधु नें पकड नें, मुख फाड ने सचित खवावे।
 जो अगन तपायां पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ १९ ॥
 उजाड माहे थाका साधु नें पकड नें, गाडे उंट घोडे बैसावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २० ॥
 कोइ सीयां मरता साधु नें पकड नें, अगन अणमिलीयां राली ओढावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २१ ॥
 कोइ साधु रो पेट दुख्यो जाणे जब, अबमादिक उकाली पावे।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावे रे ॥ २२ ॥

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल ४

कोइ साधु रो शरीर मेले देखी ने, पकडे सिनांन करावे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २३ ॥
 कोइ साधु रा कपडा मेला देखी नें, खोस नें काचा पांणी सूं घोवे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन होवे रे ॥ २४ ॥
 कोइ साधु रा काजें जायगां कराए, साधु नें राखे तिण मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, साधु काजें पिण पुन थाय रे ॥ २५ ॥
 इत्यादिक अनेक बोलां में, साधु काजें हणें छे काय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, सगलां में पुन थाय रे ॥ २६ ॥
 जो किण ही बोला में पुन बतावे, किण ही में कहे पुन नाहीं ।
 तो उण रे लेखें उण री बोली में, अंधारो घणो घट मांही रे ॥ २७ ॥
 पुन कहे साधु नें अगन तपायां रे, ते उठी जठथी भूठी ।
 तेउकाय माखां रो पाप न जाणें, त्यारी दया दिल सूं गइ उठी रे ॥ २८ ॥
 कोइ संघारा माहें मुब फाडे ने, असणादिक घाले मुब मांय ।
 जो अगन तपायां रो पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ २९ ॥
 कोइ त्यागवाला रो मुब फाडे नें, त्यागी वसत घाले मुब मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ ३० ॥
 त्याग वालां रो त्याग भंगवे, ते जीव छे भारी कर्मो ।
 सूस भाग्या भंगायां निश्चें पाप बंवे छे, पिण निश्चें नही पुन घर्मो रे ॥ ३१ ॥
 ओर रो सूस भंगायांइ बूडे छे, बंवे छें पाप कर्म ।
 तो साधु रा सूस भंगवे तिण रे, किण विघ होसी पुन नें घर्म रे ॥ ३२ ॥
 सूसवालो जो सेठें रहेसी, तिणरो तो सूस न भांगो ।
 पिण सूस भंगावण वालो तो बूडो, तिणरे निश्चेंइ पाप कर्म लागो रे ॥ ३३ ॥
 आहार सेज्या वसतर नें पातरा, साधु नें असुख वेंहरावे ।
 तिणनेइ एकंत पाप हुवे छे, तो अगन तपायां पुन किम थावे रे ॥ ३४ ॥
 साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे तिणरी बुव माठी ।
 ते कहिणवालां ने सरघवालां रे, हीया आडी आइ छें पाटी रे ॥ ३५ ॥
 साधु नें अगन तपावें तिणमें, पुन कहे मिथ्याती काय ।
 तिणनें सूतर ससतर ज्यूं परगमीया, ते बूडा मानव भव खोय रे ॥ ३६ ॥
 साधु ने अगन सूं तपावें तिणमें, पुन कहे ते भारी कर्मा जीव ।
 तिण आल दीयो अनता अरिहंत ने, घणी करसी नरकां में रीव रे ॥ ३७ ॥
 साधु ने अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे ते बोले छें कूड ।
 ते प्रतप हिंसावर्मी अनारज, त्यांरा पिडतपणा में धूड रे ॥ ३८ ॥

साधु नें तपायां में पुन परूषें, तिणरी अकल में घणो छे अंधारो ।
 बले विवध मिथ्यात छे तिणरा मत में, कहितां न आवें पारो रे ॥ ३६ ॥
 मिथ्याती साधु नें तपावे अगन सूं, तिणने थें पुन बतायो-
 श्रावक तपावे तिणने पाप बतावो, ओ किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ ४० ॥
 श्रावक ने पाप मिथ्याती नें पुन, ए उंधी सरघा कांय ज्ञापो रे ।
 अगन रो आरंभ दोनूं जणा नें, कीघां छें एकंत पापो रे ॥ ४१ ॥
 साधां ने अगन सूं तपावे श्रावक, तिणने पाप कहो ते तो न्याय ।
 मिथ्याती तपावे तिणने पुन कहें छें, ओ तो निश्चे उघाडो अन्याय रे ॥ ४२ ॥
 ए हिंसा धर्मी ओलखावण काजें, जोड कीवी नाथ दुवारा मभारो रे ।
 संवत अठारे वरस तयांले, सावण विद अमावस-मंगलवारो रे ॥ ४३ ॥



ढाल : ५

दुहा

केयक विगडायल जेंन रा, त्यारे ग्यान नहीं घट मांय ।
भूठ बोले अग्यांनी निडर थकां, त्यांनीं परभव चिता न कांय ॥ १ ॥
कोइ तपसा करे साध साधवी, त्यांरी निद्या करे दिनरात ।
आल अणहूता टेक दे, त्यांरी मूरख माने वात ॥ २ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

धोवण पाणी चास आछ राखे नें, कोइ तपसा करे मोटी नानी रे ।
तिण तपसा ने मूरख छोटी जाणे, ते पूरा मूढ अग्यांनी रे ।
यां भूठवोलां रो संग न कीजे * ॥ १ ॥
चास पाणी राखे ओर सगलोई त्याग्यो, ते तो अणोदरी तप मोटें रे ।
तिण तपसा री निद्या करे पापडी, त्यांरो नीमा निश्चे मत खोटें रे ॥ यां ० २ ॥
तपसी तणा गुण ग्राम करे तो, करमां री कोड खपावे रे ।
उत्तकष्टो पद तीथकर पामे, तिणरा ओगण अग्यांनी गावे रे ॥ ३ ॥
तपसी तणा गुण कीघाई धर्म, तो तपसा कीघा में इधको छे धर्मो रे ।
कोइ तपसा करे त्यांरी निद्या करे छे, ते तो निश्चे वावे जाडा कर्मो रे ॥ ४ ॥
तपसी तणा गुण हर कोइ गावे, ते गुण खमणी न आवें रे ।
तिण सू अजाण लोका ने कर कर तीखा, त्यां आगा सू ओगुण वोलावें रे ॥ ५ ॥
तपसी रा ओगुण बोले बोलावे, ते तो दोनूं परकारे वूडे रे ।
ते माठी गति जावा ने वीद वण्या छे, भारी होय जासी नरक रे तूंडे रे ॥ ६ ॥
भगवंत भावी वारे भेडे तपसा, तिणरो मूरख न्याय नें जाणें रे ।
तिणसूं मूढ मिथ्याती भारीकर्मा, निद्या करता संक न आणें रे ॥ ७ ॥
एक सीत मातर कोइ ओछो खाए, ते जिगन अणोदरी जाणो रे ।
जिम जिम उदर उणो इधको राखे, तिम तिम अणोदरी तप पिछाणो रे ॥ ८ ॥
पांच विगें एक विगें किण त्यागी, ते पिण तपसा जाणो रे ।
तो पांचोइ विगें सर्वथा त्यागी, ए रस त्याग तपसा पिछाणो रे ॥ ९ ॥
इण अणुसारे तपसा रा भेद घणा छे, तिण में लाभ कह्यो जिणराया रे ।
तो चास पाणी राखें सगला दरब त्याग्यां, तिणमें तो बोहत निरजरा थायो रे ॥ १० ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक सीत त्याग्यां एक ब्रिों त्याग्यां में, तिणमें पिण कटें छें कर्मों रे ।
 तो चास उपरंत सारी वसत त्यागी, ते मोटो तप निरजरा धर्मों रे ॥ ११ ॥
 एक दिन चास राखें सारी वसत त्याग्यां, तिणमेंइ निरजरा थावे रे ।
 तो चास राखें त्याग करें महीना लग, ते कर्मा री कोड निश्चें खपावें रे ॥ १२ ॥
 तिण तपसा रा कोइ ओगुण बोलें, आतमा नें लगावे छे कालो रे ।
 तिण अरिहंत वचन उथाप्यो अग्यांती, दे दे अणहूंतो आलो रे ॥ १३ ॥
 चास टाले ओर सगली वसत त्यागी, ते गुण मूले न सूमें रे ।
 मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं, दिन दिन इघका अलूमें रे ॥ १४ ॥
 तिणनें श्रावक मिलीया अतंत अग्यांती, त्यानें आंवा ज्यूं मूल न सूमें रे ।
 त्यां आगें मन मानें ज्यूं गोला चलावें, तो पिण बलतो जाब न बूमें रे ॥ १५ ॥
 थारा मत मांहें कोयक बुववंत हुवें तो, तुरत जाणें तिणनें कूडो रे ।
 तो छोड देंत तंतकाल खोटो जाणीं, भूठा बोला रे मुख देइ धूडो रे ॥ १६ ॥
 तपसी तणा गुण कानें मुणे जब, वलें अग्यांती री छ्छाती रे ।
 वले उलटा ओगुण काढें तपसा, ते निश्चें जीव मिथ्याती रे ॥ १७ ॥
 संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद नवमी सनीसर वारो रे ।
 मड मती ओलखावण काजें, जोड कीची नाथ द्वारा मभारो रे ॥ १८ ॥

ढलल : ६

दुहल

च्यलर सलघवलयां चोमलसो कीयो, पलइ गलम मभरल ।
 तलण में दुष्टी पलपी जीवडल, ललल दीघल वलवघ प्रकर ॥ १ ॥
 कुण-कुण ललल उठलय नें, दीयल लोकरां में फेलय ।
 थोडल सल प्रगट करूं, ते सुणज्यो चलत्त ल्यलय ॥ २ ॥

ढलल

[लरलरलद सडकलत उवरें रें ललल]

दीख्यल लेवल नें उठलयो, तलणरो लेले दुग्यलनी नलम ।
 तलण वेंहरलइ वस्तु, असूभती, सूखडलडलदलक तलम रें ।
 दुष्टी ललल देतल संक्यल नही* ॥ १ ॥
 पचलस रुपलयां री सूखडी, सलघवलयां नें वेहरलइ ललण रें ।
 मोल मंगलए मेडतल थकी, इसडी कहे छे कर कर तलण रें ॥ दु० २ ॥
 मोल ललण वेहरलइ सूठनें, ते पलण वेहर लीघी ततकलल रें ।
 वले वलसी रलखी कहे सूठ नें, ओ पलण दीयो अग्यलनी ललल रें ॥ ३ ॥
 सलघवलयां करजें सीरो करलय नें, सलघवलयां नें दीघो वेंहरलय रें ।
 ओ पलण ललल दीयो छे पलपलयां, वले दीयो लोकरां में फेलय रें ॥ ॡ ॥
 घृत ने खोपलरलदलक मोल ले, सलघवलयां ने वेंहरलय तलम रें ।
 एहवी वलत उठलए पलपलया, वकवो करे ठलम ठलम रें ॥ ५ ॥
 डलवडल नें सूंस लर्यल दीयल, परणवल रल करलय त्यलग रें ।
 ओ पलण ललल दीयो छे पलपलयां, त्यलरो जलणज्यो पूरो अभलग रें ॥ ६ ॥
 छकरलय हणवल रल सूंस करलवलया, घर में रहलवल रल त्यलग करलय रें ।
 यल तीनल नें उचकरलय लर्यल, ओ पलण एकंत मूसलवलय रें ॥ ७ ॥
 भोज पत्र रलख्यो कहे सलघव्यल, वसीकरणलदलक करवल तलहल रें ।
 ओ पलण ललल देइ नें पलपलयां, फेलयो लोकरां मलंहल रें ॥ ॡ ॥
 रलते थलनक मे रलख्यल डलवडल, ओ पलण वोल्यो हललहल भूठ रें ।
 तलणरें वेख घणो लर्यल थकी, लोकरां में कीयो भूठो फलत्तूर रें ॥ ९ ॥
 एक जणी ललल इसडो दीयो, फीणल रोट्यल कर कर च्यलर रें ।
 म्हे तो वेंहरलइ लर्यल भणी, एकण दलन मभरल रें ॥ १० ॥

* यह अकडडी प्रत्येक गलथल के अन्त में हल ।

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे मांहि रे ।
 कर्मा वरा बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नांहि रे ॥११॥
 दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातीलां उठाइ बात रे ।
 त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे ॥१२॥
 वले भेषघास्यां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे ।
 ते आल, फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काडे निकाल रे ॥१३॥
 केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यां रे सावां सूं धेष अतंत रे ।
 त्यांनं अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे ॥१४॥
 ते तो आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे ।
 ते तों दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हारे हाथ रे ॥१५॥
 फिरे छें ठाम ठाम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठाम ठाम रे ।
 आयां री उतारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणाम रे ॥१६॥
 केइ दोष उतारे आणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे ।
 सांघवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पडिवजियो मिथ्यात रे ॥१७॥
 भूठा दोष उताख्या पापियां, ते पापणी लिया उतार रे ।
 त्यांरी बात साची कर मानसी, ते पिण बूडसी कालीधार रे ॥१८॥
 दोष उतारिया त्यांनं पूछणों, थें दोष उतारिया किण काम रे ।
 ए थें साचा उतारिया जाण नें, के थें भूठा जाणें नें ताम रे ॥१९॥
 ए तो दोष कहे लोकां मरुं, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे ।
 आयां री उतारणें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे ॥२०॥
 त्यांनं लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिता न काय रे ।
 भूठ बोलती पिण सके नहीं, मन मानें ज्यूं बोले ताय रे ॥२१॥
 आल उतार आयां तणा, पांमी मन मांहे हरष रे ।
 जाणें झकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे ॥२२॥
 ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरें कर बेठीं अनंत संसार रे ।
 ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नहीं छें लिगार रे ॥२३॥
 आहार अशुद्ध वेंहख्यो छे जाण नें, वले कहे मै वेंहख्यो निरदोष रे ।
 इम भूठ बोले जाण जाण नें, एहवा मिष्टी न जाए मोष रे ॥२४॥
 आहार पांणी वेंहख्यो छे सुभतो, वले पूछ करे निरधार रे ।
 त्यांनं भारीकर्मा केइ जीवडां, आल देता न सके लिगार रे ॥२५॥
 यां दोषां रो निकालो काडियो, पाद्गाम मझार रे ।
 घणा बाई भाई बेठां थकां, आयां में नहीं दोष लिगार रे ॥२६॥

आल : दीयो अन्हांकी : पापिया, त्यांरो हुवो : घणो फितूर रे ।
 तोही, नागा निरलज लाजें : नहीं, त्यांरा जन्म जीतव ते विकार रे ॥ २७ ॥
 यां : आल दीयो अन्हारविया, त्यांरी मांती छे साची वात रे ।
 तें : पिण बूड गया छे, वापडा, तिण. में संका : नहीं. तिलमात रे ॥ २८ ॥
 एहवा : आल सुणे भेषधारिया, साचा कर मान लीघा ताय रे ।
 ए मिण गाम नगर कहता फिरें, मन. में हेरषत थाय रे ॥ २९ ॥
 भेषवाच्यां ने वोया पापियां, आर्या ने भूठा दे आल रे ।
 ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढें नहीं निकाल रे ॥ ३० ॥
 यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसें एहिज परिणाम रे ।
 ए दोष सुण ने हरषे घणा, जाणें सरिया मन वछित काम रे ॥ ३१ ॥
 त्यांनें परभव री चिता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे ।
 वले नागडा भडंग हुवा तिके, सके नहीं देता आल रे ॥ ३२ ॥
 ओर जीवां नें कोड आल दे, ते पिण रुले घणो संसार रे ।
 जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामें वास्वार रे ॥ ३३ ॥
 तो साधां नें कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे ।
 भारी कर्म बांध्या तिण पापिए, तिण सूं पामे दुख अथाग रे ॥ ३४ ॥
 कदा बंव पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मभार रे ।
 तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे ॥ ३५ ॥
 साधां रे आल देवे पापिया, मन मांहे उजम आण रे ।
 तिणरी परमाधांमी देवता, जीम काढें जडां सूं ताण रे ॥ ३६ ॥
 साधां नें आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज ने सर्म रे ।
 घणा मे मिश्र भापा बोलता, बांधे महा मोहणी कर्म रे ॥ ३७ ॥
 केइ भूठ बोले ने पापिया, साधां ने देवे आल रे ।
 ते भ्रमण करे संसार मे, उतकष्टों अनतो काल रे ॥ ३८ ॥
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते तो प्रश्न व्याकरण मांहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मभार रे ॥ ३९ ॥
 कदा पाप उदे हुवे इण भवे, तो बवें घणो रोग सोग रे ।
 छेहडो आवे रिद्धि संपत्ति तणो, पडे बालां तणो विजोग रे ॥ ४० ॥
 केइ आधां होय जावे इण भवे, जाबक होय जावे निराधार रे ।
 भीख भमता होवे इण भवे, साधां नें आल रो देवणहार रे ॥ ४१ ॥
 केइ तो अन्न विहूणा मरे, करता थकां विल विलाट रे ।
 साधां नें आल देवे तेहनां, भव भव में हुवे ओहिज घाट रे ॥ ४२ ॥

साधु साधवियां नें आल दे, तिणरो भव भव माहिं अभाग रे ।
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो बेगो न आवे थाग रे ॥४३॥
 इम सांमल नें नर नारियां, किणनेइ म दिज्यो आल रे ।
 आल दीघां रा फल छे पाडुवा, श्री जिण वचन सांमल रे ॥४४॥
 आल दीघां रा फल ओलखायवा, जोड कीषी ईडवा मभार रे ।
 संवत अठारे वर्ष चौपनें, चेत विद चोथ नें बुधवार रे ॥४५॥



ढलल : ७

दुहल

केई अग्यानी इम कहे, सलधु नें जोड करणी नलंही ।
ते अन्हाखी बकवोकरें, त्यारे ग्यांन नहीं घट मलंही ॥ १ ॥
त्यां सलवद्य नलरवद्य न ओलख्यो, नही ओलखी भलषल च्यलर ।
ते जोड करणी उथलपवल, हुवल अग्यानी त्यलर ॥ २ ॥
श्री अरलहंत भलष्यल अर्थ नें, ते गणघरे गुथ्यो सलवंत ।
त्या जोड करी सूतरलं तणी, त्यलरो अर्थ करे मतवंत ॥ ३ ॥
रलषभ देवजी रल सलघलं जोडीयल, पडनल चोरलसी हुजलर ।
श्री वीर तणल सलघलं कीयलं, चवदे हुजलर पडनल सलर ॥ ४ ॥
वले वलचलल वलवीस तलथंकरलं तणलं, सलघलं कीघलं पडनल अनेक ।
तो हलवडलं जोड नलरवद्य करें, त्यांमें दोष म जलंणो एक ॥ ५ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करी ने देखो]

केई केई सलघलं ने जोड न कहणी, कहलतलं बंधे ग्यांनलवरणी कर्मो रे ।
दरसणलवरणी कर्म बंधे जोड सुणीयलं, तलण जोड कहलं नही धर्मो रे ।
चतुर वलचलर करी ने देखो* ॥ १ ॥
पेंहलं तो सलघलं ने जोड कहणी नषेघी, ते ही जोड कहलवल ललगल रे ।
त्यां वलकलं ने सलधु कलण वलच कहलजे, ए तो वरत वलहूंणल नलगल रे ॥ च० २ ॥
जोड कहलं ग्यांनलवरणी कर्म बंधे छें, सुणे ते दरसणलवरणी बलंधे रे ।
हलवे तेहीज जोड कहे तलणरे लेखे, सलमकत चलरलत खोयो आंधे रे ॥ ३ ॥
वले जोड कहे त्यांनें इण वलच कहलतलं, गीतेरण ज्युं गलवें गीतो रे ।
ते पलण जोड नें मलल मलल गलवे, त्यलरी वलकल मलंने परतीतो रे ॥ ४ ॥
जोड कहणी नषेघे ने कहलवल ललगल, त्यांने आय कहे कोड आमो रे ।
थे सलघल ने जोड कहणी नषेघी, थे जोड कहो कलण कलर्मो रे ॥ ५ ॥
जब कहे म्हे जोड नें भली न जलणलं, म्हे कहलं अनेरल नी कीघी रे ।
परनी कीघी जोड कहलं परपेखल, म्हेनें आय मलली छे सीघी रे ॥ ६ ॥
भूठ ललणें जोड करणवलल नें, म्हेनल तो कहलतलं भूठ न ललणें रे ।
म्हे तो जलसी हुवे जलसी कहे वतलवलं, लोक सुणे त्यां आणें रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

पेंलां री जोड कीधी जोड भूंडी जाणों छो, तो थें कांय कहो लोकां आगें रे ।
 लोक पिण जोड सुण नें घणी सरावे, जब सगलां नें भूठ लागें रे ॥ ८ ॥
 जो पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, तो कहि देणों लोकां आगें रे ।
 खोटी जोड नें थें मतीय सरावो, जब किणनेई भूठ न लागें रे ॥ ९ ॥
 खोटी जोड कहे नें थें धिन धिन कहावों, जब बकता सुरता दोनूं बूडा रे ।
 अठें तो ठागा सूं कांम चलावे, आगे चिहूं गति में दीससी भूंडा रे ॥ १० ॥
 पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, पिण मन माहें खोटी जाणों रे ।
 तो होली रा गीत नें गाल परपेखा, ते कहितां संक क्यूं आणों रे ॥ ११ ॥
 यांरा कहिण रे लेखे सगली जोड भूंडी, तो कांय करो टाला टोले रे ।
 कांई जोड कहो कांई कहिता संको, आ पिण थारे लेखे थामें भोली रे ॥ १२ ॥
 जोड कहणी निषेधे ने कहिता जाए, त्यां विकलां री नहीं परतीतो रे ।
 सावद्य निरवद्य विण ओलखीयां, यूही बोले घणा विपरीतो रे ॥ १३ ॥
 केई सावद्य चोरी अनेरा नी कीधी, ते पिण चोप्या कहवा लागा रे ।
 तिण माहें भूठ छें विवध प्रकारें, ते पिण जोड कहिवा नें आगा रे ॥ १४ ॥
 एहवी पिण खोटी जोड कहे नें, लोक रीभावण लागा रे ।
 वले साधु रों विडद धरावें अग्यांनी, ते पिण विरत विहूणा नागा रे ॥ १५ ॥
 वले जोड कहे त्यांनं निनव कहें छें, वले भूठाबोलां कहें तांमो रे ।
 सुयगडाअंग तेरमाधेन रो, ले ले अणहंतो नामो रे ॥ १६ ॥
 वले जोड कहें त्यांनं वदवद घाल्या, वेस्या रा करंडीया माह्यो रे ।
 ठाणाअंग चोथा ठाणा रो नाम लेइ नें, ते पिण मूंसावायो रे ॥ १७ ॥
 निन्व ने वले भूठाबोला कहें छें, वले वेस्या जोडे दीधा रे ।
 वले दोष अनेक कहे जोड कीधां, त्यांरा वचन विकलां मान लीधा रे ॥ १८ ॥
 जोड करे त्यांनं कहें खोटा नें निन्व, जोड ने पिण कहें छें खोटी रे ।
 तेहीज जोड नें पोते कहें छें, ते विकलां रे भोलप मोटी रे ॥ १९ ॥
 वले जोड करे त्यांसूं संभोग भेलो, तिणनें साध गिणें आप सारिखो रे ।
 ते पिण रेलो आप में आवें, त्यांनं आ पिण नहीं छे ठीको रे ॥ २० ॥
 साधां नें निरवद्य जोड करणी उथापें, ते पूरा मूंड गिंवारो रे ।
 निरवद्य न्याय करे जोड साधु, तिणमें नहीं दोष लिगारो रे ॥ २१ ॥
 मतिग्यांन तणा दोय भेद कह्या जिण, नंदी सूतर रे माह्यो रे ।
 सूतर री नेश्राय सूं अर्थ बघारें, सूतर विण बुध फॅलावें तांह्यो रे ॥ २२ ॥
 सूतर विनां कोइ बुध फॅलावें, ते जोड करे निरदोषो रे ।
 च्यार भाषा तणा जे जांण होसी ते, जोड करसी तिको ग्यांन चोखो रे ॥ २३ ॥

ते उतपात री बुध वीर वखांणी,
जिसरो नर देखे जिसरोइज साचों,
सूतर विनां कोइ बुध फेलावे,
सावद्य निरवद्य अकल सूं जाणो,
अणदीठो अणसांभल्यो काने,
एहवो प्रश्न कोइ आय पूछे जब,
भारत रामायणादिक सास्त्र अनेक,
ते साधु भणें सम सूतर हुवें,
अण तीरथीयां रा कीघा सासत्र,
तो पोते जोड करसी तिण मांहे,
केई मिथ्याती जोड करे तिण मांहे,
ते सुणीयां थकां रंग किण विद्य आवे,
साधु तो कुड ने काने करेनें,
जाणें गंगोदक में केसकर घाली,
साधु तो जोड करे छे जुगत सूं,
पिण कुबदी जीव कदागरो माडे,
अनतीरथी री कीघी जीड मांहिलो,
तो इसडी ओलखणा घट ज्यारे,
आचारंग आदि दे सूतर अनेक,
तेहीज सूतर जाणें मिथ्याती,
पुराण कुराण नें श्री जिण आगम,
तेहीज समदिष्टी जाणें तो ग्यांन,
सत असत नें वले मिश्र ववहार,
ते जोड करणी क्यांनें उथापे,
सत नें ववहार भाषा दाय बोले,
यां दाय भाषा सूं जोड करे छे,
ए दाय भाषा बोलण री साघां ने,
दसवीकालक सातमा अधेने,
केई जोड करें केई जोड कहे छे,
जो धर्म होसी तो सगलां ने होसी,
वले उतराधेन गुणतीसमें धेने,
जोड करे प्रवचन दीपावें,

ते तो मेल दे वचन रसालो रे ।
उतर दे ततकालो रे ॥ २४ ॥
ते तो बुध घणी छे भारी रे ।
ते तो करसी जोड विचारी रे ॥ २५ ॥
मन में पिण न कीयो विचारो रे ।
ततपण जाव दे तिणवारो रे ॥ २६ ॥
ते अनतीर्थी कीया ग्रंथो रे ।
ते बुध सूं संवलो करे अर्थो रे ॥ २७ ॥
त्यांने हुता ज्यू रा ज्यू जाणों रे ।
सावद्य किण विद्य आणो रे २८ ॥
कांई सांच कांई कूडो रे ।
जाणे मिली केसर मांहे धूरो रे ॥ २९ ॥
साच कहे सुखदायो रे ।
ज्यू रग दीये चढायो रे ॥ ३० ॥
सूतर करे न्यायो रे ।
सुबदी री आवे दायो रे ॥ ३१ ॥
कूड काने करे ताह्यो रे ।
ते न करें जोड अन्यायो रे ॥ ३२ ॥
ते भाष्या अरिहत भगवानो रे ।
तिणरे हुवे मति अग्यानो रे ॥ ३३ ॥
मिथ्याती जाणें तो अग्यांनो रे ।
तिणरो निरमल मति गिनानो रे ॥ ३४ ॥
ए च्याह्दई भाषा जाणें सोयो रे ।
साधु ने भाषा बोलणी दायो रे ॥ ३५ ॥
ते पिण निरवद्य ने निरदोषो रे ।
त्यांरो मति ग्यांन छे चोखो रे ॥ ३६ ॥
भगवंत आय्या दीघी ताह्यो रे ।
तीजी गाथा माह्यो रे ॥ ३७ ॥
अथवा केई जोड सरावे रे ।
पाप होसी तो सगलां ने थावे रे ॥ ३८ ॥
तिहां अर्थ में गाथा विसतारों रे ।
तिणने होसी लाभ अपारो रे ॥ ३९ ॥

ववहार समकत रा सतसठ बोल, तिणमें पिण ओहीज न्यायो रे ।
 तिणमें आठां बोलां प्रवचन दीपावें, तिहां जोड करणी तिण माह्यो रे ॥ ४० ॥
 वले ठांग अंग नवमां ठांगां माहें, तिहां अर्थ कह्यो छे आंमो रे ।
 नवूं ही पाप सासत्र साध भणें तो, धर्म पुसटों करें तांमो रे ॥ ४१ ॥
 वले चौथें ठांगें च्यार काव्य कह्या छें, गदबंध कथा गीतो रे ।
 ते जोड कह्यां विण किण विध गावें, ते पिच्छांग कीजों रूडी रीतो रे ॥ ४२ ॥
 किण ही जेंहर नीपाए नें पीघों, किणही जेंहर पीघों जाणें सीघो रे ।
 तिण जेंहर थकी दोनूं जणा ततषण, अकाले आउषो पूरो कीघो रे ॥ ४३ ॥
 ज्यूं कोइ जोड करे नें कहें छें, कोइ जोड कहें सीघी जाणों रे ।
 जो जेंहर सरीषी जोड भूठी छे, तो दोयां नें पाप लागसी आणों रे ॥ ४४ ॥
 जिण जेहर नीपाए नें पीघो ते मूंओ, सीघो जेहर पीघो तेही मूंओ रे ।
 ज्यूं जोड करे नें कह्यां पाप लागें, तो सीघी कही त्यांनैंड पाप हूवो रे ॥ ४५ ॥
 जो निरवद्य जोड हुवें इमरत सरीषी, ते कह्यां थकां कटे कर्मों रे ।
 एहवी जोड करे नें कह्यां धर्म निश्चे, सीघी कहणवालांनैंड धर्मों रे ॥ ४६ ॥
 त्यां जोड करणी साधां नें निषेधी, तेहीज जोड करवा लागा रे ।
 ते प्रतष चोडें भूठाबोला छें, ते वरत विहूंगा नागा रे ॥ ४७ ॥
 पेंहलां तो कहितां साधां नें जोड न करणी, ते पिण जोड करवा नें दूका रे ।
 वेण सगाइ तो मेल न जाणें, यूंही कुडीया थका करें कूका रे ॥ ४८ ॥
 त्यांरा बडा बडेरा आगें हूवा ते, साधां नें जोड करणी न थापी रे ।
 त्यानें पिण जाबक भूठा घाले नें, खोटी जोड करवा लागा पापी रे ॥ ४९ ॥
 कोइ निरवद्य जोड सूतर न्याय करता, त्यांरी निन्दा करता दिन रातो रे ।
 हिवे जोड करे त्यांने आछा जाणें, तिण लेखें आगे हुंतो मिथ्यातो रे ॥ ५० ॥
 संवत अठारे नें वरष तयांले, काती सुदि तेरस नें सनीवारो रे ।
 निरवद्य जोड करणी ओलखावण काजे, जोड कीघी कोठाखा मभारो रे ॥ ५१ ॥

ढाल : ८

ढुहा

केई मूंड मिथ्याती जीवडा, ते तों बूडें छें कर कर तांण ।
 ते ववेक विकल सुघ बुघ विनां, जिण मारग रा अजांण ॥ १ ॥
 च्यार पाटीनें काउसग कीयां विनां, कहे सामायक नहीं होय ।
 एहवी उंधी करे छे परूपणा, त्यां सुघ बुघ दीघी खोय ॥ २ ॥
 पेंहिली करणी छें इरीयावइ तसोतरी, पछेकाउसग करणो एक ठाम ।
 पछे लोगस्स कहे सामायक पचखाणी, पछे कहिणों नमोद्युणं तांम ॥ ३ ॥
 ए च्यार पाटीनें काउसग कीयां विनां, सावद्य जोग रा करे पचखांण ।
 तिणरे सामायक नहीं नीपजे, दसडी कहे मूंड अयांण ॥ ४ ॥
 सका घालें लोकां नें अन्हांखी थका, सामाइ री देवें अंतराय ।
 रात दिवस बकवोकरें, तिणरा जाबसुणो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[३ भवियण सेवो ३ साध सथाणा]

च्यार पाटी कहां विण समाइ न करणी, इम कहें त्यांरी सरघा खोटी ।
 ते जिण मारग रा अजांण अग्यानी, त्यांरी अकल मे खांमी छें मोटी रे ।
 भवियण जोवो हिरदय विचारी, थें काय करो आतम भारी रे ।
 भवियण थें छोड दो रुड हीया री* ॥ १ ॥
 छ आवसग मांहे पेहली समाइ, पछें चोवीसत्थो चाल्यो ।
 ते वीर वचन उथापे अग्यानी, ओ घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ भ० २ ॥
 उतराधेन गुणतीसमे घेने, पेंहलां सामायक रो फल भाख्यो ।
 पछे चोवीसत्था सूं पचखांण लग, त्यांरो फल अनुक्रमें दाख्यो रे ॥ ३ ॥
 अनुयोग दुवार मे छ आवसग चाल्या, पेहिलो आवसग समाइ जांणों ।
 पछे चोवीसत्थो वंदणा पडिकमणो, पछे काउसग नें पचखांणो रे ॥ ४ ॥
 समाइ चोइत्थो वंदणा पडिकमणों, काउसग नें पचखांणों ।
 थे सांफ सवेर रो करो पडिकमणो, जव थें इम काय बोले वांणों रे ॥ ५ ॥
 थारे लेखें याने पेहलां कहिणों चोइत्थो, पछे कहिणी थानें समाइ ।
 जो थे पेंहलां नांम सामायक रो लेसो, तो थां में समझ न दीसैं काई रे ॥ ६ ॥

*यह आंकिडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार पाटी कह्यां विण पचखें समाइ, तिणरी थें न गिणों समाइ ।
 जो थें साचा हुवों तो सूतर में बतावो, नहीं तो कूडी कुबद चलाइ रे ॥ ७ ॥
 यारें लेखें तो च्यार पाटी समाइ, ते पिण विकलां नें समरु न काई ।
 सामायक चोइत्थो ओलख्यां विण, यूही करे लपराइ रे ॥ ८ ॥
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, आतमा सुध नहीं होय ।
 आतमा सुध कीयां विण करे समाइ, तो सामायक नही नीपजें-कोय रे ॥ ९ ॥
 एहवी उंधी परूपणा कर कर लोकां में, सामायक री देवें अंतराय ।
 त्यांनैं सूतर सख ज्यूं परगमीया, तिण सूं कूडी करें वकवाय रे ॥ १० ॥
 एहवा मूढ मिथ्याती नें पूछा कीजे, जिण भाष्या बारें वरत सोय ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, कियों कियों वरत नहीं होय रे ॥ ११ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह, ए पांचूइ आश्रव जोय ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा आश्रव ना त्याग न होय रे ॥ १२ ॥
 हिंसादिक अठारे पाप रो सेवण, ते सबंधा सावद्य जाण ।
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण, किसा पाप रा न हुवें पचखाण रे ॥ १३ ॥
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे, जब बोलें अग्यांनी उंधा ।
 त्यारे कर्म जोगें डंक लागा कुगुरां रा, ते किण विध बोलें सूंधा रे ॥ १४ ॥
 त्याग वेंराग री जेभ न करणी, पाप रो क्यांसूं होसी समाइ ।
 वीर कह्यां उतराघेन दसमें अघेन नें, एक समों न करणो परमाइ रे ॥ १५ ॥
 सामायक चारित वीर लीयों जद, च्यार पाटी तो गुणी न दीसैं ।
 सर्व पाप करणो नही मोनैं, इम कह्यां छें श्री जगदीसैं रे ॥ १६ ॥
 इरीया तसोतरी कहे काउसग कीघो, पछें लोगस कह्यां तिण ठाम ।
 इतला माहे घर काम उपनों, तो उ जाय करें घर काम रे ॥ १७ ॥
 पहला सावद्य जोग रा त्याग करे नें, समाइ कर बेंठो एक ठाम ।
 तठा पछें कोइ घर काम उपनों, तो उ जाय न करे घर काम रे ॥ १८ ॥
 च्यार पाटी कहितां नें काउसग करतां, समा व्हें असंभज कालो ।
 जब लग आश्रव नाला छूटा राख्यां, त्यामें पाप आवें दगचालो रे ॥ १९ ॥
 ते तो समे समें सात कर्म लागें छें, हिंसादिक नाला करे प्रवेस ।
 एक एक कर्म रा प्रदेस अनंता, जीव रें लागे एक प्रदेस रे ॥ २० ॥
 किणनैं वेंराग आयो समाइ करण रो, ते हुवो समाइ नें तयार ।
 त्यारें लेखें तो तिणनैं सामायक न करणी, उणनैं पाटी न आवे च्यार रे ॥ २१ ॥
 कोइ तो च्यार पाटी विनां कह्यांइ, सामायक करे हरषत होयो ।
 तिण यारी सरधा सुण छोडी सामाइ, तिणनैं तो यां जाबक बोयो रे ॥ २२ ॥

च्यार पाटी विनां जो न हुवें सामाइ,
 तो इण लेखें तो च्यार पाटी कहां विण,
 च्यार पाटी कहां विण दस वरत न सरधो,
 ओ तो अपच्छेदे ने उंधी सुमी,
 इरीयावही तसोतरी काउसग,
 त्यांनं कहां विनां सामाइ न सरधे,
 लोगस नें नमोत्थुणं त्यांमं,
 त्यांनं कहां विण सामाइ न सरधे,
 यांनं मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं,
 वले प्रवल राग ने घेष उदें छें,
 वावल छुटी घर में आवे कजोडो,
 त्यांमं केई चतुर करें थोडा में,
 केई घर मांसू काढे कजोडो,
 पछे कजोडो ब्रुहारे करें भेलो,
 केई किंवाड जड्यां विण ब्रुहारी देवें,
 वुहारी देवे पिण कचरो न रहें आवतो,
 ज्यू जीव रूपीया घर में कर्म कजोडो,
 त्यांमं केइ चतुर चतुराई करें तो,
 घर जिम तालाव ने रीतो करणों,
 मांहिलो पांणी मोरीयादिक सूं काढे,
 जीव रूपीयो तलाव छे तिणरें,
 पछें तपसा करे ने कर्म खपावें,
 ए उतराधेन रे तीसमें अवेनें,
 ज्यू आश्रव रुवे च्यार पाटी कहां विण,
 संवर निरजरा गुण छें दोनुंइ,
 च्यार पाटी कहां विण समाइ न सरधे,
 समायक उथापण नें मूंड मिथ्याती,
 पिण जिण मारग ओलखीयो छे त्यांरे,
 च्यार पाटी ने काउसग कीयां विण,
 त्यांरी खोटी सरधा ओलखावण काजें,
 संवत अठारे नें वरष पचासे,
 ते सुण सुण नें उत्तम नरनारी,

आ सरधा धारे बेंठो कोइ ।
 वरत न हुवें वारोइ रे ॥ २३ ॥
 नही सरधो सामाइ नें पोसों ।
 ओ तो कर्म तपो छे दोषो रे ॥ २४ ॥
 ए तो पडिकमणा री पाटी ।
 त्यांरी अकल कर्म सूं दाटी रे ॥ २५ ॥
 अरिहंत रा गुणग्राम ।
 ते तो यूंही बके बेफाम रे ॥ २६ ॥
 संवली तो मूल न सुमों ।
 तिणसूं दिन दिन इधिक अलुमें रे ॥ २७ ॥
 ते घर सुव किण विध थायो ।
 विकलां सूं सुघ कीयां न जायो रे ॥ २८ ॥
 जब पेंहलां जडे आडा किंवाडो ।
 पछें न्हाख दे घर रे बारो रे ॥ २९ ॥
 ते कचरो उड उड पाछो आवें ।
 ते घर सुघ किम थावे रे ॥ ३० ॥
 समें समे निरंतर आवें ।
 जीव रूपीयो घर सुघ थावें रे ॥ ३१ ॥
 जब तो नाला रुंधणा पेंहला ।
 जब तालाव खाली हुवेला रे ॥ ३२ ॥
 पेहला आश्रव नाला रुंध ।
 जब निरमल हुवें जीव सुघ रे ॥ ३३ ॥
 पेहला तो आश्रव रुंधवा चाल्या ।
 तिणमेंइ घोचा कुपातरां चाल्या रे ॥ ३४ ॥
 पेला पछे कीयां नहीं दोष ।
 आ उंधी सरधा छे फोक रे ॥ ३५ ॥
 कूडा कुहेंत लगवें अनेक ।
 धारी बात न माने एक रे ॥ ३६ ॥
 नही सरधे छे मूंड समाइ ।
 जोड कीधी सिरीयारी मांहि रे ॥ ३७ ॥
 आसाढ सुद वीज नें रिखवारो ।
 कोइ संका म राखो लिंगारो रे ॥ ३८ ॥



ढलल : ६

दुहा

सासण श्री विरधमान रों, ग्यांनादिक गुण भंडार ।
साध साधवी श्रावक श्रावका, अे तीरथ कह्या जिण च्यार ॥ १ ॥
सर्व विरत धर्म साध रो, देस विरत श्रावक धर्म जाण ।
ए दोनूंद धर्म छें निरमला, समदिष्टीयां लीया छे पिच्छाण ॥ २ ॥
बीस भेद कह्या संवर तणा, बारां भेदां निरजर रा जाण ।
संवर निरजरामें श्रीजिण आगन्या, तिणसूं जीव पोंहचें निरवाण ॥ ३ ॥
साध श्रावक रा धर्म में, हिंसादिक नहीं तिलमात ।
ओ निरवध धर्म परूपीयो, चौवीसमें जगनाथ ॥ ४ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
ते भिष्ट छें सरधा आचार में, अरू बरू लो देख ॥ ५ ॥
ते पिण साधु बाजें छें लोक में, भूला अग्यांनी भर्म ।
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रह, यामें कहे छें धर्म ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रहो, यामें जिण कह्यो एकंत पाप ।
त्यामें धर्म परूप्यों अनार्या, श्री जिण वचन उथाप ॥ ७ ॥
ते चोरें कहितां तो लाजा मरे, वले काम पड्यां फिर जाय ।
ते सरधा कहे छें किण विधें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ८ ॥

ढलल

[२ भविष्य जिण आगन्या...]

कहें समदिष्टी नें पाप न लागे, जो उ करे हर कोइ काम ।
इसडी परूपणा करे अग्यांनी, भूठो ले ले सूतर रो नाम रे ।
कुमत्यां आ सरधा कठा सू धारी रे, थें कांय करो आतम भारी रे ।
इण सरधा सू धणी खुवारी* ॥ १ ॥
कहें समदिष्टी सतरें पाप सेवें, त्यांनें पाप रों अंस न लागों ।
इसडी उंधी सरधा परूपें छें त्यांरे, मोटो लागों मिथ्यात रो दागों रे ॥ २ ॥
कहें समदिष्टी देवता नें देवी, भोग भोगवें विवध प्रकार ।
वले कीला करै छें अनेक प्रकारें, त्यांनें पाप न कहो लिंगार रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सक्र इन्द्र कोणक री भीड आए ने, दोय दोय संगराम कीघा भारी ।
 एक कोड असी लाख मानव मूआ, इंद्रां ने पाप न कह्यो लिंगारी रे ॥ ४ ॥
 काली कुमरादिक दसोई भायां नें, चेडे माख्या एकेके वाण ।
 थें चेडा राजा नें पाप लागो नही जाणों, तो थें पूरा छो मूंड अयाण रे ॥ ५ ॥
 भरतादिक चक्रवत हुआ समदिष्टी, राज कीघो छ षंड रो आपो ।
 वले अनेक अस्त्रीयां सूं भोग भोगवीया, त्यांनो मूल न सरघो थें पापो रे ॥ ६ ॥
 सकडाल पुतर थो वीर नो श्रावक, तिण घाल्या सडकडां निहाव ।
 थें तिणमेंइ पाप न सरघो रे विकलां, थें पको कीघो वुडण रो उपाव रे ॥ ७ ॥
 वीर तणो श्रावक आणंद हुंतो तिण, पांचसो हलवा खेती कीघी ।
 तिणने खेती रो पाप लागो नहीं सरघें, तिण नरक तणी नीव दीघी रे ॥ ८ ॥
 समदिष्टी श्रावक घर माहें बेंठा, त्यां आरंभ कीघा अनेक ।
 त्यांने आरंभ कीयां रो पाप न जाणें, ते वूडें छें विनां ववेक रे ॥ ९ ॥
 त्यांनो चोडे प्रश्न पूछ्यां लाजां मरें जब, दरबे पाप लागो बतावे ।
 कूड कपट करे निज सरघा ढांकण ने, ज्यूं त्यूं कर नें पार होय जावे रे ॥ १० ॥
 दरबे पाप तो पाप छें नाहीं, दरबे साध ते साधु नाही ।
 दरब तीर्थंकर ते तीर्थंकर नाही, विचार देखो मन मांही रे ॥ ११ ॥
 दरबे साध ने दरबे तीर्थंकर, त्यांने गिणती में गिणीया नाहीं ।
 ज्यूं दरबे पाप कहिवा नें कहीजे, तिण सूं दुख उपजे नही काई रे ॥ १२ ॥
 त्यां विकलां ने वले पूछा कीजे, पाप कह्यो थे दरब ने भावो ।
 तो थे दोनुंइ पाप रा जूआ जूआ फल, जथातथ कहि बतावो रे ॥ १३ ॥
 भावे पाप तणा फल कडवा बतावो, दरबे पाप रा फल कह्यो मीठा ।
 ए विख बात बताया लोकां में, परोला हाथां सूं फीटा रे ॥ १४ ॥
 दरबे नें भावे दोय बतावो, जो दोया रा फल कडवा बतावो ।
 जब तो दरब भाव एक कह्या थे, दोय कह्या किण न्यावो रे ॥ १५ ॥
 आ भूछी बकरोल करे लोकां में, भोलां नें कांय भरमावो ।
 दरबे ने भाव रो नांम लेइ नें, गोला कांय चलावो रे ॥ १६ ॥
 समदिष्टी ने पाप लागो न सरघो, पाप लागो कह्यो किण लेखे ।
 थें तो हीयाफूट गधा रा साथी, निज सरघा साह्यो क्यूं नही देखे रे ॥ १७ ॥
 थारी अंतरग में सरघा उंधी, जावक खोटी^१ जवून ।
 समदिष्टी भोग भोगवें त्यांनो, सरघो छो निरजरा पुन रे ॥ १८ ॥
 सतरे पाप सेळे समदिष्टी तिणमे, थे जाणो छो कटता कर्म ।
 वले पुन तणा थोट बंधीया जाणो, थारे मूदे तो ओ तंत घर्म रे ॥ १९ ॥

समदिष्टी श्रावक र इण विघ, नीपनों जाणो छो धर्म ।
 कांम भोग तणी अभिलाषा हुवें जब, भोग भोगवे ने तोडें कर्म रे ॥ २० ॥
 समदिष्टी आरंभ करें अनेक प्रकारें, खेती आदि दे विणज व्यापार ।
 इण किरतब में निरजर रा पुन जाणें, यांरी सरघा नें तीन धिकार रे ॥ २१ ॥
 केई समदिष्टी तो घर हाट करावें, करें छ काय संघार ।
 तिणमेइ पाप न जाणों रे कुमत्यां, थें बुड गया काली धार रे ॥ २२ ॥
 समदिष्टी श्रावक रे कांम पडें तो, करें संगराम अनेक ।
 तिणमेंइ थें धर्म ने पुन जाणों, थें बुडें छो विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 केई समदिष्टी खाएं चुगली नें चाडी, पेंला रो घर देवें गमाई ।
 तिणमें धर्म जाणों पिण पाप न जाणों, आ पूरी थारी विकलाइ रे ॥ २४ ॥
 केई समदिष्टी करें सिनांन सपाडा, रंगा चंगा रहें नित न्हाइ ।
 त्यांनं पिण पाप लागो नही सरघो, थारी अकल गइ दपटाइ रे ॥ २५ ॥
 श्रावक समदिष्टी मइथुन सेवे, ते भोग तणी छें लील ।
 श्रावक रा मइथुन नेश्चें कुसील, तिण कुसील नें जाणो सुसील रे ॥ २६ ॥
 हिवें कहि कहि नें कितरोक कहुं, समदिष्टी करें अनेक आरंभो ।
 तिणनें पाप लागो नहीं सरघो, थारी सरघा रो बडो अचंभो रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी नें पाप लागो नहीं सरघो, आ तो उठी जठाथी भूठी ।
 प्रतष पाप कीयां में पाप न जाणों, थारी हीया निलाड री फूटी ॥ २८ ॥
 समदिष्टी श्रावक नें पाप लागो न सरघो, आ सरघा कठा सूं काढी ।
 आगम उथाप नें अंबला पडीया, मोष तणी वरत वाढी रे ॥ २९ ॥
 श्रावक नें सुसीलीयो कह्यो छे, तिणरो थें भेद न जाणो ।
 थें कुसील ने सुसील जाणों नें, पीपल बांधी मूर्ख जिम ताणो रे ॥ ३० ॥
 इविरती समदिष्टी अधर्मी, श्रावक धर्मीअधर्मी दोनुंइ ।
 श्रावक नें एकंत धर्मी सरघे, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ३१ ॥
 इविरत रो पाप लागें श्रावक नें, किरतब करें जिसों पाप होइ ।
 श्रावक रें पाप लागो न सरघे, ते चाल्या जनम विगोइ रे ॥ ३२ ॥
 उवाइ सुयगडाअंग माहें, श्रावक धर्मीअधर्मी चाल्यो ।
 श्रावक नें एकलो धर्मी कहें, थें घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ ३३ ॥
 श्रावक नें पाप लागो न कहे मिथ्याती, त्यांनं ओलखावण ताहि ।
 मव जीवां नें समभावण काजें, जोड कीची गुदवच रे माहि रे ॥ ३४ ॥
 संवत अठारें नें वरस एकावनें, वेंसाष सुदि इग्यारस वार बुध ।
 ते सुण सुण नें उतम नर-नारी, सरघा धार राखो सुध रे ॥ ३५ ॥

ढाल : १०

दुहा

केई भारीकर्मा जीवडा, त्यांरा घट माहे घोरअग्यांन ।
त्यांरा बोल्यांरी समझत्यांने नही, ते जीव विकल समांन ॥ १ ॥
नारकी देवता में भेद जीव रा, तीन तीन कहे छे अयांण ।
इग्यारमो तेरमों ने चवदमों, इण लेखे विकल समांण ॥ २ ॥
ते सूतर वांचे छे जिण भाषीया, त्यांरी रहस न जाणें मूढ ।
ते तांण करे छें भूठा थकां, पिण लीवी न छोडें व्हड ॥ ३ ॥
त्यांरी पीढ्यां खपी भूठ वोलतां, पिण किण ही न काढ्यो निकाल ।
ववेक विकल सुघ बुघ विनां, भूठी करे छे भ्रखाल ॥ ४ ॥
कदा अजाणपणे भूठ बोलीयो, पछेइ निरणो करे सोय ।
ते आलोएनें सुघ हुवो, व्हड राखे ते बूडा सोय ॥ ५ ॥
नारकी ने सर्व देवता मभे, दोय भेद कह्या जिणराय ।
तेरमो नें वले चवदमो, तिणमे सका न जाणो कांय ॥ ६ ॥
तीन भेद कहे छें तेहनें, भूठा घालीजे एम ।
त्यांरा भाव भेद परगट कळं, ते सुणजो घर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या मे]

जीव रा तीन भेद कहे देवतां में, ए वात उठी छे तठायी भूठी ।
इण बोल रो निरणो न करे छे त्यांरी, हीया ने निलाड री दोनूँइ फूटी ।
इण भूठाबोला रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
इग्यारमों भेद जीव रों निश्चें निपुंसक, देवता नहीं छे निश्चे निपुंसक तांम ।
देवता मे इग्यारमों भेद कह्यो तिण, देवता ने निपुंसक कहि दीया आंम ॥ २ ॥
देवता ने तो निपुंसक कहितां लाजे, तो इग्यारमों भेद कहे किण लेखे ।
त्यांरी अभितर आख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो मूल न देखें ॥ ३ ॥
इग्यारमो भेद कहे पिण न कहे निपुंसक, एहवो छे भेष धाख्यां रे अंधारो ।
वले पिंडत नाम धरावे मूखं, त्या विकलां ने विकल मिल्या परवारो ॥ ४ ॥
इतरी पिण समझ पडें नही त्याने, साची सरवा किण विघ आवें ।
सरवा तो परम दुलभ कही छे, एहवा विकलां ने कुण समझावे ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वले देवता नें असनी कहे छें,
 त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी,
 असनी पचिंद्री 'रो अप्रजापतो छें,
 परजाय बांधे तो बारमों भेद होसी,
 इग्यारमो भेद परजाय बांध्यां बारमों हुवे,
 इग्यारमो परजाय बांध्यां चवदमो कहे छे,
 पेहला भेद परजाय बांध्यां बीजों हुवे,
 पांचमो भेद परजाय बांध्यां छठो होवें,
 नवमो भेद परजाय बांध्यां दसमों हुवे छे,
 इग्यारमो परजाय बांध्यां थीन हुवे चवदमों,
 तेरमो जीव रो भेद परजाय बांधें ते,
 पिण इग्यारमां भेद रो न हुवें चवदमों,
 इग्यारमो भेद कहे नारकी देवतां में,
 इग्यारमां सूं चवदमों हुवो कहें छें,
 पाचसो नें तेसठ जीव रा भेद,
 जब तो नारकी नें सर्व देवतां में,
 कठेक तो नारकी देवतां में,
 कठेक त्यांमें कहे दोय भेद छें,
 ए पीढीयां खप भूठ बोलता आवें,
 जेसा हुंता तेसा चेला पिण आय मिलीया,
 सातमे आठमें नें दसमें,
 त्यारे सुभ जोग नें सुभ लेस्या वरतें छें,
 त्यांने पिण भूठाबोला जाणें अग्यांनी,
 वले भूठो मन परवरतावता जाणे,
 ज्यांरा माठा जोग वरतें छे ते तों,
 अपरमादी साध नें भूठाबोला कहे छें,
 जथा तथ चाले जथाख्यात चारितीयों,
 त्यांनं पिण भूठा बोलता कहें अग्यांनी,
 इग्यारमें बारमें गुणठाणें त्यांरें,
 भूठ बोलें छें त्यांनं तो पाप लागे छें,
 भूठ बोलें कहें जथाख्यात चारितीयो,
 भूठ बोलें पिण पाप न लागें,

इग्यारमों भेद जीव रों त्यांमें बतावें ।
 त्यां ववेक रा विकलां नें कुण समभावें ॥ ६ ॥
 तिणमें जीव रो भेद इग्यारमो जाणो ।
 ते चवदमो किहां थी होसी रे अयाणो ॥ ७ ॥
 चवदमों हुवें तो कदेय म जाणो ।
 ते तो जिण मारग रा निश्चे अयाणो ॥ ८ ॥
 तीजो भेद बांध्यां चोथो होय ।
 सातमो परजाय बांध्यां आठमो जोय ॥ ९ ॥
 इग्यारमो परजाय बांध्यां बारमों जाणों ।
 चवदमो भेद कहे ते विकल समाणो ॥ १० ॥
 जीव तणो भेद चवदमो जाणो ।
 समभो रे समभो थें मूढ अयाणों ॥ ११ ॥
 त्यांनं एकंत भूठाबोला जाणो ।
 ते यूंही बूडें छें कर कर ताणो ॥ १२ ॥
 पोते सीखे नें ओरां नें पिण सीखावे ।
 जीव रा दोय दोय भेद बतावें ॥ १३ ॥
 जीव रा तीन भेद कहें छें ताय ।
 त्यांरा बोल्यां री त्यांनेइ समभन काय ॥ १४ ॥
 पिण इणबोल रो किण हीन काढ्यो निकालो ।
 अभितर फूटी आडा आया कर्म जालो ॥ १५ ॥
 वले इग्यारमें नें बारमें गुण ठाणें ।
 त्यांरा माठा जोग अग्यांनी जाणें ॥ १६ ॥
 मिश्र भाषा पिण बोलता जाणें छें त्यांनं ।
 मिश्र मन परवरतावता जाणें छें त्यांनं ॥ १७ ॥
 ते अपरमादी निश्चेइ न थाय ।
 ते तो निश्चेइ चोडे भूला जाय ॥ १८ ॥
 तिणनं पाप रो अंस न लागें ताहि ।
 ओ पिण अंधारो विकलां रे माहि ॥ १९ ॥
 जथाख्यात चारित श्रीकारो ।
 पिण यांनं तो पाप न लागें लिंगारो ॥ २० ॥
 आ पिण विकलां रे भोलप मोटी ।
 आ पिण सरधा छे जाबक खोटी ॥ २१ ॥

आरंभ री किरिया लागे छठे गुणठाणे,
 उसभ जोग न वरतें जब अणारंभी छे,
 सातमां गुणठाणा थी अणारंभी छे,
 ज्यूं ज्यूं आगले गुणठाणे चढे जब,
 अग्रमादी ने अणारंभा कह्या छे,
 संका हुवे तो भगोती सूतर मांहे जीवों,
 सातमां सूं ले ने वारमे गुणठाणे,
 त्यांने भूठाबोला कहे मूढ मिथ्याती,
 त्यांरा श्रावक त्यांरे बदले भूठ बोले,
 ते पिण वूड गया त्यांरे केडे,
 वले अनेक भूठ त्यांरे वासठीया मे,
 जीव रा तीन भेद कहे नारकी मे,
 दस भवण पती ने वांण मंतरा मे,
 जीव रा तीन तीन भेद वतावें,
 अवेदी में जोग इग्यारे वतावे,
 ओ पिण भूठ बोले छे अग्यांती,
 सुपम सपराय ने जथाख्यात चारित मे,
 ओ पिण निरणो कीयां विण अग्यांती,
 तीन तीन भेद कहे नारकी देवता मे,
 त्यांरी पिंडताइ मांहे पड गइ धूर,
 देवता ने निपुंसक कहे छे त्यांने,
 पोते निपुंसक कहे तिणरी ठीक नही छे,
 देवता मांहे तो कहे छे मूढ मिथ्याती,
 जब देवता ने कह्या निश्चे निपुंसक,
 देवता तो निपुंसक निश्चे नही छे,
 देवता ने असनी ने निपुंसक कहे छे,
 सतावन भेद सवर रा कहे छे,
 ते पीढीया खप चालीया जाए छे,
 बावीस परीसां पांच सुमत तीन गुप्त,
 पाच चारित घाल्यां ए बोल सतावन,
 बावीस परीसां ते जीव री सक्त छे,
 चोखा परिणाम ते निरजरा री करणी,

ते तो उसभ जोगां सूं लागे छे तांम ।
 आगे सुभ जोग नें सुभ लेस्या परिणाम ॥ २२ ॥
 त्यांरे तो उसभ जोग वरतें नही तांम ।
 चढती लेस्या नें ध्यान चढता परिणाम ॥ २३ ॥
 त्यांरा उसभ जोग तो वरतें छे नाहीं ।
 पेहला सतक रा पेहला उद्देसा मांही ॥ २४ ॥
 त्यांरा जोग कदे वरते नहीं भूडा ।
 ते तो पीढीयां खप जाए छे वूडा ॥ २५ ॥
 समझ पढ्यां विण करे छें तांणों ।
 न्याय निरणा विण बोले छे विकल समांणो ॥ २६ ॥
 ते सांभलजो भवीयण चित ल्यायो ।
 तीन भेद कहे वले देवता माह्यो ॥ २७ ॥
 वले कहे पेहली नरक रे माह्यो ।
 ओ पिण बोले छे मूसावायो ॥ २८ ॥
 अकसाइ में जोग नव वतावे ।
 दर पीढ्यां भूठ बोल्ता आवे ॥ २९ ॥
 यामे पिण नव नव जोग बतावें ।
 गालां रा गोला मुख सूं चलावे ॥ ३० ॥
 सूतर भगोती देवे छे साख ।
 यूही अलाल भाखे छें अन्हाख ॥ ३१ ॥
 एकंत भूठा बोला जाणे ।
 पीपल वाधी मूर्ख ज्यूं ताणे ॥ ३२ ॥
 जीव तणो इग्यारमों भेद ।
 इग्यारमो भेद असनी निपुंसक वेद ॥ ३३ ॥
 वले असनी पिण नही देवता तांम ।
 ते तो निश्चेइ भूठ बोले बेफाम ॥ ३४ ॥
 त्यांमें पिण खोटा छे बोल अनेक ।
 ते पिण विकलां रे नही छें ववेक ॥ ३५ ॥
 दस विव जती घर्म नें भावना बारे ।
 यां सारां नें संवर कहें विनां विचारे ॥ ३६ ॥
 विचार खमें ते चोखा परिणाम ।
 त्यांनें संवर कहे ते भूठाबोला आंम ॥ ३७ ॥

पांच सुमत नें संवर कहें छें अग्यानी, पांच सुमत तो छें निश्चें निरजरा री करणी, दस विव जती धर्म जिणैसर भाप्यों, दसूँइ बोलां नें संवर सरखें छें, वारें भावना निरजरा री करणी छे निश्चें, त्यानिं संवर री ओलखणा नाहीं, संवर रा बोलां नें निरजरा में घालें, त्यारी अमितर आख हीया री फूटी, कर्म ग्रंथ सेतम्बर दिगम्बरा कीवा, ज्यां जिण मारग ओलखीयो होसी, कर्म ग्रंथ माहें कर्मा री प्रकृत, तिण माहें पिण छें भूठ अनेक, तिरजंच नें मिनप तणों आउखों, तिणमें असनी मिनप तणों आउखों, पांच थावर सुपम अपरयापता छें, यांरो पिण छें तिरयंच रो आउखों, पांच थावर नें वले तीन विकलेंद्री, आ पिण पाप री प्रकृत उवाडी, इत्यादिक छें तिरजंच रो आउखों, त्यामें केकां रों आउखों पाप री प्रकृत, च्यारें प्रकारें वावें तिरजंच रो आउखों, त्यांसू तो पाप री प्रकृत वंघे छें, तिरजंच जुगालीयां रो सुभ आउखों, अन तिरजंच रो आउखों पाप री प्रकृत, माठा माठा अघवसाय सूं वंघे आउखों, संका हुवें तो भगोती सूतर में जोवों, देवता नें नपुंसक कहे त्यानिं ओलखावण, संवत अठारे वरस तेपनें,

ओ पिण भूठ उवाडो बोले । आ पिण आख हीया न खोले ॥ ३८ ॥ त्यामें पिण केई बोल निरजरा रा जाणो । त्यानिं पिण जाणजों मूढ अयाणों ॥ ३९ ॥ त्यानिं पिण संवर सरखें छें मूढ मिथ्याती । त्यां विकलां रें निरणा तणी नहीं वाती ॥ ४० ॥ निरजरा रा बोलां नें संवर में घालें । ते मारग छोडी नें उजड चालें ॥ ४१ ॥ तिण माहें बोल घणा छें विवध । ते विवध टाले नें कर लेखी सुध ॥ ४२ ॥ पुन पाप री प्रकृत न्यारी ठहराई । ते पिण विकलां नें खवर न काई ॥ ४३ ॥ तिणनें कहें छें एकंत पुन । आ तो पाप तणी प्रकृत छें जवून ॥ ४४ ॥ त्यांरा पिण आउला नें कहे छें पुन । पाप री प्रकृत जावक जवून ॥ ४५ ॥ त्यां अप्रज्यापता रो आउखों जवून । सूतर में कटेय न दीसें पुन ॥ ४६ ॥ विवध प्रकार कह्यो जिणराय । केकां रों आउखों दीसे पुन रे मांय ॥ ४७ ॥ ते च्याहंइ बोल सावध नहीं रुडा । त्यांरो आउखों पुन कहे ते कूडा ॥ ४८ ॥ ते तो पुन री प्रकृत वीसती जाणों । ते सूतर सूं बुधवंत करसी पिछाणों ॥ ४९ ॥ ते आउखों पाप री प्रकृत जाणो । चौवीसमें सतक मांसू पिछाणों ॥ ५० ॥ जोड कीवी छे खेरवा शहर ममारो । आसोज विद अमावस नें बुधवारो ॥ ५१ ॥

ढाल : ११

दुहा

केई साभु नांम घरावतां, पिण हीया फूट ढोर समांन ।
 त्यांरी बोल्यां री समझ त्याने नही, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥
 कहे साघां नें नही राखणों, रात वासी रोगांन ।
 पिण तेहीज रोगांन राखे रात रो, यूंही करे छे अभिमांन ॥ २ ॥
 रात वासी राखे छे रोगांन ने, पूछ्यां कहे म्हें राखां नांही ।
 कपट सहीत भूठ बोलता, ते पिण समझे नहीं मन मांही ॥ ३ ॥
 रोगांन वासी राखें रात रों, वले बोलें भूठ मिथ्यात ।
 ते जथातथ परगट कळं, ते सुणजो विवरा सुघ बात ॥ ४ ॥

ढाल

[जिण आगन्या सुखदायी]

टोपसी में रोगांन वेंहरे आंण्यों, पातरा रें देवें लगाय ।
 ते रोगान रात रों नीलो रहे छे, ते निश्चे रात राख्यो ताय रे ।
 भवीयण बोलवो वचन विचारी, थे कांय करो आतम भारी रे ।
 भवियण छोड दो रूढ हीया री* ॥ १ ॥
 पातरा में राखो भावें टोपसी में राखों, उहीज रोगांन राख्यो रात ।
 पातरा मे राखो ने टोपसी में न राखों, आ किसा सूतर री बात रे ॥ भ०२ ॥
 पातरा रे रोगांन जाडों लगावे, बीजे दिन लूही लूही रोगांन ।
 ते रोगांन ओर ठांमां रे लगावें, एहवा कांय करो तोफांन रे ॥ ३ ॥
 लोट ने पातरा रे रोगांन लगावे, सुकतां लागें दिन दाय च्यार ।
 ज्या लगतो राते नीलो रोगांन राख्यो, इणमें तो नहीं संका लिगार रे ॥ ४ ॥
 थें रात रो रोगान राखता जावों, वले कहो म्हें राखां नांही ।
 ए सांप्रत भूठ उघाडो बोलो, हीया फूटा ने खबर न कांई रे ॥ ५ ॥
 रोगांन सूको पातरा रे राखो, घणा वरसां लग तांइ ।
 सूका रोगांन ने पिण रोगांन कहीजे, तिणमें फेर न दीसें कांई रे ॥ ६ ॥
 रोगांन वासी राखे छे तिणने, न गिणे ग्रहस्थ नें साग मांहीं ।
 वले दसवीकालक री गाथा बोलाए, त्यांने जावक दीया उडाई रे ॥ ७ ॥
 रोगांन ने वासी राखणों निषेधें, ते तो गिणे छे आहार रे मांहीं ।
 तिण लेखे तो नीलों सूको रोगांन, लागो न राखणों कांई रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

रोगानं नें आहार गिणी पातरा रे, लागो राखें किण लेखें ।
 अभितर आंख हीया री फूटी, लागों अरु वरु नहीं देखें रे ॥ ९ ॥
 जब कहे नीलो रोगानं छे, तिणनें, गिणां छां आहार रे मांही ।
 सूको रोगानं पातरा रे लागो, तिणनें आहार में गिणे नांहीं रे ॥ १० ॥
 तिण लेखें तो नीली चासणीयादिक, राखणी पातरा रे लगाय ।
 नीली छे त्यां लग आहार में गिणणी, सूकां पछे नही आहार रे मांय रे ॥ ११ ॥
 इत्यादिक वस्तु अनेक नीली ते, लोट ने पातरा रे लगाय ।
 त्यांनें पिण आहार मांहे जावक नही गिणणी, जब तो वासी राखणा छे ताय रे ॥ १२ ॥
 सूकां नें नीला रो नाम लेइ नें, भोला लोकां नें भरमावें ।
 पिण सूको रोगानं ने नीलो रोगानं दोनूइ, वासी राखता जावें रे ॥ १३ ॥
 रोगानं ने आहार मांहे गिणे नें, वासी राखता पिण जावें ।
 इसरा हीयाफूटेरा मानव, त्यांनें साधु किम समभावें रे ॥ १४ ॥
 वले रोगानं वासी राखें छें त्यांसूं, भेलो करे छे आहार ।
 त्यांरा वोल्या री परतीत मूर्ख करसी, त्यांरे अकल में घणों अंधारो रे ॥ १५ ॥
 रोगानं ने वासी राखें छें त्यांसूं, प्राच्छित दीयां विण कीयो संभोग ।
 त्यांरें बोलीयें बंधतो मूल न दीसें, त्यांरें लागों जोग नें रोग रे ॥ १६ ॥
 त्यांमें केई तो कूड नें कपट करेनें, वासी राखें छें रोगानं ।
 असेक रोगानं में भेल घालें, इण विघ वासी राखें छें तांम रे ॥ १७ ॥
 वले रोगानं नें वासी राखें इण विघ, रोगानं सहीत ठाम नें ल्यावें ।
 आंण मेलें आप रा थानक में, लोट नें पातरां रे लगावें ॥ १८ ॥
 अनेक दिन लग रोगानं रो ठाम, वासी राखें थानक मांय ।
 लोट नें पातरां रे संपूरण लगाए, पाछो सूपें घणी ने जाय रे ॥ १९ ॥
 जो रोगानं नें आहार मांहे गिणे तो, इण विघ राते राखणो नही ।
 इण विघ आहार थानक मांहे राख्यां, ते तो नहीं साधां री पांत मांही ॥ २० ॥
 इण लेखें तो प्रतादिक रा ठाम, आंण मेलणां थानक मांय ।
 खातां खातां वाकी रह्यो प्रतादिक, ग्रहस्थ नें पाछो सूपणों जाय ॥ २१ ॥
 रोगानं नें आहार गिण इण विघ राखें, इण विघ राखणा च्यार आहार ।
 रोगानं ज्यूं आहार तणी रुखवाली, करणी दिन रात मभार ॥ २२ ॥
 रोगानं नें आहार मांहे गिणे छें, अकल तिणां री उंधी ।
 आहार गिण नें लागों राखें पातरा रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी वुधी ॥ २३ ॥
 आहार तो लेप मातर लागों न राखें, जोवो दसवीकालक मांय ।
 रोगानं नें आहार गिणे नें, लेप लगाय राखें किण न्याय रे ॥ २४ ॥

कहि कहि ने कितरो एक कहूं, आहार मांहे गिणे रोगांन ।
ते सूने चित्त बके दिन राते, त्यांरा घट मांहे घोर अग्यांन रे ॥ २५ ॥
रोगांन राखणो निषेधे तिण उपर, जोड कीची मेडता मभार ।
संवत अठारें वरस चौपनें, वेंसाखी अमावस सोमवार रे ॥ २६ ॥



ढाल : १२

दुहा

आजुणा काल आरें पांच में, तीर्थकर तों निश्चें नही होय ।
 सुरत केवली पिण दीसैं नही, आगम वीहारी पिण नही कोय ॥ १ ॥
 घणा भारीकर्मा जीव उपनां, इण पांचमां आरा मांहि ।
 त्यांरें न्याय निरणा री बातां नही, पख झाल रह्या छे ताहि ॥ २ ॥
 त्यांनैं समकत सरखा तो परम दोहिली, ते किण विध करें तहतीक ।
 मोटो परव पजूसण सवंच्छरी, तिणरी पिण नहीं ठीक ॥ ३ ॥
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांय ।
 ओ गच्छवास्यां रे' पिण वेदो पळ्यो, त्यांरो कुण निवेडे न्याय ॥ ४ ॥
 त्यां पाछें लंका नीकल्या, त्यांरें पिण वेदो पडगयो ताहि ।
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांहि ॥ ५ ॥
 त्यां मांसू नीकलिया हूंढीया, त्यांरें पिण पडी मांहोमां तांण ।
 केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करे भादरवे जांण ॥ ६ ॥
 गच्छवास्यां रा भगडा ममे, साधु नें परणों नांहि ।
 उवें तों बांधी चाले छें रीत गछ तणी, आप आप तणा गछ मांहि ॥ ७ ॥
 पिण ए साधु नांम धरावता, बाजे' लोकां मे अणगर ।
 ते पिण करें सावण में सवंच्छरी, यांरें पिण घोर अंधार ॥ ८ ॥
 न्याय निरणो तो सवंच्छरी तणों, चाल्यो सूतर मांय ।
 ते जथातथ परगट कळें, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[रे भवीयण सेवो रे]

सवंच्छरी पडिकमीयां पाछे, सितर दिवस तिहां रहणो ।
 ए समवायंग रे सितरमें ठाणे, भगवंत नां ए वेणों रे ।
 भवीयण जोवो हिरदे' विचारी, छोड दो तांण हीयारी रे ।
 भवियण तांण सूं घणी खुवारी रे* ॥ १ ॥
 चोमासी पडिकमीयां पाछें, बीतो छे महीनों नें दिन बीस ।
 जद सवंच्छरी पडिकमणो करणों, इम भाष्यों छें श्री जगदीस रे ॥ २ ॥
 बीस दिन ने महीनो सवंच्छरी पेंहलां, सितर दिन दीया पाछिला मेल ।
 इण रीतें भगवते भाष्यो, च्यार महीनां रो मेल रे ॥ ३ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जो सवच्छरी पेहली महीनो बधें तो, कदा सवच्छरी पाछे इधकों महीनो हुवें तो, उन्हाला में इधकों महीनों हुवे तो, चोमासा में महीनो बधें तो, जो सवच्छरी पेहला इधिक महीनो हुवे, जो सवच्छरी पाछे महीनो बधे तो, ओ तो न्याय उघाडो दीसे, थे अंतर हीया में जोय विमासों, कोइ रिष पाचम ने भादरवा महीनां री, विनां विचास्यां आप रे छादे, त्यांने पूछ्यां कहे म्हे चोमासो ठायं थी, सवच्छरी करां म्हे विनां भादरवे, गुणचास पचास दिन कहे ने, सितर दिन सवच्छरी पाछे चाल्या छे, गुणचास पंचास दिन सूतर मे चाल्या, गुणचास थापे सितरां नें उथापे, गुणचास पचास री थापनां कर ने, प्रतष सूतर रों पाठ उथापे, गुणचास पचास दिन काढेनें, पाछिला सितर दिन काढेनें, सावण री सवच्छरी कीधी तिणनें, आसोजी पूनम रो कर पडिकमणो, यारे लेखे काती में रहें ते-अन्याइ, तो यारे लेखे यांने कातकी पूनम, इधिक महीना रा दिन गिणेने, तो महीनों पिण गिणने आसोज महीना रो, कातकी पूनम रो चोमासो करें जब, इधिक महीना रा दिन सवच्छरी कीधी, मेद गुंवडो नें मसादिक बधे ते, तिणरे बदलें नाक कांनादिक काटे, ज्युं किणहीक वरस में मास बधे जब, तिणरे वदले आगों पाछो गलत करे छे,

तिणने तो त्यांहीज गलत करणों। तिणनें पिण त्याहीज नही गिणणो रे ॥ ४ ॥ उन्हाला में गलत करणो। चोमासा माहें नही गिणणो रे ॥ ५ ॥ तो तेरे महीने सवच्छरी ठवणी। आगली तेरे महीने करणी रे ॥ ६ ॥ तिणमे संका मूल म आणों। मत करों कूडी ताणो रे ॥ ७ ॥ सवच्छरी कीधी उथापी। सावण माहें सवच्छरी थापी रे ॥ ८ ॥ दिन काढें गुणचास पचास। इणमें दोष नहीं छे तास रे ॥ ९ ॥ सवच्छरी करें सावण माहि। त्यांनें जावक दीया उडाय रे ॥ १० ॥ सितर दिन पिण सूतर में चाल्या। ए तो घोचा अणहुता घाल्या रे ॥ ११ ॥ सितर दीनां ने दीया उथापी। सावण माहे सवच्छरी थापी रे ॥ १२ ॥ सवच्छरी करी सावण में तांम। त्यांनें छोड देणो ते गांम रे ॥ १३ ॥ रहिणो नही तिण गांव मझार। काती विद पडिवा करणों विहार रे ॥ १४ ॥ अन्हाखी थकां न करे निरणो। पंच मासी पडिकमणो करणों रे ॥ १५ ॥ सावण माहे सवच्छरी थापी। चोमासी कांय उथापी रे ॥ १६ ॥ इधिक मासो न गिणीयों लिंगार। ते महीनो कांय घाल्यो विसार रे ॥ १७ ॥ तिणने दूर करे छे काटी। तिणरी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ १८ ॥ तयारो त्यांहीज गलत करणों। त्या जावक न कीयो निरणो रे ॥ १९ ॥

असाढी पुनम नें कातकी पुनम, तीजी फागण री पुनम जाणों ।
 यां तीनां मासां विण न हुवें चोमासी, तिणमें संका मूल न आणों रे ॥ २० ॥
 ज्यूं भादरवा विण सवंच्छरी न हुवे, तिण माहें पिण संका मत आणों ।
 ज्यां सावण माहें सवंच्छरी कीधी, ते जिण मारग रा अजाणों रे ॥ २१ ॥
 किण ही साहुकार रे पांच पूतर छें, तिणमें च्यार पूतर श्रीकारो ।
 पांचां में हूजों पूतर निपुंसक तिण रों, मंडें नहीं घरवारो रे ॥ २२ ॥
 ओ तो मरत गलत पूरो पड जासी, तिणरों वंस न वधें लिगार ।
 तिणनें जन्म्यों जठा सूं एसोइ जाण्यों, कदे जाणी नहीं भली वार रे ॥ २३ ॥
 कोइ निपुंसक रो घर मंडावे, ते तो छें विकल समांन ।
 तिणरें बदलें ओर नें राखें कवारों, ते जीव छें अगाध अग्यांन रे ॥ २४ ॥
 ज्यूं किणही एक चोमासें पांच महीनां हुवें जब, लूण महीनो वधीयो कहें लोग ।
 तिण लूंड महीना नें निपुंसग जिम जाण, तिणनें यूंही गमावणो फोक रे ॥ २५ ॥
 कोइ लूण महीना नें गिणती में गिण नें, सावण माहें सवंच्छरी थापी ।
 त्यां विनां विमासीयों घोचों घालें, सवंच्छरी भादरवा री उथापी रे ॥ २६ ॥
 कहि कहि नें कितरोएक कहूं, भादरवा विण सवंच्छरी नाहीं ।
 सूतर कया न्याय निरणों जोए, विचार देखो मन माहीं रे ॥ २७ ॥
 सवंच्छरी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली मभार ।
 संवत अठारें पचावनें वरसें, चोमासा माहें सुध विचार रे ॥ २८ ॥

ढाल : १३

ढुहा

केई भेषघारी भूला फिरे, त्याने जिण धर्म री नही सुघ।
उंधी उंधी करे छे परूपणा, त्यांरी भिष्ट हुइ सुघ बुघ ॥ १ ॥
साघां दिष्या दीघी चोमासा मभे, कीयो ग्रहस्थ नो अणंगार।
तिण सू भेषघारी बकता फिरे, त्यामें सुघ न हीसे लिंगार ॥ २ ॥
केई तो कहे चोमासा मभे, साघां ने दिष्या देणी नाहिं।
दिष्या दीघी त्यामें दोष छे, एहवो अधारो छे घट मांहि ॥ ३ ॥
त्यां श्रावक पिण केई विकल थां, त्यां माने लीघी त्यांरी बात।
त्यांरा गुर नें त्यांरा श्रावक तणों, घट मांहे घोर मिथ्यात ॥ ४ ॥
दिव्या देणी निषेघी चोमासा मभे, ते अंध अग्यांनी बाल।
त्यांमें फोडा पडे संसार मे, उतकष्टो अनंतो काल ॥ ५ ॥
दिष्या देणी कही चोमासा मभे, तिणमें संका म जाणो कोय।
थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या में]

बावीसमां श्री नेम जिणेसर, त्यां पिण दिष्या लीघी चोमासा मांहिं।
सांवन सुदि चादणी छठि तणें दिन, सहंस पुरप साथे दिष्या लीघी ताहिं।
चोमासा में दिष्या निसंक सूं देणी* ॥ १ ॥
राजमती दिष्या चोमासा में लीघी, तीनसो जणीया दिष्या लीघी त्यांरी लार।
तिणने नेम जिणेसर मुदे थापी, तिण सूं छोटी आयां चालीस हजार ॥ २ ॥
पदम प्रभूनाथ छठा तीथंकर, त्यां पिण दिष्या चोमासा मे लीघी।
काती विद तीज रे दिन सहस जणा सूं, चोमासे दिष्या लीघी त्यां आछी कीघी ॥ ३ ॥
अनंता तीथंकर चोमासा मांहे, त्यां पिण दिष्या लीघीं सयमेव।
बले अनता ने पिण दीख्या दीघी, जेज नहीं कीघी दिष्या दीघी तताखेव ॥ ४ ॥
इम कहां उंधा बोले भेषघारी, तीथंकर नी बात क्याने चलावों।
साघां ने चोमासा मे दिष्या न देणी, दिष्या देणी हुवें तो सुतर में वतावो ॥ ५ ॥
इणरो जाव कहां आचारंग मांहे, केवलीये कीघी ते छदमस्थ ने करणों।
जे केवलीया चोमासा में दिष्या दीघी, ओ छदमस्थ रों पिण काढीयो निरणों ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केवलीयें कीधो ते छदमस्थ कीधो,
 यां तो चोमासा मांहे दिव्या लीधी छें,
 कुमती कदाग्रही साधां रा निदक,
 केई भेषधारी भूठा बोला अन्हाखी,
 उत्तराघेन रे दशमें अधेनें कह्यो जिण,
 तो चोमासा में दिव्या देणी निषेधी,
 दिव्या देणी निषेधे चोमासा मांहे,
 तूं चोमासा में दिव्या देणी निषेधे,
 जो उ सूतर मांहे नहीं बतावें,
 वले घणा लोकां मांहे फिट फिट कीजें,
 घणा टोलां तणा साध बाजें लोकां में,
 त्यां मांहे तो दोष न सरधें लिंगार,
 चोमासा मांहे दिव्या देवे छें त्यांनें,
 सुध साध चोमासा में दिव्या दीधी,
 वले कहें दिव्या दीधी तिण गांम नें ठांम,
 ओ पिण भूठ बोलें भेषधारी,
 चोमासा मांहे दिव्या देणी निषेधें,
 तिण जिण धर्म नही ओलखीयां आवें,
 चोमासा मांहे दिव्या देणी निषेधी,
 उण उंधी सरधा तणें परतापें,
 चोमासा में दिव्या देणी निषेधें,
 त्यांमें दुख में दुख संसार में पडती,
 चोमासा में दिव्या देणी निषेधें,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 चोमासा में दिव्या देणी निषेधें,
 त्यां विकला नें साध सरधे नें बूडा,
 चोमासा में दिव्या देणी निषेधें,
 ते पिडत बाजे छें विकल लोकां में,
 चोमासा में दिव्या देणी निषेधे,
 त्यां तीन काल रा तीथंकरां नें,
 चोमासा मांहे दिव्या देणी निषेधें,
 सूनें चित सूतर बाचें अग्यांनी,

यांनें पाप कथायी लागो रे पापी ।
 थें चोमासे में दिव्या देणी कांय उथापी ॥ ७ ॥
 साधां रें आल देता सके नहीं पापी ।
 त्यां चोमासे में दिव्या देणी उथापी ॥ ८ ॥
 एक समों पिण नही करणो परमाद ।
 त्यां विकलां रें किण विध होसी समाद ॥ ९ ॥
 तिण भूठा बोला नें पूछीजें ताय ।
 ते सूतर मांहे तूं काढ बताय ॥ १० ॥
 तिण मूरख नें घालीजें कूरो ।
 समभू लोकां में करणों घणों फितूरो ॥ ११ ॥
 ते तो चोमासा में दिव्या देवें ।
 सुध साध रो नांम अणहंतो लेवें ॥ १२ ॥
 साध सरधे नें मुख सूं सरावें ।
 तिण मांहे पापी दोष बतावें ॥ १३ ॥
 तिण गांम नें ठांम तिणनें नहीं रहणो ।
 त्यां विकलां री सरधा तणों कांई कहणों ॥ १४ ॥
 त्यां श्री जिण वचन दीया छें उथापी ।
 तिणनें जाण लीजे महा पापी ॥ १५ ॥
 तिण मूरख री करसी मूरख परतीत ।
 चिहूं गति मांहे हुसी फजीत ॥ १६ ॥
 ते तो अंध अग्यांनी जाबक बूडा ।
 वले चिहूं गति मांहे दीससी भूडा ॥ १७ ॥
 आ तो उठी जठा थी भूठी ।
 त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ १८ ॥
 त्यांनें साध सरधें ते पिण मूढ मिथ्याती ।
 वले बूढ गया त्यांरा पखपाती ॥ १९ ॥
 ते तो नीमाइ निश्चें विकल समान ।
 पिण घट मांहे त्यांरे छें घोर अग्यांन ॥ २० ॥
 ते भूठा भूठा ले सुतर रो नांम ।
 पापी आल देता डरीया नहीं ताम ॥ २१ ॥
 ते निमाइ निश्चे मूढ मिथ्याती ।
 हीया फूट गधा रा साथी ॥ २२ ॥

चोमासा मे दीष्या देणी निषेघें, तिणरा श्रावक पिण सुण सुण ने गूजे ।
 ए पिण हीया फूट गघा रा साथी, इण बात रो न्याय निरणों न बूके ॥ २३ ॥
 अतंता साघां दिष्या चोमासा में दीघीं, तिण मांहे दोष बतावें पापी ।
 इसडा केई भेषघारी अन्हाखी, त्यां चोमासा में दिष्या देणी उथापी ॥ २४ ॥
 केई भेषघारी चोमासा मे दिष्या देवे, त्यानें तो मूरख सरघें छे साघ ।
 साघ चोमासा मांहे दिप्या देवे, त्याने असाघ कहे नें करे विषवाद ॥ २५ ॥
 चोमासा मांहे साघ दिष्या दीघी, त्यां किसो अकारज कीघो रे पापी ।
 आ तो पाप सेवण रा पचखांग कराया, थें चोमासा मे दिष्यादेणी कांय उथापी ॥ २६ ॥
 चोमासा मे दिप्या देणी निषेघें, त्यां विकलां री विकल राखे परतीत ।
 ते तो चोडे भूला छे अंघ अग्यांनी, ते तो चिहंगति मांहे होसी फजीत ॥ २७ ॥
 चोमासा मांहे दिष्या देणी ओलखावण, जोड कीघी छें केलवा सह्र मभार ।
 संवत अठारे पचावने वरस, फागुण विद एकम नें गुरवार ॥ २८ ॥

ढाल : १४

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते बोलें नही वचन विचार ।
साधां नें विहार/ करणो नहीं, चोमासे रे मझार ॥ १ ॥
कारण पडियां साधु नें, चोमासा माहें करणो विहार ।
श्री वीर जिणेशर भापियो, ठांगा अंग सूतर मझार ॥ २ ॥
केई पिंडत वाजे लोक में, पिण घट में घोर अंधार ।
ते पिण कहें छें चोमासा मझे, साधां नें नहीं करणो विहार ॥ ३ ॥
ते निदक छे, साधां तणा, तिणसूं संवलो न सुझें लिगार ।
परती करवा साधां तणी, तुरत होय जाय तयार ॥ ४ ॥
चोमासा में विहार करण तणा, कारण कहा जिनराय ।
ते जथातथ प्रगट करूं सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[जीव मोह अशुकम्या न आशिथे]

दुष्ट राजादिक बेरी नो भय हुवे, जाणे उपधादिक ना लूसणहार जी ।
त्यां उपधादिक नें राखवा भणी, चोमासा मे करे विहार जी ।
श्री वीर निणेश्वर भापियो* ॥ १ ॥
साधु भिख्या नें अभावे करी, नही मिले पाणी नें आहार जी ।
जब थिर परिणाम रहे नही, चामासे में करे विहार जी ॥ २ ॥
कोइ प्रत्यनीक छे साधां तणो, तिण ग्रामादिक मझार जी ।
ते साधु ने काढे तिहां थकी, चामासे में करे विहार जी ॥ ३ ॥
गंगादिक ने उन्मार्गे, पाणी आवतो जाणे तिणवार जी ।
तिण पाणी सूं जाणे डूवता, चामासे में करे विहार जी ॥ ४ ॥
कोइ आवे छे मोटे आडम्बरे, जीतव चारित्र ना लूसणहार जी ।
ते म्लेच्छादिक दुष्ट जाणेलिया, चोमासे में करे विहार जी ॥ ५ ॥
ए पांच बोला माहिलो हुवे, तो चोमासा में करे विहार जी ।
तिण री जिन आग्यां छे साधु ने, तिणमें दोष नहीं छ लिगार जी ॥ ६ ॥
बले पांच प्रकारां करी चोमासामें करणो विहार जी, ते पिण कह्यो छे षणा आगम मझे ।
ते सांभलज्यो विस्तार, चामासे में करे विहार जी ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ अनेरो आचार्य मोटको, अपूर्व ग्यान तणो भंडार जी ।
 त्यां कने जाये ग्यान भणवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ८ ॥
 वले दरसन प्रभावना कारणे, ते पिण सास्त्र नो छे भंडार जी ।
 ते शास्त्र भणवा कारणे, चोमासे मे करे विहार जी ॥ ९ ॥
 आचार्य उवभाय मुनिसरू, त्यां कीधो सुणियो संथार जी ।
 त्यांने वांदवा ने कारणे, चोमासे में करे विहार जी ॥ १० ॥
 आचार्य उवभाय रह्या तिहां, साध छे ओर क्षेत्र मभार जी ।
 त्यांरी वैयावच करवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ११ ॥
 गगायमुना नें सरस्वती कोसिया नें एरावती जाण जी, ए पांचूं नदी नावा सूं उतरे ।
 महीना मे एकवार प्रमाण जी, चोमासे में करे विहार जी ॥ १२ ॥
 वले पांच कारण पडियां थकां, नदी उतरे वार अनेक जी ।
 एक दोय वारनो कारण नही, ते सुणज्यो आण ववेक जी ॥ १३ ॥
 भयनें भिल्याने अभावे करी, कोइ काढे गामादिक वार जी ।
 पाणी रो आगम जाण नें, वले म्लेच्छादिक नी सुण मार जी ॥ १४ ॥
 एहीज पांचूं कारण करी, चोमासे मे करे विहार जी ।
 तेहीज कारण पडियां साध ने, ए नदी पिण उतरे वारूं बार जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक कारण पडियां साध नें, चामासा मे करणो विहार जी ।
 त्यांने अरिहंतनी छे आगन्या, साधु नें नही दोष लिंगार जी ॥ १६ ॥
 साधु विहार करे चोमासा मभे, तिणमें दोष नही तिल मात जी ।
 तिणमें दोष कहे अन्हाखी थका, त्यां साधां सूं पडिवजियो मिथ्यात जी ॥ १७ ॥
 ते तो दोष अणहूतो काढता, बकवो करे दिन रात जी ।
 त्यांने परभव री चिंता नही, न डरे भूठी करता वात जी ॥ १८ ॥
 चोमासा में, विहार करण तणी, जोड कीधी गुरला गाम मभार जी ।
 संवत अठारे नें वरस सतावनें, काती विद पांचम मंगलवार जी ॥ १९ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी थानक ने रात रों, जडें उघाडें कमाड ।
तिहां हिंसा करे जीवां तणी, पिण संक न आणें लिगार ॥ १ ॥
वेतकल्प माहें कह्यो साध नें, रहणो उघाडे दुवार ।
ए वीर वचन नें आराधसी, ते किम जडे आड कवाड ॥ २ ॥
वले उत्तराधेन में वर्जियों, पेंतीसमाधेन माहि ।
हाथां सूं तो जडवो जिहांइ रह्यो, मन सूं पिण वांछणो नाहि ॥ ३ ॥
केइ श्री जिण आग्यां लोप नें, जडें उघाडें कमाड ।
त्यांनं छेडवीयां अवला पडें, वले वक उठें तिणवार ॥ ४ ॥
पाछो जाव देवा तो समर्थ नहीं, दोष छोडणरा नही परिणाम ।
तिण सूं कवाडीया रो नाम लें, दोष ढांकण रे काम ॥ ५ ॥
मोटा कवाड नें कवाडीयों, थापें अग्यांनी एक ।
वले बदलतां विरीयां नहीं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आगन्या मे]

भेषधारी कमाड नें जडें उघाडें, त्यांमिं खूंचणो काढ्यां घणों दुख पावें ।
ते आपणा दोष ढांकण ने मूर्ख, कवाडीया माहे दोष वतावे ।
कुगुर चिरत सुणो भव जीवां ॥ १ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जड्यां में, जो ओ म्हांनं दोष लागें छें मोटो ।
तो कवाडीया रो आहार लेवें छें, त्यांने पिण दोष लागें छें छोटो ॥ २ ॥
कवाडीया माहें दोष वतावें, ते तो कवाड री थाप करवा काजें ।
जो भूठ बोलीनेइ दोष वतायों, तो एं दोषीलो आहार लेता क्युं न लाजे ॥ ३ ॥
कवाडीया मांसू आहार लीयां रो, कह दीयो चोडे दोष उघाडो ।
त्यांनं भारी परसी ए दोष परूपां, ते सांभलजो भवीयण विस्तारो ॥ ४ ॥
जिण जाणेनें आहार दोषीलो वहर्यो, तिण रा साध पणारी हूइ धूर घांणी ।
तिण खावारे कारण जन्म विगोयो, दोषीलो आहार लीयो जांणी ॥ ५ ॥
जांणी ने आहार दोषीलो लेवें, ते निरलज परभव सांहों न देवें ।
तो यांरा श्रावक अकल रा मुंड मिथ्याती, ते वारमों वरत भागें किण लेवें ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कवाडीया मांहे तो दोष बतावे, त्यां दोषीलो आहार खाए' दिन काढ्यां, वले परूपण करता इम बोले, ते तो चारित धर्म रो लूटणहारो, साधा नें आहार असुघ बहरावे, उणरे दरबेइ तोटो ने भावेइ तोटो, एहवी परूपणा करता नही संकें, जो उवे कवाडीया माहे दोष बताए, यारी सरघा रे लेखे यांरा साघ श्रावकां मे, या असुघ आहार जांणी वेहख्यो वेंहरायो, कोइ आप रो नाक काटे नकटो हुवे, ज्यूं साधां ने दोषीला करण भेषघारी, उ तो ओर सवण ले गांव सिघायो, पिण नकटो दुखी हूओ जीवे जठा लों, ज्यू साघ तो कवाड किवाडीया ने, भेषघारी कवाडीया में दोष बताए, ते तो रातरो कवाड जडवारे काजे, ए पहिला तो दोष कदे नही सुणीयो, ते तो किवाडीया माहे दोष बतावें, यांरा श्रावक मिल यारी परख करे तो, यांरा श्रावक याने इण विघ पूछे, किवाडीयो खोल ने आहार बहरायां, म्हारो सूंस न भागे तो हूं खोल वेहराऊं, जब तो कहें इण रो दोष म जांणो, यारा श्रावक याने वले इण विघ पूछे, कवाड खोल ने आहार वेहरायां, म्हारो सूंस न भागे तो हूं खोल वहराउ, साच बोले कहे दोष कमाड खोल्यां, ए साच बोले ते तो सांकडे पडीया, भूट वोलण री काइ सेरी न दीसे, कवाड ने कवाडीयो एक कहंता, कवाड मांहे तो दोष बतायो,

तो यांरी पीढीयां लग सगलाइ वूडा ।
 ते चिहुं गति मे दीसरी अति भूडा ॥ ७ ॥
 साधां ने आहार असुघ बहरावें ।
 ते दातार गर्भ में आडा आवे ॥ ८ ॥
 त्यांरे कर्म बधे' घर रो माल खूटे ।
 ते तो सतगुर रा संयम ने रूटें ॥ ९ ॥
 ते सूरपणो लोकां नें मनावे ।
 तो कवाडीया रो वेहरे क्यूं ल्यावे ॥ १० ॥
 ज्यांरूं तीर्थ में छे मोटी खामी ।
 ते सगला छे दुरगत जावा रा कांमी ॥ ११ ॥
 ते तो पेंला ने कुसवण करवा काजे ।
 आप दोषीला हुंता नहीं लाजे ॥ १२ ॥
 ते तो कुसले खेमें माल कमाय ल्याओ ।
 पिण नाक गमायो ते पाछो न आयो ॥ १३ ॥
 यांं दोयां ने सरघे' छे जुआ जुआ ।
 पीढीयां लग दोषीला हाथां सूं हूआ ॥ १४ ॥
 कवाडीया माहे दोष बतायो ।
 ए गाला सूं गोलो घडनें चलायो ॥ १५ ॥
 वले वतलायां बोलें अन्हाखी ऊवा ।
 भेषघारी मुख बोलें सूघा ॥ १६ ॥
 म्हारे साधां नें सुघ बहरावण रा त्यागो ।
 म्हारो सूंस रहेंसी के जासी भागो ॥ १७ ॥
 हिंवे उण वेला किण विघ बोले ऊवा ।
 वेहरण रे काम पड्यां बोले सूघा ॥ १८ ॥
 म्हारे साधां ने असुघ वेंहरण रा छेत्यागो ।
 म्हारो सूंस रहसी के जासी भागो ॥ १९ ॥
 जब तो पिण केयक बोलें सूघा ।
 चोडे घाडे किम बोलें ऊंवा ॥ २० ॥
 त्यांने सतवादी कदे मत जांणो ।
 तिणसूं साच बोले पिण न छोडे तांणो ॥ २१ ॥
 पिण अठे तो कर दीया जूजूआ दोइ ।
 कवाडीया मांहे तांं कह्यो दोप न कोइ ॥ २२ ॥

यांरा श्रावक चतुर विषण हुवें तो,
 ये कवाडीया मांहे दोष वताए,
 इणविध वुधवंत काडे निकालो,
 पिण आंवां नें साचो वात न सूभें,
 जे प्रतप भूठा नें साचो कहे छें,
 जे कुगुर तणी पपपात करें त्यांरे,
 वले कंवाडीयो नपेधवा काजे,
 यां दोयां रो साधु नें संघटो न करणो,
 इत्यादिक भूंडा भूंडा दिष्टंत देइ,
 वले आपतो आहार कवाड्या रो वहरें,
 छोटी नें मोटी दोनूइ अस्त्री त्यागी,
 कवाड नें कवाडीयो एक कहे ते,
 छोटी ढावडी ज्यूं कवाडीयो जांगो,
 कवाडीयारो दोप जाण जाण सेवे,
 साधु तो कवाड कवाडीया नें,
 भेषधारी कवाड्या में दोष वताए,
 वले केयक भेषधारी इम वोलें,
 पिण जडणो उघाडणों वरज्यो न दीसें,
 दोप नही कहें हाथां सूं जडीयां,
 तिणनें ग्रहस्थ उघाडे नें आहार वहरावे,
 इम भूठ वोलें कांम चलावे,
 ते निरलज्ज भारी करमा अग्यांनी,
 केइ भेषधारी कहे कवाड जड्यां सूं,
 जो पहलो महावरत भागे कवाड जड्यां सूं,
 इम साधवीयां रो नांम लेइनें,
 ते कल्प न जाणें साधवीयां रो,
 साधवीयां तो च्यार पछेंवडी राखें,
 जो च्यार पिछेंवडी साधु राखें तो,
 वले जांगीयो कांचूओ राखें साधवीयां,
 जो जांघीयो कांचूओ साध राखें तो,
 वले साधवीयां एकण गांव माहे,
 जो सेषाकाल साधु जो बिमास रहें तो,

इम भूठा घाली मुल देवें धूडो ।
 इतरा दिन कांय बोलीयो कूडो ॥ २३ ॥
 ते तो भूठवोलां नें जाण ले भूंडा ।
 ते तो कुगुर तणी तांण कर कर वूडा ॥ २४ ॥
 ते दिन दिन कर्म बांधे हुवे भारी ।
 टांको भले तो हुवे अनंत संसारी ॥ २५ ॥
 मोटी छोटी लुगाइ रो दिष्टंत देवें ।
 ज्यूं कवाडीया रोइ आहार न लेवें ॥ २६ ॥
 कवाडीयां नें नपेधण सुरा ।
 ते हाथां सूं मूरख पडे छें कूडा ॥ २७ ॥
 ते कवाडीया रो आहार लेवें किण लेखें ।
 आपरी सरघा सांहाओ क्यूं नही देखें ॥ २८ ॥
 वले आहार लेवें खोलाए कोठे ने आलो ।
 ते छोटी ढावडी रो किम करसी टालो ॥ २९ ॥
 यां दोयां नें सरघें छें जूआ जूआ ।
 पीडीया लग दोषीला हाथां सूं हुवा ॥ ३० ॥
 साधु ने रहणो कहाँ छें उघाडें दुवारो ।
 तिणरे लेखें तो दोष नही छें लिगारो ॥ ३१ ॥
 तिण भूठ वोलें कीची जडवा री थाप ।
 तो तिण बहस्थां में कांय परुषें पाप ॥ ३२ ॥
 पिण छोडें नही अडो जडवो कवाड ।
 त्यां गहलां नें सीख न लागें लिगार ॥ ३३ ॥
 साधां नें दोष जाबक नही लागे ।
 तो साधवीयां रो पिण पेंहलें महावरत भागे ३४ ॥
 ते निसंक सूं जडवा लागा कवाडो ।
 ते सांभल जो भवीयण विस्तारो ॥ ३५ ॥
 त्यांनें तो दोष लिगार न लागें ।
 जिण आग्यां लोप्यां तीजो वरत भागे ॥ ३६ ॥
 त्यांरो पिण दोष भगवंत न कहाँ लिगारो ।
 हुइ जाएं श्री जिण आज्ञा वारो ॥ ३७ ॥
 ए तो सेषाकाल रहे दोय मास ।
 जिण आगन्यालोप्यां हुवे वरत विणास ॥ ३८ ॥

साध तो राते रहे चोहटा विच में,
 साधवीयां राते रहें चोहटा विचें तो,
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक,
 त्यानें आपण आपण कल्प में रहणो,
 साधवीयां नें कल्पें ते राखे साधवीयां,
 ज्यूं साधां ने कल्पे कह्यो दुवार उघाडे,
 जब केयक बापडा पाधरा बोलें,
 केइ कहे जडीयां दोष न लागें,
 इम सांभल ने उतम नर नारी,
 जो कुगुरां ने छोडे नें सतगुर सेवे,
 केई भेषधारी इम बोलें अग्यांनी,
 उघाडो राख्यां माल जाएं ग्रहस्थ रो,
 ग्रहस्थ रो माल जो चोर ले जावे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 ग्रहस्थ रो माल जो साध सखालें,
 वले हिंसा सुं पहिलोइ माहावरत भागो,
 घर रो घन माल जहर जांगी छोड्यो,
 तिण समकत सहित साधपणो खोर्यो,
 ग्रहस्थ रा माल रखवालवा काजे,
 कदा जावतो करतां ढांडा माहे आवे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 कदा जावता करतां माहे चोर आवे,
 नालेर कोपरादिक वस्त अनेक,
 घन राखवा काजे कवाड जडें त्यानें,
 ग्रहस्थ रा घन काजे जडसी कवाड,
 ढुले फूटे उजाड हुवे तो,
 ग्रहस्थ रे परिगरो नव जात रो छे,
 ते भोला लोकां ने गमता लागें,
 केइ भेषघाख्यां नें जाव न आवे,
 माने ग्रहस्थ घर माहे रहिवा न दे छें,
 ते सूनो घर हाट उपाश्रों थानक,
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाव न आवे,

ते पिण खुलीए अवंग दुवारे ।
 ते तो हुवे जाए श्रीजिण आगन्यावारे ॥ ३६ ॥
 ते तो साध साधवीयां रा न्यारा न्यारा ।
 पिण साधुनें न जडणो साधवीयां री लारा ॥ ४० ॥
 उतरा साधु राख्यां साधु रा वरत भागें ।
 जडे जिण साधु नें दोष क्यूं नही लागें ॥ ४१ ॥
 किवाड जड्यां माने लागें छे दोषो ।
 ए भूळ बोल किम जासी मोखो ॥ ४२ ॥
 एहवा भूळबोलां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चतुर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ४३ ॥
 म्हे उतरां ओरा साल नें पोलमभारो ।
 तिण कारण आडा जडा कवाडो ॥ ४४ ॥
 तो उ ग्रहस्थ दुख पावें छे गाडो ।
 म्हे सेठो जड राखां कवाड नें आडो ॥ ४५ ॥
 तो प्रतष पांचमों माहावरत भागो ।
 जिण आगन्या लोप्यां अदत पिण लागो ॥ ४६ ॥
 जो उ ग्रहस्थ रा घन रो करे रखवालो ।
 तिणने सासण मासूं दीयो बीर टालो ॥ ४७ ॥
 भेषधारी आडा जडें कवाड ।
 तिण लेखें तो धाकल काढणा वार ॥ ४८ ॥
 भेषधारी आडा जडे कवाड ।
 तो घणीने जाय कहणो तिणवार ॥ ४९ ॥
 त्यां उपर स्वानादिक दूकें आय ।
 यानें पिण अलगा कर देणा जाय ॥ ५० ॥
 त्याने पोहरो देइ कांडणो दिन रात ।
 विगडवा नही देणों तिलमात ॥ ५१ ॥
 त्यारी भेषधारी करे रखवाली ।
 जाणें वावो रो वावोने हाली रो हाली ॥ ५२ ॥
 जब भूळ बोले वात लेवें संवार ।
 तिण कारण आडा जडां कवाड ॥ ५३ ॥
 उठें किण लेखें जडे छें कवाड ।
 जब आलल भाषण नें हुय जाय तयार ॥ ५४ ॥

सवत अठारें वरस तेतीसैं, जेठ सुद बारस मंगलवार ।
 ए कुगुर तणा चरित परगट कीधी, सहर पीपाड तणें रें मझार ॥ ५५ ॥



ढाल : १६

ढुहा

केइ साधु नांम घरायनें, आड्डा जडे छें किवाड ।
त्यामे केइ तो कहे दोष छे, केइ न कहें दोष लिगार ॥ १ ॥
त्यामें दोष बतावे कमाड नो, तिण रो जाब न देवे तांम ।
दोष कहें कवाड्या तणो, बकता फिरे गांम गांम ॥ २ ॥
कमाड तणों दोष ढांकवा, लेवे कवाड्या रो नांम ।
कहे कवाड कवाड्यों एक छे, एहवो वेदो घाल्यों छें तांम ॥ ३ ॥
कहिवाने एक कह दीयो, पिण त्यांहीज करदीया दोय ।
कवाड उघाड देवे तो लेवे नही, किवाड्या रो न छोडें कोय ॥ ४ ॥
दोष बतावे कवाड्या तणो, पिण वेहरे किवाड्यो खोलाय ।
एहवा विकला री वात में, कला म जाणो काय ॥ ५ ॥
साधु दोष जाणें कवाड्या तणों, तो छोड दे तुरत सताव ।
हिंवे कवाड ने कवाड्या तणो, सुणो मुस्त दे जाब ॥ ६ ॥

ढाल

[३ भविष्य सेवो रे साध सयाणा]

कवाड जडवो तो साधुने वरज्यो सुतरमें ठांम ठांम, कवाड्या रों तो आहार कठें न वरज्यों ।
वरज्यो हुवे तो बतावो ताम रे, भवीयण जोवो हिरदय विचारी ।
म करो तांण हीया री रे, तांण कीघां सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
पूरे मासे बाइ उठ बेस वेहरावे, तो साधु नें वेहरणों नांही ।
ओछा गर्भ री उठ बेस वेहरावे, ते वरज्यो नही सूतर रे मांही ॥ भ० २ ॥
कोइ कहे कवाड्यों कठे चाल्यो छे, तिण रों जाब सुणो चित्त ल्याय ।
कवाड वरज्यो कवाड्यो नही वरज्यो, ओ देखों उघाडों न्याय रे ॥ ३ ॥
ज्यूं पूरे मासे बाइ उठ वेहरावे, ते तों वरजी सूतर रे मांहि ।
ओछा गर्भ वाली रो वरज्यो नांही, जव लेणो ठहरायों छे ताहि रे ॥ ४ ॥
इण दिष्टते कवाड्यां रो आहार, वेहखां में दोषण नांही ।
छोटो गर्भ री ने कवाड्यां रो आहार, वरज्यों नहीं सूतर मांही रे ॥ ५ ॥
ज्यूं मोटा ने छोटो गर्भ मे फेर जाणो, ज्यूं कवाड किवाड्यो में जाणो ।
कवाड्यो खोले साधु नें वेहरावे, तिणरी म करो तांणों रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्यांरा बज बडेरा आगे हूआ ते, वहख्यो कवाड्यां रो आहार ।
 तिण में दोष कह्या त्यांरा बज बडेरा, गया जमारो हार रे ॥ ७ ॥
 थोडा नें घणा उंचा थी वेंहरण रों, सूतर में नहीं उनमान ।
 थोडा नें घणा विच आंतरों नाहीं, ते पिण जाण लेसी बुधवान रे ॥ ८ ॥
 हाथ रें आसरें उंचा थी वेंहरावें, साधु नें अन पाणी ।
 जब तो साधु वेंहरतो संक न आणें, वेंहर छें निरदोष जाणी रे ॥ ९ ॥
 घणा उंचा थी आहार साधु ने वेंहरावें, जब तों साधु करे छें टालों ।
 आसरों उनमान अटकल ने वेंहरें, तिणरो सूतर में नही निकाले रे ॥ १० ॥
 थोडा उंचा थी वेंहरायां दोष न जाणें, दोष जाणें उंचा थी वेंहरायां ।
 तिम कवाड्यां रा दोष तणी तांण, छूटें न्याय हीया में आयां रे ॥ ११ ॥
 धीरें धीरें चालें साधु नें वेंहरावें, तो साधु वेंहरें अनादिक पाणी ।
 जो उतावलों ने दोडे वेंहरावें, तो नहीं वेंहरे अजेंणा जाणें रे ॥ १२ ॥
 उतावल सूं चाल्या नें कमाड खोल्या रों, अं तो दोष उघाडों दीसें ।
 धीरें चाल्या नें कवाख्यो खोल्या रों, दोष नहीं कह्यो जगदीसें ॥ १३ ॥
 बावन अनाचार कह्या दशवीकालक में, चोथो अणाचार साह्यो आण्यो ।
 तिण सूं साह्यो आण्यो तो साधु न बहरें, मोटो दोष अणाचार जाण्यो ॥ १४ ॥
 समचें तों कह्यो साह्यो आण्यो न लेंणों, इण ठामे तो मरजाद न कांड ।
 थोडी दूर सूं तो साह्यो आण्यो वेंहरें, ज्यू कवाड्यो जाणों मन मांही रे ॥ १५ ॥
 तीनां घरां थकी साह्यो आण्यो वेंहरें, तिण दूरी री विगत न कांड ।
 तिमहीज कवाड्या नें जाणो, विचार करो मन मांही रे ॥ १६ ॥
 तीनां घरां सूं तों साह्यो आण्यो वेहरे छें, ते पिण कदा घणी दूर जाणें ।
 तो पिण साधु नें वेंहरणों नाहीं, अकल सूं उनमान पिछाणें रे ॥ १७ ॥
 ज्यू कवाड उघाडे नें आहार देवें तों, लेंणो वरज्यो सूतर रे मांही ।
 किवाड्या रों आहार कठे नहीं वरज्यो, सूतर मांहे नकार छें नांही ॥ १८ ॥
 घणी दूर सूं साह्यां आण्यो रा दोष, थोडी दूर रो दोष म जाणों ।
 ज्यू कवाड रो दोष कवाड्या रो नाहीं, ए ह्डी रीत पिछाणो रे ॥ १९ ॥
 इण अणुसारे किवाडीया उपर, दिष्टन्त छें रे अनेक ।
 कहि कहि नें कितराएक कहुं, समझों आण ववेक रे ॥ २० ॥
 कोइ कहे किवाड्यो कितोएक मोटो, तिणरो सूतर में नहीं उनमान ।
 इणरो उनमान तों जीतववहार सेती, थाप करसी बुधवान रे ॥ २१ ॥
 हाथ सवा हाथ रे आसरें लांबो नें पेंहलो, एहवो बांध्यो उनमान ।
 इण वात रो निश्चो केवली जाणें, उनमान सूं जाणें बुधवान ॥ २२ ॥

ज्यू साध साधवी रे पिछेवरी रो, पेंहली तीन हाथ उनमानं ।
 पिण लंबी रो निकाल तों नही सूतर मे, पांच हाथ थापी बुधवानं रे ॥ २३ ॥
 ज्यू कवाडीया लांबा नें पेंहला री, आ पिण थाप करी छें तामं ।
 ते निश्चों तों केवलम्यांती जाणें, तिणरी खांच तणो नही कामं रे ॥ २४ ॥
 कवाडीयो खोले आहार वेंहरावें, तिणमें कोइ दोष मत जाणो ।
 कवाड कवाड्यो शरीषा नांहीं, हिवे तिणरों न्याय पिछाणों रे ॥ २५ ॥
 कवाडीयो नहीं धरती लगतो, कवाडीयो तो उंचो जाणों ।
 कोठ कोठी ने आलादिक में, तठे जीव रो नही ठिकाणों रे ॥ २६ ॥
 कीडी मकोडादिक जीवां रो ठिकाणो, धरती उपर फिरता जाणो ।
 आंमा साहमा फिरे भवलेटी खाता, तठे हिंसा तणो छे ठिकाणो रे ॥ २७ ॥
 कमाड रो चूलीयो तो धरती उपर फिरे छें, तठें हिंसा तणों छे ठिकाणो ।
 तिणसूं कवाड नें जडवो वरज्यो छें, तिम कवाड्यां नें मत जाणो रे ॥ २८ ॥
 उंची तो कीड्यां चीगटादिक परसंगे, कीड्यांदिक री नाल बंधावे ।
 पिण कवाड्यां रा चूलीया हेठें, चीगट किहांथी पावें रे ॥ २९ ॥
 जो कवाडीया रो आहार टाले तिण ने, टालणा पडसी बोल अनेक ।
 तिण अनुसारे तिण सरीषा कहूं छूं, ते सुणज्यो आण ववेक रे ॥ ३० ॥
 दही दूध री जावणी कोठ मासू काडे, साधु नें वेंहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवे, तिणने ए पिण न लेणा ताय रे ॥ ३१ ॥
 घृत रो चाडों कोठ मा सूं काडे, साधु ने वेंहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सूं आहार न लेवें, तिणने घी पिण न लेणो ताय रे ॥ ३२ ॥
 कवाडीया री चूक ने चूलियां फिरियां, आहार न वेहरे कांइ ।
 तो जावणीयां रो तूंडो कोठ फिरियां, दही ने दूध वेंहरणों नांही रे ॥ ३३ ॥
 वले कोठ माहे घी रा चाडा रो तूंडो, फेर नें वारे आण वेंहरावे ।
 कवाडीया रो चूलीयो फिरियां न लेवे, तो घी पिण न लेणो इण न्यावें रे ॥ ३४ ॥
 इत्यादिक ठाम कवाडीया माहे, त्यांरा तूंडा फेरी देवे ताय ।
 कवाडीया रो आहार न लेवें, त्यांनं ओ पिण लेणो नही इणन्याय रे ॥ ३५ ॥
 कोठी उपरला ठाम ने फेर वेहरावें, फेरें ठाम उपर ला ठाम ।
 कवाड्या फेर्या रो आहार न लेवे, त्यांनं ओ पिण लेणो नही तामं रे ॥ ३६ ॥
 केइ कहे कवाड्यो उधाड्यां, हिंसा तणी छें संक ।
 इण लेखें तो तिण ने अनेक बोलां रों, किण विष करसी निसंक रे ॥ ३७ ॥
 केइ वाइ भाइ चालेने वेंहरावे, केइ उमा ते वेस वेहराय ।
 जूंआदिक री हिंसा री संका, ते संका कम कडाय रे ॥ ३८ ॥

किण्ही भाइ री पाग में धान रो दाणों, उच्छल नें पडीयो आय ।
 तिणरा हाथ सूं वेंहरतां संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ३९ ॥
 खांडादिक वेंहरावें तिणमें, सचित्त री खबर न काय ।
 माहे धान रा दाणा री संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ४० ॥
 व्रत री गोली मां सूं व्रत वेंहरावें, तिणरें विच में फूलण होवें ताय ।
 ते वेंहरतां संका पडें साधू रे, ते संका केम कढाय रे ॥ ४१ ॥
 इम इत्यादिक अनेक वस्त में, संका पडें मन मांहि ।
 पिण व्यवहार में सुध हुवें तों, साधु वेंहर लेवें ताहि रे ॥ ४२ ॥
 तिम कवाड्यां रो व्यवहार सुध जाण नें, साधु वेंहरें छें तांम ।
 इण बात रों निश्चे तों केवली जाणें, खांच तणों नही कांम रे ॥ ४३ ॥
 जो कवाडीयां रा दोष री संका, तो इण लारें छें संका अनेक ।
 लारें संका कही ते सगली टालणी, समभों आण ववेक रे ॥ ४४ ॥
 आगें लूका नें ढूंढीया नीकलीया, जब तों हुंता वेंरागी विक्षोषों ।
 त्यां पिण कवाड्यो टाल्यों न दीसैं, हीयें विमासी देखो रे ॥ ४५ ॥
 सुध साधु तों यांरो सरणों न लेवें, पिण सूतर में वरज्यो नांही ।
 जो कवाडीया रो दोष कहों छो, ते काढो सूतर रे मांही रे ॥ ४६ ॥
 सूतर मांहे तो मूल न वरज्यो, परम्परा मे पिण वरज्यो नांही ।
 तिण सुं जीत व्यवहार निरदोष थाप्यां री, संका म करों मन मांही रे ॥ ४७ ॥
 जो कवाडीयां री संका पडें तो, संका छें ठांम ठांम ।
 ते कहि कहि नें कितराएक केहूं, संका रा ठिकाणा तांम रे ॥ ४८ ॥
 साधु तो हिंसा रा ठिकाणा टालें, छदमस्थ तणें व्यवहार ।
 सुध व्यवहार चालतां जीव मर जाएं, तो विराधक नही छें लिंगार रे ॥ ४९ ॥
 जिण जिण बोलां रो नीकालो नही छें, ते केवलीयां नें भलावों ।
 कवाडीया री तांण करेनैं, मत कोइ भूठ लगावो रे ॥ ५० ॥
 मोने तो कवाड्यां रो दोष न भासैं, जाणें नें सुध व्यवहार ।
 जे निसंक दोष कवाड्यां मे जाणों, ते मत वहरजो लिंगार रे ॥ ५१ ॥
 कवाड्या रो दोष कहे तिण उपर, जोड कीवी पाडू मभारे ।
 संवत अठारें नें वरस चोपनें, वेंसाख विद दसम ने मंगल वारो रे ॥ ५२ ॥

ढलल : १७

दुहल

केइ नलंढ धरलवें सलघ रें, ढलण डूरल डूढ अडलण ।
 तडलरल दवेक वलकल छे सलघवडलं, तेढलण डलण डलरग रल अडलण ॥ १ ॥
 तडलनें सडड नहल तडलरे वोललडे, कूडी करे बकरोल ।
 तडलने खबर नहल तडलरल वरतरल, करे रहल करड कललोल ॥ २ ॥
 सुघ सलघलं ने उथलढण डणल, उंधल कलघल डरूढणल तलण ।
 तलणसू उललठे उघलढ डूओ अलडरो, डडी गलल ने अलण ॥ ३ ॥
 इण रें वडल वडेरल अलगे डूअ, दर डलढलं लग वलडुडल सलघ ।
 इण सूतर अरुथ उंधल करे, कलडल सगलं ने असलघ ॥ ॡ ॥
 इण कलण वलघ कलघल डरूढणल, असलघ ठहरलडल इण केड ।
 इण डोडे करल छे, डरूढणल, ते सलंढलओे धर डुरेड ॥ ॡ ॥

ढलल

[अल अणुकडुडल डलण अलणुडल डे]

कठेतरल हलडलदक रल घोवण ने, दोड घडी तलंइ कहे कलडो डलणल ।
 एहडल डरूढणल कलघल डलंनल वलडेने, नलसंक थकल कहे कर कर तलणल ।
 अल सरघल छे डूढ डतल रलः ॥ १ ॥
 तलणसू सलघलं ने घोवण डूछेने लेणें, दोड घडी तलंइ घोवण कलडो डलणल ।
 वलले अरलहंत नल अलगनल लेडलणल ॥ अल० २ ॥
 वलण डूछुडल ललडो तलणकलडें डलणल वेहरखुओ, दोड घडी डूअ डछें वेहरणो घोवण ।
 डे सूतर नुडलड डलले छे तलणने, ते तो अरलहंत रल अलगनलरल खोवण ॥ ३ ॥
 डेहलल वेहरखुओ तलणतो कलडो डलणल वेहरखुओ, थे दोड घडी डलहलल वेहरो के नलड ।
 एहडल डरूढणल कलघल तलणने डूछुडो, ए उतकघल वलडे ने वहरुओ कलड ॥ ॡ ॥
 डल नलसक थकल कहुओ डूहें तो वेहरलं, सलडुरत डलणने कलडो डलणल ।
 डल लोकलं डूछुडो थे कलण लेखे वेहरुओ, तलणसू डूहे डलण वेहरलं तडलरल डरतलत अलणल ॥ ॡ ॥
 डल कहे डूहलरे वडल वडेरें वहरखुओ, दोड घडी तलंइ कलडो डलणल ।
 डलण घोवण तो नलशुडे करने, एहडल अरलहंत वोलल छे वलणल ॥ ॢ ॥
 तलणसू सुघ सलघलं वेहरणें नलंही, डूहलं डललल डरखल सलंहडें ए कडू देखे ।
 डूहलरे तो थेटसू वेहरतलं अलवलं, अं अलगनल लोडल कलण लेखे ॥ ॣ ॥
 डूहें तो अलगनल लोडल नें लोडल कलं छलं,

*डह अलंकडी डुरतुडेक गलथल के अंत डें है ।

ए कहेँ म्हेँ आगना माँहेँ चालां छां,
 दोय घडी ताँइ धोवण काचो पांणी छेँ,
 सुध साधां नें उथापण काजेँ,
 दोय घडी धोवण नें काचो पांणी थापे,
 ज्यूं कोइ पेंला नें कुसवण करण नें,
 ज्यूं सुध साधां नें असाध थापणनेँ,
 काचो पांणी जाणे जाणे नित वहरें,
 एहवा भेषघारी भिष्ट भोला लोकां में,
 दोय घडी पेहली म्हेँ धोवण पीयां ते,
 इम सांभल नें त्यांनेँ साध सरखें छेँ,
 साध होय नें काचो पांणी वेहरी बूडा,
 एं तों दोनू जणां च्यार तीर्थ बारें छेँ,

साधां नें काचो पांणी जाणेनेँ वेंहरायों,
 साध पिण जाण वेंहरें काचो पांणी,
 एहवी परूपणा कीधी तिण लेखें,
 वले बावीस टोला रा साध वाजेँ छेँ,
 काचा पाणी रे संघटें तो आहार न वेंहरें,
 एहवाइ विकल साध वाजेँ लोकां में,
 असुध आहार साधु नें अभष कह्योँ छेँ,
 भगोती गिनाता नें निरावलिका में,
 असुध आहार साधुनेँ अभष कह्योँ छेँ,
 जाण जाण असुध आहार अभष वेंहरें छेँ,
 दोय घडी धोवण नें कह्योँ काचो पांणी,
 काचो पाणी कहे नें पीता जाएँ,
 धोवण नें दोय घडी काचो पांणी जाणेँ,
 तेहीज पांणी पोतें जाण पीयेँ,

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तो एं जिन आगना स्हांमों क्यूं नहीं देखें ।
 तिण धोवण नें वेंहरें किण लेखें ॥ ८ ॥
 आप तणा वडेरॉं नें कांय विगोया ।
 साधपणा सगलां रा खोया ॥ ९ ॥
 आपरो नाक काटे नें करे असमाध ।
 आप री पीढीयां खप हुवां असाध ॥ १० ॥
 वले साधपणा रो नाम धरावें ।
 सुध साधां ज्यूं वंदावें पूजावें ॥ ११ ॥
 काचों पांणी कहों ते तो वात न भूठी ।
 त्यांरी हीया निलाड री दोनूइ फूटी ॥ १२ ॥
 वेंहरावण वाला पिण बूडा छे विशेष ।
 जो सांसों हुवें तो सूतर माँहेँ देखो ।
 आ सरधा श्री जिणवर भाषी* ॥ १३ ॥
 तिण श्रावक रो बारमों व्रत भागों ।
 ते तो निश्चें वरत विहूणा नागो ॥ १४ ॥
 इण रा वड वडेरॉ तो निश्चें नहीं साधो ।
 त्यांनेँ पिण दर पीढ्यां कीया असाध ॥ १५ ॥
 काचों पांणी रो जाणनेँ कर जाएँ गटकों ।
 त्यांनेँ विकल होसी ते करसी लटकों ॥ १६ ॥
 तिणमें सचित नें अभष कह्योँ छेँ विशेषों ।
 जो सांसो हुवें तों तीनूइ सूतर देखों ॥ १७ ॥
 तिण माँहेँ संका नहीं छेँ लिंगार ।
 ते तो नियमाइ निश्चें नहीं अणगार ॥ १८ ॥
 साधां में दोष ढाकण नें चलायो भूठों ।
 त्यांरों साधपणों तो जाबक गयो उठों ॥ १९ ॥
 ते तो भूठा थका करें फेंन फित्तुरों ।
 त्यांरा संजम सरधा मे पड गइ धूरो ॥ २० ॥

ढलल : १८

दुहल

कहे नलंव घरलव सलघ सलघवी, ढलण उरूढ चललललल ललल ।
उंवी उंवी करेँ छेँ ढरूढणल, ते सुणलओ वलत लललल ॥ १ ॥

ढलल

[सलधु ढत ढलओ इण चलगत सु]

कहे सुघ सलघलं ने आहलर वहरणु, तीजल ढुहर ढडलर जी ।
जे वुडलरू ढुहरढेँ करेँ गुओरी, ते शुरीजलण आगुडल वलर जी ।
आ सरधल छेँ ढूढ ढतुडलं री* ॥ १ ॥
तलण ढूढढती ने ढूछल कीधी, थे सलधु नलंव घरलल जी ।
थे वुडलरू ढुहर ढे करु गुओरी, ते कलण लेखे कलण नुडलल जी ॥ २ ॥
जव कहे ढूहे तुु जलण आगुडल वलर, ओ दुुढण छेँ ढूहलरे ढलंल जी ।
एँ उतकथल हुुडु दुुढण कलंल सेवेँ, वले आगुडल लुढी कलंल जी ॥ ३ ॥
तीजेँ ढुहेरे गुओरी थलढेँ, सलघलं ने उथलढण कलज जी ।
तुलरे उलटी आड ढडी गललढेँ, तुडलं छुुडी संजढ ललज जी ॥ ॡ ॥
तीजे ढुहेरे गुओरी थलढेँ, करेँ वुडलरू ढुहर ढडलर जी ।
वले ढुख सुँ कहे ढूहेँ आगुडलं लुढी, तुडलने कुण कहेसी अणगलर जी ॥ ॡ ॥
तीजे ढुहेरे गुओरी थलढेँ, करेँ वुडलरू ढुहर ढडलर जी ।
ते ढेढडरल उघलडल दीसे, धुरलण तुडलंरु जढवलर जी ॥ ॢ ॥
वुडलरू ढुहर तणी गुओरी सलघ ने, कहे दीधी शुरीजलण आढ जी ।
ते वीर वचन उथलढुडु तुडलंरु, उदे हुआ छेँ ढलढ जी ॥ ॣ ॥
सलधु वुडलंरु ढुहर ढेँ करेँ गुओरी, तुडलंरु ढूढुओ करेँ ढलतूर जी ।
ढुतेँ वुडलरू ढुहर ढेँ करेँ गुओरी, तुडलंरल सलघ ढणलढेँ घूर जी ॥ । ॥
कहे सुघ सलघलं ने एकण दलनढेँ, आहलर करणु एक वलर जी ।
दुुडु ने तीन वलर आहलर करेँ ते, शुरी जलण आगुडल वलर जी ॥ ॥ ॥
जव लुुकलं इणनेँ ढरूशन ढूढुडुडु, थे एकण दलन ढडलर जी ।
थे कलतरी वलरलडलं आहलर करु छुु, ए उतुतर वुु इण वलर जी ॥ १० ॥
जव कहे दीडुडु ढूहेँ एकण दलन ढेँ, आहलर करलं घणी वलर जी ।
ढूहेँ वुुडे कहेलं जलण आगुडल लुढी, दुुढ सेवेँ करलं ढूहेँ आहलर जी ॥ ११ ॥

*थहे आँकडी ढरुतुडेक गलथल के अतुत ढेँ हेँ ।

पिण एंतो कहें म्हें उतकष्टां छां, जिण आग्या रा पालण हार जी ।
 तो एं आग्यां लोप दोषण कांय सेवें, कांय करें घणी वार आहार जी ॥ १२ ॥
 म्हें तो दर पीढ्यां लग करता आया, च्याहं पोहर में आहार जी ।
 एक दोय विरीयां रो कारण नाहीं, म्हारो तो ओहीज आचार जी ॥ १३ ॥
 इण रें लेखे इण री दर पीढ्यां में, साध हुवो नहीं एक जी ।
 त्यां पिण असणादिक एकण दिन में, कीयो वार अनेक जी ॥ १४ ॥
 जो भगवंत क्हों हुवें सुध साधां नें, बीजी वार न करणो आहार जी ।
 अनेक वीरीयां आहार करें छे, त्यांनं कुण कहिसी अणगार जी ॥ १५ ॥
 एकवार साधनं आहार परूपें, तिण चोडे चलायों कूड जी ।
 आप तो आहार करें बहु वीरीयां, तिण रा साधपणां में धूर जी ॥ १६ ॥
 साध नें आहार छ कारणं करणों, कारण विण करणों नांहि जी ।
 एक दोय वार रो नाम न चाल्यो, जोवो सूतर रे मांहि जी ॥ १७ ॥
 कहे नितको साध नें आहार न करणों, करें ते आग्या वार जी ।
 जब उण नें पूछ्यो थें कांय करो नित, असणादिक च्याहं आहार जी ॥ १८ ॥
 जब क्हो म्हें तों जिण आग्या लोपी, ओ दोषण छे म्हारें मांय जी ।
 एं उतकष्टा वाज दोषण कांय सेवें, जिण आग्या लोपी कांय जी ॥ १९ ॥
 म्हें तो दर पीढ्यां लग खाता आवां छां, नितरा नित च्याहं आहार जी ।
 वले कह दियो चोडें लोकां में, म्हें तो जिण-आग्यां वार जी ॥ २० ॥
 तीजा पोंहर टाल गोचरी न करणी, एक टक विण न करें आहार जी ।
 वले नित रो नित आहार नहीं करणो, ओ साध तणों आचार जी ॥ २१ ॥
 म्हें कहां म्हें तों पूरों नहीं पालां, म्हें तों पालां जिसें फल होय जी ।
 इसी कहे नें पलो छुडावें, पिण भोलां खबर न कोय जी ॥ २२ ॥
 उंधी सरधा भेष धाखां नी परगट कीधी, सिरियारी सहर मभार जी ।
 संवत अठारें वरस एकावने, काती विद चवदस बुधवार जी ॥ २३ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधारी भागल भिष्टी थया, त्यासूं पले नही आचार ।
 ते ववेक विकल सुध बुध बिना, ते बोले नही मूढ विचार ॥ १ ॥
 वधोतर देखे जिण् धर्म री, जब लागें अमितर लाय ।
 जब कूडा कूडा आल दे साधां भणी, पछे लोकां माहें देवें फॅलाय ॥ २ ॥
 पोते तो हूआ ठाला ठीकरा, पांचूं महाव्रत दीया छेंबोलाय ।
 धीग होय बॅठा छें बाबा तणा, तयारिं भूठ री सूग न काय ॥ ३ ॥
 मत विखरतो देखे आप रो, फिरता देखे श्रावकां नें ताय ।
 तिणसुं छल छिदर जोवे साधां तणा, आल देवण रो करे छेंउपाय ॥ ४ ॥
 जस कीरत देखे साधां तणी, त्यासूं एदुख सहां रेंन जाय ।
 तिण सूं आल दीयो अन्हारवी थकें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या में]

मेंला चीगटा कपडा मेह तां भीना, तिण में ज्यां लग सचित्त तणी हुवें संक ।
 तिण संका सहीत साधु कपडों नीचोवें, तिण साधु नें दोष लागें छें निसंक ।
 भेषधारी तो आल देता नहीं सके* ॥ १ ॥
 भूठ बोलण री तयारें सूग नही छें, ते जेन तणा विगडायल गेरी ।
 ते नरक निगोद तणा होय बॅठा, सुध साधां तणा छें अंतरंग बेरी ॥ २ ॥
 मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना, तिण मे सचित री संका न हुवें लिगार ।
 तिण कपडा ने निसंक निचोवें साधु, तिण में दोष वतावे छें मूड गिवार ॥ ३ ॥
 संका रहीत कपडा ने साध नीचोवें, त्यांरा पांचोइ महाव्रत कहे छें भागा ।
 केई भेषधारी तो इसडी परूपे, ते तों समकत विरत बिहूणा नागा ॥ ४ ॥
 पांणी सचित हुवो अथवा अचित पांणी हुवों, साधु नें कपडो नीचोवणो नाहीं ।
 नीचोयां साधपणा रो खेरोइ न रहे, इण सूं इधिको आकार्य नही छें काई ॥ ५ ॥
 म्हारा बाबिस टोला माहें विगडायल, ते पिण कपडो नही नीचोवें ।
 एहवी उंधी परूपणा कर कर पापी, भोला लोकां नें निसंक डबोवे ॥ ६ ॥
 किणही ववेक रे विकल आय कह्यो जब, तिणरो तो पुरों न काढें निकालों ।
 अंतरंग घेष रो घालीयो पापी, सुध साधां नें दीयो अणहंतो आलो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बावीस टोला कहें छें, तिणमें,
 तिण टोला तणा टाणोकड भिष्ठी,
 आप रो मत थापण मूढ मिथ्याती,
 तिण रा थावकां पासें वके दिन राते,
 इण भूठाबोलां री वात माने छें,
 तिण भूठाबोलां री पषपात करसी,
 मेंमंत वरसात मंडीयों तिण काले,
 तिण मांहे तो नीलण फूलण रा जीव,
 सरदी मिटे नही तठा तांइ कपडा मे,
 समे समे पिण विणसें छें अनंता,
 पांणी अचित्त हुआ कपडो नही नीचोवे,
 तिण हिसारा पाप थकी साध रे,
 पहिलों महाव्रत राखण रे तांइ,
 तिण मांहे दोष कहें छें अग्यानी,
 अचित्त पांणी हुआं साध कपडों नीचोवें,
 ते ववेक तणो विकल छें मूर्ख,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवें,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवें,
 तिण ववेक रा विकल नें साध सरखें छें,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडो नीचोवें,
 तिण जीवां री दया तों ओलखी नांही,
 अचित्त पांणी हुआं पछें कपडों नीचोवें,
 ते सुनें चित्त हीयाफूट ज्यूं बोले,
 एहवो आल अन्हाखी साधां नें दीधो,
 कदा दांकीं भले इण आल दीयां थी,
 एहवों आलदेइ लोकां में फेलायों,
 तिणरा सेवग सुण सुण हरष हुआ छें,
 आल देणवाला नें हरषणवाला,
 ते हीयाफूट गधां रा साथी,
 भेषधारी आल अणहूंतों दीधों,
 इण लेखें उण नें इतरो प्राच्छित्त आवें,

ढीला मे ढीलें टोलों विशेष ।
 आप रा किरतव स्हांमों मूल न देखें ॥ ८ ॥
 सुध साधां ने दीधों अणहूंतों आलो ।
 ते पिण साच नें भूठ रो नकाडें निकालो ॥ ९ ॥
 ते पिण तिण करे जावक वूडा ।
 ते पिण चिहूं गति मांहे दीससी भूडा ॥ १० ॥
 मेंला चीगटा कपडा भीना राखें जाण ।
 समे समे अनंता उपजे छें आंण ॥ ११ ॥
 समे २ अनंता उपजे छें तांम ।
 निरंतर मंडीयों रहे संग्राम ॥ १२ ॥
 तो अनंत जीवां री हिंस्या साधु नें लागें ।
 पेहलो माहाव्रत निश्चेइ भागे ॥ १३ ॥
 पांणी अचित्त हुआ साधु कपडों नीचोवें ।
 साधां नें आल देइ नें आत्मा डबोवें ॥ १४ ॥
 तिण मांहे दोष कहें छें पापंडी ।
 तिण भेषलइ आत्मा नें भंडी ॥ १५ ॥
 तिणमें दोष कहें छें मूढ मिथ्याती ।
 तिण विकलां री अकल रही छें जाती ॥ १६ ॥
 तिणमें दोष कहें तिण री भिष्ट छें बुध ।
 त्यांमें पिण काइ म जाणजो सुध ॥ १७ ॥
 तिण मांहे तो दोष माठी मत रों जाणें ।
 पीपल बांधी, मूर्ख जिम ताणें ॥ १८ ॥
 त्यांरा पांचोइ माहाव्रत कहें छें भागा ।
 ते विरत विहूणा कहीजें नागा ॥ १९ ॥
 ते निश्चेइ बूड गयों कालीघार ।
 तो पाघरो जाए नरक निगोद मभार ॥ २० ॥
 तिण दुष्टी रे संसार दीसें छें जादा ।
 जाणें पगां रें गूगरा बांधा ॥ २१ ॥
 साराइ कर्म तणा पूज बांधें ।
 त्यां श्री जिण धर्म न ओलख्यों बांधें ॥ २२ ॥
 अणहूंताइ माहाव्रत साधां रा उडया ।
 कह्यों छें वैतकल्प नें ठाणांग मांहे ॥ २३ ॥

उणमे सावपणो तो आगेंइ न दीसैं,
 पिण उणरें लेखे उण ने सावपणो आवे,
 तिणने सावपणों फेर दीघां विनाई,
 एहवा प्राच्छित रो गाला गोलो करे त्यामें,
 जिण टोला मे दसमो प्राच्छित सेव्यो,
 एहवा पिण प्रायच्छित गउ कर बेठा,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडा नीचोवे,
 तिण तीनोइ कालना रपेसरं नां,
 अचित्त पाणी हूवा निसंक सूं सावां,
 वले आगमीये काल साध कपडा नीचोसी,
 अचित्त पांणी हूआं कपडा नही नीचोवे,
 आ पिण समझ नही विकलां ने,
 अचित्त पांणी हूआ कपडा नही नीचोवें,
 नीचोयां थकां पाप किसो लागे छे,
 साधु तो पाप अठारेइ त्याग्या,
 अचित्त पांणी हूआं पछे कपडा नीचोवें,
 अचित्त पांणी हूआं सावां कपडों नीचोवे,
 तो पाप अठारे जिण कह्यां तांमें,
 पांणी सचित्त हूवो अथवा अचित्त पाणी छे,
 माहें नीलण उपजो भावे फूलण उपजो,
 नीलण फूलण सहीत कपडो सूके जब,
 अचित्त पांणी हूओ छे तोही कपडा ने,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें,
 इम कहि कहि अग्यांनी भोला लोकां रे,
 जब तो वरस तो मेह उभो रह्यां पछें,
 जब तो तिण पांणी में पग नहीं देणों,
 ग्रहस्थ रे घरे धोवण रो कंडो भख्यो छे,
 तिण लेखे तों धोवण नही वहरणो,
 दूब दही चास आदि अनेक दरब छे,
 तिण लेखें या दरबांने वहरणो नाहीं,
 इम प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें,
 तो अचित्त पांणी हूआं पछे कपडो नीचोयों,
 ६१

पिण सावांनैं आल दीयो छें अन्हाखी ।
 ठांगाअंग ने वृहतकल्प छें साखी ॥ २४ ॥
 इण सूं केइ भेलो करसी आहार ।
 सावपणा रो खेरो न दीसैं लिगार ॥ २५ ॥
 अकार्य अकार्य हूआ विरोषें ।
 ते तो प्राच्छित लेसी किण लेखें ॥ २६ ॥
 त्यांरा पांचोइ महावरत भागा ठेहराया ।
 पांचोइ माहावरत जाबक उडायया ॥ २७ ॥
 कपडा ने नीचोया छें गयें कालो ।
 त्यां सगला ने दुष्टी दीयो छे आलो ॥ २८ ॥
 तो नीलण फूलण रा जीव अन्ता रों घाती ।
 ते हीयाफूट गवां रा साथी ॥ २९ ॥
 भीनो राखें ते कारण कांइ ।
 ओ पिण विकलां रे निरणों छे नाही ॥ ३० ॥
 चोखी छें त्यांरी सुमत ने गुपती ।
 त्यांनैं पाप कठा सूं लागे रे कुमती ॥ ३१ ॥
 त्यारो सावपणों पापी कहें छे भागों ।
 ते किसों पाप सावां ने लागे ॥ ३२ ॥
 पिण सावां ने कपडो नीचोवणों नाही ।
 तिणरो साधु ने पाप न लागें कांई ॥ ३३ ॥
 साधू नैं कपडा रे लगावणो हाथ ।
 साधू ने नीचोवणो नहीं अंसमात ॥ ३४ ॥
 ते नीचोवणो किण ही सुतर में न चाल्यो ।
 हीया में घोचो अणहूंतों घाल्यो ॥ ३५ ॥
 पांणी वहे छे बजार रे माहि ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३६ ॥
 काचो पांणी घाल्यो तिण धोवण माहीं ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३७ ॥
 काचों पांणी घाल्यो छें त्यां माही ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाहीं ॥ ३८ ॥
 जब तो कहे म्हें तो अचित्त हूआं ल्या छों ।
 तिणमें दोष कहें आल किण लेखें दो छो ॥ ३९ ॥

अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोयों,
तो थे पिण पाछे बोल कह्या त्यारों,
अचित्त पांणी हुआ कपडो नीचोयों तिणमें,
तिण साधपणों ओलखीयों न दीसैं,
पातरा माहे दूध दही चास धोवण,
त्यानिं तो खाता पीता नहीं संकें,
गोचरी करतां छांट पूंहरा आया,
तो अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोवें,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडो नीचोयो,
अण विचाख्या आल पाषंडीयां दीघो,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडों नीचोयों,
त्यानिं वांढें पूजें सुध साध जाणने,
इण भूठाबोलां री परतीत न करणी,
तिण पूछ्या रा जाब न आवे पूरा,
इण भूठाबोलां री परतीत करसी,
न्याय निरणा विना आल साघां नें देसी,
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना,
तिणमें नीलण फूलणादिक कंथूआ उपजें,
दोय च्यार महीना तिण कपडा माहें,
जीव उपजें तो नचित्त सू उपजों,
मेंला चीगटा कपडा मेह सू भीना,
तो पिण कपडा ने भीनों राखणों,
अचित्त पांणी हुआ पछे कपडो नीचोवे,
इतरी पिण ओलखणा नही तिणनें,
अचित्त पांणी हुआ पछें कपडो नीचोवेणो,
समत अठारें सतावने वरसैं,

त्यानिं कहो थें सुतर में काढ दिखावो ।
सुतर मांसूं काढ वतावो ॥ ४० ॥
दोस कहें त्यारे पुरों अंधारो ।
भेष पहर नें आत्म कीधी खुवारो ॥ ४१ ॥
तिण मांहे काचों पांणी पडीयो छें आयों ।
तो कपडों नीचोयां दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४२ ॥
जब उभा रहें ग्रहस्थ रा घर माह्यो ।
तिण माहे दोष कह्यो किण न्यायों ॥ ४३ ॥
तिणमें दोष कहें छें ते बोलें छें उंधा ।
ते भारीकर्मा किम बोलसी सूघा ॥ ४४ ॥
तिणमें दोष कहें मूढ विना विचारों ।
त्यारें पिण जाणजों पुरों अंधारो ॥ ४५ ॥
ओं तों कायों हूओ कहि दे काचो पांणी ।
जब थोडां में बोलें फिरती वांणी ॥ ४६ ॥
ते भव २ मांहे घणा पिछतासी ।
ते नरक निगोद में भीका खासी ॥ ४७ ॥
पांणी अचित्त हुआइ नीचोवणों नाहीं ।
तिणरो साधू ने पाप न लागो कांइ ॥ ४८ ॥
नीलण फूलणादिक जीव उपजें आय ।
पिण कपडा ने नीचोवणों नही ताय ॥ ४९ ॥
पोहर हुवें तथा आधीरात ।
पिण नीचोवणा नही असमात ॥ ५० ॥
तिण में दोष कहे छें मतहीण मिट्टी ।
निश्चेंइ साध न जाणें समदिष्टी ॥ ५१ ॥
ते ओलखायो पुर सहर मफार ।
आसोज विद नवमी नें सुकरवार ॥ ५२ ॥

ढाल : २०

ढुहा

केइ भेषघारी सुघ बुघ विना, बोले नही वचन विचार ।
 कहे हिवडा आरो छे पांचमो, पूरों पले नहीं आचार ॥ १ ॥
 म्हे दोष सेवां छा भारी २ जांग ने, तिणरो प्रायच्छित्त पिण न ल्यां तिलमात ।
 तो पिण म्हे सुघ साध, छां, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
 म्हे बाजार में परठां मातरो, तिणरो चोमासी प्राच्छित्त साख्यात ।
 ते म्हे परढ्यो परठां परठसां, तिणरो प्राच्छित्त न ल्यां असमात ॥ ३ ॥
 कोइ आवें नही ने देखे नही, तठे मातरो परठणों विचार ।
 ते म्हे परठा छा लोकां देखता, तिणरो प्राच्छित्त नही ल्यां लिगार ॥ ४ ॥
 इत्यादिक दोष अनेक छे, ते पिण सेवां छा वालंवार ।
 ते म्हे दोष सेवां छां जांग २ ने, तिणरो प्राच्छित्त नहीं ल्यां लिगार ॥ ५ ॥
 बाजार में परठां छां मातरो, भारी दोष जांणे तिण मांय ।
 तिण लेखे त्यामें साघपणो नही, ते मुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[५० जिण आग्या०]

दस पांच वार एकण दिन मांहे, मातरों परठे बाजार मांय ।
 यारी सरघा रे लेखे जिती वार परठे, जितरा चोमासी प्रायच्छित्त आय रे ।
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करों आत्म भारी रे ।
 भवीयण सूत्र जोय करो निसतारी ॥ १ ॥
 एक दिन मातरो परठे तिणरो, चोमासी प्रायच्छित्त आवे ।
 इण लेखे एक दिन रा मातरा परठण मे, अनेक दिनां रो साघपणो जावे रे ॥ २ ॥
 तो ए नित २ अनेक चोमासी रो प्राच्छित्त, जाण २ सेवे दिन रात ।
 इण लेखे तो यामे साघपणा री, वाकी रह्यो नही असमात रे ॥ ३ ॥
 इण विचे तो अनेक भारी २ दोष, नित २ सेवे छे ताहि ।
 यारो साघपणों वहि गयो जाबक, मातरा परठण रा दोष मांहि रे ॥ ४ ॥
 यां मातरा परठण मे दोष वतायों, तिण लेखें त्यां साघपणों खोयो ।
 तो बीजा भारी २ दोषां रो प्रायच्छित्त, त्यांरी तिथ न करणी कोयों रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक पइसा रा लेंगायत आगें, देवालों कांटे दीयों नागें।
 जब भारो र वोहरा हुता ते, तिण पासे आयनें कांइ मागे रे ॥ ६ ॥
 तो एक मातरों परठें बाजार में तिणरों, यांहीज दोष अणहूंतो बतायो।
 इण लेखें तो यांहीज यांरो साधपणों, अभांरे धूएं जावक उडायो रे ॥ ७ ॥
 साधां नें दोषीला थापण नें, आपरोइ साधपणों गमायो।
 बाजार में मातरों परठण रो, अणहूंतो दोष बतायो रे ॥ ८ ॥
 कोइ पेंला नें कुसावण करवा, आपरो नाक देवें कटाय।
 ज्यू ए साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होय जाय रे ॥ ९ ॥
 यांरा बडबडेरा आगें हुआ त्यां, मातरों परठ्यां बाजार माह्यो।
 तिण माहें चोमासी दोष बताए, यांरा बडां नें दीया उडायो रे ॥ १० ॥
 यांरा बडा बडेरा आगें हुआ ते, ओं तो दोष किणही न बतायो।
 बाजार माहें मातरा परठण रों, ओं तो यांहीज दोष बतायो रे ॥ ११ ॥
 साधु तो बाजार में मातरों परठें, घणा लोकां देखंता ताहि।
 तिण माहें दोष अणहूंतों बतायो, तिण रो मूढ न जाणें न्यायो रे ॥ १२ ॥
 उचार पासवण परठण रों प्राच्छित कह्यो ते, उचार आश्री प्राच्छित जाणों।
 पासवण परठ्यां रो प्राच्छित, नही छें, तिणनें रुडी रीत पिछाणों रे ॥ १३ ॥
 पासवण तो कही छें उचार रें सहचर, एकली पासवण कही छें नाही।
 तिणरों निरणों कहूं छूं नसीत सूतर सूं, ते विचार करे देखों मन मांही रे ॥ १४ ॥
 नसीत सूतर रे चोथें उदेशें, उचारपासवण परठ्यां पछे सुच करणों।
 कह्यो छें उचार रों असुच टालण नें, तिणरो बुधवंत कीजो निरणों रे ॥ १५ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, कपडा सूं लूहें नांही।
 तिणनें मासीक प्रायच्छित आवें, नसीत सूतर रे मांही रे ॥ १६ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, लकडी नें वांस तण खपाट।
 बले आंगुली ने सिलका करी लूहें, तिणनें मासीक प्राच्छित रो पाठ रे ॥ १७ ॥
 कपडा सूं लूहणों चाल्यो, लकडादिक सूं लूहणो नांही।
 ते पिण उचार आश्री कह्यो छें, पासवण रो लूहसी कांइ रे ॥ १८ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, सुच नहीं लेवें ताय।
 असुच तणों लेप लागों राखें, तिणनें मासीक प्रायच्छित आय रे ॥ १९ ॥
 लेप टालणों कह्यो छें सुच लेइ नें, ते तों उचार आश्री छें ताम।
 पासवण तो पोंतेंइज सुच छें, इणरो सुच तणों कांइ कांम रे ॥ २० ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, तिण उपर सुच लेवें ताहि।
 तिणनें मासीक प्राच्छित कह्यो छें, नसीत सूतर रे मांहि रे ॥ २१ ॥

उचारपासवण परठीयां पछे, तिहांइज सुच लेवणो नांही ।
 ते पिण उचार उपर लेणो वरज्यो, अठे पासवण रों कांम कांड रे ॥ २२ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछे, सुच लेवे घणों अलगो जाय ।
 तिणनें पिण मासीक प्रायच्छित आवे, ते पिण उचार आश्री छें ताहि रे ॥ २३ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, सुच लेणो कह्यो जिणराय ।
 तीन पुसली सूं पाणी इघको लेवे, तिणने मासीक प्रायचित्त आय रे ॥ २४ ॥
 तीन पुसली सूं सुच लेणो चाल्यो छें, उचार आश्री कह्यो छे तांम ।
 पासवण तां पोतेंइ सुच छे, पासवण ने सुच रो नही कांम रे ॥ २५ ॥
 इतरा तो बोल नसीत में चाल्या, चोथा उदेसा मांहि ।
 वले चोमासी प्राच्छित रा बोल अनेक, पनरमे उदेशों छें ताहि रे ॥ २६ ॥
 कोइ आवे नहीं वले देखे नही, तिहां परठणों कह्यो जिणराय ।
 उत्तराघेन चोवीस में घेने, तिणरो पिण न जांण्यो न्याय रे ॥ २७ ॥
 उचारपासवण तो लघू बडी नीत, खेल ते मुख नो बलखों जाणो ।
 संघाण ते नाक नो छे सलेषम, जल ते मेल लीजों पिछांणो रे ॥ २८ ॥
 आहार ते असणादिक च्याहं, उपधि ते सारा उपगरण जांणो ।
 देह सरीर जीव सूं रहीत हूवो ते, इत्यादिक दरव अनेक पिछांणो रे ॥ २९ ॥
 यांमें तथाविध छे परठवा जोग, सुध थडले परठणा तांम ।
 जेणा ने उपयोग सहीत सूं, राखेने सुध परिणाम रे ॥ ३० ॥
 कोइ आवे नही वले देखे नाही, तिहां परठणो कह्यो जिणराय ।
 तिणमे किणही एक दरव आश्री कहाँ छे, उचारपासवण रे न्याय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यूं मिनष में उपीयोग वारे कह्या छे, पिण एकण मे वारें छे नांही ।
 ज्यूं समचे कहाँ आवे देखे नांही, तिहां परठण री विध जांणजों यांही रे ॥ ३२ ॥
 कोइ आवे नहीं वले देखे नही तिहां, सरीरादिक परठणो जाय ।
 तिण सग्रह शब्द में सगला कह्या पिण, सगला नही छे ताय रे ॥ ३३ ॥
 आहार उपधि ग्रहस्थ रे कांम आवे छे, तिण देखतां परठणों नांही ।
 अथवा तिण देख्यां हेला निघ्रा हुवें, ते विचार करणों मन मांही रे ॥ ३४ ॥
 जब कोइ कहे ग्रहस्थ देखतां, परठणो नही लिगारो ।
 उत्तराघेन मे सगलो वरज्यो छे, ओ देखलो पाठ उचाडो रे ॥ ३५ ॥
 इम कहे तिणनें ग्रहस्थ देखतां, काजो पिण परठणो नांही ।
 पग पूजें नें रज दूर न करणी, राखादिक नही परठणी कांड रे ॥ ३६ ॥
 पांणी नीतारीया पछें लारलो गरदो, ते पिण देखता परठणो नांही ।
 भोलो लूहणों गलणो घोया पछे, घोवण देखतां परठणो नही कांड रे ॥ ३७ ॥

वधे धोवण पांणी पीतां वधे तों,
 बले फूफदादिक नें सरीर मेंल,
 देखतां नहीं धोवण खोलीयादिक नें,
 गोबरादि पगां रे लागों हुवें तो,
 भाठो ढलीयों बगदो नें रेत,
 बले खेल संघाण नें मातरादिक,
 जो सगला दरब देखतां वरज्या छें,
 त्यांरी अर्भितर आंख हीयारी फूटी,
 जब तों कहें म्हे दोष जाणे नें सेवां,
 पिण ए सुध साध बाजें लोकां में,
 इम कहे नें अग्यानी पार होय जावें,
 परठण रो दोष अणहूतो बतावें,
 साधां ने दोषीला थापण,
 आपरो साधपणो जाबक उठें छे,
 पिण एंतां अनेक दरब देखतां परठे,
 बले साधपणां रो नांव घरावें,
 ओर तो भारी भारी दोष अनेक,
 पिण यां परठण रो दोष बतायो तिणमें,
 अंग उपंग उघाडा करनें,
 तिहां आवे नहीं देखे नहीं ग्रहस्थ,
 आहार सुखडी खादिम सादिम घणा हुवें,
 ते असणादिक ग्रहस्थ रें काम आवें,
 उपधि कपडादिक घणा हुवें तों,
 ए पिण ग्रहस्थ रें काम आवें छे,
 जीव रहीत सरीर हुवे जब,
 ते एकंत जायगा नहीं परठें तो,
 त्यामें केइ दरब तो मारग मांहे परठ्यां,
 तिण सूं मारग टाले नें एकंत परठे,
 जे जे दरब देखतां परठ्यां,
 बले हेला निदा अजेंणा न हुवें तो,
 असणादिक सीतमात्र खारा खेरों,
 ते अजेंणा निद्या टालनें देखतां परठ्यां,

ते पिण देखतां परठणों नाहीं ।
 देखतां नहीं परठणो कांइ रे ॥ ३८ ॥
 पगादिक पिण धोवणा नांही ।
 देखतां अलग्गो करणों नहीं त्यांही रे ॥ ३९ ॥
 ए पिण देखतां परठणा नांही ।
 देखतां परठणो नहीं कांइ रे ॥ ४० ॥
 तों ए परठें छे किण लेखे ।
 पोतें बोल्या री पोतें न देखें रे ॥ ४१ ॥
 तिण सूं देखतां परठां छां ताय ।
 ते दोष सेवें किण न्याय रे ॥ ४२ ॥
 साधां नें उथापण विशेषें ।
 पिण सूतर साह्यां न देखें रे ॥ ४३ ॥
 पोतें पिण दोषीला जाय ।
 तिणरी खबर न काय रे ॥ ४४ ॥
 एक दिन माहें वार अनेक ।
 ते बूडे छे विनां ववेक रे ॥ ४५ ॥
 सेवें छे दिनरात ।
 साधपणों न रह्यो अंस मात रे ॥ ४६ ॥
 उचार परठणो एकंत जाय ।
 तो निद्या लोकां में न थाय रे ॥ ४७ ॥
 ते पिण देखतां परठणों नाही ।
 बले निद्या पामें लोका मांही रे ॥ ४८ ॥
 लोकां देखतां परठणों नांही ।
 बले निदा पामें लोकां मांही रे ॥ ४९ ॥
 ते पिण देखतां परठणों नाही ।
 हेला निद्या पांमें लोकां मांही रे ॥ ५० ॥
 बेइन्द्रियादिक आवें साख्यात ।
 तो टलें जीवां री घात रे ॥ ५१ ॥
 ग्रहस्थ रे काम नावें काइ ।
 देखतां परठ्यां दोष छे नांही रे ॥ ५२ ॥
 उपगारणादि अंसमात ।
 तिणमें दोष नहीं तिलमात रे ॥ ५३ ॥

दस दोष रहीत षेत्र हुवें तिहां, परठणो हठी रीत जाण ।
 सगला बोला रो षेत्र समचे कह्यो छे, तिण री वुधवंत करजों पिछाण रे ॥ ५४ ॥
 आवे नही वले देखे नांही, संजम प्रवचन विराधीजे नांही ।
 वले उची नीची भूम नही हुवें, त्रिणा पत्रादिक नहीं त्यांही रे ॥ ५५ ॥
 थोडा कालनों अचित थडलों हुवे, विसतीरण कही जगनाथ ।
 च्यार आंगुल कही अचित उपरली, गांमादिक थी दूर विख्यात रे ॥ ५६ ॥
 बिल उंदरादिक नही हूंघाड, तस प्राण बीजादिक रहीत ।
 दस बोल कह्या छे समचे दरबां रा, ज्युं उचार पासवण री रीते रे ॥ ५७ ॥
 पिण सगलाइ दरब परठण रे उपर, दस दस बोल कह्या छे नांहीं ।
 कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें, ते, विचार करो मन मांही रे ॥ ५८ ॥
 तीन च्यार मारग मेला हुवे तिण ठामें, वले मझ वाजार रे मांही ।
 तिण ठामें साध ने उतरणो चाल्यो, ते क्युं मातरो परठसी नाही ॥ ५९ ॥
 मातरा ने ओर दरब परठण री, विघ ओलखाइ पुर सहर मझार ।
 संवत अठारे सतावनें वरसे, आसोज सुद तेरस मंगलवार रे ॥ ६० ॥



ढुहल

डलषु डलडलल वलकल हुडल तके, करुं अडुड वुंहरण रल थलड ।
 डुडर डुं अडुड अरुड हुरुतल, थुडल करुं अंगुडलनी वललड ॥ १ ॥
 कलहलंडक डलठ डुड डुतर डुं, तलणरुं नुडलड डुंलु नुंहु ।
 डलडलं नुं अडुड वुंहरलवुडलं डुडुं कहुं, एहुवुी करुं अंगुडलनी लुड ॥ २ ॥
 डलडलं नुं अडुड वुंहरलवुडलं, तलडडुं डुडुं नुंहुं अंतडलत ।
 डुडुं कहुं अडुड वुंहरलवुडलं, तलणरल डुड डुं डुडर डललुडलत ॥ ३ ॥
 डुडलर अलहलर डलडलत नुं अडुडडुतल, अरलक वुंहरलवुं डलंग डलंग ।
 तलणडुं डलड अडुड वुंहुत नलरडरल, एहुवुी करुं अंगुडलनी तलंग ॥ ॡ ॥
 ए डलठ डुंगुतुी डुतर डुडुं, डलतक अलडुडल डलडुड ।
 तलणरुं अरुड करणडललु डलड डरडुडुं, तलण केवुलुडलं नुं डुडुं डुडलड ॥ ॡ ॥
 डुडडडुड अरुड करुं डुहुं, तलणरुं केवुलुडुी डलंगुं नुडलड ।
 कडल कुडु डुडुवंत डुड थकुी, डुनडलंन थुी डुवुं वुतलड ॥ ॢ ॥
 डलंग अडलडु थलडुडलं, वुीर वडुन वलडडलड ।
 डुतर डुं डलण डललुं नुंहुं, ते डुरतड डुडुं अलुडलड ॥ ॣ ॥
 डलड नुं डलडलत नुं अडुड डुडलं, कहुं डुहुत नलरडरल अलुड डलड ।
 वलण डुंथुी डरवुड रुं नलरणुं कहुं, ते डुणडुं डुडडलड ॥ । ॥

ढलल

[अ अडुडकनुड डलर अडुडकनुड डुं]

अडलडु अलहलर नुं डलडलत कहुं डलण, अणडुणुडुं ते अडुडडुुं थलवुं ।
 ते डलडलं नुं अरलक डलंगुं वुंहरलवुं, तलणरुं अलुड डलड नुं डुहुत नलरडरल वुतलवुं ।
 अडुड वुंहरण रल थलड करुं ते अंगुडलनी, तथल अडुड वुंहरण रल थलड करुं डुत कुडुडु ॥ १ ॥
 कुडु अल डलडलत नुं अडुडडुुं डुं, ते डलडलं नुं अरलक डलंगुं वुंहरलवुं ।
 तलणडुं डलण डलरग रल अडुडलं अंगुडलनी, तलणरुं अलुड डलड नुं डुहुत नलरडरल वुतलवुं ॥ २ ॥
 कलडु डलंगुी डलडलत नुं अडुडडुुं डुं, ते डलडलं नुं अरलक डलंगुं वुंहरलवुं ।
 तलणडुं डलण डलरग रल अडुडलं अंगुडलनी, अलुड डलड नुं डुहुत नलरडरल वुतलवुं ॥ ३ ॥
 कलडल डलल डलडडलडलक अडुडडुुं डुं, ते डलडलं नुं अरलक डलंगुं वुंहरलवुं ।
 तलण डुडलं डुं डुड डललुडलतुी डुडडल, अलुड डुु डलड नुं डुहुत नलरडरल वुतलवुं ॥ ॡ ॥

अडुड अलकडु डुरलडुडु डलथल के अलुड डुं हुं ।

सचित्त पांन डोढादिक असुभता छें,
 तिण दीघां मे मूढ मिथ्याती जीव,
 च्याह् आहार सचित्त नें असुभता छें,
 तिण दीघां में मूढ मिथ्याती जीव,
 साघानें आहार सचित्त ने असुघ वेहरावें,
 साधु जाणें सचित्त असुभतो लेवें तो,
 साघां रें आहार सचित्त ने असुघ लेवण रा,
 रोगादिक पीड्यां साधू रा प्राण जाएं तोंही,
 असल श्रावक ते साघाने असुघ न देवें,
 असुघ देइने सांघां रो साघपणों न लूटे,
 कदा राम रों घाल्यो असुघ वेंहरावे,
 व्रत भांगो ने पाप लागो छें तिणरो,
 च्याह् आहार सचित्त नें असुभता छें,
 सुघ साधू तो जाणेंने असुघ न वेंहरें,
 अफासु नें अणेशणीज्जे पाठ सूतर में,
 जथातथ तिणरो अर्थ करे तो,
 तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक वतावे,
 वले विविध प्रकारें घुचलाइ घाले नें,
 ओं तो पाठ भगोती सूतर में छे,
 च्याह् आहार सचित्त ने असुभता दीघां में,
 फासु एषणीक साधु नें देवे श्रावक,
 ते सचित्त असुघ जाणे किम देवे,
 इण पाठ ने मूढे आणे वांखवार,
 जो असुघ वेंहरण रा परिणाम नहीं छें,
 च्याह् आहार सचित्त नें असुघ वेंहरावें,
 भगोती पांचमें सतक छठें उदेसैं,
 साघ नें आहार सचित्त नें असुघ वेंहरावें,
 जब तो ठांण अंग ने भगोती सूतर रो,
 साधू नें जाणें आघाकर्मी वेंहरावें,
 ते पिण नरक निगोद में भौंकां खावे,
 आघाकर्मी वेहरायां छें एकंत पाप,
 च्याह् आहार सचित्त नें असुघ वेंहराया,

ते साघां नें श्रावक जाणे वेंहरावे ।
 अल्प तो पाप ने बोहत निरजरा वतावे ॥ ५ ॥
 ते साघानें श्रावक जाणे वेहरावे ।
 तिणनें अल्प पापनें बोहत निरजरा वतावे ॥ ६ ॥
 तिण श्रावक रो बारमो व्रत भागों ।
 ओ पिण व्रत भांगे ने होय गयो नागो ॥ ७ ॥
 जीवें ज्यां लग छें पचखांण ।
 सचित्त नें असुभतो नही लेवें जाण ॥ ८ ॥
 सुघ साघां रा जाता देखें तोही प्राण ।
 पोता रा लीघा चोखा पाले पचखांण ॥ ९ ॥
 तिणमें संवर निरजरा अंस न जाणे ।
 प्राच्छित्त ले व्रत रांखें ठिकाणें ॥ १० ॥
 ते साघां नें श्रावक जाणे केम वेंहरावें ।
 अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थावे ॥ ११ ॥
 तिण पाठ रों अर्थ सूघो कहणी नावें ।
 घणां लोकां में सेखी उड जावें ॥ १२ ॥
 कदे कारण पडीयां रो नांम वतावे ।
 भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ १३ ॥
 पिण आंघां रे अतरंग नही छेपिछांणो ।
 बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयांणो ॥ १४ ॥
 ठाम ठाम बहु सूत्रां रे मांहिं ।
 वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि ॥ १५ ॥
 त्यांरा सचित्त ने असुघ खावा रा परिणाम ।
 तो यूंही क्यां ने बकसी वेकांम ॥ १६ ॥
 तिणरे तो अल्प आउषो वंघाय ।
 वले तीजें ठांणे ठांण अंग मांय ॥ १७ ॥
 अल्प पाप ने बोहत निरजरा थाय ।
 पाठ ने अर्थ दोनूइ उथप जाय ॥ १८ ॥
 ते तो चारित धर्म रो लूटणहार ।
 उतकष्टों रुले तो अनंतो काल ॥ १९ ॥
 सचित्त नें असुघ वेंहरायां ओं पिण पाप ।
 तिणनें मूढ करें बोहत निरजरा री थाप ॥ २० ॥

साघां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, ते अभष आहार देवें दातार ।
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहे ते, भूल गया मूढ विना विचार ॥ २१ ॥
 साघां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण, निरावलिका भगोती गिनाता मांय ।
 ते अभष आहार साघां नें श्रावक वेंहरायो, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थाय ॥ २२ ॥
 कुसीलीया ते हीण आचारी, विणा विचारीयां बोलसी वेणो ।
 रोगीयादिक गिलाण नें अर्थे, आघाकर्मीयादिक जाणें लेंणो ॥ २३ ॥
 ए तो आचारंग रे छठें अघेन नें, ते जोयलो चोथा उदेसा मांय ।
 तो सचित्त नें असुभतो साघां नें दीघां, अल्प पाप ने बहोत निरजरा किम थाय ॥ २४ ॥
 नही कल्पे ते वस्तु साधु वेंहरें तो, तिणनें तो चोर कह्यो जिणराय ।
 कह्यो छें आचारंग पेहलें सतखंधें, अठमांघेन पहिला उदेसा मांय ॥ २५ ॥
 ठाम ठाम सूतरमें नषेध्यों, साघां नें असुध लेंणो नही कांई ।
 श्रावक नें पिण असुध न देंणो, असुध दीयां में धर्म छें नाहीं ॥ २६ ॥
 च्यार आहार सचित्त ने असुभता छे, त्यां नें श्रावक तो निसंक सू जाणें सुध मान ।
 आपरी तरफ सू सुध व्यवहार करणें, साघां नें हरष दीयो छें दान ॥ २७ ॥
 तिणरी पागमें सचित्त पंखीयादिक न्हाख्यो, अथवा सचित्त रजादिक लागी छें आयं ।
 तिणरी श्रावक नें कांइ खबर नहीं छें, पिण वंवरार सू सुध जाण दियो वेंहराय ॥ २८ ॥
 इण रीते आहार सचित्त नें असुभतो छें, पिण श्रावक तो सुध जाणें नें वेंहरावें ।
 अल्प पाप ते पाप तणो छें नकारो, चोखा परिणाम सू बहोत निरजरा थावे ॥ २९ ॥
 कें तो अजाणपणें साधु नें वेंहरावे, तिणरी तरफ सू फामु नें सुभतो जाण ।
 इण रीते ए पाठ नो अर्थ हुवें तों, ते पिण केवल ग्यानी वदे ते प्रमाण ॥ ३० ॥
 उनो पांणी निसंक सू श्रावक जाणें छें, तिण पाणी नें घर रां बावर दीयो ताय ।
 तिण ठाम में काचों पांणी घर रां घाल्यो, तिणरी तो श्रावक नें खबर न कांय ॥ ३१ ॥
 तिण पाणी नें श्रावक उनों जाणें, निसंक सू साघां नें दीयो वेहराय ।
 तिणरे अल्प पाप ने बोहत निरजरा हुवें तो, ते पिण केवल ग्यानी नें देंणो भलाय ॥ ३२ ॥
 कोरा चिणा पड्या छे भूंगडादिक में, सचित्त गेहूं पड्यां छें घांणी रे मांय ।
 तिणरी श्रावक नें खबर न कांई, सुभता जांणी साघां ने दीयां वेंहराय ॥ ३३ ॥
 अचित्त दाखां में सचित्त दाखां पडी छे, अचित्त खादम में सचित्त खादम छे ताय ।
 तिणरी श्रावक ने तो खबर न काइ, ते सुभतों जाणें दीयो वेंहराय ॥ ३४ ॥
 इत्यादिक अनेक सचित्त वस्तु छें, ते श्रावक निसंक सु अचित्त जाण ।
 ते पिण आपरी तरफ सु चोकस करणें, साघां नें वहरावें घणो हरष आंण ॥ ३५ ॥
 इण रीते श्रावक रें बहोत निरजरा हुवें, तो पिण केवल ग्यानी जाणें ।
 म्हें तो अटकल सू उनमान कख्यो छें, वले सुतर रा अनुसार प्रमाणें ॥ ३६ ॥

आषाकर्मि साधु जाणें भोगवे तो, असुघ देवे ते संजम रो लूटणहारो, आषाकर्मि साधु अजाणें भोगवें तो, तिण दातार ने पूछें निरणो कर लीघो, आषाकर्मि आहार कीयो तिणरे घर, ते आहार अनेक घरां रे आंतरे, तिण आहार भोगवतां सुघ साधु रे, सुयगडाअंग इक्कीसमें अधेने, च्यार आहार सचित ने असुभक्ता छे, ते सुभक्ता जाणें साधां ने वेहरावे, च्यार आहार अचित्त नें सुभक्ता छे, ते सका सहीत साधां ने वेहरावे, सावद्य जोग सू एकंत पाप लागे छे, थोडो पाप ने बोहत निरजरा बतावे, सका सहीत आहार साधां ने वेहरांयो, तो सचित नें असुभक्तो जाणने देसी, सुघ साधां भेलों तो अभवी रहे छे, तिण अभवी ने साघ्र वादे पूजे छे, साधा भेलो रहे चोथा व्रतरो भागल, तिणने वादे पूजे आहार पांणी देवे छे, अभवी भागल ने जाणे माहे राखे, ज्यू सचित ने असुभक्तो जाण वेहरायां, सचित ने असुभक्तो आहार दीया मे, दाय वाना सरध्यां मिश्र दान थपे छे, मिश्र वालां री सरधा नें खोटी कहे छे, आपरा बोल्यां री आपनें समझ न कांड, मिश्र थापण वालां री तो सरधा खोटी छे, मिश्र दान रा सूंस न करावां म्हे किण ने, साधां नें आहार असुघ देवण रो, अल्प दोष नें बहोत निरजरा जाणें छें, बले साधां रे अंतराय आहार री पाडी, अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी,

नरक निगोद मे भीखा खावे ।
चहुं गति में घणो दुख पावे ॥ ३७ ॥
पाप रो अंस न लागो लिंगार ।
संका सहीत पिण नही लीयो तिणवार ॥ ३८ ॥
उणरे तों घरे साधु वेंहरण गयो नांही ।
निरणो करे वेहृखो पातरा मांही ॥ ३९ ॥
पापरो लेप न लागो कांड ।
जोयकरो निरणो घट मांही ॥ ४० ॥
तिणरी श्रावक ने खवर नही छे लिंगार ।
तिणरा छे निरवद जोग व्यापार ॥ ४१ ॥
पिण श्रावक रें संका पडी तिणवार ।
तिणरा सावद्य जोग व्यापार ॥ ४२ ॥
निरवद जोग सूं निरजरा ने पुन थाय ।
तिणने पूछीजे किसा जोगा सूं हुवे ताय ॥ ४३ ॥
तिण घर रो माल खोयने पाप लगायों ।
तिणरे बोहत निरजरा किण विघ थायो ॥ ४४ ॥
तिणरो साधु देखे छे सुघ ववहार ।
तिणरो साधां ने दोप न लागे लिंगार ॥ ४५ ॥
ते तो छानो छे तिणरो न पढ्यो उघाड ।
तिणरो साधां ने दोप न लागो लिंगार ॥ ४६ ॥
जब सर्व साधां रो साधुपणों भागे ।
तिणरे निरुचेइ एकंत पापज लागे ॥ ४७ ॥
अल्प पापने निरजरा सरधे किण लेखे ।
मिश्र ज्याप्यो तिण सांमों क्यूं नही देखे ॥ ४८ ॥
पोते पिण मिश्र थापे छे मूढ मिध्याती ।
ते तो हीयाफूट गधा रा साथी ॥ ४९ ॥
ते कहे मिश्र मे मुन राखां छां ताय ।
त्याने पिण त्यांरा भूठ री खवर न काय ॥ ५० ॥
ए त्याग करावे छे किण न्याय ।
तिणरे निरजरा री कांय देवे अंतराय ॥ ५१ ॥
दातार नें अंतराय दीघी छे विणेखें ।
तिणने सुंस करायों छे किण लेखे ॥ ५२ ॥

श्रावक साधां नैं असुध जाणनें वेंहरावें, तिणनें धर्म ने पाप दोनूंड जाणों ।
 तिणनें असुभत्तो दान देवण रा, किसे लेखे करावो पचखाणो ॥ ५३ ॥
 मुख सूं कहो मिश्र दान तणा म्हें, किणनेंइ सूस करावां नांही ।
 इण मिश्र दान रा सूस करायां, थारी सरखा री वरग बूहा नही काई ॥ ५४ ॥
 मूला गाजर जमीकंद दान देवें छें, तिणमें धर्म थोडो नैं घणो कहे पाप ।
 तिण दान रा सूस करावों नांही, मिश्र दान जाणी रहो चुपचाप ॥ ५५ ॥
 अल्प पाप ने व्होत निरजर रा जाणो छो, तिण दान तणां पचखाण करावो ।
 व्होत पाप ने निरजरा अल्प जाणो ये, तिण दान रा सूस करावो छो किण न्यावो ॥ ५६ ॥
 कोइ कहे यां तो सूतर रो पाठ उथाप्यो, पिण पोतें उथाप्यो ते खवर न कांय ।
 मोह मतवाला ज्यूं वोळें अग्यांनी, ते सांभलजो भवीयण चित ल्याय ॥ ५७ ॥
 च्याहं आहार सचित ने असुभत्ता छें, त्यांरा श्रावक त्यांनें कथूं न वेंहरावे ।
 अल्प पाप ने व्होत निरजरा कहे छे, त्यांनें वेंहरावतां संका कयूं ल्यावें ॥ ५८ ॥
 च्यार आहार सचित नैं असुभत्ता वेहरे, जव तो यां पाठ साचो करि थाप्यो ।
 च्यार आहार सचित नैं असुध न लेवें, जव पोतेइज थाप्यो ने पोतें उथाप्यो ॥ ५९ ॥
 च्यार आहार सचित साधां ने वेंहरावें, जव श्रावकाइ पाठ साचो कर थाप्यो ।
 च्याहं आहार सचित नैं असुध न देवें, जव त्यांहीज थाप्यो ने त्यांहीज उथाप्यो ॥ ६० ॥
 जेसाइ साध ने जेसाइ श्रावक, यां दोयां रे घट मांहे घोर अंधारो ।
 जेसा कूं तेंसा आय मिलीया छें, उटरे लारें उटा वांधी कतारो ॥ ६१ ॥
 अल्प पाप ने व्होत निरजरा उपर, जोड कीची गंगापुर गाम मकार ।
 समत अठारें वरस सतावने, पोह सुद आठम मंगलवार ॥ ६२ ॥

ढाल : २२

दुहा

भेषधारी मिष्टी भागलां तणे, भूठ बोलण री संक न काय ।
खोटी खोटी करे छे परूपणा, परभव सूं डरे नही ताय ॥ १ ॥
धावता बालक री माता भणी, दिव्या देणी नही छे जाण ।
लेणवाली ने पिण लेणी नही, एहवी कहे छे अग्यांनी तांण ॥ २ ॥
तीन च्यार वरस रो बालक हूवो, जाबक हांगल छोडयो छे ताहि ।
ते बालक अन खातो हुवे, तठ पळे दिव्या ले माहि ॥ ३ ॥
एहवी अछती अछती करे छें परूपणा, लोकां सूं मिलती बात जाण ।
यांरी सरवा सूं एहीज फिट्टा पडे, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

ढाल

[चतुर विचार करीने देखो]

जंबू पइना में अठारे नाता चाल्या, ते तो एहीज मिल मिल गावे जी ।
धावतो बालक छोडे दिव्या लीची वेस्या, तिणने तो एहीज सरावें जी ।
भूठाबोलां रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
तिण साप्रत धावतो बालक छोडे, एहीज कहे दिव्या लीची जी ।
एहीज इणतें सराय सराय, घणा लोकां में प्रसिध कीची जी ॥ २ ॥
यांरा वड वडेरा दर पीढ्यां लग, इण वेस्या ने घणी सराइ जी ।
वले इणरो खेवो पार हूवो कहे, कहिता सक न आंणी कांड जी ॥ ३ ॥
ए तो साचा जाण ने कहिता आयां, आ तो कूडी न जांणी वातो जी ।
त्यां लारें कुबदी कुमातर उठ्या, त्यानेइज भूठा घाल्या साख्यातो जी ॥ ४ ॥
बालक धावतो छोड दिव्या लीची वेस्या, तिणने ठहरायो एकंत कूडो जी ।
इणरा वड वडेरा कहितां आया तयारें, भूठ घाले मूढें दीची धूरो जी ॥ ५ ॥
अठा पळे अठारे नाता एं कहती, ए भूठा ने वले भूठ थासी रे ।
यारे लेखे ए भूठ जांणे जाणे बोले, ते चिहुंमति में गोता खासी रे ॥ ६ ॥
बालक धावें तिणरी मानें दिव्या न देणी, ठांणा अंग तीजो ठांणो छे साखी जी ।
ओ पिण भूठ जांणने बोले छे, इसडा भारीकर्मा छें अन्हाखी जी ॥ ७ ॥
ठांणा अंग तीजे ठाणे तीन जणां ने, दिव्या न देणी तांमोजी ।
नपुसक व्याधीयो कलीव तीजो, ओर वरज्या नही तिण ठांमोजी ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वले कहे बालक री दया आंणी ने, बालक री माने दिष्या न देंगी जी ।
 सुध सावां रा घेष रा घाल्या, त्यांरी छे भूठी कहेणी जी ॥ २५ ॥
 वले एहीज बालक री माने, दिष्या लीधी वतावें जी ।
 एहवा भूठा बोलां छे कुपातर, त्यांरा बोल्या री परतीत नावे जी ॥ २६ ॥
 मेणरेहा बालक छोड दिष्या लीधी, तिणने तो एहीज थापे जी ।
 सुध साधवीयां आगे दिष्या लीधी, तिणने भूठ बोली नें उथापे जी ॥ २७ ॥
 पद्मावती साधवी साध पणामे, करकण्डू ने जायो जी ।
 तिण मसाण में बालक ने परठ्यो, तिणरी मन मे न आणी कायो जी ॥ २८ ॥
 अठारे नाता मे बालक छोड वेस्या, चारित लीयो कहे साख्यातो जी ।
 सुध साधवीया आगे दिष्या लीधी, तिण सूं बोले छे भूठ विख्यातो जी ॥ २९ ॥
 पद्मावती मेणरेहा कुबेर सेत्या वेस्या, सजम लीयो सुखदायो जी ।
 भेषघाख्यां रे लेखे तीनां रें, बालक री दया रही नही कायो जी ॥ ३० ॥
 यां तीनां ने पहिलां तो यांहीज सराइ, हिचे यांने भूठी ठेराइ जी ।
 साधां ने भूठा घालणने पापी, भूठी भूठी वातां उठाइ जी ॥ ३१ ॥
 किण ही बाइरे बंधो दिष्या लेवा रो, बधो पुरो हूवा दीक्षा लेणी जी ।
 तिण दिन बालक हांचल घावे, यारे लेखे तो दिष्या न देणी जी ॥ ३२ ॥
 जो बालक री मां भेष घाख्यां ने पूछे, दिष्या लेउ के बालक घवाउं जी ।
 यामें घणो घर्म हुवे ते मीने बतावो, ज्यूं हूं सुखसाता पाउंजी ॥ ३३ ॥
 इम पूछ्यां भेषघाख्यां ने जाव न थावें, जब अगल डगल उधा बोले जी ।
 न्याय निरणो तो मूल न दीसे, जब भूठ रो टागरो खोले जी ॥ ३४ ॥
 वीर कह्यो उत्तरावेन दसमे अधेने, समो एक न करणो प्रमादो जी ।
 तो बाइ तो दिष्या लेवण नें उठी, तिण री जेज किम करसी साधो जी ॥ ३५ ॥
 भेषघारी कहे उणने दिष्या न देणी, बालक री दया आंणी जी ।
 सूंस भागा रो कारण कोइ नही छे, एहवी बोले कुपातर वांणी जी ॥ ३६ ॥
 सूंस भांग्या तो हुवे छे अनत ससारी, बालक पाल्या बंधे मोह कर्मो जी ।
 किसा बोल्यां री जिण आगना छें, किसा बोला माहे जिण घर्मो जी ॥ ३७ ॥
 सूंस भांगे ने बालक पाले, तिणमे भेषघारी कहे घर्मो जी ।
 बालक छोडेनं दिष्या लेवें, तिणरे वधें पाप कर्मो जी ॥ ३८ ॥
 सूंस न भागे ने दिष्या लेवे, तिणने भगवंत भाख्यो घर्मो जी ।
 सूंस भागे ने बालक पाले, तिणरें वंधसी पाप कर्मो जी ॥ ३९ ॥
 बालक घवायां में घर्म जाणें, ते निदचे पापंडी पूरा जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, जिण भाप्या घर्म सूं दूरा जी ॥ ४० ॥

वाल धवायां में धर्म जाणें छें,
 तो सामायक मांहे बालक न धवावे,
 किणरें मा ने वाप दोनूं छें वूढा,
 वले जावक धन नही घर मांह्यो,
 त्यारें एक वेटो माइतां नें,
 यारें लेखे तो इणनें दिप्या न देणी,
 एक दिप्या लीयां अनेक दुखी हुवें जब,
 दिप्या लीघां किणने दुख न हुवें,
 धावता बालक री मानें दिप्या न देणी,
 जो एं पाछला दुख पावें त्यांनैं दिप्या न देणी,
 धावता बालक री मानें दिप्या न देणी,
 यारी डाहा हुवे ते वात न मानें,
 बालक री मां दिप्या लेवें तिणरा,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 तीरथंकर चक्रवत्त वलदेवादिक,
 त्यारें लारें अनेक दुखीया हुआ दीसे,
 सेठ सेन्यापती आदि बड बडा राजा,
 त्यारें पिण न्यातीला दुपीया हुआ,
 केइ निरघन भूखा दलदरीयादिक,
 त्यारि न्यातीला बोहत दुखी तिण विना,
 धावता बालक री मां दिप्या लेवें,
 तो राजादिक दिप्या लीधी छें त्यांरा,
 धावता बालक री मा ने दिप्या दीघां,
 तो राजादिक नें दिप्या दीधी त्यां,
 भेषघाखां ने आप तणां बोल्यां री,
 यां कने दिप्या लीघां लारला दुखी हुवें,
 दिप्या लेणवाला नें जेज न करणी,
 पाछला पाछला री कमाइ जासी,
 पाछला दुखी हूवां मोने पाप न लागें,
 यां सूं मोह तोडे अलगा होसी,
 लारला सुखी दुखी री कीरप करसी,
 आ-सावद्य दया छोड संजम लेसी,

दया जाणें छें लुडी जी ।
 आ दया तो पड गइ पूरी जी ॥ ४१ ॥
 त्यांसूं हाल्यो चाल्यो नहीं जावे जी ।
 वले कवडी कमावणी नावे जी ॥ ४२ ॥
 आण देवें चुगो पांणी जी ।
 माइतां री दया घट आंणी जी ॥ ४३ ॥
 तिणनें पिण दिप्या न देणी जी ।
 जब दीक्षा देणी ने लेणी जी ॥ ४४ ॥
 तिण लेखें घणां नें न देणी जी ।
 तो वूड गइ त्यारी केंणी जी ॥ ४५ ॥
 ओं तो चोडें चलाया गोला जी ।
 केइ मांनें तके जावक भोला जी ॥ ४६ ॥
 परिणाम पाडें भेषघारी जी ।
 ते भागल मिष्ट अचारी जी ॥ ४७ ॥
 ते संजम ले सुखीया हुआ जी ।
 केइ हीयो फूटीने मूंआ जी ॥ ४८ ॥
 ते दिप्या ले हुआ सूरु जी ।
 केइ अकाले पड गया पूरा जी ॥ ४९ ॥
 संयम ले सुखी हुआ जी ।
 अन विना अकाले मूंआ जी ॥ ५० ॥
 कहे बालक दुखीयो थावें जी ।
 न्यातीला पिण दुख पावें जी ॥ ५१ ॥
 बालक री दया न आंणी जी ।
 पाछिलां री दया क्यूं न आंणी जी ॥ ५२ ॥
 आपिण समझ न कांइ जी ।
 त्यांरी एं पिण नाणे मन माहीं जी ॥ ५३ ॥
 म्हारें कर्म काटे जाणो मोखो जी ।
 संजम लेणों निरदोपो जी ॥ ५४ ॥
 सुखी हूवां मोने नही धर्मो जी ।
 त्यांरा कटसी निकेवल कर्मो जी ॥ ५५ ॥
 आ लोकीक दया जाणो जी ।
 ते निश्चें जासी निरवाणो जी ॥ ५६ ॥

यामें एक जणो जो उज्जड चाले, तिण रो न काढे निस्तारो जी ।
 वडा उंट जिम आगें चालें, लारें बूही जाय कतारो जी ॥ ५७ ॥
 भेषघास्त्रां री सरघा ओलखावण, जोड कीवी पीपाड मभारो जी ।
 संवत अठारें वर्ष गुणसठें, चेत सुद तेरस सोमवारो जी ॥ ५८ ॥



दुहल

केइ भेषवारी आरे पलंचमे, ते नलंम वरलवे सलध ।
 त्यलंरी सरघल असुध छे अतल बूरी, त्यलंरें कदेय म जलंणो सलमलध ॥ १ ॥
 त्यलंरल टोलल घणल छे जू जूआ, पूछ्यलं कहें म्हें सघलल सलध ।
 पलण सरघल छे त्यलंरी जू जूइ, वले कर रहुलल मलंहें मलं वलवलद ॥ २ ॥
 सरघल तो एक एकण तणी, चोडे खोटी कहे छें सलख्यलत ।
 पलण वलकलं नें सलमरू पडे नहें, चोडें दीसे उघलडो मलथ्यलत ॥ ३ ॥
 कहलवल ने तो इम कहें, म्हें सगललइ छलं सलध ।
 त्यलंरें आचलर सरघलतो मलले नहें, तलणसूं मलंहें मलं करे वलषवलद ॥ ॡ ॥
 त्यलंमें केइ कहें जीव खवलवीयलं, धर्म नें पुन एकंत ।
 केइ कहें जीव खवलवीयलं, मलश्र दलंन कहेंत ॥ ५ ॥
 मलंहें मलं उडलवें एक एक नें, त्यलंरें ललगी मलंहें मलं तोट ।
 एक एक तणी सरघल मभे, कहें खोटा मे खोट ॥ ६ ॥
 त्यलंरें मलंहें मलं सरघल तणो, फेर घणों छें अतंत ।
 पलण थोडो सों परगट करूं, ते सुणजो मतवंत ॥ ७ ॥

ढलल

[आ अरुणकम्यल जलश्र आगन्यल में]

प्रथवी पलंणी अगन ने वलय, वले वनसपती ने छठी तसकलय ।
 छ कलय री छ दलंनसलल मंडलवें, तलणमें एकंत पुन कहे छे तलय ।
 त्यलंनें सलध सरघे छे मूंड मलथ्यलती * ॥ १ ॥
 अथवल छही कलय ने जीवलं हणेने, त्यलंरी जूदी जूदी दलनसलल मंडलवें ।
 पछे हलथलं सूं दलंन देवे दगचलल, तलणमें एकंत धर्म नें पुन वतलवें ॥ २ ॥
 प्रहसुथ ने मलंहें मलं छ कलय खवलवे, अथवल छ कलय मलरेनें खवलवें ।
 तलणमें मलश्र कहे त्यलंनें खोटा कहेने, एकंत धर्म ने पुन वतलवें ॥ ३ ॥
 कोइ गलजर मूल ने सकरकंद देवें, जमीकंद रो दलंन देवें छें तलहो ।
 तलणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मलश्र कहे त्यलंनें दीयल उडलयो ॥ ॡ ॥
 वेगण वललोललदलक अनेक नीलोती, रलंघे रलंघे मलथ्यलती जीवलं नें खवलवें ।
 तलणमें मलश्र कहें ज्यलंने खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन वतलवें ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

कोइ चिणा सेकी सेकी ने दांन देवे, कोइ गोहा नें सेकी सेकी देवे धांणी ।
 इत्यादिक अनेक धान सेकी नें देवे, तिणमें एकंत पुन कहे मूढ अग्यांणी ॥ ६ ॥
 कोइ कूआ बाव तलाव खोदावे, वले पावें काचो अणगल पांणी ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जांणी ॥ ७ ॥
 श्रावक नें माहोमां छकाय खवावे, वले छकाय मारेणें जीमावे ।
 तिणमें मिश्र कहे त्यांनैं खोटा सरघे नें, एकंत धर्म ने पुन बत्तावे ॥ ८ ॥
 समाइ पोसा रे काजें जागा करावे, छ काय जीवां रो करे घमसांण ।
 तिणने एकत धर्म ने पुन बत्ताए, इणमे मिश्र कहे त्याने खोटा जांण ॥ ९ ॥
 श्रावक ने देवे छे वस्त अनेक, छ काय जीवा रो करे घमसाणो ।
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने खोटा जांणो ॥ १० ॥
 कल्पे ते वस्त श्रावक ने देवे, कल्पे जिण पेटर ने काल में तांम ।
 तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी पाडी मांम ॥ ११ ॥
 साध बिना छें सगलाइ अनेरा, त्यां सगलां ने दान दीयां कहे पुन ।
 सचित अचित दीयां कहें पुन निकेवल, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने जानें जबून ॥ १२ ॥
 तीर्थकर दान दीयो ने कीयो सिनांन, वले दिप्या रा महोछव कीया छे पूरा ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहे त्याने कहे छे कूडा ॥ १३ ॥
 भगवत पधाख्यां री दीधी बघाइ, तिणने धन धान घरती दीधी छें दांन ।
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जांणें विकल समांन ॥ १४ ॥
 दानसाला मंडाइ परदेसी राजा, समाइ ने पोसा जिम जांणें छे तांम ।
 एकत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहे त्याने खोटा कहे ठाम ॥ १५ ॥
 छ काय रा जीवा ने हणने मिथ्याती, आहार नीपजाए साधा ने देवे छे दांन ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी जांणें छे खोटी सरधान ॥ १६ ॥
 मिथ्याती साधां ने काचो पाणी वेहरावे, वले वेहरावें कोरो काचों लूण धान ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने कर कर हिरांन ॥ १७ ॥
 वले वेहरावे साधां नें सचित नीलोती, अथवा रांघे रांघे देवे साधां ने दांन ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जाणे छे घोर अग्यांन ॥ १८ ॥
 आधाकर्मी आदि दे आहार दोषीलो, कोइ मिथ्याती साधां ने देवे छे दांन ।
 तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्याने जांणें छे कपट री खांन ॥ १९ ॥
 साधु तो धुजतों देख मिथ्याती, साधु ने तपावे छें हेठो बेसांण ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र री सरधा कहे छें जेंहर समांण ॥ २० ॥
 कोइ साध उजाड में थाको छें तिणने, गाडादिक बेसांणीनें गांव में आणे ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे, मिश्र कहे त्यांरी सरधा ने खोटी जाणे ॥ २१ ॥

मात पिता बले सासू सुसरादिक, त्यांरो विनो करे छे हरष घणों आणों ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्याने जाणें छे मूढ अयाणो ॥ २२ ॥
 बले काको बाबो ने सेंग सगादिक, त्यांरो विनो करे वणों हरषमन आणो ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्याने एकंत खोटा जाणो ॥ २३ ॥
 इत्यादिक संसारी अनेक जीवां रो, विनो करे मन हरष आण ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्यांरी सरघा नें खोटी जाण ॥ २४ ॥
 कोइ अणुकम्पा आणी छकाय नें देवे, अथवा छ काय मारी ने खवावे ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्यांरी सरघा नें खोटी सरघावे ॥ २५ ॥
 बंदीवांनादिक नें सच्चितादिक देवे, अथवा छही काय हुगेनें जीमावे ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्यांरी सरघा नें जावक उठावे ॥ २६ ॥
 कोइ भय रो घालीयो दान देवे छे, थावरीयादिक नें देवे दरब अनेक ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्याने जाणें खोटा विशेस ॥ २७ ॥
 खरच करे छे मूथा रे केडे, सेंग सगा न्यात जीमावे तांम ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्यानें खोटा कहें गाम गाम ॥ २८ ॥
 कोइ लज्या रो घालीयो दान देवे छे, जाचक डूबरादिक ने जाण ।
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहें छे, मिश्र कहें त्यांरी सरघा ने खोटी पिछाण ॥ २९ ॥
 रावलीया कीरतनीया नें भांड भवईया, त्यानें दान देवे मन माहे गर्व आण ।
 बले देवे सगा ने पंरांवणी मूसालों, तिणमें पुन कहें मिश्र नें खोटो जाण ॥ ३० ॥
 हांती नेंतादिक आंमा साहाग देवे छे, बले आंमा साहाग जीमें ने जीमावे ।
 तिणने मिश्र कहें त्यानें खोटा कहेनें, एकंत धर्म ने पुन बतावे ॥ ३१ ॥
 अधर्म दान टालेने नवही दान में, एकंत धर्म पुन बतावे ।
 मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छे, त्यांरी सरघा नें जावक जड सू उठावे ॥ ३२ ॥
 मिश्र दान उथापण री जोड कीधी छे, तिणमें तो त्यानें जावक दीया उडाय ।
 नव दान में एकंत पुन कहेनें, मिश्र दान में एकंत खोटो कहें ताय ॥ ३३ ॥
 मिश्र दान कहें छे तिणनें, धर्म तणो धाडायत थाप्यो ।
 बले कहे जमारो हार गयो छे, इम कहि कहि मिश्र दान उथाप्यो ॥ ३४ ॥
 मिश्र दान परुमें तिणनें कहें छे, इण पुन तणों कर दीयो छे नास ।
 इम कहि कहि नें एकंत पुन थापें, मिश्र दान री सरघा रो करे विणास ॥ ३५ ॥
 बले मिश्र दान परुमें तिण नें, कह दीयो कागला रो साथी ।
 बले तेहीज तिणनें साघ सरघें तो, ते पिण पूरा छे मूढ मिथ्याती ॥ ३६ ॥
 बले मिश्र कहें छे तिणनें, देवालों काढ्यो कहे छे निसंको ।
 बले तेहीज तिणने साघ सरघें तो, त्यांरे पिण नही मिटीयो मिथ्यात रो डंको ॥ ३७ ॥

वले मिश्र दान कहे छें तिण नें,
 अठां दांता मे एकंत पुन थापण ने,
 मिश्र दान री सरघा नें जेंहर कहें छे,
 वले तेहीज तिणने साघ कहे तो,
 इत्यादिक जोड अनेक करेनें,
 एकंत धर्म ने पुन थापण नें,
 मिश्ररी सरघा वाला ने खोटा कहे छे,
 ते पिण निश्चें छे मूंड मिथ्याती,
 ज्याने धर्म तणा घाडायत थाप्या,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघें तो,
 वले पुन रो न्हास कीयो कहें ज्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान कहें त्याने कह्या देवाल्या,
 वले तेहीज देवाल्या नें साघ सरघे तों,
 साप रा मूंडा सरीपा कहि दीया त्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघें तो,
 मिश्र दान कहें छे, त्यांरी सरघा ने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छे,
 ते पिण जिण मारण रा अजाण अग्यांनी,
 जे साघ कहिता पिण वार न ल्यावे,
 त्यांरा थावक पिण छे ववेकरा विकल,
 कोडांन कोडगमे वोल न मिलें,
 तो पिण मांहीमां साघ सरघे छे,
 एकीको वोल उथाप्यां तिणने,
 अनेक वोल उथाप्यां त्याने साघ कहे छे,
 ए जिण जिण ठामे मिश्र ने थापे,
 मिश्ररी सरघा सूं लोक वूडता जाणे,
 ए जिण जिण ठामें एकत पुन थापे,
 एकंत पुन कहे ते तों पापडीयां री सरघा,
 भेपघाख्यां री सरघा ओलखावण काजे,
 संवत अठारे वरस चौपने,

गाजी ने मुल्लाखांरी ओपमा दीधी ।
 मिश्र वालारी घणी फजीती कीधी ॥ ३८ ॥
 वले कहे छे मिश्र नें साप रो मूढो ।
 त्यां पिण विकलां रे मिथ्यात री रूढो ॥ ३९ ॥
 मिश्ररी सरघावाला ने घालीयो कूडो ।
 मिश्र री सरघा उपर न्हाखी छें धूरो ॥ ४० ॥
 वले तेहीज त्यानें जो सरघे साघ ।
 त्यां विकलारे कदेय म जाणो समाघ ॥ ४१ ॥
 जवतो अनेक चोरां विच कहि दीया भारी ।
 त्यांरी पिण भव भव मे होसी घणी खुवारी ॥ ४२ ॥
 वले कागला रा साथी कहि दीया ज्याने ।
 फिट फिट कहीजे त्यां विकलां ने ॥ ४३ ॥
 देवाल्यां कह्या तिण कह दीया चोर ।
 त्यांरे अचकार मे अचारो घोर ॥ ४४ ॥
 जव तो भारी जाण्यो त्यांरो जहर मिथ्यात ।
 विगड गड विकलांरी वात ॥ ४५ ॥
 भात भात करने खोटी दरसाइ ।
 त्यांरा वोल्या री त्याने पिण समरुन काइ ॥ ४६ ॥
 वले तेहीज त्यानें कहे छे साघ ।
 त्यांरे पिण कदेय म जाणो समाघ ॥ ४७ ॥
 असाघ कहिता पिण सक न आणे ॥
 गुर री सरघा पिण नही पिछांणे ॥ ४८ ॥
 त्यांरे सरघा मांहे अनेक वोलारो छे फेर ।
 एहवों छे भेप घाख्यां रे अंघेर ॥ ४९ ॥
 निन्वव कह्या छे श्री भगवानं ।
 एहवो भेप घाख्या रे छें घोर अग्यान ॥ ५० ॥
 ए तिण तिण ठामें एकत पुन थापे ।
 तिणसूं मिश्र री सरघा जावक परी उथापे ॥ ५१ ॥
 एं तिण तिण ठामें मिश्र नें थापें ।
 तिणने विपरीत जाणेने परी उथापे ॥ ५२ ॥
 जोड कीधी छें खेंरवा मभार ।
 आसोज सुद एकम वृहस्पतवार ॥ ५३ ॥

ढलल : २४

दुहल

खुतु डलणु डलशु नुं उथलडुडुडु, थलडुडु डुं डकुत डुन ।

खडु डलशु वललल डुडुणु तुडुलनुं उडुडुडुनुं, कर डुडुडु डलखक खडुनुं ॥- १ ॥

ढलल

[आ अशुकडुडुडु डलन आगनुडु डुं]

डलशु डलन उथलडुं डकुत डुन थलडुं, तुडुलनुं अंतुर गुडुलन वलनल कहुडुल डुं आंधल ।
अंतुर गुडुलन वलनल आंधल नलशुडुं डलशुडुडुडु, तुडुलनुं डुडुकत आवलरल डुडुणु डडु गडुल खलडु ।
तुडुलनुं डुडुल सरडु डुं डुंडु डलशुडुडुडु* ॥ १ ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडुलनुं कहु डुडुडु नलशुडुं हलडुलधरुडु ।
तु डल नलशुडुं डलशुडुडुडु डुडुं डुं, तु डल डुडु नहुडु डुं नलकुरेवल अधरुडु ॥ २ ॥
वले डलशु उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडुलनुं कहुं तुडुलरु अकल गडु डुडुडुडु ।
वले कहु डुडुल लुकलनु डुडु डुं तुहुलखुं, कूडल कूडल कुहुत लगलडु ॥ ३ ॥
हलडुलधरुडु डुख सुं कहु डुडुडु तुडुलनुं, वले कहुं तुडुलरु अकल गडु डुडुडुडु ।
वले तुडुलनुं तुहुडुख डुडुल सरडु तु, तुडुल वलकलल डुं कलल डु खलणु कलडु ॥ ४ ॥
नलरुवडु डलन तुं कहु डुडुडु नलरुगुथ कुरु, डुलवडु डलन डुडुलरु नुं कर डुडुडु कुरु ।
तलणुडु डलशु उथलडु डकुत डुन थलडुं, तुडुलनुं नलशुडुं डुडुडुडु कहु डुडुडु डुडुलरु ॥ ५ ॥
डुख सुं तुं डुलडुडुडु कहु डुडुडु तुडुलनुं, इण वलतनुं नलशुडुं न खलणु डुडुडु ।
हलडु तुहुडुख तुडुलनुं डुडुल सरडुं तु, हुडुडु नलललडु रल डुनुडु डुडुडु ॥ ६ ॥
डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडुलनुं कहु डुं गुडुलन लुकन वलणु अध ।
वले तुहुडुख तुडुलनुं डुडुल सरडुं, तुं तु डुडुणु अगुडुलनु अध नलरुडु ॥ ७ ॥
डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडुलनुं खुतु डु डुत डुलरुडुं कहु तुडु ।
वले तुहुडुख तुडुलनुं डुडुल सरडुं तु, खडु आं डुडुणु डलशुडु डुडुडु डुडुल खलडु ॥ ८ ॥
डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडुलनुं कहुं डुं अधलतुर डुडु डुलु डुलु ।
अडुडुतुर डुडु डलल नुं, डुहुडुख डुडुल सरडु, तु डुलकलल रु वलखुडु डलशुडुडु डु डुलु ॥ ९ ॥
डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, डुलव खवलरुडु डुडु न गलणु तु आडु ।
तुडुलरु डुडुल डुं कहु डुडु डुलणु न नुलकलुं, वले कहु तुडुलनुं थुथल डुतु डुडुडुडु ॥ १० ॥
हलथल सुं आरडु करनु डुलडुलवुं, तुं डुडुणु हलडुल न डुलनु कलडु ।
तुडुलरु वुध तु डलखक डुडुडु कहु डुं, वले कहु डुं हुडुडुल आडु डलंकणु आडु ॥ ११ ॥

*यहु आंकडुडु डुतुडुक गलथल कु अतुत डुं हु ।

थोथी कण रहीत कही त्यांरी सरघा नें,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे' तो,
 मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे,
 जब तो च्यार तीरथ मां सूं वारे काढ्या,
 अन तीरथीयां रे जोडायत थापे,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघे' तो,
 मिश्र उथापे' एकंत पुन थापे',
 पछे हुइ कहे छे हिस्स्या धर्म री सरघा,
 कातीयो पीजीयो कपास कीयो छे,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघे छे,
 आरंभ करे जीमावे' कोइ सीधो खवावे,
 त्याने एकत पुन सरीपो कहे छे,
 मिश्रवाला तो अग्यानी कहि दीया त्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे' छे,
 सच्चित अचित दीयां कहे पुन सरीपो,
 इण मतने तों निश्चेइ कह दीयो कूडो,
 मिश्र दान उथापे एकंत पुन थापे,
 तिण सूं उंची अकल रा कह दीया त्याने,
 कूडो मत तो कह दीयो त्यांरो,
 वले तेहीज त्याने' साघ सरघे' तो,
 संबत अठारे नें वरस तेतीसे,
 मिश्र दांन थाप्यो छे निसंक सू चोडे,
 एकंत पुन कहें सूतर अर्थ मरोडे,
 ज्यां ने अर्थ उंघाइज सूभे,
 सूतर अर्थ उंघा करे त्याने,
 एहवा अवगुण वतावे' त्याने' साघ सरघे',
 मिश्र दांन उथापे' एकत पुन थापे,
 जब मिश्र वाला कहे ए भूठ बोले छे,
 मिश्र दान उथापे' एकंत पुन थापे',
 साघ श्रावक त्याने' निरणो पूछे' जब,
 उणरा घर रो एकत पुन वताए,
 साघ थइ ने सूघा न बोले',

हीया आडी ढांकणी आइ ने कहे' बुघ मूंडी ।
 त्यां पिण विकलां री सरघा मूंडी ॥ १२ ॥
 त्याने सिव धर्म्यारा जोडायत थाप्या ।
 जब मूल सूं त्याने जाबक उथाप्या ॥ १३ ॥
 जब हिंसाघर्मी कहि दीया त्यानें ।
 ववेक रा विकल कहीजे यांने ॥ १४ ॥
 ते पहिला दयाघर्मी हुता कहे तासो ।
 यां तो कातीयो पीजीयो कीयो कपासो ॥ १५ ॥
 त्यां तो समकत संजम खोयो अग्यानी ।
 ते पिण निश्चेइ नही छें ग्यानी ॥ १६ ॥
 कोइ धोवण पावे' कोइ काचो पांणी ।
 त्याने मिश्र वाला कहे निश्चे अनांणी ॥ १७ ॥
 अग्यानी तो निश्चे नही समदिष्टी ।
 तो मिश्र वाला पिण निश्चेइ भिष्टी ॥ १८ ॥
 सुघ असुघ दीयां कहे पुन सरीबों ।
 हाथ रा कांकण ने स्यूं आरीसों ॥ १९ ॥
 ते तो तस थावर माख्यां रों पापन जाणे ।
 त्याने जाबक उठावता सक न आणे ॥ २० ॥
 वले उंची अकल रा त्याने जाणें ।
 एं पिण निश्चे पहिले गुणठाणे ॥ २१ ॥
 एकंत पुन कहे छे त्याने दीया उडायो ।
 खोटी जोड करेने ताह्यो ॥ २२ ॥
 वले गुर री पिण परतीत मूल न राखे ।
 पुन कहे त्याने मिश्र वाला इम भाखे ॥ २३ ॥
 वले गुर री परतीत न राखे' लिगारो ।
 त्यारे' पिण जांणजो पुरो अंवारो ॥ २४ ॥
 आठोइ दान ने धर्म दांन मे घाले' ।
 यांरो खोटें मत आघो नही हाले ॥ २५ ॥
 त्याने' मिश्रवाला कहे कपट चलवे' ।
 भूठ बोले उण रा घर रो पुन वतावे ॥ २६ ॥
 भरमावे छें लोग लुगाइ ।
 आ खोटी सरघा त्यानें किण सीखाइ ॥ २७ ॥

नत्र दानां में एकंत पुन पक्षे, त्यानिं मिथ बाल्य जाणे मोल्य मोटी ।
 साव्यात सुतर री वात न माने, त्यांरी सरवा नें एकंत कहें छें खोटी ॥ २८ ॥
 सुतर न मानें एकंत पुन थापे, कूड कपट मु भग्मावें लोक ल्याड ।
 यांनिं खोटा कहे तेहीज माव मग्धे, त्यां पिण विकलां में कल्य न काड ॥ २९ ॥
 मिथ बाल्य कहें मिथ वीर पक्ष्यां, पुन कहे नें म्हांगे मिथ दान उयाप्यां ।
 ते तो जीव माख्या रो पाप न जाणें, त्यांतो धर्म नें पुन एकंत थाप्यां ॥ ३० ॥
 मिथ दान उयापे एकंत पुन थापे, ते तो मूढी करे छें अग्यांनी मज्जाने ।
 ते अंतर ग्यान विना जीव आंवा, त्यांरो बाढा कहें छें अमितर कर्मजाणे ॥ ३१ ॥
 वीर वचन उयाप्या कहें त्यानिं, अंतर ग्यान विना आंवा कहि दीया त्यानिं ।
 वळे तेहीज त्यानिं माव मग्धे, तां ववेकरा विकल्य कहीजे यानिं ॥ ३२ ॥
 मटी ल्यावें नें चल् चडावें, वळे चूल्हों बाले रांधें तरकारी ।
 जे कोड धर्म जाणो नें जीमावें, ब्राह्मण तथा वळे थोर मिथ्यानी ॥ ३३ ॥
 त्रिण नें एकंत पुन रो कारण कहें छें, देणवाल्या नें जावरु न कहें तोटें ।
 लेंगवालो उण री गति जासी, इण मत नें मिथवाल्या जाणे छें खोटें ॥ ३४ ॥
 खोटो मत तो कहे दीया त्यांरो, त्यानिं वळे तेहीज मग्धे छें साव ।
 इमडा छें मूढ ववेकरा विकल्य, ते पिण निमाड निच्छें असाव ॥ ३५ ॥
 वाव नग्यव नें कृशा खांदावें, वळे पो मांडे पावें कानो पांणी ।
 कंद मूळ नें सतुकार देवे, अणुकर्या मन माहं थाणी ॥ ३६ ॥
 एणमें जीव माख्या रो पाप न जाणें, कहें छें एकंत लाम टिकाणो ।
 गृहो धर्म वनावें लोक नें, कहि ० मूढा मू नवमा ठाणो ॥ ३७ ॥
 जीव माख्या रो पाप न जाणें, कुयातर पोकर्या धर्म जे पुन जाणें ।
 त्यानिं पिण तेहीज माव सरवे छें, ने पिण निच्छें पहलें गुण ठाणें ॥ ३८ ॥
 जिण ठामें जीवां री हिस्या हुवे छें, वळे जाणुं जीवां रा जावक प्राण ।
 निण ठामें एकंत पुन पक्षे, त्यांरी खोटी सरवा कहें छें तांण ॥ ३९ ॥
 वळे मेथी, ब्रह्मण, अपरवाल्या, त्यांरी सरवा छें मिव धर्मी री लली ।
 केड कुळ जेंनी हिंसा धर्मी, त्यांरी पिण सरवा त्यांमूं कहें छें नेत्री ॥ ४० ॥
 हिंसा में पुन थापें तो कहि दीया त्यानिं, वळे सिववर्मा री त्यांरी सरवा जाणें ।
 त्यानिं वळे तेहीज साव सरवे छें, ते पिण निच्छें पहिलें गुणठाणें ॥ ४१ ॥
 मिथ न जाणे नें पुन वलाणें, इण सरवा नें कहें छें जावक मूंडी ।
 वीतरग रा वचन देखतां, धा कडेय न चान्सी खोटी हुंडी ॥ ४२ ॥
 सरवा तां मूंडी कहि दीया त्यांरी, वळे कही त्यांरी सरवा नें खोटी हुंडी ।
 त्यानिं पिण तेहीज साव सरवे छें, जव यांरी पिण सरवा जावक गड वूडी ॥ ४३ ॥

समत अठारे वरस इगतीसे, मिश्र वाला क्रीधी जोड मेडता माह्यो ।
 मिश्र दांन पाषंड्यां चोडें थाप्यो, पुन कहे त्पाने जावक दीया उडायो ॥ ४४ ॥
 इम भगवंत नें आल देडनें, आप तो न्याराइज होय जावे ।
 त्यां कूडाबोलां रो कांड पकडीजे, मून तणे ओले छिप जावे ॥ ४५ ॥
 पुन कहे त्पाने मिश्रवाला कहे छें, त्यासूं तो कहे न्याय बोल्यो नही जायो ।
 मिश्र गोपवे नें मून कहे छें, वले कहे त्पाने चोडें कपट चलायो ॥ ४६ ॥
 त्यांरी सरघा तो त्यांसूं चोडें कहुणी न जाए, वले कहे त्पाने चोडें कपट चलायो ।
 वले वीर वचन गोपव्या कहे त्पाने, वले घाल्या निन्व नें पाषंड्यां माह्यो ॥ ४७ ॥
 वाख्वार कूडाबोला कह दीया त्पाने, वले भांत भांत त्पाने दीयो उडायो ।
 वले तेहीज त्पाने साध सरघे छे, ते पिण पडीया छे अंधकार माह्यो ॥ ४८ ॥
 मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, तिणनें दोष कहे माहा भय रो ठिकांणो ।
 माहा भय तो नरक निगोद माहे छें, मिश्र वाला कहे यारो ए फल जांणो ॥ ४९ ॥
 पुन कहे त्पाने मिश्र वाला कह छें, यां आघा ने साची सरघा न सूफें ।
 वले कूडपखी तो कहि दीयो त्पाने, वले कहे त्पाने आंघा जेम अलूफे ॥ ५० ॥
 माहा भयकारी सरघा कहे छें त्यांरी, वले भूठाबोला ने आंघा कह्या त्पाने ।
 वले तेहीज त्पाने साध सरघे तो, विकलां री पांत में गिणलेजो याने ॥ ५१ ॥
 त्यांसूं निरणो तो मूल क्रीयो नहीं जाएं, दस दांन ने वले नव पुन मांही ।
 उजडपडीया कहे त्पाने मिश्र वाला, त्यामें साध रो सींचो न सरघे कांड ॥ ५२ ॥
 मिश्र दांन उथापे एकत पुन थापे, त्पाने मिश्र वाला कहे एकंत कूडा ।
 त्पाने पूछे तो मून ओले छिप जावे, खोटी सरघा परूपे ने होय जाएं पुरा ॥ ५३ ॥
 मिश्रीया कहे पुन पाप कहुणो जिण पाल्यो, म्हे मिश्र कहां छां ते पिण पाल्यो ।
 ए तो नास्तक मत सूं मिलता बोले छे, वले कहे त्पाने भूठी भगडो भाल्यो ॥ ५४ ॥
 आठ दांन नें धर्म मे घाले छें त्पाने, मिश्रीया कहे मिश्र दांन जो न छे ।
 मून तके सुघ जाव न दीघां, घणा ने घणा पिछ्छताबोला पछें ॥ ५५ ॥
 नास्तक मत सूं मिलता कही दिया त्पाने, वले कहे त्पाने पिछ्छताबोला थापे पुन ।
 वले तेहीज साध सरघे छे त्पाने, जब त्यांरी पिण सरघा छें जावक जवून ॥ ५६ ॥
 दस दांन नें वले नव पुन माहे, त्यारो तो विवरो त्यांसूं क्रीयो न जायो ।
 सावद्य मे एकंत पुन सरघे, ओहीज बडो करे छे अन्यायो ॥ ५७ ॥
 बडा अन्याइ तो कहि दीया याने, वले साफ बोलता त्पाने न जाणे ।
 वले त्पाने तेहीज साध सरघे तो, पीपल वांधी मूर्ख जिम ताणे ॥ ५८ ॥
 कोरो अन काचो जल दीघां, पडदे पडदे पुन जणावे ।
 प्रगट कहिता भूंडा वीसें, तिणसूं नवमो ठांणो दिखावे ॥ ५९ ॥
 ६४

कहें ओ देखों अनेराने दीघां, पुन तणी परकत तिणरे बंधायो ।
 भगवंत निरणों मिश्र नहीं दाख्यो, तो म्हां सूं मिश्र केम कहवायों ॥ ६० ॥
 भेषघास्थ्यां ने ओलखावण काजे, जोड कीधी खेरवा सहर मझार ।
 संवत अठारे वरस चोपने, आसोज सुदि पूनम बृहस्पतिवार ॥ ६१ ॥



ढलल : २५

ढुहल

कलणहल शुरलवक रल व्रत आदरुखल, रलटी खलए ङुं डलडल ।
 तलणनें आहलर तलओ डलले नहल, तलण वणलडु रल सलंगु ॥ १ ॥
 ए सलंगु डेहर सलरु हूवुं, दुनलडल खलदु खूंद ।
 कलण सेरल सलडु डलडल, ते सेरल दुलडु वूंद ॥ २ ॥
 शुरलवक रल व्रतल डडु, सलडु वणुडु कलण नुडलडु ।
 उडलडु वलणुडुं ठल लुक डे, ते डुलल नें खवर न कलडु ॥ ३ ॥
 शुरलवक थडु सलडु रल डेड डें, ठल ठल खलए लुकलं रल डलल ।
 वूडें थुडल सुख रे कलरणे, डलण आडु हलसी हवलल ॥ ५ ॥
 तलणरल डललल कलरत तु अतल घणल, ते डुरु कडु कहुवलडु ।
 थुडलसल डरगट कहु, ते सुणओ कलतुलडु ॥ ५ ॥

ढलल

[वलनल रल डलव सुण सुण गुंओ]

गुण वलण डेहुरुखु सलडु रल सलंगु, डेड रे ओलखलए ङुं डलडु ।
 ते तु वरत वलडुणु नलंगु, डेट रे कलओ डलडुं ठलंगुं ॥ १ ॥
 ते डर घर गुडरल डलवे, ओडु वुगल धुडलनी हुडु डलवे ।
 सुडुडुओ आहलर डलणु ने देले, तु डलण घणु डुखु वलंगुले ॥ २ ॥
 ठल थकु आडु डणलवे, डुलल लुकलं ने डरडलवे ।
 धुरतलई करे डलण डलणु, लुक डलणु कडु उतडु डुरलणु ॥ ३ ॥
 इडु कलडुलं लुक रलओ हुडु डलवे, तु डुनें तलओ आहलर वेहरलवे ।
 वु खलंडु दुडु दहल डलडुडलन, डुनें देसी दे दे सनडलन ॥ ५ ॥
 तलणने डलणओ डुडुकु ठलु, डुलल लुकल नें देवे ङुं दगु ।
 ठल ठल खलए ङुं लुकलं रल डलल, तलणडे डव डव डे हलसी हवलल ॥ ५ ॥
 डुरहुसुथ रल डेड डें डलग खलवे, तु कडुट दगु टल डलवे ।
 डेलु डुरहुसुथ डलणनें तलडु, डुरहुसुथ सलरु हलसी डरलणलडु ॥ ६ ॥
 सलडु रल डेड डहरी नें लुडलवे, घणल लुकलं ने वलसडुं उडुडलवे ।
 ते तु ठल उडुडुलु ठलु, डेड रे ललरे देवे दगु ॥ ७ ॥

ठग तो ठग ठग माल ल्यावे, पेंला ने पाप नहीं लावे ।
 तिण तो धन तणों दीयो दगों, तिण सूं धन तणों छे ठगो ॥ ८ ॥
 असाधु थको मांगे ल्यावे, ओं तो पेला ने पाप लावे ।
 पेंले तो साधु जाणने दीघो, इण साधू रा भेष में लीघो ॥ ९ ॥
 पेले दीघां मे जाण्यों धर्म, इण जाण्यों लागों पाप कर्म ।
 तिण सूं ओ तों छे धर्म ठगों, भेष पेहरे मोटो दीयो दगो ॥ १० ॥
 ओ साध वण्यों विण काजें, निरलजा मूल न लाजें ।
 तिणने पूछ्यां न बोले सूघो, घणो छेडवीयां बोले उंधों ॥ ११ ॥
 भारीकर्मा जिभ्या रो लंपटी, धुरत मायावीयो छे कपटी ।
 तिण आपरों मतलब देख, गुण विण पेंहख्यों साधु रो भेष ॥ १२ ॥
 आछों खावा पीव रे कांम, ओ तों साध वण्यों छे तांम ।
 वले चढ गयों मांन रे छाजें, अकार्य करतो नही लाजें ॥ १३ ॥
 इण ने उचो करे कोइ हाथ, तिणरें निश्चें बंधे कर्म सात ।
 धर्म जाणें तो भारी मिथ्यात, चिकण कर्म लागें सात ॥ १४ ॥
 तिणने असणादि हरष सूं दीघो, तिण भारी कर्म बंध कीघो ।
 धर्म जाण्यो तिणरी विशेष खुवारी, ते हूवों मिथ्यात सूं भारी ॥ १५ ॥
 तिण घणा जाण ने बोया, पाप मांहे पूरा विगोया ।
 माल खाय ने भारी कीघा, धर्म ठिकाणे दगा दीघा ॥ १६ ॥
 ओ तों साध वणे हूवो भारी, घणा लोकां री कीघी खवारी ।
 आप बूडे ओरां ने बोया, घणा लोकां ने पापी विगोया ॥ १७ ॥
 इसडो पापी हरांम खोर, ते तीर्थकर नो चोर ।
 लूंण हरांमी हूवो पको, ज्यारो खाघो त्याने दीयो धको ॥ १८ ॥
 बड बडा श्वावक नाम धरावे, इण छोटाने पेहली खमावे ।
 यां साराइ में पड गइ खांमी, इण रो विनो करे सीस नांमी ॥ १९ ॥
 वले विनो करे तिणने खमावे, नीचो होयने सीस नमावे ।
 ओ वदण भेले मस्तक हलावे, साधां ज्यू पाछो तिणने खमावे ॥ २० ॥
 वले मन में मगज न मावे, साधु ज्यू लोकां में पूजावे ।
 मगरुडाइ में होय रह्यों सेठों, कुकडधम राजा होय बेठो ॥ २१ ॥
 दीसतों दीसे मोटो अणगार, वणीयो सासण रो सिणगार ।
 ते तो कूड कपट तणों भंडार, पापी पाप सूं न डरे लिगार ॥ २२ ॥
 एहवा कने बेसे केइ जाय, त्यांरी अकल गइ दपटाय ।
 एहवा कने करे समाई, त्यांरी पिण गई अकल ढंकाई ॥ २३ ॥

श्रद्धा निर्णय री चौपई : ढाल २५

तिणरे सनमुख बेसैं . आण, तिण कने दरावें वखाण ।
 तिणने कहे थारी सत वाणो, त्यारेंइ मोटी भोलप जाणो ॥ २४ ॥
 श्रावक तिण पासे आवे, जब लोकां में प्रसंसा थावे ।
 भोलातो जाणे ओ साध हडो, करणी करतूत माहे पूरों ॥ २५ ॥
 तिणने केइतो वांद खमावे, केई हरष सूं आहार वेहरावे ।
 केई कपडो देवे चोखों, जाणे ओ तो साधू निरदोषो ॥ २६ ॥
 तिणने वाद्यां पूज्यां जाणे धर्म, कटता जाणे वले कर्म ।
 असणादिक दीये पिण धर्म जाणे, वेहराए घणो हरष आणे ॥ २७ ॥
 ओ पिण छाने छाने कहे आप, मोने दीया म जाणो पाप ।
 घणे ट्या सूं कांम चलावे, इण विघ लोकां रो माल खावे ॥ २८ ॥
 कने बेस करे तिणसूं वात, घणो वधे लोकां में मिथ्यात ।
 कने वेठो तिण वात विगाडी, सावद्य आजीवकाय वधारी ॥ २९ ॥
 केई जाणे छे ओं साध नांही, साध रा गुण नही इण माही ।
 तो ही हरष सूं देवें आहार, करे करे घणी मनवार ॥ ३० ॥
 कपडा पिण मही मही दे जाण, मन मांहे उजम आण ।
 मागे तका वसत करे त्यार, इसडो छे केकारें अंधार ॥ ३१ ॥
 मन मांहे तो इतरोंई न देखें, ओ साध वण्यो किण लेखें ।
 इण मे दीसे छें मोटी खोड, ओ तीथकर नो चोर ॥ ३२ ॥
 इण साधू रो सांग वणायों, इण कीयो उघाडो अन्यायो ।
 तिण नें इतरोंइ पूछे नाही, ओ पिण निरणो नही घट मांही ॥ ३३ ॥
 कोइ चुतर विचखण ह्वेत, तो तिणने नषेघ सांकड लेत ।
 तू साध वण्यो किण लेखे, तूं तो वरता सांहो न देखे ॥ ३४ ॥
 तूं तो श्रावक थको वणीयो साध, मोटी अकार्य कीयो अगाध ।
 जिण मारग में कपट न पावे, श्रावक थको साध वणजावे ॥ ३५ ॥
 लोका री रोटी मागे खावे, साधु रो भेष धारीने ल्यावे ।
 तू तो साध वण्यो छे ठगो, लोकां ने देवाने दगो ॥ ३६ ॥
 तूं तो दीसे उघाडो कपटी, जिभ्या तणों दीसे छे लपटी ।
 तो कने बेसणो नही आछो, तूं तो टग छे सानेलो साचो ॥ ३७ ॥
 तू तो टगां में मोटो छे ठगो, भेष पाछे देवे छे दगों ।
 भांत भांत नषेदे पूरो, इण रो भेष कराय दे दूरो ॥ ३८ ॥
 पाछो ग्रहस्थ रो भेष करावें, उणरों कुर ने कपट छुडावे ।
 जब उण मांहे हुवे बेराग, तो करदे सर्व सावद्य रा त्याग ॥ ३९ ॥

खावा पीवा री न करे परवाही, वेंराग करें मन माहि ।
 ज्यां लग साधां सूं रहूं छूं न्यारो, विणें पिण नही खांउ लिगारो ॥ ४० ॥
 मरणो पिण कर दे कबूल, असल साधू ज्यूं चालें सूल ।
 रहें साधां तणे हजूर, नहीं रहें साधा सूं दूर ॥ ४१ ॥
 हुवें साधां तणों सुवनीत, उपजावें पूरी परतीत ।
 साधां रो हुवें आग्याकार, आगन्या नहीं लोपें लिगार ॥ ४२ ॥
 हिवे तो भेष लीयोस लीयों, मो सूं दूर नहीं जायें कीयो ।
 सांकडी वणीया कळूं संथाळूं, लीघो भेष ते नही उताळूं ॥ ४३ ॥
 इसडी मन गाढी धारें, साधु भेष नही उतारें ।
 वले करें तिणरा गुणग्राम, ये म्हांरो कपट छोडायो तांम ॥ ४४ ॥
 जो उण उपर आवें घेष, तो ज्यूंरो ज्यूं राखें भेष ।
 उलटो हुवें तिणरो बेरी, केइ इसडा छें पापी गेरी ॥ ४५ ॥
 जो साध रो भेष न करे दूरों, तो उण रो करें लोकां में फितूरों ।
 प्रसिध चावो करे लोकां मांहि, ओ ठग साध वणीयों छें ताहि ॥ ४६ ॥
 ओ तो उघाडो छें दगादार, कूड कपट तणों छें भडार ।
 इणरी संगत न करणी लिगार, जिण मारग रों लजावणहार ॥ ४७ ॥
 इम कहे सारा लोकां रे मांहि, जब लोक पिण जांणीलें ताहि ।
 इणमे कला न दीसैं काई, इण मांडी छें ठगबाजाई ॥ ४८ ॥
 ओ तो गुण विण वणीयो छे साध, दोष काढ्यां करे विषवाद ।
 ओ तो मान वडाई में खूतो, भेष पेहरी नें यूहीं विगूतो ॥ ४९ ॥
 असाधु थकों साधां ज्यूं पूजावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें ।
 मान बडाई में नहीं मावें, ते तो दिन दिन भारी थावे ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थी थको वणीयों छें साध, तिणरे भव भव में होसी असमाध ।
 ते चिहूं गति मांहे गोता खावे, संसार में घणो दुख पावें ॥ ५१ ॥
 पाडे माहा मोहणी कर्म नों बंध, पछें होय जाय मोह अंध ।
 तिणने सवली तो मूल न सुभे, दिन दिन इधिक अलुमें ॥ ५२ ॥
 ग्रहस्थी साधु रो वेस वणावे, ठग ठग लोकां रा माल खावे ।
 भेष रें पाछे खाएं रोटी, आ चाल घणी छे खोटी ॥ ५३ ॥
 भारी करमो जीव विशेखें, ओ साध वण्यों किण लेखें ।
 कदा निकाचत कर्म बंध जावे, तो उतकष्टो संसार बंधावें ॥ ५४ ॥
 एहवा पापी नें दूर तजीजे, एहवा ठगरों वेसास न कीजें ।
 इणरी संगत आछी नाही, इणसूं भलो न होसी काई ॥ ५५ ॥

एहवा दुष्टी जीव हुवें ताय, ते तों सावां सूं दे भिड्काय ।
 सावां रो हुवें उलटो वेरी, इसडो भारीकर्मो छे गॅरी ॥ ५६ ॥
 वले बोलें घणों विकराल, अणहुंता कूडा कूडा दें आल ।
 इणरें भूठ तणी सुग नाहीं, पापी पापं सूं डरवें नहीं कांइ ॥ ५७ ॥
 इणरी मूर्ख करसी परतीत, ते पिण चिह्नं गति में होसी फज्जीत ।
 एहवारी माने साची बात, तिणरे वेगों आवे मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 एहवा पापी सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा ।
 इसा नें मूढे नही लगावे, तो समकत ने घको न थावे ॥ ५९ ॥
 तिण कर्नें जाय बेसे वाइ, तिणरे वरत भांगण री लागे साई ।
 एकला री किसी परतीत, एकला ने जाण लेणो विपरीत ॥ ६० ॥
 विगडायल फिरें एकलो, तिणने कदेय म जाणो भलो ।
 इणरी बात तो धुर सूं बूडी, तिणरी संगत कीयां दीसे भूडी ॥ ६१ ॥
 इण कर्नें बेठां आवें आलो, तिणरो कुण काढें निकालो ।
 बात लोकांमें फॅल जावें, बात पाछी ठिकाणें न आवें ॥ ६२ ॥
 जे जे लज्यावंत छें बाई, तिण कर्नें न वेंसे जाई ।
 घरे आयां पिण न करे बात, ले लज्यावंत साख्यात ॥ ६३ ॥
 इणसूं बात कीयां आछो नाहीं, वले चेचें हुवें लोकां माहीं ।
 यूंही लोकांमें हुवें फित्तुरो, अणहुंतों आल आवें कूरो ॥ ६४ ॥
 तिण सूं डाही हुवे ते बाई, तिण कने नही बेसे जाई ।
 तिणनें मूढें पिण न लगावें, घरे आयां पिण नही वतलावें ॥ ६५ ॥
 केकांतों वले कपटाइ मांडी, उघाडी करें ओघारी डांडी ।
 ओघे तो साघपणों नही लीघों, इणने उघाडो कांय कीघो ॥ ६६ ॥
 साघ रो भेष तो आप लीघो, तिण भेष नें दूरों न कीघो ।
 आप वणीयो रह्यो साघ, कपट ज्यूं रो ज्यूं राख्यों अगाव ॥ ६७ ॥
 लोक काई जाणें डांडी उघाडी, लोक काई जाणें डांडी ढकवारी ।
 लोक तो देखें साघ रो भेष, तिणने दांन दे हरष विशेष ॥ ६८ ॥
 तिणतो ज्यूंरो ज्यूं राख्यो भेष, तो कपट में कपट विशेष ।
 तिणसूं पावरो ग्रहस्थ रेणों, के सुघ साघ पणे लेंणो ॥ ६९ ॥
 जो पोतीयों. बांधने मांग खावें, कपट दगों तो टल जावें ।
 पेढी मांडे वखांण सुणावे, ते पिण सावद्य आजीवका वधावें ॥ ७० ॥
 तिण कर्नें जाय वखांण मंडावे, मुदें आगेंवांगी आप थावे ।
 जव इणरी देखादेख, लोक भेला हुवे वगोख ॥ ७१ ॥

जब केइ इनने उत्तम जाण, असणादिक देवे' हरष आण ।
 इणरी अजीवका सावद्य वधारी, लोक बूडवाने' हुआ त्यारी ॥ ७२ ॥
 इण कने जाय वखाण मंडावे, तो मिथ्यात घणो वध जावे ।
 इम कीयां मत बंध जाअे 'न्यारों, घणा लोकां ने करे खुवारों ॥ ७३ ॥
 पोतीयो बांधने गांम गांम, मिथ्यात वधावे' ठांम ठांम ।
 ओ पिण मगरूडाइ भाडें, साघांनेइ वंदण छांडे ॥ ७४ ॥
 घणा लोकानें भिडकावें, साघारी वंदण छोडावें ।
 तिणसूं मांगेनें खाएं तिणरी, संगत नहीं करणी जिणरी ॥ ७५ ॥
 तिण कने नही करणी समाई, तिण कने न वेंसणों जाइ ।
 इणरा सीलरी किसी परतीत, इण तो छोड दीधी छे' रीत ॥ ७६ ॥
 इणमे अवगुण दीसैं अथाय, ते पूरा केम कहवाय ।
 ओ तो आगुणग्राही चोर अवनीत, उंधी चलनें वले विपरीत ॥ ७७ ॥
 भेष में ठग ओलखवाण ताहि, जोड कीधी पूहना सहर मांहि ।
 सतावनो वर्ष संवत अठार, माह विद बीज सनीसरवार ॥ ७८ ॥



ढाल : २६

दुहा

साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण सासण में तीर्थ च्यार ।
 ते धर्म ठाड करे नही, अभितर हीयें विचार ॥ १ ॥
 त्यामे साध साधवी री गोचरो, निरवद जोग व्यापार ।
 असणादिक करे ते निरवद्य जोग छें, त्याने पाप न लागे लिंगार ॥ २ ॥
 श्रावक ने श्रावका तणो, खाणो पीणो छेइविरत मभार ।
 जे जे दरब श्रावक भोगवे, ते सावज जोग व्यापार ॥ ३ ॥
 श्रावक भोगवें ते पेहले करण छें, भोगवावे ते दूजें करण जाण ।
 अणामोदें ते करण तीसरें, त्याने पाप लागे छें आण ॥ ४ ॥
 केइ श्रावक खाए छे कमाय ने, केइ श्रावक मागेने खाय ।
 ते भेष राखे ग्रहस्थ तणों, आगे हूंतो ज्युरो ज्युं ताय ॥ ५ ॥
 केइ तो लोक ठावा कारणे, कांइ तो राखे ग्रहस्थ रो भेष ।
 कांई भेष बणावे साधू तणो, ते ठावाने लोक वशेष ॥ ६ ॥
 ए अववेसडो सांग आछो नही, जिण सासण रे मभार ।
 तिणरा ठगा ने परगट कळं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[विने रा भाव सुख सुख गूजे]

पागडी ने भगो दूर कीधो, माथे पोतीयो वोध लीधो ।
 मूढे मूहपती बांधी साख्यात, भोली पातरा लीधा हाथ ॥ १ ॥
 वले ओधो काख मांहे घाल्यो, लोकारे घर बेहरण चाल्यो ।
 इण सांग पांछे मिले रोटी, आ चलगत घणी छें खोटी ॥ २ ॥
 ओ तो वणीयो धर्म ठागों, धर्म री छोर देवें छें दगो ।
 इण भेष सु ठागो चलावे, ठा ठा लोकां रां माल खावे ॥ ३ ॥
 इण भेष सूं लोक ठावावे, धर्म जांणी ने आछो वेहरावें ।
 त्यां घररोइ माल गमार्यों, उलटो मिथ्यात ववायो ॥ ४ ॥
 मोला तो जांणे हूवों छें धर्म, पिण उलटा लाग्ता पाप कर्म ।
 इण भेष सूं लोक ठावावें, घर रो माल इविरत में गमावे ॥ ५ ॥

ओ जाणें मोनें वेंहरायों इणरें, उसम कर्म लागे छे तिणरें ।
 इण भेष पाछें देवें दगों, ते तो निश्चेंइ छें धर्म ठगो ॥ ६ ॥
 इण ओ भेष पहख्यों किण लेखे, आपरा किरतव साहमों न देखे ।
 ओ तो दीसैं उघाडो ठगो, देवें छें घणां नें दगो ॥ ७ ॥
 ओ तो ग्रहस्थ तणी पांत माह्यो, ओ तो सांग किण लेखें वणायो ।
 ओ तो एकंत रोट्यां रे काज, अधवेस वण्यों मुनीराज ॥ ८ ॥
 वेस वणायों पेट रें काजें, निरलजा मूल न लाजे ।
 ते तो भेष रो भांडण हारो, कीयो जिण मारग मे विगाडो ॥ ९ ॥
 ए तो सांग घणों छें अजोग, तिण सूं सरम में पड जाएं लोक ।
 तिण आगें भोला लोक ठगावें, केई डाहा पिण कर्म में खावें ॥ १० ॥
 एहवो सांग पेहख्यां फिरे तास, भोला हुवे ते बेसैं तिण पास ।
 डाहा हुवें ते मूडें न लगावें, तिण ने पेंला पिण नहीं वतलावें ॥ ११ ॥
 इणतो साख्यात आप्यों सांगों, जिण मारग माहे पाडीयों भांगों ।
 अद्ध वेस सूं पर घर जावें, तिणनें आ पिण लज्या न आव ॥ १२ ॥
 केई कहे साधपणों छें भारी, ते लेवा री आसंग नही म्हारी ।
 तिणसूं श्रावक ना वरत लीघा, मोसूं पले जिसा व्रत कीघा ॥ १३ ॥
 तिणसूं पोतीयो बांधीयो माथें, भोली पातरा लीघा हाथें ।
 ओघो काख में घाली जावां, गोचरी आण मांगीनें खावां ॥ १४ ॥
 इण विघ करां आजीवकाय, म्हामे फोडा न दीसैं ताय ।
 म्हार व्रत पिण चोखा पाल, सुखे गमावां छा काल ॥ १५ ॥
 तिण नें कहे मांग खावो लोकां रो, ओतो छांदो निकेवल थारो ।
 ओघो मूहपती पातरा हाथ, एं क्यूं ले जावो छो साथ ॥ १६ ॥
 जब ओ कहे इण वांना लारे, म्हारो आग हुवे छें सारें ।
 हरष सहीत आगा बोलावें, रोटी पिण आछी तरें वेंहरावें ॥ १७ ॥
 इण भेष पाछें रोटी आवें, इण भेष विण कुण वेंहरावें ।
 तिण सूं ओ भेष वणायों, हिवे कुमी रहे नही कायों ॥ १८ ॥
 जब ओ कहे थे छो धर्म ठगो, भोला लोकां नें देवों छो दगों ।
 इण भेष सूं लोक ठगावें, जाणे म्हानें धर्म थावे ॥ १९ ॥
 थे तो जाणों छों पाप उघाडो, भेष लारे पाडो छो घाडो ।
 थे जाणों हूं इविरत माहे ल्याउ, इविरत मे पेंलां रो माल खाउ ॥ २० ॥
 इण लेखें थे धर्म ठगो, भेष पेंहरी नें देवो छों दगो ।
 माहामोहणी बंधसी कर्मों, छूट जासी जिण धर्मों ॥ २१ ॥

टाको भलीयां हुवे अनंत संसारी, भव भव मांहे हुवेला खुवारी ।
 जिण सूं ओ भेष परों उतारों, इण भेष में घाडो म पाडो ॥ २२ ॥
 जो थारे मांगेने खांणो, तो पाघरो ग्रहस्थ होय जाणो ।
 जथातथ ग्रहस्थ होय जावे, तो कूडा कपट नही थावे ॥ २३ ॥
 जथातथ ग्रहस्थ होय लेवे, दाता पिण ग्रहस्थ जाण देवे ।
 जब नही कांड कपट ने दगों, तब नही कहीजे धर्म ठगो ॥ २४ ॥
 कोइ कहे साध हूँणो छे मोय, घर रा आग्या न देवे कोय ।
 तिणसू अर्घ सांग वणउं, घणा घर रो मांगेने खाउ ॥ २५ ॥
 जब घर रा काया होय जावे, मोने आगन्या वेगी आवे ।
 इण कारण मांगेने खाउं ताहि, जावजीव री नही मन मांहि ॥ २६ ॥
 जब उण ने पाछो केणो ताह्यो, ओ थे सांग क्यांने वणायो ।
 मांगेने खाये ते थारे छादें, ओ भेष ले कर्म कांय दावे ॥ २७ ॥
 पाघरो ग्रहस्थ रो हुवे साग, रोटीया खाता थे मांग ।
 तो कूड कपट दगों टल जावे, जिण मारग री हलकी न थावे ॥ २८ ॥
 ओर न्यात रो मांगेने खासो, ओर न्यात रो अन्न पाणी ल्यासो ।
 जब न्यातीला छोड देसी आसो, आग्या वेगी देसी तासो ॥ २९ ॥
 इम मुणे कोई हरपे विशेष, तुरत उतारे साधु रो भेष ।
 कोइ कहे थोरा दिना रे तांड, भेष उतारणी आवे नाही ॥ ३० ॥
 जब उणने वले केंणो पाछों, ओ भेष नही छे आछो ।
 पिण इतरो कर ले वेराग, पाचू विगे रा कर दो त्याग ॥ ३१ ॥
 लूखोइ आहार जिण रो ल्यावो, तिण ने पाछां इतरो जणावां ।
 म्हा ने थां जिम ग्रहस्थी जांणो, म्हा रे इविरत माहे छे खाणो ॥ ३२ ॥
 मो ने देख म भूलो भर्म, मो ने दीवां रो नही धर्म ।
 धर्म साधा ने दीयां थावे, तिण रा पाप कर्म खय जावे ॥ ३३ ॥
 म्हे तों आगन्यां लेवा कीयो सांग, पार की रोटी खाउ छू मांग ।
 इम कहे पार की रोटी ल्यावे, तो कूड कपट दगो टल जावे ॥ ३४ ॥
 जो इतरी पिण करणी न आवे, भेष पिण उतारणी नावे ।
 जब तो साख्यात छे धर्म ठगों, घणा लोकां ने देवे छे दगो ॥ ३५ ॥
 भोला लोक पिण तिण आगे ठगावे, आछो आछो तिणने वेंहरावे ।
 ओ पिण होय जाए गटकायों, तिणसू संजम लीमो न जायो ॥ ३६ ॥
 ताजे ताजे घर गोचरी जावे, जठी तठी फिर आछो ल्यावे ।
 ओ तो भेष ले हिलीयो गटके, सरस आहार रे कारण भटके ॥ ३७ ॥

भेष ले हूवो उलटों भारी, सुखसीलीयों साताकारी ।
 जाणें इण भेष में मांग ल्याउं, ठग ठग लोकां रा माल खाउं ॥ ३८ ॥
 साधपणों पिण लेणी न आवे, उलटो साधां मे दोष बतावें ।
 साधां रों उलटो हुवे वेंरी, केई इसडा पिण होय जाएं गेरी ॥ ३९ ॥
 साधां नें पिण वंदणा छोडें, दुष्ट परिणामे बेंसें गोडें ।
 छिदर जोवे दिन रात, आल दे काडे तुरत साख्यात ॥ ४० ॥
 अणहुंता आंगुण बोलें तांम, गामां नगरा ठाम ठाम ।
 साधां री वंदणा छुडावे, लोकां ने साधा सूं भिडकावें ॥ ४१ ॥
 वले लोका आगे कहें एम, हूं साधपणो लेउं केम ।
 आगलइ साधां रे मांहि, साधपणो न दासैं ताहि ॥ ४२ ॥
 तिणसूं श्रावक पणो पालां चोखो, कांइ मोडे रा जासां मोखो ।
 इम कहि लोकां नें भरमावें, ठगा सूं काम चलावें ॥ ४३ ॥
 केई इसडा पापी होय जावें, सुध साधां सूं भिडकावें ।
 पोतें सुखसीलीयो होय जावे, तिणसूं साधपणों लेणी नावें ॥ ४४ ॥
 तिणसूं साधां रा अवगुण गावे, आपरा अवगुण सर्व छिपावें ।
 पछें संवलोतो मूल न सूमें, वले दिन दिन इधिक अलूभे ॥ ४५ ॥
 ओं तो विवध पणो बोले कूडो, धर्म नो छे दावानल पूरो ।
 भूठ बोलतों न डरे लिगार, इण आरे कीयो अनंत संसार ॥ ४६ ॥
 श्री जिण मारग छे साचो, एहवो भे वधीयो नही आछो ।
 एहवा ने देखने केई भोला, त्यांरो मन खाएं डमडोला ॥ ४७ ॥
 जाणे म्हे पिण इसडा होय जावां, इण विध मागे म्हेइ खावां ।
 इम करतां करतां मत बांधें, मिथ्यात री वधीतर साधें ॥ ४८ ॥
 साध मारग रा होय जाएं धेखी, निजर वले साधां नें देखी
 साध वधीयो तो मूल न चावे, ह्वेंतो देखें तिणनें भिडकावें ॥ ४९ ॥
 जिण मारण रा दावानल पका, भोला नें देवें धर्म रा धका ।
 इसडा भारीकर्मा जीव, त्या दीधी नरक री नीव ॥ ५० ॥
 तिणसूं अधवेसडों सांग भूंडो, इण सांग सूं घणा जाएं बूडो ।
 ओ अधवेसडों सांग अजोग, तिणसूं वधें मिथ्यात रो रोग ॥ ५१ ॥
 इम सांमल ने नर नारी, इणरो संग न करणो लिगारी ।
 इण साग में मांगे नें खावें, ते घणा ने दगो लगावें ॥ ५२ ॥
 ओ भेष पेंहरी माग खावे, तिणनें भगवंत नही सरावे ।
 जो ओ भगवंत भेष सरावत, तो ओ भेष घणो वध जावत ॥ ५३ ॥
 भगवंत याने केम सरावें, ओं तो उघाडो ठागों दिखावें ।
 घणा लोकां नें मिथ्यात पमावे, त्यांने भगवंत केम सरावे ॥ ५४ ॥

ढलल : २७

दुहल

भेडधरल भलग तगल, थरलक थरलकल अनेक छें तलड ।
 तुडलमें केडक तु डुडुतल घणलं, तुडलरल डुडुत घणल डरलणलड ॥ १ ॥
 तुडलनें डरडड रल चलतल नहल, ते डुले नहलं डुंडु वलचलर ।
 सलवलं नें अलल देतल सके नहल, डलड कडडूं न डरें ललगलर ॥ २ ॥
 कलण हल डुडुतल अगुडलनेल डलडरे, सलवलं ने अलल डलडुडु छे तलड ।
 तलणरल सलकुल वलत ठेहरलड नें, देवे लुकलं डे डुलडलड ॥ ३ ॥
 ठलड ठलड वकतल डलरें, सलवलं रल अडगुण डुले डलनरलत ।
 उतलरे सलवलं रल अलंसतल, कर कर डुडुतल वलत ॥ ॡ ॥
 तलण सुं भेडधरल रलकुल घणल, तलणने थरलक डलणें सुड डलन ।
 डुडु डुडु अडगुण डुले सलवलं तगल, तलणने सरलवे डुंडु अडलण ॥ ॡ ॥
 तलणमें डुंडु कडडु रल चलल घणल, ते डुलर डुलर केड कहुवलड ।
 थुडलसल डरगड कहुं, ते सुणकुलु चलतलतुडलड ॥ ॢ ॥

ढलल

[अ थरलकुडडुडु डलण अगनुडल डं]

केडु नलगडल नलरललल वथुकडल छें, ते तु ककुलडु करण ने वेठलं तुडलर ।
 ते सलवलं नें अलल देतल नहलं संके, अलंगुण डुललतल डलण न डरें ललगलर ।
 एहुवल डुडु थरलक छें भेड धलरुडलं रलड ॥ १ ॥
 ते कलरतघनल संसर रे लेखें, ते न डलणे कलणरुडु कलडुडु डुडुगलर ।
 ते सलवलं नें अलल देतल नहल संके, डुडुत 'डुललतल न डरें ललगलर ॥ २ ॥
 कुललरल डलरल अलड कुरुललललल तलणमें, वले वेसलसघलतल घणल डुडुगलडलर ।
 ते सलवलं ने अलल देतल नहलं संके, ते डलड कडडूं न डरें ललगलर ॥ ३ ॥
 केडु ककुलडलखुलर वथुकडल डुडुनडु, डरणडंज रलणल तगल डलंजणहलर ।
 ते सलवलं नें अलल देतल नहलं संके, तलणलरें डरडड रल चलतल न डलसे ललगलर ॥ ॡ ॥
 वले चलडुलखुडु कुगल हुवे डुडुतल, वले कडुडु ने कडडु तगुल डंडलर ।
 ते सलवलं ने अलल देतल नहलं संके, तलण डुलतव डनुडु डुलडुडु छे वलगड ॥ ॡ ॥
 तलण रल सलखु ने डरखु नहलं हुवे लुकलं डें, वले ककुलडल रलड ने वेठलं छें, तुडलर ।
 ते सलवलं नें अलल देतल नहलं संके, वले डलतल डुगडल तगल लेंणहलर ॥ ॢ ॥

*डहु अलंकडु डुरलतुडुक गलथल के अनुत डें हल ।

हिण रा घोलयः रीपरतीत नही छें लोकांमें,
 ते साधां ने आल देतो वही संकें,
 एहवो भेषघाख्यां रे श्रावक हुवे तो,
 तिण कने साधां ने आल देणा सीखावे,
 एहवा दुष्टी जीव नें कुवद सीखावे,
 पछें लोक जाणें ओ निरापेखी छें,
 ऐसा ही सेवग ने एंसाड सांमी,
 ते कलेस कदगरो वधीयां छे राजी,
 एहवा दुष्टी जीव छे भारीकर्मा,
 तिण दुष्टी जीव ने छेखे कोई,
 एहवा दुष्टी अग्यांनी जीव छे पापी,
 तिणने छेखीयां तो अवगुण होसी,
 ते तो निदक साधां तणो छे निरंतर,
 वले रात नें दिवस छे घेषी साधां रो,
 साधा रे आल अणहुंता देवे छें,
 तिणरे मूढें तों दलदर बोले उघाडों,
 ले साधा रो निदक दुष्ट घणो हुवे,
 वले भव भव में विजोग पडसी वालां रा,
 वले तांणां तांण मिटे नही तिणरी,
 जिहां जासी तिहां दुखीयो होसी,
 एहवा दुष्टी ते श्रावक वाजे लोकांमें,
 वले साधां ने आल देता नही सके,
 सूष साधांने आल दे अन्हाखी,
 भूळ रा पाप सूं न डरे पापी,
 एहवा विकलाने विकल आय मिलीया जब,
 ते तो गाडरी प्रवाह ज्यू होय रह्या छे,
 त्यांमे केयक दुट्टी अतही घणों हुवे,
 ते भूळ भूळ आल लोकां ने सीखावें,
 त्यांरो श्रावक साधां रे आल देवे जब,
 काम पडे जब न्यारा होय जावे,
 थोरी वावरी केई सिकार जावे जब,
 आप तो गोली वावे छें अलगोज उमों,

इत्यादिक अनेक आंगुण रो भंडार ।
 तिणरी वात माने ते वूडा कालीघार ॥ ७ ॥
 तिणनें तों सगला में आगे कीयो राखे ।
 पछे ओ तो फिरीयो २ अकाल मापें ॥ ८ ॥
 आपतो वृगलध्यानी हो जावें ।
 पिण छांनें २ कूड कपट चलावे ॥ ९ ॥
 जेसा कुं तेंसा मलीया छे आय ।
 तिणमें दुष्टी हुवे तिणने देवे ल्गाय ॥ १० ॥
 त्या छोडदीची छे लोकां री पिण लजीया ।
 जब ओ त्यांरी वेठोछे करवा ने कजीया ॥ ११ ॥
 तिण ने भलो मिनप तो छेडवे नांही ।
 भलो ह्वेतों म जांगजो कांई ॥ १२ ॥
 वले आल देवण ने उदमी पूरों ।
 ते नरक निगोद सूं नही छें दूरो ॥ १३ ॥
 तिणरे नियमाइ निश्चे भूंडो ह्वेतो जोणों ।
 वले घरमें पिण दलदर घसतों जाणों ॥ १४ ॥
 तिणनें भव भव में दलदरी ह्वेतों जाणो ।
 तिण मांहे संका मूल म आणो ॥ १५ ॥
 लारे लगी विपद रहें लागी ।
 वले भव भव में होसी घणों दोभागी ॥ १६ ॥
 मुहुपती वांधनें बोलें मोटका कूडो ।
 त्यांरा श्रावक पणमें पड गई धूरो ॥ १७ ॥
 वले वकवो करे छें दिन नें रात ।
 सुष साधां थकी पडवजीयो मिथ्यात ॥ १८ ॥
 मन माने ज्यूं गालां रा गोला चलावें ।
 उंट रे केडे उटडां चलीया जावें ॥ १९ ॥
 ते आल देतों संके नही तिलमात ।
 ते पिण वकवोकरें दिनरात ॥ २० ॥
 एं पिण मन मांहे हरपत थावें ।
 पिण कुकला ने कुळद तों एहीज सीखावें ॥ २१ ॥
 सिकारी कुत्ता ने साथे लेजावे ।
 पछें सिकारी कुत्ता त्यां पासें ल्गावें ॥ २२ ॥

ने स्वान् विग मृत्प्यादिक गंक जीवाने,
 न्यांगि स्वालडी ने वरु मांस वृत्तावन,
 त्रिग स्वान् यकी मिकानी छे गानी,
 ज्यू न्यांगि आवक भावाने आल देवे जव,
 मिकानी तो स्वान् ने वरज गवे जव,
 ज्यू गं विग यांग आवकाने वरजे,
 मिकानी स्वान् ने वरजे किग लेवे,
 ज्यू गं विग आवकाने वरजे किग लेवे,
 यांग आवक भावां ने आल देवे ने,
 त्रिगने निस्वां तो पुरा ह्ये नही आयो,
 मेषरानी भावां ने आल देवे ने,
 त्रिग आल मूं हरपत ह्येने पारी,
 कोई अनेरो आल भावां ने देवे ने,
 पछे क्रिया क्रिया अजांग कोकां ने,
 यांगि मरवा माहि छे हमडो अवांगे,
 त्रिग ने न्यास निरगो तो मृत् न काडे,
 मारिकतां जीव छे मंड मिथ्याती,
 न्याने कृत्तु मिकिया छे पुरा पार्थवी,
 कहि कहि ने कितने एक केहू,
 ने कृत्तयां माहि मांटे कृत्तये छे,
 जेड जीवी छे आल ग फल आण्वावन,
 मंदव अठाने मत्रावने वग्ने,

विगाम करे जीवां माणे छे तांप ।
 ने मांग आवे छे मिकान्यां ने काम ॥ २३ ॥
 त्रिग मिकानी ने स्वान् अगां काम आवे ।
 गं विग घगां फलकृत होय जावे ॥ २४ ॥
 स्वान् तो किगही जीव नी न करे वात ।
 तो गं विगभावां ने आल देवा रहि जात ॥ २५ ॥
 याने विग छे जीवां ग माणहार ।
 पांतेई आल देवा न हरे लिंगार ॥ २६ ॥
 त्रिगरी वात ने प्राच माने छे ताम ।
 तोही कहिजा फिरे छे गाम पग्गाम ॥ २७ ॥
 न्यांग आवक न्यांगे माच माने ल तांम ।
 पछे गं विग कहिजा फिरे छे ताम ताम ॥ २८ ॥
 त्रिग आल ग वणी पोने होय जावे ।
 त्रिग आल ने भावां करे हमारे ॥ २९ ॥
 भावां ने आल दे त्रिगने जांगे छे पको ।
 याने कर्मा शीयां छे मोटे वको ॥ ३० ॥
 ने भावां ने आल देवगने मृग ।
 मानव तो मव स्वायने वृडा छे पृग ॥ ३१ ॥
 भावां ने आल दे मारी कर्मा अन्दावी ।
 ने मनमूच शीर गया छे मावी ॥ ३२ ॥
 मेवाड माहि पुर महर मकार ।
 आंगेइ विड अमावम ने कृत्तमन्वार ॥ ३३ ॥

ढालः २८

[२ जीवा मोह अशुकम्पा न आशिधे]

सुध साध साधवीयां री निद्या करे, वले देवे अणहूँता आल जी ।
ते यूही बूडे छे बापडा, बाँधेँ उसम करमां रा जाल जी ।
ते तो माठी गति रा प्रावणा* ॥ १ ॥

ओर हर कोइ री निद्या करें, तो पिण बंधे पाप रा पूर जी ।
तो साधां रा निंदक पापीया, ते तो जासी बहती रें पूर जी ॥ २ ॥

साची ने साची कहे, ते तो निद्या म जाणो कोय जी ।
अणहूँती कहें कोइ पर तणी, ते निंदक पापी सोय जी ॥ ३ ॥

खाटा खेटो करें नित साध थी, वले अवगुण बोले दिन रात जी ।
घण लोकां रा ब्रंद मिलें तिहां, करे साधां री तात जी ॥ ४ ॥

जो उ गुण सुणे साधां तणा, तो उणरे लागें अभितर लाय जी ।
रोम रोम माहि घणो प्रजलें, वले मुख देवे कुमलाय जी ॥ ५ ॥

खीटोर खुराइ करें घणी, छल छिदर जोवें दिन रात जी ।
गुण ग्राम करे लोक साधां तणां, तो इणरें छाती मे न समात जी ॥ ६ ॥

कोइ जस कीरत करे साधां तणी, तिण सूं पिण राखे वेष जी ।
ते तो वीद वण्या छे तरक ना, त्यांनैं अरू बरू ल्यो देख जी ॥ ७ ॥

अणहूँतो अवगुण सुणें साधनो, तिण अवगुण नें साचो ठहराय जी ।
पछे उजम आण उदम करें, घणा लोकां मे देवे फेलाय जी ॥ ८ ॥

न्याय निरणो कीयां विण पापीया, बोलें विरूआ वेण जी ।
त्याने चिंता नहीं परभव तणी, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी ॥ ९ ॥

उण रे साध निजर पडें जदी, जब जागें अभितर वेष जी ।
मांठा परिणामा मूंह विगाड दे, जाणे वेरी ज्यूं वेर वशेष जी ॥ १० ॥

अनेक जीवां रें आल अनेक दे, एक साध रे आल दें एक जी ।
तो पिण भारी पाप छे एहनो, समझ जो आण ववेक जी ॥ ११ ॥

साधां री निद्या करे तेहने, कडवा फल लागें आण जी ।
ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चुतर सुजाण जी ॥ १२ ॥

केई धुर सूं तो जाए नारकी, तिहां खाए अंती मार जी ।
पछे जाय पडें तिरजंच में, तिण दुख रो कहितां नावें पार जी ॥ १३ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

नरक विचें तिरजंच में, दुख अनंत गुणा छें तांम जी ।
 काल अनंतो तिहां रहें, तिहां सुख रो नहीं कोइ ठाम जी ॥ १४ ॥
 कदे नरक निगोद थी नीकलें, पांमें नर अवतार जी ।
 तिहां पिण दुख पांमें घणा, ते कहितां नावे पार जी ॥ १५ ॥



दुहा

केई सुध सावां' रा समदाय मे, केई हुवें अवनीत अजोग ।
 तिणने गुर काढें गच्छ वाहि रें, तिणने फिट फिट करें सहू लोग ॥ १ ॥
 ते तो च्यार तीरथ बारें हुवों, तोही मन मांहे अति अभिमान ।
 तिणनें समदिष्टी साध गिणें नहीं, तो पिण कर रह्यो मूढ गुमान ॥ २ ॥
 सुध सावां नें ढीला कहें, जाबक कहें सावां नें असाध ।
 रात दिवस त्यांरी निद्या करे, करे घणों घणो विषवाद ॥ ३ ॥
 ते पोतें विकलाइ करें घणी, हूओ आचार थी भिष्ट ।
 सुध सरधा पिण विगडे गइ, समकत पिण हुइ छें निष्ट ॥ ४ ॥
 केयक भिष्ट हुवा छें इण विघ विघे, सेवा लागा दोष अनेक ।
 ते थोडासा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण अगत्या मे]

नीसरणी मांडनें चढे उतरें छे, रात दिवस मांहे बार अनेक ।
 तिण आगना लोपी श्री अरिहंत नी, तिणरो भिष्ट हूओ छें आचार ववेक ।
 जो साध निसरणी चढे उतरें तो, तिणने साधु किण विघ सरधीजे ॥ १ ॥
 दसवीकालक पांचमें अछ्येने, सठसठमी गाथा मांय ॥ २ ॥
 तीन गाथा तिहां लगती कही छें, तिहां छुकाय जीवां री कही छे विराध ।
 वले हाथ पगादिक साधू रा भाणे, तिण साधु रे श्री जिण कही असमाध ॥ ३ ॥
 नीसरणी तले कीड्यां नें लटादिक, जीव अनेक भेला हुवें आय ।
 ऋद्धतां उतरतां नीसरणी सरकें, जव अनेक जीव तिहां मारीया जाय ॥ ४ ॥
 वले नीलण फूलण चोमासें आवें, हेठें उंची नें गात्रादिक मांय ।
 वले छाट लागे मेह बूठां चोमासे, वले विवध प्रकारें अजयणा थाय ॥ ५ ॥
 ते तो सेषाकाल नें वले चोमासा मांहे, सांप्रत दोष सेवे छे साख्यात ।
 तिण दोष ने दोष न सरखे अग्यांनी, तिण चोडेंह पडिवजीयो छे मिथ्यात ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले कल्प मरजादा उल्लंघे अग्यांनी,
 वले भूठी परूपणा करे लोकां में,
 कहे साठ वरसां माहे साध हूवो छे,
 वले सूतर रो नांम ले ले अग्यांनी,
 सूतर माहे कठे नहीं चाल्यो,
 इण बात तणो कोइ निरणो करे तो,
 निसंक सूतर रो नांम बताए,
 लाज सरम छोडे नें अग्यांनी,
 एक मास रही नें विहार कीधो छे,
 सेषा काल पिण महीना थी इधिको रहे छे,
 हालण चालण री सक्त घटे जब,
 वरसां रो नांम न चाल्यो सूतर में,
 नव दीषत सामायक चारित वालो,
 ते सिज्मातर रो आहार तिणनें खवावे,
 सिज्मातर रो आहार जाण जाण खवावे,
 ओ तो कल्प आचार साधु रो न जाणे,
 ए सांप्रत दोष उघाडो दीसे,
 वले मन माहे जाणे हूं प्रवीण पको,
 चोवीसोइ तीथंकर त्यांरा साधां ने,
 नव दिषत गिलाण नें बालक बूढा नें,
 मोटो दोष जाणे छे कमाड खोल्यां में,
 जीव हिंसा करतो नहीं संक्यो,
 कोइ पूछे तो कूड बोलें कपटी,
 मोनें पाप न लागो जेंणा सूं खोल्यां,
 कलाल तणो कुल मुख सूं निषेधो,
 तिणने जातो जांणी नें ग्रहस्थ निषेधो,
 ग्रहस्थ वरज्यो जब जातो रह्यो छे,
 दुगच्छपीक रो आहार लेतो न संके,
 मेणा रा घर री गोचरी थापी,
 वले मेणा री गोचरी करवा दूको,
 लोकां माहे परूपणा प्रसिद्ध लीधी,
 हूं इणने अहार देउं पिण इण रो न लेउं,

मनमानें जिता दिन रहिवा लागो ।
 तिण छोड दीयो श्री जिणवर मागो ॥ ७ ॥
 तिणने एक ठिकाणे रहिणो थापे ।
 एहवो भूठ बोले वीर वचन उथापे ॥ ८ ॥
 साठ वरस रा नें रहिणो एक ठिकाणे ।
 तिण भूठाबोला नें भूठा बोलो जाणे ॥ ९ ॥
 भोला लोकां नें उपजावे वेसासो ।
 चोमासा उपर थाप्यो चोमासो ॥ १० ॥
 विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें ।
 तिण भागल नें हटक में कुण चलावे ॥ ११ ॥
 साधु ठाणापती रहे एक ठिकाणे ।
 कारण विनां रहे मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 तिण कनें सिज्मातर रो आहार मंगवावे ।
 इसरो चेला नें आचार सीखावे ॥ १३ ॥
 तिणमें दोष कहे तिणनें कहे अजाण ।
 इसरी कहे मूढ कर कर ताण ॥ १४ ॥
 तिण दोष नें कर लीधो छे आसांन ।
 हीण बुधी थको करे थोथो गुमान ॥ १५ ॥
 सिज्मातर पिड न कल्पे लिंगार ।
 त्यांने पिण नही खांणो सिज्मातर आहार ॥ १६ ॥
 तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो ।
 हिंसा कीयां थी पेंहलो महावरत भागो ॥ १७ ॥
 म्हे तो जेंणा सूं हाथे खोल्यो कमाड ।
 इण विष भूठ बोलनें होय जाये पार ॥ १८ ॥
 तिणरो आहार लेवा नें होय गयो त्यारी ।
 थे म करो इण मारग री हाथां सूं खुवारी ॥ १९ ॥
 पिण उण रा परिणांम एहीज जाणो ।
 तिण भांग दीधी श्री जिणवर आणो ॥ २० ॥
 छाने छाने खावो मेणा रो आण्यो अहार ।
 ते पिण लोकां में हूवो छे उघार ॥ २१ ॥
 हूं तो मेणा रो आण्यो न खाउ अहार ।
 इण भूठ तणो पिण हूवो उघार ॥ २२ ॥

कोइ गांम बारे जाय दिष्या लीघी,
 ते सांप्रत दोषीली सूखडी लेतां,
 जो दिष्या लेतो हुवें तिणरो न्यातीलो,
 जो इधिकी आणें ओर साघां काजें,
 दिष्या लेतो थको आहार साथे लेवें तो,
 वले संका पडें ओर सगला साघां री,
 ओर साघां रे काजे मोल लेइ नें,
 ते सूखडी साराइ साघ खाए तो,
 पेंहलां तो गुर चोलपटादिक घोवें,
 जब आप घोयो ते सहिल गिणनें,
 जब चेलो कहे हूं तो थांहरी देखादेखी,
 जो दोष हुवे तो दोयां में दोष,
 जब गुर कहे आगे घोवता आपे,
 जब चेलो कहे आ तो खबर नही मोने,
 कपडा घोवण रो गुर चेला रे,
 जब लोकां माहे पिण भूंडा दीठा,
 सोभा विभूषा करवा नें काजे,
 तिण आगना लोपी श्री अरिहत री,
 अनंता सिधां री साख करने,
 ते पिण सूंस भागे ने चेला कीघां,
 सूंस भागेने चेला करतो नही ल्जाज्यो,
 ते पड गयीं च्यार तीर्थ बारें,
 सगला साघ भेला होय मरजादा बांधी,
 ते पिण सूंस सगलाइ भाग्यां,
 सगला साघां मिल नें मरजाद बाधी,
 अनंता सिधां री साख करने,
 सगला सूंस करे मरजाद बांधी,
 तिण लिखत हेठे सगलां आपर कीघा,
 ए सूंस मरजादा भागे तिणनें,
 वले तिणनें निंदक जाणवो च्यार तीर्थ रो,
 इसडा सूंस कर नें पांना माहे लिखाया,
 ते पिण सूंस सगलाइ भाग्यां,

कोइ साघ काजे सूखडी मोल ल्यायीं ।
 लोक लज्या पिण छोडी छें तायो ॥ २३ ॥
 तिणरे तांइ आण नें तिणनें देवें कोय ।
 ते वेहरे तो साधु ने दोषण होय ॥ २४ ॥
 आ पिण लोकां में आछी न लागें ।
 तिणरो न्याय निरणो करे किण किण आंगें ॥ २५ ॥
 दिष्या लेणवालो ले नीकले साथ ।
 तिणने निश्चेइ दोष कह्यो जगनाथ ॥ २६ ॥
 त्यांरी देखा देख चेलो पिण घोयो ।
 चेला सूं तोर ने लोकां मांहि विगोयीं ॥ २७ ॥
 चोलपटादिक घोयो निसंक ।
 म्हां एकला मांहि नहीं छें वंक ॥ २८ ॥
 ते हिवडां उवा रीत छे नांय ।
 थे पेंहला मोने कह्यो नही कांय ॥ २९ ॥
 एक एक रो मांहो मां कीयो उवाड ।
 वले मांहो मां कीघा कजीया ने राड ॥ ३० ॥
 साघ थइ कपडादिक घोवे ।
 तिणरी चिहंगति मांहि खूरावी होवे ॥ ३१ ॥
 चेला करण रा कीया पचखांण ।
 तिण अनंता सिधा री भांगी आण ॥ ३२ ॥
 ते तो होय गयो निश्चेइ भागल भिछी ।
 तिणने किण विघ साघसरधें समदिछी ॥ ३३ ॥
 तिण मरजाद मे सूंस कीया अनेक ।
 वले भूठ बोले मूड विनां ववेक ॥ ३४ ॥
 सगलाइ साघ कीया पचखांण ।
 आपे सगलाइ चालां यां सूंस प्रमांण ॥ ३५ ॥
 ते सूंस लिख्या छे पांना रे मांहि ।
 अनंता सिधां री साख ठेहराइ ॥ ३६ ॥
 गिणवों नही च्यार तीर्थ मांहि ।
 तिणने बांदें त्यानें पिण आगना नांहि ॥ ३७ ॥
 अनंता सिधां री साख करनें तांय ।
 वले जांणी जांणी बोले मूंसावाय ॥ ३८ ॥

कदे तों कहे हूं इण लिखत में नाही,
 कदे कहे म्हे लिखत मे आखर न कीधां,
 कदे तो कहे म्हे सरमासरमी,
 कदे कहे मोनें कहि नें करायों,
 कदे कहे मोसूं कपटाइ दगों करेनें,
 कदे कहे मोनें एकलो करता जांणी नें,
 कदे तो कहे हूं यांरां टोला मांहे रहूं सूं,
 कदे कहे लिखत म्हारें तांइ कीधों,
 कदे कहे म्हारें उसभ कर्म उदें आया,
 आतो भोलप होय गइ म्हारि,
 कदे तो कहे हूं सगलाइ चेलां मे,
 हूं छोट्यां री आग्यां मे किण विघ चालूं,
 कदे तो कहे हूं रह्यो यांरा टोला मे,
 पिण आत्मा रो अर्थी कोइ न दीधों,
 कदे कहे अविनारी ढालां जोडी ते,
 चेलां नें कह्यो ठाम ठाम कहो थे,
 इत्यादिक भूठ बोले छें अनेक प्रकारें,
 जांणी जांणी भूठ बोलें छें अग्यांनी,
 अनंता सिद्धां री साख करे सूंस कीधा,
 ते हुय गयो अपच्छंदो अवनीत,
 सुध साधां ने ढीला कहि कहि अग्यानी,
 तिणनें च्यारूइ तीरथ साध न जाणें,
 ज्याने ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्यां सूं नरमाइ करे कह्यो मोनें ल्यो थे,
 थे कहो तो दूर करूं म्हारं चला,
 थे मोनें चलावो जिण रीत चालूं,
 दोय वार गयो त्यांमे जावानें काजें,
 त्यांनें अनेक वार कह्यो मोनें मांहे ल्यो,
 ज्यानें ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्या भागला पिण तिणनें मांहे न लीधों,
 पांचू विगेंरा त्यांग कीया तेही भांग्या,
 सूंस यांने लिख्या ते पांनो ही फाड्यो,

कदे कहे म्हे लिखत आरे न कीधों ।
 कदे कहे म्हे एक ससो कर दीधों ॥ ३६ ॥
 लिखत हेठें आखर कीया ताय ।
 कदे कहे म्हे लिखीयो सांकडे आय ॥ ४० ॥
 लिखत रे हेठें आखर कराया ।
 म्हे डरतें थके आखर कीया छे ताय ॥ ४१ ॥
 तठा तांइ म्हारें छें पचखाण ।
 ए सगलाइ मो उपर कीधा मंडाण ॥ ४२ ॥
 जब लिखत हेठें आखर लिख दीया ताय ।
 तिण वात नें हूं रह्यो छूं पिच्छताय ॥ ४३ ॥
 हूं वडो हूंतो तिणनें मुदें न कीधो ।
 तिण सूं टोलें म्हे छिटकाय दीधो ॥ ४४ ॥
 आत्मार्थी जोवण काम ।
 तिण सूं एकलो नीकल्यो टोला सूं ताम ॥ ४५ ॥
 सगली ढालां मो उपर कीधो छें ताहि ।
 हिवें हूं किण विघ रहूं टोला रे मांहे ॥ ४६ ॥
 परभव रो डर नाणें मूल लिंगार ।
 खोय दीयो तिण संजम भार ॥ ४७ ॥
 ते सूंस भागे नें हूवो एकलो ।
 तिणनें साध सरध्यां किम होसी भलो ॥ ४८ ॥
 आप भागल थको उतकष्टो वाजें ।
 तो पिण नरलजो मूल न लाजें ॥ ४९ ॥
 त्यां भागलां मे मन जावा रो कीधो ।
 त्यां पिण तिणनें मांहे नहीं लीधो ॥ ५० ॥
 थे कहो ते थानें परतीत उपाय ।
 थे मोनें मांहे ल्यो हूं थां मांहे आउं ॥ ५१ ॥
 जातो अनेक कोसां रो पेंडें कीधो ।
 तो पिण तिणनें त्यां मांहे न लीधो ॥ ५२ ॥
 उतकष्टो प्राच्छित छें त्पारें मांहे ।
 तिण भागल री भोलां खबर न कांइ ॥ ५३ ॥
 वले सुखडी रा सूंस ते पिण भांग्यां ।
 रस मिथी थके एहवा सूंस उलांग्यां ॥ ५४ ॥

उषघादिक वासी राखवा लागों, ते पिण कपटाइ करने ताहि ।
 घणी रो ओषघ घणी नें पाछों न सूप्यो, आप रें काजे सूप्यो अनेरा नें जाय ॥ ५५ ॥
 इणविघ नित रो नित आणनें मेले, घणी नें पाछो न सूपे जाइ ।
 घणा मास दिवस तांइ सेव्यों निरंतर, वले तिण माहि दोष न सरखे छें ताहि ॥ ५६ ॥
 इसरा मोटा मोटा दोप जाणेनें सेवे, तिण भिष्टी री भोला करसी परतीत ।
 तिणनें साधु सरधी तीखूतो कर वांदे, ते पिण चिहूं गतिमें होसी घणां फजीत ॥ ५७ ॥
 सुध साधाने मूर्ख ढोला परूपे, पोते भारी भारी दोष सेवन लागों ।
 वले कुडा कुडा आल देतों नही सकें, ते तो विरत विहूणो होय गयो नागो ॥ ५८ ॥
 तिण भागल नें ओलखावण काजे, जोड कीची नेणवा सहर मझार ।
 संवत अठारे वरस अडताले, महाविदि अमावस ने सोमवार ॥ ५९ ॥

ढलल : ३०

दुहा

सत्रुंजो पर्वत कह्यो, तीर्थ न कह्यो जिणराय ।
जो संका पडें इण वात री; तो जोवो सूतर रे मांय ॥ १ ॥
तिहां एकंत जायगां जाण ने, घणा साधां कीयां संथार ।
तिहां केवल ग्यान उपजाय ने, पोहता मुक्ति मभार ॥ २ ॥
केड अग्यांनी इम कहें, सत्रुंजो पर्वत बंदनीक ।
तिहां कांकरे कांकरे सिध हुवा, तिण सूं थो तीरथ ठीक ॥ ३ ॥
तिण सूं तीरथ करां जातरा, जावां दूर थकी चलाय ।
वांदां पूजां सत्रुंजो भाव सूं, तो पातक दूर पुलाय ॥ ४ ॥
इण विष विकलाई करें, जेंनीं नाम धराय ।
भूला अग्यांनी भर्म में, जिण धर्म री खवर न काय ॥ ५ ॥
सत्रुंजा पर्वत मभै, साधु सीधा अनेक तिण ठाम ।
बंदनीक तो सिध साध छें, पर्वत बांदे अग्यांनी तांम ॥ ६ ॥
साधु सीधां जायगां बंदनीक हुवें, तो कुण कुण जायगां बंदनीक ।
ते चित्त लगाय ने सांभलो, ज्यूं पडें पाखंड री ठीक ॥ ७ ॥

ढलल

[रे भविष्य सेवो रे साध सथासा]

जो थें सत्रुंजा पर्वत नें बांदो, तो बांदणा द्वीप अढाई ।
वले बांदणा थानें समुद्र दोनूई, साधु सीधा एती ठोड मांहि रे ।
भविष्य जोवो रे हिरदे विचारी, थें कांय करो आतम भारी रे ।
कुमत्यां हिंसा नही सुखकारी रे * ॥ १ ॥
लाख पैतालीस योजन मांहि, साधु सीधा छे सगली ठामो ।
सत्रुंजा ज्यूं सगली जायगां नें, बांदे पूजै करणा गुण ग्रामो रे ॥ भ० २ ॥
थारे लेखे सगली जायगां बंदनीक, हिं व पग मेलसो किण जागां ।
जो थें बंदनीक जायगां ऊपर पग मेलो, तो अकारज करवा कांय लगा रे ॥ भ० ३ ॥
बंदनीक जायगां ऊपर पग मेले, वले करे कारज अनेक ।
मल मातरो तिण ऊपर न्हांखै, वूडो छो विना विवेक रे ॥ भ० ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सत्रुंजा नें बादे हाथ जोड़ी नें,
 वले मल मात्रो तिण ऊपर न्हांखै,
 ज्यांनें बादे ज्यांरा इज सिर ऊपर,
 इसडों अंधारो छे घट जेहने,
 थें सत्रुंजा रे सिर पग मेलो,
 आप थापी नें आप उत्थापो,
 साधां रा तो गुण बंदनीक,
 तो जायगो बंदनीक किस विघ होसी,
 साधु सीधां सूं जायगां बंदनीय ह्वै,
 इण लेखे तो मनुष्य क्षेत्र में,
 सगली जायगां मांहे अकारज हुवा,
 अबंदनीक जायगां थारे किसी थापीजे,
 तो पांच तीर्थ जितरी जायगां में,
 जो जायगां बिगड़े अकारज कियां तो,
 सत्रुंजो ^१ गिरनार ^२ अष्टापद ^३,
 ए पांच तीर्थ नें थेटरा कहे छें,
 ए आपरे छादे तीरथ थाप्या,
 वले नाम लेवे सूत्रां रो चोडे,
 शिव मारग ने मुसलमानां मे,
 त्यांरा पुराण कुराण मांहे कहुो तिणसूं,
 त्यांरी देखादेख तीरथ थापे,
 ते जिनेश्वर देव तो नही थाप्यो,
 हरकेशी जी ने ब्राह्मणा पूछ्यो,
 कुण तीर्थ कीधां थकां म्हांरा,
 जब यां जिन धर्म रूपियो द्रह बतायो,
 इण स्नान कियां जीव निर्मल होसी,
 तीर्थ करो तुम्हे शील रूपियो,
 शीतलीभूत हुवे मुगत मे जाये,
 शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाप्यो,
 ओर तीर्थ सर्व लोकिक रा जाणो,
 शील रूपियो तीर्थ थापेने,
 यांरा कुल रा तीर्थ सर्व छडाय नें,
 ६७

तिण ऊपर चढे जोड़ी सूधा।
 ए तो पूरा अज्ञानी ऊंवा रे ॥ भ० ५ ॥
 पग देता न हुवे पाछा।
 डाहा किम जाणे साचा रे ॥ भ० ६ ॥
 तिणनें तीर्थ थापे बांदो पूजो।
 तो डाहो कुण माने दूजो रे ॥ भ० ७ ॥
 त्यांरी काया पिण नही बंदनीक।
 थानें आ पिण नहीं छै ठीक रे ॥ भ० ८ ॥
 अकारज कियां सूं नही बंदनीक।
 कोइ जायगां नहीं बंदनीकरे ॥ भ० ९ ॥
 साधु पिण सीधा सर्व ठाम।
 थें किसी जायगां बांदो शीश नाम रे ॥ भ० १० ॥
 आगे हुवा अकारज अनेक।
 हिवे तीर्थ न बांदणो एक रे ॥ भ० ११ ॥
 समेत ^४ शिखर आवु ^५ बांदे।
 वले अनेक थाप्या आप छादे रे ॥ भ० १२ ॥
 कर कर कूडी टेको।
 पिण सूत्र में नही एको रे ॥ भ० १३ ॥
 आपणा कुल साहमो देखे।
 त्यां तीर्थ थाप्या इण लेखे रे ॥ भ० १४ ॥
 आप छादे झाल रह्या टेको।
 शंका हुवे तो सूतर मांही देखो रे ॥ भ० १५ ॥
 स्नान करवा नें द्रह कुण थायो।
 जन्म मरण मिट जायो रे ॥ भ० १६ ॥
 मली लेख्या रूप पाणी जाणो।
 तिण सूं पामे पद निर्वाणो ॥ भ० १७ ॥
 तिण सूं जीव हुवै निकलंको।
 तिण मे म राखो शंको रे ॥ भ० १८ ॥
 तिण माहे नहीं छे कूडो रे।
 तिणसूं कर्म न हुवे पूरो रे ॥ भ० १९ ॥
 यांनें आणिया मारग ठायो।
 सत्रुंजादिक नही वतायो रे ॥ भ० २० ॥

जो सत्रुंजादिक तीर्थ कियां सूं,
तो ओहिज तीर्थ त्यानें पिण कहिता,
शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाष्यो,
थें तीर्थ पर्वत पहाड़ थाप नें,
वले थावरचा अणगार नें पूछ्यो,
जात्रा तुम्हारे छे के नहीं छे,
जब सुखदेव कहे थारे जात्रा किसी छे,
जब सुखदेव संन्यासी नें कहे थावरचा,
ज्ञान दर्शन चरित तप नें संजम ते,
यांरा जतन करां ते जात्रां छे म्हारे,
यां पिण ज्ञानादिक गुण री जात्रा कही छे,
सत्रुंजादिक री जात्रा नहीं दाखी,
ठग ठग सिद्धान्त में जात्रा कही जिहां,
आ जात्रा उत्थापे पर्वत पहाड़ थापे,
भगवते सूत्र मांहि निरवद्य,
ते तीर्थ जात्रा थां सूं करणी नावें,
साधु साधवी श्रावक नें श्राविका,
थें पांचमों तीर्थ सत्रुंजादिक थापे,
ए च्याहूं तीर्थ रा गुण तेहिज तीर्थ छे,
तो थें सत्रुंजादिक अनेक कहो छे,
थें सावद्य तीर्थ जात्रा थापेनें,
इसडो अकारज करो आप छांदै,
थें जीव मारेनें धर्म कहो छो,
थें मोह मतवाला गहला ज्यूं बोलो,
जीव हण्यो मांहे धर्म परूपें,
ते साधु तणा वचन किम सरखे,
थानें हणे छेदे भेदे जीवां मारे,
थें ओर जीव मारे धर्म जांगो,
थानें हणे त्यानें पाप कहे ते,
थें धर्म कहो पेल नें हणियां,
थें जीव हणेनें वले धर्म सरधो,
आ प्रतष चोडें खोटी सरधा,

कटता देखता कर्मो ।
त्यां कीधां बतावत धर्मो रे ॥ भ० २१ ॥
उत्तराध्येन बारमों जेवो ।
नर भव नें कांय खोवो रे ॥ भ० २२ ॥
सुखदेव संन्यासी आयो ।
सु यात्रा म्हारे छे सुखदायो रे ॥ भ० २३ ॥
किसी जात्रा करे काटो कर्मो ।
तूं सांभल म्हारी जात्रा धर्मो रे ॥ भ० २४ ॥
इत्यादिक सारा गुण निरदोखो ।
तिण सूं पामें अधिचल मोखो रे ॥ भ० २५ ॥
कांइ बाकी न राखी विशेखो ।
गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे ॥ भ० २६ ॥
ज्ञानादिक गुण बताया ।
इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २७ ॥
तीर्थ जात्रा बताई ।
तिण सूं मांडी थें विकलाई रे ॥ भ० २८ ॥
ए च्याहूं तीर्थ जिनजी बताया ।
इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २९ ॥
यांरी काया पिण तीरथ नांहीं ।
ते किम तीरथ मांही रे ॥ भ० ३० ॥
छ काय जीवां नें मरावो ।
तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे ॥ भ० ३१ ॥
ते भगवंत रा नहीं बेंणो ।
थांरा फूटा अभितर नेंणो रे ॥ ३२ ॥
त्यांरो मत जाबक खोटी ।
त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे ॥ ३३ ॥
तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मो ।
ओ थानें किम होसी धर्मो रे ॥ ३४ ॥
आ बात नहीं छें भूठी ।
तिण सूं अभितर री आंख फूटी रे ॥ ३५ ॥
आ मति किण दीधी माठी ।
तिणनें भाल रहा छो काठी रे ॥ ३६ ॥

रांक जीवां ने माख्यां घर्म कहता, वले सिहू तणी परे गाजो ।
भगवंत रा केडायत वाजो, ते पिण नावे थांनें लाजो रे ॥ ३७ ॥



ढलल : ३१

दुहल

केई जेनी नलम धरलय नें, बोले भूठ अतीव ।
 सलघु धोवण वहरे तेह में, कहे बेइंद्री जीव ॥ १ ॥
 ते पोतें तो धोवण पीवें नहीं, पिये त्यानें निदे दिन रलत ।
 ते अन्हलखी थकल वकवो करे, त्यांरल घटमलंहे घोर मिथ्यलत ॥ २ ॥
 जलभ्यल रो स्वलद तज्यलं वलनलं, धोवण पियो कलम जलत ।
 तलणसूं धोवण उथलपें वहरणो, भूठी कर कर मुख सूं बलत ॥ ३ ॥
 केई कहे वलसी आहलर में, एकण रलत रे मलंलहल ।
 जीव बेइंद्री उपजे, तलणसूं सलघलं ने वहरणो नलंलहल ॥ ॡ ॥
 पोतें ठंडो आहलर भलवे नहीं, तलण सूं उंधी परूपें एम ।
 एहवल हलंसलवर्म्यल रल लक्षण वुरल, ते सुणज्यो धर प्रेम ॥ ५ ॥

ढलल

[धर्म आरलधले ए]

कसलई वलचे तो कुगुर वुरल ए, त्यलरे दयल नहीं लवललेश ।
 छ कलयल मलरण तणो ए, दे पलपी उपदेश ।
 पलखंडी गुर एहवल ए, उन्हों पलंणी धरलवे करे आमनल ए ॥ १ ॥
 पछें भर भर ल्यलवे ठलंम, आधलकर्मल भोगवे ए ।
 त्यांरल दुष्ट घणल परलणलंम, भवलक नलरणो करो ए ॥ पल० २ ॥
 करडो कलठो धोवण भलवे नहीं ए, उन्हो पलंणी लगे स्वलद ।
 तलण सूं अन्हलखी थकल ए, करे कूडी वलषवलद ॥ ३ ॥
 कहे धोवण में उपजे घणल ए, दोय षडी पलछें जीव ।
 ए उंधी परूपनें ए, दे छे कुगलतल नीं नींव ॥ ॡ ॥
 धोवण इकवीस जलतल नो ए, सलघु ने लेणो कह्यो जलण आप ।
 आचलरलंण सूतर में ए, ते कुगुरलं दीयो उथलप ॥ ५ ॥
 इकवीस जलतल सूं मललतो थको ए, घणी जलतल रो धोवण जलंण ।
 ते पलण लेणो कह्यो ए, तलणरी न करे मूढ पलछलंण ॥ ६ ॥
 अनेरो ससुन्न परलणम्यलं थकलं ए, वर्ण ने रस फलर जलय ।
 ते धोवण लेणो सलघु नें ए, ते वलकललं ने खवर न कलय ॥ ७ ॥

भ्यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

कहे घोवण में जीव उपजे ए, द्योय घडी मे आय ।
 ते पिण सूतर में नही ए, मूठा थका बोले मूसावाय ॥ ८ ॥
 ततकाल रो घोवण नहीं वेहरणों ए, घणी बोलों रो घोवण लेणो जाण ।
 दसवैकालक में कह्यो ए, तोही करे अग्यानी ताण ॥ ९ ॥
 कहे घोवण मे जीव उपजें ए, ते अन तणे परवेण ।
 एहवो मूठ बोलनें ए, कर रह्या कूड कलेश ॥ १० ॥
 जो घोवण में जीव उपजें ए, तो रोटी में ई उपजे आण ।
 द्योय घडी मभे ए, ए लेखो वरोवर जाण ॥ ११ ॥
 इमहिज ढाल खीच घाट में ए, इत्यादिक सगलो अन जाण ।
 सगलां में जीव उपजे ए, घोवण सूं याने ल्यो पिछाण ॥ १२ ॥
 कठे पांणी थोडो नें अन घणो ए, कठे अन थोडो पांणी अत्यन्त ।
 पांणी ने अन सर्व में ए, यां सगलां रो एक विरतंत ॥ १३ ॥
 दूध री जावणी रा घोवण मभे ए, यांमें उपजे वेइंद्री आय ।
 तो दूध मे पिण उपजें ए, पांणी मिले छे तिण मांय ॥ १४ ॥
 वले दही ने छाछ रा घोवण मभे ए, यांमें उपजें वेइंद्री आय ।
 तो उपजे दही छाछ में ए, पांणी मिले छें यारे ई मांय ॥ १५ ॥
 जिण जिण दरब रा घोवण मभे ए, जो उपजें वेइंद्री आय ।
 तो दरब में ई उपजें ए, पांणी मिले छे दरब रे मांय ॥ १६ ॥
 इतरा काल पछें जीव उपजे ए, ते सूतर में न कह्यो भगवंत ।
 उपजता जीव जाण ने ए, वदरे नही मतिवंत ॥ १७ ॥
 केई रात बासी रोटी मभे ए, कहे उपजे वेइंद्री आय ।
 ते साघु ने नही वेहरणी ए, एहवी कूडी करे वकवाय ॥ १८ ॥
 अन्ही रोटी ततकाल री ए, ते खातां लागे स्वाद ।
 ठंडी भावे नहीं ए, तिण सूं बोले मिरखावाद ॥ १९ ॥
 जीम तणा- लंपटी थका ए, ठंडी रोटी मांहे कहे जीव ।
 न कहे तो लेणी पडे ए, तिणसूं बोले मूठ सदीव ॥ २० ॥
 लाडू लापसी सीरा पकवान ने ए, बासी बहिरे मन चाय ।
 रोटी बहिरे नहीं ए, तिण मांहे जीव वताय ॥ २१ ॥
 जो बासी रोटी में जीव उपजे ए, तो लाडू आदि दे सगलां मे जाण ।
 अन्न पांणी सगलां मभे ए, इणरी न करे मूड पिछाण ॥ २२ ॥
 लाडू लापसी सीरो तो भावे घणो ए, ठंडी रोटी भावे नांहि ।
 तिण सूं अन्हाखी थका ए, जीव कहे ठंडी रोटी मांहि ॥ २३ ॥

पोहर रात गयां रोटी करे ए, तिणने नहीं वेंहरे परमात ।
 तिणमें जाणे जीवडा ए, तीन पोहर निकली कहे रात ॥ २४ ॥
 तो परमाते रोटी नीपजे ए, आथम्यां सूधी खाणी नांहि ।
 पोहर च्यार नीकल्या ए, इण लेखे बेइंद्री तिण मांहि ॥ २५ ॥
 उन्हाला री रात नान्ही हुवें ए, दिन मोटो छें साख्यात ।
 कदे फेर दोढो परे ए, लेखो कीयां विना क्यूं खात ॥ २६ ॥
 रात पड्यां जीव ऊपजें ए, दिन रा न उपजें तिण मांय ।
 तो किण ही सूतर मभे ए, साचा हुवे तो काढ बताय ॥ २७ ॥
 केई बासी वहिरे सीयाला मभे ए, शील सातम सूधी ताहि ।
 आगे वहिरे नहीं ए, ते पिण नहीं सूत्र रे मांहि ॥ २८ ॥
 बासी विणस्यो नें कूयो घणो ए, वले अत्यन्त कूह्यो असार ।
 एह्वो आहार भोगवे ए, तो पिण नाणे द्वेष लिंगार ।
 दसमां अग में कह्यो ए ॥ २९ ॥
 वले भगवंत वासी वहरियो ए, जोवो आचारांग मांय ।
 मूरख माने नही ए, चोडे भूला जाय ॥ ३० ॥
 जीभ्या रो लोलपी थको ए, जीव बासी मे कहे ताण ।
 उंधी सरधा थकी ए, बूडे छें मूढ अयाण ॥ ३१ ॥
 जो ठंडी रोटी मे जीव बेइंद्री ए, तो यांरा श्रावक जाण ने कांय खाय ।
 महाजन रा कुल मभे ए, इसडो कांय करे मूढ अन्याय ॥ ३२ ॥
 कदा पोते कुगुरां रा भरभाविया ए, पोते बासी अन्न नही खाय ।
 पिण घर रा मिनख नें ए, ठंडो आहार देवे खवाय ॥ ३३ ॥
 व्यालूं करतां रोटी बचे ए, त्यांनं घरती क्यूं न देवे न्हांख ।
 जाणे छे जीव ऊपना ए, पछे खातां ई नाणे शांक ॥ ३४ ॥
 नित नित खावे बेइंद्री ए, जीव काया करे दूर ।
 दांतां सूं मारेनं गिले ए, त्यांरो श्रावक पणो चकचूर ॥ ३५ ॥
 जीव खाये खवरावे जाण नें ए, त्यां गुर री न राखी परतीत ।
 महाजन रा कुल तणी ए, छोड दीधी त्यां रीत ॥ ३६ ॥
 बासी अन्न मांहे नीलणादिक ऊपजे ए, ते किण ही काल में जाण ।
 देखी नें साधु परिहरे ए, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३७ ॥
 रात्रि भोजन करे तेह में ए, पाप कहे ते न्याय ।
 पिण मुतलब आपरे ए, हुवे जिण सूं दे अधिको बताय ॥ ३८ ॥

भूठ बोले पाप अधिको कहे ए, आपरे उन्हो ल्यावर्ण काज ।
 जिभ्या रा लोलपी थका ए, भूठ बोलता नांणे लाज ॥ ३६ ॥
 पिण भोलां नें खबर पडे नही ए, तिणरो कुण काढे निकाल ।
 विकलां नें कुगुरां न्हांखियो ए, मोटो मिथ्यात रो जाल ॥ ४० ॥
 कोरडू धान ने छाछ भेलां हुवां ए, तो उपजे बेइंद्री तिण मांय ।
 पाखंडी इम कहे ए, ते एकंत मूसावाय ॥ ४१ ॥
 कहे खीच ने छाछ भेलो करी ए, कोई जीमे भाणा मांय ।
 तो उपजे बेइंद्री ए, एहवो दियो भूठ चलाय ॥ ४२ ॥
 जिण जिण धान में कोरडू मिले ए, तिण माहे घाले छास ।
 तो उपजे बेइंद्री ए, ते खाधां हुवे तिण रो विणास ॥ ४३ ॥
 छाछ नें कोरडू धान भेला हुवे ए, विदल दियो तिण रो नाम ।
 एहवा विदल मफे ए, उपजे बेइंद्री ताम ॥ ४४ ॥
 एहवी करे परूपणा ए, घाले भोलां रे शंक ।
 भिडकावे जिन धर्म थी ए, ओ चोडे कुगुरां रो डंक ॥ ४५ ॥
 आ सरधा दिगम्बर मत तणी ए, ते नही माने आगम ज्ञान ।
 केई विगड्या श्वेताम्बरी ए, त्यां पिण लीची त्यांरी मान ॥ ४६ ॥
 कोरडू धान ने छाछ भेला कियां ए, उपजे बेइंद्री आय ।
 ते नही छे सिद्धांत में ए, ओ कुगुरां दीयो गोलो चलाय ॥ ४७ ॥
 कोरडू धान छाछ भेला कियां ए, जो उपजे बेइंद्री तिण माय ।
 तो इण सरधा रा घणी ए, खाटादिक क्यूं खाय ॥ ४८ ॥
 वेजड तणी रोटी हुवे ए, ते नहीं खाणी छाछ सूं लगाय ।
 इणमें ई जीव ऊपजे ए, उणरी सरधा रो ओहिज न्याय ॥ ४९ ॥
 जाण जाण नें खावे जीव बेइंद्री ए, जो खावे छे बिना आगार ।
 ते भगल व्रतां तणा ए, त्यांरा श्रावकपणा ने चिक्कार ॥ ५० ॥
 केइ श्वेताम्बर नें दिगम्बरा ए, ते बोले भूठ निसंक ।
 ऊंवी करे परूपणा ए, थारी श्रद्धा माहे मोटो बंक ॥ ५१ ॥
 जो कदा न खावे जाणें ए, आ खोटी मत री छें रुड ।
 इसबी ऊंवी ताणें ए, आगे गया अनंता वूड ॥ ५२ ॥
 बारे कुल री साधां नें कही गोचरी ए, यां कुलां सूं मिलता वले जाण ।
 आचारांग मे कह्यो ए, ते उथापी मूढ अयाण ॥ ५३ ॥
 बारे कुल री कही छे गोचरी ए, ते तो चोथा आरा मांय ।
 हिवडां करणी नहीं ए, एहवो बोले मूषावाय ॥ ५४ ॥

पांचमे आरे साधु साधवी ए, जो चाले सूतर रे न्याय ।
 तो बारह कुल री करे ए, पिण विकला सूं किधी न जाय ॥ ५५ ॥
 ओर कुलां में आछो मिले नहीं ए, पोते भावे सरस आहार ।
 जिभ्यारा लंपटी थका ए, भूठ बोले जनम विगाड ॥ ५६ ॥
 ओर कुल री न करां म्हें गोचरी ए, ओर कुल में तो मद्य मांस खाय ।
 तिण सूं महाजन रा कुल मभे ए, गोचरी करां म्हें जाय ॥ ५७ ॥
 मांस खावे तिण घर वहिरे नही ए, मांस आहारी नें मूंड ले मांय ।
 भिन्न राखे नही ए, एकण पात्रे खाय ॥ ५८ ॥
 जिण कुल रो आहार वहिरे नहीं ए, तिण कुल रा नें माहें ले मूंड ।
 संभोग भेलो करे ए, देखो अग्यान्यां री रूड ॥ ५९ ॥
 आगे क्षत्री कुल रा राजवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यांरे घरे वहिरता ए, साधु साधवी जाय ॥ ६० ॥
 उग्रसेन - राय जीव भोला किया ए, ते गोरो देवा नें ताय ।
 यांरा कुल री रीत थी ए, त्यांरा कुल माहें बहरता जाय ॥ ६१ ॥
 त्यांरा कुल रा हुंता साधु साधवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यांसूं भेला रह्या ए, त्यांरा कुलां में बहरता जाय ॥ ६२ ॥
 ऊंच नीच मध्यम कुल री गोचरी ए, साधु नें कही जिनराय ।
 बारे कुल माहें आविया ए, जोवो सूतर रे मांय ॥ ६३ ॥
 ऊंच कुल क्षत्री राजा तणो ए, मध्यम बाणिया ब्राह्मण जाण ।
 नीच कुल पिण चोखो कह्यो ए, गूजरादिक मिलता पिछाण ॥ ६४ ॥
 बारह कुल री गोचरी निषेधसी ए, तिणरे बोहला पाप ।
 चोर तीथंकर तणो ए, कह्यो जिनेश्वर आप ॥ ६५ ॥
 अडू पतासा री परभावना ए, दरावें उपासरा माहि ।
 वखाण पूरो हूवां ए, ते किण ही सूतर में नाहि ॥ ६६ ॥
 डावारा लोलुपी थका ए, घणा भेला हुवे आय ।
 वेवण नें लाडुआ ए, लाजे नहीं मन मांय ॥ ६७ ॥
 आगे आनंदजी आदि श्रावक हुआ ए, त्यांरे कोडां रो घन घर मांय ।
 त्यां साधां रा धानक मभे ए, नहीं दीधी परभावना आय ॥ ६८ ॥
 वले भगवंत रा मांडला मभे ए, नर नारी मिलता अनेक ।
 जेण दिन पिण श्रावक घणा ए, लाडू बांट्या न दीसे एक ॥ ६९ ॥
 गडू प्रतासा बांटण तणो ए, ओ कुगुरां तणो उपदेश ।
 मुतलब आपरो ए, कोई बुधिवंत जाणे त्यांरी रस ॥ ७० ॥

जो लाडू पतासा बापरे	ए, ते कोई यानें देवे बहराय ।
ए मुतलब आपरो	ए, तिण सूं दीधी कुबुव चलाय ॥ ७१ ॥
वले प्रशंसा बघारवा	ए, मान बडाई काज ।
दरावे परभावना	ए, जाबक छोडे दीधी लाज ॥ ७२ ॥
ज्यारे लाडू पतासा पानें पडे	ए, ते तो करे गुण ग्राम ।
समझे नही धर्म में	ए, त्यांरे लाडू पतासा सूं काम ॥ ७३ ॥
धर्म कही कही भोला लोका नें	ए, लाडू पतासा बंटाय ।
घणा रे मन मानियो	ए, तिणरो कुण पूछे न्याय ॥ ७४ ॥
खाणो पीणो विषय इद्रियां तणो	ए, तिण सूं कर्म बंधाय ।
जिनेश्वर इम कह्यो	ए, जोवो सिधांत रे मांय ॥ ७५ ॥



रत्न : ३३

आचार री चौपई

ढाल : १

ढुहा

पहिलां अरिहंत नें नर्म, ज्युं सीमे आतम काम ।
 पिण वले विशे वीर नें, ए सासण नायक साम ॥ १ ॥
 कार्य साभी आपणा, ते पोहता निरवाण ।
 सिद्धां नें बंदणा कळं, त्यां मेढ्यो आवण जाण ॥ २ ॥
 आचार्य सहं सारिषा, गुण रत्ना री खाण ।
 ज्वभाय नेः सर्व साध जी, ए पाचूंइ पद वखाण ॥ ३ ॥
 बांदीजे नित एहने, नीचो सीस नमाय ।
 गुण ओलख बंदणा करे, तो भव भव नां दुख जाय ॥ ४ ॥
 सुगुरु कुगुरु दोनूं तणी, गुण विन खबर न काय ।
 पहिलां कुगुरु ने ओलखो, सुण सूतर रो न्याय ॥ ५ ॥
 सूतर साख दीया विना, लोक न माने बात ।
 सांभल नें नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात ॥ ६ ॥
 कुगुरु चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय ।
 थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ७ ॥

ढाल

[आदर जीव विम्यागुय]

ओलखावण दोहरा भव जीवां, कुगुरु चरित अनंत जी ।
 कहितां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंत जी ।
 साधु म जाणो इण चलगत सूं ॥ १ ॥
 आवाकर्मी थानक मे रहे तो, ते पाडे चारित मे भेद जी ।
 नशीत नें दशमें उदेशे, च्यार महीना रो छेद जी ॥ २ ॥
 अठारे ठाणा कह्या जू जूआ, एक विराघे कोय जी ।
 बाल कह्यो श्री वीर जिनेसर, साधु म जाणो सोय जी ।
 कुगुरु पिछाणो इण चलगत सूं ॥ ३ ॥
 आहार सिज्या नें वस्त्र पातर, असुध लियां नही संत जी ।
 दसवेकालक छेठे अध्ययने, मिष्ट कह्यो भगवंत जी ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

अचित वस्तु ने मोल लरावे, तो सुमत गुप्त हुवे खड जी ।
 महाव्रत पांचूई भागा, चोमासी नों जी ॥ ५ ॥
 एतो भाव नसीत में चाल्या, उगणीस में उदेश जी ।
 सुध साधु बिन कुण सुणावे, सूत्र नी उंडी रेस जी ॥ ६ ॥
 पुस्तक पातर उपाश्रादिक, लिवरावे ले ले नाम जी ।
 आछा भूंडा कहि मोल बतावे, ते करे ग्रहस्थ नों काम जी ॥ ७ ॥
 गराग नें तो कइयो कहिजे, कुगुरु विचे दलाल जी ।
 बेचगवालो कह्यो वाणियो, तीनां रो एक हवाल जी ॥ ८ ॥
 क्रय विक्रय माहिं वर्ते तो, महादोषण छे एह जी ।
 पेतीसमां उत्तराधेन में, साधु न कह्यो तेह जी ॥ ९ ॥
 नितको बहरे एकण घरको, च्यांरा मे एक आहार जी ।
 दसवेकालक तीजा में कह्यो, साधु नें अणाचार जी ॥ १० ॥
 जो ल्यावे नित धोवण पांणी, तिण लोप्यो सूतर नों न्याय जी ।
 बतलायां बोले नहीं सूधा, दोषण दीए छिपाय जी ॥ ११ ॥
 नहीं कल्पे ते वस्तु वेंहरे, तिणमें मोटी खोड जी ।
 आचारांग पेंहले श्रुतस्कंधे, कह दीयो भगवंत चोर जी ॥ १२ ॥
 पेंहलों व्रत तो पूरो पडियो, जब आडा जडे किंवाड जी ।
 कूंटो आगल हुडो अटकावे, तो निश्चें नहीं अणगार जी ॥ १३ ॥
 पोते हाथे जडे उघाडे, ते करे जीवां रा जेन जी ।
 गृहस्थ उघाडी आहार वेंहरावे, तब करे अणहंता फेन जी ॥ १४ ॥
 साधवीयां नें जडवो चाल्यो, तिणरी म करों तांण जी ।
 यां लारें जो साधु जडे तो, ए भागल रा अहनाण जी ॥ १५ ॥
 मन करनें जो बांछे जडवों, तिण नही जाणी पर पीर जी ।
 पेंतीसमा उत्तराधेन में, बरज गया महावीर जी ॥ १६ ॥
 पर निदा में राता माता, चित्त में नही संतोष जी ।
 वीर कह्यो दसमां अंग में, तिण वचन में तेरे दोष जी ॥ १७ ॥
 दिष्या ले तो मो आगे लीजे, ओर कनें दे पाल जी ।
 कुगुरु एहवो सूंस करावे, ए चोडें उंधी चाल जी ॥ १८ ॥
 ए बंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सूं भेलप थाय जी ।
 नसीत रे चोथे उदेशे, डंड कह्यो जिणराय जी ॥ १९ ॥
 जीमणधोर में वेहरण जाए, आ साधां री नहीं रीत जी ।
 वरज्यो आचारांग वृहतकल्प में, उत्तराधेन नसीत जी ॥ २० ॥

आलस नही आरा में जातां, वले बेठी पांत वसेष जी ।
 सरस आहार ल्यावे भर पातर, त्यां लज्यां छोडी ले भेष जी ॥ २१ ॥
 चेला करण री चल्पात उंची, चाला बौहत चलाय जी ।
 साथे लीयां फिरे गृहस्थ नें, वले रोकड दाम दराय जी ॥ २२ ॥
 ववेक विकल नें सांग पहराए, मेलो करे आहार जी ।
 सामग्री में जाय बंदावे, फिर फिर करे खुवार जी ॥ २३ ॥
 अजोग ने दिप्या दीधी ते, भगवंत री आग्या बार जी ।
 नसीत रो डंड मूल न मान्यो, ते वितल हुवा वेकार जी ॥ २४ ॥
 विण पडलेह्या पुस्तक राखे, वले जमें जीवां रा जाल जी ।
 पडे कुंधुआ उपजे माकण, जिण बांधी भांगी पाल जी ॥ २५ ॥
 जोवे बरस छ मास निकलीयां, तो पेंहलां व्रत नो खंड जी ।
 नित पडिलेहण मेली तिणने, एक मास नों डंड जी ॥ २६ ॥
 गृहस्थ नें साथे कहे सदिसो, तो भेलो हुओ संभोग जी ।
 तिणनें साधु किम सरधी जे, लागो जोग नें रोग जी ॥ २७ ॥
 समाचार विवरा सुध कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी ।
 कागद लिखावे करे आमनां, परहथ दीए चलाय जी ॥ २८ ॥
 आवण जावण वेसण उठण री, वले जायगां देवे बताय जी ।
 इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो दोनूं बराबर थाय जी ॥ २९ ॥
 गृहस्थ नें दे लोट पातरा, पूठा परत विशेष जी ।
 रजोहरण पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुआ ले भेष जी ॥ ३० ॥
 पूछे तो कहे परठ दीया में, कूड कपट मन मांहि जी ।
 काम पडे तो जाय उरा ले, न मिटी अंतर चाहि जी ॥ ३१ ॥
 कहे परठ्यां गृहस्थ ने देइ, बोले वले अन्याय जी ।
 कह्यो अचारांग उत्तराधेन में, साधु परठे एकंत जाय जी ॥ ३२ ॥
 करे गृही सूं बदलो सदलो, पिंडत नाम धराय जी ।
 पूरी पडी सगला वरतां री, ते भेष ले भूला जाय जी ॥ ३३ ॥
 थोडो सो उपघ गृहस्थ ने दीघां, वरत रहे नही एक जी ।
 चोमासी डंड नसीत मे गूंथ्यो, तिण छोडी जिण धर्म टेक जी ॥ ३४ ॥
 विण अंकुस जिम हाथी चाले, थोडो विगर लगाम जी ।
 एहवी चाल कुगुरु री जाणो, कहिवा नें साधु नाम जी ॥ ३५ ॥
 अणुकंपा नही छही काय री, गुण विण कहें में साध जी ।
 ए चरचा अणजोग दुवार में, विरला परमारथ लाव जी ॥ ३६ ॥

धृष्ट पुष्ट नें मांस बधारे, वले करे विगेरो पूर जी ।
 माठा परिणामा नाख्यां निरखे, ते साधुपणा थी दूर जी ॥ ३७ ॥
 सरस आहार ले विण मरजादा, तो बघे देही री लोथ जी ।
 काचमणी प्रकाश करे जिम, कुगुरु माया थोथ जी ॥ ३८ ॥
 दबक दबक उतावला चाले, तस थावर माख्यां जाय जी ।
 इर्या समिति जोया विण भागी, ते किम साधु थाय जी ॥ ३९ ॥
 कह्यो आचारंग उत्तराधेन में, जो करे चलतां बात जी ।
 उंची तिरछी दिष्ट जोवे तो, छ काय री हुवे घात जी ॥ ४० ॥
 कपडा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी ।
 इधिको राखे दोयवड ओढे, वले बोले मुसावाय जी ॥ ४१ ॥
 उपगरण नें इधिका राखे, तिण मोटो कीयो अन्याय जी ।
 नसीत रें सोल में उद्देशे, चोमासी चारित जाय जी ॥ ४२ ॥
 मूरख नें गुर एहवा मिलिया, ले डूबसी लार जी ।
 साचो मार्ग साधु बतावे, तो लडवा नें छे तयार जी ॥ ४३ ॥
 एहवा गुर साचा कर मानें, ते अंध अग्यांनी बाल जी ।
 फोडा पडे उतकष्टा तिणमें, तो रुले अनंतो काल जी ॥ ४४ ॥
 हलुकर्मी जीव सुण सुण हरषे, करे भारीकर्मा घेष जी ।
 सूतर रो न्याय निदाकर मानें, ते डूबा वले विशेष जी ॥ ४५ ॥

ढाल : २

दुहा

समदिष्टी आरे पांच में, थोडी रिघ अपमान ।
मिथ्यदिष्टी जोडे हुसी, बहु रिघ बहु सनमान ॥ १ ॥
समण थोडा ने मुड घणा, पांचमें आरे चैन ।
भेष लेइ साघां तणो, करसी कूडा फेन ॥ २ ॥
साधु अल्प पूजावसी, ठांणा अंग में साख ।
असाधु महिमा अति घणी, श्री वीर गया छे भाख ॥ ३ ॥
कुगुर कुदेव कुधर्म मे, घणा लोक रजाबंध होय ।
औलख ने निरणों करे, ते तो विरलां जोय ॥ ४ ॥
साधु मारग छे सांकडो, भोला खबर न काय ।
जिम दीवे मरे पतंगियो, तिम पडे पगां में जाय ॥ ५ ॥
घणा साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका लार ।
उलटा पड जिण धर्म थी, परसी नरक मभार ॥ ६ ॥
महा नसीत में इम कह्यो, गुण विण घारे भेष ।
लाखां कोडा गमे सांवठा, नरकां पडता देख ॥ ७ ॥
लीघा वरत न पालसी, खोटी दिट्ट अयांग ।
तिणने कही छे नारकी, कोइ आप म लीजो तांण ॥ ८ ॥
आगम थी अंवला बहे, साधु नांम धराय ।
सुघ करणी वेगला, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा]

सीघा घर आपे साधु नें, बले ओर करावे आगे रे ।
एहवो उपाश्रो भोगवे, तिणने वज्र किरिया लागे रे ।
तिणनें साधु किम जाणीए* ॥ १ ॥
आचारंग दूजे कह्यो, महा दुष्ट दोषण छे जिणमें रे ।
वीर वचन संवला करो, तो साधुपणो नहीं तिणमे रे ॥ २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधु	अर्थ	करायो	उपाश्रो,	छायो लिप्यो ग्रहस्थ बाल रागी रे ।						
तिण	थानक	रहे	तेहनें,	महा सावद्य किरिया लगी रे ॥ ३ ॥						
त्यानें	भावे	तो	ग्रहस्थ कह्या,	दियो आचारंग साखी रे ।						
भेषधारी	कह्या	सिधंत	में,	भगवंत काण न राखी रे ॥ ४ ॥						
सिज्यातर	पिंडज	भोगवे,	वले कुब्द	केलवे कपटी रे ।						
धणी	छोड	आग्या	ले	अवरनी, सरस आहारादिकरा लंपटी रे ॥ ५ ॥						
सबलो	दोषण	लागे	तेहनें,	वले नसीत में डंड भारी रे ।						
अणाचारी	कह्या	दसवेकालिके,	तिण	भगवंत सीख न धारी रे ॥ ६ ॥						
अणुकंपा	आण	श्रावक	तणी,	दरब	दरावण आगा रे ।					
हूजे	करण	खंड्यो	वरत	पांचमों,	तीजे	करण	पांचूई	भागा	रे ॥ ७ ॥	
ग्रहस्थ	जिमावणरी	आमनां,	जो	करे	साधु	दलाली	रे ।			
चोमासी	डंड	नसीत	में,	व्रत	भागे	हूआ	खाली	रे ॥ ८ ॥		
करे	बांसादिकनो	बांधवो,	वले	किया	भीतां	रा	चेजा	रे ।		
लीपवो	छायवो	आद	दे,	ते	कहिजे	सपरिकम	सेजा	रे ॥ ९ ॥		
एहवी	वस्ती	भोगवे,	ते	साधु	नहीं	लवलेसे	रे ।			
मासीक	दंड	कह्यो	तेहनें,	नसीत	नें	पांचमे	उद्देशे	रे ॥ १० ॥		
बांधे	पडवो	परेच	कनातं	ने,	वले	चन्द्रवा	सिरकी	ताटा	रे ।	
साधु	अर्थ	किया	ते	भोगवे,	तो	ग्यानादिक	गुण	नाठा	रे ॥ ११ ॥	
थापीता	थानक	में	रहे,	तिण	दिया	महाव्रत	भांगो	रे ।		
भावे	साधुपणा	थी	वेगला,	त्यानें	गुण	विण	जाणो	सांगो	रे ॥ १२ ॥	
काच	चशमो	वज्यो	ते	राखनें,	जाणे	दोषण	छे	थोरो	रे ।	
पांचमों	वरत	पूरो	पड्यो,	वले	जिन	आग्या	नां	चोरो	रे ॥ १३ ॥	
ग्रहस्थ	आयो	देखी	मोटको,	हावभाव	सूं	हरषित	हुआ	रे ।		
करे	विछावण	री	आमनां,	ते	तो	साधु	मारग	थी	जूआ	रे ॥ १४ ॥
ग्रहस्थ	तेरण	आया	साधु	नें,	कपडादिक	बेहरण	ले	जावे	रे ।	
इण	विध	वहरे	तेहमें,	चारित	किणविध	पावे	रे ॥ १५ ॥			
साहमों	आण्यो	लेजाए	तेरियो,	ए	दोनूं	दोषण	छे	भारी	रे ।	
यानें	टाले	केडायत	वीर	नां,	सेव्यां	नहीं	साधु	आचारी	रे ॥ १६ ॥	
धोवणादिक	में	निलोतरी,	वले	जीव	सहित	कण	भीनां	रे ।		
ते	पिण	वहरे	संके	नहीं,	ते	परभव	सूं	नही	वीनां	रे ॥ १७ ॥
एहवो	अनपाणी	भोगवे,	त्यानें	साधु	किम	थापीजे	रे ।			
जो	सूतर	नें	साचा	करो,	तो	चोरां	री	पांत	घातीजे	रे ॥ १८ ॥

ग्रहस्य रे सभाय वोल थोकडा,
 लिख्यानें अनुमोदियां,
 पहिले करण लिखियां में पाप छे,
 पांच महाव्रत मूल्गा,
 उन्नरण भलावे ग्रहस्थनें,
 प्रवचन न्याय न मानियो,
 ग्रहस्य रा उपवि रा जावता,
 सेवन हुओ संसारियां,
 साता पूछे पूछावे ग्रहस्य नें,
 अणाचारी कह्या दसवेकालिके,
 श्रावक ने वले श्राविका,
 नाता पूछे विनो वियावच करे,
 अणाचार पूरा नहीं ओलख्या,
 ग्रहस्यनें सीखावे सेवणा,
 कारण परियां लेणो कहे साधुनें,
 दानार नें निरजरा घणी,
 एहवी ऊंची करे परूपणा,
 दगविचारी भाषा बोलता,
 करे भिष्ट आचार नी थापनां,
 द्विदंडा आचार छे एहवो,
 एक पोते तो पाले नहीं,
 दोय मूर्ख तिणनें कह्यो,
 पाट बाजोट आप्यां ग्रहस्थ नां,
 मरजादा लोपीनें भोगवे,
 त्यानें डंड कह्यो एक मास नो,
 ए न्याय मारग परगट कियां,

साधु लिखे तो दोषण लगे हे।
 दोष करण उपरला भले हे।
 तो लिखाया दोष उषाड हे।
 त्यां सगलां में परिया वचारा हे।
 ओ नहीं साधु आचारो हे।
 लियो नुगत सूं मारग न्योरो हे।
 कीवां वरत चकचूरो हे।
 ते साधुपणा थी दूरो हे।
 ते अविरत सेवण लया हे।
 वले पांचूई महाव्रत भाषा हे।
 करे मांहोमाहि करण हे।
 यामें धर्म परूपे करण हे।
 ते नवभांगा किण करण वले हे।
 लिया वरत करे संनो हे।
 करे असुव वदर करण हे।
 वले थोडो करण हे।
 घणा जीवां नें करण हे।
 भारीकर्मा जे करण हे।
 कहि कहि करण हे।
 घणा देव करण हे।
 वले पाले करण हे।
 पहलो करण हे।
 पाछा दे करण हे।
 तिण करण हे।
 नंशीत करण हे।
 म रीन करण हे।

ढाल : ३

दुहा

घणा असाधु जिन कहा, ते लोक में साधु कहाय ।
सांसो हुवे तो देखलो, दसवेकालक मांय ॥ १ ॥
भेष सगलां रो सारीखो, ते भोला खबर न काय ।
निवरो वीर बतावियो, दूजी गाथा मांय ॥ २ ॥
ग्यान दर्शन चारित तप, ए च्यारां में रक्त अपार ।
एहवे गुणे सहित छे, ते मोटा अणमार ॥ ३ ॥
इण विघ साधु नें ओलखे, ते तो विरला जाण ।
ए न्याय मारग जाण्यां विना, करे अग्यानी ताण ॥ ४ ॥
चोथे आरे अरिहंत थकां, इम हिज खांचा ताण ।
पाषंड में पडता घणा, कर्मा वस लोक अजाण ॥ ५ ॥
भगडा राड हुंता घणा, चोथा आरा मांय ।
पांचमां रो कहिवो किं, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ६ ॥

ढाल

[जोयजो रे कायर होय]

सावत्यो तो नगरी वीर पवारिया रे, गोशालो भगड्यो छे तिहां आय रे ।
लोक मूंडा सू वाणी इम वदे रे, कुण साचो कुण भूठो थाय रे ।
पाषंड वचसी आरे पांचमें रे* ॥ १ ॥
घणा लोकारे मन इम मानियो रे, गोशालो भापे ते सत वाय रे ।
वीर नहीं छे जिन चोवीसमो रे, अणहूंतो बोले मुसा वाय रे ॥ २ ॥
केएक उत्तम था ते इम कहे रे, गोशालो जिन नहीं करे अन्याय रे ।
सतवादी वीर जिनंद चोवीसमां रे, ए कदेय न बोले मुसावाय रे ॥ ३ ॥
कितरां एक रो सांसो मिटियो नहीं रे, म्हानें तो समभ पडे नहीं काय रे ।
जिण दिन पिण सगलाइ समज्या नहीं रे, भोल घणी थी लोकां मांय रे ॥ ४ ॥
श्रावक गोसाला रे सुणिया अति घणा रे, इग्यारे लाख इगसठ हजार रे ।
वीर रें एक लाख बले उपरे रे, गुणसठ सहस्र अधिक विचार रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जद पिण पाखडी था अति घणा रे, तो हिवडां पिण पाखडी नो जोर रे।
वीर जिनद मुगत गयां पछे रे, भरत मे हुआ अंधारो घोर रे ॥ ६ ॥
तिणमें धर्म रहसी जिनराजरो रे, थोडोसो आग्या नो चमत्कार रे।
भब्रको परे ने वले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहिं इकबीस हजार रे ॥ ७ ॥
अल्प पूजा होसी सुघ साध री रे, आगूंच वीर गया छे भाष रे।
असाधु री पूजा महिमा अति घणी रे, ठाणा अंग माहें तिणरी साख रे ॥ ८ ॥
ऊगे ऊगे ने वले ऊगियो रे, तो आथमियां विन किम उगाय रे।
इण न्याय भविण्य नही धर्म सासतो रे, हुय हुय भलपट ने बुझ जाय रे ॥ ९ ॥
लिंगरा लिंगरी वधसी अति घणा रे, करसी मांहो माहि भगडा राड रे।
जे कोइ काढे तिण में खूचणो रे, क्रोध कर लडवा ने छे तयार रे ॥ १० ॥
चेला चेली करण रा लोभिया रे, एकंत मत बाघण सूं काम रे।
विकलां ने मूंड मूंड भेला करे रे, दिराए ग्रहस्य ना रोकड दाम रे ॥ ११ ॥
पूजरी पदवी नाम घरावसी रे, मे छां सासण नायक साम रे।
पिण आचारे ढीला सुघ नहिं पालसी रे, नहिं कोइ आतम साधन काम रे ॥ १२ ॥
आचार्य नाम घरासी गुण विना रे, पेटभरा ज्यारो परवार रे।
ल्पटी तो हूसी इद्री पोषवा रे, कपट कर ल्यासी सरस आहार रे ॥ १३ ॥
तकसी तो देखी आरा टांमला रे, रिगसी ए जाणी जीमणवार रे।
पात जीमें जिहा जासी पावरा रे, आग्या लोपे हूसी बेकार रे ॥ १४ ॥



ढाल : ४

दुहा

दावानल लागो अधिक, वले वाजे वाय अथाय ।
अटवी मोटी इंधण घणा, ते किम आग बुजाय ॥ १ ॥
आगा सूं इंधण अलगा करे, वले रहे वाजंतो वाय ।
ऊपर जल सूं छांटियां, दावानल मिट जाय ॥ २ ॥
तिम भर जोवन व्रत आदरे, वले डीलमें पुष्टी काय ।
अति सरस आहार नित भोगवे, तो विषय बघंती जाय ॥ ३ ॥
अति सरस आहार न भोगवे, वले खीणी पाडे काय ।
बुभावे विषेरूप अगन नें, सुमतारस पाणी ल्याय ॥ ४ ॥
विषे वधे तिम आहार न भोगवे, घष्टी पुष्टी न करे काय ।
भांत भांत करे निषेधियो, सूत्र सिद्धांतां मांय ॥ ५ ॥
आ भोल पडी मोटी घणी, त्यां जिभ्या दीघी मुकलाय ।
खाणे पहरणे चित दियो, इण सबले सरणे आय ॥ ६ ॥
भेष लेइ भगवान रो, खाधा लोकां रा माल ।
तप जप संजम बाहिरो, कूंदो वण रह्यो लाल ॥ ७ ॥
छदमस्थ एलाणे ओलखे, ए भेष ले भूला जांय ।
तिणरी खबर इण विघ परे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[जीव दया व्रत पालो]

रसगृद्धी ते हिलिया गटके रे, सरस आहार नें कारण भटके ।
भेषलेइ आत्म नहि हटके रे, त्यांरे चिहूं दिस फादा लटके ॥ १ ॥
रगार्चंगा ने डीलां सनूरा रे, लोहो मांस बध्या नहि खडा ।
लिया व्रत न पाले पूरा रे, ते सिव रमणी सूं दूरा ॥ २ ॥
चाप चाप नें कीधां आहारो रे, डील फाटे नें बघे विकारो ।
त्यारी देही बघे ऊभी ने आडी रें, साथल पीड्यां पडे जाडी ॥ ३ ॥
घृत दूध दही मीठो भावे रे, कारण विण मांगी नें ल्यावे ।
लूंदा ल्यावे तपसा जणायो रे, ए तो पेट भरण रो उपायो रे ॥ ४ ॥

कोरो घृत पीए बीघारी रे, आ जुगतो नहि ब्रह्मचारी ।
 मरजादा विन करे आहारो रे, तिण लोपी भगवंत कारो ॥ ५ ॥
 ताक ताक जाए घर ताजे रे, साधु भेष लियो नहि लाजे ।
 पर घर जाय पडगो माडे रे, नहि दियां भांडां ज्यूं भांडे ॥ ६ ॥
 दाता रा करे गुण ग्रामो रे, पारे नहि दे तिणरी मामो ।
 करे ग्रहस्थ आगे बातां रे, नहिं बहरावे त्यांरी करे तांतां ॥ ७ ॥
 श्रावक श्राविका ऊपर ममता रे, सिष्या री नहि सुमता ।
 मूडे वले काल्या दुकाल्या रे, त्यांसूं व्रत न जाए पाल्या ॥ ८ ॥
 बांध्यां थानक पकस्था ठिकाणा रे, ग्रहस्थ सूं मोह बंधाणा ।
 सुखसीलिया सात्ताकारी रे, डूबा साधु नों भेषधारी ॥ ९ ॥
 ए लखण कुगुर रा जाणो रे, उत्तम नर हिरदे पिछाणो ।
 देव गुर में खोटा जिण खावा रे, तिणनें छें संसार जादा ॥ १० ॥
 एहवा ने गुरकर पूजे रे, समकत विन संवलो न सूझे ।
 तिणरे छे भारी कर्मो रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो ॥ ११ ॥
 कुगुरां री भाली पखपातो रे, त्याने न्याय री न गर्में बातो ।
 बुध उलटी ने मूढ मिथ्याती रे, साधु वचन सुण्यां वले छाती ॥ १२ ॥
 घनावे सेठ बेटी ने खायो रे, कुसले राजग्रही आयो ।
 इम करसी साधु आहारो रे, तो पोहचे मुगत मभारो रे ॥ १३ ॥



ढाल : ५

ढुहा

खोटो नांणो नें सांतरों, एकण नोली मांय ।
 ते भोला रे हाथे दियां, त्यांसूं जूथा किया किम जाय ॥ १ ॥
 ज्यूं साधु असाधु लोक में, दोयां रो एक आकार ।
 भोला मिन्न नहिं लेखवे, ते जाणे नहिं आचार ॥ २ ॥
 जिणरी बुध छे निरमली, ते देखे दोयां री चाल ।
 कुगुरां नें काने करे, साधु वांदि पग भाल ॥ ३ ॥
 जे भारीकर्मा जीवडा, ते रह्या कूडी पख भाल ।
 पिण छिपायी छिपे नहीं, ते सुणजो कुगुर नी चाल ॥ ४ ॥

ढाल

[शदलरी—ए देखी]

ग्रहस्थ	लीपे	साधु	कारणे,	बले	ऊपर	छावे	छान ।
तिणरी	करे	अनुमोदना,	ए	कपट	बुगल	ज्यूं	ध्यान ।
					ते	किम	तिरसी संसार नें* ॥ १ ॥
थानक	भाडे	लियो	भोगवे,	बले	काचो	पाणी	तिण ठाम ।
गछवासी	भेला	रहे,	ए	विटलां	रो	छे	काम ॥ २ ॥
मिणष	आंतरिया	ऊमरे,	घन	उदके	थानक	काज ।	
ते	मोल	लराय	मांहें	बसे,	त्यां	छोडी	लोकां री लाज ॥ ३ ॥
बले	जागां	बांधण	कारणे,	लेवे	अउतरो	माल ।	
तिण	जागां	मांहें	रह्यां,	ओ	खांपणवालो	ख्याल ॥ ४ ॥	
लिंगडा	लिंगड्यां	कारणे,	जागां	बांधी	मठ	जेम ।	
मठवासी	ज्यूं	मांहें	बसे,	त्यांनें	साधु	कहीजे	केम ॥ ५ ॥
एहवा	थानक	भोगव्यां,	बुद्धि	अकल	पत	जाय ।	
भेष	भांड्यो	भगवान	रो,	साधु	नाम	धराय ॥ ६ ॥	
ए	चाला	तो	पोते	चालवे,	काम	पड्यां	हुवे दूर ॥
थानक	भायां	निमते	कहे,	कपटी	बोले	कूर ॥ ७ ॥	

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गृहस्थ वेलादिक तप कियां, तिण पासे घाल्यो डंड ।
 भोलां नें पाखां भर्म मे, ते हणे जीवां रा भंड ॥ ८ ॥
 लाहू करावे करे आमनां, सामग्री में दराय ।
 ते रस गृद्धी चेंवे पख्या, आणी आणी खाय ॥ ९ ॥
 केइ भेषघारी भूला कहे, पोखो घर्म रे नाम ।
 श्रावक नें श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ १० ॥
 पछे गृहस्थ साधु श्रावकां तणो, भेलो बांध तुमार ।
 मोल ल्यावे त्यारे कारणे, के घरे नीपावे आहार ॥ ११ ॥
 तिण घर जाए तेरिया, ज्यू डोरी ताण्यो स्वान ।
 ताजे आहार तूटा पडे, ओ पेट भरण रो तान ॥ १२ ॥
 ए जीमणरो नाम दया दियो, पिण प्रतख दीसे गोठ ।
 काबू करवा आपणो, चोडे चलायो खोट ॥ १३ ॥
 चले भेष पहरी लोलपी थका, हेरे परघर हाट ।
 इंध्यां मेली मोकली, त्यारो परभव में कुण घाट ॥ १४ ॥
 गुरु चेला एक समुदाय मे, ते सगला एकण पांत ।
 आहार पाणी मेला करे, तिणमै क्यूं जाणे भांत ॥ १५ ॥
 केइ चेला नें जाण कुसीलिया, त्यांसूं तो तोडे संभोग ।
 गुरु सूं न तोरे संकता, एतो बात अजोग ॥ १६ ॥
 श्री वीर जितेसर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जाण ।
 तिण गच्छूं सूं भेलप करे, ए वूडण रा अहलाण ॥ १७ ॥
 कुसीलियां भागल भेला रहे, तिणरो न काडे निकाल ।
 कूड कपट करता फिरे, चले साषां सिर दे आल ॥ १८ ॥
 परसंसा करे आप आपणी, दोषण देवे ढांक ।
 भागल भागल मिल गया, किणरी न राखे सांक ॥ १९ ॥
 जो एकण नें अलगो करे, तो करे घणा रो उघाड ।
 पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो नाणो असार ॥ २० ॥
 पांच सुमत तीन गुप्त में, दीसे छिदर अनेक ।
 पांच महाव्रत माहिलो, आखो न दीसे एक ॥ २१ ॥
 ते गुरु करनें पूजावता, आप हूवे ओरा ने डबोय ।
 इम सांमल नर नारियां, छोडो कुगुरु ने जोय ॥ २२ ॥
 भट्टी काडे कलाल तणे घरे, उनी पाणी हुवे तयार ।
 लिंगाडा लिंगाडी शहर में, बांचे मकोडा ज्यं हार ॥ २३ ॥

कदा आगे पाणी नहिं उतख्यो, तो तिहांइज ले विसराम ।
 भरभर ल्यावे लोट पातरा, ठाली कर दे ठाम ॥ २४ ॥
 ते पछे फेर भरावे ठामडा, काचो पाणी आण ।
 ते भारी दोष पिछात सू, ए बूडण रा अहलाण ॥ २५ ॥
 त्यांरे परंपरा में निषेधियो, नहिं वहरणो घरे कलाल ।
 तिण घर दूका वहरवा, मांगी परंपरा पाल ॥ २६ ॥
 त्यांरे लेखेइ तिण कुल वहरतां, आवे चोमासी नो डंड ।
 आज्ञा लोप बडा तणी, हुंथा जगत में मंड ॥ २७ ॥
 धुर सू तो कुल जुगतो नही, बीजो गृहस्थ ले जावे साथ ।
 नित नित वहरे ते तीसरो, चोथो दोष पिछात ॥ २८ ॥
 वणीमग संकादिक दोषण घणा, पिण चावा दोषण च्यार ।
 ते लिंगडा लिंगडी टाले नहीं, ते विटल हुआ बेकार ॥ २९ ॥
 त्यांमें कितरा एक वहरे नहीं, केइ वहरे तिण घर जाय ।
 त्यांमें कुण साधु ने कुण चोरटो, ते पिण खबर न काय ॥ ३० ॥
 जो अस्त्री समझे साधां कनें, ती धणी नें देरे लगाय ।
 भरतार समझ्या नार नें, कुगुरु कुब्द सिखाय ॥ ३१ ॥
 सासू बहू मा वेटीयां, वले सगा संबंधीयां माहिं ।
 त्यांनें रागनें दोष सिखावता, भेद घलावे ताहिं ॥ ३२ ॥
 केइ आवे सुध साधां कनें, तो मतीयां नें कहे आम ।
 थें वजीं राखो घर रा मनुष्य नें, जावा मत दो ताम ॥ ३३ ॥
 कहे दरसण करवा दो मती, वले सुणवा मत दो वाण ।
 डराए नें ल्यावो म्हां कनें, ए कुगुर चरित पिछांण ॥ ३४ ॥
 त्यांरी अकल लागे केई बापडा, त्यांमें बुद्धि नहीं लवलेस ।
 दाधे घर रा माणसां, कर रह्या कूड कलेस ॥ ३५ ॥
 केई अपचो कर भूखां मरे, आ खोटा मतरी रेस ।
 तिणरो दित छे बांकडो, त्यांरे कुगुर तणो परवेस ॥ ३६ ॥
 हलुकरमी डराया डरे नहीं, त्यांने रुचियो जिणवर धर्म ।
 चल जाए केयक बापडा, उदे हुआं असुभ कर्म ॥ ३७ ॥
 त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फिर्यां दुख थाय ।
 ताजा आहार पांणी कपडा तणी, जाणे रलें पडे अंतराय ॥ ३८ ॥
 पेट रे कारण पापीया, त्यांरा घर में घाले बेठ ।
 कलहो बधारे करे आमनां, ए तो खोटा कुगुर पेट ॥ ३९ ॥

तिण घर एक समझू हुवे, तो राखे तिणरी आंख ।
 सुघ असुघ लेवण तणी, आवे मन में सांक ॥ ४० ॥
 तिण कारण कुगुर कर रह्या, आमी सामी घमडोल ।
 तोही आंघा नें मूल सूझे नही, जिम तांबा उपर भोल ॥ ४१ ॥
 भाग प्रमाणे कुगुर मिल्या, ते कर्म तणो छे दोष ।
 इम सामल नर नारीयां, मत करो मांहो माहिं रोष ॥ ४२ ॥



ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगख्या घणा, पांचमां आरा मांय ।
 नांम घरावे साधु रो, पिण घेठां सरम न काय ॥ १ ॥
 खेत खाधो लोकां तणो, पहर नाहर की खाल ।
 ज्यूं भेष लीयो साधां तणो, पिण चाले गघा री चाल ॥ २ ॥
 सरधा में भूलो घणा, ते थापे हिंसा धर्म ।
 वले भिष्ट हुआ आचार थी, बोहला बांधे कर्म ॥ ३ ॥
 आभे फाटे थीगरी, कुण छ देवणहार ।
 ज्यूं गुर सहीत विगडीयो, त्यांरे चिहुं दिस परियाबधार ॥ ४ ॥
 चोरी जारी आद दे, नीपजें माठा कर्म ।
 तोही आंधा जाय पगां पडे, ते मूल न जांणे मर्म ॥ ५ ॥
 गुर गुरणी तणा चरित जांणियां, पिण छूटे नहीं पखपात ।
 तोही निरलज सुध साधां तणी, उठावे अणहूंती बात ॥ ६ ॥
 आल देवण आघा घणा, वले डरे नहीं तिल मात ।
 भूठ बोले मुख बांधनें, ते किम आवे हाथ ॥ ७ ॥
 ज्यांरे लाय लागी चिहुं दिसा, रहे न तिणरी सुध ।
 ज्यूं विणास काले इण भेष री, उपनीं विपरीत बुध ॥ ८ ॥
 कुगुर चरित अनंत छें, कहितां नावें पार ।
 हिंवे भव जीवां नें प्रति बोधवा, अल्प कहूं विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल

[समरू मन हर्षे तेह]

एक एक तणा दोषण ढाके, अकारज करता नहीं सांके ।
 त्यांनें कोइ नहीं हटकण वालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १ ॥
 त्यांरा विटल हुवा चेली चेलो, गुर माहें पिण आवे रेला ।
 लोपी मरजाद फोडी पालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २ ॥
 व्रत पचखाण में नहीं सेठां, ठाम ठाम थानक माडे वेठां ।
 श्री जिणवर सीख दीधी रालो, एहवा भेषधारी पांचमे कालो ॥ ३ ॥

साथे लीयां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालण जाबक थोथा ।
ते फस रह्या माया जालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४ ॥
करणी करतूत माहे पोला, बले अरड वरड मिरषा बोला ।
त्यारे भूठ तणो नही टालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ५ ॥
विकलां ने मूंड कीयां भेला, ते नाच रह्या कुबदी खेला ।
जाणें भरभोलियां तणी मालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ६ ॥
त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढ मती, पेलांरी बात करे अच्छती ।
परभव डर नाणें देता आलो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ७ ॥
नांम धरावे साध सती, पिण लषण न दीसे एक रती ।
मूंडे भूठ तणो वेह रह्यो नांलो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ८ ॥
केई पदवीधर बाजे मोटा, चलगत उंची लषणा खोटा ।
कण रहीत एकंत परालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ९ ॥
केइक लिगडा ने लिगडो, त्यांरी सुमत गुपत धूरसूं बिगडी ।
अंतर नही घाल्यो बिचालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १० ॥
एक टोला मे तायफा रे घणा, तायफा तायफा मे भागल पणा ।
कुण काढे त्यारो निकालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ११ ॥
उघाड मांहोमाहि केम करे, पाणी सगलां रो मांहि मरे ।
लिगडा लिगड्यां रो एक ढालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १२ ॥
भेष माहे करे चोरी जारी, त्यांने गृहस्थ बिचे कहिजे भारी ।
त्यांरे केरे लगा मूरख बालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १३ ॥
तिणरो करे रह्या गालागोलो, त्यांरो बिगड गयो जाबक टोलो ।
त्यां मे कुकर्म रो बधियो चालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १४ ॥
एहवा कर्म करे साधु बाजे, निरलजा मूल नही लाजे ।
निकाल काढ्यां उठे झालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १५ ॥
त्यांरो जथातथ्य उघाड करे, तो परिवार सहित तिणसूं रे लडे ।
भगडो झाले बाधे चालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १६ ॥
जब आफे लोकां मे उघाड पडे, किण एक भागल ने दूर करे ।
तिणने प्रायच्छित बिन ले माहें वालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १७ ॥
एतो कपट करे लोकिक राखी, इतरी न कियां जाय नाकी ।
आहार पाणी आडो आवे तालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १८ ॥
इम कर कर नें राखे शेखी, त्यांने केवलज्ञानी रह्या देखी ।
एतो पेटतणी करे प्रतिपालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १९ ॥

जो आप तथा किन्तव देखे, तो उंचो गुरु बोले किण लेखे ।
 गमके नहि ग्यान रहित बाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २० ॥
 त्यामिं अठारह पाप तथा खाता, तो पिण गुरुख बोले ताता ।
 अग्यानी आपो नहि संभाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २१ ॥
 लष्टपुष्टनें देखे गान्धे, चर्गी, त्यामिं मिठे २ माठी चौमंगी ।
 तोही बोले आल नें पंपाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २२ ॥
 मोचीं हूँ धोत्री नें पींजारे, टगा गुं राज कियो ज्यार ।
 ए द्विष्टन लीजे संभाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २३ ॥
 त्यानिं प्रगट कियो मडि कजिया, ज्यांग धिगड गया गान्धु अजिया ।
 निणभुं माघां २ रार देखे आलो, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २४ ॥
 ने परिवार सहित नरके जागी, पछे चिहुं गनि में भीका खागी ।
 भामभी अष्ट तणी ज्युं घडमाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २५ ॥
 में गुणिया था बीर ना वेणा, ने प्रत्यक्ष देख लिया नेणा ।
 गांभी हूँ तो गुरु संभाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २६ ॥
 अंधारा गुं चोर रहै राजी, जेदथी कुगुग तणी चहरवाजी ।
 कोठ आय पडे समर जाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २७ ॥
 बरग घट्यां ने सेप बधियो, हृथ्यांगे गार गधा लीधयो ।
 थक गया बोज दियो राले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २८ ॥
 धुर भुं केठ नवनन्ध नहीं भण्या, नेतो गाम पहरी मुनिराज बण्या ।
 ज्युं नाहर री ब्याल पहरी स्यालो, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ २९ ॥
 मांठीं मांठीं निजर पट्यां लीजे, त्यानिं उपमा स्थान तणी धीजे ।
 बनलायां करे मुँहु विकराले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३० ॥
 केन्ला एक अवन्त छिगन न्यागा, किन्ला एक चौथा भुं भागा ।
 निर्कारयो मरं पहियो देवाल्ये, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३१ ॥
 चौरां मांठीं चोर जाय बस्या, भागलां में भागल आय धस्या ।
 कचरा कूटा ज्युं बींग धो गाल्ये, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३२ ॥
 सगुडी ताके घर में हाट, धले अवसर देख पाडे वाट ।
 अरण ज्युं दगार गान्धे टाल्ये, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३३ ॥
 ण सेप तथा कूडकपट तणी, कितली एक कहूं हो त्रिभुवन धणी ।
 ल्या रं तणीं नहिं सववाल्ये, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३४ ॥
 निं पिण गुरु जाणी पूजे, गमाकन दिन संवले नहिं गूके ।
 मंतर पूटी आयो जाले, गुरुवा सेपधारी पांच में काले ॥ ३५ ॥

तिणरी दिस छे सगली काणी, ते खांच आपण मे ले ताणी ।
 अग्नि ज्यू उठे अंतर भालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३६ ॥
 समचे कहां पिंग निदा जाणे, बुद्धी भिष्ट थयां उलटी ताणे ।
 ते कर रह्या भूठी भखालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३७ ॥
 जे अन्याय मारग रा पखपाती, ज्यारी सुण सुण बल उठे छाती ।
 त्यांने कुंगुरु तणी लागी लालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३८ ॥
 पखपात नही त्यांरे मन भावे, पिंग चोर चांदणो किम सुहावे ।
 लारे बाहर रा पूर लागे लालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ३९ ॥
 ए तो भाव आचारग मे चाल्या, केइ ठाणाअंग माहिं सूं घाल्या ।
 विकलां नें वीर दिया टालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४० ॥
 वले अग उपंग मूल नें छेद, तिण माहिं पिंग चाल्या भेद ।
 ओलखाय कियो वीर उजवालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४१ ॥
 कितरा एक चरित काने सुणिया, कितरा एक सूतर सूं गुणिया ।
 केइ प्रतख देख लिया न्हालो, एहवा भेषघारी पांच मे कालो ॥ ४२ ॥
 सूतर तणो लेइ सरणो, पाषंड पथ रो कियो निरणो ।
 खोटा नें उत्तम दे विडालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४३ ॥
 एतो कुंगुर तणी छे निसाणी, सुण हरष घरे उत्तम प्राणी ।
 अमृत ज्यू लागे रसालो, एहवा विरला पांच मे कालो ॥ ४४ ॥



दुहा

ढाल : ७

केई भेषधारी भूला थका, ते कर रहुआ उंधी तांण ।
 इविरत बतावें साध रे, ते सूतर अर्थ अजांण ॥ १ ॥
 त्यां साधपणो नही ओलख्यो, ते भूला भर्म गिवार ।
 सर्व सावद्य त्याग्यो मुख सूं कहें, वले पाप रो कहें आगार ॥ २ ॥
 आहार पांणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रहुआ मुरभाय ।
 एहुवा भेषधाख्यां रे इविरत खरी, पिण साधां रें इवरत न कांय ॥ ३ ॥
 च्यार गुणठांणा इविरत कही, तठें विरत न दीसैं लिंगार ।
 देस विरत गुणठांणें पांच में, आगें सर्व विरत अणगार ॥ ४ ॥
 जो साधां रे इविरत हुवें, तो सर्व विरती कुण होय ।
 त्यांरो भाव भेद परगट करूं, सांभलजो सहू कोय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आ०]

चौबीसमां श्री वीर जिणसर, निरदोष आहार आंणी ने खायो ।
 सुध परिणांमे उदर मे उताख्यो, त्यांनेइ मूरख पाप बतायो ।
 इण पाषंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 अनंत चौबीसी मुगत गइ, ते आहार ल्याया था दोषण टालो ।
 तिणमे अग्यांनी पाप बताए, सगला रे सिर दीघो आलो ॥ २ ॥
 सर्व सावद्य जोग रा त्याग कीयां ते, सर्व विरत सुध साध कहावें ।
 तिरण तारण पुरुषां रे अग्यांनी, इविरत रो आगार बतावें ॥ ३ ॥
 गोतम आदि दे साध अनंता, साधवीयां रो छेह न पारो ।
 सगला रो आहार अधर्म मे घाल्यो, तिण आंख मीची नें कीर्यो अंधारो ॥ ४ ॥
 साध रो जनम हूओ जिण दिन थी, कल्पें ते वस्तु वहरिने ल्यावें ।
 ते पिण अरिहंत री आगना सूं, इणमेंइ दूष्टी पाप बतावें ॥ ५ ॥
 वस्त्र पातर रजोहरणादिक, साध रा उपध सूतर में चाल्या ।
 भगवंत री आग्या सूं राखे, ते अधर्म माहें अग्यांनी घाल्या ॥ ६ ॥
 दसवीकालक ठांणां अंग में, प्रश्न व्याकरण उवाइ मांह्यो ।
 धर्म उपध साध रा विरत मे, तिण माहे मूरख पाप बतायो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

किण ही ग्रहस्थ नीलोतरी ने त्यागी,
उ सावपणो लेइ इविरत सरखे,
अधर्म जाणें नीलोतरी खाचां,
घर मे थका जावजीव त्यागी थी,
ग्रहस्थ जे जे वस्तु त्यागी ते,
ते सावपणो लेइ सेवा लागो,
जे इविरत सरखे ने सूस न पाळे,
माराग छोडीने उजर पडीया,
करे वीयावच चेला गुररी,
तीथंकर गोत वधें उतकष्टों,
दसवीस चेला पडिकमणो करने,
ते गुर नें पाप लगाए अग्यानी,
गुर नें पाप लागे वीयावच करायां,
मुढ मती जीव भारीकरमा,
गुर ने पाप सूं भेलो कीयां मे,
अभ्यंतर फूटी ने अंध थया ते,
साध मांहोमांहीं देवे लेखे,
ते पिण लीघां मे पाप बतावे,
दातार ने धर्म साधा ने वेहराया,
दातार तरीयो साधु डबोए,
जो पाप लागे साध आहार कीयां मे,
तिरण री आसा राखे किण लेखे,
साध तो पाप अठारेइ त्याग्या,
दातार कने सुव जाच लीयां में,
गुर दिप्या देइ सिख सिषणी करे ते,
मीह मिथ्यात सूं भारीकरमां,
छठें गुणठाणें परमाद कहीने,
पूछ्यां कहे में सर्व विरती छां,
छठे गुणठाणे परमाद कह्यो ते,
ते विषे कपाय उसभ जोग आयां,
परमाद इविरत कहें आहार उपच सूं,
आहार उपच केवली पिण आणें,
१०१

जीवे ज्या लग थाण वेरागो ।
तो ववेक विकल खावा कांय लागो ॥ ८ ॥
तो पचखाणं भाग्यो किण लेखे ।
तिण सांहाणें मूरख कांय नहीं देखे ॥ ९ ॥
अधर्म रो मूल इविरत जाणें ।
तो क्युं नही पाले लीयां पचखाणो ॥ १० ॥
ते भागल छे भारीकर्मो ।
साध आहार कीयां में सरखे अधर्मो ॥ ११ ॥
करम तणी कोड तेह खपावे ।
पिण गुर नें तो मूरख पाप बतावे ॥ १२ ॥
गुर री वीयावच करवा आवे ।
दुरगत मांहे कांय पोहचावे ॥ १३ ॥
ए सूतर मांहे कठे नही चाल्यो ।
ए पिण घोचो अणहुंतों घाल्यो ॥ १४ ॥
चेलां रा करम कटे किण लेखे ।
सूतर सांहाणो मूल न देखे ॥ १५ ॥
वस्त्र पातर आहार ने पांणी ।
एहवी कृपातर वोले वाणी ॥ १६ ॥
पिण साध वेहरे हुवे पाप सूं भारी ।
आ पिण सरखा कहे भेषधारी ॥ १७ ॥
तिण पाप रो साम्द दीयो दातार ।
भूला रे भूला थे मूढ गिवार ॥ १८ ॥
सुघ छे तिणरी सुमति ने गुपती ।
पाप कठी सूं लागो रे कुमती ॥ १९ ॥
निरजरा तणा भेद माहे चाल्या ।
ते पिण परिग्रहा मांहे घाल्या ॥ २० ॥
सावां रे इविरत थापे खानारी ।
ओ पिण भूठ वोले भेषधारी ॥ २१ ॥
किणहीक वेला लागतो जाणो ।
पिण मुढ मती करे उंची तांणे ॥ २२ ॥
ते कर रक्षा कुमती कूडी विपगदो ।
ते कठी गयो त्यारो परमादो ॥ २३ ॥

अप्रमादी कच्चा सातमें गुणठाणें,
 उवे पिण आहार उपाध भोगवता,
 छदमस्थ आचरें केवलीए आचरीयो,
 आहार उपध केवली ज्यू भोगवीयां,
 साध आहार करतां चारित कुसले,
 जब उंध मती कोइ अवलो बोलें,
 पोहर रात तांइ साध उंचें सब्दे,
 उण उंध मती री सरघा रे लेखें,
 जेंणा सूं साध करें पडिल्लेहण,
 उण उधमती री सरघा रे लेखें,
 मरजादा सूं आहार साध नें करणो,
 मरजादा सूं पडिल्लेहण करणी,
 ज्यूं साध नें आहार छ्द कारणें करणो,
 ए छवीसमो उत्तराधेन मांहें,
 जो धर्म हुवें साध आहार कीयां में,
 पाप जाणेंनें त्याग करें छें,
 साध काउसग में त्यागें हालवो चालवो,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ बोलण रा त्याग करें गुण सामे,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध साधां नें आहार देवण रा,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध साधां री न करें वीयावच,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 सर्व मूलगुण में सर्व सावद्य त्याग्यो,
 आगला करम काटणें साध नें,

साध उपवास बेलदिक करें संधारो,
 पाप रो त्याग बेहूं रे सरिषो,
 जेंणा सूं चाल्यां जेंणा सूं उभां,
 जेंणा सूं भोजन कीयां जेंणा सूं बोल्यां,

परमाद नहीं तिण गुण ठांगा आणें ।
 तो त्यानैं परमाद क्यूं नहीं लागें ॥ २४ ॥
 केवली ए ताग्यो ते छदमस्थ त्यागें ।
 तिण साध नें परमाद किण विघ लागें ॥ २५ ॥
 सुध परिणामा सूं कटें आगला करमों ।
 कहे घणों खावो ज्यूं घणों हुवे धर्मों ॥ २६ ॥
 धर्मकथा कहें मोटें मंडाणो ।
 आखी रात में करणो वखाणो ॥ २७ ॥
 ते काटण करम आत्म नें उधरणी ।
 आखोइ दिन पडिल्लेहण करणी ॥ २८ ॥
 मरजादा सूं करणो वखाणो ।
 समभो रें समभो थे मूढ अयाणो ॥ २९ ॥
 उवें घणों घणो खासी किण लेखें ।
 वले छटो ठाणों मूढ क्यूं नहीं देखें ॥ ३० ॥
 तो क्यांनं करें आहार ना पचखाणो ।
 उलट बुधी बोले एहवी वाणो ॥ ३१ ॥
 वले मुख सूं न बोलें निरवद वाणो ।
 अे पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३२ ॥
 ते धर्मकथा मांडी न करें वखाणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३३ ॥
 त्याग करे मन उधरंग आणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३४ ॥
 त्याग करें मन उरंग आणो ।
 अें पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३५ ॥
 तिणसूं नवा पाप न लागें आणो ।
 उत्तर गुण छें दस विघ पचखाणो ।
 आ सरघा श्री जिणवर भाषीः ॥ ३६ ॥
 कोइ साध लेवें नितरो नित आहारो ।
 ओं तप तणों छें भेदजन्त्या रो ॥ ३७ ॥
 जेंणा सूं बेंठा जेंणा सूं सुवंता ।
 तिण साध नें पाप न कहाँ भगवंत ॥ ३८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दसवीकालक चोथे अघेने, आठमी गाथा अरिहंत भाषी ।
 छ बोल जेणा सूं साव कीयां में, पाप कहे भारीकर्मा अन्हाखी ॥ ३६ ॥
 निरवद गोचरी रखेसरां री, मोख री सावन भगवानं भाषी ।
 ए दसवीकालक पांचमें अघेने बाणूंमी गाथा बोले साषी ॥ ४० ॥
 सुघ आहार वह्ख्यां साव सद गति जाये, निरदोष दीयां सुद गति जायें दाता ।
 ए दसवीकालक पांचमें अघेने, पेहला उदेसा री छेहली गाथा ॥ ४१ ॥
 सात करम साव ढीला पाडे, सुघ आहार करे साव तिण कालो ।
 ए भगवती सूतर पेहले सुतस्कांचे, नवमो उदेसो जोय संभालो ॥ ४२ ॥
 आहार करे गुर री आगना सूं, तिण साव ने वीर कही छे मोखो ।
 अठारमो अघेन गिनाता रो जोए, सांसो काढी मेटो मन रो धोखो ॥ ४३ ॥
 सव्द रूप गन्व रस फरस री, सावां रे इविरत भूल न कायो ।
 ए सुयगडांग अघेन अठारमें, वळे उवाइ सूतर माह्यो ॥ ४४ ॥
 सावां रे इविरत कहे पाषंडी, तिण कुमती री संगत दूर निवारो ।
 ए सुण सुण नें उत्तम नर नारी, सर्व विरती गुर माथे धारो ॥ ४५ ॥



ढाल : ८

ढुहा

आहार उपध नें उपासरो, भोगवें दोष सहीत ।
 भिष्ट थया आचार सू, त्यां छोडी साधां री रीत ॥ १ ॥
 आहार उपधने उपाश्रो, असुध दे दातार ।
 ते गुरां समेत दुरगत परें, खाअें अनंती मार ॥ २ ॥
 सहू दोषां में दोष मोटकों, आघाकर्मी जाण ।
 एहवा 'थानकादिक भोगवें, त्यां भांगी जिणवर आण ॥ ३ ॥
 जिण आगना पालें नही, ते भागल री छें पांत ।
 ते कुग कुग अकार्य कर रह्या, ते सुणजो कर खांत ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आगरथा में]

केई भेषधारी कहें म्हें जीव बचावां, ते करें अन्हाखी अणहंता कूका ।
 ते साधपणा रो नांम धराए, उलटा छ काय मरावण ढूका ।
 इण पापंड मतरो निरणो कीजोः ॥ १ ॥
 पीलू जितरी मुरड माटी में, असंख्याता जीव तेहीज बतावें ।
 माहे बुगलध्यानी मुनीसर बेठा, उपर थटे थटें मुरड नखावें ॥ २ ॥
 साधां रे कारण थानक लीपे, पीली पांणी रा जीवां नें मारी ।
 जो उण थानक में साध रहें तो, तिणने तो वीर कह्यो भेषधारी ॥ ३ ॥
 कूटा सांकल करावे थानक कारण, वले खाती सिलावट बेंठा कमावें ।
 केलू कूटीजें ने चूनो दरीजे, अे पिण चाला कुगुर चलावें ॥ ४ ॥
 एक आंकुरा वनसपती मे, जीव अनंता तो मुख सूं बतावे ।
 जो थानक उपर नीलो उगें तो, सानीकर दुष्टी जड सूं कढावें ॥ ५ ॥
 दरतां लीपतां थानक चूणतां, कीच्यां मांकादिक मरे अथागो ।
 डरें नहीं दुष्टी अकार्य करता, त्यांरे करम जोगे डंक कुगुरां रो लागो ॥ ६ ॥
 वले छपरा छावंता नें केलू फेरतां, तटें नीलणफूलण जीव मरें अणंता ।
 जमीया जाल उखेलें अग्यांनी, ते पिण कुगुरां रे काज हणंता ॥ ७ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए थानक काजे हणे जीव दुष्टी, हणावण वालो दूजे करण जांपो ।
 सरावण वालो तीजे करण डूबो, पछे इविरत लेखे वरोबर जांपो ॥ ८ ॥
 जिण थानक करावण गरथ दीयों ते, सर्व हिंसा रो कहीजे नायक ।
 धर्म काजे दूष्टी जीव हणाए, अनत जीवा रो हुवो दुखदायक ॥ ९ ॥
 अनता जीव मारे थानक कीधो, वले दिन दिन अनत मरे छे आगे ।
 भेषघाव्यां सहीत श्रावक ने पूछीजे, इण थानक रो पाप किण किण नें लागे ॥ १० ॥
 कोइ श्रावक राते रोछार सूजे तो, तिणने पाप लागो कहे छे बिमासी ।
 वो थानक सदाइ रोछार रहे छे, तिण पाप थी दुरगत कुण कुण जाती ॥ ११ ॥
 मठवासी ज्यूं तिणमें मूरभ रख्या छे, वले थानकरी राखे धणीयापो ।
 सार संभाल करे परीया धूरीयां, तिणनें लागें छे निरंतर पापो ॥ १२ ॥
 कोइ पूछे तो कूड बोले कपटी, श्रावका रे काजे कीधो वतावे ।
 जो साचो हुवें तो माहे रहणो त्यांगे, पछे कुण कुण श्रावक थानक करावे ॥ १३ ॥
 छक्राय हणीने थानक कीधो, ते तो थानक छें आघाकर्मी ।
 तिण थानक मे साच रहें तो, धर्म सूं मिष्ट ने कहीजे अचर्मी ॥ १४ ॥
 वले ग्रहस्थ कह्यो तिणने वीर जिणोसर, महासावद्य किरिया लागें भारी ।
 आचारग दूजे श्रुतकंधे, भेबरे लेखें कह्यो भेषवारी ॥ १५ ॥
 आघाकर्मी थानक मे साच रहे ते, नरक निगोद में भीकां खावे ।
 ए भाव भगोती मे वीर कह्या छे, वले चिहुं गत माहे घणो दुख पावे ॥ १६ ॥
 साच रे कारण थानक करावे, ते गर्भमे आडो आवे दाता ।
 त्याने कापे कापे काढे नांन्हा काता, वले नरका मे मार अनती खाता ॥ १७ ॥
 घन रे कारण जीव हणे त्याने, मंदबुधी कह्या दसमे अंगो ।
 दयारी ठोर हिंसा ने थापी, डूबा रे डूबा थे कुगुरां रे संगो ॥ १८ ॥
 धर्म हेते हिंसा कीयां समकत जावे, वले जनम मरण दुख वधे अथायो ।
 ए वीर वचन साचा कर सरदो, पेला अघेन आचारग माह्यो ॥ १९ ॥
 इम साभल ने उत्तम नरनारी, देवगुर धर्म काजे हिंसा नहीं कीजें ।
 आहार उपध सेज्या सथारो, निरदोष हुवे तो देइ लाहो लीजें ॥ २० ॥
 न्याती अन्याती श्रावक अश्रावक ने, आघी आखी राति थानक मे वसावे ।
 नसीत रे आठमे उदेसे, च्यार महीनां रो चारित जावे ॥ २१ ॥
 वासा रूप रहे तिणने नही नपेवे, कोइ नषेध्यां पछेइ रहे जोरीदावे ।
 तिण साथे वारे जायें साथे आवे पाछो, तिणनेइ डंड चोमासी आवे ॥ २२ ॥
 सिबंत रा पाठमें वीर नपेधयो, केइ मिष्ट आचारी कहे रहणो चाल्यो ।
 उवें सूतर रो नांमलेइ भूठ बोले, ओ अर्थमे घोचो अणहूतो घाल्यो ॥ २३ ॥

कूडा कूडा अर्थ लोकां नें वचाएं,
 अणहुंता अर्थ सूं पाठ उथापें,
 उदेसीक असणादिक भोगवें ते,
 वले नितर्पिड भोगवें एकण घरनो,
 एतो भाव कहुआ उतराघेन माहें,
 त्यांनं पिण गुर जाणेंनं वादें अग्यांनी,
 गांमवारें उतरीयो कटक सथवाडो,
 कोइ जिण आगना लोपी रात रहें तो,
 एतो वेतकल्प रे तीजें उदेसें,
 कोइ रातें रही वले दोष न सरवें,
 एहवा भारी भारी दोष जाणनें सेवें,
 ते समझाया समझें नहीं मूरख,
 एहवा भेषधारी साध रा भेष माहें,
 त्यांनं वादें पूजें सतगुर जाणेंनं,
 उसभ करम उदें सूं संवलो न सूझें,
 त्यांरी सेवा भगत कीयां ए फल लागें,
 इम सांभलनें उत्तम नरनारी,
 सावां री सेवा करें चित्त चोखें,

आप डूवें करें ओरां नें भारी ।
 जो टांकों भल्लें तो हुवें अनंत संसारी ॥ २४ ॥
 वले मोल लीयो उपघादिक आहारो ।
 एहवा साध जासी नरक मझारो ॥ २५ ॥
 वीसमां अघेन में काढ्यो निकालो ।
 त्यांरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ २६ ॥
 तिहां गोचरी जावेंतो पाछो आवें ।
 च्यार महीनां रो चारित जावें ॥ २७ ॥
 साधनें कटक माहें न रहणो रातो ।
 तिण मूरख री मानें मूरख बातों ॥ २८ ॥
 वले बतलांया बोलें नहीं सूधा ।
 जिण आगना लोपी नें पडीया उंवा ॥ २९ ॥
 ते तो आप डूवें ओरां नें डबोवें ।
 ते पिण मानव रो भव खोवें ॥ ३० ॥
 त्यांनं गुर मिलीया छें हीण आचारी ।
 टांको भल्लें तो हुवें अनंत संसारी ॥ ३१ ॥
 एहवा भेषघास्थां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चुतर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ३२ ॥

ढलल : ६

दुहल

भेषधलरी भूलल फलरें, त्यलरें धोर रुदर मलथ्यलत ।
वल्ले मलषुट थयल आकलर थी, त्यलरी भूलल करें पखपलत ॥ १ ॥
आहलर उषधल ने उषलशुओ, असुध भुओवल्ले जलण ।
त्यलसूं आकलर री कुरकल कूलयलं, तुओ ललगे जहर सलमलण ॥ २ ॥
वल्ले ऑलव हलसल सू डरे नहलं, सके नहल करतल अकलज ।
वल्ले धरुमं कहे हलसल कूलयलं, नलणे मन मलंहल ललज ॥ ३ ॥
पलण भुओलं ने खबर पडे नहल, कूडे आकलर री वलत ।
शुओडीसल परगट कलरूं, ते सुणऑु वलख्यलत ॥ ॡ ॥

ढलल

[देवदलनव तीथंकर गशधर]

आधलकरमी थलंनक मलंहल सलध रहे तुओ, पेहलुओ मलहलवरत भलगें ।
वल्ले दयल रहलत कलहुओ सूतर भगुओतल मे, अनंत जनम मरण करसल आगे रे मुनलवर ।
ऑलव दयल वलरत पललु* ॥ १ ॥
वल्ले सरुव सलवध रल त्यलग कहे तुओ, दुऑुओ मलहलवरत भलगुओ ।
ऑुओ उ कहे थलंनक म्हुलरे कलज न कूलधुओ, तुओ कषुट सहलत भूठ ललगुओ रे ॥ मु० ऑुओ २ ॥
ऑुओ ऑुओ मूंआ त्यलं सरुीर न आषुओ, तलणसूं अदत उण ऑुओ वलं रुओ ललगुओ ।
वल्ले आगनलं लुओपी शुरुी अरुहलत री, तलणसूं तीऑुओ मलहलवरत भलगुओ रे ॥ ३ ॥
तलण थलंनक ने आषुणुओ कर रलखे, वल्ले ममतल रहें नलत ललगुओ ।
मठवलसल ऑुओ मलहे वसे तुओ, पलंनकमुओ गयुओ वलरत भलगुओ रे ॥ ॡ ॥
वलकुी कुओथुओ कुठुओ वलरत इण वलध भलगल, आकलर कुसलल रे लेखे ।
एहवल भलगल फलरे सलध रल भेषधुं, त्यलनें वुधवंत ग्यलंन सूं देखें रे ॥ ॡ ॥
एक कलड हणें तलणने उतकषुट भलंणुओ, हलसल कुकलड री ललगे ।
ऑुओ एक वलरत भलंणुओ उतकषुट भलंणुओ, वलरत कुहूंइ भलंणुओ रे ॥ ६ ॥
ए आकलरंग रे दुऑुओ अघेने, कुठुओ उदेसुओ संभललुओ ।
ए भलव सुणुणेने हलडुओ वलमलसुओ, मत वुओलुओ आल पंपललुओ रे ॥ ७ ॥

*थह आंकडुी प्रत्येक गलथल के अनंत में है ।

इणसूं दोष मोटां मोटां सेवें, साध रा सेष मम्मारो ।
 कोइ चुतर विचषण जाण होसी ते, थानें किम सरखें अणगारो रे ॥ ८ ॥
 वले दोष बयांलीस भाख्या सूतर में, बावन कह्या अणाचार ।
 यां मांहिला दोष सेव्यां सेवायां, माहावरतां में परसी वचार रे ॥ ९ ॥
 कोइ थानक निमतें गरथ दे तिणनें, मुख सूं मतीय सरावों ।
 आप समांगा छ काय जीवां नें, सांनीकर कांय मरावो रे ॥ १० ॥
 थानक करावें त्याने धर्म कहें नें, भोला नें मत भरमावो ।
 आप रहिवाणें जायगां रे कारण, जीवां नें मतीय मरावो रे ॥ ११ ॥
 साधां रें कारण जीव हणें त्यांरे, हुसी भूंडा सूं भूंडो ।
 जो उ साधु थइ उण जायगां में रहसी तो, साधपणो उणरोइ बूडो रे ॥ १२ ॥
 जिण गरथ दीयो जिण सूं जीव मूंआ त्यांरो, उतरा जीवांरो उणनें पापो ।
 वले धर्म जाणें तो पाप अठारमो, तिणसूं होसी घणो संतापो रे ॥ १३ ॥
 साध काजें दडें लीपें छपरा छावें, वले जीव अनेक विध मारें ।
 आप डूबे वेर वांधें जीवां सूं, वले गुर रो जनम विगाडे रे ॥ १४ ॥
 थे धर्म ठिनाणें जीव हणों छो, तो दया किसी ठोड पालो ।
 कुगुरां रा भरमाया आतमा नें, कांय लग्गवो कालो रे ॥ १५ ॥
 रात अंधारी में जीव न सुभें, जब आडा म जडो किवाडो ।
 छ कायां रा पीहर वाजो तो, हाथा सूं जीव म मारो रे ॥ १६ ॥
 जो थानें साची सीख न लगें, तो मतल्यो साधवीयां रो सरणो ।
 साध नें रहणो हुवार उघाडें, साधवीयां नें चाल्यो जडणो रे ॥ १७ ॥
 जो गृहस्थ साथे मेलो संदेसो, जब मारी जासी छ कायो ।
 उ जोयां विनां चालें मारग मांहें, तो एहवो म करो अन्यायो रे ॥ १८ ॥
 साधपणो थासूं सफ्तो न दीसैं, तो श्रावक नांम धरावो ।
 सगत साह वरत चोखा पालो, दोषण मतीय लग्गवो रे ॥ १९ ॥
 आचार थासूं पलतो न दीसैं, तो आरा रे माथें मत न्हांखों ।
 भगवंत रा केडायत वाजे, भूठ बोलता बयूं नही सांको रे ॥ २० ॥
 थे विरत विहूणा साध वाजो, तो ही रह्या लोकां में पूजाय ।
 ठाला वादल सूं थोथा गाजो, ओं मोने इचर्य थाय रे ॥ २१ ॥
 इत्यादिक आचार में हीणां, ते पूरा केम कहवायो ।
 हिंसा मांहें धर्म परूणो, थानें ते पिण खबर न कांयो रे ॥ २२ ॥
 तेलो करें तिणने सीनां दिनां लग, कोइ उनोपाणी कर पायो ।
 तिणनें तो आगली सरवा रें लेखे, थे एकंत पाप बत्तायो रे ॥ २३ ॥

तिणने चोथें दिन आरंभ करने, छ काय हणीनें जीमायो ।
 तिण माहे मिश्र धर्म बतावो, ते किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ २४ ॥
 तेला मे ज्जो पाणी कर पावे, तिणमे तो पाप बतायो ।
 चोथे दिन पोख्यो ते हिंसा घणी करे, तिणमे मिश्र किहां थी थायो रे ॥ २५ ॥
 ओ मिश्र परूय्यो ते थारे लेखे, आघो न चालें कोय ।
 थे हिंसा माहें धर्म म थापो, सूतर सांहो जोय रे ॥ २६ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म जाणीने, छकाय हणे मंदबुधी ।
 धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरी, सरघा घणी छे उंधी ॥ २७ ॥
 सूइ नाके सिंघर पावें, कहो किम आगो पैसे ।
 ज्यू हिंसा माहे धर्म परूये, ते सालोसाल न बेसे रे ॥ २८ ॥
 ए समचे आचार साघरो बतायो, तिणमें राग घेख मत जाणो ।
 थे सुण सुणनें समता भाव राखो, थे म करो खांचाताणों रे ॥ २९ ॥
 पीत पुरांणी थी थारूं, पेंहली, तिणसूं भिन भिन कर समझावूं ।
 जो थारा मनमें संका पडें तो, सूतर काढ बतावूं रे ॥ ३० ॥
 समत अठारे वरस तेतीसे, मेडता सहर मंझारो ।
 वेसाख विद नवमी दिन थाने, दीधी सीखावण हितकारो रे ॥ ३१ ॥

ढाल : १०

दुहा

तालपुट विप पीधां थकां, जूदा हुवें जीव काय ।
 कुगुर नें कोड गुर करें, ते चिहुं गति गोता खाय ॥ १ ॥
 कुगुर कुपातर अति वूरा, भाख्यो श्री भगवान ।
 त्यांनैं माठी माठी देउं ओपमा, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ २ ॥

ढाल

[वीर सुणो मोरी वीनती]

विष पीधों निरणें कोटें, पवन भूम्यो हो वले तिणहिज ठाम ।
 नहीं ओपध नहीं गारडू, जिवण रो हो तिनरें काठो कांम ।
 लखण सुणो कुगुरां, तणां* ॥ १ ॥

विप जिम छें मिथ्यात अनादरो, सर्प जेहवा हो कुगुरां रा डंक जांग ।
 जहर सगलेइ परगम्यो, नहीं वांछें हो सुणवा साधां री वांग ॥ २ ॥

कदा सुणें तो सरधें नहीं, विण समझ्यां हो करें उंधी तांग ।
 साध थावक धर्म न ओलख्यो, सावद्य निरवद हो करणी रा अजांग ॥ ३ ॥

सनीपात भोलो घट तेहनें, घणों भिडकें हो पायां मिश्री ने दूध ।
 इम साध वचन सुणीयां थकां, वक उटें हो मिथ्याती विण सुध ॥ ४ ॥

केइ अग्यांनी इम कहें, म्हारे तो हो घणा री परतीत ।
 ते केडें लागा कुगुरां तणे, समभ्रण री हो न दीसैं कांइ रीत ॥ ५ ॥

जाजम विच्छाइ कूवा उपरें, चिहुं कानी रे मेल्यो उपर भार ।
 भोला वेंसे तिण उपरें, ते डूव मरें रे तिण कूवा मभार ॥ ६ ॥

तिम कुगुर छें कूवा सारिपा, जाजम सम रे कनें साध रो भेष ।
 त्यांनैं गुर लेखव बंदणा करें, ते डूवें रे मूरख अंध अदेख रे ॥ ७ ॥

कुगुर भडभूंजा सारिपा, त्यांरी सरधा हो खोटी भाड समांग ।
 भारीकरमां जीव चिणा सारिपा, त्यांनैं भोखे हो खोटी सरधा में आंग ॥ ८ ॥

चोरी जारी करता लाजें नहीं, ते किम लाजें हो मूरख देता आल ।
 केई भेपधारी छें एहवा, कर रह्या हो पापी भूठी भखाल ॥ ९ ॥

एहवा भेपधास्यां नें छेडव्यां, वक उटें हो वोलें आल पंपाल ।
 कजीया कलेस करें घणां, नहीं सके हो देता कूडा आल ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

लोक सुणे वखाण रात रो, जब जाए हो पाखंड पंथ उठ ।
 जब भेषधारी कुडता थकां, ते तो बोले हो पापी किण विध भूठ ॥ ११ ॥
 परउपपार जाणनें, साध करे हो रात रो वखाण ।
 तिणमें कहे दोष निसंक सूं, ते भेषधारी हो एहवा मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 रात तणो वखाण निषेधीयो, भेषधाख्यां हो मूरखां बेफांम ।
 ते चोडे भूठ चलावीयो, लेइ लेइ हो भगवंत रो नाम ॥ १३ ॥
 जो सूतर में भगवंत वरजीयो, रात तणो नही करणो वखाण ।
 साचा हुवे तो सूतर में बताय दो, नही तो बूढो क्यूं हो कूडी कर ताण ॥ १४ ॥
 रात तणो वखाण करणो नही, सूतर माहे हो नही वरज्यो साख्यात ।
 भेषधाख्यां भूठ चलावीयो, त्यांरी मानें हो कोइ मूरख वात ॥ १५ ॥
 दोष जाणे वखाण राते कीयां, तो कांय करे हो पोते राते वखाण ।
 पोते साध नाम धराय ने, कांय बूडे हो मूरख जाण जाण ॥ १६ ॥
 इम कहां जाव न उपजे, जब बोले हो मूरख उंधी वाण ।
 कहे म्हें दोष सेवां जाण जाणने, पिण थाने हो नही करणो वखाण ॥ १७ ॥
 पोते भागल दोषीला ठहरने, निषेधो हो रात तणो वखाण ।
 एहवा भेषधारी सुघ बुघ विनां, अणहूंती हो लीघी गला में ताण ॥ १८ ॥
 कोइ नाक काटे आपरो, पॅलाने हो कुसावण करवा काज ।
 एहवा मूरख छे मांनवी, नकटा हुवेतां हो मूरख नांणी लाज ॥ १९ ॥
 ज्यूं साधां ने दोषीला थापवा, भेषधारी हो दोषीला ठहृखा आप ।
 नकटा तणी त्यांनें ओपमा, त्यांरे होसी हो भवभव में सताप ॥ २० ॥
 एहवा कुगुरां री परतीत सूं, आगे बूडा हो घणां जीव अनंत ।
 ते नरक निगोद माहे पड्यां, त्यारो कहतां हो किम आवे अंत ॥ २१ ॥



ढाल : ११

दुहा

विनें मूल धर्म जिण कह्यो, ते जाणें विरला जीव ।
 ते सतगुर रो विनों करें, त्यां दीधी मुगत री नीव ॥ १ ॥
 जे कुगुर तणो विनो करें, ते किम उतरें भवपार ।
 ज्यां सुगुर कुगुर नहीं ओलख्या, ते गया जमारो हार ॥ २ ॥
 केई अग्यांनी इम कहें, गुर नें बाप एक होय ।
 भूंडा भला जे गुर कख्या, त्यांनै न छोडणा कोय ॥ ३ ॥
 जिण आगम माहें इम कह्यो, गुर करणा गुण देख ।
 खोटा गुर ने नहीं सेवणा, त्यांरी कीमत करणी वशे ॥ ४ ॥
 कुगुर नें अजाणपणें गुर कीयो, ठीक पडीयां छोडणो सताब ।
 आतो लीधी टेक न राखणी, ते मुणजो सूतर रा जाब ॥ ५ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नदन वीर]

केई भोला लोक इम कहें जी, गुर नहीं छोडणा कोय ।
 त्यां आचार तो ओलख्यो नही, मन आवें ज्यूं बोलें सोय ।
 चुतर नर छोडो कुगुरनों संग* ॥ १ ॥
 गुर गहला गुर बावला, तोही गुर देवन का देव ।
 चेलो जों सेणों हुवे तो, उं करे गुरां री सेव ॥ २ ॥
 साचो मारग साधरो जी, खोट खटावें नाहि ।
 चेलो गुर चूकें कदा जी, तो छोडें खिण एक माहि ॥ ३ ॥
 कहो साध किसका सगा जी, तडकें तोडें नेह ।
 आचारी सूं हिलमिलें जी, अणाचारी सूं छेह ॥ ४ ॥
 नीलटांस कीडा चूमें जी, माहें विराजें रांम ।
 कहे करणी रो कारण नही, म्हांरे दरसणरोइ कांम ।
 ए अणतीरथी री वांण ॥ ५ ॥
 नीलटांस कीडा चूमेंजी, तिणरे दया नहीं घट मांय ।
 पापी रो मुख देखतां जी, भलो कठा सूं थाय ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गुण लारे पूजा कही, तोही निगुण पूजता जाय ।
 चोडे भूला मानवी, त्याने किम आंणीजे ठाय ॥ ७ ॥
 सौनारी छूरी चोखी घणीं, पिण पेट न मारे कोय ।
 ए लोकीक दिष्टंत सांभले, तुम्हे हिरदें विमासी जोय ॥ ८ ॥
 ज्युं गुर कीधा तिखा भणी, ते ले जावें दुरगति मांय ।
 जे भागल तूटल गुर हुवे, त्याने उभा दीजे छिटकाय ॥ ९ ॥
 खोटा गुरने नही सेवणा जी, श्री वीर गया छें भाख ।
 कुण कुण गुरने छोडीया, त्यांरी सूतर में छे साख ॥ १० ॥
 जमाली सिष्य भगवंत रो, तिणरें चेल पाचसों जाण ।
 एक वचन उथापे वीर नो जी, पर गयो उलटी तांण ॥ ११ ॥
 जब कितरां एक चेलां तणो जी, तुरत गयों मन भाग ।
 घणां चेलां जमाली ने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १२ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती कने रह्या, केइ आया भगवंत पास ।
 जमाली ने खोटो जाण छोडीयो, त्याने वीर वखाण्या तास ॥ १३ ॥
 जमाली ने कुगुर जांप्या पछे जी, छोड दीयों ततकाल ।
 जो गुर छोड्यांरी संका पडे तो, सूतर भगोती संभाल ॥ १४ ॥
 सावथी नगरी रे बाहिरे जी, कोठक नामां बाग ।
 तठे गोसाले भगवंत सूं जी, कीयो संवादो लाग ॥ १५ ॥
 अजोग बोल्यो भगवत ने जी, मूल न राखी काण ।
 दोग साव बाल्या भगवंत रा जी, वीर नें कीयो लोही ठांण ॥ १६ ॥
 लेस्या सूं खाली हुवो जाणने जी, साध आया सताब ।
 गोसाला ने प्रश्न पूछीया, जब नायो गोसाला ने जात्र ॥ १७ ॥
 जब गोसाला रा चेला तणों, उत्तरीयो गोसाला सूं राग ।
 तिणने खोटो जाणने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १८ ॥
 त्या गोसाला ने गुर कीयो हूतो, पिण छोड्तां नांणी लाज ।
 पछे गुर करे श्री भगवत ने, त्या साख्या आतम काज ॥ १९ ॥
 केइ चेलां गोसाला कने रह्या, त्यां राखी गोसाला री टेक ।
 ते तो कुगुर नें सेवनें जी, अें वूडा विनां ववेक ॥ २० ॥
 गोसाला ने चेलां छोडीयो जी, ते त्तिरीया संसार ।
 ए भगवती रे सतखंच पनरमें, ते वुधवत करजों विचर ॥ २१ ॥
 सोमधीया नगरी तिहां जी, नीलासोग उद्यांण ।
 सेठ सुदंसण तिहां वसे, ते डहो चतुर मुजांण ॥ २२ ॥

सुखदेव सिन्यासी नें गुर कीयो जी, सेठ सुदंसण जाण ।
 खोटो जाण्यो जब छोडीयो, उणरी मूल न राखी काण ॥ २३ ॥
 थावचा अणगार नें, गुर कीघा उत्तम जाण ।
 सुखदेव सिन्यासी नें छोडीयो, तिण श्री जिण धर्म पिछाण ॥ २४ ॥
 सुखदेव सिन्यासी सांभल्यो जब, आयो वेग सताब ।
 सेठ सुदंसण रें घरे जी, आयो करवा जाब ॥ २५ ॥
 पछे सुखदेव नें सुदंसण, आया नीलासोग उद्यान ।
 थावचें अणगार - समझावीया, जब आयो घट में ग्यान ॥ २६ ॥
 सुखदेव सिन्यासी तिण समें, वले चेला एक हजार ।
 थावचा अणगार नें गुर कीयां जी, लीवो संयम भार ॥ २७ ॥
 त्यां आगला गुर नें छोडतां जी, सक न आंणी काय ।
 गिनाता रा पांचमां अघेन में जी, ए चोडे सूतर रो न्याय ॥ २८ ॥
 सेलकराय रषेसर तणें जी, पांचसो चेला लर ।
 सेलगपुर नगर पधारीया जी, करता उग्र वीहार ॥ २९ ॥
 तठें बेटे कीघी त्यांरी वीनती जी, सरीर में रोग जाण ।
 जब रथसाला में आय उतख्या जी, पछे ओषध कीघा आंण ॥ ३० ॥
 रोग गयो साता हुइ पिण, न करें तिहां थी वीहार ।
 खावापीवा उण चित्त दीयो जी, गिघी थको करें आहार ॥ ३१ ॥
 उसनो उसनविहारी हुवो जी, पासथो कुसीलीयो जाण ।
 परमादी नें संसतो, ए पाचूंई बोल पिछाण ॥ ३२ ॥
 जब पंथग वरजी पांचसो जी, मिलने कीयो विचार ।
 गुर तो पछ्या परमाद मे जी, पिण आपानें सिरें छें वीहार ॥ ३३ ॥
 एहवी करें विचारणा जी, परभाते कीयो वीहार ।
 गुरने ढीलें जाण छोडीयो, ते चिन मोटा अणगार ॥ ३४ ॥
 पंथग वरजी पांचसों जी, नांणी गुर री परतीत ।
 त्यां ढीलें जांणीनें परहृख्यो - जी, आजिण मारग री रीत ॥ ३५ ॥
 पंथग वीयावच करीजी, तिणने कट्टे केइ धर्म ।
 त्यां जिण मारग नहीं ओलख्यो जी, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३६ ॥
 उसनादिक पांचूं भणीजी, असणादिक दें कोय ।
 तिणनें चोमासी डंड नसीत रें, पनरमें उदेसैं जोय ॥ ३७ ॥
 तो सेलगनें जिण घालीयो जी, उसनादिक पांचूं मांय ।
 तो तिणरी वीयावच कीयां में, धर्म किहां थी थाय ॥ ३८ ॥

ज्ञाता अंग मे जिण कह्यो जी, म्हांरो साध साधवी होय ।
 जो सेलग ज्युं ढीलो पडें तो, गण माहे आछो न कोय ॥ ३६ ॥
 घणां साध ने साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय ।
 उ हेलवा निदवा जोग छें, जाव अनंत संसारी थाय ॥ ४० ॥
 जे हेलवा निदवा जोग छे, तिणने बांघा किहां थी धर्म ।
 तिणरो विनों वीयावच कीया में, निश्चे वंधसी कर्म ॥ ४१ ॥
 पंथग वीयावच करीजी, ए आपरों छांदो जाण ।
 धर्म नही तीन करण में जी, नसीत सूं करो पिछाण ॥ ४२ ॥
 पंथग ने वीयावच थापीयों, जब सगलाइ भेला जाण ।
 ते पिण छांदो आपरो जी, पूरवली पीत आंण ॥ ४३ ॥
 पथग वरजी पांचसो, गुरने छोड्या खोटं जाण ।
 पछें सुध हुवा काने सुण्या, जब सगलाइ मिलीया आंण ॥ ४४ ॥
 ए ज्ञाता सूतर मे कह्यो जी, पांचमां अघेन रे मांय ।
 खोटं जाणें गुर छोडणां जी, आ संका म आंणो काय ॥ ४५ ॥
 सकडाल गोसाला ने गुर कीयो जी, छेहलो तीर्थकर जाण ।
 तिण खोटो जाण्यो जव छोडीयो, उणरी मूल न राखी कांण ॥ ४६ ॥
 पछे गुर कीघा भगवंत नें जी, कीयों गोसाला नें दूर ।
 ए सातमा अग माहे कह्यो, ते निश्चे म जाणो कूर ॥ ४७ ॥
 पछे गोसालो सुण आयो तिहां, सकडाल ने फेरण कांम ।
 सकडाल गोसाला ने देखनें, बेटों रह्यो एकण ठाम ॥ ४८ ॥
 तिणने आदर सनमान दीयों नही, वले मीट न मेली ताम ।
 जब गोसाले कपटी थके, कीघा भगवंत रा गुण ग्राम ॥ ४९ ॥
 हाट दीघा उत्तरवा तेहने, पिण मांम पाडी तिण ठाम ।
 कह्यो तानें ओ दांन दीयों तिको, म्हांरे नही धर्म रो कांम ॥ ५० ॥
 अंगालमरदन साध रें, चेलां पांचसो सुनीराय ।
 गुर तो अमवी जीव छें, पिण चेलां ने खवर न कांय ॥ ५१ ॥
 एक मंडपूरो आगे चले, तिणरें पांचसो हस्ती लार ।
 एहवो सुपनों राय देखने, परभाते करे वीचार ॥ ५२ ॥
 इतला माहे आवीया, अंगालमरदन अणगार ।
 राजा देख सांसे पढ्यो, पछें परख करी उण वार ॥ ५३ ॥
 पछे चेलां पिण गुर ने जाणीयो, ए तिरण तारण नहीं होय ।
 दया रहीत जाणे छोडीयो, पिण मोह न आण्यो कोय ॥ ५४ ॥

ए ठांणांअंग रा अर्थ में, वले कह्यो कथा रें मांय ।
 खोटा गुर नें छोडणा कह्या, ते निश्चें सूतर रोय न्याय ॥ ५५ ॥
 हं कहि कहि नें कितरा कहूंजी, गुर छोड्यां रा नांम ।
 ते सूतर में छें अति घणा जी, आ कही वांनगी तांम ॥ ५६ ॥
 इत्यादिक साध नें श्रावकां जी, गुर नें छोड तिरीया अन्त ।
 जे करणी करें मुगते गया, त्यांरा गुण गाया भगवंत ॥ ५७ ॥
 गुर गुर गेंहला कर रह्या, पिण गुर री खबर न काय ।
 जो हीण आचारी नें गुर करें तो, चिहूं गति गोता खाय ॥ ५८ ॥
 जे कुगुर छोड सत गुर करें, वले पालें विरत अमंग ।
 ते तिख्या तिरें तिरसी घणा जी, सतगुर रे परसंग ॥ ५९ ॥
 गुर नें ढीला जाण छोडीया, त्यांरी कही सूतर सूं बात ।
 हिवें परंपरा गुर छोडीया जी, ते सुणजो विख्यात ॥ ६० ॥
 लूंकें साह गुर नें छोडनें जी, कीधी आपणी थाप ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, इण मोटों कीधों पाप ॥ ६१ ॥
 त्यां मां सूं नीकल्या ढूंढीया जी, लूंका गुरां नें छोड ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, यामें ही मोटी खोड ॥ ६२ ॥
 लूंकां नें ढीला जाण छोडनें जी, सयमेव चारित लीध ।
 साध वाज्या तिण दिक्स थी जी, ओर गुर कोइ माथे न कीध ॥ ६३ ॥
 जो गुर नहीं माथे केहनें जी, तिणमें बतावें दोष ।
 तो धुर सूं निगुरा छें ढूंढीया, इण लेखें ओही मत फोक ॥ ६४ ॥
 कोइ कहें गुर माथे कीयां विनां जी, नही उतरें भव पार ।
 तो इण लेखें सगलाइ ढूंढीया जी, अं निगुरां रो पिरवार ॥ ६५ ॥
 जो गुर छोड्यां में दोष छे, वले गुर नहीं कीधां रो दोष ।
 ए दोनूं दोष तो ढूंढीयां में, ते किण विघ जासी मोख ॥ ६६ ॥
 वले मांहोमां ढूंढीया जी, गुर छोडें छें तांम ।
 वले ओर करें गुर जायनें जी, तिणरो धरावें नांम ॥ ६७ ॥
 ढूंढीया में गुर छोडें घणां जी, त्यांरो किण किण रो कहूं नांम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां, तों अं सर्व बूडा वेकांम ॥ ६८ ॥
 केई संवेगीयां रा श्रावकां, त्यां गुर कीयां ढूंढीयां तांम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां तांम, अं खोटी हुवा वेकांम ॥ ६९ ॥
 वले भगत सिन्यासी नें सेवडा जी, केई गुर छोडी उभा जाय ।
 जो उवे गुर करें ढूंढीया भणी जी, तुरत मूंडेले मांय ॥ ७० ॥

उणरा आगला गुर छोडायनें जी, आप हुवा गुर तांण ।
 जो दोष कहे गुर छोडियां तो, कांय बोया त्यानें जांण ॥ ७१ ॥
 यांरी सरघा रें लेखें इम बोलणो जी, गुर मत छोडो कोय ।
 आगला गुर नें सेवतां, थाने सुध गति वेगी होय ॥ ७२ ॥
 इम कहणी आवें नहीं, जब बोलया सूधी वांण ।
 खोटां जांणी गुर छोडणा जी, करणा उत्तम गुर जांण ॥ ७३ ॥
 तो क्यूं कहो गुर नें न छोडणा जी, कूडी कांय करी वकवाय ।
 इण विध लीधा सांकडें, जब कोयक बोलें न्याय ॥ ७४ ॥
 कुगुर छोडणी करी जी, रीयां गांम मभार ।
 संवत अठारें तेतीसे समें, असाढ सुद तीज नें सोमवार ॥ ७५ ॥



दुहल

भेष पहख्यों .. भगवॉन रो, सलधु नॉम धरलय ।
 पलण ऑललर में ढीलल घणॉ, ते कह्यों कठल लग जलय ॥ १ ॥
 त्यॉनें वॉदें गुर जॉणनें, वले कूडी करें पखपलत ।
 त्यॉ भूठॉ नें सललल करण खपें, त्यॉरे मीठें सलल मिथ्यलत ॥ २ ॥
 कुगुर तणॉ पग वॉदनें, ऑणें बूडल जीव अनंत ।
 वले बूडें नें बूडसी घणॉ, त्यॉरो कहतॉ न ऑवें अंत ॥ ३ ॥
 सलध मारग छें सॉकडें, तलणमें न चलें खीठ ।
 ऑगलर नहें त्यॉरे पलप रो, त्यॉ वरत कीयॉ नवकूठ ॥ ॡ ॥
 भेषधररी भलगल घणॉ, त्यॉसूं पलें नहें ऑललर ।
 ते कुण अकलर्य कर रह्यल, ते सुणजो वलसतलर ॥ ५ ॥

ढलल

[ऑदर जीवल रलवमल गुर ऑदर]

कुगुर तणॉ ऑलरत ऑवल करसूं, सूतर री दे सलख जी ।
 सुमतल ऑण सुणो भव जीवल, श्री वीर गयल छें भलख जी ।
 सलध म जॉणें इण ऑललर ॥ १ ॥
 जो कुगुरॉ नें सेंठ कर भलल्यल, तीही सुण सुण म करो धेख जी ।
 सलल भूठ रो करें नलवेरो, सूतर सॉह्यो देख जी ॥ २ ॥
 जीमणवलर मॉसूं कोइ गुरहसुथ, ल्यलवें धीवण पॉणी मॉड जी ।
 ते ऑप तणें धरें ऑण वेंहरलवें, ते करें भेष नें मॉड जी ॥ ३ ॥
 जो जॉण जॉणनें सलध वेंहरें, तलण लीप दीयो ऑललर जी ।
 ए प्रतख सॉह्यो ऑण्यो लेवे, त्यॉनें कलम कहलजें अणगलर जी ॥ ॡ ॥
 ए अणललर उघलडें सेवें, जे सॉह्यो ऑण्यो ले ऑललर जी ।
 ए दसवीकलक तीजें अधेनें, कोइ जोवो ऑलख उघलड जी ॥ ५ ॥
 सलध सलधवी ठरलें मलतर, एकण दरवलजें जॉय जी ।
 वीर वऑन सू उलठल पडीयल, ए ऑीडें कीयो अन्यलय जी ॥ ६ ॥
 गलम नगर पुर पलटण पलडो, तलणरो हुवें एक नीकल जी ।
 तलहॉ सलध सलधवी न रहें भेलल, ऑ वॉधी भगवंत पलल जी ॥ ७ ॥

* यह ऑकड़ल प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

आचार री चौपई : ढाल १२

एकण दरवाजे साध साधवी, जो जाए नगरी वार जी ।
 तो अपरतीत उठे लोकां में, केइ विरत भांगी हुवे खुवार जी ॥ ८ ॥
 जुदो जुदो नीकाल छतो पिण, कोइ जाए एकण दरवाज जी ।
 ते घेठा हटक न माने किणरी, वले नांणे मन मे लाज जी ॥ ९ ॥
 एक नीकाल तिहां रहणोइ वरज्यों, तो किम जाए एकण दुवार जी ।
 ए वेतकल्प रें पेहले उदेसैं, ते वुधवंत करो विचार जी ॥ १० ॥
 ग्रहस्थ रे घरे जाए गोचरी, जो जोडीयो देखें दुवार जी ।
 तिहां सुध साध तो फिर जाए पांछ्या, भागल जाए खोल किवाड जी ॥ ११ ॥
 केई भेषघाख्यां रे एहवी सरघा, ग्रहस्थ रे जड्यो दुवार जी ।
 तो घणी तणी आग्या ले साध, मांहे जाए खोल किवाड जी ॥ १२ ॥
 हाथां सूं साध किवाड उघाडे, मांहे जाए वेहरण ने आहार जी ।
 इसरी 'ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वेकार जी ॥ १३ ॥
 किवाड उघाडनें वेहरण जाणरो, मूल न सरघे पाप जी ।
 कदा न गया तो पिण गया सारिषा, आ कर राखी छे थाप जी ॥ १४ ॥
 किवाड उघाडनें वेहरण जाए, तो हिंसा जीवां री थाय जी ।
 ते आवसग सूतर मे वरज्यों, चोथा अघेन रे मांय जी ॥ १५ ॥
 गाम नगर वारे उतरीयो, कटक सथवाडो ताहिजी ।
 जो साध रात रहे तिण ठामे, ते नही जिण आग्या मांहि जी ॥ १६ ॥
 एक रात रहे कटक मे तिणने, च्यार मास रो छेद जी ।
 ते वेतकल्प रे तीजे उदेसे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ १७ ॥
 इसरा दोष जाणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्म रीत जी ।
 एहवा मिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीत जी ॥ १८ ॥
 विण कारण आंख्यां में अंजण, घाले आंख मभार जी ।
 त्यांने साधवीयां किम सरधीजे, त्यां छोड दीयो आचार जी ॥ १९ ॥
 विण कारण जो अजण घाले, ते श्री जिण आग्या बार जी ।
 दसवीकालक तीजे अघेने, ओ उघाडो अणाचार जी ॥ २० ॥
 वस्त्र पातर पोथी पानादिक, जाए ग्रहस्थ रें घरे मेल जी ।
 पछें करे विहार दे घणी भलावण, तिण प्रवचन दीघां ठेल जी ॥ २१ ॥
 पछें ग्रहस्थ आंमा सांहा मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी ।
 तिण हिंसा सूं ग्रहस्थ नें साध, दोनूं भारी हुवे ताय जी ॥ २२ ॥
 भार पडावे ग्रहस्थ आगे, ते किम साधु थाय जी ।
 नसीत रे बारमें उदेसैं, चोमासी चारित जाय जी ॥ २३ ॥

बले विण पडिलेह्यां रहें सदा नित, ग्रहस्थ रा घर मांय जी ।
 ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवों सूतर रो न्याय जी ॥ २४ ॥
 जो विण पडिलेह्यां रहें एक दिन, तिणनें डंड कह्यो मासीक जी ।
 नसीत रे डूजें उदेसें, तिहां जोय करों तहतीक जी ॥ २५ ॥
 मात पितादिक सगा सनेही, त्यांरा घर में देखें खाल जी ।
 त्यांनें परिग्रहो साध दरावें, आ चोडें कुगुर री चाल जी ॥ २६ ॥
 सांनीकर साध दरावें रुपीया, वरत पांचमो भांग जी ।
 बले पूछ्यां भूठ कपट सूं वोलें, तिण पेंहर विगाडचों सांग जी ॥ २७ ॥
 न्यातीलां नें दांम दरावें, त्यांरें मोह न मिटीयों कोयजी ।
 बले सार संभाल करावें त्यांरी, ते निश्चें साध न होय जी ॥ २८ ॥
 अनरथ रो मूल कह्यो परिग्रहो, ठांणां अंग तीजें ठांग जी ।
 तिणरी साध करें दलाली, ते पूरा मूढ अयाण जी ॥ २९ ॥
 रित उनालें पांणी ठारें, ग्रहस्थ रा ठाम मफार जी ।
 मन मानें जव पाछा सूंपें, ते श्रीजिण आग्या वारजी ॥ ३० ॥
 ग्रहस्थ तणां भाजन में साधु, जीमें असणादिक आहार जी ।
 तिणनें मिष्ट कह्यो दसवीकाल में, छठा अघेन मफार जी ॥ ३१ ॥
 केइ सांग पहर साधवीयां वाजें, पिण घट में नहीं ववेक जी ।
 आहार करें जव जडें किवाड, दिन में वार अनेक जी ॥ ३२ ॥
 ठरलें मातरे गोचरी जाए जव, आडा जडें किवाड जी ।
 बले साध कनें आवें तोही जडलें, त्यांरो विगड गयो आचार जी ॥ ३३ ॥
 साधवीयां नें जडवो चाल्यो, ते सीलादिक राखण काज जी ।
 ओर कांम जो जडें साधवीयां, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ३४ ॥
 आवसग में हिंसा कही जडीयां, आलोवण खातें ताहि जी ।
 मन करने जडणो नहीं वांछे, उत्तराघेन पेंतीसमां मांहि जी ॥ ३५ ॥
 ओषध आद दे वेंहर आणें, केइ वासी राखें रात जी ।
 ते जाय मेलें ग्रहस्थ रा घर में, पछें नित ल्यावें परभात जी ॥ ३६ ॥
 आपरो थको ग्रहस्थ नें सूंप्यो, ए मोटों दोष पिछांण जी ।
 बले वीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजेंयणा जांण जी ॥ ३७ ॥
 बले चोथो दोष पूछ्यां भूठ वोलें, वासी राख्यो न कहें मूढ जी ।
 केइ भेषघारी छें एहवा भागल, त्यांरें भूठ कपट छें गूढ जी ॥ ३८ ॥
 ओषध आद दे वासी राख्यां, वरतां में पडें वगार जी ।
 कह्यो दसवीकालक तीजें अघेनें, वासी राखें तो अणाचार जी ॥ ३९ ॥

केइ आघाकरमी पुस्तक वेंहरे, वले तेहिज लीघो मोल जी ।
 ते पिण सांहो आंण्यो वेंहरे, त्यारे पूरी जाणजो पोल जी ॥ ४० ॥
 कोइ आप कनें दिख्या ले तिणरे, सांनीकर मेलें साज जी ।
 पुस्तक पांनादिक मोल लरावे, वले कुण कुण करे अकाज जी ॥ ४१ ॥
 गछ्वासी परमुख आगा सूं, लिखावे सूतर जाण जी ।
 पेंहला मोल कराय परत रो, सचकार दरावें आंणजी ॥ ४२ ॥
 खीया मेलावे ओर तणे घर, इसडो सेठो करे काम जी ।
 ते पिण हाथे परत आयां विण, दिख्या दे काढे ताम जी ॥ ४३ ॥
 पछे गछ्वासी कवल सूं डरतो, परत लिखे दिन रात जी ।
 जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करे तस थावर री घातजी ॥ ४४ ॥
 इण विध साध परत लिखावें, तिण संजम दीघो खोय जी ।
 जे दया रहीत छें एहवां दूधी, ते निश्चे साध न होय जी ॥ ४५ ॥
 छकाय हणीने परत लिखी ते, आघाकरमी जाण जी ।
 ते हिज परत जो साध वेहरे, ए भागल रा अहलाण जी ॥ ४६ ॥
 वले तेहिज परत टोलां मे राखें, आघाकरमी जाण जी ।
 जे सेमल हुवा ते सगला बूडा, तिणमे संका मत आण जी ॥ ४७ ॥
 आघाकरमी रा लेवाल रुले तो, उतकष्टो काल अनंत जी ।
 दया रहीत कहो तिण साध ने, भगोती में भगवंत जी ॥ ४८ ॥
 कोइ श्रावक साध समीपे आए, हरखे वांदे पग झाल जी ।
 जब साध हाथ दे तिणरे माथे, आ चोडे कुगुर री चाल जी ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रें माथें हाथ देवे ते, ग्रहस्थ बरोबर जाण जी ।
 एहवा विफलां ने साध सरधे, ते पिण विकल समांण जी ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थ रे माथें हाथ दीयो तिण, ग्रहस्थ सू कियो सभोग जी ।
 तिणने साधु किम सरधीजे, लागो जोग ने रोग जी ॥ ५१ ॥
 दसवीकालक आचारंग मांहे, वले जोवो सूतर नसीत जी ।
 ग्रहस्थ रें माथे हाथ दीयो ते, आ प्रतख उंधी रीत जी ॥ ५२ ॥
 वले चेला करें ते चोर तणी परे, ठग पासीगर ज्यूं ताम जी ।
 वले उजबक ज्यूं तिणनें उचकाए, लेजाय मूंडे ओर गाम जी ॥ ५३ ॥
 आछो आहार दिखाए तिणनें, कपडादिक मही दिखाय जी ।
 इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलाने मूंडे भरमाय जी ॥ ५४ ॥
 इण विध चेला कर मत वांघे, ते गुण विण कोरो भेष जी ।
 साधपणा रो सांग पेहर ने, भारी हुवे वशेष जी ॥ ५५ ॥

मूंड मूंडावी भेला कीघा, त्यासूं पलें नहीं आंचार जी ।
 भूख तिरखा पिण खमणी नावें, जब लेवें असुख पिण आहार जी ॥ ५६ ॥
 अनल अजोग नें दिख्या दीघां, तो चारित रो हुवें खंडजी ।
 नसीत रे उदेसैं इग्यारमें, चोमासी रो डंड जी ॥ ५७ ॥
 ववेक विकल बालक बूढा नें, पेंहरावें सांग सताव जी ।
 त्यांनैं जीवादिक पदारथ नव रा, जावक नावें जावजी ॥ ५८ ॥
 सिष्य करणों तो निपुण बुधवालो, जीवादिक नव जाणें ताहिजी ।
 नहीं तों एकल रहणों टोला में, उत्तराधेन बतीसमा मांहि जी ॥ ५९ ॥
 केई दडें लीपें हाथां सू थांनक, ते पिण ढलीया कूट जी ।
 इसरो काम करें तिण साधु, पाडी भेषमें फूटजी ॥ ६० ॥
 जो दडें लीपें थांनक नें साधु, तिण श्री जिण आग्या भंग जी ।
 तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंग जी ॥ ६१ ॥
 छ्ती साधवीयां टोला मांहें, वले कारण पिण न पड्यो कोय जी ।
 तोही दाय साधवीयां रहें छें, ओ दोष उघाडो जोय जी ॥ ६२ ॥
 पवित्रणी रहें दाय साधवी, ते जिण आग्या में नांहि जी ।
 त्यांनैं वरज्यो ववहार सूतर में, पांचमां उदेसा मांहि जी ॥ ६३ ॥
 कारण विण एकली साधवी, असणादिक वहरण जाय जी ।
 वले ठरले पिण एकलडी जावें, ते नहीं जिण आग्या मांय जी ॥ ६४ ॥
 वले एकलडी नें रहणों वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी ।
 ते वेतकल्प रें पांचमें उदेसे, ते समभ्रों आंग ववेक जी ॥ ६५ ॥
 कुगुरु एहवा हीण आचारी, साघां सू दे भिडकाय जी ।
 आप तणां किरतव सू डरता, जिण मारग दीयो छिपाय जी ॥ ६६ ॥
 इसडा कुगुरु नें गुरकर मांनैं, त्यारें अभितर में अंधकार जी ।
 गुर में खोटो खाय अग्यानी, चाल्या जनम विगाड जी ॥ ६७ ॥
 उसभ करम ज्यारे उदें हुवा जब, इसरा गुर मिलीया आय जी ।
 दग्ध बीज हो जावक बूढा, पछें चिहूंगति गोता खाय जी ॥ ६८ ॥
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी, छोडो कुगुर नो संग जी ।
 सत गुर सेवो सुध आचारी, दिन दिन चढतें रंग जी ॥ ६९ ॥
 आ सभाय करी कुगुरु ओलखावण, पीपाड सहर मझार जी ।
 समत अठारे वरस चोतीसे, आसोज सुद सातम बुधवार जी ॥ ७० ॥

ढलल : १३

दुहा

केई सावु नांम धराय ने, सेवें दोष अनेक ।
त्याने ठीक नही त्यांरा दोष री, ते सुणजो आंण ववेक ॥ १ ॥

ढलल

[मगध देस को राजा राजेसर]

केइ भंगी रा धर री रोटी तो खारें, पिण भंगी री भीटी न खारें ।
इसडी उत्तमाई देखी विकलां री, डाहा ते इचर्य पावे रे ।
जोवें हिरद विचारी, थे छोडो कुगुर री लारी रे ।
कुगुर हीण आचारी* ॥ १ ॥

ज्यूं केई हाथा सूं जडें उघाडे किंवाड, ग्रहस्थ उघाड दीयां करें डालें ।
इसडों आचार देखो कुगुरां री, ते प्रतष दाल मे कालो रे ॥ २ ॥
ग्रहस्थ उघाडे आहार बेहरावें, ते बेहरें नही दोष जाण ।
हाये जड्यां उघाड्यां री दोष न जाणें, इसडा छें मूढ अयांण रे ॥ ३ ॥
गोचरी जाए जब जडें किंवाड, पाछा आयां पिण खोलें किंवाड ।
ग्रहस्थ रे घरे गयां खोल ने पेसे, इसडों कुगुरां री आचार रे ॥ ४ ॥
ज्याने साव सरधें त्याने भेला न राखें, एकण थानक मांहि ।
त्यानें पूछ्यां कहे म्हांरे नही संभोग, तिणसूं भेला उतरां नांहि रे ॥ ५ ॥
इम कहि कहि राते भेला न राखें, एकण थानक मांय ।
तो यारे ग्रहस्थ सूं संभोग किसों छे, तिणनें माहें राखें कांय रे ॥ ६ ॥
ग्रहस्थ नें भेलां राखे सांघां ने नही राखें, ओ दोनूं कांती देवालो ।
यां दोनूं बोलारो प्रायच्छित आवें, सूतर नसीत संभालो रे ॥ ७ ॥
कोइ सुघ साघां रा कुल गण मांहें, भेद पाडें कर कर तांण ।
तिणने प्रायच्छित दसमो आवे, ठांणा अंग रे पांचमें ठांण रे ॥ ८ ॥
जो दोषीलां सूं संभोग तोडे तो, प्रायच्छित मूल न आवें ।
वले त्यां दोषीलां ने तेहिज वादे, तो सगला सरिषा थावे रे ॥ ९ ॥
कदा आप दोषीलां नें बंदणा छोडें, तो पिण श्रावकां नें डूकावें रे ।
ते आप तणां मुतलब रें अर्थे, ठगा सूं काम चलवें रे ॥ १० ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले धर्म कहें दोषीलां नें बांधा,
 तिण समकत सहीत साधपणों खोयो,
 त्यां दोषीलां नें साधां बंदणा छोडी,
 तिणनें त्यांरा गुर री परतीत न आई,
 ज्यांरी परतीत थी त्यां बंदणा छोडी,
 इसडों अंधारों छें घट भितर जेहनें,
 ज्यांनें दोषीलां सरधें त्यांनें हिज वांदे,
 ते सममें नहीं घमडोल में पडीया,
 डीला भागल नें साध वांदे नहीं,
 तो थावक थावका वांदसी त्यांनें,
 जे घर हुवो असुभक्तो तिण दिन,
 जो उणहीज दिन तिण घर रों वेंहरें,
 पेंहला तो ज्यां घरां रो धोवण जाय ल्यावें,
 पछे तिण दिन तिण हीज टोलारा,
 उणहीज दिन उणहीज टोलारा,
 असुभक्तो हुवो घर नहीं वतावें,
 इम प्रतप आहार असुभक्तो खावें,
 ते साधपणां रो नांम धरावें,
 कोइ कहें म्हें नितको एकण घर रों,
 म्हें धोवणादिक वेंहरां ते न्हांखी तो,
 तो पेंहलें दिन जिण घर जाय वेंहख्यों,
 बीजें दिन बीहर करतां नित वेंहरें,
 उन्हीं पांणी पिण नितकों वेंहरें,
 त्यांनें पूछें पांणी नितकों कांय वेंहख्यों,
 केइ पाडा बंध गोचरी वरजेनें,
 सिष्य सिष्यणी सगला नें मेलें,
 एक दोय सिषाडे पेंहलें दिन वेहख्यों,
 नितरो नित वेंहख्यों एकण टोला रां,
 केई एकण गुर रा सिष्य सिष्यणी छें,
 ते गोचरी जाए विण पूछ्यां मांहोमां,
 उण वेंहख्यों ते घर बीजा न टालें,
 नितरो नित वेंहरें एकण टोला रा,

तिणरें आय चूको मिथ्यात ।
 उंधीं सरधें सूतर री बात रे ॥ ११ ॥
 त्यांनें थावक थाविका वांदें ।
 जिण धर्म न ओलख्यों आंधें रे ॥ १२ ॥
 तो आप वांदें किण लेखें ।
 ते सूतर न्याय न देखें रे ॥ १३ ॥
 इसडी ज्यांरें भोलप मोटी ।
 सरधा भाल रह्या छें खोटी ॥ १४ ॥
 लागतो जाणें पाप करम ।
 किण विध होसी धर्म रे ॥ १५ ॥
 जिण दिन वेंहरणों नांहि ।
 तो भागल री पांत मांहि रे ॥ १६ ॥
 त्यां कठें असुभक्तों होय जावें ।
 विण पूछ्यांही वेंहरी ल्याय रे ॥ १७ ॥
 मन मानें तिण घर जावें ।
 विण पूछ्यांही वेंहरी ल्यावें रे ॥ १८ ॥
 त्यांमें आछी अकल किम आवें ।
 इण लेखें दुरगत जावें रे ॥ १९ ॥
 नहीं वेंहरां आहार नें पांणी ।
 ओ पिण भूठ बोलें छें जांणी रे ॥ २० ॥
 असणादिक च्याळं आहार ।
 जब कठी गयो आचार रे ॥ २१ ॥
 कलालादिक रें घरे जाय ।
 जब साच बोल्यों नहीं जाय रे ॥ २२ ॥
 फूटकर घरां रे मांय ।
 तिहां वेंहरें नितरा नित जाय रे ॥ २३ ॥
 केकां वेंहख्यों बीजें दिन जाण ।
 गुर रें पास मेल्यो आण रे ॥ २४ ॥
 च्यारां पांचा जायगां रहें ताय ।
 एकण घर पिण वेंहरें आय रे ॥ २५ ॥
 बीजां वेंहख्यो ते ओ पिण न टालें ।
 अणाचार नें कुण संभालें रे ॥ २६ ॥

इत्यादिक वले कूड कपट सूँ,
 ते अणाचारी उघाडा चोडें,
 च्यार पांच साध किहां रह्या चोमासे,
 तो संकडाई पिण न पडें तिणां रे,
 च्यार पांच अनेक भेला रहें साध,
 तो एकण दिन एकण घर मांहे,
 केई साध नांम धरावें त्यांरो,
 आहार पांणी तणां प्रिधी छें गाढा,
 इग्यारें संभोग तो भेला राखें,
 ते नितरो. नित एकण घर वेहरण,
 ते पिण मांहीमां देवें लेवें,
 ते नित्य पिंड एकण घर रो खावें,
 सदा भेला रहे नित इण सरधा सूँ,
 ते पेटभरा साध रा भेष मांहे,
 कोइ कारण वशेष रोगादिक आयां,
 राग वेष रहीत कोइ कारण बतावें,
 जे जे बोल सूतर में नांहीं,
 ते प्रतख नित नित वेंहरे एकण घर,
 पांणी न वेहरें ने धोवण वेंहरे,
 धोवण मांहे तो वले छे असणादिक,
 ते धोवण ने पाणी मांहे न गिणें,
 पांणी तो च्यार आहारां में आयो,
 केई च्यारांई आहारां रो उपवास करे छे,
 जे धोवण पांणी मांहे नही तो,
 इकवीस जातरो पांणी चाल्यो,
 जे धोवण वेंहरेनें पांणी न वेहरे,
 जो आप तणो वेहख्यो आप खावे,
 तो जूओ जूओ वेंहख्यो आण खाधा रों,
 तो जोड करीयानि ओलखावण,
 आप थापी नें आप उथापें,
 निरवद किरतब कहि कहि मूढें,
 पिण सुध साबां नें दोषीला व्हरावण,
 १०४

एकण घर वेंहरे नितको आहार ।
 ते पिण बाज रह्या अणगार रे ॥ २७ ॥
 आप आपरो वेंहख्यो खावे ।
 सगला रे साता होय जावें रे ॥ २८ ॥
 ते जूजूवा वेंहरण जावे ।
 सगलाई वेंहरण आवे रे ॥ २९ ॥
 आचार छें घणों अजोग ।
 तिणसूं तोडें मांहीमां संभोग रे ॥ ३० ॥
 न्यारो करें आहार नें पांणी ।
 त्यांरा कपट ने लीजो पिछांणी रे ॥ ३१ ॥
 तो भेलोइज आहार नें पांणी ।
 त्यांरा चारित री धूर घांणी रे ॥ ३२ ॥
 सदा नित पिंड इण विध खावें ।
 ठागा सूँ काम चलावे रे ॥ ३३ ॥
 नित पिंड ओषध ज्यूं खावें ।
 ते तो निषेधणी नावे रे ॥ ३४ ॥
 ते वांघणो जीत आचार ।
 ओ तो उघाडो अणाचार रे ॥ ३५ ॥
 ते पिण सरधा खोटी ।
 ते वेहख्यां छें भोलप मोटी रे ॥ ३६ ॥
 ओ पिण मोटो अंधारो ।
 पिण धोवण नही त्यां बारो रे ॥ ३७ ॥
 ते धोवण पीवें नांही ।
 क्यूं न पीवें उपवास मांहीं रे ॥ ३८ ॥
 ते धोवण पांणी एक जात ।
 त्यांरी मूरख माने वात रे ॥ ३९ ॥
 तो इसडो इज हुवें आचार ।
 दोष नहीं छे लिंगार रे ॥ ४० ॥
 यांरोइज ओलखायो आचार ।
 बोले नहीं वंघ लिंगार रे ॥ ४१ ॥
 पीढीयां खप करता आवें ।
 तिणमें हीज दोष बतावें रे ॥ ४२ ॥

कोड थाप तणों नाक जावक कादें, पेंहला नें कुसावण काजें ।
 ज्यू सावां नें दोपीला थापण, आप. दोपीला होता न लाजें रे ॥ ४३ ॥
 जिण जिण किरतत्र माहें दोपण थापें, ते छोड वतावें तो सुरा ।
 विण छोड्यां गेंहला ज्यू गूजें, ते साव मारग श्री दूरा रे ॥ ४४ ॥
 दोप वतावें पिण छोडणी नावें, वले साव नांम धरावें ।
 वार वार तेहीज वातां करतां, निरलजा नें लाज न आवें रे ॥ ४५ ॥
 सुध वुध विनां विचार्यां वोलें, ते होय वेंठा छें भडंग ।
 त्यांसू चरचा तणों कदे कांम पडें तो, जांणक वोलें जडंग रे ॥ ४६ ॥
 इसडा छें कुगुर हीण आचारी, ते पिण रावें छें मुगत री आसो ।
 ग्यांनी पुरप इसडा विकला रों, देख रह्या छें तमासो रे ॥ ४७ ॥
 कांणी काजल घाले तिण थावें, ते सोभा न पापें लिगार ।
 जो आचार वतावें पिण पातें न पालें, ते पिण मूड गिवार रे ॥ ४८ ॥
 जे अणाचारी थका आचार वतावें, ते यूही अन्ह्याखी कूकें ।
 जाणें गायं तणां टोळारे मांहि, निकेवळ गवा ज्यू भूके रे ॥ ४९ ॥
 साव मन करणें नहीं वांछें किवाड, उत्तरावेन पेंतीसमें चाल्यो ।
 पिण जडवो उघाडवो वरज्यो न दीसें, ओ घोचो कुगुरां रो घाल्यो रे ॥ ५० ॥
 मन करणें किवाड न वांछणों, ते जडवारो परमारथ जाणों ।
 थे हाथा मं जडो उघाडो किवाड, तिणसूं उलटी मतं तांणो रे ॥ ५१ ॥
 असणादिक च्याहई आहार, साव मन करें न वांछें रातो ।
 ते तो परमारथ ग्वावारो जाणों, थे सरवो सूतर री वातो रे ॥ ५२ ॥
 मन करणें साव अस्त्री न वांछें, ते परमारथ सेवारो जाणों ।
 धर्म परमारथ वंछां करें तो, सावद्य कदेय म जाणों रे ॥ ५३ ॥
 मन करणें साव किवाड न वांछें, ते तो जडवा उघाडवा कांमो ।
 तिण किवाड उपर सूवें वेंसैं इत्यादिक, तो दोप नहीं छे तांमो रे ॥ ५४ ॥
 मन करणें साव धन न वांछें, ते तो राखवा काजें ।
 पिण थानक माहें धन पडियो देखें तो, साव रों विरत मूल न भाजें रे ॥ ५५ ॥
 चंद्रवादिक साव मनकर न वांछें, पिण तिहां रहीतां दोप न लागें ।
 पिण छूटा चंदवा नें हाथां सूं वांघें, तो साव तणो विरत भागें रे ॥ ५६ ॥
 ज्यू मन करे साव किवाड न वांछें, तिहां रहीतां दोप न लागें ।
 पिण तेहीज किवाड जडें उघाडें, तो पेंहल्यो माहावरत भागें रे ॥ ५७ ॥

ढलल : १४

दुहल

भेषधरल वलगडुधल घणलं, ते करुं अनेक अनुधलडु ।
ते नलंम धरलवे सलधु रू, डलण डलण धरुं रल खवर नकलडु ॥ १ ॥
तुडलंम कुूरलडरल करे घणलं, डूलें डूठ अथलग ।
नलरलज सुध डुध डलहलरल, डूलल डुगत रू डलग ॥ २ ॥
डूठल ने सलकुू करे, तलणरल डूषण देवे डलंक ।
सलकल ने डूठूँ करुं, ते डलण नलणुं सलंक ॥ ३ ॥
तुडलंम कुुडुडल कडलडुरलहल अतल घणल, सके नहल देतल अलल ।
तुडलंरू गुर सलहलतगण वलगलडूडू, तलणरू कुण कलडे नलकलल ॥ ४ ॥
तुडलं भेषधलरुडलं रल डूलेल तणल, एक इकुरुडु डलल वलत ।
तुडलंम धूगलडुसुतू डंड रहल, ते सुणडू वललुडलत ॥ ५ ॥

ढलल

[२ डूव डूह अशुकडुडल न अलशलधे]

कुूरल करे सलधरल भेषडूँ, वले डूठ डूले डलर डलडु रे ।
डूडू कुूरल करे छे तेहने, डेर डलखुडल अलवे छे तलडु रे ।
तूडे डूडूडू अंधलरू भेषडूँ ॥ १ ॥
तलणने कुूले कुूलल डलणे अलडूरू, थूरू डुरलडुखलत देवुं अलडू डू ।
तलण उडरलुं अलडु डलखुडल डूडू, उणरू डूडू डंड उथलडु रे ॥ २ ॥
रलग रू घललुडू थूडू डंड दे, तलणने उतरू डुरलडुखलत अलडु रे ।
डू उ डुरलडुखलत डंड लेवे नहल, तू उ सलध केडु कहलवलडु रे ॥ ३ ॥
कुूरने लेवे सुतर डलरकल, अरू डलसे देवे गललडु रे ।
डलणुं रखे कुूरल कुूलल डुवल, डूने डेर सलधडूणुं अलडु रे ॥ ४ ॥
गललणवललू कुूरल कुूलल करे, तलणने डेर डलखुडल दे डलणुं रे ।
कलहलने गललडल सुतर तेहने, डंड थूडू दे डूडु अडलणुं रे ॥ ५ ॥
अरू कने सुतर गललडूडूडू, कुूरल डलंकवल रल डन अलणुं रे ।
तलण कुूड कडुट केलडुडू घणू, डूडूँ तू कुूर तेहलडू डलणुं रे ॥ ६ ॥
अरू रे कहे सुतर गललडूडू, ते तू डूलू छे वलकल सडलंन रे ।
डूछे कुूरल कुूलल कुूलल तेहनी, गुर गुरणू ने कुूलल हेरलन रे ॥ ७ ॥

*डूह अलंकडू डुरतुडेक गलथल के अतुत डे डू ।

चोरी नें चाबी कीधी तेहनें, फेर दिख्या देवें तांय रे ।
 मुदें चोर नें दिख्या दें नहीं, एहवो करें अग्यानी अन्याय रे ॥ ८ ॥
 मुदें चोर नें दीख्या दे नहीं, आघो काडें थोडो दे दंड रे ।
 तिणनें पिण दिख्या देंगी फेरसूं, च्यार तीरथ में करणो भंड रे ॥ ९ ॥
 तिणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो सगलाइ मूंड गिवार रे ।
 एहवा नें आचार्य लेखवें, ते तो गया जमारो हार रे ॥ १० ॥
 वले केयक लिगडा नें लिगडीयां, ते तों करें मांहोमां अकाज रे ।
 चोथो वरत भांगें पापीया, लोकां री पिण नाणें लाज रे ॥ ११ ॥
 केयक वरत भांगें भेद सूं, ते तों मांहोमांहीं मिल जाय रे ।
 जो उ करें आलोवण तेहनें, फेर दिख्या देवें ते न्याय रे ॥ १२ ॥
 त्यारें भेद मांहें सेव्यो नहीं, त्यानें प्रायच्छित नावें लिगार रे ।
 तिणनें दिख्या देइ छोटो करें, ते तो पूरा मूंड गिवार रे ॥ १३ ॥
 दिख्या नावें तिणनें दिख्या दीए, तिण मोटो कीयो अन्याय रे ।
 तिणनें पिण दिख्या आवें फेर सूं, चोडें देखो सूतर रो न्याय रे ॥ १४ ॥
 जो उणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो उण टोलां में भोल्य जाण रे ।
 सगला बूडें छें बापडा, तिणरें केडें कर कर तांण रे ॥ १५ ॥
 भागलां नें कोड कसाई विचें, भूंडा कहें मुख सूं जाण रे ।
 इम भेषधारी बकता फिरें, त्यांरा बोलां री करजो पिछांण रे ॥ १६ ॥
 त्यांरा टोलां मांसूं केई नीकले, त्यानें दिख्या विनां ले मांय रे ।
 वले वादें पूजें सुध साध ज्यूं, त्यांसूं भिन नं राखें कांय रे ॥ १७ ॥
 कहता कोड कसाया सूं बूरा, त्यानें विनां दिख्या ले मांहि रे ।
 पछें पूछ्यांरो जाब न उपजें, तिणसूं बारें काढ्या ताहि रे ॥ १८ ॥
 एक दोय वरस भेला रह्या, वांदे पूजे भेलो कीयो आहार रे ।
 त्यानें फेर दिख्या आवें मूल थी, कोइ वुषवंत करजो वीचार रे ॥ १९ ॥
 कोइ साध कसायां भेलो रहें, एक दोय वरस परमाण रे ।
 जो उवे फेर दिख्या दें तेहनें, तिण लेखें त्यानेइ जाण रे ॥ २० ॥
 फेर दिख्या दीयां पिण तेहसूं, जो उवे भेलो करें आहार रे ।
 तो उवे सगला बूडा छें बापडा, साध तणो भेषधार रे ॥ २१ ॥
 केइ वरत पालें श्रावक तणां, इण साध तणां भेष मांय रे ।
 त्यानें दिख्या विनां मांहें लीयें, वादें पूजें तिणरा पाय रे ॥ २२ ॥
 त्यानें श्रावक पिण नहीं सरघता, खोटी सरधारो कहता एम रे ।
 त्यानें दिख्या विनां माहे लीयें, त्यानें साध कहिजें केम रे ॥ २३ ॥

दिख्या दीयां विनां माहें लीयां, तिणनें पिण दिख्या देंगी जाण रे ।
 गाला गोलो करें इण बात रो, सगला बूडा मूढ अयाण रे ॥ २४ ॥
 जो उणनें दिख्या देनं माहें लीयें, तो टलें सगलां रो संताप रे ।
 पछें भूठ बोले जो उ कपट सूं, तो उणरो उणनें इज लागें पाप रे ॥ २५ ॥
 केई भेषघाख्यां रा टोला मभे, एक उंधी घणीं छें रीत रे ।
 ते मुणतांइ इचर्य उपजें, नही न्याय मेलण री नीत रे ॥ २६ ॥
 सील भांगें त्यांरा टोलां मभे, तिणने फेर दिख्या दे तांम रे ।
 पिण छोट्यां रे पग पाडें नहीं, एहवा करे अग्यांनी कांम रे ॥ २७ ॥
 कहिवानें दिख्या दीवी फेर सूं, पिण डंड दीयो नही तिलमात रे ।
 बडो हूंतो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, त्यांरी मूरख माने बात रे ॥ २८ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखी, तिण चोडें चलायो भूठ रे ।
 उगरा टोलां माहें उण पापीये, कीधी कुसील सेवारी छूट रे ॥ २९ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखीया, तो कुण डरें करतो अकाज रे ।
 तिण टोलां रा लिगडा लिगडीयां, सील मांगता नांणे लाज रे ॥ ३० ॥
 सील भांगें तिणनें दिख्या दीये, सगलां सूं बडो राखें जाण रे ।
 एहवी मरजादा वांधी तेहमें, दीसे भागल रा अहलांण रे ॥ ३१ ॥
 वले विगड्यो टोलें जाणें आपरो, पडतो दीसें घणारो उघाड रे ।
 त्यांरा दोष ढांकण रे कारणे, कपटी एहवो वांध्यो आचार रे ॥ ३२ ॥
 केई टोलां में लूंठा घणां, केई वनीत छें त्यां मांहि रे ।
 ते अकारज कर दिख्या लीयें, ज्युरा ज्यूं बडा राखें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 लागबाजी हुवें रांक गरीब सूं, तिणरो करे तुरत उघाड रे ।
 तिणने तो दिख्या दे छोटी करे, सगलां रे पगे देवें पाड रे ॥ ३४ ॥
 प्रायच्छित्त सगलां ने नही दे सारिषो, जो उवे करे सारिषो अकाज रे ।
 आप छद्दि करें मन जांणीयो, त्यांने किम कहीजें मुनीराज रे ॥ ३५ ॥
 सील भांगे ने फेर दिख्या लीये, बडा रूहे करता ओ गाज रे ।
 तिण टोलारा लिगडा लिगडी, किम संक सी करता अकाज रे ॥ ३६ ॥
 वरत भांगें ने फेर दिख्या लीयें, बडांने लगावे पाय रे ।
 तिण श्री जिण वचन उथाप नें, चोडे कीधी बुडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 बडा आंगें करावें बंदणा, तिण कीयो विना रो नास रे ।
 एहवा भेषधारी भूला थका, राखें मुगत जावारी आस रे ॥ ३८ ॥
 भेषधारी भागल चौथा तणां, त्यांरी खबर पडे नहीं काय रे ।
 आगा ज्यूं टोलां में बंदावता, एहवी वीगामस्ती छें ताय रे ॥ ३९ ॥

भागल नें दिख्या दे बडो राखीयो, तिण टोलां में पूरो अंधार रे ।
 त्यांनैं वांदि पूजें गुर जाणनें, ते पिण बूडा कालीघार रे ॥ ४० ॥
 एहवा भेषघाख्यां रा टोला मभे, उघडी भागलां री खान रे ।
 त्यांनैं छोडे कोइ संजम लीयें, तिणनें फिर फिर करें हेंरान रे ॥ ४१ ॥
 त्यां भेलो रहें ज्यां लग गुण करे, पिण न करें तिणरो उघाड रे ।
 जोउ संजम ले साधां कनें, तिणनें भाडें फिर फिर लार रे ॥ ४२ ॥
 त्यांनैं खोटा जाणें नें छोडीयां, तो उवे बोलें अनेक विघ कूड रे ।
 पछें लागू थका बकवो करें, कूडा करें फेंन फितूर रे ॥ ४३ ॥
 त्यां माहें रहे त्यां लग तेहनी, करें कूडी घणी पखपात रे ।
 दोष हुवें ते सगला ढांकने, सवारलें तेहनी बात रे ॥ ४४ ॥
 त्यांनैं छोडें त्यांरा लागु घणां, तिणसूं पडवजीयो पूरो मिथ्यात रे ।
 तिणनें आल देता संके नहीं, भूठी कर कर अन्हाखी बात रे ॥ ४५ ॥
 केई भेषघाख्यां रा टोलां मभे, चोथा वरत सूं भागा अनेक रे ।
 त्यांरो लेखो कीयां तो रूड पडें, भगडें मूढ विनां ववेक रे ॥ ४६ ॥
 भेषघारी भागल नें छेडव्यां, तो उ भांबां घालें हाथ रे ।
 उलटा आल देवें पापीया, भूठी भूठी उठावे बात रे ॥ ४७ ॥
 त्यांरा भागलां नें चावा कीयां, करें ग्रहस्थ आगें पूकार रे ।
 केई ग्रहस्थ सुघ बुध बाहिरा, भगडो करवा नें हुवे तयार रे ॥ ४८ ॥
 ते तो कुगुरां रा 'भरमावीया, लडवा आवें भेली करें खेड रे ।
 उंधर बोलें अजोग बूरी तरें, जाणें जाग्यों पूर्वलों वेर रे ॥ ४९ ॥
 गुर गुरणी नें जाणें कुसीलीयां, ते किण विघ काडें निकाल रे ।
 उलटों आल देवें साघनें, अन्हाखी थका भाषें अलाल रे ॥ ५० ॥
 सती काढे कुसती रा खूंचणा, तो उवा बोलें आल पंपाल रे ।
 कूड कपट केवल नें पापणी, उलटो देवे सती सिर आल रे ॥ ५१ ॥
 कुसती डरे नहीं सील भांगती, तो उवा किम डरें देती आल रे ।
 तिणसूं सती डरें कुसती थकी, ते तो लोकीक सांहो न्हाल रे ॥ ५२ ॥
 ज्यूं भेषघारी भागल घणां, त्यांरो कुण काडें निकाल रे ।
 भगडो भालें पापी तेहसूं, उलटो देवें अन्हाखी आल रे ॥ ५३ ॥
 अकार्य करता डरें नहीं, तो ए किम डरे देता आल रे ।
 एहवां भेषघारी भागलां तणो, कहो किण विघ काडें निकाल रे ॥ ५४ ॥
 आपणा दोषण नें ढांकवा, पापी बोले अनेक विघ कूड रें ।
 त्यांने छेडवीयां गलें पडें, त्यांसू बुधवंत रहजो दूर रे ॥ ५५ ॥

भेषधारी भागल तूटल घणां, होय बेठा बाबा रा धीग रे ।
 वेसरमा सुघ बूध बाहिरा, सांझ्या मांडें साचां सूं सीग रे ॥ ५६ ॥
 आपणा किरतव देखे नही, हाथां सूं चावा हुवे मत हीण रे ।
 त्यांरा दोष परगट हुवां परजळे, पछे भाषें लोकां आमें रीण रे ॥ ५७ ॥
 एहवा भेषघाख्यां नें गुर करें, ते तो गया जमारो हार रे ।
 ते तो जासी नरक निगोद मे, तिहां खासी अनंती मार रे ॥ ५८ ॥
 छेदन भेदन पांमसी अति घणीं, तिहां सुख नहीं लवलेस रे ।
 परमाघांमी रे पांनं पड्यां, पांमं दुख असाता कलेस रे ॥ ५९ ॥
 इम सुण सुणनं नर नारीयां, सतगुर सेवो रूडी रीत रे ।
 भेषधारी भागल नें परहरें, राखो सुघ साचां री परतीत रे ॥ ६० ॥
 भेष अंधारी परगट करी, आणंदपुर सहर मझार रे ।
 समत अठारे तेतीसे समें, वेसाख सुद इग्यारस रिखवार रे ॥ ६१ ॥



ढाल : १५

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभाया सर्व साध ।
 मुगत नगरनां दायका, ए पांचूं पद आराध ॥ १ ॥
 बांदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमाय ।
 गुण ओलख बंदणा कीयां, भव भव रा दुख जाय ॥ २ ॥
 साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण भाष्या तीरथ च्यार ।
 छोटी मोटी माला गुण रतनां तणी, त्यांनें सीख कहुं हितकार ॥ ३ ॥
 साध साधवी श्रावक श्रावका भणी, चालणो इण मरजाद ।
 दोष देखे तो तुरत बतावणो, ज्यूं वधें नहीं विषवाद ॥ ४ ॥
 कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, ओर साधां सिर दे आल ।
 त्यांमें घणां दिन दोष कहें घणां, तिणरो किण विध काढे निकाल ॥ ५ ॥
 ओरां में बतावे दोष घणां दिनां, तिणरी मूल न मानणी बात ।
 आ बांदी मरजादा सर्व साधनें, ते लोपणी नहीं तिलमात ॥ ६ ॥
 तोही दोष काढे घणां दिनां, वले भूठो करें विषवाद ।
 ते अपछंदा निरलज नागडा, तिण लोप दीघी मरजाद ॥ ७ ॥
 इसडा अजोग नें अलगो कीयां, जब उ काढे दोष अनेक ।
 वले ओगुण काढे अति घणां, तिणरी बात न मानणी एक ॥ ८ ॥
 इण रीते साधनें चालीयां, किणरे संका पडे नहीं काय ।
 वले वशेष परगट कहुं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[डाम मुंजादिकना डोरी]

हिचे सांभलजो नर नार, सुध साधां तणो आचार ।
 कदा कर्म जोगे दोष लागे, तो प्रायच्छित्त लेणो गुर आगे ॥ १ ॥
 कोइ गण मांहें दोष ल्गावे, ते निजर आपरी आवे ।
 ते नहीं राखणो दाब, उणनें कही देणो तुरत सताब ॥ २ ॥
 गुर चेला नें गुर भाइ मांई, दोष देखे तो देणो बताई ।
 त्यांसूं पिण करणो नहीं टालो, तिणरो काढणो तुरत निकालो ॥ ३ ॥

कोइ दोष जाणीनें सेवे, तिणरो प्रायच्छित पिण नहीं लेवे ।
 तिणनें कर देणो गणसूं न्यारो, कुण डूबसी तिणरी लारो ॥ ४ ॥
 दोषीला सूं करे आहार ने पाणी, तिणरो चारित्र हुवे धूल घाणी ।
 दोषीलां नें राखे गण माय, तो सगलाइ मिट्टी थाय ॥ ५ ॥
 गुर रो दोष चेलो ढांके, मूढे पिण कहितो सांके ।
 तिणरे रहगइ भोलप मोटी, घर छोड हुवो छे खोटी ॥ ६ ॥
 किणरो द्वेषी कोइ होय जावे, तिणमें दोष अनेक बतावे ।
 कहे म्हे छानां राख्या दोष जाण, म्हें राखी घणा दिन काण ॥ ७ ॥
 घणा दिना रा दोष बतावे, ते तो मानवा मे किम आवे ।
 साच भूठ तो केवली जाण, छदमस्थ प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
 हेत मांहि तो दोषण ढाके, हेत टूटां कहतो नहिं सांके ।
 तिणरी किम आवे परतीत, उणनें जाण लेणो विपरीत ॥ ९ ॥
 इण दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नहिं डरियो लिंगार ।
 हिवें आल देतो किम डरसी, उणरी परतीत मूरख करसी ॥ १० ॥
 इण दोष क्याने किया भेला, इण क्यू न कह्यो उण बेलों ।
 इणरी साच तणी रीत हुवे तो, उणरो उण दिन कह्यो ॥ ११ ॥
 जद ऊ कहे न कह्यो डरते, गुर सूं पिण लाजां मरते ।
 जब उणने कहिणो पाछो, तोने किण विघ जाणा आछो ॥ १२ ॥
 थें दोषीला सूं कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग ।
 थारी परतीत नावे म्हाने, इणरा दोष राख्या ते छानें ॥ १३ ॥
 थे तो कियो अकारज मोटो, जिन मार्ग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट हुइ मति बुद्ध, हिवे प्रायच्छित ले हुय सुद्ध ॥ १४ ॥
 उणने पूछ्यां ऊ आरे होय, तो उणने प्रायच्छित देसां जोय ।
 जो ऊ पूछ्यां आरे नही होय, तो उणसूं जोर न लागे कोय ॥ १५ ॥
 उणरी तो थारा कह्या सूं सक, पिण तूं तो दोषीलो निसंक ।
 इम कहि तिणने घालणो कूरो, प्रायश्चित नहिं ले तो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥
 ज्यूं कोइ वले ने दूजी वार, किणरा दोष न ढांके लिंगार ।
 दोष ढाक्यां सूं हुवें खुवारी, टांको भल्ले तो अनंत ससारी ॥ १७ ॥
 संका सहित ने राखे माय, तो ओर साच दोषीला न थाय ।
 दोषीला ने जाणी राखे मांय, तो सगलाइ साच असाच थाय ॥ १८ ॥
 एक दोष सेवे नित साच, तिण संजम दियो विराच ।
 तिणने साच जाण बांदि कोय, ते अनंत संसारी होय ॥ १९ ॥

तो घणां दोष सेवे साख्यात, तिणनें जाण वादे दिन रात ।
 ते तो पूरा अज्ञानी बाल, ते रूळसी अनंतो काल ॥ २० ॥
 एक दोष रो सेवणहार, तिण बांदां बधे अनंत संसार ।
 तो तिणमें जाणे घणां दोष साल, त्यानें वांदां हुवे कवण हवाल ॥ २१ ॥
 जाण जाण दोषीला ने बांदे, जिण धर्म न ओळख्यो आंधे ।
 ते तो बूड गयो कालीघार, आरे कियो अनंत संसार ॥ २२ ॥
 छिद्रपेही छिद्र धारी राखे, कदे काम पडे जद कही राखे ।
 तिणमें साध तणी नहीं रीत, तिणरी कुण मानें परतीत ॥ २३ ॥
 एहवारो वचन मानें सांचो, तो जिनमत पड जाय काचो ।
 पछे हरकोइ दोष बतावे, हरकोई भूट चलावे ॥ २४ ॥
 उणरी मान्या ऊ होय जावे सूरु, तो जिनमत रो हुवे फितूरो ।
 शुद्ध साध हुवे मोत्यां री माल, त्यांरे हरकोइ दे काढे आल ॥ २५ ॥
 घणां दिनां काढे दोष विष्यात, तिणरी मूल न मानणी बात ।
 शुद्ध साधां री ए मरजाद, तिणसूं बधे नहीं विषवाद ॥ २६ ॥
 ओर साधां में दोषण देखी, तुरत कहे ते निरापेखी ।
 तिणरे मूल नहीं पखपात, तिणरी मानणी आवे बात ॥ २७ ॥
 किण में दोष परपूठ बतावे, ओर साधां नें आय सुणावे ।
 तिणरो किण विघ्न काढे निकाल, दोनूं भेला नही तिण काल ॥ २८ ॥
 एहवे कारण पड्यां करे जेज, ओर मुतलब सूं नही हेज ।
 दोष बांकण री नहीं नीत, आतो जिन मारग री रीत ॥ २९ ॥
 प्रायच्छित्त देवारा छे कामी, त्यांमें कदेय म जाणो खामी ।
 पछे करे दोग्यां ने भेला, निकाल काढे तिण बेलां ॥ ३० ॥
 जिणमें दोषण आप जाणे, प्रायच्छित्त देने आणे ठिकाणे ।
 उतावल सूं न करणो विगाडो, प्रायच्छित्त न ले तो कर देणो न्यारो ॥ ३१ ॥
 कदा सहज दोष छे ताय, दोनूं भगडे छे मांहोंमाय ।
 समझाय नही समझे ताय, तो केवल ज्ञानी नें देणो भलाय ॥ ३२ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषघाच्यां रा त्याग वेंराग मे, लक्षण नही तिलमात ।
विगे छोड बाजे वेरागीया, पिण एक इचर्य वालो बात ॥ १ ॥
उवे जाणे उत्तर गुण नीपनो, ते कर कर कूडी रूढ ।
मूल गुण सहीत उत्तर गुण, दोनूं विगड्या न देखे मूढ ॥ २ ॥
ते सूंस लोकां नें जणावता, नाणे मन में लाज ।
ठगबाजीगर नी परे, करे अनेक अकाज ॥ ३ ॥
केइ सूंस करे सुध बुध विनां, केइ मान वडाइ आंण ।
केई मसांणीया वेराग स्यूं, केइ सरमां सरमी जाण ॥ ४ ॥
त्यांसूं पछे न जाए पालीया, चोडे भांग्या पिण नही जाय ।
आरतघ्यानं में दिन नीकले, पिण कारी न लागे कांय ॥ ५ ॥
सूंस भागे पिण कपटी थकां, करे अनेक उपाय ।
ते तो ताके सेरी चोर ज्यूं, भेल सभेल कर खाय ॥ ६ ॥
त्यां विकलां रा सूंसां तणी, परतीत आवे केम ।
ते डाव धाव करे किण विघे, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[विछिया नी देशी]

केइ भेषघारी महीना मम्हे, पनरें दिन विगे त्यागे जांण रे ।
वेराग विण सुध बुध बाहिरा, त्यांरी बुंधवंत करजो पिछांण रे ।
ते पिण कहिवानें पनरें दिन कहे, तुम्हे जोयजो सुंस विकलां तणां ॥ १ ॥
पूरा त्याग परूपे भूठा थका, पिण आगार राखें अनेक रे ।
एहवो त्याग परंपरा वांधीयो, ओ पिण घटमें नही ववेक रे ॥ २ ॥
आप लूखो खाए पॅलें चोपड्यो, ते पिण जोरी दावे कराय रे ।
उ जां लग त्याग करे नही, तिणसूं अन्हाखी दें अंतराय रे ॥ ३ ॥
ओर इघको लेवे चोरटा थका, त्यां लग थोडो घालें चुगराय रे ।
उणनें त्याग वताय वताय रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

देखे' आप सूँ उघको खावतो, जब जागें अभितर घेष रे ।
 कूड कपट सूँ करें नपेघणां, तिण पहर विगाडयो भेष रे ॥ ५ ॥
 म्हां बरोबर त्याग कीयां पछें, विगें वांटे' देसां तोय रे ।
 तिणसूँ ते पिण त्यागें तिण विधें, इम सहु सरीषा होय रे ॥ ६ ॥
 विनां परिणामा सूँस करावीयां, इसको खेदो दीसें साख्यात रे ।
 त्यांरा सूँस पालण री विध सुण्यां, एक इचर्य वाली बात रे ॥ ७ ॥
 दोय च्यार जणां गया गोचरी, वेंहरी लाया पूरण आहार रे ।
 पिण विगें थोडो आयो देखनें, करें मांहोमांहीं मनवार रे ॥ ८ ॥
 जाणें थोडा विगें रे कारणें, म्हांरे कुण लगावें आज रे ।
 तिणसूँ नां कहें माथो धूणनें, पिण नाणें मुरख लाज रे ॥ ९ ॥
 न लगावें सर्व लोलपी थका, जाणें गिणती में दिन घट जाय रे ।
 जब मांहोमांहीं निंदा करें, घृत कपडा रें देवें लागाय रे ॥ १० ॥
 कोइ वधतो देखे' कलहो राड नें, कोइ डरतो थको मन मांय रे ।
 कोइ लाज सरम रो मारीयो, कदा थोडोसो देवें लागाय रे ॥ ११ ॥
 थोडो विगें खाधां वेदल हुवें, गिणती मां सूँ घटयो दिन जाण रे ।
 टाला टोलो करण खपे' घणुं, पिण पडी गला नें आंण रे ॥ १२ ॥
 घृत थोडोसो आयो देखनें, केई आहार रे देवें लागाय रे ।
 लेप लागे ते लूखा में गिणे', सूँस भांगेनें इण विध खाय रे ॥ १३ ॥
 आइ फीणा रोटी चूरमादिक, वले गलगली रोट्यां पूर रे ।
 पिण घी थोडो आयो देखनें, कपटी किण विध बोले' कूड रे ॥ १४ ॥
 म्हेँ आज तो आहार लूखो करां, न लगावां विगें नें कोय रे ।
 तिणसूँ फीणा रोटी चूरमादिक, लेवे' पातरा मां सूँ जोय रे ॥ १५ ॥
 चूरमा फीणा रोटीदिक मभ्भे, जो तिणमें घी हुवें पाव अघसेर रे ।
 भावे' जितो खाय लूखो गिणे', एहवो भेषघाख्यां रे अंधेर रे ॥ १६ ॥
 कोइ रांक थको बुध केलवें, घृत ले काढें तिण मांय रे ।
 तिणनें डरावे' लोलपी थका, वले भ्गाडो राड मचाय रे ॥ १७ ॥
 त्यामें रांक रहें छें जोवतो, लूंठो हुवे' तो खाए डराय रे ।
 धींगामस्ती नें आरतध्यान में, यांरा दुख माहें दिन जाय रे ॥ १८ ॥
 आपरें लूखो खाणो जिण दिने, कोइ आहार अपथ वेंहराय रे ।
 जब कपटी दगो करे' इण विधें, विगें भेलों लेवें तिण माय रे ॥ १९ ॥
 धापरें विगें खाणो जिण दिने, पेंलारें लूखो खाणो हुवे' आहार रे ।
 जब आवे रोटी चोपडी, तो घाल दे घृत मभ्भार रे ॥ २० ॥

कितल- एक घी खाए घणो, केकां नें घणों विगो भांय रे।
 जब कोयक कोरो घी पीवे, पिण लाजे नही मन मांय रे ॥ २१ ॥
 यांरा खावारा चरितं अनेक छें, ते तो पूरा कहा न जाय रे।
 बले वेंहर ल्यावण री विघ कहूं, ते पिण सुणीयां इचर्य थाय रे ॥ २२ ॥
 सहर जातां विघें गांवडां मभे, कोइ ग्रहस्थ विगों वेंहराय रे।
 थोडो आवतो देख लेवें नही, आगे मोटी आसा मन माय रे ॥ २३ ॥
 घणों विगो खावारें कारणें, लगतो खावे लूखो आण रे।
 ते तो सहर माहें गयां पछें, नित सरस विगो लें जाण रे ॥ २४ ॥
 घणों विगो ल्यावारी खप करे, ताक जाए ताजो घर जोय रे।
 न मिलीयां न खाए तेहनें, वेंरानी मत जाणो कोय रे ॥ २५ ॥
 जिण दिन विगों खाणो आपरें, जद जाए ताजो घर टाल रे।
 आप न खाए खाणो ओर रे, जब जोवें घर अवेवाल रे ॥ २६ ॥
 हुजें दिन विगों खावा कारणें, ताजा घर देवे टाल रे।
 ओरां नें पिण जावा हे नही, एहवी पेट री बांधें पाल रे ॥ २७ ॥
 विगो देवें न देवें तेहनां, सगला घर राखें टाल रे।
 आप मूतलब वेहरे तिण घरे, विण मूतलब देवें टाल रे ॥ २८ ॥
 आपरें लूखो खाणो जिण दिने, जब आगूच बोले एण रे।
 लूखो आवें ते वास वताय दे, तिणनें सरल कहिजें केण रे ॥ २९ ॥
 ते पिण पडीया पोमावता, ले ले त्याग रो मूरख कए रे।
 पिण खावा रो घ्यान मिटीयो नही, त्यां जनम विगाड्यो केण रे ॥ ३० ॥
 उवास करे जद पिण तेहनों, विगों खावारी न मिट्यो कए रे।
 ताजा घर थाप राखें पारणे, ओर साघ नें न हेण रे ॥ ३१ ॥
 कदा वीजें दिन घर हुवें असूभतो, काई आय पडे कएण रे ॥ ३२ ॥
 उसभ करम बांधेनें यूं ही रह्यो, पुन विनां विगों किय रे ॥ ३३ ॥
 ओर साघ नें अंतराय पाडियां, करम आठोइ उखण रे ॥ ३४ ॥
 तीस कोडाकोड सागर तणी, उतकछी वंधे कएण रे ॥ ३५ ॥
 पछें जिण गति जाए तिण गते, अवस आय कएण रे ॥ ३६ ॥
 आसा मांडें ते न पडे पावरी, चितवें ते कएण रे ॥ ३७ ॥
 विगों त्याग नें उत्तर गुण कीयां, जो पाले गए कएण रे ॥ ३८ ॥
 उत्तर गुण नही भांगां एकला, भांगां छे कएण रे ॥ ३९ ॥
 कोइ विगों वेंहरावें सुपातर जांगने, उलट कएण रे ॥ ४० ॥
 पिण विगों न खाणों आपरें, जद कएण रे ॥ ४१ ॥

कोइ लाज सरेम रो, घालीयो, विगें वेंहरावें दातार रे ।
 पिण आपरें खाणों जिण दिनें, ढीला मेलें कहें नांकार रे ॥ ३७ ॥
 आप विगें न खाए जिण दिनें, कोइ दातार विगें वेंहराय रे ।
 तो सूभता में संका घालनें, आप बुगल ध्यानी होय जाय रे ॥ ३८ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिनें, कोइ विगें देवें तिण काल रे ।
 असुध हुवें तो पिण छोडें नहीं, पूछेनें नहीं काढें नीकाल रे ॥ ३९ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिने, करें कुदम कुदा जाण रे ।
 आपरें नहीं खाणों तिण दिनें, वेंहर ल्यावें घर समुदाण रे ॥ ४० ॥
 एहवी ओघट घाट घटमें घणी, करें चाला चरित अनेकरे ।
 तिणरो भोलां नें रांक गरीब सूं, भेले रहीवा रो मन वशेष रे ॥ ४१ ॥
 जिण साथे गयां विगें मिलें घणों, तिण साथे मेल्यां हरषत थाय रे ।
 थोडो मिलें तिण साथे मेलीयां, तो धडक पडें मन मांय रे ॥ ४२ ॥
 ओ तो किणही एक आगें रखां थकां, चाला चरित कीया नही जाय रे ।
 जब साप ठोडी दव्या नी परे, दुख पावें घणों सीदाय रे ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाइ नें ओर साध सूं, इणरें किणसूं म जाणों पीत रे ।
 उणनें घणों विगें आण पोखीयां, तिणरोइ छें वनीत रे ॥ ४४ ॥
 तप करें विगें रें कारणें, तिणरा कुण कुण कहिजें दोष रे ।
 घणों खावानें मारें हिडवची, थोडें खायां न करें संतोष रे ॥ ४५ ॥
 विकल सूंस पालें इण विधें, ते तो निश्चें बूडा जाण रे ।
 वले सरधें साधपणों आपमें, ते तो मूढ मिथ्याती अयाण रे ॥ ४६ ॥
 एहवो त्याग परंपरा बांधनें, घाल्यो टोलां में मगडो राड रे ।
 हेत तूटे मांहोमांहीं तिम कीयों, ते तो पूरा मूढ गिंवार रे ॥ ४७ ॥
 थोडा घणां सांहो जोवे नहीं, सेजां आयो लगावें जाण रे ।
 परतीत उपजावें पालतो, तिणरा त्याग कीयां परमाण रे ॥ ४८ ॥
 समत अठारें बत्तीसैं समें, आसोज सुद बीज मंगलवार रे ।
 विकल पचखाणी परगट करी, खैरवा सहर मभार रे ॥ ४९ ॥

ढाल : १७

दुहा

कोइक रे माहोमां अडो अडी, कोइ आंणे मन वेंराग ।
जाव जीव विगें त्यागन करे, पछें कायर जाए भाग ॥ १ ॥
केई विगे खाए अपरेतीया, कदे हुवे अजीरण तांम ।
जावजीव विगे त्यागें तिण समे, त्यांरो कठण घणों छे कांम ॥ २ ॥
पछें भूरें रोट्यां देख चोपडी, इधकी लेवारें कांम ।
परठावणीया खावानें हीज रें, भूंडा रहे परिणाम ॥ ३ ॥
खाजा साकुली आया देखनें, मन मे रहे ओघट घाट ।
लाफसी सीरादिक जाणें आवीया, जोवे इधका लेवण री बाट ॥ ४ ॥
जो इधको न देवें तेहनें, तो जागें अभितर रोस ।
थाडी तेडी बातां घाली लडे, काढे अणहुंता , दोष ॥ ५ ॥
दुष्ट परिणाम रहे तिण उपरें, वले बांछें तिणरी अंतराय ।
वेर बुधी ज्यूं छिदर जोवतो, वले खुद्र परिणाम घट मांय ॥ ६ ॥
विकलां रा सूंस पचखांण सू, दिन दिन केतव थाय ।
ओर साधां ने उपसर्ग उपजें, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे लाल]

विकल सूंस करतां थकां रे, राखें अनेक आगार रे । सुगणनर* ।
ते करें विकलाइ अन्हाखी थका रे लाल, तिण घाली टोलां में राड रे । सुगणनर ॥
सुणजो सूंस विकलां तपां रे लाल* ॥ १ ॥
खावा नें मारें भाकुली रे, वले रहे निरंतर सोच रे ।
तिणरी विकलाइ देखने रे लाल, ओर साधां नें उपजे संकोच रे ॥ सु० २ ॥
विगे आयों देखें पातरे रे, ओर साधां नें खाता देख रे ।
तिणने टालेने देवें चोपडी रे, जब जागें मूरख ने धेख रे ॥ ३ ॥
जो टाल टालनें देवे चोपडी रे, वले सूखडी आदि देवें टाल रे ।
तो दबीयो थको पडीयो रहे रे, नही देंतो उठे घट भाल रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तिणसूं आडी तेडी बातां घालनें, करें खोटोराइ जाण रे ।
 काहें अणहंता खूंचणा रे, पग पग तांणा तांण रे ॥ ५ ॥
 पछें साथां नें सरधें लोलपी रे, वले बोलें अनेक विघ कूड रे ।
 आल देतों संके नहीं रे, तिणरा त्याग कीयां में घूर रे ॥ ६ ॥
 कोई सराग रो घालीयो रे, टाल देवें घणां रो आहार रे ।
 ते दोनूंइ चोर भगवानं रा रे, तीजो वरत भांजे हुवा खुवार रे ॥ ७ ॥
 कोइ विगें वेंहरावें तेहनें रे, तो नही वेंहरें मूंड अयांण रे ।
 ओरां री इरषा रो घालीयो रे, ए बूङ्गरा छें अहलांण रे ॥ ८ ॥
 दातार तो हरष पांमें घणों रे, नीठ मिलीयो सुपातर जोग रे ।
 उ उलट परिणांमा वेंहरावतो रे, पिण विकल पचखांणी नें सोंग रे ॥ ९ ॥
 एहवा विकल भेला रछ्यां रे, उ जद तद दावादार रे ।
 ते गुण कीयां पिण अवगुण गिणे रे लाल, वले छिदर गवेषणहार रे ॥ १० ॥
 इण विघ आगें बूडा घणां रे, त्यांरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते समकत बोध गमायनें रे लाल, गया नरक निगोद मम्हार रे ॥ ११ ॥
 वले बेला तेलादिक पारणें रे, विगें खाए विण मरंजाद रे ।
 ओरां नें राखें भीकता रे लाल, आप इधका करें विषवाद रे ॥ १२ ॥
 तपसा करें खावारें कारणें रे, ते पिण पूरा मूंड रे ।
 विगेंरो उद्यम करें पारणे रे, जाए ताजें ताजें घर ढूंड रे ॥ १३ ॥
 ते पेटभरा ठा भेष में रे, ते पिण बुगलध्यांनी होय जाय रे ।
 त्यां भोलां नें पाड्या भर्म में रे लाल, ताजा माल आंणी खाय रे ॥ १४ ॥
 वले वीहार गामां नगरां करें रे, पिण रहें निरंतर संताप रे ।
 मिगसर महीना थी मांडनें रे लाल, करे चोमासा री थाप रे ॥ १५ ॥
 गमतो खेतर देखीनें कहें रे, म्हे अठें करसां चोमास रे ।
 ओरां री म करजो वीणती रे लाल, यांरें मांहींमां नही वेसास रे ॥ १६ ॥
 मिगसर मास लागां पछें रे, मांडें घणीं दोडादोड रे ।
 जाणें मन चितवीया खेतर में रे लाल, रखे करें चोमासों ओर रे ॥ १७ ॥
 वले छती सगत फिरवा तणी रे, तोही थाणें वेंसें रहें जाण रे ।
 ताजो खाणों मिलें तिण सहर में रे लाल, पर रहें मूंड अयांण रे ॥ १८ ॥
 जो ताजो आहार मिलें नही रे, तो छोड दें थांणो सताब रे ।
 वले अलगो खेतर आछो मुणे रे लाल, तो जाय वेंसे खेतर दाब रे ॥ १९ ॥
 थाणें वेंसें लोलपी थकारे, वले कूडा कारण बताय रे ।
 त्यांमें दोषां रो थांग दीसें नहीं रे लाल, ते पूरा केम कहीवाय रे ॥ २० ॥

तिणने उपरलो आए मिले रे, तो छुडाय दे थाणों सताब रे ।
 विण परीणामां काहें दक्कायने रे लाल, पाडे तिणरी आव रे ॥ २१ ॥
 उ साध श्रावकां रो दबीयो थको रे, गयो अनेरे गांम रे ।
 पिण अंतरंग में दुखीयो घणो रे, इणरो छूटो ठिकाणो ठांम रे ॥ २२ ॥
 इणने एकंत लोलपी जाणनें रे, ओरांने देतो जाणे अंतराय रे ।
 वले आंगुण घणां जाणे तेहने रे, दीयो ठिकाणो छुडाय रे ॥ २३ ॥
 तोही ताणा बेजा तिणरे लागे रह्या रे, तिहां पाछा आवारा परिणाम रे ।
 जाणें चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो जाय बेसेसूं तिण ठांम रे ॥ २४ ॥
 सुखसाता आगा ज्यूं तिहां पावसू रे, इणरें इसरों छे मन वेसास रे ।
 इण आसा सूं दिन गिनतां थकां रे, पूरों करे छे चोमास रे ॥ २५ ॥
 चोमासो पूरों हूआं पछे रे, पाछो आय वेसे थाणें सताब रे ।
 तेतो लोलपी नगर पिंडोलीयो रे, तिणने खांणे कीयो छें खुराब रे ॥ २६ ॥
 कदेयक तो थाणें कहे रे, कदे कारण बतावें ताहि रे ।
 इणरें कूड कपट रो चालो घणो रे, तिणनें विकल राखें गण मांहि रे ॥ २७ ॥
 कल्प मरजादा भांगी लोलपी थको रे, तिणरें कदेय म जाणो समाध रे ।
 तिणसूं आहार पांणी भेला करें रे लाल, त्यांने निश्चे कहीजे असाध रे ॥ २८ ॥
 वले तप करें महिमा वधारवा रे, पूजा सलाघा काज रे ।
 जस कीरत रा भूला घणा रे, ठाला बादल ज्यूं करें ओगाज रे ॥ २९ ॥
 मत विखरतो जांणे आपरो रे, फिरता देखे श्रावक अनेक रे ।
 तो करे उपाय मत राखवा रे, ते सुणजो दिष्टंत एक रे ॥ ३० ॥
 जोगी ब्राह्मण आददे दरसणी रे, ज्यारी जाती देखे डोली घ्रास रे ।
 तो करे उदंगल अति घणां रे, त्यारे आजीवका रो विसास रे ॥ ३१ ॥
 हाथ फाडें चांदी चिगदो करे रें, मारें जांघ गले घालें जांण रे ।
 इतरे कीयें सुलभें नही रे लाल, तो जूंहर खडकें आंण रे ॥ ३२ ॥
 टूटो खोडो पांगलो रे, वले गरटो जोजरो जांण रे ।
 निकमां माणस भेला करी रे, खडकें जूंहर में आंण रे ॥ ३३ ॥
 जो माथा उपर ली आए वणे रे, तो न गिणें बालक बवेल रे ।
 भेलाकर होमें धरती कारणे रे, देवे जूंहर में ठेल रे ॥ ३४ ॥
 कदा जूंहर रस आवें नही रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे ।
 घ्रास जाअेंनें फिट फिट हुवें रे, उत्तरजाअे लोकां में आव रे ॥ ३५ ॥
 इण दिष्टते भेषधारी लोक मे रे, साधरो नांम धराय रे ।
 आजीविका अर्थे गच्छ बांधीयो रे लाल, भोलां आणें रह्या छें पूजाय रे ॥ ३६ ॥

ते अकारज अनेक करता थका रे, संकें नहीं मन मांय रे ।
 ते मतवाला ज्यूं छक्कीया रहें रे लाल, ते डरें नहीं करता अन्याय रे ॥ ३७ ॥
 उघाड पडें त्यांरो लोकमें रे, कदे पूजा श्लाघा घट जायरे ।
 वले श्रावक फिरें मत वीखरें रे लाल, जब कुण कुण करें उपाय रे ॥ ३८ ॥
 केई गरढा अवनीत अजोगनें रे, तिणनें पोगां चढाय चढाय रे ।
 लांबी तपसा करावें तेहनें रे लाल, कें संथारो देखें कराय रे ॥ ३९ ॥
 तोही आष आदर न हुवें लोक में रे, वले परजाअें इधको उघाड रे ।
 तो बाल जवांन पिण तेहनें रे लाल, करावें लांबो तप नें संथार रे ॥ ४० ॥
 इम कर कर काम चलावता रे, खाअें लोकां रा माल रे ।
 ते वरत विहूणा नागडा रे लाल, ते कूदा वण रह्या लाल रे ॥ ४१ ॥
 कदा संथारो रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे ।
 आजीवका घटें मत वीखरे रे लाल, उतर जाअें लोकां में आब रे ॥ ४२ ॥
 चांदी चिगदां सम त्यांरो तप कह्यो रे, संथारो जूंहर समाण रे ।
 ते तो ग्रास आजीवका कारणें रे लाल, करें मनख मारें घमसाण रे ॥ ४३ ॥
 कोइ जूंहर मां सूं नीकलें रे, तिणनें पकड जूंहर में दें भोकें रे ।
 ज्यूं कोयक संथारो भांग नीकलें रे, तिणनें जोरी दावें राखें रोक रे ॥ ४४ ॥
 जो उ अनपांणी मागे हेला करें रे, तो राखें अबोलो मुख मीच रे ।
 ते हाय विराय टलबल करें रे, तिणनें मारें भूंडीतरे कुमीच रे ॥ ४५ ॥
 खावापीवा रो अतुपतो मूआं रे, महा मोहणी कर्म बंधाय रे ।
 बले नरक निगोद माहें पडे रे, पछें विहूं गति भोला खाय रे ॥ ४६ ॥
 जणनें रोक राखें ते पापीया रे, ते मिनष ना मारण हार रे ।
 ते पिण बांधें महा मोहणी रे लाल, जासी नरक निगोद मझार रे ॥ ४७ ॥
 एहवीतरें मूआं नें मारीयां रे, दोनूं नें दुरगत होय रे ।
 यारें कर्म बंधें महा मोहणी रे लाल, दसासतकधे सुतर में जोय रे ॥ ४८ ॥
 विना विचार्यां लांबो तप करे रे, वले करें संलेखणा संथार रे ।
 पछें आरतध्यान माहें मरे रे लाल, ते चाल्या जन्म विगाड रे ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रा घरमें कलही हुवे रे, कोइ ताकें कूओ नें घेड रे ।
 कोयक आपच करे मरे रे, वले खाय मरें केई जहर रे ॥ ५० ॥
 ज्यूं भेषधारी घर छोडायनें रे, करें मांहोमा कजीया राड रे ।
 त्यांमें केयक दुखरा दाधा थका रे, करें संलेखणा संथार रे ॥ ५१ ॥
 त्यांरो संथारो पार पोहचें नहीं रे, पोहचें तोही असुध परिणाम रे ।
 मरें लाज सरम रा मारीया रे, त्यांरो मरणो छें मरण अकाम रे ॥ ५२ ॥

जे बालभरण मूआ तके रे, बूडा घोर रुद्र संसार रे ।
 त्यांरा गुण कीरत महिमा करे रे लाल, ते पिण बूडा त्यांरी लार रे ॥ ५३ ॥
 विनें करे सुतर भणे रे, करे तपसाने पाले आचार रे ।
 इहलोक परलोक जस कारणे रे लाल, ते तो भगवंत री आग्या बार रे ॥ ५४ ॥
 इहलोकादिक अर्थे तपसा करे रे, वले करे सल्लेखणा संथार रे ।
 कह्यो दसवीकालक नवमा अघेन में रे, अग्यां लोपी नें परीया उजाड रे ॥ ५५ ॥
 केई तपसा करे मानी थका रे, केई पेट भराइ काज रे ।
 वले लोक सरायां हरषत हुवे रे लाल, त्यांनें केम कहीजे मुनीराज रे ॥ ५६ ॥
 ए सुण सुणनें नर नारीयां रे, करजो मचमें विचार रे ।
 समचे कह्या सगलां उपरे रे लाल, नाम लेइ न कख्यो उघाड रे ॥ ५७ ॥
 जिणमें अवगुण होसी एहवा रे, त्यांनें न गमें एहवी जोड रे ।
 बुधवंत सुण सुण हरषे घणा रे लाल, पामे आणंद कोड रे ॥ ५८ ॥
 सुंस लेइ सुष पालजो रे, चोखा राखो परिणाम रे ।
 लोक बतावे आंगली रे, एहवो म करजो काम रे ॥ ५९ ॥
 विकल पचलाणी आ दूसरी रे, कीधी खेखा सहार मभार रे ।
 संवत अठारे बतीसें समे रे लाल, काती विद बीज मंगलवार रे ॥ ६० ॥

ढाल : १८

दुहा

पचखांग सुणे विकलां तणो, करजो सूंस विचार ।
 सीखावण कहुं सर्व साधनें, ते बुधवंत लेजो धार ॥ १ ॥
 केई सूंस करे वेंराग सुं, तिण काले सुध परिणाम ।
 पछें पड जाअे केई आड दोढ में, तिण जन्म गमायो वेकांम ॥ २ ॥
 वले वाजे लोकां में वेंरागीया, त्याग बताय बताय ।
 पिण करे विकलाई अति घणी, तिणरी खबर न काय ॥ ३ ॥
 करे विकलाई तेहनें, सूंस कीया ते निरफल थाय ।
 वले खावापीवा रो अत्रिसो रह्यां, तिणरे मोहणी कर्म बंधाय ॥ ४ ॥
 तिणसूं पहिला तोल्नें, कीजो उत्तर गुण पचखांग ।
 कीषां पछें सुध पालजो, ज्यूं वेगा पोहचो निरवांग ॥ ५ ॥
 विकलाई देख विकलां तणी, समचे कहुं छूं भाव ।
 सूंस लेवण ने पालण तणों, कही बतावूं न्याव ॥ ६ ॥

ढाल

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविधा]

कोइ बंधो करे जाव जीव लग एहवो, हूं एकटक करसूं आहार मुनिसर ।
 पछें चांप चांप आहार मरजादा लोपी करे, ते श्रीजिण आग्या वार हो मुनिसर ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचार नें* ॥ १ ॥
 एक वार दोय वार आहार कीयां थकां, साध नें दोष न कोय हो ।
 चांप चांप आहार एकण टकमें कीयां, छिदर चारित रे होय हो ॥ २ ॥
 चांप चांप आहार करे एकण वार में, तेहिज आहार करे दोय वार हो ।
 तिण आज्ञा आरावी श्री जिणराज री, ते सुखे वहे संयम भार हो ॥ ३ ॥
 जो करणी नावे अणोदरी तेह सूं, तो करणो पूरो उन्मान हो ।
 पिण कठोकठ साध नें आहार करणो नहीं, ते भाष गया भगवान हो ॥ ४ ॥
 चांप चांप आहार करे छें तेहमें, दोषण उपजे अयाग हो ।
 निद्रा आलस रोग री उतपत हुवे, केई जाअें संजम सूं भाग हो ॥ ५ ॥
 जो करे उत्तरगुण आंग वेंराग नें, तो पालजे हडी रीत हो ।
 जो आहार उनमान एकण टकमें कीयां, ओर साधानें आवें परतीत हो ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपवास बेलादिक पारणें धारणे, जद पिण अरिहंत री आज्ञा नही, उपवास वेला तेलादिक तप तणो, पछे आरत ध्यान माहें पडीयां थकां, बंधो कीयां विण छूटो तप करें, पछे बंधो करे तो पाले रूडी रीत सूं, तूं उपवास वेला तेलादिक तप करे, ताजा घर पारणें धारणें नहीं राखणा, ताजा घर पारणें धारणें थाप राखीयां, वले साध सरवेल्ला तोनें लोलपी, तप कीजें सरल सभावे कर्म काटवा, सहजें आयो कीजें पारणो धारणो, जावजीव पांचूंइ विगें त्यागण तणा, तो आगली पाछली कीजे विचारणा, सूंस कीयां पछे विगय खावण तणी, पछे परिणाम आड दोड मे वरतीयां, तो सहजेइ विगें टाले सूंस विण कीयां, पछे लूवो आहार कीयां सुं ताहरा, जो चौखा परिणाम रहें नित ताहरा, तो त्याग कीजें दोय च्यार वरसां ल्गें, जो थिर परिणाम रहिता जाणे ताहरा, तूं त्याग कीजे जावजीव निसंक सूं, पाछे रिगेल्ला तूं रोट्यां देखे चौपडी, ओर साध सरवेल्ला तोनें लोलपी, जे विगे त्यागे नें रोट्यां जोवे चौपडी, तिणरो खावारो ध्यान मिट्यो नही माहिलो, त्याग करें तो विकलाइ करे मती, ओर साध बतावे तोनें आंगुली, कदे ओर साध तोनें जाणें सीदावतो, ते पांती सूं इविको लेवेल्ला कारण विना, ओर साधां नें विगे खाता देखने, साधां रो इसको खेदो कीयां थकां,

तूं चांप चांप करेल्लो आहार हो। ग्यांनादि गुण ने विगाड हो ॥ ७ ॥ तूं बंधो करेल्ला जावजीव हो। तो बंधो कर्म अतीव हो ॥ ८ ॥ जो रहिता जाणें थिर परिणाम हो। ज्यूं सुधरें आत्म काम हो ॥ ९ ॥ तो वेंराग राखे घट मांय हो। ओर साधा नें न देणी अंतराय हो ॥ १० ॥ तो आ रीत छें घणी विपरीत हो। थारी कुण मानेला परतीत हो ॥ ११ ॥ उपवास बेलादिक जाण हो। ज्यूं पांमें पद निरवाण हो ॥ १२ ॥ थारा इसडा उठे परिणाम हो। ए कठण घणो छे काम हो ॥ १३ ॥ कारी न लागे काय हो। घणेरी खुरावी थाय हो ॥ १४ ॥ ओरानें विगे खाता देखी तांम हो। किसडा एक रहे परिणाम हो ॥ १५ ॥ वरस छमास लगे जाण हो। यूं सहितां सहितां कीजे पचखाण हो ॥ १६ ॥ तो थागा थेगरा रो नहीं काम हो। चढता राखे परिणाम हो ॥ १७ ॥ तो लागेली घणी विपरीत हो। उठेला घणी अपरतीत हो ॥ १८ ॥ वले चौपडी रा जोवें दातार हो। तिणनें बुधवंत देसी विकार हो ॥ १९ ॥ राखे समता परिणाम हो। तूं इसडो म कीजें काम हो ॥ २० ॥ कोइ आहार आछो दें जोय हो। तो कुण सरवे वेंरागी तोय हो ॥ २१ ॥ तूं धेप धरेंला मन मांय हो। ए पुरो वूडण रो ज्पाय हो ॥ २२ ॥

सूंस कीयां पेली ओर साधां भणी,
 ते जावजीव सूंस करे तो पालण तणी,
 वेंराग विनां विगें त्यागें उसभ उदें,
 ते सूंस घणां माहें भाग सकें नहीं,
 उणरें ओघट घाट रहे घट में घणी,
 उ खवारा चाला चिरत करे घणा,
 वले चेलां री भूख रहें तिणनें घणी,
 सूंस लेहनें भागें तेहनी,
 कोइ विगेंरो त्याग करे जीवें ज्यां लो,
 जो उ तपसा करे विगेंरो लोलपी थको,
 उ देखा देख पिण तपसा करतो नहीं,
 हिवें श्रीषम रितु पिण ए एकलोइ तपकरे,
 ते थोडो विगें देखी तपसा करे नहीं,
 एहवा चाला चिरत करे घणा,
 सूंस कीया जब परिणाम ओर था,
 तो थिर परिणाम करे सुघ पालजे,
 आहार विगें मरजादा सूं भोगवे,
 देहीनें भाडो देवें छ कारणें,
 जो इण रीतें आहार विगें नित भोगवें,
 जो त्याग वेंराग करो कर्म काटवा,
 वले केयकारी अथिर घणी छें आत्मा,
 ते खिण एक में मंड जाअें सलेषणा,
 उणनें धाप्यां तो मीठी लागें सलेषणा,
 जो एहवा जीव मंडे सलेषणा,
 देवल धजा सरीषो मन जेहनों,
 त्यानें भूख लागं परिणाम भागल हुवें,
 ज विगर विचाख्यां करसी सलेखणा,
 पछें आरतव्यानं माहें परीयां तिके,
 तो पहिलां तूं अणसण अणादरी तप करे,
 विगें रो त्याग सहितों सहितों करे,
 पछें परिणाम दिढ रहिता जाणें ताहरा,
 परतीत उपजें ए सगला साध नें,

कदे विगें नहीं धाम्यो तिलमात हो ।
 इचरज वाली छें बात हो ॥ २३ ॥
 वले ओर सूंसां रो करे पूर हो ।
 पछें गणसूं हो जाअें दूर हो ॥ २४ ॥
 वलें पग पग कपट नें कूर हो ।
 ते दिन दिन मुगत सूं दूर हो ॥ २५ ॥
 नहीं सूंस पालण री नीत हो ।
 चिहूं गति में होसी कूपीत हो ॥ २६ ॥
 पारणें धारणे आगार हो ।
 उणरो पडजाअे साधां में उघाड हो ॥ २७ ॥
 ते पिण रितु वरसात हो ।
 ते लोलपी थको साख्यात हो ॥ २८ ॥
 घणो आयो देख हुवें तयार हो ।
 ते चाल्या जन्म बिगाड हो ॥ २९ ॥
 पछें होय जायें ओर परिणाम हो ।
 ज्यूं सुघ रें आत्म काम हो ॥ ३० ॥
 वले राग नें वेष रहीत हो ।
 श्री जिण आग्या सहीत हो ॥ ३१ ॥
 तो साध नें दोष न कोय हो ।
 तो आपो वस आणो सोय हो ॥ ३२ ॥
 ते खिण माहें रंग विरंग हो ।
 वले खिण माहें जाअें मन भंग हो ॥ ३३ ॥
 भूखां मीठो लागें अन्न हो ।
 त्यांरो थिर किम रहसी मन्न हो ॥ ३४ ॥
 ते करे सलेखणा संथार हो !
 ते कुसले न पोहचें पार हो ॥ ३५ ॥
 वले विगर विचाख्यां संथार हो ।
 ते गया जमारो हार ॥ ३६ ॥
 वले दिन दिन आहार घटाय हो ।
 इम खीणी पारें कांय हो ॥ ३७ ॥
 तो बात कढे मुख बार हो !
 मंडजे सलेखणा संथार हो ॥ ३८ ॥

ते पिण गुरवादिक आग्या दीयां, तो चढता हुवें परिणाम हो ।
 ते पिण देही नें पतली पाखां पछे, ढील तणो नहीं काम हो ॥ ३६ ॥
 एकासणो आंबल उपवास वेलादिक, वले विगें तणो परिहार हो ।
 इत्यादिक सूंस करे जाव जीवरो, तो करजे विचार विचार हो ॥ ४० ॥
 केई सूर नें वीरपणों मानें आपनं, ते करे जावजीव पचखाण हो ।
 पछें सूंस न जावें गीदर सूं पालीया, ते भांगे विकल जाण जाण हो ॥ ४१ ॥
 एहवा त्याग कीयां विण साघ नें, दोष न लागें कोय हो ।
 तो काचा परिणामा सूंस न कीजीए, सूतर सांहमो जोय हो ॥ ४२ ॥
 तप करता देख ओर साघां भणी, कोइ लोलपी करें कपटाय हो ।
 उ तपसा छोडें विगेंरें कारणें, उणरें गिरधिपणो घट मांय हो ॥ ४३ ॥
 तिणरें उपदेस देवारी खेद दीसें नही, वले भणवां ने लिखवारी न काय हो ।
 तोही नित विगें खाये तपसा करे नहीं, ओर साघां ने पाडें अंतराय हो ॥ ४४ ॥
 उणनं आछा घर न बतवे गोचरी, तो उलटो डरावे तांम हो ।
 अन्हाखी थको दुख देवें साघां भणी, ते विगय खावा रें काम हो ॥ ४५ ॥
 जो तपसा करण रो कहें कोइ तेहने, तो उ भूठ बोले कारण बताय हो ।
 इसरा अजोग अवनीत नें लोलपी, ते किण विघ आवें ठाय हो ॥ ४६ ॥
 जो उ आहार थोरो कें उ आहार लूखो करें, वेंराग भावें रूडी रीत हो ।
 ते नित नित आहार करें तिण साघ री, तिणरा कारण री आवें परतीत हो ॥ ४७ ॥
 केयक कारण अणहुंता बताय ने, ते लागा छे खावा लार हो ।
 केयक सूंस भांगेनं विकल थया, यां दोया री संगत निवार हो ॥ ४८ ॥
 तो बल समरथपणों देख सररीर नों, मांहे सरवा वेराग पिछाण हो ।
 वले काया निरोगी देखे आपणी, तू होय अवसर नो जाण हो ॥ ४९ ॥
 वले दरव खेतर काल भाव विचारने, वय जोवनादिक जाण हो ।
 वले गुरवादिक साघां नें पूछनं, कीजें जावजीव पचखाण हो ॥ ५० ॥
 सूंस कीयां परिणाम सेठा रहें, त्यांरा सूंस कीया परिणाम हो ।
 जे सूर वीरा पार पोहचावसी, ते पामे पद निरवाण हो ॥ ५१ ॥
 ए भाव सुणे उत्तम नर नारीयां, चोखा पालजों सूंस हो ।
 ज्यूं फेरा टलें जन्म नें मरण तणा, पूरीजें मन हंस हो ॥ ५२ ॥
 समचें कहीं छें विकल सीखावणी, गुंदवच सहर मभार हो ।
 संवत अठारें वतीसा वरस में, वेसाख सुद ग्यारस सोमवार हो ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचारनं ॥ ५३ ॥

ढाल : १६

ढुहा

दुषम आरो पांचमो, घणो हलाहल मान ।
तिणमें भेषवारी हुसी घणा, कूड कपट री खान ॥ १ ॥
अे कुबदी खेला नाचसें, इण साध तणा भेष मान ।
वले हिसा धर्म परूपनें, अें परसी नरक में जाय ॥ २ ॥
त्यांरा विकल श्रावक नें श्रावका, ते करसी कूडी पषपात ।
त्यांनें कुबद कदाग्रह सीखाय नें, त्यांनें पिण लेसी साथ ॥ ३ ॥
ज्यांरे अंधकूप नें जलोजथा, त्यांरें दिवस तका हीज रात ।
ए गुधु सरीषा होय रह्या, वले दिन दिन अधिक मिथ्यात ॥ ४ ॥
अें नव नव आंकरा नवकडा, ते जासी नरक मभारो ।
माहा नसीत में में सुण्या, ते सुणजो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल

[सल कोड़ मत राख]

आचार्य नें साध साधवी, वले श्रावक श्रावका जाणो रे ।
अें गुण विण नाम धरायनें, नरक जासी त्यांरो परिमाणो रे ।
इण विघ ओलखों नवकडा ॥ १ ॥
पचावन कोड नें लाख पचावन, वले पचावन हजारो रे ।
पांचसों नें पचावन उपरां, आचार्य जासी नरक मभारो रे ॥ २ ॥
छासठ कोड नें छासठ लाख, वले छासठ कह्या हजारो रे ।
छसों नें छासठ उपरें, साध जासी नरक मभारो रे ॥ ३ ॥
सितंतर कोड लाख सितंतर, वले सितंतर हजारो रे ।
सातसों नें सितंतर उपरें, साधव्यां जासी नरक मभारो रे ॥ ४ ॥
अठ्यासी कोडनें लाख अठ्यासी, वले अठ्यासी हजारो रे ।
आठसो नें अठ्यासी उपरें, श्रावक जासी नरक मभारो रे ॥ ५ ॥
निनाणूं कोडनें लाख निनाणूं, वले निनाणूं हजारो रे ।
नवसों नें निनाणूं उपरें, श्रावका जासी नरक मभारो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए आचार्य नें साध साधवी, पदवी घर बाजे मोटा रे ।
 जे नरक जासी इण भेष में, त्यांरा लखण घणां छे खोटा रे ॥ ७ ॥
 ते भिष्ट थया आचार थी, वले सरघा में मूंड मिथ्याती रे ।
 पहरण सांग सावां तणो, पिण थोथा चिणां रा साथी रे ॥ ८ ॥
 खाए पीए सुखे दीहां सूय रहें, वले डील में वण रह्या लूंडा रे ।
 गोचरी वीहार करें जरें, जाणें रावला कोतल छूटा रे ॥ ९ ॥
 अे तो फिरता वचन बोलें घणा, वले कूड कपट माहे राचें रे ।
 चरचा करे तिण अवसरे, जाणें ओघड उघाडा नाचें रे ॥ १० ॥
 न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या फेन फितुरा रे ।
 जो सूतर री चरचा करे, तो पग पग पड जाय कूडा रे ॥ ११ ॥
 कूड कपट करे मत बांधीयो, ते तो पेट भराइ काजें रे ।
 आचार में ढीला घणा, तोही निरलजा मूल न लाजे रे ॥ १२ ॥
 ते साध नांव धरायने, ठाम ठाम थानक करावें रे ।
 तिणरी सांनी सूं कर कर आंमना, छ काय जीवां ने मरावें रे ॥ १३ ॥
 आघाकर्मी थानक ने भोगवें, वले सांग साध रो धरीयो रे ।
 छ काय जीवां नें मरावता, ओ तो पीहर पूरो पडीयो रे ॥ १४ ॥
 वले पडदा परेच बंधावता, चंद्रवा सिरकी ताटा रे ।
 वले छपरा छान करावता, तिणरा ग्यांनदिक गुण न्हाठा रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक थानक रें कारणें, जीव हणे वाखंबारो रे ।
 एहवा थानक साध भोगवे, ते चाल्या जन्म विगाडो रे ॥ १६ ॥
 साध थइ उदेसीक भोगवे, वले मोल लीयो वहरे आहारो रे ।
 नित पिंड वेहरे एकण घरे, ते जासी नरक मझारो रे ॥ १७ ॥
 ए उत्तरावेन रे वीसमे, वीरना वचन सभाली रे ।
 जे उदेसीकादिक भोगवें, त्यांरे किम होसी नरक सूं टालो रे ॥ १८ ॥
 धी खांड लाडू मिश्री मोल लें, त्यांरा भर भर मेले चाडा रे ।
 मोल ले ले वेहरावें साध नें, ते तो गर्भ मे आवसी आडा रे ॥ १९ ॥
 धी खांड लाडू लूंग मिश्रीयां, मोलरा लीवां वेहरें जाणो रे ।
 वले साध बाजे इण लोकमें, ते तो पूरा मूंड अयाणो रे ॥ २० ॥
 जो चेलो हूंतो जाणें आपरो, तो उणने रोकड दांम दरावे रे ।
 पांचमों महावरत भागनें, तोही साध रो विड्ड घरावें रे ॥ २१ ॥
 जीवादिक जाणें नहीं तेहने, पांचोइ महावरत उचरावें रे ।
 साध रो सांग पेहराय नें, भोला लोकां ने पगां ल्गावे रे ॥ २२ ॥
 १०७

बालक बूढो देखें नहीं, यारे पानें पड़ें ज्यूं ज्यूं मूँड़े रे ।
 नांव ना करवा -आपरी, ते तो मान बडाइ सूं बूँड़े रे ॥ २३ ॥
 बले चेलो करवा कारणें, मांहोमां भगडो माँडें रे ।
 फाडा तोडो करता लाजें नहीं, इण साध रा भेष नें भाँडें रे ॥ २४ ॥
 गांवां नगरां समाचार मेलवा, सांनीकर ग्रहस्थ बोलवें रे ।
 कागद लिखावें तिण कनें, विवरों आप बतावें रे ॥ २५ ॥
 ग्रहस्थ आगें वीयावच करावीयां, साध नें कह्यो अणाचारी रे ।
 दसवीकालक तीजा अधेन में, कोइ बुधवंत लेजो विचारी रे ॥ २६ ॥
 भागल तूटल त्यामें घणा, त्यांरो कुण काढें नीकालो रे ।
 जो थोडासा त्यानें छेडव्यां, उलटो दे अन्हाखी आलो रे ॥ २७ ॥
 आप सरीषा करवा खपें, दे दे अणहंता आलो रे ।
 त्यानें परभव री चिता नहीं, त्यारें भूठ तणो नहीं टालो रे ॥ २८ ॥
 सुध साधां रे माथें आल दें, त्यांरा टोला में तेह सपूतो रे ।
 तिण भूठ रो निरणो करें नहीं, त्यारें नरक जावारा सूतो रे ॥ २९ ॥
 भूठो आल देवे तेहनें, प्रायच्छित न दें लिंगारो रे ।
 तिणसूं आहार पांणी भेलो करें, ते बूड गया कालीधारो रे ॥ ३० ॥
 रेणादेवी री कुगुर नें ओपमां, ते सांभलजों चित्त त्यायो रे ।
 कूड कपट करे पापीया, सुध साधां सूं दे भिडकायो रे ॥ ३१ ॥
 रेणादेवी दिखण रा बाग में, अणहंतीइ सर्प बतायो रे ।
 तिण आपणा किरतब ढांकवा, उण बोलीयो मूसावायो रे ॥ ३२ ॥
 तिण जिणरिष ने जिणपाल रे, उण घालवी संका मोटी रे ।
 पिण बुधवंत जाए जोयों तिहां, जब जांणी छें तिणनें खोटी रे ॥ ३३ ॥
 ज्यूं कुगुर रेणादेवी सारिषा, संका साधां रो घालें रे ।
 ते आपणा किरतब ढांकवा, सुध साधां कनें जातां पालें रे ॥ ३४ ॥
 पिण बुधवंत पूछ निरणो कीयो, जब जांग लीया त्यानें खोटा रे ।
 ग्यांन किरिया में पोला घणा, जाणें पांणी तणा परपोटा रे ॥ ३५ ॥
 तिण रेणादेवी सांहमों जोयनें, जिनरिष हूवो खुवारो रे ।
 तिम कुगुरां परतीत सूं, दुरगत जासी नरभव हारो रे ॥ ३६ ॥
 रेणादेवी रो कपट जिहांइ रह्यो, पिण कुगुरां रा कपट छें भारी रे ।
 आप डूबें ओरां नें डबोवता, केई हुय जाए अनंत संसारी रे ॥ ३७ ॥
 सांग पहरे साधां तणों, खाधा लोकां रा मालो रे ।
 तप जप संजम बाहिरा, अें कूदा बण रह्या लालो रे ॥ ३८ ॥

इम सुण सुणनें नर नारीयां, छोड दो कुगुर सताबो रे ।
 सुध साघां तणी सेवा करो, राखी चावो इजत आबो रे ॥ ३६ ॥
 संवत अठारें तेतीसे समें, जेठ सुदि पुनम शुक्रवारो रे ।
 कही छे कुगुरा री नवकडी, रीया गांव मझारो रे ॥ ४० ॥



ढलल : २०

दुहल

दुषड आरें ढलंचडें, शुरलवकुर शुरलवकल नलंढ धरलड ।
 गुण वलण ठलल ठलकरल, ढडसल नरक डें डलड ॥ १ ॥
 ते हलण आचलरल कुगुरलं तणल, सेवल करें दलन रलत ।
 तुरलं डुठ नें सलचल करवल डणल, कुडल करें ढखढलत ॥ २ ॥
 तुरलं आंधल नें डूल सुडें नहलं, नुवलड डलरग रल डलत ।
 ढलडंड डत डें रच रहलल, घट डलहें घुर डलथुवलत ॥ ३ ॥
 दलठी नु अणदलठी कहें, डुठ डुलतल नलणें सलंक ।
 आल देवण नें नहल आलसु, तुरलरल डुलल डें डलंक ॥ ॡ ॥
 एहवल शुरलवक डलसल नरक डें, तुरलरल चलल चलरत अनेक ।
 वले थुडलसल ढरगट कहुं, ते सुणडु आंण ववेक ॥ ॡ ॥

ढलल

[२ डुलव डुलह अशुकडुडल न आशलथुडे]

नव नव आंकरल कुगुर नवकडल, ते तु डलसल नरक डडलर २ ।
 तुरलरल शुरलवक नें शुरलवकलं तणुं, तुडुहें सलंडलडुं वलसुतर २ ।
 एहवल शुरलवक डलणुं नवकडल* ॥ १ ॥
 धुर सुं तु डुलल डलरग डुगत रुं, गुर कलडें हणुं छुं डुलव २ ।
 वले धरु डलणुं हलसल कुलडलं, तुरलं दलधी नरक रल नलव २ ॥ २ ॥
 चवतु देखु थलंनक डु गुर तणुं, तलणरल आड करें संडलल २ ।
 नललुं उखण उढर नुहलंखुं डुरड नें, करें अनंत डुलवलं रुं खुंगल २ ॥ ३ ॥
 ढलल डलणुं तणल डुलव डलरनुं, दडें ललडे थलंनक नें आड २ ।
 ते ढलण गुर रें कलडे नलसंक सुं, अं तु हण रहलल डुलव छुकलड २ ॥ ॡ ॥
 केडु करलवुं थलंनक डूल थु, धुर सुं नवल डलडलं उडलड २ ।
 ढलुं डुलव वलणलसे वलध वलधुं, ते तु कहुं कडल लुग डलड २ ॥ ॡ ॥
 गलडलं गलडलं ढृथुवल डुंगलवतल, वलंणल वलंणल ढलंणल डुंगलड २ ।
 कचरल कुटुं करु छु कलड रुं, डन गडतुं थलंनक डुणलड २ ॥ ॢ ॥

*डुह आंकडुल ढुरलुके गलथल के अनंत डें हल ।

केई करें मजूरीया हाथ सूं, उंडी उंडी दरावे नीव रे।
 घर रो गरथ देई पापीया, छ काय रा मरावें जीव रे ॥ ७ ॥
 छ काय हणेने थानक करें, तिणमें धर्म जाणे निसंक रे।
 तिणसूं ठाम ठाम जायगा बंधें, एहवा लगा कुगुरां रा डंक रे ॥ ८ ॥
 त्यांने पूछ्घां बोले केई पाधरा, केई भूठ बोले ततकाल रे।
 भायां निमते थानक करायो कहे, अन्हाखी थका भाषे अलाल रे ॥ ९ ॥
 प्रतख करायो गुर रे कारणें, लाजां मरतां खांचेले आपरे।
 धर्म रे ठिकाणे भूठ बोलनें, भारी हुवें चीकण बांधे पाप रे ॥ १० ॥
 धर्म ठिकाणें भूठ बोलीयां, बंधे महामोहणी कर्म रे।
 सित्तर कोडाकोड सागर लगे, नही पांमें जिणवर धर्म रे ॥ ११ ॥
 ज्यूं किणरी मा बेंनादिक डाकण हुवें, त्यांरी बात सुण्यां पामे खीज रे।
 त्यांने साची करण खपे घणूं, भूठो थको पिण थापे धीज रे ॥ १२ ॥
 वले अनेक उपाय करे घणा, घर जाणो पिण कर दें कबूल रे।
 पिण मुख सूं डाकण कहणी दोहिली, गाढोइ भूडो हुवे कबूल रे ॥ १३ ॥
 ज्यूं भारीकरमा केई जीवडा, बोले कुगुरां रे बदले भूठ रे।
 त्यांने साचा करण खपें घणूं, कूडा गुण करे मुख परपूठ रे ॥ १४ ॥
 अनंत संसार सूं डरे नही, नरक जाणो पिण करे कबूल रे।
 पिण मुख सूं खोटा कहणा दोहिला, रह्या पाषड मत में भूल रे ॥ १५ ॥
 डाकण रें बदले धीज कीया थकां, कदा राजा कोप्यां घर जाय रे।
 पिण कुगुरां काजे भूठ बोलीयां, पडें नरक निगोव मे जाय रे ॥ १६ ॥
 आप आदरया त्यां कुगुरां तणा, देवे दोषण सगला ढांक रे।
 सुघ सांघां ने आल देता थका, पापी मूल न आंणे सांक रे ॥ १७ ॥
 सुघ साघां री निदा करे, वले निजर पढ्या जागें घेष रे।
 त्यांसूं वरते वेरी ने सोक ज्यूं, जोवे छल छिदर वसेष रे ॥ १८ ॥
 आप कुगुरां ने सेठा भालीया, त्यामें दोषां रो छेहे न पार रे।
 तिण सुं साघां तणा दोष जोवता, खप कर रह्या मूढ गिवार रे ॥ १९ ॥
 पिण साघा माहे दोष देखे नही, जब कूडोइ देवे आल रे।
 पछें भूठं बोली बकता फिरे, त्यांरे कुण काढे निकाल रे ॥ २० ॥
 कडवो तूंबो वेंहरायो साघ ने, नागध्री ब्राह्मणी एक वार रे।
 तिणसूं संसार में छली घणी, सातूं नरकां में खाधी मार रे ॥ २१ ॥
 तिण तो न्हांखण रा आलस भणी, तूंबो वहरायो साघ ने देख रे।
 तिणराइ फल लागा पाडुआ, पांमी दुख माहे दुख वसेष रे ॥ २२ ॥

तो साधां री केइ निंदा करें, वले राखें अर्भितर घेष रे।
अछतो पिण आल देवें निसंकसूं, ते तो बूडा वले वसेष रे ॥ २३ ॥
केई करला बोलें बूरी तरे, केई वाछें साधां री घात रे।
केयक परीसा देवें वचन ॥ रा, केई तपता रहें दिन रात रे ॥ २४ ॥
सर्व पाषंडीयां सूं मिल गया, वले लोकां नें देवें लगाय रे।
त्यांरे केडें गमता बोलें घणा, साधां सूं वेंरी करवा ताय रे ॥ २५ ॥
एहवा नागश्री सूइ अति वूरा, त्यांरो कहतां न आवें अंत रे।
तेतो नरक गांमी छें तवकडा, त्यांनं ओलखल्यो मतवंत रे ॥ २६ ॥
नागश्री ब्राह्मणी दुख भोगवे, नीठ नीठ पाम्यो तिण अंत रे।
सदा वेंरी ज्यू वरतें साध सूं, त्यांरो हुसी कुण विरतंत रे ॥ २७ ॥
हिंवें कहि कहि नें कतरो कहूं, कोइ बुधवंत करजो विचार रे।
जे जे साधां रें सिर आल दें, ते तो बूडा कालीघार रे ॥ २८ ॥
जो साची नें साची कहें, तेतो निंदा म जाणों कोय रे।
साची ने साची कहणी निसंकसूं, ते पिण अवसर जोय रे ॥ २९ ॥
अंतो जीव अजीव जाणें नहीं, आश्रव संवर की खबर न कांय रे।
आश्रव सेवें संवर धर्म जाणनं, अें तो चोडें भूला जाय रे ॥ ३० ॥
उपभोग परिभोग श्रावक तणा, तेतो इविरत आश्रव मांहि रे।
सेव्यां सेवायां भलो जाणीयां, यामें धर्म जाणे छें ताहि रे ॥ ३१ ॥
देवगुर धर्म ओलखीयां विना, रह्या ठाला बादल ज्यू गूंज रे।
वले धोरी होय बेंठा धर्म ना, पिण पूरा छें मूढ अबूज रे ॥ ३२ ॥
केई चरचा में अटके घणा, पिण सूधा न बोलें मूढ रे।
अण विचाख्यां उंधा बोलें घणा, पिण छोडें नहीं खोटी ह्द रे ॥ ३३ ॥
वले गुर रों आचार जाणें नहीं, सरवां री पिण खबर न काय रे।
भेषधारी भागल तुटल भणी, तिखतो कर वादें पाय रे ॥ ३४ ॥
धी खांड लूंग मिश्री आदि दे, मोल ले ले वेंहरावे जाण रे।
वले नीपनों जाणें वरत बारमो, इसडा छें मूढ अयाण रे ॥ ३५ ॥
बारमो वरत भागें आपरो, साधां नें वेंहरावे ले मोल रे।
तका पिण समझ पडें नहीं, त्यांरा वरतां मांहे मोटी पोले रे ॥ ३६ ॥
थानक मोल ले गुर रें कारणें, वले भाडें लेवे गुर काज रे।
बारमो वरत भाग भागल हुवा, नरक में जासी श्रावक बांज रे ॥ ३७ ॥
कपडो मांगे साध साधवी, जब हाजर नही घर मांय रे।
मोल ले ले वेहरावें साध नें, गांव परगांव सूं मंगाय रे ॥ ३८ ॥

मोल ले ले कपडो वेहरायने, वले धर्म जाणें मन मांय रे ।
इसड़ी सरधा रा श्रावक श्रावका, ते तो दुरगति पडसी जाय रे ॥ ३९ ॥
जीमणवार आरा तणे घरे, मांड घोवण उंनों पांणी जाण रे ।
ते साधां नें वेहरावा कारणे, आपरे घरे राखें आण रे ॥ ४० ॥
पछें तेड वहरावें साध ने, वले जाणें होसी माने धर्म रे ।
एहवा कुगुरां रा भरमावीया, भूला छे अग्यांनी भर्म रे ॥ ४१ ॥
केई घोवण जाणें इधको करे, साधां नें वहरावण कांम रे ।
उंनो पांणी करे ठांमडा भरे, ते पिण ले ले गुर रो नांम रे ॥ ४२ ॥
घणा साध साधवी जाण ने, इधको नीपजावे आहार रे ।
पछें भर भर वहरावें पातरा, ते तो परभव में होसी खुवार रे ॥ ४३ ॥
असुध आहार पांणी वहरावीयां, बंधे पाप कर्म रा पूर रे ।
साध पिण जाणें वेहरे असुभतो, ते तो साधपणा थी दूर रे ॥ ४४ ॥
केइ आहार वहरावें असुभतो, केइ कपडो वहरावें असुध रे ।
देवें थानकादिक असूभता, भिष्ट हुइ सगलां री बुध रे ॥ ४५ ॥
सामायक संवर पोसा मभे, करे सावद्य जोग रा त्याग रे ।
तिणमें भागलां नें वंदणा करे, सामाइ पोसो पिण गया भाग रे ॥ ४६ ॥
एक समाइ भागे तेहनें, डंड देवे समाइ इग्यार रे ।
तो नितका सामाइ भागें तके, ते तो गया जमारो हार रे ॥ ४७ ॥
सूस न ले त्याने पापी कह्या, लेनें भांगे ते महा पापी होय रे ।
वलें जांने हूं श्रावक मोटको, त्याने नरक तणी गति जोय रे ॥ ४८ ॥
माने भागल तूटल एकल भणी, वीणती कर राखे चोमास रे ।
ते पिण साधां सुं धेषरा घालीया, दखाण मुणे तिण पास रे ॥ ४९ ॥
जो उ साधां रा आंगुण बोले घणा, तिणने हरष सूं देवे दांन रे ।
वले करें प्रसंसा तेहनी, घणो देवे आदर सनमान रे ॥ ५० ॥
उणने मन में तो साध जाणें नही, तोही वचारे उणरो आध रे ।
ते पिण साधां सुं धेष चलायवा, त्यारों निश्चेइ जाणो अभाग रे ॥ ५१ ॥
आप आदख्या कुगुर तेहनां, गुण बोलावण रें कांम रे ।
उपिण लोभ रो घालीयो थको, भूटा भूटा करे गुण ग्राम रे ॥ ५२ ॥
एहवा चाला चिरत करें तेहने, जो पाप उदे हुवे इण भव आण रे ।
दुख असाता अठेइज हुवें घणी, परभव मे तो संका मत आण रे ॥ ५३ ॥
भागल रा वलांण वांणी सुण्यां, केई पडवजे वेगो मिथ्यात रे ।
वले तहत वचन करे तेहनो, तिणनें हूंकारें मूंगी बात रे ॥ ५४ ॥

ज्यारें कुगुरां सू राग अति घणों, वले साचां सू अंतर घेष रे।
 दोनूं कांनी देवालो तेहनें, ते तो बूडा में बूडा वसेष रे ॥ ५५ ॥
 करलो डंक लागों कुगुरां तणों, तिणसूं करें त्यांरी पखपात रे।
 त्यांसूं लीवी टेक छूटें नहीं, त्यांरा घट में छें मोदो मिथ्यात रे ॥ ५६ ॥
 संवत अठारें नें तेतीसे समें, असाढ विद नवमी रविवार रे।
 श्रावक नरकगांमी नवकडी, कीषी रीयां गांव मभार रे ॥ ५७ ॥

ढाल : २१

दुहा

भारीकरमा जीव संसार में, ते भूला अग्यानी भर्म ।
त्यांनै गुर पिण मूढ मूरख मिल्या, ते किण विघ पांमे जिण धर्म ॥ १ ॥
सुध साषां री निंदा करे, वले देवे अणहंतो आल ।
त्यांराबोल्यां री समझत्यांनै नही, तिणरो कुण काढे नीकाल ॥ २ ॥
त्यांने ठीक नही धर्म अघर्म री, गुर कुगुर री खबर न काय ।
वले साधू तणा आचार री, समझ नही मन मांय ॥ ३ ॥
डाकण नै चढवा जरख मिले, जब डाकण हरखत थाय ।
ज्यूं भारीकरमाने कुगुर मिले, जाणें पाछ रही नही काय ॥ ४ ॥
त्यांने कुगुर कुब्द सीखाय ने, कलेस करावे दिनरात ।
ते कुगुर सहित जाये कुगत में, तिहां मार अनंती खात ॥ ५ ॥

ढाल

[समरू मन हरषे तेह सती]

अनादरो जीव गोता खावे, समकत पथ हाये नही आवे ।
मिथ्यात मत माहे कलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १ ॥
उसभ उदें सू संवलों नही सूके, वले भाव सहीत कुगुरां नै पूजे ।
ते मुगत मारग सू परा टलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २ ॥
जे कुगुर तणें पडीया पाने, ते सुगुर तणा वेण नही मानें ।
मिथ्यात मत में काढा मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३ ॥
भारी दोष लगावता नही साके, वले पांचमां आरा रे सिर न्हांखे ।
ज्यासूं वरत नही जाये पलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ४ ॥
सूतर रो न्याय तो नही जाणे, कुगुरां री पख काठी ताणे ।
उंघा उंघा बोले क्रोध सू वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ५ ॥
भांत भांत साध त्यांनै समझावे, पापी जीव रे मन नही भावे ।
त्यांरे-माठी गतिरा टांका झलीया, करम जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ६ ॥
ज्यारे उसभ कर्म तणा जोरा, ते केवली थकां रहि गया कोरा ।
त्यांरा पिण बाल्या नही वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ७ ॥

मेंला जीव मारग नहीं आवें, त्यांनं उपदेस दीयों अहलें जावें ।
 ते मोहकर्म सूं माठा खलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ८ ॥
 भारीकरमा जीव मूंढ मिथ्याती, साधू नें दीठां बल उठें छाती ।
 बले ओगुण बोलणें उल्लीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ९ ॥
 साध काजे बांधे ताटा ताटी, त्यां विकलां नें गति होसी माठी ।
 बले भीत चूणे भेलाकर ढलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १० ॥
 साध काजे परदा आण बांधे, जिण धर्म नहीं जाण्यो बांधे ।
 बले छावण लीपण नें हल फल्लिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ११ ॥
 श्रावक नें जीमावे धर्म जाण, छ काय रो कर कर घमसाण ।
 ते जिन मारग सूं जाबक टलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १२ ॥
 कुगुरां रो तो दोष जाबक ढांके, साधां ने आल देता नहीं सांके ।
 त्यांरा लोकीक में पिण गुण गलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १३ ॥
 त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लागा, कजिया राड करवानें आगा ।
 वचन बोले अलिया अलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १४ ॥
 न्याय तणी चरचा करतां, त्यां विकलां नें वार नहीं लडतां ।
 उधा बोलें क्रोध माहि बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १५ ॥
 जिण आगम न्याय देवें ठेली, अनमतीयां नें उठाय करें बेली ।
 पाषंडीयां में जाय मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १६ ॥
 गुणवंत साधां रा कोई गुण गावें, ते दुष्ट जीवां रें मन नहीं भावें ।
 ते रात दिवस रहे परजलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १७ ॥
 जीवादिक नवतत रो नही निरणों, बले क्रोध तणों लीधो सरणों ।
 त्यांनं मोहकर्म अजर गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १८ ॥
 न मिट्यो च्याहं गति में आवण जाणों, चोरासी में लागो बेजा तांणो ।
 जिम आंमा साहमां फिर रह्या नलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १९ ॥
 देवगुर धर्म तणे काजें, जीवां नें हणता नही लाजें ।
 त्यांनं कुमत करे कुगुरां छलीयां, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २० ॥
 आचार री बात लागें काठी, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक नाठी ।
 बांधे पुरुष घरटी में मोती दलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २१ ॥
 गुण विण साध रो सांग घरें, त्यां विकलां रा पगां में जाय पडें ।
 ते बीज विहुणा हांके हलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २२ ॥
 आधाकर्मी थानक सेवण लागा, ते चारित विहुणा छें नागा ।
 त्यांनं वादें पूजें मांनं मन रलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २३ ॥

सामायक पोसा माहे भागलां नें वादे, ते करमां रा पूज भारी वांचें ।
त्यांरा समकत सहीत वरत गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २४ ॥
भागलां ने वादि जोडी हाथ, ते पाप करम बांचे सात ।
उलटा कर्म रिणें मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २५ ॥
हरीया जव देखीने मिरग डरे, वावर माडी मे जाय पडें ।
मिरग ज्यूं सेचे मारग जाए हीलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २६ ॥
आप गुर रा किरतब देखे, तो उचे सुर बोले किण लेखे ।
न्याय विना बोले सिकल विकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २७ ॥
ज्यारे कुगुरां रो डंक लागो भारी, त्यांने आचार री वात लागे खारी ।
ते अणाचाख्या सूं हिलिया मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २८ ॥
पाच महावरतां री चरचा छेरे, तो तुरत मूहडा नो रग फेरे ।
अतरंग मे आधण ज्यूं उकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २९ ॥
जो वरता री चरचा करे त्या आगे, तो क्रोध करे लडवा लागे ।
जाणे भाड मा सूं चिणा उडलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३० ॥
जो साध रो आचार कहे तिण आगे, तो हंम रूम में लाय लागे ।
मूंह विगाड बोले क्रोध वलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३१ ॥
ज्यारे कुगुरा रो डंक लागो जांपो, त्यारी बोली में नही ठोर ठिकांणो ।
कहि कहिने तुरत जाएं बदलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३२ ॥
जोड कीची छे कोठरीये गांम, सवत अठारे तयाले वरस तांम ।
काती सुद आठम नें सोमवार, उत्तम गुर सेवों नर नार ॥ ३३ ॥



ढाल : ३२

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, विगच्छो साधरो भेष ।
संका हुवे तो पूछ निरणों करो, वले अरुवरू लो देख ॥ १ ॥
साध मारग छें सांकडो, करडो छें त्यांरो आचार ।
ते जिण तिण सेती किम पलें, जावजीव रहणो एकघार ॥ २ ॥
केई सांग पेंहरे साध हुआ, त्यांरा घट में नहीं ववेक ।
त्यां साधपणो नहीं ओलख्यों, तिणसूं सेवें छें दोष अनेक ॥ ३ ॥
दोष सेव्यां भागें साधपणो, त्यांनैं ते पिण खबर न काय ।
त्यांनैं श्रावक पिण तेसाहीज मिल्या, त्यांनैं समझ नहीं मन मांय ॥ ४ ॥
जो आचार बतावें त्यांनैं साध रो, तो तुरत जांगें त्यांनैं धेख ।
जाणें निदा करें छे मारा गुर तणी, घटमें नही सुध ववेक ॥ ५ ॥
आचार बतायां साध रो, तिणनैं निदा सरधे ते मूढ ।
ते ववेक विकल सुध बुध बिना, त्यां भाली मिथ्यात रीरूढ ॥ ६ ॥
साचीनैं भूठी कहें, ते तो निदा होय ।
साची वात कहें समझायवा, ते निदा म जांपो कोय ॥ ७ ॥
जे भारीकमां जीवडा, त्यांनैं न गमें आचार रीबात ।
ते भूला छें भर्म अनादरा, त्यांरा घट मांहे घोर मिथ्यात ॥ ८ ॥
पिण भव जीवां नैं समझायवा, थोडी सी कहूं अल्प मात ।
ते सुण सुणने नर नारीयां, छोडें कुगुरां तणीं पखपात ॥ ९ ॥

ढाल

[मविथण जिण आम्हा०]

कोइ साधपणा रो नाम धरावें, पुरों पलें नहीं आचारो ।
त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सेंमल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे ॥ १० ॥
जोवों हिरद विचारी, छोड दो कुगुरां री लारी रे । १० ।
कुगुर छें हीण आचारी* ॥ १ ॥
आंधा नें आंधो आय मिलीयो जब, कुण बतावें वाटो ।
ज्यूं कुगुरा नें विकल मिलीया श्रावक, यां दोयां रे अकल आडो पाटो रे ॥ २ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरा श्रावक जीव हणे त्यांरे काजें,
 ते तो दोनूइ हरषें छे हिंसा कीयां थी,
 कोइ साधां रे काजे नीलो उखेल ने,
 अनता जीवा रो घमसांण करतां,
 मोटी तिथ आठम नें चउदस,
 आप डूवें भिष्ट करें गुरां ने,
 साधां रे काजे जायगां खोदने,
 नीलणफूलण नीला अंकूडा मारें,
 वले कसी सूं खोदे समी जागा करतां,
 वले तिण मांहे घर्म जाणें छें भोला,
 वले साधां रे काजे कॅलू फेरावे,
 वले नीलणफूलण रा जीवां नें मारे,
 घणो खात कचरादिक पडीयो जागा में,
 पंछे ओडीये ओडीये बारें नखावें,
 साध काजें दडे लीपे छपरा छावे,
 वले विवध पणे घात करे जीवा री,
 एहवा किरतव करें छे साधा रे कारण,
 वले आप मुतलब जांण राजी हुवें,
 एहवा किरतब करावे आमनां करने,
 वले पेहरण सांग साध रो छें त्यांरे,
 जीवां री घात करने जागा करे चोखी,
 ते तो प्रतख्य असाध उघाडा दीसे,
 केई साधां रे कारण नीव दराए,
 तिण जागामे साध रहे ते.
 केई साध रे काजे मोल ले जागा,
 तिण मांहे रहे ते अणाचारी,
 साध काजें दडे लीपे गार घालेने,
 साध पिण तिण ठामें रहे ते,
 एक थानक तणा छें दोष अनेक,
 असुध थानक भोगवे भेषधारी,
 नाटकीये सांग साधां री आण्यो,
 भेषधाख्यां तो साधरो सांग लजायो,

त्यां श्रावकां नें तो वरजें नांही ।
 त्यांरें दया नही घट मांही रे ॥ ३ ॥
 वरसता मेह मे मूरड न्हाखे ।
 पापी जीव मूल न सांके रे ॥ ४ ॥
 तिण दिन पिण न करे टालो ।
 आत्मा ने लगावे कालो रे ॥ ५ ॥
 करे विषम जागाने सूधी ।
 त्यांरी अकल घणी छे उंची रे ॥ ६ ॥
 कीडी मांकादिक देवे दाटी ।
 त्यांरे आइ अभितर पाटी रे ॥ ७ ॥
 जमीयां उखेले जालो ।
 तस जीवां रो पिण करे खेगालो रे ॥ ८ ॥
 बुहार भेलो करे साध रे भावे ।
 तिहां पिण जीव माख्या जावे रे ॥ ९ ॥
 चद्रवा ने ताटादिक बाधे ।
 तिण घर्म न ओलख्यो आधे रे ॥ १० ॥
 त्यांने साध निषेधे जो नांही ।
 त्यांने गिणजो मती साधा मांही रे ॥ ११ ॥
 आपरे सुखसाता रे काजें ।
 पिण निरलजा मूल न लाजें रे ॥ १२ ॥
 तठे रहवा ने होय जाजें त्यांरी ।
 त्यांने वीर क्हा भेषधारी रे ॥ १३ ॥
 नवी करावे जागा ।
 विरत विहूणा नागा रे ॥ १४ ॥
 केई साधा रे काजें ले भाडें ।
 निश्चे सुध साध तणी पात बारे रे ॥ १५ ॥
 ते पिण कर्म बाधेने बूडा ।
 चिहुं गति में दीससी भूंडा रे ॥ १६ ॥
 ते तो पूरा केम कहवाय ।
 ते भोला ने खबर न काय रे ॥ १७ ॥
 ते पिण सांग तणी वरग वूहो ।
 स्वांन ज्यूं पकड रह्या दूओ रे ॥ १८ ॥

अर्जुणाकाल में पांचमें आरें, घणी हीण पडी छें बुध ।
 एहवा अणाचाख्यां नें साध सरखें, त्यामें काय न दीसैं सुघ रे ॥ १६ ॥
 एहवा भाव सुणेनें भारीकर्मा, पांमें नहीं चमतकारों ।
 कर्म जोगें त्यानें कुगुर मिलीया, त्यारो किण विघ मिटें अंधारो रे ॥ २० ॥
 त्यांरा थानक में कोइ दोष बतावें, तो बोलें घृणा आलपंपालो ।
 पाछो जाब न आवे जब क्रोध करेनें, देवें अणहंतो आलो रे ॥ २१ ॥
 सुघ साध तो सुघ थानक में रहें छें, त्यामें दोष बतावें अन्हाखी ।
 भूठ बोले छें आप सरीषा करण नें, त्यांरा भूठा बोला छें साखी रे ॥ २२ ॥
 सुघ साधां रे आल देता नही संकें, आपरा दोष ढांकें निसंक ।
 दोनूं प्रकारे बूड गया त्यानें, आपरों नहीं सुर्के वंकरे ॥ २३ ॥
 परभाते आहार वहख्यों तिण घर रों, आथण रों वेंहरें दाल नें रोटी ।
 कारण बिना दोनूं टक वेंहर ल्यावें, आ पिण चलगत खोटी रे ॥ २४ ॥
 परभाते आहार ल्यावें तिण घर रों, बेपारां गुगरीयादिक आणें ।
 आथण रों ल्यावें ऊनी दाल नें रोट्यां, संका पिण किणरी न आंणे रे ॥ २५ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण छें ववेक रा विकल, त्यारें मूल पडें नहीं संक रे ।
 जेसाकूं तेंसों आय मिलीयां, हिंवें कुण काढें त्यारो वंक रे ॥ २६ ॥
 कारण बिना उनों आहार ल्यावे आथण रों, नही गरढो गिलाण विसेष ।
 हिलीयों उनी दाल नें रोट्यां रें रसकें, त्यां छोडी लज्या ले भेष रे ॥ २७ ॥
 कोइ राखवीयादिक तेंवार आथण रों, जबतो पेंहलां करें भालामालो ।
 पछें रसग्निधी फिरें आथण रा, ताजा घर संभाल संभालो रे ॥ २८ ॥
 छतो आहार मिलें परभात रो त्यानें, तो पिण गिधी थका वेंहरें नाहीं ।
 जाणें आथण रो ल्यासूं तेंवार रो जीमण, तांणा वेजा लगा तिण मांही रे ॥ २९ ॥
 इम आरतध्यान करतो दिन काढें, सांभ रा ल्यावें सेवां नें कसार ।
 वले घृत ने खांड रां करें चबोला, इण विघ पूजें तेंवार रे ॥ ३० ॥
 इण विघ तेवार पूजे रसग्निधी, ते पिण नाम धरावे साध ।
 ताजें आहार तूटा पडे पापी, त्यारे किण विघ होसी समाध रे ॥ ३१ ॥
 ताजें आहार तेंवार रो सरस जाणें तो, चांप चांप खाएं भरपूर ।
 एहवी विकलाइ करें छे तिणांरा, परी साधपणा में धूर रे ॥ ३२ ॥
 एहवा रसगिरधी जिभ्या रा लंपटी, त्यां पहर विगाड्यो भेख ।
 त्यानें साध सरखें वादें पूजें अग्यानी, ते पिण बूडें छें बिना ववेक रे ॥ ३३ ॥
 कोइ कारण पडोयां जाअें आथण रा, जब दोष नही छें लिगार ।
 बिना कारण जाअें तेंवार जाणेंनें, त्यानें छें तीन धिकार रे ॥ ३४ ॥

कोइ ग्रहस्थ घर सूं बोलावण आयों, म्हारें घरे वेहरण पधारो ।
तेडीया तिण घर जाअे तिणानें, किम कहीजे अणगारो रे ॥ ३५ ॥
तेरण आयो ते छे काय मरदतो, तिणरा हाथ सूं पिण न करे टालो ।
तेरीया गयामें दोष न जाणें, त्यारें आयो अभितर जालो रे ॥ ३६ ॥
कदा कर्मजोगे साव तेडीया जावें, तो प्रायच्छित ले हुवें सुघो ।
पिण सदाइ तेडीया जावें तिणारी, भिष्ट हुड छें वुघो रे ॥ ३७ ॥
जों सहजेइ ग्रहस्थ आयो छे थानक मे, ते कहे म्हारा दिस पधारो ।
तिण भावभेल न आण्यों सावां रो, जब गयां नही दोष लिगारो रे ॥ ३८ ॥
तेडीया जावेने आण दीघो लेवें, ते नीयमाइ निरुचे भिष्टी ।
एहवा भागल भिष्ट हुआ छे त्याने, साध सरखें नही समदिष्टी रे ॥ ३९ ॥
केइ भेषधारी ग्रहस्थ नें देवे, पूठा पांना ने परत वगेष ।
लोट पातरा नें ओघो पूंजणी देवें, ते तो भिष्ट हुआ ले भेष रे ॥ ४० ॥
केइ भोला ग्रहस्थ तो इम जाणें, मोसूं दीसे छें सावां री मया ।
पूंजणी काढ दीघी छे मोने, तिणसूं पालां छा म्हें दया रे ॥ ४१ ॥
ग्रहस्थ ने साध पूंजणी दीघां, भोला तो जाणें दोष न लागो ।
पिण नसीत सूतर मे श्रीजिण भाष्यों, तिणरो चोमासी चारित भागो रे ॥ ४२ ॥
ग्रहस्थ नें साध पूंजणी देवें, ते निमाइ निरुचे भिष्टी ।
पिण भोलां रे भावें तो तेहीज साध, तिणने साध न सरधे समदिष्टी रे ॥ ४३ ॥
केइ कहें पूंजणी सूं तो दया पले छें, तिणसूं पूंजणी देवें छे साध ।
तिण लेखें तो मूहपती पिण देणी, इणसूं पिण दया पलसी वाघ रे ॥ ४४ ॥
वले धोवणादिक पिण देणो ग्रहस्थ ने, तिणसूं काचा पांणी तणो हुवे टालो ।
आ पिण दया पले यारे लेखे, पूंजणी रो न्याय सभालो रे ॥ ४५ ॥
पूंजणी देणी तो रोटीयां पिण देणी, तिणसूं टलें चूला रो आरंभो ।
पूजणी देवेने रोटीयां न देवे, यांरी सरधा रो वडो अचंभो रे ॥ ४६ ॥
कोइ काचा पांणी सूं कपडादिक घोवें, वांटादिकमें घाले काचो पांणी ।
तिणनें धोवणादिक देणों दया पलावण, पूंजणी देवा रो लेखो जांणी रे ॥ ४७ ॥
पूंजणी सूं तो गिणवा जीव पूजे, ते पिण थोडा सा अल्प मात ।
उंनो पांणी धोवण असणादिक दीघां, टलें अनंत जीवां री घात रे ॥ ४८ ॥
ग्रहस्थ ने एक पूंजणी देणी, तिण लेखें तो देणी वस्त अनेक ।
थोडीसी वस्त साध देवें ग्रहस्थ नें, आखो वरत रहे नहीं एक रे ॥ ४९ ॥
ग्रहस्थ नें साध हाथ पकडनें, राग करने हेठो वेंसाणें ।
एहवा भागल भेषधारी छे त्याने, बहा हुवे ते साध न जाणें रे ॥ ५० ॥

संवत् अठारे एकावने वरसे, सावण सुद तीजने वृधवार ।
 भेषघाख्यां ने ओलखावण काजे, जोड कीधी सरियारी मभार रे ॥ ५१ ॥



ढलल : २३

दुहल

सुघ सलघलं ने दलंन असुघ दे, जलंणनें असुघ ले सलघ ।
ते दोनूं बूडे छे बलपडल, श्री जलण वचन वलरलघ ॥ १ ॥
असुघ देवल नें लेवल रे, कडवल फल ललगे आंण ।
ते जथलतथ परगट कलं, ते सुणजो चुतर सुजलंण ॥ २ ॥

ढलल

[रलग उललली]

तीनलं बोललं करे जीवरे जी, अलप आउखो वंघलय ।
हलसल करे प्रलंणी जीव रे, वले बोले मूसलवलय जी ।
सलघलं ने असुघ वेंहरलय जी, हलसलकर चोखी जलगल बणलय जी ।
सलघलं ने उतरें मलंय जी, त्यलंरे उसम कर्म वंघे आय जी ।
तीजे ठलंणें कहुं थलं जलणरलय जी, वले सुतर भगोती रे मलंय जी ।
श्री वीर कहे सुण गोयमल ॥ १ ॥

दडें लीपे सलघलं रे कलरणें, वले छपरल छलवें आय ।
केलूं पलण फेरतल थकलं, जमीयल जलल उखेले तलय जी ।
नीलण फूलण मलरी जलय जी, अनतल जीव छें तलण मलंय जी ।
वले ओर हणें छकलय जी, त्यलंरी दयल न आंणें कलय जी ।
त्यलंरे पलण अलप आउ वंघलय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमल ॥ २ ॥

वले नीव दरलए थेट सूं, वले टलंची वजलवें तलय ।
भेलेकर भलठल चुणें, तलण बोहत मलरी छकलय जी ।
अनंतल जीव हणीयल तलय जी, ते पूरल केम कहलवलय जी ।
सलघलं ने रहलवल री मन लयलय जी, तलण मोटो कीयो अनयलय जी ।
तलणरे पलण अलप आउ वंघलय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमल ॥ ३ ॥

जलण गरथ दीयो थलंनक करलयवल, तलण पलण मरलड छकलय ।
कलणही मोल भलडे भोग ललवें लीयो, कलणही थलप रलख्ये छे तलय जी ।
इत्यलदलक दोषीलल करलय जी, खणे खोदे समे कीयो जलय जी ।
वलघ वलघ सूं मलरे छकलय जी, सलघलं नें उतरें मलंय जी ।
वले मन मे हरखत थलय जी, त्यलंरे पलण अलप आउ वंघलय जी ॥ ४ ॥

आहार सेज्या बसतर नें पातरो, इत्यादिक दरब अनेक ।
 असुध वेंहरावें साध नें, ते डूबें छें विना ववेक जी ।
 त्यां भाली कुगुरां री टेक जी, त्यांरि कर्म तणो काली रेख जी ।
 त्यांनैं सीख न लागे एकजी, गुर नें पिण कीया भिट बशेष जी ।
 संका हुवें तो सूतर लो देख जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ५ ॥

पाप उदें हुवे तेहनैं जब, पडें निगोद में जाय ।
 उत्कष्टो अनंता भव करें, तिहां मार अनंती खाय जी ।
 रहें घणी संकडाई मांय जी, जक नहीं निगोद में ताय जी ।
 वले मरण वेगो वेगो थाय जी, उपजें नें विलें होय जायजी ।
 तिणरो लेखो सुणो चित्तल्याय जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ६ ॥

सतरें भव जाभेरा करें, एक सास उसास मभार ।
 एकण मोहरत नें मभे, भव करें साढा पेंसठ हजार जी ।
 वले छतीस इधिक विचार जी, एहवी जनम मरण री धार जी ।
 मरण पांमें अनंती वार जी, अनंता काल चक्र मभार जी ।
 तिणरो वेगो न पांमें पार जी, ए फल पांमें निगोद मभार जी ।
 असुध दांन तणो दातार जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ७ ॥

कदा पेंहला पडे बंध नरकनो, तो पडे नरक में जाय ।
 तिहां क्षेत्र वेदन छे अति घणी, परमाधामी मारें बतलाय जी ।
 तिहां मार अनंती खाय जी, उठें कुण छुडावें आय जी ।
 भूष त्रिषा अनंती ताय जी, दुष में दुख उपजें आय जी ।
 असुध दीवां रा ए फल जाणजी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ८ ॥

दुख भोगवतां नरक में जी, सेष बाकी रहें पाप ।
 ते उपजें तिरयंच में, तठें पिण घणो सोग संताप जी ।
 ते छूटें नहीं कीवां विलाप जी, वले न्हाखें निगोद में पाप जी ।
 आडा नावें गुर मा बाप जी, दुख भोगवें आपो आप जी ।
 असुध दांन दीयो धर्म थाप जी, ते कुगुर तणो प्रताप जी ॥ ९ ॥

आधकर्मिं साध जो भोगवें, ते बांधें चीकणा कर्म ।
 ते भिट थया आचार थी, तिण छोड दीयो जिण धर्म जी ।
 नीकल गयो त्यांरो भर्म जी, त्यां छोडी लाज नें सर्म जी ।
 त्यां विगोय दीयो निज ब्रह्म जी, दुख पांमें उत्कष्टा परम जी ॥ १० ॥

असुध जाणें भोगवें, त्यां भांगी जिणवर पाल ।
 ते भमण करसी संसार में, उत्कष्टो अनंतो काल जी ।
 नरक में जासी टांको भालजी, तिणनैं मार देसी नरकपाल जी ।
 कीवा कर्म संभाल संभाल जी, रोसी किरतब सांहमो नाल जी ।
 भगोती पहलें सतक नीकाल जी, लीजों नवमें उदेशे संभाल जी ॥ ११ ॥

साधां रे काजे हणे छकाय ने, ते वार अनंती हुणाय ।
 जो साध जाणें भोगवे, ते पिण अनंत मरण करे तायजी ।
 अे तो दोनूई दुखीया थायजी, अनंता भव माख्या जाय जी ।
 एकवार मारी थी छकाय जी, त्या तो दुख भोगवे लीया ताय जी ।
 पिण यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १२ ॥

छकाय रे उसभ उदे हूवा, त्यां तो पांमी एक वार घात ।
 पिण साध पड्यो नरक निगोद में, सेवगां ने पिण लीधा साथ जी ।
 त्या मानी कुगुरां री बात जी, कीधी तस थावर री घात जी ।
 अनतो काल दुख मे जात जी, वले मरण वेगो वेगो थात जी ॥ १३ ॥

ज्यां गुर ने डबोया सेवगा, त्यां सेवगा ने डबोया साध ।
 ते दोनू पख्या नरक निगोद मे, ते श्री जिण धर्म विराध जी ।
 बूडा संसार समुद्र अगाध जी, ते किण विध पांमे समाध जी ।
 जिण धर्म री रेस न लाधजी, भव भव में पामे असमाध जी ।
 ओ पिण कुगुर तणो परसाद जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १४ ॥

असुध दान दीयो जिण साध ने, तिण साध ने लूट्या ताय ।
 तिणरे पाप उदे हुवे इण भवे, तो दलदर धसे घर मांय जी ।
 रिध सपत जायें विल्लाय जी, वले दुख माहे दिन जाय जी ।
 कदा पुन भारी हुवे तायजी, तो इण भवमें दुख न थाय जी ।
 परभव मे संका नहीं काय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १५ ॥

इम साभल ने नर नारीयां, कोइ करजो मन मे विचार ।
 सुध साधा ने जाणने, असुध मत देजो किणवार जी ।
 असुध मे नहीं धर्म लिगार जी, सुध देने लाहो लो लार जी ।
 उतर जावो भवपार जी, ओ मिनख पणारो सार जी ॥ १६ ॥



ढलल : २४

दुहल

दुडल सत दत सील सुघ, नलडुरडुही अणगलर ।
 डलंघ डुहलवरत आदरी, डललें नलर अतलवलर ॥ १ ॥
 डलंसूं नवल करडु नहलं नीडुऑे, अर ऑुनल तड करल खडलड ।
 ऑुड ऑेतन नलरडुल हुवें, डुकुष वलरलऑे ऑुडल ॥ २ ॥
 हलसल डुडु अदत अऑे, कुसील डुरलगुह धलर ।
 इणसूं करुड अडलरऑे, ऑुव डुडत संसलर ॥ ३ ॥
 हलसल तुडलडुडलं सब तलगें, तीन करण तीन ऑुग ।
 ए ऑुण डुलखलत डुहलवरत, डलले सुघ अडुडुग ॥ ॡ ॥
 अणुकुडुडें वरत आदरवल डुणुी, सलष डुऑे ऑुगत लगलड ।
 सुणल सतगुर इसडी कहुं, संडुलऑुऑु वलतुतलडुडलड ॥ ॡ ॥

ढलल

[ऑुगत गुरु तलसतलननुदन वीर]

कुड कहुं डुहललुं डुहलवरत डललसूं ऑुी, हणसूं नहल ऑुकलड ।
 डुण डुहलरी ऑुडुडल वस नहलं, हुं डुलसूं डुसलवलड ।
 ऑुतर नर सडुडुडुं गुडल वलवलर* ॥ १ ॥
 ओ डुहलवरत डुलखुडु डुगवलंन रु, ते नहल हुवें इण रलत ।
 तू हलसल डुं धरुड डुरुडु डें, थलरी कुण डुलनं डुरतीत ॥ ऑु २ ॥
 कहुं देवगुर धरुड करलणुं, आरंडु कीडलं रुडी थलड ।
 देवललदलक करलवीडल ऑुी, ऑुव डुलुी गतल ऑुड ॥ ३ ॥
 धरुड हेतुं ऑुव हलसल कुीडलं डुं, थुडुडुसु डुड डुंघलड ।
 तू एहवी करुं डुरुडुणल, हलसल डुलुं संडुल हुडुड ऑुड ॥ ॡ ॥
 इड हलसल डुं धरुड सथलडुवल ऑुी, करलवुं ऑुवल री धलत ।
 डुहलवरत तु ऑुलहुं रहुडल, ऑुड सडुकुत हुडुड डुडुडलत ॥ ॡ ॥
 तु हुं हलसल डुडु डुहुं तुडलग सूं, डुण ऑुलर लेसूं डुर डुल ।
 डुहलरी घन अडुर डुडतल वणुी, डुसूं नहल डुलते ओ सल ॥ ॢ ॥
 ऑु तू ऑुव हणसुी नहल ऑुी, वले नहलं डुलसुी कुड ।
 डुण डुलरुं दलह दुीघलं थकलं, डुहलल डुहलवरत डुं डुडुसुी धर ॥ ॣ ॥

*डुहु आंकडी डुरतुडुक गलथल कुे अनुत डुं ह ।

धन चोखां घणी दुख पामसी जी, हिस्सा लागी इम जोय ।
 जो तूं कहसी हिंसा लागी नही तो, दूजोइ वरत न होय ॥ ८ ॥
 तो तीजोइ माहावरत आदरुं जी, चोरुं नही परघन ।
 पिण सील मोसूं पले नही, म्हारो विषे सूं लग रह्यो मन ॥ ९ ॥
 चोथो आश्रव सेवतां जी, तीन वरत जाय भाग ।
 सब गुण बाले पलक में जी, जिम पीनी रुइ आग ॥ १० ॥
 जीव पंचिद्री नी हिंसा हुवें जी, हणवो नही ते भूठ ।
 बले आग्या नही वीतराग नी, जब तीन वरत जाये उठ ॥ ११ ॥
 तो हू चोथोइ माहावरत आदरुं जी, पाचमो कीघो न जाय ।
 नवविष परिग्रह राख सूं, मोसूं ममता नही मूकाय ॥ १२ ॥
 खेतू वथू आदि परिग्रहो जी, ओ च्यारुइ आश्रव नो छे मूल ।
 एक परिग्रहो राखीयां, च्यारू माहावरत मिलसी घूल ॥ १३ ॥
 सस्त्र छे छहूं काय नो जी, कूड कपट नो ठाम ।
 आग्या नही जिणराज नी, बले नही रहे सील परिणाम ॥ १४ ॥
 पांचूइ आश्रव त्यागसूं जी, एक करण तीन जोग ।
 आग्या देसू अणुमोद सूं, मोसूं सरागी बहू लोग ॥ १५ ॥
 एक करण तीन जोग थी जी, माहावरत नीपजें नही कोय ।
 त्रिविधे त्रिविधे सावद्य तागीयां जी, माहावरत इण विध होय ॥ १६ ॥
 एक घर त्यागयो आपरो, जिणमे कितरो एक घन घान ।
 हिवे हुकम चलासी लोकमें, इण लेखे जाणे राजान ॥ १७ ॥
 घरमे गिणत होती नही जी, पूरो न मिलतो नाज ।
 भेष लेइ भगवान रो, केइ करवा लागा राज ॥ १८ ॥
 दाय करण तीन जोग सूं जी, पांचूइ आसरव त्याग ।
 अणुमोदना खाली राख सूं, माहरे एतो इज छे वेराग ॥ १९ ॥
 अणुमोदना खाली रही जी, जब तूं वेहरे असुध आहार ।
 संभोग करें गृहस्थी थकी, तिणसूं पाचूं वरतां मे पड़े वगार ॥ २० ॥
 पांचूइ आश्रव ने विषे जी, हरप होवे मनमान ।
 तीनूइ जोगां थकी, थारो न मिटयो खोटो ध्यान ॥ २१ ॥
 तीन करण तीन जोग सूं जी, सर्व सावद्य परिहार ।
 धर्म सुकल ध्यान ध्यावता, नीपजे पांचूइ माहावरत सार ॥ २२ ॥



बाल : २५

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
ते समकत विरत विना फिरें, भूला भर्म वसेष ॥ १ ॥
ते सारंभीनें सपरिग्रही, वले करें अकार्य अनेक ।
ते पिण साध नाव धरावता, त्यां भाली मिथ्यातरी टेक ॥ २ ॥
त्यां जूवा जूवा गच्छ बांधीया, मांहोमां कर कजीया राड ।
त्यांरी सरधा चलगत जू जूइ, वले जूओ जूओ छें आचार ॥ ३ ॥
सुध साधां सूं चरचा करें, जब सगला एकें होय जाय ।
कहें म्हे सगलाइ साध छां, एहवी बोलें अग्यांनी वाय ॥ ४ ॥
सावद्य कामा करता नें करावता, संका आणें नही मन मांय ।
हिवें कुण कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

बाल

[भवियण जिन आज्ञा]

साधारें काजे थांनक करावें, छ काय रो कर घमसांण ।
तिण थांनक माहे रहिवा लागा, त्यां भांगी छें श्रीजिण आंण रे ।
भवीयण जोवों हिरदें विचारी, थें छोडो कुगरां री लारी रे । भ० ।
थें ज्यूं उतरो भवपारी* ॥ १ ॥
सांप्रत एहवा थांनक सेवें, वले भूठ बोलें ठाम ठाम ।
कहे थांनक म्हारे काज न कीघो, श्रावकां रें काजें कीयो तांम रे ॥ २ ॥
त्यांरा श्रावकां नें कहे थे इम बोलो, थांनक नें कहों धर्मसालों ।
ज्यूं थारी म्हारी आछी लागे लोका में, म्हानें तो दोषण मांसूं टालो रे ॥ ३ ॥
त्यांनें श्रावक पिण तेहवाइज मिलीया, त्यांनें ज्यूं सीखावें ज्यूं बोलें ।
कहें धर्मशाला म्हारें काजें कराइ, भूठ बोले वाजतें ढोले रे ॥ ४ ॥
श्रावक त्यांसूं रीभ रह्या छे, जाणें बोलें पढाया ज्यूं सूया ।
त्यांमें जाणपणा री जुगत न दीसैं, तेतो निदक साधा रा हुआ रे ॥ ५ ॥
व्यापाख्यां नें ठगां वेसासे, उजाड नें घतूरो खवायों ।
तेल वांभीहा छांभीया करता, मूवा उजाड रे माह्यो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्यू भेषघाख्यां लोकां नें वेसासे, भूठ बोलणों त्यांनं सीखायो ।
 इण थानक ने कहो धर्मसाला, ते धर्मसाला कहिता मरसी ताह्यो रे ॥ ७ ॥
 साघां रे काजें थानक कीघो चोडें, छ काय रो करें खेंगाल ।
 ते थानक प्रतख छे पापसाला, तिणरों नाम दीयो धर्मसाल रे ॥ ८ ॥
 तिण थानक में साघां रें काजें, मन गमती राखें वारी ।
 तिण हिस्या थकी साघ ने श्रावक री, भव भव मे होसी खुवारी रे ॥ ९ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढमती छे, जाण जाण गुर रा दोष दांके ।
 आवाकर्मि थानक नें कहें धर्मसाला, भूठ बोलता मूल न साके रे ॥ १० ॥
 एहवा भूठा बोलाने पूछा कीजे, थे धर्मसाला करावण काजे ।
 थे रुपीया कठी थी आण कराइ, जव पाछो जाव देता लाजे रे ॥ ११ ॥
 थे कहो म्हारे काजे कीघी धर्मसाला, तो अजोग दांन लीयो किण काजे ।
 थे कुण कुण दांन ले साला कराइ, ते सुण सुणनें मत लाजो रे ॥ १२ ॥
 मिनष आंतरीयो घुरडकें जूतो, ते घन उदकें थानक काज ।
 ते दांन लेइ धर्मसाला करावों, एहवो दांन लेता क्यूं नहीं लाजो रे ॥ १३ ॥
 वले धर्मसाला करावण काजे, लेवो अउतरो मालो ।
 ओ निरमायल माल लोकीक लेखें, ओं तो खांपणवालो ख्यालो रे ॥ १४ ॥
 कोइ अंतकाल समे घन उदकें, रांक गरीब भिख्यारी ताई ।
 ते दांन लेइ धर्मसाला करावों, तिणमें करों पोसा समाई रे ॥ १५ ॥
 वले गांम परगाव सू मांगणी करने, करावो छो धर्मसाला ।
 थे भिख्या मांगो नीचों हाथ मांडो, थारा कुल सहांमो क्यूं नही न्हाणो रे ॥ १६ ॥
 थे मोटका मिनष वाजो छो लोका में, वड वडा करों किरियावर काजो ।
 धर्मसाला कराइ अजोग दांन ले, थे छोड दीघी सरम ने लाजो रे ॥ १७ ॥
 निरमायल दांन मुरदा रो लेइने, थे धर्मसाला करावो छे ।
 तिण दांन तणो लेवाल छे कुण कुण, तिणरो थे नांम वतावो रे ॥ १८ ॥
 उतो धर्म जांणी दांन दे अंतकाले, तिणरो लेवाल किणने थापो ।
 थे पेंला रे बदलें भूठ बोलनें, काय विगोयो आपो रे ॥ १९ ॥
 दातार तो दांन देवें इम जांणी, साघारे जागा वांचण ताई ।
 इण रुपीयां साटें चोखो थानक करासी, तो साघ उवरसी तिण मांही रे ॥ २० ॥
 यू जाणे घन उदकें आंतरीयो, निकेवल सांघां रें कांम ।
 थे कहो इसों दान साघ क्यांनं ले, तो किसें श्रावक लीयो छें तांम रे ॥ २१ ॥
 ओं तो दांन साघ श्रावकां लीघो छें, तीजों न दीसं कोय ।
 इण दांन तणो भेलू हूवो तिणरों, चोडें नाम वताय दों सोय रे ॥ २२ ॥

जो साधां रो नांम बताय दे चोडें,
जो श्रावकां ओं दांन लीयो कहे तों,
त्यांमें केयक तो पाप कर्म सूं डरता,
ते तो कहिदें थांनक साधां रें काजें कीघो,
केइ कहें थांनक म्हारें काजें कीघों छें,
त्यांमें इसडा इसडा केइ भूठा बोला छें,
त्यां भूठा बोलांनं पाछो इम कहिणों,
इण दांन थकी जात न्यात लोकांमें,
मिनष आंतरीयो नें घुरडकें जूतो,
ते दांन लेइ धर्मसाला करावो,
थे निरमायल दांन मुरदा रो लेइनें,
तिण जागा मांहें करो पोसा सामांइ,
थे सांप्रत मुरदा रो दांन लेइनें,
थे कहो थांनक म्हारें काजें कीघों,
आप आप तणा थांनक री ममता,
यारी मरजी बिना अनेरा टोलां रां,
मठघास्त्र्यां ज्यूं मठ मांडे बेंठा,
सांप्रत ममताधारी छें त्यांनं,
आप आप तणा थांनक मांड बेंठा,
कदा उतरण दें तोही धणीयाप यांरो,
थांनक निमतें गरथ लागे ते,
ओर सामग्री तणा नहीं देवें,
वले गांव परगांव सूं गरथ मंगावें,
कदा कोइ सरमा सरमी देवें अनेरो,
गच्छवासी ज्यूं गच्छ मांडी बेंठा,
ते पिण साध बाजें लोकां में,
मुरदारो दांन ले थांनक करायों,
तिण थांनक मांहे साध रहें छें,
मुरदा रो दान ले थांनक करायों,
तिण थांनक में करें पोसा सामांइ,
कोइ मांदो आंतरीयो घुरलकें जूतो,
ते आंतरीयादिक रो दांन लेइनें,

तो साध सहीत श्रावक सर्व बूडा ।
न्यात जात में दीससी भूंडा रे ॥ २३ ॥
केइ लोकीक सूं डरता ।
सूधा बोलें छें लाजां मरता रे ॥ २४ ॥
वद वदनें कहें वारुंवार ।
त्यांरा घटमें छें घोर अंधार रे ॥ २५ ॥
जो थे लीयो आंतरीयो दांन ।
थे होसो 'घणा हिरांन रे ॥ २६ ॥
तिण दांन रा थें लेवालो ।
जब थें कुल नें लगावो कालो रे ॥ २७ ॥
जागा कराय हरषो तिण देखी ।
तो उड गइ जाबक सेखी रे ॥ २८ ॥
साधां रें काज थांनक करायो ।
ओ तो भूठ कुगुरां रो सीखायों रे ॥ २९ ॥
दर पीढ्यां लग लागी छें ताहि ।
कुण घसैं तिण मांहि रे ॥ ३० ॥
मठघास्त्र्यां ज्यूं राखे धणीयापो ।
साध किसैं लेखें थापो रे ॥ ३१ ॥
ओरां नें उतरण दे नाहीं ।
उतारें खोज भांगण तांइ रे ॥ ३२ ॥
करें सामग्रीही में भेलों ।
यारें नहीं छे माहोमा मेलो रे ॥ ३३ ॥
ते पिण सामग्री मांही ।
ते तो लेखा में छें नाहीं रे ॥ ३४ ॥
आप आपरा थांनक ठहराय ।
ते पिण भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
ते थांनक नहीं छें सिष्ट ।
ते तो निमाइ निश्चें भिष्ट रे ॥ ३६ ॥
त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध ।
ते पिण श्रावक नहीं छें सुघ रे ॥ ३७ ॥
ते धन उदकें थांनक काजों ।
लोकां में वधारो छो व्याजों रे ॥ ३८ ॥

इण दान रो लेवाल किणने ठेहरायो, किणरो थको वधे छे व्याजो ।
 ओ किण किणरो वाजे छे परिग्रहो, ओ किण किणरे आवसी काजो रे ॥ ३६ ॥
 इण मुरदा रो दान ले थानक करावें, त्यांरी मत घणी छे माठी ।
 तिण थानक में करसी पोसा सामांड, त्यारी पिण अकल गड छे न्हाठी रे ॥ ४० ॥
 एतो निरमायल मुरदा रो माल, तिणनें रांक भिख्यारी भाले ।
 भगवंत रा उत्तम च्यार तीरथ, एहवा दान ने हाथ न घाले रे ॥ ४१ ॥
 एहवो फित्तरखानों मांड रह्यां लोकां में, त्यांरा मत माहे मोटी भोलो ।
 वृषवंत विण कुण काढे निकालो, चोडे मांड रह्या गांगीरोलो रे ॥ ४२ ॥
 त्यांरा थानक रो कोड काढे नीकालो, जब बोले घणा आलपंपालो ।
 सुध साध रहे निरदोष जायगा में, त्यारे उलटा देवें साधां सिर आलो रे ॥ ४३ ॥
 आधाकर्मीयादिक छें थानक दोषीला, तिणने दीयो छे निरदोष थापी ।
 निरदोष जागां माहे साध रहे छे, तिणमें दोष कहें छे पापी रे ॥ ४४ ॥
 एहवी अजोग जायगा माहे रहसी, त्यांमे अकल पिण एहवी आवें ।
 त्यांरो असुध उपदेस मूढा री वांणी, ते भवजीवा ने किम समभावे रे ॥ ४५ ॥
 जाण जाणने एहवी जागा सेवे, वले असुध लेवे अनपाणी ।
 ते प्रतख जेन तणा विगडायल, त्यारी खोटी वखाण री वाणी रे ॥ ४६ ॥
 वीर विक्रमादीत रे सिंघासण वेठां, लोक कहे आच्छी वुध आवे ।
 ज्युं निरंदोषण जायगा भोगवे त्यारे, आच्छी आच्छी अकल वुध थावें रे ॥ ४७ ॥
 माहोमा कहे म्हें सघलाइ साध, माहोमा त्यारी वंदणा छुडावे ।
 वले माहोमा सरवा कहे त्यारी खोटी, माहोमा दोप अनेक वतावे रे ॥ ४८ ॥
 माहोमा आप तणा श्रावका ने, साध कहे त्यासूं भिडकावे ।
 ते सामायक पोसा न करे त्यारे पासे, वले वखाण सुणवा नही जावे रे ॥ ४९ ॥
 माहोमा साध कहे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यां विकलां री किसी परतीत ।
 कपटी थका भूठ बोले अग्यांनी, त्यामें साध तणी नही रीत रे ॥ ५० ॥
 साध सरधे त्यांरी वदणा छुडावे, त्यागे सरवा घणी विपरीत ।
 साध कहे त्यांने वांछा धर्म न सरधे, ते भव भवमें होसी फजीत रे ॥ ५१ ॥
 माहोमा भेला हवां करे नही वंदणा, साना पिण पूछे नाही ।
 आवो पधारो पिण नही देवे माहोमां, नही उनारे थानक माही रे ॥ ५२ ॥
 आमना जणाय जणाय ग्रहस्य ने, माहोमा देवे वदणा छुडावे ।
 वले साध माहोमा कहे किण लेखे, ओ पिण अक्कार त्यांरा मत माहि रे ॥ ५३ ॥
 जिगन दोय सहस कोड साध जाभेरा, उत्तकृष्ट नव सहंस छे कोड ।
 त्यां साधां ने थे वांदो वदावो, सीस नामी ने वेकर जोड रे ॥ ५४ ॥

ज्यांरी वंदणा छुडावें त्यां साधां नें, काढ्या साधां तणी पांत' बारें ।
 त्यांनं वले तेहीज साध सरघें, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार रे ॥ ५५ ॥
 ज्यां साधां री वंदणा छोडाई, त्यांनं साध कहे किण लेखें ।
 अर्भितर आंख हीर्या री फूटी, ते सूतर सांहों न देखें ॥ ५६ ॥
 साध सरघें त्यांरी वंदणा छुडावें, ते बूडगया कालीघारो ।
 ते भारी करमा छें मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट माहे घोर अंधारो ॥ ५७ ॥
 माहोमा साध कहे छें मूढां सुं, त्यांसूं पिण करे अंतरंग धेष ।
 वले इसको खेदो करे छें माहोमा, त्यां पहर विगाड्यो छें भेष रे ॥ ५८ ॥
 ज्यांनं कदेयक तो कहें साध लोकां में, त्यांनं कदेयक कहि दे असाध ।
 फिरती भाषा बोले अग्यांनी, त्यांरे किण विघ होसी समाध ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषधाख्यां नो वलांग सुणें छें, त्यांरे दिन दिन हुवें गाढो मिथ्यात ।
 ते कलेस कदाग्रही करे साधां सुं, छेरेवीयां करे उंधी वात रे ॥ ६० ॥
 संवत अठारें बावनें बरसें, भादरवा विद सातम सुक्रवार ।
 जोड कीधी कुगुरां रो कपट ओलखावण, पाली सहर मभार रे ॥ ६१ ॥

ढलल : २६

दुहल

भेषधलरी भलगल तुटल हुओल, तूतलसू पले नही ओओलर ।
 दोष सेवे छे ओण ओणने, पूछूतलं सलओ न बोले ललगलर ॥ १ ॥
 तूतलरो पओथूतलं तणुुं गलग देखने, कुओ प्रश्न पूछे एम ।
 ओ पओथूतलं रो गलग पसूओ तेहनी, पडिलेहण करो छे कुेम ॥ २ ॥
 ओओ भलरोकरमल ओवल थकुी, सलओ बोलूओ नही ओलओ ।
 नलग दोष ढलंकणने पलपीवल, बोलें छें मूसलवलओ ॥ ३ ॥
 कहे पओथूतलं पडिलेहणुी ओलली नही, कुण ही सुतर रे मलहल ।
 तलगसू नही पडिलेहलं छलं पओथूतलं, थे सकल म रलखे कलंओ ॥ ॡ ॥
 पओथूतलं ने नही पडिलेहणील, तलगरो नही म्हननेदोषनेपलप ।
 म्हनने हलसूवल पलग मूल ललग नही, एहवुी कुीधी लुकलं मे थलप ॥ ५ ॥
 कपडल पलट बलओट भुओगवलं, तूतलरी करणुी पडिलेहण ओओ ।
 नही भुओगवल कपडलदलक तेहनी, नही पडिलेहलं दोष न कुओओ ॥ ६ ॥
 एहवुी भूओ डोलने दोष ढलंकुीओलं, ते भुललं खबर न कलओ ।
 हलवे कुड कपड तूतलरो सुणुओ, एगलएक कुलत ललगलओ ॥ ७ ॥

ढलल

[ढलम कुतुर वलओलर]

कहे पओथूतल री पडिलेहण नही ओलली, तलगरी भलषल छे एकंत भूओठी रे ।
 सुतर अरथ संवलओ नही सुमें, तलगरी हूीवल नललड री फूटी रे ।
 भूओओबुललं रो संगन कुीओ ॥ १ ॥
 ओ थुओडी पलग उपधल नही पडिलेहें, तलगने मलसुक दड वतलओ रे ।
 संकल हुवे तु नसीत सुतर मलहे ओवुुं, डूओल उदेसल रे मलहुओ रे ॥ २ ॥
 वले ओवलसग दसवुीकललक ओद देड, घणल सुतरलं री सलखुे रे ।
 सलध ने नलत पडिलेहण करणुी, शूी वीर गलओ छे भलखुे रे ॥ ३ ॥
 रलख रेत पओथुी ने ओलखुे थलंनक पडलरो, वलग वलवरुीवल उपधल छे मलंही रे ।
 तूतलने पलग एकवलर तु अवस पडिलेहे, वलग पडिलेहल न रलखें कलंओ रे ॥ ॡ ॥

*यह ओंकडी प्रतूेक गलथल के अन्त में है ।

भेषधारी कहें पोथ्यां नही उपधि मे,
 अंतो ग्यान तणी नेसराय छे तिणसूं,
 भूठ बोले पोथी री पडिलेहण उठाइ,
 तिणरो न्याय सुणे भव जीवा,
 पोथीया रो गिज विण पडिलेह्या राखे,
 नीलणफूलण चोमासा माहे आवें,
 कीडीया कथू आदिक जीवा रा समूह,
 विण पडिलेह्या पोथ्यां रा गिज में,
 विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज मे,
 तिणरो पाप नें दोष लागो नही सरघे,
 पोथ्यां रा गिज नें विण पडिलेह्यां राखें,
 तिण हिंसा तणो पाप किणने लागों,
 जो पोथ्या ने हिंसा रो पाप लागो हुवे,
 नामे परना मे पाप रों भेळूं बतावो,
 जो किणनेइ पाप लागों नहीं हुवें तो,
 जेसी हुवे तेसी कहि वतावो,
 त्यांनं प्रश्न पुछ्यारों जाब न आवे,
 आल पपाल बोले विनां विचाख्या,
 पोथ्यां रो गिज विण पडिलेह्या राखे,
 पोथ्यां विण पडिलेह्यां रो पाप न सरघे,
 पोथ्यां गिजने विण पडिलेह्यां राखे,
 पोथ्या रा गिज सूं जीव मरें अनता,
 कहे पोथ्या ने कदे नही पडिलेह्या,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां ने मेल्या,
 पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे,
 वले वेठीया पोढीया पोथ्या चलाया,
 जो पोथ्या नही पडिलेह्या रो दोप न लागे,
 हिंसादिक दोप सेवे पोथ्या रे ताइ,
 पोथ्यां नही पडिलेहे छे तिणरे लेखे,
 ओवरा भखारी में पिण मेलणी पोथ्या,
 कहे पोथ्यां री पडिलेहण करणी,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां मेलण रो,

तिणसूं पोथ्यां पडिलेहां नाही रे ।
 नही पडिलेह्या दोष न काइ रे ॥ ५ ॥
 तिणने भारीकर्मो जीव जाणों रे ।
 तिण भूठा री पख मत ताणो रे ॥ ६ ॥
 त्यांमें जमें जीवां रा जालो रे ।
 घणा जीवां रों हुवें खेंगालो रे ॥ ७ ॥
 उपज उपज मरे तिण ठामो रे ।
 त्यांरे भारी मंड्यो संगरामो रे ॥ ८ ॥
 अनत जीवां तणी हुवें घातो रे ।
 त्यांरी विकल मानें छे बातो रे ॥ ९ ॥
 अनत जीवा रो हुवें घमसाणो रे ।
 चोडें कहिता संक म आणो रे ॥ १० ॥
 तो पोथ्यां रों नाव बतावो रे ।
 थारी सरघा ने मतीय छिपावो रे ॥ ११ ॥
 आ पिण कहि दो निसंको रे ।
 छोडों हीया रों वको रे ॥ १२ ॥
 जब कूडा कूडा कूहेत लगावें रे ।
 गालां रा गोला मुख सूं चलावे रे ॥ १३ ॥
 त्यांनं पार लागें भरपूरो रे ।
 त्यांरो तो मत जाबक कूडो रे ॥ १४ ॥
 त्यांरे सदा रहे असमाधो रे ।
 त्यांने निश्चेइ जाणों असाधो रे ॥ १५ ॥
 तिणरो दोप न लागे काइ रे ।
 ओ पिण दोप छे नाही रे ॥ १६ ॥
 तो गाडा मे मेल्यां दोष छे नाही रे ।
 ओ पिण दोप न लागे काइ रे ॥ १७ ॥
 तो मोल लीधां वेहख्या दोष नाही रे ।
 यारे लेखे तो दोष न काइ रे ॥ १८ ॥
 मेलणी ग्रहस्थ घर माह्यो रे ।
 विण पडिलेह्यां राखे तिण न्यायो रे ॥ १९ ॥
 ते नही छे सूतर रे माह्यो रे ।
 ओ पिण नही छे नकारों ताह्यो रे ॥ २० ॥

पोथ्यां री पडिलेहण सूतर मे न चाली, पोथ्या ने न गिणे उपधि रे माह्यो रे ।
 इम कहि कहि अग्याल्या पडिलेहण छोडी, ओ तो चोडे' कपट चलायो रे ॥ २१ ॥
 पाट वाजोट कपडा ने पडिया राखे, इत्यादिक उपधि वनोपो रे ।
 त्यानें उपघ जाण पडिलेहे नांही, ओ दोष सेवे क्रिण लेखे' रे ॥ २२ ॥
 आखा धान नें विण पडिलेह्यां राखे', न पडिलेहे पिछोवडी सीवी रे ।
 वले पडिलेह्यां विण उपधि राखे अनेक, त्या खोड संजम रूप नीवी रे ॥ २३ ॥
 कपडा ने पोथ्यां आला माहे घाले, उपर गारो लीपे छे काठो रे ।
 जब पूरी पडी पडिलेहण त्यारी, त्यारो चारित घट मा सू' न्हाठो रे ॥ २४ ॥
 मास छ मास तांड न खोले आला, जब जमे जीवां रा जाल्य रे ।
 त्यामें जीव अनेक उपजे खपे छे, एहवा गुर छे विकला वाला रे ॥ २५ ॥
 कोड खोडो ने पांगलो लूलो होवे, पगां वाधे इंडणी गावो रे ।
 दोनू टका न करे पडिलेहण, तिणरो भागल काई देसी जावो रे ॥ २६ ॥
 मुंहपती री तो करे नित पडिलेहण, नही पडिलेहे पगारो गावो रे ।
 तिण मांहे जीव अनेक घसे छे, त्याने देवे पगा सू दावो रे ॥ २७ ॥
 थानक आडा पडदा वांध्या छे, ते साघ हाथा सू खोलने बाधे रे ।
 तिणरा सावपणा ने पलीतो लागो, ओ पिण दोप न जाण्यो आंधे रे ॥ २८ ॥
 तिण परदा रे नीलणफूलण आवे, आडो दीया छाटां लागे रे ।
 तिण हिंसा तणो पाप साधा ने हूवो, तिणसू प'हलो महावरत भागे रे ॥ २९ ॥
 जो सी राखणने पडदा हेठा करे छे, जब तो पडदा भोगवीया साधो रे ।
 तिणने देव अदत ने परिग्रह लागो, तिण चारित दीयो विराधों रे ॥ ३० ॥
 जब कहे ग्रहस्थ री आगना लेने, म्हे पडदा मेला ढलकाउ रे ।
 तिण लेखे तो ग्रहस्थ री आगना लेइने, सी राखण सीरख ओढणी साऊ रे ॥ ३१ ॥
 साधां रे कारण पडदा वाधे छे, ते कर्म वाधे हूवो भारी रे ।
 तिण पडदा मांहे रहे साघ जाणने, तिणरी पिण घणी खुवारी रे ॥ ३२ ॥
 कारण विण पिण महिना सू इधिका रहे छे, त्या भाग्यो कल्प लोपी भरजादो रे ।
 तिण दोष तणो प्रायच्छित नही लेवे, वले पूछ्या करे विषवादो रे ॥ ३३ ॥
 केई चोमासी उतर गया पछे, कारण विण रहिवा लाग़ा रे ।
 खावा पिवा कपडादिक काजे', त्यासू छूटे नहीं सेंदी जागो रे ॥ ३४ ॥
 चोमासो करे तिण गाम नगर मे, नही करे चोमासा दोयो रे ।
 तठा पहिली चोमासों करे तिण गांमे, तिण चारित चोडे विगोयो रे ॥ ३५ ॥
 छत्री सगत छे पगां चालण री, तो ही लेवे कारण रों नामों रे ।
 कारण कहे छे दोप रो खोज भागण रों, पिण रहे छे मुतलव कामो रे ॥ ३६ ॥

त्यामें कोइ तो मुतलब खावारें काजें, केई चेंला रें मुतलब काजें रे ।
 कोइ रहें कपडादिक काजें, तिणसं भूठ बोलतां न लाजे रे ॥ ३७ ॥
 कोइ तो जाणें म्हारा श्रावक फिर जासी, तो मत मांहें पडसी वगारा रे ।
 फिरता फिरता कदा सर्व फिरें तो, इहां थी छुट जासी पग म्हारा रे ॥ ३८ ॥
 जों श्रावक म्हारा फिर जाजें म्हांथी, तो पछे कारी न लागें कायो रे ।
 भगवंतें बांधी मरजादा भांगेंनें, देवे चोमासों ठहरायो रे ॥ ३९ ॥
 कल्प मरजादा लोपतां संक न आणें, त्यामें साध तणी नहीं रीतो रे ।
 ते तो इह लोकरा अर्थी छें अग्यांनी, ते चिहूं गति में होसी फजीतो रे ॥ ४० ॥
 साध एक मास रह्या तिण गांमें, तो बिमणा काढणा दिन बारे रे ।
 तठा पहिली पिण तिहां आय रहे छें, ते तो विटल हुआ बेंकारो रे ॥ ४१ ॥
 कल्प भांगेंनें करें चोमासो, कल्प भांगेंनें रहे सेखा कालो रे ।
 अणहंतों अग्यांनी कारण बतावे, त्यांरे भूठ तणों नहीं टालो रे ॥ ४२ ॥
 कल्प भांगेंनें करें चोमासों, कल्प भांगेंनें रहें सेखा कालो रे ।
 तिणने पिण पूज जांनें अग्यांनी, त्यांरे आयो अभितर जालो रे ॥ ४३ ॥
 जे सोंइ पूजनें जेंसाइ चेला, जेसोंइ परवार छें दूजो रे ।
 कल्प भांगेने करें चोमासो, ते पूज छें पूरो अबूजो रे ॥ ४४ ॥
 दोष सेव्यांरो प्राच्छित नहीं लेवे, आगा सूं नहीं पालें मरजादो रे ।
 एहवी धिगांमस्ती मडे रही तिण गछ में, ते तो भगवंत रा नहीं साधो रे ॥ ४५ ॥
 थानक मांहे पांणी चवें जब, ठामडा मांड भेले पाणी रे ।
 तिणनें हिंसा लागे छें तस थावर री, तिणरो दोष न जाणें अग्यांनी रे ॥ ४६ ॥
 काचों पांणी भेलें पोतें जाय ढोलें, तिणरी दया घट मांसूं न्हाठी रे ।
 एहवा पिण साध वाजें लोकां में, तिणरी चोडे छे चलगति माठी रे ॥ ४७ ॥
 त्यांरे ग्रहस्थण थानक आय लीपें जब, आर्या घोवण गारा मे घालें रे ।
 केइ आर्या हाथां दडें लीपें छें, केइ गार पीडा हाथां भाले रे ॥ ४८ ॥
 केइ आर्या थानक तणी छंजाख्यां, पडी हुवे तो थानक माहे आणें रे ।
 त्यां छंजाख्यां आपरी कर जाणें, तिणसूं मेल दे एकंत ठिकाणे रे ॥ ४९ ॥
 ओषध आदि दे तंबाखू इधकी आणे, वधें ते बासी राखे छे रातो रे ।
 त्यांनें पूछ्या कहें अंतों ग्रहस्थ री छें, तिणरी फेर आग्या ले परभातो रे ॥ ५० ॥
 आपरी वस्त थानक में वासी राखे ते, ग्रहस्थ री थापी किण न्यायो रे ।
 बले ग्रहस्थ री आग्या लेवें किण लेखे, त्यांमें आ पिण अकल न कायो रे ॥ ५१ ॥
 मूआ गया रा पातरा इधिका हुवे ते, त्यांरी पिण ममता मूकें नाही रे ।
 त्यांनें पडिया राखे छे विण पडिलेह्यां, आपरा थानक मांही रे ॥ ५२ ॥

लोट पातरा थानक मे पडीया देखीने, कोइ प्रश्न पूछें छें आंमो रे ।
 अँ लोटने पातरा सावठा किणरा, जब तो कहें छे ग्रहस्थ रा ठांमो रे ॥ ५३ ॥
 लोट नें पातरा ग्रहस्थ रा कहिनें, आप न्यारों होय जावें रे ।
 एहवा एहवा भूठ जाणें वोलें, त्यामें साव रो खेरो न पावें रे ॥ ५४ ॥
 ग्रहस्थ रे लोट पातरा क्याने चाहीजे, ते थानक में मेलें क्याने रे ।
 आपरा पातरा नें कहें ग्रहस्थ रा, साध न कहीजे ज्याने रे ॥ ५५ ॥
 जो आपरे चाहीजें लोट पातरा, तो लेवे छे तिण मांसू ताह्यो रे ।
 वले मूआं गया रा ववे लोट पातरा, ते मेल देवे तिण मांह्यो रे ॥ ५६ ॥
 ओ तो कोठार ज्युं छे लोट नें पातरा, ते तो निश्चेइ त्यांरा जाणो रे ।
 जो भेषघारी कहे अँतो ग्रहस्थरा छें, त्या विकलां रो करजो पिछ्छांणो रे ॥ ५७ ॥
 विण पडिलेह्यां राख्यां पहिलो व्रत भागो, बीजो व्रत भागो भूठ भाख्यां रे ।
 तीजों व्रत भागो जिण आगना लोप्यां, पाचमों व्रत भागो इधिका राख्यां रे ॥ ५८ ॥
 आचार कुसील तणे लेखें तों, चोथो नें छठों व्रत भागा रे ॥
 विण पडिलेह्यां पातरा इधिका राखे, ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ५९ ॥
 लोट पातरा ने उपधि इधिका राखे, त्यामें छे मोटी खोडो रे ।
 इधिकाइ राखे ने विण पडिलेह्यां, ते तो निश्चें भगवान रा चोरो रे ॥ ६० ॥
 कुगुराने ओलखावण जोड करी छे, सोजत सहर मभारो रे ।
 समत अठारे ने वरस तेपनें, आसोज सुद सातम थावरवारो रे ॥ ६१ ॥



ढुहा

भेषघारी भूला जिण धर्म थी, त्यांरा फूटा अमितर नेत ।
 ते भोलां नें भिष्ट करवा भणी, कूडा लगावें कूहेत ॥ १ ॥
 निज दोषण ढांकण भणी, भूठी भूठी बणावें बात ।
 त्यांरी बात माने तिण जीव रें, आवे तुरत मिथ्यात ॥ २ ॥
 चहरबाजी तमासा नी परें, ज्यू भेषघाख्यां मांड्यो फंद ।
 किणही भोला नें न्हांखी फंद मे, जब पांमें अधिक अणंद ॥ ३ ॥
 काचा पंखी रें पांख आइ नहीं, ते उछल पडीयो आला बार ।
 तिणनें पडीयो देखनें पापीया, त्रापे आवे तुरत मभार ॥ ४ ॥
 ज्यू काचों जांणपणों छे, तेहनें, तिणने भिष्टकरण हुवे तयार ।
 तिणनें भिडकावें सुध सावां थकी, कूड केलवे दासंवार ॥ ५ ॥
 कमाड जड्यांनें उघाडीया, तिणनें दीसें उघाडों पाप ।
 ते वीर वचन उथापने, करें कवाड जडण री थाप ॥ ६ ॥
 चोढें दोष अणाचार सेवता, पृछ्यां आरे न हुवें ताहि ।
 ते ढालें उतारे कूड कपट सूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिन आग्या मे]

केई साध रो भेष पेंहरी नें भूला, आडा जडे उघाडे कमाड ।
 त्यांमें केई तो कहें म्हांनें दोष लागे छे, केई कहें म्हांनें दोष न लागें छें लिगार ।
 कवाड जडे पिण दोष जांणें छें, यां भूठाबोलां रो निरणों कीजो* ॥ १ ॥
 कवाड जडे नें दोष न जांणें, ते तो छें एक मूर्ख री पांत ।
 त्यां भेषघाख्यां नें पूछा कीजे, त्यांनें दोय मूर्ख कहीजे भलीभांत ॥ २ ॥
 मोनें कमाड जडवो उघाडणों नाहीं, थांरो श्रावक कहें थांसूं जोडी हाथ ।
 जब तो कहे म्हें उणनें सूंस करावां, ए सूंस करावो मोनें सांमीनाथ ॥ ३ ॥
 जब कहे उणरें पेंहलो वरत नीपनो, तो किसों वरत उणरें नीपनो जांणों ।
 जोड कवाड हाथा सूं जडें उघाडे, हिसा रों त्याग कीयो छे सुमता आंणो ॥ ४ ॥
 जब तो कहें उणरो पेहलो व्रत भागो, जबकि सों व्रत उन श्रावक रो भागो ।
 हिसा रो पाप सागेड लागो ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

श्रावक जड्यां उघाड्यां पहिली व्रत भागो,
 थे पिण कवाड जडो ने उघाडो,
 दोष न गिणे छें कवाड जड्यां उघाड्यां,
 जब मूंडो विघाडने पडगयो फीटो,
 बले भेषवारी नें पूछा कीधी,
 पाछा आबो जब पिण कवाड उघाडो,
 थानक रो कवाड तो जडो उघाडो,
 तो थे ग्रहस्थ तणो कवाड खोलेने,
 जब तो कहे म्हे कवाड जड्यां मे,
 आगे वाइ हुवें काइ ढांकी उघाडी,
 इम मूठ वोलीनें होय गयो पार,
 हाट माहें तो वाइ थे वेठी न जाणो,
 कोइ वाइ ओरां रो कमाड उघाडें,
 माहे तो वाइ ढांकी उघाडी न जाणो,
 कोइ ग्रहस्थ कहे सांमी कमाड उघाडें,
 जब थे कमाड उघाड मांही क्युं न जावो,
 इत्यादिक खिष्ट कीया छें अनेक वोलां सूं,
 कवा कवाड जड्या माहें दोष जाणे छे,
 यांरा बडा वडेरा दर पीढ्यां लग,
 त्यां तो दोष जाणें नही लीघो,
 बयालीस दोषां मे दोष कह्यो छे,
 भिने दोष में दोष जाणे ने टाल्यो छे,
 साधवीयां रो नांम लेइनें,
 ते परभव सूं डरे नही पापी,
 साध ने कवाड जडवो थापण ने,
 जो साध जड्यां उघाड्यां पेहलो व्रत भागो,
 तिण मूढमती नें पाछो इम कहीजे,
 साधवीयां तो सील राखण नें जडे छे,
 जब मूढ मती पाछो इम बोलें,
 डाला राखणें गोड जडीयां सूं काडें,
 तिण मूढमती नें पाछो इम कहिणो,
 घर में एकली अस्त्री छें बाल जवान,
 १११.

जब तो थारोई पहलो महाव्रत भागो ।
 जब हिंसा रो दोष थारोई लागो ॥ ६ ॥
 तिणने जाब सूं जाब देइ खिष्ट कीघो ।
 बलतो जबाब पाछो नही दीघो ॥ ७ ॥
 ये कवाड जडें गौचरी जावो ।
 तो ग्रहस्थ रो आडो देख पाछा कांय आबो ॥ ८ ॥
 तिणमे तो दोष गिणो नही कांड ।
 क्युं नही जावो तिणरा घर मांही ॥ ९ ॥
 दोष तो मूल न जाणो लिगार ।
 तिणसूं मांहे न जावो खोल कवाड ॥ १० ॥
 तिणनें पाछो खिष्ट करवो छे एम ।
 तो हाट खोली वेहरायां वेहरो नही केम ॥ ११ ॥
 थाने वेहरावे तो वेहरो नही कांय ।
 हिवे कहो थें दोष गिणो किण मांही ॥ १२ ॥
 असणादिक वेहरण मांहे पवारो ।
 कमाड खोल्यां में दोष न जाणो लिगारो ॥ १३ ॥
 तिणरो पाछो जाबतो मूल न आयो ।
 तो पिण पापी सूं चोडेकह्यो नही जायो ॥ १४ ॥
 कहे कमाड खोलायने न लीयो आहार ।
 हिवे तो मूढ दोष न जाणें लिगार ॥ १५ ॥
 यांरा बडा वडेरां रा आखर संभालो ।
 त्यांरी सरघा ने विकला लायायो छे कालो ॥ १६ ॥
 साध ने कवाड जडवो थापे ।
 जाण जाणनें वीरना वचन उथापें ॥ १७ ॥
 पापी कूडा कुहेत लगावण लागो ।
 जो साधवियांरोइ पहलो व्रत भागो ॥ १८ ॥
 तूं ओही विचार हीया मे न देखे ।
 साध कवाड जडे किण लेखें ॥ १९ ॥
 सील राखण पेहलो व्रत भागें छे जेह ।
 ए खोटो दिष्टंत देवें लोकां आगे तेह ॥ २० ॥
 थें गौचरी जाओ ग्रहस्थ नें घर तांम ।
 इतरे मेह आय गयो तिण ठांम ॥ २१ ॥

एकली अस्त्री छें तिहां रहो के न रहों,
 म्हे वरसते मेह नीकल जावां वारें,
 जो थे सील राखण नें पांणी माहें चालों,
 आर्या तों कवाड जडे सील राखण,
 आपरो व्रत भागो तो कंहणी न आवें,
 भोला लोकां नें समझ पडें नहीं कांड,
 वरसते मेह नीकलें अस्त्री कना थी,
 साधवीयां कवाड जडे सील राखण नें,
 सीलादिक कारण विण कवाड जडें छें,
 जब तो पहिलो महाव्रत निश्चेंड भागों,
 त्यांनं कवाड जड्यां माहे दोष वतावें,
 कहे साध तों फलसों हाथां सूं उघाडें,
 कवाड विवे तो फलसों भारी छें,
 ते तो आचारंग सूतर माहें कह्यो छें,
 कवाड जडण उघाडण रो दोष डांकणने,
 वले आचारंग माहे चाल्यो कहे छें,
 कंटक वोदीया पाठ कह्यो छें सूतर में,
 आचारंग दूजें सतक पेंहलें अघेनें,
 कंटक वोदीया साखा नें फलसो कहे छें,
 ते तों कवाड जडण नें उंचा अर्थ करें छें,
 कटक साखा रो ठूठी पूंजे दुवार खोले,
 कंटक वोदीया रो अर्थ फलसों कहे ते,
 तिण भेषधारी ने पूछा कीजे,
 जो धर्म कहे तो लोकां में भूंडा दीसें,
 कवाड जड्यां माहें दोष उघाडों,
 तो पिण पापी मूल न माने,
 कवाड जड्या उघाड्या हिंसा कही जिण,
 थोडी हिंसा कीयां डंड आवें चोमासी,
 वेतकल्प सूतर रे पेंहले उदेशे,
 आडो जडेनें रात रो रहिणों,
 साध नें रहिणो दुवार उघाडे,
 पोतें जडण उघारण रो कांम न पडें तो,

जब तो कहे म्हे न रहां तिणजंम ।
 चौथो सील वरत राखण ने काम ॥ २२ ॥
 जब थारें लेखें थारों पहिलों व्रत भागों ।
 थे सील राखण जीव माख्या अथागों ॥ २३ ॥
 जाव अटक गया जब पड गया फीटा ।
 डाहा लोकां में तो घणा भूंडा दीटा ॥ २४ ॥
 तिण साध नें श्री जिण आगना जाणो ।
 तिण में पिण श्री जिण आग्या प्रमांणो ॥ २५ ॥
 सीलादिक कारण विण मेह में चालें ।
 तिण माहे घोचो अग्यांनी घालें ॥ २६ ॥
 जब भूठ वोलें फलसों देवें वताइ ।
 तो कवाड जडवारी कुण चलाइ ॥ २७ ॥
 फलसो पूंजें खोलें माहें जाणो ।
 म्हे कवाड जडण रो संक क्यूं आणों ॥ २८ ॥
 फलसों उघाडण रो भूठ चलायों ।
 ते पिण एकंत मूसावायो ॥ २९ ॥
 ते कंटक नी साखा डाली जाणो ।
 पांचमों उदेसो जोय करो पिछाणों ॥ ३० ॥
 तिण निश्चेंड चोडें चलायो छे कूडो ।
 त्यांरा साधपणा माहे पर गइ धूरो ॥ ३१ ॥
 फलसों होसी तो पूंजणी किम आवें ।
 निश्चेंड गालां रा गोला चलावें ॥ ३२ ॥
 कवाड जड्यां खोल्यां पाप कें धर्म ।
 पाप कह्यां निकल जाअें सरघा रों भर्म ॥ ३३ ॥
 सांभलजों सूतर री साख ।
 कवाड जडवोछे साध नें कहे छे अन्हाख ॥ ३४ ॥
 आवसग सूतर चौथा अघेन मभार ।
 नसीत वार में उदेसें विचार ॥ ३५ ॥
 साधवीयां नें नहीं रहिणो उघाडे दुवार ।
 सील नें उपजतों जाण विगाड ॥ ३६ ॥
 साध नें कमाड जडवो नहीं चाल्यो ।
 जडीयें दुवार तो रहणों नहीं पाल्यो ॥ ३७ ॥

आर्यां रो नांम लेइने साघ जडें छें,
 आर्यां न जडे तो जिण आगना लोपी,
 मन करने पिण साघ कमाड न बांछे,
 ते वरज्यो छें उत्तरावेन पेतीस में अघेन,
 मनोहर घर ने वले चित्रांम कीघा,
 कवाड सहीत ने घर धवलीयों हुवे,
 जो इतरा बोल माहिलो सहजा हुवें तो,
 आगे पडीयां छें जिम नचित पख्यां छो,
 चंद्रवा छूटा ने साघ पाछा बाघे,
 ते चित्रामादिक समारे हाथा सूं,
 ज्याने मन करनं वांछणा जिण पाल्या,
 वले कमाड जडवो साघां ने थापे,
 गोसाले पिण कमाड जडीयो नही दीसैं,
 गोसालो मूआं पछे चेलां जख्या छें,
 पेह्ला चेलां ने करडा सूस कराए,
 जब चेला टटवस करणो मांड्यो,
 चेलां टटवस करने पाछो उघाड्यो,
 गोसाला नें घीसालतो लाजां मरे छे,
 गोसाला रे तो जागा सूतर में चाली,
 ते तीथकर बाजें ते किण विव जडसी,
 केई पापंडी पिण बाजें वेरामी,
 भगवंत रा साघ बाजें कमाड जडे छे,
 भूठ बोलता बोलता जाव में अटकें,
 वले क्रोध करे प्रजलता पापी,
 साघां रा भेष थकां कमाड नें जडतां,
 वले दोष काडे त्यांसूं मंड जाए साह्या,
 कमाड जडवारो दोष ओलखावण,
 समत अठारने वरस वावने,

त्यांनं जिण मारग रा कहीजे अजाण ।
 साघ जडे तिण भांगी छे जिणवर आण ॥ ३८ ॥
 ते काया सूं किण विव जडें कमाड ।
 चोथी गाथा जोय करों निस्तार ॥ ३९ ॥
 माला सहीत नें धूपादिक वासकारी ।
 वले चंद्रवा सहीत न वांछे लिंगारी ॥ ४० ॥
 तिहां रहितां दोष न लागें कांड ।
 त्यांरी बंछा पिण नही करणी मन मांही ॥ ४१ ॥
 वले हाथा सू जडे उघाडें कमाड ।
 त्यांरो विगड गयो जाबक आचार ॥ ४२ ॥
 त्यांनं कायाइं करेने सेवण लगा ।
 त्यांने वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ ४३ ॥
 ते सूतर भगोती सू करों पिछांणो ।
 ते तो आपरा मुतलब रे काम जाणों ॥ ४४ ॥
 पछे निज आलोवण कीधी गोसाले ।
 जब चेलां कमाड जड्यो तिण काले ॥ ४५ ॥
 बीजू तो आगे हुंतो उघाडो दुवारों ।
 तिणसूं चेला जडीयो उघाख्यो कमारों ॥ ४६ ॥
 जडवों उघाडवो नही चाल्यो कवाड ।
 ओ पिण दीसैं उघाडो विचार ४७ ॥
 ते पिण आडा न जडे कमाड ।
 त्यां विकलां नें दीजे तीन विकार ॥ ४८ ॥
 तो अनेक आका माका ले उठें ।
 सुघ साघां री निंदा करें परपूठे ॥ ४९ ॥
 निरलजा हुवे ते मूल न लाजें ।
 न्याय चरचा करे त्यांसूं दूरा भाजें ॥ ५० ॥
 जोड कीधी पालीसहर मभार ।
 आसोज सुदि वीज ने बुधवार ॥ ५१ ॥

दुहा

दुषम आरें पांचमें, हीण परी लोकां री बुध ।
 त्यानें साध नें असाध दोनूं तणी, पूरी परती न दीसें सुध ॥ १ ॥
 भेषधारी भागल तूटल फिरें, इण साध तणा भेष मांहि ।
 त्यारें माया ममता अति घणी, ते कह्यो कठा लग जाय ॥ २ ॥
 गांमा गांमा थानकत्यारे बांधीया, छ काय रो कर घमसाण ।
 नामें पर नामें त्यारें जूजूआ, त्यामें पर रह्या मूढ अयाण ॥ ३ ॥
 चेला चेली करणरा अति लोभी, त्यारें लागी तिसणा लाय ।
 ववेक विकल बालक विरघ नें, तुरत मूडलें मांहि ॥ ४ ॥
 त्यां भेष भांड्यो छे भगवान रो, वले छोडी सरम नें लाज ।
 चेला चेली करण रें कारणे, करें छें अनेक अकाज ॥ ५ ॥
 वले ओर दोप सेवें घणा, ते पूरा कह्या नहीं जाय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[पाषड बधसी आरे पाचमें]

जिण साधपणा रा गुण जाण्या नही रे, वले नही जाण्यो समकत रो सरूप रे ।
 एहवा विकलां नें मूड भेला करे रे, ते भेप ले बूडा भवजल कूप रे ।
 त्याने साध म जाणो श्री भगवान रा रे ॥ १ ॥
 बूढा ने मूडे बालक रें लालचें रे, जाणें बालक होसी म्हारें भणणार रे ।
 पिण अे दोनूँड पेटभरा पेटारथी रे, त्यानें सांग पेंहराय कहे अणगार रे ॥ २ ॥
 तिण बालक ने न्याती लेगा पकडने रे, तिणनें ग्रहस्थ कीयो छे भेष उतार रे ।
 ते बालक विकल थको रमतो फिरे रे, ते पिण चाल्या छें तिणरी लार रे ॥ ३ ॥
 तिण नें पाछो ल्यावण री आसा धारने रे, धरणो पाख्यो तिण ठामें जाय रे ।
 तोही हाथ न आयो त्यारे डावडो रे, जब फेर धरणो दीयो छें ताय रे ॥ ४ ॥
 कहे मानें पाछो सूपेदो डावडो रे, नही तो अणसण कर छोडूंथां उपर प्राण रे ।
 कें हूं पाछो होय जासूं ग्रहस्थी रे, जोरी दावें लेजा सूं तिणनें ताण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले कजीयो कलेस कीयो तिण अति घणो रे,
 'क्षोषड ज्युं उघाडा नांच्या लोक मे रे,
 तो पिण हाथे नही आयो डावडो रे,
 भूखां मूखां ते पिण थूंही गर्यो रे,
 पहिला तों विकलां नें मूंड माहे लीया रे,
 तिणानें तो विकल निजरां देखी लीया रे,
 भेषवारी विलखा वेदल हूआ घणा रे,
 'आसा अलूघा पाछा आवीया रे,
 पछें माहोमां मिलने मतो कीयो रे,
 हिचे वालक विण बूढो किण कांमरो रे,
 इम जाणे नें बूढा ने पिण छोडे दीयो रे,
 ओ मिण भेष छोडेनें हूवो ग्रहस्थी रे,
 कलेस कदागरो करे घणो रे,
 तपकर मरवा मांडें उपरे रे,
 तिणमे भेषघाच्छां ने सांभल जाण जो रे,
 यारा चेहन देखे नें याने अटकल्या रे,
 जो सेमल न हुवे तो कह दो एतलो रे,
 लडे भगडे ल्यायाने माहे ल्यां नही रे,
 जो त्याग न करे तो तिण कजीया ममे रे,
 'एहवा कजीया कराएनें चेला करे रे,
 जो इतरो कहे कजीया मूल करो मती रे,
 तिणरीं आसा छोडे ने निरदावं हुवें रे,
 मुस करेने कजीयो मेटें किण विघें रे,
 तेर्ता कुटंब छोडेने पडीयो विटंब मे रे,
 एहवा विकलां ने साधु सरखे छे भेलीया रे,
 त्यानें कर्म जोगे एहवा कुगुर मिल्या रे,
 कोइ मादो अकेलो ग्रह करलां थकां रे,
 'एहवो पिण दांन लेता लाजे नही रे,
 मिनष आंतरीयो जूतो घुरडकें रे,
 वले साता उपजावण सावां ने दीयो रे,
 कोइ घर छोडतो थानक मोल ले रे,
 वले परिग्रह पिण छाने सूपे ग्रहस्थ ने रे,

छोरा ने पाछो लेजावण काज रे ।
 त्यां भेष री मूल न राखी लाज रे ॥ ६ ॥
 वले फीटा पडीया छे लोकां माहे रे ।
 पछे काया होय घरणों दीयो उठाय रे ॥ ७ ॥
 पछें घरणों पाडयो पिण ठामे जाय रे ।
 तोही न मटी विकलां नें तिणरी चाहि रे ॥ ८ ॥
 जाणे कोइ न सरीयो म्हारे काज रे ।
 घणा लोकां में खोए लाज रे ॥ ९ ॥
 आपे मूंडा दीठ छां लोकां माहि रे ।
 तो इण बूढा ने बारे काडे दो ताहि रे ॥ १० ॥
 जब बूढो तो जाय बेठो तिण गांम रे ।
 जेसा हुंता जेसोइज कीघो कांम रे ॥ ११ ॥
 वले देवे करडा करडा सराप रे ।
 छोरा ने पाछा ल्यावण री थाप रे ॥ १२ ॥
 पिण निश्चे तो जाणे श्री भगवत रे ।
 यारे छोरा सुं दीसे ध्यान अतंत रे ॥ १३ ॥
 इणने लेसां म्हे आसी जब वेंराग रे ।
 साचा हुवे तो कर दो इणरो त्याग रे ॥ १४ ॥
 सेमल छे चेला करवा काजरे ।
 ते निरलजा मूल न आणें लाज रे ॥ १५ ॥
 म्हारे छोरा ने लेवण रा छें त्याग रे ।
 जब तो थोडा में कजीयो जाये भाग रे ॥ १६ ॥
 तिणरे चेलां री लागी तिसणा लाय रे ।
 सुमता नही दीसे तिणरे माहि रे ॥ १७ ॥
 त्यांरी पिण अकल गइ दपटाय रे ।
 ते पिण खूता छे मोह मिथ्यात रे माहि रे ॥ १८ ॥
 घन उदकें सावां रे थानक काज रे ।
 त्यां विकलां ने किम कहीजे मुनीराज रे ॥ १९ ॥
 घन उदकें सावां रे थानक काज रे ।
 ते दांन लेतां पिण नाणे लाज रे ॥ २० ॥
 जाणें साव रहसी तिण थानक माहि रे ।
 सावां ने साता उपजावण ताहि रे ॥ २१ ॥

चले साध्यां रें थानक कारावण कारणे रे, लेवें छें अउत तणों तो माल रे ।
 पढ़वा थानक जे साध भोगवें रे, त्याभें भव भवमें होरी घणा हुवाल रे ॥ २२ ॥
 चले कहि कहिनें त्यानिं कितरो कहें रे, नही छोटें मुरदाधिक रो घन माल रे ।
 ते पिण नांग धरायें साधरो रे, आ चोटें देखों पुगुरां री चाल रे ॥ २३ ॥
 तिण परिग्रहा नें कहें छें थानक तणो रे, आप तों होय जावें छें दूर रे ।
 पिण अंतरंग में जाणें छें घन आपरो रे, गमटी जाणेंगें बोलें कूट रे ॥ २४ ॥
 जिणरें थानक छें तिणरो परिग्रहो रे, पिण ओर रो गेल नही तिलमात रे ।
 तिण थानक रा धगी घोरी जो साध छें रे, तो सायां रो परिग्रहो छे साम्यात रे ॥ २५ ॥
 तिण घन रा भेलू त्यांरा श्रावक हुवें रे, ते मिल नें सेलें ठिकाणों जोय रे ।
 ते गुप्त छानें छें सामग्री गभे रे, ते लोगां में चावो न करे कोय रे ॥ २६ ॥
 ते व्याज बधें छें सामग्री गभे रे, त्यां समलां रो जाणें छें साध नांग रे ।
 ते अंतरंग में जाणे छें मन नें आपरो रे, ओ समलोद आसी म्हारि काम रे ॥ २७ ॥
 जिणमें नागों छें तिणरा घर थरी रे, चाहीजे ते बेंहरी ल्यावें जाण रे ।
 धी खांड पत्रादिक देखें गोवला रे, तिणरो लेखो उ जाणें ते परमाण रे ॥ २८ ॥
 जो थानक निगतें पशों व्याह्रिजे रे, चले काठ मांपण नें मांठी कांग रे ।
 जब पिण सामग्री मांहे गेलो करे रे, तिण परिग्रह नें लेवा न दें तांग रे ॥ २९ ॥
 करलो कांग पश्चां लेवा दे तोहमें रे, नें लेवा दे लोच भागण रे काम रे ।
 ते पिण मुतलब जाणें आप रो रे, विण मुतलब लेवा न दे तांग रे ॥ ३० ॥
 त्यांनिं कितरायक मांग्यां पाछो दे नही रे, जोरीदायें बेंठा छें गुंठों मार रे ।
 जब अंलाजां भरता पाछा बोलें नही रे, पिण छानें छानें भायां में करे पुगार रे ॥ ३१ ॥
 पढ़यो पोलांगो छें छण भेग ने रे, टापो नलायो लोकां माहि रे ।
 जाल मांठयो छें मोह गिथ्यात रो रे, तिण मांहे पडें अग्यांगी आय रे ॥ ३२ ॥
 फदे उराग वाम त्यांरें उदें हुआ रे, जब घात चावी हुइ लोकां माहि रे ।
 पापें गरीयो धरो फूटे गयो रे, हिवें दोग छिपाया न छिपें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 जब साध श्रावक शारा लाजां गरें रे, लोकां में हुवों जाण फितूर रे ।
 जब दोग बांगण री मन करे घणी रे, हिवें विमविध सूं चोटें बोलें कूट रे ॥ ३४ ॥
 त्यांनिं परगव रो उर तों मूल धीरें नही रे, शूठ बोले दोगां नें देखें दाब रे ।
 पढ़वा साध श्रावक समला बूटे गया रे, ते चिह्नगत में होरी घणा खुराव रे ॥ ३५ ॥
 कोइ श्रावक यांरा ते खावें मांगनें रे, तिणनें दरायें रोकड दाग रे ।
 तिण मांहे रीर जाणें छें आपरो रे, एणरें होरी ते आसी म्हारें कांग रे ॥ ३६ ॥
 उ मोल ल्यावें पी साकार सुंदाठी रे, चले चिरक पिण मेवा नें गिस्तान रे ।
 उ पिण खावें छें नाम गांनिं जीतो रे, गुर नें पिण देखें अबलक दांग रे ॥ ३७ ॥

तिणरे निठ जाअें खातां देतां थकां रे, तो फेर सखु करें दातार रे ।
 कानी कानी गांमां नगरां थकी रे, परिग्रह मेलण ने करें तयार रे ॥ ३८ ॥
 तिणें फेर दरावें कर कर आंमना रे, वले उण कना थी ल्यावें छे आप रे ।
 चोरां कुती मिली ज्यूं मिल गया रे, ज्यूं थारें पिण आकर राखी छे थाप रे ॥ ३९ ॥
 किणरे दीय सीख्यां रे सोदों वेचणो रे, जब एक जणों वणें दलाल रे ।
 गरग ठगणने कपट दगों करें रे, ये पिण इण विघ ठग ल्यावे माल रे ॥ ४० ॥
 मिनष आंतरीयो जूतो घुरडकें रे, घन उदके रांक गरीब ने ताहि रे ।
 ते पिण दरावे तिण श्रावक भणी रे, तिणरी पिण आसा छे मन माहि रे ॥ ४१ ॥
 हूं कहि कहि ने वले कितरो कहुं रे, इण भेष माहे छें घोर अंधार रे ।
 त्यांरा श्रावक भोला ने समझ पडे नही रे, ते पिण बूडे छें त्यांरी लार रे ॥ ४२ ॥
 त्यांमें दोष बतावें थानक तणो रे, जब भोला ने किण विघ दें भरमाय रे ।
 कहे थानक चाल्या छे अठारे जातरा रे, तिणसूं म्हे पिण रहां छां थानक माय रे ॥ ४३ ॥
 झम कहि कहि दोषीला थानक भोगवे रे, गाला गोलो कर देवे ताय रे ।
 हिंवें अठारे जातना थानक तेहनो रे, जू जूओ नांम सुणों चितल्यांय रे ॥ ४४ ॥
 देवरो सभा जायगा पोतणी रे, परब्राजक नों कह्यो असरांम रे ।
 रूप हेठें पिण साव उत्तरे रे, अस्त्री ने पुरुष रमवाना आराम रे ॥ ४५ ॥
 गुफा ने लोहारादिक नी साला मझे रे, वले गुफा परवत नी हुवें रसाल रे ।
 चोह कमावे तिण ठांमें पिण उत्तरे रे, विरष व्यापत उद्धान ने गडसाल रे ॥ ४६ ॥
 क्रियाणासाला ने जगने मंडव मझे रे, सुनो घर नें मसांण छत्री माहि रे ।
 परवत घरनें वले हाट मे रे, इत्यादिक जाचीने रहे तिण माहि रे ॥ ४७ ॥
 यांमें दोषीला थानक तो एको नही रे, ए सगलाइ वीर कह्या छे सिष्ट रे ।
 त्यामे सावरो तो थानक चाल्यो नही रे, थानक मांडीने वेठा ते भिष्ट रे ॥ ४८ ॥
 थानक तो कहे छे अठारे जातरा रे, अें वाखवार कहें किण कांम रे ।
 दोषीला थानक रा दोष छियायवा रे, वले दोषीला सेवण रा परिणाम रे ॥ ४९ ॥
 भोला ने भरमावें कपट दगों करी रे, तिणसूं भोला जाणे थानक निरदोष रे ।
 पिण मन माहे मूल न जाणे सुभ्रता रे, यां विकलां ने किण विघ होसी मोख रे ॥ ५० ॥
 भेषचारी भागल तूटल ओलवायवा रे, जोड कीषी छें सोजत सहर मभार रे ।
 संवत अठारे ने बरस तेपने रे, आसोज विद इग्यारस ने मंगलवार रे ॥ ५१ ॥

दुहा

आधा कर्मी नें उदेसीक जे क्रीयों, ते तों साव नें कल्पें नाहि ।
 भोगवें त्यांनें भिष्टी कल्या, नहीं साव तणी पांत मांहि ॥ १ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक भोगवें, त्यांनें नपेचा श्री भगवान ।
 त्यांनें कृण कृण कहि वतलावीयें, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ २ ॥

दाल

[भविष्य जिन ३०]

आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, निश्चें कल्या अणाचारी ।
 दसवीकालिक तीजे अथेन, तिणमें संका म जाणों लिंगारी रे ।
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, एहवा कुगुर छें हीण आचारी रे ।
 त्यांनें वांछा हुवें घणी खुवारी ॥ १ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, भिष्ट कल्या भगवंत ।
 दसवीकालिक रें छठें अथेन, ते निरणों करों मतवंत रे ॥ २ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, कल्या छें गृहस्थ नें भेषवारी ।
 माहा सावद्य क्रिरीया लागी कही त्यांनें, आचारंग सेद्या अथेन ममारी रे ॥ ३ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, भागा छहू व्रत जाणों ।
 आचारंग बूजा अथेन रें छठें उदेसें, तिहां जोय करों पिछांगो रे ॥ ४ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, नरकागामी कल्या भगवान ।
 ते उत्तराधेनरे वीसमें अथेन, ते निरणों करों बुधवान रे ॥ ५ ॥
 आधाकर्मी भोगवीयां अधोगति जावें, बले कलयों छें अनंत संसारी ।
 भगोती पहिला सतक रें नवमें उद्देवें, तिहां बोहत कलयों विस्तारी रे ॥ ६ ॥
 आधाकर्मी उदेसीक न कल्पें ते लेवें, तिणमें छें मोटी खोड ।
 आचारंग रें पहलें सुतखवें, तिणमें कह वीयो भगवंत चोर रे ॥ ७ ॥
 आधाकर्मी एकवार भोगवें, तिणमें चोमासी प्रायच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणरा प्रायच्छित रो कांइ कहणों रे ॥ ८ ॥
 आधाकर्मी नें एकवार भोगवें, तिणमें सबलें दोषण लागों ।
 सदा निरंतर थेटसूं भोगवें छें, तिणमें प्राच्छित रों नहीं धागों रे ॥ ९ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साघा रे काजे थानक दहें लीपें जद, लाखां कोडां गमें तस जीवां नें माख्या, अनेक तस जीवा ने जीवां माख्या, कुगुरां काजें जीव इण विघ भारें, सास उसास संवी तस जीव नें माख्यां, दसासतखंध सुतर में कह्यो छें, चिगटरो तिरको न्हाखें तिण ठामे, तिहां गार दड्यां लीप्यां दर हंघाय, पूतीकर्म भोगवें तिण साघ ने, दोय पक्ष तणो सेवणहार कह्यो छें, तो पूतीकर्म दोष विचे आघाकर्मी, सदा निरंतर आघाकर्मी सेवे छे, आघाकर्मी थानक जाण जांच सेवे छे, त्यांरे तो माहामोहणी कर्म बंधे छे, आघाकर्मी थानक जाण जाणनें सेवे, मिश्रभाषा बोले महामोहणी बांधे, आघाकर्मी थानक जाण जाणनें सेवे, त्यांरा श्रावक पिण त्यांरी साख भरें छें, आघाकर्मी तो थानक सेवे उघाडो, त्यांरा जेसाइ सांमी ने जेसाइ सेवग, केइ श्रावक पिण त्यांरा भारीकर्मा, आघाकर्मी नें निरदोष कहें छे, आघाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, ठाणाअंग दसमें ठाणे कह्यो अर्थ मे, आघाकर्मी उदेसीक भोगवें त्यांनें, ते सुघ बुघ बाहिरा जीव अग्यांनी, आघाकर्मी रा दोष सुतर सूं बताया, हिवे मोल लीया रा दोष कहूं छूं, मोल रा लीया भोगवें त्यांने, दसवीकालक रें तीजें अघेनें, मोलरो लीघो भोगवें त्यांनें, उतरावेन रें बीस में अघेनें,

कीड्यां नें माकादिक देवें दाटी ।
 त्यां विकलां ने होसी गति माठी रे ॥ १० ॥
 अनेक जीवां उपर दीधी माटी ।
 त्यांरी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ ११ ॥
 माह मोहणी कर्म बंधाय ।
 ते पिण विकलां ने खबर न काय रे ॥ १२ ॥
 तठे कीड्यां लाखां गमे आवे ।
 लाखांगमे कीड्यां मारी जाय रे ॥ १३ ॥
 कह्यो छें गृहस्थ ने भेषधारी ।
 सुयगडाअंग सुतर मभारी रे ॥ १४ ॥
 दोष विशेष छे भारी ।
 तेतो निश्चे नही अणगारी रे ॥ १५ ॥
 वले साघ वाजे छें अन्हाखी ।
 दसासतखंध सुतर छें साखी रे ॥ १६ ॥
 पूछ्यां पाघरा बोळणी नावें ।
 कूड कपट सूं काम चलवे रे ॥ १७ ॥
 पूछ्यां थकां वोलें कूड ।
 ते पिण गया बहती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 वले भूठ वोलें जाण जाण ।
 त्यांरो विगड्यो छें जावक धाण रे ॥ १९ ॥
 भूठ बोलता न डरें लिंगार ।
 ते वूड गया कालीघार रे ॥ २० ॥
 साघ सरवें ते निश्चें मिथ्याती ।
 मूंडा तणी म जाणों वाती रे ॥ २१ ॥
 साघ सरवे त्यांरि भारी कर्मो ।
 ते किम पामे जिण घर्मो रे ॥ २२ ॥
 वले सुतर मे दोष अनेक ।
 सुणजो आंण ववेक रे ॥ २३ ॥
 निश्चे कहाा अणाचारी ।
 तिणमे संका म जाणों लिंगारी रे ॥ २४ ॥
 नरकगामी कहाा भगवंत ।
 ते निरणों करो मतवंत रे ॥ २५ ॥

मोलरो लीयो नहीं कल्पें ते वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड ।
 कह्यो छें आचारंग रे पहिलें सतखें, तिणनें कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ २६ ॥
 मोलरो लीयो भोगवें त्यानें, भिष्ट कहा भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अवेने, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ २७ ॥
 मोल रो लीयो भोगवें त्यांरा, सुमत गुपत महाव्रत भागा ।
 नसीत रें उगणीस में उदेगें, व्रत बिहुणा छें नागा रे ॥ २८ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्राच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रों नही परमाणो रे ॥ २९ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागो ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रो नहीं थागों रे ॥ ३० ॥
 मोल लीघा रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर माहे छें अनेक ।
 हिवें नित पिंड वेंहखां रा दोष कहूं छूं, ते सुणजों आंग ववेक रे ॥ ३१ ॥
 नितरों नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें निश्चें कहा अणाचारी ।
 दसवीकालक रे तीजें अवेनें, तिणमें संका म जाणों लिंगारी रे ॥ ३२ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें भिष्ट कहा भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अवेनें, ते निरणों करों मतवंत रे ॥ ३३ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, त्यानें नरक गांभी कहा भगवान ।
 उत्तरावेन रें वीसमें अवेनें, ते निरणों करों बुधवान रे ॥ ३४ ॥
 नितरों नित एकण घर रों वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड ।
 आचारंग रे पेंहलें सतखें, कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ३५ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणनें मासीक प्राच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर वेंहरे तिणनें, प्राच्छित रों नहीं प्रमाणो रे ॥ ३६ ॥
 कोइ भेषचारी भागल नित रो नित वेंहरे, एकण घर रों आहार ।
 त्यानें पूछ्यां थका पाघरा नहीं वोलें, भूठ बोलें विविध प्रकार रे ॥ ३७ ॥
 नित को एकण घर रो धोवण तों वेंहरां, नित पांणी न वेंहरां लिंगार ।
 धोवण नें च्यार आहार म्हे न गिणें, एहवों भेषघाख्यां रे अंधार रे ॥ ३८ ॥
 तेहीज नित नित कलाल रा घर सूं, वेंहर ल्यावें छें उंनो पांणी ।
 चोडे घाडें पीढ्यां लग वेंहरतां आवें, वले भूठ वोलें जांग जांणी रे ॥ ३९ ॥
 चोडें भूठ सभा में बोल्यो, नितका पांणी न वेंहरां तांम ।
 तिण भूठ तणों उघाड कीयो जब, लीयो वडां रो नाम रे ॥ ४० ॥
 जो साचो हुवें तो सूतर माहे काड बतावत, वडां रों नहीं लेतो नाम ।
 तिणरा बडेरा तो अणाचारी उघाडा, त्यामें साघणों नहीं तांम रे ॥ ४१ ॥

भगवंत भाष्या सूतर ने उथापे, बडां लारे सेवे अणाचार ।
 ते बूड गया बडा सहित अग्यांनी, ध्रिग त्यारो जमवार रे ॥ ४२ ॥
 वीहार करे जब नित को वेंहरे, ते नितको वेहस्थो गिणे नांही ।
 इण विघ कूड कपट करे नित वेंहरे, ताजो आहार लेवारे तांई रे ॥ ४३ ॥
 वीहार तणों नांम लेने अग्यांनी, चोडे सेवे अणाचार ।
 आ आप छादे थाप कीधी अणहंती, ते वितल हुआ वेकार रे ॥ ४४ ॥
 केइ तों नित रो नित एकण घर नो, वेंहरे घोवण ने पांणी ।
 ओ पिण उघाडो अणाचार सेवे, निडर थका जांण जांणी रे ॥ ४५ ॥
 केइ कहे म्हारे वंधी गोचरी छे, तठें तो म्हें एकंतर जावो ।
 वाकी फुटार घर मोकलाय देवां म्हे, तिहा थी मनमाने सोइ ल्यावों ॥ ४६ ॥
 जको वेंहरे तिणनें नही जांणो, वीजां रे अटकाव छे नांही ।
 इण विघ कूड कपट करे नित वेहरे, भोगवे सर्व टोंला मांही रे ॥ ४७ ॥
 एकण टोला री एकण गांव मांही, ते जुदी जुदी थांनक उतरे छे ।
 आरज्यां रहे छें अनेक, सगल्यां रे सभोग छे एक रे ॥ ४८ ॥
 ते आपरे गोचरी जू जूड जावें, ओर रा लीया घर नही टाले ।
 ते सगली जणी आहार पांणी ल्याए, गुर ने आंग दिखा छे रे ॥ ४९ ॥
 सगलां रो आप्यो आहार गुर भोगवे छे, नित पिड रो न करे टालों ।
 एहवा भेषघारी भागल साध वाजे, त्यां आत्मा ने लगायो कालो रे ॥ ५० ॥
 एक टोला रा नित जू जूओ वेहरे, एकण घर रो आहार पांणी ।
 त्या विकला ने साध सरघे छे मूरख, ते पूरा छे मूढ अयांणी रे ॥ ५१ ॥
 केइ भेषघाख्यां रे इग्यारे संभोग, एक भेलो न करे आहार ।
 बवीयो घटीयो आहार देवे लेवे, बले माहोमा करे मनवार रे ॥ ५२ ॥
 आहार तणा संभोग ने तोख्यो, ते पिण खावा रे काज ।
 एक माखे आहार जू जूवों करता, निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 आहार पाणी माहोमा देवे लेवे, बले कहे म्हारे नही संभोग ।
 एहवा भूखोला भागल भेषघारी, त्यां लागों जोगने रोग रे ॥ ५४ ॥
 आघाकर्मी नें मोल रो लीघों, नितको एकण घर रों आहार ।
 ए तीनां दोषां रो फल ओलखायो, अल्प मात्त कन्हो विस्तार रे ॥ ५५ ॥
 आघाकर्मी नें मोलरो लीघो, नही वहरणों करडे काम ।
 निरदोषण ने निर्पांड आहार, कारण पख्यां लेणो कन्हों तांम रे ॥ ५६ ॥
 आघाकर्मी नें मोलरो लीघों, ओं तो निस्चे उघाडो असुघ ।
 नित पिड तो ढीला परता जांणी वरज्या, आ तीथंकरां नी बुध ॥ ५७ ॥

भेषधारी तो, दोष अनेक सेवे छें, ते पूरा कह्या न जाय ।
 वले साधपणा रो नाम धरावे, ते भोलां ने खबर न काय रे ॥ ५८ ॥
 अँ तीनूँ दोष तों जाण जाण ने सेवे, वले वद वद ने बोले कूड ।
 त्यांरो घाण रो घाण बिगड गयो जाबक, ते गया वेहती रे पूर रे ॥ ५९ ॥
 अँ तीन दोष ओलखावण काजे, जोड कीधी छें पाली मभार ।
 संवत आठारे पचावन वरसे, भादरवा विद दसम बुधवार रे ॥ ६० ॥



ढलल : ३०

दुहल

भेषधरल ललंढी तडसल करे, डुरगट कर दें लुकलं डलहल ।
 वले वतलवें दलन डलरुणल तणु, डलंगे दीधी डवडवी वडलड ॥ १ ॥
 तुडलं डुडु ललंढी तडसल करे, केडु डस डहलडल कलंड ।
 केडु डेट डरलई करणु, आछुओ आहलर खलवल रल डरलणलड ॥ २ ॥
 डुं डुं सरलवे तेहनें, डुं डुं डलल डुले हुडुड डलड ।
 डुं डुं कडुं वधे छेँ डुीकणल, तलणसु संसर वधतु डलड ॥ ३ ॥
 डलरुणल रु डलन डलवु करे, आछुओ आछुओ खलवल रे कलड ।
 सुध असुध डलण वुहुरतल, डुल न डलंगे ललड ॥ ॡ ॥
 सुध सलध ललंढी तडसल करे, डलवी न करे लुकल डलहल ।
 वले न वतलवे उण दलन डलरुणुं, दुष ललगतु डलणुने तलहल ॥ ५ ॥
 ललंढी तडसल डलवी नहुी करे, तुडलने कडुटी केहे छेँ डुडु ।
 उललुतल दुष वतलवे छे तेहडे, कर कर कुडुी रुडु ॥ ६ ॥
 ललंढी तडसल रु डलरुणु, डलवुकुीडलं दुष ललगे तलड ।
 तलणरल डलव डेद डुरगट करुं, ते सुणडु डलतुत लुडलड ॥ ७ ॥

ढलल

[२ डलवुडस डलन आडल सुखकरुी]

केडु भेषधरल ललंढी तडसल करे डव, डुरगट करे लुकल रे डलहल ।
 वले डलरुणल रु दलन केहे लुकलं डे, डलणे डवडवी दीधी वडलड रे । डणलडण ।
 आतुडकलड वलगुवु, ओछुओ वुवड डेट रे करण ।
 डुलल लुकलं ने कलड डवुवु रे, डुरडव सलहुडु डुवु ॥ १ ॥
 तुडलंरल शुरलवक डलण वुवेक रल वलकल, डलण डुडु री रलत न डलंगे ।
 तडसुी ने दलंन देवल रे करण, अे डलण डलरुणु सलडे आणे रे ॥ २ ॥
 अे डलण डलरुणल रु दलन केहल २ डुरहुसुड ने, तुडलंने डलण तडसुडल करलवे ।
 आड तणल खलवल ने कलंजे, तुडलंने डलरुणु सलडे अणलवे रे ॥ ३ ॥
 डुरहुसुड ने डुडुडलरस संवछुडुी रु, उडुवलस करतलने नहुी करलडु ।
 दुडे दलन तुडलने उडलस करलए, डलरुणु आड सलड अणलडु रे ॥ ॡ ॥
 अे डेटरे करण डुीधी थकल डलडु, आरंभ करलवणरु डर नलंगे ।
 तुडलने शुरलवक डलण तेसलडुड डललुडल, ते वलकलं ने वलकल न डलणे रे ॥ ५ ॥

आनरा पारगा रो तो निस करेनें,
 तिगनें तपसी तगों भाव भेलें अयांनी,
 पाछली रातरा उठ सवेरा,
 उतावळ नीपजावें असपाविक,
 कोइ तो घनागरों कर रावें,
 कोइ सुंठ कूटेगें करें कलौड,
 कोइ दूध उजाकर अलगो नेलें,
 कोइ हाट धकी घरे आंग रावें,
 इत्यादि अनेक असुध वरवां नें,
 अनुध नें सुध करता नहीं डरपें,
 त्यांरा गुर पिग त्यानें तेंसाइ जाणें,
 सुध असुध लेता नहीं सकी,
 साधां नें दान देवाने काजे,
 ते तो दोष व्यालीस नें दोष छळें छें,
 आणंद आन दे श्रावक अनेक हुआ छें,
 त्यां साधां नें दान देवारे काजे,
 तपसी तग पारगा रे दिन,
 आछो आछो आहार देता जागिं तिन घर,
 वास वास नें घर लांब पातला हुवे ते,
 वास वास माहे आहार आछो वेवे छें,
 समवांगी गोचरी नें छोडवें,
 एहुवा भेषवारी पेटनरा छें पासी,
 कम नेटकें घर आहार आछों न देवें,
 रसप्रीवी ताजों आहार गवेपें,
 तपसी रें तों आहार अल्प चहिणें,
 तिन तपसी तना नारगा रें दिन,
 उग दिन तो तपसी रें ओले कापला
 वांती वांती मूं घर संमाल संमाली,
 ते आहार तपसी नें तपसी रा मनेगी,
 उग तपसी तारे मग्या हुआ त्रिस्ता,
 तपसी करे सगलाइ त्रिस्ता हुआ,
 मुहनी वाडेनें भेष कजयो.

वारन करें छें विविध प्रकार ।
 गुर सहित वूडा कालीवार रे ॥ ६ ॥
 ताकीद सुं चूल घडावें ।
 जाणें रखे जनसी फिरजावे रे ॥ ७ ॥
 कोइ करे सीराविक जांम ।
 तपसी नें वेहरावग रें काम रे ॥ ८ ॥
 कोइ मोळ लेई जावे तांम ।
 तपसी नें वेहरावग काम रे ॥ ९ ॥
 आगा पाछा नेगे रावें तांम ।
 वेहरावग रा आंग परिगाम रे ॥ १० ॥
 असुध वेहरता संक नहीं जाणें ।
 त्यां चित दीयो छें कागि रे ॥ ११ ॥
 प्रावणा आधा पाछा जीमावे ।
 ज्यूं जें पारगों साथे बगावें रे ॥ १२ ॥
 त्यानें मुतर नाहे क्वांग्या ।
 पारगा साधां साथे न आग्या रे ॥ १३ ॥
 सामग्री वा घर मोट्या जांग ।
 पातरा माडें आंग रे ॥ १४ ॥
 त्यानें तों देवें दल ।
 त्यां घर जावे संमाल रे ॥ १५ ॥
 यां गद्य गोचरी नांडी ।
 त्यांरी त्रिहंगति नें होनी नांडी रे ॥ १६ ॥
 तो दिन त्रिप घर वेहरे नांडी ।
 जाना वेजा त्यांरा घट मांहे रे ॥ १७ ॥
 ने आवें घोडा घर नमुरो ।
 मग्या रद्या छें मूंह फाडे रे ॥ १८ ॥
 ल्यावे मरस आहार ।
 जाणें पूजनों नांडयो तेंवार रे ॥ १९ ॥
 निल्ले कापलाई ल्यावे ।
 त्रिगुं तपसी तना गुन रावे रे ॥ २० ॥
 जणें काज हुआ मूं निहाल ।
 नांडनें नाटनीया जणें क्यार रे ॥ २१ ॥

नाटकीयो वरत उपर खेले, नाच अनेक विघ आणे ।
 नीचे उभा ते करे धीग धीगा, ए पिण दांन माहे सीर जाणे ॥ २२ ॥
 नीचला धीग धीगा तों कीधा घणाड, पिण दांन तो नाच साहं आवे ।
 दान आयें ते नाटकीयो नाच्यो तिणमूं, पिण मिल नें सगलाड खावे ॥ २३ ॥
 नाटकीयो वरत उपर नाच्यो ते, सगला कुटंब रो काम चन्दावे ।
 ज्यूं यारे पिय लांबी तपसा करे ते, पारणे सारा ताजो खावे ॥ २४ ॥
 लांबी तपसा रे पारणे तपसी जाणेने, गमतो आहार आणेने देंगो ।
 वले गोचरी मे गमतों आहार जाणेने, वले मांगी मांगीने लोणो रे ॥ २५ ॥
 गरदा गिलांण रोगी तपसी रे कारण, गमतो आहार गवेपे ते लोखे ।
 यारे ओलें भेषचारी सगला, ताजो ताजो आहार गवेपे रे ॥ २६ ॥
 इण रीते ताक ताक आहार गवेपे, ते पिण खासी सराय सराय ।
 एहवा भेषघाख्यां में चारित नांही, चारित हुवे त्यारो कोयला थाय रे ॥ २७ ॥
 इह लोक रा अर्थी तपसा करे त्यारा, चोखा नही परणाम ।
 ते तपसा ने परगट करदे लोका मे, खावा पीवा जस कीरत काम रे ॥ २८ ॥
 साधु ने लांबो तप करे जब, प्रच्छन्न छाने करणो ।
 ग्रहस्य ने कहणो जिण वरज्यो, तिणरो आवसग में निरणों रे ॥ २९ ॥
 जोग संग्रह ना वोळ वतीस चाल्या छे, तिण मे सातमो वोळ पिच्छणो ।
 अजाण्यो तप साधु ने करणो, अग्यात कुल गोचरी जाणो रे ॥ ३० ॥
 वले समवाअंग चोथा अंग माहे, जोग सग्रह नां वोळ वतीस ।
 त्यां पिण अजाण्यो तप करणो, इम भाष गया जगदीस रे ॥ ३१ ॥
 वले उत्तराधेन इगतीस मे अघेने, प्रश्नव्याकरण दसमा अघेन माहि ।
 तिहां पिण वतीस जोग सग्रह छे, नाम मात्र कह्या जिणराय रे ॥ ३२ ॥
 वेसाली नगरी वीर पघाख्या, तिहा पचल दीया माम च्यार ।
 त्यां पिण तपसा ने पारणा रो दिन, किणने कह्यो न दीसें दिगार रे ॥ ३३ ॥
 त्यांने दांन देवा री भावना भाड, च्यालं महीना जीर्ण मेठ ।
 छांणी तपसा भगवंते कीधी, ओ सुघ ववहार छे नेट ॥ ३४ ॥
 अभिग्रह करे ते न कहे लोकां ने, जाणे रखे कोऽ दोष लग्ये ।
 ज्यू लांबी तपसा रो पारणों जाणे जब, केई भोला अमुघ वेहग्ये ॥ ३५ ॥
 एक आदि देड दातरी तपसा करे ते, ग्रहस्य ने न कहें ताम ।
 ग्रहस्य ने कह्यां दोष लागेतो जाणो, लांबी तपसा पिय जांनो आम ॥ ३६ ॥
 साधु रे महीना रो पारणो जाण्यो, वाऽ मीरो कर्णे वेंग्यां ।
 तिणरी जायगा में पारणो करे साधु, तिणरो मांनो रे वारयो न्यमो रे ॥ ३७ ॥

कर्म जोगें साध नें वमण हूइ जब, साध रो चित्त आयो ठिकाणें ।
 जब आप तणो अवगुण पिण सुद्धयो, आहार नें पिण असुघ जाणें रे ॥ ३८ ॥
 गाढों निरणों करने सीरो न लीघों, उण पिण सीरो मोनें कर दीघों ।
 ते आहार कीयां म्हांरी भिष्ट हुइ मत, तिणरो बारलों चोर में लीघो रे ॥ ३९ ॥
 वाइ तो सीरो करे कर्म बांध्या, वले बारलों दीघो खोयों ।
 आ वाइ तो दोनूं प्रकारें बूढी, म्हें पिण चारित्त इवोयो रे ॥ ४० ॥
 म्हारा पारणा रो दिन वाइ जाण्यो तो, तिणसूं ए कर्म हूवों भारी ।
 ए सकली विचार तिहां थी निकलीयो, आयों बाइ रा घर मभारी ॥ ४१ ॥
 वाइ ने साच बोलाए साध, बारलों पाछों दीघों ताय ।
 पछें सगली वात सुणाए वाइ नें, ओलंभो दीयो तिणनें समझाय रे ॥ ४२ ॥
 सीरो असुघ खायों तिणसूं बारलो लेणों, जब तूं तो ओर रे माथें देती ।
 इण पाप थकी परभव दुखपाती, अठे पिण घणा घमेडा लेती ॥ ४३ ॥
 आ कथा तो भेषवारी जाणें छें, ते कहि कहि घणी दिढावें ।
 पिण पोतें तो तपसा लांबी करे जब, घणा लोकां नें तुरत जणावे रे ॥ ४४ ॥
 लांबी तपसा नें पारणा रो दिन, घणा लोकां में देवें फेलाइ ।
 पेटभरा इह लोक रा अर्थी, जाणें इवडवी चोडे वजाइ रे ॥ ४५ ॥
 वाइ तों पारणो विना जाणायां जाण्यो, तिणसूं हूचो विगाडो ।
 तो आपरें मुतलव तपसा जणावे, ते भव भव होसी खुवारो रे ॥ ४६ ॥
 गाला गोलो करे साव असुघ लेसी, असुघ आहार वाइ ज्यूं देसी ।
 ते दातार नें लेवाल वेहुइ, आगे घणा घमेडा लेसी रे ॥ ४७ ॥
 इह लोक रें अर्थे तपनही कारणों, परलोक रें अर्थे न करणों ।
 कीरत सलागादिक रे पिण अर्थे न करणों, दसवीकालक नव में अघेन निरणों ॥ ४८ ॥
 तप करणों कह्यो एक निरजरा नें अर्थे, ते लोकां में क्यां नें पमासी ।
 जे तप करने पमासी लोकां में, तिणरा फल आछा किम पासी ॥ ४९ ॥
 केई इह लोक रें अर्थे करे त्यांसूं, छानें केम रहवायो ।
 परगट लोकां में कीयां विण तिणरो, जाणें पेट आफर गयो ताह्यो रे ॥ ५० ॥
 इह लोक रें अर्थे तप करनें, ठाला बादल ज्यूं करे ओगाज ।
 मोटी तपसा सूं लेनें पारणा तांइ, जाणे दीवकी रंही छें वांज रे ॥ ५१ ॥
 पांच सात तांइ मोटो तप नहीं दीसे, मोटो तो पख मासादिक जाणो ।
 एहवो मोटको तप लोक जाणें तो, दोष लागण रो दीसें ठिकाणो रे ॥ ५२ ॥
 मोटा तप रो पारणों कह्यां लोकां में, गुण तो कांइ न दीसें ।
 दोष लागतो उघाडो दीसे तिणसूं, छानो तप कह्यो जगदीसें रे ॥ ५३ ॥

कोई भेषवारी भागल फिरे एकेलो, ते तपसी रो नांम धरावे ।
 वेलें वेलें पारणों कहेकहे, लोकां में ठागो चलावें रे ॥ ५४ ॥
 तपसी तणों नाम ले ले कपटी, ठग ठग लोकां रा माल खावें ।
 जाणें मोनें तपसी लोक जाणें तो, आछो आछो आहार वेंहरावें रे ॥ ५५ ॥
 तिणरी भोला लोकां नें तो ठीक नहीं छें, तपसी जाण आछो वेंहरावें ।
 इणरा तप तणो ठागों नहीं जाणें, तिणसूं लोक ठागवे रे ॥ ५६ ॥
 ते डील तणों घट पुष्ट थयो छे, बले लुटपुट डीला सनूरों ।
 बले चाल पिण तिणरी छेंठी देखे, बुधवंत जाण लीयो फिनूरों रे ॥ ५७ ॥
 लूखों सूकों सरीर तपसी तणो हुवे, बले सरीर हुवे तेज र्हीत ।
 बले तपसी तणा लोही मांस ढीला हुवें, चलगत हुवे वेराग सहीत रे ॥ ५८ ॥
 केइ चुतर विचक्षण डाहा हुवें ते, दोयां नें रुडी रीत पिछाणें ।
 तपसी नें तों तपसी जाणेंले, कपटी ने कूडो जाणें रे ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषवारी भागल भिष्टी नें, एहवों भागल भिष्टी मिलें आणों ।
 तो अें ठग ठगें माल खावें लोकां रा, त्यारी भोला ने नहीं पिछाणो रे ॥ ६० ॥
 भेषवाख्यां तणा किरतव ओलखावण, जोड कीवी नाथदुवारा मभार ।
 समत अठारें वरस छपनें, काती सुद आठम मंगलवार रे ॥ ६१ ॥



बाल ३१

[प्रभव०]

मोची तणों थो दीकरो, ते गयों देसांतर तांम ।
 आगें काल कीयों राजा तिहां, मोची गयों तिण ठंम ॥ १ ॥
 पुत्र नहीं तिण राय नें, जब किणने बेंसाणें पाट ।
 अमराव सहू नें मित्रवी, मिलिया थाटो थाट ॥ २ ॥
 माहो माहि मिसलत करी, हथणी सिणगारो आज ।
 कुंवरी बरमाला घालसी, तिणने बेंसाणां राज ॥ ३ ॥
 ए वात ठेंहराइ मिलीने सहू, हिवें मेल्या राणोंराण ।
 तिण स्वयंवर मंडप मभे, मोची पिण उभों आंण ॥ ४ ॥
 तिण मोची रा गला मभे, कुंवरी घाली बरमाल ।
 दीठों रूप रलीयांमणों, रायपुत्र जाण्यो सुखमाल ॥ ५ ॥
 मंत्रीसरा मोची नें पूछीयों, तुमनों कुण कुल कुण जात ।
 जब इण कह्यो खत्री कुल जात छां, उंचो गोत कह्यो बिल्यात ॥ ६ ॥
 इम सांभल सहू हरखीया, परणाइ राजकुमारी ।
 राज बेंसाणें राजा कीयों, मोची नें तिणवारी ॥ ७ ॥
 मात पिता छे मोची तणा, तिण देस में पडीयो काल ।
 मउ साथे आया तिण नगरीयें, तिहां मोची बेठों सरवर पाल ॥ ८ ॥
 तिण मातपिता नें ओलखे, पगां पख्यो छें आय ।
 समभाए ल्यायों सहर में, त्यां पिण दीधी जात छिपाय ॥ ९ ॥
 मोची मातपिता सहीत सूं, सुखे राज करे तिणवार ।
 पिण जात सभाव मिटें नहीं, त्यांरों त्यांसूं पडीयो उघाड ॥ १० ॥
 बहुना पगनी मोचडी, तिणरी कूट गइ छें तूट ।
 जब सुसरें तिण मोचडी तणी, चोखी लीधी कूट ॥ ११ ॥
 कूटी ले तो देखीयों, सुसरा नें तिणवार ।
 सांसो पडीयो तेहनें, जाण्यो खाधी बात विकार ॥ १२ ॥
 राजा दीसे रलीयांमणों, मन मान्यो मिलीयो मेल ।
 कूटी सांह्यो भाली जाणीयो, क्यूं दीसें जात में भेल ॥ १३ ॥
 कूटी अहलाणें जाणीयो, आ जात दीसें छें पोची ।
 ओ राज अंस दीसें नहीं, संकेत जात रो मोची ॥ १४ ॥

आचार री चौपई : ढाल ३१

तिण रात धणी नें पूछीयो, एक अरज हमारी सुणसों ।
 हुवे जेसी फुरमावो मो कने, आप जात रा कुणसों ॥ १५ ॥
 तू तो म्हारी अस्त्री, हू छू थारो वर ।
 पाणी तो पीधा पछें, हिवे काई पूछे छे घर ॥ १६ ॥
 जब बलती रायकुवरी कहे, हू अस्त्री ने थें वर ।
 जो मेल हुवे तुम जात मे, तो जातो दीसे घर ॥ १७ ॥
 जो पहली मोंनें जताय दो, तो काइ बांधे लेउं वात ।
 परधान कांमदार प्रोहत भणी, तेडाउं रातोरात ॥ १८ ॥
 इणने वार वार पूछ्यो घणो, जब ओ पिण उडो आलोची ।
 थारे करणों वेसो कर लीजो, हू छू जात रो पिण मोची ॥ १९ ॥
 जब सातोरात बोलवीयो, रायकुवरी परधान ।
 विगडी वात सुधारलों तो, थें पूरा बुधवान ॥ २० ॥
 वले राजा कहे परधान नें, तूं गलो हमारो काट ।
 हिवे ढील म कर इण काम री, किण री मत जोए वाट ॥ २१ ॥
 जब परधान कहे किण कारणें, इसडी बात करो छो पोची ।
 जब राजा कहे हूं राजा नही, हू छू जात रो मोची ॥ २२ ॥
 आ बात सुणे राजा तणी, परधान पिण पांम्यो हरख ।
 ओ पिण जात हीणो हूंतो, इणरेइ मिट गइ मन धरक ॥ २३ ॥
 ओ इहा देइ बोलीयो, पगभाल रह्यो छे लूंब ।
 मारी चित्ता मूल करो मती, हूं जात तणो छूं डूंब ॥ २४ ॥
 जब राज कहे तू मूठ बोलनें, रखे पाडे म्हारी आव ।
 जब महिलां मांहे डूंबडे, लेइ बाजाइ रवाव ॥ २५ ॥
 हिवे तेडावो कांमदार ने, उण सू गाडी वाधो वात ।
 जो आपे चावा हुवां, तो उ करसी दोंयां री घात ॥ २६ ॥
 इणने पिण तेडावीयो, ते पिण आयो रातोरात ।
 राजा परधान कहे तेहने, तूं म्हां दोंयां री कर घात ॥ २७ ॥
 जब कांमदार कहे किण कारणे, इसी कहो थे वात ।
 जब राय परधान दोनू कहे, म्हांरी विगड गइ वात साख्यात ॥ २८ ॥
 हू मोची ओ डूंबडो, म्हे ठागा सूं खाधो राज ।
 हिवे गलो काट तू म्हांरो, ज्यू रहें दोंयां री लज ॥ २९ ॥
 इण बात सुणे दोनूं तणी, कांमदार हरख्यो तिणवार ।
 मिट गइ चित्ता तेहनी, हिवे डर नही रह्यो लिंगार ॥ ३० ॥

थे चिन्ता मत राखो मांहेरी, मोसू मत जावो खोबी ।
 थे तो मोची नें डूब छो, हूं पिण जात रो घोबी ॥ ३१ ॥
 जब राजा घोबी नें कहें, रखे बात करें तूं फीटी ।
 जब घोबी महिलां मभे, दीधी हरष सूं सीटी ॥ ३२ ॥
 हिवें तीनूं जणां मतों कीयों, हिवें ल्यावो प्रोहित बोल्या ।
 बात चावी हुवें आपणी, तो धो तीनूं देवें मराय ॥ ३३ ॥
 हिवें प्रोहित नें बोलवीयों, तिणहीज रात मभार ।
 कहें प्रोहित नें तीनूं जणां, म्हां तीनां नें तूं मार ॥ २४ ॥
 जब प्रोहित कहें किण कारणें, कळं तीनां री घात ।
 जब कहें तीनूँद तेहनें, म्हांरी बिगडी बात साख्यात ॥ ३५ ॥
 हूं राजा तो मोची अछूं, ओ डूब छें परधान ।
 कामदार घोबी हूवों, म्हें तीनूं नही सुघमान ॥ ३६ ॥
 म्हां तीनां नें तूं मारसी, तो म्हांरी सोभा रहसी ताम ।
 उघाड न पडसी लोक मे, सह सुघरसी काम ॥ ३७ ॥
 ए बात सुणीनें हरखीयो, थे डर मत राखो म्हारों ।
 थे मोची डूब नें घोबी छों, ज्यूं हूं पिण जात रो पीजारों ॥ ३८ ॥
 जब राजा कहें भूठ मत बोलजे, जब काढी पीजण री घाइ ।
 घट धूं धूं करतो बोलीयों, जब संका न रही काइ ॥ ३९ ॥
 ते ठीक अमरावां नें नहीं, यां राज कीयों छें खूब ।
 यां च्याळं जणां ठागों कीयों, तिणरी बाहर न बूब ॥ ४० ॥
 वले माहोमा एकएकनो, न करें मूल उघाड ।
 जात सघलां री पाडवी, तिणरो डर नहीं रह्यो लिंगार ॥ ४१ ॥
 इण दिष्टतें जांगजों, भेषधारी छें अनेक ।
 ते साध बाजें लोक में, त्यां पेंहर बिगाड्यो भेष ॥ ४२ ॥
 त्यांरा टोला बाजें जू जूवा, जू जूइ सरधा अनेक ।
 त्यांरो आचार पिण छें जू जूओं, पिण काम पड्यां कहें एक ॥ ४३ ॥
 पाणी सगलां माहे मरे, सगला सेवें अणाचार ।
 ते माहोमा सह मिल गया, त्यांरों करें कुण उघाड ॥ ४४ ॥
 माहोमा सरधा एकएक नी, खोटी जाणें छें अंधकार ।
 पिण खोटा त्यानें कहिता डरें, जाणें म्हारोइ करेला उघाड ॥ ४५ ॥
 असाध कहें जो तेहनें, ते पिण मनें कहें असाध ।
 जब उघाड पडें दोयां तणों, तिणसूं न करे छे विषवाद ॥ ४६ ॥

आचार री चौपई ढाल : ३१

ते ठगो चलवें छें लोक में, ठग ठग खाअें लोकां रा माल ।
 ते जासी नरक निगोद में, त्यामें परसी घणा हवाल ॥ ४७ ॥
 माहोमा कहे म्हे सर्व साघ छें, त्याने मन माहे जाणें असाघ ।
 एहवा भेषचारी छे तेहने, किण विघ होसी समाघ ॥ ४८ ॥
 ते माहोमा बंदणा छोडाय दे, वले मुख सूं कहे त्याने साघ ।
 एहवा भूठाबोला छें तेहने, भव भवमे होसी व्याघ ॥ ४९ ॥
 ज्यूं यां च्याहं जणा ठागों करी, राज कीयो मोटे मंडांण ।
 ज्यूं अें भेषचारी ठागो करी, माल खाअे लोकां रा आंण ॥ ५० ॥
 ज्यूं अें माहोमा च्याहं जणा, कहे माहोमा सुघमानं ।
 ज्यूं भेषचारी माहोमा कहे, म्हे सर्व साघू छां गुणखानं ॥ ५१ ॥
 ज्यूं अें माहोमा च्याहं जणा, जाणे म्हे छां घणा असुघ ।
 ज्यूं भेषचारी माहो माहि में, जाणें म्हे पिण नही छा सुघ ॥ ५२ ॥
 ए च्याहं जणा चावा हुवें, तो एकण भव में दुख थाय ।
 पिण भेषचारी दुखिया होसी घणा, त्यारो कह्यो कठा लग जाय ॥ ५३ ॥
 भेषचारी भागल तूटल भणी, त्याने ओलखे जथा तथ बुघवानं ।
 त्यारो संग परचो छोडाय दे, घालें घटमें ग्यांन ॥ ५४ ॥
 रायकुमारी डाही हुंती, तिण कीघी त्यांरी पिछाण ।
 कूटी लीघी देखनें, मोची लीघो जाणं ॥ ५५ ॥
 तिण सरीखो कोइ चुतर होसी, ते करसी पूरी पिछांण ।
 आचार पाडूओ देखनें, भेषचारी लेसी जाणं ॥ ५६ ॥
 एक मोची ने परखीयां, तीनूं परख्या तेह ।
 ज्यूं एक टोलाने परखसी, ते सगला परखती जेह ॥ ५७ ॥

दुहल

ओ दुषड आरु डलंओ, ते कल उतरतु डलं ।
 तलणडें डेडडरल डलगल घणल, डडकत वलण डूंड अडलंण ॥ १ ॥
 तडलंसूं आओर तूं डलें नहुं, तु डलण नलड डरलवें डलघ ।
 कने डलंग रलखें डलघलं तणु, डलंओ व्रत दीडल छें वलरलघ ॥ २ ॥
 तडलरल दुष उघलडे तेहसूं, करें छें कओडल रलड ।
 धरणु डलडें डलओर डें, लडवल नें हुड डलवे तडलर-॥ ३ ॥
 तडलरल शुरलवक डलण डेंडल हुवें, गुरलं नें डखलड डखलड ।
 धरणु डरलवण रल तडलरल करें, डेले डलओर रे डलहल ॥ ॡ ॥
 तडलं लओडल छुडुडल लुकलं तणु, वले लओडलु डलघ रु डेख ।
 ओ कलणरे डंकल हुवे, तु अरूवरू लु डेख ॥ ॡ ॥

ढलल

[रे डलवलडल ओन आओल]

तडलरु डललव्रत कुड डलगु सुणेंनें, तलणरु कुड करें उघलड ।
 डड डलघ शुरलवक डलल डेला हुड नें, लडवल नें हुड डलड तडलर रे । डलवलडण ।
 तडलनें डलघ सरधुओ केंड, तडलरल डलगल व्रत नें नेड रे ।
 हुआ ठलल ठुकरल ओड* ॥ १ ॥
 तडलनें शुरलवक डलण तेंडल इओ डललुडल, तडलरे नुडलड तणु नहु नलत ।
 डलओ डूठ तणल नलकलल वलनलड, डूंई डलगडें डेरलत रे ॥ २ ॥
 ओथु व्रत डलगु कहे छें ओण रु, तलणनें तु डेठु रलखें तलहल ।
 ओर ओडलर ओणल डलल डेला हुड नें, धरणु डलडु डलओर रे डलहल रे ॥ ३ ॥
 ओ सुध डुध वलनल नलगडल नलरलओल, डलनें ओणुडल इण धरणल ललडक ।
 ते ववेक रल वलकल हुंतलं ओडलरेड, तडलनें डेलेडल तुलल रे नलडक रे ॥ ॡ ॥
 ते ओडलर ओणल छे डूख रल करडल, ते आडल डलओर रे डलहल ।
 ते रलड डरूवल छे ओओलडलडलं, तडलं डलसें उडल छें आड रे ॥ ॡ ॥
 थें डुहलरल डलघ रु व्रत डलगु कहु छुं, ते तु दु छुं अणहुंतु आल ।
 हलवे डलओ नें डूठ रल खडर डडुडल, तलणरु कलढण आडल छुं नलकल रे ॥ ॢ ॥

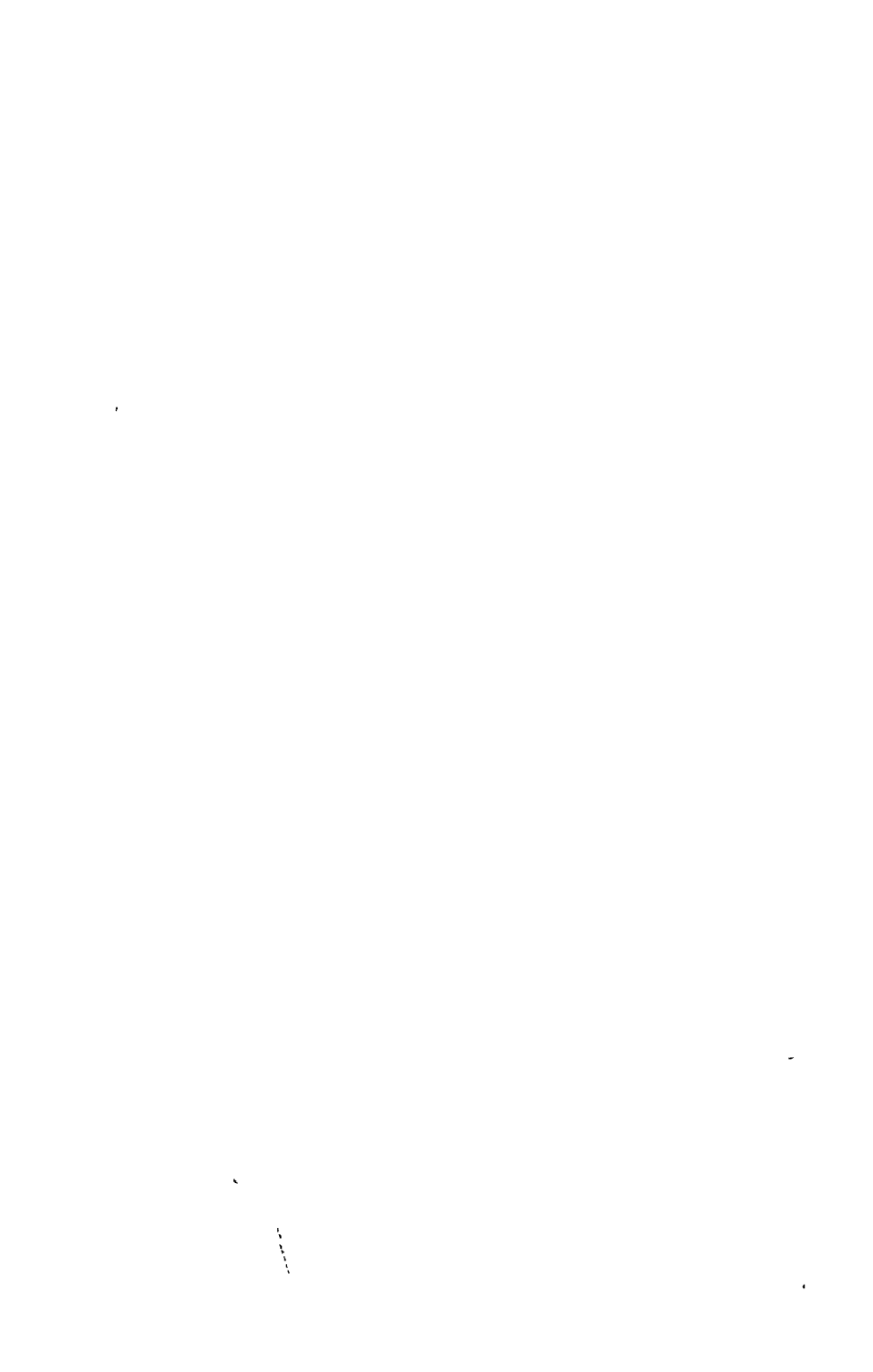
*डह आंकओ डुरतुडेक गलथल के अन्त डें ह ।

इण वात रो निकाल काढ्यां विण थानें, च्याहं आहार नहीं खाणो ।
 अनंता सिधा री आण छे थाने, वले तीर्थकरां री आणो रे ॥ ७ ॥
 वले राज री आण छे थाने, मत खाय जो च्याहंइ आहार ।
 म्हे पिण च्याहंइ आहार न खावां, ओ धरणो दियो मम बाजार रे ॥ ८ ॥
 अनंता सिधा री ने तीर्थकरां री, म्हें आण दीधी छे मम बाजार ।
 वले राजा री आण दराइ छे थाने, मत खायजो च्याहंइ आहार रे ॥ ९ ॥
 मम बाजार में एहवो धरणो पाखी, घणा लोकां ने किया भेला ।
 एहवां भेषघारी साध रा भेष माहे, जाणें नाच्या कुब्दी खेला रे ॥ १० ॥
 यांरा साध साधवी ववेक रा विकल, धरणो पारण सू राच्या ।
 भेषघारी इणे दुषम कालें, ओघड उघाडा नाच्या रे ॥ ११ ॥
 ज्यांनं अन पाणी खांवा री आण दराइ, ज्यांरी वंछी अकालें घात ।
 मिनेषां ने मारण रो उपाय कीयो छे, त्यामें सावपणो नही अंसमात रे ॥ १२ ॥
 साध गोचरी जाजें छे तिण घर मे, आणें उभो मिथ्यारी आणो ।
 तिण घर में प्रवेश न करे साध, पडती अंतराय जाणो रे ॥ १३ ॥
 तो सांप्रत त्याने आण दराइ, च्याहं आहार री दीधी अंतराय ।
 उघाडी घात वांछी छे त्यांरी, ते पिण विकलां नें खबर न काय रे ॥ १४ ॥
 भूख रा सेठ जाण्या त्यांनं मेल्या, पेंलां ने भूख रा काचा जाण ।
 ते थोडा में लातर भूठा पर जासी, के छोड देसी अकाले प्राण रे ॥ १५ ॥
 त्यां च्याहं जणां रां नाम दीया लोकां मे, अे तो च्याहं नालां छे भारी ।
 नागण वांधण किंककिला संभूबाण, अे वेख्यां री मारणहारी रे ॥ १६ ॥
 एक तो भेषघारी कहें इम बोल्यो, मुंजरी डोरी सीध री आण ।
 यांरा ने म्हांरां पग भेला बांध देसां, आधा पाछा न देसां जाण रे ॥ १७ ॥
 एहवी वार्त करे लोकें त्यांरें मूढें, वले ठाम ठाम कहे परपूढे ।
 तो पिण निरलजा भेषघारी, धरणा सू नहीं उठे रे ॥ १८ ॥
 एहवा भारी दोषां री ठीक नहीं छे, त्याने समकत पिण नहीं पावें ।
 ते पिण सांग पेहरे साध वाजें लोकां मे, ते मेष नें यूही लंजावें रे ॥ १९ ॥
 त्यांनं श्रावक पिण तेहवा इज मिलीया, ते अकार्य करतां कुण पालें ।
 जैसा कुं तेसा आय मिलीया जब, पाघरा किण विघ चाले रे ॥ २० ॥
 धुरसूं ओ हीज अन्याय उघाडो, ते अंतर माहे न देखे ।
 जिणरो व्रत भागो कहें ते नही भ्लाडें, बीजा धरणो पाड्यो किण लेखे रे ॥ २१ ॥
 साचो भूडो हुवे तो उणरी उ जाणे, बीजाने पुरी खबर न काय ।
 ते निसेक सू इणें साचो ठेहरावण, धरणो पाड्यो बाजार रे माय रे ॥ २२ ॥

जिणरा सीलव्रत नें भागो कहें छें, तिणनें पोते आए करणो निरणो ।
 इणरें बदले बीजा भेषघाख्यां ने, किसें लेखे आए देणों घरणो रे ॥ २३ ॥
 घणां दिनां लग बाजार माहि, वासी घरणो पाड्यो ।
 इहलोक नें परलोक दोनूइ, जीतबं जनम विगाड्यो रे ॥ २४ ॥
 इह लोक तो फिट फिट हुवा लोकां में, गांमां नगरां मे घणा भूंडा दीठा ।
 भेष भेषंतर जात न्यात रें मांहि, सगलां में पडीया फीटा रे ॥ २५ ॥
 सुध साध जिणसर ना छें त्यांनैं, घरणो पारण री नहीं रीत ।
 भेषधारी भागल घरणा देसी, ते च्चिहुंगति में होसी फजीतर रे ॥ २६ ॥
 एहवा भारी भारी दोष चोडे सेवे, ते पिण साध लोकां में वाजें ।
 अंतो नागडा निरलज दीसें उघाडा, त्यांरा श्रावक पिण त्यांसूं न लजें रे ॥ २७ ॥
 चोवीस तीर्थकर ना सासण माहे, किणही घरणो पाख्यो दीसें नांहि ।
 इण दुषमकाल माहे भेषघाख्यां, घरणो दीघो बाजार रे मांहि रे ॥ २८ ॥
 जो सुध साध रे किण आल दीयो हुवें, तो साध तो सुमता आणें ।
 ओर किणहीनें दोष न देवें, आपरा संचीया कर्म जाणें रे ॥ २९ ॥
 जो म्हे किणरेइ माथे आल दीयो छें, तो आल म्हारेंइ आयो ।
 ते आल समें परिणांमां खमीयां, म्हारें कर्म निरजरा थायो रे ॥ ३० ॥
 जो इतरी करणी नावें साध सूं, अण बोख्यो रहिणी नावें ।
 ते च्यारूइ आहार ना त्याग करें नें, सागारी संथारो ठावे रे ॥ ३१ ॥
 इण कलंक उत्तरीयां विण मोनें, च्यारूं आहार खावारा पचखांण ।
 जो कलंक न उतरे मारा माथा थी, च्यारूं आहार न खाउ जाण रे ॥ ३२ ॥
 इण विघ साध अणसण करनैं, आल उतरे तो उतारे ।
 जो कर्म जोगे आल नहीं उतरे तो, किण सूं घरणो मूल न पाडें रे ॥ ३३ ॥
 जब केई भेषघाख्यां रा श्रावक इम बोल्या, इम कीयां अें सुधा न थावें ।
 आणें तो आल उतारण देवता आवता, हिवडां देवता नहीं आवें रें ॥ ३४ ॥
 तिण सूं आल देवे तिण नें पाघरो करणो, चोडे पारणो छें घरणो ।
 च्यारूं आहार खावा री आंण दराए, इण विघ पाघरो करणो रे ॥ ३५ ॥
 भूखां मरसी वले तिरसां मरसी, जब उतार देसी उवे आल ।
 तिण सूं, म्हांरा साध घरणो पाडे छें, वेगो काढण निकाल रे ॥ ३६ ॥
 यांरा श्रावक पिण एहवा छें अग्यांनी, घरणो पाड्यां में दोष न जाणें ।
 त्यां जिण मारग ओलखीयो नंहीं, समझ पड्यां विण उंची ताणें रे ॥ ३७ ॥
 यांरा श्रावक केइ पाघरा बोलें, साध नें नहीं देणो घरणों ।
 केइ विकल कहें देणो छें घरणो, यांनैं माहोमा पिण नहीं छें निरणो रे ॥ ३८ ॥

धरणो पारण गया ते ववेक रा विकल,
 ते हीया फुट गवा रा साथी,
 ते पिण पिंडत वाजें लोकां में,
 एहवा अजाण ते मूढ मिथ्याती,
 साव रो नांम धराए अग्यांनी,
 भोला लोकां माहे पूजावें,
 धरणो पाडया में धर्म जाणें ते,
 तिणसूं आहार पांणी कोई भेलो करे छें,
 अन पाणी खावा री आंण दरावें,
 एहवा विगडायल साव रा भेग में,
 धरणो पाडे साव रा भेष मांहे,
 एहवा भेषघाख्यां नें गुर करसी,
 त्यांरा धरणा पाडयां माहे दोष वतावें,
 थारें पिण साववी धरणो दीघो,
 दरवार थकी प्यादा मेंलें नें,
 वले सिन्यास्यां पिण नषेच्या त्यांनं,
 धरणो पाडेनं निकालो न काढ्यो,
 आल तो माथें ज्यूं रो ज्यूं राख्यो,
 चोथा व्रत भांगां रो आल लीयां फिरें छें,
 आल रा देवाल तो अठे नेडा फिरें छें,
 इण लेखे तो व्रत भागो छें इण रो,
 यांरा टोळावालां नें तो निश्चों न आयो,
 भेषघाख्यां नें ओलखावण काजें,
 संवत अठारें वरस गुणसठें,

त्यांनं मेल्या ते विकल विलेख ।
 छोडी छें भेष री टेक रे ॥ ३९ ॥
 धरणा पाडयां में दोष न जाणें ।
 ते जिण धर्म नें केम पिछ्णें रे ॥ ४० ॥
 धरणो पाडवा लागा ।
 ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ४१ ॥
 निश्चेंद मूढ मिथ्याती ।
 ते पिण तिण रो छें साथी रे ॥ ४२ ॥
 ते जेंन तणा छें जिंदा ।
 ते होय रह्या मोह अंधा रे ॥ ४३ ॥
 ते निमाइ निश्चें वूडा ।
 ते चिहुं गति माहे दीससी भूंडा रे ॥ ४४ ॥
 त्यांरे माथे दें अछ्तो आलो ।
 तिणरो पाछो न काढें निकालो रे ॥ ४५ ॥
 यांनं बाजार माथी उठया ।
 जब भूठा पड हो गया काया रे ॥ ४६ ॥
 पाछा फिट्टा पडनं आया ।
 ते तो सोभा कठेंद न पाया रे ॥ ४७ ॥
 अजे क्यूं नही काढे छे तार ।
 हिंवे छोडी क्यूं यांरी लार रे ॥ ४८ ॥
 ते निश्चें तो ग्यांनी जाणें ।
 अें संका सहित क्यूं तांणें रे ॥ ४९ ॥
 जोड कीधी पाली सह्र ममार ।
 आसोज विद एकम रविवार रे ॥ ५० ॥



रत्न : ३४

अवनीत रास

ढाल : १

दुहा

मद विषे कषाय वस आत्मा, तिणसूं विनो कीयो किम जाय ।
तिणरी वणें खुरावी अति घणी, ते सुणजो चित ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[विनां रा भाव सुख सुख गु जे]

कोइ गण मे हुवे साधु अहकारी, तिणरी थोडा में हुय जाये खुवारी ।
उणरों गुण कही पीगां चढावे, तो उ थोडा मे फलफूल थावे ॥ १ ॥
जो उणने गुर गुरभाइ सरावे, तो उ मगज मे पूरों न मावे ।
जब रहे टोला में राजी, ठाला वादल ज्यूं करे ओ गाजी ॥ २ ॥
इसडो अभिमांनी दोष लगावे, तिणसूं आलोवणी नही आवे ।
इह लोक रो अर्थी मूढ बाल, सल सहीत कर जाये काल ॥ ३ ॥
इसडो अभिमांनी हुवे अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत ।
तिणने गुर निषेदें घणा मांय, तो उ गुर रो घेपी हुय जाय ॥ ४ ॥
तिण भूठा ने कहे कोइ भूठो, तिण सूं तो रहे नित रुठो ।
खपे छे तिणने देवा आल, जांणे टोला मासू देउ टाल ॥ ५ ॥
यां तो घणा साघां रे माहि, म्हारी आव न राखी कांइ ।
म्हारी आसता चोडे उतारे, तो हू कयाने रूहू यारे सारे ॥ ६ ॥
याने छोडेने होय जाळं न्यारो, यारे पिण करू वोहत विगारो ।
यामे दोप परूपू भारी, जब खबर पडे याने म्हारी ॥ ७ ॥
यारा चेला ने वली चेली, त्याने फाड करू म्हारा वेली ।
इसडी चितवे मन मांय, मिले ओर सध्दा सूं जाय ॥ ८ ॥
जिण विघ गुर सूं मन भागे, तेहवी वात करें तिण भागे ।
जिण विघ जागे गुर सूं घेष, तेहवी करे वात वणेप ॥ ९ ॥
वले वोलें आल पंपाल, भूठा २ दें गुर रे आल ।
वले दोप अनेक वतावे, जावक खोटा सरघावे ॥ १० ॥
गुर गुरभाई उपर घेष, त्यांरा अवगुण वोलें अनेक ।
जुंन २ खुरट उखेले, आपरे मन माने ज्यू ठेले ॥ ११ ॥

वले आप रें स्वार्थ नावें, त्यांमें दोष अनेक बतावें ।
 केकांरी तों हूं परतीत नाणूं, त्यांनं थेटरा असाध जाणूं ॥ १२ ॥
 टोला मांहे तो घणी ढीलाई, कऱ्यां ठीक न लागें कांई ।
 तिणसूं म्हारे तो हूवेणो न्यारी, यांमें कुण विगाडें जमारों ॥ १३ ॥
 जो हूं इसडा जाणतो याने, तो हूं घर छोडतो क्याने ।
 हूं तो घर छोडनं पिछ्छांणो, में तो खोटो खाधा अजांणो ॥ १४ ॥
 कलहू लमावण री करें वले वात, जाणें फाड लेउं म्हारे साथ ।
 जब पॅलों हुवें कांन रो काचो, तो उ मान ले इणरो साचों ॥ १५ ॥
 जब ओं राखें इणरी परतीत, ओ पिण बोलें इणहीज रीत ।
 ओ तों किणही में दोष न जाणें, इणरा कऱ्यां सूं ओपिण ताणें ॥ १६ ॥
 जब ओ आपरो बेली जांण, पळें गुर सूं भगडें आंण ।
 या बेंठाहीज उंधो बोलें, आंगुणां रो पिदारो खोलें ॥ १७ ॥
 यां आगें बोल्यो तिणहीज रीत, गुर आगेंइ - बोले विपरीत ।
 वले बोले अन्हाखी अलाल, गुर नें देवें भूठा आल ॥ १८ ॥
 जिण इणने घाल्यो थो भूठो, तिणसूं तो बेंठो थो ह्ठों ।
 तिणमें दोष अनेक बतावें, मनमानें ज्यूं गोला चलावें ॥ १९ ॥
 हूं तों याने न जाणूं साध, घर में थकां रो जाणूं असाध ।
 यांरा महाव्रत पांचूंइ भागा, सुमत गुपत में दोषण लागा ॥ २० ॥
 याने राखसो टोला माहि, तों बारें नीकल सूं ताहि ।
 थें तो यांरी करों पखपात, तिण सूं मानूं नहीं थारी वात ॥ २१ ॥
 वले घणी साधवीयां माहि, साधपणो न जाणूं ताहि ।
 वले दोष घणांमें बतावे, विपरीत पणें सुणावें ॥ २२ ॥
 हूं धरती छोड परो नही जाउं, यां खेत्रां में साथे लगे आउं ।
 थां सांहमों उतर सूं आंणो, ओर गया ज्यूं मोने म जांणो ॥ २३ ॥
 थारा दोष घणाने सुणाउं, थाने चोडें असाध सरघाउं ।
 इम बोले घणो विकराल, संकें नही देतो आल ॥ २४ ॥
 जिणसूं वात बांधी थी भेली, तिण चेपी साथे लगी मेली ।
 कांयक दोष ओ पिण काढे, उणनं वले पोगां चाढे ॥ २५ ॥
 इणरी आगेई कीघी पखपात, भूठी साख भरी साख्यात ।
 जब इणनेई निखेद्यो थो गाढों, तिणसूं ओपिण बोलें आडो आडों ॥ २६ ॥
 न्याय निरणा तणी नही वात, भूठी करवा लागों पखपात ।
 न्याय निरणारी हुवें नीत, तो इणने निषेधे इण रीत ॥ २७ ॥

वनीत रास : ढाल १

श्रों तों तीमे हीज छे वांक, थें दोषण राख्या ढांक ।
 थे तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो भूठों करे विषवाद ॥ २८ ॥
 घणा दिनां काढे दोष अनेक, तिणरी वात न मानणी एक ।
 आपारे छें इसडी मरजाद, हिवे क्याने करे विखवाद ॥ २९ ॥
 इणने इण विघ पाडें कूडो, घणा बेंठा घालें मुख धूडों ।
 पिण चोरां कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विघ वेह ॥ ३० ॥
 ज्यूं मिलीयों अवनीत सूं जेह, तिणने निषेघसी किम तेह ।
 जब गुर जाण्यों इणरें सीहें, ओं तो बोलतो मूल न बीहें ॥ ३१ ॥
 ओं तो दीसें छें भारीकर्मों, निरलज घणों वेसरभो ।
 इणने प्रतख सूभी भूंडी, जब गुर तो विचारी उंडी ॥ ३२ ॥
 रखे छूट एकलों थावें, रखे सका घणों रे परजावें ।
 रखे गूजे पाखंडी अयाण, रखे जिणमत री पडें हांण ॥ ३३ ॥
 रखे घट जायेला उपगार, बेंदो उठेला लोक मफार ।
 जो इणने करडा कहूं इणवारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥ ३४ ॥
 ओं तो चडियो क्रोध अहंकारो, तो हिवें करणो कुण विचारो ।
 जो नरमाई कीयां ठाय आवे, कदा आलोय नें सुघ थावे ॥ ३५ ॥
 इम जांगी कीधी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ।
 किणरे संका न राखी काय, सगला नें दीया समभाय ॥ ३६ ॥
 जब ओं किण विघ बोले उंडो, हिवें ओ पिण बोलीयो सूघो ।
 अब तो जावजीव रडूं मांय, गण छोडण री काडूं वाय ॥ ३७ ॥
 इण दोषण काढचा था अनेक, तिणरी पाछी न पूछी एक ।
 किणने थोडो घणों दंड देणों, ते पिण नही काढियो बेणो ॥ ३८ ॥
 बले घणी साघवीयां मांहि, साघपणो न जाणतें ताहि ।
 त्यानिं काढणी नहीं ठेराई, त्यांरी वात न कीधी काई ॥ ३९ ॥
 यांनिं छोड्यां रडूं गण मांहि, तका पिण काई वात न काय ।
 टोला माहें कहेतो थों ढीलाई, तिणरी पाछी नही चलाई ॥ ४० ॥
 सगले ढीली मेले दीधी वात, विनें सहीत बोलें जोडी हाथ ।
 हिवें आप घणो पिछ्छतावें, गुर ने वाह्वंवार खमावें ॥ ४१ ॥
 म्हे तो कीघों छे कांम खोटों, अपराघ कीयों म्हे मोटों ।
 मोनें आछो न जाणसो आप, इम करवा लागों विलाग ॥ ४२ ॥
 हिवे हूं मन में न राखूं पाप, म्हांरी सुणों आलोवण आप ।
 म्हे तो आपरा अवगुण अनेक, सावां रें कने बोल्या वगेष ॥ ४३ ॥

ते हूं आपनें सर्वं सुणाउं, जुदा जुदा कहे वताउं ।
 इण वात रो न काहूं आगों, इम कहि नें सुणावण लागों ॥ ४४ ॥
 वले आलोया बोल अनेक, हिवें सल न राखूं एक ।
 वले याद आवसी मनें, ते पिण कहि देसूं थानें ॥ ४५ ॥
 म्हारा मन माहें आई अनेक, पूरी कहणी न आवें वशेष ।
 म्हारी भाषा तणें अंलाण, लेजों तिण अणुसारे जाण ॥ ४६ ॥
 म्हें तों इसरो जाण्यो मन माय, म्हारी गिणती राखें नहीं काय ।
 म्हारी आसता देवें उतारी, तिणसूं एकलो हुवेंणरी धारी ॥ ४७ ॥
 म्हें कीधो विचार वशेष, यानें इम कहां जागसी धेष ।
 जब अं करडा कहिसी तिणवारो, तब हूं एकलो होय जासूं न्यारो ॥ ४८ ॥
 तिण कारण हूं बोल्यो विपरीत, म्हारें एकला हुवेंणरी नीत ।
 म्हें तों इसडी न जांणी थी काय, मों आगें करसी नरमाय ॥ ४९ ॥
 म्हें कीधों घणो विषवाद, म्हारों खमजो सगलो अपराध ।
 म्हारी गई आगावाली रीत, हूं तो हूओ घणो अक्कीत ॥ ५० ॥
 वले मन माहें बोहत सीदावें, मुखसूंई घणों पिछ्छतावें ।
 म्हें तो खोई म्हारी परतीत, मोनें आप जाण्यो अक्कीत ॥ ५१ ॥
 म्हें ती कीधो घणों अन्याय, थारा आंगुण बोल्या साधा माहि ।
 हूं तो वले इण भव माहि, एहवों काम ने करसूं ताहि ॥ ५२ ॥
 कदा दोष जाणूं आप मांय, तो हूं कहि देसूं आप नें आय ।
 बीजानें कहितों कदेय म जाणों, हिवें तो म्हारी संका म आणो ॥ ५३ ॥
 ओरां आगें न कहणरी थाप, म्हारी परतीत राखजों आप ।
 हूं तो चालसूं आगली रीत, अठासूंई जाणों वनीत ॥ ५४ ॥
 आपों हेले निन्दें गुर पासें, निज अवगुण अनेक परकासें ।
 वले कर कर घणी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ॥ ५५ ॥
 वले करें घणो पिछ्छाताप, हिवें प्रायाछित दों मोनें आप ।
 इम कीधी आलोवण ताय, जब गुर जाण्यो आयो ठाय ॥ ५६ ॥
 ओं तो प्राछित मांगें म्हां आगें, म्हारें तो दीधां ठीक न लागें ।
 ओ तो कषाय वस बोल्यो जाण, प्राछित देउं इण अंलाण ॥ ५७ ॥
 कदे विकटे वलें किण काल, वले भांगी दे बांधी पाल ।
 दीधों ते बोल संभाल, एक ओ पिण दे काडे आल ॥ ५८ ॥
 हूं तो प्राछित यां कनें लीधों, मोसूं डरतां पूरी नहीं दीधो ।
 म्हारा बोल्यां रो करत निवेरो, तो मोनें साधणो देत फेरों ॥ ५९ ॥

कदे इसरोई दे काढे आल, तिणरो कुण काढे नीकाल ।
 इणरो आगा सू नहीं वेसास, इसरो जाण टालो दीयो तास ॥ ६० ॥
 हिवडां तो न दीसें खांमी, प्राछित लेवारो छे कांमी ।
 वले कपट न दीसें ताय, तो इणरो देउं इणनें भोलाय ॥ ६१ ॥
 ओं तों करे आलोवण एम, ओछो प्राछित लेसी केम ।
 इसरो जाणे क्हों तिणने आंम, थने भासे जितो लेवो तांम ॥ ६२ ॥
 आड दोढ आई मन मांय, ते पिण सारी याद अणाय ।
 जिण परिणामां क्हो ओरां पास, सगला दोष भेला करे तास ॥ ६३ ॥
 तिणरो प्राछित लें थारें मेलें, वले याद आवे तिण वेलें ।
 थनें दीवीं छे आग्या ताहि, कोइ सल मत राखजों माहि ॥ ६४ ॥
 जब ओ करवा लागो विलाप, मोनें प्राछित देवो आप ।
 प्राछित मांग्यो घणां दिन ताय, तो पिण दीवो उणनें भोलाय ॥ ६५ ॥
 पछे इणनें क्हों तूं वताय, ते हूं प्राछित ले काडूं ताय ।
 जब ओ कहे मोने खबर न काय, आपने भासे ते लेवो ताय ॥ ६६ ॥
 इणनें वतलायो घणी वार, दोष प्राछित न कहे लिंगार ।
 इणनें पूछ्या रो उत्तर एह, आपनें भासे ते लेवो तेह ॥ ६७ ॥
 पूछ्यां सीदावे संकोच पांम, जब इणरा जांग्या सुघ परिणाम ।
 कदा फेर अगन ज्यू ओ जागे, वले विगट वेदों करे आगे ॥ ६८ ॥
 तो इणनें उत्तर देवा काम, तप थोडो घणों लेउं तांम ।
 दोष निरजर हेत लीयो जाण, कलहादिक भेटण री मन आण ॥ ६९ ॥
 ते तो केवल ग्यानी रह्या देख, पिण केंतव न राख्यो एक ।
 जे कोइ मांहे राखसी सल, तो उणरी उणनें मुसकल ॥ ७० ॥
 वले घणां सावां रे मांय, त्यानें दीयो वणेष जताय ।
 कोइ दोष जाणों जिण मांय, प्राछित लेजों सुघ वताय ॥ ७१ ॥
 अठा पेहली रा केंतव अनेक, ते तों वाकी न राख्या एक ।
 अठा पेहली रों अपराव सारो, ओ पिण खमायो वाख्वारो ॥ ७२ ॥
 सरल हूवो दीसे सुवनीत, आगे हुंता तिणहीज रीत ।
 सह हिल मिल नें एक हूआ, ओंपरा नहीं दीसें जूआ ॥ ७३ ॥
 कोइ गण मांहे दोष लगावे, ते निजर आपरी आवे ।
 तिणनें देणों तुरत वताई, आगली रीत सेंठी टेंराई ॥ ७४ ॥
 कलहो भेट कीया जिण सुव, जिणरी निरमल लेइया वुव ।
 पिण दुष्टी रे समता न आवे, वले किण विघ कलहो उठावे ॥ ७५ ॥
 ११५

तिणनें दे काढ्या था दोखो, तिणरें मनमाहिं मोटो धोखें ।
 जब आपरा किरतव देखें, तिणसूं पड गइ घरक वशेखें ॥ ७६ ॥
 इसरी कीधीं घणी अजोगाई, यांसूं छांनी न दीसैं काई ।
 वले जाण्यो घणो अवनीत, म्हारी किम करसी परतीत ॥ ७७ ॥
 सगला साधां रे मांय, म्हारी परतीत देवे घटाय ।
 मोनें सरघाय, म्हारी आसता देला उडाय ॥ ७८ ॥
 पछें सगलां नें ले वख मांय, म्हारा आंगुण त्यांनें दरसाय ।
 रखे पछें मोसूं दाव वालें, एकला नें टोलां मांसूं टाळें ॥ ७९ ॥
 तो हूं पिण यांरा गण मांय, साध साधवीयां नें फटाय ।
 त्यांनें फाड्यां सूं कळं न्यारा, त्यांनें कर राखूं बेली म्हारा ॥ ८० ॥
 किणसूं सेंठी बांधे राखूं वात, मोनें छोड्यां आवें म्हारे साथ ।
 तिणरा परिणाम गुर सूं फारों, तिणनें सेंठो कर राखूं म्हारों ॥ ८१ ॥
 टोलो फारणरी धारी मन मांय, संकीयो नहीं करतों अन्याय ।
 ज्यां भेलो रहें दिनरात, त्यांसूंइज मांडी वेसासघात ॥ ८२ ॥
 माहें थकों करे एहवा कांम, तिणरा दुष्ट घणा परिणाम ।
 ते तो परभव साह्यो न जोवें, नर नों भव निरथक खोवें ॥ ८३ ॥
 तिण अवनीत नें सूफे उंधो, तिणरी भिष्ट हुइ मति बूधो ।
 संवलो सूफें नही तिलमात, तिणरें उदें थयो छें मिथ्यात ॥ ८४ ॥
 वाह्य विनो करें दिनरात, अभितर में खेल रह्यो घात ।
 घणो केलवे कपट नें कूरो, गुर रो बेधी होय गयो पुरों ॥ ८५ ॥
 वेंरी ज्यूं रह्यो डस भाल, मुख सूं करें लाल नें पाल ।
 विनो नरमाई करें वशेखों, छल छिद्र रह्यो नित देखो ॥ ८६ ॥
 चोर ज्यूं रहें दुष्ट परिणाम, साध साधवी फारवा कांम ।
 अवनीत उंधी उंधी धारे, आप विगड्यो ओरां नें विगारे ॥ ८७ ॥
 एकला री आसंग नही आवें, जब ओरां में बेली उठावें ।
 तिणनें लालच लोभ दिखावें, गुर सूं जाबक भिडकावें ॥ ८८ ॥
 जिण विघ गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विघ जागें गुर सूं बेष, तेहवी करें वात वशेष ॥ ८९ ॥
 आपां उपर छें गुर रो घेख, दाव वालसी अवसर देख ।
 एके कर साध साधवी सारा, आपां नें छोडसी न्यारा न्यारा ॥ ९० ॥
 आपां सूं बोले नरम वशेखें, ते तो आपरों मुतलब देखें ।
 यानें सुधा कदे मत जाणों, यांरी परतीत मूल म आणों ॥ ९१ ॥

अवनीत रास : ढाल १

जों आपांमांसूं करें एक काल, तो एकण ने दे गण सूं टा
 माहे राखे तो फोरा पारें, वले परतीत पूरी उतारें ॥ १२४ ॥
 तो आपां पिण टौला मांहिं, आपणा कर राखां ताहि ।
 त्यांसूं सेठो कर कर करारो, ते गुर ने लखाव म पारो ॥ ६१ ॥
 इम कहि कहि उणनें भरमावे, सिष पदवी रो लोम दिखावे ।
 तिणसूं कर कर घणी नरमाय, वले विविध पणें ललचाय ॥ ६४ ॥
 जो उणरे उदें हुवे मिथ्यात, तो उ मान ले उणरी वात ।
 परमारथ पिण पूरो न बूमें, कर्मा वस सवली नही सूमे ॥ ६५ ॥
 जब ओ गुर आग्या दे ठेली, अवनीत रो होय जावे वेली ।
 तिणसूं करे अग्यांनी एकां, बोल बंध सेठा लेवें वगेलो ॥ ६६ ॥
 वले माहोमां सूंस खावें, जिलो बाध एके होय जावे ।
 अवनीत सूं एके होई, लोम रे वस आत्म विगोई ॥ ६७ ॥
 सिख पदवी री तिणरे चाहि, पूजा सलावा री मन माहि ।
 इत्यादिक लोम मन मांहें आण, अवनीत सूं एको कीयो जाण ॥ ६८ ॥
 अवनीत रे एको ने मिलाप, जब करे अविनां री थाप ।
 आपा ने गुर सूं डरतो न रहिणों, करडा कहे पाछो करडो कहिणो ॥ ६९ ॥
 आपा डरता रहिसां किण लेखें, आपा री तों परतीत वगेले ।
 आपा तो रहिसां गण मांहें जोडे, इसडो कुण आपा सू तोडे ॥ १०० ॥
 कदे परपदा लोक हुवें भेला, थाने करडा कहे तिण वेला ।
 जब थे पिण करडा पाछा कहिजो, लोका बेठां डरता मत रहिजो ॥ १०१ ॥
 पाछो न कहां लागे हलकाई, थारी गिणत रहे नहीं काई ।
 तिणसूं थे पिण करडो कहिजो पाछो, नही कहां न लागे आछो ॥ १०२ ॥
 करडा पाछा कहां तोडे थांसूं, जब थे आय मिलजो म्हांसूं ।
 थारो उपर राखजो बोलो, ज्यूं ववे आपां रो तोलो ॥ १०३ ॥
 मोने अलगो जांणो तिण वेला, तोही आय होयजो मो भेला ।
 म्हांरी संका कदे मत आंणो, मोनें थारो थकोईज जांणो ॥ १०४ ॥
 इण विष हुआ अविनां में सेठा, उलटा लडवा ने वेठा ।
 कजीयो करवारी वाट जोवे, छेरवे तो ततपर होवे ॥ १०५ ॥
 तिणने गुर कहे सहिज मे सूवो, तो उ पड जावे मूरख उवो ।
 तिणरा लखण घणा छे माठा, उलटो गुर ने कहे करडा काठा ॥ १०६ ॥
 गुर ने करडो काठो कहिणो पाछो, ओ किरतत्र जाणीयो आछो ।
 तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण मारग थी सिष्ट ॥ १०७ ॥

तिगनें करडा कहें क्रिण वारें, जत्र उ अत्रनीत पास पुकारें ।
 जत्र उ कहें उगलें एम, यें क्यूं पाछों कह्यो नहीं केम ॥ १०८ ॥
 इसरी करे अविनां री थाप, मांहीमां कीयो तयारे मिलाप ।
 वले जिलो अंधग रे काज, हिंवें कुग २ करें अकाज ॥ १०९ ॥
 ति मिल २ तें करें चोरी, गण में करें फारा तोरी ।
 री बात करें उग आगे, जिग विघ मांहीमां कलह लागें ॥ ११० ॥
 गुर सूं पिग मेलें मूरख दांडी, तिग भेप ले आतमां भांडी ।
 गुर सूं त्रेलो हुवे उदास, तेहवी बात कहें तिग पास ॥ १११ ॥
 क्रिगनें कहें थां उपर घेव, ते अह-वह ल्यो देव ।
 क्रिगनें कहें थारी कीधी उतरती, मो आगे पिग कीधी परती ॥ ११२ ॥
 क्रिगनें वले कहें छें आंम, थाने लोलपी कहें छें तांम ।
 क्रिगनें कहें थाने कहितां वेंगो, इणनें महीं कपडों नहीं देंगो ॥ ११३ ॥
 क्रिगनें कहें थे प्राच्छित लीधो, ते तो मों आगे कहि दीधो ।
 थारी आसता एम उतारें, वले निन्दा करें पूठ लारें ॥ ११४ ॥
 क्रिगनें कहें थाने कहितां चोरो, क्रिगनें कहें थांसूं हेत थोरो ।
 क्रिगनें कहें थाने कहितां अत्रनीत, क्रिगनें कहें थारी करें अत्रनीत ॥ ११५ ॥
 क्रिगनें कहें थाने नहीं भगावें, क्रिगनें कहें थाने नहीं वतलावें ।
 क्रिगनें कहें थाने रोगी जाणें, पिग ओपघ कदेव न आणें ॥ ११६ ॥
 क्रिगनें कहें थाने चोमासें काल, लांबो खेतर बतावें टाल ।
 आछे खेतर थाने नहीं मेलें, सेपें काल पिग इमहीज ठेलें ॥ ११७ ॥
 क्रिगनें कहें थारो न करे वेसास, माहिं रहिवा रीन करें आस ।
 जिग विघ जागे गुर सूं वेप, तेहवी करें बात वगेप ॥ ११८ ॥
 जिग विघ गुर सूं मन भागे, तेहवी बात करें उग आगे ।
 जिग विघ गुर सूं हेत दूटें, तेहवी बात करें परपूठें ॥ ११९ ॥
 इण विघ साध साधवी फाडें, गण में भेद इण विघ पाडें ।
 गुर सूं परिणाम उतारे, चुध साधां नें मूड विगारे ॥ १२० ॥
 वले गुर में अदगुण दरसावें, मूठा २ दोप बतावें ।
 वले निन्दा करे छानें-छानें, जिगरें अमुभ उदें ते मानें ॥ १२१ ॥
 जिगनें गुर सूं करें उपराठों, आपरो कर राखें काठो ।
 जिगनें निसंक आसरो जाणें, जिगनें घगो घगो वखाणें ॥ १२२ ॥
 ओर साध नें मेल उग साध, जत्र पिग करें वेसासघात ।
 उगलें फार करें आन कांनी, पछें निन्दा करें मन मांनी ॥ १२३ ॥

इण विध करे फारातोडी, गुर सूं छाने छाने करे चोरी ।
 त्यासूं छाने छाने जिलो बांघे, जिण धर्म न ओल्लव्यो बांघे ॥ १२४ ॥
 माहोमां मिल जिलो बांघे, गुर आग्या विण आपरे छादे ।
 इसरों करे अकारज खोटों, तिणने दोप लागे छे मोटो ॥ १२५ ॥
 एहवा दोप री कर राखें थाप, पछे सेवे निरतर आप ।
 बले साधु नाम घराबे, तों उ पेहिले गुणठाणें आवें ॥ १२६ ॥
 जों उ दोष नें दोष न जांणे, तो पिण पेहिले गुणठाणें ।
 ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडीयो च्यार तीरथ थी दूरो ॥ १२७ ॥
 तिणरे सरघा जमाली री आई, मूल की पूंजी सर्व गमाई ।
 समकत ने साधपणो खोयो, जिलो बांघ ने जनम विगोयो ॥ १२८ ॥
 एहवा गेरी थका गण मांय, तिणरी गुर नें खबर न कांय ।
 मुख उपर तों करे गुणग्राम, छाने छाने करे एहवा कांम ॥ १२९ ॥
 गुर रे मुख तो गुण गावें, छाने छाने अयगुण दरसावें ।
 मुख उपर तो बोले राजी, छाने छाने करे दगाबाजी ॥ १३० ॥
 बले वादे गुर ने जोडी हाथों, पगां मे देवे नित नित माथों ।
 वांदताई करे गुणग्राम, सारां पेंहली ले गुरां रो नाम ॥ १३१ ॥
 बले लोकां ने वंदणा सिखावे, त्यामें पिण गुर रो नाम घलावे ।
 लोकां आगे करे गुणग्राम, पिण मन रा मेला परिणाम ॥ १३२ ॥
 जोम अहकार में नहीं मावें, त्यासूं आलोवणी नही आवें ।
 प्राच्छित लेने सुख नही थावें, पूरी परतीत नही उपजावे ॥ १३३ ॥
 जब याने जांण्या दगादार पूरा, तब कर दीया गण सूं दूरा ।
 जब अे हुआ जाबक अपछंदा, विगडायल जेन रा जिदा ॥ १३४ ॥
 त्या छोडी लाज नें मरजाद, सके नही करता विषवाद ।
 त्यारें भूठ तणों नही टालो, कूड कपट तणो बोहत चालो ॥ १३५ ॥
 त्यारा नेम वंरत सर्व भागा, हुआ वरत विहूंगा नागा ।
 परीया च्यार तीरथ सूं बारे, आप विगड्या ओरां ने विगाडे ॥ १३६ ॥
 गण मे करता था फारा तोरो, त्याने जांण्या घणा जणां चोरो ।
 सगलां सावा में परतीत खोई, त्यांरी साख भरे नही कोई ॥ १३७ ॥
 त्यारे सिध पदवी री थी आस, तिण थी पिण हुआ निरास ।
 त्यांरी वेसास आगा सूं भागो, आत्म ने कलंक मोटो लागो ॥ १३८ ॥
 गण मे कीवी थी वेसासघात, पिण कोई न लागो हाथ ।
 ज्याने आपरा कीधा था फार, ते पिण न गया त्यांरी लार ॥ १३९ ॥

त्यां पिण यानें खोटा जाण, गुर नीं आग्या कीधीं परमांण ।
 अें तो गण माहें भूंडा दीठा, सगला साधां में पर गया फीटा ॥ १४० ॥
 साध तो कोइ हाथे न लागो, श्रावकां सूं करें हिवें ठागों ।
 त्यां आगें वोलें सूधा वशोख, मिनकी ज्यूं रह्या छल देख ॥ १४१ ॥
 त्यां देखतां करें खप गाढी, न्हार भगत तणी चाल काढी ।
 बुगलध्यांनी ज्यूं वणीया ताहि, लोकां नें न्हाखवा फंद माहि ॥ १४२ ॥
 श्रावकां री लागी त्यारे चाय, त्यांनें फारण रो करें उपाय ।
 मान वडाई ने पेट काज, हिवें कुण कुण करे अकाज ॥ १४३ ॥
 खोटी पेडी जमावण काजें, भूठ वोलता मूल न लाजें ।
 आपणा दोष सगला डांके, ओरां सिर आल देता न सांके ॥ १४४ ॥
 जाणे गुर माहें दोष वताय, श्रावक श्रावकां लेउं फंटाय ।
 इसरी आसा वाचे मन मांय, रात दिवस करें वकवाय ॥ १४५ ॥
 श्रावक श्रावकां पूछें ताय, वले पूछें अनेराई आय ।
 वले पूछें त्यांनें ओर लोक, जब अें गुर में बतावें दोख ॥ १४६ ॥
 घणां लोकां में भूठ चलावें, अणहुंता दोष गुर में वतावें ।
 आपरें मन मानें ज्यूं वोलें, आं गुणां रो पिटारो खोलें ॥ १४७ ॥
 दोष वीसां तीसां रो ले नांम, पछे वोलें अग्यांनी आंम ।
 यामें दोषां रो कहूं उनमान, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ १४८ ॥
 सों मण तणी खांड माहि, तिण मांसूं एक मूठी दिखाइ ।
 ज्यूं छें दोष घणां यां माहि, थानें थोडासा दीया वताय ॥ १४९ ॥
 घणी बीलाइ छे टोला मांय, ते तो लोकां नें खबर न कांय ।
 यारे खोट घणों छे माहि, परूपे जिम पालें नांहि ॥ १५० ॥
 अें आचार घणोंई दिढावे, पोते तों पूरो पालणी नावें ।
 अें तो कपट सूं कांम चलावें, यामें साधपणों नहीं पावें ॥ १५१ ॥
 म्हें यामें आगेई दोष वताया, यानें प्राच्छित दीधीं छों ताय ।
 पिण अें वले न चालें सूधा, तिणसूं म्हें हो गया जूदा ॥ १५२ ॥
 म्हारे आचार री छें सगाई, यामें तो दीसें घणी बीलाई ।
 जब म्हें असाध जांणीया यानें, खोटा जाण छोडीया त्यांनें ॥ १५३ ॥
 म्हें मिनष तणो भव हार, म्हें किम बूडां यारे लार ।
 म्हे करसां आतमा रो किल्याण, चोखो चारित पालसां जाण ॥ १५४ ॥
 जिणरा छे धेषी पूरा, तिणरें आल दे कूडा कूडा ।
 तिणमे दोष अनेक वतावें, जावक खोटी सरधावें ॥ १५५ ॥

गुर गुर भाई उपर घेष, तयारा आंगुण बोले वशेष ।
 जूना जूना खुरट उ खेलें, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले ॥ १५६ ॥
 जिण धार्यों थों इणने भूठो, तिण सूं तो वेठो थो छुठों ।
 तिणमें दोष अनेक वतावें, मन माने ज्यूं गोला चलावें ॥ १५७ ॥
 तिणसूं तो आवे लाग़ा लाग़ा, तिणने आल देवा नें आगा ।
 तिणरी परती परती काढें वात, हिला निन्दा करे दिन रात ॥ १५८ ॥
 वले करें घणों विषवाद, सगला साधां ने कहे असाध ।
 घणा लोकां मे वद वद बोले, आंगुणां रो पिटारो खोले ॥ १५९ ॥
 किणनें कहे याने प्राच्छित आवे, तो प्राच्छित यासूं लेणी न आवे ।
 तिण कारण म्हे नीकलीया बारें, कुण वूडसी यारे लारें ॥ १६० ॥
 किणनें कहे यानें म्हे दंड दीघो, जब तो प्राच्छित यां लीघों ।
 वले यां दोष सेव्या छे ताहि, प्राच्छित विन लीघां किम रहां माहि ॥ १६१ ॥
 किणनें कहे यानें दोषण लाग़ा, यारा पांचोई महावरत भागा ।
 सुमत गुपत हुआ चकचूर, इण कारण यांसूं हो गया दूर ॥ १६२ ॥
 किणनें कहे यामें नही आचार, दोष सेवतां न डरें लिगार ।
 अणआचारी न लाग़े प्यारा, तिण कारण यांसूं हो गया न्यारा ॥ १६३ ॥
 किणनें कहे अं तो वोलें फिरता, भूठ सूं नहीं दीसें डरता ।
 कूड कपट घणों यां माहि, यारा बोल्या री परतीत नाहि ॥ १६४ ॥
 किणने कहे अे तो सुघ न चालें, दोष सेवें तो कुण याने पालें ।
 जे कोइ दोष काढें यां माहि, तिणसूं इस झाल राखे ताहि ॥ १६५ ॥
 हुंतो कहितो यानें दोष देख, जब अं म्हांसूं पिण करता थेख ।
 म्हांरी वात नें वेता उडाय, मोने तो राखता दवकाय ॥ १६६ ॥
 म्हारे हुंती घणी मन मांय, एकलां री आसंग नही कांय ।
 हिवें तो म्हे हुआ छां दोय, दोष सेवण न दयां कोय ॥ १६७ ॥
 इसरा घड घड ने भूठ चलावे, आपरो सूरपणो मनावे ।
 आपरा दोषां सामो न देखें, भूठ में भूठ बोले वजेखे ॥ १६८ ॥
 किणने कहे यामें दोषण पावे, विविध प्रकारे प्राच्छित आवे ।
 म्हांमें दोषण मूल न पावे, मिच्छामि दुकडं पिण नही आवे ॥ १६९ ॥
 किणने कहे यां क्हायें म्हारे पास, एक लिखत कर दचों मोने तगस ।
 जो थे नीकलो टोला बार, जब थाने करणा नही च्याहं आहार ॥ १७० ॥
 पाछें भागल तुटल रहें ज्यांने, सगला पानां सूप देणा त्यांने ।
 इसरो लिखत कर दचों कहे म्हांनें, इण कारण यांसूं हो गया कानें ॥ १७१ ॥

अं तो डीला पारण रे काम, एहवा वं वं वांवे तांम ।
 इसरा वंभ में परां नहीं ताहि, म्हारें कुण रहसी डीलां मांहि ॥ १७२ ॥
 किणनें कहें यांमें पेहलो गुणठाणों, निश्चेंड मिथ्याती जाणों ।
 यांनें साव साचैला जाणें, ते पिण पेंहलें गुणठाणें ॥ १७४ ॥
 किणनें कहें यांमें समकत नांहि, सावपणों जाणें आप मांहि ।
 जो अं आपनें असाव जाणें, जव तों चोयें गुणठाणें ॥ १७३ ॥
 यांनें किणही पूछ्यो किण वेलां, किण मांत हुवो यांसूं भेला ।
 जव कह्यो म्हारें भेला होवो, इण भव में वाट म जोवो ॥ १७५ ॥
 जो अं प्राच्छित ले मुख थाय, तो म्हें यांसूं भेला रहां जाय ।
 यांनें प्राच्छित लेता जाण्या नांहि, दीवां विण नहीं जावां मांहि ॥ १७६ ॥
 यांनें किणहीक पूछीयों आय, मो आगें कहीजों सतवाय ।
 यांनें असाव जाणों के साव, जव कह्यो म्हें जाणां असाव ॥ १७७ ॥
 जव यांनें फेर पूछ्यो मीठी वाणों, किण दिन पछें असाव जाणों ।
 जव अं बोलीया वचन विराव, म्हानें छोडीयां पछें असाव ॥ १७८ ॥
 थांनें तों यां कर दीया जूआ, पछें असाव क्यांथी अं हूआ ।
 जव तो पाछों जाव न आयों, मून साभ रह्या मुरभायों ॥ १७९ ॥
 यांनें पूछ्यो किणही किण वेर, हिंवें दिख्या लेंता दीसो फेर ।
 जव कहें फेर दिख्या ल्यां म्हें क्यांनें, खोटा जाण छोड दीया त्यांनें ॥ १८० ॥
 म्हामें ओर दोपण नहीं पावें, म्हानें फेर दिख्या क्यांनें आवें ।
 म्हें भेला रह्या भागलां मांय, तिणरो प्राच्छित ले मुख थाय ॥ १८१ ॥
 इण रीतें करें वकवाय, ते तो पूरी केम कहवाय ।
 जिण तिण आगें इण विव बोलें, ओंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १८२ ॥
 यारे ओहिज मुदें ध्यांन, यारे ओहिज मुदें ग्यांन ।
 जाणें गुर नें खोटा सरवाय, थावक थाविका लेंडं फंटाय ॥ १८३ ॥
 जाणें म्हें यांरी वंदणा छुडाय, सगलां नें पारां म्हारे पाय ।
 जो जाणें यांनें लोक खोटा, तो म्हानें जाणें अं पुरुष मोटा ॥ १८४ ॥
 जिण विव गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विव गुर सूं हुवें उदास, तेहवी वात करें तिण पास ॥ १८५ ॥
 जिण विव गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठें ।
 जिण विव जाणें गुर नें वेप, तेहवी करें वात वणेप ॥ १८६ ॥
 जिण विव गुर नें न जाणें आछा, जिण विव जाणें आप नें साचा ।
 एहवी भूठी वातां वणावें, ते भूठ लोकां में फेलावें ॥ १८७ ॥

जिण विघ गुर नें असाघ जांगे, एहवी वात घणी मुख आणे ।
 सके नही देता आल, वले कर रह्या भूठी भलाल ॥ १८८ ॥
 लोकां सूं करे घणी नरमाय, मीठा बोले त्यासूं मिल जाय ।
 त्यारी करे खुसामदी जाण, जाणे फंद माहि न्हांबूं नाण ॥ १८९ ॥
 यांरी धुरताई ने कपटाई, तिणमें पाछ न दीसे काई ।
 त्यारे घात घणी घट मांय, त्यांरी काचा ने खबर न कांय ॥ १९० ॥
 श्रावक श्रावका री त्यारे चाहि, तिणसूं सवलो न सूभें ताहि ।
 घणो भूठ बोलें जाण, त्यांरी वुचवंत करजो पिछ्हांण ॥ १९१ ॥
 यातो कीघो अकारज खोटो, यांने दोपण लागो मोटो ।
 गुर सूं छाने २ वांध्यो जिलो, यांने कर्मा दीघो टिलो ॥ १९२ ॥
 गण में कीघी फारा तोरी, करवा लगा छानें २ चोरी ।
 गुर सूं माडी वेसासघात, त्यारी परगट होय गई वात ॥ १९३ ॥
 वले सेवीया दोष अनेक, ते पिण चावा हुआ वणेख ।
 तिणरो प्राच्छित न हुआ आरे, जब काढ दीया गण बारे ॥ १९४ ॥
 खोटा जाण ने छोडीया यांने, ते वात न राखी छाने ।
 याने चोडें छोड्या साख्यात, तिणमें कूड नही तिलमात ॥ १९५ ॥
 अे तो कहे छें घणा लोकां माहि, म्हें छोड्या छें यांने ताहि ।
 इण विघ बोले छें परपूठ, ते तों निश्चेंड बोले छे भूठ ॥ १९६ ॥
 किणने कहे यां छोडीया म्हाने, किणने कहे म्हे छोडीया याने ।
 इम भूठ बोलें जाण जाण, सके नही मूढ अयाण ॥ १९७ ॥
 जिण किरतव सूं कीया वारे, तिण वात रो नाम न काडे ।
 द्विवे ओर री ओर ले उठें, अें तो लाग रह्या मत भूठे ॥ १९८ ॥
 आप माहे छे दोष अनेक, ते तों वारे न काडे एक ।
 उलटो ओरा में दोष वतावे, भूठ में भूठ जाण चलावे ॥ १९९ ॥
 ओगुण सुण २ ने समदिष्टि, यांने जाणे घर्म सूं भिष्टि ।
 यांरा बोल्यां री परतीत नाणे, भूठ में भूठ बोलता जाणे ॥ २०० ॥
 श्रावक आरे करता दीसे नाहि, जब अे प्राच्छित ओढे आया माहि ।
 आ आलोवण करणी थापी ताय, प्राच्छित पूरो लेणों ठेंहराय ॥ २०१ ॥
 पाचूं पद विचे दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय ।
 तिणरा साखी ग्रहस्थ ठेंहराय, तटा पछें लीया मांय ॥ २०२ ॥
 दोला रा साव साघवी माहि, किणरे प्राच्छित ठेंहरायों नाहि ।
 किणही प्राच्छित मूल न लीघो, मिच्छामि दुकडं पिण नही दीघो ॥ २०३ ॥
 ११६

किण्ही में न काढयो बंक, सगलां नें कर दीघां निसंक ।
 प्राच्छित विण दीघां आया मांहि, सगलां नें सुघ जांणी ताहि ॥ २०४ ॥
 यांरी तरफ सूं चोखा जांण, गुर रे पगां पडीया आंण ।
 जो अं दोप जाणें किण मांहि, तो अं आगों काढें जिसा नांहि ॥ २०५ ॥
 ज्याने असाध कह्या था मुख सूं, त्यांरा वांदीया पग मसतक सूं ।
 त्यांनें प्राच्छित मूल न दीघो, उलटों आप प्राच्छित ओढ लीघो ॥ २०६ ॥
 ज्यांरा पांचून्नत कह्या भागा, त्यांरे हीज पगां आय लागा ।
 ज्यांनें कह्या था लोकां में खोटा, त्यांनेंहीज लेखव लीया मोटा ॥ २०७ ॥
 ज्यांमें काढ्या था अनेक दोप, ते तो कर दीया सगला फोक ।
 उलटो आपरे डंड ठेहराय, इण विघ आया गण मांय ॥ २०८ ॥
 ज्यांने डीला कहिता तांण तांण, बले भागल कहिता जांण जांण ।
 ज्यांरी वंदणा देता छुडाय, त्यांरा हीज पोतें वांदीया पाय ॥ २०९ ॥
 ज्यांने कहिता पेहलें गुणठाणें, त्यांराहीज पग वांदीया आणें ।
 अणाचारी कहिता दिनरात, तिका पाछी न पूछी वात ॥ २१० ॥
 ज्यांने प्राच्छित केंता था आप, ते तो जाबक दीयों उथाप ।
 उलटो आप डंड कराय, गण मांहें पेंठा छें आय ॥ २११ ॥
 कहितो थो मोमें दोप न पावें, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवें ।
 तिणनें प्राच्छित देणों ठेहराय, तठा पछे लीयों गण मांय ॥ २१२ ॥
 कहितो आलोवण करुं नांहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि ।
 तिण आलोवण करणी थाप, ते प्राच्छित पिण ओढीयो आप ॥ २१३ ॥
 ज्यांमें कहिता कपट नें भूठ, हिला निन्दा करता परपूठ ।
 त्यांनें उत्तम पुरुप ठेहराय, प्राच्छित ओढ आया त्यां मांय ॥ २१४ ॥
 ज्यांने खोटा सरधावण ताय, कीघा था अनेक उपाय ।
 त्यांनें तिरण तारण ठेहराय, प्राच्छित ओढे आया त्यां मांय ॥ २१५ ॥
 यांरी करता था केई तांण, त्यांरो गल गयो जाबक मांण ।
 यांरी करता केई पखपात, त्यांरी पिण विगड गइ वात ॥ २१६ ॥
 यांनें जाणता था केई साचा, ते तों प्राच्छित ले हुवा काचा ।
 बले ताणे यांरी डूजीवार, तों अं पूरा मूढ गिंवार ॥ २१७ ॥
 आगे तो यांरी राखें परतीत, निज गुर सूं हुवा विपरीत ।
 सुघ सावां ने कह्या बले भूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे बूडा ॥ २१८ ॥
 जो यांरे वंधीया निकाचित कर्म, तों यांसूं छूट जासी जिण धर्म ।
 जासी मांनव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मभार ॥ २१९ ॥

जो यारे न बध्यो निकाचित कर्म, कदा परजाजे पाछा नर्म ।
 कदा आलोए ने सल काढे, निज काम सिराडे चाडे ॥ २२० ॥
 न्यारा थका हुता गेरी, गण रा हुआ था पूरा वेरी ।
 सर्व साधा ने असाध सरघाया, त्यामेहीज डड ओड ने आया ॥ २२१ ॥
 यां तो च्यार तीरथ रे मांय, कीघो थो घणो अन्याय ।
 पिण प्राच्छित ले आया माहि, टोला री परतीत अणाई ॥ २२२ ॥
 घणा श्रावक हुआ निसंक, यामेहीज जाणीयो वक ।
 या तो दोष बताया या मांय, आ तो भूठी कीघी वकवाय ॥ २२३ ॥
 वारे थकां तो कहिता असाध, माहे आय सरव नीया साध ।
 इण विघ बोल्या था विपरीत, त्यांरी तुरत नावे परतीत ॥ २२४ ॥
 टोला रा साध साववी माहि, साधपणो न कहिता ताहि ।
 इण बात सू घणा भूडा दीठा, परीया च्यार तीरथ मे फीटा ॥ २२५ ॥
 अे तो प्राच्छित ओढे माहि आया, सगला साधां ने मुख ठेहराया ।
 पिण यारो छूटो नही अभिमान, वले किण विघ विगडे छे तांन ॥ २२६ ॥
 जिण दोष थी काढीया वार, ते पिण दोष सगला चितार ।
 ते आलोवणा गुर हजुरो, तिणरे प्राच्छित लेणो पूरो ॥ २२७ ॥
 सगला साधां ने असाध सरघाया, त्यमि दोष अनेक बताया ।
 ते तो दोष साधा मे न पावे, तिणरो प्राच्छित पिण याने आवे ॥ २२८ ॥
 ते पिण आलोवणो गुर पास, प्राच्छित लेणो आण हुलास ।
 ते आलोवण करणी न आवे, प्राच्छित पिण लीघो न जावे ॥ २२९ ॥
 उणने कह्यो घणीवार तांम, पिण आलोवण रा नही परिणाम ।
 ओ तो भारीकर्मा नही सरलो, तिणने आलोवणो काम करलो ॥ २३० ॥
 जिण ऊर प्राच्छित ठेहरायो, तिणने पिण घणो जनायो ।
 इणने प्राच्छित दीजो भारी, इणरी संक म करजो लिगारी ॥ २३१ ॥
 इणने प्राच्छित पूरो दीजो, थाने दोष लागे ज्यूं म कीजो ।
 जब इण पिण नही मांनी बात, इणरी छूटी नही पखपान ॥ २३२ ॥
 इणरेई वगो मन माहि, ते कहें हुंतो प्रायच्छित देउ नाहि ।
 जे दोष भ्याससी ते उण माहि, उणरो उहिज ले काढसी ताहि ॥ २३३ ॥
 उणरो प्राच्छित उणने भलावे, गुर आगे लेणो नही वनावे ।
 जब जांण्यो इणने अवनीत, इणने उंधो मूभजो विपरीन ॥ २३४ ॥
 आप तो उणने प्राच्छित न देवें, उणरे मेले उ प्राच्छित लेवे ।
 गुर आगे लेण री नही बात, ओ उचाडोई मिथ्यान ॥ २३५ ॥

गुर आगें प्राच्छित लेवें नाहि, आप छादें लेवें मन माहि ।
 जब तों चोरेई जाणों अवनीत, त्यामें साध तणी नही रीत ॥ २३६ ॥
 साधां तो यानें दीयो जताय, अे दगा सू आया दीसैं मांय ।
 यारी किम आवे परतीत, यारी देखलो पाछली रीत ॥ २३७ ॥
 जब तो पाछो बोलीयो आंम, म्हे दगो करसां किण काम ।
 म्हांरें सिष करवारी न काई, सूंस करनें परतीत उपजाई ॥ २३८ ॥
 म्हांरे सिष सिषणी करणों नांहि, म्हांरे सूंस छे इण भव मांहि ।
 सभोगी करवारो छे आगार, ओ फिरतो बोल्यो तिणवार ॥ २३९ ॥
 जब उणने पाछो दीयो खराय, आ थें फिरती बोल्या वयूं वाय ।
 थारे टोला रे बाहिर जाय, संभोगी पिण न करणों छे ताय ॥ २४० ॥
 जब ओ बोल्यो कर नरमाय, संभोगी पिण न करसा ताय ।
 ज्यूं रो ज्यूं पाछो आरे कराय, काची बात न राखी काय ॥ २४१ ॥
 केई साध बोल्या इण रीत, यारा सूंसां री नही परतीत ।
 याने सूंस करावे अनेक, पालता नही जाण्या एक ॥ २४२ ॥
 यानें आणेंई सूंस कराया, अनंता सिद्ध साखी ठेहराया ।
 ते सूंस पानां में लिखाया, नीचें यारा आखर कराया ॥ २४३ ॥
 इण रीतें सूंस कराया, ते पिण सूंस सगला उडाय ।
 चोरे भाग कीया चकचूर, इणमें मूल न दीसे कूर ॥ २४४ ॥
 तो लारला सूंस इमहीज जाणो, यारी परतीत मूल म आणो ।
 वले एक साध बोल्यो एम, थारी परतीत आवसी केम ॥ २४५ ॥
 म्हांरा पाचूं वरत कह्या भागा, थें तो लोका में कहिवा लागा ।
 सुमत गुपत भागी केता म्हांरी, मोने साध न गिणता लिगारी ॥ २४६ ॥
 मोनें असाध कह्यो लोकां मांय, मो मे दोष अनेक बताय ।
 ते प्राच्छित म्हे तो मूल न लीघो, मिच्छामि दुकडं पिण ही दीघो ॥ २४७ ॥
 थें प्राच्छित पिण मोने न ठेहरायो, तोही आय बांछा म्हांरा पायो ।
 मोने परूप्यो लोका मे असाध, हिवे हु किण विघ हुओ साध ॥ २४८ ॥
 आ देख लीघी थारी रीत, इम नावे थारी परतीत ।
 जब कहे म्हे लोकां रे मांहि, थानें असाध परूप्या नांहि ॥ २४९ ॥
 पाछो जाव नायो तिण ठाम, भूठ बोले चलायो काम ।
 इणरी किणनें न आई परतीत, भूठाबोलो जाण्यो विपरीत ॥ २५० ॥
 याने पाछा लीया गण माहि, जब यांसूं पेहली वात ठहराइ ।
 सिप सिपणी न करणा सोय, जुदो टोलो न वाघणो कोय ॥ २५१ ॥

कदा गुर ने पिण दोपण लागे, तो कहणो नही ओरा आगे ।
 गुर नेंडज कहिणो सताव, घणा दिन नही राखणो दाव ॥ २५२ ॥
 बले फाडा तोडा री वात, किणसूं करणी नही तिलमान ।
 जिलो बांधणो नही मांहोमांहि, फेर साथे ले जावणो नाहि ॥ २५३ ॥
 पांचूं पद विचे दीया ताय, आलोवण प्राच्छित पूरो ठेहराय ।
 आग्या मे चालणो रुडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत ॥ २५४ ॥
 आगा विचेइ रहिणो वनीत, बाकी सर्व आगली रीत ।
 इत्यादिक पेहली सेठी ठेहराय, पछे गण मे लेणा थाप्या ताय ॥ २५५ ॥
 एक बले परतीत उपजावो, बले कर्म जोगे न्यारा थावो ।
 तो न बोलणा अवगुणवाद, इसडो करणों नही विपवाद ॥ २५६ ॥
 जिण बोल सूं बले तूट जाय, तेहिज बोल कहिणो लोकां माय ।
 ओर बोल न कहिणो एक, आ परतीत उपजावो वगोख ॥ २५७ ॥
 जब ओ पिण बोल्यो चोखी वाणो, हिचे इण भव मे सका मत आणो ।
 तो पिण ओ बोल गाढो खराय, इत्यादिक घणा बोल जताय ॥ २५८ ॥
 पछे दोय सूस कराय, तठा पछे लीया गण मांय ।
 आलोवणा प्राच्छित पूरो ठेहराय, अनन्ता सिघ विचे दे आया माय ॥ २५९ ॥
 ते आलोए प्राच्छित लेणी नावे, तिणसू भूडी भूखलायां खावे ।
 जाणे आगे ठेहराइ ते भेलो, प्राच्छित लेवूं म्हारे मेलो ॥ २६० ॥
 ओ पिण खांचाताण मांडी, जाणे टल जाये ज्यूं म्हारी भाडी ।
 जब साचा घणो दबकायो, घणो दोरोसो आरे करायो ॥ २६१ ॥
 गृहस्थ वेठा ठेहराइ वात, ते प्रसिघ करणी विल्यात ।
 जिण मे हुतो जिण रो जाणें वक, ज्यूं भागे लोका री सक ॥ २६२ ॥
 आगे कीधो थो तिम ठेहरायो, प्राच्छित लेणों आरे करायो ।
 जब उणनें कह्यो इण जाय, जब ऊ ओर ले उठीयो ताय ॥ २६३ ॥
 जो हू प्राच्छित थां आगे लेसूं, ते ओर आगे कहण नही देसूं ।
 साचा री रीत तिम कीधो कहिणो, प्राच्छित रो नाम किणरो नही लेणो ॥ २६४ ॥
 ओर कहिवा रो कीधो छे टालो, सगला सूंस कीया ते सभालो ।
 ओ तो भूठो ले उठीयो भोर, साचां तो सूंस कीधो ते ओर ॥ २६५ ॥
 जो सूंस कीयो जाणे एह, तो दूजों व्यू आरे हुआ तेह ।
 लोका कने प्राच्छित कहिणो थाप, उण कने जाय दीयो उयाप ॥ २६६ ॥
 ओ तो उणरेइज बल भूंभे, पोते कांई सबली नही मूभे ।
 जाणें ओ करसी म्हारें रुडों, इणरे पाछे लागो पूरो ॥ २६७ ॥

ओं तो गुर नें उलटो डरवें, उली पेंली अनेक बतावें।
 सूंस कर नें बन्न गयो ताय, बोलीए पिण बन्नन थाय ॥ २६८ ॥
 हूं जो ज्यो लो रहिसूं गण माहि, किणरो अवगुण बोलसूं नाहिं।
 म्हें तो सूंस ज्येताई कीयो, जाव जीव रो सूंस न लीवो ॥ २६९ ॥
 इनने जाकर बदल गयो जाण, जव फेर पूछ्यो मीठी वाण।
 यांरी परख करवा कहाँ आंम, सगला सूंस करो एक तांम ॥ २७० ॥
 कदा आहार पांगी नूट जाय, तो किणरा अवगुण न बोलणा ताय।
 जिम बोल सूं नूट जायें आहार, तेहिज बोल कहिणों विचार ॥ २७१ ॥
 ओर अवगुण न बोलणा जाण, ओं तो सगला करो पचखाण।
 जव यां पाछें उत्तर दीयो एम, ओं तो न करां म्हें नेम ॥ २७२ ॥
 ओं सूंस म्हारें ठीक न लानें, कदा नूट जायें बले आणें।
 पेंह्या सूंस कीयो ते भागो, आगा सूं इम बोलवा लागो ॥ २७३ ॥
 जव इनने जाण्यो वणों अवनीत, सावु तणी न जाणी रीत।
 ओगुण बोल्य नूं काई कांम, इणरा दुष्ट जाण्या परिणाम ॥ २७४ ॥
 ओगुण बोल्य रों डर निन्नाय, गण माहिं रहिता जाण्या ताय।
 आगा ज्युं जाण्यो भूठ रो चालो, ते कदे दे काडें मोटोई बालो ॥ २७५ ॥
 जें द्या सूं आया दीसे ताहि, इसज आछा नहीं गण माहिं।
 तो यांने देणा देणा छिटकाय, इसडी घारी मन मांय ॥ २७६ ॥
 प्राछित लेंगों तो बदलीयो नाहिं, पिण मान वणों घट माहिं।
 जो म्हारो प्राछित कहें लोक आणें, तो म्हारी जाव हलकाई लागें ॥ २७७ ॥
 त्रिग करण बले बडवी भांडी, हुंती देख आपरी भांडी।
 वास्वार आहिज वणी ताणें, रखे लोक भूडो मोनं जाणें ॥ २७८ ॥
 प्राछित चावो न कहें लोक माहिं, गाला गोले छांटो राखूं ताहिं।
 पिण आ तों प्रसिध वात, ते छिपाई केम छिपात ॥ २७९ ॥
 ओर मावो प्राछित लीवो नाहिं, त्यांनं कहराव नूं लोक माहिं।
 जो उवे कहें म्हानें प्राछित न दीवो, तो हूं पिण केसूं म्हेंई न लीवो ॥ २८० ॥
 वद इनने बले पूछ्यो जाण, कोई ग्रहस्य पूछें मोनं आण।
 यांरा सूंस भागा नुणीया तान, यांराइज सिपा रें पास ॥ २८१ ॥
 नहीं भागा नें नहीं भागो तो कहि सुं, वण बोल्यो वेठें किम रहिसूं।
 इसडों आल मायें किम लेसूं, जव बो कहें यूं तो कहिण न देसूं ॥ २८२ ॥
 भावो री रीत कीयो कहिणों, ओर उत्तर पाछें नहीं देणों।
 धामना करे देवो जणाय, तेहवी पिण नहीं काडणी वाय ॥ २८३ ॥

जो थे कहिसों म्हांमें दोष नांहि, तो हूं कहि देसूं दोष यां मांहि ।
 म्हे कह्यो ते नही छे भूठ, तो वले वेदो जासी उठ ॥ २८४ ॥
 जिण प्राच्छित नही लीघो छे ताय, तिणने न लीघों न काढणी वाय ।
 जिण प्राच्छित लीघो छे तांम, तिणरो पिण नही लेणो नांम ॥ २८५ ॥
 लीघा न लीघा रो नांम नकारो, ग्रहस्थ आगे न कहिणों लिगारो ।
 जो थें कहिसों इणनें प्राच्छित दीघो, तो हूं कहिसूं म्हे मूल न लीघो ॥ २८६ ॥
 इसडों आल कुण ओढे माथे, प्रतीत जावे इण वाते ।
 ग्रहस्थ नें भर्म ओर रो होवें, तो यारें बदलें परतीत कुण खोवे ॥ २८७ ॥
 ग्रहस्थ पिण साचा ने भूठो जाणें, भूठा ने साचों कहें अजाणें ।
 ग्रहस्थ दोनूं प्रकारे हुवें भारी, केयक होय जाए अनंत संसारी ॥ २८८ ॥
 जाण नें साचा भूठा रो, सरीखो भर काढें हूंकारो ।
 एहवी मिश्र भाषा सूं हुवे खुवारी, ज्यूं वणी वसुदेव राजा री ॥ २८९ ॥
 इसडो कुण करसी अन्याय, वले निज परतीत गमाय ।
 कोइ जाणे यारे सिपां री चाहि, यानें प्राच्छित विण लीया मांहि ॥ २९० ॥
 आप प्राच्छित लीयों ते छिपावें, न लीयो तिणने दीयो सरधावें ।
 लोकां ने कहिवा न दे इण कांम, यारा दुष्ट घणा परिणाम ॥ २९१ ॥
 म्हांमें प्राच्छित लीयो जाणे लोक, तो म्हांमें जाण लेसी दोप ।
 नही तो यामें हिज जाणें दोप, यानें प्राच्छित लीयो जाणें लोक ॥ २९२ ॥
 इसडी गूढ माया सेवे, ओर साधां सिर आल देवें ।
 इसडा आछा नहीं गण माहि, जाण्यो वेगा दीजे छिटकाइ ॥ २९३ ॥
 एक आचार्य पदवी रो भूखो, कदागरो करवा दूको ।
 पदवी मूढें आणें वारुंवार, कहितो पिण नही लाजे लिगार ॥ २९४ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य आप, तिणनें तो जाणें देउं उथाप ।
 आचार्य पदवी हूं लेऊं, जाणें सगलां रो नायक वेऊं ॥ २९५ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य जाण, जाव जीव रा करे पचखाण ।
 तिणमें अनंता सिद्धां री साख, त्यां सूसां री करवा मांडी राख ॥ २९६ ॥
 आचार्य पदवी रे काजे, सूंस भांग तो पिण नहीं लाजे ।
 ह्रवों पदवी रो मोह मतवालो, आत्मा ने लगावे काणो ॥ २९७ ॥
 इसडों अभिमानी नें अवनीत, मांडी गच्छवास्यां वाली रीत ।
 पदवी पदवी करतो दीठो भूंडों, अवनीत सूं एको कर दूडों ॥ २९८ ॥
 यारे एको मांहोमां न छूट्यें, उणरें वदले ऊ वोलें भूडों ।
 एक एक रा दोषण ढांके, गुर आगे पिण कहितों तांके ॥ २९९ ॥

वले बोलें घणा घणा उंधा, सरलपणें न बोले सूघा ।
 करें जोम नें गाढ री वात, मिटियो नहीं त्यारो सल मिथ्यात ॥ ३०० ॥
 पांचूं पद बिचें दे आया मांहि, कपट दगो छूटों नहीं ताहि ।
 यांनं जाण्यां अँ वेसासघाती, मांहोमां करें पखपाती ॥ ३०१ ॥
 यारो जाण्यो मांहोमां एकों, चाला चरित देख्या अनेकों ।
 आगा ज्यूं चोखी रीत ठेंहरायो, तिका पिण नहीं दीसैं कायो ॥ ३०२ ॥
 इणनं एक बाईं पूछ्यो एम, सांमीजी सूं जुदा हुवा केम ।
 जब ओर साघ वोल्यो इम वांण, अब तो गुरां रे पगे पडीया आंण ॥ ३०३ ॥
 जब उण साघ नें कह्यो इण एम, इसडो थें बोलीया केम ।
 म्हानें पगा पडीयो कह्यो कांय, हूं तो करार करे आयो मांय ॥ ३०४ ॥
 आज पछें थें इसडो वाय, मूढा बारें म काढजों ताय ।
 अँ तों बोले अग्यांती एम, ते तो गुर ने आराधसी केम ॥ ३०५ ॥
 यांनं जाण्यो घणो अवनीत, नही चारित पालण री नीत ।
 छोडी जिण मारग री रीत, इणरी जाबक नावें परतीत ॥ ३०६ ॥
 ग्रहस्थ आगें कहिवा रा पचखांण, ते पिण सूंस भांगीयो जांण ।
 प्राच्छित ठेंहरायो घणा री साखी, ते बदल गयो अन्हाखी ॥ ३०७ ॥
 वले घणा लोकां रे मांय, भूठी भूठी करे बकवाय ।
 वले वद वद नें बोले करों, जब इणनं तों कर दीयो दूरो ॥ ३०८ ॥
 दूजोडा नें न छोढ्यो ताय, तिणनं दीयो एम जताय ।
 जो थारें एको न छें मांहोमांहि, फाडा तोडो न कीधो छें ताहि ॥ ३०९ ॥
 तो तूं मत जाए उणरी भार, उण दोषीला नें काढीयो बार ।
 ऊ प्राच्छित आढ बदलीयो तांम, तिण भूठा बोला सूं नहीं कांम ॥ ३१० ॥
 जो तूं जाएला उणरी लारी, तो थे एको कीयो गण फारी ।
 इम कहां बेठो रह्यो तांम, अंतरंग तों मेला परिणाम ॥ ३११ ॥
 उण सूं मिल मिल नें करें वात, उणरीज करें पखपात ।
 उणरो थको बेठो गण मांय, जांण जांण करे कपटाय ॥ ३१२ ॥
 ओं तो जाणें रहूं गण मांय, पिण उण विण रह्यो न जाय ।
 तिणरी करें दलाली आप, करें मांहें ल्यावण री थाप ॥ ३१३ ॥
 आगें ठेंहरायो प्राच्छित ताहि, ते प्राच्छित दे लेवो मांहि ।
 इणरो परमारथ छे एह, मो उपर प्राच्छित थापों तेह ॥ ३१४ ॥
 जब उणनं पाछो कह्यो एम, तो उपर थापां प्राच्छित केम ।
 थारें उणरी दीसैं पखपात, वले भेली दीसैं थारी बात ॥ ३१५ ॥

जब इण कह्यो मो उपर थें थाप्यो, ते थैइज कांय उथाप्यो ।
जब इणने कह्यो चले आंम, उणहीज उथापीयो तांम ॥ ३१६ ॥
उण कह्यो प्राछित लेऊं नांहि, तिणनें किण विव राखां मांहि !
जब इण भूठ बोले तिणवार, उणरी वात लीघी संवार ॥ ३१७ ॥
उ तो प्राछित बदले क्यांनें, उणने आवे जितों देणो म्हाने ।
फाडा तोडो न कीयों म्हे सोय, तिणरो प्राछित न लेऊं कोय ॥ ३१८ ॥
उ तो बदलीयो ते इण न्याय, ओ वोल्थो इसडो भूठ बगाय ।
जब उणने दीयो जताय, तोसूं प्राछित दीयो न जाय ॥ ३१९ ॥
म्हे तो सरल हुवो जाप्यो ताह्यो, जब थां उपर प्राछित ठेहरायो ।
अव तो सरल न दीसो एक, छल खेलता दीसो अनेक ॥ ३२० ॥
उणनें प्राछित भारी आवे, ते तोसूं पूरो दीयो नही जावे ।
'तोनें प्राछित कुण भलावे, थांरी परतीत मूल न आवे ॥ ३२१ ॥
तूं प्राछित दीघां रो करे नांम, ते तो खोज भांगण रे कांम ।
तूं प्राछित रो करे गाला गालो, इसडों दूजो कुण वेठो छे भोलो ॥ ३२२ ॥
जो उणरे रहिणों होसी गण मांय, तो गुर कने प्राछित लेसी आय ।
गुर छोडे तोकनें लेवें ताय, ते कारण मोहि वताय ॥ ३२३ ॥
आ उघाडा दगा री बात, मिल मिल नें करो वेसासघात ।
थामें साघ तणी नही रीत, उघाडाई दीसो अवनीत ।' ३२४ ॥
गुर कनें प्राछित लेवा नें पाछो, तिणनें कदे म जाणजों आछो ।
इसडाने राखे गण मांय, तो सगलां ने आछो नही थाय ॥ ३२५ ॥
जब उणरी पख में बोल्थो पूरो, जब इणनेंइ कर दीयो दूरो ।
इणनेंइ नही राखियो मांय, जब ओ उण सूं भेलो हुवो जाय ॥ ३२६ ॥
जो उ न जाअे उणरी लार, तो उ कर दें इणरो उघाड ।
कदा दसमो प्राछित वतावें, ते इणसूं पछे लीयो न जावे ॥ ३२७ ॥
ओ जाणें म्हांरी पारेला कूक, अठा सूं पिण जाउंला चूक ।
भेला होय ने कीघा छे कर्म, चावा हुवां निकल जाअे भर्म ॥ ३२८ ॥
जो आप मे खामी न हुवे लिंगार, तो कुण जाए भागल री लार ।
ओ तो आपरा किरतव देखें, ते गुर सूं भेलो रहें किण लेवें ॥ ३२९ ॥
जो उणनें प्राछित आप ओढावे, तो उ इणनें उतरौ वतावे ।
तिणसूं उणने प्राछित देणी नावे, आप सूं पिण लेंणी न आवे ॥ ३३० ॥
इणरे इसडी वणी छे आय, आड दोड में पडीयो जाय ।
अवनीत सूं गाडी जोडी, गुर सूं तो पेह्लांज तोटी ॥ ३३१ ॥

गुर कीषो थो उपगार भारी, ते तो घाल दीयो विसारी ।
 अवनीत रे जिले जूतो, नर नों भव खोय विगूतो ॥ ३३२ ॥
 यानें छोडीया पँहली वार, दोयां नें साथे काढीया बार ।
 हिवें छोडीया हूजी वार, एकीकानें काढीयों बार ॥ ३३३ ॥
 हिवें अवनीत हुआ दोनूं भेला, करवा लागा गुरां री हेला ।
 सूंस वरत सर्व यांरा भागा, हुवा वरत विहूणा नागा ॥ ३३४ ॥
 प्राच्छित न ले तिणसूं काढ्या बारें, तिण वात रो नाम न काढें ।
 उलटो दोष साधां में वतावे, भूठ बोलतों संक न ल्यावे ॥ ३३५ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या वाय, यांमें दोष हुवें ते दयो वताय ।
 जब ओ पाछो बोल्यो तिणवार, यांरा दोषां रो घणों विसतार ॥ ३३६ ॥
 हिवें काल पडिकमणा रो आयो, ते तों पूरा केम कहिवायो ।
 चेडा नें कोणक री हुइ राडो, ज्यूं यांरा दोषां रो छे विसतारो ॥ ३३७ ॥
 पछें घणा लोक मिल आया, त्यां कनें दोष अनेक वताया ।
 जब लोक पाछा बोल्या एम, ओ गढ इण विध भांगे केम ॥ ३३८ ॥
 कोइ भारी वतावो दोष, ज्यूं सुणें सगलाई लोक ।
 जब कह्यो मोटों दोष नहीं मांय, अणहूतो वतायो न जाय ॥ ३३९ ॥
 जो अँही दोष यांमें हुवेंसी, तिणरों अँ प्राच्छित लेसी ।
 जब कहें प्राच्छित तों यांमें नाहीं, आगें सुध हुवा म्हां मांहीं ॥ ३४० ॥
 जब लोकां कह्यो तो क्यूं वतावो, यांमें दोष हुवें ते सुणावो ।
 जब कहें अँ तों म्हे वातां वताई, यांरी उठाणपरीया सुणाई ॥ ३४१ ॥
 जब लोकां कह्यो वले यांनें, आ निरथक सुणाई थें क्यांनें ।
 हिवें थें प्राच्छित ले आवो मांहि, जिलो मत राखो ताहि ॥ ३४२ ॥
 जो थें जिला सहित आवो मांहि, जब तो मांहे न लेवें ताहि ।
 थारी परतीत यांनें न आवे, रषे वले किणनेंई ले जावे ॥ ३४३ ॥
 जब अँ पिण बोल्या बेरीत, म्हांनें यांरी नावें परतीत ।
 अँ म्हांसूं गाढो करे करार, पछें काढें एकीका नें बार ॥ ३४४ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या तिणवार, थानें दोष विनां काढें बार ।
 तो म्हे वंदणा छोड द्यां यांनें, इसडी वात विचारो क्यांनें ॥ ३४५ ॥
 जब कहें म्हे रहिसां दाय, तीजां नें नही फाडां कोय ।
 इसडी परतीत उपजावां, दाय तो वीखर न्यारा न थावां ॥ ३४६ ॥
 मुदें जिलो विखेरणों पँहलो, ओ तो दोष नहीं छें सँहिल्यें ।
 चोरी सहीत लेवें गण मांय, तो सगलाई मिट्टी थाय ॥ ३४७ ॥

जिलो विखेरण रा नही हुआ ठगो, थे दीयो घणा ते कामे ।
जब लोकां पिण जाणो लीया ताहि, अ देगा सहीत आवें गण माहि ॥ ३४८ ॥
वले गृहस्थ बोल्या केई वाय, गुर कने प्राच्छित ल्यो जाय ।
जब ओ बोल्यो अविनेकारी वाणों, आ वात इण भव मे मत जाणों ॥ ३४९ ॥
जो म्हे जावां यारा गण मांय, तठे तो म्हांरी गिणत न कांय ।
म्हाने दिव्या दे लेवे मांय, सगलां रे पगां देवे लगाय ॥ ३५० ॥
आपणा किरतव देखे, ते गण मे आवसी किण लेखे ।
आलोवण पिण करणी नावे, प्राच्छित पिण लेणी न आवे ॥ ३५१ ॥
जथातय निज ओगुण वतावे, तो यांने प्राच्छित दसमों आवे ।
एहवो वेराग ने नरमाई, ते मूल न दीसे काई ॥ ३५२ ॥
जब घणा लोकां जाण्यां अजोग, याने माहे लेवा नही जोग ।
लोकां पिण कह्यो साधा ने आय, काची बातां म ल्यो यांने मांय ॥ ३५३ ॥
अपछ्छदा पडीया गण सूं जूआ, च्यार तीरथ मे फिट फिट हूवा ।
थावक हूंता चतुर सुजाण, यांने वदणा छोडी खोटा जाण ॥ ३५४ ॥
अे जाणें यामे दोप वताउ, थावका ने यांसूं भिडकाउ ।
यारें उसभ उदे हुआ आंण, मुख सू पिण नीकले खोटी वांण ॥ ३५५ ॥
विसवा पिण म्हांराई घट जासी, लोका मे पिण आछी नही थासी ।
पिण यारा थावका नें करू एम, दाहे वलीया आकडा जेम ॥ ३५६ ॥
या कने हरकोइ आवे, जब अे गुर माहे दोप वतावे ।
अे तो मिल मिल ने भूठ बोले, अवगुणां रो पिटारो खोले ॥ ३५७ ॥
आगे वोलीया अवगुण अनेक, तिण विचेइ बोले छे क्खोख ।
यारें निन्दा तिकोइज घ्यांन, यारे निन्दा तिकोइज ग्यांन ॥ ३५८ ॥
जाणे अवगुण काढ्यां दिन रात, कोयक लागें म्हारेइ हाथ ।
इण कारण करे छे विलाप, यारे उदे हुआ छे पाप ॥ ३५९ ॥
अवगुण सुण सुण ने समदिष्टी, याने जाणे धर्म सूं भिष्टी ।
यारा बोल्या री परतीत नाणे, भूठ मे भूठ बोळता जाणे ॥ ३६० ॥
सगला थावक सारीखा नाहि, अकल जुदी जुदी घट माहि ।
समदिष्टी री साची हुवे दिष्ट, ते यांने करे थोडा माहे खिष्ट ॥ ३६१ ॥
ते याने न्याय सू देवे जाब, पारे घणां लोका माहे आव ।
यारी मूल न आणे सक, याने देखाल दे यारो वंक ॥ ३६२ ॥
थे घणा दोप कह्यो गुर माहि, घणा वरसां रा जाणो छो ताहि ।
तो थे पिण साध किम थाय, जाण जाण मे ह्या ॥ ३६३ ॥

यामें दोष घणा छे अनेक, कदा दोष नही छें एक ।
 त तो केवलग्यानी रह्या देख, पिण थे तो बूडा लें भेख ॥ ३६४ ॥
 जो यामें दोष कह्या थें साचा, तोही थें तों निश्चें नही आछा ।
 जो भूडा कह्या तो वशेष भूडा, थें तो दोनूं प्रकारें बूडा ॥ ३६५ ॥
 थे दोषीला नें वांच्या कहो पाप, भेला पिण रह्या कहो मंताप ।
 दोषीला नें देछे आहार पांणी, वले उपधादिक देवें आंणी ॥ ३६६ ॥
 हरकोइ वसत देवें आण, करें विनों वीयावच जांण ।
 दोषीला सूं करे संभोग, तिणरा पिण जाणों छों माडा जोग ॥ ३६७ ॥
 इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिणमें पाप कहो छो एकंत ।
 अं थें जाणें कीया सारा काम, ते पिण घणा वरसां लगे तांम ॥ ३६८ ॥
 घणा वरस कीया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो धर्म ।
 निरंतर दोष सेवण लागा, हुआ वरत विहुंणा नागा ॥ ३६९ ॥
 ओ थे कीधो अकारज मोटो, छांने छांने चलायो खोटो ।
 थे तो बांध्या करमा रा जालो, आतमा ने लगायो कालो ॥ ३७० ॥
 थे गुर ने निश्चें जाण्यां असाध, त्यानें वांच्या जांणी असमाध ।
 त्याराहीज वांच्या नित नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय ॥ ३७१ ॥
 यांसूं कीधा थें बारें संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग ।
 सावद्य सेव्यो निरंतर जांण, थें पूरा मूंड अयांण ॥ ३७२ ॥
 थें भण भण ने पाना पोथा, चारित विण रहि गया थोथा ।
 थें कहो अर्थ करां म्हे गूढा, तो थें भण भण नें कांय बूडा ॥ ३७३ ॥
 थे वीहार करता गांम गांम, सिप सिषणी वधारण काम ।
 किणनें देता बधो कराय, किणनें देता घर छोडाय ॥ ३७४ ॥
 वले कर कर गुर रा गुण ग्राम, चढावता लोकां रा परिणाम ।
 जब थें गुर ने खोटा जाणो ताहि, ओरां नें क्यूं न्हाखता यां माहि ॥ ३७५ ॥
 पोते पडीया जाणों खाड मांय, तो ओरां नें न्हाखता किण न्याय ।
 ओरां नें डबोवण रो उपाय, जांण जांण करता था ताय ॥ ३७६ ॥
 पाच पद वंदणा सीखावता ताह्यो, तिणमे गुर रो नाम घलायो ।
 तिण गुर ने वांच्या जाणता पाप, तो ओरां नें कांय बोया आप ॥ ३७७ ॥
 ज्यूं नकटो नकटा हुआ चावें, उसभ उदें माठी मत आवें ।
 ज्यूं थे डूबता दोषीलां माहि, ज्यूं ओरां नें डबोवता ताहि ॥ ३७८ ॥
 ओरां सूं करता एहवो उपगार, थारा भणीया रो ओहीज सार ।
 इसडो कूड कपट थे चलायो, थारो छूटको किण विघ थायो ॥ ३७९ ॥

थे तो जिण मारग में हुआ ठगो, थे दीयो घणा ने दगों ।
 ठग ठग खाधा लोकां रा माल, थारो होसी कुण हवाल ॥ ३८० ॥
 आछी वसत हूती घर मांहि, आहार पांगी कपडादिक ताहि ।
 थानें गुर जाणें हरख सूं देता, सो थारा तों अे निकल गया पेंता ॥ ३८१ ॥
 म्हें थानें वांदता वारुवार, जद म्हानें हुवतो हरप अपार ।
 थानें जाणता सुघ आचारी, थे छाने रह्यां अणाचारी ॥ ३८२ ॥
 म्हे थाने जाणता था पुरष मोटा, पिण थें तो निकल गया खोटा ।
 म्हे थानें जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवरीया असाध ॥ ३८३ ॥
 थे जाणें रह्या दोषीला मांह्यो, ठगा सूं थे काम चलायो ।
 थे जीतव जनम विगाख्यो, नरनो भव निरथक हाख्यो ॥ ३८४ ॥
 थे घणा दिनां रा कहो छो दोष, थारी वात दीसे छे 'फोक ।
 साध भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ तो परतीत नाणे ॥ ३८५ ॥
 थे हेत माहे तो दोपण ढांक्या, हेत तूटे कहितां नही सांक्या ।
 थारी किम आवे परतीत, थाने जाण लीया विपरीत ॥ ३८६ ॥
 थे दोषीला सूं कीयो आहार, जद पिण नही डरीया लिंगार ।
 तो हिवे आल देता किम डरसी, थारी परतीत मूरख करसी ॥ ३८७ ॥
 अे थे दोप क्यांने कीया भेला, अे थे क्यूं न कह्या तिण वेला ।
 थामे साध तणी रीत हुवेतों, जिण दिन रो जिण दिन केंतो ॥ ३८८ ॥
 थें दोषीला सूं कीयो सभोग, थारा वरतीया माठा जोग ।
 थारी परतीत नावे म्हाने, यांरा दोष राख्या थे छाने ॥ ३८९ ॥
 थें तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवे प्राच्छित ले होवो सुघ ॥ ३९० ॥
 उणरी तो थारा कह्या सूं संक, पिण तूं तो दोषीलो निसंक ।
 इम कहि उणने घालणो कूडो, घणा बेठां देणी मुख धूडो ॥ ३९१ ॥
 ज्यूं कोइ वले न डूजीवार, किणराई दोष न ढांके लिंगार ।
 दोप ढांक्यां हुवे घणी खुवारी, टांको भले तो अनंत संसारी ॥ ३९२ ॥
 संका सहीत नें राखे मांय, तो ओर साध दोषीला न थाय ।
 दोषीला ने जांणी राखें मांय, तो सगलाई असाध थाय ॥ ३९३ ॥
 इम कह्यां यानें जाव न आवे, जब भूठी भूठी वातां वणावे ।
 यांरा दोष न कह्या म्हे डरते, गुर सूं पिण लाजा मरते ॥ ३९४ ॥
 रखे कर दे मोनें टोला बारे, मुदे तो ओहीज डर रह्यो म्हारे ।
 म्हे दोष सेव्यां यारे कहे जाण, यां सेव्यां री करी तांण ॥

कदे देतों हूं दोष वताय, जब म्हारी देता वात उडाय ।
 म्हां एकला री आसंग नही कांय, तिण सूं रह्यो दोषीलां मांय ॥ ३६६ ॥
 हिवें तों हुवा म्हें दोय, दोष सेवण न दयां कोय ।
 इसडी जोमरी वातां वणावे, मन मांनं ज्यूं गोला चलावे ॥ ३६७ ॥
 जब यानें पाछो कहिणो एम, थारो साधपणो रह्यो केम ।
 थें डरता अकारज कीधो, तिणरो प्राच्छित पिण नही लीधो ॥ ३६८ ॥
 कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थें डरता थकां भर ल्यावत ।
 करावत पाप हर कोई, तो थें डरता करता सोई ॥ ३६९ ॥
 कदा गुर पिण भारी पाप करता, तोही थें तो भेला रहिता डरता ।
 भागलां माहें रहिता खूता, पिण थें एकला कदेय न हुंता ॥ ४०० ॥
 इसडी थारी गीदडाई, थेंइज थारे मुख सूं वताई ।
 इसडा पाक्रम थां माहे पावें, थारी आगा सूं परतीत नावें ॥ ४०१ ॥
 साधा नें डरतो मूल न रहिणो, दोष देखे सताब सूं कहिणो ।
 डरता न कह्या तो थें गीदड पूरा, हिवे किण विध होसो थें सूरा ॥ ४०२ ॥
 एकला होयवा सूं डरतें, दोष न कह्या थें लाजां मरतें ।
 तो हिवें ढांकोला दोप अनेक, जाणें होय जावांला एक एक ॥ ४०३ ॥
 हिवें थारे दोयां रे माय, कोइ दोष दे अनेक लगाय ।-
 तो पिण चावा न करो लाजां मरता, एकला होण सूं बले डरता ॥ ४०४ ॥
 एकला होण सूं डरो दोई, मांहोमा दोष देसो लकोई ।
 आ देख लीधी थारी रीत, हिवें जाबक नावें परतीत ॥ ४०५ ॥
 थारे तो मांहोमां दोप देख, हिवे तो ढांकसो वशेख ।
 एकला होवण रो डर थानें, मांहोमां दोष राखसो छानें ॥ ४०६ ॥
 जो हिवें कहो म्हे न राखां छानें, तो हिवें वात थारी कुण माने ।
 थे बेठा परतीत गमाय, थारी मूर्ख माने वाय ॥ ४०७ ॥
 किणही चोर रो हुवो उघाडो, फिट फिट हुवो सहर मझारो ।
 घणा लोकां जाणीया तास, पछे कुण करे तिणरो वेसास ॥ ४०८ ॥
 ज्यूं थारो पिण हुवो उघाडो, दोषीलां भेलो काढ्यो जमारो ।
 परगट. न कीया त्यारा दोष, थें जनम गमायो फोक ॥ ४०९ ॥
 एक दोष सेवें नित साध, तिण संजम दीयो विराध ।
 तिणें गुर जाण नें वांदे कोय, तो उ अनंत संसारी होय ॥ ४१० ॥
 तो घणा दोष जाणें थें साख्यात, त्यानें जाणे वांदयां दिनरात ।
 तो थें पूरा अग्यांनी बाल, थें रुलसो कितोएक काल ॥ ४११ ॥

एक दोष रो सेवणहार, तिण वांद्या वधे अनंत ससार ।
 थे घणा दोष जाण्यां त्यां मांय, त्यांरा ह्रीज वांद्यां नित नित पाप ॥ ४१२ ॥
 भागलां रा वांद्यां जाणे पायो, जिण मारग माहे ठागो चलायो ।
 रह्या कूड कपट माहें भूल, हिचे थारो होसी कुण सूल ॥ ४१३ ॥
 जो थे गुर माहे दोष वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया ।
 तिण लेखें पिण थेंडज भूडा, ग्यांनादिक गुण खोई वूडा ॥ ४१४ ॥
 जो थे दोष कहा यामें कूरा, जब तो थे जावक वूडा पूरा ।
 थें दीया अणहंता आल, हिचे रलसो कितो एक काल ॥ ४१५ ॥
 थें दोनूं विष वूडा इण लेखे, साच भूठ तों केवली देखें ।
 छद्मस्थ तों यां अंहेलाणें, थानें जावक भूठा जाणें ॥ ४१६ ॥
 यां कनें पेहला अवगुण कहिवाय, पछें खिष्ट करें इण न्याय ।
 यांरा वचन ने सेंठा भाले, यांनें पग २ भूठा घाले ॥ ४१७ ॥
 यांनें जाव न आवे पूरा, चरचा करतां परजाजे कूरा ।
 ज्यू बोले ज्यू पकडावे, भागवा री सेरी न पावे ॥ ४१८ ॥
 अे तों अवगुण बोले अनेक, वुधवंत नही माने एक ।
 यांनें जाणे पूरा अवनीत, यांरी मूल नाणे परतीत ॥ ४१९ ॥
 अवनीतां रो करे वेसास, तो हुवे बोध बीज रो नास ।
 च्यार तीरथ सूं पडीया काने, त्यारी वात अग्यांनी मानें ॥ ४२० ॥
 अविनीतां रो करे परसग, तो साधां सूं जाजे मन भंग ।
 अे साधां ने असाव सरघावे, भूठा २ अवगुण वतावे ।
 यांरो जाय मुणे वखांण, तिण लोपी जिणवर आंण ।
 यांरी तहत करे कोइ वाणी, आ दुरगत नी अंलाणी ॥
 किणरे उसभ उदें हुवे आंण, ते करे अविनीत री तांण ।
 त्यां भूठा ने साचा दे ठेंहराई, त्यारे अनत संसार री साई ॥
 यांनें कहि वतलावे सामी, तिणमें पिण जाणजे मोटी खामी ।
 यांनें उंचो करे कोइ हाथ, तिणरे निश्चें बंधे कर्म सात ॥
 यांरो जाय वखांण मंडावे, वले ओर लोकां ने बोलावे ।
 इसडी कोइ करे दलाली, ते पिण घर्म सूं होय जाए खाली ॥
 यांनें च्यार तीरथ माहें जाणें, ते पिण पेहले गुणठाणें ।
 यांरी करे कोइ पखपात, तिणरे आय चूको मिथ्यात ॥
 यांसूं करे आलाप संलाप, तिणरें पिण वधे चीकणा पाप ।
 यांनें वंदणा करे जोडी हाथ, तिणरें वेगो आवे मिथ्यात ॥

यांरी भाव भगत करे कोइ, वले आदर सनमान दे सोई ।
 तिणरें सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥ ४२८ ॥
 यांसूं करे विनो नरमाई, तिणरें लागी मिथ्यात री साई ।
 घणों र जो यां कर्ने जावे, ते समकत वेगी गमावे ॥ ४२९ ॥
 अं अवनीत नें भागल पूरा, वले आल दे कूडा कूडा ।
 त्यांरी मान लेवे कोई वात, ते तों बूड चूका साख्यात ॥ ४३० ॥
 कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यांरे कर्ने जाअें कोई चाल्यो ।
 ते तों गुर रो न मानें हटको, तिणरो तो हुंतो दीसे छे गटको ॥ ४३१ ॥
 चरचा बोल सीखे त्यां आगे, तिणरें डंक मिथ्यात रो लागे ।
 यांरो संसतो परचो न करणो, यांरो संग जाबक परहरणो ॥ ४३२ ॥
 समकत रा अतिचार संभालो, तो अवनीत सूं देजो टालो ।
 जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥ ४३३ ॥
 अं अवगुण बोलें चिठाय चिठाय, किणही भोला रे संक पड जाय ।
 जो उ न करे त्यांरी पषपात, तिणरो काढणों सोहरो मिथ्यात ॥ ४३४ ॥
 त्यांरी गाढी भाले पष कोई, ते नहीं छोडे भूठा जाणे तोही ।
 ते बूडसी अवनीतां रे लारें, त्यां अहली दीयो जनम विगाडें ॥ ४३५ ॥
 कोई लीधी टेक न मेले, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले ।
 जिण घर्म री रीत न जाणे, मूढ मूर्ख थको यूही ताणे ॥ ४३६ ॥
 यां कर्ने करे कोई पोसो समाई, यां कर्ने करे पच्छाण जाई ।
 तिणरी पिण जाणजो मति काची, जिण मारग में न कीधी आछी ॥ ४३७ ॥
 जे अवनीत रा पषपाती, त्यांरी सुण र बल उठे छाती ।
 अवनीतां रो करे उघाड, जब पिण मूढो देवे विगाड ॥ ४३८ ॥
 कोई गण में हुवे अवनीत, तिण सूं गाठी बांधे पीत ।
 ते पिण ओगुण बोलावण कांम, इसडा छे मेला परिणाम ॥ ४३९ ॥
 जिणरो धेष छे घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणामी जीव छे मेलो ।
 तिणरें उदे हुवे कर्म मिथ्यात, ते तुरत मानें त्यांरी वात ॥ ४४० ॥
 ते अवनीतां री करे पखपात, तिणरें आय चूको मिथ्यात ।
 खप करे त्यांरी करवा थाप, तिणरें उसभ उदे हुवा पाप ॥ ४४१ ॥
 जाणे अभिमांनी ने अवनीत, तोही राखे त्यांरी परतीत ।
 तिणरे प्रतष पूरो अंधारो, बूडें छे अवनीत रे लारो ॥ ४४२ ॥
 जिणनें गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नें मूढे लगावे ।
 त्यां कर्ने गुर रा अवगुण बोलावे, पछे लोकां में आप फेंलावे ॥ ४४३ ॥

करे जिण तिण आगे वाह, करे अवनीता री पखपात ।
 अवनीतां ने साचा साचा सरधावे, गुर माहे अवगुण दरसावे ॥ ४४४ ॥
 वादे तो गुर ने सीस नाम, करे अवनीतां रा गुणग्राम ।
 ते होय वेठा अवनीतां री लारी, वले ओरां ने खपे करवा खुवारी ॥ ४४५ ॥
 गुर सूं लोकां रा परिणाम फारें, आप विगड्यो ओरा ने विगाडे ।
 इसडो श्रावक वेसासघाती, ते पिण होयचूको मिथ्याती ॥ ४४६ ॥
 गुर री साची वात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाए वेली ।
 हरकोई अवनीत छूटे, तिणरो वेली होय उठे ॥ ४४७ ॥
 साधां रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सूं वात करे दिल खोले ।
 अवनीत नें मिलीया अवनीत, त्यांरी तेहीज करे प्रतीत ॥ ४४८ ॥
 गुर सूं पिण जावक नही तोडे, अवनीत सूं पिण सटकें नही जोडे ।
 धरपाधर रह्या छे देख, छल छिदर जोवे छे वगोख ॥ ४४९ ॥
 जो अवनीतां ने लोक न माने, तो आप पिण होय जाए काने ।
 अणसरते दवीया रहे मांहि, पिण लखण भदर लीया ताहि ॥ ४५० ॥
 केई श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारे संग फीटा ।
 जो कोई बंध निकाचत पाडे, ते पिण अनंत ससार बधारे ॥ ४५१ ॥
 केई श्रावक भागल साख्यात, ते भागलां री करे पखपात ।
 जाणें चोर सूं मिल गई कुंती, भूठी वाता करे अणहूती ॥ ४५२ ॥
 ते भागलां ने कहे उतकिष्ट्यें, तिणरी पिण मति होड गई भिष्ट्ये ।
 तिण भागल नें भागल मिलियां, जब पूरीजे मन रलीयां ॥ ४५३ ॥
 असाधां ने सरघे साच, साधां ने सरघे असाच ।
 दोनूं प्रकारे मूरख वूडे, ते पिण जाय वेससी तूडे ॥ ४५४ ॥
 एहुवा अभिमानी ने अवनीत, होसी चिहुंगति माहे फजीत ।
 याने भूंडा कह्या लोकां आगे, यांरा पखपाती रे दाह लागे ॥ ४५५ ॥
 ए समचे भाव कह्या छे जाण, कोई आप म लीजो ताण ।
 एहुवा अवगुण छे जिण मांय, ते छोड्या विण मुख नही थाय ॥ ४५६ ॥
 ए विगडायल जेन रा पूरा, त्याने कर दीया गण सू दूरा ।
 लाज सरम त्यां अलगी मेली, भेपधारी भागल त्यारा वेन्ती ॥ ४५७ ॥
 ए साधां मे दोप वतावे, ते भेपघाख्यां रे मन भावे ।
 यारी ठडे कीधी या छाती, ए पिण हुवा त्यांरा पवपानी ॥ ४५८ ॥
 यां तो दुरगत री नीव दीवी, भेपघाख्या रे खरची नीवी ।
 डण खरची सू होसी खुराव, पडमी चिहु गति मांहे आय ॥ ४५९ ॥

ए तो आगेइ देता था आल, ते भूँ रो क्यानें काडे नीकाल ।
 ओं सहजे पडीयो भूँ पाने, हिवे ए क्यानें राख्या छाने ॥ ४६० ॥
 भेपवाख्यां रा थावक आवे, त्यांसू तो घणा मिल जावे ।
 त्यानें मीठा वचनां वोलावे, त्यां आगें गुर में दोष बतावे ॥ ४६१ ॥
 जब ए पिण राजी होय जावे, असणादिक आछी रीत वैहरावे ।
 वले ए पिण यांनें पोगां चढावे, वाहवार अवगुण वोलावे ॥ ४६२ ॥
 वले मांहोमां कल्हो दे ळगाड, आमी सामी भेटी मेलें ताहि ।
 यारे आगेई साव सूं घेप, तिणसूं यांरी मानें वसेप ॥ ४६३ ॥
 वले यांनें पृछे केइ एम, थानें गण वारे काडीया केम ।
 जब ए कहे म्हानें काडे क्यानें, म्हें तो ढीला जाणें छोड्या यांनें ॥ ४६४ ॥
 इसडा भूँ वोलें जाण जाण, तिणरो कठें नही परमाण ।
 यांनें छोड्या एकीकानें ताय, तका तो वात दीवी छियाय ॥ ४६५ ॥
 कमलप्रभ आचार्य ने देखो, तिण विचे यांरी विगडी वसेखों ।
 जण वचन फेखो एकवार, तों रुलीयो अनंत संसार ॥ ४६६ ॥
 ए तों वके घणा दिनरात, कूड कपट सहीत करे वात ।
 वले विववपणें देवे आल, तों ए रुल्सी कितोएक काल ॥ ४६७ ॥
 इसडा अनंत हुआ ने होसी, परभव सामो विगला जोसी ।
 वले आरा आजूणा मांहि, म्हे पिण देख लीया छे ताहि ॥ ४६८ ॥
 ए भाव कह्या तिण मांहि, कोई बोल टले छे ताहि ।
 केई अणुसारें मेल्या छे न्याय, कोई बोली रो फेर छे मांय ॥ ४६९ ॥
 इत्यादिक यांमें आंगुण जाण, जब लागा छे जहर समाण ।
 यांनें निन्व जाणें कीया दूर, तिणमें मूल म जाणजों कूड ॥ ४७० ॥
 सेतीमें वरस संवत अठारे, काती सुद एकम सनीसरवार ।
 निन्व भागल रो विसतार, कीवो पादू गाम मस्कार ॥ ४७१ ॥

